

इसमतवेमें जितने प्रकारकी रामायण छपीहैं उनमें से कुछ इसमें लिखीहैं ॥

यह प्रसिद्ध पुस्तक गोस्वामि तुलसीदासजी की काव्य भारतवर्ष में है जिसके पढ़ने पढ़ाने से मनुष्य इस लोक में जीवन्मुक्त होकर अन्तमें मुक्ति पाता है और इसके कागड पाठशालाओं में भी पढ़ाये जाते हैं और यह पुस्तक हरएक के घरमें होनी चाहिये और बहुत से छापेखानों में यह पुस्तक लाखों प्रति छपी है इसछापेखाने में बहुत से रूपों में यह पुस्तक छपी है सो नीचे लिखे के अनुसार यह पुस्तक मिलेगी ॥

रामायण मूल तुलसीकृत बहुत मोटे अक्षरों की ॥

बहुत मोटे अक्षरों में है जिसको बालक और वृद्ध सुगमता से पढ़सके हैं ऐसे मोटे अक्षरों की आजतक कहीं नहीं छपी तसवीरों और क्षेपकसमेत है ॥

रामायण मूल तुलसीकृत ॥

जो बहुतसी प्रतियोंसे शुद्ध की गई कोई दोहा चौपाई रहने नहीं पाया और इसके कागड अलग अलग भी मिलते हैं ॥

रामायण तुलसीकृत टीका सुखदेवलालकृत ॥

इसटीकाको मैनपुरी निवासि श्रीसुखदेवलालजीने रचाहै इसमें सर्वोत्तमगुणयहहै कि श्री गोस्वामी तुलसीदासजी महाराज की रामायण के अर्थ को स्पष्टरीति से सरलदेश भाषा में बखाना है न्यूनाधिक्य नहीं किया ॥

तथा मोटे और चिकने कागज की ॥

और इसके कागड भी अलग २ मिलते हैं ॥

रामायण टीका रामचरणदासकृत किताबनुमा व पत्रानुमा ॥

इस विस्तृत टीका को अयोध्यानिवासि रामचरणदासजी टीकाकारने निजदेश भाषा में करके रामायणको ऐसासुगम करदिया कि जो थोड़ी भी विद्या रखतेहों वे रामायणका पूरा आशय समझजावें और गूढ़ाशयों के समझने और भक्तिपक्षके बढ़ाने के लिये श्रुतिपुराण और अन्य आचार्यों के श्लोकों से विभूषित करके अति सुन्दर मनोहर बनादिया कोई सन्देह अब तुलसीकृतरामायण की पुस्तकमें इस टीका के देखनेसे रह नहीं गई ऐसा विचित्र और विस्तृत टीका आजतक रामायण में ही हुआ है अवलोकन करने से अतीवानन्दहोगा ॥

अध्यात्मरामायण सटीकका सूचीपत्र ।

सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक	सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	रामायण माहात्म्य वर्णन ॥ (बालकाण्ड)	१	१४		इस मेरे वैष्णव चापमे जो आप रोदाचढाय सकेंगे तो आपसे युद्ध करूंगा नहीं तो आप लोगोंका नाश करदूंगा यह मुनकर रामका वैष्णव चाप चढाना और परशुराम का रामको मृतिकर चलेजाना फिर राजा दशरथका वरात समेत अयोध्यामें पहु- चना और भरत शत्रुघ्नका उनके मामा के यहां भेजना ॥	१४	१०३
१	रामहृदय वर्णन ॥	१४	२०		(अयोध्याकाण्ड)		
२	ब्रह्मादिदेवताओंका विष्णुको स्तुति करना और विष्णुका राजादशरथके यहां अवतार लेनेको कहना ॥	२३	४१	१	नारदमुनि का देवता साधु और पृथ्वीके हितके लिये रामचन्द्रजीके पास आकर उनके गुण गायगाय मृतुति करना और राम जीका उनकी धीर्यदेकर विदाकरनावर्णन ॥	११०	११८
३	राजादशरथका शत्रुघ्न और वशिष्ठ मुनिको बुलाके पुत्र निमित्त यज्ञ कराना और अग्निका राजाको चढ़ेना तब राजा उसचरुको सब रानियों को खिलादेना और चरुही के खानेसे कौशल्याके राम- चन्द्र मुमिचा के लक्ष्मण शत्रुघ्न और कैकेयी के भरत का जन्म होना और बाल चरित्र करना वर्णन ॥	४१	५०	२	राजादशरथका वशिष्ठमुनिसे पूछके राम- चन्द्रके अभिषेककी तथ्यागे करना और देवताओंका शारदाको प्रसन्नकर अयोध्या में भेज मंथराकी बुद्धि भ्रमाकर कैकेयीको क्षोध्युक्तकर कोपभवनमें भेजना वर्णन ॥	११८	१२३
४	विश्वामित्रका राजा दशरथ से यज्ञरक्षा के निमित्त राम लक्ष्मणको मागकर ले जाना और मार्गमें रामजीके वाणसे ताड़का राक्षसीका वध होना वर्णन ॥	५०	६४	३	राजा दशरथका कैकेयीको समझाना प- रन्तु उसका राजासे भरतका अभिषेक और रामजी का चौदहवर्ष वनवास ये दोवर मागना यह मुनकर दशरथका बड़ा शोक करना और रामजीका पिताको समझाय लक्ष्मण जानकी समेत माता से वनजाने को आज्ञा मागना वर्णन ॥	१२३	१४३
५	राम लक्ष्मणकी सहायतासे विश्वामित्र जीका निर्विघ्न यज्ञसमाप्तकर राम लक्ष्मण को सग लेकर विश्वामित्रका जनकपुर जातेमें मार्गमें रामजीका अहल्याका शाप से उद्धार करना और अहल्या का रामजी की मृतुति करना ॥	६४	८०	४	कौशल्याजीका रामलक्ष्मण सीताके वन जानेका हाल रामजीसे सुनके अत्यंत शोक करना और रामलक्ष्मण सीताका कौशल्या के पद वन्दनकर पिताके स्थानको जाना ॥	१४३	१५५
६	केवटका रामजीके चरणोंको पार उता- रना और विश्वामित्र जीके संगमें राम लक्ष्मणजीका जनकपुरमें पहुचकर धनुष तोड़ना और जनकका पंचमेजकर राजा दशरथ को वगत समेत बुलाकर राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न चारों भाइयों को विवाह करना फिर राजा दशरथका विदा होकर अयोध्याको गमन करना वर्णन ॥	८०	८६	५	राम लक्ष्मण सीताका राजाके चरणोंकी वन्दनाकर तममातीरमें रात्रिमें निवासकर गंगाजीके किनारे पहुचकर निषादराज के पुरमें रात्रिमें निवास वर्णन ॥	१५५	१६४
७	अयोध्याजाते समयमें परशुरामजीका मिलना और रामचन्द्र से यह कहना कि			६	निषादका रामसीताको पृथ्वीमें कुशासन पर सोवते देखके बड़ा शोककर लक्ष्मण से		

सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक	सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
७	संभाषणकरना और लक्ष्मणका निषादराज को समझाना फिर प्रातःकालमें गंगा उत्तर के भरद्वाज मुनिके स्थानपर राम लक्ष्मण और सीताका जाना तिसपोंछे मुनिसे मिलके चिचकूट पहुँचना वर्णन ॥	१६४	१८०	४	रामादिकोंका जटायुसे वार्तालापहोना और लक्ष्मणजीके प्रश्नसे रामजीका उन से ज्ञान भक्ति वर्णन करना ॥	२३५	२४३
८	मुमचका रामजीको भेजके अयोध्यामें पहुँचकर दशरथसे सब हाल रामजीका कहना और राजाका अन्धके शापको सुधि कर पुत्रशोकमें प्राण छोड़ना फिर वशिष्ठ मुनिका भरत शुचुधनको उनके मामाके यहासे बुलवाने राजादशरथको भरतसे क्रियाकराना वर्णन ॥	१८०	१८२	५	लक्ष्मणके हाथसे शूर्पणखा का कुरूप होना और परदूषणादिकों का रामजी के हाथसे बधहोना और शूर्पणखाका रावण के पास जाकर सबहाल वर्णन करना ॥	२४३	२५१
८	भरतका वशिष्ठजी आज्ञासे राज्य करना अच्छा न समझकर अयोध्या वासियों समेत रामचन्द्रजीके पास चिचकूटमें प्राप्त होना वर्णन ॥	१८२	२०१	६	रावणका मार्गेचकीपासजाना और मारीच का सोनेका मृगकर पंचवटीमें आना ॥	२५१	२५६
९	भरतका रामजीके चरणोंमें गिरके राज्य करनेकी कहना परन्तु रामजीका पिताके वचनसे राज्य न अंगीकारकरना तब भरत का रामजीकी खड़ाज लेके अयोध्याको लौटआना और रामजीका अचिञ्चपि सीता जीका अनुसूयाजीसे मिलापहोनावर्णन ॥	२०१	२१३	७	सीताजीका अग्निमे प्रवेश और मायाकी सीताका रामजीसे कहना कि इस सोनेके मृगको लादोजिये तब रामजी का लक्ष्मणको सीताकोसौपके मृगकेपास जाना पोंछेसेराक्षसके शब्दसेमोताका लक्ष्मणको भोभेजदेना उसीसमयमें राक्षसकरके सीता हरण और रावण करके मार्गमें जटायुबध और सीताका ऋद्धमूक पर्वतमें बैठेहुये कपियोंके पास अपना आभूषण फेंकदेना वर्णन ॥	२५६	२६५
१	(आरण्यकाण्ड)			८	राम लक्ष्मणका सीताको ढूँढतेहुये जटायुके पास पहुँचकर उससे सीताका संदेश पाना और जटायुका देह त्याग कर हरिधाम जाना ॥	२६५	२७३
१	रामजीके हाथसे विराध राक्षसका दुर्वासकेशपसे उद्धारहोना और अपनी भक्ति देकर रामजीका उसको उसके स्थानमें भेजना वर्णन ॥	२१४	२२०	९	रामजीके हाथ कवचका सोवहोना और उसका रामजीसे स्तुतिकरना ॥	२७३	२८०
२	रामलक्ष्मण और सीताका शरभंगमुनि के स्थानपर जाना और मुनिका उनकी पूजाकर चितालगाय जलजाना फिर रामादिकोंका सुतीक्ष्ण मुनिसे मिल अगस्त्यकेछोटेभाई अग्निजिह्वजी के स्थान पर जाना वर्णन ॥	२२०	२२६	१०	कवचका अपने धामजाना और राम लक्ष्मणका शबरीके स्थानपर जाना और उसका राम और लक्ष्मणकी विधिसे पूजन कर अमृत समान फल खिलाना ॥	२८१	२८७
३	रामादिकोंका अग्निजिह्व ऋषिसे मिल अगस्त्यके स्थानपर जाना और अगस्त्य जीसे अन्नय तरकस और धनुष और खड्ग पाना वर्णन ॥	२२७	२३४	१	(किष्किन्धाकाण्ड)		
				१	रामलक्ष्मणका सुग्रीवसे मेलहोना और सुग्रीवका सीता के आभूषण रामजीको देना और रामजीका सुग्रीवसे यह कहना कि मैं वालिको मारके तुमको कपिराज कहूँगा ॥	२८८	३००
				२	रामजीके हाथसे वालीबधहोनावर्णन ॥	३००	३०६

सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक	सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
३	रामजीकी आज्ञानुसार लक्ष्मण करके सुग्रीव राज्यभिषेक वर्णन ॥	३१०	३१८		उजाडना और अक्षकुमारादि बहुत से राज्यों की मारकर मेघनादके द्वारा नागफास में बंधके रावणके पास जाना ॥	३८६	४००
४	राम लक्ष्मणका प्रवर्णण पर्वतपर वास होना और सुग्रीव का सीताकी खोज में वानरों को भेजना ॥	३१८	३४०	४	हनुमान् और रावणका वार्तालाप होना और हनुमान् का लका जलाकर समुद्र में पूंछ बुझाना ॥	४००	४०८
५	रामजीका सीताके विरहमें अत्यन्त शोक करना और सुग्रीवपर क्रोधित हो कर लक्ष्मण के द्वारा सुग्रीवको बुलाना और सुग्रीवका रामजीके पास आना ॥	३४०	३४८	५	हनुमान्का सीताकी मणि लेकर राम जीके पास आकर सब कुशल कहना ॥	४०६	४१६
६	रामजीका हनुमान्को मुंदरीदेके सीताकी खोज में भेजना और हनुमान् का वनमें प्यास लगके एक कन्दरा में जाके एक स्त्रीके द्वारा पानी पीना और उसका बदरीवनमें भेजना ॥	३४८	३५८	१	रामका हनुमान्की प्रशंसाकर लक्ष्मण और सुग्रीव हनुमानादि सब वानरीसेना को लेकर समुद्रके पास आना ॥	४१७	४२३
७	हनुमानादि वानरों से जटायुके भाई से भेट होना और उसका वानरों के खानेका विचार करना परन्तु वानरोंसे जटायु का मरण सुनके समुद्र में नहा के उसको तिलाजलि देना वर्णन ॥	३५८	३६४	२	रावणका हनुमान्को चलेजाने के पीछे मचियों से सलाह करना और विभीषण का रावण को हितकी सलाह देना परन्तु रावणका न मानकर विभीषण की कुवाच्य कहना और विभीषण का राम जीके पास चलना ॥	४२३	४२६
८	जटायुके भाई और हनुमानादि वानरोंसे परस्पर वार्तालाप होना ॥	३६४	३७१	३	विभीषणका रामजीकेपास जाकरस्तुति करना और रामकी आज्ञानुसार लक्ष्मण करके विभीषण का राजतिलक और शुक दूतका सुग्रीव के पास आकर रावण के पास लोटजाना और रामसे और समुद्रसे वार्तालाप होना ॥	४२६	४४०
९	जटायुके भाईका विवाहोना और जाम्बवान् का अगदादिकों से समुद्र पार जानेकी कहना परन्तु किसी की सामर्थ्य न समझकर हनुमान्से कहना और हनुमान् को तैयार होना ॥	३७१	३७४	४	रामजीका सेतुबंधवाके रामेश्वर स्थापनकर सेनासमेत सेतु उतरके लका के समीप जाना और रावण के शुकदूत का रावण से यह कहना कि बिना सीता के दिये आप बचनही सत्तेहे ॥	४४०	४४७
	(सुन्दर काण्ड)			५	शुकदूत से सदेशामुन रावणका उस पर क्रोध करना और रावण के क्रोधही से शुकका शपथ छूटकर मुनि होजाना और वानर राज्यों का घोरयुद्धहोना ॥	४४७	४५०
१	हनुमान्का सुरसाके मुखमें प्रवेशकर मैनाक से वार्तालाप होकर सिंहिका को मारकर समुद्रपार होकर लंकिनी को मारकर लकामे प्रदेश करना वर्णन ॥	३७५	३८१	६	रावण का युद्धमें आना और उसका विभीषण की शक्ति मारना परन्तु विभीषणको बचाकर लक्ष्मण का आपही शक्ति का घाव सहना और रामकी आ-		
२	हनुमान्का अशोक वाटिकामे वृक्षपर छिपके चढजाना और रावणका सीताको कुवाच्य कहकर रावणियों से सीताके कष्ट देनेको कहकर चलेजाना ॥	३८२	३८६				
३	हनुमान् और सीताका वार्तालापहोना और हनुमान् का रावण की वाटिका						

सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक	सर्ग	विषय*	पृष्ठसे	पृष्ठतक
७	ज्ञानुसार लक्ष्मणकी रक्षाके लिये हनुमान्का औषध ढूँढने को जाना और रावणका कालनेमि के पास हनुमान् के विघ्न करनेके लिये जाना ॥	४५०	४६५	१३	ब्रह्मा शिव और इन्द्रादि देवताओं के रामजीकी स्तुति करना और राजादशरथ का भी आकर आशिष देना और राम लक्ष्मण सीता हनुमानादिकों को पुष्पक विमानमें चढके अयोध्या पुरी को चलना ॥	५१०	५२३
८	रावणकी आज्ञानुसार कालनेमि राक्षस का मार्ग में मुनिवेष धरना और हनुमान् के हाथ से मकरोका बध होकर उसका शपछूटकर अप्सराहोना और हनुमान् के हाथ से कालनेमि राक्षस का बध होना और हनुमान् का द्रोणाचल पर्वत उखाड के रामजीके पास लेआना उसमें औषधी पाके लक्ष्मण को आराम होना और रावण कुम्भकर्ण वार्तालाप होना वर्णन ॥	४६५	४७३	१४	रामादिकोंका अयोध्यामें आके भरतादिकोंसे मिलाप होना	५२६	५३०
८	रामजीके हाथ से कुम्भकर्ण बधहोना और मेघनादका यज्ञकरना और रामका यह विभीषणसे कहना कि मेघनाद लक्ष्मणके हाथसे माराजायगा ॥	४७३	४८३	१५	रामजीका राज्याभिषेक वर्णन ॥	५३०	५४८
९	वानरों करके मेघनादकी यज्ञ विध्वंस होना और उसका सगाममें आकर लक्ष्मणसे घोरयुद्ध कर लक्ष्मण के हाथसे मरना और रावणका अत्यन्त शोक करना ॥	४८३	४८९	१६	ब्राह्मणोंको दान हनुमान्को रक्षभक्ति सखोंको धन भूषणदेकर रामजीने विदा किया और नीति व सधर्मसे प्रजापालन व अनेक यज्ञ करते भये और यज्ञको प्राप्नुये अल्पमृत्यु व अकाल व रोग रामचन्द्रजी के राज्यमें न होता भया और सुख पूर्वक राज्य करते भये ॥	५४८	५७४
१०	रावणका शुकजीकी आज्ञानुसार होम करना और वानरोंकरके यज्ञ विध्वंसहोना और रावण और मदोदरीवार्तालापहोना ॥	४८९	४९६	(उत्तरकाण्ड)			
११	रामरावणका अत्यंत घोरयुद्ध और राम के वाणसे रावणके शिरकटना और फिर जमजाना फिर रामके वाणकरके रावण का नाशहोना और उसका प्रभुमे लीन होजाना ॥	४९६	५०६	१	अगस्त्यमुनिका श्रीरामजीके पासजाना और रामजीका उठके उनके प्रणामकर अच्छीविधिसे पूजनकर आसनपर बैठाना और मुनिका रामजीसे रावण आदिकोंकी उत्पत्ति कहना ॥	५५५	५६३
१२	विभीषण और रावणके रनवासका शोक करना और रामजीकी आज्ञासे लक्ष्मण का उनकोज्ञानदेना और विभीषणका रावणकी क्रियाकरके लक्ष्मणके हाथसे अभिषेकहोना और रामका हनुमान्के द्वारा सीताको बुलाना और उनकी अग्निमें परीक्षा करना ॥	५०६	५१७	२	अगस्त्यजीने पहलेरामजीसे यहवर्णन किया कि भाइयों समेत रावण विवाह कर लंकामें वासकर पुष्पक विमानको कुबेरसे छीनके दिग्पालोंको बहुत वासदे सब सुख भोगके आपसे वैरकर आपकेहाथ से मरके मुक्तहुआ तिसपीछे मुनिने राम जीकी महिमा वर्णनकी ॥	५६३	५७२
				३	सुमेरु पर्वतकेमध्य ब्रह्माजीकी सभामें ब्रह्माका आनंदके आंशुकोले भूमिपर गिराना और तिसीआंशुसे एकवानरका उत्पन्न होकर उसका एक बावलीमें अपनी छाया देख उसके पकड़नेकेलिये कूदना और वहां से निकलके सुन्दरस्त्री होजाना और उस स्त्रीको देखके इन्द्रका कामासक्त होकर अपना वीर्य त्यागना और उसवीर्यका उस		

सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक	सर्ग	विषय	पृष्ठसे	पृष्ठतक
	स्त्रीके बालोंमें होकर भूमिपर गिरना तिससे बालों वानरकी उत्पत्ति होना और इन्द्रका उसबालीको सोनेकी माला देना जिसके प्रभावसे सन्मुख आये बोंगका आधा बल बालीको प्राप्त हो जावे ऐसी माला दे स्वर्ग को चले जाना तिसपीछे मूर्यका उसस्त्रीके समीप आना और कामासक्त होकर वीर्य त्याग करना और उसवीर्यका उस स्त्रीको दीवाने गिरना तिससे मुयोवनामवानरको उत्पत्ति होना और मूर्यका मुर्यीषकी सहायताकेलिये हनुमान्को टेके चले जाना और उस स्त्रीको सो जाना सोनेके पीछे उसका पुष्प रूप होकर ब्रह्माके पास जाना और ब्रह्माका उनको किष्किन्धाकी राख्य देना ॥	५०२	५०६	८	कायस्थमें आके यह सौहकरना कि हे पृथ्वी माता जो मैंने रामको छोड़के और पतिको मनसे भी न चिन्तना किया हो तो मुझको विवर दीजिये ऐसा सुनके पृथ्वीका सीता को सिंहासन पर बैठा केले जाना और कोशल्या मुमिचा कैकेयीका भी देह त्यागना ॥	६०८	६१६
४	नारदमुनिका रावणके पास जाना और रावणकामुनिके प्रणामकर यह पूछना कि मेरे युद्धके योग्य कहा बोर है तब नारदका श्वेतद्वीपमें बहुत और समझके उसको भेजना और रावणको श्वेतद्वीपमें एक स्त्री से परामर्श होना ऐसी कथा करके अगस्त्य मुनिका रामजीके पाससे विदा हो जाना और रामजीका नीतिसे प्रजापालन करना तिसपीछे रामका मन्त्रियोंके द्वारा सीताका यह अपवाद सुनना कि रामजीने रावण के यह रहती हुई सीताको यहण किया यह कुछ अपवाद मुनके वाल्मीकिमुनिके स्थान के समीपमें लक्ष्मणके द्वारा सीताको त्यागना और आपत्तपियोंके व्रत यहण करना ॥	५०६	५०६		रामजीकी आज्ञासे भरतका अपने मामा के यहां ससैन्य जाके मामाके वैरी गधर्व नायकोंको मारके बहापर पुष्करावती और तक्षशिल ये दो नगर बसाके पुष्करावती में पुष्कर और तक्षशिलमें तक्षनाम अपने पुत्रोंको अभिषेककर रामजीके पास आना और रामजीको आज्ञासे लक्ष्मणका पश्चिम दिशामें भिल्लोंको मारके बहा दोनगर बसाके अपने दोनों पुत्रोंको अभिषेक कर रामजीके समीप आना और कालका राम जीके पास आना और यह कहना कि हम और आप यकान्तमें वार्ता करेंगे बहापर कोई न आवे और जो आवे वह आपके हाथसे मारा जावे ऐसा रामजीसे कहना तब रामका लक्ष्मणको द्वारपर बैठाना और यह कहना कि कोई न आने पावे और जो आवेगा वह मारा जावेगा परन्तु देवकी इच्छासे दुर्वासामुनिका आना और उनको अत्यन्त क्रोधी जान शापके भयसे लक्ष्मण का डरके रामसे दुर्वासा मुनिका आगमन कहना और लक्ष्मणका सग्युके किनारे प्राण त्यागके परमधामको जाना ॥	६१६	६२६
५	रामगीता वर्णन ॥	५०६	५०९	९	लक्ष्मणके परमधाम जानेपर समाजसहित राम और भगत इत्यादि का दुःख युक्त होकर शत्रुघ्नकी बुलवाना और शत्रुघ्नका मथुरा नगरमें सुबाहु और विदिशानगरमें यूपकेतुनाम पुत्रको अभिषेककर रामजीके पास आना और रामजीका अपने पुत्रोंको राव्यादिदेके परिवार प्रजापुरलोग और कपिसमेत आनदसे परमधाम जाना ॥	६२७	६३६
६	शत्रुघ्नका लवणामुरकी मारना और वाल्मीकि के स्थानमें सीताके दोपुत्रोंका उत्पन्न होना और रामजीका यत्न करना उसमें वाल्मीकि आदि मुनियोंका आना ॥	६०९	६०८	१०	कुश लवकारामजीके पास जाना और राम जीका प्रसन्न होकर उनको द्रव्य देना परन्तु कुश लवका न लेना और वाल्मीकिमुनिका रामसे सम्मतले सीताको बुलवाना और सीता		
७	कुश लवकारामजीके पास जाना और राम जीका प्रसन्न होकर उनको द्रव्य देना परन्तु कुश लवका न लेना और वाल्मीकिमुनिका रामसे सम्मतले सीताको बुलवाना और सीता				हति ॥		



अथ अध्यात्म रामायण सटीक ॥

वैजनाथजी कृत ॥

अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानमूर्तये ॥ मनोगिरांविदूरायदक्षिणामूर्तयेनमः १

दक्षिणामूर्तिदिशवाऽवतारः वेदांतविद्याप्रवर्तकः कथंभूताय दक्षिणामूर्तये अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानमूर्तये प्रमातुं प्रमाणीकर्तुं योग्यः प्रमेयः न प्रमेयः अप्रमेयः त्रयात् अतीतः त्रयातीतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिरूपात् अथवा स्थूल सूक्ष्म कारण रूपशरीरत्रयात् अतीतः भिन्नः अतिइतः अतीतः इणगतावित्यस्मात्कृतप्रत्ययेइतः इतिसिद्धयति अतिउपसर्गः अप्रमेयं च तत्त्रयातीतं अप्रमेयत्रयातीतं मलैर्निरहितं निर्मलं ज्ञायते अनेनेति ज्ञानं करणाधिकरणयोर्ल्युट् इतिल्युट्प्रत्ययः तत्रचकरणेप्रत्ययेज्ञानं साधनम् अधिकरणेप्रत्ययेकृते ज्ञायते सर्वमस्मिन्निति ज्ञानं ब्रह्मनिर्मलं च तत्ज्ञानं निर्मलज्ञानं अप्रमेयत्रयातीतं च तत् निर्मलज्ञानं अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानं तदेवमूर्तिः स्वरूपयस्य सः अप्रमेयत्रयातीतनिर्मलज्ञानमूर्तिः तस्मै नमः पुनः कथंभूताय दक्षिणामूर्तये मनोगिरांविदूराय मनश्चगिरश्च मनोगिरः तासां विदूरायदूरप्रान्तवर्तिने इत्यर्थः विशेषेण दूरः विदूरः तस्मै विदूराय अत्रच दक्षिणामूर्तिरित्यभिधानागुरोरेव परब्रह्मत्वं परमज्ञानदातृत्वं परमाप्रमेयत्वञ्च वर्णितमलमतिविस्तरतः यह्यर्थलोकोपकारकनहीं है ताते समाव्युत्पत्तिरहितं प्राकृतरिति अन्वयमात्र करिभाषामें अर्थकरव जामें थोड़ा पढ़नेवाले भी मूलतः अर्थ समुर्भे यहवन्दनात्मकमंगलाचरण है यथा (दक्षिणश्चासौ अमूर्तिश्च दक्षिणामूर्तिः तस्मै परब्रह्मणे नमः) दक्षिणेशरलोदारौ इत्यमरः अर्थात् कृपादयादृष्टिसुलभ उदारभाव सबको परिपूर्ण दान देनेवाले स्थूलसूक्ष्म कारणतन रहित ऐसे जो अन्तर्यामीरूप उदारअमूर्ति परब्रह्म श्रीरघुनाथजीके अर्थ नमस्कार है अर्थात् इसरामायणमें रघुनाथजीको अन्तर्यामिनरूप विशेषि वर्णन है ताते यहीरूपकहा (कथंभूताय दक्षिणामूर्तये मनोगिरांविदूराय) कैसी उदार अमूर्ति है कि मन और वाणियों से विशेषि दूरि है भाव मनकरिकै जाने नहीं जात अरु वाणी बखाननहीं करिसकी है यामें शंकाहोत काहेते इसीग्रथमें वाल्मीकिको बचन है यथा संतारधर्मैर्निर्मुक्तस्तस्य ते मानसंगृहम् पुनः प्रह्लादकी वाणी के साथै नृसिंहरूप स्वभते प्रकटे तौ कैसे मनवाणीते दूरि हैं ताको समाधान यह है कि वाणी तौ मनके आधीन अरु मनमें पट् अंश है यथा जिज्ञासा पंचके कर्मकर्म विकर्मा दाव नियमेन वर्तते संकल्पश्च विकल्पश्च मनांशो बहुशो यथा अर्थात् कर्म अकर्म विशेषिकर्म अनियम संकल्प विकल्प ये मनके छः अंश हैं

जहाँ इनको व्यवहार तहाँ परमेश्वरकैसे जानोजात जब मन नहीं जानिसकत तब बाणी कैसे कहै इस भाँति मन बाणी ते विशेषि दूरिहैं अरु जब जीव ईश्वरके सन्मुखभयो तब मनादि अपनो व्यवहार त्यागि बुद्धिमें लयभयो बुद्धिके अंशहै जप यज्ञ तपत्याग आचार अध्ययन तिनकरिकै ईश्वर जानो जात सोई आचार्य वर्णन भी करतेहैं भाव यावत् जीवमनके आधीन तावत्विषयासक्तविमुखहैं तिनकी मन बाणी ते विशेषि दूरिहैं (कथंभूतः) अप्रमेयःत्रयातीतः) जो कहेभी जातेहैं अरुमन बाणीते दूरिहैं तौहैं कैसे अप्रमेयहैं अर्थात् प्रमेयकही प्रमाण अप्रमेय कही नहींहै प्रमाण जाकी भाव जाकी महिमा अतौल असंख्यहै यथा पुरुषसूक्ते ॥ एतावानस्यमहिमाअतोऽज्यायाश्चपुरुषःपादोऽस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि भाव उसअष्ट पुरुषकी ऐसी अपार महिमाहै जाके एक पाद चतुर्थीशमें भूतमात्र ब्रह्माण्डरचनाहै अरु तीनिपाद विनाशरहित आकाशमें है ऐसा वेद कहत इतिअप्रमेय पुनःत्रयः अतीतः अर्थात् माया जीव ईश्वर ये तीनि वा ब्रह्मा विष्णु शिव ये तीनिहूते अतीत नामपरे परमात्मा यथा अथर्वणे रामतापिन्यां उयोवैश्रीरामचन्द्रः सभगवान्यो ब्रह्माविष्णुरीश्वरोयः सर्ववेदात्माभूर्भुवःस्वस्तस्मैवैनमोनमः इतित्रयातीत (पुनःकथंभूतायनिर्मलज्ञानमूर्तये) यतनिर्मलज्ञानतत्स्वरूपाय अर्थात् मनबाणी ते दूरि तीनिहूते परजाकी महिमा असंख्य इत्यादि जाकोकह ततौ अमूर्ति कैसे हैं तापरकहत कि जाको अमल ज्ञान है अर्थात् जैसे सोने की मूर्तिबाहेर भीतर एकही सोनाहै तथा देही देह विभागरहित बाहेर भीतर शुद्ध परमात्म तत्त्व त्यहि स्वरूपके अर्थ नमस्कार है १ ॥

सूतउवाच ॥ कदाचिन्नारदोयोगी परानुग्रहवाँछया

पर्यटनसकलाल्लोकान्सत्यलोकमुपागमत् २ ॥

नारदः योगीपर अनुग्रहवाँछया सकलान्लोकान् पर्यटन् कदाचित् सत्यलोकं उपागमत्) ओतन प्रतिसूतजी बोले कि यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यानसमाधि इतिअष्टौ अंग योगकरि परमात्मरूपकी समाधिमें धिर ऐसे नारदयोगी धर्मज्ञानभक्ति उपदेश द्वारापरदुःख हरण की इच्छाकरिकै स्वर्गभूपातालादि जो सकल लोकहैं तिनहिपर्यटन् विचरतसंतेकदाचित् किस्तीसमयमें सत्यलोक जो ब्रह्मधाम है तहांगबे २ ॥

तत्रदृष्ट्वा मूर्तिमद्भिस्त्रिन्दोभिःपरिवेष्टितम् ॥ बालार्कप्रभयासम्यग्भासयंतं सभागृहम् ३
मार्कण्डेयादिमुनिभिःस्तूयमानं मुहुर्मुहुः ॥ सर्वार्थगोचरज्ञानं सरस्वत्यासमन्वितम् ४
चतुर्मुखं जगन्नाथं भक्ताभीष्टफलप्रदम् ॥ प्रणम्य दण्डवद्भक्त्या तुष्टावमुनिपुंगवः ५
संतुष्टस्तं मुनिं प्राह स्वयं भूर्वैष्णवोत्तमम् ॥ किं प्रष्टुकामस्त्वमसि तद् वदिष्यामि ते मुने ६

(तत्रमूर्तिमद्भिःछन्दोभिःपरिवेष्टितं सम्यक्सभागृहम् बालार्कप्रभयाभासयंतं दृष्ट्वा) तहांमूर्तिमान जो सब वेद तिनकरि परिवेष्टित अर्थात् चारिहु दिशिधरे वेदखडेहैं मध्य सिंहासनपर ब्रह्माजी कैसे शोभितहैं कि संपूर्ण जो सभामंदिरहै ताहिप्रातके सूर्यनकी ऐसी जो अपने तनकी प्रभाहै त्यहि करिकै प्रकाशित किहेहैं तिनहि नारदजीदेखे ३ (मार्कण्डेयादिमुनिभिःमुहुःमुहुःस्तूयमानं सरस्वत्यासमन्वितं सर्वार्थगोचरज्ञानम्) मार्कण्डेय आदि जो चिरंजीवी समूहमुनिहैं तिनकरिकै बारंबार स्तूयमान अर्थात् स्तुतिकरिरहेहैं पुनः सरस्वती जो शक्तिहैं तिन करिकै युक्त आसीनहैं पुनः वेदको जो सिद्धांत जो अर्थहै ताकी गोचर जो विषय ताको परिपूर्ण ज्ञान है जिसके ऐसे ब्रह्मा विराजमानहैं ४ (मुनिपुंगव

वःदण्डवत्प्रणम्यभक्ताभीष्टफलप्रदम् ॥ चतुर्मुखं जगन्नाथं भक्त्या तुष्टाव) मुनिनमें उनमनारददण्डकी नाई भूमिपै गिरि प्रणामकरि भक्तनके अभिन्नतर को - इष्ट जो मनोरथ है सो फल को पुष्ट करि देनेवाले चारिमुखहैं जिनके ऐसे जो जगत् के नाथ ब्रह्माहैं तिनहिं भक्ति करिकैं नारद प्रसन्न करतेभये ५ (संतुष्टः स्वयंभू वैष्णवोत्तमस्मुनितंप्राहमुनेत्वमसि किंप्रष्टुकामः तत्तेवदिष्यामि) प्रसन्न हैकै स्वयंभू जो ब्रह्माजी है सो मनकी अभिप्राय विचारि वैष्णवनमें उत्तम भक्त नारदमुनि तिनप्राते ब्रह्माबोले हे मुने तुम्हारे मनमें क्या पूछनेकी कामना है भाव जो इच्छाहोइ सो प्रश्नकरौ सो प्रसन्न तापूर्वक हम तुम्हारे हेत सम्पूर्ण वर्णन करहिंगे ६ ॥

इत्याकर्ण्य वचस्तस्य मुनिर्ब्रह्माणमब्रवीत् ॥ त्वत्तः श्रुतं मया सर्वपूर्वमेव शुभाशुभम् ७ ॥

इदानीमेकमेवास्ति श्रोतव्यं सुरसत्तम ॥ तद्रहस्यमपि ब्रूहि यदि तेऽनुग्रहो मयि ८

प्राप्ते कलियुगे घोरैरनराः पुण्यविवर्जिताः ॥ दुराचाररताः सर्वे सत्यवार्ता पराङ्मुखाः ९

(इतितस्य वचः आकर्ण्य मुनिः ब्रह्माणं अब्रवीत् शुभाशुभमसर्वे एव पूर्वमेव त्वत्तः मया श्रुतं) जो ब्रह्माने कहा कि जो इच्छाहोय सो पूछौ ताको हम कहेंगे इत्यादि तिन ब्रह्माके वचन आकर्ण्य अर्थात् सुनि कै नारदमुनि ब्रह्मा प्रतिबोलत भये अर्थात् नारदबोले कि शुभ जो धर्मके आचरण यथा यज्ञतपदान तीर्थव्रत पूजापाठ संध्या तर्पण परोपकारादि जहांखों शुभकर्महैं पुनः अशुभ जो अयर्मके आचरण यथा हिंसाचोरी युवापर स्त्री वेश्यागमनपर अपकारादि जहांखों अशुभकर्म हैं इत्यादि शुभाशुभ कर्म करनेते जो जो फल जीवको प्राप्तहोता है सो सब निश्चय करिकैं पूर्वही आपके मुखते मैंने सुना है भाव इनवार्ताको पूछनेकी इच्छानहीं है ७ (इदानीं एकं श्रोतव्यं एव अस्ति सुरसत्तम यदि मयि तेऽनुग्रहः तत्तद्रहस्यमपि ब्रूहि) नारदबोले कि इदानीं अर्थात् या समयमें एकवात सुनिबेकी इच्छा निश्चय करिकैं हे देवनमें उत्तम ब्रह्माजी यदि मयि तेऽनुग्रहः अर्थात् आपना पुत्रजानि जो मेरेविषे आपकी सदादयाहोय तौ तत्तद्रहस्यं अपि ब्रूहि अर्थात् जो मैं पूछोंगो सोरहस्य गुप्ततत्त्व निश्चय करि कहिये ८ (घोरैरकलियुगे प्राप्ते सर्वे अनराः सत्यवार्ता पराङ्मुखाः पुण्यविवर्जिताः दुराचाररताः) ब्रह्माप्रति नारदकहत कि महाभयंकर कालकलियुग प्राप्तभये संते सब मनुष्यमात्र सत्यवार्ताते पराङ्मुख बिमुख होयगे अर्थात् जो देखे सोई कहै जो कहै सोई करै इतिसत्य त्यहिते प्रतिकूलभूँठ व्यवहाररखे पुण्य विवर्जिताः अर्थात् पूजापाठ संध्या तर्पण तीर्थव्रत तपदानादि पुण्यकर्म त्यागिदुराचाररता अर्थात् परधन हरणे परध्यान अनिष्ट चिंतवन नास्तिकता मनके पापहैं कटुवचन भूँठबोलन परनिंदा वृथावादये वचनपात्रहैं हिंसाचोरी परस्त्रीरत कर्मके पापहैं इत्यादि दुष्टआचारमें प्रीतिके हेरहेंगे ९ ॥

परापवाद निरताः परद्रव्याभिलाषिणः ॥ परस्त्रीसक्तमनसः परहिंसापरायणाः १०

देहात्मदृष्ट्यो मूढानास्ति काः पशुवृद्धयः ॥ मातापितृकृद्वेषाः स्त्रीदेवाः कामकिङ्कराः ११

विप्रालोभग्रहग्रस्ता वेदविक्रयजीविनः ॥ धनार्जनार्थं मभ्यस्तविद्यामदविमोहिताः १२

कैसे दुराचार में रत होयेंगे सो प्रसिद्ध नारद कहत यथा (पर अपवाद निरताः) परारे अपवाद में रत प्रीति किहे अर्थात् परारी निन्दा करनेमें हर्ष सहित लगे रहेंगे तथा लोगनके उत्तमगुण मूंदनेहेत जो छिपे किंचित् अवगुण हैं तिनमें अनेक प्रबन्ध बांधि प्रसिद्ध करहिंगे पुनः (परद्रव्यः अभिलाषिणः) परारी द्रव्य लेने की सदा अभिलाषा रखेंगे अर्थात् चोरी ठगी डाक छल दम्भादि अनेक उपाय करि परारधन हरिलेईंगे पुनः (परस्त्रीसक्तमनसः) परारीस्त्रीमें मन आसक्त रखेंगे

अर्थात् उत्तम गुणज्ञ कुलवन्ती स्वरूपवन्त अपनी स्त्री ताको अनादर करि कुलटा पुंचली नीच वेद्यादिकन पर ऐसी प्रीति करेंगे जो दण्ड अपमानादि अनेक दुख पावतहू उसीमेंमन लगाये रहेंगे पुनः (परहिंसापरायणः) ईर्ष्या वैर अथवा पेटभरैहेत परजीव मारनेमें सदा लगे रहेंगे १० (देहे पुत्रात्मबुद्धयः) देहैबिषे आत्मबुद्धि राखेंगे अर्थात् सत् चित् आनन्द सदा एकरस जो आपनो सहज स्वरूप ताहि भूलि जो अनित्य नाशमान देह ताही को आत्मवत् सत्य माने हैं ताते (मूढानास्ति काः) देहके सुखहेत मूढ महाअज्ञानी नास्तीक होयेंगे अर्थात् वेदधर्मको अनादर करि तनसुखहेत अधर्म आचरण करनेलगेंगे कौनभांति (पशुबुद्धयःमातापितृकृतद्वेषाः) केवल अठार बिहारमें आसक्त इति पशुनकीसी बुद्धिहोगी माता पितासं विरोध करहिंगे पुनः (कामार्किकरास्त्रीदेवाः) कामके सेवक हवै स्त्रीको इष्टदेव मानि उसीकी सेवामें लगेरहेंगे ११ प्रथम समान प्राणी मात्रोंको कहि अब ब्राह्मणादि वर्णोंके बिलग आचरण कहते हैं यथा (विप्रालोभग्रहग्रस्ता) संसार सागरमें ब्राह्मणोंको तालोभरूप ग्राह नक्र सोई ग्रास करिलेइगा भाव ऐसालोभ अन्तरमें बढैगाजामें विचार बुद्धीलौप हवैजाइगी तब महालोभवश (वेदविक्रयजीविनः) वेदोंको बेचिकै जीविका करेंगे अर्थात् लेखकी करि अथवा खरीदिकरि ग्रंथोंको बेचना अथवा जो धन लाभ देखेंगे उसी में अभ्यास करेंगे अथवा धनलोभते नीच ऊंच विचारहीन जासों लाभ देखेंगे ताहीको वेद पढावेंगे सुनावेंगे इत्यादि रीतिते भोजन बसनादिको निबाह करेंगे पुनः (धनार्जनार्थं अभ्यस्त) धनके उपजावनेअर्थ विद्यामें अभ्यास करेंगे अर्थात् आपने धर्म कर्मकी तौ सूरति भी नकरेंगे जामें धनलाभ होते देखेंगे ताही विद्याको पढ़ेंगे पुनः (विद्यामदविमोहिताः) विद्याके मदमें विशेषि मोहितरहेंगे अर्थात् जो विद्या पढ़ेंगे उसीको चित्तमें हर्ष बढाये विचार चैतन्यतारहित रहेंगे १२ ॥

त्यक्तस्वजातिकर्माणः प्रायशः परवंचकाः क्षत्रियाश्च तथा वैश्याः स्वधर्मत्यागशीलिनः १३
तद्वच्छूद्राश्च ये केचिद्ब्राह्मणाचारतत्पराः ॥ स्त्रियश्च प्रायशो भ्रष्टा भर्तृवज्ञाननिर्भयाः १४
इवसुरद्रोहकारिण्यो भविष्यन्ति न संशयः ॥ ऐतेषां नष्टबुद्धीनां परलोकः कथम्भवेत् १५

(स्वजातिकर्माणः त्यक्तः परवंचकः प्रायशः तथा क्षत्रियश्च वैश्याः स्वधर्मत्यागशीलिनः) अपनी जाति के कर्म ब्राह्मणलोग त्यागिदेईंगे अर्थात् ब्राह्मणके कर्म यथा गीतायां । समोदमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जवमेव च ज्ञानं विज्ञानमास्ति कथं ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ इत्यादि अपनी जातिके कर्म सोतौ त्यागिदेईंगे अरु परवंचका परारे छलिबेहेत दम्भ कपट ज्योतिष बैदक तन्त्रादिक क्रियाप्रायशः अर्थात् बहुत प्रकारते करेंगे ताही भांति क्षत्रीलोग पुनः वैश्यलोग तेभी स्वधर्मत्याग शीलिनः आपने धर्मोंके त्याग में तत्पर रहेंगे अर्थात् क्षत्रीकर्म यथा । शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनं दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्मस्वभावजम् ॥ वैश्यकर्म यथा । रुपी गोरक्षवाणिज्यं वैश्यकर्मस्वभावजम् ॥ इत्यादि आपने कर्मनको त्यागि कुमार्ग रत भये १ (चतद्वत्तेशूद्राः केचित् ब्राह्मणाचारतत्पराः) यथा ब्राह्मणादि तिनहीं सम ये शूद्रहैं तेभी त्रिवर्ण सेवा अपना कर्म त्यागे हैं कोऊ ब्राह्मणोंकेसे आचार करतेहैं (चस्त्रियः प्रायशः भ्रष्टा भर्तृवज्ञाननिर्भयाः) पुनः स्त्रीलोग बहुतै भ्रष्ट होईंगी ते आपने पतिको अनादर करिबेमें निर्भय रहेंगी १४ (इवसुरद्रोहकारिण्यो भविष्यन्ति संशयः न) स्त्रीजन सासु इवसुरौ ते द्रोह करनेवाली होगी यामें संशय नहीं है (येतेषां नष्टबुद्धीनां कथं परलोकः भवेत्) येजो कहिआये जिनकी बुद्धि नाशभई तिनको कैसे परलोक में शुभगति होइगी अर्थात् शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मैथुनादि विषयन को सेवतसन्ते इन्द्रिन के सुखहेत नीच ऊंच अनेक संग करी ताते कामना बढी जाकेद्वारा कामना की हानि भई

तापर क्रोध भयो क्रोधते मोह अर्थात् अचेत भये शास्त्र गुरुउपदेश भूलिगये तब बुद्धि नाश भयो जीव नाशभयो यथागीतायाम् । ध्यायतो विषयान्पुंसःसंगस्तेषूपजायते । संगोऽसं जायते कामः कामात्क्रोधोभिजायते ॥ क्रोधाद्भवतिसम्मोहःसम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशादबुद्धिनाशोबुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ इत्यादि जिनकी बुद्धि नाशभई तिनको परलोक में शुभ गति कैसे हवे सक्ती है १५ ॥

इतिचिन्ताकुलंचित्तंजायतेममसन्ततम् ॥ लघूपायेनयेनैषांपरलोकगतिर्भवेत्
१६ तामुपायमुपाख्याहिसर्ववेत्तियतोभवान् ॥ इष्टवेषांवाक्यमाकर्ण्यप्रत्युवाचा
म्बुजासनः १७ साधुष्टुत्वासाधोवक्ष्येतच्छृणुसादरम् ॥ पुरात्रिपुरहंतारंपा
र्वतीभक्तवत्सला १८ श्रीरामतत्त्वंजिज्ञासुःप्रच्छविनयान्विता ॥ प्रियायैगि
रिशस्तस्यैगूढंव्याख्यातवान्स्वयम् १९ ॥

(इतिचिन्ताममचित्तंसन्ततंआकुलंजायते) नारद बोले कि जो मैं कहि आयोहों इसी चिन्ता करिकै मेरा चित्त सदा आकुलताको प्राप्तहोता है अर्थात् कलियुगी नष्टबुद्धी जीवनको कैसे परलोक वनी भाव नहीं बनसक्ता है सब धोर गतिको जायेंगे यहि चिन्ता करिकै मेरा चित्त सदा आकुलता को प्राप्तहोता है १६ निहंतु परोपकारता यही दयाहै ताको धारण किहे नारद बोले (येनलघुनाउपायेनएषांपरलोकेगतिःभवेत् तांउपायंउपाख्याहियतःभवान्सर्ववेत्ति) नारद बोले हे भगवन् जौनी थोरी उपाय करिकै इन कलियुगी जीवनको परलोकमें शुभगति प्राप्तहोइ तौन जो उपाय होइ ताहि कहिये इस हेतु आपसे पूछताहों जाते आप सर्व सिद्धान्त तत्त्वके जाननेवाले सर्वज्ञहौ अब सूतजी बोले (इति ऋषेः वाक्यं आकर्ण्य अम्बुजासनः प्रति उवाच) इत्यादि नारदऋषि की जो वाक्य है ताहि सुनिकै अम्बुजआसनः अर्थात् कमल है आसन जिनको ऐसे ब्रह्माजी नारदप्रति बोलतेभये अर्थात् जो थोरे उपायमें कलियुगी जीवनकी गतिबने तौन उपाय जो होय ताहि कृपाकरि कहिये काहेते आप सब तत्त्ववस्तुके जाननेवाले सर्वज्ञहौ सूतजीकहत कि पूर्वकहीहुई इत्यादि नारद ऋषि की वाक्य ताहि सुनिकै ब्रह्माजी नारदसों बोलते भये १७ (साधोत्वयासाधुष्टुत्वं) हे साधुपरोपकारी नारद तुमकरिकै जो प्रश्न किया गया सो भी साधु अर्थात् परोपकारी है (तत्त्वहंवक्ष्येत्वंसादरंशृणु) तुम्हारे प्रश्नको जो उत्तरहै ताहिहम कहतेहैं सो तुम सहित आदरमन श्रवण लगायकै सुनौ (पुरात्रिपुरहंतारंपार्वती) पूर्व किनी कालमें त्रिपुरासुरको नाशकरने वाले जो शिवजी तिन प्रति पार्वती जी प्रश्न किया कैसी हैं पार्वती (भक्तवत्सला) यथा छोटे बछवा परगऊ प्रीतिराखत इसी भांति भक्तन पर करुणा राखती हैं तिन ओता है प्रश्न किया अरु तीनिहूलोकन को महादुःख दायक जो त्रिपुरासुर ताको जिन एकहीवाणते मारि जननको आनन्द दिया ऐसे शिवजामें वक्ताहैं सो सम्वाद सुनिये १८ क्या पार्वतीजीने प्रश्नकिया सो कहत (श्रीरामतत्त्वंजिज्ञासुः) गुप्त श्रीरामतत्त्व जानवेकी इच्छा करिकै पार्वतीजी (विनयान्विताप्रच्छ) नम्रता पूर्वक पूछतीभई सो सुनि (तस्यैप्रियायै) तौनी पार्वती प्राण प्रिया तिनको समुभावनै अर्थ (गिरिशःस्वयं) शिवजी आपु (गूढंव्याख्यातवान्) जो अत्यंत गुप्त रहस्यहै ताको प्रसिद्ध समझायकै कहे अर्थात् परात्पर परब्रह्म साकेत विहारी की परिपूर्ण ऐश्वर्य ब्रह्मा विष्णु शिवादि नहीं जानिसके हैं यथा स्कंदपुराणे निर्वाण खण्डे विष्णु वाक्यं । अनन्ताशक्तयोरामप्रहृश्यतेतवप्रभो । तिनके नामरूप लीलायामकी महिमा कहनेमें वेदनेति नेतिकरत सोई रघुवंशनाथ हैं जब माधुर्य लीलाकरनेलगे तब काकभुशुंडि सती गरुड इत्यादिकनको

देखिभ्रम भया सोई रामतत्त्व जानिवेहेतु अधिकारी आर्चहै पार्वतीजी प्रश्न किया सो एक तौ भक्त वत्सला परोपकारी पुनः अत्यंत प्यारी हैं ऐसा जानि गुप्त रामतत्त्व को प्रसिद्ध करि शिवजी आपु कहे १९ ॥

पुराणोत्तममध्यात्मरामायणमितिस्मृतम् ॥ तत्पार्वतीजगद्धात्रीपूजयित्वादिवानि
शम् २० आलोचयंतीस्वानंदमग्नातिष्ठतिसांप्रतम् ॥ प्रचरिष्यतितल्लोकेप्राण्य
दृष्टवशाद्यदा २१ ॥

(पुराणोत्तमं) जो पुराणमें उत्तम (अध्यात्मरामायणं इति स्मृतं) अध्यात्मरामायण इत्यादि नाम विख्यात जानों (तत्पार्वतीजगद्धात्री) तेहि रामायणको पार्वती जगत्की माता (दिवानिशं पूजयित्वा) दिनों रात्रि पूजाकरती हैं अर्थात् जो अनादि कालतेहोइ ताको पुराण कही तिनविषे उत्तमभाव उत्पत्तिपालन प्रलय मन्वंतर वंशावली इत्यादि नवलक्षण पुराणनमें लौकिक कथा बहुत होती हैं अरु यामें ज्ञानयुत केवल श्रीरामयशहै ताते पुराणनते उत्तमहै अथवा जाके श्रवणमात्र ते धर्म उपजत चित्त शुद्धहै रामतत्त्वजानबेको ज्ञानहोत पुनः (आत्मनि अधिकृतं अद्वयात्मं) आत्म रूपविषे अधिकारजाहि ताहिकही अध्यात्म त्यहिविषे अयनमंदिरहै रघुनाथजीको अन्तर्यामी रूप ते वासकिहेहैं यथा रामतापिन्यां । रमंते योगिनो नंते सत्यानंदे चिदात्मनि । इति रामपदेना सौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥ सोई अन्तर्यामी रूपकी शुद्ध चित्ते प्राप्ती प्रतिपादनहै जहां ताको कहिये अध्यात्मरामायण इत्यादि याको नाम प्रसिद्धजानों तत् तौनी अध्यात्मरामायण की महिमा कैसी है जाको जगन्मातु पार्वतीजी दिनों राति पूजती हैं २० (आलोचयंती) रामरूपको अंतरके नेत्रनते अवलोकन करती हुई (स्वानंदमग्ना) अपने स्वरूपानंदमें वूड़ीहुई (सांप्रतं तिष्ठति) अबहुं विराजमान हैं अर्थात् कौनैभावते पार्वतीजी पूजती हैं सो कहत कि बाह्य नेत्रनते रामायणको देखि भावार्थ विचारती हैं अरु अन्तर दृष्टिते अन्तर्यामी रामरूपको अवलोकतमें अपने आत्मरूपके आनन्दमें अजहुं वूड़ीहुई विराजमान हैं (तत्प्राण्य दृष्टवशात् तल्लोके प्रचरिष्यति) तौन जो अध्यात्मरामायण है सो प्राणिनकी भाग्यवशते जौनेकाल लोकविषे प्रचारहोई अर्थात् ब्रह्माबोले कि हे नारद तुम्हारी प्रश्न अनुकूल कहताहौं जिसको गिरिजा पूजतीहैं तत् तौन जो अध्यात्म रामायण सो प्राणि लोक जनन की अदृष्ट भाग्यवश ते जौने काल लोक विषे प्रचार होई ताके श्रवण कीर्तन मात्रही ते कलियुगी निर्वुद्धी जननकी भी शुभगति है जायगी इति शेषः २१ ॥

तस्याध्ययनमात्रेण जनायास्यन्ति सद्गतिम् ॥ तावद्विजृम्भते पापं ब्रह्महत्यापुरस्सरम् २२ यावज्जगतिना अध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्कलिमहोत्साहो निशंकं संप्रवर्तते २३ तावद्यमभटाः शूराः संचरिष्यन्ति निर्भयाः ॥ यावज्जगतिना अध्यात्मरामायणमुदेष्यति २४ ॥

(तस्याध्ययनमात्रेण) तौनी अध्यात्मरामायणके पाठमात्रकरिकै (जनासद्गतिं यास्यन्ति) सामान्य जनभी उत्तमगति को जावेंगे (ब्रह्महत्यापुरस्सरम् पापम्) ब्राह्मणवधकी हत्या मुख्य आगे ताके पाछे लगेहुये यथा हिंसा चोरी परहानि पर अपवाद पर स्त्री गमन इत्यादि यायत् पाप हैं ते सब (तावद्विजृम्भते) जृम्भगात विनामे धातु है तामें पूर्व वि उपसर्ग अन्त ते प्रत्यय लगे विजृम्भते भया अर्थात् सब पाप तबैतक सब प्राणिन की देहपर जमुहाते हैं कबतक सो भाग कहत २२ (यावज्जगति)

जबतक जगत् विषे (अध्यात्मरामायणं न उदेष्यति) अर्थात् कलि कुचाल रात्री में पापरूप चौर तबै तक जनन को दुःख दायक हैं जबतक जगत् में अध्यात्मरामायण रूप सूर्यवत् प्रभा नहीं उदयहोत (तावत् कलिमहाउत्साहः) तबै तक कलियुग महाउत्साह मनमें बढ़ाये (निशंकं संप्रवर्तते) शंका त्यागे लोक में प्रवर्तत अर्थात् तबैतक कलियुग लोक विजयी वीरवत् महा उत्साह युद्ध करिवे की बड़ी हर्ष मनमें बढ़ाये अरु धर्मनीति विवेक विरागादिकोंकी शंकात्यागे जगत् जननमें आपनो अधर्म प्रभाव फैलावत रहैगो २३ (यमभटाः शूराः) यमराज के गण बड़े योधा शूर बने (निभर्याः संचरिष्यन्ति) भय त्यागे सम्पूर्ण लोकन में विचरि हैं (यावज्जगति अध्यात्मरामायणं न उदेष्यति) अर्थात् सतयुगादि में हरिहर के पार्षदन की भय राखतेरहैं तिन सबलन सों युद्धमें प्राणघातकी शंकाते शूर वीर नहीं बनतेरहैं अरु कलियुग में तौ अधर्मको प्रचार तहां हरिहर पार्षद किसहेत जाय ताते यम राज के गण बड़े योधा शूर बने तबतक निडर सब लोकन सें घूमत रहिहैं जब तक अध्यात्मरामायण रूप सूर्यवत् प्रभा लोक में नहीं उदयहोत २४ ॥

यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्सर्वाणिशास्त्राणिविवदन्ति परस्परम् २५ यावज्जगतिनाध्यात्मरामायणमुदेष्यति ॥ तावत्स्वरूपं रामस्य दुर्वोधं महतामपि २६ ॥

जबतक अध्यात्मरामायण रूप सूर्यवत् प्रभा नहीं उदय होती है (तावत्सर्वाणिशास्त्राणि परस्परं विवदन्ति) तबतक मीमांसादि सब छवो शास्त्र आपुसमें विरोधि वाद करते हैं यथा मीमांसा कहत कि यज्ञादि उत्तम कर्म करि देवलोक में फलभोग यही मुक्ति है पातंजलि योगशास्त्र कहत कि ईश्वर ते जीव न्याय है ईश्वरकी सेवा करि मुक्तिहोत सांख्यकहत कि प्रकृति पुरुष सब तत्त्वनको ज्ञान भये सब एकही हैं सोई मुक्ति है न्याय कहत यथा कुम्हार माटी ते अनेक पात्र बनावत तथा कर्ता कारण पाय सब पदार्थ रचत तामें प्रमेय प्रमाणादि पदार्थ ज्ञान सोई मुक्ति है वैशेषिक कहत कि जगत् काल के आधीन है निवृत्त धर्मज्ञान मुक्ति है वेदांत कहत कि जीव ब्रह्म एकही माया आवरण ते भिन्न देखात आवरण मिटना मुक्ति है इत्यादि शास्त्रनको परस्पर विवाद तबैतक है जबतक अध्यात्म रामायण नहीं देखता है भाव याके देखे ते आत्मरूप ज्ञान ते परब्रह्म परमात्मा अन्तर्यामी रामरूप को ज्ञान होत सन्ते सब शास्त्रनको मत उसी को अंग हवैं जाते हैं २५ यावत् अध्यात्मरामायणना (तावत् रामस्य स्वरूपं महतां अपि दुर्वोधं) तबतक रघुनाथजीके स्वरूपका बोधहोना शास्त्रज्ञा नीमहात्मनको भी दुर्गम है अर्थात् अध्यात्मरामायणको भावार्थ जबतक हृदयमें सूर्यवत् प्रकाश नहीं करता तब तक जो शास्त्रज्ञानभी है तबहुं श्रीरामरूपको यथार्थ ज्ञान नहीं है सकाई इसीते सब विवाद करते हैं अरु जब श्रीरामरूपको बोधभया तब सबै शास्त्र अंगकरि देखाते हैं यथा भारतादौ टीकायां नीलकंठाचार्येणोदपद्यमुक्तं तत्राहं बाह्यः स्तेनाभिभाषी बहिरुदवसितयाति तर्कोऽप्रतिष्ठो मीमांसाप्रातिहार्यं भजति गुणगणयस्थसंख्यातिसंख्यः हृत्पीठयोगशुद्धो निहितमुपनिषदाहृतं देरलंबो भाग्यं श्रीलक्ष्णार्यो जगति विजयते यस्य लेशादि शिवाद्याः अस्य इलोकस्यार्थः स्तेनाऽभिभाषी प्रच्छन्नबौद्धः यः वस्त्रेण मुखं ध्वा आच्छाद्य भापते स प्रच्छन्नबौद्धः यत्र स दसिवाहयः अंतरे प्रवेशं करोति किंतु बहिः स्थितो भवति बहिरुदवसितः अर्थात् बौध्मतजाके धाम के भीतर नहीं जाय सकत बाहरै खड़े रहत भाव जो रामरूपको ज्ञान हावै तौ सौ भाविकही आपना मत त्यागकरै पुनः वेदाविरुद्ध स्तर्कः तर्कशास्त्रं यत्र अप्रतिष्ठः प्रतिष्ठाराहित्यं याति अर्थात् वैशेषिक न्याय शास्त्र अनादरते द्वारपरे है पुनः मीमांसा शास्त्रं

यत्रसदासि प्रातिहार्यं भजति द्वारपालकत्वंकुरुते सांख्यः शास्त्रं यस्य गुणगणं गुणसमूहं संख्यातिसं
ख्याकरोति योगशुद्धे योगश्चित्तवृत्तिनिरोधस्तेन शुद्धे हृत्पीठे हृदयकमले उपनिषद्वाहवृन्दे निर्गमैर्नि
हितस्थापितं मे परं भाग्यं सर्वोत्कृष्टविराजमानराजधिराजकिशोरः श्रीरामवन्द्रः जगति लोके विजय
ते सर्वोत्कृष्टतया विराजते यस्य लेशः शिवाद्याः देवाः संति २६ ॥

अध्यात्मरामायणसंकीर्तनश्रवणादिजम् ॥ फलंवक्तुं न शक्नोमि कात्स्न्येन मुनिसत्तम २७
तथापि तस्य माहात्म्यं वक्ष्ये किञ्चित्तवानघ ॥ शृणु चित्तं समाधाय शिवेनोक्तं पुरामम २८

(मुनिसत्तम) मुनिन में श्रेष्ठ हेनारद अध्यात्मरामायण को (संकीर्तनश्रवणादिजं फलम्)
संपूर्ण पढ़ने सुनने को जैसा फल है (कात्स्न्येन वक्तुं शक्नोमि) संपूर्ण कहने को समर्थ हम नहीं
हैं अर्थात् ब्रह्मा बोले कि मुनिन में उत्तम हेनारद अध्यात्मरामायण संपूर्ण पढ़ने तथा सुनने को
जैसा फल है सो संपूर्ण तौ हमहूँ नहीं कहिसके हैं २७ (तथापि पुरामम शिवेन उक्तं) संपूर्ण कहने
को समर्थ नहीं हौं तौ भी पूर्वकालमें मोंसो शिवजीने कहा है (तस्य माहात्म्यं किञ्चित्) त्यहि अध्या
त्म रामायण को माहात्म्य कछु थोरा (हे अनघ तव वक्ष्ये) हे पापरहित तुमते हम कहव (चित्तं समा
धाय शृणु) चित्तको सावधान करि सुनौ अर्थात् ब्रह्माजी कहत कि संपूर्ण कहने को तौ हम समर्थ
नहीं हैं तौ भी पूर्वकालमें मोंसो जां शिवजीने कहा है सो अध्यात्मरामायण को माहात्म्य कछु
थोरा तुमते हम कहव हे अनघ निः पाप नारद तुम चित्तको स्थिर करि सुनिये २८ ॥

अध्यात्मरामायणतः श्लोकं श्लोकार्द्धमेव वा ॥ यः पठेद्भक्तिसंयुक्तः स पापान्मुच्य
तैक्षणात् २९ यस्तु प्रत्यहमध्यात्मरामायणमनन्यधीः यथाशक्ति वदेद्भक्त्या स जी
वन्मुक्त उच्यते ३० यो भक्त्या रचयतेऽध्यात्मरामायणमतन्द्रितः ॥ दिने दिनेऽश्वमे
धस्य फलं तस्य भवेन्मुने ३१ ॥

(श्लोकं वा एव श्लोकार्द्धं) एकश्लोक अथवा निश्चय करिकै आया श्लोक (यः भक्तिसंयुक्तः प
ठेत्) जो भक्तिसमेत पढ़ता है (तैक्षणात् पापान्मुच्यते) सो क्षण भरेमें पापते छूटि जात अर्थात्
अध्यात्म रामायण को एकश्लोक यथा यः पृथ्वीभरवारणायदिविजैः संप्रार्थितश्चिन्मयः संजातः
पृथिवीतले रविकुले मायामनुष्योऽन्ययः । निश्चक्रं हतराक्षसः पुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यं स्थिरां कीर्तिं
पापहरां विधाय जगतां तं जानकीशं भजे ॥ पुनः अर्द्धश्लोक ॥ आनन्दसांद्रममलं निजबोधरू
पं सीतापतिं विदिततत्त्वमहं भजामि । इत्यादि भक्तिसंयुत अर्थात् सबको भरोसा त्यागि शुद्ध
चित्त प्रेमसमेत जो पढ़े तौ एक क्षण भरे में पापनते छूटि शुद्ध रामसनेही हवै जाय २९ (तु पुनः यः
अनन्यधीः) जो अनन्य बुद्धिते (प्रतिग्रहं अध्यात्मरामायणं) प्रति दिन अध्यात्मरामायण जो है
ताहि (यथाशक्ति भक्त्या वदेत्) जैसी अपना को शक्ति होइ तेतनी समय भक्ति करि पढ़े (स जीवनमुक्त
उच्यते) सो जीवनमुक्त कहिवे योग्य है अनन्यथा ॥ न विधिर्न निषेधश्च प्रेमयुक्तं रघूत्तमम् । इन्द्रियाणां
संभावः स्यात्सोऽनन्योपासकः स्मृतः ॥ इत्यादि अनन्य बुद्धिते प्रतिदिन रोज रोज अध्यात्मरामायण
को अपनी शक्तिभरि शुद्ध हृदय प्रेमसमेत पढ़ता है सो जीवनमुक्त जीवतही वाकी मुक्ति है ऐसा
कहिवे योग्य है ३० (यो अतन्द्रितः) जो आलस त्यागिकै (भक्त्या रचयते) अध्यात्मरामायण को
भक्ति करिकै पूजन करता है (हे मुने तस्य दिने दिने) हे नारद मुनि तेहिको रोज रोज (अश्वमेधस्य
फलं लभेत्) अश्वमेध यज्ञ करनेका फल होता है अर्थात् जो आलस त्यागि भक्तिकरिकै प्रेमते नित्य

अध्यात्मरामायणको पूजताहै हे नारद ताको रोजरोज अवमेध यज्ञ करने कैसे फल मिलताहै ३१ ॥

यदृच्छयापियोऽध्यात्मरामायणमनादरात् ॥ अन्यतःशृणुयान्मर्त्यःसोपिमुच्येत
पातकात् ३२ नमस्करोतियोऽध्यात्मरामायणमदूरतः ॥ सर्वदेवार्चनंफलंसम्प्रा
प्नोतिनसंशयः ३३ लिखित्वापुस्तकेऽध्यात्मरामायणमशेषतः ॥ योदद्याद्रामभ
क्तेभ्यस्तरयपुण्यफलंशृणु ३४ अर्धीतेषुचवेदेषुशास्त्रेषुव्याकृतेषुच ॥ यत्फलं
दुर्लभंलोकेतत्फलन्तस्यसम्भवेत् ३५ ॥

(यदृच्छया) यथा यदृच्छा स्वैरिता हेतु शून्या त्वास्या विलक्षणमित्यमरः अस्यार्थः यदृच्छास्वै-
रिता द्वे स्वच्छन्दतायाः हेतु शून्यः कारण रहिता अर्थात् सुनबेकी इच्छा नहीं है परन्तु यदृच्छाकरके
अकस्मात् किसी बक्ताके पास जायपरे (अनादरात् अन्यतः) अनादरते औरके मुखते (शृणुयान्म
र्त्यः) अध्यात्म रामायणको जो सुनताहै मनुष्य (सः अपि पातकात्मुच्येत) सो निश्चय करिकै पापते
छूटिजाता है अर्थात् दैवयोग जो कथाके समीप लायपरा विनाश्रद्धा अनादरते काहूके मुखते अध्या-
त्मरामायण को सुनिर्लीन जो मनुष्य सो भी निश्चय करिकै पापोंते छूटि शुद्धहोताहै ३२ (यः अदू-
रतः नमस्करोति) अध्यात्मरामायण जोहै ताहि जो अदूरभाव समीप जाइके नमस्कारमात्र करि
लेताहै ताको (सर्वदेवार्चनंफलंप्राप्नोतिनसंशयः) गणेश देवी सूर्यादिग्रह शिव विष्णु इत्यादि सब
देवन के पूजन करिवे को फल प्राप्तहोताहै केवल प्रणाममात्र ते यामें संशय नहीं ३३ (अशेषतः
अध्यात्मरामायणंपुस्तकेलिखित्वा) कोई दलोक बाकी न रहै संपूर्ण अध्यात्मरामायण जो है ताहिपुस्तक
बिषे लिखिकै (रामभक्तेभ्यः यः दद्यात्तस्यपुण्यफलंशृणु) निज लिखी पुस्तकको श्रीरामभक्तनके
अर्थ जो दैदेताहै तामें जैसी पुण्यफल होताहै ताहि शृणुसुनिये अर्थात् संपूर्ण अध्यात्म रामायण
पुस्तकमें आपने हाथते लिखिकै जो रामभक्तनको पढ़ने अर्थ देताहै तामें जैसी पुण्यफल होताहै
सो सुनिये ३४ (वेदेषुअर्धीतेषुचशास्त्रेषुव्याकृतेषु) वेद पाठ करने बिषे पुनः शास्त्रव्याख्यान करने
बिषे (लोकेयत्फलंदुर्लभंतत्फलंतस्यसंभवेत्) सहित अंग सब वेदनके पढ़नेमें पुनः सब शास्त्रन
को व्याख्यान करनेमें लोकमें जो फल दुर्लभहै सुगम नहीं मिलिसक्ताहै तौन फल ताको संपूर्ण
प्रकार प्राप्तहोताहै जो लिखिके पुस्तक रामभक्तोंको दैदेताहै ३५ ॥

एकादशीदिनेऽध्यात्मरामायणमुपोषितः ॥ योरामभक्तःसदसिव्याकरोतिनरो
त्तमः ३६ तस्यपुण्यफलंवक्ष्येशृणुवैष्णवसत्तम ॥ प्रत्यक्षरंतुगायत्रीपुरश्चर्या
फलंभवेत् ३७ उपवासव्रतंकृत्वाश्रीरामनवमीदिने ॥ रात्रौजागरितोऽध्यात्म
रामायणमनन्यधीः ३८ यः पठेच्छृणुयाद्वापितस्यपुण्यंवदाम्यहम् ॥ कुरुक्षेत्रा
दिनिखिलपुण्यतीर्थेष्वनेकशः ३९ ॥

(एकादशीदिनेउपोषितः यः नरोत्तमः रामभक्तः तदसि अध्यात्मरामायणं व्याकरोति) एकादशी के
दिन व्रतकरि जो उत्तम मनुष्य श्रीरामभक्तके मन्दिबिषे अध्यात्म रामायणको अर्थ सहित पाठक-
रताहै ताको फल आगे कहत ३६ (तस्यपुण्यफलंवक्ष्येशृणुवैष्णवसत्तमशृणु) ताके पुण्यको जो फल
है ताहि हम कहते हैं वैष्णवनमें उत्तम हेनारद सुनिये (गायत्रीतुपुनः प्रतिअक्षरं पुरश्चर्याफलंभवेत्)
गायत्रीको जापपुनः ताके अक्षर प्रतिलक्ष गायत्री जापपुरश्चरण करने कैसे फल होताहै अर्थात् ए-

कादशीके दिन सहित अर्थ पाठहै ताके पुण्यको जो फलहै ताहि हम कहतेहैं हेनारद सुनिये चौबि-
सलक्ष गायत्री पुरश्चरणरीति जपकरने कैसेफल होताहै ३७ (श्रीरामनवमीदिनेउपवासव्रतंरुत्तरा
त्रौजागरितः) श्रीरामनवमी दिनविषे निराहार व्रतकरै रातिविषे जागरणकरै सोवै नहीं (अन-
न्यधीः) अनन्य बुद्धिते अध्यात्म रामायण जोहै ताहि ३८ (यःपठेत्वाशृणुयात्अपितस्यपुण्यंअहं
वदामि) जो पढ़ै अथवा सुनै निश्चयकरि ताकी जो पुण्यहै ताहि हम वर्णन करते हैं (कुरुक्षेत्रादि
निखिलपुण्यतीर्थेषुअनेकशः) कुरुक्षेत्र पुष्कर नैमिषारण्य हरद्वार मथुरा काशी प्रयागादि जो बहुत
से पुण्य तीर्थ संसारमें है तिनविषे अनेक भांति जो धर्म कर्म करनाहै इतिशेषः अर्थात् अनन्यता
सहित जो रामायण पढ़ताहै वा श्रवण करताहै निश्चय करिताकी जो पुण्य है ताहि हम कहते हैं
यथा कुरुक्षेत्रादि पुण्य तीर्थन बिषे अनेक भांतिके सत्कर्म करना सो आगे कहत ३६ ॥

आत्मतुल्यंधनंसूर्यग्रहणोसर्वतोमुखे ॥ विप्रेभ्योव्यासतुल्येभ्योदत्वायत्फलमश्नु
ते ४० तत्फलंसंभवेत्तस्यसत्यंसत्यंसंशयः ॥ योगायतेमुदाध्यात्मरामायण
महर्निशम् ४१ आज्ञांतस्यप्रतीक्षन्तेदेवाइन्द्रपुरोगमाः ॥ पठन्प्रत्यहमध्यात्म
रामायणमनुव्रतः ४२ यद्यत्करोतितत्कर्मततःकोटिगुणंभवेत् ॥ तत्रश्रीराम
हृदयंयःपठेत्सुसमाहितम् ४३ ॥

(सूर्यग्रहणोसर्वतोमुखे) सूर्य ग्रहण परत समय जलमें खड़े हैकै (आत्मतुल्यंधनं) आत्मतुल्य
प्रिय अथवा तौलमें देहकी बराबर सोना चांदी इत्यादि जोहै धनताहि (विप्रेभ्योव्यासतुल्येभ्योद-
त्वा) जेब्राह्मण व्यासकी समान भाव जिन राज्य नहीं ग्रहण किया ऐसा त्यागी तपस्वी होय तिन
के अर्थ दान दीन्हेते (यत्फलमश्नुते) जैसा फल व्याप्तहोताहै सर्वतो मुख यथा कबंध मूदकंपाथः
पुष्करंसर्वतोमुखम् इत्यमरः अर्थात् सूर्यग्रहण परत समय में कुरुक्षेत्रमें तडागमध्ये जलमें खड़ेहैकै
आत्मतुल्य धनको व्यासतुल्य ब्राह्मणके अर्थ दान देनेते जैसा फल व्याप्तहोताहै ४० (तत्फलंसंभवेत्
भवेत्) तैसेही फल ताको होताहै जो नवमी व्रतकरि रामायण पढ़ताहै (सत्यंसत्यंसंशयः) सत्य
सत्य हम कहते हैं यामें संशय नहीं है (यःअहर्निशमध्यात्मरामायणमुदागायते) जो प्राणी दिनो राति
अध्यात्म रामायण जोहै ताहि सहज आनन्दते गावताहै यह गैधातुहै गायति चाहिये गायते आर्ष
पदहै ४१ (तस्यआज्ञांइन्द्रपुरोगमाःदेवाःप्रतीक्षन्ते) जो आनन्दते सदा गावताहै ताकी आज्ञाजोहै
ताहि इन्द्रहै अग्रणीय जिनमें ऐसे सब देवता प्रतीक्षा करतेहैं अर्थात् नित्य अध्यात्म रामायण पाठ
करने वाले प्रति देव सब मनमें यही इच्छाराखते हैं कि हम सों कछु आज्ञाकरै सो कार्यकरि हम भी
रुतार्थ होवैं पुनः (प्रतिअहमध्यात्मरामायणंपठन्अनुव्रतः) प्रति दिन रोजरोज अध्यात्म रामायण
पढ़ने पर तत्पररहत भाव नित्यक्रियामानि पाठकरताहै ताको फल आगे कहत ४२ (यद्यत्करो-
तितत्कर्म) सत्कर्म जो जो करताहै तौन जो कर्महै (ततःकोटिगुणंभवेत्) तिहिते कोटिगुण अधिक
फलहोत अर्थात् जो नित्यनेम करि अध्यात्म रामायण पाठकरत सो पूजापाठ जपदान व्रततीर्थादि
जो जो सत्कर्म करत सो करोरि गुण अधिक फलदायक होत (तत्रश्रीरामहृदयं) तौनी अध्यात्म
रामायणमें जो रामहृदयहै ताहि (सुसमाहितम्पठेत्) सुन्दर सावधान चित्त श्रद्धासमेत जे पाठकर-
तेहैं ताको फल आगे कहत ४३ ॥

सब्रह्मघ्नोपिपूतात्मानिभिरेवदिनैर्भवेत्॥श्रीरामहृदयंयस्तुहनुमत्प्रतिमान्तिके४४॥

त्रिपठेत्प्रत्यहं मौनी सर्वेप्सितभागभवेत् ॥ पठन् श्रीरामहृदयं तुलस्यश्वत्थयो र्य
दि ४५ प्रत्यक्षरं प्रकुर्वीत ब्रह्महत्यानिवर्तनम् ॥ श्रीरामगीता माहात्म्यं कृत्स्नं
जानातिशंकरः ४६ ॥

(सत्रह्यघ्नः अपि त्रिभिः दिनैः एव पूतात्मा भवेत्) जो निश्चय करिकै ब्राह्मणको घात भी किया है सोऊ रामहृदय पढते तीनिही दिन करिकै पवित्र आत्मा जरूरही है जाई (तु पुनः यः हनुमत्प्रति-
मा अन्तिके) पुनः जो प्राणी हनुमान्जीकी मूर्तिके समीप (श्रीरामहृदयं) ४४ प्रतिअहं मौनी त्रिपठे-
त्) प्रतिदिन मौन रहि तीनिवार पाठकरै (ससर्वेप्सितभागभवेत्) सो सब मनोरथ को भागीहोइ अ-
र्थात् जो मनुष्य हनुमान्जीकी मूर्तिके लगबैठि सब वार्ताते चुपहै श्रीराम हृदयको रोज तीनिवार
पाठकरताहै सो सब मनोरथ पूर्ण करि पावत (यदि तुलसी अश्वत्थयोः श्रीरामहृदयं पठन्) ४५ अथवा
तुलसी वा पीपरके वृक्ष निकट जो श्रीरामहृदय की पाठ करताहै सो (प्रतिअक्षरं ब्रह्महत्यानिवर्त-
नं प्रकुर्वीत) एक एक अक्षर प्रति ऐसी पुराय होती है जो ब्रह्महत्यादिको निवृत्तिकरत इहां पुरश्चरण
की विधी वर्णन कीन्हे तामें कछु लिखतहैं यथा फाल्गुन ज्येष्ठ भाद्र भगहन इत्यादि उत्तममास शुक्ल
पक्ष ५।७।१०।११।१३। ये तिथी अश्विनी रोहिणी मृगशिरा पुनर्वसु पुष्य अनुराधा धनिष्ठा ये
नक्षत्र रविचन्द्र गुरुवारको योगिनी पीछे चन्द्रमा सन्मुख चन्द्रतारा शुद्ध इत्यादि मुहूर्त्तशोधि ब्रह्म-
चर्य मिताहारी शौचतेरहि हनुमान्जीकी प्रतिमाके उत्तर भूमिलीपि कूर्मचक्र लिखितापर आसनी
बिछाय पूर्व मुख बैठि कलशस्थापि शुद्ध मनते श्रीरामहृदयकी तीनिपाठै रोजकरै याते धरणीधन
धाम जयबंध मोचन रुजहानि पुत्र प्राप्ति इत्यादि जो मनोरथ होइ सो संकल्प करि राममंत्रकी सी
न्यासध्यान करि तब पाठकरै तीनिमास में मनोरथ पूर्णहोइ शीघ्रताचाहै तो अधिक पाठकरै इसी
भांति घोर रोग नवग्रह भूत बाधा ब्रह्मदोषादि निवारण हेतु तुलसी वा पीपरके पास पाठकरै इसी
भांति समग्र अध्यात्म रामायणको पुरश्चरण पूर्व ब्रह्मलोकोमें विचारिये पुनः जो श्रीरामगीताको
माहात्म्यहै सो (कृत्स्नं) संपूर्ण श्रीशिवजी जानतेहैं ४६ ॥

तदर्द्धगिरिजावेत्ति तदर्द्धवेद्म्यहं मुने ॥ तत्ते किंचित्प्रवक्ष्यामि कृत्स्नं वक्तुं न शक्य
ते ४७ तद्ज्ञात्वा तत्क्षणाल्लोकश्चित्तशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ श्रीरामगीतायत्पापं
न नाशयति नारद ४८ तन्न नश्यति तीर्थादौ लोके कापि कदाचन ॥ तन्न पश्याम्यहं
लोके मार्गमाणापि सर्वदा ४९ रामेणोपनिषत्सिंधुमुन्मथ्योत्पादितां मुदा ॥ ल
क्ष्मणायापि तां गीतां सुधापीत्वा मरिभवेत् ५० ॥

(तदर्द्धगिरिजावेत्ति) तेहि का आधा पार्वती जानती हैं (हे मुने तदर्द्ध अर्द्धवेदि) हे मुनि ताको
आधा हम जानते हैं अर्थात् ब्रह्माजी कहत कि हे नारद श्री रामगीताको जैसा माहात्म्य है सो
सम्पूर्ण तो केवल शिवजी जानते अरु आधा पार्वती जानती हैं अरु चतुर्थीश हम जानते हैं ताते
(कृत्स्नं वक्तुं न शक्यते) सम्पूर्ण माहात्म्य कहने को नहीं समर्थ है परन्तु (तत् किंचित् ते प्र-
वक्ष्यामि) तिसमें से कछु थोरा तुमसे हम वर्णन करतेहैं ४७ (यद्ज्ञात्वा लोकः तत्क्षणाल्लोकश्चित्तशुद्धि-
मवाप्नुयात्) जोने श्रीरामगीता को सिद्धान्ततत्त्व को जानेते लोकजन क्षणैभरे में चित्तशुद्धि
ताको प्राप्तहोत पुनः (हे नारद यत् पापं श्रीरामगीता न नाशयति) जोने पापन को श्री रामगीता
नहीं नाश करत ताको ऐसा जानौ सो आगे कहत ४८ (तत् लोके कापि तीर्थादौ कदाचन न

नश्यति) तौने पापन को लोक विषे कौनौ तीर्थादि कवहूँ नहीं नाश करिसकता है अर्थात् जोने पापनको श्रीरामगीता श्रवण पाठादि नहीं नाशकरत तौने पापन को नाशकर्त्ता लोकमें तीर्थादि ऐसा कोई नहीं है जहां ग्रहणादि पर्वी पाय स्नान दानादि करि पाप नाश हवैसकै कहेंते यहवात हम कहते हैं कि (सर्वदा मार्गमाणा अपि लोके तं अहं न पश्यामि) अर्थात् जा भांति श्रीराम-गीता पापमात्र को नाशकरताहै ताकी समताको तीर्थादि दूसरा पदार्थ सब काल में सर्वत्र ढूँढा निश्चय करिकै लोकविषे ताहि हम नहीं देखा जो गीताकी तुल्य होय ४९ कौन भांति यहगीता उत्पन्न भया सो कहत (उपनिषत्सिंधु) वेदान्त की उपनिषत् रूप जो समुद्र है ताहि (रामेण उ-न्मथ्य उत्पादितां) श्री रघुनाथजी करिकै मथन किया गया तहांते उत्पन्न भया (तां सुशान्त लक्ष्मणाय अर्पितां) ताहि आनन्द समेत लक्ष्मणजीके अर्थ देते भये (तां गीतां पीत्वा अमरो भवेत्) ताहि गीतारूप अमृत पान करि लोग अमर होते हैं अर्थात् जाभांति विष्णु भगवान् देवतनहेतु पयोनिधि मयि अमृत उत्पन्न कीन्हें ताको पान करि देवता अमर भये तथा वेदान्तशास्त्रमें यावत् उपनिषदें हैं ते समुद्रहैं ताको श्री रघुनाथजी मयिकै अवलोकन करिके श्रीरामगीतारूप अमृत उत्पन्न करि पुनः अत्यन्त प्रिय जानि आनन्द समेत लक्ष्मणजीको दिया सोई श्रीरामगीता रूप अमृत जो मनुष्यादि पान करताहै भाव वाको सिद्धान्त हृदय में धारण करता है सो मुक्ति रूप अमरता को प्राप्त होता है ५० ॥

जमदग्नि सुतः पूर्वकार्तवीर्यबधेच्छया ॥ धनुर्विद्यामभ्यसितुं महेशस्यांतिके वस
नू ५१ अधीयमानां पार्वत्यां रामगीतां प्रयत्नतः ॥ श्रुत्वा गृहीत्वा सुपठन् नारायण
कलामगात् ५२ ब्रह्महत्यादिपापानां निष्कृतिं यद्विच्छति ॥ रामगीतां मास
मात्रं पठित्वा मुच्यते नरः ५३ ॥

(पूर्वजमदग्नि सुतः) पूर्वकालमें, जमदग्नि ऋषिके पुत्र परशुराम ने (कार्तवीर्यबधेच्छया) सहस्रबाहु के मारने की इच्छा करिकै (महेशस्य अन्तिके वसन् धनुर्विद्यां अभ्यसितुं) श्रीमहादेव जीके समीप बसि धनुषविद्या जोहै ताहि पढ़े अर्थात् पूर्वकाल जासमय परशुरामजी सहस्रबाहु को नाशकी इच्छा करिकै श्रीमहादेवजीके पास वाणाविद्या पढ़ते रहे ताही समय में ५१ (पार्वत्या प्रय-त्नतः रामगीतां अधीयमानां) पार्वती करिकै पुष्ट विधिपूर्वक श्री रामगीता जोहै ताहि पठन होता रहै ताको (श्रुत्वा गृहीत्वा सुपठन् नारायण कलां अगात्) पार्वतीजी के सुखते सुनि ग्रहण करि पढ़त में नारायण की कला आय व्यापी अर्थात् पार्वतीजीको पढ़ते सुनि परशुरामो प्रार्थना करि उन्हींते पढ़ि कछुकाल पाठ करते रहे सोई श्रीरामगीताके प्रभावते नारायण की कला परशुराम में आय प्रवेश भई ताते आवेशा अवतारन में गिने गये ५२ (यदि ब्रह्महत्यादि पापानां निष्कृतिं विच्छति) भाव जो कोऊ ब्रह्महत्यादि पापन को छुड़ावने की इच्छा करै (मासमात्रं रामगीतां पठित्वा नरः मुच्यते) एक महीना भरि श्री रामगीता को पाठ करै सो मनुष्य ब्रह्महत्यादि पापनते छूटि जाय शुद्ध होवै ५३ ॥

दुष्प्रतिग्रहदुर्भोज्यदुरालापादिसम्भवम् ॥ पापं यत्तत्कीर्तनेन रामगीताविनाश
यत् ५४ शालग्रामशिलाग्रे च तुलस्य श्वत्थसन्निधौ ॥ यतीनां पुरतस्तद्ब्रह्म रामगी-
तां पठेत्तु यः ५५ तत्तत्फलमवाप्नोति यद्वाचोपनिगोचरम् ॥ रामगीतां पठेद्ब्रह्म

यःश्राद्धेभोजयेद्द्विजम् ५६ तस्युतेपितरःसर्वेयान्तिविष्णोःपरम्पदम् ॥

(दुष्प्रतिग्रह) दुष्टनके हाथ दानलेना (दुर्भोज्य) दुष्टके घर भोजनकरना (दुर्लापादिसम्भ-
वंयत्पापं) दुष्टन कैसी वार्ता करना इत्यादि कर्मन करि उत्पन्न जो पाप होते हैं (तत् रामगीतां
कीर्तनेन नाशयति) तौन सबपाप श्री रामगीता के पाठ करिके नाश होते हैं अर्थात् चोरी ठगी
परहानि, हिंसा इत्यादि करनेवाले जे दुष्ट तिनके हाथ दान लीन्हें वा उनके घरमें भोजन करते
वा कुदान प्रेतभन्नादि अथवा वेदशास्त्र साथ ब्राह्मणादि की निन्दा करना गुरुजनादि को अनादर
इत्यादि कर्मन करि जो पाप उत्पन्न होतेहैं तौन सब आ रामगीताके पाठ करनेते नाश होतेहैं ५४
(शालग्रामशिलाग्रये) शालग्राम स्वरूप आसनके आगे स्थापित करि (चपुनः तुलसी अश्वत्थ
सन्निधौ) पुनः तुलसी वा पीपर वृक्ष के पास (तद्वत् यतीनां पुरतः यः रामगीतां पठेत्) पुनः
ताही भांति संन्यासिन के आगे जो श्री रामगीता पढ़ता है ५५ (तत् तत् फलं अवाप्नोति)
ताको तौन फल प्राप्त होताहै (यत् वाचः अपि गोचरं न) जो निश्चय करि वचन के विषय में
नहीं आवता है अर्थात् शालग्राम तुलसी पीपर संन्यासी इत्यादि के समीप जो कोऊ रामगीताको
पढ़ता है ता पुरुष को जेना फल प्राप्तहोताहै सो कहते नहीं बनता है (पुनः यः भक्त्या रामगीतां
पठेत् श्राद्धे द्विजम् भोजयेत्) जो पुरुष भक्ति करिके अर्थात् प्रेमभावते श्रद्धा समेत श्री रामगीता
जो है ताहि पढ़त अरु श्राद्ध के दिन द्विज जो ब्राह्मण ताहि भोजन करावत ५६ (तस्य पितरः
सर्वे ते विष्णोः परंपदं यान्ति) ताके पितर सब ते भगवान् के परमपद को जातेहैं अर्थात् श्राद्धके
दिन रामगीता पाठ करे भक्ति सहित अरु उत्तम ब्राह्मणन को भोजन करावै ताके पिता पितामह
प्रपितामह माता महामाता वृद्धप्रमाता तथा नानी नानादि सब परम्पद को जायँ ॥

एकादश्यांनिराहारोऽनियतोद्वादशीदिने ५७ स्थित्वागस्त्यतरोर्मूलेरामगीतांप
ठेत्तुयः ॥ सएवराघवःसाक्षात्सर्वदेवैश्चपूज्यते ५८ विनादानंविनाध्यानंविना
तीर्थावगाहनम् ॥ रामगीतांनरोधीत्यतदनन्तफलंलभेत् ५९ बहुनाकिमिहो
केनशृणुनारदतत्त्वतः ॥ श्रुतिस्मृतिपुराणेतिहासागमशतानिच अर्हतिना
ल्पमध्यात्मरामायणकलामपि ६० ॥

(एकादश्यांनिराहारो) एकादशी के दिन निराहार व्रतकरे (नियतोद्वादशीदिने) ब्रह्मवर्षी-
दि नियम सहित द्वादशी के दिन ५७ (तु अगस्त्य तरोर्मूले स्थित्वा) पुनः अगस्त्य वृक्षके तरे
जरन समीप बैठि (यः रामगीतां पठेत्) जो श्रीरामगीता पाठ करताहै (सएव साक्षात् राघवः)
सो साक्षात् श्रीरघुनाथजी की तुल्य हांवै (चदेवैःपूज्यते) पुनः देवन करिके पूजन करिबे योग्य
होवै अर्थात् जो निराहार एकादशी व्रत करि नेमसहित द्वादशी को अगस्त्य वृक्ष तर श्रीरामगीता
पाठ करत सो रघुनाथजीकी तुल्य देवनकरिके पूजित होत ५८ लोक वेदमें यह रीति है कि देश
काल सुपात्र विचारि दानदै पुनः जो तासमय पाठादि करे तो अधिक फल होत तथा ईश्वर को
ध्यान सहित पाठते अधिक फल होत तथा प्रयागादि तीर्थन में स्नानसमय पाठते अधिक फल
होत सो नहीं इहां विनादान विना ध्यान विना तीर्थ अवगाहन केवल श्रीराम गीता जोहै ताहि
(नरोधीत्य) जो मनुष्य पढ़ै तौ (अनन्तफलंलभेत्) अर्थात् साधन सहायता रहित जो केवल आ
रामगीताकी पाठमात्र करताहै उस मनुष्य को ऐसा असंख्य फल प्राप्तहोताहै जाको अंत नहीं ५९

(बहुनाउक्तेनइहकिं) बहुत कहनेते इहां क्या है (शृणुनारदतत्त्वतः) हे नारद तत्त्ववस्तु जो है सो सुनिये (श्रुति) चारिउ वेद (स्मृति) मनु पराशरादि यावत् धर्मशास्त्रहैं (पुराण) भागवत पद्यादि अठारहौ (इतिहास) भारतादि (आगम) पंचरात्रादि (शतानिच) जो सैकरन ग्रंथहैं (अध्यात्मरामायण अल्पकलांअपिनमर्हति) अध्यात्मरामायणके थोरिहूकला अंशके फलको नहीं पायसक्तहैं अर्थात् अध्यात्मरामायण श्रवण कीर्तनते जो समुद्रयत् फल होताहै ताके एकबुंद के तुल्य वेदस्मृति पुराण इतिहास आगमादि कोई ग्रन्थ की पाठ नहीं है सकी है ६० ॥

अध्यात्मरामचरितस्यमुनीश्वरायमाहात्म्यमेतदुदितंकमलासनेन ॥ यःश्रद्धया पठतिवाशृणुयात्समर्त्यःप्राप्नोतिविष्णुपदवींशुरपूज्यमानः ६१ ॥

इतिश्रीब्रह्माण्डपुराणेउत्तरखण्डेएकषष्ठितमोऽध्यायः ६१ ॥

(अध्यात्मरामचरितस्यएतत्माहात्म्यं) अध्यात्म नामे जो रामचरित है ताको इतनो जो माहात्म्य है ताहि (मुनीश्वरायकमलासनेनउदितं) मुनिनमें उत्तम जो नारद तिनके अर्थ कमलासन जो ब्रह्मा तिन करिके कहागया (यःश्रद्धयापठतिवाशृणुयात्समर्त्यः) जो श्रद्धाकरिके पढ़ता है वा सुनता है सो मनुष्य (शुरपूज्यमानः विष्णुपदवींप्राप्नोति) जीवन पर्यन्त देवतन करिके पूजितहोताहै अन्तकालमें विष्णु पदको प्राप्त होताहै अर्थात् सूतजी कहते हैं कि हे शौनकादिको अध्यात्मनामे जो रामायणहै ताको इतनो जो माहात्म्यहै ताहि नारदमुनिके अर्थ ब्रह्मा करिके कहा गया सो हम तुम्हें सुनावा ताको जो श्रद्धा अर्थात् हर्ष सहित मनते चाह करिके पढ़े अथवा सुनै सो मनुष्य जब तक जीवै तब तक इन्द्रादि देवतन करिके पूजितरहै अन्तकाल भगवत् धामको जावै ६१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे माहात्म्यवर्णनोनामप्रथमःप्रकाशः १ ॥

यःपृथ्वीभरवारणायदिविजैःसंप्रार्थितश्चिन्मयः संजातःपृथिवीतलेरविकुलेमायामनुष्योऽव्ययः ॥ निश्चक्रंहतराक्षसःपुनरगाद्ब्रह्मत्वमाद्यंस्थिरां कीर्तिं स्पापहरांविधायजगतांतंजानकीशंभजे १ ॥

दो० ॥ सतचित आनंदज्ञानवन परब्रह्मपरधाम ॥ नौमिप्रकट जगहेतुभू सीतासहश्रीराम १ सीय कहे हनुमंतप्रति गूढतत्त्वपुनिराम ॥ सोगिरिजाप्रतिशिवकहत रामहृदययहिनाम २ (यःपृथ्वीभरवारणाय) जो भूमिकोभार उत्तारने अर्थ (दिविजैःसंप्रार्थितः) दिवि आकाश तामें जउत्पन्न जो देवता तिनकरिके संपूर्ण प्रकार याचना कियेगये (चिन्मयःअव्ययःपृथिवीतलेरविकुलेमायामनुष्यःसंजातः) जो सदा एकरस चैतन्य सो चिन्मय जो कबहुं घटे नसो अव्यय सो परब्रह्म पृथिवी तलमें सूर्यकुल विषे माया मनुष्यवत्तरूप अर्थात् शिशुवाल पौगंड किशोरादि अवस्था धारण किहे संपूर्ण प्रकारते अंशन सहित उत्पन्नभये (निश्चक्रंहतराक्षसः) निः कहे नहीं चक्र कहे सेना यथा बरूथिनीवलंसैन्यचक्रंचानीकमस्त्रियाम् इत्यमरः नहीं रही संग्राममें सैन्यजाके ऐसे राक्षस रावणको मारि भाववाके मंत्री मित्रपुत्र वंधुसाहनी सुभटादि समग्रसेनाको पूर्वही नाशकरि अकेलाकरि रा-

वणको मारि भूभार उतारि देवनको अभयकरि (पापहरांस्त्रिधांकीर्तिजगतांविधाय) पापहरनेवाली
अचल कीर्ति जगमें स्थापित करिकै पुनः (आद्यब्रह्मत्वंपुनः अगात्तजानक्याईशंभजे) आदिको जो
ब्रह्मत्वपदहै ताहि पुनः प्राप्तभये ऐसे जानकीनाथ जो हैं तिनहिं हम भजते हैं अर्थात् इसराम हृदयमें
ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीलावर्णनकरेंगे ताके मंगलाचरणमें प्रथम ऐश्वर्य दर्शाय माधुर्यरूपमें मनल-
गाय ग्रंथप्रारंभकरेंगे सो व्यासजी कहत कि जो राक्षसन के पापकर्मनते भूमिपर महाभारहै गयारहै
ताके उतारने हेतु देवगणयुत ब्रह्मादिकरिकै याचनाकियेगये ताते जो सदा एकरस चैतन्य अखंडपर-
ब्रह्म सो भी भूतल अयोध्या पुरीमें सूर्य कुलमें मायामनुष्यनकी नाई श्रीरामभरत लक्ष्मण शत्रुघ्न
चारिरूपते अवतीर्णहैं शिशुबाल किशोर विवाह वनगमनजानकी वियोगमें विरहखवरिलेनादि सब
माया मनुष्यवत् लीलाकरत पुनः सेनसहित रावणको मारि भूमिकांभारउतारे साधु ब्राह्मण देवन
को अभयकीन्हें पुनः दीननको दान गुरुजननको सन्मान नीतिसहित प्रजनको पालनकरि सुखी
राखे अंतमें सबको मुक्तिदिये इत्यादि देखि जो लोक प्रशंसाकरत यही पावन कीर्तिहै जाके श्रवण
कीर्तनते महापाप नाशहोत सो अचलकरि जगत्में स्थापितकीन्हें भाव जो कबहुं मिटि नहीं सकी
है इत्यादि अविचलकरि पुनः लोकमें रहते मायाकृत दांप गुण जिनमें लेशमात्र नहीं छुड़गयो जो
पूर्व रहें ताही परब्रह्मपदको पुनः प्राप्तभये ऐसे अमल सदा एकरस अखंड ज्ञान तिन जानकी के
ईश श्रीरघुनाथजी को हम भजते हैं १ ॥

विश्वोद्भवस्थितिलयादिषुहेतुमेकं मायाश्रयंविगतमायमचित्यमूर्तिं ॥ आनंदसां

द्रममलंनिजबोधरूपं सीतापतिंविदिततत्त्वमहंभजामि २ ॥

(विद्वउद्भव) संसारकी उत्पत्ति (स्थितिलयादिषु) पालनप्रलय आदिकन विषे (हेतुंएकंमा-
या) सवनको कारण एक मायाहै (आश्रयं) सो माया जाकी आश्रयहै यथा अरिणापीड्यमानस्य
बलवद्भूपालाद्याश्रयणं आश्रयः इत्यमरविवेके भाव शत्रुकरिके पीडित किसी बली राजा के आसरे
रहना ताको आश्रय कही अर्थात् संसारकी उत्पत्ति पालन प्रलय आदिकन विषे सवनको कारण
एक मायैहै सो माया ज्यहि परब्रह्मकी आश्रय है अरु (विगतमायं) आप माया रहित हैं (अचि-
न्त्यमूर्ति) जिनकी मूर्ति चितवनमें नहीं आयसकत (आनंदसांद्रं) आनंद सघनहै जिनमें (अमलं)
सत रज तमादि मलरहित शुद्ध आत्मरूप (निजबोधरूपं) सहजस्वभाव अखण्डज्ञानहै जिनमें (वि-
दिततत्त्वंसीतापतिमहंभजामि) वेदनके सिद्धांततत्त्वकरिके लोकमें विदित ऐसे जो सीतापतिहैं
ताहि हम भजतेहैं सेवन सुमिरण करते हैं यामें केवल ऐश्वर्यरूप वर्णनकरतेहैं इसीहेतु सीतापति
नामकहे अर्थात् सीता सोई मायाहैं अरु प्रभुकी इच्छाते संसारको उपजावत पुनः पालन करत
अंतकाल आये संहारकरती हैं इत्यादि संसारकी उत्पत्ति पालन प्रलय आदिकनविषे सवनकोकारण
एक माया श्रीसीताजीहैं सो श्रीरघुनाथजी की आश्रयहै भाव आज्ञापालनपर तत्पर अनुकूलता
सहित सदासमीप आसीन रहती हैं यथा रामतापिन्या॥ श्रीरामसान्निध्यवसाज्जगदानंददादिनी । उ-
त्पत्तिस्थितिसंहारकारिणीसर्वदंदिनांसासीता भगवतज्ञेयामूलप्रकृतिसंज्ञिता । प्रणवत्वात्प्रकृतिरिति व-
दन्तिब्रह्मवादिनः ॥ अरु प्रभु मायाकरिके रहित अचित्यमूर्तिहैं तौ एक सीताको भी मायाकहत सो
तौ सदा प्रभुके आश्रित समीपही रहत अरु वह कौन मायाहै जिहि करिके प्रभु रहितहैं तहां माया
पंचप्रकारकी हैं प्रथम अविद्या जो जीवको भुलाय विषयीवद्धकरि भवसागरमें डारत तामें पांचअंश
हैं प्रथम आकाश ताको सूक्ष्मरूप शब्द जो श्रवणकी विषयहै दूसरा पवन ताको सूक्ष्मरूप स्पर्श जो

त्वचाकी विषयहै तीसर अग्नि सूक्ष्मरूप नेत्रकी विषयहै चौथ जल सूक्ष्म रस जिह्वाकी विषयहै पंच-
म भूमि सूक्ष्म गंध नासिका की विषय इत्यादि विषयनमें अविद्या कारणरूपते इंद्रिनको लगाय
जीव को विषयी करिदेत पुनः कार्यरूप ते अविद्या मनमें कामादि उपजाय जीव को विमुख करिदेत
इत्यादि जो अविद्या माया है तेहि करिकै रहित हैं अरु दूसरी विद्या माया है तामें चारि अंश विवेक
विराग सम दमादि पट् सम्पत्ति मुमुक्षुता इत्यादि करि जीव को चैतन्य करत पुनः तीसरी सन्धिनो
माया है तामें नव अंश यथा श्रवण कर्तन सुमिरण सेवन अर्चन वन्दन दास्यता आत्म निवेदन
इति नवधा भक्तिकरि जीव ईश्वरकी सन्धि मिलावत चौथि सन्दीपिनी माया प्रेमाभक्तिकरि जीवके
अन्तर ईश्वरकी दीप्ति प्रकाशतपचई आह्लादिना माया पराभक्तिकरि जीवके अन्तर परब्रह्मकी आनन्द
प्रकाशतसो माया श्री सीताजी सदा समीप रहती हैं तिनते प्रभुते कछु भेद नहीं है यथा चन्द्रचंद्रिका
पर्य प्रभा इत्यादि दोऊरूप एकही हैं यथारामतापिनी उत्पन्न होती यथा भाति चन्द्र चंद्रिका यथा प्रकृत्या
अहितः श्यामापीतवासाप्रभाकरः ॥ द्विभुजः कुंडलरत्नमालाधीरोधनुर्धरः पुनः सदाशिवसंहितायां ॥ रामः
सीताजानकीरामचन्द्रो नानुर्भेद्येतेयोदितिकृश्चित् ॥ पुनः रामायणे ॥ अनन्याहिमया सीताभास्करस्य
प्रभायथा ॥ इत्यादि दोऊ एकतत्त्व हैं अविद्या आवरणरहित शुद्ध परात्पररूप किसीकी चिंतन में नहीं
आवते हैं सांद्र आनन्द सघन आनन्द ते परिपूर्ण सतोगुण रजोगुण तमोगुणादि जो मल त्यहिकरि-
कै रहित सदा अमल निज बोध स्वयं सहजस्वभाव ते अखण्ड ज्ञानरूप सीता के पति वेद सिद्धांत
तत्त्वकरिकै विदित हैं जिनको राम ऐसोनाम यथा केदारखण्डे शिववाक्यं ॥ रामनामसमंतत्वं नास्ति
वेदांतगोचराय त्प्रसादात्परासिद्धिसंप्राप्ता सुनयो मलां ॥ अथर्वणे ॥ यश्चांडालोपिरामेति वाचं वदेत् तेन सह
संवदेत् तेन सह संवसेत् तेन सह संभुं जीयात् ॥ ऋग्वेदे ॥ परं ब्रह्म ज्योतिष्मयं नाम उपात्यं मुमुक्षुभिः ॥ यजुर्वेदे
रामनाम जपते नैव देवतादर्शनं करोति इत्यादि जो विदित तत्त्व ताहि हम भजते हैं २ ॥

पठन्ति ये नित्यमनन्यचेतसः शृण्वन्ति चाध्यात्मिकसंज्ञितं शुभम् ॥ रामायणं सर्व
पुराणसम्मतं निर्द्धूतपापाहरिमेव यान्ति ते ३ अध्यात्मरामायणमेव नित्यं पठेद्य-
द्भीच्छेद्भवबन्धमुक्तिम् ॥ गवांसहस्रायुतकोटिदानात्कलंलभेद्यः शृणुयात्सनि-
त्यम् ४ पुरारिगिरिसम्भूता श्रीरामार्णवसंगता ॥ अध्यात्मरामगंगेयं पुनाति भुव-
नत्रयम् ५ ॥

(सर्वपुराणसम्मतं) सब पुराणन को सम्मत है जामें ऐसी (अध्यात्मसंज्ञितं शुभं रामायणम्),
अध्यात्मनामा तौनि मंगलीक रामायण जोहै ताहि (ये अनन्यचेतसः नित्यं पठन्ति च शृण्वन्ति) जे
अनन्यता चित्त सहित सदा पढ़ते हैं अथवा सुनते हैं (ते पापा निर्द्धूत हरि एव यान्ति) ते जन पापनते
निश्चयकरि छूटिकै भगवान् पदको निश्चयकरिकै जाते हैं अर्थात् भागवत पद्मादि अठारहौ पुराणन
को संपूर्ण सिद्धान्त मतहै जामें ऐसी अध्यात्मनामा तौनि मंगलीक रामायण जोहै ताहि जे अनन्य
यथामहारामायणे ॥ नविधिर्न निषेधश्च प्रेमयुक्तरघुत्तमे । इन्द्रियाणामभावः स्यात्सनन्धो प्रासकः स्मृतः
इत्यादि अनन्यता चित्तमें धारणकरि सदा पढ़ते हैं अथवा सुनते हैं ते जन अवश्य पापनते छूटि पावन
हवैकै भगवान् पदको निश्चयकरि जाते हैं भाव सायुज्य मुक्ति पावते हैं ३ (भवबन्ध मुक्तिम् यदि
इच्छेत्) संसार बन्धनते मुक्त होने की जो इच्छा करै सो (अध्यात्मरामायणं नित्यं एव पठेत्) अ-
ध्यात्मरामायण जोहै ताहि नित्यही निश्चय करि पढ़ै तौ भवबन्धन ते छूटिजाय इति शेष

यः नित्यं शृणुयात्) जो नित्य नियमकरि सुनता है (सप्तहस्रअयुतगवां दानात् कोटि फलं लभेत्) सप्तहस्रकहे हजारवार अयुत कहे दश हजार करनेते करोरि भये भाव करोरि गोवें दानते जो फल होत ताते करोरि भरि अधिक फल सो पावत अर्थात् भव जो संसार ताको बन्धन जन्म मरणादि चौरासी ताते जो सुकहोनेकी इच्छाकरै सो अध्यात्म रामायण नित्य पढ़ै तौ मुक्तिपावै भरु करोरि गोवें दान देनेते जो फल होताहै तेहिते करोरि गुण अधिक फल ताको होताहै जो नित्य अध्यात्म रामायण को सुनताहै ४ गंगाजी को रूपक रामायण को कहत (पुरारिगिरि सम्भूता) शिवरूप पर्वतते उत्पन्नभई (श्रीरामवर्णवसंगता) श्रीरामरूप समुद्रमें मिली है (इयं अध्यात्मरामगंगा) यह अध्यात्मरामायणरूप रामगंगा (भुवनत्रयं पुनाति) तीनिहू लोकनको पावन करती है गंगाकौन भांति भूलोकमें आई यथा स्वर्गलोक नापत समय वामनजीके पद अंगुष्ठकी ठोकर लागेते ब्रह्माण्ड भेदन ह्वैगया तेहि मार्ग पदकी अवलम्ब पाय ब्रह्म द्रव बहि आयाहै सो ब्रह्माजी कमण्डलु में धरिराख्यो पुनः सुलभ लोकोद्धार हेतु भगीरथ तपस्या करि प्रथम कैलास को लाये तहां ते आय हिमालय ते प्रकटी भूमिपर विस्तार करत समुद्र में जायमिली इति उपमान की उपमेय कहत ब्रह्मा नारद वाल्मीकि सूत शौनकादि अनेक सम्वादनमें गुप्तरही शिवरूप हिमालय ते पार्वती द्वारा प्रगट भई महिमा को समुद्र जो श्री रामरूप तामें मिली उहांदरद्वार प्रयाग गंगासागर मुख्य स्थान हैं इहां जन्म विवाह राज्याभिषेक यामें मुख्य है इत्यादि अध्यात्मरामायणरूप गंगा अनेक धाराते तीनिहू लोकन में फैली हैं अत्रणरूप दर्शन कीर्तनरूप स्नानते अनेकन जीवन को पावन करती हैं पाप हरि शुद्ध रामानुरागी करिदेत ५ ॥

कैलासाग्रे कदाचिद्रविशतविमलमन्दिरैरत्नपीठे संविष्टं ध्याननिष्ठं त्रिनयनमभयं
सेवितं सिद्धसंघैः ॥ देवीवामाङ्कसंस्थागिरिवरतनया पार्वती भक्तिनम्रा प्राहेदं देव
मीशं सकलमलहरं वाक्यमानन्दकन्दम् ६ ॥

(कदाचित् कैलास अग्रे) किसी समयमें कैलास के अग्रभाग पर (शतरविमल मन्दिरैरत्न पीठे) सैकरन सूर्यनकैसी प्रकाशजामें ऐसे विमल मन्दिर के मध्य रत्न सिंहासन पर (ध्याननिष्ठं अभयं त्रिनयनं संविष्टं) ध्यान में स्थित सबकी भयत्यागे तीनिनेत्र हैं जाके ऐसे शिवजी बैठे हैं (सिद्धसंघैः सेवितं) सिद्धजनसमूह तिनकरिकैं सेवित हैं (गिरिवरतनया देवीवामाङ्कसंस्था) गिरिन में उत्तम हिमाचल तिनकी पुत्री देवी वामअकोरामें विराजमान (पार्वती भक्तिनम्रा) सोई पार्वती अन्तरमें भक्ति सहित बाह्यनम्र ह्वैकैं (ईशं देवं इदं वाक्यं प्राह) महादेव प्रति इस प्रकारके वचन बोलती भई कैसे वचन (सकलमलहरं मानन्दकन्दम्) सब भांतिके पापरूपी मल हरिलेनेवाले आनन्दरूप जल वर्षिवे को मेघवत् अर्थात् ब्रह्मा बोले है नारद किसी समयमें कैलासके अग्रभाग पर सैकरन सूर्यन कैसी प्रकाश है जामें ऐसे दिव्य विमल मन्दिर के मध्य रत्न सिंहासन पर ध्यान में स्थित काल मृत्युते अभय शिवजी बैठे अनेकन सिद्धजन सेवा करिरहे हैं भरु हिमाचल की पुत्री देवी वाम अकोरामें विराजमान सोई पार्वती जी अन्तरमें प्रेमाभक्ति सहित बाह्य नम्रहाथ जोरि माथ नाथ महादेव प्रति इस भांति के वचन बोली जाते सब प्रकार के पापरूपी मल नाशहोयें उर में आनन्द वृद्धि होवें ६ ॥

पार्वत्युवाच ॥ नमोस्तु ते देवजगन्निवाससर्वात्महृत्वं परमेश्वरोसि ॥ पृच्छामि त

त्वं पुरुषोत्तमस्य सनातनं त्वञ्च सनातनोसि ७ गोप्यं यदत्यंतमनन्यवाच्यं वदन्ति
भक्तेषु महानुभावाः ॥ तदप्यहो हंतवदेव भक्ताप्रियोसि मे त्वं वदयतुष्टुष्टम् ८ ॥

(हे जगन्निवास देव ते तुभ्यं नमोस्तु) चराचर जगत् सब आपही में बसा है इत्यादि हे जग-
न्निवास देव सबके पालनहारे आप के अर्थ मेरी नमस्कार है (सर्वात्महृत्त्वंपरमेश्वरोसि) काहे ते
नमस्कार है कि सबकी आत्मा जो अन्तर्यामी ब्रह्म ताही को देखतेहो देह जीव बुद्धी रहितहो ताते
परमेश्वरहो (पुरुषोत्तमस्य सनातनं तत्त्वं पृच्छामि) पुरुषन में उत्तम जो श्रीरघुनाथजी तिनको जो
नित्य सत्य तत्त्व है ताहि पूछतीहो (च सनातनोसि) पुनः आपहू नित्य सत्यहो अर्थात् पार्वतीजी
कहत कि हे जगत् को सुत्रश बसावनहारे देव आप के अर्थ मेरी प्रणामहै देहाभिमान जीवत्वबुद्धी रहित
सदा ज्ञान दृष्टि ते आत्मै रूप को देखतेहो ताते परमेश्वरशुद्ध सच्चिदानन्दहो ऐसा जानि ईश्वर
कोटि पुरुषनमें उत्तम जो श्रीरघुनाथजी तिनको नामरूप लीला धामादि जो सच्चिदानन्द विग्रह
सनातन तत्त्व है ताहि में पूछतीहो सो कहिवेको समर्थ आपहू सनातन सब सिद्धांत तत्त्व के जानने
वाले हो ७ (यत् अत्यन्तं गोप्यं मनन्यवाच्यं) जो अत्यन्त गुप्त अनन्यवचन है (अहो तदपि महानुभा-
वाः भक्तेषु वदन्ति) यद्यपि आतंकमयी बार्ता है तदपि महात्मा लोग भक्तन की समाज में कहते हैं
ऐसा विचारि (मेष्टं यत्तु तन्निश्चयेन वद) मेरा प्रश्न जो है ताको निश्चयकरिकै कहिये काहेते
(हे देव अहंतव भक्ता) हे देव मैं आपकी भक्तहो काहे ते (त्वं मे प्रियोसि) आप, मोकों प्यारे हो अ-
र्थात् पार्वतीजी कहती हैं कि जो अनन्यमत वादी सुनें तो कुतर्ककरें ताते अत्यन्त गुप्तराखिवे योग्य
अरु जे केवल रामानुरागी अनन्य हैं तिनहिं प्रति कहिवे योग्य वचन यद्यपि आतङ्कमयी बार्ता है
तदपि महात्मा लोग भक्तन की समाज में कहते हैं ऐसा विचारि मेरो प्रश्न जो है ताको उत्तर नि-
श्चय करिकै कहिये काहे ते हे स्वामी मैं आपकी भक्त अर्थात् कर्म वचन मन छल रहित आपकी
दासीहो प्रत्यक्ष प्रमाण कि आप मोकों प्यारे हो अरु मैं आपको प्यारी नहींहो भाव आप मोको
त्याग भी करिदेतेहो अरु मैं जन्मजन्मान्तर आपहीकी दासी होतीहो इसन्यायते मेरा वचन सत्य है ८ ॥

ज्ञानं सविज्ञानमथानुभक्तिवैराग्ययुक्तं च मितं विभास्वत् ॥ जानास्य हं योषिदपित्व

दुक्तं यथा तथा ब्रूहि तरन्ति येन ९ ॥

(येन तरन्ति तत्ज्ञानं सविज्ञानं) ज्यहि करिकै जन तरिजाते हैं तौन ज्ञान सहित विज्ञान (अथ
भक्तिअनुवैराग्ययुक्तं) आगे भक्ति ताके पाछे लगाहुआ ज्ञान सोऊ वैराग्ययुक्त होय (चमितं) पुनः
अमित न होइ जो समुझमें न आवै मित प्रमाण होय भाव थोरी बात में बोधहोय (विभास्वत्)
वेदशास्त्रन में विशेषि प्रकाशमान होय ऐसा जो ज्ञान है ताहि हे भगवन् (त्वत्तुक्तं) आपु के कहे
ते (अहं योषिदपि यथा जानामि) मैं स्त्री जाति सोऊ जौनी प्रकार जानि सकौ (तथा ब्रूहि) तौनी
प्रकार कहिये अर्थात् पार्वतीजी प्रश्न करतीहैं कि हे नाथ जौने ज्ञान करिकै जन भवसागरको तरि
जाते हैं सो ज्ञान भाव आत्मरूप पर सदा दृष्टि राखना सोऊ विज्ञान सहित भाव आत्मरूप ते प-
रमात्मरूप को ध्यान स्थिर राखना पुनः भक्ति जाके आगेरहै भावरघुनाथजी में अनुराग जामें मुख्य
होय पुनः वैराग्य सहित होय भाव बिषय सुख को तनमन ते त्याग वनारहै पुनः मितहोय भाव
थोरही शास्त्र प्रमाण ते बोधहोवै पुनः वेद शास्त्रादि द्वारा विशेषि प्रकाशमान होवै ऐसा जो ज्ञान है
ताहि हे नाथ आप के कहे ते मैं स्त्री जाति सोऊ जौनी प्रकार जानि सकौ तौनी प्रकार कृपादृष्टि
विस्तार सहित संसृज्जायकै कहिये ९ ॥

पृच्छामि चान्यच्च परं रहस्यं तदेव चाग्रेवमवारिजाक्ष ॥ श्रीरामचन्द्रेऽखिलतत्त्वसारे
भक्तिर्दृढानोर्भवेति प्रसिद्धा १० भक्तिप्रसिद्धा भवमोक्षणाय नान्यत्ततः साधनमस्ति
किञ्चित् ॥ तथापि ह्यसंशयबन्धनमेविभेतुमर्हस्यमलोक्तिभिस्त्वं ११ ॥

(हेवारिज अक्ष अन्यत्त्वं परं रहस्यं पृच्छामि) हे कमल नयन औरहू कछु पुनः परम रहस्य अत्यंत गुप्त तत्त्व पूछा चाहती हों (तत्त्व एवमग्रेवद) ताको पुनः निश्चय करिकै पूर्वही कहिये (अखिल तत्त्वसारे श्रीरामचन्द्रे) समग्र तत्त्वनको सारांश जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनविषे (दृढाभक्तिः प्रसिद्धानोः भवति) पुष्ट करिकै जो भक्ति है सो भवसागर तरिवे हेतु प्रसिद्धही नावहोती है अर्थात् पार्वतीजी बोलीं कि कृपारसभरे हे कमल नयन पूर्व जो पूछा ताहीमें संतोष न करना ताके ऊपर औरहू कछु पुनः परम रहस्य अत्यन्त गुप्त तत्त्व पूछा चाहती हों ताको पुनः निश्चय करिकै पूर्वही कहिये क्या कहिये पुराण शास्त्र वेदादिकनको जो सिद्धान्त तत्त्व है तिन सबको सारांश जो श्रीरघुनाथजी हैं तिनविषे जो पुष्ट करिकै भक्ति है अर्थात् सबको आशभरोसा कामादि विकार त्यागि शुद्धमनते प्रेमसहित सेवन सुमिरणमें अहर्निश निरन्तर लगे रहना इत्यादि जो दृढभक्ति है सो भवसागर तरिवे हेतु प्रसिद्धही नावहोती है भावभक्ति द्वारानीचहू जीव सुगम भवपार होते हैं यह शास्त्र द्वारालोकमें प्रसिद्ध है यथागीतायां ॥ मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य योऽपि स्युः पापयोनयः ॥ स्त्रियां वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यांति परांगतिम् १० (भवमोक्षणा यभक्तिः प्रसिद्धा) भवबन्धन छोड़ावने अर्थ सुलभ समर्थ एक भक्तिही शास्त्रद्वारा प्रसिद्ध है (ततः अन्यत् साधनं किञ्चित् न अस्ति) त्योंही भक्तिते परे और कछु साधन नहीं है यह जानत हों (तथापि मे ह्यसंशयबन्धनं) ताहू पर मेरे हृदयमें संशयरूप बन्धन है भाव वै कौन राम हैं जिनकी भक्तिते भव छूटता है यह संशय हृदयमें बन्धन है ताहेतु (अमल उक्तिभिः त्वं विभेतुमर्हसि) अमल बचनों करिकै आप भेदन करिवेको समर्थ हों अर्थात् पार्वतीजी कहत कि जन्म मरणादि जो भवबन्धन है ताको छोड़ावने अर्थ सुलभ समर्थ एक भक्तिही शास्त्रद्वारा प्रसिद्ध है त्यहिते परे और साधन कछु नहीं है यह जानत हों ताहू पर मेरे हृदयमें संशय अर्थात् वै कौन राम हैं जिनकी भक्तिते भव छूटता है यह संशयबन्धन है ताहेतु अमल बचनों करिकै आप भेदन करिवेको समर्थ हों भाव ऐसे सत्यसार बचन कहिये जामें रामरूपको बोध होय ११ ॥

वदन्ति रामं परमेकमाद्यं निरस्तमायागुणसंप्रवाहम् ॥ भजन्ति चाहर्निशमप्रमत्ता
परंपदं यान्ति तथैव सिद्धाः १२ ॥

(मायागुणसंप्रवाहं निरस्त) रजतमादि जो माया के गुण हैं ताको संपूर्ण प्रवाह रागद्वेष हर्ष विपादादि मोहधारा जामें सब जीव बहे जात त्यहिते निरस्त भिन्न अर्थात् माया आकार रहित यथा प्रत्यादिष्टो निरस्तः स्यात् इत्यमरः (तं रामं परं एकं माद्यं वदन्ति) तौ न जो रघुनाथजी हैं तिनहिं परं सर्वोपरि एकं जिनकी समताको दूसरारूप नहीं है आद्यं सबके आदिकारण हैं ऐसा वेदशास्त्र द्वारा आचार्यलोग कहते हैं (च तथा एव वदन्ति) पुनः ताही भांति निश्चय करिकै ऐसा भी कहते हैं यथा (सिद्धाः अप्रमत्ताः अहर्निशं भजन्ति) तत्त्वज्ञाता सावधान ज्ञातचित्त हैं ताको दिन राति भजते हैं ताके प्रभावते (परंपदं यान्ति) मुक्ति स्थानको जाते हैं अर्थात् पार्वतीजी अपनी संशयको प्रसिद्ध करि कहती हैं कि हे नाथ वेद शास्त्रद्वारा आचार्यलोग ऐसा कहते हैं कि श्रीरघुनाथजी सब ईश्वररूपनके परे रूप हैं जिनकी समताको दूसरारूप नहीं है आप एकही सब रूपनके आदि कारण हैं अरु मायाके गुण

जो रजोगुण तमोगुण ताको जो संपूर्ण प्रवाहराग द्वेष हर्ष विषादादि मोहरूप धाराहै त्यहिते रहित भावमाया आकार रहितहै यथा सनत्कुमारसंहितायां ॥ विज्ञानहेतुविमल्लायताअप्रज्ञानरूपस्वसुखैरु हेतुं । श्रीरामचन्द्रहरिमादिदेव परात्परंराममहंभजामि ॥ इत्यादिरूप पुनः ताही भांति निश्चय करिके प्रभाव ऐसा कहतेहैं कि सिद्धतत्त्वज्ञाता संतसावधान हवैकै दिनों राति जाको भजतेहैं ते परमपद मुक्तिस्थानको जातेहैं यथा सनत्कुमार संहितायां ॥ श्रीरामरामेतिजनाये जपंतिव नित्यशः । तेषांभुक्तिश्चमुक्तिश्चभविष्यन्तिन संशयः ॥ ऐसा प्रभाव सुनाहै १२ ॥

वदन्तिकेचित्परमोपिरामःस्वाविद्ययासंवृतमात्मसंज्ञम् ॥ जानातिनात्मानमतःपरेणसंबोधितोवेदपरात्मतत्त्वम् १३ यदिस्मजानातिकुतोविलापःसीताकृतेतेनकृतःपरेण ॥ जानातिनैवंयदिकेनसेव्यःसमोहिसर्वैरपिजीवजातैः १४ ॥

(केचित् वदन्ति) कोऊ ऐसाभी कहताहै (रामः परमोअपि) श्रीरघुनाथजी परात्पर रूप निश्चय करिकेहैं परन्तु (स्वाविद्यया आत्मसंज्ञं संवृतम्) अपनीअविद्या माया करिके संवृत ठकिगयाहै आत्मसंज्ञक रूप तेहि कारणते (आत्मानं न जानाति) माया ढके कारण ते आत्मरूपको नहीं जानि सकेहैं (अतः परेण संबोधितः परात्मतत्त्वम् वेद) इसकारणते और करिके सम्बोधित समुझाये जावें तब परमात्मतत्त्वको वेदनाम जानितहै अर्थात् प्रथम ऐश्वर्यरूपको कहे अबऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित रूप कहतीहैं कि कोऊ आचार्य ऐसाभी कहतेहैं कि श्रीरघुनाथजी परात्पर रूप निश्चय करिकेहैं परन्तु अपनी माया करिके ठकिगयाहै आत्मसंज्ञक रूपभाव देइ व्यवहार में अधिक लगेरहे तेहि कारणते आत्मरूपको स्वयं साधारण नहीं जानि सकेहैं इसकारणते जब और किसी करिके समझाये जावें तबअपने परमात्मतत्त्वको जानितहै भावयद्यपि परब्रह्महैं परन्तु अविद्यामय नरूपधरने ते देह व्यवहारमें परि आत्मरूप भुल्लिगये अरनाको राजपुत्र करि जानतेरहे जबलंकामें ब्रह्माने समुझाया तब अपना आत्मरूप जाने ऐसा बाल्मीकिजी कहाहै यथारामाह ॥ आत्मानं मानुषमन्येरामं दशरथात्मजं । सोढ्यश्चयतश्चाहं भगवांस्तद्ब्रवीतु मे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ बयार्थिरावणस्येह प्रविष्टो मानुषोऽसि । तदिदं न स्त्वया कार्यं कृतं वर्मभृतां वरः १३ (यदिस्मजानाति) जोरामचन्द्र आपनेही बोधते आपने आत्मरूपको जानतेहोते तौ (सीताकृते) सीताको संयोग खण्डित होतसंते (परेण) अनात्मरूपेण यथादूरानात्मतमाः पराः इत्यमरः अर्थात् देह बुद्धि करिहै (कुतो विलापः तेन कृतः) किसहेतु विलापतिनराम करिके कियागया (यदि एवं न जानाति) जो इसोप्रकार रामभी अपने आत्मरूपको नहीं जानते हैं तौ (केन सेव्यः) कौन गुणकरिकरि रामरूपसेव्यहै जीव सेवकहै काहेते यथा जीव अल्पज्ञ तथा रामभी अदृग्ज्ञहैं तौ (जीवजातैः अपि सर्वैस्तमोहि) जीवजातिकरिके यावत् निश्चयकियेहैं तिन सबन करिके समता रामहूको निश्चय करना चाहिये अर्थात् इसलोकमें पार्वतीजी केवल माधुर्य रूपको कहि आपनी संशयपुष्ट करतीहैं यथा जो रामचन्द्र आपनेही बोधते आपने आत्मरूप परब्रह्म करि जानतेहोते तौ सीताको वियोगहोत संते प्राकृत मनुष्योंकी नाई क्यों रोवत फिरते इसी भांति रामभी अपने आत्मरूपको नहीं जानते हैं प्राकृत विषयी मनुष्योंकी नाई उनहूं में दुःख सुख बर्तमानहै तौ कौन गुणकरिके रामसेव्य अरु जीवसेवकहैं यह तौ वनता नहीं क्योंकि यथा जीव अपने आत्मरूपको नहीं जानतेहैं तथा जो रामहू आत्मरूपको भूलि वियोग दुःखते दुःखीहैं तौ सब जीवनकी बरावरि रामोंहैं उनमें विशेषता क्याहै जो जीव उनकी सेवकाई करें भाव जो आपही दुःखितहैं तौ औरको कैसे सुखीकरेंगे १४ ॥

अत्रोत्तरं किं विदितं भवद्भिस्तद्ब्रूतमेसंशयभेदिवाक्यम् ॥

(अत्र उत्तरं भवद्भिः किं विदितं) इस मेरे प्रश्न में उत्तर आपकरिके क्या-प्रसिद्ध भाव यामें क्या सिद्धान्त निश्चय करि राख्योहैं (मे संशय भेदि वाक्यं तद्ब्रूत) जामें मेरी संशय कटिजावै ऐसा जो वचन ताको कहिये अर्थात् संशय पूर्वक पार्वती जी प्रश्न करती हैं कि हे भगवन् सनत्कुमार नारद पराशरादि तौ ऐसा कहतेहैं कि श्रीरघुनाथजी परात्पर परब्रह्म अद्वितीय सबके आदि कारणहैं जिनको दिनों राति भजि सिद्धजन परमपद पावतेहैं अरु वाल्मीकिजी ऐसा कहत कि रघुनाथजी परब्रह्महैं परंतु प्राकृत तनु-रते अपनी अविद्या मायामें परि आत्मरूप भूलि मनुष्यवत् आचरणमें तत्पररहे जव ब्रह्माने समुभावा तव सुधिभई इसमें मेरे संशय होती है कि जो आत्मरूपकी सुधिहोती तौ सीतावियोग दुःखते क्यों रोवत फिरते अरु जो मनुष्यवत् वोभी भूलिगे तौ यथा प्राकृत मनुष्य तथा वोभी हैं तौ कौनविशेषता उनमें है जो स्वामी मानि जीव सेवकबानि सेवाकरें भाव जो आपही दुःखितहै सो और को दुःख कैसे मिटाय सकाहै अरु जो सेवाकीन्हें दुःख न छूटता तौ पराशरादि क्यों कहते ताते जिनकी सेवाते भवबंधन छूटताहै ते दशरथनन्दनहैं वा कोऊ और रामहैं यामें आपको क्या सिद्धान्तहै सो उत्तर दीजिये परंतु जामें मेरी संशय मिटै ऐसे वचन कहिये इत्यादि सुनि ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ धन्यासि भक्तासि परात्मनस्त्वं यद्ज्ञातुमिच्छातव राम तत्त्वम् १५ पुरानकेनाप्यभिचोदितोऽहं वक्तुं रहस्यं परमं निगूढं ॥ त्वयाद्य भक्त्या परिनोदितोऽहं वक्ष्ये नमस्कृत्य रघूत्तमं ते १६ ॥

शिवजी बोले (परमात्मनः भक्तासित्वं धन्यासि) हे पार्वती परमात्मा श्रीरघुनाथजी की भक्त हो ताते तुम धन्यहो कहते (यद् रामतत्त्वं ज्ञातुं तव इच्छा) जाते रामतत्त्व जानिवेकी तुम इच्छा कीन्हें भावगूढ तत्त्व सुना चाहतीहो ताते मुग्धवत् प्रश्न किया अर्थात् प्रसन्नहूँ कै शिवजी बोले कि हे पार्वती तुम रघुनाथजीकी परमभक्तहो अरु धन्य अर्थात् प्रशंसा करिवे योग्यहो कहते जोगुप्त रामतत्त्व है ताके जानिवेकी तुम इच्छा कीन्हें उ ताते सबजगको कल्याण होई इति परस्वारथीहो ताते धन्य हो १५ (निगूढ परमरहस्यं वक्तुं) अत्यन्त गुप्त परमरहस्य यह जोहै ताहि कहिवे हेतु (अहं पुरानकेनापि अभिचोदितः) हमसों पूर्व समयमे किसी करिके नहीं प्रेरण किया गया (अद्य त्वया भक्त्या नोदितः) हे पार्वती आजतुम भक्तिकरिके पूछेउहै (रघूत्तमं नमस्कृत्य ते अहं वक्ष्ये) रघुनाथजीको नमस्कार करिके तुम्हारे बोध अर्थ हम कहतेहैं अर्थात् शिवजी बोले कि अत्यन्त गुप्त परमरहस्य भाव विस्मय कारक एकांती रामचरित्र यह जोहै ताहि कहिवे हेतु हम सों पूर्व समय आजतक काहूने नहीं पूछा हे पार्वती आजतुमने भक्तिकरिके पूछाहै भाव अभक्त जो पूछिवोकरै तवहूँ श्रीरघुनाथजीकी गुप्तरहस्य न कहना चाहिये कहते वै वृथा कुतर्क करतेहैं अरु तुम भक्तिकरिके पूछतीहो ताते प्रथम श्रीरघुनाथजीको प्रणाम करि भाव शरणागतको भरोसा राखि तुम्हारे बोधहोने अर्थ अब हम गुप्त रामचरित्र वर्णन करतेहैं सावधान हूँ सुनिये इति शेषः १६ ॥

रामः परात्मा प्रकृतेरनादिरानंद एकः पुरुषोत्तमो हि ॥ स्वमायया कृत्स्नमिदं हि सृष्ट्वा न भोवदंतर्वहिरस्थितो यः १७ ॥

(रामः प्रकृतेः परमात्मा) प्रकृति कारण माया जाते ब्रह्मांड रचनाहै तेहिते परे शुद्ध आत्मरूप श्री

राघुनाथजीहैं (अनादिःआनन्द) जिनकी आदि कोई नहीं जानिसक्ताहै अरु सदा एकरस अखंड आनन्द रूपहैं (पुरुषोत्तमोहि एकः) भरण पोषण रक्षा धर्म स्थापनादि पुरुषार्थ करनेवाले यावत् पुरुषहैं तिनमें उत्तम एकरघुनाथजीहैं दूसरा नहीं है (इदं कृत्स्नां हि) यह जो देखि पड़ताहै संसार सम्पूर्ण ताको कारण (स्वमायया सृष्ट्वा) अघटघटना रूप जो आपनी शक्तिहै तेहि करिकै सबको रचि कै तामें (अन्तर्बहिःनभोवत् अन्तःस्थितः यः) भीतर बाहेर आकाशवत् व्याप्तहै यः अर्थात् जो अविद्यामें भूलनेको पार्वतीजी कहे तापर शिवजी उत्तरदेतेहैं कि जो मादकपाने नहीं किया ताके कैसे नसा च- हिसक्ताहै राघुनाथजी तौ प्रकृतिते परे शुद्ध आत्मरूपहैं तौ कैसे अविद्यामें भूलि गये पुनः जाके पूर्व परीक्ष कोई रचना रचिराखै ताकी अझुताई देखि भूलै राघुनाथजी तौ अनादिहैं इनते पूर्वकोई हई नहीं मायाजीव ईश्वरकालादि सब इनहींको रचाहै तामें कैसे भूलितकेहैं पुनः जो तुमने कहा कि वियोग दुःखमें दुःखी भये सो भी तुम्हारी भूलहै योग वियोग हर्ष विषाद रहित सदा एकरस अखंड आनन्दरूप श्रीराघुनाथजी हैं पुनः जो तुमने कहा कि यथा जीव तैसेही रामहैं सेव्य कैसे भये यह वचन कृपाहै काहेते सेव्य भाववाले यावत् पुरुष हैं तिनमें उत्तम सुलभ उदार एक राघुनाथजी स्वामी हैं जिनकी समताको दूसरा नहींहै पुनः यह जो देखि पड़ता संसार सम्पूर्ण ताको कारण अघटघटना रूप आपनी शक्तिहै तेहि करिकै सब ब्रह्माण्ड रचिकै तामें भीतर बाहेर आकाशकी नाई व्याप्तहैं जो सो श्रीराघुनाथजी हैं जिनके अंशकलासत्ताते समग्र रचना होत सबमें चैतन्यताहै ताते तुम्हारी संशय अज्ञवत् कृपाहै सो आगे सुनिये १७ ॥

सर्वान्तरस्थोऽपि निगूढ आत्मा स्वमायया सृष्टमिदं विचष्टे ॥ जगन्ति नित्यं परितो भ्रमंति यत्सन्निधौ चुम्बकलोहवद्धि १८ एतन्न जानंति विमूढचेताः स्वाविद्यया संवृतमानसा ये ॥ स्वाज्ञानमप्यात्मनि शुद्धबुद्धेस्त्वारोपयन्तीह निरस्तमाये १९ ॥

(सर्वान्तरस्था अस्थो अपि निगूढ) सर्व भूतन के अन्तर आत्मरूप ते प्रभु बसे हैं निश्चय करि कै परन्तु अत्यन्त गुप्तहैं ढूँढे नहीं मिलते हैं (स्वमायया सृष्टं इदं विचष्टे) अपनी माया करिकै रचा यह जो संसार ताको देखि रहे हैं पुनः (यत्सन्निधौ जगन्ति) जाके समीप जगत् जड़है सो भी जाके प्रभाव ते (नित्यं परितो भ्रमंति) नित्यहीं परिभ्रमण करिरहा है कौन भांति (चुम्बकलोहवद्धि) यथा लोहाभी जड़है परन्तु चुम्बकपत्थर के निकट वाके प्रभाव ते लोहाभी निश्चय करि वाके पीछे लाग धूमत फिरताहै अर्थात् शिवजी बोले कि कौन भांति सबको चैतन्य किहे हैं कि सर्व भूतन के अन्तर आत्मरूप ते प्रभु निश्चय करिकै बसे हैं परन्तु अत्यन्त गुप्तहैं ताते ढूँढे नहीं मिलते हैं अरु अपनी माया करिकै रचाहुआ यह जो संसार है ताको देखि रहे हैं अरु जाके समीप ताते जगत् जड़ सो भी जा प्रभुके प्रभाव ते नित्यहीं परिभ्रमण करिरहा है भाव चलता फिरता है कौन भांति यथा लोहाभी जड़है परन्तु चुम्बकपत्थरके निकट वाके प्रभाव ते लोहाभी वाके पीछे लगा धूमता फिरता है इसी भांति प्रभुके सत्ताते सब जगत् चैतन्यहै १८ (एतन्न जानन्ति) जगत् को चैतन्य करनेवाला प्रभुको आत्मरूप है इतना नहीं जानते हैं भाव ईश्वर ते विमुख पुनः (स्वमानसा अविद्यया संवृत) अपने मनको अविद्यामाया में बन्द कीन्दे हैं भाव विषयाशक्त (विमूढचेताः) इस आचरण ते विशेषि मूढ़ विष हैं येतै क्या करतेहैं कि (स्वअज्ञानं भ्रमि) अपना जो अज्ञान है ताहि निश्चय करिकै (आत्मनि शुद्धबुद्धेः तु निरस्तमाये इह आरोपयन्ति) आत्मरूप शुद्धबुद्धी पुनः माया तेपर ये जो श्री राघुनाथजी तिनमें आरोपते हैं भाव अपनी अज्ञानताते प्रभुको अज्ञान मानते हैं अर्थात् जे आत्मरूप

को नहीं जानते हैं देह को सत्य माने मनको विषय में आशक्त कीन्हें जे मूढ़ चित्त हैं ते अपनी अज्ञानता प्रभु में आरोपते हैं भाव सीता वियोग दुःख ते रोवत फिरे ऐसा मूढ़ कहते हैं अरु रघुनाथजी प्रकृतिपार शुद्ध आत्म तत्त्व सदा एक रस ज्ञान अखण्ड आनन्द मूर्ति हैं लोकोद्धार हेतु कृपा करि नरवत् लीला करिरहे हैं तामें न भूलना चाहिये अरु जे भूलते हैं तिनको हास आगे सुनिये १९ ॥

संसारमेवानुसरन्ति ते वै पुत्रादिसक्ताः पुरु कर्मयुक्ताः ॥ जानंति नैव हृदये स्थितं वै चा
मीकरं कण्ठगतं यथा ज्ञाः २० यथा प्रकाशो न तु विद्यते रवौ ज्योतिस्स्वभावे परमे श्व
रे तथा ॥ विशुद्धविज्ञानघने रघूत्तमे विद्या कथं स्यात् परतः परात्मनि २१ ॥

(यथा कण्ठगतं चामीकरं एवं हृदये स्थितं वै अज्ञानः न जानन्ति) जाभांति कंठमें धारण किहे सोना इसी भांति हृदय में स्थित आत्मरूप निश्चय करिहैं ताको अज्ञान नहीं जानते हैं अरु (वैपुत्रादिसक्ताः पुरु कर्मयुक्ताः) निश्चय करि पुत्रादि में आसक्त बहुत कर्मन सहित (ते संसारं एव अनुसरन्ति) ते जन संसारमें निश्चय करि जाते हैं अर्थात् जा भांति लोक में माता पितादिको वनवाय दिया कंठामाला दि सोना कोऊ गरमें पहिरे हैं अरु वाको मूल्य गुण नहीं जानता है तौ कंगाल बना अनेक दुःख सहता है इसी भांति हृदय में बसा प्रभु को आत्मरूप ताके विना जाने मोहबश स्त्री पुत्रन में आसक्त कामं क्रोध ते अनेक कर्म करते हैं तिन सहित ते संसार में जन्म मरणादि अनेक दुःख सहते हैं २० (यथा प्रकाशः रवौ न तु विद्यते) जा भांति अंधकार सूर्यन में नहीं विद्यमान है सक्ता है (तथा परमे श्वरे स्वभावे ज्योतिः) ताही भांति परमेश्वरमें स्वाभाविक ही ज्योति प्रकाश है भाव माया तमलेश नहीं है तो (परतः परात्मनि विशुद्धविज्ञानघने रघूत्तमे अविद्या कथं स्यात्) परात्पर परमात्मा विशेषि शुद्धविज्ञान समूह है जिनमें ऐसे रघुनाथजीमें अविद्यामाया कैसे व्यापि सक्ती है अर्थात् जाभांति सूर्य स्वयं प्रकाशवंत हैं तहां अंधकारकी गति नहीं है तथा परमेश्वर तत्त्व भी स्वयं विज्ञान प्रकाश है तहां मायाकी गति नहीं अरु रघुनाथजी तौ परात्पर परमात्मा हैं जिनमें विशेषि शुद्धविज्ञान समूह है तिनमें अविद्या कैसे व्यापि सक्ती है यह तृथाही भ्रम है कौन भांति सो सुनो २१ ॥

यथा हि चाक्षणा भ्रमता गृहादिकं विनष्टदृष्टे भ्रमती वदृश्यते ॥ तथैव देहेन्द्रियकर्तुरात्मा
कृतं परे ध्यस्य जनो विमुह्यति २२ न हो न रात्रिः सवितुर्यथा भवेत् प्रकाशरूपा व्यभि
चारतः क्वचित् ॥ ज्ञानं तथा ज्ञानमिदं द्वयं हरौ रामे कथं स्थास्यति शुद्धचिद्घने २३ ॥

(यथा भ्रमता च चाक्षणा हि विनष्टदृष्टे गृहादिकं भ्रमति इव दृश्यते) जैसे कोऊ ठौर पर चक्राकार वेगते देह धुमावने ल ॥ पुनः नेत्र भी देह के संग ही घूमते हैं त्यहि कारण दृष्टिकी शुद्धता विशेषि नष्ट भई तब गृहादि जो सदा स्थिर हैं सो भी घूमत सम देखि परते हैं (तथा एव देह इन्द्रियकर्तुः) ताही प्रकार निश्चय करिकै जो देह इन्द्रियनकी कर्तव्यता है ताको (परे आत्मा कृतं जनः ध्यस्य विमुह्यति) प्रकृति परे जो आत्म है ताको कर्तव्यता मानि जन अभिमान करि मोहको प्राप्त होते हैं अर्थात् यथा भ्रमण करता हुआ पुरुष स्थिर मन्दिरादि भूधरादिकनको भी भ्रमत ही देखता है इसी भांति देहाभिमानी इन्द्रि विषयनमें लगा यथा आपकर्म करता है तथा परमात्मामें भी स्थापित करि जीव अभिमान बश मोहको प्राप्त होता है भाव अरु रघुनाथजी स्त्री वियोग दुःखते बिलाप करत फिरे तौ हम क्यों न करें २२ (यथा सवितुः अहोरात्रिः न भवेत् प्रकाशरूपा क्वचित् व्यभिचारतः) या भांति सूर्यनमें दिन राति नहीं होती है काहेते जिनको रूपे प्रकाशवंत है तामें कहाँ कछु विशेषि अभिचार है भाव कुछ भी विकार

नहीं (तथाज्ञानंअज्ञानंइदंद्वयंहरौ) ताही भांति ज्ञान अरु अज्ञान ये दोऊ हरिमात्रविषे नहीं है सके हैं भाव हरिरूपमें एकरस अखंड ज्ञानहै तब (शुद्धचिद्वनेरामेकधंस्थास्यति) शुद्ध चैतन्यसमूह श्री रघुनाथजीमें कैसे अज्ञान स्थितहवैसकी अर्थात् जा भांति सूर्यसदा एकरस स्वयं प्रकाशरूपहैं तिनमें दिन राति कैसे हवै सकी है तैसेहरिरूप मात्रमें सदास्वयं विज्ञान प्रकाशहै तहां ज्ञान नहीं है अरु रघुनाथजीमें तौ शुद्ध चैतन्यता समूहहै तहां कैसे अज्ञान स्थित हवै सकी २३ ॥

तस्मात्परानन्दमयेरघूत्तमेविज्ञानरूपेहिनविद्यतेतमः ॥ अज्ञानसाक्षिण्यरविन्द
लोचनेमायाश्रयत्वान्नहिमोहकारणम् २४ अत्रतेकथयिष्यामिरहस्यमपिदुर्लभ
म् ॥ सीताराममरुत्सूनुसंवादंमोक्षसाधनं २५ ॥

(तस्मात्परानन्दमयेविज्ञानरूपेरघूत्तमेतमःहिनविद्यते) तिहिते हे पार्वती परम आनन्दमय विज्ञान भाव निर्विकल्प अखंड ज्ञानरूप जो श्रीरघुनाथजी तिनविषे निश्चय करिकैं अज्ञान नहीं है का हते (अज्ञानसाक्षिणिमयाश्रयत्वात्अरविन्दलोचनेमोहकारणंनहि) अज्ञानके साक्षीहै मायाजाकी आश्रय ताते कमल नयनमें मोहको कारणै नहीं है अर्थात् शिवजीबोले कि हेपार्वती पूर्व जोहम कहि आये हैं त्यहिकारणते परम आनन्दमय विज्ञानरूप श्रीरघुनाथजीमें अज्ञान निश्चय करिकैं नहीं है काहेते अज्ञानजाकी आज्ञाते व्यापत पुनः मायाजाके बलतेसर्वकार्य करत ताते कमलनयन में मोहकारण नहीं है भाव कमलवत् नेत्रनमें रुपारसभरे सुलभ लोक उद्धारहेतु मानुपवत् लीलाकीन्हें मोहवश ते नबिचारिये अर्थात् यथा लोक जननको प्रसन्नकरनेहेतु विदूषकलोग अनेकवेष बनावत ताही अनुकूल भावदेखावत तामें सत्यमानना अल्पज्ञताहै तैसेही प्रभुकी माधुर्य लीलाहै जाको देखि वा श्रवणकीर्त्तन करि रामसनेह बाढत ताते जीव शुभगति पावत सो तौ प्रयोजनहै अरु साँचु मानि मोहवश होना सो महाअल्पज्ञताहै २४ (मोक्षसाधनंसीताराममरुत्सूनुसंवादंअपिदुर्लभंरहस्यं अत्रतेकथयिष्यामि) शिवजी बोले कि जो मुक्तिको साधनहै भावजाको सुनिमनमें धरे सुलभही मुक्तिप्राप्त होइगी ऐसा जो सीतारामजीको अरु हनुमान्जीको संवाद जो लोक जननको निश्चय करिकैं दुर्लभहै सो रहस्यगुप्त रामतत्त्व जोहै ताहि या समयमें तुम्हारे बोध अर्थ हमको कहिवेकी इच्छा है भाव प्रभुकी प्रेरणाते श्रीज्ञानकीजी जो गुप्तरामतत्त्वहनुमान्जीको सुनायाहै सो हम तुमको सुनावेगे सुनिये २५ ॥

पुरारामाणोरामोरावणंदेवकण्टकम् ॥ हत्वारणेरणश्लाघीसपुत्रबलवाहनम् २६
सीतयासहसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः ॥ अयोध्यामगमद्रामोहनुमत्प्रमुखैर्यु
तः २७ अभिषिक्तःपरिवृतोवशिष्टाद्यैर्महात्मभिः ॥ सिंहासनेसमासीनःकोटिसू
र्यसमप्रभः २८ दृष्ट्वातदाहनुमंतंप्रांजलिंपुरतःस्थितम् ॥ कृतकर्यीनिराकांक्षंज्ञाना
पेक्षंमहामतिः २९ ॥

(पुरा रामायणे रणश्लाघी देव कंटकं रावणं सपुत्र बलवाहनं रणे रामः हत्वा) पूर्व रामायण जो बाबमीकि कृतहै तामें यह चरित्र बर्णन है कि रणक्रिया को प्रलाप करनेवाला देवनको शत्रु जो रावण है ताहि सेना पुत्र बाहन सहित रणभूमि विषे रघुनाथजी मारिकैं विभीषणको राज्यदेतीनि हैं लोकन को अभय करि पुनः २६ (सीतयासह) श्री जानकी जी सहित पुष्पक पर चढ़ि पुनः (सुग्रीव लक्ष्मणाभ्यां समन्वितः) सखा सुग्रीव बन्धु लक्ष्मण इन दोऊ करिकैं सहित (हनुमत्प्र

मुखैर्युतः) हनुमान् मुखिया हैं जिनमें ऐसे वानर ऋक्ष-राक्षसादि युथपन करिके सहित (रामः अयोध्यां अगमत्) श्री रघुनाथजी अयोध्याहि आवत भये २७ (अभिषिक्तः सिंहासने समासीनः) अयोध्याजी में राजमंदिरविषे नवीन भूषण वसन सजे जानकी वामभाग समेत राज्याभिषेक को प्राप्त सन्पूर्ण ऐश्वर्य सहित रत्नसिंहासन पर प्रभुवैठे हैं (कोटिसूर्यसमप्रभः) करोरिन सूर्यनसम प्रभा तनमें प्रकाशमान है (वशिष्ठ आद्यैः महात्मभिः परिवृतः) वशिष्ठआदि महात्मा जननकरिके परिवृत भाव सबदिशिमें घेरे खड़े हैं २८ (तदा हनुमतं दृष्ट्वा प्राञ्जलिं पुरतः स्थितम्) ताही समयमें प्रभु हनुमान्जी को देखे कि हाथजोरे आगे खड़े हैं ते कैसे हैं (कृतकार्यं निराकांक्षम्) सुग्रीव मिलावन सिंधुनायन लंकदाहन सीतासुखिलावन समरमें अनेक साहसकरन तजीवन लावन इत्यादि दुर्घटकार्य तौ प्रभुके अनेक कीन्हें हैं अरु अपना को पावने की कछु भी कांक्षा नहीं राखे हैं (ज्ञान अपेक्षमहामतिः) एक ज्ञानप्राप्ती की अपेक्षा है ऐसे महानुद्धिवन्त हैं २९ ॥

रामः सीतामुवाचे दं ब्रूहि तत्त्वं हनुमते ॥ निष्कल्मषो यं ज्ञानस्य पात्रं नौ नित्यभक्तिमा
नू ३० तथेति जानकी प्राह तत्त्वं रामस्य निश्चितम् ॥ हनुमते प्रपन्नाय सीतालोक
विमोहनी ३१ ॥ सीतावाच ॥ रामं विद्धि परब्रह्म सच्चिदानन्दमद्वयम् ॥ सर्वोपाधि
विनिर्मुक्तं सत्तामात्रमगोचरम् ३२ ॥

(सीतां रामः इदं उवाच) जानकी प्रति रघुनाथजी ऐसा बोलते भये (अयं निष्कल्मषः) ये निःपाप हैं (नित्यनो भक्तिमान्) नित्यही हमारी तुम्हारी भक्तियुत हैं ताते (ज्ञानस्य पात्रं हनुमते तत्त्वं ब्रूहि) ज्ञानके पात्र इन हनुमान्के बोध अर्थ तत्त्वकहो अर्थात् राज्याभिषेक समय विभव समाज सहित प्रभु सिंहासन पर बैठे तबपर दृष्टिकीन्हें निर्वासिक कोऊ न देखान तब हनुमान्जी को देखे कि दुर्घट कार्य तौ अनेकन कीन्हें हैं अरु अर्थ कामादि किसी बातकी इच्छा नहीं है केवल शुद्ध ज्ञान राखने की अपेक्षा है यह विचारि प्रभु जानकीजीसों बोले कि ये पवनपुत्रमें किसी भांति को पाप नहीं है ताते इनकीदेह पावन है पुनः हमारी तुम्हारी सेवा आज्ञा पालनमें प्रीति श्रद्धा समेत नित्य लगे रहते हैं ताते जीवभी पावन इति बाहर भीतर शुद्धताते ज्ञान स्थापित करनेके शुद्ध पात्र हैं ऐसा विचारि हमारा गुप्ततत्त्व हनुमान्को सुनावो ३० (निश्चितं रामस्य तत्त्वं श्रोतुं इच्छा यथा तथा प्रपन्नाय हनुमते जानकी इति प्राह) कौन जानकी (सीतालोक विमोहनी) नाहीं चित्तबद्धा है जो श्रीरघुनाथजी को गुप्ततत्त्व ताको सुनेकी इच्छा किहे हैं जाप्रकार ताही प्रकार शरणागतमें प्राप्त जो हनुमान् तिनके बोध अर्थ श्री जानकीजी इसभांति के वचन बोलती भई कौन जानकी अर्थात् जब चतुर्भुज रामरूप धरे तब लक्ष्मी जानकी भई सो नहीं जो साकेत बिहारीके वामभाग में सदा आसीन रहत सो सीता जिनकी आज्ञाते अवस्थामाया लोकजीवन को बद्धकीन्हें इति लोकविमोहनी सो प्रभुकी आज्ञाते हनुमान् के बन्धन छुड़ावेंगी इति भावते लोक विमोहनी कहे ३१ श्रीसीता जी बोलीं हैं हनुमन् (रामं परब्रह्मविद्धि) रघुनाथजी जाँहें तिनहिं परब्रह्म करि जानौ अर्थात् ब्रह्म जो आत्मरूप जाको सँभारि योगीजन जाको ध्यानकरते हैं सो परब्रह्म यथा रामतापिन्यां ॥ रमंते योगिनो नन्तस्तथानन्दे चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ परब्रह्माभिधीयते (सच्चिदानन्दमद्वयम्) सत् केवल धर्ममात्रजामें कछु बाध नहीं यथापादोस्तत्त्ववाधराहित्यं जगद्वाधैव साक्षिणः । बाधः किं साक्षिको ब्रूहि न त्वं साक्षिक इष्यते ॥ पुनः चित्सदा चैतन्य अर्थात् अखंडज्ञानरूप पुनः आनन्द सदा एकरस

प्रसन्न रहना पुनः अद्वयं जाकी समताको दूसरा नहीं है केवल आपु एकही है यथा श्रुतिः ॥ एकमेवा द्वितीयं ॥ पुनः (सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं) स्थूल सूक्ष्म कारणादि जो तीनिदेहें हैं सोई आत्माविषे उपाधि है उपाधि क्या वस्तु है यथा ॥ उपाधिर्नाधर्मचिन्ता इत्यमरः ॥ अर्थात् धर्म खंडित होनेकी जो चिन्ता है सो देहधारिणमें उपाधि है सो जिनमें नहीं है (सत्तामात्रं) जाते स्थूल सूक्ष्म कारण इत्यादि सब चैतन्य है शुद्ध आत्मरूप है (अगोचरं) जो इन्द्रिणकी विषयमें नहीं आवत ३२ ॥

आनंदं निर्मलं शांतं निर्विकारं निरंजनं ॥ सर्वव्यापिनमात्मानं स्वप्रकाशमकल्मषम् ३३ ॥

(आनंदं निर्मलं शांतं) समूह आनन्द में सदा एक रस परिपूर्ण पुनः रजोगुणादि मल करिके रहित इति निर्मल पुनः प्रपञ्च रहित जीवनके कल्याणपर क्षमा दृष्टिराखे इति शांत यथा श्रुतिः ॥ प्रपञ्चोपशमं शांतं शिवं पुनः (निर्विकारं निरंजनं) लघुदीर्घ अल्प पीन जन्म मरण इति षड्विकार वा कामादि वा शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुन इत्यादि विकाररहित निर्विकार है पुनः अंजन जो कार्य कारणरूप अविद्यामायातम करिके रहित इति निरंजन है पुनः (सर्वव्यापिनमात्मानं) सर्व भूतमात्रमें व्यापक आत्मारूप है यथा श्रुतिः ॥ सर्व भूतान्तरात्मा (स्वप्रकाशमकल्मषं) स्वयं प्रकाशवंत है जा प्रकाशते सब जगत् प्रकाशित है जामें किसी भांतिको पाप नहीं इति अकल्मष है अर्थात् सब प्रकारके पाप कामादि विकार सर्व उपाधि कारण मायारजादिमल इत्यादि रहित शांत अगोचर सत्तामात्र सर्वव्यापी आत्मतत्त्व अद्वितीय स्वयं प्रकाश सच्चिदानन्द परब्रह्म श्रीरघुनाथजी को जानो भाव नैमित्यलीला प्राकृतरूप रघुनाथजीमें न आरोपित करो ३३ ॥

मां विद्धि मूलप्रकृतिं सर्गस्थित्यन्तकारिणीम् ॥ तस्य सन्निधिमात्रेण सृजामीदमतन्द्रिता ३४ ॥

श्रीरघुनाथजी तौ कार्य कारण रहित हैं तौ जगत् रचना कैसे होती है तापर कहत (मूलप्रकृतिं मां विद्धि) आदि शक्ति हमहिं जानो कौन मूलप्रकृति (सर्गस्थिति अन्तकारिणी) उत्पत्ति पालन प्रलयको करणहारी कौन बलते सब कार्य करती हैं (तस्य सन्निधिमात्रेण) रघुनाथजी जो परब्रह्म हैं तिनके समीप वास मात्रते (इदं भूतं तन्द्रिता सृजामि) यह जो संसार है ताहि आलसत्यागिसृजति हैं अर्थात् जानकीजी कहत कि हे हनुमन् यथा परब्रह्म रघुनाथजी को कारण रहित जानौ तथा उत्पत्ति पालन प्रलय कुरणहारी आदिशक्ति हमको जानौ श्रीरघुनाथजीके समीप रहे मात्रते आलस त्यागि यहि संसारकी सब रचना हमहीं करती हैं तब रघुनाथजीको कछु कार्य करने ते क्या प्रयोजन है अर्थात् जाभांति लोक में सुवर्तीजन आलस त्यागि भाव श्रद्धा समेत पतिके पास बसि रातिदान मात्र लैकै गर्भ धारण करती हैं ताको नवमास तक उदर में पालत पुनः जन्म भयेते वृद्धतक श्रद्धा समेत वाको लालन पालन पोषणादि सब कार्य माते करती हैं पिता के करनेते क्या प्रयोजन है अरु विना पुत्रभये सेवक सेव्यभाव कौन मानै ताहेतु पिताको अभिलाषामात्र है परिश्रम नहीं है केवल आनन्दमय भोग करता है इसी भांति जीवन की अभिलाषा सहित परब्रह्म आदि शक्ति में आनन्द भोग करता है तहां परब्रह्म को अंश आत्मवीजवत् चैतन्य प्रकृति को अंश मनरजवत् जड़ है दोऊ मिलि पुत्रवत् सब जीव उत्पन्न होते हैं तिनकरिके समग्र ब्रह्माण्ड भरि पूरे हैं तिनको लालन पालन पोषणादि समग्र व्यापार आदि शक्तिही करिके होता है इसभांति जगत्को उत्पन्न पालन प्रलय आदि आलस त्यागि श्रीजानकी जी करती हैं यथा रामतापिन्यां ॥ श्रीरामसन्निध्यवशाज्जगदानन्ददायि-

नी । उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणीसर्वदेहिनां ॥ सासीताभगवतीज्ञेयामूलप्रकृतिसंज्ञिता । प्रणवत्वात्प्रकृतिरिति वदन्ति ब्रह्मवादिनः ३४ ॥

तत्सान्निध्यान्मया सृष्टं तस्मिन्नारोप्यतेऽब्रुधैः ॥ अयोध्यानगरे जन्म रघुवंशेति निर्मले ३५ विश्वामित्रसहायत्वं मखसंरक्षणं ततः ॥ अहल्याशापशमनं चापभंगो महेशितुः ३६ मत्पाणिग्रहणं पश्चाद्भार्गवस्य मदक्षयः ॥ अयोध्यानगरे वासो मया द्वादशवार्षिकः ३७ ॥

(तत्सान्निध्यात् मया सृष्टं तस्मिन् अयोध्यानगरे अतिनिर्मले रघुवंशे जन्म अब्रुधैः आरोप्यते) श्रीजानकीजी कहत कि हे हनुमन् तौने परब्रह्म श्रीरघुनाथजी के समीप रहेमात्रते हमकरिकै जो सब ब्रह्माण्ड रचना है त्यहिविषे अयोध्यानगरमें भत्यन्त निर्मल जो रघुवंश है त्यहिविषे परब्रह्म को जन्मभया ऐसा अज्ञानिन करिकै आरोपित किया जाता है भाव नैमित्त्य लीला में संयोग वियोग विलापादि परब्रह्म में मानिलेना सो अज्ञानता है काहेते नैमित्त्य लीला सब हमारी रचना है तामें प्रथम अयोध्याधाम भया तामें भमल रघुवंश कुलमें जन्म इति रूपभया पुनः नामकरणते नाम प्रसिद्ध भया आगे लीलाप्रबन्ध सुनिये ३५ (विश्वामित्र सहायत्वं) विश्वामित्र के सहाय कर्ता है (ततः मखसंरक्षणं) तदनन्तर यज्ञकी संपूर्ण रक्षाकरना (अहल्याशापशमनं) पदरज लगाय अहल्याको पवित्रकरना (तुः महेशचापभंग) पुनः जनकपुर में जाय शिवधनुष तोरना अर्थात् राक्षस पीड़ित याचनाकीन्हें तिन विश्वामित्रकी सहायहेतु साथजाय ताड़का सुबाहु आदिकनको मारि सर्वांग ते यज्ञपूर्णकरि चले राहमें पदरज लगाय शापते उद्धार करि अहल्या को पतिसंयोग कराय पुनः जनकपुर जाय शिवको धनुष तोरना ३६ (मत्पाणिग्रहणं) हमारा पाणिग्रहण होना (पश्चात् भार्गवस्य मदक्षयः) विवाहपीछे परशुरामको मद भंगकरना (मया द्वादशवार्षिकः अयोध्यानगरे वासः) हमकरिकै सहित बारहवर्ष तक अयोध्याजी में वास करना अर्थात् जानकीजी कहती हैं कि हमारा विवाह होने पीछे परशुरामको बलवीरताको मदरहा ताको भंगकरि पुरको आय हम सहित बारहवर्ष तक अयोध्याजी में आनन्द विलास सहित वास करना इति सुखसंयोगी लीला ३७ ॥

दण्डकारण्यगमनं विराधवध एव च ॥ मायामारीचमरणं मायासीता हृतिस्तथा ३८ जटायुषो मोक्षलाभः कबन्धस्य तथैव च ॥ शवर्याः पूजनं पश्चात्सुग्रीवेण समागमः ३९ बालिनश्च वधः पश्चात्सीतान्वेषणमेव च ॥ सैनुबन्धश्च जलधौलं कायाश्च निरोधनम् ४० ॥

(दंडक आरण्य गमनं) पितु आज्ञामानि दण्डकवनको जाना (च एव विराध वधः) पुनः निश्चय करि विराध राक्षस को मारना (मायामारीच मरणं तथा मायासीता हृतिः) मायाकृत कंचन मृग रूप मारीचको मरण ताही भांति मायामय सीताको हरण अर्थात् पितु आज्ञा मानि वनको जातसमय चित्रकूटके परिसर राहमें विराधको निश्चयकरि मारे भाव अलखसे नहीं मरि सक्ता रहै ताते जीवतै भूमिखोदि गाड़िदिये तब जाय दंडकवनमें वास किये तहां मायामारीच को मारण मायासीता हरण भाव पूर्व सीता अग्निमें वास मायाते बनी सीता हरीगई ३८ (जटायुषो मोक्षलाभः च तथा एव कबन्धस्य) रावणते युद्धकरि घायल जटायूनामे शूद्रको मुक्तिमिली पुनः ताही भांति निश्चयकरि कबन्धनामे राक्षस को भी सुगति मिली (शवर्याः पूजनं) जलफलादि शवरी कृत पूजन अंगीकार

करि (पश्चात् सुग्रीवेण समागमः) पीछे सुग्रीव करिकै मिलन प्रीतिकरना अर्थात् जटायू गृद्धका मुक्तिदेना ताहीभांति कबन्धको गतिदेना शवरीको पूजन भंगीकारकरि पीछे सुग्रीवते मित्रताकरना ३६ (च बालिनः वयः पश्चात् च एव सीता अन्वेपण) पुनः बालिको मारि पीछे पुनः निश्चयकरि सीताको ढूँढि खबरि मँगवना (च जलधौ सेतुबन्धः) पुनः समुद्र विषे सेतु बन्धन (चलंकायानि रोधनम्) पुनः लंकाको घेरिलेना अर्थात् सुग्रीवको शत्रुजानि बालिको मारि सुग्रीवको राज्यदे पीछे दूतपठे सीताकी खबरि मँगवना बानरी सेनालै जाय समुद्रविषे सेतुबँधाय उतरि समूह बानर रीछन की सेनाते लंकापुरी को घेरिलेना ४० ॥

रावणस्य बधो युद्धे सपुत्रस्य दुरात्मनः ॥ विभीषणे राज्यदानं पुष्पकेन मया सह ४१

अयोध्यागमनं पश्चाद्वाज्ये रामाभिषेचनं ॥ एवमादीनिकर्माणि मया चरितान्यपि

४२ आरोपयन्ति रामे स्मिन् निर्विकारेऽखिलात्मनि ४३ रामो न गच्छति न तिष्ठति ना

नुशोचत्याकांक्षते त्यजति नो न करोति किञ्चित् ॥ आनन्दमूर्तिरचलः परिणाम

हीनो मायागुणाननुगतो हितथाविभांति ४४ ॥

(पुत्रस्य स दुरात्मनः रावणस्य युद्धे बधः) पुत्रको सहित दुष्टात्मा रावणको युद्धमें बधहोना (राज्य दानं विभीषणे) लंकाकी राज्यको दान विभीषणके अर्थ दिये (मया सह पुष्पकेन) हम करिकै सहित पुष्पक विमान पर चढ़ि चले अर्थात् पुत्रमेघनादको सहित दुष्टरावणको युद्धमें मारि ताकी राज्य विभीषणको दे हम सहित पुष्पक विमानपर चढ़ि चलना ४१ (अयोध्यागमनम्) अयोध्याजीको आयकै भरतादि सब को मिलि (पश्चात् राज्ये रामाभिषेचनं) सबको मिले पीछे अयोध्याकी राज्य विषे रघुनाथजीको अभिषेक भया (एवंमादीनिकर्माणि अपि मया एव आचरितानि) इसी भांति आदि दैकै यावत् कर्म भये तिनको निश्चय करि जा लिये सब हमहीं करिकै आचरण भये ४२ (निर्विकारे निरात्मनिरामेस्मिन् आरोपयन्ति) जन्म कर्मादि विकार रहित परमात्मा श्रीरघुनाथजीके विषे आरोपित करते हैं अर्थात् अयोध्यामें राज्याभिषेक इत्यादि यावत् कर्म हैं सब मेरे किये हैं सो निर्विकार जो रघुनाथजी तिनरुतमानते हैं ४३ (रामः गच्छति) रघुनाथजी चलते नहीं हैं (तिष्ठति) ठाढ़े नहीं होते हैं (अनुशोचति) कछु शोचते नहीं (अकांक्षते) काहू वस्तुकी इच्छा नहीं करते हैं भाव अनिच्छित हैं (त्यजति) कछु त्यागभी नहीं करते हैं (न करोति किञ्चित्) कछु थोरहू काम नहीं करते हैं फिरि कैसे हैं (परिणामहीनः अचलः आनन्दमूर्तिः) विकाररहित अचल आनन्दमूर्ति हैं तब समग्र व्यापार कैसे होते हैं तापर कहत (मायागुणाननुगतो हितथाविभांति) सृष्टि करणहारी जो माया हैं तामें सतरजतमादि जो गुण हैं तिनमें अनुगत व्याप्त हैं ताते मायागुणों करि यथा व्यापार होत तथा विभांति तैसेही परब्रह्ममें दर्शित होता है अर्थात् जो जीव विषयासक्त होत तब इन्द्री विषय द्वारा जीव चलायमान होत प्रभुमें विषयको रीचै नहीं ताते चलते नहीं पुनः जा वस्तुमें लोभ होत ताके ढिगठाढ़ होत इहां लोभ नहीं तौ काहेको ठाढ़ होय पुनः जब किसी वस्तुमें मोह होत ताकी हानि भये पर शोचत इहां किसी परमोह नहीं तन्न शोच कहां है पुनः जापर क्रोध होत ताको त्यागत इहां किसी परक्रोध नहीं तौ त्यागें किसको कार्य सो करै जाके किहे बिना कछु हानि होइ इहां आज्ञा को रुखद्रेखि हम निमिषमात्रमें अनेक ब्रह्माण्ड रचि देती हैं तौ क्या हानि है ताते कछु भी नहीं करते ४ पुनः जो कहौ चलतैनहीं इति अचल हैं कामादि विकार नहीं इति परिणामहीन हैं जो कछु भी

नहीं करते इति आनन्द मूर्ति हैं अरु मायामें व्यापक हैं ताते मायागुणोंकरि जो व्यापार होता है सो परब्रह्ममें दर्शित होता है अरु है कछु नहीं ४४ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ ततो रामः स्वयं प्राह हनुमन्तमुपस्थितम् ॥ शृणु तत्त्वं प्रवक्ष्यामि
ह्यात्मानात्मपरात्मनाम् ४५ आकाशस्य यथा भेदस्त्रिविधो दृश्यते महान् ॥ जला
शये महाकाशस्तदवच्छिन्न एव हि ४६ ॥

(ततः हनुमन्तं उपस्थितं रामः स्वयं प्राह) ताके पीछे हनुमान् जो हैं तिनहिं समीप बैठारि रघुनाथ जी आपही बोलते भये (शृणु आत्म अनात्म परमात्मनाम् तत्त्वं हि प्रवक्ष्यामि) हे हनुमान् सुनिये आत्म जो ईश्वर अनात्म जो जीव परमात्म जो शुद्ध चैतन्य परब्रह्म इत्यादिकनको तत्त्व भेद निश्चय करि हम कहते हैं अर्थात् गिरिजा प्रति शिवजी कहत कि जानकी जीके कहि भये पीछे हनुमान्को समीप बैठारि रघुनाथजी आपही बोलते भये हे हनुमान् सुनिये ईश्वर जीव परब्रह्म इनको तत्त्वभेद हम निश्चय करि कहते हैं ४५ (महान् आकाशस्य यथा त्रिविधो भेदः दृश्यते) महा आकाशके जौन भांति तीन विधिके भेद देखि परते हैं कौन तीन हैं (महा आकाशः तत् अवच्छिन्न) महाकाश तौन अवड्ड है (एव हि) निश्चय करिके पुनः (जलाशये) जामें जल थै भिसकै यथा कुंभ माठत-डाग समुद्र प्रयंतमें जो सावकाश है सो दूसरा आकाश जानिये ४६ ॥

प्रतिविचारस्य परं दृश्यते त्रिविधं नभः ॥ बुद्ध्यवच्छिन्न चैतन्यमेकम् पूर्णमथापरम् ४७ आभासस्वपरं विवभूतमेवं त्रिधा चितिः ॥ साभासबुद्धेः कर्तृत्वमविच्छिन्ने ऽविकारिणि ४८ ॥

(अपरं प्रतिविचारस्यं त्रिविधं नभः दृश्यते) और तीसरा जो जलके भीतर प्रसिद्ध परछाहीं आकाश की देखात इत्यादि तीन विधिके आकाश दिखाते हैं अर्थात् रघुनाथजी कहत कि हे हनुमान् ईश्वर जीव परब्रह्म तत्त्वमें कैसा भेद है जैसे आकाशमें तीन भेद हैं एक महाआकाश जामें सब ब्रह्माण्ड रचना है दूसरा जलाशयाकाश जामें जल रहसक्ता है यथा कुम्भसर सागरादि तीसरा प्रतिविवाकाश जो जलमें आकाशकी परछाहीं देखात इत्यादि तीन भेद देखाते हैं तथा (बुद्धि अवच्छिन्न चैतन्य पूर्ण एक) बुद्धि परिपूर्ण है जामें ऐसी आदिमाया तामें चैतन्य परिपूर्ण एक जो आत्मा सो ईश्वर है भाव जाभांति भूमिके आधार जल परिपूर्ण लोक हितहेतु लघु विशाल अनेकन जलाशयमें खरिड-त आकाश है ताही भांति मायाके आधार अमल बुद्धि परिपूर्ण तामें परिपूर्ण एक आत्मा सो लोक उत्पत्ति पालनादि हितहेतु अंश कला गौणशक्ति आवेश पूर्णादि ईश्वर के अनेक रूप हैं (अथ अपरं) तदनन्तर और सुनिये जीवको ४७ (आभासः) परब्रह्मकी प्रतिबिंब सो जीव है (तु अपरं विवभूतं) पुनः और जो शुद्ध चैतन्यरूप सो परब्रह्म है (एवं त्रिधा चितिः) इस भांति तीन प्रकारके चैतन्य हैं अर्थात् बिंब कहिये रूपको प्रतिबिंब कहिये परछाहीं को इहां कारणरहित शुद्ध चैतन्य अमूर्ति आकाशवत् सर्वत्र परिपूर्ण व्याप्त सो बिंब परब्रह्म है पुनः बिनास्वरूप धारण किये कछु कार्य करते बनता नहीं बिना मायास्वरूप है नहीं सका है ताते लोक रक्षादि कार्यहेतु मायामय स्वरूपमात्र धारण किहे परन्तु अमल बुद्धि सर्वांग में परिपूर्ण तामें एक आत्म व्यापक रूप परदृष्टिराखत अरु शब्दादि विकार छुड़ नहीं जात सो ईश्वर है भाव जामें अखण्ड ज्ञान है पुनः बुद्धिमें जो परब्रह्म की आभास अर्थात् प्रतिबिंब है सो जीव है आभास क्या है सो कहत (बुद्धेः कर्तृत्वं स आभास) बुद्धि को करता न

जाना सो आभास परब्रह्म की प्रतिबिम्ब है कौन भांति सो कहत (अवच्छिन्ने) नहीं स्वशिद्ध है जामे (अवि कारिणि) नहीं विकार है जामे ४८ ॥

साक्षिण्यारोप्यते भ्रान्त्या जीवत्वञ्च तथा बुधैः ॥ आभासस्तु मृषा बुद्धिरपि साक्षात्
र्यमुच्यते ४९ अविच्छिन्नन्तु तद्ब्रह्म विच्छेदरतु विबलितः ॥ अविच्छिन्नस्य पूर्णे
न एकत्वं प्रतिपद्यते ५० ॥

(साक्षिणि) अखंड विकार रहित साक्षी जो है आत्मा तेहि विषे (बुधैः बुधैः कर्तृत्वं आरोप्यते)
अज्ञानिन करिके बुद्धिको जो कर्तृत्व है ताहि आत्मा विषे आरोपण किया जाता है यथा अज्ञान भ्रमते
जल में आकाशकी प्रतिबिम्ब को आकाश मानते हैं (तथा भ्रान्त्या जीवत्वं) तैसेही बुद्धिके कर्तव्य
में आत्माकी भ्रम करना भाव देह सम्बन्धी यावत् व्यापार हैं सोई सत्यमानिलेना इति बुद्धि में
आत्माकी भ्रम करना सोई जीवत्व है अर्थात् जब कारण मायावश आत्मदृष्टि भूलि जीवत्व बुद्धिने
अपना को कर्ता माने कार्य मायावश इंद्रिय के विषय में आत्म है देह को सत्य माने यथा हम ब्राह्मण
विद्वान् तपस्वी सबके पूज्य हैं सब वर्ण हमारे सेवक हैं हम क्षत्री राजा सब वर्ण हमारे प्रजा हैं हम
वैश्य धनी महाजन सब हमारी असाही हैं तूमेरा शत्रु है तुझको बिगारि देउंगो तूमेरा मित्र है तुझ
को बनाय देउंगो इत्यादि देह संबंधी व्यवहार यद्यपि त्रिकाल में भूँठा है अरु एक आत्मरूप सांचा है
सोई सत्यता बुद्धि भ्रमते देह व्यवहार को सांचु मानिलेना सोई परब्रह्म की परछाहीं बुद्धि में देवात
सोई जीव है इत्यादि तीनि भेद हैं तहां यथा आकाश सांचा तथा परब्रह्म सांचा पुनः जलाशय में जो
खंडित आकाश सो सांचा तथा ईश्वर में आत्मदृष्टि सो सांचा पुनः जल में आकाशकी प्रतिबिम्ब जो
देखाती है सो भूँठा है तथा) आभासस्तु मृषा बुद्धिः) आभास जो परब्रह्म की प्रतिबिम्ब बुद्धि में देखाती
है भाव देह व्यवहार को सांचु मानना यह मिथ्या बुद्धि सर्वथा भूँठी है काहेते (अविद्याकार्य उच्यते)
अविद्या मायाके किये कार्य सब भूँठे कहे जाते हैं यथा दर्पण में मुख की प्रतिबिम्ब देखने मात्र तौ सत्य
भासत परन्तु है भूँठे तैसे अविद्या के व्यापार देखत सत्य है भूँठ ४९ (तु तत् ब्रह्म अविच्छिन्नं) पुनः
तौ न ब्रह्म अभेद है (तु विच्छेदः विकल्पितः) पुनः जो भेद देखाते हैं सो विकल्पित बने हुये हैं सोने
नहीं है कौन भांति यथा देवशब्द प्रथमो के बहुवचन में देवाः देवासः इत्यादि दो रूप प्रसिद्ध देखाते
हैं अरु अर्थ एकही है तहां वेद प्रयोग सुगम सिद्धार्थ आचार्योने शब्द ब्रह्म में विकल्प करि भेद किया है
ताते अनादि कालते चले आवते हैं ऐसेही बने रहेंगे तथा सेवक सेव्य भावादि प्रयोजन हेतु परब्रह्म
की इच्छाते अविद्याने विकल्प करि ब्रह्म में भेद किया है सोभी सनातन ते इसी भांति चले आवते हैं ताही ते
सब ब्रह्माण्ड रचना है अरु जो भेद न होवै तौ विना सृष्टि ब्रह्म शून्य है यथा कवित ॥ शून्य प्रजाविन
भूपृथु है यमालय हीन महात्म्य न तारन । बद्ध बिना किमि मुक्त प्रशंस विना तम होत प्रकाश पारारन ॥ दात
विना किमि रवा सि स जैरु दरिद्र विना किमि भागि अगारन । सोपिन शोभित जीव विना परमेश्वर सृष्टि रचना
यहि कारन ॥ इत्यादि प्रयोजन मात्र विकल्पित भेद हैं पुनः (अवच्छिन्नस्य पूर्णे) जो भेद रहित ब्रह्म है
ताको पूर्ण करि देखिये तौ (एकत्वं प्रतिपाद्यते) एकही पुष्ट होता है कौन भांति यथा अखंड आकाश
इहां पर दृष्टि करिये तौ जलाशय प्रतिबिम्बादि सब पदार्थ में वही एक आकाश सर्वत्र परिपूर्ण है कछु
को शही है तथा ईश्वर जीवादि सबमें व्यापक एक परब्रह्म परि पूर्ण है कछु भी भेद नहीं है ५० ॥
है पुनः ।

तत्त्वमस्यादिवाक्यैश्चसाभासस्याहमस्तथा ॥ ऐक्यज्ञानंयदोत्पन्नंमहावाक्येन

चात्मनः ५१ ॥

(तत्त्वमस्यादिवाक्यैः) तत्त्वं अस्ति इत्यादि वाक्यन करिकै (चसाभासस्य) पुनः सहित आभासको (अहमस्तथा) अहं पदको ताही भांति (चआत्मनःमहावाक्येन) पुनः आत्माको तत्त्वमसि इति महावाक्य करिकै (यदाऐक्यज्ञानंउत्पन्नं) जो एक ज्ञान उपजै अर्थात् तत् कहै ब्रह्मत्वं कहै, अमलजीव अस्ति कहै ईश्वर यथा महारामायणे॥ब्रह्मोतितत्पदंविदित्वंपदोजीवनिर्मलः । ईश्वरोऽसि पदंप्रोक्तंततोमायाप्रवर्तते ॥ भाव जो ब्रह्महै सोई तत्त्वअमलजीवहै सोई तत्त्व ईश्वरहै इत्यादि वाक्य नको अर्थ विचार करिकै पुनः आभास परब्रह्मकी प्रतिविंब जो बुद्धीमेंहै भाव देहाभिमान ताको विचार सहित भाव देह क्या चीजहै ताही भांति अहं पदको विचारै भावहमको है पुनः आत्माको है इति विचारेते देह अविद्याको व्यवहारहै सो तौ सर्वथा अनित्यहै अरु अमलरूप हम सोई तत्त्व हैं जो आत्माहै इत्यादि आत्माको तत्त्वमसि यहि महावाक्य करिकै भाव ब्रह्म अमल जीव ईश्वर ये आत्मरूप ते एकही तत्त्वहै इत्यादि आत्मामें जब एकज्ञान उपजै तब क्या होताहै सो कहत ५१॥

तदाविद्यास्वकार्यैश्चनश्यत्येव न संशयः ॥ एतद्विज्ञायमद्भक्तोमद्भावायोपपद्यते ५२॥

(तदाअविद्यास्वकार्यैः) तब अविद्यामाया प्रपंचादि आपने कार्यन करिकै सहित (चतदयति ए- व न संशयः) नाशहोतीहै निश्चय करिकै यामें संशय नहीं है (एतद्विज्ञायमद्भक्तः) यह तत्त्व भेद ज्ञान जानिकै मेरेभक्त (मद्भक्त्या उपपद्यते) मेरे पद प्राप्ती के अर्थ इसीमार्ग पर चलतेहैं भावमहा वाक्यकरिकै आत्मामें एक ज्ञान आवत तब प्रपंचादि आपने कार्यन सहित अविद्या निश्चयकरि नाशहोत यामें संशय नहीं है यही तत्त्व ज्ञानको जानिकै हमारे भक्त हमारे पद प्राप्तीके अर्थ इसी मार्ग पर चलतेहैं अर्थात् रघुनाथजी कहत कि हे हनुमान् यथा प्रतिविंबाकाश जलाशयाकाश भूम मात्रहैं विचारेते सर्वत्र महाकाशें परि पूर्ण है तथा अविद्याकृत भूमहै महावाक्य करिकै विचारते सबमें परब्रह्में परि पूर्ण है ऐसा जानि हमारे पद प्राप्तीहेतु हमारे भक्त इसी महावाक्यकी रीति पर चल- तेहैं अब भक्ति पक्षमें महावाक्यार्थ यथा (तत्त्वं अस्ति) तत्पद ईश्वर वाचकः त्वंपद जीववाचकः अ- सि इति क्रियापदं तेन तत्कोर्थः तस्य ईश्वरस्य त्वं अस्ति भवसि इत्यर्थः तेन जीव ईश्वरयोरेव अनादिसम्बन्धः यथा सेवक सेव्य पुत्र पिता अंश अंशो प्रकाश प्रकाशो पशोषी इत्यादि अथवाक्यानां विशेषार्थ माह तत्त्वं असि इति पंचपदानितत्त्वादस्वतंत्रकर्तृ ईश्वरवाचकः त्वंपदं नित्यमुक्तजीववाचकः अकारमुमुक्षुजीव वाचकः सकारबद्ध जीववाचकः इकारदेवीप्रकृतिवाचकः अथवा तत्पदेति पदे श्रीरामः तद्धाम तन्नाम तद्रूप तल्लीलातेषामधिकारी त्वंपदवाच्यो नित्यमुक्तो भवतः अकारस्तु केवल्य जीववाचकः सकारस्तु मुमु- क्षुजीववाचकः इकारः प्रकृतिबद्ध जीववाचकः अथवा तत्पदे नाम रूप लीला धामपूर्वक परमात्मा- परब्रह्म बुद्धयते त्वं पदे नित्यमुक्ता पार्षदा दासीदास सखी सखारूपेण अकारः आह्लादिनी शक्ति वाचकः सकारः संधिनी शक्तिवाचकः इकारः संदीपिनी शक्तिवाचकः अथवा तत्पदं संविदानन्दं विग्रह वाचकः त्वं पदं धाम वाचकः अकार समस्त वैभव भोगोपकरण वाचकः सकार समस्त विहार वाचकः इकार माधुर्यानन्दशक्तिवाचकः अथवा तत्पदं श्रीमद्वशरथादि गुरुजन वाचकः त्वंपदं श्रीम द्रामचन्द्र वाचकः अकारो वांछ्यादि अनन्तलीला वाचकः सकारः शक्ति नित्य अर्थात् एकैकं वाचकः इकारः सर्व सुखानन्द वाचकः तत्त्वमसि इति वाक्ये मुख्यत्वेन जीवानां सम्बन्ध दर्शनं भवति तत् कोर्थः तस्य हे जीवत्वं अस्ति तस्य कस्य इति पूर्वोक्तं वर्तते तेन तस्य कस्य परात्परब्रह्मणः श्रीरामच

न्द्रस्य मुख्यत्वेन ननु श्रीमद्रामचंद्रे एव जीवानां मुख्यसम्बन्धः इत्यादि सेवकसेव्यभाव मुख्य जीवन को कल्याण करताहै इत्यादि हेतुपूर्वकहे जो इलोकन में हैं कि आभास अर्थात् देह सहित तथा अहमजो जीव तेहि सहित महावाक्य करि जब आत्मामें एकज्ञान आनत तब अविद्याकार्य सहित नाशहोत ताको भावयावत् देह बुद्धीतावत् श्रवण कीर्तनादिनवधा भक्तिकरै जब जीव बुद्धी आवै तब प्रेमा भक्तिकरै जब आत्मबुद्धि आवै तब अचल अनुराग पराभक्तिकरै इसमार्गपर आरूढभये संते अविद्या कार्य नाशहोत भक्तजन प्रभुके समीपीहोते हैं भावभक्ति सहित ज्ञान मोक्ष दायकहै रुच्छमें बाधा होतैहैं ५२ ॥

मद्भक्तिविमुखानां हि शास्त्रगतेषु मुह्यताम् ॥ न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात्तेषां जन्मशतैरपि ५३ ॥

(मद्भक्तिविमुखानां हि) जेमेरी भक्तिसो बिमुखहैं निश्चय करिकै (शास्त्रगतेषु मुह्यताम्) जे शास्त्र रूपी गडहामें मोहको प्राप्तहैं (तेषां जन्मशतैः अपि) तिनको सैकरन जन्मतक निश्चय करिकै (न ज्ञानं न च मोक्षः स्यात्) न ज्ञान प्राप्तहोवै न मुक्तिहोतीहै अर्थात् रघुनाथजी कहत कि हे हनुमान् जे प्राणी जाति बिद्या महत्व रूपयौवन धनादिमान बशं मेरी भक्तिते मनुफेरे हैं तथा न्याय वैशेषिक सांख्यादि शास्त्रनके पढ़नेते मतमतांत खंडन प्रतिपादनादि जोगहिरै गडहे संम तामें मदांधपरेहैं ये आचरण करिकै सैकरन जन्मतक ज्ञाननहोइगो भाव प्रति दिन देहाभिमान बढी तब ज्ञान कैसे है सकाहै जब भक्ति ज्ञाननहीं तबमोक्ष कहाहै ५३ ॥

इदं रहस्यं हृदयं ममात्मनो मयैव साक्षात्कथितं तवानघ ॥ मद्भक्तिहीनाय शठाय न त्व

यादातव्यं भद्रादपिराज्यतोधिकम् ५४ श्रीमहादेव उवाच ॥ एतत्तेभिहितं देवि श्री

रामहृदयं मया ॥ अतिगुह्यतमं हृदयं पवित्रं पापशोधनम् ५५ ॥

(इदं रहस्यं हृदयं) यहजो अत्यन्त गुप्ततत्त्व रामहृदयहै (मम आत्मनः) मेरी आत्माहै भावतामान्यजीवनके कहने योग्यनहींहैं (हे अनघ तव मया साक्षात् एव कथितं) हे हनुमान तुम पापरहितहौ ताते तुमसो हमकरिकै प्रत्यक्ष निश्चय करि कहागया परन्तु तुमयाको कैसे राखना (इंद्रात् अपिराज्यतः अधिकम्) इन्द्रते निश्चय करि राज्यमें अधिकहोय तबहूं (मद्भक्तिहीनाय शठाय त्वयानदातव्यं) मेरी भक्ति ते हीन अरु अज्ञानी इत्यादिकनके अर्थ तुमकरिकै यह न दांनिजाय अर्थात् रघुनाथजी कहत कि यह जो गुप्त मेरा सिद्धांत तत्त्व राम हृदयहै सो मेरी आत्माहै अर्थात् मेरे चरित्र को सारांश है ताते विषयी बिमुख अल्पज्ञ जीवन सों कहने योग्य नहीं है हे हनुमान तुम पापरहित शुद्धहौ ऐसा जानि निश्चय करि तुमको प्रत्यक्ष सुनावा तथा शुद्धतत्त्वज्ञ मेरा भक्त होइ ताको सुनावना अरु मेरी भक्तिहीन अल्पज्ञ जो इन्द्रते अधिक राजाहोय ताहूको न सुनावना इसरीतिसे याको गुप्त राखना ५४ (हे देवि एतत् श्रीरामहृदयं) हे पार्वति यह जो श्रीरामहृदयहै सो (अतिगुह्यतमं हृदयं) अत्यन्त गुप्ततेगुप्त हृदय को प्रियहै (पवित्रं पापशोधनम्) पवित्र है पापनको नाशकरताहै ताहि (मया ते अभिहितं) हमकरिकै तुम्हारेअर्थ कहागया अर्थात् पूर्व सम्वाद की समाप्ती करि शिवजी यहि कहत है पार्वति यह जो श्रीरामहृदय है सो अत्यन्त गुप्ततेगुप्त रघुनाथजीके हृदयको प्रियहै ताके ताको पूर्ण को जीव पावनहोत ऐसी पवित्र पापनको नाशकरता जानि याको हम तुमको सुनावहैं इहो पर दृष्टिकरि और सुनिये ५५ ॥

को नहीं है तथा मेण कथितं सर्ववेदान्तसंग्रहम् ॥ यः पठेत्स ततं भक्त्या समुक्तो नात्र संशयः ५६ ॥

ह पुनः

ब्रह्महत्यादिपापानिबहुजन्मार्जितान्यपि ॥ नश्यंत्येव न संदेहो रामस्य वचनं यथा ५७ जातिभ्रष्टोतिपापी परधननिरतो ब्रह्महामित्रहन्ता स्वर्णस्तेयीकुलघ्नः कलुषशतयुतो योगिवृन्दापकारी ॥ यः सम्पूज्याभिरामं पठति च हृदयं रामचन्द्रस्य भक्त्यः योगीन्द्रैरप्यलभ्यं पदमिह लभते सर्वदेवैः स पूज्यम् ५८ ॥

इति श्री अध्यात्मरामायणे बालकाण्डे रामहृदयं प्रथमः सर्गः १

(साक्षात् रामेण कथितं) प्रत्यक्ष श्रीरघुनाथजी करिकै कहाहुवा यह जो रामहृदय है (सर्ववेदांत संग्रहं) वेदांतशास्त्र में यावत् उपनिषद् हैं तिन सबको सारसंग्रह है (यः भक्त्या सततं पठेत्) जो जन भक्ति करिकै सदा पढ़ता है (समुक्तो अत्र संशयः न) सो मुक्त होता है यामें संशय नहीं है अर्थात् शिवजी कहत कि प्रत्यक्ष श्रीरघुनाथजीके मुख करिकै कहाहुवा यह जो रामहृदय है सो वेदान्तशास्त्र मधि सारांश निकारि थोरैमें संग्रह करि दिया गया है जो जन श्रीरामपद प्रीतिसहित याको कीर्तन करता है सो परमपद पावता है यामें संशय नहीं है कि मुक्त होय वा न होय सो न बिचारै निश्चय मुक्ति होई ५६ (बहुजन्म अर्जितानि अपि) बहुते जन्मनके उपजायेहुये (ब्रह्महत्या आदि पापानि) ब्राह्मण मारे जो हत्या है इत्यादि यावत् पाप हैं (नश्यन्ति एव न संदेहः रामस्य वचनं यथा) नाश होते हैं निश्चय करि संदेह नहीं है अर्थात् ब्रह्महत्या आदि पाप जो अनेकन जन्म के उपजाये बटुरे हैं ते सब रामहृदयकी पाठ करते नाश हो जाते हैं यामें संदेह नहीं काहेते यह रघुनाथजी को वचन है जा भांति सो आगे कहत ५७ (जातिभ्रष्टो अतिपापी) अपनी जातिको धर्म कर्म रीतित्यागि म्लेच्छ चांडालादिकी रीति करनेवाला तथा अत्यन्त पाप करनेवाला यथा परस्त्रीगमन पाप है ताहूमें गुरुजन स्त्री ताहूमें जवरइन इत्यादि अतिपापी (परधन निरतो) जो पराधन हरिलेने के व्यापारमें सदा लगे रहते हैं यथा ठग चोर बटपारादि (ब्रह्महामित्रहन्ता) जो ब्राह्मण को मारा वा मित्रको घात किया (स्वर्णस्तेयी कुलघ्नः कलुषशतयुतः) सोना चोरानेवाला तथा अपने कुलको नाश करनेवाला इत्यादि पाप सैकरन युत पुनः (योगिवृन्द अपकारी) समूह योगीजनन को अनहित करनेवाला इत्यादि सो भी (यः अभिरामं सम्पूज्य) जो सुन्दरी रीति सम्पूर्ण प्रकारते रघुनाथजी को पूजन करि (च रामचन्द्रस्य हृदयं भक्त्या पठति) पुनः रामहृदय जो है ताहि भक्ति करिकै पढ़ता है (स सर्वदेवैः पूज्यं योगीन्द्रैः अपि अलभ्यं इह पदं लभते) सो सर्व देवन करि पूज्य योग्य अरु जो पद योगीन्द्रन करिकै निश्चय करि अलभ्य है यहि रामपद को पावता है अर्थात् अब रामहृदय को माहात्म्य कहते हैं कि जातिते भ्रष्ट अत्यन्त पापी परधनहर्ता ब्रह्महन्ता मित्रघाती सोना चोरानेवाला निज कुलघाती इत्यादि सैकरन पापयुत अरु समूह योगिनको अनहित करता ऐसहूजन जो रघुनाथजी को पूजन करि पुनः भक्तिसहित रामहृदयकी पाठ करता है सो जीवनपर्यंत देवन करिकै पूज्य रहत अंतकाल तेहि रामपदको जात जो योगीजनन को दुर्लभ है ५८ ॥

इति श्री रसिकलताश्रित कल्पद्रुमसिखबलभपदशरणागत बैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे श्रीरामहृदयवर्णनो नाम प्रथमः प्रकाशः १ ॥

पार्वत्युवाच । धन्यास्म्यनुग्रहीतास्मि कृतार्थास्मि जगत्प्रभो ॥ विच्छिन्नमेतिसंदेहग्रंथिर्भवदनुग्रहात् १ ॥

स० । रावण पीडित देव धरामुनि गन्धर्व नाग नरादि सबार्हीं । आरत जाय विरंचिं समेत पुकार किये पयसागर पार्हीं ॥ भाषि धरौं तनहौं रघुवंशहि बानररूप धरौं तुम तार्हीं । बैजसुनाथ नमामिस्वई परब्रह्म भये नर भूतल मारहीं ॥ (धन्यास्मि) मैं बड़ी पुण्यवंतभई (अनुग्रहीतास्मि कृतार्थास्मि) आपकी अनुग्रह सदा दयासहित मैं कृतार्थहौं काहेते (हे जगत्प्रभो भवत् अनुग्रहात्) हे जगत् के स्वामी आपकी अनुग्रहते (मेति संदेहग्रंथिः विच्छिन्नो) मेरे अत्यंत संदेहरूप हृदयमें ग्रंथीरहै सो बिंशेपि खण्डितभई अर्थात् पार्वतीजी कहती हैं कि हे स्वामी जगत् को पालनहार आप की सदा दया मोपर रहत ताते मैं धन्य अरु कृतार्थ भई काहेते पूर्व मेरे हृदय में अत्यन्त संदेह अर्थात् जो रघुनाथजी परब्रह्म हैं तो उनमें हर्ष शोक नहोना चाहिये अरु जो उनमें भी वियोग दुःखादि जीवनकी समान आपर्ही दुःखितहैं तब और को दुःख क्या मिटावेंगे ताते उनकी उपासना न करना चाहिये इति संदेहरूप ग्रंथीरहै सो आपकी अनुग्रहते छूटि गई भाव जड़ता मिटी बुद्धिमें चैतन्यता आई शुद्ध रामरूप जानिपरो १ ॥

त्वन्मुखाद्गलितं रामतत्त्वममृतं रसायनम् ॥ पिवन्त्यामे मनो देवन तृप्यति भवापहम् २ श्रीरामस्य कथा त्वत्तः श्रुता संक्षेपतो मया ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि विस्तरेण स्फुटाक्षरम् ३ ॥ श्रीमहादेव उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि गुह्याद्गुह्यतरं महत् ॥ अध्यात्मरामचरितं रामेणोक्तं पुरा मम ४ ॥

(देवभवापहं रामतत्त्वममृतं रसायनम्) हे देवभव रोगको नाशकरता जो श्रीरामतत्त्वरूप अमृत मय रसायनहै सो (त्वन्मुखाद्गलितं पिवन्त्यामे मनो न तृप्यति) सोई अमृतरस आपके मुखते चुड़ रहा है ताहि पीवतसंते मेरा मन अघाता नहीं है अर्थात् पुनः पार्वतीबोलीं कि हे देव यद्यपि संदेह नहीं है परन्तु यह जो श्रीरामतत्त्वहै सो एक तौ भवरोग जो संसार योनिनमें जन्म मरणादि ताको नाश करता पुनः अमृतमय रसायन भाव श्रवण मात्रजीवको अमर करता परम पद दायक पुनः पान करनेमें अपूर्व मीठा स्वाद सोई अमृतरस आपके मुखते चुड़ रहा है ताको पीवत भाव सुनतसंते मेरा मन अघाता नहीं है २ (श्रीरामस्य कथा त्वत्तः) श्रीरघुनाथजी की कथा आपते (संक्षेपतः मया श्रुता) संक्षेपते हम करि सुना गया ताते (इदानीं विस्तरेण स्फुटाक्षरम् श्रोतुमिच्छामि) या समयमें विस्तार करिके पुष्टाक्षर सुनबेको मोको इच्छा है अर्थात् पार्वतीजीबोलीं कि पूर्व श्रीरघुनाथजी की कथा आपके मुखते संक्षेप विस्तार रहित मैंने सुना बोध नहीं भया तथहिते या समयमें विस्तार बढ़ायकै पुष्ट अक्षर भाव प्रसिद्ध भावार्थ ऐसा समुभायकै कहिये जो बुद्धिमें आइ जाय चहिरीति सुनवकी इच्छा है सो कृपाकरि कहिये ३ (पुरा मम रामेण उक्तं) पूर्व कालमें मोसोरघुनाथजी करिके कहा गया है (गुह्याद्गुह्यतरं महत्) गुप्तते गुप्तमहागुप्त उत्तम (अध्यात्मरामचरितं) अध्यात्मनामे रामचरित जो है ताहि (प्रवक्ष्यामि देवि शृणु) हम कहते हैं हे देविसुनौ अर्थात् शिवजीबोले कि पूर्व समय श्रीरघुनाथजीने हम सों कहा है भाव किसी और के जानबे योग्य नहीं है काहेते गुप्त जो बेदतत्त्व ताहूते गुप्त कूटस्थ है अरु उत्तम है ऐसा जो अध्यात्म रामचरितभाव आत्मरूपमें अधिकार जाको ताको कही अध्यात्म सोई सबकी आत्मा में अन्तर्यामीरूपते बसे हैं जो श्रीरघुनाथजी तिनको चरित वर्णन जो काव्य है सो अध्यात्म राम चरित जो है ताहि हम कहते हैं हे देवि पार्वती सावधान हवै सुनिये ४ ॥

तद्व्यकथयिष्यामि शृणुतापत्रयापहम् ॥ यच्छ्रुत्वामुच्यते जंतुरज्ञानोत्थमहाभयात् ॥

प्राप्नोतिपरमामृद्धिर्दीर्घायुःपुत्रसंततिम् ५ भूमिभारेणमग्नादश्वदनमुखार्शेषर
क्षोगणानां धृत्वागोरूपमादौदिविजमुनिजनैः साकमब्जासनस्य ॥ गत्वालोकरु
दंतीव्यसनमुपगतं ब्रह्मणे प्राह सर्वं ब्रह्माध्यात्वा मुहूर्तसकलमपि हृदा वेदशेषात्म
तत्त्वात् ६ ॥

(तत्प्रथमकथयिष्यामिशृणु) सोई जो राम चरितहै तौन या समयमें कहवेकी मोको इच्छा है
सो सुनौ कैसाहै (तापत्रयभ्रंषहं) तानिहूं तापनको नाश करनहाराहै पुनः (यत्श्रुत्वा जन्तुः)
जाको सुनिकै जन्तुदेहधारी जीव (अज्ञानात्प्रमहाभयात्मुच्यते) अज्ञानते उत्पन्न जो महाभय जन्म
मरणादि ताते छूटि जाताहै पुनः (परमांश्चर्द्धिर्दीर्घायुःपुत्रसंततिमप्राप्नोति) बड़ा ऐश्वर्य बड़ी
उमिरि पुत्र पौत्रादि परिवार प्राप्त होताहै अर्थात् शिवजी कहत कि सोई जो अध्यात्म राम चरितहै
तौन या समयमें कहवेकी मोको इच्छाहै ताहि हे पार्वति सुनिये कैसाहै ज्वरादि शूलदैहिक ताप
चोरोआदि भौतिकहै ग्रहदशादि दैविक इतितीनहूं तापनको नाशकरताहै पुनः जाको सुनिकै देह-
धारीजीव अज्ञानते उत्पन्न जो जन्म मरणादि संसाररूप महाभय डरतासों छूटि जाता है पुनः धन
धान्य भूषण वाहनादि बड़ा ऐश्वर्य बड़ी उमिरि पुत्र पौत्रादि परिवार इत्यादि लोक सुख प्राप्तहोता
है ५ (दशवदनमुखः भशेषरक्षोगणानां नारेणमग्नाभूमिः) रावणहै मुखियाजामें ऐसे समग्रराक्षस
गण कृतपाप भार करिकै बूढ़ी हुई पृथ्वी (आदौ गोरूपां धृत्वादिविजमुनिजनैः साकम्) प्रथम
पृथ्वी ने गायको रूपधारण किया पुनः देवता मुनिजन करिकै सहित (अब्जभासनस्यलोकं
गत्वा) सब मिलि ब्रह्माके लोकको जातेभये (रुदंतीउपगतमूर्त्तर्व्यसनमब्रह्मणेप्राह) रोवत समीप
जाय सब अपने दुःखको हाल ब्रह्मासों कहती भई (सकलमपि हृदमवेत्) सबवस्तु निश्चयकरि
हृदय विचारते न जानिसके तेहि कारण (भशेषात्मतत्त्वात्ब्रह्मा मुहूर्तध्यात्वा) सबको आत्मतत्त्व
एकहीहै इसविचारते ब्रह्मा मुहूर्त दुइदण्ड आत्मरूप ध्यानकरि सब हालजानिलीन्हें अर्थात् इस
प्रसंगते रामचरित प्रारम्भकरत कि महापाप करनेवाला दुष्ट रावण जिनमें राजाहै इसीआचरण के
समग्र राक्षसगण तिनके कीन्हें असंख्यन पाप तेहि भारकरिकै दुःखमें बूढ़ीहुई पृथ्वीने प्रथम गाय
को रूप धारणकरि आगेभई पुनः रावणके सताये हुये सबदेवता मुनिजन तिन सहित सब मिलि
ब्रह्माके लोकको गये तहां आगे पृथ्वी रोवतीहुई ब्रह्माके समीपजाय सबअपनेदुःखको हाल ब्रह्मा
सों कहतीभई सो सुनि विचारे कि कबतक इनको दुःखरही अरु कौनभांति रावण मरी इत्यादि सब
वस्तु निश्चयकरि हृदय बुद्धि विचारते न जानिसके तेहिकारण अनुमान किये कि सबमें आत्मतत्त्व
एकही व्यापक है ताके ध्यानते त्रिकालकी बात देखिपरैगी इसविचारते ब्रह्मा मुहूर्तभरि आत्म
रूपको ध्यानकरि जानि लिये ६ ॥

तस्मात्क्षीरसमुद्रतीरमगमद्ब्रह्माथ देवैर्वृतो देव्याचाखिललोकहृत्स्थमजरंसवज्ञं
मीशं हरिम् ॥ अस्तौषीच्छ्रुतिसिद्धनिर्मलपदैः स्तोत्रैः पुराणोद्भवैर्भक्त्यागद्गदया
गिरातिविमलैरानन्दवाष्पैर्वृतः ७ ॥

(तस्मात्प्रथमब्रह्माक्षीरसमुद्रतीरमगमत्) ध्यानकरि जानिलिये तेहिते अनंतर ब्रह्माक्षीर समुद्र
के तीर जातेभये कौनभांति (देवैर्वृतः च देव्या) देवनकरिकै सहित देवीभूमि तेहि सहित कौन हेतु
उहोंगये (अखिललोकहृत्स्थं) जोअंतर्गामी रूपते सबलोकके हृदयमें बसे हैं (अजरंसर्वज्ञं ईशं हरिं)

अस्तौपीत्) वृद्धावस्था रहित सबबस्तुके जाननेवाले परमेश्वर हरि तिनहिं स्तुति करतेभये कौन भांति (श्रुतिसिद्धनिर्मलपदैःपुराणोद्भवैस्तोत्रैः) वेदनमें सिद्धभये परमेश्वर बोधक निर्मल पदन करिके तथा पुराणन द्वाराउत्पन्न जोस्तोत्र तिनकरिके पुनः (भक्त्यागद्गदया गिराद्यति विमलैः आनन्दवाष्पैर्वृतः) स्तुतिकरत समय भक्तिकरिके जोप्रेम उमंगसो कंठको रूंधिलिया ताते गद्गद अपुष्टाक्षर उच्चारण करिवाणी अत्यन्त अमलभाव छल चातुरी रहित शुद्ध भारत शब्दन करि पुनः सोई प्रेमानन्द नेत्रनमें आया ताते आँशुन सहित नेत्रहैं अर्थात् सदेवन भूमिकी वाणी सुनिध्यान करि ब्रह्मा जानि लिये कि परब्रह्म नर राजकुमार रूपधरें तिनके हाथ रावणमरी सो कार्यपथ निधितरि प्रार्थना करनेते मनोरथ पूर्णहोई यह बिचारिताते पुनः सहित भूमि देवतनयुत ब्रह्माक्षर सागरतीर गये तहां अन्तर शुद्धकरि परब्रह्मकी चिन्तवन कीन्हें कौनरूप जोअन्तर्यामी रूपते सब के अन्तर व्यापक अजरसर्वज्ञ सर्वेश्वर यथाश्रुतिः॥सवाएष आत्मा हृदि एष महानात्माऽजरयःसर्वज्ञः सर्ववित् एष सर्वेश्वर इत्यादि॥हरियथास्मृतौ॥ हराम्यधं हि स्मर्तृणां हविर्भागिक्रतौ तथा । वर्णाश्रमे हरिर्यस्मात्तस्माद्विरिहं स्मृतः ॥ ऐसे रूपमें मनलगाय स्तुति करनेलगे तहां अन्तर्यामी ऐश्वर्य रूपहैं ताके हेतु बेदके सिद्धनिर्मल जामें काहूमूर्तिवन्तको लक्षणहोय यथा अजनिर्मल निरञ्जन ज्यायानवरेण्य अगुण परब्रह्मपरीश इत्यादि पदन करिके पुनः हरिलोक रक्षक माधुर्यरूपते अपनी रक्षाचाहत ताते पुराणनते उत्पन्न जोस्तोत्रहैं जिनमें रुपासिंधु दयानिधि करुणाकरादि पदहैं तिनकरिके भक्तिसहित स्तुति करत में गुण बिचारि हृदयते प्रेमउमंग सो सर्वांगमें पुलकावली हवै कंठारोधन भया ताते गद्गदवाणी हवैगई पुनः प्रेमनेत्रनमें आया ताते नेत्रभी सजलहवै आये ७ ॥

ततःस्फुरत्सहस्रांशुर्सहस्रसदृशप्रभः॥आविरासीद्धरिःप्राच्यांदिशांव्यपनयन्स्तमः ८ कथंचिद्दृष्टवानब्रह्मादुर्दर्शमकृतात्मनाम्॥इन्द्रनीलप्रतीकाशंस्मितास्यंपद्मलोचनम् ९किरीटहारकेयूरकुण्डलैःकटकादिभिः॥विभ्राजमानंश्रीवत्सकौस्तुभप्रभयान्वितम् १० स्तुवद्भिःसनकाद्यैश्चपार्षदैःपरिवेष्टितम् ॥ शंखचक्रगदापद्मवनमालाविराजितम् ११ ॥

(ततःप्राच्यांहरिःआविरासीत्) स्तुति किहे पीछे पूर्वदिशा बिपे हरि प्रकट विराजमान देखाने कैसे हैं (दिशां स्तमः व्यपनयन्) सब दिशन को अंधकार नाशकियेहैं काहेते (सहस्रांशुःसहस्रसदृशप्रभास्फुरत्) सूर्यनते हजारगुण अधिक समप्रभा जिनके रूपते प्रसिद्धहैं अर्थात् जब ब्रह्माजी, स्तुति कीन्हें ताके पीछे पूर्वदिशाबिपे हरि कैसे प्रकट विराजमान देखाने जो सब दिशन को अंधकार नाश करदिये काहेते सूर्यनते हजारगुण अधिक समान प्रभा जिनके रूपते छूटि सर्वत्र प्रकाशमान हैं ८ (अकृतात्मनां दुर्दर्शं) अज्ञानी पुरुषनको दुखौ करि दर्शन नहीं हैसक्ते हैं (ब्रह्माकथंचित् दृष्टवान्) तिन हरिरूप को ब्रह्मा कैसे देखे (इन्द्रनीलप्रतीकाशं) इन्द्रनीलमणिसम तनुकी आभा (स्मितास्यं) मुसकानि सहित मुख (पद्मलोचनम्) कमलसम नेत्र अर्थात् यथाउलूक अन्धकारैपर प्रीति सो सूर्यनको नहीं देखिसक्ता है तथा जे आत्मरूप जानिबे के कर्तव्यते रहितदेह सुखहैतु विषय में आसक्त हैं ऐसे अज्ञानिन को जाके दर्शन दुर्लभहैं तिन हरिको ब्रह्मा कौनभांतिके देखे कि इन्द्रनील जो श्यामरंगकी मणिहैं ताहीसम विक्रान्त चमकदार श्यामतन मुसकानियुत प्रसन्नमुखरूपारस भरे कमलसम नेत्र ९ शीशपै किरीट गरेमें मणिनके हार भुजामें केयूर बहूटा कुण्डलन करिके कान

कडा आदि करिकै करमूल भूपित है पीतरोममें दहिनावर्त भ्रमरीइति श्रीवत्सचिह्न वामछातीपरविशेषि
भ्राजमान शोभितहैतहैं कौस्तुभमणि (प्रभयान्वितम्) प्रकाशकरिकै युक्तहै १० (स्तुवद्भिःसनकाद्यैः)
स्तुति करि सनकादिकन करिकै (च पार्षदैः परिवेष्टितम्) पुनः पार्षदन करिकै घेरे हैं अर्थात् सनक
सनन्दन मनातन सनत्कुमार इत्यादि महान मुनि स्तुति करिरहेहैं पुनः विष्वक्सेनादि पार्षद सेवामें
तत्पर चारिउ दिगिधेरे खड़े हैं शंख चक्र गदा कमल चारिहु भुजनमें तथा तुलसीदल कुंदी मंशार
पारिजात कमल इत्यादि ग्रंथित वनमाला उरपर विराजमान हैं ११ ॥

स्वर्णयज्ञोपवीतेनस्वर्णवर्णवरेणच ॥ श्रियाभूत्याचसहितंगरुडोपरिसंस्थित
म् १२ हर्षगद्गदयावाचास्तोतुंसमुपचक्रमे ॥ ब्रह्मोवाच ॥ नतोस्मितेपदंदेवप्राणबु
द्धीन्द्रियादिभिः १३ यच्चिन्त्यतेकर्मपाशाद्दृदिनित्यमुमुक्षुभिः ॥ माययागुणमय्या
त्वंसृजस्यवसिलुस्पसि १४ ॥

(स्वर्णयज्ञोपवीतेन) सोनेके जनेऊ करिकै भूपित (च स्वर्णवर्ण अम्बरेण) सोनेको रंग वसन
करिकै भूपित (श्रियाच भूत्या सहितं) लक्ष्मी करिकै पुनः ऐश्वर्य करिकै सहित (गरुडोपरिसंस्थि
तम्) गरुडपर सवार अर्थात् सोनेके जनेऊकरिकै वामरुन्ध उरभूपित पुनः सोनेकैसो रंग जामें ऐसा
पीताम्बर करिकै तन भूपित पुनः लक्ष्मी वामभागमें पुनः भूति जो अणिमादिक शक्ती तिन सहित
गरुडपर सवार हैं १२ (हर्ष गद्गदयावाचा) आनन्द सहित गद्गदवाणी करिकै (स्तोतुंसं उपचक्र
मे) स्तुति करनेलगे ब्रह्माजी (देवते पदं) ब्रह्मा कहत हे देव आपके जो पद कमल हैं तिनहिं
(प्राण बुद्धि इन्द्रिय आत्मभिः नतोस्मि) पांचों प्राण बुद्धि इन्द्री आत्मा इत्यादि करिकै नमस्कार
करताहों अर्थात् भारतहृदय प्रार्थना करतेही प्रभुको प्रकट देखि हर्ष प्रेम उमंगा ताही आनन्दसहित
गद्गदवाणी करिकै स्तुति करनेलगे तहां प्रथम प्रणामचाहिये ताते ब्रह्मा बोले हे देव आपके जो
पदकमल हैं तिनहिं हम प्राण बुद्धि इन्द्री सहित आत्मा करिकै नमस्कार करते हैं भाव प्राण क्रिया
शक्ति प्रधान अंशहै तेहिकरिकै कर्मइन्द्री हैं यथा हाथ पग मुख गुदा शीशनादि तथा बुद्धिकी इन्द्री हैं
कान त्वचा नेत्र जीभ नासिका पुनः देह चित्त अरु ब्रह्म इनकी आत्मा संज्ञाहै इत्यादि सबकी वृत्ति
एकत्रकरि प्रणाम करताहों १३ (कर्मपाशात्मुमुक्षुभिः) कर्मनकी फंमरीते छूटने की इच्छा किहैं
जे तिन योगिन करिकै (यत् नित्यं हृदि चिन्त्यते) जौने पदनको नित्यही हृदय में चितवन किया-
जाताहै (गुणं अप्यामायया) सत रज तमादि गुणनयुक्त जो अविद्यामाया तेहिकरिकै (त्वंसृजसि
अवसिलुं गसि) आपही संसारको उपजावतेहौ पालतेहौ प्रलयकरतेहौ अर्थात् ब्रह्मा कहत कि जिनको
हम प्रणाम करतेहैं तिन पदारविंदनमें कैसा प्रभावहै किजे संसारबन्धनते छूटि मुक्तिकी इच्छाकिहैं
ऐसे योगीजन जिन पदारविंदनको नित्यही हृदयमें ध्यान कियेरहत अरु आप कैसेहों कि तीनिहुं
गुणनयुत अपनी मायाकरिकै संसारको उपजावत पालत संहार करतेहौ १४ ॥

जगत्तेननतेलेपश्चान्दानुभवात्मनः ॥ तथाशुद्धिर्नदुष्टानां दानाध्ययनकर्मभिः १५

शुद्धात्मतातेयशसिसदाभक्तिमतायथा ॥ अतस्तवाग्निर्मेदृष्टिश्चित्तदोषापनुत्तये

१६ सयोनंतरहृदयेदृष्टोमुनिभिः सात्वतैर्वृतः ॥ ब्रह्माद्यैः स्वार्थसिद्ध्यर्थमस्माभिः

पूर्वसेवितः १७ ॥

(जगतेनतेलेपन) जगत् करिकै जो देहाभिमानादिसो आपमें लागि नहीं सकाहै काहेते (आ-

नन्दानुभवआत्मनः) आनन्द साक्षात्कारहै आत्मरूपको अर्थात् उत्पत्ति पालनादि जगत्को कर-
तेहौ परन्तु जगत् करिकै जो देहाभिमानादि व्यकारहै सो आपमें नहीं लागि सकाहै काहेते देहाभि-
मान तो अल्पजगताते होताहै आपमें तो अखण्ड आनन्द साक्षात्कारहै आत्मरूपको तहां जगत्कोसे
लागितकै इलोकाह्द आगेके इलोकमें अन्वयहै (दानअध्ययनकर्मभिः दुष्टानांतथाशुद्धिः न) शानशास्त्र
पठन इत्यादि कर्म करि दुष्टनकी ता भांति अंतर्शुद्धी नहीं होतीहै १५ (यथाभक्तिमतास्तदांतयशसि
शुद्धात्मता) जा भांति भक्तिवंत पुरुष सदा आपको यशकीर्तन करि शुद्धात्मताको प्राप्तहोताहै (अतः
चित्तदोषअपनुत्तयेतवांग्रिःसेहृष्टिः) इसी कारण अपने चित्तके दोषोंको मिटावनेहेतु आपके पद कम-
लोंके दर्शन किया अर्थात् विमुख विपर्यय दुष्टजन दान शास्त्राध्ययनादि कर्म करि तैसी शुद्धताको
नहीं पावते हैं जैसे भक्तजन आपको यशगान करि शुद्धहोतेहैं इसीसे मैं भी अपने चित्तके असद्वा-
सनादि दोष मिटावने भाव अन्तर शुद्धहोने हेतु आपके पद कमलोंके दर्शन किया १६ (मुनिभिः
सयोअन्तरहृदयेहृष्टो) मुनिन करिकै सोई जो चरण तो भीतर हृदयके ध्यानमें देखे जातेहैं (सात्व
तैर्वृतः) भक्तन करिकै परिवेष्टित है (अस्माभिःब्रह्माद्यैःस्वार्थसिद्धयर्थपूर्वसेवितः) हम ब्रह्मादिक
यावत् देवताहैं तिन्होंने भी आपने प्रयोजन सिद्धहोने अर्थ सब पूर्वकाल में आपहीकी सेवा कियाहै
अर्थात् योगीजन अष्टांग योगते मनेन्द्रीजीति हृदयमें आपके पायनको ध्यान करि सिद्धहोतेहैं अरु
भक्तजन अवण कीर्तनादि करि सेवकपद पाय नित्यसेवामें रहतेहैं तथा हम ब्रह्मादिक यावत्देव
ताते सब पूर्वमें आपके पद कमल सेवनकरि अपनी अपनी ऐश्वर्यको प्राप्तभये १७ ॥

अपरोक्षानुभूत्यर्थज्ञानिभिर्हृदिभावितः ॥ तवांग्रिपूतनिर्माल्यतुलसीमालयाविभो-
१८ रूपर्द्धतेवक्षसिपदंलब्ध्वापिश्रीःसपलिवत् ॥ अतस्त्वत्पादभक्तेषुतवभक्तिःश्रि
योत्रिका १९ भक्तिमेवाभिवाञ्छंतित्वङ्गताःसारवेदिनः ॥ अतस्त्वत्पादकमलेभ
क्तिरेवसदास्तुमे २० ॥

(अपरोक्षअनुभूतिअर्थ) आत्मरूप साक्षात्सम प्राप्तीके अर्थ (ज्ञानिभिःहृदिभावितः) ज्ञानीजन
तो भी हृदयमें पद कमलनको ध्यान किहे रहतेहैं भाव आपके पद कमलोंको ध्यान करि ज्ञानीजन
भी आत्मरूपको प्राप्तहोतेहैं पुनः (हेविभोतवअंग्रिपूतनिर्माल्यतुलसीमालया) हेसमर्थ आपके पद
कमल ऐसे पवित्रहैं जिनमें चढाहुआ तुलसीको माला करिकै १८ (श्रीःवक्षसिपदंअपिलब्ध्वासप
तिवत्सुपर्द्धते) लक्ष्मीजी आपकी छातीमें दास किहेहैं ऐसाहू ऊंचापद निश्चय करिपाय तबहू
सवत्कीनाई तुलसीको पराभव करिवेकी इच्छा करती हैं भाव तुलसीको पायन पर चढ़ते देखि
नहीं सहितकी हैं ताते ऊंचापद त्यागि पायनकी सेवामें तत्पर रहती हैं जामें यहीपद हमहींलैलेंव
(अतःत्वत्पादभक्तेषु) इसकारणते सूचित होताहै कि जे आपके पद सेवक भक्तहैं तिनविषे (श्रियो
अधिकातवभक्तिः) लक्ष्मीते अधिक आपकी प्रीतिहै अर्थात् जो लक्ष्मी ऊंचापद त्यागि पद सेवाकी
इच्छा राखती हैं याते सूचितहोत कि पद सेवक भक्तन पर लक्ष्मीते अधिक प्रीति राखतेहौ १९
(सारवेदिनःत्वङ्गताभक्तिरेवअभिवाञ्छति) सारवस्तुको जाननेवाले जे आपके अनुरागी भक्तहैं ते
भक्ति प्राप्तीकी निश्चयकरि इच्छा राखतेहैं (अतःत्वत्पादकमलेभक्तिःएवमेवसदाअस्तु) इसीते आप
के पद कमलनमें भक्ति मेरेभी उरमें सदाहोय अर्थात् कर्म ज्ञान विराग योगादि सबको सारांश पर-
मेश्वरमें प्रीतिहोना इत्यादि को जाननेवाले जे आपके अनुरागी भक्तहैं ते भक्ति प्राप्तीकी निश्चय

करि इच्छा राखतेहैं ऐसा विचारि मैं भी यही इच्छा किहेहौं कि आपके पद कमलनमें भक्ति मेरे उरमें सदा अविचल रहै २० ॥

संसारामयतप्तानांभेषजंभक्तिरेवते ॥ इतिब्रुवंतंब्रह्माणंवभाषेभगवान्हरिः २१
किंकरोमीतितंवेधाःप्रत्युवाचातिहर्षितः ॥ भगवन्पौलस्त्यतनयो
महान् २२ ॥

(संसाररूपरोग करिकै तप्तभये जननको औषध आपकी भक्ति निश्चय करिकै है (इतिब्रह्माणंब्रुवंतंभगवान्हरिःवभाषे) इसप्रकारके स्तुतिवचन ब्रह्मावर्णन कीन्हे सो सुनि भगवान् हरि बोलते भये भावहानि वियोगरुज चौरशत्रु अग्नि दरिद्रतादि लौकिक जन्म मरण नर्कादि पारलौकिक इत्यादि संसारी रोगनकरिकै तप्त जननको औषध आपकी शरणा- गतीहै ऐसा जानि भूदेवादि महादुःख पीडित आपकी शरणहै दयादृष्टि रक्षाकीजे इत्यादि स्तुति पूर्वक भारत वचन जब ब्रह्माजी कहे सो सुनि भगवान् अर्थात् पदैश्वर्ययुत यथा महारामायणे ऐश्वर्येणचधर्मेणयशसाचश्रियैवचावैराज्ञामोक्षपट्कोणैःसंजातोभगवान्हरिः ॥ऐसे भगवान् हरिबोलते भये २१ (किंकरोमि) ब्रह्माप्रति भगवान् बोले कि क्याकरों सो कहिये (इतितंवेधाःअतिहर्षितःप्रत्युवाच) इत्यादि भगवान्के वचन सुनिकै तिन प्रतिब्रह्मा अत्यंतहर्ष सहित बोलते भये (हेभगवन् पौलस्त्यतनयःरावणोनाममहान्) पुलस्त्यके पुत्र विद्वेश्रवः ताको पुत्र रावणनामे महाबली वीर सब सो अजितहै अर्थात् भगवान् बोले कि कौन उपायकरों जामें सबको दुःखमिटै सो कहिये इत्यादि सुनि हर्ष सहित ब्रह्माबोले हे भगवन् पौलस्त्य पुत्र सबको रोवावनेवाले रावण महाबलीवीर सब सो अजित दुष्टहै २२ ॥

राक्षसानामधिपतिर्महत्तवरदर्पितः ॥ त्रिलोकींलोकपालांश्चबाधतेलोकवाधकः ॥
२३ मानुषेणमृतिरतस्यमयाकल्याणकल्पिता ॥ अतस्त्वंमानुषोभूत्वाजहिदेवरि
पुं प्रभो २४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ कश्यपस्यवरोदत्तस्तपसातोपितेनमे ॥ याचितः
पुत्रभावायतथेत्यंगीकृतंमया २५ ॥

(राक्षसावांअधिपतिः) राक्षसन को राजा (महत्तवरदर्पितः) मेरा दियावर अर्थात् नर बानर वराय अन्य किसीके मारे न मरैगो इत्यादि पाय वड़ेगर्व सहितहै (लोकवाधकःचत्रिलोकींलोकपालांश्चबाधते) लोकभरको पीड़ा करनेवाला पुनः तीनिहू लोकनके लोक पालनको पीड़ा दैरहाहै अर्थात् ब्रह्मा कहत कि राक्षस तामसी सौभागिकहीं दुष्टहोते हैं तिनको राजा महादुष्टताहूपर मेरा दिया वरदान पाय अजित भया ताते वड़ेगर्वते लोकभरको दुख दायक भया पुनः तीनिहू लोकनके लोक पाल इन्द्र वरुण कुबेरादि तिनको महा दुःख दैरहाहै २३ (तस्यमृतिःमानुषेणमयाकल्याणकल्पिता) ताकी मृत्यु मनुष्य करिकै होवै इत्यादि मैंने वाके कल्याणमें रचिराखाहै (अतःप्रभोत्वंमानुषोभूत्वा जहिदेवरिपुंजहि) इससे हेप्रभो आप मनुष्यरूप द्वैकै देवतनको शत्रु रावण ताहि बधकीजै अर्थात् ब्रह्मा कहत कि रावणकी भाग्यादि जीवनरेखा लिखतसंते यहौ लिखाहै कियाकी मृत्यु मनुष्यके हाथों होई इस हेतु हेप्रभु आप मनुष्यरूप धरि देवनको शत्रु रावणको बधकरो २४ (कश्यपस्यतपसातोपिते नमेवरोदत्तः) कश्यपकी तपस्या करि हम प्रसन्नभये त्यहि करिकै मैंने उनको वरदान दिया भाव जो इच्छाहोय सो मांगिये तापर उनमोसों (पुत्रभावाययाचितःइतितथामयाअंगीकृतं) पुत्र भावके

अर्थ याचना किया इत्यादि उनको यथा मनोरथ तथा हमने अंगीकार किया अर्थात् भगवान् बोले कि हम मनुष्यतन अवश्य धरेंगे काहेते पूर्वकाल में कश्यपमुनि अदिति मेरे हेत तपकीन्हें तिनको हम वरदीन्हें कि जो इच्छा होइ सो मांगौ तब उनमांगा कि पुत्र है हमको मिलौ इत्यादि उनको बचन हम अंगीकारकीन तिनके पुत्र है तुम्हारा भी कार्य करेंगे २५ ॥

सद्दानीदशरथोभूत्वा तिष्ठति भूतले ॥ तस्याहं पुत्रतामेत्य कौशल्यायां शुभे दिने २६
चतुर्द्धात्मानमेवाहं सृजामीतरयोः पृथक् ॥ योगमायापि सीतेति जनकस्य गृहे त
दा २७ उत्पत्स्यते तया सार्द्धं सर्वसम्पादयाम्यहं ॥ इत्युक्तान्तर्दधे विष्णुर्ब्रह्मा देवा
नथाब्रवीत् २८ ॥

(सदशरथोभूत्वा इदानीं भूतले तिष्ठति) सोई कश्यप दशरथ भये हैं सो यासमयमें भूमितल बिषे स्थित हैं (तस्य अहं पुत्रतामेत्य) ताको हम पुत्रहैंकै प्राप्त होयेंगे कौनभाति (कौशल्यायां शुभे दिने) अदिति आय कौशल्या उनकी बड़ी रानी भई हैं तिनमें शुभदिन बिषे अवतीर्ण होयेंगे २६ (इतरयोः पृथक् अहं चतुर्द्धा आत्मनां सृजामि) कौशल्याते इतर कैकेयी सुमित्रा जो दोऊ रानी हैं तिन हूं में सहित अलग अलग चारि स्वरूपन को उत्पन्न करव अर्थात् भगवान् कहत कि सोई कश्यप दशरथ भये हैं कौशल्या कैकेयी सुमित्रादि रानिन सहित भूतल अयोध्याजीमें विराजमान हैं तिनके पुत्रहैं हम चारिरूपते प्राप्त होयेंगे तहां कौशल्यामें स्वयं हम रामरूपते होयेंगे अंशनकरि कैकेयी में भरत सुमित्रामें लक्ष्मण शत्रुहन इति चारिरूपते इहां भविष्यकाल है सृक्षयामि चाहिये सो सृजामि कहे ताको भाव वर्तमान सामीप बिषे भूत भविष्य दोऊ कालकी क्रिया विकल्पकरि वर्तमानों क्रिया हवैसक्ती है यथा चंद्रिकायां वर्तमान सामीपे भूते भविष्यति च वर्तमानवद्वा (तदा योगमाया अपि सीता इति जनकस्य गृहे) जासमयमें मैं अवतीर्ण होउंगो ताही समय मेरी योगमाया भी सीता इति नाम सो जनकके घरमें २७ (उत्पत्स्यते तया सार्द्धं) उत्पन्न होइगी तिन करिकै सहित (अहं संपादयामि) हम सम्पूर्ण कार्य सिद्ध करेंगे (इति उक्तविष्णुः अंतर्दधे) ऐसा कहि भगवान् अंतर्ध्यान भये (अथ ब्रह्मा देवान् अब्रवीत्) ताके पीछे ब्रह्मा देवन प्रतिबोले अर्थात् जाको मेरा सदा संयोग रहता है मेरी इच्छाते उत्पत्ति पालन संहारादि सब कार्य करती है इति मेरी योगमाया सीता ऐसा नाम सो भी ताही समयमें जनकजीके घरमें उत्पन्न होइगी तिनकी सहायताते हम समग्र देवनको कार्य पूरा करेंगे भावखल मारि भुभार उतारेंगे ऐसा कहि भगवान् अंतर्ध्यान भये ताके पीछे ब्रह्माजी देवताभूमि इत्यादि को धीर्य देबोले सो आगे कहत २८ ॥

ब्रह्मोवाच ॥ विष्णुर्मानुषरूपेण भविष्यति रघोः कुले ॥ यूयं सृजध्वं सर्वे पिबानरेष्वं
शसंभवान् २९ विष्णोः सहायं कुरु तया वत्स्यास्यति भूतले ॥ इति देवान् समादि
श्य समाश्वास्य च मेदिनीम् ३० ययौ ब्रह्मा स्वभवनं विज्वरः सुखमास्थितः ३१ दे
वाश्च सर्वे हरिरूपधारिणः स्थितास्सहायार्थमिति स्ततो हरेः ॥ महाबलाः पर्वतवृक्ष
योधिनः प्रतीक्षमाणा भगवन्तमीश्वरम् ३२ ॥

इत्यध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे बालकांडे द्वितीयः सर्गः २ ॥

विष्णुः मानुषरूपेण रघोः कुले भविष्यति) विष्णु भगवान् मानुषरूप करिकै रघुके कुलमें अवतीर्ण

होंगे (यूयंसर्वेऽपिवानरेषु भ्रंशसंभवान्सृजध्वं) हे देवतौ तुम सब बानरनबिपे अपने भ्रंश सों उत्पन्नभयं पुत्र उपजावौ अर्थात् देवतन प्रति ब्रह्मा कहत कि विष्णु मानुषरूप करिकै रघुकुलमें दशरथ महाराजके पुत्र है उत्पन्नहोंगे तथा तुम सब बानरनबिपे अपने अपने भ्रंशन करिकै पुत्र उपजावौ २९ (तथाभूतलेयावत्स्थास्यति) तेहि करिकै भूतलमें वास किहेउ (विष्णोःसहायंकुरु) मनुष्यरूप विष्णुजवतकरहैं तब तक उनकी सहायकरौ (इति देवान्समादिस्थ) इसप्रकार देवतनको आज्ञादैके (चमेदिनीमसमाश्वास्य) पुनः पृथ्वीको समुभायधैर्यदै ३० (ब्रह्मा विज्वरः स्वभवनंययौसुखमास्थितः) ब्रह्मा संतापरहित अपने घरको गये सुख पूर्वक आसीनभये अर्थात् ब्रह्माकहे हेदेवतहु स्वभ्रंशवानरतनु धरि त्यहि करिकै भूमितलमें बसउ मनुष्यरूप विष्णु जब तक रहैं तब तक उनकी सहायकरौ इस प्रकार देवतनको आज्ञादैके पुनः पृथ्वीको समुभायधैर्य दै ब्रह्मासंताप रहित अपने घरको गये सुख पूर्वक आसीनभये ३१ (देवाश्चसर्वेहरिरूपधारिणः) पुनः देवतासब बानरनको तनुधरि (ततःइतःहरेःसहायार्थस्थिताः) तदनंतर ये सब भगवान्के सहायता-अर्थवन पर्वतनमें स्थितहोतेभये कैसेहैं (महाबलाःपर्वतवृक्षयोधिनः) महाबलहैं जिनमें पहाड़ वृक्षनकरि युद्धकरिसके हैं (भगवान्ईश्वरंतंप्रतीक्षमाणः) भगवान् ईश्वर तिनहिं प्रतीक्षा करते हैं भावकब अवतीर्ण होंगे अर्थात् ब्रह्माकी आज्ञापाय पुनः देवता सब बानरनको तनुधरि पीछे सब भगवान्के सहायता अर्थ वनपहाड़नमें बासकरते भये कैसेहैं महाबल है जिनमें जे बड़े पहाड़ तथा वृक्षोंकरि युद्धकरिसके हैं अर्थात् दुर्घटकार्य करनेमें श्रम न आवै ताको बली कही सो ऐसे बली हैं जो भारी पहाड़ उखारि ढंलासम बहायकै मारि सकेहैं ते सब भगवान् के अवतार होनेकी राह निहारते हैं ३२ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे
देवप्रार्थनाभवतारहेतुवर्णनोनामाद्वितीयः प्रकाशः ९ ॥

महादेवउवाच ॥ अथराजादशरथः श्रीमान्सत्यपरायणः ॥ अयोध्याधिपतिवीरः
सर्वलोकेषुविश्रुतः १ सोऽनपत्यत्वदुःखेनपीडितोगुरुमेकदा ॥ वशिष्ठंस्वकुला
चार्यमाहूयदमथाब्रवीत् २ ॥

सवैया ॥ सुखपूर सबै बिन पुत्रदुखी कहि हाल गहे गुरुपांयकदा । ऋषिशृंगिहि बोलि वशिष्ठतवै
क्रिययज्ञ चरुदिय अग्नितदा ॥ दिय रानिनखाय सगर्भप्रसौ नररूपालिगे तजिब्रह्मपदा । भरतानुज
लक्ष्मण राघवभे नृपनन्दन चारि नमामिसदा ॥ (अथअयोध्याअधिपतिः राजादशरथः) तदनन्तर
अयोध्यापुरी के चक्रवर्ती महाराज राजादशरथ (श्रीमान्सत्यपरायणः वीरः) राजश्रीयुक्त सत्यपर
तत्पर वीरता परिपूर्ण (सर्वलोकेषुविश्रुतः) यशवंत करि सर्व लोकनमें प्रसिद्ध अर्थात् गिरिजाप्रति
शिवबोले अब अवतार होनेको हाल सुनिये अयोध्याके महाराज राजादशरथ मंत्रीमित्र देशकोश सेना
बाहनादि राज श्रीसर्वांग युक्त छल चातुरी त्यागि यथार्थ बोलना जो कहना सोई करना इति सत्य
धर्म परायण लोकमें अरु परलोकमें देह व्यवहार त्यागि सत्य परमात्मरूपमें लगेरहना पुनः दया
दान धर्म युद्धमें उत्साहराखे रहना इतिवीरता इत्यादि गुणनकरि लोकनमें प्रसिद्धहैं १ (संभनप
त्यत्वदुःखेनपीडितः) सोई दशरथ पुत्रहीनता दुःख करिकै दुखित ताते (एकदागुरुं वशिष्ठंस्वकुल
आचार्यमाहूयअथइदमब्रवीत्) एक समयगुरु वशिष्ठ जो कुलके आचार्य हैं तिनहिं बुलायपुनः इस

प्रकारबोले अर्थात् सोई दशरथ पुत्रहीनहैं त्यहि दुःखते दुखित ताते एक समयगुरु वशिष्ठ जो अपने कुलके आचार्य हैं तिनहिं बुलाय पुनः इस प्रकार बोलते भये २ ॥

स्वामिन्पुत्राः कथं मे स्युः सर्वलक्षणलक्षिताः ॥ पुत्रहीनस्य मे राज्यं सर्वदुःखाय कल्प
ते ३ ततोऽब्रवीद्वशिष्ठस्तं भविष्यन्ति सुतास्तव ॥ चत्वारः सत्त्वसम्पन्ना लोकपाला
इवापराः ४ ॥

(पुत्रहीनस्य राज्यं सर्वदुःखाय कल्पते) पुत्रहीन को राज तथा सब प्रकारके सुख तिनहिं मेरे दुःखके अर्थ ब्रह्माने बनायाहै ताते (स्वामिन्सर्वलक्षणलक्षिताः पुत्राः मे कथं स्युः) हे स्वामिन् सब शुभ लक्षणनयुत ऐसे पुत्र मेरे कौन प्रकार करिकै होंगे अर्थात् महाराजबोले कि हम पुत्रहीन हैं ताको राज्यहोना तथा धनधान्य भोजन वसन भूषण वाहनस्त्री इत्यादि यावत् सुखहैं तिनहिं मेरे दुःखके अर्थ ब्रह्माने बनायाहै भाव पुत्रहीनता-शोचमें सब सुख वृथा देखाताहै अरु आप इस कुलके सदा ते सुख दायकहौ ऐसा जानि आपते प्रार्थना करताहों हे स्वामिन् स्वरूपता शीलधर्म नीति धीरता सुलभ उदारता ज्ञान नम्रता धैर्य विद्याशौर्य वीर्य तेज बल प्रताप यश कीर्ति इत्यादि सबलक्षण युत ऐसे पुत्रमेरे कौन उपाय करिकै होंगे सो कृपाकरि कहिये ३ (ततः तं वशिष्ठः अब्रवीत्) तब दशरथ प्रतिवशिष्ठबोलते भये (तव चत्वारः सुताः भविष्यन्ति) तुम्हारे चारि पुत्रहोंगे कैसे (सत्त्वसम्पन्ना अपराः लोकपाला इव) सतोगुण परि पूर्ण और लोक पालनके समान अर्थात् महाराजकी प्रार्थना सुने तब महाराज प्रतिवशिष्ठजी बोले हे राजन् तुम्हारे चारि पुत्रहोंगे कैसे गुणयुत कि तमोगुण रजोगुण रहित केवल सतोगुणते परि पूर्ण यह विशेषता होई और बलवीरता तेजप्रतापादि गुणनकरि लोकपालनके समान यथा बाल्मीकीये ॥ विष्णुना सद्दशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः । कालाग्नि सद्दशः क्रोधेक्षमया पृथिवीसमः ॥ धनदेनसमः त्यागे सत्यधर्म इवापरः ॥ इत्यादि ४ ॥

शान्ताभर्तारमानीय ऋषिः शृंगतपोधनं ॥ अस्माभिः सहितः पुत्रकामेष्टिं शीघ्रमा
चर ५ तथेति मुनिमानीय मंत्रिभिः सहितः शुचिः ॥ यज्ञकर्मसमारेभे मुनिभिर्वीत
कल्मषैः ६ श्रद्धया हूयमाने ग्नौ तप्तांगकनकप्रभः ॥ पायसं स्वर्णपात्रस्थं गृहीत्वो
वाचहव्यवाट् ७ ॥

(शान्ताभर्तारं ऋषिः शृंगं तपोधनं आनीय) तुम्हारी कन्या शान्ता तिनके पति ऋषिशृंग तपोधनी तिनहिं लाइये मुख्य आचार्य बनाइये पुनः (अस्माभिः सहितः) हमलोग ऋषेश्वरन करिकै सहित (पुत्रकामेष्टिं शीघ्रमाचर) पुत्र कामना करिकै यज्ञ तुरतही प्रारम्भ कीजै अर्थात् वशिष्ठजी बोले कि हे महाराज तुम्हारी कन्या शान्ता तिनके पति शृंगी ऋषि तपोधनी भाव इसकार्यमें आचार्य करिबे योग्य उनहीं हैं तिनहिं लाइये मुख्य आचार्य बनाइये पुनः हम बामदेवादि अन्य ऋषिनसहित पुत्रकामना करिकै यज्ञ तुरतही प्रारम्भ कीजै भाव समय आयगया विलम्ब न होवे ५ (इति तथा मंत्रिभिः सहितः मुनि आनीय) मुनिके कहे इत्यादि तथा अंगीकार करि मंत्रिन करिकै सहित महाराज जायके शृंग-मुनिहिं लावते भये पुनः (कल्मषैः वीतमुनिभिः) पापरहित वशिष्ठादि मुनिन करिकै सहित (शुचिः यज्ञकर्म समारेभे) अग्नि सो विनियोग धृत साकल्य स्वाहादि यज्ञकर्म प्रारम्भ कीन्हें अर्थात् शृंगी ऋषिको लावो इत्यादि वशिष्ठकी आज्ञा यथा तथा अंगीकार करि मंत्रिन सहित महाराज जाय प्रार्थना करि शृंगी ऋषिको लाय आचार्य कीन्हें पुनः पापरहित वशिष्ठादि मुनिन करिकै सहित

सरयूके उत्तर मनोरमातट शुभदिन वेदीविनाय समिधमें अग्नि प्रज्वलित करि विनियोग जलछाँड़ि धृत साकल्यादि यज्ञकर्म प्रारम्भ कीन्हें ६ (अद्वयाग्रनौ आहूयमाने ततांग कनकप्रभा) ऋषिलोग श्रद्धाकरिके अग्निविषे आहुती देतसंते तपाये सोनेकीऐसीप्रभा ऐसे दिव्यरूपते प्रकटहै (पायसंस्वर्ण पात्रस्थं गृहित्वा) जाउरि सोनेके पात्रमें किहेहाथमें धरे (हव्यवाट् उवाच) अग्निदेव बोलतेभये अर्थात् ऋषिशृंग वशिष्ठादिकन अन्तरमें प्रीति बाह्य आदरसहित जब अग्निमें आहुती दीन्हें यज्ञ पूर्णहोतही कुंडते अग्नि मूर्तिवन्त प्रकटे तपाये सोनेकीऐसी प्रभा तनमें ऐसे दिव्यरूपते जाउरि सोनेके पात्रमें भरे हाथमें धरे महाराजके सन्मुख अग्निदेव बोले ७ ॥

गृहाणपायसंदिव्यं पुत्रीयं देवनिर्मितं ॥ लप्स्यसे परमात्मानं पुत्रत्वेन न संशयः ८
इत्युक्त्वा पायसं दत्त्वा राज्ञे सोऽन्तर्दधेऽनलः ॥ ववन्दे मुनिशार्दूलो राजा लब्धमनोर
थः ९ वशिष्ठः ऋषिः शृंगभ्यामनुज्ञातो ददौ हविः ॥ कौशल्यायै सकैकेयै अर्द्धमर्द्ध
प्रयत्नतः १० ॥

(देव निर्मितं दिव्यं पायसं पुत्रीयं गृहाण) देवतनकी बनाई दिव्य जाउरि पुत्रप्राप्तिहेतु याको लीजिये (त्वेन परमात्मानं पुत्र लप्स्यसे संशयः न) ताके प्रभाव करिके परमात्माको पुत्रकरि पावोगे याम संशय नहीं है अर्थात् अग्निदेव बोले हे महाराज यह देवतनकी बनाई हुई दिव्य जाउरि है सो पुत्रप्राप्ति हेतु याको लीजिये रानिनको खवाइये ताके प्रभाव करिके परमात्माको पुत्रकरि पावोगे यामें संशय नहीं भाव निश्चय करि जानौ ८ (इति उक्त्वा राज्ञे पायसं दत्त्वा सः अनलः अन्तर्दधे) ऐसा कहि महाराज के अर्थ जाउरिदैकै सो अग्नि अन्तर्दान भये (मनोरथः लब्ध राजा मुनि शार्दूलो ववन्दे) अपना मनोरथ पूर्ण पायसके आनन्दहै राजा दशरथजी दोऊ मुनि जो शृंगीऋषि वशिष्ठ तिनहिं प्रणाम कीन्हें अर्थात् याके प्रभावते परमात्माको पुत्रकरि पावोगे ऐसा कहि महाराज को जाउरिदैकै सो अग्नि अन्तर्दान भये अरु अपना मनोरथ पूर्ण पाय दशरथ महाराज आनंदहवै दोऊ मुनिवरन को प्रणाम कीन्हें ९ (वशिष्ठः ऋषिः शृंगभ्यामनुज्ञातः कौशल्यायै सकैकेयै अर्द्धमर्द्ध हविः प्रयत्नतः ददौ) वशिष्ठ शृंगीऋषि दोऊकी आज्ञाते महाराज कौशल्याके अर्थ सहित कैकेयीके अर्थ आधीआधी जाउरि यत्नते देतेभये यह अर्थ कीन्हेंते वाल्मीक्यादि रामायण तथा अन्य पुराणोंते विरोध आवत अरु इसग्रंथते विरोध आवत काहेते वशिष्ठजी पूर्वही कहेहैं कि तुम्हारे चारिपुत्र होयेंगे तब द्वैभाग कैसे करते पुनः सुमित्राजी सामान्यरानी नहीं हैं काहेते औरी सबमिलाय साढेसातसै रानी रही हैं तिनतौ कोई न पुत्रइच्छाते पायसमें भाग हेतु आइसकीं अरु सुमित्राआईं ताको कारण यहहै किये कौशल्याकी छोटी बहिनीहैं कारण यह कि लग्न तेलचढचुके पीछे मातृ पूजनकी रातिको कौशल्याजी को रावण हरिलेगया विवाह के दिन दशरथगये तब लाचारीते सुमित्राको विवाहिदिये जब उपाय करि कौशल्या मिलीं तब विधिवत् विवाह भया ताते राज्याभिषेकमें तो अधिकार मिला परन्तु देव योग प्रथम पाणिग्रहण भयेते देवपूजन को अधिकार सुमित्रै को रहा यह रामरक्षाके तिलकमें मैने देखाहै अरु कैकेयी को विवाह सबते पीछे भया है परन्तु केकयराज करारपत्र मांगा सो महाराज लिखिदियाहै कि राजगद्दी इसीके पुत्रको देइंगे यह सत्योपाख्यानमें प्रसिद्धहै ताते इनको बड़ा पदहै- गया परन्तु कुलवंती पतिव्रता सबहैं ताते कैकेयी पिताको करारपत्र नहीं माना सुमित्रा प्रथम पाणि- ग्रहण नहीं माना कुलरीतिते कौशल्यै को बड़ी माने तथा कौशल्या सपत्निभाव त्यागि छोटीबहिनी

करि दोऊको माना इत्यादि हेतु ये तीनिहूँ विशेषि हैं ताते ऐसा अर्थ किया चाहिये यथा (वशिष्ठ ऋषिर्भृङ्गाभ्यामनुज्ञातः) वशिष्ठ अरु शृङ्गीऋषि दोऊकी आज्ञाते (हविःअर्द्धकौशल्यायैददौ) जाउरि को आधाभागताहि कौशल्याके अर्थ देतेभये (अर्द्धहविःप्रयत्नतःसकैकेयीकौशल्यायैददौ) जो आधा-भाग जाउरि को रहा सो प्रकर्षयत्न समेत सहित कैकेयीके अर्थ अरु कौशल्याके अर्थ दीन्हें भावभाधे को आधापूर्णको चतुर्थांश कैकेयीको दीन्हें अब जो चतुर्थांश शेषरहा ताके द्वैभागकीन्हें तामें एक कौशल्याको दीन्हें एक कैकेयीको दीन्हें भाव इन दोऊ रानिनके हाथन ये दोऊ भाग सुमित्राको देवावा चाहतेहैं ताते भिन्न भिन्न भागकरिदिये यह भाव प्रयत्नतः गद्गते निकलताहै अर्थात् वशिष्ठजी पूर्वही कहे हैं कि तुम्हारे चारि पुत्रहोइंगे सोई बात दोऊ मुनिकी आज्ञामें सगर्भितहैं इसहेतु यथा योग्य विचारि जाउरि के चारि भागकीन्हें आधेको एक चौथाईको एक चौथाई में दो इत्यादि क्या यथा योग्यता विचारि दीन्हें यथा कौशल्या पाटबंधनीहैं लोक वेद कुलादि सब रीतिते बड़ी हैं इनको पुत्र मुख्य राजपदको अधिकारी है ताते तेज प्रतापबल स्वरूपतादि सब गुणनमें भाइनते अधिक स्वामिपद योग्यहोय इस विचारते अर्द्धभाग पूर्वही कौशल्याको दीन्हें पुनः करारपत्रते विशेषि अधिकारहै परन्तु कैकेयीने कहा कि पिताके लिखानेते क्या होताहै हम अपने कुल धर्म परचलेंगी परन्तु महाराज अपने वचनको पुष्टराखने हेतु विचारे कि याको पुत्र कौशल्यानन्दनके नीचे राजकाजको अधिकारीहोवै इस विचारते कैकेयीको चतुर्थांश भागदिया पुनः सुमित्रा प्रथम पाणिग्रहीताहैं ताते अवशिष्ट भाग पावाचाहैं अरु अधिकार कछु है नहीं ताते हम अपने हाथते न देवें कौशल्याकैकेयीके हाथों देवावैं जामें सुमित्राके पुत्र इनके पुत्रनकी सेवाके अधिकारी होवैं यह मनोरथ राखि चतुर्थांशके दोऊ भाग कौशल्याकैकेयीको दीन्हें अरु सुमित्राके बुलाये १० ॥

ततःसुमित्रासंप्राप्तासंगृध्नुःपौत्रिकंचरुम् ॥ कौशल्यातुस्वभागाद्धैतस्यैमुदा
न्विता ११ कैकेयीचस्वभागाद्धैतस्यैप्रीतिसमन्विता ॥ उपभुज्यचरुंसर्वाःस्त्रियो
गर्भसमन्विताः १२ देवताइवरेजुस्ताःस्वभासाराजमंदिरे ॥ दशमेमासिकौशल्या
सुषुवेपुत्रमद्भुतम् १३ ॥

(ततःपौत्रिकंचरुंसंगृध्नुःसुमित्रासंप्राप्ता) ताके पीछे पुत्रदायक जाउरि की इच्छा करिकै सुमित्रा आयप्राप्तभई (कौशल्यातुमुदान्वितास्वभागाद्धैतस्यैददौ) प्रथम कौशल्याजी आनन्द समेत अपना जो आधाभागरहै पाछेको पावा सो त्याहि सुमित्राके अर्थ देतीभई ११ (चकैकेयीप्रीतिसमन्वितास्वभागाद्धैतस्यै) पुनः कैकेयीभी प्रीति सहित अपना जो आधाभाग पीछे वाला रहा सो सुमित्राको दैतीभई (चरुंसुपभुज्यसर्वाःस्त्रियःगर्भसमन्विताः) जाउरि को भोजनकरि सबरानीगर्भ सहितभई अर्थात् पूर्णभागदिहे पीछे अर्द्धभागदिये ताहिसमय सुमित्रा आई ताते महाराजको मनोरथ विचारि अपनी बहिनि जानि कौशल्या आनन्दहै अपना अर्द्धभाग दिया तथा सपत्निभाव त्यागि बड़ी बहिनि सम प्रीति सहित कैकेयीभी अर्द्धभाग दिया सोई जाउरि साथ तीनिउ रानी गर्भधारण कीन्हें १२ (राजमन्दिरैताःदेवताइवस्वभासारेजुः) राजमन्दिरविषे तौनी तीनिउरानी देवतनकी समान अपनी प्रभाते दीप्तिप्रकाश किहेहैं (दशमेमासिकौशल्याअद्भुतपुत्रसुषुवे) गर्भाधानते दशयें महीनाविषे कौशल्याअद्भुत गुणस्वरूपवन्त पुत्रताहि जन्मतीभई अर्थात् जवते गर्भवन्ती भई तवते राजमन्दिर विषे तीनिहूँ रानी देवतन समान अपनी तनप्रभाते प्रकाश किहेहैं आनन्द समेत दशमास पूर्णभये

पर अद्भुत गुण स्वरूपवन्त पुत्र जन्मी ॥ १३ ॥

मधुमासेसितेपक्षेनवम्यांकर्कटेशुभे ॥ पुनर्व
स्वर्क्षसहितेउच्चस्थेग्रहपंचके ॥ १४ ॥ मेघं
पूषणिसप्राप्तेपुष्पवृष्टिसमाकुले ॥ आविरा
सीज्जगन्नाथःपरमात्मासनातनः ॥ १५ ॥
नीलोत्पलदलश्यामः पीतवासाश्चतुर्भुजः ॥
जलजारुणनेत्रांतःस्फुरत्कुण्डलमंडितः १६ ॥

५		३
६ रा.	वृ. ४ चं.	बु. २
७ श.		३ सू.
८	१० म.	के. १२
९		११ शु

(मधुमासेसितेपक्षे) चैत महीना में शुक्लपक्ष विषे (पुनर्वसु ऋतु सहिते नवम्यां) पुनर्वसु नक्षत्र सहित नवमी तिथि विषे (कर्कटेशुभे उच्चस्थे ग्रहपंचके) कर्क शुभ लग्न विषे जन्म भया जन्मपत्री लिखे पांचग्रह उच्चके परे हैं अर्थात् चैतमास शुक्लपक्ष नवमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र कर्क लग्न शुभ पांच ग्रह उच्चके यथा मेघके सूर्य मकरके मंगल तुलाके शनैश्चर कर्कके वृहस्पति मीन के शुक्र इति पंच उच्चके पुनः स्वक्षेत्री चंद्रमा वृहस्पति सहित मूर्ति में इत्यादि समय जन्मपत्री यथा १४ (मेघपूषणिसंप्राप्ते) मेघ राशि पर सूर्य प्राप्तसंते (पुष्पवृष्टि समाकुले) आकाश ते देव-कृत फूलन की वर्षा होतसंत (सनातनः परमात्मा जगन्नाथः आविरासीत्) अर्थात् मेघराशि उच्च स्थानपर सूर्य प्राप्तसंते अरु आकाशते देवता फूल वर्षतसंते ऐसे महामंगल कारक समयमें सनातन जो नित्य एकरस कारण रहित शुद्ध परमात्मरूप ऐसे जगन्नाथ जगत् को पालन करता रघुनन्दन महाराज आविर आसीत् प्रकट भये १५ (नील उत्पल दल श्यामः) नील कमल के दलवत् श्याम (पीतवासाश्चतुर्भुजः) पीत वसन चारि हैं भुजा (अरुण जलज नेत्र अन्तः) लालेकमल-वत् नेत्रनको समीप अंग (स्फुरत् कुण्डल मंडितः) चलायमान कुंडल विराजमान अर्थात् श्याम कमलदल सम कोमल सचिक्कण चमकदार श्याम तनु है तामें पीताम्बर धारण चारि हैं भुजा लाले कमल सम कोमल अरुणता नेत्रनके आसपास दर्शित कान में कुंडल हालिरहे हैं १६ ॥

सहस्रार्कप्रतीकाशःकिरीटीकुञ्चितालकः॥ शङ्खचक्रगदापद्मवनमालाविराजितः॥

१७ ॥ अनुग्रहारूप्यहृत्स्थेन्दुसूचितस्मितचन्द्रिकः ॥ करुणारसपूर्णविशालोत्प

ललोचनः ॥ १८ ॥ श्रीवत्सहारकेयूरनूपुरादिविभूषणः ॥ दृष्ट्वातं परमात्मानं

कौशल्याविस्मयाकुला ॥ १९ ॥

(सहस्र अर्क प्रतीकाशः किरीटी) हजार सूर्यनकैसी प्रकाश जामें ऐसा रत्नजटित किरीट शीश पै धारण किहे (कुञ्चित अलकः) घुंघुवारे चिक्कण चमकदार श्याम केश कपोलनपर शोभित हाथों में शंख चक्र गदा पद्म धारणकीन्हें उरपर वनमाला अर्थात् तुलसी कुंद मन्दार पारिजात कमल इत्यादि फूलनसों गुहाहुवा इति वनमाल शोभित १७ (अनुग्रह रूप्य इन्दुहृत्स्थ) अनुग्रहगुण प्रसिद्ध हैं जिनमें सोई चन्द्रमा सम हृदय में स्थितहैं जिनके (चन्द्रिकः स्मित सूचित) चांदनीसम मुसकानि सूचित हैं (विशाल उत्पल लोचनः) बड़े लम्बायमान कमलसम नेत्रते (करुणारस पूर्ण) करुणारस जिनमें भरिपूर है अर्थात् बिनास्वारथ परदुख हरना सो दयाहैं अरु सदा एकरस

दया राखना भाव अपना करि माने रहना सो अनुग्रह है सो रघुनाथजीमें परिपूर्ण है यह लोकमें विदित है सोई अनुग्रह पूर्ण चन्द्रवत् हृदय में उदय है ताकी चांदनी मन्दमुसकानि प्रकाशमान है पुनः जो सेवकके दुखते स्वामी आपुदुखित हैं शीघ्रही सेवक को दुख मिटावै सो करुणाहै सोई करुणारस भरे बड़े लम्बायमान कमलसम नेत्र हैं १८ (श्रीवत्सहार केयूर) श्रीवत्स चिह्न मणिन के हार बहूटा (नूपुरादिविभूषण) पौटा आदि विभूषण धारणकिहे (तं परमात्मानं दृष्ट्वा) तौने परमात्मा को देखिकै (कौशल्या विस्मय आकुला) आश्चर्य में अकुलाय उठी अर्थात् पीतरंग रोमनकी दहिनावर्त्त अमरी इति श्रीवत्स चिह्न वामछाती में अनेक रंग मणिन के हार ग्रीव ते उरपर मणि कंचन मय बहूटा भुजमें पौटा पावनमें इत्यादिविभूषणनतेसर्वांग भूषित ऐसा अद्भुत रूप तौने परमात्माको आविर्भाव प्रसूत समय देखिकै कौशल्याजी आश्चर्य के बश हृदयते अकुलायउठी भाव या समय ऐसा रूप देखि लोग हमारी उपहास करेंगे १९ ॥

हर्षाश्रुपूर्णनयनानत्वाप्राञ्जलिरब्रवीत् ॥ कौशल्योवाच ॥ देवदेवनमस्तेस्तुशङ्ख
चक्रगदाधर ॥ २० ॥ परमात्माच्युतोन्तःपूर्णस्त्वंपुरुषोत्तमः ॥ वदन्त्यगोचरं
वाचांबुद्ध्यादीनामतीन्द्रियम् ॥ २१ ॥ त्वांवेदवादिनःसत्तामात्रंज्ञानेकविग्रहम् ॥
त्वमेवमाययाविश्वंसृजस्यवसिहंसिच ॥ २२ ॥

(हर्षाश्रुपूर्णनयना) अद्भुतरूप देखिकौशल्याजीके हृदयते प्रेमानंद उमँगा त्यहि आनंद आसुन ते भरे नेत्र (नत्वाप्राञ्जलिःअब्रवीत्) माथनाय हाथजोरि कौशल्याजी बोलीं हे शंखचक्र गदाधर देवनके देव (तेनमःअस्तु) तुम्हारेअर्थ नमस्कार है २० (परमात्मा) आत्माके प्रकाशक परमात्म रूपशुद्धबुद्ध सुखस्वभाव (अच्युतः) अपनेरूपते कबहूँ व्युत्तनहीं होते हौं सदाएकरसहौं (अनन्तः) आपको अंतकोऊनहीं पावत (पूर्णः) अखंडसर्वत्र परिपूर्णहौं (त्वंपुरुषोत्तमः) पुरुषार्थ है जिनमें तिनपुरुषन में आप उत्तम पुरुषहौं (वाचांबुद्धिआदीनामगोचरंअतीन्द्रियंवदन्ति) वचन अरु बुद्धि तिन के गोचर जो विषय तामें नहीं आवतेहौं इतिअगोचर अरु अतीन्द्रिय इन्द्रिनतेपरे ऐसा आपको सब कहते हैं अर्थात् गोनामहै इन्द्रिन को सो चरें जाको ताको कही गोचर अर्थात् इन्द्रिन की विषय तहां कर्मइन्द्रिनमें प्रधान मुखैहै ताकी गोचर वचनहै अरु बुद्धिकी इन्द्रीहैं श्रवण त्वचानेत्र जिह्वा नासिका तिनकी विषय शब्द स्पर्श रूपरसगंध इत्यादि विषयनमें नहीं आवतयथा अन्तरते दीपक हंडीको प्रकाशित किहे आपुन्यारा रहततथा सबकी इन्द्रिनमें आपुप्रकाश किहेहौं अरुइन्द्रिन कीविषय में नहीं आवते हौं इसीते आपुको सब अतीन्द्रिय कहतेहैं २१ (वेदवादिनःत्वां सत्तामात्रं ज्ञानएकविग्रहं वदन्ति) वेदवादी आपुको सत्तामात्र एक ज्ञानैस्वरूप कहतेहैं (त्वंएवमाययाविश्वं) निश्चय करि आपुही अपनी मायाकरिकै संसार जोहै ताहि (सृजसिअवसिचहंसि) उत्पन्न करते हौं पालतेहौं पुनः संहार करतेहौं अर्थात् यथा दीपक के सत्ताते हंडी प्रकाशित अरु दीपक प्रकाश रूपीहै तथा आपकेवल ज्ञानस्वरूप अरु आपको तेज माया में व्याप्त ताहीते माया समग्र रचना करत सो आपके सत्ताते जड़माया भी सत्यवत् भासत ऐसा वेदवादी कहत २२ ॥

सत्त्वादिगुणसंयुक्तस्तूर्यएवामलाःसदा ॥ करोषीवमकर्त्तात्वंगच्छसीवनगच्छसि॥
२३ ॥ नशृणोषिशृणोषीव पश्यसीवनपश्यसि ॥ अप्राणोह्यमनाःशुद्धइत्यादि
श्रुतिरब्रवीत् ॥ २४ ॥

(सत्त्वादि गुण संयुक्तः) सत रज तम इत्यादि गुण सहित हौ परन्तु (तृथ एव भ्रमलाःसदा) तुरीय अवस्था रूप निश्चयकरिके भ्रमलहौ अर्थात् रजोगुण करि संसारको उपजावतेहौ सतो-गुण करि पालतेहो तमोगुण करि संहार करतेहो इत्यादि व्यापारते सत्त्वादि गुणसहित देखातेहो परन्तु ये गुण आपमें छुड़ नहीं जाते हैं निश्चय करि तुरीय अवस्था सच्चिदानन्द रूप रज तमादि मल रहित सदा भ्रमलहौ कौन भांति (करोपिइवत्वं कर्ता न) कर्म करनेवाले की समान देखते हौ भरु आप करता नहीं हौ (गच्छसीविनगच्छसि) चलनेवाले की समान देखातेहो भरु चलते नहींहो २३ (शृणोपि इव न शृणोषि) सुननेवाले के समान देखातेहो भरु नहीं सुनतेहो (पश्य-सिइवनपश्यसि) देखनेवाले की समान देखातेहो भरु नहीं देखनेवालेहो (अप्राणोहिभ्रमनःशुद्ध) इत्यादि श्रुतिः भ्रमव्रति नहीं है प्राण निश्चयकरि नहीं है मनजामें केवल शुद्ध आत्मतत्त्व इत्यादि वेद कहत अर्थात् जब रजोगुणादि युक्तभी भ्रमल हैं तौ मलको स्पर्शमें कैसे भ्रमल रहते हैं तापर कहत कि कर्म करनेवाले चलनेवाले सुननेवाले देखनेवाले इत्यादिकी नाई देखातेहो भरु नकछु करतेहो न कहूं जातेहो न कछु सुनते हौ न कछु देखते हौ सब कर्तव्य मायाकरिके होता है आपु निर्विकारहो भाव कर्म हाथोंकी विषय है गमन पांयन की विषय है सुनब कानों की विषय है देखब नेत्रन की विषय है इत्यादि इन्द्रिन की विषय रहित तथा प्राण अपानउदान समान व्यान इत्यादि जोपांचौ प्राणवायुके अंशहैं तथामनजो प्रकृति को अंश जाके मिलेते आत्मरूप भूलिशब्द स्पर्श रूप रस गन्धादि विषयनमें आसक्तहवै जीव विषयबद्ध होत इत्यादि प्राण रहित मनरहित शुद्धात्मरूप बाहर भीतर एक अर्थात् देही देह विभाग रहित शुद्ध सच्चिदानन्दहो इत्यादि विशेषणदै वेद आप को वर्णन करतेहैं २४ ॥

समःसर्वेषुभूतेषुतिष्ठन्नपिनलक्ष्यसे ॥ अज्ञानध्वांतचित्तानांव्यक्तएवसुमेधसाम् ॥

२५ ॥ जठरेतवदृश्यंतेब्रह्माण्डःपरमाणवः ॥ त्वंममोदरसंभूतइतिलोकान्विडं वसे ॥ २६ ॥ भक्तेस्तुपारवश्यंतेदृष्टंमेऽद्यरघूत्तम ॥ संसारसागरेमग्नापतिपुत्र-धनादिषु ॥ २७ ॥

(सर्वभूतेषुसमःतिष्ठन्नपि) सब चराचरविषे बराबरस्थित हौ निश्चय करि परंतु (अज्ञानध्वांत चित्तानांनलक्ष्यसे) अज्ञानरूप अन्धकार युक्त चित्त हैं जिनके तिनको नहींदेखिपरते हौ भरु (सुमे-धसांव्यक्तएव) सुन्दरि बुद्धि है जिनकी तिनको प्रकटहो निश्चय करिके अर्थात् भूत सब चराचर जीव मात्र विषे अन्तर्ग्यामी रूपते-बराबर स्थितहो निश्चयकरि परंतु जे देह को सत्य माने ताके सुखहेत इन्द्री विषयन में आसक्त ऐसे अज्ञान रूप अन्धकारयुक्त चित्त हैं जिनके तिनको नहीं देखि परते हौ भरु विराग विवेक शम दमादि युक्त सुंदरि बुद्धि है जिनकी तिनको प्रकट देखाते हौ निश्चय करिके २५ (तवजठरेब्रह्माण्डःपरमाणवःदृश्यंते) आपके उदरमें अनेकन ब्रह्माण्ड स्वल्प रज कण की समान देखाते हैं (त्वंममउदरसंभूतइतिलोकान्विडंवसे) सोई आपु मेरे उर ते उ-त्पन्न भयो यह लोकन में उपहास करते हौ २६ (हेरघूत्तमभक्तेःतुपारवश्यंअद्यमेदृष्टं) हे रघुवंश शिरोमणि आप को भक्त के परबश आजु हमने देखा भरु हम कैसी हैं (पतिपुत्रधनादिपुंसंसारसा-गरेमा) पति पुत्र धनादि विषे जो सनेह सोई है अगाध जल जामें ऐसे संसार रूप समुद्र में बूझी परीहैं अर्थात् आप के उदर में अनेकन ब्रह्माण्ड परम स्वल्प रज-कणकी समान देखातेहैं ऐसी

जाकी महिमा सोई परब्रह्म आप मेरे तुच्छ उरते पुत्र ह्वै उत्पन्न भयो यह लोकन में अपनी उप-
हास करिरहेउ है परंतु इसमें भी आप की भोक्तीवास्तव्यता दर्शित होती है काहे ते हेरघूत्तम भाव
जो अपनी ऐश्वर्य त्यागि मेरेउदर द्वारा रघुवंश नाथ भयो इंस आचरणतेआजु हम प्रसिद्ध देखा कि
आप अपने भक्तनके आधनि हैं भाव जो भक्तकहैं सोईकरतेहौ यहतौ अनुग्रह मेरेऊपर अरु में कैसी
अल्पज्ञहौ कि पतिपुत्र धनादि में सनेहरूप जल जामें ऐसे संसारसागरमें बूड़ी परी हौं २७ ॥

अमामिमाययातेऽद्यपादमूलमुपागता ॥ देवत्वद्रूपमेतन्मेसदातिष्ठतुमानसे ॥
२८ ॥ आचृणोतुनमांमायातवविश्वविमोहिनी ॥ उपसंहरविश्वात्मन्नेतद्रूपमलो
किंकम् ॥ २९ ॥ दर्शयस्वमहानंदबालभावंसुकोमलम् ॥ ललितालिङ्गनालापैस्त
रिण्यंत्युत्कटंतमः ॥ ३० ॥

(तेमाययाभ्रमामि) आपकी माया करिकै भ्रमती हौं (अद्यपादमूलमुपागता) आजु आप के
पद कमलों के समीप प्राप्त भई ताते जानती हौं कि पार पावेंगी इति शेषः (देवएतत् स्वरूपमेमा-
नसेसदातिष्ठतु) हे देव यह जो आप को रूप है सो मेरे मनमें सदा वसै अर्थात् पुत्रादि सनेहरूप
जल संसार सागर में परी आपकी माया करिकै भ्रमत फिरती रहों ऐसी कछु पुण्य उदयभई जाते
आजु आप के पद कमलों के समीप प्राप्तभई भा । पुत्र ह्वै प्राप्त भयो इति सम्बन्ध बलते विश्वास
भयो कि भवसागरते पार जाउँगी सोई दृढता हेत प्रार्थना करतीहौं हे देव यह जो ऐश्वर्य सहित
आप को अद्भुतरूप है सो मेरे मनमें सदावसै २८ (विश्वविमोहिनीतवमायामांआचृणोतुन) संसार
को मोह न करनहारी जो आपकी माया है सो मोको अब कभी आवरणन करै (विश्वात्मन्एतत्
अलौकिकरूपमुपसंहर) हे विश्वात्मन् यह अपना अलौकिकरूपको लोप कीजिये अर्थात् कौशल्या
जी कहत कृपादृष्टि यह प्रार्थना सुनिये जो आपकी अविद्यामाया सब संसार को विशेषि मोह
के बश करि आत्मरूप को भुजाय देती है सो मेरे आत्मरूप को अब आवरण कबहूँ न करिसकै भाव
आपकी माधुर्य लीला देखि भूलों न दूसरे इस रूप को तेज लोकजन नहीं सहिसकैहैं ताते यह
अलौकिक रूप लोप कीजिये २९ (सुकोमलबालभावंमहानन्ददर्शयस्व) सुन्दरे कोमल स्व-
रूप ताहि धारण करि बाल भाव को जो आनन्द है ताहि देखाइये जाको (ललितआलिङ्गनआला-
पैःतमःउत्कटंतरिण्यन्ति) सुन्दरी भांति उर में लगाय प्रीति समेत वार्त्ता करि लोग मोहांधकार
महामत्त को भी तरि जायेंगे अर्थात् कौशल्याजी कहत हे प्रभु यह जो चतुर्भुज रूप है ताको त्यागि
यह जो प्रसूत काल की समय है ताकी अनुकूल जामें सर्वांग सुठौर वने कोमल इति सुकोमल
शिशु स्वरूप धारण करि जो पुत्रभये पर माता पिता को सुखहोताहै इत्यादि बाल भावको आनंद
देखाइये भाव ऐश्वर्य छिपाय माधुर्यरूपते शिशुकेलि कीजिये ज्यहिरूपको ललित आलिङ्गन अर्थात्
सुन्दरी भांति प्रेम समेत उरमें लगाय पुनः आलाप अर्थात् लाड़ दुलारमय वार्त्ता करि इत्यादि
आचरण आपके संग करिकै पुर परिजन संबंधीलोग मोहांधकार महामत्तको तरिजायेंगे भाव अज्ञा-
नता रहित शुद्ध आत्मरूपते आपके अनुरागी होईंगे ३० ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ यद्यदिष्टं तवास्त्वम्बतत्तद्भवतु नान्यथा ॥ अहंतु ब्राह्मणापूर्वभू-
मेर्भारापनुत्तये ॥ ३१ ॥ प्रार्थितो रावणं हंतुं मानुषत्वमुपागतः ॥ त्वया दशरथेनाहं

तपसाराधितःपुरा ॥ ३२ ॥ मत्पुत्रत्वाभिकांक्षिण्यातथाकृतमनिंदिते ॥ रूपमे-
तत्त्वयादृष्टंप्राक्तनंतपसःफलम् ॥ ३३ ॥

कौशल्याके वचन सुनि भगवान् बोले (हेअंबतवयत्यत्तुडंअस्ति) हेमातः तुमको जो जो इच्छाहै (तत्तत्भवतुअन्यथान) तौनतौनहोई और कछु न होई पुनः मेरे अवतीर्ण होनेकोहेतुसुनिये (तुभूमेः भारष्पनुत्तयेअहंपूर्वब्रह्मणा) पुनः भूमिको भार उतारने अर्थ हम पूर्व ब्रह्माकरिकै ३१ (प्रार्थितः) प्रार्थना किये गये (रावणंहन्तुमानुपत्वंउपागतः) रावण जो है ताहि मारिवे को मानुप तनुधरिवेको विचार किया पुनः (त्वयादशरथेनपुरातपसाअहंआराधितः) फिरितुमकरिकै सहित दशरथ ने पूर्व जन्म विपि तपस्या करिकै मेरा आराधन किया ताते हम प्रसन्न ह्वै बर दिया भावजो इच्छाहोय सो मांगौ ३२ (हेअनिन्दिते मत्पुत्रत्वमभिकांक्षिण्यातथाकृतं) हे निंदारहित तुमने मोको पुत्र होनेकी इच्छा किया तेसेही मेने किया भाव तुम्हारा पुत्रभया अर्थात् कौशल्याजीके वचनसुनि भगवान्बोले कि हेमातः तुमको जो जो इच्छाहै सो सो होई तुम्हारे मनोरथतेबाहेर और कछुनहोईअवमेरे अव- तीर्ण होने को हेतु सुनिये प्रथमतौ तुम्हारा मनोरथ पूर्णकरिवे हेत पुनः भूमिको भारउतारनेअर्थ हम पूर्वहीं ब्रह्माकरिकै प्रार्थना कियेगये भावराक्षसोंका राजादुष्ट रावण महापाप करता ताते भूमि पै बडाभार है अरुरावण की मृत्यु मनुष्य के हाथ लिखीहै ताते आप मनुष्य तन धरि दुष्टको मारि भूभार उतारिये इत्यादि ब्रह्माकी प्रार्थनामानि रावणके मारिवेहेत मानुपतन धरिवेको विचार किया पुनः जो तुम्हारे पुत्रभये ताको हेतु यहहै कि पूर्व जन्ममे तुम अदिति कश्यप दशरथ दोऊ तपस्या पूर्वक मेरा आराधना किहेउ मै प्रसन्नहै बरदिया कि जो इच्छाहोइ सो मांगौतब तुममांगा कि आप हमको पुत्रहैकै प्राप्तहोउ इति जो तुम को इच्छारही सो हम किया तुमको पुत्रहै मिले पुनः (एतत्तुत्पत्तयादृष्टं) यह जो मेरा अपूर्वरूपहै ताहि तुमने देखा सो (प्राक्तनंतपसःफलं) पूर्व जन्ममें जो तपस्या कियाहै ताके फलहै मेरेरूपको दर्शन ३३ ॥

मद्दर्शनंविमोक्षायकल्पतेह्यन्यदुर्लभम् ॥ सम्वादमावयोर्यस्तुपठेद्वाशृणुयादपि॥

३४ ॥ सयातिममसारूप्यमरणमस्मृतिंलभेत् ॥ इत्युक्त्वामातरंरामोबालंभूत्वा

रुरोदह ॥ ३५ ॥ बालत्वेपीन्द्रनीलाभोविशालाक्षोतिसुन्दरः ॥ बालारुणप्रती

काशोलालिताखिललोकपः ॥ ३६ ॥

(मद्दर्शनंविमोक्षायकल्पतेहि) मेरा जो दर्शन है सो विशेषि मोक्षके अर्थ जानो निश्चयकरि (अन्यदुर्लभम्) औरनको दुर्लभहै अर्थात् भगवान् कहत हे मातः जो पूर्व बरदान दिया ताते तुम्हारे पुत्रभये अरु यह जो मेरा अपूर्वरूप तुमने देखा सो पूर्व जन्ममें जो तपस्या किया ताको फल है काहेते मेरा जो दर्शनहै सो विशेषि मोक्षके अर्थ जानो भाव दर्शन होतही सब बिकारनाशहै जीव आत्मरूपको प्राप्तहोत ताते मेरे सनेहिनको दर्शन सुलभहै निश्चयकरि अरु अन्य जेशरणते विमुख हैं तिनको दुःखौकरि दर्शन लाभ नहीं है (तुआवयोःसंवादं) पुनः हमारा तुम्हारा जो यह संवादहै ताहि (यःपठेत्अपिवाशृणुयात्) जो पढ़े निश्चयकरि वा सुने ३४ (सममसारूप्ययातिमरणमस्मृतिंलभेत्) सो मेरे सारूप्य मुक्तिको प्राप्तहोगा अरु मरणसमय सबकी सुधि त्यागि मेरी स्मृतिलाभ होगी (इतिउक्त्वामातरं) ऐसा कहि माताप्राति (रामःबालंभूत्वारुरोदह) रघुनाथजी बालकहैकै रोवनेलगे अर्थात् मेरा तुम्हारा संवाद जो पढ़ी वा सुनी सो मेरे सरूपवत् रूप पाइलोक बंधनते

छूटि अंतकालमें हमारही ध्यानरही इति मुक्तिको हेतुहै ऐसा माता सों कहि रघुनाथजी बालकहै रोवनेलगे ३५ (बालत्वेअपिइन्द्रनीलाभो) बालरूपभये पर भी श्रीरघुनाथजी कैसेदेखाते हैं इन्द्रनील जो श्याममणितद्वत् श्यामतनुमें प्रभा (विशालअक्षःअतिसुन्दरः) बड़े लंबायमाननेत्र अत्यंत सुन्दर (बालअरुणप्रतीकाशः) प्रातःकालके सूर्यनकी ऐसी प्रकाशतनुमें (अखिललोकपःलालिता) इन्द्रादि समग्रलोकपालन को लालन पालन करने वाले अर्थात् गिरिजाप्रति शिवजी कहत कि बालरूप भये पर भी श्रीरघुनाथजी कैसे देखाते हैं कि इन्द्रनील जो श्याममणि ताकी समान चिह्नन चमकदार कोमल श्यामतनुमें प्रभा बड़े लंबायमान नेत्र अत्यन्त सुन्दर प्रातःकालके सूर्यन कैसी प्रकाशतनु में इन्द्रादि समग्रलोकपालनको लालन पालन करनेवाले तेई प्रभुबालकहै लालन पालनकिये जायेंगे इति शेषः ३६ ॥

अथ राजादशरथःश्रुत्वापुत्रोद्भवोत्सवम् ॥ आनन्दार्णवमग्नोऽसावाययौगुरुणा सह ॥ ३७ ॥ रामराजीवपत्राक्षदृष्ट्वाहर्षाश्रुसंस्तुतः ॥ गुरुणाजातकर्माणिकर्तव्यानिचकारसः ॥ ३८ ॥

(अथ राजा दशरथः पुत्रउद्भव उत्सवं श्रुत्वा) अब राजा दशरथ भी पुत्र उत्पन्न भयेको उत्सव सुने (आनन्द आर्णव मग्नः) आनन्द समुद्रमें बूड़े (गुरुणासह असौ आययौ) गुरु वशिष्ठ सहित महाराज वहां को आये जहां जन्म भया अर्थात् सेवकन द्वारा अब महाराज दशरथभी पुत्र कौशल्यानन्दन उत्पन्न भये को उत्सव सुने ताते आनन्द समुद्रवत् उमगा तामें बूड़े गुरुवशिष्ठ को बुलाय साथलैकै महाराज वहां को आये जहां जन्म भयाहै ३७ (राजीव पत्र अक्षं रामं दृष्ट्वा हर्ष आश्रु संस्तुतः) कमलपत्र सम नेत्र जिनके ऐसे रामतिनहिं देखि आनन्द उमंगि नेत्रन में आंसु चले (गुरुणा) गुरुकरण है ताते तृतीयादिये भाव गुरुकी आज्ञा करिकै (जातकर्माणि) बहुवचन देने को भाव चारिहु पुत्रन के जातकर्म करना है अथवा अभ्युदयिक आद्व जातकर्म पथी नामकरण पर्यंत यावत् कर्म करनाहै ते सब (कर्तव्यानि) जैसी कर्तव्यता करना चाहिये (सःचकार) सो करते भये अर्थात् रुपारस भरे कमल दल सम नेत्र जिनके ऐसे राम श्रीरघुनंदन तिनहिं देखि प्रेमानंद उमंगि महाराज के नेत्रन में आंसु बहि चले पुनः गुरुकी आज्ञा करिकै अभ्युदयिक आद्व जातकर्मादि जैसी कर्तव्यता करना चाहिये सो करते भये प्रथम अभ्युदयिक अर्थात् नादीमुख आद्व यथा पूर्व मुखंस्थित्वा सर्वत्र सव्येनैव कर्तव्यं गौर्यादिवत्तुर्दश मातारः पूजयित्वा गणेशवरुणौ पूजयित्वा पिष्टस्येबंदरा निरमाय तेषु तिलांदाधि हरिद्राकंच प्रतिक्षिप्य दुर्वासने नवधा विभज्य देवतीर्थे नैवकर्तव्य तामात्रादित्रय पित्रादित्रय महामात्रादित्रय गंधदूर्वाक्षत ताम्बूलैः संपूज्य संकल्प्य दक्षिणा इत्यादियाको नाम मूलमें नहीं है ताते गुप्त कहा अरु जातकर्म को नाम है सो प्रसिद्ध करि कहते हैं प्रथम आचार्य अरु पिता सूतिका गृहविषे जाय सोने की बस्तुमें धृत सहत लगाय चारबार बालक के मुख में लगावत भूय इति मंत्र पढ़ि पुनः कुशसों जल बालकपर छिरकत अग्नि इति मंत्र पढ़ि पुनः बालक के दहिने काने लगआठौ कंडिका पढ़त पुनःपंचविप्रान्स्थापयति श्रित इति मंत्र सों देशं अभिमंत्रयति बालंअभिमंत्रयति मातरं अभिमंत्रयति पुनः माता दोनी में जल लै आपन दक्षिण स्तन धोय बालक की नालपर डारत आपो इति मंत्र पढ़त वर्ण दक्षिणा दै पुनः भूमि पंच संस्कार करि बेदी बनाय तापर दोनी में अग्नि धरि गणेश गौरी वरुण

पूजि पीपरि सरसौ घृत मिलाय सांडा इति मंत्र सौ सात आहुतीदेत पुनः सौ मूठी अन्न भरि, पूर्ण पात्रसद्रव्य विप्रको देत पुनः पुत्र पिता अभिषेक तिलदान दै शिवमंत्र सौ सूत अरु छूराकी पूजाकरि सूतसौ नाल बांधि छूरा सो छीनत तवते सूतक मानत सो कीन्हें ३८ ॥

कैकेयीचाथभरतमसूतकमलेक्षणः ॥ सुमित्रायांयमौजातौपूर्णैन्दुसदृशाननौ ॥

३९ ॥ तदाग्रामसुवर्णानिवासांसिरत्नानिच। सुरभीशुभास्सहस्राणिब्राह्मणेभ्यो मुदाददौ ॥ ४० ॥

(चाथकैकेयीकमलेक्षणंभरतंअसूत) पुनः ताही समय में कैकेयी जी कमल समहैं नेत्र जिनके ऐसे जो हैं भरत तिनहिं उत्पन्न करती भई पुनः सुमित्रायां पूर्णइन्दु सदृश आननौ यमौ जातौ पुनः सुमित्रा विपे पूर्णचंद्रमा सममुख है जिनको ऐसे द्वै पुत्र उत्पन्न भये यमौ यथा मूर्तिमान् यम है अर्थात् योगाभ्यास द्वाराजो शरीर साधन की अपेक्षा राखि जो नित्य कर्म करना तिनको यम कही यथा शरीर साधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः इत्यमरः अर्थात् अहिंसा सत्यआचरण अस्तेय अर्थात् चोरी न करना ब्रह्मचर्य परिग्रह विषय पापादि को त्यागे रहना इति यम है यथा पातांजलि योगशास्त्रे अहिंसासत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यपरिग्रहा यमा इत्यादि जोयमहैं सोई यथा द्वै मूर्तिधरिप्रकट भये भाव सब विकार रहित अंतर बाहेर शुद्ध हैं ३९ (तदाग्रामसुवर्णानिचरत्नानिवासांसिसुरभी शुभाः) तासमयमें ग्राम अरु अशर्फी आदि सुवर्ण पुनः हीरा मोती आदि रत्न दुशालादि वसन गौवै मंगलीक इत्यादि (सहस्राणिब्राह्मणेभ्योमुदाददौ) हजारन ब्राह्मणन के अर्थ आनंद पूर्वक देते भये अर्थात् जब चारि पुत्र भये तासमयमें ग्राम अशर्फीरत्न वसन गौवै इत्यादि हजारन ब्राह्मणके अर्थ आनन्द समेत महाराज दान दीन्हें ४० ॥

यस्मिन्रमंतेमुनयोविद्ययाऽज्ञानविप्लवे॥तंगुरुःप्राहरामेतिरमणाद्रामइत्यपि ४१

अवनाम करण कहते हैं यथा (अज्ञानविप्लवे) अज्ञान को तरिजाने निमित्त (विद्ययामुनयः यस्मिन्रमन्ति) विद्याकरिकै मुनि जन ज्यहि विपे रमते हैं (तंगुरुःरामेतिप्राह) ताहि गुरुवशिष्ठ राम इति नाम कहते भये अथवा (रमणात् राम इति अपि) जाको सुंदररूप देखि सबरमै इतिरमणते राम इति निश्चय कही अर्थात् अविद्या के व्यापारकरि जो मोहरूप अज्ञानहै यथा अविद्याको व्यापारहै शब्द स्पर्शरूप रसगंध मैथुनादि जो इन्द्रियनकी विषय हैं तिनको सेवतसंते काम बढ़त कामना हानिते क्रोधहोत क्रोधवेगमें मनपरै मोहहोत अर्थात् आत्मरूप भूलिदेहको सत्यमानि ताके सुख उपायमें लगेरहना इत्यादि मोहरूप अज्ञान समुद्रतामें जीव बूढ़ा पराहै ताकोविशेषि पारजानेहेत विद्याके व्यापार करिके जो ज्ञानहै यथा विद्याको व्यापारहै विवेक अर्थात् देह व्यवहार असार जानित्यागि आत्मरूप सारांशजानि ग्रहण करना पुनः विरागलोक सुख त्यागना पुनः मुमुक्षुता मेरी मुक्ति निश्चयहोवै पुनः षट्संपत्ति यथाशम वासनात्याग दमइन्द्रियनकी वृत्तिरोकना उपरामविषयको पीठिदेना तितिक्षा दुःख सुखसम जानना श्रद्धागुरुवेदांत वाक्यमें विश्वास राखना समाधानमन एकाग्रराखना इत्यादि करि जो आत्मज्ञानत्यहि करिके मुनिजन ज्यहिविपेरमतेहैं भावपरमात्मरूप की समाधि आनन्दमें मग्नरहते हैं सोई परमात्म रूप ये हैं अस विचारि गुरु वशिष्ठ राम ऐसा नाम कहा अथवा जो कौशल्या नंदन हवै अवतीर्ण भये तिनके स्वरूप में कोटिन कामदेवकी ऐसी शोभा है सो देखि मुक्त मुमुक्षु बद्ध विषयी विमुख सबजारूप में रमते हैं भाव देखत ही आसक्त हवै

जाते ताते इनको निश्चय करि राम इति नाम है यथा ॥ महारामायणे कोटिकन्दर्पशोभाद्वये सर्वाभरण
भूषिते । रम्यरूपार्णवे रामरमांति सनकादयः ॥ ब्रह्मज्ञानातिमग्नो योजनको योगिनां वरः । हित्वारमंति तं
रामे रमुक्रीडाततोऽनघे ॥ राक्षसघोररूपा च द्रुष्टवन्तु मागता ॥ साप्यासीद्विमितारामे पतिवत्काममोहिता ॥
चतुर्दशतहस्राश्च राक्षसास्त्रदूषणतः । मोहितारामसद्रूपे रमुक्रीडातदुच्यते ॥ रमितारामसद्रूपे राक्षसारा
वणादयः । इत्यादि कहां तक कहै ४१ ॥

भरणाद्भरतो नाम लक्ष्मणं लक्षणान्वितम् ॥ शत्रुघ्नं शत्रुहन्तारमेव गुरुभाषत ॥

४२ ॥ लक्ष्मणो रामचन्द्रेण शत्रुघ्नो भरतेन च ॥ द्वंद्वीभूय चरंतौ तौ पायसांशानुसा

रतः ॥ ४३ ॥

(भरणात् भरतः नाम लक्षणान्वितम् लक्ष्मणश्च शत्रुहन्तारं शत्रुघ्न एव गुरुः अभषत्) विश्वको भरण
भाव जीवमात्र के परिश्रम के फलदाता धर्मरूप जो कैकेयी नन्दन ताको भरत ऐसा नाम पुनः
शांति समता शील सन्तोष क्षमा दया धीर्य ज्ञान भक्ति इत्यादि शुभ लक्षणन युक्त भक्तिके आचार्य
सुमित्राके बड़े पुत्र को लक्ष्मण ऐसा नाम है पुनः जाको नाम लेत शत्रुको नाश होत वा भक्तन के
शत्रु कामादिकनके नाश करता भक्तनके रक्षक सुमित्राके छोटे पुत्र को शत्रुघ्न ऐसा नाम है इत्यादि
चारों पुत्रन के नाम गुरु वशिष्ठ कहत भये ४१ (तौ पायसअंश अनुसारतः) तौन जो द्वौ सुमित्रा-
नन्दन हैं ते जाउरि भाग अंश अनुसारते (द्वंद्वी) दूसरे के संग (भूयचरंतौ) बहुत प्रीति पूर्वक
विचरते हैं कैसे दूसरे के संग (लक्ष्मणः रामचन्द्रेण) जो कौशल्याको दिया पायस भाग है ताही अंश
ते लक्ष्मण श्री रघुनाथ जी करि संग लिया (चशत्रुघ्नः भरतेन) जो कैकेयी जी को दिया भाग है
ताही अंश ते शत्रुघ्न हैं ते भरत करि संग लिये भाव अनुचर भये ४३ ॥

रामस्तु लक्ष्मणेनाथविचरन् बाललीलया ॥ रमयामास पितरौ चेष्टितैर्मुग्धभाषितैः ॥

४४ ॥ भालेस्वर्णमया श्वत्थपर्णमुक्ताफलप्रभम् ॥ कण्ठेरत्नमणित्रातमध्ये द्वीपि
नखाञ्चत्तिम् ॥ ४५ ॥ कर्णयोस्स्वर्णसम्पन्नरत्नार्जुनसटालुकम् ॥ सिंजानमणिमं
जीरकटिसूत्रांगदैर्घृतम् ॥ ४६ ॥

(अथ रामः तु लक्ष्मणेन बाललीलया विचरन्) अब रघुनाथजी पुनः लक्ष्मण सहित धावन गिरन
उठन किलकनिआदि बाललीला करिकै विचरतें हैं (चेष्टितैः मुग्धभाषितैः पितरौ रमयामास) मुस्का-
नि आदि अंग चेष्टा करिकै तो तरी बोलनि करि माता पिता जो हैं तिनहिं रमावते हैं भाव आसक्त
हवै देखते हैं अर्थात् लपणलाल सहित रघुनाथ जी बाल केलि करत संतें अंगचेष्टा तो तरी बोलनि
करि माता पिताको मनहरे लेते हैं ४४ (अश्वत्थपर्णस्वर्णमयमुक्ताफलप्रभम् भाले) पीपर पत्रकी
आकार सोने सों बना तामें मोती गुच्छन की प्रकाश हवै रही ऐसा छोटा किरिट माथे पर शोभित
(रत्नमणित्रातमध्ये द्वीपिनखाञ्चत्तिम् कण्ठे) सोना मोती मूंगादि रत्नहीरामरकतादिमणि समूहताके
बीच व्याघ्र नखगुहा ऐसा कठुला कंठमें शोभित ४५ (अर्जुनसटालुकमरत्नस्वर्णसंपन्नकर्णयोः) अर्जुन
वृक्षके कच्चे फलकी आकार चौड़ा नोकदार टेढ़ा मोतीआदि रत्नजटित सोनेसों परिपूर्णवने ऐसे कुण्डल
दोऊकाननमें शोभित (मणिमञ्जीरसिंजान्) मणिजटित जातरूपमयवने नूपुर पांयनमें शब्दकरिरहे हैं
(कटिसूत्रांगदैर्घृतम्) कटि करधनीकरिकै भुजा बहूटन करिकै घेरें अर्थात् ये द्वे श्लोकनमें सर्वांग
भूषण कहै यथा पीपर दल्लाकार सोने सों बना मोतिनयुत किरिट शीशपर रत्नमणि समूह वधनदा

युत गुहा कठुला करण में अर्जुनवृक्ष के कच्चे फल के आकार सोने ते बने रत्नजटित कुण्डल दोऊ कानन में शोभित मणिजटित जातरूपमय धने नूपुर पायन में शब्द करि रहे हैं तथा मणि जटित कञ्चन मय करधनी कटिदेश को घेरे तथा मणिजटित सोने के बहूँटा भुजन में बाँधे शोभा दै रहे हैं इत्यादि सर्वांग विभूषित कोमल सुन्दर श्यामतन इति शेषः ४६ ॥

स्मितवक्त्राल्पदशनमिन्द्रनीलमणिप्रभम् ॥ अङ्गणेरिङ्गमाणंतर्णकाननुसर्वतः
४७ दृष्ट्वादशरथोराजाकौशल्यामुमुदेतदा ॥ भोक्ष्यमाणोदशरथोराममेहीतिचास
कृत४८ आक्षयत्यतिहार्देनप्रेरणानायातिलीलया ॥ आनयेतिचकौशल्यामाहसा
सस्मितासुतम् ४९ धावत्यपिनशक्नोतिस्प्रष्टुयोगिमनोगतिम् ॥ प्रहसन्स्वयमा
यातिकर्दमांकितपाणिना ५० ॥

(स्मितवक्त्राल्पदशनमिन्द्रनीलमणिप्रभम्) मुस्कानियुत मुखमें छोटे छोटे दांत श्याममणि सम प्रभा जाके तनमें (तंतर्काननुसर्वतःरिगमाणं) तौन श्रीरघुनाथजी गोवच्छन के पाछे पाछे अँगनामें सर्वत्र घूमिरहे हैं ४७ (तदाकौशल्याराजादशरथः दृष्ट्वा मुमुदे) जब आँगनमें घूमतरहे ताहीसमय मे कौशल्याजी अरु दशरथ श्रीरघुनाथजी को देखिके आनन्द भये (भोक्ष्यमाणोदशरथः) भोजन करत समय दशरथ महाराज (रामं एहिदतिच असकृत्) राम हियाँआवौ इत्यादि वार-वार पुकारते हैं ४८ (अतिहार्देनप्रेरणआक्षयतिलीलया आयातिन) अत्यन्त स्नेहकरिके प्रेम सहित महाराज बुलावते हैं परन्तु खेल करिके आवते नहीं हैं (कौशल्यांआनयइतिच) कौशल्या प्रति महाराज कहे कि तुम बुलायलावो इत्यादि सुनि पुनः (सासस्मितासुतंआह) सो कौशल्या सहित मुस्कानि वचन पुत्र प्रति आवनेको कहे तबहूँ न आये अर्थात् भोजन हेत महाराज प्रीति पूर्वक बुलाये परन्तु खेलमे आसक्त ताते न आये तब कौशल्याको पठाये सोभी बुलाये तबहूँ न आये आवते देखि भागि इतिशेषः ४९ (योगिस्प्रष्टुमनोगतिम् अपिनशक्नोति) योगिनकी पुष्ट थिर मनकी जो गति सोभी जहां नहीं जायसक्ती है ताही प्रभुको पकरने हेत (धावति) कौशल्याजी धाई तबहूँ न मिले (प्रहसन्स्वयंआयाति) हँसिके प्रभु आयही आये कैसेहैं (कर्दमांकितपाणिना) कीचरके चिह्न हाथनमें सहित अर्थात् जिनको योगी ध्यानमें नहीं पावत तिनको भक्तिबशते कौशल्या पकरने धाई माताको स्नेह देखि आपही आये कीचड़ में जो खेले हैं सो हाथों में लगा है भाव सब देह माटी भरे आये ५० ॥

किञ्चिद्गृहीत्वाकवलंपुनरेवपलायते॥ कौशल्याजननीतस्यमासिमासिप्रकुर्वती५१
वायनानिबिचित्राणिसमलंकृत्यराघवम् ॥ अपूयान्मोदकान्कृत्वाकर्णशष्कुलिका
स्तथा५२ कर्णपूराश्चन्निविधाभर्षट्क्षौचवायनम्॥ गृहकृत्यंतयात्यक्तुंनस्यचापल्य
कारणात् ५३ ॥

(किञ्चित्कवलंगृहीत्वापुनःएवपलायते) जब माताकेसाथआये तब महाराजहँसिकेभोजनहेत समीप बैठारिलिये तब थारते थोराकोर लैके मुखमें दारे अवसर पाइपुनः भागिगये इति वालकेलि पुनः माताकृत उत्सव कहत (कौशल्याजननीतस्यरामरथः) कौशल्यामाता तिन रघुनाथजी को (मासिमासिप्रकुर्वती) महिनामहिनापर जब प्रभुके जन्मको नक्षत्र पुनर्वसु आवत तब ग्रह व्याधि इत्यादि अधिक भय होत ताके निवारण हेत उत्सव करतीहै ५१ क्या उत्सवमें करतीहै (राघवंसं

अलंकृत्य) उबटि स्नान कराय नवीन वसन भूषण पहिराय इति सम्पूर्ण प्रकार रघुनाथजीको अलंकृत करिकै पुनः (अपूपान्मोदकान्कृत्वा) चौरीठा भूजि घृत मिथी मेवामिलाय लड्डूबूनाये (तथाकर्ण शङ्कुलिका) तैसेही पेरक सुहारीआदि (विचित्रबायनानि) बहुतभांतिके पकवान घरनमें बायनवांटती हैं अर्थात् रघुनाथजीको मंगल स्नानकराय नवीनभूषण वसन पहिराय पुनः लड्डू पेरक पूरी कचौरी पुवा इत्यादि बहुत भांति पकवान घरनमें बायन वांटे इत्यादि प्रतिभास उत्सव किये पुनः वर्ष पूर्ण भयेपर वर्ष उत्सव आगे कहत ५२ (कर्णपूराश्चविधिषा) पेरक पूरीआदि पुनः अनेक भांति पकवान (वर्षवृद्धौचबायनम्) वर्ष बहुत समय प्रतिसम्बत बायन वांटतीहैं भाववर्ष पूर्णभये दूसरावर्ष लाग त्यहि दिन वर्षगांठि उत्सव करतीहैं अर्थात् कुलमान्य बंधुवर्ग पुरोहित ब्राह्मणादिबुलाय मंगल स्नानकराय रघुनाथजी को नवीन भूषण वसन पहिराय वैठारि देवार्चन हवन रक्षा अभिषेक विभ्रभोजन दक्षिणा पुनः सबको भोजन नेग निवछावरिदै नृत्य गान जागरण करि पीछे पेरक पूरी पुवा कचौरी आदि अनेक पकवान घरन बांटत इत्यादि प्रतिसम्बत् उत्सव होताहै (तस्यचापल्यकारणात्तयागृह कृत्यंत्यक्तम्) रघुनाथजी के चंचलता अधिकहै त्यहि कारण ते कौशल्या करके घरको काज त्याग रहत भाव कछुकार्य बिगारि न डारैं इसहेत देखतैरहतीहैं कैसी चापल्यता करतेहैं सोआगेकहत ५३ ॥

एकदारघुनाथोऽसौगतोमातरमंतिके॥भोजनंदेहिमेमातर्नश्रुतंकार्यसक्तया ५४॥

ततःक्रोधेनभांडानिलगुडेनाहनत्तदा ॥ शिष्यस्थंपातयामासगव्यंचनवनीतकं

५५ लक्ष्मणायददौरामोभरताययथाक्रमम् ॥ शत्रुघ्नायददौपश्चादधिदुग्धं तथैवच ५६ ॥

(एकदा असौरघुनाथः) एक समयमें रघुनाथजी (मातरंअन्तिकेगतः) माताकेपासमें गये बोले (मातःमेभोजनंदेहि) हे मातः मोको भोजन देहु (कार्यसक्तयानश्रुतं) कार्य में लगीरहैं त्यहि करिकै नहीं सुने अर्थात् एक समयमें रघुनाथजी माता कौशल्याके पास जायकहे कि हेमातः भूखलगी मोको शीघ्र भोजन देहु परन्तु कौशल्याजी घरके कछु कार्य में मन लगायेरहीं ताते रघुनाथजी को कहा नहीं सुने ५४ (ततःक्रोधेन) तब क्रोध करिकै (भांडानि) दधि दुग्धभरे पात्र तिनहि (लगुडेनअहनत्) लाठी करिकै फोरिडारे (तदाशिष्यस्थंगव्यंचनवनीतकंपातयामास) तासमय में शिकहरपर धराहुआ जो दधि दुग्ध पुनः माखन सो गिरिपरा अर्थात् जब भोजनमागे अरु माता ने न सुना तब रघुनाथजी क्रोध करिकै दधि दुग्धके भरे पात्र तिनहि लाठी करि फोरिडारे तासमय शिकहरपर धराहुआ जो दधि दुग्ध अरु माखन सो गिरिपरा ५५ (रामःयथाक्रमम्भरतायलक्ष्मणाय ददौ) रघुनाथजी यथाक्रम भरत के अर्थ दीन्हें लक्ष्मणके अर्थ दीन्हें (चतथाएवदधिदुग्धम्) पुनः ताही प्रकार निश्चय करि दधि दूध जोहै ताहि (पश्चात्शत्रुघ्नायददौ) पाछे शत्रुघ्नके अर्थ देते भये अर्थात् जा भांति छोटाई बडाई भाइनमेंहै ताही क्रमते रघुनाथजी प्रथम दधि दुग्ध माखनादि आप लिये तब भरत को दिये पुनः लक्ष्मणको दिये पुनः ताही भांति निश्चयकरि दधि दुग्धमाखन सबते पाछे शत्रुघ्न को दिये इस भांति सब भाई दधि दुग्ध माखनादि भोजनकिये ५६ ॥

सूदेनकथितंमात्रेहास्यंकृत्वाप्रधाविता ॥ आगतांतांबिलोक्याथततःसर्वैःपलायि तम् ५७ कौशल्याधावमानापिप्रस्वलंतीपदेपदे ॥ रघुनाथंकरेधृत्वाकिंचिन्नोवा चभामिनी ५८ बालभावंसमाश्रित्यमंदमंदरुरोदह ॥ तेसर्वैलालितामात्रागाढ

मालिङ्गयत्नतः ५६ एवमानंदसंदोहजगदानंदकारकः ॥ मायाबालवपुर्धृत्वाम
यामासदम्पती ६० ॥

(सूदेनमात्रेकथितं) रसोईदारने माताके अर्थ सबहाल कहा (हास्यंरुत्वाप्रधाविता) हँसिकरि माता पुत्रनको पकरने हेत दौरी (अथतांआगतांवलोक्य) अब तामाताआवतको देखि (ततःसर्वैः पलायितम्) तब सब करिकै सहित रघुनाथजी भागे अर्थात् पात्रफोरनेकोहाल रसोईदारने माताते कहा सो सुनि हँसिकरि कौशल्या धाई तिनको आवत देखि सब भागे ५७ (कौशल्याधावमानाअ पिपदेपदेप्रस्वलंती) कौशल्या दौरती हैं परन्तु निश्चय कहि एक एक पदपर गिरि गिरि परती हैं (रघुनायंकरेधृत्वाभामिनीकिचित्नउवाच) रघुनाथ जो हैं तिनहि हाथमें पकरिलिया परन्तु भामिनी कौशल्या स्नेहवश कछु न कहिसकीं अर्थात् कौशल्या दौरी परन्तु दीर्घायु सुकुमारी शैथल्यताते प्रति पद उठावत में निश्चय गिरि गिरि परत देखि अमता न सहिसके खड़े रहिगये तब रघुनाथजीको पकरि तौ लीन्हें परन्तु स्नेहते कछु कहिनसकीं ५८ (बालभावंसंआश्रित्य) लरिकाईस्वभावके अनुसार रोदन मुख्यहै ताते (मंदमंदरुरोदह) धीरा धीरा रोवनेलगे (तेसर्वमात्रालालिता) तेसब बालक माता करि- कै दुलारे गये कैसे (यत्नतःगाढंआलिङ्ग्य) युक्ति सों उठाय अत्यंग उरमें लगाय लीन्ही अर्थात् लरि- काईस्वभावते रघुनाथजी धीरा धीरा रोवनेलगे देखि भयभीत जानि माता वात्सल्य ताते दुलारपूर्वक उठाय उरमें लगाय लीन्हे ५९ (एवंजगत्आनन्दकारकः) इसी भांति जगत्में भक्तजनोंको आनंद करने हेत (आनन्दसंदोहमायाबालवपुर्धृत्वा) आनन्दहै समूह जामें सो सञ्चिदानन्द धनमाया करि कै बालस्वरूप धारण करि (दंपतीरमयामास) दशरथ कौशल्याको रमावतेहैं अर्थात् जैसी बाल- केलि पूर्वकहिआये इसीभांति जगत्में भक्तजनोंको आनन्दकरने हेत आनन्द समूह प्रभु माया करिकै अर्थात् शिशु बालकुमार पौगण्डादि अवस्था पूर्वक बालस्वरूप धारण करि बालकेलि आनंद देखाय माता पिता दोऊको मन अपने रूपमें आसक्त किहे हैं ६० ॥

अथकालेनतेसर्वैकौमारंप्रतिपेदिरे ॥ उपनीतावशिष्टेनसर्वविद्याविशारदः ६१

धनुर्वेदेचनिरताःसर्वशास्त्रार्थवेदिनः ॥ बभूवुर्जगतांनाथालीलयांनररूपिणः ६२

लक्ष्मणस्तुसदाराममनुगच्छतिसादरम् ॥ सेव्यसेवकभावेनशत्रुघ्नोभरतंतथा ६३

(अथकालेनतेसर्वै) तदनन्तर बालकेलिमें कछु दिन बिताय करिते रामादि सबबालक (कौ मारंप्रतिपेदिरे) कुमार अवस्थाको प्राप्तभये पुनः (वशिष्ठेनउपनीता सर्वविद्याविशारदः) वशिष्ठ करिकै सबको यज्ञोपवीत कियागया पढ़ावते भये ताते सब विद्यामें प्रवीनभये अर्थात् शिशुतागत पीछे बालक्रीडामें कछु दिन बिताय करि श्रीराम लपण भरत शत्रुघ्न चारिउ भाय कुमार अवस्था भये तब वशिष्ठजीने विधिवत् सबके यज्ञोपवीत किये पुनःअक्षरारंभ करि व्याकरणादि पढ़ावत संते वेद शास्त्र चौदहौ विद्या उपविद्यादिमें सब प्रवीनभये ६१ (सर्वशास्त्रार्थवेदिन.चधनुर्वेदेनिरताः) सब शास्त्रनको अर्थ नीकीभांति जानते भये पुनः वाणविद्यामें प्रीति पूर्वक तत्परभये (जगतांनाथाः लीलयांनररूपिणःबभूवुः) उत्पत्ति पालन संहार करनहारे जगत्केनाथ चारिहू स्वरूपहैं परन्तु ली- ला करिकै नररूपधारी होतेभये अर्थात्सीमांसान्यायवैशेषिकसारंख्ययोगवेदांतइत्यादि सब शास्त्रनको अर्थ नीकीभांतिते जानिलिये पुनः स्वधर्मजा निवारणविद्यामें प्रीति पूर्वक तत्परभये इत्यादि करने को क्या प्रयोजनहै ये तौ चारिहू स्वरूप जगत्के नाथहैं परन्तु लीला करि नररूपधारी भये त्यहि

अनुकूल सब व्यवहार करतेहैं ६२ (तुलक्ष्मणःसादरमुसदारामंअनुगच्छति) पुनः लक्ष्मणजी सहित आदर सदा रघुनन्दनको स्वामीमानि पीछे चलतेहैं (तथाशत्रुघ्नःसेवकभावेनभरतसेव्य) ताहा भांति शत्रुहणजी सेवकभाव करिकै भरत जो हैं तिनहिं स्वामी करि मानते हैं अर्थात् लक्ष्मण जी अनुचरहैं सदा रघुनाथजीकी सेवकाई आदर समेत करते हैं तथा शत्रुहण भरतकी सेवकाई करते हैं ६३ ॥

रामश्चापधरोनित्यंतूणीवाणान्वितःप्रभुः ॥ अश्वारूढोवनंयातिमृगयायैसलक्ष्म
णः ६४ हत्वादुष्टमृगान्सर्वान्पित्रेसर्वेन्यवेदयत् ॥ प्रातरुत्थायसुस्नातःपितरा
वभिवाद्यच पौरकार्याणिसर्वाणिकरोतिविनयान्वितः ६५ ॥

(बाणान्वितःतूणीचापधरःरामःप्रभुः) बाणनयुत तरकस अरु धनुष धारण करि रघुनन्दन प्रभु (सलक्ष्मणःअश्वारूढोमृगयायैनित्यंवनंयाति) सहित लक्ष्मण घोडेनपर सवार है शिकार खेलवे अर्थ नित्यहीं बनहिं जातेहैं अर्थात् भूषण वसन साजि बाणन को भराहुआ तरकस कटिमेंबांधि हाथ में धनुष लै रघुनन्दन प्रभु लक्ष्मण जी सहित घोडेनपर सवार है शिकार खेलवे अर्थ नित्यहीं बनहिं जातेहैं ६४ (दुष्ट मृगान्सर्वान्पित्रेसर्वेन्यवेदयत्) वनमें जे दुष्ट मृगा हैं तिनहिं ढूंढि सबनकां रघुनाथजी मारतेहैं तिनको लाय पिताके अर्थ सब न्यवेदन करतेहैं भाव आगे धरि देतेहैं (प्रातः उत्थायसुस्नातः) प्रभातकाल उठि सुन्दरी प्रकार स्नान करिकै (चपितरौअभिवाद्य) पुनः माता पिताको प्रणाम करतेहैं अर्थात् जेपूर्व जन्ममें किसी ऋषीदेवरके संग कछु दुष्टता कीन्हें ताकी शापते पशु योनिपाये तिनको शापोद्धार प्रभुके हाथ कहाहुआइ तेई दुष्ट मृगायावत्वनमें रहे तिन सबको मारि रघुनाथजी शापोद्धार करि शुभगति दिये पीछे उनको मृतकतनलाय पिताके आगेधरे तामें आपनीबाण चलावनेकी प्रवीनता देखाय पिताको आनन्द दीन्हें पुनः प्रतिदिन बड़े प्रभात उठि प्रातरुत्थ करि सरयूजीमें सुन्दरी प्रकार स्नानकरि विप्रनको दानदैं पुनः संध्योपासन पूजापाठ हवनादि नित्य क्रिया करि भूषण वसन पहिरिजाय प्रथम माताको प्रणामकरि पुनः पिताको प्रणाम कीन्हें पुनःमहाराजकी आज्ञालै लौकिककार्य देखत सो आगे कहत (विनयान्वितःपौरकार्याणिसर्वा णिकरोति) नम्रतापूर्वक वार्तादिकरि रक्षा दण्डादिपुरको सब प्रकारको कार्य करतेहैं अर्थात् महा-राजकी आज्ञालैकै राजसभामें बैठि श्रीरघुनाथजी धर्मनीति अनुकूल स्वाभाविक रक्षाअनीति करने वाले न कोदण्ड करतेहैं इत्यादि न्यायादि यावत् पुरकार्यहैं सो सब करतेहैं अरु आप क्रोध रहित नम्रता पूर्वक वार्ता करतेहैं यामें धर्म नीतिके आचरण प्रकट करि देखावतेहैं ६५ ॥

बंधुभिःसहितोनित्यंभुक्त्वामुनिभिरन्वहम् ॥ धर्मशास्त्ररहस्यानिशृणोतिव्याकरो
तिच ६६ एवंपरात्पामनुजावतारोमनुष्यलोकाननुसृत्यसर्वम् ॥ चक्रेऽविकारीप
रिणामेहीनोविचार्यमाणेनकरोतिकिंचित् ६७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकांडेतृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

(पुनःनित्यंबंधुभिःसहितःभुक्त्वा) सदा भाइनकरिकै सहित भोजनकरते हैं अर्थात् भरत लषण शत्रुघ्न तथा औरहु वंशज बंधुवर्ग जे सखाहैं इत्यादि सबनको साथै बैठारि एकेभांतिको भोजन करते हैं यह नित्य रीति करि कुटुम्बपालता प्रकट करतेहैं पुनः (मुनिभिःअन्वहंधर्मशास्त्ररहस्यानिशृणोतिच व्याकरोति) वशिष्ठादि मुनिन करिकै अन्वय पूर्वक धर्म शास्त्र की जो गुप्त आशयहैं ताको सुनतेहैं

पुनः आपहू वाकी व्याख्या करतेहैं अर्थात् मनु याज्ञवल्क्य हारीत पराशर इत्यादि स्मृती जो धर्म-
शास्त्रहैं तिनकी जो गुप्तवात सो ऋषिनसों भखाय सुनतेहैं तामें भी जोगुप्त रहत ताको आप प्रकट
करि सब समाज भरें को समुभाय देतेहैं यथा ऋषिने कहा कि जोपुरुष अनिच्छितहोय ताकोराजा
मन्त्रीकरै तामें प्रभु कहे कि जोवस्तु धर्मनीति प्रतिकूलहैतामें अनिच्छितहोय ६६ (एवंपरात्मामनु-
जभवतारः) इसी भांति परमात्मा मनुजभवतार धरि (मनुष्यलोकान् अनुसृत्य सर्वचक्रे) लोक के
उत्तम मनुष्योंकी रीति अनुकूल सब कार्य करते हैं (विचार्यमाणे परिणामहीन अविकारी किञ्चित् न
करोति) विचार करने ते सब विकाररहित अविकारी हैं कुछ भी नहीं करते हैं अर्थात् लोकोद्वाग्हेत
परमात्मा भी मनुष्यरूप हवै विदूषक कौतुकवत् उत्तम मनुष्यों की नाई धर्मनीतिमय सब कार्य
करते हैं सो केवल भक्तों के आनन्द देने हेत है अरु विचार कीन्हेंते जाके कामादि विकार नहीं अ-
विकारी हैं तो कछु नहीं करते हैं देखनेमात्र है ६७ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्गुभपदशरणागतविरचिते अध्यात्मभूषणबालकाण्डे श्री
रामभवतारबालकेलिवर्णनोनाम तृतीयः प्रकाशः इति पूर्वार्द्धः ॥

शिव उवाच ॥ कदाचित् कौशिकाभ्यागादयोध्यां ज्वलनप्रभः ॥ द्रष्टुं रामं परात्मानं
जातं ज्ञात्वा स्वमायया ॥ १ ॥ दृष्ट्वा दशरथो राजा प्रत्युत्थायाचिरेण तु ॥ वशिष्ठे
न समागम्य पूजयित्वा यथाविधि ॥ २ ॥

सवैया ॥ खलपीडित गाधितनय मन व्यग्र सुपांचन में अवधेशडरे । दियसौं पि तनय उठि पांय
गहे गुरु संमतलै थिर दैहियरे ॥ मग जातलखे ऋषिआय सुपाय सुकेतसुता बधिएकशरे । पदवंदत
बैजसुनाथसदा द्विजपालकसानुजरामहरे ॥ अब श्रीरघुनाथजी के लेवायलै जानेहेत विश्वामित्र
आगमन वर्णनकरत यथा (परत्मानं स्वमायया जातं ज्ञात्वा) परमात्मा अपनी मायाकरिकै मनुष्य
रूपते उत्पन्नभये ऐसा जानिकै (तं रामं दृष्टुं ज्वलनप्रभः कौशिकः) तिन रघुनाथ जीको देखनहेत अग्नि
की ऐसी प्रभा है जिनमें ऐसे विश्वामित्र (कदाचित् अयोध्यां अभ्यागात्) किसीसमय अयोध्याहि आये
अर्थात् यज्ञादि करनेमें राक्षसोंने विघ्न किया ताही शोचमें विचार कीन्है कि भूभार उतारनेहेत परमात्मा
अपनी मायाकरि दशरथ राजकुमाररूपते उत्पन्नभये ऐसा जानि तिन रघुनाथजी के दर्शनहेत पुनः
लेवाय लावनेहेत तपोधनी अग्निसमतेजहै जिनमें ऐसे विश्वामित्र किसीसमय श्री अयोध्याजीको
आये राजद्वारपर जायद्वारपाल द्वारामहाराजको खबरिजनाये महाराजभीतरको बुलाये इतिशेषः १
(राजा दशरथो द्रष्टुं वातु अचिरेण प्रतिउत्थाय) महाराज दशरथ देखिपुनः शीघ्रही उठिआय प्रणाम
कीन्हें कौनभांति (वशिष्ठेन समागम्य यथाविधि पूजयित्वा) वशिष्ठकरिकै सहित मिलि कुशल प्रदनादि
पूछि जाभांति चाहिये ताही विधिते पूजनकीन्है अर्थात् विश्वामित्र को आवत देखि सुमंतादि मंत्रिन
की समाज तथा वशिष्ठसहित महाराज दशरथ शीघ्रही उठिआगे आयप्रणाम करि मिलि परस्पर
कुशल प्रदन पूछिलेवायलाय सिंहासनपर बैदारी अर्घपाद्य आचमन गंधदलफूल धूपदीप नैवेद्य
आरती प्रदक्षिणा प्रणामादि इत्यादि विधि समेत प्रीतिपूर्वक पूजनकीन्है २ ॥

अभिवाद्य मुनिं राजा प्रांजलिर्भक्तिमधोः ॥ कृतार्थोऽस्मि मुनीन्द्राहं त्वदागमनकार
णात् ॥ ३ ॥ त्वद्विधाय दग्धं हयान्ति तत्रैवायान्ति संपदः ॥ यदर्थमागतोऽसि त्वं ब्रूहि

सत्यंकरोमितत् ॥ ४ ॥ विश्वामित्रोपितंप्रीतःप्रत्युवाचमहामतिः ॥ अहंपर्वणिसं
प्राप्तेदृष्ट्वायष्टुसुरान्पितृन् ॥ ५ ॥

(भक्तिप्रथीः राजा प्रांजलिः मुनिं अभिवाद्य) भक्ति कोमल बुद्धितहित राजाहाय जोरि मुनिहि प्रणाम करिकैबोले (मुनिन्द्रत्वत्भागमनकारणान् अहंरुतायोरिति) हे मुनीन्द्र आपको आवनरूप जो कारण है तेहिते हमद्वतार्थभये अर्थात् सेवकसे न्यभावकी प्रीतिते कोमल बुद्धिकी चेष्टा दर्शाय महाराज दशरथजी हाथजोरि भायनवाय कोमलवचनते बोले कि हे मुनीन्द्र विश्वामित्रजी आपके पदकमल पर मेरा मंदिर पावनभया दर्शनपायमें कृतार्थ महापुण्यवंत भया काहेते तो आगे कहत ३ (यत्पृष्ट्वं त्विधायान्ति तत्र एव संपदः आयान्ति) जोने घरहि आप सरीखे महात्मा जातेहैं तहां संपदः अर्थात् सब प्रकारको सुख निश्चय करि आवता है (यत्तत्रैवागतो सित्वं ब्रूहि) जोने प्रयोजन हेत आयोहैं आपतो कहिये (तत्सत्यंकरोमि) तो न कार्यसत्य करि हम करेगे अर्थात् महाराज बोले कि हे विश्वामित्रजी आप सरीखे तपोधनी महारमा जोने घर को जातेहैं तायरविरे निश्चय करि तंगड़ा आवतीहैं भाव आप-के आवनेते मोको निश्चय विश्वास भई कि मेरे घर में सम्पत्ति सब भांतिकी सुखप्रस्थान करि चुका भव वहवात कहिये जिस प्रयोजन हेत आप यहां आयोहैं तो कार्यमें करौंगे यह मेरा वचन सत्य जानिये ४ (महामति विश्वामित्रः अपितंप्रीतः प्रत्युवाच) महामतिवंत विश्वामित्र निश्चय करितोने जो दशरथहैं तिनहि प्रीति पूर्वक बोले (पर्वणिसंप्राप्ते दृष्ट्वा अहं सुरान्पितृन् यष्टुं) अमा पूर्णिमादि पर्व प्राप्त देखि हम देवतापितृ जोहैं तिनहि यज्ञ भाग देने की इच्छा करते हैं अर्थात् महाबुद्धिवंत विश्वामित्रजी प्रीतितहित महाराज प्रति बोले कि जब अमावस्य वा पूर्णमासी वा संक्रांति आवती है तादिन हम देवतन तथा पितृन को प्रसन्न करने हेत यज्ञ प्रारंभ करते हैं ५ ॥

यदारभेत्तद्द्वैत्याविघ्नं कुर्वन्ति नित्यशः ॥ मारीचश्च सुबाहुश्च परे चानुचरास्तयोः ॥
६ ॥ अतस्तयोर्विधायान्येष्टं रामं प्रयच्छमे ॥ लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा तव श्रेयो भवि
ष्यति ॥ ७ ॥ वशिष्ठेन सहामंयदीयतां यद्विरोचते ॥ पप्रच्छ गुरुमेकांते राजा चिं
ता परायणः ॥ ८ ॥ किं करोमि गुरो रामं त्यक्तुं नोत्सहते मनः ॥ बहुवर्षसहस्रांतिकटे
नोत्पादिता सुताः ॥ ९ ॥

(यदारभेत्तद्वैत्याविघ्नं कुर्वन्ति) जैसेही यज्ञ प्रारंभ करते हैं तैसेही नित्य राजस विघ्न करते हैं कौन राजस (मारीचः च सुबाहुः च तयोः अनुचराः अपरे) मारीच पुनः सुबाहु ये मुख्य हैं पुनः तिन दोऊ के आज्ञाकार और बहुत हैं अर्थात् जब जब यज्ञ प्रारंभ करता हों तब तब मारीच सुबाहु सेना समेत आय यज्ञ विध्वंस करि देते हैं भाव विघ्न रात्रिदि वर्षि भ्रष्ट करि देते हैं ६ (अतः तयोः विधायान्य) इस कारण ते तिन दोऊ राजसों के मारने हेत (भ्रात्रा लक्ष्मणेन सह अन्येष्टं रामं प्रयच्छ) छोटे भाई लक्ष्मण सहित जेठे पुत्र जो श्रीराम वंद्य हैं तिनहि मेरे अर्थ दीजिये (तव श्रेयो भविष्यति) यामें आपहूँ का कल्याण होइगो अर्थात् विश्वामित्र बोले कि हे महाराज मारीच सुबाहु भेरी यज्ञ में विघ्न करते हैं इस कारण ते तिन दोऊ दुष्टन को मारि दे हेत लक्ष्मण सहित श्रीरघुनाथ जी तिनहि मेरे सहाय हेत दीजे यामें आपहूँको कल्याण है ७ (वशिष्ठेन सह अमंयदीयतां यद्विरोचते) वशिष्ठ करिके सहित बैठि सलाह करि लीजे जो मन में रुचै तौ दीजे (राजा चिंता परायणः एकांते गुरुं पप्रच्छ) राजा चिंता में बूढ़े एकांत में बैठि गुरु वशिष्ठ प्रति पूछते भये अर्थात् विश्वामित्र कहे कि जो हम

मांगते हैं सो आपने गुरु वशिष्ठ सों सलाह लेंकै जो मन में रुचै भाव दुष्टन को मारने योग्य होय तौ सानुज रामहिं दीजिये इत्यादि विश्वामित्र के वचन सुनि बिचारे कि दीन्हें धर्म रहत परंतु पुत्र वियोग दुष्टन सों युद्ध भरु न दीन्हें धर्महानि मुनि शाप देंगे इत्यादि चिंता में बूढ़े अलग बुलाय वशिष्ठ से पूछे ८ (रामंत्यक्तमनःउत्सहतेनगुरोर्किकरोमि) रघुनन्दनहि त्यागवे को मनमें उत्साह नहीं है हे गुरु अब मैं क्या करौं कहते (बहुवर्षसहस्रान्तेकष्टेनसुताःउत्पादिताः) बहुत हजारवर्ष बीते पर बड़े कष्ट करिकै मेरे चारि पुत्र उत्पन्न भये अर्थात् वीर रस की अस्थायी है उत्साह यथा युद्ध वीरता में जब शूरता होत तब उत्साह आवत तथा दान वीरता में जब उदारता होत तब उत्साह आवत सो रघुनन्दनहि त्यागत मुनि को देनेमें उदारता नहीं है इसकारण मन में उत्साह नहीं है भाव रामहिं नहीं दै सका हौं किस कारण कि बहुत हजार वर्ष बीते भाव चौपेपन में यज्ञादि क्रिया इत्यादि बड़े कष्टकरिकै चारि पुत्र मेरे उत्पन्न भये ताते प्राण समप्यारे तिनमें राम प्राणहूँते अधिक तिनको वियोग में नहीं सहिसका हौं तिन दोऊ भाइन को विश्वामित्र मांगते हैं पुनः बालक सुकुमार युद्ध देखे नहीं भरु महाबली कराख राक्षसों ते युद्ध हेत भरु मैं कहि चुका हौं कि जो कहौ-गे सो करौंगे इत्यादि धर्म संकट में पराहौं भरु हे गुरु आप इस कुल में सदा ते संकट निवारण हारेहौं ताते विचारि कै कहिये अब मैं क्या करौं जामें धर्म सहित कल्याण होवै ॥ ९ ॥

चत्वारोऽमरतुल्यास्तेतेषांरामोऽतिबल्लभः ॥ रामस्त्वतोगच्छतिचेन्नजीवामिक
थंचन ॥ १० ॥ प्रत्याख्यातोयदिमुनिःशापंदास्यत्यसंशयः ॥ कथंश्रेयोभवेन्मह्य
मसत्यंचापिनस्पृशेत् ॥ ११ ॥

(तेचत्वारःअमरतुल्याःतेषांरामःअतिबल्लभः) ते चारिहू पुत्र देवतन के तुल्य हैं तिनमेंराममो-को अत्यंत प्रिय हैं (तुचेत्तरामःइतःगच्छति) पुनः जो राम इहांते जायगे (कथंचननजीवामि) कौनिउ प्रकारमें न जीवों गो अर्थात् गुण क्रियास्वभावस्वरूपतादि सबप्रकार देवनतुल्य प्रियचारिहू पुत्र हैं तिन में राम मोको अत्यंत प्रिय हैं पुनः राम मेरे समीप ते मुनि के साथ जायंगेतौ कौनि-उ प्रकार मैं न जीवों गो १० (यदिप्रतिआख्यातः) जो मुनि के वचन प्रति उत्तर वार्ता करौं तौ (मुनिःशापंदास्यतिअसंशयः) मुनि मोको शाप देखेंगे यामें संशय नहीं है (चअसत्यंचापिनस्पृशेत्) पुनः असत्य जो है ताहि निश्चय करि मैं न स्पृश करौं (मह्यंकथंश्रेयोभवेत्) मेरे अर्थ कौन भांति कल्याण होवै अर्थात् वशिष्ठप्रति महाराज कहत कि जो रघुनंदन को मुनि संग पठावों तौ मेरे प्राण जायँ भरु जो न देने हेत प्रति वचन उत्तर देई तौ मुनि अवश्य ही मो को शाप देंगे इस में भी संशय नहीं पुनः प्रथमही वचन दान दै चुके शोभी वृथा न होवैं इत्यादि उपाधिन में पराहौं सो अब मैं क्या करौं जामें मेरा कल्याण होवै सो बात विचारि कै कहिये ११ ॥

वशिष्ठउवाच ॥ शृणुराजनूदेवगुह्यंगोपनीयंप्रयत्नतः ॥ रामोनमानुषोजातःपरमा
त्मासनातनः ॥ १२ ॥ भूमेर्भारावतारायब्रह्मणाप्रार्थितःपुरा ॥ सएवजातोभवने
कौशल्यायांतवानघ ॥ १३ ॥ त्वंतुप्रजापतिःपूर्वकश्यपोब्रह्मणःसुतः ॥ कौशल्या
चादितिर्देवभातापूर्वयशस्विनी ॥ १४ ॥

(राजन्देवगुह्यंशृणु) हे राजन जो देवनको भी गुप्त है प्रसिद्ध नहीं जानिसके सो मत मैं आप के बोध होने हेत प्रसिद्ध कहत हौं सो सुनिये (प्रयत्नतःगोपनीयं) यत्नपूर्वक आपहू गुप्त राखिये-

भाव किसी सों कहिये न (रामःमानुषो न) राम मनुष्य नहीं हैं काहेते (सनातनःपरमात्माजातः) सनातन परमात्मा मानुष रूप उत्पन्न भये हैं अर्थात् महाराज के भारत बचन सुनि बशिष्ठजी बोले हे राजन् यह हाल देवनको भी गुप्त नहीं जानि सके सो मनुष्य कैसे जानै सोई गुप्त मत आप के बोध होने हेत हम प्रसिद्ध कहते हैं सो सुनिये परन्तु यत्नपूर्वक आपहू गुप्ते जाने रहिये और किसी ते न कहिये क्या गुप्त है कि रघुनाथजी मनुष्य नहीं हैं काहेते सनातन परमात्मा हैं सो तुम्हारी भक्तिते तथा भू भार उतारने हेत मनुष्यतन तुम्हारे पुत्र हवै अवतीर्ण भये १२ (भूमेःभारावताराय पुराब्रह्मणाप्रार्थितः) भूमिको भार उतार ने अर्थ पूर्वकाल में ब्रह्मा करिके प्रार्थना किये गये ताहीं ते (हे अनघतवभवनेकौशल्यायांसएवजातः) हे निष्पाप दशरथ जी आप के घरमें कौशल्या विषे सोई परमात्मा निश्चय करि उत्पन्न भये अर्थात् भू भार उतारने हेत ब्रह्मा ने प्रार्थना किया सोई परमात्मा जो निश्चय करि तुम्हारे घर में कौशल्या विषे अवतीर्ण भये ताको हेतु सुनिये १३ (तुत्वंपूर्वं प्रजापतिः ब्रह्मणसुतःकश्यपः) पुनः आपु प्रजापति सृष्टि बढावनेवालेहौ ब्रह्मा के पौत्र कश्यप (चयशस्विनीकौशल्यापूर्वदेवमाताअदितिः) पुनः यशवंती कौशल्या पूर्व देवमाता अदितिहैं अर्थात् तुम्हारे घर याते अवतीर्ण भये कि आपु पूर्व जन्म के कश्यप प्रजापति हौ तथा यशवंती कौशल्या पूर्वकी देवनकी उत्पन्न करने वाली अदिति हैं १४ ॥

भवन्तौतपउग्रवैतेपाथेबहुवत्सरम् ॥ अग्राम्यविषयोविष्णुपूजाध्यानैकतत्परो ॥

१५ ॥ तदाप्रसन्नोभगवान्वरदोभक्तिवत्सलः ॥ दृणीष्ववरमित्युक्तेत्वंमेपुत्रोभ वामल ॥ १६ ॥ इतित्वयायाचितोसौभगवान्भूतभावनः ॥ तथेयुक्ताद्यपुत्रस्ते जातोरामस्सएवहि ॥ १७ ॥

(भवन्तौबहुवत्सरंउग्रतपवैतेपाथे) स्त्री पुरुष तुम दोऊबहुतवर्षतक कठिन तप रीतिते निश्चय करि तपस्या कीन्हेउ कैसा उग्रतप (अग्राम्यविषयो) ग्राम की विषय जो इन्द्रिनको सुख भोग त्याहि करिके रहित दोऊ (विष्णुपूजाध्यानैकतत्परो) विष्णु पूजन तथा ध्यान इसी एक वृत्तिपर लगे रहेउ अर्थात् बशिष्ठजी कहत हे दशरथ महाराज पूर्व कश्यप अदितितनमें तुम दोऊबहुतहजार वर्ष तक कठिन तप रीति तपस्या करतेरहे कौन कठिन रीति यथा, विषय वार्ता श्रवण कोमल शय्या स्त्री युत शयन नृत्य रंग कौतुक देखन षट्स भोजन सुगन्ध भूषण वसन इत्यादि जो ग्रामकी विषय तिनको त्यागि सागादि भोजन महि शयन ब्रह्मचर्य ते वर्षा हिम आतप सहि पुनः राम तापिनो की रीति सबेदी यंत्र राज पर स्थापित करि षोडशोपचार सांग देवन भगवान् की पूजा तथा आसन प्राणायाम रीति भगवान् को ध्यान इत्यादि एक कैकर्यता रीति में लगेरहे १५ (तदाभक्तिवत्सलः भगवान्प्रसन्नःवरदः) ता समय में भक्तिवत्सल भगवान् प्रसन्न है वरदायक हवै बोले (वरं दृणी ष्वइतिउक्ते) वर मांगौ ऐसा कहे सो सुनि तुम कहे (अमलत्वंमेपुत्रःभव) हे अमल परमात्म आप मेरे पुत्रहोउ अर्थात् तपस्या पूर्ण होतही तासमय गोबच्छवत् भक्तनपर प्रीति करनेवाले भगवान् प्रसन्नतायुत वरदायक बचन तुम प्रति बोले कि जो इच्छा होइ सो वर मांगौ ऐसा कहत सन्ते सो सुनि तुमने कहा हे अमल परमात्म आप मेरे पुत्रहोउ १६ (इतित्वयायाचितः) आप मेरे पुत्रहोउ ऐसा तुमने मांगा तब (भूतभावनःअसौ भगवान् तथा इति उक्त्वा) जो भूतमात्र को भावते हैं ऐसे वे भगवान् तथा ऐसा कहे भाव यथा तुम मांगा तथा होवै (सरामःएवहिअद्यतेपुत्रःजातः)

सोई रामनामे परमात्मा निश्चयकरि अब तुम्हारे पुत्रहवै उत्पन्न भये अर्थात् वशिष्ठजी कहत कि जब तुमने पुत्र होने की याचना किया तब भगवान् कहे कि जैसा तुम चाहते हो तैसाही होगा सोई परमात्मा राम नामे निश्चय करि अब तुम्हारे पुत्रहवै उत्पन्न भये १७ ॥

शेषस्तुलक्ष्मणो राजनूराममेवान्वयत ॥ जातो भरतशत्रुघ्नौ संखचक्रगदाभृतः ॥
१८ ॥ योगमायापि सीतेति जाता जनकनन्दिनी ॥ विश्वामित्रोऽपिरामायतां योजयितुमागतः ॥ १९ ॥ एतद्बुद्धतमं राजन्नवक्तव्यं कदाचन ॥ अतः प्रीतेन मनसा पूजयित्वा थकोशिकम् ॥ २० ॥

(राजन्तु शेषः लक्ष्मणः रामं एवं अन्यपद्यत) हे राजन् पुनः शेषलक्ष्मणहवै रामजोहैं तिनहि निश्चय करि भजते हैं (गदाभृतः संखचक्रभरतशत्रुघ्नौ जातौ) गदाधरके संखचक्रजोहैं तेई भरतशत्रुघ्नहैं अर्थात् शेषलक्ष्मण भयेते निश्चय करि रघुनाथ जीकी सेवकाई करतेहैं पुनः गदाधरभगवान् को संख से भरतभये चक्रशत्रुघ्न हैं १८ (योगमाया अपि जनकनन्दिनी सीताइति जाता) भगवान् की योगमाया निश्चयकरि जनक की पुत्री सीताऐसा नाम उत्पन्न भई सो जनक पुरमें हैं (तां योजयितुं रामाय विश्वामित्रः अपि आगतः) ताही को संयोग रघुनाथ जीके अर्थ करावने हेतु विश्वामित्र निश्चयकरि आये हैं अर्थात् यथाग्रंशन सहित भगवान् तुम्हारे घरमें अवतरे तथा योग माया सीता नामें जनक पुत्रीहवै जनक पुरमें अवतरी हैं तिनको रघुनाथ जीके संग विवाह करावने हेतु निश्चयकरि विश्वामित्र आये हैं यह मुख्य जानिये अरुराक्षस व्यव्याज मात्रहै १९ (राजन् एतद्बुद्धतमं कदाचन नवक्तव्यं) हे राजन् यह गुप्तते गुप्त रहस्यहै सो अन्य किसीसों कवहुं न कहियो (अतः मनसा प्रीतेन अथकोशिकम् पूजयित्वा) इस कारण मनमें प्रीतिकरि कै अब विश्वामित्रहि पूजन कीजे अर्थात् महाराज प्रति वशिष्ठजी कहत कि यथारघुनंदन परब्रह्म तथा जनकनन्दिनी योगमायागुप्तरूप अवतरे तिनके संयोग हेतु विश्वामित्र आयेहैं यह गुप्त रहस्य मनमें राखना कवहुं किसीते प्रसिद्धन करना पुनः सब संशय त्यागि हर्षते मनमें प्रीति सहित अब विश्वामित्र जीको पूजन कीजे भावमनो कामपूर्ण करि दीजिये २० ॥

प्रेषयस्वरमानाथं राघवं सह लक्ष्मणम् ॥ वशिष्ठेनैव मुक्तस्तुराजादशरथस्तदा ॥
२१ ॥ कृतकृत्यमिवात्मानं मेने प्रमुदितान्तरः ॥ आहूय रामरामेति लक्ष्मणेति च सादरम् ॥ २२ ॥ आलिंग्य मूर्धन्यं वध्नाय कौशिकाय समर्पयत् ॥ ततोऽतिहृष्टो भगवान् विश्वामित्रः प्रतापवान् ॥ २३ ॥

(लक्ष्मणमुत्तरमानाथं राघवं प्रेषयस्व) लक्ष्मण सहित लक्ष्मीनाथराघवजोहैं तिनहि विश्वामित्र के साथ पठाइये (वशिष्ठेनैव मुक्तस्तुराजादशरथः) वशिष्ठकरि कै ऐसा वचन कहा गया पुनः ता समय मेरा राजादशरथ प्रसन्न भये अर्थात् भगवान् भारावतारहैं तिनके सदानिकट वर्तीशेषहैं ऐसा विचारिलक्ष्मण सहित लक्ष्मीनाथ जो रघुनंदन तिनहि विश्वामित्र के साथ पठाइये भाव इसमें महालाभ है यथाप्रथमतुम्हैं धर्म सुयशस्वलमारि चज्ञ रक्षाअहत्या तारण वनुभंग इत्यादि ते पुत्रन को सुयश पुनः चारिहु भांड विवाहि उत्तम वधुनयुत सुख पूर्वक धरैऐहैं इत्यादि जब वशिष्ठ ने कहा सो सुनेतब सब सदेहनाश भई महाराज प्रसन्न भये २१ (प्रमुदितान्तरः आत्मानं कृतकृत्यं इव मेने) प्रकर्ष आनंद भये तदनंतर अपनाको कृतार्थ सममाने (रामराम इति च लक्ष्मण इति सादरं आहूय) हे राम हे राम इत्यादि पुनः हे लक्ष्मण इत्यादि सहित आदरबोलाये अर्थात् वशिष्ठके वचन सुनि संदेह मिटी परम आ-

नंद भयेतत्पश्चात्, अपना को पुन्यवंत मानेपुनः रघुनाथ जीको नामलै तथा लक्ष्मण जीको नामलै वड़े आदर समेत महाराज अपने निकट बुलाये सादरबुलाववे को भावपरमात्मजानिकै २२ (आर्लिङ्ग्य मूर्धन्यवधाय) हृदयमें लगाय शशि सँघि दोउपुत्रनको (कौशिकायसमर्पयत्) विश्वामित्रके अर्थदेदी-
न्है (ततःप्रतापवान् विश्वामित्रभगवान् अतिहृष्टः) तदनन्तर प्रतापी विश्वामित्र भगवान् अत्यंत आनंदभये अर्थात् अत्यंत प्रीतितेदोऊपुत्रन को उरमें लगाय वियोगते संतोषकीन्हें तथापुत्रन की आयुर्बल वृद्धहेतु वेद ऋचापट्टि शशिसूधेऋचायथा प्रजापते स्त्वांहिकारेणावजिघ्रामि सहस्रायुषा सौ जीवशरदःशतपुनः दोउ पुत्रनहि विश्वामित्रको सौपिदिये तवविश्वामित्रअत्यंतआनंद भये ईश्वर प्राप्ती पाय २३ ॥

आशीर्भिरभिनंद्याथ आगतौरामलक्ष्मणौ ॥ गृहीत्वा चापतूणीरवाणखड्गधरौ ययौ ॥

२४ ॥ किंचिद्देशमतिक्रम्यराममाहूयभक्तितः ॥ ददौ बलां चातिबलां विद्येद्देवनिर्मिते ॥ २५ ॥ ययोर्ग्रहणमात्रेण क्षुत्क्षामादिन जायते ॥ ततः उतीर्य गंगान्ते ताटका

वनमागमत् ॥ २६ ॥

(चापतूणीरवाणखड्गधरौरामलक्ष्मणौ आगतौ) धनुष तरकश बाण तरवारि धारण किहे श्रीराम लक्ष्मण आय समीप प्राप्त भये देखि विश्वामित्र (आशीर्भिः अभिनंद्य अथ गृहीत्वा ययौ) आशीर्वादन करिकै सराहना करि तव दोऊ कुमारन को संग लै चले अर्थात् पिता की आज्ञा पाय दोऊ भाई मंदिर में जाय माता को प्रणाम करि आज्ञा मांगि भूषण वसन सजि कटिमें तरकश बांधि तत्र डाब में तरवारि बाम हाथे में धनुष दहिने में एक बाण लै आय लषण सहित रघुनन्दन प्रसन्न मन विश्वामित्र के समीप प्राप्त भये तिनको प्रसन्न देखि अत्यंत आनंद भये ताते विश्वामित्र जी आशीर्वादन करि सराहना करे यथा चिरंजीव ब्रह्मण्यदेव सदा कीर्ति अविचल रहै सत्य संध यज्ञप्रताप प्रति दिन बड़े उदार धर्म धुरीण समूह गुण होवै शीलसागर इत्यादि प्रसन्नाकरि महाराजसों विदा ह्वै दोऊ कुमारन को संग लै विश्वामित्र जी अपने आश्रममें चले २४ (किंचित् देशं अतिक्रम्य भक्तितः रामं आहूय) थोरा देश नाधिकै विश्वामित्र भक्तिपूर्वक रघुनाथ जी जो हैं तिनहि निकट बोला य (देवनिर्मिते बलां च अतिबलां विद्येद्देवौ) देवन की बनाई हुई बला पुनः अतिबला ये द्वै बाण विद्या देते भये अर्थात् अयोध्या ते कछु दूरि चलि कै विश्वामित्र प्रेमा भक्ति सहित रघुनाथ जी को निकट बुलाय शिवादि देवन की बनाई बला जो समूह मंत्रन करि देहमें सब भांति की शक्ति बनी रहै पुनः अति बला जो दिव्य अस्त्रन सहित मंत्र हैं यथा पाशुपत ब्रह्मास्त्रादि ये दोऊ बाण विद्या रघुनन्दन को पढाय देते भये २५ (ययोर्ग्रहणमात्रेण) जिन दोऊ विद्यन के ग्रहण पढे मात्र करिकै (क्षुत् क्षामादिन जायते) क्षुधा दुर्बलतादि नहीं उत्पन्न होती है (ततः गंगान्ते उतीर्य) तत्पश्चात् गंगाजी के उसपार उतरि (ताटकावनं आगमत्) जहां ताड़का रहती रहै ताही वनहि जाते भये अर्थात् विश्वामित्र कहत कि जिन दोऊ विद्यन को पढिले ने मात्रजाके प्रभावत भूषण्यास दुर्बलताश्रमादि नहीं व्यापत सौभाविक अरु जदंहु पुष्ट रहत इत्यादि काहि विद्या पढाय पुनः गंगाउतरि उसपार जौने वन में ताड़का रहती रहै तहाँ को गये २६ ॥

विश्वामित्रस्तदा प्राहरामं सत्यपराक्रमम् ॥ अत्रास्ति ताटकानामराक्षसीकाम रूपिणी ॥ २७ ॥ बाधते लोकमखिलं जहितामविचारयन् ॥ तथेति धनुरादाय

सगुणं रघुनन्दनः ॥ २८ ॥ टंकारमकरोत्तेन शब्देनापूरयद्वनम् ॥ तच्छ्रुत्वासहमा
नासाताटकाघोररूपिणी ॥ २९ ॥

(तदासत्य पराक्रमं रामं विश्वामित्रः प्राह) तासमयमें सत्यहै पराक्रम जिनके ऐसे रघुनन्दन प्रति विश्वामित्र बोले (कामरूपिणी ताड़कानाम राक्षसी अत्र अस्ति) जैसी इच्छा करे तैसेही रूप धरिलेने वाली ताड़कानामें राक्षसी इहै रहती है २७ (अखिलं लोकं बाधते तां अविचारयन् जहि) सब लोकनको बाधा करती है ताहि बिना बिचारही मारिये (इति तथारघुनन्दनः सगुणं धनुः आदाय) इत्यादियथाश्रुति कहै ताहि भौति मानि रघुनन्दन रोदाचढ़ाय धनुष हाथ में लिखे २८ (टंकारमकरोत् तेन शब्देन वनं अपूरयत्) धनुष की टंकार कीन्हें त्यहि शब्द करिके वन भरि गया (तन् श्रुत्वा साताटका घोररूपिणी असहमाना) ताको सुनि सोताड़का भयंकर रूप है जाको सोनसहिसकी अर्थात् जहाँ ताड़कार होती रहै तावन में पहुंचे तब मनमें भयलागि परंतु ताके मारि बे योग्य सत्यहै पराक्रम जामें ऐसे रघुनन्दन प्रतितब विश्वामित्र कहै कि स्वइच्छित रूप धरण हारी भावमायावी ताड़काराक्षसी इहै रहती है सो पुत्रन सहित त्रिलोकवासिनको दुख देती है इति दुष्टा जानि स्त्री अवद इति बिचार रहित याको मारिये इत्यादि विश्वामित्र के कहत ही रोदाचढ़ाय धनुष हाथ में ले रोदाखें चिछाड़ि दीन्हें इति जो टंकार कीन्हें सो शब्द वनमें भरि गया भाव ऐसा कठोर शब्द भयाकि बहुत दूरितक सुनि पराताको सुनि वीररुत जानि भयंकर रूप ताड़कान सहिसकी भावजिस दिशाते धनु टंकार भया ताही दिशाको बड़े वेग तेधावती भई २९ ॥

क्रोधसंमूर्च्छिताराममभिदुद्राव मेघवत् ॥ तामेकेन शरेणाशुताडयामास वक्षसि ॥
३० ॥ पपात विपिने घोराबमन्तीरुधिरं बहु ॥ ततो तिसुन्दरीयक्षी सर्वाभरणभूषिता ॥ ३१ ॥ शापात् पिशाचतां प्राप्ता मुक्तारामप्रसादतः ॥ नत्वारामं परिक्रम्य गता
रामाज्ञया दिवम् ॥ ३२ ॥

(क्रोधसंमूर्च्छिताराममेघवत् रामं अभिदुद्राव) अत्यन्त क्रोध ते देहकी सुधि रहित यथा मेघकी इयाम घटात द्रुताड़का रघुनाथ जीकी सन्मुख आकाश मार्ग धाई (तां आशु एकेन शरेण वक्षसि ताडयामास) ताड़का जो है ताहि शीघ्र ही एकवाण करिके छातीमें मारि गिराय दीन्हें अर्थात् धनुस की टंकार सुनत ही अत्यन्त क्रोध ते देहकी संभार त्यागि यथा मेघकी इयाम घटा तैसे ही ताड़का मुनिके साथ देखि रघुनाथ जीकी सन्मुख आकाश मार्ग धाई ताहि आवत देखि रघुनाथ जी शीघ्र ही एकवाण वाकी छाती में मारता के लागत ही गिरी ३० (घोरावहुरुधिरं वमन्ती विपिने पपात) महाभयकर है रूप जाको मुख द्वारा बहुत रक्तवहता है मुर्छित ह्वै ताड़का उसी वनमें गिरि परी (ततः सर्व आभरणभूषिता अति सुन्दरी यक्षी) तदनंतर सर्वांग भूषणन ते भूषित अत्यन्त सुंदर स्वरूप वंत यक्षी ह्वै गई अर्थात् वाण लागत ही भयंकर रूप मुख ते रक्तवहत मूर्छित वनमें भूमि पै गिरी तुरत ही सो रूप त्यागि सर्वांग वसन भूषण भूषित अत्यन्त सुंदर स्वरूप वंत यक्षी ह्वै गई ३१ (शापात् पिशाचतां प्राप्ता) अगस्त्य ऋषिकी शाप ते राक्षसी तन पायार है (रामप्रसादतः मुक्ता) रघुनाथ जीके प्रसाद ते मुक्त भई (रामं नत्वा परिक्रम्य रामाज्ञया दिवंगता) श्रीरामहि प्रणाम प्रदक्षिणा करि रघुनाथ जीकी आज्ञा करिके स्वर्ग को गई अर्थात् सुंदर यक्ष की स्त्री ताड़का सुंदर सुभाव स्वरूप वंतर ही किसी उपद्रोते अगस्त्य की शाप ते सुंदर माता इष्टाते ताड़का अगस्त्यको खाइ लेने हेत धाई तब ऋषिने शाप दिया कि तों हूँ सपुत्रण राक्षसी हो पुनः राम कर उद्धार कहा यहवाल्मीकी वाला कांडे पचीसके सर्गमें विस्तार है यथा सुन्दरे तु निहते राम अगस्त्य मृषित सन्मताड़का सहपुत्रेण प्रधर्षयितुमिच्छति

भक्षार्थंजातसरंभागर्जन्ती साभ्यधावत आपतन्ती तुतांष्टष्ठा अगस्त्यो भगवानृषिः राक्षसत्वंभजस्वेति मारीचं व्याजहारसः अगस्त्यः परमामर्षस्ताटकामपिशतवान् पुरुषादी महायक्षी विरुता विरुतानना इदंरूपं विहायाशुदारुणं रूपमस्तुते इत्यादि अगस्त्य की शापतेराक्षसी भईपुनः रघुनाथजीके हाथसे मरी शापतेउद्धारभई सुंदरेतनते रघुनाथजीको प्रदक्षिणाकरि प्रणाम किया पुनःरघुनाथजीकी आज्ञा पायसुंदरेव्यवानपर चढिस्वर्ग कोगई ३२ ॥

ततोतिहृष्टःपरिरभ्यरामंमूर्द्धन्यवघ्रायविचिंत्यकिंचित् ॥ सर्वास्त्रजालंसरहस्यमंत्रं
प्रीत्याभिरामायददौमुनीन्द्र ॥ ३३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेबालकाण्डेचतुर्थःसर्गः ४ ॥

(ततःअतिहृष्टः)तदनंतर विश्वामित्र अत्यंतआनंदहूवै (रामंपरिरंभ्यमूर्द्धनिअवघ्राय) रघुनंदन जोहैतिनहि उरमेंलगाय शशिसूधि (किंचित्विचिंत्य) कछुमनमेचितवनकरि (मुनीन्द्रःसरहस्यमंत्रं सर्वमस्त्रजालं) मुनिनमें इन्द्रजो विश्वामित्रसोसहित गुप्तमंत्रनजो सबअस्त्रसमूहसिद्धकिहेरहेतिनहि (प्रीत्याभिरामायददौ) उरमेप्रीतिकरि के रघुनाथजीके अर्थदेतेभये अर्थात् ताडका की गतिदेखि ताकेपाछे विश्वामित्र अत्यंत आनंदहूवै रघुनंदन कोउरमें लगायशीशसूधे इतिमाधुर्य में अर्धाधीभाव ते वात्सल्यताहै पुनःमनमेंकुछ विशेषिचितवन कीन्हैभावइनको विद्यापढाय गुरुहूवै सौभाविकराम सम्बन्धीहूवै अंतमेंसुखभमुक्ति लाभहोई इतिचितवन करिमंत्रन सहित जो अस्त्रसमूह सिद्धकियेहुये पासरहै ते सबप्रीतिसहित अभिरामआनंदमूर्ति जो श्रीरघुनाथ जी तिनहिदेतेभये शास्त्रमंत्रयथागरुड पुराणेविंशोऽध्याये गरुडप्राप्ति ॥ हरिरुवाच ॥ वक्ष्येत्तत्परमगुह्यंशिवोक्तमंत्रंरुद्रकम् पाशंयनुश्चक्रं च मुद्गरंशूलपट्टिशंएतैरेवायुधैर्युद्धे मंत्रैः शत्रुंजयन्तृपःमंत्रोद्धारं पद्मपत्रे आदि पूर्वादि के लिखेत्अष्टवर्गं चाष्टमंचख्यातमीशानपत्रके ओंकारो ब्रह्मवीजंस्याद्धोकारो विष्णुरेवच हूंकारश्च शिवःशूले त्रिशुखेतु क्रमान्यसेत्इत्यादि ३३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म
भूषणेविश्वामित्रसंगरामगमनताडकावधवर्णनोनामचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

शिवउवाच ॥ तत्रकामाश्रमेरम्येकाननेमुनिसंकुले ॥ उषित्वारजनीमेकांप्रभाते
प्रस्थिताःशनैः॥१॥सिद्धाश्रमंगतासर्वैसिद्धचारणसेवितं ॥ विश्वामित्रेणसंदिष्टामु
नयस्तन्निवासिनः॥२॥पूजांचमहतींचक्रूरामलक्ष्मणयोर्द्वुतम् ॥ श्रीरामःकौशिकं
प्राहमुनेदीक्षांप्रविश्यताम् ॥ ३ ॥

सवैया ॥ खल आवत खैंचि शरासन मुंच उड़े कछु पावक बाण जरे । प्रभुके बल ते भय त्यागि
महा मुनि आनंद सों मख पूर्ण करे ॥ ऋषि नारि पुनीत भई बिनयी जिनके पद पंकज धूरि परे ।
यशगावत बैजसुनाथ उदार दयानिधि सानुज राम हरे ॥ (मुनिसंकुलेकानने) जहां बहुत मुनि
बास किये हैं त्यहि वन विषे (कामाश्रमेरम्येतत्रएकारजनीउषित्वा) कामदेव को जो आश्रम है
सुंदर त्यहि विषे बास करि एक रात्री विताय (प्रभातेशनैःप्रस्थित) प्रभात भये कुमारन युतविश्वामि
त्र धीरे धीरे पयान कीन्है अर्थात् ताडका मरे पीछे जहांबहुत मुनि बास किहे हैं त्यहि वन में जो

कामदेव को आश्रम है सुंदर त्यहि विषे वासकरि एक रात्री ब्रिताय प्रभातभये श्रीराम लपण सहित विश्वामित्र धीरा वीरा अपने आश्रम को चले १ (निद्वारणसेवितं निद्वारणमसर्वैर्गताः) अणि-मादि प्राप्तिवाले निद्वार हरि यग कीर्तन करने वाले चारण इत्यादि करि सेवित जो सिद्धाश्रम तहां विश्वामित्रादि सब गये (विश्वामित्रेण संदिष्टा तन्निवास्तिनः मुनयः) विश्वामित्र करिके प्रेरित सम्पूर्ण अपनी भाग्य उदय मानि तहां के वासी जे मुनि रहे ते सब २ (द्रुतरामलक्ष्मणयोः महतीं पूजां चक्रः) शीघ्रही श्रीराम लक्ष्मण की बड़ी भारी पूजा करते भये (कौशिकं श्रीरामः प्राह) विश्वामित्र प्रति श्रीरघुनाथजी बोले (हे मुने दीक्षां प्रविश्यताम्) हे मुनि यज्ञ शाला को जाइये अर्थात् जहां सिद्ध पण्ट जानि सिद्ध चारण वास किहे हैं ता सिद्धाश्रम को राम लपण विश्वामित्रादि सब गये अपने आश्रम में स्थित भये पुनः विश्वामित्र करि आज्ञा भई भाव नररूप परमात्मा हैं इनकी सेवा ते सब फल लाभ है इत्यादि जानि अपनी पूर्ण भाग्य उदय मानि तहां के वासी जो मुनि रहें ते सब मिलि अर्थ पाव्य आचमन गंग दल फूल धूप दीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिणा प्रणाम इत्यादि श्रीरघुनन्दन लपणलाल को बड़े सत्कार ते पूजा कीन्हें तब विश्वामित्र प्रति रघुनन्दन कहे कि अब यज्ञ शाला में जाय यज्ञ प्रारंभ कीजिये ३ ॥

दर्शयस्व महाभाग कुतस्तोराक्षसाधमो ॥ तथेत्युक्त्वामुनिर्यष्टुमारेभे मुनिभिस्स ह ॥ ४ ॥ मध्याह्ने ददृशाते तोराक्षसौ कामरूपिणौ ॥ मारीचिश्च सुबाहुश्च वर्षतोरुधि रास्थिनी ॥ ५ ॥ रामोऽपि धनुरादाय द्वौ बाणौ संदधे सुधीः ॥ आकर्णान्तं समाकृष्य विसर्जत योः पृथक् ॥ ६ ॥

(महाभाग राक्षसाधमो कुतः तौ दर्शयस्व) हे महाभाग मारीच सुबाहु राक्षस अधम कहा हैं तिन दोऊ को देखाइये इत्यादि सुनि विश्वामित्र बोले (तथा इति उक्त्वामुनिः मुनिभिः सह यष्टुमारेभे) जैसा आप कहते हैं तैसाही होगा ऐसा कहि मुनि अपर मुनिन करिके सहित यज्ञ प्रारंभ कीन्हें अर्थात् जब रघुनाथ जी कहे कि यज्ञ प्रारंभ कीजिये पुनः हे महाभाग्य वाले विश्वामित्र मारीच सुबाहु राक्षस अधम कहा हैं तिन दोऊ को देखाइये इत्यादि सुनि विश्वामित्र बोले हे राजकुमार यथा आप कहते हो तथा होगा ऐसा कहि मुनि अपर मुनिन सहित यज्ञ प्रारंभ कीन्हें ४ (मारीचः सुबाहुः च तौ राक्षसौ कामरूपिणौ रुधिरास्थिनि वर्षतौ मध्याह्ने ददृशाते) मारीच पुनः सुबाहु दोऊ राक्षस इच्छा रूप धारी रक्त हाड वर्षत संते दुपहर समय में देखि परे अर्थात् कार्यतौ प्रभातही प्रारंभ भया परंतु कुंड निर्माण साकल्य शोधन सर्वतोभद्रादि वेदी बनावत गौरि गणेश नवग्रह पूजन इत्यादि में देर लगी जब अग्नि बरी धूम उठा ताको देखि जाये यज्ञ विध्वंस हेतु रुधिर हाड वर्षने लगे ५ (सुधीः रामः अपि धनुः आदाय द्वौ बाणौ संदधे) सुंदरि है बुद्धि जिनकी ऐसे श्रीरघुनाथजी हाथ में धनुष लेंकें द्वौ बाण संयान ते भये (आकर्णान्तं समाकृष्य तयोः पृथक् विसर्ज) कान पर्यंत धनुष को खेंचि तिन दोऊ बाणन को बिलग बिलग करि छाड़े अर्थात् मारीच ते आगे कामलेना है ताते अभी न मारें इहां ते दूरि करि दें इति पूर्व विचार वंत सुंदरि बुद्धि है जिनकी ऐसे श्रीरघुनाथजी हाथ में धनुष लै पवन अग्नि इति द्वौ बाण संयानि श्रवण पर्यंत खेंचि अलग अलग दोऊ बाण छाड़े ६ ॥

तयोरेकस्तु मारीचं आसयूढतयोजनम् ॥ पातयामास जलधौ तदद्भुतमिवाभवत् ७ ॥
द्वितीयोऽग्निमयो बाणः सुबाहुमजयत् क्षणात् ॥ अपरे लक्ष्मणेनाशुहतास्तदनुयायि

नः ॥ ८ ॥ पुष्पौघैराकिरन्देवाराघवंसहलक्ष्मणम् ॥ देवदुन्दुभयोनेदुस्तुष्टुवुस्सि
द्धचारणाः ॥ ९ ॥ विश्वामित्रस्तुसंपूज्यपूजार्हंरघुनन्दनम् ॥ अंकेनिवेश्यचालिं
ग्यभक्त्यावाष्पाकुलेक्षणः ॥ १० ॥

(तत्त्रुतं इवभवत्) जोद्वैबाणछांडेतामें आश्चर्यतुल्यकौतुकभया क्याभया (तयोः एकस्तुमा-
रीचंभ्रामयत् चाशतयोजनमूलधौपातयामास) तेदोऊबाणनमें एकजोबायु बाणरहासो मारीचको
बेधलिया ताहिआकाशमें भ्रमावते सौयोजन अंतसमुद्रमें डारिदिया उसकिनारेके समीप ७ द्वितीयो
अग्निमयबाणः सुबाहुक्षणात् भजयत्) दूसरा जो अग्निमयबाण रहा सो सुबाहुजोहै ताहिजीता
भाववाको भस्मकरिदिया (तत्त्रुतयाधिनः अपरे लक्ष्मणेन आशुहताः) तिनके आज्ञाकारऔरजो
निशाचररहेते लक्ष्मणकरिकै शीघ्रहीमारेगये अर्थात् निशाचरोंको देखिरघुनाथजी चातुरीकरिदोबाण
चलाये तामें आश्चर्यवत् कौतुकभयाकि एकपवनबाण सोमारीचको उड़ायलै उसकिनारे समुद्रमें
डारिदिया दूसराजो अग्निबाणसो सुबाहुको भस्मकरिदिया तिनके अनुचरजो और राक्षसरहे तिनहिं
लक्ष्मणजीने क्षणभरमें संहारकरि दिया ८ (सहलक्ष्मणं राघवंदेवा पुष्पओघैः आकिरन्) लक्ष्मणजी
सहित रघुनाथजी परदेवगणफूलसमूह बर्षते हैं (देवदुन्दुभयोनेदुःसिद्धचारणाः तुष्टुवुः) देवतानगरा
बजावत सिद्धचारण आनंदह्वै स्तुति करतेहैं अर्थात् खलबध भयेतेदेवता प्रसन्नह्वै प्रभुपरफूलवर्षत
नगरा बजावत सिद्धचारण जो वहां वास किहेरहे ते अभय पाय आनन्द ह्वै स्तुति करते हैं ९
(तुविश्वामित्रः पूजार्हंरघुनन्दनं संपूज्य) विश्वामित्रजी पूजा योग्य जो रघुनन्दनतिनहिंसम्पूर्ण प्रकारते
पूज्यपुनः (भक्त्या अंकेनिवेश्य चालिङ्ग्य वाष्प आकुल इक्षणः) भक्तिकरिकै अकोरामें बैठारिपुनः हृदय
में लगाये प्रेमानन्द उमगा ताते आशुन की धाराते आकुल हैं नेत्र अर्थात् पूज्य योग्य परमात्मा
जानि विश्वामित्र पोड़शोपचार पूजन करि वात्सल्य भाव भक्ति करि रघुनन्दनको अकोरामें बैठारि
हृदय में लगाये जो प्रेमानन्द उमगा ताते आशुनकी धारते आकुल भयेनेत्र १० ॥

भोजयित्वासहभ्रात्रारामंपक्वफलादिभिः ॥ पुराणवाक्यैर्मधुरैः निनाय दिवसत्रयम् ॥

११ ॥ चतुर्थेहनि संप्राप्ते कौशिको राममब्रवीत् ॥ रामराममहायज्ञं द्रष्टुं गच्छामहे
वयम् ॥ १२ ॥ विदेहराजनगरे जनकस्य महात्मनः ॥ तत्र माहेश्वरं चापमस्ति न्य
स्तं पिनाकिना ॥ १३ ॥ द्रक्ष्यासि त्वं महासत्त्वं पूज्यसे जनकेन च ॥ इत्युक्त्वा मुनि
भिस्ताभ्यां यौगंगा समीपम् ॥ १४ ॥

(सहभ्रात्रारामंपक्वफलादिभिः भोजयित्वा) सहित भाई रघुनन्दनहिं पाके फलादिकन करिकै
भोजनकराये (पुराणवाक्यैः मधुरैः दिवसत्रयं निनाय) पुराणवाकी मधुर करिकै दिवस तीनि बिताये
अर्थात् स्नान पूजनादि किहे पीछे दोऊ भाइन को मीठे फलादि भोजन कराये पीछे पुराणन के
ललित इतिहास मधुर बानी ते सुनावते हैं इसी भांति तीनि दिन आश्रम में रहे ११ (चतुर्थेअह-
निप्राप्ते) जब चौथ दिन आय प्राप्त भया तब (कौशिकः रामं अब्रवीत्) विश्वामित्र रघुनन्दन प्रति
बोलते भये (हे राममहायज्ञं द्रष्टुं गच्छामहे) हे रघुनन्दन मिथिलापुर में महायज्ञ है ताहि देखने
हेतु तुम सहित हम चलैगे १२ (विदेहराजनगरे महात्मनः जनकस्य) राजा विदेहके नगरमें महा-
त्मा जनक के घर में (पिनाकिनान्यस्तं तत्र माहेश्वरं चापमस्ति) शिवजीको स्थापित कियाहै सोई
तहां शिव धनुष है १३ (महासत्त्वं त्वं द्रक्ष्यासि जनकेन पूज्यसे) महागुरु कठोर धनुष ताहि तुम

चलि देख्यो पुनः जनक करिकै पूज्य होउगे (इतिउक्तामुनिभिःताभ्यांययौ) ऐसाकहि मुनिसमा-
ज दोऊ भाइन सहित चलते भये (गंगासमीपगम्) गंगा जी के समीप गये अर्थात् चौथे दिन वि-
श्वामित्रकहे कि हे रघुनन्दन महा यज्ञ देखने हेतु तुम सहित हम चलेंगे विदेहपुर में महात्मा ज-
नक के घर में शिवको स्थापित किया शिवको धनु है ताके तोरनहार को कन्या बिवाहेंगे सो किसी
वरि को उठावा नहीं उठा ऐसा गरू ताहि चलि देखिये जनक करि पूजे जाउगे ऐसाकहि दोऊभा-
इन को संग लै विश्वामित्र जनकपुर को चले गंगा तट जाय प्राप्त भये १४ ॥

गौतमस्याश्रमंपुण्यंयत्राहल्यास्थितातपः ॥ दिव्यपुष्पफलोपेतंपादपैःपरिवेष्टि
तम् ॥ १५ ॥ मृगपक्षिगणैर्हीनंनानाजन्तुविवर्जितम् ॥ दृष्ट्वावाचमुनिंश्रीमान्रामो
राजीवलोचनः ॥ १६ ॥ कस्यैतदाश्रमपदंभातिभास्वच्छुभंमहत् ॥ पत्रपुष्पफलैर्यु-
क्तंजन्तुभिःपरिवर्जितम् १७ ॥

(गौतमस्यआश्रमंपुण्यं) गंग तट जो गौतममुनिको आश्रम पुण्यमयहै (यत्रअहल्यास्थितातपः)
जहां अहल्यापरी तपकरती है (दिव्यपुष्पफलोपेतंपादपैः) दिव्य फूल फल सहित वृक्षन करिकै
(परिवेष्टितम्) सब दिशिते घेरमे है अर्थात् रघुनन्दन सहित विश्वामित्र गंगातट गये जहां गौतम
मुनिको पुण्यमय आश्रमहै जहां अहल्या पाखाणरूप हिमिवर्षा आतपसहती है जाके चारिउदिकि
ऐसे ललित वृक्षलगे हैं जिनमें दिव्य फूल फल लगेहैं १५ (मृगपक्षिगणैःहीनंनानाजन्तुविवर्जितं
दृष्ट्वावाचमुनिंश्रीमान्रामःमुनिंउवाच) मृगचौपदपक्षीगणइत्यादि करिकै हीन तथा अनेक
भांतिके देहधारी मनुष्यादि तिन करिकै विशेषि वर्जित भावप्राणी मात्र उससीमामें नहीं जायसक्ता
है क्योंकि मुनिशापके प्रभावते भस्महोने की भयहै ऐसा शून्यआश्रम देखिरूपारसभरे कमल नयन
श्रीमान्रघुनाथजी मुनि विश्वामित्र प्रति बोलतेभये १६ (जन्तुभिःपरिवर्जितम्) जीवजंतुन करिकै
रहित (पत्रपुष्पफलैःयुक्तं) वृक्षदल फूल फलन करिकै युक्त (महत्शुभम्भातिभास्वत्) बड़ी मंग-
लीक शोभा प्रकाशमान् (एतत्आश्रमपदंकस्य) यहआश्रम किसका है १७ ॥

अह्लादेतिमेचेतोभगवन्ब्रूहितत्त्वतः ॥ विश्वामित्रउवाच ॥ शृणुरामपुरावृत्तंगौ-
तमोलोकविश्रुतः ॥ १८ ॥ सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठस्तपसाराधयन्हरिम् ॥ तस्मैब्रह्माददौ
कन्यामहल्यांलोकसुन्दरीम् ॥ १९ ॥ ब्रह्मचर्येणसंतुष्टःशुश्रूषणपरायणाम् ॥ तया
सार्द्धमिहावात्सीद्गौतमस्तपतांवरः ॥ २० ॥ शक्रस्तुतांधर्षयितुमंतरंप्रेप्सुरन्वहम् ॥
कदाचिन्मुनिवेषेणनिर्गतेगौतमेगृहात् ॥ २१ ॥

(मेचेतोअह्लादेति) मेरे चित्तको आनन्द देताहै (भगवन्तत्त्वतःब्रूहि) हेभगवन्ता आश्रम
को हाल आप कहिये अर्थात् विश्वामित्र सो रघुनाथजी पूछते हैं कि यायलमें पशु पक्षी तथा मनु-
ष्यादि तौ कोई नहीं देखाताहै विशेषि शून्यहै अरु नवीनदल रंगरंगके फूल फलन युत वृक्ष तथा
भूमिकामें यतनी बड़ी मंगलीक शोभा प्रकाशमानहै जाको देखि मेरे चित्तमें बड़ी आनन्द उत्पन्न
होतीहै इसहेतु पूछताहैं हे भगवन् भाव आप सब भांति समर्थहो ताते दासजानि कृपाकरि यथार्थ
हाल कहिये यह किसका आश्रमहै अरु ऐसी मंगलीक भूमि सो कौन कारण शून्यपरी है सो जाना
चाहताहैं इति मुनि विश्वामित्र बोलते भये यथा (हेरामपुरावृत्तंशृणुलोकविश्रुतःगौतमः) हेरघु-
नन्दन पूर्व समयको जो वृत्तान्तहै ताहि सुनिये लोकमें विदित जो गौतम ऋषि हैं १८ (सर्वधर्म

भृतांश्रेष्ठःतपसाहरिम्आराधयत्) सो गौतमधर्मधारी ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठते इहां तपस्या करिकै हरि जो भगवान् तिनहि आराधतेरहैं ताहीं समय (लोकसुंदरीअहल्याकन्यांतस्मैब्रह्मादौ) लोक विदित सुन्दरी अहल्यानामें कन्याताहि त्यहि गौतमके अर्थ ब्रह्मादेते भये अर्थात् विष्णुवामित्र बोलें हे शून्य-नन्दन यह स्थान शून्य होनेको हाल जैसा पूर्वभया सो सुनिये लोक विदित जो गौतमअपिहैं ते धर्म धारी ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठभाव शुद्ध धर्म व्रतधारी तेई इहां तपस्या द्वारा भगवानको आराधतेरहे ताहींसमय एकलोक विदित परम सुन्दरी अहल्यानामें कन्यारचिकै ब्रह्माने गौतमको विवाहकरि दिया १९ (ब्रह्मचर्येनरांतुष्टः) मुनिके ब्रह्मचर्य व्रतकरिकै प्रसन्नरहित (शुश्रूषणपरायणाम्) पति-सेवामें तत्पररहतीरही (तपतांवरःगौतमःतयासाद्वैद्व्यवात्सीत) तपकरनेवालेन में उत्तम गौतम त्यहि अहल्या करिकै सहित इहां वासकरतेरहे अर्थात् सत्यत्वलसेअहल्यारति भोगकी चाहरहित मुनि के ब्रह्मचर्यमें प्रसन्नरहैं तथा पतिव्रतते पतिकी सेवामें लगीरहैं इति स्वधर्म कर्ममें सहाय करता जानि तपस्विनमें उत्तम गौतम प्रसन्नमन अहल्या सहित इस आश्रममें वासकरतेरहे २० (सुतां धर्षयितुंशक्तः) पुनः तौनि जो अहल्याहैं ताहि भोगकरवे हेतु इन्द्र (अन्तरंप्रेप्तुःअन्वहम्) शून्य बीचपावनेहेतु प्रकर्ष इच्छा किहे अहल्याके पीछे लगेरहैं गुप्तरूपते (कदाचित्गौतमगृहात्निर्गतेमुनि वेपेण) किसीसमय गौतम स्थानते बाहेरगये इति शून्य बीचपायकै गौतम मुनिको वेपकरि इन्द्र प्रकटभये अर्थात् अहल्याको अत्यंत सुन्दररूप देखि इन्द्र प्रथमहां आशक्तहूवै प्रार्थी चाहतेरहैं जब ब्रह्माने गौतमको दिया तब छल ते भोग करिकेकी पुष्ट इच्छा राखि शून्य बीच पावने हेतु गुप्तरूपते अहल्या के पाछे लगेरहे जब किसीसमय स्नानादि कुछ कार्य हेतु गौतम आश्रमते बाहेरगये ताहीं समय इन्द्रगौतम को रूप धरि प्रकट भये २१ ॥

धर्षयित्वाथनिरगात्त्वरितंमुनिरप्यगात् ॥ दृष्ट्वायांतंस्वरूपेणमुनिःपरमकोपनः ॥

२२ ॥ प्रपच्छकस्त्वंदुष्टात्मन्मरूपधरोऽधमः ॥ सत्यंब्रूहिनचेद्भस्मकरिष्यामि नसंशयः ॥ २३ ॥ सोब्रवीदेवराजोऽहंपाहिमांकामकिङ्करम् ॥ कृतंजुगुप्सितंकर्ममयाकुत्सितचेतसः ॥ २४ ॥

(धर्षयितुअथनिरगात्) अहल्याके संग भोग करिइंद्रबाहेरनिकरे (त्वरितंमुनिःअपिअगात्) तुरत हीं मुनि निश्चय करि आय परे (स्वरूपेणतंदृष्ट्वायांमुनिःपरमकोपनः) अपने रूप करिकै त्यहि इन्द्रहि देखिकै गौतम मुनि परम कोपवन्त हूवै २२ (प्रपच्छमरूपधरःअधमःदुष्टात्मन्त्वंकः) मुनि पूछते भये कि मेरारूप धारण किहे अधम भाव कुत्सितकर्म करनेवाला हे दुष्टात्मन् तूको है (सत्यंब्रूहिनचेत्) सत्य कहु जोनहींसत्य कहताहै तौभस्मकरिष्यामिसंशयः नतोकोभस्मकरदेउंगोया मेंसंशयनहींहै अर्थात् अहल्याकेसंग भोगकरि उसरूपतेबाहेर निकरे कितुरतहीं मुनिआयपर आपना सरीखेरूपधरेपुनः मन्दिरमें अकेली स्त्रीत्यहिभीतरते सम्भ्रमबहिरात देखिजानिलिये किव्यभिचार किये आवताहैं ताते मुनि परमकोपवन्त हूवै पूछतेभये कि मेरारूपधारण किहे अकेली स्त्रीके पासते आवता है तातेअवश्य कुकर्म करनेवाला अधमहैं पुनः जो अपिपत्नी संग छलसों रति किया तौतेरे जीवात्मामें भी दुष्टता है ताते हे दुष्टात्मन् तू को है सत्यकहु नाहीं तौ तो को भस्म करि देउंगो या में संशय नहीं है २३ (सःब्रवीत्अहंदेवराजःकामकिंकरमांपाहि) सोबोलते भये कि हम देवन के राजा भाव इंद्र हैं अरुकाम के किंकर भाव काम वश अज्ञ हैं ऐसा जानि मेरी रक्षा करौ काहेते

(कुत्सितचेतसःमयाजुगुप्सितंकर्मकृतं) अज्ञान ताते हम करिके निंदित कर्म किया गया अर्थात् क्रोध वंत मुनिहि देखि सापराध अपना को विचारिके सो इन्द्र सदरबोले कि मैं देवराज इन्द्रहों जो सदा कामको चरोत्यहि कामासुकी में अज्ञान ताते निंदित कर्म मैंने किया है आप समर्थ हों ताते मेरी रक्षा करौ भाव प्राण घात दंड न दीजिये २४ ॥

गौतमः क्रोधताम्राक्षः शशापदिविजाधिपम् ॥ योनिलंपटदुष्टात्मन्सहस्रभगवान्
भव २५ शप्त्वातंदेवराजानंप्रविश्यस्वाश्रमं द्रुतम् ॥ दृष्ट्वाहल्यां वेपमानां प्रांजलिं
गौतमो ब्रवीत् २६ दुष्टे त्वं तिष्ठ दुर्वृत्तेशिलायामाश्रमे मम ॥ निराहारादिवारात्रं
तपः परममारिथता २७ ॥

(क्रोधताम्राक्षः गौतमः दिविजन्मविपंशशाप) क्रोधते लालिहैं नेत्र जाके ऐसे गौतम देवराज जो इन्द्र ताहि शाप देते भये (दुष्टात्मन्योनिलंपटसहस्रभगवान्भव । हेदुष्टात्मन् तू योनिको अत्यंत लोभीहै तौ तेरे तनमें हजार भगं होवे अर्थात् सत्य वचन सुनिके पूर्वको क्रोध तौ शांत भयारहै परंतु विचार कीन्हैं कि एक तो याकी पत्नी स्वरूपवंत पतिव्रता दूसरे अनेकन दिव्य अप्सरा प्राप्त तिनमें तू न भया अब छल करि ऋषि पत्नीमें भोग करने आया जो दंड न देवैं तौ पुनः ऐसही काम करे गा इस विचारते पुनः गौतमके क्रोध भया ताते नेत्र लालि भये इन्द्रको शाप दिये कि अनेकन स्त्री पाय तवहुं तू न भया तौ तू योनिको अत्यंत लोभीहैं ताते अब सर्वांगमें हजार योनि तेरेहोवैं जामें फिरि न ऐसा काम करु २५ (देवराजानंतं शप्त्वा द्रुतम् स्वआश्रमं प्रविश्य) देवराज जो इन्द्र ताहि शाप दैकै तुरतहों अपने आश्रममें प्रवेश करे (वेपमानां प्रांजलिं अहल्यां दृष्ट्वा गौतमः अब्रवीत्) तनकन्पायमान हाथ जोरे खड़ी अहल्याजहि ताहि देखिके गौतम बोलते भये २६ (दुष्टे त्वं मम आश्रमे शिलायां दुर्वृत्ततिष्ठ) हेदुष्टे तू मेरे आश्रममें शिलाके विषे दुखरूपजीविका करि परीरहु कौन भांति दिवारात्रं निराहारा परमंतपः अस्थिता) दिनों राति निराहार परमतपमें स्थितहो अर्थात् इन्द्रको शाप दैकै मुनि शीघ्रही आश्रमके भीतर गयेतहां देखे अहल्याको तन कांपि रहाहै भावंपर पतिरति होनेते भयातुरहै पुनः हाथ जोरे खड़ीहै भाव आपको रूप ह्वै छलते इन्द्रने मेरा अंग स्पर्श किया विना जाने का अपराध क्षमा कीजिये इतिभाव चेष्टा देखि गौतम बोले कि यद्यपि मेरे रूपते रहा तहां रति सुखमें पति तेरेको यह तौ संभार न रहा कि मेरा परि तो ब्रह्मचर्य तेरहतारहै सो अकारण कैसे व्रत त्याग किया ताते कहु छलहै परीक्षा लेना चाहिये इत्यादि विचार नहीं किया भोग सुख प्रिय लगा इसहेत तेरेभी जीवात्मामें दुष्टताहै ताते हेदुष्टे अबतू मेरेआश्रममें शिलाके विषे दिनौ राति निराहार परम तपमें स्थित भाव हिमि वात आतप वर्षा सहत स्थित इस भांति दुख रूप वृत्ति में परीरहु २७ ॥

आतपानिलवर्षादिसहिष्णुः परमेश्वरं ॥ ध्यायन्तीराममेकाग्रमनसा हृदिसंस्थितम् २८ नानाजन्तुविहीनोऽयमाश्रमो मे भविष्यति ॥ एवं वर्षसहस्रेषु ह्यनेकेषु गते पुनः २९ रामो दाशरथिः श्रीमानागमिष्यति सानुजः ॥ यदा तवाश्रमशिलापादाभ्यामाक्रमिष्यति ३० ॥

(आतपानिलवर्षादिसहिष्णुः) घाम वयारि वर्षा इत्यादि सहतरहु (एकाग्रमनसा परमेश्वरं रामं हं-

दिस्थितं ध्यायंती) एकाग्र मन करिकै परमेश्वर जो रामचंद्र तिनहि हृदयमें स्थित राखि इस भांति ध्यान किहे रहु २८ (अग्रमेवाश्रमः नानाजंतुबिहीनः भविष्यति) यह मेरा आश्रम अनेक देहधारी जीवन करिकै विशेषि हीनहोई भावजो इहां आई सो भस्म है जाई इतितेरे निर्विघ्नताहेत आश्रम शून्यरही (एवंहि अनेके पुसहस्रेषु वर्षगतेषुच) इसी भांति अनेक हजार वर्ष बीते संते पुनः २९ (सानुजः दाशरथी श्रीमान् रामः आगमिष्यति) सहित अपने छोटे भाई दशरथके पुत्र श्रीमान् रामचंद्र आवहिगे (तव आश्रमशिलायां यदा पादाभ्यां अक्रामिष्यति) तेर आश्रमविषे शिलापर जब पादार बिन्द धरि देवै अर्थात् अहल्या प्रतिगौतम कहत कि देहते तो घास बयारि वर्षा इत्यादि सहतरहु अरु अंतरमें एकाग्रमन करिकै परमेश्वर जो श्रीरामचंद्र तिनहि हृदय में स्थित राखि इस भांति सदा ध्यान किहेरहु पुनः यथा इन्द्रने छल किया तथा अकेली स्त्री जानि कोई और छलादि विघ्न करने आवै तिसहेत मेरा यहवचन है कि जो कोऊ देहधारी इस आश्रमकी सींवा नाथी सो भस्म है जाई इसभयते कोऊ जंतु आई न सकी ताते यह मेरा आश्रम देहधारिन करिके विशेषि हीन भाव शून्यरही इसी भांति अनेक हजार वर्ष बीतत संते जाभांति तेरा उद्धार होइगो सो सुनु जब दशरथनंदन श्रीरामचंद्र अरु अपने छोटे भाई लक्ष्मण सहित यहां आवेंगे तेरे आश्रम में शिला पर जब पांय धरेंगे ३० ॥

तदैव धूतपापात्वं रामं सम्पूज्य भक्तिः । परिक्रम्य नमस्कृत्य स्तुत्वा शापाद्विमोक्षये
३१ पूर्ववन्ममशुश्रूषां करिष्यसि यथा सुखम् ॥ इत्युक्त्वा गौतमः प्रागाद्धिमवन्तं
गौतमम् ३२ तदाद्यहल्याभूतानामदृश्याश्चाश्रमेषु भेतवपादरजःस्पर्शकांक्षन्ती
पापनाशनम् ३३ ॥

(ततः एव त्वं पापात् धूतभक्तिः रामं संपूज्य) तब निश्चय करिकै तू पापते छूटि भक्तिते रामचंद्र जो हैं तिनहि सम्पूर्ण प्रकार पूजन करि (परिक्रम्य नमस्कृत्य) प्रदक्षिणा करि नमस्कार करि (स्तुत्वा शापात् विमोक्षये) स्तुतिकरि शापते छूटैगी ३१ (पूर्ववत् यथा सुखं ममशुश्रूषां करिष्यसि) यथा पूर्व रहीताही रीतिसुख पूर्वक पुनः मेरी सेवकाई करैगी (इति उक्त्वा गौतमः न गौतमं हिमवन्तं प्रागात्) ऐसा कहि गौतम पर्वतनमें उत्तम जो हिमाचल तहां को गये अर्थात् अहल्या प्रतिगौतम कहत कि जब रघुनाथजीके पांय लागेंगे तब निश्चय करि पापते छूटैगी पुनः भक्तिते श्री रघुनाथजीको अर्घपाद्य आचमन गन्ध धूप दीप नैवेद्य आरती इत्यादि सम्पूर्ण प्रकार पूजन करि पुनः प्रदक्षिणा करि साष्टांग दंडवत करि पुनः स्तुति करैगी तब मेरी शापते छूटैगी भाव पूर्ववत् पावन सुन्दर तन होइगी तब तथा पूर्वमेरी पत्नी रहै ताही रीति सुख पूर्वक पुनः उत्तम पत्निवत मेरी सेवा में तत्पर रहैगी ऐसा कहि पुनः गौतम मुनि इस आश्रम को त्यागि पर्वतनमें उत्तम जो हिमाचल तहां को चले गये तपस्या हेत ३२ (तत आदि अहल्याभूतानां अदृश्या) तबते आदि दैकै बहुत काल व्यतीत भये अहल्या सबभूतन को अदृश्या भाव किसी जीवको देखिनहीं परती है अरु (स्व आश्रमेषु भेतवपादरजःस्पर्शकांक्षन्ती) अपने आश्रम पावन विषेतपकरती हुई पापन को नाशकरण हारे जो आप के पद कमल तिनकी रजस्पर्श करणे की कांक्षा राखे है अर्थात् रघुनन्दन प्रति विश्वामित्र कहत कि जासमैं शापदैं उद्धार बताय गौतम चले गये तौ न समय आदि दै अबतक बहुत काल बीते अहल्या किसी जीवको देखितौ नहीं परती है परन्तु गंगातट परमपावन अपने आश्रम में तपस्या

करती है अरुपापन को नाशकरण हारे जो आशके पद कमल तिनकी रज अपने तनमें लागिजाने की कांक्षाराखे है ३३ ॥

आस्तेद्यापिरघुश्रेष्ठतपोदुष्करमास्थिता ॥ पावयस्वमुनेभार्यामहल्यांब्रह्मणस्सु
ताम् ३४ इत्युक्त्वाराघवंहस्तेगृहीत्वामुनिपुंगवः ॥ दर्शयामासचाहल्यामुग्रं
तपसास्थिताम् ३५ रामोयदाशिलांस्पृष्ट्वातांचापश्यत्तपोधनाम् ॥ ननामराघ
वोऽहल्यांरामोऽहमितिचाब्रवीत् ३६ ततोदृष्ट्वारघुश्रेष्ठंपीतकौशेयवाससम् ॥ धनु
र्वाणधरंरामंलक्ष्मणेनसमन्वितम् ३७ ॥

(रघुश्रेष्ठदुष्करंतपःआस्थिताअद्यअपिआस्ते) हेरघुवंशमे श्रेष्ठ महादुष्करतपमें स्थित आजहूं नि-
श्चय करिकैहै (ब्रह्मणःसुताममुनेःभार्यामहल्यांपावयस्व) ब्रह्माकी पुत्री गौतम मुनिकी स्त्री ऐसी
जो अहल्या ताहि पावन कीजिये ३४ (इतिउक्त्वामुनिपुंगवःराघवंहस्तेगृहीत्वा) ऐसाकहि विश्वा
मित्रराघव जोहैं तिनहि हाथपकरि (चउग्रेणतपसास्थितामहल्यांदर्शयामास) पुनः उग्रतप क-
रिकै स्थित जो अहल्या ताहि देखावतेभये अर्थात् विश्वामित्र कहत हे रघुवंशमे श्रेष्ठ महा उग्रतप
करती हुइ निश्चय करि आजहूं स्थितहै अरुब्रह्माकी पुत्री गौतम मुनिकी पत्नीऐसी जो अहल्या ताहि
पदरजदै पावनकीजिये ऐसाकहि विश्वामित्र अपनेहाथसे रघुनंदनकोहाथपकरि उग्रतपकरि स्थित जो
अहल्याताहि देखावतेभये ३५ (शिलांयदारामःस्पृष्ट्वा) शिलाजोहै ताहिजब रघुनाथजीपांयतेछुइदीन्हे
(चतांतपोधनाम्अपश्यत्) पुनः तौन जो तपोधन अहल्याहै ताहि देखे भावपूर्व गुप्तरहै सो प्रकटदेखि
परी (अहल्यांराघवःननामचअहंरामःइतिअब्रवीत्) अहल्या जो है ताहि रघुनन्दन नमस्कार करि
पुनः हम रामहैं ऐसाकहे ३६ (ततःलक्ष्मणेनसमन्वितमृगुश्रेष्ठंरामंदृष्ट्वा) तदनन्तरलक्ष्मण सहित
रघुवंशमें श्रेष्ठ जो रामचन्द्र तिनहि अहल्या देखती भई कैसेहैं (पीतकौशेयवाससमधनुर्वाणधरं)
पीतरगको रेशमीवसन तथा धनुषबाण धारणकिहैं अर्थात् प्रथम गुप्तरहै उसशिलाको जब रघुनाथजी
पांयते छुइदीन्हे तब प्रकटभई त्यहि अहल्या तपोधनको देखि रघुनाथजी प्रणाम करि कहे कि हम
रामहैं सो सुनि आनन्दह्वै पुनः लक्ष्मण सहित रघुवंश शिरोमणि रामचन्द्रको नेत्रणभरि अहल्या
देखतोभई कैसेहैं रेशमी पीत वस्त्र तनमें धनुषबाण करमें धारण कीन्हैंहैं ३७ ॥

स्मितवक्त्रं पद्मनेत्रं श्रीवत्सांकितवक्षसम् ॥ नीलमाणिक्यसंकाशं द्योतयंतं दिशो
दश ३८ दृष्ट्वारामंरमानाथं हर्षविस्फुरितेक्षणा ॥ गौतमस्यवचःस्मृत्वाज्ञात्वाना
रायणंपरम् ३९ संपूज्यविधिवद्राममध्यादिभिरनिन्दिता ॥ हर्षास्रजलनेत्रांता
दण्डवत्प्रणिपत्यसा ४० उत्थायचपुनर्दृष्ट्वारामंराजीवलोचनम् ॥ पुलकांकित
सर्वांगगिरागद्गदयैलत ४१ ॥

(स्मितवक्त्रं पद्मनेत्रं) मुसुकानियुतमुख कमल समनेत्र (श्रीवत्सवक्षसम्वंकित) श्रीवत्सपीत
रौममयदहिना वर्तभ्रमरी वामछातीपर चिह्नित (नीलमाणिक्यसंकाशं द्योतयंतं) इन्द्रनील
मणिकी सीज्योति श्यामतनते दशोदिशनमे प्रकाशकिहैहै ३८ (रमानाथंरामंदृष्ट्वाहर्षदक्षणाविस्फुरित)
लक्ष्मणाथ जो श्रीरामचंद्र तिनहि देखिकै नेत्रविशेषि प्रफुल्लित भयेपुनः (गौतमस्यवचः स्मृत्वापरं
नारायणंज्ञात्वा) गौतमके बचन सुधिकरिकै परमनारायण करिजाने अर्थात्मुसुकानि युत प्रसन्न

मुखचंद्र कृपारस भरे कमलसे नेत्र श्रीवत्सचिह्न छातीपर अंकित इन्द्रनील मणिकीसी ज्योति श्या-
मतनते दशैदिवशनमें प्रकाशित है ऐसे लक्ष्मीनाथ रामचन्द्रको देखि नेत्रविशेषि आनन्द भये पुनः गौतमके
वचन शपोद्धार सुधिकरि परमनारायण करि जाने ३६ (अनिदिता अर्घ्यादिभिः विधियत रामसंपूज्य)
प्रशंसा करिबे योग्य अर्घ्यपाद्यादिकरि कै विधिपूर्वक श्रीरामजो हैं तिनहि सम्पूर्ण प्रकारते पूजन करि
(हर्ष आसुजलनेत्रांता) आनन्द आसुजल नेत्रनमें भरा दण्डवत्प्रणिपत्यसा (दण्डवत्प्रणाम करती
भई ४० (चउत्थायराजीवलोचनं रामं पुनः दृष्ट्वा) फिरि उठिकै कमलनयन श्रीरघुनाथजी तिनहि
पुनः देखिकै अन्तरते प्रेम उमंगा (सर्वांगाः पुलकांकितगद्गदयागिराऐलत) सब अंगनमें रोमांच उठि
आये कण्ठ रूंधिगया गद्गद बानी करिकै स्तुति करने लगी अर्थात् प्रथम माधुर्यरूप देखि आनन्द
भई पुनः पतिके बचन सुधि करि परमात्मा जानि आसनदै बैठारि स्वागत पूछि पांय धोय कुल्ला
दतूनि कराय उबटि मज्जन कराय नवीन वसन पहिराय चन्दन दल फूल चढाय धूप दीप नैवेद्य
आरती करि पुनः परिक्रमा प्रणाम दण्डवत् इत्यादि श्रद्धाते विधिपूर्वक सम्पूर्ण पूजन करि फिर उठि
सन्मुख खड़ीहुवै पुनः प्रभुको सर्वांगदेखि अन्तरते प्रेम उमंगा सर्वांग भरिगया ताते रोमांच खड़ेहुवै-
गये कण्ठ रूंधिगया ताते अपुष्टाभर गद्गद बानी करिकै स्तुति करने लगी ४१ ॥

अहल्योवाच ॥ अहो कृतार्थास्मि जगन्निवासते पादाम्बुजेलग्नरजः कणादहम् ॥

स्पृशामियत्पद्मजशंकरादिभिर्विमृग्यते राधितमानसैस्सदा ४२ अहो विचित्रं तव
रामचेष्टितं मनुष्यभावेन विमोहयन् जगत् ॥ चलस्य जखं चरणादिवर्जितं संपूर्ण आ-
नन्दमयोतिमायिकः ४३ ॥

अहल्या बोली (हे जगन्निवासते पादाम्बुजेलग्नरजः कणात्कृतार्थास्मि अहो) हे जगतभरे में अंतर्दामी
रूपते वासकरणे वाले आपके पद कमलनमें लगी हुई जोरजकण्ठ हितेमें पापभरी स्त्री कृतार्थ भई
यह संयोग आश्चर्य है काहेते (यत्पद्मजशंकरादिभिः सदा विमृग्यते कैः धराधितमानसैः तत अहं स्पृशामि)
ऐसे पदकमलनकी रजलागि में कृतार्थ भई जो पदब्रह्मा शिवादिकन करिकै सदा दूँढे जाते हैं कौन प्रकार
आराधना पूर्वक मन करिकै तौनि पद स्पर्श किहें उडैति मेरी अहोभाग्य है अर्थात् अहल्या कहत
कि हे अंतर्दामी रूपते जगतमें वास करने वाले प्रभु आपके पदकमलों में लगी हुई जोरजताकी
किंचितकण लागेते मैं पाप राशि स्त्री सो कृतार्थ भई पाप शाप विगत पावन भई परंतु ऐसा संयोग
होना आश्चर्य है काहेते जिनको ब्रह्मा शिवादि आराधना पूर्वक धिरमन करि सदा ध्यानमें ठूढ़ते
हैं सो भी पावना अगम तिन पद कमलों की स्पर्श में सुगम पायों इति आपको दया गुण मेरी
अहो भाग्य है ४२ (हे रामतव चेष्टितं अहो विचित्रं) हे रघुनाथ जी आपकी चेष्टित जो देह व्यवहार
की कर्तव्यता है सो आश्चर्यमय विचित्र है किसी की समझमें नहीं आवत काहेते (मनुष्यभावेन ज-
गत विमोहयन्) प्राकृत मनुष्यवत् भावदेखाय करिकै जगत जननको विशेषि मोहित करते हैं कौन
भांति (चरणादिवर्जितं संपूर्ण आनन्दमयः अजखं मायिकः चलसि) पदादि इंद्रा रहित भाव अमूर्ति
तथा शोकादि रहित परिपूर्ण आनन्दमय हो अरु माया मय मनुष्यों के आचरण पर चलते हैं अर्थात्
अहल्या कहत कि हे रघुनाथ जी आपकी देह व्यवहार की वावत कर्तव्यता है सो ऐसी अद्भुत विचित्र
है जो यथार्थ बात किसी की समझमें नहीं आवत काहेते प्राकृत मानुष्यवत् भावनर नाट्यदेखाय
जगत जनन को मोहित करते हैं कौन भांति पदहाथ मुख गुदाशिरन इत्यादि रहित भावचल

नादि विषयकर्म कुछभी नहीं करतेहौ तथा श्रवणादि इन्द्रियद्वारा मनमें हर्ष विषाद इत्यादि रहित परिपूर्ण आनन्द मयभाव शुद्ध परमात्मरूप हौ यथार्थ अरु सब के देखनेको प्राकृत मनुष्योंके आचरण करते हौ सोई देखि लोगपरमेश्वरमें मनुष्य भाव आरोपित करतेहैं ४३ ॥

यत्पादपङ्कजपरागपवित्रगात्राभागीरथीभवविरिंचिमुखान्पुनाति ॥ साक्षात्सए वममदृग्विषयोयदास्तेकिंवर्ण्यतेममपुराकृतभागधेयम् ४४ ॥

(यत्पादपङ्कजपरागपवित्रगात्रा) आपके जिनपद कमलोंकी रजस्पर्शपाय पवित्रभयाहै गात जिनको ऐसी जो भागीरथीभवविरिंचिमुखान्पुनाति) गंगा सो ब्रह्माशिवादि मुख्यजो देवताहैं तिनहिं पवित्र करतीहैं (सएवसा नात्यदास्तेममदृग्विषयः) सोई निश्चय करिकै साक्षात् जबआप मेरं नेत्रनकी विषयभयो भावमूर्तिमान्नेत्रनकेआगेखडेहौतौ अब(ममपुराकृतभागधेयम्किंवर्ण्यते)मेरेपूर्व जन्मनकी करीहुई जोसुकृतिताको फलवर्तमानमें जोमेरीअपूर्वभाग्यहै ताहिकैसेकोऊबखानकरै अर्थात् लोकना- पतसमय वामन तबऊंचेको पांवउठायेताके ठोकरते ब्रह्मांडभेदनह्वै गयात्यहि द्वारा ब्रह्मद्रवबहिआया भगवान्के पदस्पर्शते महापुनीत भयाजाकोब्रह्माशिवादिसब शशिपरराखे सोईगंगाकोभागीरथतपोबल भूमिकोलाये सोई अहल्या कहत कि जिनपद कमलोंकी रजस्पर्शपायपवित्रभयाहै गातजिनकोऐसी भागीरथीगंगा जो ब्रह्माशिवादि मुख्य देवता तिनहिंपवित्र करतीहैं जाकेपदरज के प्रभावते सोई निश्चयकरि साक्षात् जबआपहीमेरेनेत्रनके आगेखडेहौ तौ मेरी भाग्यको कैसे कोऊप्रशंसाकरै ४४॥

मर्त्यावतारेमनुजाकृतिंहरिरामाभिधेयंरमणीयदेहिनम् ॥ धनुर्धरंपद्मविशाललो-
चनंभजामिनित्यंपरमंपरायणम् ४५ यत्पादपङ्कजरजः श्रुतिभिर्विमृग्यंयन्नाभिपं-
कजभवःकमलासनश्च ॥यन्नामसाररसिकोभगवान्पुरारिस्तंरामचन्द्रमनिशंहदि-
भावयामि ४६ ॥

(रामाभिधेयंहरितंअहंनित्यंभजामि) राम ऐसा नाम प्रसिद्धहै जिनको ऐसे जो हरि तिनहिं मैं नित्यही भजती हौ कथंभूतं (मर्त्यावतारेमनुजाकृतिंरमणीयदेहिनम्) मनुष्य अवतार धरे संते मनुष्य कैसी आकृति द्विभुजस्वरूप परम सुंदरी देहैं चारि रूप ते अवतीर्ण भये डाति बहु वचन को भाव है पुनः कथंभूतं (पद्मविशाललोचनं धनुर्धरंपरमंपरायणम्) कमलवत् सुंदर बड़े नेत्र धनुषधारण किहे उत्तम धर्म नीति पर तत्पर हैं अर्थात् अहल्या कहत कि जो मृतक समय एकबार उच्चारण ते महापात की जीव परम पद पावत ऐसा राम नाम जिनको लोक वेद में प्रसिद्ध है ऐसे जो हरि तिनहिं मैं नित्य भजती हौ भाव प्रथम ऋषिके उपदेश ते उद्धार हेतु भजत रही वर्तमान सेवा में तत्परहौ पुनः जिनकी दया ते उद्धार भई पति सयोग पावेंगी ताते जीवन पर्यंत भजौंगी ते कैसे हैं मनुष्य अवतार धरे संते मनुष्य कैसी आकृति द्विभुज परम सुंदरी देहैं चारि रूपते अवतीर्ण भये कमल सम सुंदरि बड़े नेत्र धनुष धारण किहे उत्तम धर्म नीति पर तत्पर हैं भाव स्वरूपवत पर स्त्री आसक्त रहती हैं तो अवशि कामी होना चाहिये धनुष धरे तौ क्रोधी होना चाहिये सो नहीं सब भांति उत्तम हैं ४५ (यत्पादपङ्कजरजःश्रुतिभिर्विमृग्यम्) जिनके पद कमलों की रज श्रुतिन करिकै देखने योग्य है (चयत्नाभिपंकजकमलासनःभवः) पुनः जिनकी नाभी कमल ते ब्रह्मा उत्पन्न भये (यत्नामसाररसिकःभगवान्पुरारिः) जिनके नामन में सारांश जो राम नाम ताके रसिक भगवान् शिवहैं (तंरामचन्द्रमनिशंहदिभावयामि) तौन जो रामचन्द्रहैं तिनहिमें दिनोराति हृदयमें ध्यान

करतीहों अर्थात् यथा कमलमें परागहोतीहै ताहीते सुगंध आवतीहै अरु पखुरी विकासकीन्हेंते देखि भी परतीहै इहां परमात्मपदरूप जोकमलहै ताकी पखुरिनसम अनेकन ब्रह्माण्डहैं महिमा सुगंधहैं अंतर्यामीरूप सोई परागहैं ताकी प्राप्ती जो चाहै तौ श्रुतिसिद्धान्त वाक्यन करिकैं हूँहै यथा ऋक्पुरुषसूक्ते ॥ पुरुषएवेदंसर्वयद्भूतंयच्चभवं यतामृतत्वस्थेशानःयदन्नेनातिरोहति ॥ एतावानस्य महिमाअतोऽज्यायांचपुरुषःपादोऽस्यविद्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतंदिविअस्यार्थः (यत्भूतंचयत्भवं) जो पूर्व भया पुनः जो पीछे होइगो (इदंमर्वैवपुरुषः) यह यावत् ब्रह्माण्डरचनाहै सो सब उसी पुरुषको रूपहै (उतअमृतत्वस्यईशानः) संपूर्णमोक्षको स्वामीहैं (यद्भन्नेनअतिरोहति) आपनी अवस्थालोप करि यह संसाररूप भी होताहै (एतावानस्यमहिमा) ऐसी जाकां है महिमा (अतः ज्यायांचपुरुषः) इसीते श्रेष्ठ पुरुषभी कहावताहै (पादोऽस्यविद्वाभूतानि) एकपद विभूतिमें संसार में भूतमात्र सब रचनाहैं उत्पात्ति पालन संहारादि (त्रिपादस्यअमृतंदिवि) तीनिपद जो नाशरहित विभूति सो आकाशमेंहै ताकी महिमा अगमहै इत्यादि वाक्यनकरिहूँहै प्राप्तहोतीहै जाके पदकमलों कीरजपुनः पखुरीकेशरि आदि कमलको स्थूलरूप होताहै तथाइहां जिनकीनाभी कमलते ब्रह्माभये तिनकरिकैं चराचर मय जो ब्रह्माण्डरचनाहै सोई विराट् जिनको स्थूलरूपहै पुनः कमलमें सारांश मकरंद रस होत ताके रसिक रस लोभी भ्रमर होत जो नित्यही पान करत में तृप्त नहीं होते हैं तथा इहां जाके पद कमल को सारांश रस राम नाम है ताके रसिक जे त्रिपुरासुर कां नाश कीन्है ऐसे समर्थ शिव भगवान् हैं भाव प्रीति समेत निरंतर जपत में तृप्त नहीं होते हैं भगवान् यथा ऐ- श्वर्य धर्म यश श्री वैराग्य मोक्ष इति पट् भग युक्त होय ताको भगवान् कही ऐसे समर्थ शिव जिनको नाम जपते हैं ताही बल ते मृत्युकाल रहित हैं अरुकाशीमें मरण काल राम नाम उपदेशकरि जीव- मात्र को मुक्त करते हैं यह हाल इसी ग्रंथ में राज्याभिषेक समयस्तुति करत समय शिव आपही कहे इत्यादि जिनके नाम रसिक शिव भगवान् हैं ऐसे परमात्मा जो श्रीरघुनाथ जी तिनहिं दिनौ राति में अपने हृदय कमल में ध्यान करती हों ४६ ॥

यस्यवतारचरितानिबिरंचिलोकेगायंतिनारदमुखाभवपद्मजाद्याः ॥ आनंदजा
श्रुपरिषिक्तकुचाग्रसीमावागीश्वरीचतमहंशरणंप्रपद्ये ४७ सोयंपरात्मापुरु
षःपुराणःएषःस्वयंज्योतिरनन्तआद्यः ॥ मायातनुंलोकविमोहिनीयाधत्तेपरानुग्र
हएषरामः ४८ ॥

(विरंचिलोकेनारदमुखाभवपद्मजाद्याः यस्यवतारचरितानिगायंति) ब्रह्मलोक विषे नारद हैं मुख्यजिन में ऐसेऋषीश्वर शिवब्रह्मादिदेवता सबजाके अवतार को चरित गावते हैं (चवागीश्वरी आनंदजाश्रुपरिषिक्तकुचाग्रसीमागायतितंशरणंअहंप्रपद्ये) पुनः सरस्वती आनंद उमंगतेबहेहुये श्री- सुनतेभीजताहै छातीको अग्रभाग इसदशाते गावतीहै जाकोचरिततिनकी शरणको में प्राप्तहों अर्थात् अहल्याकहत कि नरनागस्वर्गकी कोकहैं ब्रह्मलोक में जाको पावनयश प्रकाशमान है कौनभांति नारद पराशर लोमशसनकादिऋषीश्वर तथा शिवब्रह्मादि देवता इत्यादि सबजाके अवतारकोचरित भावबालमीककृतजो भविष्य रामचरितहै सोईगावतेहैं नित्यतथा प्रेमानंदउमंगतेजोआसुबहतेहैंत्यहि जलतेसबछाती भीजिजातीहै ऐसप्रेम दशातिसरस्वती जाकोचरितगावतीहैं तिनश्रीरघुनाथजीकी में शरण में प्राप्तहों ४७ (परात्मा पुराणः पुरुषःसःअयं) आत्मतेपरे शुद्ध परमात्मा पुनः सनातन

पुरुष सो इनही है (एषःस्वयंज्योतिःअनंतआद्यः) इनही स्वयं प्रकाशमान जिनको अंतकोऊ नहीं पावतसबते आदिहैं (एपरामःपरअनुग्रह मायातनुधत्ते यालोकविमोहिनी) इनहीरामपरारे ऊपर सदादयाराखि मायामयतनु धारणकिये कौन मायाजो लोकन को विशेषि मोहितकरती है अर्थात् अहल्याकहत कि जो शुद्ध परमात्म सनातन पुरुषजो सर्वोपरि कहावत सो इनही हैं जो मेरेनयन गोचर हैं अरुइनही स्वयंप्रकाशमान जिनकी महिमा को अंतकोऊ नहींपावत ऐसेअनन्त स्वरूपते आदि इनहीरामसब जीवनपर सदादयाराखिभाव दर्शनमात्रमुलभजीव उद्धार हेतुजो लोकन को विशेषि मोहनहारी दिव्यमाया है त्यहिमयी परमअद्भुत स्वरूप धारण किये भावज्यहि रूपको देखत विमुख विषयीजीवभी सौभाविरुही प्रेमानंद ह्वै परमपद के अधिकारहिोते हैं ४८ ॥

अयंहिविश्वोद्भवसंयमानामेकंस्वमायागुणविम्बितोयः ॥ विरंचिविष्णुवीश्वरना
मभेदान्धत्तेस्वतंत्रःपरिपूर्णआत्मा ४९ नमोस्तुहेरामतवाह्मिपङ्कजंश्रिया
धृतंयक्षसिलालितंप्रियात् ॥ आक्रांतमेकेनजगत्त्रयंपुराध्येयंमुनीन्द्रैरभिमानव
र्जितैः ५० ॥

(परिपूर्णआत्मास्वतंत्र एषःअयंहि) भूतमात्र में परिपूर्ण व्याप्त जिनको आत्मरूपसोई स्वतंत्र एकइनही निश्चय करिसर्वोपरि हैं (यःविश्वउद्भवसंयमानांस्वमायागुण विम्बितः विरंचिविष्णु ईश्वर नामभेदान्धत्ते) जो प्रभुसंसार के उत्पत्ति पालन संहारादि व्यापारकरनेको अपनी मायाके गुणों में प्रतिविम्बित ह्वै ब्रह्माविष्णु शिवादिनाम भेदते धारणकीन्हे अर्थात् अहल्या कहत कि जो आत्मरूपते परिपूर्ण व्याप्त भूतमात्रको चैतन्य किहे हैं सोईसदास्वतंत्र जिनकी समता को दूसरा कोऊ नहीं एकइनही रघुनाथ जी निश्चयकरि सर्वोपरि हैं जो संसार के उत्पत्ति करनेको अपनी रजोगुणी माया में आपनी प्रतिविरूप प्रकटकरि तामें ब्रह्मानाम धारण कीन्हे तथा सनो गुणी मायामें प्रति विवितह्वै तामें विष्णु नामधारण कीन्हे त्यहिरूपते जगत्को पालन करते हैं तथा तमोगुणी मायामें प्रतिविवितह्वै तामें ईशनाम धारण करित्यहि रूपते जगत्को संहारकरतेहैं ४९ (हे रामतवाह्मिपङ्कजंश्रियावक्षसिधृतंप्रियात्लालितं) हे रघुनाथ जी आपके पदकमल लक्ष्मीजी अपनीछातीपरधरे प्यारते लाददुलारती हैं (पुराएकेनजगत्त्रयंआक्रांतं) पूर्वकालमें एकही पदकरिकै तीनिहूलोकनकोनापे (अभिमानवर्जितैः मुनीन्द्रैः ध्येयंतस्मैनमोस्तु) अभिमानरहित मुनीन्द्र न करिके ध्यानकरिबे योग्य तिनपद कमलन के अर्थ नमस्कारहै अर्थात् अहल्याकहत कि हे श्री रघुनाथजी आपके पदकमलन की कैसी महिमा है जिनको लक्ष्मी जी अपनी छातीपर धरेप्यारते लाददुलार पूर्वक नित्य सेवन करतीहैं पुनः पूर्वकालमें वावनरूपते एकही पदकरिकै तीनिहूलोकन को नापिलीन्हें क्षणमात्र में पुनः जिनके उरते अभिमानादि सब विकार जातरहे हैं ऐसे शुद्ध अंत सवाले मुनीन्द्रन करिके ध्यानकरिबे योग्यऐसे पदकमलनके अर्थमें नमस्कारकरती हों ५० ॥

जगतामादिभूतस्त्वंजगत्त्वंजगदाश्रयः ॥ सर्वभूतेष्वसंसक्तएकोभातिभवान्प
रः ५१ ॐकारवाच्यस्त्वंरामवाचामविषयःपुमान् ॥ वाच्यवाचकभेदेनभवा
नेवजगन्मयः ५२ ॥

(जगतांमादिभूतःत्वं) जगत् के आदि कारण आपही हों (जगत्त्वंजगत्आश्रयः) जगत्भी-
आपही हों काहेते जगत् आपही के आश्रय है (सर्वभूतेष्वसंसक्तोभवान्एकःपरःभाति) सर्वभूतनविषे

वास कीन्हे तौभी सबते अलग आप एक माया ते परे प्रकाश मान हौ अर्थात् अहल्या कहत कि हे प्रभु जगत् को उपजावन हारे आदि कारण आपही हौ पुनः जगत् आपही हौ भावजगत् मिथ्या ब्रह्म सत्य इत्यादि जगत् के आधार आपही हौ यद्यपि भूतमात्र विषे व्यापक तौभी सबते न्यारे हौ कौन भांति कारण मायाते परे अद्वितीय एक आपही स्वयं प्रकाशमान हौ (हेरामउंकारवाच्यत्वं) हेरघुनाथ जी प्रणव रूप आपही हौ कौन भांति (अविषयःपुमान्वाचां) विषय रहित पुरुष वाचक हौ (वाच्यवाचकभेदेनजगत्तमयःएवभवान्) स्वरूप नामभेद करिकै संसारमयी निश्चय करिकै आपहीहौ अर्थात् अहल्या कहत कि हे श्रीरघुनाथ जी पर ब्रह्म बोधक जो उंकार शब्द है सो आपही हौ भाव आपको जो राम नाम है ताहीते उंकार सिद्ध होत तहाँ वर्ण आगम वर्णविपर्यय वर्णविकार वर्ण नाश इति चारि रीति ते व्याकरण ते पद सिद्ध होत इहां रामशब्दमें रकार अकार मकार तानि वर्ण हैं सो वर्ण विपर्यय करिकै अकार आदिमें आई रकार मध्यगई अरम ऐसा पदस्थित भया (स्त्रीर्विसर्गः) इतिरकारकी विसर्ग भयी (हवे) इतिविसर्गकाउकारभई (उओ) इति ओकारभई। मानुस्वारः) इति उंसिद्ध भया इत्यादि उंकार वाच्य अर्थात् परब्रह्म परमात्म रूपआपहीहौ कैसे उंकार रूपहौ तहां बिना प्रकृति पुरुष मिले स्वरूप किसी को नहीं है तैसा नहीं इहां शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि जो इन्द्रियन की विषय है तिन करिके रहित भाव प्रकृति ते परे केवल पुरुष वाचकहौ पुनः वाच्यकहे यावत् रूप हैं अरु वाचक कहे यावत् नाम हैं ते सब भेद करिकै भाव प्रकृति में आपु प्रतिविवित भये सोई सब रूप हैं इत्यादि जगत् मयी निश्चयकरिकै आपही हौ दूसरा नहीं कछु है ५२ ॥

कार्यकारणकर्तृत्वफलसाधनभेदतः॥एकोविभासिरामत्वंमाययाबहुरूपया ५३ ॥

कर्तृत्व कर्ता यथा कुंभकारकारण जासों वस्तु बनाई जात यथा माटी साधन जाकी सहाय ते कार्य बनत यथा चक्र दण्ड डोरा ब्यौडुधापीसांचा आदि कार्य सिद्ध वस्तु यथाकुंभ फल जो वस्तुते प्रयोजन होत यथा जल भरि लावना इत्यादि (भेदतःमाययाबहुरूपयारामत्वंएकोविभासि) पूर्व कहे हुये भेद ते माया करिकै बहुत रूप हैं तिन में हेरघुनाथ जी एक आपही प्रकाश किहेहौ अर्थात् अहल्या कहत कि ब्रह्मा बिष्णु शिवादि जो लोक करताहैं कारण जो माया है साधन जो पंचीकृत अर्थात् पंचभूतनमय व्यापार यथा (अर्थपंच के) प्रथम वाय्वा पाग्न्या काशा महीभिः पंच भौति कारव्यं स्थूलशरीरं तत्कथ्यते प्रथमं दशेंद्रियाणि श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनश्चरसनं घ्राणकं तथा ॥ हस्तपादपायुशिश्नमुख मे वैन्द्रियाणि च (क्रमेण दश देवता यथा) दिक्सूर्यवायुवरुणआश्विनाविति ज्ञानदाः इन्द्रो बिष्णुर्यमश्चैव प्रजेशो ग्निश्च कर्मकाः ॥ आकाशतत्त्वतो ज्ञेयं द्वयमास्यं श्रुतिद्वयं ॥ त्वक्त्राहुद्वयं बायोरग्ने नैत्रपदद्वयम् ॥ सलिलाद्रसनालिंगं गुदं घ्राणं त्रितेराप ॥ एवंतत्त्वविभागेन चेन्द्रियाणां समुद्रवः शब्दोरूपस्पर्शनश्चरसोगंधस्तथैव च ॥ क्रमेण विषयास्ते पांज्ञातव्याः साधकोत्तमैः ॥ उत्क्षेपनादिहस्तस्य पादयोश्च चलनं तथा ॥ पायुशिश्नमुखादीनां विसर्गो भक्षणं क्रमात् ॥ नभसो मस्तके वासो द्वारमस्यास्ति श्रोत्रं ॥ आहारोप्यस्य विज्ञेयः श्रूयते यच्छुभाशुभम् ॥ वायो वासिस्तु नाभोस्थान्नासिकाद्वारमुच्यते ॥ तस्याहारो हि गंधः स्यात्स्वासोत्स्वासक्रिया स्मृताः ॥ पित्तबहिर्नैत्रद्वारमाहारोरूपदर्शनं ॥ ललाटे सलिलतंतस्य लिंगजिह्वा च द्वारके ॥ आहारो मैथुनंतस्य जिह्वाया पड्रसा स्मृताः ॥ हृदये तु क्षितं वासः स्याद्गुदं तस्य द्वारकं ॥ कामः क्रोधश्च लोभश्च मदमानावुभावपि ॥ पंचैते गगनस्यांशा जानांति परिहृताः जनाः ॥ प्रकृतयः पंच बायोः धवनंचलनंतथा ॥ संकोचनं प्रसारश्च तथैवोत्क्रमणं विदुः ॥ अग्नं रपि विदुः पंचनिद्राक्रांतिक्षुधा तथा ॥ अप्यालस्य मुखपंच समये समये यथा जलस्यापि प्रकृतयोरक्तं स्वेदो मुख

म्बुच ॥ रेतःपित्तचपंचैताः शरीरेस्मिन्प्रवर्द्धकाः ॥ अस्थिमांसं त्वचानाड्योलोमान्येवेति पंचधा ॥ एथि
व्यांशशरीरेस्मिन्विज्ञेयाः साधकोत्तमैः ॥ वायोसका शास्त्रितंचनभांसोपि प्रवर्तते ॥ सलिलान्मनए
वस्यात् बुद्धिजाताक्षितेरपि ॥ अहंकारोग्निसंजातोरुद्रस्तस्यास्ति देवता ॥ चित्तस्य देवता जीवो मन
सत्तचंद्रमा तथा ॥ ब्रह्माबुद्धेस्तथाज्ञेया वासुदेवादिकेपि च ॥ एवंचोत्पत्तिरेते पांज्ञातव्या साधकोत्तमैः ॥
हरिद्वायुरग्नोऽग्निपृथिवीपीतासितं जलं ॥ रुष्णवर्णमथाकासमेवं तत्त्वोपलक्षणं ॥ योगो विरागः स्मरणं
ज्ञानविज्ञानमेव च ॥ उच्चाटनं तथा ज्ञेयं चित्तस्यांशानि पद्यथा ॥ जपो यज्ञस्तपस्त्याग आचारो ध्ययनं
तथा ॥ बुद्धेर्देवोपदेगानि ज्ञातव्यानि मुमुक्षुभिः ॥ कर्म कर्मविकर्मादाव नियमेन वर्तते ॥ संकल्पश्च वि
कल्पश्च मनोऽवबुद्धो यथा ॥ मानः क्रोधश्च ईर्ष्या च पारुष्यमुपहिंसनं ॥ दृढवैरादयः हंकारे वर्तते लक्षणा
निपट् ॥ प्रागापानौ समानौ चोदानव्यानौ च वायवः ॥ नागः कूर्मः क्रकिलश्च देवदत्तो यनं जयः ॥ हृदि
प्राणो गुदे पानः समानौ नाभिसंस्थितः ॥ उदानः कंठदेशे स्याद्वायानः सर्वशरीरिणः ॥ नागं करोति गुह्यं द्वारं
कूर्मो नयनोन्मीलनं ॥ क्रकिलस्तु भुधाकारो देवदत्तोऽस्तु जृम्भणं ॥ मृत्युगे हेवसत्येवंपंचमो वेधनं जयः ॥
नाभिहृत्कण्ठजिह्वोत्थाश्च तस्त्रैः क्रमतो गिरः ॥ परा तथा च पश्यंती मध्यमा वै खरा च ताः ॥ श्रीसीता
रामयोस्तत्त्ववर्णनं सापराभवेत् ॥ यथात्मजीवतत्त्वंच पश्यंती किं धेयत्तदा ॥ स्वर्गादीन् धर्मकामार्थान्
वर्णयेत्सा तु मध्यमा ॥ व्यवहारवैपरीप्रोक्ता केवलं यच्च प्राकृतं इति ॥ पञ्चभौतिकं स्थूलशरीरं विश्वाभि
मानं प्रजापति देवता जाग्रदावस्था वैपरीवाणी अथ सूक्ष्मशरीरं पंचप्राणमनो बुद्धिर्दशेंद्रियसमन्वि
तं अपञ्चीकृतं स्थूल सूक्ष्मांगं भोगसाधनम् ॥ इत्यादिसाधनं ह्ये भूतचराचर ब्रह्मांडरचना सो कार्यहै
पुनः गर्भवासजन्महानि वियोगरुजजरामरणनरक इत्यादि दुःखकरफलहै तथा अरुजशरीरभोजन वस-
न स्त्री पुत्र धनधाम राज्यभूषण वाहन स्वर्गादि सुखमीठाफलहै इत्यादि आपुके प्रतिविम्बरूप भेदते
मायाकरिकै अनेक रूप देखाते हैं तिनमें हे श्रीरघुनाथजी सर्वत्र एक आपही प्रकाशमानहौ यथा
सजल अनेकन कुंभधरिणीजे तिनसब में सूर्यवत् प्रतिबिंब देखाती है तिनमें एक सूर्यही प्रकाश किहै
हैं तथा माया में प्रतिबिंबवत् चराचरमें एक आपही प्रकाशमानहौ यथा विष्णुपुराणे ॥ स एव मूल
प्रवृत्तिर्व्यक्तिरूपी जगच्च सः ॥ तस्मिन्नेवलयं सर्वया तितत्र च तितृति ॥ कर्ता क्रियाणां सच इज्यते क्रतु
स एव तत् कर्मफलं च तस्य यत् युगादि यत्साधनमप्यशेषतो हरं किंचित् व्यतिरिक्तमस्ति ५३ ॥

त्वन्मायामोहितधियस्त्वां न जानंति तत्त्वतः ॥ मानुपत्वामिमन्यन्ते मायिनं परमेश्वर
म् ५४ आकाशत्वं सर्वत्र बहिरन्तर्गतोऽमलः ॥ असंगो ह्यचलो नित्यः शुद्धो बुद्धः
सदा ह्ययः ५५ ॥

(त्वन्मायामोहितधियः त्वां तत्त्वतः न जानंति) आपकी माया करिके मोहित है बुद्धि जिनकी ते
जन आपको यथार्थ तत्त्व नहीं जानते हैं काहेते (परमेश्वरम् मायिनं मानुपत्व अभिमन्यन्ते) परमेश्वर
परातत्त्व जो आपहौ तिनहि मायिक मनुष्य करि मानते हैं अर्थात् अहल्या कहत कि हे श्रीरघुनाथ
जी यद्यपि आप परात्पर परब्रह्महौ सब जीवनपर रूपाकरि सुलभ उद्धार हेत राजकुमार रूपते
अवतीर्ण भयो परंतु आपकी कारण मायाने त्रिगुणात्म अहंकाररूपते भूतमात्रमें प्रवेशहै आत्म-
दृष्टि खेंचि जीवबुद्धी करिदिया ताते देहधरि सुख भोगकी इच्छाकीन्ही जब देहपाये तब कार्यमायाने
शब्दस्पर्श रूप रस गन्ध मैथुनादि विषय रूपते प्रवेशहै जीवको इंद्रि सुख भोगमें लगाय देह बुद्धी
करिदिया तत्र ज्ञान विचार रहित जो देखतेहैं सोई मानिलेतेहैं इत्यादि आपकी माया करिके मो-

हितहै बुद्धि जिनकी ते विषयीजन आपको यथार्थ तत्त्व नहीं जानते हैं काहेते परमेश्वर परातत्त्व जो आपहों तिनहिं नरनाट्य देखि मायामय मनुष्य विषयासक्त मानते हैं ५४ (त्वंअमलःआकाश-वत्बहिःअन्तस्तर्बत्रगतः) आप निर्मल आकाशकी नाई बाहिर भीतर सर्वत्र व्यापकहौ (नित्यःअसंगोहिअचलः) सनातन संग रहित निश्चय करि स्थिर रहतेहौ (सदाशुद्धःशुद्धःअद्वयः) सदा एक रस ज्ञान अद्वयहौ अर्थात् अहल्या कहत कि हे श्रीरघुनाथजी आप कामादि मल रहित अमल आकाशकी नाई भूतमात्रन के बाहेर भीतर व्यापक नित्य अर्थात् सनातनहौ किसीको संग नहीं राखतेहौ निश्चय करि अचल भाव कछुभी क्रिया नहीं करतेहौ सदा शुद्ध ज्ञानरूप एक आपहीहौ दूसरा नहीं ५५ ॥

योषिन्मूढाहमज्ञातेतत्त्वंजानेकथंविभो ॥ तस्मात्तेशतशोरामनमस्कुर्व्याङ्मनन्य
धीः ५६ देवमेयत्रकुत्रापिस्थितायाअपिसर्वदा ॥ त्वत्पादकमलेऽसक्ताभक्तिरेव
सदास्तुमे ५७ ॥

(अहंयोषित्मूढाअज्ञातेविभोतेतत्त्वंकथंजाने) मैं स्त्रीजाति मूढाभाव विचारहीन मोहवश अज्ञा-नहौं हे समर्थ प्रभु आपको यथार्थतत्त्व कैसे जानिसकौं (तस्मात्अनन्यधीःहेरामतेशतशोनेमःकुर्व्या) ताते अनन्य बुद्धि सो हे रघुनाथजी आपको सैकरो नमस्कार करतीहौं अर्थात् अहल्या कहत कि जो तत्त्व ज्ञानवन्त योगी जननको जानिवो दुर्घटहै तहां मेंतौ स्त्रीजाति सहज स्वभावही मूढभाव हानिलाभ दुखको विचार नहीं मोहवश जो भावै सोई करिडारना ऐसी अज्ञानहौं हेविभो सबभांति समर्थ आपको यथार्थ तत्त्व कैसे जानिसकौं ताते सबको आस भरोसा त्यागि निसोत शरणागतीको भरोसा राखि इति अनन्य बुद्धि सो हे रघुनाथजी आपको सैकरो नमस्कार करतीहौं ५६ (देवयत्र कुत्रापिमेस्थिताया) हे देवस्वयंप्रकाशरूप जहां कहौं मैं रहौं तहां (सर्वदाअपित्वत्पादकमलेअस-क्ता) सब कालमें निश्चय करिकै आपके पद कमलनमें मेरामन आसक्त बनारहै इत्यादि (भक्तिः एवमेसदाअस्तु) आपकी भक्ति निश्चय करिकै मेरे उरमें सदा बसीरहै अर्थात् अहल्या प्रार्थना करत कि स्वयंप्रकाशमान हे श्रीरघुनाथजी यह कृपा कीजिये कि अपने कर्मन वश ज्यहिलोक में जौनी योनिमें जन्मपाय जहां कहीं रहौं तहां निरन्तर मेरामन निश्चय करिकै आपके पदकमलनमें बसा रहै कबहुं विलग न होवै इसी प्रेमापरादशाते आपकी उत्तम भक्ति निश्चय करिकै मेरे उरमें सदा बसीरहै भाव जन्म जन्मांतर आपहीकी भक्ति सदाकरौं यह कृपा करि दीजिये ५७ ॥

नमस्तेपुरुषाध्यक्षनमस्तेभक्तवत्सल ॥ नमस्तेस्तुहषीकेशनारायणनमोस्तुते५८
भवभयहरमेकंभानुकोटिप्रकाशंकरधृतशरचापंकालमेघावभासम्॥ कनकरुचिर
वस्त्रंरत्नवत्कुंडलाढ्यं कमलविशदनेत्रंसानुजंराममीडे ५९ ॥

(पुरुषाध्यक्षतेनमःभक्तवत्सलतेनमः) हे पुरुषमात्रके साक्षीरूप आपके अर्थ नमस्कारहै यथा गाय लघुबद्धवा पर प्रीति राखत तथा भक्तनपर प्रीति राखनेवाले हे भक्तवत्सल आपके अर्थ नम-स्कारहै (हृषीकेशतेनमःअस्तुनारायणतेनमःअस्तु) हे इन्द्रियनके स्वामी आपके अर्थ नमस्कार है जीवनके अन्तरवास करनेवाले अंतर्धामीरूप हे नारायण आपके अर्थ नमस्कारहै ५८ (भवभयहरं एकं) संसारकी भयजन्म मरणादि हरिलेनेको एक आपही समर्थहौ (कोटिभानुप्रकाशं) करोरिन सूर्यनको ऐसी प्रकाश तनुमें है (शरचापंकरधृत) बाण धनुष हाथमें धारण किहे (कालमेघावभा

सम्) नील मेघवत् तनुकी प्रभाहै (कनकरुचिरवस्त्ररत्नवत्कुण्डलाढ्यं) सोनेकैसी वर्ण सुन्दरपीत पट धारण किहे रत्नजटित कुंडल काननमें शोभित (कमलविशदनेत्रं सानुजं राममीडे) कमलसम अमल नेत्र तिनहिं सहित लक्ष्मण श्रीरघुनाथजीकी में स्तुति करतीहैं अर्थात् अहल्या कहत कि आपके ऐश्वर्यरूपमें करोरिन सूर्यनकी ऐसी प्रकाशहै अरु संसारकी भयजन्ममरणादि हरिवेको एक आपही समर्थहौ पुनः माधुर्यरूपमें नील मेघनकैसी तनुमें शोभाहै वामकरमें धनुष दहिने में बाण धारण किहे कटिमें कनक वर्ण पीतपट शोभित कनकमय रत्नजटित कुंडल कानोंमें विराजमानहैं कमलसम अमल विशाल नेत्र जिनके तिनहिं लक्ष्मण सहित श्रीरघुनाथजीकी में स्तुतिकरतीहैं भावप्रसिद्ध सन्मुख दर्शन पायों इति अहोभाग्यहै ५६ ॥

स्तुस्त्वैवंपुरुषं साक्षाद्वाघं पुरतः स्थितम् ॥ परिक्रम्य प्रणम्याशु सानुज्ञाता ययौ पति
६० अहल्याया कृतं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ॥ समुच्यतेऽखिलैः पापैः परं ब्रह्माधि
गच्छति ६१ पुत्राद्यर्थे पठेद्भक्त्या रामं हृदि निधाय च ॥ संवत्सरेण लभते वंध्या
अपि सुपुत्रकम् ६२ ॥

(पुरुषं साक्षात् पुरतः स्थितं) पुरुष जो रघुनाथजी तिनहिं प्रसिद्ध आगे खड़े देखि अहल्या (एवं स्तुत्वा परिक्रम्य प्रणम्य) इस प्रकारते स्तुति परिक्रमा प्रणाम करिकै (सानुज्ञाता आशुपतिं ययौ) प्रभुकी आज्ञाते शीघ्रही पति समीप जातीभई अर्थात् शिवजी कहत कि पुरुषार्थ करनेवाले भावपदरजद्वै अहल्याको पापशापते उद्धार करि दीन्है ऐसे पुरुष श्रीरघुनाथजी तिनहिं प्रसिद्ध सन्मुख खड़े देखि अहल्या इस प्रकारते स्तुति कीन्ही पुनः परिक्रमा करि प्रणाम कीन्ही पुनः प्रभुकी आज्ञापाय शीघ्रही पतिके समीपको जातीभई ६० (अहल्यायाः कृतं स्तोत्रं भक्तिसंयुतः यः पठेत्) अहल्या को कियाहुआ यह जो स्तोत्रहै ताहि भक्ति सहित जो निष्काम पाठ करताहै (सखिलैः पापैः मुच्यते परं ब्रह्माधिगच्छति) सो सम्पूर्ण पाप न करिकै छूटि परब्रह्मके समीप ताको प्राप्त होत अर्थात् शिवजी माहात्म्य कहत कि अहल्याको कियाहुआ यह जो रघुनाथजीको स्तोत्र है ताहि प्रेमाभक्ति सहित जो जन पाठ करताहै सो सब प्रकारके पापनते छूटि परब्रह्मकी समीप ताको प्राप्त होताहै ६१ (पुत्रादियर्थे रामं हृदि निधाय च भक्त्या पठेत्) पुत्रादि प्राप्ति अर्थ जो जन रघुनाथजीको ध्यान हृदयमें राखि पुनः भक्ति करिकै पाठ करताहै (संवत्सरेण वंध्या अपि सुपुत्रकं लभते) एक वर्ष पाठ करिकै वंध्याभी निश्चय करिकै सुंदर पुत्रलाभपावै अर्थात् सकामहै पुत्रादि प्राप्ति अर्थ शुद्धहै आसन पर बैठि मंत्रराज की रीति अग्न्या सादि करि पोड़शोपचार पूजन करि श्रीरघुनाथजी को ध्यान हृदयमें राखि भक्ति करिकै भाव प्रभुमें प्रीति राखें जो जन नित्य पाठकरै तो एक वर्षमात्र में प्रसूता की कौनवात जो स्त्री वंध्याभी होवै सोभी निश्चय करि सुन्दर स्वरूपवत सुधर्मपुत्र लाभपावै ६२ ॥

सर्वान्कामानवाप्नोति रामचंद्रप्रसादतः ६३ ब्रह्मघ्नो गुरुतल्पगोपि पुरुषः स्तेयी
सुरापीपिवा ॥ मातृभ्रातृविहिंसकोपि सततं भोगे कबच्चातुरः ॥ नित्यं स्तोत्रमिदं ज

पनरघुपतिं भक्त्या हृदि स्थं स्मरन् ॥ ध्यायन् मुक्तिमुपैति किं पुनरसौ स्वाचारयुक्तो नरः ६४
इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे पञ्चमः सर्गः ५ ॥

(रामचन्द्रप्रसादतःसर्वान्कामान्अवाप्नोति) यथा एकपुत्र प्राप्ती हेतु कहे इसीविधि पाठ करने से श्रीरघुनाथजी की कृपाते अर्थ धर्मादि सब प्रकारकी कामना प्राप्तहोती है ६३ (ब्रह्मघ्नःअपिपुरुषःगुरुतल्पगः) जो ब्राह्मणको घात कियाहोय अथवा निश्चयकरि जो पुरुष गुरुकी शय्यापर पाँव धराहोय (स्तेयीवाअपिसुरापी) सोना आदिको चोरावने वाला अथवा निश्चय करि नित्य मद पीनेवाला (मातृभ्रातृविहिंसकः) माता अथवा भाईको मारनेवाला (सततंअपिआतरःभोगैकैव द्वः) नित्यही निश्चय करि जे आतुरतासहित परस्त्री आदि विषय भोगमें असक्त रहतेहैं सोऊजो (इदंस्तोत्रंनित्यंजपन्भक्त्यारधुपतिहृदिस्थंस्मरन्ध्यायन्मुक्तिंउपैति) इसस्तोत्रकोनित्यनेमते पाठ करै अरुभक्ति करिकै श्रीरघुनाथजी को हृदय बिपेस्थित नामस्मरण रूपको ध्यानराखते मुक्तिपदको प्राप्तहोत (पुनः स्वाचारयुक्तःनरः असौर्कि) पुनः जो आपने धर्मआचार युक्त मनुष्य हवैपाठकरि मुनि पावै ऐसा कहना क्या है अर्थात् शिवजी कहत किजो ब्रह्मदोषी गुरुशय्यापर पाँवधरनेवाला सोना आदि चोरावनेवाला मदपीनेवाला माता भाईको घातक आतुर हवै नित्य स्त्री भोगमें असक्त ऐसे पापी जनभी नामस्मरण नामरूप को ध्यान हृदय में राखिभक्ति सहित जो नित्य इस स्तोत्र को पाठकरै तौ सब पापनाश हवै मुक्ति पदको जाइपुनः जो आपने धर्म आचार सहित पाठकरै ताकीमुक्ति होना यहकौन बात है वह तौमुक्तिको अधिकारिन है ६४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखबल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेअहल्यास्तुतिवर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ५ ॥

सूतउवाच ॥ विश्वामित्रोथतंप्राहराघवंसहलक्ष्मणं ॥ वयंगच्छाममिथिलांजन
केनाभिपालितं ॥ १ ॥ दृष्ट्वाक्रतुवरंपश्चादयोध्यांगन्तुमर्हसि ॥ इत्युक्त्वाप्रययौ
गंगामुत्तर्तुसहराघवः ॥ तस्मिन्कालेनाविकेननिषिद्धोरघुनन्दनः ॥ २ ॥

सवेया ॥ पद धोवत केवट धन्य भयो मिथिलाहि गये तरि गंग यदा । जनकाय मिले नृप मंडल
हारत भंग किये शिव चाप तदा ॥ लखि पत्र चले अवधेश लिये रथ बाजि गजादिक भूरि पदा ।
सब व्याहि बधूटिन धाम चले सिय सानुजराम नमामि सदा ॥ (अथ सहलक्ष्मणराघवन्तंविश्वामि-
त्रःप्राह) सूतजी बोले कि अब लक्ष्मण सहित जो रघुनाथ जी तिन प्रति विश्वामित्र कहते हैं
(वयंमिथिलांगच्छामजनकेनअभिपालितां) हम तुम सब जनकपुर को चलते हैं जो राजा जनक
करिकै पालित हैं अर्थात् शौनकादिप्रति सूतजी बोले कि अहल्या उद्धार भये पर अब लपण सहित
रघुनन्दन प्रति विश्वामित्र कहत कि अब समाज सहित हम जनक पालित मिथिलापुर को चलते
हैं १ (क्रतुवरंदृष्ट्वापश्चात् अयोध्यांगन्तुमर्हसि) यज्ञ उत्तम देखिकै पाछे अयोध्याजी जो जाना
(इतिउक्त्वासहराघवः गंगांउत्तर्तुप्रययौ) ऐसा कहि सहित रघुनन्दन मुनि गंगा उतरने हेतु तट स-
मीप गये (तस्मिन्कालेनाविकेनरघुनन्दनः निषिद्धः) नावपर सब चढ़ने लगे तयहि समय में केवट
करिकै रघुनन्दन रोके गये अर्थात् विश्वामित्र कहत कि हे रघुनन्दन जनक जी ने प्रतिज्ञा की
है कि जोधनुभंगकरै ताकोकन्याव्याहव इतिउत्तमयनुषयज्ञहै ताकोदेखिकैतय अयोध्याजीको चलिये
इत्यादि कहिपुनः विश्वामित्र रघुनन्दन सहित पारउतरने हेतु गंगा तीरजाय नावपर चढ़नेलगे
ता समय केवट ने रघुनन्दन को न चढ़ने दिया २ ॥

नाविकउवाच ॥ क्षालयामितवपादपंकजं नाथ दारुदृषदा किमन्तरम् ॥ मानु
षीकरणचूर्णमस्ति ते पादयोरितिकथा प्रथीयसी ३ पादांबुजं ते विमलहि कृत्वा प
श्चात् परंतीरमहं नयामि ॥ नो चेत्तरीसद्युवतीमलेन स्याच्चोद्विभो विद्धि कुटुंबहानिः ४ ॥

(नाथ तव पादपंकजं क्षालयामि) हे नाथ आपके पदकमल में थोड़े कैं नाव पर चढ़ाइ हों काहेते (ते
पादयोः मानुषीकरणचूर्णमस्ति) आपके पायन विषे पापाण ते मनुष्य करण हारा कछु चूर्ण रहता है
(इतिकथा प्रथीयसी) आपके पदन की कथा अहल्या द्वारा प्रसिद्ध है (दारुदृषदाः किमन्तरम्) काठ
पत्थर ते क्या भेद है अर्थात् केवट कहत कि हे रघुनाथजी आपके पदकमल धोइलेउँ तब नाव पर
चढ़िये अरु बिना धोये किसी भांति न चढ़ाइ हों काहेते आपके पायन विषे पापाण ते मनुष्य करण हारा
कछु चूर्ण रहता है जो शिलारूप में लागि गये ते अहल्या दिव्य देह स्त्री हवै गई सो कथा प्रसिद्ध है जो
पापाण ते स्त्री भई तौ काठ पापाण ते क्या भेद है पदरेणु लागे काठ की नाव भी स्त्री है जाइगी ३ (ते
पादांबुजं हि विमलकृत्वा) आपके पदकमल निश्चय करि धोय अमल करि नाव पर चढ़ाय (पश्चात्
अहं परंतीर नयामि) त्यहि पाछे मैं गंगा पार तीर को लै जाइ हों (नो चेत्तरीसद्युवतीमलेन) नहीं
तौ नाव उत्तम स्त्री भूपित हई करि (चोद्विभो कुटुंबहानिः विद्धि) तामें तौ हे समर्थ प्रभु मेरे कुटुम्ब की
हानि जानिये अर्थात् केवट कहत कि हे श्रीरघुनाथजी प्रथमतो आपके पदकमल निश्चय करि
रजधोय अमल करि त्यहि पाछे नाव पर चढ़ाय गंगा पार तीर को लै जाइ हों नहीं तौ जो बिना पद
धोये चढ़ि जेहौ तौ पद की रज लागे ते मेरी नाव उत्तम स्त्री भूषण हवै जाइगी भाव जो नीच स्त्री होती
तौ मेरे काम की होती अरु उत्तम तौ किसी महाऋषीश्वर के योग्य होइगी सोऊ मेरे हाथ ते गई तामें
तौ हे समर्थ प्रभु मेरे कुटुम्ब की हानि जानिये भावइसी नाव की कमाई सब खाते हैं जब नाव न रही
तब सब परिवारै भूखों मरि जाई तामें आपको क्या लाभ है यह विचारि पद धोने दीजिये संवोधन में विभो
कहवै को भाव आप समर्थ हों मोको भी भवसागर पार करौ ४ ॥

इत्युक्त्वा क्षालितौ पादौ परंतीरं ततो गताः ॥ कौशिको रघुनाथेन सहितो मिथिलां
ययौ ॥ ५ ॥ विदेहस्य पुरप्रान्तं ऋषिवाटं समाविशत् ॥ प्राप्तं कौशिकमाकर्ण्य ज
नकोऽतिमुदान्वितः ॥ ६ ॥

इति उक्त्वा पादौ क्षालितौ ततः परंतीरं गताः) ऐसा कहि प्रभु की आज्ञा पाय केवट प्रभु के दोऊ पद
धोय तदनंतर उस पार तीर लै गया तब (रघुनाथेन सहितः कौशिकः मिथिलां ययौ) रघुनंदन करि
कैं सहित विश्वामित्र मिथिलापुर को जाते भये अर्थात् बिना पांय धोय चढ़ागे तौ पद रज लागे मेरी
नाव दिव्य स्त्री हवै काहू ऋषीश्वर को बरैगी अरु बिना नाव मेरा परिवार भूखन मरि जाइगो ताते पद
रजधोय नाव पर चढ़ाइ हों ऐसा कहि प्रभु की आज्ञा ते वड़ी भाग्य वाला केवट कठौता में जल लाय
प्रभु के दोऊ पांय धोय पान करि परिवार सहित कृतार्थ हवै तब सब को चढ़ाय खेय नाव गंगा पार लै गया
नाव ते उतारि रघुनंदन करि कैं सहित विश्वामित्र मिथिलापुर को गये ५ (विदेहस्य पुरप्रान्तं) विदे-
ह के पुर ते विलग (ऋषिवाटं समाविशत्) जहां ऋषि को वासर है तिस मार्ग में सम्पूर्ण समाज
सहित प्रवेश कीन्हें चले जाय सुथल देखि उतरे (कौशिकं प्राप्तं आकर्ण्य) विश्वामित्र हि आये सुनि
(जनकः अतिमुदान्वितः) जनकजी अति आनंद सहित ६ ॥

पूजाद्रव्याणिसंगृह्या सोपाध्यायः समाययौ ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याथ पूजयामास कौशिकः

कम् ७ पप्रच्छराघवौदृष्ट्वासर्वलक्षणलक्षितौ ॥ द्योतयन्तौदिशःसर्वाश्चंद्रसूर्याविवापरौ ८ कस्यैतौनरशार्दूलौपुत्रौदेवसुतोपमौ ॥ मनःप्रीतिकरौमेघनरनारायणाविव ६ ॥

(पूजाद्रव्याणिसंगृह्य) पूजन करने की सब वस्तु लैकै (सउपाध्यायःसंआययौ) सहित कुल गुरु अन्य मंत्री आदि सम्पूर्ण समाज युत समीप आयकै (दण्डवत्प्रणिपत्यअथकौशिकंपूजयामास) जनकजी दण्ड प्रणाम करि तब विश्वामित्र जी को पूजन कीन्हें अर्थात् विश्वामित्र आय यह मुनि जनकजी अत्यन्त आनन्द ह्वै जल गन्धदल फूल फल धूप दीपादि पूजन की सामग्री लै गुरुसत्तानन्द सहित मंत्री आदि समाज सहित समीप जाय प्रथम दण्डप्रणाम करि तब अर्घ पाद्यादि षोडशोपचार विश्वामित्र जी को पूजन कीन्हें ७ (अपरौचन्द्रसूर्यौद्वसर्वादिशःद्योतयन्तौ) दूसरे चंद्र सूर्यनकी सम सब दिशनको प्रकाश करनेवाले तथा (सर्वलक्षणलक्षितौराघवौदृष्ट्वापप्रच्छ) स्वरूपता स्वभावादि सब शुभ लक्षण सहित श्रीरघुनन्दन लपणको देखि मुनि ते जनकजी पूछते भये ८ (देवसुतउपमौनरशार्दूलौएतौकस्यपुत्रौ) देवपुत्रन की उपमा देने योग्य मनुष्यन में उत्तम ये दोऊ किसके पुत्र हैं (नरनारायणौद्वअद्यमेमनःप्रीतिकरौ) नर नारायण की सम अबतो मेरेमन में प्रीति उत्पन्न करि रहे हैं अर्थात् शीतल स्वभाव गौर वर्ण दूसरे चंद्र सम लपणलाल तथा परम प्रतापवन्त दूसरे सूर्य सम रघुनाथजी ते दशौदिशि प्रकाश कीन्हें पुनः सामुद्रिककी रीति सब उत्तम लक्षण स्वरूपमें देखात तथा शील संकोच नम्रतादि स्वभावमें देखाते हैं ऐसे दांऊ भाइन को देखि मुनि सों जनकजी पूछते हैं हे मुनि देवन के ऐसे पुत्र मनुष्यन में उत्तम ये दोऊ किसके पुत्रहैं कित कारण पूछताहौं कि या समय हमारे मन में ऐसी प्रीति उत्पन्न करते हैं यथा ये नरनारायणहैं ६ ॥

प्रत्युवाचमुनिःप्रीतोहर्षयन्जनकंतदा ॥ पुत्रौदशरथस्यैतौभ्रातरौरामलक्ष्मणौ ॥

१० ॥ मखसंरक्षणार्थायमयानीतौपितुःपुरात् ॥ आगच्छन्राघवोमार्गेताटकांविश्वघातिनीम् ११ शरेणैकेनहतवान्नोदितोऽमितविक्रमः ॥ ततोममाश्रमं गत्वाममयज्ञविहंसकान् १२ ॥

(ततोप्रीतिःमुनिःहर्षयन्जनकंप्रतिउवाच) राजा के वचन सुनि प्रीतिपूर्वक मुनि विश्वामित्र हर्ष उपजावने वाले वचन जनक सों बोलते भये (दशरथस्यपुत्रौएतौरामलक्ष्मणौभ्रातरौ) दशरथ के पुत्र ये राम लक्ष्मण नाम दोऊ भाय हैं १० (मखसंरक्षणार्थायपितुःपुरात्) अपनी यज्ञ के रक्षा करिवे अर्थ इनके पिताको पुर जो अयोध्या जी तहां ते हम लै आये (मार्गेआगच्छन् राघवः विश्वघातिनीम्ताटकाम्) राहमें आवत समय रघुनन्दन संसारको घात करनेवाली ताड़का को ११ (नोदितःअमितविक्रमः एकेनशरेणहतवान्) मेरी प्रेरणा ते बड़े पराक्रमी रघुनन्दन एकही बाण करिकै मारे अर्थात् रघुनन्दन की प्रशंसा पूर्वक जनक जी के वचन सुनि मुनि के मनमें प्रीति उपजी त्यहि सहित विश्वामित्र जी बल वीरता प्रताप में रघुनन्दन के चरित कहि धनुभंगको बोध करवावा चाहते हैं इति हर्ष उपजावने वाले वचन जनक प्रति बोलतेभये कि श्याम बड़े रामनाम गौर छोटे लक्ष्मणनाम दोऊ भाई अवधेश महाराज दशरथ के पुत्र हैं यहां आवने को हेतु यह है कि मैं अपनी यज्ञ के रक्षा करिवे अर्थ मैं जाय याचना करि दशरथ जी ते मांगि अयोध्या ते लै चलेउं राहमें आवत समय संसार को नाशकरनेवाली ताड़का देखि परी ताके बध करने को मैंने आज्ञा

दिया ताको अंगीकार करि रघुनन्दन ऐसे महा पराक्रमी हैं कि एकही बाण प्रहार करि ताड़का को बध किया (ततःममआश्रमंगत्वा) तदनन्तर रघुनन्दन मेरे आश्रम को गये (ममयज्ञविहंसकान्) तहां जे मेरी यज्ञ के विशेषि विध्वंस करनेवाले रहे तिनहिं १२ ॥

सुबाहुप्रमुखान्हत्वा मारीचसागरेऽक्षिपत् ॥ ततो गंगातटे पुण्यगौतमस्याश्रमे शुभे १३ गत्वा तत्र शिलारूपा गौतमस्य बधूस्थिता ॥ पादपंकजसंस्पर्शाज्जा तामानुषरूपिणी १४ दृष्ट्वा हल्यानमस्कृत्य तया सम्यक् प्रपूजितः + ॥ इदानीं द्रष्टुकामस्ते गृहे माहेश्वरं धनुः १५ ॥

(सुबाहुप्रमुखान्हत्वा) सुबाहु सेनापति रहा जिनमें त्यहि सहित राक्षसी सेना को नाश किये अरु (मारीचसागरेऽक्षिपत्) मारीचहि बाण बे गते उड़ाये दिये सो उस किनारे जाय समुद्र में गिरा अर्थात् मार्गमें ताड़का मारि पुनः मेरे आश्रम में आये तहां यावत् मेरी यज्ञ के विध्वंस करता राक्षस रहे तिनमें मुखिया सुबाहु सहित सब राक्षसन को सन्मुख समर में नाश करि डारे अरु मारीच को बाण वेग ते उड़ाये दिये सो जाय उस किनारे समुद्रमें गिरा इस भांति मेरी यज्ञ पूर्ण करिके इधरको चले (ततःपुण्यगंगातटे) तदनंतर पुण्य मय गंगातटमें (गौतमस्य शुभे आश्रमे) १३ (गत्वा) गौतम ऋषिके मंगलीक आश्रम में पहुँचे (तत्र गौतमस्य बधूशिलारूपास्थिता) तहां गौतम की स्त्री अहल्या शिलारूपास्थित रहे सो (पादपंकजसंस्पर्शात्मानुषरूपिणी जाता) रघुनन्दन के पद कमल छुइ जात ही शिला ते मनुष्यरूप हवै गई अर्थात् विप्रवामित्र कहत कि खलमारि यज्ञ पूर्ण करि मेरे संग रघुनन्दन इधरको चले पीछे पुण्यमय गंगातट में जो गौतम ऋषिको मंगलीक आश्रम रहै तामें आय पहुँचे तहां गौतम की स्त्री अहल्या पाति शाप ते शिलारूप परी रहै सो रघुनन्दन के पद कमल की रज छुइ जात ही शिलारूप ते मनुष्य रूप हवै गई १४ (अहल्यां दृष्ट्वा नमस्कृत्य) अहल्या जो रहै ताहि देखि रघुनन्दन नमस्कार कीन्हें (तया सम्यक् प्रपूजितः) त्यहिकरि के रघुनन्दन सम्पूर्ण प्रकार पूजे गये अर्थात् अहल्या को प्रसिद्ध देखि रघुनन्दन प्रणाम कीन्हें पुनः अहल्या ने षोडशोपचार पूजन किया पुनः स्तुति करि पति समीप गई हे जनकजी (इदानीं ते गृहे माहेश्वरं धनुः द्रष्टुकामः) अब या समयमें तुम्हारे घरमें जो महादेवजी को धनुष है ताको देखने की कामना रघुनन्दन को है अर्थात् विप्रवामित्र जी सब बातन ते भाव दर्शाये यथा मेरे हित हेतु माता पिता के बियोग दुख न माने प्रसन्न रहै भाव त्याग वीरता सहित धर्मवंत है पुनः ताड़का सुबाहु आदि सबल वीरन को देखि शंका न आई प्रसन्नता सहित सन्मुख समरमें क्षणभरेमें सबको नाश करि दीन्हें भाव युद्ध वीरता सहित तेज प्रतापवंत हैं जिनकी पद रज लागे अहल्या पाप शाप ते छूटि पावन भई भाव दया वीरता सहित शक्तिवंत है इत्यादि सब कार्य करि अब या समयमें हे जनकजी तुम्हारे घरमें जो शिवजी को धनुष है सो देखा चाहते हैं भाव बल भी प्रसिद्ध किया चाहते हैं १५ ॥

पूजतं राजभिस्सर्वैर्दृष्टं मित्यनुशुश्रुम ॥ अतो दर्शय राजेंद्र शैवं चापमनुत्तमम् १६ दृष्ट्वा यौध्यां जिगमिषुः पितरं दृष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्त्वा मुनिनाराजः पूजार्हाविति पूजया १७ ॥

(सर्वैः राजभिः दृष्टं पूजितं इति अनुशुश्रुम) सब राजन करिके देखा गया अरु पूजा गया है (अतः राजेंद्र अनुत्तमं शैवं चापं दर्शय) इस कारण हे राजेंद्र जनकजी उत्तम शिव को धनुष देखाइये अर्थात् विप्रवामित्र

+ पादाबुरजस्पर्शापि शापाद्विमुक्तिता ॥ यह अर्द्धश्लोक किसी प्रतिमें है किसीमें नहीं जरु प्रसंगसमाप्त के पीछे होता है ताते त्रैपक से देखाता है ॥

कहत कि लोकन के यावत् राजा आये तिन करिकै उठाय देखागया जब न उठा तबमनतेहारि मा-
नि पूजागया भाव अचल अतुट जानि धूमि जाय वैठिगये इसकारण हे राजन् में उत्तम जनक जी
उत्तम शिवको धनुष रघुनन्दन को देखाइये १६ (दृष्ट्वापितरं द्रष्टुं इच्छति अयोध्यां जिगमिषुः) धनुष
को देखि रघुनन्दन पिताके देखने की इच्छा किहे अयोध्याको जावा चाहतेहैं (मुनिना डालि उक्त्वा)
मुनि करिकै ऐसे वचन कहे गये (पूजाहौं डालि राजा पूजया) पूजन करिवे योग्य दोऊ राजकुमार हैं
इत्यादि विचारि राजा विधिवत् दोऊ राजकुमारन को पूजे अर्थात् विश्वामित्र कहत कि हे
जनकजी आतुरता याते है कि धामत्यागेवीसदिन भये अरुसव कार्यभी ह्वै चुका ताते धनुष देखि
पिताके देखने की इच्छा है ताते शीघ्रही अयोध्याजीको जावा चाहते हैं ताते उत्तम शिव धनुष
रघुनन्दन को देखाइये ऐसा वचन जब विश्वामित्रने कहा तब दोऊ राजकुमारन को पूजवे योग्य पर-
ब्रह्म अवतीर्ण जानि पौडशोपचार पूजन कीन्हें १७ ॥

पूजयामास धर्मज्ञो विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ ततः संप्रेषयामास मंत्रिणं बुद्धिमत्तरम् ॥

१८ ॥ जनक उवाच ॥ शीघ्रमानय विश्वेश चापं रामाय दर्शय ॥ ततो गते मंत्रिवरे

राजा कौशिकमब्रवीत् ॥ १९ ॥ यदिरामो धनुः धृत्वा कोट्यांगुणं आरोपयद्गुणं ॥ तदा मया
त्मजा सीता दीयते राघवाय हि ॥ २० ॥

(विधि दृष्टेन कर्मणा धर्मज्ञः पूजयामास) वेदविधान देखि त्याहि कर्मन करिकै राजकुमारन
को पूजन करि (ततः बुद्धि मत्तरं मंत्रिणं संप्रेषयामास) तदनंतर वड़े बुद्धिवंत मंत्री जो हैं ताहि जनक
जी पठावते भये अर्थात् स्वरूप देखि प्रभाव सुनि जानिलिये कि परब्रह्म अवतीर्ण भये धनुष भी
तो रेंगे इत्यादि पूजवे योग्य विचारि जनकजी प्रथम वेदविधान कर्म न करि राजकुमारन को पूजि
पुनः बुद्धिवंत मंत्रीको पठाये १८ (विश्वेश चापं शीघ्रं मानय रामाय दर्शय) जनकजी बोले कि शिव
धनुष जल्दी उठवाइ लाय रघुनन्दनके अर्थ देखावौ (ततः मंत्रिवरे गते कौशिकं राजा अभ्रवीत्) मंत्री गये
संते विश्वामित्र प्रति राजा बोलते भये १९ (यदिरामः धनुः धृत्वा कोट्यांगुणं आरोपयत्) जो राम ध-
नुष को उठावैंगो सामें रोदा चढ़ावै (तदा सीता आत्मजामयाराघवाय हि दीयते) तौ सीता कन्या हम
करिकै राघवके अर्थ निश्चय करि दीजाय अर्थात् बुद्धिमान् मंत्री सों जनकजी बोले कि समूह सुभटन
को लै जाय शिव धनुष शीघ्रही लाय रघुनन्दन को देखावौ जब मंत्री गये तब विश्वामित्र सों जनक
जी कहे कि जो रघुनन्दन धनुष उठाय गोसानवाय रोदा चढ़ावै तौ सीता नामे कन्या मैं रघुनन्दनके
साथ निश्चय करि विवाहौ यह सुनाय धनुषंग व्यापार में उद्दीपन कराये २० ॥

तथेति कौशिकः प्राहरामं संवीक्ष्य सस्मितम् ॥ शीघ्रं दर्शय चापाग्यं रामायार्मित तेज

से २१ एवं ब्रुवति मौनीश आगताश्चापवाहकाः ॥ चापं गृहीत्वा वलिनः पंचसाहस्र

संख्यकाः २२ घंटाशतसमायुक्तं मणिवस्त्रैर्विभूषितं ॥ दर्शयामास रामाय मंत्रीमंत्र

वतांबरः २३ ॥

सस्मितं रामं संवीक्ष्य कौशिकः प्राह तंथाडालि) मुस्कान सहित रघुनन्दनकी दिशि देखिके विश्वाम-
ित्र बोले कि हे राजन् जैसा आप कहतेहौ तैसाही होइगो (अमित तेजसे रामाय चापाग्यं शीघ्रं दर्श-
य) अमित है तेजजिनमें ऐसे रघुनन्दन के अर्थ धनुषनमें अष्टजो पिनाक ताहि शीघ्र देखाइये २१ एवं
ब्रुवति मौनीश चाप वाहकाः आगताः) इस प्रकार मुनिवर कहत हीरहे तैसेही धनुषके लावने वाले आय

गये (पंचसाहस्रसंख्यकाः वलिनःचापंगृहीत्वा) पांचहजार गनती में वलीजन धनुषकोमभूसा परधरे लै आये अर्थात् राजाके वचनसुनि मुसकाय रघुनंदन की दिशिदेखि भावप्रभुको रुख लैके विश्वामित्र बोले हे राजन् जैसाकहते हौ तैसाही होइगो भाव धनुटूटी विवाहहोई परन्तु श्रेष्ठ धनुष को समूह तेजवंत रघुनंदनको शीघ्र देखाइये इसप्रकार मुनिवर कहतैरहे तेसेही धनुषके लावने वाले आयगये गनती में पांचहजार वली जन धनुष को लिहे आवते हे २२ (शतघंटासमायुक्तं) सौघंटा संयुक्त (मणिवस्त्रैर्विभूषितं) मणिजटित वसनमें गोपित इतिमणिवसन करिकैविशेषिभूषित जोधनुष ताह (मंत्रवतांवरःमंत्रीरामायदर्शयामास) उत्तममंत्र देनेवाला जो मंत्रीसो रघुनंदनके अर्थदेखाता भया अर्थात् जामें सौघंटालगं मणिजटित वसनमें गोपित ऐसा जो धनुष ताहि जनकको श्रेष्ठ मंत्री लवाय लायश्री रघुनंदन को देखावताभया २३ ॥

दृष्ट्वारामःप्रहृष्टात्मावध्वापरिकरदृढम् ॥ गृहीत्वावामहस्तेनलीलयातोलयन्धनुः २४ आरोपयामासगुणंपश्यत्स्वखिलराजसु ॥ ईषदाकर्पयामासपाणिनादक्षिणेनसः २५ वभंजाखिलहृत्सारोदिशःशब्देनपूरयन् ॥ दिशश्चविदिशश्चैवस्वर्गमर्त्यरसातलम् २६ ॥

(गमःदृष्ट्वाप्रहृष्टात्मापरिकरदृढस्वध्वा) रघुनाथ जी धनुषको देखिके परम आनन्दह्वै कटि में फेट पुष्ट करि बांधि (वामहस्तेनधनुः गृहीत्वालीलयातोलयत्) वाम हाथे करिके धनुष पकरि खेकवार मात्रही उठाय लिये अर्थात् मंत्री लाय आगे धराय दिये तत्र रघुनाथ जी शिव धनुष को देखि परम आनन्द ह्वै उठि खड़े ह्वे पीताम्बर को कटि में फेट पुष्टकरि बांधि बायेंहाथे धनुषपकरि सहजहीं उठाय लिये २४ (अखिलराजसुपश्यत्सुगुणंआरोपयामास) सब राजन् के देखत सन्ते रोदा चढाय दिये पुनः (सःदक्षिणेनपाणिनाईषदाकर्पयामास) सो धनुष दहिने हाथ करिके थेरेही अमते खेंचिलिये अर्थात् समाज के राजा सब देखतै रहे यथा सहजही वाम हाथे धनुष उठाय लीन्हें नवाय रोदा चढाय सो रोदा दहिने हाथ गहि सहजहीं में खेंचि ताने भाव उठावत चढावत खेंचत में परिश्रम किसी ने न देखा २५ (अखिलहृत्सारःवभंजशब्देनदिशःपूरयन्) सब के हृदय के सारांश श्रीरघुनाथ जी धनुष को तोरिडारे ताके शब्द करिके सब दिशा भरि पूरिगई (दिशःचविदिशःचैवस्वर्गमर्त्यरसातलम्) स्वर्ग भूतल रसातलादि सब लोकन में अर्थात् भूतमात्र के हृदय में सारांश जो अंतर्गामी रूपते वसे हैं ऐसे श्रीरघुनाथ जी बीचते धनुष तोरिडारे ताकी शब्दकरिके सबदिशा पूरिगई तहांपूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर विशा हैं ईशान अग्नेय नैऋत्य वायव्य विदिशा इत्यादि स्वर्ग भू रसातलादि तीनि हूं लोक शब्दते भरिजाते भये २६ ॥

तदद्भुतमभूत्तत्रदेवानांदिविपश्यताम् ॥ आच्छादयन्तःकुसुमैर्देवास्तुतिभिरीडिरे २७ देवाद्बुधयोनेर्दुर्ननुतुश्चाप्सरोगणाः ॥ द्विधाभग्नंधनुर्दृष्ट्वाराजालिगयरघूद्वह २८ विस्मयंलोभिरेसीतामातरोन्तःपुराजिरे ॥ सीतास्वर्णमयीमालांगृहीत्वादक्षिणेक रे २९ ॥

(तदद्भुतमभूत्) जो शब्द सुना ताते सबको आश्चर्य होता भया (तत्रदेवानांदिविपश्यताम्) तहां देवतन के दृष्ट आकाश ते देखि रहे हैं (देवाःकुसुमैःआच्छादयन्तःस्तुतिभिःईडिरे) देवता फूलन

करिकै रंगभूमि को तोपि दिये पुनः स्तुति वचनन करिकै प्रभुकी प्रसंशा करि रहे हैं २७ (देवाःतुंदु भयोनेदुःचअप्सरोगणाःननृतुः) देव गण नगारा बजावते हैं पुनः अप्सरा समूह नाचिरहीहैं (धनुः द्विधाभग्नं दृष्ट्वा राजारघूद्वहं आलिंग्य) धनुष द्वै खंड टूटो देखि राजा जनक रघुनन्दनहि उरमें लगाय लिये अर्थात् जो धनुष भंग को घोर शब्द सुनिपरो ताते सब लोक वासिन को आश्चर्य भया भाव किस कारण ऐसा शब्द भया तासमयदेवगण आकाशते प्रभुको देखि रहे हैं अरु फूलन की वर्षाकरि रंगभूमि मूँददिये पुनः वेद वाक्यन ते प्रभुकी स्तुति प्रसंशा करतेहैं पुनः देवगण नगारा बजावत विमानन पर अप्सरा नाचि रही हैं द्वै खंड टूटो धनुष देखि जनकजी अत्यन्त वात्सल्य सनेहते रघुनन्दन को उरमें लगाय लिये २८ (अन्तःपुरअजिरेसीतामातरःविस्मयंलोभिरे) राजमंदिर के आंगन में जानकी जी की माता विस्मय को प्राप्त भई (स्वर्णमयीमालांसीतादक्षिणेकरेगृहीत्वा) सोने सौ रचित जयमाला ताहि श्रीजानकी जी दहिने हाथ में लेती भई अर्थात् श्यामसुंदर राजकुमार के कोमल कर कमलों ते धनुष भंग भया इत्यादि सुनि राजमंदिर के आंगनमें सीतामाता सुनयना जी के मनमें बड़ा आश्चर्य भया तब जानकी जी आनंद ह्वै कंचन मय रचित जयमाला दहिने हाथमें लैकै सखिन सहित मंदिर ते चलती भई २९ ॥

स्मितवक्त्रास्वर्णवर्णसर्वाभरणभूषिता ॥ मुक्ताहारैःकर्णपत्रैःकणच्चलितनूपुरा ३०
दुकूलपरिसंवातावस्त्रांतव्यंजितस्तनी ॥ रामस्योरसिनिक्षिप्य स्मयमानामुदंय
यो ३१ ततोमुमुदिरेसर्वे राजदाराःस्वलंकृता ॥ गवाक्षजालरंध्रेभ्योदृष्ट्वालोक
विमोहनम् ३२ ॥

स्मितवक्त्रास्वर्णवर्णा) मुसकानि युत मुखसोने कैसीकांति तनको वर्ण (सर्वाभरणभूषिता) हंसक आदिचूड़ामणि पर्यंतसर्वांगभूषणन ते भूषित (मुक्ताहारैःकर्णपत्रैःकणत्चलितनूपुरा) मोतिनकेहार न करिकै ग्रीवाउर नाभी पर्यंत भूषित कर्णफूलन करिकै कानकपोल भूषित मधुर शब्द युत चलाय माननूपुरन ते पदभूषित ३० (दुकूलपरिसंवाता) जरतारीरे शमीवसनपहिरें (वस्त्रांतव्यंजितस्तनी) वसनके भीतर गुप्तउन्नताप्रकट होती है स्तनों की जिनके (रामस्योरसिनिक्षिप्य) रघुनाथ जीके गरमें पहिराय छातीपर शोभित करि (स्मयमानामुदंययो) मुसकनियुत आनन्दको प्राप्तभई अर्थात् कैसीहैं जानकी जी मुसकानि युत प्रसन्न मुखचंद्रसोने की ऐसीकांति गौरतन वर्ण नखशिखतक सर्वांग भूषणन ते भूषित ते और तौ वसन में गुप्त अरुमोतिन के हारउरपर कर्णफूल कपोलन पर शब्दयुत चलायमाननूपुर पांयनमें प्रसिद्धहैं जरतारी रेशमी विचित्र वसन पहिरें वसनके भीतर ते उन्नता प्रसिद्ध है उरोजों की जिनके ऐसी श्रीजानकी जी समीप आयदोऊहाथोंते उठाय जयमाला रघुनाथ जीके उरपरभूषित करि मुसकानियुत आनंद को प्राप्तभई भावमनोरथ सफलभया ३१ (ततो सर्वराजदारामुपदिरे) तदनंतर राजाकी यावतरानी रहीं ते आनंद पाय (स्वलंकृता) अपनेतनमें नवीन भूषण वसनपहिरि (गवाक्षजालरंध्रेभ्योलोकविमोहनं दृष्ट्वा) खिरकिनमेंजो जाललगेहैं तिन के छेदन ते लोक मोहन द्वारे जो रघुनंदन तिनहिदेखती हैं अर्थात् जबप्रभु धनुषभंग किये जानकी जी जयमाला पहिराये इतिमनभायो भयो तबसुनयना आदियावतू निमिवंशकी रानी रहें ते सब आनंद सहित तन में भूषण वसन नवीन पहिरि भरखन मार्ग रघुनंदन को लोक मोहन रूप देखने लगीं ३२ ॥

ततोऽब्रवीन्मुनिं राजा सर्वशास्त्रविशारदः ॥ भो कौशिक मुनि श्रेष्ठ पत्रं प्रेषय सत्वरं म३३
राजादशरथः शीघ्रमागच्छतु सपुत्रकः ॥ विवाहार्थं कुमारानां सदारः सह मंत्रिभिः ३४
तथेति प्रेषयामास दूतां स्त्वरितविक्रमान् ॥ ते गत्वा राजशार्दूलं रामश्रेयोन्धवे
दयन् ३५ ॥

(ततः राजा सर्वशास्त्रविशारदः मुनिं अब्रवीत्) तदनंतरं राजा जनक सर्वशास्त्रज्ञ के जानने वाले मुनि वि-
श्वामित्र प्रतिबोले (मुनि श्रेष्ठ भो कौशिक सत्वर पत्रं प्रेषय) मुनि ने मंत्रिप्रेष्ठ विश्वामित्र जी शीघ्र ही पत्रिका
अयोध्याजीको पठाइये ३३ (कुमारानां विवाहार्थं राजादशरथः शीघ्रमागच्छतु) राजकुमारों के विवाह क-
रने अर्थात् राजादशरथ शीघ्र ही आवहिं कौन भांति ते आवैं (सपुत्रकः सदारः सह मंत्रिभिः) सहित पुत्र सहित
रानि सहित मंत्रिन् अर्थात् धनुभंग पीछे जनकजी सब शास्त्र जानने वाले मुनि विश्वामित्र सों
कहे कि मुनिवर हे विश्वामित्र जी अब विलंब न करौ शीघ्र ही दूतद्वारा लग्न पत्री अयोध्याजीको पठाइये
जामें रामादि कुमारों के विवाह करने हेतु सहित पुत्र भरतशत्रुघ्न कुलरीति करने हेतु रानि
सहित सब कार्य करने हेतु मंत्रिन् सहित वरातसजि दशरथ महाराज इहां आवहिं शीघ्र ही ३४
(इति तथा स्त्वरितविक्रमान् दूतां प्रेषयामास) जो पूर्ववर्ती इत्यादि यथा कहे तथा कीन्हें वेग चलने को
पराक्रम है जिनके ऐसे दूतों को सपत्रिका तुरत ही पठाये (ते गत्वा रामश्रेयः राजशार्दूलं न्यवेदयत्)
ते दूत अयोध्याजीको गये रघुनंदन को मंगल मचहाल राजन में उत्तम जो दशरथ तिनहिं सुनावते
भये अर्थात् जैसे वार्त्ता कीन्हें तैसे ही करते भये लग्न पत्रिका लिखि पुनः वेग चलने वाले विक्रमी दूत
को बुलाय पत्रिका दे तुरत ही पठाये ते दूत अयोध्याजीको गये धनुभंग विवाहादि रघुनंदन को मंगल
मय हाल महाराज दशरथ जी सों सुनावते भये ३५ ॥

श्रुत्वा रामकृतं राजा हर्षेण महता ह्रुतः ॥ मिथिलागमनार्थं यत्स्वरयामास मंत्रिणः
३६ गच्छंतु मिथिलां सर्वे गजाश्चरथपत्तयः ॥ रथमानय मे शीघ्रं गच्छाम्यद्य वमा
चिरम् ३७ वशिष्ठस्त्वग्रतो यातु सदारः सहितोऽग्निभिः ॥ राममावृत्तमादाय मुनिर्मे
भगवान् गुरुः ३८ ॥

(रामकृतं श्रुत्वा राजा महता हर्षेण ह्रुतः) रघुनाथजीको कियाहुआ सब चरित्र सुनि कै महाराज
दशरथ बड़े आनंद सहित हूँके (मिथिलागमनार्थं यत्स्वरयामास) मिथिलापुरको जाने
अर्थ मंत्रिन् को शीघ्रसाज साजने को कहे अर्थात् ताड़का सुवाहु आदि द्रुष्टनको मारिय ज्ञपूर्णकरे
पदरज ते भइलया पावन करि राजसभाको निदरि शिवयन्तु तोरे अब जनक सुताके संगविवाह होई
इत्यादि रघुनंदन को चरित सुनि महाराज बड़े आनंदयुक्त मिथिलापुर चलवे अर्थ मंत्री सुमंत्रादि
को शीघ्रसाज सजिवे कहे ३६ (गजश्चरथपत्तयः सर्वे मिथिलां गच्छतु) हाथीघोड़े रथपैदर सेना
सब मिथिलाको चलै (मेरयं शीघ्रं मानमग्राचिरं अद्य एवं गच्छामि) मेरा रथ शीघ्र लावौ देर न करौ हम
इसी समय ऐसे ही चलते हैं ३७ (मुनिः भगवान् मे गुरुः रामावृत्तमादाय सदारः अग्निभिः सहित वशिष्ठ
तु अग्रतः यातु) मुनि समर्थ जो हमारे गुरु सो कोइ लयाको साथलै सहित अपनी स्त्री हवनकी सामग्री
अग्नि करिकै सहित वशिष्ठ जी पुनः आगे ही चलै अर्थात् मंत्रिन् सों महाराज कहे कि हाथी सजौ
घोड़े सजौ रथसजौ पैदरसेनासजौ सब मिथिला पुरको चलै अरु मेरा रथ शीघ्र सजिलावौ अबेर न करौ

इसीसमय ऐसेही हमचलतेहैं पुनः मुनि भगवान् जोहमारे गुरुहैंते अपनी स्त्रीसहित घृतसाकल्यादि हवनकी सामग्री अग्निसहितकौशल्याके साथ बशिष्ठ जी सबते आगेचलें ३८ ॥

एवंप्रस्थाप्यसकलंराजर्षिर्विपुलंरथम् ॥ महत्यासेनयासार्द्धमारुह्यत्वारितोययौ
३६ आगतंराघवंश्रुत्वाराराजाहर्षसमाकुलः॥ प्रत्युज्जगामजनकःसतानंदपुरोधसा
४० यथोक्तपूजयापूज्यपूजयामाससत्कृतम् ॥ रामस्तुलक्ष्मणेनाशुवन्देचरणौ
पितुः ४१ ॥

(एवंसकलंप्रस्थाप्य) इसीभांतिसब को आगे चलाय (महत्यासेनयासार्द्धमर्षिर्विपुलंरथं आरुह्यत्वारितोययौ) बड़ीसेना साथमें लैकै दशरथ महाऋषि बहुते रथनपर यथायोग्य समाजभरि सवारहूवै स्वरितही चले अर्थात्तथापूर्वकहै इसीभांति वशिष्ठादिब्राह्मणसंवर्ण पुरवासीसेवकसोब बादि सबकोआगे चलायपुनःमहर्षिजादशरथ जी सत्रधुंवंश सेनपगजरथ तुरंगपैदरादि बड़ी सेना साथलै यथायोग्य बहुतेरथनपर सवारहूवै तुरतही चलते भये ३६ (राघवंआगतंश्रुत्वा राजाजनकः हर्षसमाकुलः) दशरथहिआवत सुनिराजा जनक आनंद ते परिपूर्ण (सतानंदपुरोधसाप्रत्युज्जगाम) सतानंद प्रोहित सहितआगे लेनेहेतचले ४० (यथोक्तपूजयापूज्यं) जैसावेदमेंलिखाहै तैसीपूजन विधि करिकै पूज्यजो दशरथ जी तिनहि (पूजयामाससत्कृतम्) पूजनकरिसन्मानकीन्हें (रामस्तु लक्ष्मणेन आशुपितुःचरणौवन्दे) रघुनंदनपुनः लक्ष्मणशीघ्रही पिताके पायन को प्रणाम कीन्हें अर्थात् दशरथ महाराजको आवत सुनि राजा जनक परम आनन्दभरे सतानंद प्रोहितअन्यसमाज साथलै आगेलेनेहेत चलेमिलिप्रणामकरि स्वागत पूंछि आसनदेवेद विधानकरि महाराजको पूजन कीन्हें अरुसत्कारकीन्हेंपुनःलक्षणसंहितरघुनंदन शीघ्रहीआय पिताकेदोऊपायनकोप्रणाम कीन्हें ४१ ॥

ततोहृष्टोदशरथोरामंवचनमब्रवीत् ॥ दिष्ट्यापश्यामितेराममुखंफुल्लाम्बुजोपम
म् ४२ मुनेरनुग्रहात्सर्वसम्पन्नम्ममशोभनम्॥इत्युक्ताप्रायमूर्द्धानमालिङ्ग्यचपुनः
पुनः ४३ हर्षेणमहताविष्टोब्रह्मानन्दंगतोयथा ॥ ततोजनकराजेनमन्दिरेसन्नि
वेशितः ॥ शोभनेसवशोभाढ्येसदारःसमुतःसुखी ४४ ॥

(ततोहृष्टोदशरथो) तब आनन्द हूवै दशरथ जी (रामंवचनमब्रवीत्) रघुनन्दन प्रति बोलते भये (हे रामफुल्लाम्बुजउपमंतेमुखंहृष्ट्यापश्यामि) हे राम फूले कमल की उपमा देने योग्य तुम्हारा मुख मैं अपनी दृष्टि करिकै देखता हौं अर्थात् जब प्रणाम कीन्हें तब परम आनन्द हूवै दशरथ जी रघुनन्दन प्रति बोले कि हे राम प्रफुलित कमलसम तुम्हारा मुख हम नेत्रन भरि देखतेहैं सोई हम को जन्म को फल है ४२ (मुनेःअनुग्रहात् ममशोभनंसर्वसम्पन्न) विश्वामित्र की सदा दयाते मेरे मंगल सब परिपूर्ण भये (इतिउक्त्वामूर्द्धानमप्रायचपुनः पुनःआलिङ्ग्य) इत्यादि कहि शीश संधि पुनः बारम्बार उर में लगाय लिये ४३ (महताहर्षेणविष्टोयथाब्रह्मानन्दंगतः) ऐसे बड़े आनन्द युक्त भये जैसे ब्रह्मानन्द को प्राप्तभये (ततःजनकराजेन) तदनन्तर राजा जनक ने (मन्दिरे सन्निवेशितः) सुन्दरे मन्दिर में बास दिया अर्थात् दशरथ महाराज कहे कि हे रघुनन्दन तुम्हारा मुख कञ्ज देखतेही मोको परम आनन्द है अरु विश्वामित्र की अनुग्रह ते मेरे मंगल कार्य सब परिपूर्ण भये ऐसा कहि शीश संधि रघुनन्दन को बार बार उर में लगाय ऐसे बड़े आनन्द युक्त भये यथा समाधिस्थ ब्रह्मानन्द को प्राप्त भये इत्यादि तात्कालिक सब व्यवहार हूवै गया त्याहि पीछे

जनकजीने ऐमे सुन्दरे मन्दिरों में बरात को वास दीन्हे जहां सब भांतिको सुपास है (सर्वशोभा द्येशोभनेसदारःसपुत्रःसुखी) सब शोभायुत अरु भोजन सामग्री सहित शोभामय मन्दिर में वास पाय स्त्री पुत्रन सहित महाराज सुखी भये ४४ ॥

ततःशुभेदिनेलग्नेसुमुहूर्तेरघूत्तमम् ॥ आनयामासधर्मज्ञोरामंसभ्रातृकंतदा
४५ रत्नस्तम्भसुविस्तारेसुवितानेसुतोरणे ॥ मण्डपेसर्वशोभाढ्येमुक्तापुष्पफला
न्विते ४६ ॥

(ततःशुभेदिनेसुमुहूर्तेलग्नेतदाधर्मज्ञः) तदनन्तर शुभ दिन में सुन्दरी सुहूर्त में शुद्ध लग्न में तासमय धर्मको जाननेवाले जनकजी (सभ्रातृकरघूत्तमंरामंआनयामास) भाइन सहित रघुवंश शिरोमणि जो रघुनन्दन तिनेहिं स्वमन्दिरको लावते भये अर्थात् बरात कछु दिन रहे पीछे हेमन्त ऋतु उत्तम मार्गमास शुक्लपञ्चमी उत्तरापाद नक्षत्र वृद्ध योग शुभ भृगुदिने सूर्योदयादिष्टिते तिस पन्द्रह बुध को होरा इति शुभ सुहूर्तपर शुद्धकर्क लग्न रघुनन्दन के रवि दूसरे चन्द्र तीसरे गुरु नवयें भौम दूसरे तथा जानकी जी के रवि दशयें चन्द्रगेरहें भौमदशयें गुरुपचयें इत्यादि स-मय में धर्मज्ञ राजा जनक भरत लक्ष्मण शत्रुहनादि भाइन सहित रघुकुलमणि श्री रघुनाथ जीको अपने मन्दिर में मढ़ये तरको लाये ४५ (रत्नस्तम्भसुविस्तारे) रत्नजटित सुन्दरिखम्भा बड़े वि-स्तार में गड़े तिनमें (सुवितानेसुतोरणे) सुन्दर सामियाना तना तोरण नाम बहिरी द्वारपर यथा तोरणोऽस्त्रीवहिर्द्वारंपुरद्वारंतुगोपुरम्इत्यमरः (मण्डपेसर्वशोभाढ्ये) भीतर मढ़येमें सब शोभा शो-भित है कौन भांति (मुक्तापुष्पफलान्विते) मोतिनमय फूल फलयुक्त अर्थात् द्वारपर विचित्र भूमि पै कालीन चादरि थिछी चारिहु दिशि कनक रत्न जटित खम्भ तिनपर विस्तार सहित दिव्य सा-मियाना तना तथा भीतर मणिमय खम्भ कञ्चन मुक्ता मणिमय फूल फलाकार गुच्छा लटकत वन्दनवारादि शोभामय माढ़व शोभित है ४६ ॥

वेदविद्भिःसुसंवाधेब्राह्मणैःस्वर्णभूषितैः ॥ सुवासिनीभिःपरितोनिष्ककंठीभिरावृते
४७ भेरीदुंदुभिनिर्घोषैर्गीतनृत्यैःसमाकुले ॥ दिव्यरत्नांचितेस्वर्णपीठेरामंन्यवेश
यत् ४८ वशिष्ठकौशिकंचैवशतानंदःपुरोहितः ॥ यथाक्रमंपूजयित्वारामस्योभय
पार्श्वयोः ४९ ॥

(स्वर्णभूषितैः वेदविद्भिः ब्राह्मणैः सुसंवाधे) सोनेके भूषणोंते भूषित वेदके जाननेवाले ब्राह्मणों करिके संकीर्णता आर्गेनभराहैं (निष्ककंठीभिःसुवासिनीभिः परितः आवृते) हीराजटित भूषण कंठमें धारण किहे युवावस्था वाली निमिवंश जकन्यन करिके सबमौड़वधेराहैं अर्थात् किरीट कुंडल मालाकेयूर मुद्रिकादि सोनेके भूषणपहिरे वेदपढे ब्राह्मण समूह वेदीके चारिहु दिशि सघन बैठे हैं तिनके चारिहु दिशि जरी रेशमी वसन हीराजटित हेमके भूषण धारण किहे वीसवर्ष बयवाली निमि' वंशिनकी कन्या समूह बैठी हैं ४७ (भेरीदुंदुभि निर्घोषैः) तुरही नगरिया नगरादिको समूह शब्द हवै रहाहै (गीतनृत्यैः समाकुलैः) गाननाच करिके शब्द भराहै तासमय (दिव्यरत्नांचितेस्वर्ण पीठे) हीरपन्ना मरकत पोपराजादि दिव्यरत्न जटित सोनेके पीठापर (रामंन्यवेशयत्) रघुनंदनहिं बैठावते भये अर्थात् सब बाजा युवतिनके मंगलगीत वारवधुनकोनृत्य गानबाजा इत्यादि शब्द भरि रहाहै तासमय जनकजी दिव्यरत्न जटित सोनेके पीठापर रघुनंदनको बैठाये ४८ (रामस्य उभय

पाद्वयोः) रघुनन्दनके दोऊ दिशि (वशिष्ठं च कौशिकं एव) वशिष्ठ तथा विश्वामित्रहि निश्चय करि (शतानन्दः पुरोहितः यथाक्रमं पूजयित्वा) शतानन्द जनकके प्रोहित जैसाचाही ताहीक्रमपूजन किये अर्थात् रघुनन्दन के दहिने सिंहासनदे वशिष्ठको बैठाये बामदिशिसिंहासन पर विश्वामित्रको बैठाये शतानन्द वेदविधि द्रोउनकी पूजाकीन्हे ४६ ॥

स्थापयित्वा सतत्राग्निज्वालयित्वा यथाविधि ॥ सीतामानीयशोभाढ्यां नानारत्नविभूषितां ५० सभार्योजनकः प्रायाद्रामं राजीवलोचनं ॥ पादौ प्रक्षाल्य विधिवत्तदपोमूर्ध्न्यधारयन् ५१ याधृतामूर्द्धि शर्वेण ब्रह्मणामुनिभिः सदा ॥ ततः सीताकरे धृत्वा साक्षादुदकपूर्वकं ५२ ॥

(सतत्र यथाविधि अग्निस्थापयित्वा ज्वालयित्वा) सो शतानन्द तहाँ वेदी बनाय यथावेदमें लिखाहै ताही विधि अग्नि स्थापित करि प्रज्वलित कीन्हे (नानारत्न विभूषितां शोभा आढ्यां सीतां आनीय) अनेक रत्न जटित भूषणनते विभूषित वसन रूपादि शोभायुक्त जो सीता तिनहिं उहाँको लावते भये अर्थात् सोई शतानन्द तहाँ वेदी बनाय पंच संस्कारादि जो वेदमें लिखाहै ताहीविधि अग्नि स्थापित करि बारि हवनकरि पुनः हीरामाणिक मर्कटादिरत्न जटित भूषणनते भूषित सर्वांग सुठौरबने गौरवर्ण दिव्यवसन धारण इत्यादि शोभायुक्त सीताको ताही ठौरलाय रघुनन्दनके सामने बैठारे ५० (सभार्यः जनकः प्रायात्) सहितरानी जनकजी बहुत भाँतिते (राजीवलोचनं रामं विधिवत् पादौ प्रक्षाल्य) कमल नयन रघुनाथ जीके विधि पूर्वक पार्थधोय (तत् अपः मूर्द्धि अधारयत्) तौने जलको शीशपर धरिलिये ५१ (यात्राह्वणा सर्वे मुनिभिः सदा मूर्द्धि धृता) जाको ब्रह्मादि देवता सब मुनिजनसदा शीशपर धरते हैं सोशिर धरि (ततः सश्रुत उदक पूर्वकं सीताकरे धृत्वा) तदनन्तर सहित अक्षत जल पूर्वक जानकी जीको हाथ आपने हाथपर धरि अर्थात् सुनयना सहित जनक जी बड़ेभावते रूपास भरे कमल नयन रघुनाथ जीके पदकमल विधिपूर्वक धोय सोई पादोदक शीशपर धरिलिये जो पादोदक गंगा रूप सबमुनि ब्रह्माशिवादि देवता शीशपर धरते हैं सोशिर धरि पुनः हाथमें कुशअक्षत जल सहित जानकीजीको हाथधरिलिये तासमय आचार्य संकल्प पढनेलगे ५२ ॥

रामायप्रददौ प्रीत्यापाणिग्रहविधानतः ॥ सीताकमलपत्राक्षीस्वर्णमुक्तादिभूषिता ५३ दीयते मे सुता तुभ्यं प्रीतो भव रघूत्तम ॥ इति प्रीतेन मनसा सीतारामकरेऽर्पयन् ५४ मुमोद जनको लक्ष्मीक्षीराब्धिरिव विष्णवे ॥ उर्मिलांचौरसीकन्यां लक्ष्मणाय ददौ मुदा ५५ ॥

(स्वर्णमुक्तादिभूषिता कमलपत्राक्षीसीता) कंचन मुक्तादि के भूषणों ते भूषित कमल दलसम नेत्र ऐसी जो सीता ताहि (पाणिग्रहविधानतः प्रीत्यारामायप्रददौ) पाणिग्रहण की रीति वेद विधान ते प्रीति सहित रघुनन्दन के अर्थ कन्यादान देते भये ५३ (सीतामे सुता तुभ्यं दीयते हे रघूत्तम प्रीतो भव) सीता नामे पुत्री बामांगी करि तुम्हारे अर्थ दीजाती है हे रघुवंश शिरोमणि यापर प्रीतिवन्त होहु (इति मनसा प्रीतेन रामकरे सीतां अर्पयन्) इत्यादि कहि जनकजी मनसों प्रीति करि सीता जोहिं ति- नहि रघुनन्दन के हाथ में दै दीन ५४ (विष्णुवेलक्ष्मीक्षीराब्धिः इव जनकः मुमोद) यथा विष्णु के अर्थ लक्ष्मी दै के क्षीर समुद्र आनन्द भया इसी भाँति जनकजी आनन्द भये अर्थात् हंसक नूपुर जे

हरि रसनामुद्रिका कंकण केयूरमाल कर्णफूल वेसरि टीका चूडामणि इत्यादि कंचन रचित मुक्तादि मणि जटिन भूषण ते भूपित कंचनवर्ण कमल दल नयन ऐसी सीता नामे मेरी पुत्री वामांगी करि आपके अर्थ दीजाती है हेरघुवंशशिरोमणि अपनी परिचारिका जानि यापर प्रीतिकरहु इत्यादि कहि जनकजीमनमें प्रीति सहित जानकीको हाथकुशजलाक्षतसहित रघुनाथजीके हाथमें धरिकै जनकजी कैसे आनंदभये यथा विष्णुके हाथमें लक्ष्मीजीकोदिकै क्षीरसिंधु आनन्दभयो भाव किसीसमय दुर्वासने इन्द्रकोशाप दिया कितेरी राज श्रीनृहोइ तापर उदासीनहूवै लक्ष्मीजी क्षीरसागरमें लोपभई पुनः मथेतैकहीं सिंधुसुता कहाई सिंधुमूर्तिमान आइविष्णुको अर्पण किया आनन्दभया भावलक्ष्मी पुत्री विष्णु जामातृ अलभ्य लाभ विनाश्रम घर बैठे पाये यदब्रह्म वैवर्त प्रकृति खंड छत्तिस के अध्याय में लिखा है तथा भूमि शोयत आदि शक्ति को पुत्री करि पाये तथा घर बैठे परब्रह्म को जामातृ करि पाये इति उपमाको भाव (चत्वारैसकिन्यांउर्मिलां मुदालक्ष्मणायददौ) पुनः जोसुनयना जीके उर ते उत्पन्न भई कन्या उर्मिला नामें रही ताहि आनंद सहित जनक जी लक्ष्मणजी को वामांगीहोने अर्थ देते भये विवाह करिदिये ५५ ॥

तथैव श्रुतिकीर्तिश्चमाण्डवीभ्रातृकन्यके ॥ भरतायददावेकांशत्रुघ्नायापरांददौ ५६
चत्वारोदारसंपन्नाःभ्रातरःशुभलक्षणाः॥ विरेजुःप्रभयासर्वलोकपालाइवापरे ५७ ॥

(तथाएवभ्रातृकन्यकेश्रुतिकीर्तिश्चमाण्डवी) ताहीभांति निश्चय करिकै जनकके छोटे भाई की जो दो कन्या रहीं श्रुति कीर्ति पुनः माण्डवी तिनमें (एकांभरतायददौ) एक माण्डवी ताहि भरत के अर्थ देते भये (अपरांशत्रुघ्नायददौ) और जो श्रुति कीर्ति रही ताहि शत्रुहन के अर्थ देते भये ५६ (चत्वारोभ्रातरःशुभलक्षणाःदारसंपन्नाः) चारिहु भाई शुभलक्षण युत स्त्रिन सहित (सर्वप्रभयाअ परेलोकपालाइवाविरेजुः) सब प्रभा करिकै और लोकपाल सम विशेषि प्रकाश मान हैं अर्थात् यथा किशोरी जी को रघुनन्दन के साथ विवाहे उर्मिलाको लक्ष्मण जीके साथ ताही भांति जनक जी के जो छोटे भाई कुशध्वज हैं तिन के भी दो कन्या हैं बड़ी माण्डवी जी तिन को भरतजी के साथ विवा हे छोटी श्रुतिकीर्ति तिन को शत्रुहन के साथ विवाहे इत्यादि बर वेप चारिउ भाय स्वरूपता वय गुण वे पादि शुभलक्षण युत तथा यथा योग्य शुभलक्षण युत चारिहु की दुलहिनी ते एक माण्डव में चारिहु जोड़ी अपनी प्रभा करिकै कैसे प्रकाशमान हैं यथा अपर लाकपाल इंद्रादि सम हैं ५७ ॥

ततोब्रवीद्वशिष्ठाविश्वामित्रायमैथिलः ॥ जनकःस्वसुतोदंतंनारदेनाभिभाषि
तम् ५८ यज्ञभूमिविशुद्ध्यर्थं कर्षतोलांगलेनमे ॥ सीतामुखात्समुत्पन्नाकन्यकाशु,
भलक्षणा ५९ ॥ तामद्राक्षमहंप्रीत्यापुत्रिकाभावभावितां ॥ अर्पिताप्रियभार्यायै
शरच्चंद्रनिभानना ६० ॥

(ततः मैथिलः जनकः नारदेन अभिभाषितं स्वसुता उदंतं) तदनन्तर मिथिलापुरके राजाजनक नारदको कहाहुआहाल आपनीकन्या सीताको वृतांत (वशिष्ठाय विश्वामित्राय ब्रवीत्) वशिष्ठ विश्वामित्रके अर्थ कहते भये ५८ (यज्ञभूमि विशुद्ध्यर्थमेलंगलेनकर्षतः) यज्ञहेतु भूमिको विशेषि शुद्धकरने अर्थ में हल करिकै जोतने लगा (सीतामुखात् शुभलक्षणाकन्यका समुत्पन्ना) हलते जो चिन्हहोताहै ताकेमुखते शुभलक्षण युत कन्या उत्पन्नभई ५९ (शरच्चन्द्र- निभाननातां पुत्रिकाभा

भावितां) शरदचंद्रमा सममुख ताहि पुत्रीभाव मानि (अहंप्रीत्या अद्राक्षं प्रियभार्यायै अर्पिता) मैं प्रीति करिकै सजल नयन उठायलैकै आपनी प्यारी रानी को दौदिया अर्थात् विवाह भये पीछे मिथिलेश जनक अपनी कन्या सीता के उत्पन्न होने को वृत्तांत अरु नारद को कहा हुआ हाल वशिष्ठ अरु विश्वामित्र सों कहने लगे कि यज्ञ करने हेत भूमिशुद्ध करने अर्थ मैं हेम के हलते जोतने लगा हलकी नशी ते भूमि फूट तहीं शुभलक्षण युत कन्या उत्पन्न भई जाको शरद पूर्ण चंद्रमा सम मुख देखि ताहि पुत्री भाव मानि बातसत्य प्रीति करि सजल नेत्र उठाय लिया पुनः अपनी प्रिय पत्नी को दिया ६० ॥

एकदानारदोभ्यागाद्विविक्तेमयिसंस्थिते ॥ रणयन्महतीवीणांगायन्नारायणं वि
भुम् ६१ ॥

(एकदाविविक्तेमयिसंस्थितेनारदःअभ्यगात्) एकसमय निर्जन स्थान में मैं बैठा रहौं तहां नारद आये कौन भांति (महतीवीणारणयन्नारायणंविभुंगायन्) भारी बीणा बजावत नारायण समर्थ को जो यश ताहि गावत अर्थात् जनक जी कहत कि कन्या प्राप्त भये पीछे एक समय एकांत स्थान में हम बैठे रहे ताहीं समय बीणाबजावत नारायण को पावन यश गावते हुये नारद मुनि मेरे पास आये ६१ ॥

पूजितःसुखमासीनोमामुवाचसुखान्वितः ॥ शृणुष्ववचनंगुह्यंतवाभ्युदयकारणम्
६२ परमात्माहृषीकेशोभक्तानुग्रहकाम्यया ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थरावणस्यव
धायच ६३ जातोऽरामइतिख्यातोमायामानुषवेषधृक् ॥ आस्तेदाशरथिर्भूत्वाच
तुर्धापरमेश्वरः ६४ ॥

(पूजितःसुखं आसीनः सुखान्वितःमाउवाच) नारदको मैंने पूजनकिया सुखमय आसनपर बैठाये तब प्रसन्नता युक्त मोप्रतिबोलते भये (तवअभिउदय कारणम् गुह्यंवचनं शृणुष्व) तुम्हारी भाग्य उदयको कारणके गुप्तवचन प्रकट कहतेहैं तिनहिं सुनिये अर्थात् नारदको आवतदेखि मैं उठि दण्डप्रणामकरि आसनपरबैठारि अर्घपाद्यादि पोडशोपचार पूजनकिया तबप्रसन्नतापूर्वक मोप्रतिबोले हे जनक तुम्हारी उत्तम भाग्य उदय को कारण गुप्त है सो वचन प्रसिद्ध हम कहते हैं सावधान हवै सुनिये ६२ (हृषीकेशःपरमात्माभक्तानुग्रहकाम्यया) सब इंद्रिन के प्रकाशक परमात्मा भक्तनपर सदा दया करिबे की कामना करिकै (देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थचरावणस्यवधाय) देवन के कार्य को जो स्वीरथ है ताके सिद्ध्यर्थ पुनः रावण के वध के अर्थ ६३ (रामइतिख्यातोमायामानुषवेषधृक्जातः) राम ऐसा नाम प्रसिद्ध माया करि मनुष्य वेष धरि उत्पन्न भये (परमेश्वरःचतुर्धादाशरथिःभूत्वाआ आस्ते) परमेश्वर चारिरूप ते दशरथ पुत्र हवै वर्तमान हैं अर्थात् जो अंतर्धामी रूपते सब इंद्री चैतन्य किहे हैं ऐसे शुद्धपरमात्मा सो आपने भक्तन परसदा दया राखने की कामना करिकै पुनः जामे देवन को हित सुख पूर्वक घरन में बास ताको अर्थ स्वार्थ अभय यज्ञादि को भागपावना ताके सिद्ध अर्थ भाव भूतल पर धर्मस्थापन करने हेत पुनः सकुल रावण के नाश करने हेत अपनी दिव्य माया करि मनुष्य वेष धरि उत्पन्न भये राम ऐसा नाम लोक में प्रसिद्ध है इस भांति परमेश्वर राम भरत लपण शत्रुघ्न इति चारि रूप ते दशरथ के पुत्र हवै अयोध्या में वर्तमान हैं ६४ ॥

योगमायापिसीतेतिजातावेतववेदमनि ॥ अतस्त्वंराघवायैवदेहि सीतां प्रयत्नतः ६५
नान्यस्य पूर्वभार्यैषारामस्य परमात्मनः ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ देवगतिं देवमुनिस्तदा ६६
तदारभ्य मया सीता विष्णोर्लक्ष्मीर्विभाव्यते ॥ कथं मया राघवाय दीयते जानकी शुभा ६७

(योगमाया अपितववेदमनि सीता इति वैजाता) प्रभु की योग माया सोऊ तुम्हारे घरमें सीता ऐसा नाम निश्चय करि उत्पन्न भई (अतः त्वं प्रयत्नतः सीताराघवायैव देहि) इस कारण तुम बड़ी यत्न ते सीता को रघुनन्दन के अर्थ निश्चय करि दीजिये ६५ (परमात्मनः रामस्य पूर्व भार्या एषा अन्यस्य न) परमात्मा जो रघुनाथ जी तिनहीं की पूर्व पत्नी है यह और की नहीं है (इति उक्त्वा तदा देवमुनिः देवगतिं प्रययौ) ऐसा कहि त्यहि समय में देवमुनि आकाश मार्ग ह्वै चले जाते भये ६६ (तदारभ्य मया सीता लक्ष्मी विष्णोः विभाव्यते) ताही समयते लगाय अब तक सीता लक्ष्मी जी सो विष्णुको मिलावा चाहत रहेउ (मया जानकी शुभा कथं राघवाय दीयते) हम करिकै जानकी मंगलमूर्ति कौन प्रकार रघुनन्दनके अर्थ दीजाय अर्थात् नारद कहे जनक यथा परमेश्वर दशरथ नन्दन भये तथा निश्चय करि जाको सदा संयोग रहता है सोई प्रभुकी योगमाया सो तुम्हारे घरमें सीता नामें निश्चय करि उत्पन्न भई इस कारण वाको तुम यत्नपूर्वक निश्चय करि रघुनन्दनके साथ विवाह करना काहेते परमात्मा जो रामचंद्र तिनहींकी पूर्वपत्नी सीता हैं दूसरेकी नहीं हैं यह निश्चय राखना ऐसा कहि देवमुनि नारद देवगति जो आकाश मार्ग तहां ह्वैकै ब्रह्म लोक को गये ताही समय ते हम सीता रूप लक्ष्मी को विष्णु रूप रामहीको मिलावने की इच्छा राखे रहे परंतु हम अरु दशरथ महाराज दोऊ सूर्यवंशी एकही कुल ठहरे इह कारण मेरे मन में संदेह रही कि एकही कुलमें सीताको रघुनन्दनके साथ मैं कौन उपायते विवाह करों ६७ ॥

इति चिंता समाविष्टः कार्यमेकमर्चितयम् ॥ मत्पितामहगेहेषु न्यासभूतमिदं धनुः ६८
ईश्वरेण पुराक्षिप्तं पुरदाहादनंतरम् ॥ धनुरेतत्पणं कार्यमिति चिंत्य कृतं तथा ६९
सीतापाणिग्रहार्थाय सर्वेषां माननाशनम् ॥ त्वत्प्रसादान्मुनिश्रेष्ठ रामो राजीवलोचनः ७०
आगतोऽत्र धनुर्द्रष्टुं फलितो मे मनोरथः ७१ ॥

(इति चिंता समाविष्टः एकं कार्यं अर्चितयम्) इस चिंतामें संपूर्ण प्रकार बूढ़े रघुनः विचार कर एक कार्य करनेको चिंतवन कीन्हो (मत्पितामहगेहेषु न्यासभूतं) हमारे पितामहके घरमें यह धनुष स्थित है ६८ (पुरदाहात् अनंतरं ईश्वरेण पुराक्षिप्तम्) त्रिपुरासुरको भस्म करि तत्पश्चात् शिवजीने पूर्वहीं इहां धरि दिया रहै (एतत् धनुः पणं कार्यं इति चिंत्य तथा कृतं) इस धनुषको जो तूरै ताहीको कन्या व्याहों ऐसा मनमें यथा चिंतवन किया तथा प्रण प्रसिद्ध किया ६९ (सीता पाणिग्रहार्थाय) सीता विवाहन हेतु तथा (सर्वेषां माननाशनम्) सवराजनके अभिमान नाश करने हेतु प्रण किया (हे मुनि श्रेष्ठ त्वत्प्रसादात् राजीवलोचनः रामः ७० धनुः द्रष्टुं अत्र आगतः मे मनोरथः फलितः) हे मुनिवर आपके प्रसादते कमलनेत्र रघुनन्दन धनुष देखने हेतु इहां आये मेरा मनोरथ सफल भया अर्थात् जनक जी कहत कि एक वंशमें कौन युक्तिसौ कन्या व्याहों इस चिंतामें बूढ़ा पुनः विचार करि एक कार्य करनेको चिंतवन कीन्हेंउ कि हमारे पूर्व पुरिषा देवरातके समयते यह जो शिवजी को धनुष धरा है कबते जब त्रिपुरासुरको भस्म किये ताके पाछे शिवजी सेवक जानि पूजन हेतु देवरातके मन्दिरमें धरि दिये इत्यादि पूर्वकालते धरार है सोई धनुष जो उठावै चढ़ावै तौरै ताको कन्या व्याहों इत्यादि यथा मनमें चिंतवन किया तथा

प्रसिद्धपण किया कि यह शिव धनुष किसी और को तोरा तौ टूटैगो नहीं ताते सब राजोंको मान भंगहोइगो इस व्याहकी फिरि कोऊ इच्छा न करैगो भरु रघुनन्दनै आइतोरैंगे तौ सीताको पाणि-ग्रहणभी सुलभै होइगो इसहेत पणकिया हे मुनिवर वशिष्ठ विश्वामित्र आपके प्रसादते कमलनेत्र रघुनन्दन धनुष देखनेहेत इहां आयधनुभंग करि पाणिग्रहण किये अब मेरा मनोरथ पूर्ण भया ७१ ॥

अद्यमेसफलंजन्मरामत्वांसहसीतया ॥ एकासनस्थं पश्यामि भ्राजमानं रत्रियथा
७२ त्वत्पादां वुधरो ब्रह्मा सृष्टिचक्रप्रवर्तकः ॥ वलिस्त्वत्पादसलिलं धृत्वा भूदिविजा
धिपः ७३ ॥

(अद्यमे जन्मसफलं) आजुमेरा जन्म सुफलभया काहेते (यथारवि एकासनस्थं भ्राजमानं सीतया सह रामत्वां पश्यामि) यथा प्रभासह सूर्यतथा एक आसन पर विराजमान सीताकरिकै सहित हेरघुनन्दन आपको मैदेखताहौं अर्थात् रघुनन्दन प्रति जनकजी कहत कि जैसेप्रभायुत सूर्य तथाहेरघुनन्दन सीतासहित आपको एकसिंहासन परवैठेदेखिआजुमोको जन्मधरेको फलप्राप्तभया ७२ (ब्रह्मास्त्वत्पाद वुधरः सृष्टिचक्र प्रवर्तकः) ब्रह्मा आपको पादादक शिरधरि सृष्टिकरतेहैं (त्वत्पाद सलिलं धृत्वा वलिः दिविजाधिपः अभूत्) आपके पायँको जलधारण करि वलिदेवनके राजाभये अर्थात् आपके पदकमलोंमें ऐसा प्रभावहै जाको प्रक्षालित गंगाजल ब्रह्माशीशपर धरे ताहीप्रतापते सम्पूर्ण सृष्टिवद्भावके समर्थभये तथा वलिआपके पायनको जलशीशपरधरि देवनके राजाभये ७३ ।

त्वत्पादपांशुसंस्पर्शादहल्याभर्तृशापतः ॥ सद्यएवविनिर्मुक्ताकोऽन्यस्त्वत्तोधि-
क्षिता ७४ यत्पादपंकजपरागसुरागयोगिवृन्दैर्जितं भवभयं जितकालचक्रैः ॥
यन्नामकीर्त्तनपराजितदुःखशोकादेवास्तमेवशरणंसततंप्रपद्ये ७५ ॥

(त्वत्पादपांशुसंस्पर्शात्) आपके पायँनकी रजछुङगयेते (अहल्याभर्तृशापतः सद्यएवविनिर्मुक्ता) अहल्यापतिके शापते तुरतही छूटिगई (त्वत्तोधिर्क्षिताः अन्यः) आपके सिवायरक्षकको और है अर्थात् जनकजी कहत हेरघुनन्दन वर्त्तमानमें आपके पायँनकी रजलागतही अहल्यापतिकी शापते छूटि पाषाणते दिव्य पावनस्त्रीभई इस प्रमाणते यह निश्चयहोत कि जीवनके रक्षक एक आपही हौ दूसरा कोई नहीं है ७४ (कालचक्रैः जितयोगिवृन्दैः) कालवेगन करिकै जितयोगिनके वृन्दन करिकै (यत्पादपंकजपरागसुरागभवभयंजितं) जिनके पद कमलोंकी रजमें सुन्दरि प्रीति करिकै जन्म मरणादि भवकी भय जीतिलीगई है (यत्नामकीर्त्तनएवदुःखशोकापराजितदेवो) जाको नाम कीर्त्तन करि दुःख शोकादिकोंको जीतिकै नरदेवत्वंपदलेतेहैं (तं एवशरणंसततंप्रपद्ये) तिनकी निश्चयकरि शरणमें मैं सदा प्राप्तहौं अर्थात् लग्न मुहूर्त्त तिथिवार नक्षत्रयोग करणपक्षमास अयनसंवत् युगकल्प इत्यादि सदाधूमिरहेहैं इति कालचक्र ताको जीते भावकालके प्रभावमें सुभाव सावधान राखत वा धामशीत वर्षा कछु नहीं मानत यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यानसमाधि इत्यष्टौ अंगयोग करि देहेन्द्राग्नन्तरमनादि स्वाधीन किहे ऐसे समूहयोगीजन जिनरघुनाथजीके पदरजमें सुन्दरि प्रीतिकरि भवभय जो चौरासी भ्रमणताको जीति जीवनमुक्तहोते हैं तथा सुजन जिनको नाम भावकीर्त्ति सुश्रवप्रताप उदारदयादि गुण इत्यादिमय जो चरितहै ताको कीर्त्तनकरि व्याघ्रिशूलादि जो दुःखहानि वियोगादि जो शोक तिनको जीति मृत्युलोकहीमें अमरपद पावते हैं जिनके प्रभावते ऐसे प्रभुकी शरणमें निश्चयकरि मैं सदा प्राप्तहौं इति प्रार्थना कीन्हे ७५ ॥

इतिस्तुत्वानृपः प्रादाद्राघवाय महात्मने ॥ दीनाराणां कोटिशतं रंथानामयुतं तथा ७६
अश्वानां नियुतं प्रादाद्रजानां षट्शतं तथा ॥ पत्नीनां लक्षमेकं तु दासीनां त्रिशतं ददौ
७७ दिव्यां वराणि हारांश्च मुक्तारत्नमयोज्ज्वलान् ॥ सीतायै जनकः प्रादात्प्रीत्या दुहि
तृवत्सलः ७८ ॥

(इतिस्तुत्वानृपः महात्मने राघवाय प्रादात्) इस भांति स्तुति करि पुनः राजा जनक महात्मा रघुनाथ जीके अर्थ भारी दायजु देत भये कौन कौन वस्तु (शतकोटि दीनाराणां) सौ करोरि असरफी (तथा अयुतरंथानां) ताही प्रकार दश हजार रथ ७६ (नियुतं अश्वानां प्रादात्) एकलाख घोड़े दिये (तथा षट्शतं राजानां) ताही भांति छसै हाथी दिये (एकलक्ष पत्नीनां त्रिशतं दासीनां ददौ) एकलाख पैदरसेना पुनः तीनिसै दासी देते भये ७७ (दिव्य अम्बराणि मुक्तारत्नमय उज्ज्वलान् हारांश्च) दिव्य देव निर्मित वसन अरु मोती हिरादिरत्नमय उज्ज्वल हार इत्यादि (दुहितृवत्सलः जनकः प्रीत्या सीतायै प्रदात्) कन्या परममत्त्व है जिनके ऐसे जनक प्रीति पूर्वक सीताके अर्थ देते भये अर्थात् प्रथम केवल ऐश्वर्य रूपमानि स्तुतिकीन्हें पुनः जनक जी ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित रूपजानि भावमहान् पुरुष ऐश्वर्य छपाये राजकुमार रूपते हमारे जामातृ भये इस विचारते रघुनाथ जीके अर्थ दायजु दिये सो कहत कि सौ करोरि असरफी दश हजार रथ लाख घोड़े छसै हाथी एकलाख पैदरसेना तीनिसै दासी इत्यादि रघुनाथ जी को दिये अरु बास्तव्य ताते पुत्रीपर अधिक ममत्व है जिन के ऐसे जनक जी जरतारी रेशमी देवन के बनाये जो सदा नवीन रहते हैं ऐसे दिव्य वसन तथा मुक्ता रत्न मय हारा दि अनेक भूषण प्रीति सहित जानकी जी को दीन्हें ७८ ॥

वशिष्ठादीन् सुसंपूज्य भरतं लक्ष्मणं तथा ॥ पूजयित्वा यथान्यायं तथा दशरथं नृपं ७९
प्रस्थापयामास नृपो राजानं रघुसत्तमम् ॥ सीतामालिङ्ग्य रुदतीं मातरः सा श्रुल्लोच
नाः ८० इव श्रूशुश्रूषण परानित्यं राममनुव्रता ॥ पातिव्रत्यमुपालं व्यतिष्ठत्से यथा
सुखम् ८१ ॥

(वशिष्ठादीन् सुसंपूज्य) वशिष्ठ आदि ऋषेष्टवरन को संपूर्ण प्रकार पूजे (भरतं लक्ष्मणं तथा नृपं) दशरथ यथान्यायं तथा पूजयित्वा) भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न तथा राजा दशरथ इत्यादिकन को धन दान सम्मानादि जाको जैसा उचित रहै ताको ताही भांति पूजे विदा किये ७९ (रघुसत्तमं राजानं नृपः प्रस्थापयामास) रघुवंश में उत्तम राजा दशरथ तिनहि नृप जनक विदा किये (मातरः रुदतीं सा श्रुल्लोचनाः सीतां आलिङ्ग्य) माता सुनयना आदि रोवत सहित औसुननेत्र जानकी जीको हृदयमें लगाय लेती हैं ८० (इव श्रूशुश्रूषण परा) सासुकी सेवामें तत्पर रहेउ (पातिव्रत्यं उपालं व्यतिष्ठत्से यथा सुखम्) पतिव्रत धर्मके आलंघ्यते रघुनन्दनकी आज्ञाकार रहेउ हे पुत्री जौन प्रकार पतिको सुख होवै त्पहि आचरण परस्तिर रहेउ अर्थात् समाज सहित दशरथ महाराज को विदा करि जनक लौटे घरमें सुनयनादि सबमाता रोदन करत नेत्र औसुन सहित जानकी जीको हृदयमें लगाय सिखावती हैं कि हे सीतासु की सेवकाई किहेउ भावरघुनन्दनको लालन पालन करि तुम्हारे संयोग योग्य कीन्हें पुनः पातिव्रत यथा शिवपुराणे गिरिजा विदाप्रसंगे ॥ भुञ्ज्यात् भुक्ते प्रिये पत्यौ पतिव्रत परायणा । स्वप्यात्स्वपितिसा नित्यं बुद्ध्या तु प्रथमं सुधीः ॥ सर्वदा तद्धितं कुर्यादकैतव गतिः प्रिया आहूता गृहकार्याग्रित्यक्त्वा गच्छेत्तं इति क्रम् ॥ सत्वरं सांजज्ञिः प्रीत्या सुप्रणम्य वदोदिति ॥ किमर्थं व्याहृतानाथ

स्वप्रसादोविधीयतां ॥ तदादिष्टाचरेत्कर्मसुप्रसन्नेनचेतसास्वप्नेपियन्मनोनिर्त्यंस्वपतिंपश्यतिध्रुवम् ॥
नान्यंपरपतिंभद्रेउत्तमासाप्रकीर्तितायापितृभ्रातृसुतवत्परंपश्यतिसद्दिधा ॥ मध्यमासाहिकथिताशै
लजेवैपतिव्रताबुध्वास्वधर्ममनसाव्यभिचारं करोतिन ॥ निष्ठुष्टाकथितासाहिसुचारित्राचपार्वतिपत्युः
कुलस्यचभयात्व्यभिचारं करोतिन ॥ पतिव्रताधमासाहिकथितापूर्वसूरिभिः उक्ताप्रत्युत्तरंदद्याद्यानारी
क्रोधतत्पराशरभाजायतेग्रामेशृगालीनिर्जने बनेउच्चासनंनसेवेतनगच्छेदुष्टसन्निधौनत्रपाकरबाक्या
निबधेन्नारीपतिकचित् इत्यादिपतिव्रतधर्मकी रीतितेरघुनन्दन की आज्ञाकार रहेउ अरु हेपुत्री
जौन उपाय कीन्हें पतिको सुखहोय ताहीआचरणपर सदा स्थितरहेउ ८१ ॥

प्रयाणकालेरघुनन्दनस्यभेरीभृदंगानकतूर्यघोषः ॥ स्वर्लोकभेरीघनतूर्यशब्दैःसंमूर्छि
ताभूतभयंकरोभूत् ८२ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्भवादेबालकाण्डेषष्ठः सर्गः ६ ॥

(रघुनन्दनस्यप्रयाणकाले) रघुनाथ जीके चलतसमय में (भेरीभृदंगानकतूर्यघोषः) नगारा
भृदंग पटह तुरही इत्यादि को शब्द (स्वर्लोकभेरीघनतूर्यशब्दैः) देवलोक के नगारा समूह तुरही
आदि को शब्द करिकै (भयंकरोभूतसंमूर्छिताभूत) ऐसाभयंकर शब्द भया जाको सुनि संपूर्ण
जन मूर्च्छित भये अर्थात् बरात सहित जातसमय रघुनन्दन अयोध्या जी को चले तब नगारा भृदंग
डंका तुरही गज घंटादि बरातमें महा शब्द भया तथा स्वर्ग में देवन के नगरादि बाजे दोऊ एकमें
मिले अत्यंत भारी शब्द भया ताही समय में परशुराम आकाश मार्ग आवते हैं तिनके वेगते अंधा
धुंध सहित महा हाहाकार होता भया इत्यादि सब एक में मिलि कै ऐसा भयंकर शब्द भया
जाको सुनि सब लोग भय मान मूर्च्छित भये भाव किसी को धीर्य धिर न रहा ८२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखबल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेबालकाण्डेश्रीरामविवाह वर्णनोनामपष्ठः प्रकाशः ६ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथगच्छतिश्रीरामेमैथिलाद्योजनत्रयं ॥ निमित्तान्यतिघोरा
णिददर्शनूपसत्तमः १ नत्वावशिष्टंप्रच्छकिमिदमुनिपुंगव ॥ निमित्तानीहदृश्यंतेवि
षमाणिसमततः २ ॥

सवैया ॥ मारग में भृगुनन्द मिले धनुखैचत देखि प्रभाव समीता । कै बिनती पद बंदिगये
लखि लोगनको तबहीं डरबीता ॥ सानुज व्याहि स्वधामगये नरनारि अनन्दसुगावतगीता । मातुल
धाम पठैभरतादि नमामि सदा प्रभु राघव सीता ॥ (अथश्रीरामेमैथिलाद्योजनत्रयंगच्छति) मि
रिजापति शिवजी कहत कि अब श्रीरघुनाथ जी मिथिला पुरते तीनि योजन गये संते (घोराणिनि
मित्तानिनूपसत्तमः ददर्श) भयंकर उत्पात कारण दशरथ जीको देखपरे १ (नत्वावशिष्टंप्रच्छमुनिपुंगव
इदंकिं) नमस्कारकरि बैशिष्ठ प्रति महाराज पूछते भये हे मुनि वर यह क्याकारणहै (समततः
विषमाणिनिमित्तानिइहदृश्यंते) प्रथम सम तदनंतर विषम उत्पात कारण ये देखि परते हैं
अर्थात् बरात सहित श्री रघुनाथ जी चले जनक पुरते बारह कोस पर भाये तब हाहाकार आंधी
अंधकार इत्यादि भयंकर उत्पात होनेके कारण दशरथ महाराज को देखि परे तब नमस्कार करि

भाव शरणा गत है वशिष्ठ जीसों दशरथ जी पूछें कि हे मुनि वर यामें क्या कारण होनहार है कि पूर्व सम आचरण अर्थात् आकाश अमल सानुकूल त्रिविधि पवन शुभ सगुण इत्यादि अब तक देखाते रहे ताके पीछे अब कराल अंधकार आर्था हाहाकार इत्यादि टेढ़े उत्पात होनेके येनोकारण देखाते हैं तामें क्या होनहार है सो कहिये २ ॥

वशिष्ठस्तमथाप्राहभयमागामिसूच्यते ॥ पुनरप्यभयंतेद्यशीघ्रमेवभविष्यति ३
मृगाःप्रदक्षिणयान्तिपश्यत्वांशुभसूचकाः ॥ इत्येवंवदतस्मस्यववौघोरतरोऽनिलः
४ मुष्णंश्चक्षूंषिसर्वेषांपांशुवृष्टिभिरर्दयन् ॥ ततोब्रजन्ददर्शाग्रेतेजोराशि
मुपस्थितम् ५ ॥

(अथवशिष्ठःतंप्राहभयंआगामिसूच्यते) तब वशिष्ठ जी श्री दशरथ प्रति बोले कि तुमपर कुछ भय आवती है ऐसा सूचित होता है परंतु (पुनःतेअद्यशीघ्रंएवअभयंभविष्यति) पुनः तुमको इसी समय शीघ्र ही निश्चय करि अभय होइगी काहेते ३ (शुभसूचकात्वांपश्यमृगाःप्रदक्षिणयान्ति) मंगलकारी सगुण आप देखिये मृग समूह तुम्हारे दहिने जाते हैं (इतिएवंतस्त्वदतःघोरतरःअनिलःववौ) ऐसा वशिष्ठ के कहत ही महाभयंकर पवन चलो अर्थात् दशरथ जी को प्रश्न सुनि तब वशिष्ठ जी बोले कि हे महाराज यह जो आपत्काल देखाता है तामें यह सूचित होता है कि कुछ कराल बाधा तुम्हारे ऊपर आवती है सो आयेपर पुनः तुमको इसी समय शीघ्र ही निश्चय करि अभय होइगी काहेते मंगल कारी सगुण आप आगे देखिये मृगसमूह आपके वामदिशि ते दहिनी दिशिको जाते हैं ऐसे वचन वशिष्ठजीके कहत ही सांधकारहाहाकारवृक्षतोरत ऐसमिहा भयंकर पवनआइगई ४ (पांशु वृष्टिभिःअर्दयन्मर्वेषांचक्षूंषिमुष्णं)धूरिकी वर्षा करिकैपीडितसबके नेत्र भांपिगये (ततःब्रजन्अग्रं तेजोराशिउपस्थितंददर्श) तदनंतर चलत में आगे तेज की ढेरीसी समीप ही स्थित देखते भये अर्थात् वायू वेगते जो गर्द उड़ि उड़ि गिरत त्यहि करिकै चोट खाय सब के नेत्र बंद भये पुनः चलत में आगे प्रचंड अग्निवत् तेज की ढेरी सी निकट ही स्थित सबको देखि परी ५ ॥

कोटिसूर्यप्रतीकाशंविद्युत्पुंजसमप्रभम् ॥ तेजोराशिंददर्शाथजामदग्न्यंप्रतापवान्
६ नीलमेघनिभंप्रांशुजटामण्डलमंडितम् ॥ धनुःपरशुपाणिंचसाक्षात्काल
मिवांतकं ७ कार्तवीर्यांतकरामंदृष्टक्षत्रियमर्दनम् ॥ प्राप्तंदशरथस्याग्रेकालमृत्युमिवापरम् ८ ॥

(सूर्यकोटिप्रतीकाशंपुंजविद्युत्समप्रभम्) सूर्यते करोरि गुण अधिक उपमा कहवे योग्य प्रताप तेज मय समूह विजुली की सम प्रभावंत ऐसे (प्रतापवान्तेजोराशिंजामदग्न्यंददर्श) प्रतापवंत तेज समूह जिनमें ऐसे जामदग्न्य जोपरशुराम तिनहि दशरथ जी देखतेभये ६ (नीलमेघनिभंजटामंडलमंडितम्प्राशु) श्याम मेघन की ऐसी प्रभा जटाको मंडल शरीर पर शोभित ताके बीचमें शरीर की प्रभारवि किरणवत् दर्शत (धनुःचपरशुपाणिंअंतकमसाक्षात्कालइव) धनुपपुनःपरशुहाथन में धारण किहे नाश करता साक्षात् काल सम है ७ (कार्तवीर्यंअंतकंदृष्टक्षत्रियमर्दनम्) सहस्र बाहुके नाशकरता अभिमानी क्षत्रिय के मर्दन हारे अपरमकालमृत्युंइवरामंदशरथस्यअग्रेप्राप्तं) दूसरे काल मृत्यु समान परशुराम आय दशरथ जीके आगे प्राप्त भये अर्थात् सूर्यन ते करोरि गुण अधिक प्रतापवंत समूह विजुली सम तेजवंत ऐसे जो परशुराम तिनहि दशरथ जी आवत देखे कैसा

रूप है शीशते छूटा हुवा जो जटामंडल सो देह पर बिथरा सो श्याम मेव की प्रभासम शोभित ताके बीच देह की प्रभा सूर्यकिरण सम प्रकाशित है बामहाथे धनुष तथा दहिने में कुठार धारण कैसे देखात यथा जगत् के नाश कर्त्ता साक्षात्मूर्तिमान् काल है काहे ते महाबली सहस बाहु के नाश कर्त्ता तथा यावत् अभिमानी क्षत्री रण सन्मुख भये तिन सबको मर्दन हारे इति विचारते दूसरे मृत्यु काल के समान प्राणहरता परशुराम आय श्री दशरथजी के आगे खड़े भये ८ ॥

तदृष्ट्वाभयसंत्रस्तो राजा दशरथस्तदा ॥ अर्घ्यादिपूजां विस्मृत्य त्राहि त्राहीति चाब्रवीत् ६ दण्डवत्प्रणिपत्या ह पुत्रप्राणान्प्रयच्छमे ॥ इति ब्रुवंतं राजानमनादृत्य रघूत्तमम् १० उवाच निष्ठुरं वाक्यं क्रोधात्प्रचलितेन्द्रियः ॥ त्वं राम इति नाम्ना मे चरसि क्षत्रियाधमः ११ ॥

(तदृष्ट्वा तदाराजा दशरथः भयसंत्रस्त अर्घ्य आदि पूजां विस्मृत्य त्राहि त्राहि इति च अब्रवीत्) परशुराम जोहें तिनहि देखि तासमयमें राजा दशरथ डरायकै ऐसे अधीर भये जाते अर्घ्य पाद्यादि पूजा करना सोतौ विसरि गये अरु रक्षा करौ २ इत्यादि वारम्बार बोले ९ (दण्डवत्प्रणिपत्य हिमें पुत्र प्राणान् प्रयच्छ) दण्डकीनाई भूमि परगिरि प्रणाम करि महाराज बोले कि हे मुने मेरे पुत्रों के जो प्राण हैं तिनहि छाड़ि दीजे (इति ब्रुवंतं राजानं रघूत्तमं अनादृत्य) ऐसे बचन कहत राजा दशरथ तिनहि अनादरि भाव उन बचन पर कान न दिये अर्थात् मृत्यु कालवत् जो परशुराम तिनहि देखि राजा दशरथ डरायकै भाव शिव चाप भंग ते क्रोध करि आय निश्चय मेरे पुत्रों को घात करेंगे इत्यादि विचारि ऐसा अधीर भये कि यासमयमें अर्घ्यादि पोडशोपचार परशुरामको पूजन करना उचित रहै सो तौ भूलि गये अरु रक्षा करौ रक्षा करौ इत्यादि बचन वारम्बार बोले अरु पुनः दण्डप्रणाम करि बोले हे मुने मेरे पुत्र प्राणों को रक्षा दान मोहिं दीजे ऐसे बचन कहत जो महाराज दशरथ तिनहि अनादरि भाव नहीं अंगिकार किये अरु रघुनन्दन के सन्मुख हवै बोले १० (क्रोधात् इन्द्रियः प्रचलित निष्ठुरं वाक्यं उवाच) क्रोधते इंद्री चञ्चल हैं ऐसे परशुराम रघुनन्दन प्रति निष्ठुर बचन बोलते भये (क्षत्रियः अधमः रा म इति मे नाम्ना चरसि) हे क्षत्री अधम राम ऐसा नाम मेरा लोक में प्रसिद्ध है ताको धारण किहे तूं भूतल पर विचरता है अर्थात् दीन अधीनता पूर्वक शरण हवै यद्यपि महाराज भारत बचन कहे तिन पर कान न दिये काहे ते क्षत्री वंश पै निर्दयी है अरु गुरु को धनु भंग करता जानि रघुनन्दन के सन्मुख बोले क्रोधवश ते नेत्र अरुण भृकुटी चढ़ी मुख अरुण ओष्ठ फरकत इति इंद्री चलायमान ऐसे जो परशुराम सो निष्ठुर अर्थात् निर्दयता धारण किहे प्राणघात सूचक कठोर बचन बोले हे क्षत्री अधम यह राम ऐसा नाम मेरा लोक में प्रसिद्ध है भाव इस नाम द्वारा मेरा यश लोक में प्रकाशमान है सोई राम नाम धारण किहे अब तू इस लोक में प्रसिद्ध करता विचरता है भाव अपि मखरक्षण सुबाहु आदि बध अहल्या तारण शिव धनु भंग इत्यादि आचरण द्वारा अपना यश फैलाय मेरा यश मिटाय दीन चाहता है ११ ॥

द्वंद्वयुद्धं प्रयच्छाशु यदि त्वं क्षत्रियोसिवै ॥ पुराणं जर्जरं चापं भक्त्वा त्वं कथं सेमुधा १२
अस्मिंस्तु वैष्णवे चापे आरोपयसि चेद्गुणम् ॥ तदा युद्धं त्वया सार्द्धं करोमि रघुनन्दन १३
नो चेत्सर्वान् हनिष्यामि क्षत्रियान्त करोह्यहम् ॥ इति ब्रुवति वैतस्मिन् च चालवसुधा
भृशम् १४ ॥

यदिवैत्वंक्षत्रियोभिन्नाशुद्वन्द्वयुद्धप्रयच्छ (जो निश्चय करि तुम क्षत्री हो तो शीघ्रही मोकों द्वन्द्व युद्ध देउ (पुराणजर्जरंचापत्वंमुयाकृत्यसेभक्त्वा) बहुत काल को बना पुरान जर्जरधुना सरा जो शिव धनुष ताहि वृथा काहे को तोरि डारेउ १२ (अस्मिंस्तुवैष्णवेचापेचेदगुणंआरोपयसि) यह जो मेरे पास है विष्णुको धनुष तामें जो कदाचित् रोदा चढ़ाय सकौ (तदारधुनन्दनत्वयासाद्धैयुद्धंके रोमि) तबहे रघुनन्दन तुम्हारे साथयुद्ध करव १३ (नाचेत्तद्वंक्षत्रियअन्तःकरःहिसर्वानहनिष्यामि) जो न चढ़ी तो मैं क्षत्रिन को नाश करता हों निश्चय करि तुम सब को मारिहों (इतिब्रुवतिवैत स्मिन्वसुधाभृशम्चचाल) ऐसा कहत ही तासमयमें पृथ्वीअत्यन्त हालिउठीअर्थात् परशुराम बोले कि मेरे वर्तमान तुम्हारा नाम न चलने पावैगो ताते तुम जो क्षत्री वीर हो तो मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध करो भाव मोको जीति तब अपना नाम प्रकाशित करौ किस हेत सोसे युद्ध करौ कि केवल धनुषके उठाय लेने ते भूपकी प्रतिज्ञा पूर्ण होती रहै सो मेरे गुरु को धनुष वृथाही क्यों तोरि डारेउ ताते मेरे शत्रु सम हौ अरु जो धनु तोरे ते बड़ा अभिमान राखे होउ तो गिव धनुषपुरान जर्जरहा ताकेतोरनेते तोबलीवीर मानतानहीं हों यहजो मेरेपासहै विष्णुको धनुष तामें जो कदाचित् रोदा चढ़ायसकौ हेरघुनन्दन तबहम तुम्हारेसाथ युद्धकरेंगे कदाचित् यहधनुष न चढ़ेगो तौ तुमसबको नाशकरिदेऊंगे क्योंकि क्षत्रिनको नाशकरतामैंहों इत्यादि कहतहीसबपृथ्वीअतिशय हालिउठी १४॥

अंधकारो बभूवाथ सर्वेषामपि चक्षुषाम् ॥ रामो दाशरथिर्वीरो वीक्ष्य तं भार्गवं रुषा १५

धनुराच्छिद्य तद्धस्तादारोप्यगुणमजंसा ॥ तूणीराद्वाणमादाय संघाय वीर्यवान् आकृष्य
वान् १६ उवाच भार्गवरामं शृणु ब्रह्मन् वचो मम ॥ लक्ष्यं दर्शय वाणस्य ह्यमोघो मम शायकः १७ ॥

(अथसर्वेषां चक्षुषाम् अपि अंधकारो बभूव) अरुसबके नेत्रोंके आगे अंधकार छायाजाता भया (रामः दाशरथिः वीरः भार्गवंतं रुपावीक्ष्य) रामदशरथ नंदन वीरपशुराम जो हैं तिनहि क्रोध सहितदेखि १५ तत्तहस्तात् धनुः आच्छिद्य अजंसा गुणं आरोप्य) तिनपरशुराम के हाथ ते धनुष छीनिलै शीघ्रही रोदाचढ़ाय (तूणीरात् वाणं आदाय संघाय वीर्यवान् आकृष्य) तरकसते वाण जोहै ताहिलैकें संघानि पराक्रमी रघुनंदन सवाण रोदाखेंचे १६ (भार्गवं रामं उवाच ब्रह्मन् मम वचः शृणु) भृगुवर परशुराम प्रतिरघुनंदनबोले हेब्रह्मन्मेरे वचनसुनु (वाणस्य लक्ष्यं दर्शय हि मम शायकः अमोघः) वाणको निशाना देखाइये निश्चयकरि मेरावाण वृथानहींजाताहै अर्थात् क्रोधसहित परशुरामके बोलसही पृथ्वी हालिउठी अरुआसते दशरथादि सबकी आँखिनके आगे अंधकार छायागया तासमय रामजो दशरथनंदन वीरसो परशुरामको क्रोध सहितदेखि जो विष्णुको धनुष लिहेरहै सो हाथते छीनिलिये शीघ्रही रोदाचढ़ाय अपनेतरकसते वाणलै संगाने रोदाखेंचे परशुराम प्रतिबोले हे विप्रवाण प्रहार हेतनिशाना देखाइये क्योंकि मेरावाण वृथानहींजाताहै १७ ॥

लोकान्पादयुगंवापिवदशीघ्रंममाज्ञया ॥ अयंलोकः परोवाथ त्वयागंतुं न शक्यते १८ एवं हित्वांप्रकर्तव्यंवदशीघ्रंममाज्ञया ॥ एवंवदति श्रीरामे भार्गवो विकृता
ननः १९ संस्मरन्पूर्ववृत्तांतमिदं वचनमब्रवीत् ॥ रामराममहाबाहोजानेत्वांपरमे
श्वरम् २० ॥

(लोकान् वा अपिपाद युगंमम आज्ञयाशीघ्रंवद) कितौ सबलोक वा निश्चय करि तुम्हारेपाँय

दोऊये हैनिशाना हैं तिनमें एकमेरी आज्ञाकरिकै शीघ्रकहिये (अयंलोकः अथवापरः त्वयागंतुं न शक्यते) यहलोक अथवा परलोक स्वर्गलोक पाताल्लादि इनमें तुमको जानेकी शक्ति न रहेगी १८ (एवंहित्वाकर्तव्यं मम आज्ञया शीघ्रं वद) ऐसेही निश्चयकरि तुम्हें करौंगो ताते मेरी आज्ञाकरि आप शीघ्रवताइये (एवं श्रीरामे वदति भार्गवः विरुत्ताननः) इसभाँति श्रीरामके कहत संते परशुरामको मुखसूखिगया अर्थात् रघुनन्दन कहत हे विप्र मेराबाण वृथान जायगो ताते कहिये तौ सबलोकनाश करिदेउं नातरुतुम्हारे पायँनमें जो सबलोकनको जानेकी गतिहै ताको नाशकरिदेउं जामें इस लोकमें अथवा स्वर्गादि अपर लोकनमें जानेकी तुमको गतिनरहै ऐसा निश्चय करि तुमहिं बेशक्ति करिदेउंगो तातेमेरी आज्ञाते शीघ्रवताइये लोकनाशकरौं कि तुम्हारी गतिनाशकरौं इत्यादि रघुनन्दन के कहतही शंकाते परशुरामको मुखसूखिगया १९ (पूर्ववृत्तांतं संस्मर इदं वचन अब्रवीत्) पूर्व समयको हाल सुधिकरि इसप्रकार वचन बोले (रामराम महाबाहो परमेश्वरं त्वां जाने) हे राजकुमार राम आप महाबाहु राम परमेश्वर हौ अवतुमहिं हमजाना अर्थात् धनुष चढ़ाये सहित रघुनन्दनके वचनसुनतही परशुरामको पूर्वसमयको हालसुधि हवै आवाभाव अवतक अभिमानते भूलैरहे प्रभाव देखिसुधि करि इसप्रकार वचन बोले हे रामभाव राजकुमार रूप देखि अवतक भूलै रहे जब विष्णुको धनुष चढ़ाये बाहुनमें महाबल देखेउं ताते अब्रजानेउ कि आप परमेश्वर रामहौ २० ॥

पुराणं पुरुषं विष्णुं जगत्सर्गलयाद्भवम् ॥ वाल्येऽहंतपसा विष्णुमाराधयितुमंजसा २१

चक्रतीर्थं शुभंगत्वा तपसा विष्णुमन्वहम् ॥ अतोषयं महात्मानं नारायणमनन्यधीः २२

ततः प्रसन्नो देवेशः शंखचक्रगदाधरः ॥ उवाच मां रघुश्रेष्ठ प्रसन्नमुखपंकजः २३ ॥

(जगत्सर्गलयाद्भवं पुराणं पुरुषं विष्णुं) जगत् के उत्पत्ति पालन संहार करण हारे पुराण पुरुष विष्णु हैं (अहं बालेतपसा विष्णुं आराधयितुं) मैं बाल अवस्था में तपस्या करि विष्णु आराधन हेत (अंजसा २३ शुभं चक्रतीर्थंगत्वा) शीघ्रही मंगलीक जो चक्रतीर्थ तहांगयो (अनन्यधीः विष्णुं अनुग्रहम् तपसामहात्मानं नारायणं अतापयम्) अनन्यता बुद्धिकरि विष्णुको अनुचर हवै मैं तपस्या करिकै महात्मा जो नारायण तिनहिं प्रसन्न किहेउं २१ (ततः रघुश्रेष्ठ तदनंतर हे रघुवंश मणि (शंखचक्रगदाधरः देवेश प्रसन्नः मुखपंकजः मां प्रसन्नः उवाच) शंख चक्र गदाधारण किये हे देवन के स्वामी प्रसन्न मुख कमल मोपर प्रसन्न हवै बोले अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनन्दन जगके उत्पत्ति पालन संहार करण हारे आप पुराण पुरुष विष्णु हौ काहेते मैं जानेउ कि मैं बालअवस्था में तपस्या करि विष्णुके आराधन हेत शीघ्रही मंगलीक जो चक्रतीर्थ है तहां जाय सबको आस भरोसा त्यागि एकै आस इति अनन्य बुद्धि करि विष्णु को अनुचर हवै मैं तपस्या करिकै महान् परमात्मा जो नारायण तिनहि संतुष्ट कीन्हेउ हे रघुवंश मणि ताही समय में भगवान् प्रकट भये कौन भाँति किं शंख चक्र गदा पद्म धारण किहे किरीट कुंडल केयूर बनमाला पीतपट विभूषित प्रसन्न मुख कमल ऐसे देवन के स्वामी मोपर प्रसन्न हवै बोले २३ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ उत्तिष्ठ तपसो ब्रह्म नू फलितं ते तपो महत् ॥ मच्चिदंशेन युक्तस्त्वं जहि हे हयपुंगवम् २४ कार्तवीर्यं पितृहण्यं दर्थं तपसः श्रमः ॥ ततस्त्रिःसप्तकृत्वस्त्वं हत्वा क्षत्रियमंडलम् २५ कृत्स्नां भूमिं कश्यपाय दत्वा शांतिमुपावह ॥ त्रेतामुखे दाशरथिर्भूत्वारामोऽहमव्ययः २६ ॥

(ब्रह्मन्तपसाउत्तिष्ठतेमहत्तपःफलितं) भगवान् बोले कि हे ब्रह्मन् तप क्रिया त्यागि अब उठु तेरी बड़ी भारी तपस्या सफल भई (मत्चित्प्रशेनयुक्तःत्वंहैहयपुंगवंजहि) मेरे चैतन्य अंश में मिलि कै तुम अपने शत्रु सहस्रबाहु को मारौ २४ (पितृहणंकार्त्तवीर्यं) जो तुम्हारे पिता को मारने वाला कार्त्तवीर्य सहस्रबाहु है ताहि मारौ पुनः (यदर्थतपसःश्रमः) जिस बाल हेत तपस्या में बड़ी परिश्रम कीन्हेउ है (ततःत्वंत्रियमंडलत्रिःसप्तहत्वाकृत्वः) सहस्रबाहु मारे पीछे तुमक्षत्री मंडल भरि एकविंशवार नाश करि देहौ २५ (कृत्स्नाभूमिं) राजाहीनरही जो संपूर्ण भूमि ताहि (कश्यप यदत्त्वाशान्तिउपावह) कश्यप के अर्थ दान दैकै शांति को प्राप्त होयहु (अव्ययःअहंत्रेतामुखेदाशरथिः रामःभूत्वा) नाश रहित हम त्रेता के चौथे चरण सें दशरथ नन्दन रामनामे उत्पन्न होइगे अर्थात् परशुराम कहत कि भगवान् मोसों बोले हे ब्रह्मन् तप क्रिया त्यागि उठु जो बड़ा भारी तप किहे सो सफल भया अब मेरा चैतन्य अंश तेरे शरीर में व्यापक रहै गो त्यहिशक्ति सहित जो तुम्हारे पिता को बध कियाहै कार्त्तवीर्य सहस्रबाहु ताको बधकरौ अरु जोमनोर्य राखि तपमें बड़ी परिश्रम किहेउ सो भी सफल भया भूमंडल में यावत् क्षत्री राजाहैं तिन को मारि मारि एकइसवार निःशत्रु करि दिहेउ तिसके उद्धार हेत तबभूमि कश्यप को संकल्पि दिहेउ तब चित्त शांति को प्राप्त होई अरु जब मेरा तेज तुम्हारे शरीर ते निसरि जायगो सो कारण सुनौ त्रेतायुगके चौथेचरणमें नाश रहित हम रामनामे दशरथ के पुत्र हैं उत्पन्न होइगे २६ ॥

उत्पत्त्येपरयाशक्त्यातदाद्रक्ष्यसिमांततः ॥ मत्तेजःपुनरादास्येत्वयिदत्तंमया
पुरा २७ तदातपश्चरन्ल्लोकेतिष्ठत्वंब्रह्मणोदिनम् ॥ इत्युक्त्वांतर्दधेदेवस्तथासर्वं
कृतंमया २८ सएवविष्णुस्त्वंरामजातोऽसिब्रह्मणार्थितः ॥ मयिस्थितन्तुत्वंतेज
स्त्वयैवपुनराहृतम् २९ ॥

(परयाशक्त्याउत्पत्त्येतदामांद्रक्ष्यस्तिततः) मेरीपराशक्ति सीता नामें जनकपुरमें उत्पत्ति होइगी त्यहिसहित जब मोको देखोंगे तदनंतर (त्वयिपुरामयादत्तंमत्तेजःपुनःआदास्ये) तुमविपेपूर्व हमकरि कै दियाहुआ मेरातेज सो पुनः लैलेउंगो २७ (तदात्वंतपश्चरन्ब्रह्मणोदिनंलोकेतिष्ठ) तबतुम तपस्या करते हुये ब्रह्माको दिन कल्पभरि लोकमें रहेउ (इतिउक्त्वादेवःअंतर्दधेत्तथामयासर्वं कृतं) इत्यादि कहि देवनारायण अंतर्द्धान भये पीछे उनका कहाहुआ वचन जैसा रहै तैसाही मैंने सब किया अर्थात् नारायण ने कहा कि यथा हमअयोध्यामें रामनामे दशरथ नंदनहोइगे तथाहमारी पराशक्ति जनक पुरमें सीतानामे जनकपुत्री होइगी ताहि बिवाहि संगलै हमलौटेंगे तासमय तुम आयसक्रोध दृष्टि हमको देखोंगे तब पूर्वको दिया हुआ आपना तेज सो पुनः हम खैंचि लैइंगे इत्यादि कहि नारायण देव अंतर्द्धान हैं गये २८ (सएवत्वंविष्णुःरामब्रह्मणार्थितःजातःअस्ति) सोई निश्चय करि तुम विष्णुहौ हे रघुनाथजी ब्रह्मा की प्रार्थनाते भूतल में अवतीर्णभयउहै (त्वत्तेजःमयिस्थितंपुनःत्वयाएवआहृतम्) आपहीको तेज मेरेविपे स्थित रहै पुनः आपहीने निश्चय करि अब हरि लिहेउ अर्थात् परशुराम कहत जो पूर्व वरदायक सोई निश्चय करि आप विष्णुहौ हे श्रीरघुनाथजी ब्रह्माकी प्रार्थनाते भूभारहरने हेत राजकुमार रूपते अवतीर्ण भयउ अरु आपही को तेज मेरे तनमें व्यापक रहै ताही बलते मैं लोकमें प्रतापवंत रहेउ अब आपहीने निश्चय करि आपना तेज हरि लिहेउ खाली बिप्र रहि गयेंउ २९ ॥

अद्यमेसफलं जन्मप्रतीतोसिमयाप्रभो॥ब्रह्मादिभिरलभ्यस्त्वं प्रकृतेः पारगोमतः ३०
त्वयिजन्मादिषड्भावानसन्त्यज्ञानसंभवाः ॥ निर्विकारोसिपूर्णस्त्वं गमनादिविज-
र्जितः ३१ यथाजलेफेनजालंधूमोवह्नौ तथात्वयि ॥ त्वदाधारात्त्वद्विषयामायाकार्यं
सृजत्यहो ३२ ॥

(प्रकृतेः पारगोमतः) पृच्छति ते पारगामी यह वेद को मत है (ब्रह्मादिभिः अलभ्यः प्रभो त्वं मया प्रतीतोसि) ब्रह्मादिकन करिकै अलभ्य हे प्रभो सोई आप हम करिकै जाने गयो ताते (अद्यमेजन्मसफलं) अब मेरा जन्म सफल भया अर्थात् परशुराम कहत कि जो माया ते पार शुद्ध चैतन्य है ऐसा वेदनको सिद्धांत मत पुनः ब्रह्मादिकन को दर्शन दुर्लभ हे प्रभु सोई आपको परमात्मा जानि प्रसिद्ध अवलोकन करता हौं ताते या समय में मेरा जन्मसफल भया भाव मानवश ते लोक साधन में लगा रहा ताते जन्म वृथारहा अब दर्शन पाय मान गया शुद्ध शरणहै परलोक साधोगो इति जन्म सफल भया ३० (अज्ञानसंभवाः जन्मादिषड्भावाः त्वयिनसन्ति) अज्ञान ते उत्पन्न जन्मादि जो षड्भाव सो तुम विषे नहीं हैं (गमनादिवर्जितः त्वं पूर्णः निर्विकारः असि) गमनादि इन्द्रिय विषय रहित आप पूर्ण परमात्मा निर्विकारहौं अर्थात् जन्म होना नाम होना अवस्था बढन युवा वृद्ध मरण इत्यादि षड्भाव जो अज्ञान ते उत्पन्न होते हैं ते आप विषे नहीं हैं तथा शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मैथुन चलन इत्यादि इन्द्रिय की विषय अरु कामादि मनके विकार इत्यादि रहित पूर्ण परमात्म हौं ३१ (जलेयथाफेनजालंधूमोवह्नौ यथाधूमः) जल विषे ज्यहिप्रकार फेनासमूहअरु अग्निविषे ज्यहि प्रकार धूम समूह (तथात्वयित्वत्त्वाधारात्त्वत्तविषयामायाअहोकार्यं सृजति) ताहीप्रकार आपु विषे आप की आधार ते आप की विषय माया सो आश्चर्य मय कार्य रचती है अर्थात् जौनी भांति अग्नि निर्विकार ताके आधार जोधूम विकार कढताहै सो विषयहै सोनेत्रको करूलागत बसन मंदि-रादि मलिन करत अधिकमें परे प्राणघातक इति दुःखद पुनः मसकदंसादिते रक्षक अगरादि सुगंध युत नासिकाको सुखद मेघनमें मिलिजग जीवन दाता इत्यादि सुखद पुनः जलशुद्ध ताकी आधार फेन विकार विषय सो भी अनेक कार्य करत ताही भांति हे रघुनन्दन आप निर्विकार शुद्ध हौं आप के विषे आपके आधार आपकी विषय मायाहै सो आश्चर्य मय ब्रह्माण्ड रचनादि अनेक कार्य करत आप कछु नहीं करते हौं ३२ ॥

यावन्मायावृतालोकास्तावत्त्वांविजानते ॥ अविचारितसिद्धेष्वाविद्याविद्यावि-
रोधिनी ३३ अविद्याकृतदेहादिसंघातेप्रतिविम्बिता ॥ चिच्छक्तिर्जीवलोकेस्मिन्
जीवइत्याभिधीयते ३४ ॥

(यावत्तलोकाः मायावृता) जबतक लोकजन माया के घेर में पड़ेहैं (तावत्त्वांविजानते) तबतक आप को नहीं विशेषि जानि सकेहैं काहेते (विद्याविरोधिनी एषाअविद्याअविचारितसिद्धा) विद्याकी विरोधिनी यह जो अविद्या माया है सो अविचारही ते सिद्धि है विचार करनेते नाशहोती है अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनन्दन जबतक लोकजन अविद्या माया के घेर में परे हैं भाव विषय बश देंहैं को आत्मामाने तबतक आपको विशेषि नहीं जानि सकेहैं काहेते विद्या जो ब्रह्मज्ञान ताकी विरोधिनी देहाभिमान यह जो अविद्या है सो अविचारै ते सिद्ध है भाव असदासना उठी विचार न किया ताते मिथ्या दृष्टि भई देंहैं को सत्य मानि इन्द्रिय शब्दादि विषय के बश मनकामादिके

वश ते विपरी जीव भया अरु विचार करने ते देह व्यवहार मिश्यादेखात सोई अविद्या नाशहे ३३
(देहआदिमंघातेअविद्यावृत्त) देह आदिक जो समूह लोक व्यवहार है सो अविद्या को किया है
(चित्तशक्तिःप्रतिविम्बिताजीवअस्मिन्लोके) चैतन्य शक्ति सों मायामे प्रतिविम्बित भया सोईजीव
इस लोक में है (जीवइतिअविधीयते) जीव नाम इस विधिते भया अर्थात् तन धन धाम स्त्री
पुत्र मित्र इत्यादि यावत् देह व्यवहार समूह है सो सब अविद्या मायाकी रचनाहै ताही मायामें
जो परमात्माकी चैतन्यशक्ति प्रति विम्बितहै भाव जड़माया भी चैतन्यसी देखाती है सोईजीव इस
लोकमें है भावनिर्विकार स्वतंत्र अखण्ड आनन्दमय जो आत्मरूप सो कारण वशभुलाय कामादि
विकारयुत लौकिक सुख चाहते देहयारी भया इसविधिते जीवभया ३४ ॥

यावद्देहमनःप्राणबुद्ध्यादिष्वभिमानवान् ॥ तावत्कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादिभा
गभवेत् ३५ ॥

(देहमनःप्राणबुद्धिआदिपुयावत् अभिमानवान्) देह मन प्राण बुद्धि इत्यादि विषे जवतक जीव
अभिमानि है (तावत्कर्तृत्वसुखदुःखादिभोक्तृत्वभागभवेत्) तवतक शुभाशुभ कर्म करिवेको अरु सुख
दुःख भोगवेको भागी हांताहै अर्थात् भूमि जल अग्नि पवन आकाश इनपञ्च तत्त्वमय रचित विश्वा
भिमानि जायत्तुअवस्था वेपरी वानी इति स्थूल शरीर तामें अभिमान यथा हम ब्राह्मण विद्वान् हम
क्षत्रीराजा हम वैश्यधनी पुनः मन जोजीवको मुख्य अन्तःकरणहै तामें पडंश जिज्ञासापञ्चकेयथा ॥
कर्माकर्मविकर्मादावनियमेनवर्तते ॥ संकल्पद्वयविकल्पञ्चमनसावहुगो यथा ॥ अर्थात् कर्म अकर्म
विकर्म अनियम संकल्प विकल्प इत्यादि द्वारा मनोरथकी संकल्प रखनामनको अभिमानहै पुनः प्राण
यथा ॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःसमानोनाभिसंस्थितः ॥ उदानःकण्ठदेशेस्यादधानःसर्वशरीरगः ॥ इत्यादि
प्रत्यंग जो वायु वसत तिन में अपनपों राखना प्राण को अभिमान है पनः बुद्धि जीव को अंतःक-
रण ताके पडंश यथा जपोयज्ञस्तपस्यागःआचारोध्ययनतथा ॥ बुद्धेऽत्रैवपडंगानिज्ञातव्यानिमुमूषु
भिः ॥ भाव जप यज्ञ तप त्याग आचार विद्याध्ययन इत्यादि में करता हों इति बुद्धि को अहंकार है
इत्यादि देह मन प्राण बुद्धि इत्यादि में जवतक जीव अभिमानि बनाहै तवतक कर्त्ता बना शुभाशुभ
कर्मकरत ताको फल सुखदुःख भोगवेको भागी बना चोरासी में परा जोय भोगता है ३५ ॥

आत्मनःसंसृतिर्नास्तिबुद्धेर्ज्ञानेनजात्यति ॥ अविवेकानुद्वयंयुक्तासंसारितीप्रवर्तते
ते ३६ जडस्यचित्समायोगाच्चित्वंभूयाच्चितेस्तथा ॥ जडसंगाज्जडत्वंहिजला
ग्न्योर्मेलनंयथा ३७ ॥

(संसृतिःआत्मनःनअस्ति) जन्म मरणादि संसार बंधन आत्माको नहीं होताहै (इतिबुद्धेःज्ञाने
नजातु) इसीभाति बुद्धी को ज्ञान नहीं होताहै (द्वयंयुक्त्वाअविवेकानुद्वितिसंसारिप्रवर्तते) चैतन्य
आत्म अरु जडबुद्धि ये दोऊ एक मे मिले अविवेक ते इसभाति जीव संसारी रीति पर चलता है
अर्थात् सूर्य घामवत् परमात्मको अंग आत्म स्वयं प्रकाश अखंड आनन्द रूप है तामें अज्ञान को सं-
भव नहीं ताते जन्म मरण दुख सुखादि संसागी व्यवहार नहीं है सकन यथा शुरु सनकादि पैंश
होतही आत्मै रूपको दृढ गहि लिये तिन देह व्यवहार में नहीं परे इत्यादि आत्म रूप में संसृति नहीं
पुनः यथा जल में अमल लावण्यता है तथा प्रकृति में बुद्धी है तामें स्वयं प्रकाश रूप ज्ञान नहीं ताते
भक्ति मुक्ति आदि परमार्थ व्यवहार नहीं है सकत यथा देह व्यवहार में परे असंख्यन विपरी जीव

वर्तमान हैं इत्यादि बुद्धिमें ज्ञान नहीं अरु परमात्मा की इच्छाहै कि संसारों बनी रहै ताही में पर-
 माथी होवै ताते आत्म अरु बुद्धि दोऊ एक में मिले ते जीव भया तिन में किंचित् विवेक दिया जो
 सत्संग बलते विवेक पकरि लिया सो निवृत्त पथमें परमार्थमें लगा अरु अविवेक सबल करि दिया सो
 कसंग बलते अविवेक पकरि प्रवृत्त मार्ग में संसारी व्यवहार में लगा ३६ (चित्समायोगात् जडस्य
 चित्त्वभूयात् चैतन्य जो आत्मा ताके संयोगते जडबुद्धी को चैतन्यता होती है (तथा जडसंगात् चितेः
 हि जडत्वं तथा जडबुद्धी के संग ते चैतन्य आत्मा को निश्चय करि जडत्व आवताहै कौन भांति (यथा
 जलअग्नयोः मेलनं) जौनी प्रकार जल अग्नि को मिलन होता है अर्थात् आत्मा अरु बुद्धी दोऊ मि
 लिकै जीव भया इसी ते संसार में अज्ञान अरु ज्ञान दोऊ हैं ताको कारण कहत कि चैतन्य
 आत्मा परिपूर्ण ज्ञानरूप तामें मिलेते जडअज्ञान जो बुद्धीतामें चैतन्यता भाव अज्ञानमें ज्ञान व्यापि
 गया तैसेही जडबुद्धी अज्ञानमें मिले चैतन्यज्ञानवंत आत्मा ताहूमें जडता भाव ज्ञानमें अज्ञान व्यापि
 गया कौन भांति यथा जलको संगपाय अग्निशीतल है जात अरु अग्निको संगपाय जलतप्त है जात
 परंतु स्वयं रूपते दोऊ मिलिनहीं सके हैं काहेते अधिक जलपरै तो अग्निको बुझाय देवै तथा अधिक
 अग्नि होइतौ जलको भस्म करि देवै ताते तीसरा आधार चाहिये यथा चूल्हे में अग्नि वारितापर
 पटुई में भरि जल धरि दियो तब अग्निके संगते जल तप्त होई अस जलके संगते बटुई में व्याप्त जो
 अग्नि सो शीतल रहै भाव अग्निवर्ण बटुई न है सकी इत्यादि कारणते भोजन आदि अनेक व्यापार
 होते हैं इसी भांति आत्म अरु बुद्धी स्वयं रूपते नहीं मिलि सके हैं ताते पंचभोक्तिरु तनकारण पाय तामें
 आत्मबुद्धी मिलि संसारी व्यवहार होताहै कुसंगते बद्ध है ३७ ॥

यावत्स्वत्पादभक्तानां संगसौख्यं न विंदति ॥ तावत्संसारदुःखौघान्न निवर्त्तेन्नरः सदा ३८ ॥

(स्वत्पाद भक्तानां संगसौख्यं यावत् न विंदति) आपके पादसेवक भक्तन को संगको सुख जब
 तक नहीं देखना है (तावत् नरः सदा संसार दुःखौघात् न निवर्त्तेत्) तबतक मनुष्य सदा संसारके
 दुःख समूहते नहीं छूटताहै अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनाथ जी आपके पायन की सेवकाई करने
 वाले जे अनुरागी भक्त हैं तिनके संगको सुख जबतक जननहीं देखता है कुसंगते इन्द्रिय विषयासक्त
 देह सुखमें पराहै कर्माधीन चौगामी में जन्मत मरत दुखमुख भोगत सदा तबतक मनुष्य संसारको
 समूह दुःख जन्म मरणादि तिहि बंधनते छूटता नहीं है इहां जीवको नहीं कहै नरनको कहेताको भाव
 और तनमें तरिवेकी गति नहीं है अरु नर तनमें है ताते मनुष्य तनपाय भक्तनको संगकरि भक्तिपर
 आरुढ़ हवै सुगम भव तरि जाय ३८ ॥

सत्संगलब्धया भक्त्या यदात्वांसमुपासते ॥ तदामायाशनैर्यातितानवंप्रतिपद्य
 ते ३९ न तस्वज्ज्ञानसम्पन्नस्सद्गुरुरतेन लभ्यते ॥ वाक्यज्ञानं गुरोर्लब्ध्वा त्वत्प्र
 सादाद्विमुच्यते ४० तस्मात्त्वद्वक्तिहीनानां कल्पकोटिशतैरपि ॥ न मुक्तिशङ्का वि
 ज्ञानशङ्कानैव सुखं तथा ४१ ॥

(सत्संगलब्धया भक्त्या) सत्संगते भक्ति लाभ होती है त्यहि करिकै (यदात्वांसमुपासते तदामा
 याशनैर्याति) जब आप को उपासत तब धीराधीरा माया मिटत जाती है ताते (तानवंप्रतिपद्यते)
 सो माया क्षीण ताको प्राप्त होती है अर्थात् हरिभक्तन के दर्श स्पर्श ते पाप नाश भया संगरहे उन्हीं
 को ऐसी स्वभाव आवा कथा उपदेश सुने हरि सनेह उपजा इति सत्संग ते भक्ति लाभ भई त्यहि

करिकै श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन वन्दनादि अहर्निशि आप की उपासना ज्यों ज्यों करता है त्यों त्यों ज्ञान बढ़ते बढ़ते आत्मरूप सबलपरो अरु ज्यों ज्यों ज्ञान बढ़तगयो त्यों त्यों इन्द्रिनकी विषयकामादि विकार मिटते मिटते मायाक्षीण परिगई भाव देह व्यवहार मिथ्यादेखिपरा ३९ (ततः त्वत्ज्ञानसंपन्नः तेन सद्गुरुः लभ्यते) तदनन्तर आपके रूपको ज्ञान परिपूर्ण भया त्थहि करिकै सद्गुरुलाभ भया (गुरोः वाक्यज्ञानं लब्ध्वा त्वत्प्रसादात् विमुच्यते) गुरुके बचनते ज्ञानलाभ भया तब आपके प्रसादते भवते छूटिगया अर्थात् परशुराम कहत हे रघुनाथजी जब मायाक्षीण परी तब आप के रूपको जानवेको ज्ञानभया तब सद्गुरुते उपदेशलिया तिनके बचन सुनतसंते परिपूर्ण ज्ञान नीकी भांति आपको जाना तब आपकी रूपाते जीवभव बंधनते छूटिगया ४० (तस्मात् त्वत्भक्तिही नानाशतैः कोटिकल्प अपि मुक्तिन) ताते आपकी भक्ति हीन जननको सउकरोरि कल्पतक निश्चय करि मुक्ति नहीं होती है (तथा विज्ञानशंकाशंका एव सुखं) तैसेही विज्ञानमें शंकालगी रहत अरु जब शंकावनीहै तब निश्चय करिके सुख नहीं है अर्थात् हे रघुनाथजी केवल भक्ति करि आपकी रूपाते मुक्ति होती है ताते जे आपकी भक्ति नहीं करते हैं भावशरणागतको भरोसा नहीं राखे अन्य साधनादि करि मुक्तहू न चाहैं तौ सउकरोरि कल्पतक लगेरहैं तबहूँ मुक्ति न होई कदाचित् मुमुक्षु हूँ शमदम उपराम तितीक्षा श्रद्धासमाधान विराग विवेकादिमें श्रमकरि जो विज्ञानभी होवै तामें माया प्रेरित कामादिकोंके बाधाकी शंकावनी रहती है इसी हेतु संन्यासिनको चाहिये कि सब व्यवहार रहित असंग उदासीन वृक्षतररहै यह मनुस्मृति छठे अध्याय पैतालिस श्लोकके ऊपर लिखा है ताते शंका अवश्यही रहत अरु जब शंकावनीहै तौ निश्चय सुख नहीं है ताते भक्ति हीन मुक्ति हेतु अन्य साधन करना श्रम वृथा है यथामहारामायणे ये ब्रह्मास्मीति नित्यं वदन्ति हृदि विनाराम चंद्राधिपद्ममूलेऽवुध्यास्त्यक्तपोतास्तृणपरिनिचये सिंधुमुग्रंतरंति॥ पुनः रुद्रयामले॥ ये नरा धमलोकेपुरा मभक्तिपरां मुखः जपंतपंदयगौचं शास्त्रानामवगाहनं सर्ववृथा विनायेन शृणुध्वं पार्वति प्रिये॥ सत्योपाख्याने॥ विना भक्तिन मुक्ति दच भुजमुत्थाय चोच्यते ४१ ॥

अतस्त्वत्पादयुगले भक्तिर्मेजन्मजन्मनि ॥ स्यात्त्वद्भक्तिमतां संगोऽविद्यायाभ्यां विनश्यति ४२ ॥

(अतः मेजन्मजन्मनित्वत्पादयुगले भक्तिः स्यात्) इस कारणते मेरे अन्तरमें जन्मजन्मान्तर आपके पद दोउनमें भक्ति होइ तथा देहते (त्वत्भक्तिमतां संगः) आपके भक्तनको संगरहै (याभ्यां अविद्या विनश्यति) जिन दोऊ करिकै अविद्यामाया विशेषि नाशको प्राप्तहोइ अर्थात् परशुराम कहत कि हे श्रीरघुनाथजी विना आपकी भक्ति अन्य उपायते जीवकी मुक्ति नहीं हूँ सकती है इस कारणते आपके दोऊ पद कमलोंविपेकी जो प्रेमापराभक्तिहै सो मेरे उर अन्तरमें ऐसी दृढ होवै जो जन्म जन्मान्तर अधिकांतजाय पुनः विना सत्संग भक्ति पुष्टता नहीं पावत ताते जेश्रवण कीर्तनस्मरण सेवन अर्चनादि आपकी भक्ति करनेवाले जेसज्जनहैं तिनको संगरहै इति भक्ति सत्संग इन दोऊ करिकै अविद्या अर्थात् देहाभिमान नाशको प्राप्तहोइ ४२ ॥

लोके त्वद्भक्तिनिरतास्त्वद्धर्मा मृतवर्षिणः ॥ पुनन्ति लोकमखिलं किंपुनः स्वकुलोद्भवान् ४३ नमोस्तु जगतां नाथ नमस्ते भक्तिभावत ॥ नमः कारुणिकानन्तराम

चन्द्रनमोस्तुते ४४ देवयद्यत्कृतम्पुण्यमयालोकजिगीषया ॥ तत्सर्वतववाणा
यभूयाद्रामनमोस्तुते ४५ ॥

(त्वत्भक्ति निरताः लोके त्वत् धर्मं अमृत वर्षिणः) आपकी भक्तिमार्ग पर चलते हैं अथवा जे लोकविषे आपको धर्मरूप अमृतकी वर्षा करते हैं ते (अखिलं लोकं पुनन्ति पुनः स्वकुल उद्भवान् किं) समग्र जे लोक हैं तिनको पवित्र करते हैं पुनः जे आपने कुलमें उत्पन्न भये तिनको क्या कहिये अर्थात् परशुराम कहत हे श्री रघुनाथ जी नउधा प्रेमापरादि जो आपकी भक्ति है तापर जे तत्पर हैं भाव हृदय में रूप को ध्यान नाम स्मरण चरित गान श्रवण हाथोंते कैकर्यता इत्यादि तथा कर्म ज्ञान उपासना इत्यादि जो आपको धर्म अमृतरूप है ताको जे संसारमें वर्पते हैं भाव लोक जननको उपदेश करते फिरते हैं ते सब लोकनको पावन करते हैं पुनः जहां उत्पन्न भये तेहि कुलकी कहांतक प्रशंसा करें सो तौ परम धन्य हैं ४३ (जगतां नाथ नमः अस्तु भक्ति भावन ते नमः) हे जगतकेनाथ आपके अर्थ नमस्कार है भक्तन को विभव बढ़ना सदा भावता है इति हे भक्तिभावन आपके अर्थ नमस्कार है (कारुणिक नमः अनन्त रामचन्द्र ते नमः अस्तु) जो सेवक को दुखित देखि स्वामी दुखित हवै शीघ्रही दुखहरै सो करुणागुण है ताको करनेवाले हे कारुणिक आपके अर्थ नमस्कार है जाको अन्त कोऊ नहीं पावत इति हे अनन्त रामचन्द्र आपके अर्थ नमस्कार है ४४ (लोकः जिगीषया मया यत्पुण्यं कृतं) स्वर्गादि लोक प्राप्तीकी इच्छा करिकै मैने जोजो पुण्य किया होय (तत्सर्वं देव तव वाणाय भूयात् रामते नमः अस्तु) तौनि सब हे देव आपके वाण के अर्थ होय हे राम आपके अर्थ नमस्कार है अर्थात् जो श्री रघुनाथजी आपने वाणको निशाना पूछे तापर परशुराम कहत कि न किसी लोकको नाश करौ न मेरी गतिको नाश करौ जो स्वर्गादि लोक प्राप्ती अर्थ मैने पुण्य किया है सोई आपके वाणके अर्थ निशाना है सो वाणते हरिलीजे जामें अब किसी लोक को जाना न परै केवल शरणमें राखिये इसीहेत हे रघुनाथजी आपके अर्थ बारम्बार नमस्कार है ४५ ॥

ततः प्रसन्नो भगवान् श्रीरामः करुणामयः ॥ प्रसन्नोऽस्मितवद्वह्नयत्ते मनसि वर्त्तते ४६ दास्येतदखिलं कामं माकुरुष्व अत्र संशयम् ॥ ततः प्रीतेन मनसा भार्गवो राममब्रवीत् ४७ यदि मे नुग्रहो रामतवास्ति मधुसूदन ॥ त्वद्भक्तसंगस्त्वत्पादे दृढा भक्तिः सदास्तु मे ४८ ॥

(ततः करुणामयः श्रीरामः भगवान् प्रसन्नः) तव करुणामय श्रीराम भगवान् परशुराम पर प्रसन्न हवै बोले (हे ब्रह्मण तव प्रसन्नोऽस्मिते मनसि वर्त्तते) हे ब्राह्मण तुम्हारे ऊपर हम प्रसन्न हैं अब तुम्हारे मनमें जो आवै सो मांगो ४६ (ततः अखिलं कामं दास्ये अत्र संशयं माकुरुषु) जो मांगौ ने तौने सम्पूर्ण कामना हम देइंगे इसमें संशय न करौ (ततः भार्गवः मनसा प्रीतेन रामं अब्रवीत्) तव परशुराम मनमें प्रीति सहित रघुनन्दन प्रति बोलते भये ४७ (हे राम मधुसूदन यदि मे तव अनुग्रह अस्ति) हे राम मधुदैत्यको नाश करनेवाले जो मेरे ऊपर आपकी अनुग्रह सदा दया होय तौ (त्वत् भक्त संगः त्वत् पादे भक्तिः दृढा मे सदा अस्तु) आपके भक्तन को संग अरु आपके पायेंनविषे भक्ति पुष्ट मोको सदा होय अर्थात् शिवजी कहत हे गिरिजा जब मान रहित परशुराम दीन अधीन हवै स्तुति कीन्हे तब रघुनाथजी प्रसन्न भये काहेते करुणामय हैं भाव सेवकके दुख में आप दुखित हवै शीघ्रही वाको दुख हरिखेते हैं पुनः भगवान् अर्थात् सबको पालन पोषण करने को

समर्थ हैं ताते परशुराम प्रति बोले हे ब्रह्मन् तुमपर हम प्रसन्न हैं तुम्हारे मनते जो भावै सो मांगो जो मैंगिहो सो सम्पूर्ण कामना हम पूर्ण करिदेइंगे यामें संशय न करौ इति प्रभुके वचनसुनि मनमें प्रीति करि परशुराम बोले हेराम मधुसूदन जो मेरे ऊपर अनुग्रह करतेहो तौ आपके उत्तम भक्तनको संग तथा आपके पद कमलों में पुष्ट भक्ति सदा मोको रहै ४८ ॥

स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तु भक्तिहीनोपि सर्वदा ॥ त्वद्भक्तिस्तस्य विज्ञानं भूयादन्ते स्मृति
स्तव ४६ तथेतिराघवेणोक्तः परिक्रम्य प्रणम्य तम् ॥ पूजितस्तदनुज्ञातो महेन्द्रा
चलमन्वगात् ५० राजा दशरथो हृष्टो रामं मृतमिवागतम् ॥ आलिंग्यालिंग्य
र्षेण नेत्राभ्यां जलमुत्सृजत् ५१ ॥

(एतत् स्तोत्रं यस्तु भक्तिहीनः अपि सर्वदा पठेत्) मेरा किया यह स्तोत्र जो है ताहि जो जन भक्तिहीनो होइ निश्चय करि सदा पाठ करै (तस्य त्वद्भक्तिः विज्ञानं भूयात् अन्ते तव स्मृतिः) ताको आपकी भक्ति अरु विज्ञान होवै अंतकाल में आपहीकी स्मरण रहै अर्थात् परशुराम कहत हे श्री रघुनाथजी सत्संग सहित भक्ति मोकोहोइ अरु यह जो मेरा किया स्तोत्र है सो भी लोक उपकारी होइ कौन भांति कि जो भक्तिहीनो जन जो नित्य याको पढ़ै सो विज्ञानसहित आपकी उत्तम भक्ति पावै अंतमें आपहीकी समपिता पावै भवबंधनमें न परै ४६ (तथा इति राघवेणोक्तः) यथा मैंगेउ तथा होइगा इति रघुनन्दन ने कहा तब (तम् पूजितः परिक्रम्य प्रणम्य तत् अनुज्ञातः महेन्द्राचलं अनुगतात्) वरपाइ पुनः तिन रघुनन्दन को पूजन परिक्रमा प्रणाम करि तिन प्रभुकी आलापाइ परशुराम महेन्द्राचल पर्वत परको चलेगये ५० (रामं मृतं इव आगतं राजा दशरथः हृष्टः) मानौ रघुनाथजी मृत्युको प्राप्त होवै जीआये ऐसा राजा दशरथ आनन्दको प्राप्त भये (नेत्राभ्यां जलं उत्सृजत् हर्षेण आलिंग्यालिंग्य) नेत्रन ते जल त्यागत बारम्बार उरमें लगावत अर्थात् क्षत्रिन के नाश करता सक्रोध आये देखि भयातुर भये जब चलेगये तब मानौ मरेहु गये रघुनन्दन पुनः जीआये ऐमे आनन्दको प्राप्त होवै महाराज आतु जल बहावत हर्ष करिके बारम्बार रघुनन्दन को हृदय में लगाये इहां महाराजमें करुणारस रहा तामें सहायक रघुनन्दन में वीररस भया ५१ ॥

ततः प्रीतेन मनसा स्वस्थचितः पुरं ययौ ॥ रामलक्ष्मणशत्रुघ्नभरतादेवसंमिताः ५२
स्वां स्वां भार्यामुपादाय रेमिरे स्वरवमन्दिरे ॥ मातापितृभ्यां सहृष्टो रामः सीतास
मन्वितः ५३ रेमे वैकुण्ठभवने स्त्रिया सह यथा हरिः ॥ युधाजिन्नामकैकेयी आता
भरतमातुलः ५४ ॥

(ततः स्वस्थचितः मनसा प्रीतेन पुरं ययौ) तदनंतर धिरचित्त मनमें प्रीति करि पुर जो अयोध्या तहांको जातेभये (रामलक्ष्मणः शत्रुघ्न भरतादेव संमिताः) चारिउ देवनकी समान ५२ (स्वस्वमन्दिरे स्वां स्वां भार्यामुपादाय रेमिरे) अपने २ मंदिरनविषे अपनी बामांगिन को अंगीकार किहे रमण करते हैं (मातापितृभ्यां सहृष्टो सीता समन्वितः रामः) मातापिता करि सब भांतिको आनन्द प्राप्त पुनः सीतासहित रघुनाथजी कैसे भोग करते हैं ५३ (वैकुण्ठभवने स्त्रिया सह यथा हरिः रेमे) वैकुण्ठधामविषे लक्ष्मी सहित जैसे विष्णु भोग करते हैं अर्थात् परशुराम के आये पर महाराजके चित्त में खेभार ह्वै गया रहे सो मिटा इति स्वस्थचित्त मनमें रघुनाथजी की प्रीति लिहै पुत्र वधुन सहित

दशरथ महाराज अयोध्याजी को आये तहां सीतासहित रामचंद्र उर्मिलासहित लक्ष्मण श्रुतिकीर्ति सहित शत्रुघ्न मारुडवी सहित भरत इति चारिहु जोड़ी रानी परिछन करि मंदिर में लाय लोक वेद रीति करि विलग विलग मन्दिरनमें वास दीन्हें अवस्था स्वरूप तेज गुणादिकरि देवन की तुल्य विराजमान हैं भरतादि तीनिहु बन्धु अपने अपने मन्दिरन में अपनी अपनी वामांगिन को अंगीकार कि हे भोग विलास करते हैं अरु श्री रघुनाथजी को परिपूर्ण आनन्द वर्गन करते हैं काहे ते दासी दास मन्दिर उपवन वाहन भूषण व्रतन पान गंध भोजनादि यावत् भोग की सामग्री है तो तौ माता पिता करिके परिपूर्ण अरु स्त्री जनकनन्दिनी ऐसी लोस्वरूपता गुण स्वभाव पतिव्रत इत्यादि लोकोत्तर अद्वितीय तिन सहित कैसा भोग विलास करते हैं जैसे बैकुण्ठ धाम विषे लक्ष्मी सहित विष्णु स्वतन्त्र आनन्द भोग विलास करते हैं इसी भांति बारह वर्ष तक रघुनाथ जी स्वतन्त्र आनन्द युत भोग विलास कीन्हें ताकेपाछे कैकेयी द्वारा वनको जावा चाहते हैं तामें विघ्न करता जानि भरत को अनत पठावा चाहते हैं ताको कारण शिवजी कहत (कैकेयीभ्राताभरतमा तुल्ययुधाजित्नाम) कैकेयी के छोटे भाय भरत के मामा काश्मीर के राजा जिनको युधाजित नाम है ५४ ॥

भरतनेतुमागच्छत्स्वराज्यंप्रीतिसंयुतः ॥ प्रेषयामासभरतंराजास्नेहसमन्वितः ॥

शत्रुघ्नचापिसम्पूज्ययुधाजितमरिन्दमः ५५ ॥

(प्रीतिसंयुतःभरतंस्वराज्यंनेतुंआगच्छन्) प्रीति सहित भरतहि अपनी राज्य को लवाय लय जाने हेतु अयोध्याजी को आये (स्नेहसमन्वितः राजाभरतंप्रेषयामास) युधाजित् के स्नेह सहित राजा दशरथ भरतहि पठावते भये (अरिन्दमःयुधाजित्सम्पूज्यचशत्रुघ्नंचापि) शत्रुघ्न को नाश करन हारे राजा दशरथ जी युधाजित् को बड़ा सत्कार करि पुनः शत्रुघ्न को भी निश्चय करि पठाये अर्थात् काश्मीर के राजा कैकेय के पुत्र कैकेयी के भाय भरत के मामा युधाजित् तिनकी राज्य के समीप सबल दुष्ट बसते रहें ते इनकी राज्य में बाधा करतेरहें तिनके नाश करिवे हेत भरतजीको आदर सहित आपनी राज्य की लवाय लय जाने की इच्छा करि अयोध्याजी को आये महाराज ते आपनाहाल सुनाये प्रिय पत्नी के बन्धुहैं ताते शत्रुनाश कर्ता महाराज दशरथ प्रीति पूर्वक युधाजित् को बड़ा सत्कार कीन्हें पुनः शत्रुघ्न सहित भरत को पठाये ५५ ॥

कौशल्याशुशुभेदेवीरामेणसहसीतया ॥ देवमातेवपौलोम्याशच्याशक्रेणशोभना ५६ ॥

(सीतियासहरामेणकौशल्यादेवीशुशुभे) सीता करिके सहित रघुनन्दन करिके कौशल्या देवी कौन भांति शोभा को प्राप्त हैं यया (पौलोम्याशच्याशक्रेणदेवमाताइवशोभना) पुलोम की पुत्री शची करिके सहित इन्द्र करिके देवन की माता अदिति सम शोभित अर्थात् भरत के गये ते कैकेयी को पुत्र सुख समग्र मिटि गया तथा शत्रुघ्न के जाने ते सुमित्रा को आया सुख गया भाव दुष्टन ते युद्ध हेत गये ताकी शंका है अरु जनकनन्दिनी सहित रघुनन्दन को स्वतन्त्र भोग विलास करते देखि कौशल्या कैसे आनन्द सहित शोभित हैं जैसे शची सहित इन्द्र को स्वतन्त्र भोग करते देखि अदिति आनन्द सहित शोभित होत ५६ ॥

साकेतेलोकनाथप्रथितगुणगणोलोकसंगीतकीर्तिः ॥ श्रीरामःसीतयास्तेऽखिल

जननिकरानन्दसन्दोहमूर्तिः ॥ नित्यश्रीर्निर्विकारो निरवधिविभवो नित्यमायानि
राशो मायाकार्यानुसारी मनुजइव सदा भाति देवोऽखिलेशः ५७ ॥

इति श्री अध्यात्मरामायणे बालकाण्डे सप्तमः सर्गः ७ समाप्तः ॥

(अखिलेशः देवः श्रीरामः सीतया) सब देवन के स्वामी स्वयं प्रकाशरूप श्रीरामचन्द्र सीता सहित (शाकेते आस्ते सदा मनुजइव भाति) अयोध्याजीमें विराजमान सदा मनुष्यकी नाई प्रकाशमान हैं कैसे देवन के देव हैं (लोकनाथप्रथितगुणगणः) ब्रह्मादिक जे लोकनाथ हैं तिन बिषे जिन के गुण समूह विदित हैं पुनः (लोकसंगीतकीर्तिः) सब लोकन में गाई जात है कीर्ति जिनकी पुनः (अखिलजननिकरानन्दसंदोहमूर्तिः) सम्पूर्ण मनुष्यन में जे हरिजनन के वृंद हैं तिनके हेत आनंद समूहदायक स्वरूप है जिनको पुनः (श्रीनित्यानिर्विकारः) पराशक्ति जिनकी नित्य एकरस है कामादि विकार रहित हैं (विभवः निःअवधिनित्यमायानिराशः) जिनकी ऐश्वर्यकी हृदयही है अरु मायाते निराश भाव अविद्याजिनको आवरण नहीं करिसकत (मायाकार्यानुसारी) मायाके कार्यो में अनुसरण करते हैं अर्थात् शौर्य वीर्य तेजबलशक्ति क्षमा दया रूपाशलि सुलभ उदारतादि समूह जिनके गुण लोकपालनमें प्रसिद्ध हैं भाव ब्रह्मा विष्णु शिवादि जिनके गुण गावते हैं पुनः स्तुति कीन्हे वा दानदीन्हे जो प्रशंसा होत ताको कीर्तिकही इत्यादि जिनकी कीर्ति सबलोक जनन करिके नित्य गाई जाती है पुनः सब मनुष्यन में जे जन रामसनेहिनके वृंद हैं तिनके हेत समूह आनंद देन हारा जिनको स्वरूप है पुनः श्री जिनकी शोभा वा पराशक्ति नित्य एकरस है पुनः कामादि वा रजतमादि विकार रहित हैं पुनः जिनकी ऐश्वर्यकी हृदयही है अरु अविद्या माया जिनमें आवरण नहीं करिसकत अरु मायाके कार्यन में आपनी सत्ता प्रवेश किहे रहत ताहीते लोकरचनादि सब व्यापार होता है ऐसे सब ईश्वरन के ईश्वर स्वयं प्रकाश रूप श्रीरघुनन्दन जनकनंदिनी सहित अयोध्या जी में विराजमान सदा मनुष्यों की नाई प्रतापवंत प्रकाशमान हैं ५७ ॥

(पद) मैं बलिहारि सीयवर हेरी । सुंदर सुभग सुढंग श्यामरंग अंग अनंग वारनेगेरी ॥ माथे पुरट किर्रीट जाटित मणि कुण्डल मण्डि गंड थल नेरी । मुक्ताधर मुखचन्द कुटिल भूचाप नयन शरमैन गहेरी ॥ अँगुली यक पँहुची बलयांगद कंठा बलि कुंजर मणिकेरी । कंचन हीरपदिक पन्ननमय कटि पटपीत किकिणी घेरी ॥ चितवनि चलनि हसनि बोलन छवि प्रेमउमँगि सरिधार बहेरी । धीरज धर्मकानि कुल समुझनि लोकलाज तरु मूलढहेरी ॥ कलगत हीय विकलद्वड लोचन मोचत वारि निमेषन फेरी । वैजनाथ मिलिहों रघुनाथहि विरह ज्वाल नहिं जात सहेरी ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणे बालकाण्डे सप्तमः प्रकाशः ७ समाप्तः ॥

अध्यात्मरामायण अयोध्याकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ एकदासुखमासीनरामंस्वांतःपुराजिरे ॥ सर्वोभरणसम्पन्नं
रत्नसिंहासनेस्थितम् १ नीलोत्पलदलश्यामंकौस्तुभामुक्तकंधरं ॥ सीतयारत्नदंडेन
चामरेणाथवीजितम् २ ॥

श्रीजानकीबल्लभोजयति ॥ दो० ॥ उर धरि सीतानाथ पद सुमिरि गुरुके पांथ । तिलक अयो-
ध्याकाण्ड को कहौं यथा मतिगाय ॥ सबैया ॥ सुर साधु धराहित नारद आय जहां सियसाप्रभु बैठि
रहे । गुण गाय बिनय सुख पाय पुनः बिधि प्रेरितहाल सबै सु कहे ॥ प्रभु धीर्य दिये न विलम्ब अबै
सुनि लोटि चले दिवि मार्ग गहे । पद बन्दत बैजसुनाथ सदा सिय सानुज जो वन जान चहे ॥
(एकदारामंस्वन्नतःपुराजिरेसुखमासीनं) एक समय में रघुनाथजी अपने मन्दिर के आंगन में
सुख पूर्वक बैठे रहैं कौन भांति (सर्वआभरणसम्पन्नं) सब प्रकार के भूषण वसन धारण किहे (रत्न
सिंहासनेस्थितं) रत्न जटित सिंहासन पर बैठे हैं अर्थात् विवाह भये पीछे बारह वर्ष तक परम आ-
नन्द भोग में रहे अब वन जाने को समय आयो सो कारण शिवजी कहत कि एक समयमें श्री रघु-
नाथजी किरीट कुण्डल माल केयूर मुद्रिकादि भूषण वसन धारण किहे अपने मन्दिर के आंगनमें
रत्न सिंहासन पर सुख पूर्वक बैठे रहे १ (नीलउत्पलदलश्यामं) नील कमल दल सम श्यामतन
(कौस्तुभामुक्तकंधरं) कौस्तुभ मणि मुक्ता गले में धारण किहे (अथ रत्नदंडेनचामरेणसीतयावी-
जितं) अरु रत्न जटित दंड है जामें ऐसा चामर जानकीजी करिके हांका जात है अर्थात् नील क-
मल फूल के दलसम सचिकन कोमल सुगन्धित सुन्दर श्यामतन अरु कौस्तुभ मणि तथा गजमुक्तन
को कंठा श्रीवा में शोभित अरु कञ्चन सौं रचित हीरा नीलक आदि अनेक रत्न जटित दंड जामें
ऐसा चामर हाथ में लिहे श्रीजानकी जी प्रभु के हांकि रही हैं २ ॥

विनोदयन्तं तांबूलचर्वणादिभिरादरात् ॥ नारदोऽवतरद्द्रुमं वराद्यत्राश्रयः ३
शुद्धस्फटिकसंकाशः शरच्चंद्रश्चामलः ॥ अतर्कितमुपायातो नारदो दिव्यदर्शनः
४ तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय रामः प्रीत्याकृतांजलिः ॥ ननामशिरसाभूमौ सीतया सह भ-
क्तिमान् ५ ॥

(तांबूल चर्वणादिभिः आदरात् विनोदयन्तं) पुनः जानकीजी पानखवावनादि सेवासाज करिके
आदरते श्रीरघुनाथजीको अनेक आनंददे रही हैं ताहिसमय (द्रुमं वराद्यत्राश्रयः) अव-
तरत् दर्शन करिवे हेत रघुनाथजी जहां रहैं तहाँ नारद आकाशते उतरत भये भाव संसारी व्यवहार
छुड़ाय वनको पठावेकी कला में प्रवीन जानि ब्रह्माने नारदको पठाये पुनः प्रभुके दर्शनकी अभिलाष
है ताते हर्ष सहित आकाश मार्ग आय नारद तहैं उतरे जहाँ रघुनाथजी बैठे रहैं ३ (स्फटिक संकाशः
शुद्धः शरत् चंद्रश्च अमलः) स्फटिक मणिकी उपमादेवे योग्य शुद्ध हृदय है जिनको शरदन्तुके

चंद्रमा समग्रमल तनहैजिनको ऐने (दिव्य दर्शनः नारदः अतर्कितं उपायातः) दिव्यदर्शन नारदसहसा समीप आगये यथा अतर्किततु सहसा स्यात् इत्यमरः ४ (तं दृष्ट्वा भक्तिमान् रामः सीतया सह सहसा उत्थाय) तिन नारदहि देखि भक्तिवंत जो श्रीरघुनाथजी सीता सहित तुरतही उठे (प्रीत्या कृतां जलिः शिरसा भूमौ ननाम) प्रीतिकरिकै हाथ जोरि शीशभूमिमें धरिकै प्रणाम कीन्हें अर्थात् कामादि विकार रहित कैसा शुद्ध हृदय है जैसे स्फटिकमणि तथा विषय मलरहित शरीर कैसा अमल है जैसे शरदपूर्ण चंद्रमा ऐसे दिव्य दर्शन नारद सहसा आये तिनहि देखि भक्तिमान् भाव भक्तनपर प्रीति है जिनके ऐसे रघुनन्दन जनकनन्दनी सहित शीघ्रही आसनते उठि प्रीति करिकै हाथ जोरि भूमि में शीशधरि नारदजी के अर्थ प्रणाम कीन्हें भाव भक्ति को प्रभाव दर्शाये वा ऐश्वर्य छपाये ५ ॥

उवाच नारद रामः प्रीत्या परमया युतः ॥ संसारिणां मुनिश्रेष्ठ दुर्लभं तव दर्शनं ६ अस्माकं विषयासक्तचेतसां नितरां मुने ॥ अवाप्तं मे पूर्वजन्म कृतपुण्यमहोदयैः ७ संसारिणांऽपि हि मुने लभ्यते सत्समागमः ॥ अतस्त्वदर्शनादेव कृतार्थोऽस्मि मुनीश्वर ८ ॥

(परमया प्रीत्या युतः रामः नारदं उवाच) परम प्रीति सहित रघुनाथजी नारद प्रति बोलते भये (मुनिश्रेष्ठ तव दर्शनं संसारिणां दुर्लभम्) मनिनमें श्रेष्ठ हे नारद आपके दर्शन संसारी मनुष्यों को दुर्लभ है ६ (अस्माकं चेतसां नितरां विषयासक्त मुने अवाप्तम्) हम लोगन के चित्त नित्यही विषयमें आसक्त हैं तिनको हे मुने जो आपके दर्शन प्राप्त भये तो (मे पूर्वजन्म कृत महापुण्य उदयैः) मेरे पूर्व जन्मकी कीन्ही महापुण्य उदय भई त्यहिकरिके दर्शन भया अर्थात् आसनपर बैठारि परम प्रीति सहित रघुनाथ जी नारद प्रति बोले कि हे मुनिवर नारद आप लोगन के दर्शन संसारी मनुष्यों को दुःखी करि नहीं लाभ होती है जिनके चित्त नित्यही विषयमें आसक्त ऐसे हम लोगनको हे मुनि जो आपके दर्शन प्राप्त भये तो मेरे पूर्वजन्मकी कीन्ही महापुण्य उदय भई ताही करिके आप दर्शन दिया ७ (मुने संसारिणां अपि हि सत्समागमः लभ्यते) हे मुने संसारी मनुष्यों को जब निश्चय करिके पूर्वकी पुण्य उदय होती है तबही महात्मन को समागम लाभ होता है (अतः हे मुनीश्वर त्वत् दर्शनात् एव कृतार्थोऽस्मि) इस कारणते हे मुनीश्वर नारद आपके दर्शन पायेते में कृतार्थ भयो ८ ॥

किं कार्यते मया कार्यं ब्रूहि तत्करवाणिभो ॥ अथ तन्नारदोऽप्याहराघवं भक्तवत्सलम् ९ किं मोहयसि मां राम वाक्यैर्लोकां नुसारिभिः ॥ संसार्यहमिति प्रोक्तं सत्यमेतत्त्वया विभो १० जगतामादिभूताया सामायाग्रहिणी तव ॥ त्वत्सन्निकर्षाज्जायंते तस्यां ब्रह्मादयः प्रजाः ११ त्वदाश्रया तदाभाति मायायात्रिगुणात्मिका ॥ सूतेऽजसंशुक्लकृष्णलोहिताः सर्वदा प्रजाः १२ ॥

(ओ मुने ब्रूहि ते किं कार्यं तत्कार्यं मया करवाणि) हे मुने कहिये आपको क्या कार्य है तौ न कार्य हम करिके किया जाय अर्थात् रघुनाथजी कहत कि संसारी जनकी जब निश्चय पूर्वकी पुण्य उदय होता है तब महात्मों को समागम होता है ताते आपके दर्शन पाय में तो कृतार्थ भयो हे मुनि आप किस कार्य हेत आये है सो कहिये त्यहि कार्यको में शीघ्रही करों इत्यादि प्रभुके वचन सुनि (अथ भक्तवत्सलं नारदः अपि आह) अथ भक्तवत्सल रघुनन्दन प्रति नारद निश्चय करि बोले ९ (राम लोके अनुसारिभिः वाक्यैः सां किं मोहयसि) हे रघुनन्दन संसारी मनुष्यों की ऐसी वाक्यन करिके

मोकोक्यों मोहित करतेहौ (हेविभोसंसारीअहंइतित्वयाप्रोक्तएतत्सत्यं) हे समर्थप्रभु संसारी मनुष्य हमहैं इत्यादि जो आपने कहा येवचन सत्यहैं १० (जगतांआदिभूतायामायासातवगृहिणी) जगत् की आदि कारण भूतजो माया सो आपकी घरणी है (त्वत्सन्निकर्षात्तस्यांब्रह्मादयःप्रजाजायन्ते) आपके समीप वासहोनेते त्यहि माया विषेते ब्रह्मादिक पुत्र उत्पन्नहोते हैं ११ त्वत्आश्रयात्तदामाया त्रिगुणात्मिकाभाति) आपके आश्रयभये तबमाया सत्त्वरजतमइति त्रिगुणात्मक प्रकाशमान होती है (शुक्लरूपलोहिताः प्रजाःसर्वदाअजस्रंसूते) उज्ज्वलकरियालालिपुत्र सबकालमें नित्यहीं उपजावती है अर्थात् प्राकृत मनुष्यवत् प्रभु के वचन सुनि मोहवशहोनेकी भयमानि कछुनकहिसके तब भक्तवत्सलविचारि धीर्यकरि रघुनंदन प्रतिनारद निश्चयकरि बोले कि हे रघुनंदन संसारी विषयासक्तमनुष्यों की ऐसी बार्ताकरिकै मोकोक्यों मोहित करतेहौ पुनः हेसमर्थ प्रभु अपनाको जो कहेउ कि हम संसारी मनुष्य हैं येभी आपके वचन सत्यहैं कौन भांति सो सुनिये जगत्की आदि कारण भूतजो मायाहै सो आपकी घरणी है सो आपके समीप वासहोनेते त्यहि मायाविषे ब्रह्मा विष्णु शिवादि पुत्र उत्पन्नहोतेहैं कौन भांति कि आपके आश्रय समीप ताते मायासत्त्वरजतम इतित्रिगुणात्मक प्रकाशमान होतीहै ताकारण ते श्वेत अरुण श्यामरंग के पुत्र सब कालमें नित्यहीं उपजावती हैं भावजो सतोगुणी मायाहै सो श्वेत है त्यहि में जो जीव उत्पन्न होतेहैं ते शुक्लवर्ण सतो गुणी होतेहैं यथा दो०शांतचित्तबुधिविमलमन सकलवस्तुकोज्ञान । निर्वासितसत्कर्मजो तवैसतोगुणजान॥

• तथा रजोगुणी माया अरुण है त्यहि ते उत्पन्न जीव अरुण वर्ण रजोगुणी होते हैं यथा दो० लोभी चित्तबुद्धिकामलय ज्ञानतहितअज्ञान । विषयीमनतनकर्मसुख सोराजसगुणजान ॥ तथा तमोगुणी माया श्याम है ताते उत्पन्न जीव श्यामवर्ण तमोगुणी होते हैं यथा दो० तिच्छण चित्तकठोरबुधि मनक्रोधीअज्ञान । अहंकारमयकर्मरुत सोतामसगुणजान ॥ तिन गुणनके मिलानते अनेक भांतिके स्वभाव वाले जीव होते जाते हैं १२ ॥

लोकत्रयमहागेहेगृहस्थस्त्वमुदाहृतः ॥ त्वंविष्णुर्जानकीलक्ष्मीःशिवस्त्वंजानकी शिवा १३ ब्रह्मात्वंजानकीवाणीसूर्यस्त्वंजानकीप्रभा ॥ भवान्शशांकःसीतातुरो हिणीशुभलक्षणा १४ शक्रस्त्वमेवपौलोमीसीतास्वाहानलोभवान् ॥ यमस्त्वंकालरूपश्चसीतासंयमनीप्रभो १५॥

(त्रयलोकमहागेहेत्वेगृहस्थः उदाहृतः) तीनिहूँ लोक भावब्रह्माण्डमंडलसोई महामंदिरहैतामें आपगृहस्थ सर्वत्रपरिपूर्णवासकिहेहौ (त्वंविष्णुःजानकीलक्ष्मीः त्वंशिवःजानकीशिवा) हेरघुनंदन आपविष्णुहो तथा जानकीलक्ष्मीहैं आपशिवहौ जानकीपार्वतीहैं १३ (त्वंब्रह्माज्ञानकीवाणी त्वंसूर्यःजानकीप्रभा) आप ब्रह्माहो जानकीसरस्वतीहैं आपसूर्यहौ जानकी प्रभाहैं (भवान्शशांकःतुसीताशुभलक्षणारोहिणी) आप चंद्रमाहौपुनः सीता शुभलक्षण युतरोहिणीहैं १४ (त्वंएवशक्रःसीतापौलोमीभवान्अनलः सीतास्वाहा) आपनिश्चय करि इंद्रहौ सीता इंद्राणीहैं आपअग्निहौ सीता स्वाहा हैं (त्वंकालरूपःयमःप्रभो चसीतासंयमनी) हे प्रभुआपकाल रूपयमराजहौ पुनः सीतासंयमनीहैं १५ ॥

निर्ऋतिस्त्वंजगन्नाथतामसीजानकीशुभा ॥ रामत्वमेववरुणोभार्गवीजानकीशुभा १६ वायुस्त्वंरामसीतातुसदागतिरितीरिता ॥ कुबेरस्त्वंरामसीतासर्वसम्पत्

प्रकीर्तिता १७ रुद्राणीजानकीप्रोक्तारुद्रस्त्वंलोकनाशकृत् ॥ लोकेस्त्रीवाचकं
यावत्तत्सर्वजानकीशुभा १८ पुन्नामवाचकंयावत्तत्सर्वत्वंहिराघव ॥ तस्माल्लोक
त्रयेदेवयुवाभ्यांनास्तिकिञ्चन १९ ॥

(जगन्नाथत्वंनिर्ऋतिःजानकीशुभातामसी) हे जगन्नाथ आप निर्ऋति अर्थात् नैऋत्यके दिग्पाल
हौ तथा जानकी मंगल रूप तामसी हैं (रामत्वंएववरुणःजानकीशुभाभार्गवी) हे रघुनाथजी आप
निश्चय करि वरुण हैं जानकी मंगलरूप भार्गवी हैं १६ (रामत्वंवायुःतुसीतासदागतिःइतिईरिता)
हे रघुनन्दन आप पवन हौ पुनः सीता सदागति प्रेरण करनहारी हैं (रामत्वंकुवेरः सीतासर्वसम्प-
त्प्रकीर्तिता) हे रघुनन्दन आप कुवेर हौ सीता सर्व सम्पत्ति रूपहैं १७ (त्वंलोकनाशकृत् रुद्रः जान
कीरुद्राणीप्रोक्ता) आप लोक नाशकर्त्ता रुद्र हौ जानकी रुद्राणी कहने योग्य हैं (स्त्रीवाचकंयावत्
लोके) केवल देवीमात्र नहीं स्त्रीवाचक यावत् देहधारी संसार में हैं (तत्सर्वजानकीशुभा) तिन
सबको जानकी मंगलरूप जाना चाहिये १८ (यावत्पुन्नामवाचकं तत्सर्वराघवत्वहि) जहां तकपुरुष
वाचक नाम हैं तौन सब हे रघुनाथजी आपही निश्चय करिकै हौ (तस्मात्देवलोकत्रये युवाभ्यां
नास्तिकिञ्चन) ताते हे देवलोक तीनिहूँ विषे आप दोउन करिकै बिना कोई वस्तु नहीं है अर्थात्
लक्ष्मी पार्वती सरस्वती प्रभा रोहिणी शची संयमनी तामसी भार्गवी सदागति सर्व सम्पत्ति रुद्रा-
णी इत्यादि भूतमात्रमें स्त्री वाचक यावत् नाम हैं ते सब जानकीजी हैं तथा विष्णु ब्रह्मा शिव इं-
द्रादि यावत् पुरुष वाचक नाम हैं ते सब हे रघुनाथजी निश्चय करिकै आपही हौ ताते हे देव रघु-
नाथजी आप परब्रह्म जानकी आदि शक्ति दोऊ मिलि सब लोक रचना है आप दोऊ बिना तीनिहूँ
लोकनमें कुछ भी वस्तु नहीं है १९ ॥

त्वदाभासोदिताज्ञानमव्याकृतमितीर्यते ॥ तस्मान्महांस्ततःसूक्ष्मलिंगंसर्वात्मकं
ततः २० अहङ्कारश्चबुद्धिश्चपंचप्राणोन्द्रियाणिच ॥ लिंगमित्युच्यतेप्राज्ञैर्जन्म
मृत्युसुखादिमत् २१ सएवजीवसंज्ञश्चलोकेभातिजगन्मयः ॥ अवाच्यानाद्यवि
द्यैवकारणोपाधिरुच्यते २२ ॥

(त्वत्त्वाभासउदितअज्ञानमव्याकृतमितिईर्यते) आपकी आभास जो प्रतिबिम्ब सो आदि माया
में उदित है सोई अज्ञान अव्याकृत अर्थात् नाम रूप इत्यादि कहाया (तस्मात्महांस्ततः सूक्ष्मलिं-
गंततः सर्वात्मकं) तिहिते महातत्त्व भया तदनन्तर सूक्ष्म शरीर भया तदनन्तर सर्व देहाभिमानी
आत्मा भया २० (अहंकारःचबुद्धिःचपञ्चप्राणचइन्द्रियाणि) अहंकार पुनः बुद्धि पुनः पाँचौ प्राण
पुनः दश इंद्रिय (जन्ममृत्युसुखादिमत् इतिलिंगप्राज्ञैःउच्यते) जन्म होना मरना सुख दुःख भोग
इत्यादि युत यही लिंग शरीर बुद्धिमानों करिकै कहा जाता है २१ (सएवजीवसंज्ञःजगत्मयःच
लोकेभाति) सोई निश्चय करिकै जीव संज्ञक है जो जगत्मयी है पुनः लोक में प्रकाशमान है
(अवाचिअनादिअविद्याएवउपाधिःकारणउच्यते) जाकी गति कहते नहीं वनत ऐसी अनादि अवि-
द्या माया निश्चय करिकै चैतन्य में उपाधि कारण कही जात अर्थात् जो पूर्व कहिआये कि रामं
जानकी सिवाय जग में तीसरा कुछ नहीं है सोई जगको कारण नारद कहत है रघुनाथजी आप के
समीप आदि माया प्राज्ञ भई तौमे जब आपकी आभास प्रभा परी सोई प्रतिबिम्ब उदय भई सो
अज्ञान अव्याकृत नामरूप संज्ञक भई भाव आपकी आभास सोई नित्य चैतन्य आत्मा है सो जड़

मायामें मिलेते अज्ञान भई अरु जड़ माया चैतन्य आत्मा में मिले चैतन्य द्वैगई इति जड़ चैतन्य मिलि ताही ते महातत्त्व भया सोई कारण शरीर है तामें जब बुद्धि भई त्रिगुणात्म अहंकार ते सूक्ष्म इंद्रि विषय भई ताते सूक्ष्म शरीर भया तब अज्ञान ते सब देहनमें आत्मा देहाभिमानि भया यथा अहंकार बुद्धि अरु प्राण अपान उदान समान व्यान इति पांचो प्राण अरु पांचो तत्त्व मिले दश इंद्रि भई यथा आकाश ते मुख अरु श्रवण बायू ते बाहु अरु त्वचा अग्नि ते पद अरु नेत्र जल ते लिंग अरु रसना पृथ्वी ते गुदा अरु नासिका इति दशेंद्रि अहंकार बुद्धि पंच प्राण सहित लिंग शरीर भया जो जन्म मरण सुख दुःखादिको भोग करता है ऐसे बिद्वानोंने कहा है भाव में देवता हों में ब्राह्मण हों में राजा हों यही अभिमान है पुनः जपयज्ञ तपत्याग अध्ययन में करि सक्ता हों यही बुद्धि है देह में जो पवन श्वासादिते प्राणन पर अपन पौराखना पुनः शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषयन में इंद्रि आसक्त राखना इत्यादि आत्मामें देहाभिमान है पुनः धरणी धन धाम स्त्री पुत्र परिवारादिसब मेरा है अरु में इनकी आधार हों इत्यादि जगत् मयी प्रभाव जो लोकमें प्रकाशित है सोई निश्चय करिके जीव संज्ञक है काहे ते जाकी गतिको उ कहिनहीं सक्ता ऐसी अवाच्य जो अनादि काल ते अविद्या माया कारण है त्यहि करिके दश इंद्रि पंच प्राण अहंकार बुद्धि इति सत्रह तत्त्व को जो लिंग अर्थात् सूक्ष्म शरीर है सोई आत्मामें उपाधि है २२ ॥

स्थूलं सूक्ष्मं कारणं स्यमुपाधि त्रितयं चितेः ॥ एतैर्विशिष्टो जीवः स्याद्विद्युक्तः परमे

श्वरः २३ ॥

लोभमदमान कामक्रोध इति आकाशकी प्रकृति है धावन चलन सकोरण पसारण उत्क्रमण बायू की है निद्रा कांति क्षुधा आलस जंभा अग्नि की तथा रक्त पसीना बीजलार जल की अस्थि मांस त्वचा नाडी रोमा पृथ्वी की प्रकृति इति पचीस प्रकृतिन सहित पांचो तत्त्व देवता विषयिन सहित दशो इंद्रि पंच प्राण पांचो कोश मनचित बुद्धि अहंकारादि अंतःकरण सहित जीवात्मा विश्वाभिमानि जाग्रत् अवस्था वैखरी बाणी इति स्थूल शरीर तथा पूर्व कहि आये सत्रह तत्त्व को सूक्ष्म शरीर चैतन्य में जो माया मिली सो कारणे तीनिहू शरीर चैतन्य आत्मामें उपाधि हैं इन करिके युक्त रहे जीव हैं इन ते भिन्न परमे श्वर है २३ ॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यासंस्तृतिर्याप्रवर्तते ॥ तस्याविलक्षणः साक्षी चिन्मात्रस्त्वं रघू

त्तम २४ त्वत् एव जगज्जातं त्वयि सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ त्वय्येव लीयते कृत्स्नं तस्मात् त्व

सर्वकारणम् २५ ॥

(संस्तृतिः प्रवर्तते या जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति आख्या) संसार को बढावने वाली जो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति प्रसिद्ध तीनिहू अवस्था हैं (तस्याविलक्षणः साक्षी रघूत्तमः त्वं चिन्मात्रः) तिनके विलक्षण साक्षी हे रघुनाथजी आप चैतन्य मात्र हों जाग्रत् अवस्था यथा तत्त्व बोध प्रकरणे ॥ श्रोत्रादि ज्ञानेंद्रियैः शब्दादि विषयैर्ज्ञायते इति जाग्रदवस्था स्थूल शरीराभिमानि विश्वात्मा उच्यते स्वप्न यथा जाग्रदवस्थायां यददृष्टं यच्छ्रुतं च तत्तज्जनित वासनया निद्रा समये यः प्रपंचः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था सूक्ष्म शरीराभिमानि तैजसात्मा उच्यते सुषुप्ति अवस्था यथा अहं किमपि न जानामि सुखेन मया निद्रा अनुभूयते इति कारण शरीराभिमानि आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते सोई नारद कहत हे रघुनाथजी संसार को बढावने वाली तीनिहू शरीरन में जो तीनिहू अवस्था हैं तिनके विलक्षण यथा हेतु शून्य त्वास्या विलक्षणामत्यमरः अर्थात् कारण रहित स्वयं स्थित हौ इति विलक्षण साक्षी भाव तीनिहू अवस्थन की सब बात न की भांति जानने वाले आप हों २४ (त्वत् एव जगत् जातं) आप ही ते निश्चय

करिके सब संसार उत्पन्न भया (त्वयिसर्वप्रतिष्ठितम्) आपही बिपे सब स्थित है (त्वयि एव कृत्स्नं लीयते) आपही बिपे निश्चय करि संपूर्ण लय होता है (तस्मात्सर्वकारणत्वं) तिहिते सबके आदि कारण आपही हों अर्थात् नारद कहत हेरघुनाथजी माया मिलि सब जगत् आपहीते उत्पन्न भया आपही में स्थित है पुनः अंतमें संपूर्ण चराचर आपहीमें लीन है जाता है इत्यादि में जानकी अरु आपकी सिवाय तीसरा नहीं है ताते संसार के आदि कारण आपही हों २५ ॥

रज्जावहिमिवात्मानं जीवञ्ज्ञात्वा भयं भवेत् ॥ परात्माहमिति ज्ञात्वा भयदुःखैर्विमुच्यते २६ चिन्मात्रज्योतिषा सर्वाः सर्वदेहेषु बुद्ध्यः ॥ त्वया यस्मात्प्रकाशयते सर्वस्यात्मा ततो भवान् २७ ॥

(रज्जौ अर्हि इव) रसरी बिपे सर्पको समान (आत्मानं जीवञ्ज्ञात्वा भयं भवेत्) आत्मामें जीवत्व जानना ताही ते भय होती है (अहं परात्मा इति ज्ञात्वा भयदुःखैः विमुच्यते) हम परात्माहैं इत्यादि जानें तो भय दुःख करिके छूटि जाय अर्थात् जैसे अँधेरेमें रसरी देखि सर्प मानि डराता है बिनाजाने भ्रममात्र डर है तथा अँधेरे में सर्प है रसरी जानि गहि लिये उसने काटि खाया मरि गये सो भी बिना यथार्थ ज्ञानहानि भई तैसेही मोहरूप अन्यकारमें रसरी सम झूठी देहताहीको आत्मा सम सत्यमानि तन धन धाम स्त्री पुत्रादिकी हानि रूप अनेक भयमाने हैं सो बिनाज्ञान भ्रममात्र भय है तथा मोह रूप अन्यकार में विषय रूप बिप भरा संसार रूप सर्प है सोऊ आत्मा में जीव बुद्धी राखे ते दुःखद को सुखद मानि ग्रहण करि जीव नाश भया इत्यादि आत्मा में जीवत्व मानि भय होती है भाव जीवधना विषयन वशदेह सुख हेतु भाशुभ अनेक कर्म करत ताको फल अनेक योनिन में दुखसुख भोगत अरु जव जानै कि मैं परात्म हों भावनिर्वासिक तपादिक करि पूर्वपापनको नशाय शमदमादि करि इंद्रा मनादि स्वीकारि विवेकते देह व्यवहार मिथ्या त्यागि सत्य आत्मरूपके अनुभव आनंद में अखंड समाधि लगाये रहै तब भय दुःखन ते छूटि मुक्त होय २६ (सर्वदेहेषु सर्वाः बुद्ध्यः चिन्मात्रज्योतिषा) सबदेहन बिपे सब बुद्धिकी वृत्ति चैतन्य मात्र करिके प्रकाशित हैं (त्वया यस्मात्प्रकाशयते ततो भवान् सर्वस्य आत्मा) आपही करिके जाते सब प्रकाशमान हैं ताते सबकी आत्मा आपही हों अर्थात् सबदेहन में इंद्राद्वारा बुद्धि की वृत्ति चैतन्य रूप आपही करिके प्रकाशित है ताते अन्तर्यामी सबके आत्मा आपही हों २७ ॥

अज्ञानान्न्यस्य ते सर्वं त्वयिरज्जौ भुजंगवत् ॥ त्वज्ज्ञानाल्लीयने सर्वं तस्माज्ज्ञानं सदाभ्यसेत् २८ त्वत्पादभक्तियुक्तानां विज्ञानं भवति क्रमात् ॥ तस्मात्त्वद्भक्तियुक्ता ये मुक्तिभाजस्त एव हि २९ अहंत्वद्भक्तभक्तानां तद्भक्तानां च किंकरः ॥ अतो मामनुगृह्णीष्व मोहयस्वनमां प्रभो ३० ॥

(अज्ञानात् रज्जौ सर्पवत् त्वयि सर्वं न्यस्यते) अज्ञान ते यथा रसरी में सर्प तैसेही आप बिपे सब संसार आरोपण किया जाता है ताते भवबन्धन है (त्वत्ज्ञानात् सर्वं लीयते तस्मात्सदा ज्ञानं अभ्यसेत्) आप के रूपको यथार्थ ज्ञान भयेते सब आपही में लीन होत ताते सदा ज्ञानको अभ्यास करना चाहिये अर्थात् नारद कहत हेरघुनाथजी यथा अँधेरे में झूठी रसरी को सांचा सांप मानि भय करते हैं तथा यहां अज्ञानते झूठे लोक व्यवहार को ईश्वरवत् सांचुमानि भव बन्धन में परते हैं अरु जव ज्ञान ते लोक व्यवहार झूठा मानि त्याग करि आप को रूप यथार्थ जानि, ताहीमें प्रीति

करै तो आपही में लीन होय ताते ज्ञान उत्पन्न होने की उपाय में नित्यही लगना चाहिये २८ (त्वत्पादभक्ति युक्तानां क्रमात् विज्ञानं भवति) आपके पांयन की भक्ति सहित जे हैं तिनके धीरा धीरा विज्ञान होता है (तस्मात् ये त्वत्भक्तियुक्ता ते एव हि मुक्तिभाजः) ताते जे जन आपकी श्रवणादि भक्ति सहित हैं तेई निश्चय करि मुक्तिके भागी हैं २९ (त्वत्भक्तभक्तानां च भुक्तानां अहं किंकरः) आपके भक्तनके भक्तनके पुनः जे भक्त हैं तिनके हमसेवक हैं (अतः प्रभो मां अनुगृह्णीष्व मां मोहयस्व न) इस कारण हे प्रभो मोपर अनुग्रह करौ मोहिं मोहित न करौ अर्थात् नारद कहत हे रघुनाथजी श्रवण कीर्तन स्मरण अर्चन वंदन सेवन दास्यतादि जो आपकी नववा भक्ति है तिनको जे जन करते हैं ज्यों ज्यों त्यों त्यों उरमें विज्ञान बढ़ता जाता है ताते जे आपकी श्रवणादि भक्ति में लगें हैं तेई निश्चय करिके मुक्त होते हैं अरु आपके जे भक्त हैं तिनके भक्तनके भक्तनको मैं सेवक हों ऐसा जानि हे प्रभो मोपर अनुग्रह सदा दयाराखौ मोको मोहित न करौ यह नीचानुसंगान है ३० ॥

त्वन्नाभिकमल्लोत्पन्नो ब्रह्मा मे जनकः प्रभो ॥ अतस्तवाहं पौत्रोऽस्मि भक्तं मां पाहिराघ
व ३१ इत्युक्त्वा बहुशो न त्वास्वानंदं श्रु परिप्लुतः ॥ उवाच वचनं राम ब्रह्मणानोदितो
ऽस्म्यहम् ३२ रावणस्य वधार्थाय जातोऽसि रघुसत्तम ॥ इदानीं पितराज्यरक्षार्थं पितात्वा
मभिषेक्ष्यति ३३ ॥

(प्रभो त्वत्नाभिकमल्लोत्पन्नो ब्रह्मा उत्पन्न भये सो हमारे पिता हैं (अतः तव पौत्रोऽस्मि अहं भक्तं मां पाहि) याते आपको पौत्रमें सेवक हों हे रघुनंदन मेरी रक्षा करौ ३१ (इति उक्त्वा स्वानंदं श्रु परिप्लुतः बहुशो न त्वा वचनं उवाच) ऐसा कहि आपने आनंद आंशु बहावत बहुत प्रणाम करि वचन बोले (हे राम ब्रह्मणानोदितोऽस्म्यहम्) हे रघुनंदन ब्रह्माने पठावा है मोको अर्थात् नारद कहत हे प्रभु मेरे पिता ब्रह्मा आपकी नाभी कमलते उत्पन्न भये तौ मैं आपको पौत्रसेवक हों ताते हे रघुनाथजी मेरी रक्षा करौ ऐसा कहि प्रेमानंद उमंगि आंशु बहावत बारं बार प्रणाम करि पुनः वचन बोले हे रघुनाथजी आपके पासको ब्रह्माने मोको पठावा है सो हाल सुनिधे ३२ (हे रघुसत्तम रावणस्य वधार्थाय जातोऽसि) हे रघुवंश में उत्तम आपतौ रावणके वध करने हेत अवतीर्ण भयो है (इदानीं पितराज्यरक्षणार्थं त्वमभिषेक्ष्यति) यह समय में तुम्हारे पिता राज्य के रक्षा करिबे हेत तुम्हारा अभिषेक किया चाहते हैं अर्थात् नारद कहत कि हे रघुवंश शिरोमणि ब्रह्मा ने इस हेत पठावा है कि आपतौ रावण के नाश करिबे हेत भूतल में अवतीर्ण भयो अरु या समयमें आप के पिता आपनी राज्य के रक्षा करने हेत आपही को राज्याभिषेक किया चाहते हैं तिसमें आपकी क्या इच्छा है ३३ ॥

यदिराज्याभिसंसक्तो रावणं न हनिष्यसि ॥ प्रतिज्ञाते कृताराम भूभारहरणाय वै ३४
तत्सत्यं कुरु राजेन्द्र सत्यसंधस्त्वमेव हि ॥ श्रुत्वा तद्वादितां रामो नारदं प्राह सस्मित
म् ३५ शृणु नारद मे किंचिद्विद्यतेऽविदितं क्वचित् ॥ प्रतिज्ञातं च यत्पूर्वकरिष्ये तन्न
संशयः ३६ ॥

(यदिराज्याभिसंसक्तो) जो कदाचित् राज्यमें आसक्त भये अरु (रावणं न हनिष्यसि) रावण को नाशन कर्नहेउ (रामते भूभारहरणाय वै प्रतिज्ञाकृता) हे रघुनाथजी आप भूमिको भार हरिबे अर्थ निश्चय प्रतिज्ञा किया है ३४ (तत्सत्यं कुरु राजेन्द्र त्वंसत्य संधः एव हि) ताको सत्य करौ हे राजेन्द्र आप

सत्यसंधानिश्चय करिके हों (एतत्गादितंश्रुत्वारामःसास्मितंनारदंप्राह) यहमुनिकी कहासुनि रघुनाथजी मुसुकाय नारद प्रतिबोले ३५ (नारदशृणुकिंचित्बिद्यतेमेकचित्अविदितं) हेनारद सुनियेकुछ सुधिहै मोकोअरुकुछ भूलि गया ऐसा ब्रह्माविचारितुम्हें पठाये सोनहीं (पूर्वयत्प्रतिज्ञातंचतत्कारिष्ये संशयःन) पूर्वजो प्रतिज्ञाहै ताहीविधि सबकार्य करिहो तामें संशयनहींहै अर्थात् नारदकहत हे रघुनाथ जी जो पितु आज्ञाते राज्याभिषेकग्रहण करिराज काज में परिभूलिगये अरुरावण को पूर्व ही न मारे तौ जो भूमि भार हरने हेत आपने प्रतिज्ञा कियारहै भाव प्रथम भू भार हरि पीछेराज्य करैगे यह प्रतिज्ञा भंग ह्वै जायगी ताते हे राजा धिराज आप निश्चयकरि सत्यसंध जो कहते हों सोई करतेहों ताते पूर्व प्रतिज्ञा सत्य करौ इत्यादि नारद के कहे वचन सुनि मुसुकायकै रघुनाथजी नारद प्रति बोले हे नारद अपने वचनों का उत्तर सुनिये ब्रह्मा को तथा आप को क्या यह सूचित होता है कि मोकोकुछ सुधि है कुछ भूलिगया भाव राज्य करने की सुधि है अरु भू भार उतारना भूलिगयो ऐसा समझना ठ्या है काहे ते मैंने पूर्व जिस भांति प्रतिज्ञा किया है उसी क्रम सब कार्य करिहो अर्थात् प्रथम भू भार उतारि पीछे राज्य करिहो यामें कुछ संशय नहीं है ३६ ॥

किंतुकालानुरोधेनतत्तत्प्रारब्धसंक्षयात् ॥ हरिष्येसर्वभूभारंक्रमेणासुरमंडलम् ३७

रावणस्यविनाशार्थैवोगंतादण्डकाननं ॥ चतुर्दशसमास्तत्रह्युषित्वामुनिवेषधृक्

३८ सीतामिषेणतंदुष्टंसकुलनाशयाम्यहम् ॥ एवंरामेप्रतिज्ञातेनारदःप्रमुमोदह ३९ ॥

(किंतुकालअनुरोधेनअसुरमण्डलेप्रारब्धसंक्षयात्) प्रतिज्ञा पूरी करिहो परंतु समय भाये पर राक्षस मंडलकी प्रारब्ध नाश भये ते (तत्तत्क्रमेणसर्वभूभारंहरिष्ये) जसजस जाको काल आई ताहीक्रम करिके सब भूमि को भार हरिहो अर्थात् रघुनाथ जी कहत कि हे नारद हम आपनी प्रतिज्ञा पूरीकरेंगे परंतु जब जिसकी प्रारब्ध नाश होई मरण काल आई तब तिसको वध करैगे इसी भांति क्रम क्रम सबराक्षसों को मारि भूमि को सबभार हरेगे ३७ (रावणस्यविनाशार्थैवःदंडकाननंगता) रावण के नाश करिवे हेत काल्हि प्रातही हम दण्डक वनको जायंगे (मुनिवेषधृकतत्रचतुर्दशसमाह्मिडपित्वा) मुनिको बेपथरि तहाँवास करि चौदह वर्ष बिताइहो ३८ (सीतामिषेणअहंसकुलंतंदुष्टनाशयामि) सीता के बहाने करिके हम सहित कुल त्यहि दुष्टहि नाश करैगे (एवंप्रतिज्ञातेरामेनारदःप्रमुमोदह) इस भांति की प्रतिज्ञा रघुनाथ जी के करत संते नारद मनमें आनंद भये अर्थात् रघुनाथ जी कहत कि हे मुनि रावण के नाश करिवे हेत पिता को वचन ग्रहण करि काल्हि प्रातही हम सीता लपण सहित दण्डक वनको गमन करैगे मुनि को ऐसी बेप धारण करि तहाँ वन में वासकरि निश्चय करि चौदह वर्ष बितावेंगे तहाँते रावण सीता को हरि लैजाय गो ताही बहाने ते हम दुष्ट रावण को सेना परिवार सहित नाश करि देंगे शिवजीकहत कि हे गिरिजा जब रावण के वध करने की प्रतिज्ञा रघुनाथ जी को करत सुने तब नारद मनमें आनंद को प्राप्त ह्वै चलने इच्छाकरि विदा मागे ३९ ॥

प्रदक्षिणत्रयंकृत्वादण्डवत्प्रणिपत्यतम् ॥ अनुज्ञातश्चरामेणयौदेवगतिंमुनिः ४०

संवादं पठति शृणोति संस्मरेद्वायो नित्यं मुनिवररामयोः स भक्त्या ॥ संप्राप्नोत्यमरसु

दुर्लभं विमोक्षकैवल्यं विरतिपुरःसरं क्रमेण ४१ ॥

इति श्री अध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे अयोध्याकाण्डे प्रथमः सर्गः १ ॥

(तंरामंत्रयंप्रदक्षिणकृत्वादखदवतप्रणिपत्य) तिन रघुनंदनहिं तनि प्रदक्षिणा कीन्हे दखदवत प्रणा म करि (चरामेणअनुज्ञातामुनिःदेवमर्तिचयौ) पुनः रघुनाथ जी की आज्ञा पाय मुनि आकाश मार्ग ह्वै चले गये ४० (मुनिवररामयोःसंवादयःसमकथानित्यं पठतिशृगोतिवातंस्मरन्) नारद रघुनाथ जी को जो संवाद है ताहि जो जन भक्ति करिकै नित्यहीं पढ़न सुनत वा सुनिरण करता है (सविरातिपुरःसरंक्रमेणअमरत्तुदुर्लभंकेवल्यंमोक्षंतंप्राप्नोति) तो पूर्व वैराग्य पीछे जम दम विवेकादि क्रम क्रम होत पुनः जो अमर देवतनको दुर्लभ है ताहि कैवल्यमोक्ष को प्राप्त होइ अर्थात् शिवजी कहत है गिरिजा आनंद ते नारदजी श्रीरघुनाथ जी को तनि प्रदक्षिणा करि दखदवत प्रणाम करि प्रभु की आज्ञा पाय पुनः मुनि आकाश मार्ग है ब्रह्मलोकें गये यह जो मुनिवर नारद अरु रघुनाथजी को संवाद है ताहि जो जन सहित भक्ति नित्यही पढ़े सुने अथवा सुनिरण करे तो प्रथम वैराग्य पुनः इंद्री मनादि स्वाधीन विवेक ते सारा सार जाने इत्यादि क्रम क्रम जो देवन को दुर्लभ तो केवल्य मुक्ति ब्रह्म रूप की प्राप्ति होवै ४१ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमस्तियवल्गुभपदशरणागतवैजनायविरचितेअध्यात्मभूषणेअयोध्या
कारुदेनारदअयोध्याजगमनवर्णनोनामप्रथमःप्रकाशः १ ॥

श्री महादेवउवाच ॥ अथराजादशरथःकदाचिद्ब्रह्मसिस्थितः ॥ वशिष्ठस्वकुलाचार्यमाहूयेदमभाषत् १ भगवन् राममखिलाःप्रशंसन्तिमुहुर्मुहुः ॥ पौराचनैगमावृद्धामंत्रिणश्चविशेषतः २ ततःसर्वगुणोपेतंरामंराजीवलोचनं ॥ ज्येष्ठंराज्येऽभिषेक्ष्यामिच्छोऽहंमुनिपुंगव ३ ॥

तवैया ॥ गुरुपूछि तु मंत्रित बोलितवै अभिषेकसजे नृपमोदभरे । पुरसंगलसतज पताक ध्वजा घट कंचनपे सणिदीपधरे ॥ मिलिशारद तो न तही कुवरी त्यहिकेक्य जाहिसरोयकरे । सुररत्नक वंदतवैजसुनाय सिया युततानुज रामहरे ॥ (अथकदा चित्त्रहसिस्थितः राजादशरथः स्वकुल आचार्यं वशिष्ठं आहूयइदं अभाषत्) शिवजी बोले हे पार्वति अवकिसी समय में एकांत स्थान में बैठे हुये राजा दशरथ आपने कुलके आचार्य जो वशिष्ठ तिनहि बुलाय यहि प्रकार बोले १ (भगवन् पौराचनैगमावृद्धामंत्रिणश्चविशेषतः मंत्रिणःअखिलाः मुहुः मुहुः रामंप्रशंसन्ति) हे भगवन् तमर्य पुरवासी तवपुनः वेद ज्ञातावाप्रणिग्जन तथा वृद्धवडी अवस्था वाले पुनः विशेषिकै मंत्रीलोग इत्यादि तब बारं बाररामजी हैं तिनहि प्रशंसा करते हैं भाववर्म नीति शील सुलभ उदारतादि अनेक गुणजिन के वर्णन करते हैं २ (ततःमुनिपुंगवतर्वगुणोपेतंज्येष्ठं राजीव लोचनं रामंराज्ये अभिषेक्ष्यामिच्छोऽहं वृद्धः) ताते हे मुनिवर एकतो तवगुण युक्त दूतरे तवभाइन में ज्येठे तीसरे कमल तम जिनके नेत्र भावस्वरूपवान ताते रामजीहैं तिनहि राज्य विषे अभिषेक करिहो कहैतेअबमें वृद्धभयों अर्थात् एकांत स्थानमें महाराज वशिष्ठजी तो कहेकि हेमुनिवर पुरवासी विद्वान वृद्धमंत्री आदि तवरघनंदन की प्रशंसा करते हैं ते गुणन युत तवभाइन में बड़े कमल तम नेत्र ऐते स्वरूपवंत इत्यादि तब उचमता विचारि रघुनंदन को राज्याभिषेकदीन चाहतहो कितकारण कि में वृद्धभयों यहौ उत्तव देखिलेंउ ३ ॥

भरतोमातुलंद्रष्टुंगतःशत्रुघ्नसंयुतः ॥ अभिषेक्ष्येऽववाशुभवांस्तत्रानुमोदताम् ४

संभाराःसंध्रियंतांचगच्छमंत्रयराघवम् ॥ उच्छ्रीयंतांपताकाश्चनानावर्णाःसमं
ततः ५ तोरणानिविचित्राणिस्वर्णमुक्तामयानिबै ॥ आहूयमंत्रिणंराजासुमंत्रंमं
त्रिसत्तमम् ६ ॥

(शत्रुघ्नसंयुतःभरतःमातुलंद्रष्टुंगतः) शत्रुघ्न सहितभरत आपने मामाके देखने हेत नन्हिहाल को गयेहैं (आशुएवद्वयभिपेक्षेतत्त्वभवान्चनुमोदताम्) अरुमैंशीघ्रही निश्चयकरिकै काल्हिही राज्याभिषेक करिद्वौतामें पुनः आपहू आनंद सहित संमत दीजिये कारण यहकि कैकेईके पिताने प्रथमहीं करारपत्रलिखायाकि मेरी कन्याके पुत्रको राज्याभिषेक देउतोंमें विवाहकरिहों सोईदशरथ जी लिखिदिये तापरगर्गाचार्य वो वशिष्ठगवाह रहे हैं यह सत्योपाख्यानमें लिखाहै इसीहेत भय राखि महाराज कहत कि शत्रुघ्न सहित भरत आपने मामाको देखनेहेत नन्हिहालको गये तिनके सुने शीघ्रनिश्चय करिकै काल्हिहीं राज्याभिषेक कीन चाहतहों तामे पुनः आपहू आनंद सहित संमत दीजिये ४ (संभाराःतांसंध्रियं) राज्याभिषेक की सामग्री इकट्ठाकरौ (गच्छराघवममंत्रय) जायरघुनंदन प्रति सलाहकीजिये (ततःनानावर्णाः समंचपताका उच्छ्रीयतां) तदनंतर अनेक रंगन सहित पुनः पताका खड़े करुवावौ ५ (स्वर्णमुक्तामयानितोरणानि विचित्राणि) सोनामोतिन की भालरि बंदनवारन ते भूषित करितोरण जो बहिरी द्वारतिनहिनिश्चय करि विचित्रवनुवावौ (मंत्रिसत्तमंसुमंत्रमंत्रिणंराजाआहूय) सब मंत्रिन में उत्तम जो सुमंत्र नामे मंत्री ताहि राजा बुलाये अर्थात् वशिष्ठ सों सम्मत लै पुनः महाराज कहे कि राज्याभिषेककी यावत्सामग्री हैं तिनहिं इकट्ठा करावौ अरु आप जाय रघुनन्दन ते सलाह करौ पुनः तोरण यथा तोरणोऽस्त्रीवहिर्द्वारंइत्य मरः अर्थात् बाहेर के द्वार सोना मोतिनमय भालरि बन्दनवार आदि भूषित करि विचित्र सजौ ऐसा कहि पुनः महाराज उत्तम मंत्री जो सुमंत्र तिनहिं बुलाये ६ ॥

आज्ञापयतियद्यत्वांमुनिस्तत्तत्समानय ॥ यौवराज्येऽभिषेक्ष्यामिश्चोभूतेरघुनंद
नम् ७ तथेतिहर्षात्समुनिर्किंकरोमीत्यभाषत ॥ तमुवाचमहातेजावशिष्ठोज्ञानि
नांवरः ८ श्वःप्रभातेमध्यकक्ष्येकन्यकाःस्वर्णभूषिताः ॥ तिष्ठंतुषोडशगजःस्वर्ण
रत्नादिभूषितः ९ ॥

(मुनिःत्वांयत्तत्आज्ञापयतितत्तत्समानय) हेसुमंत वशिष्ठ मुनि जौनी जौनी वस्तुको आज्ञा देइतौन तौन वस्तुलाइये (श्वःभूतेरघुनंदनम्यौवराज्येऽभिषेक्ष्यामि) काल्हिप्रातहोत संतेरघुनंदन हि राज्याभिषेक करिहों ७ (तथाइतिहर्षात्समुनिर्इतिअभाषतकिंकरोमि) सुमंत बोले कि यथाकहतेहों सोई करिहों पुनः आनंद ते सोई सुमंत मुनि प्रति ऐसावचनबोले कि क्या कामकरौसो मुनि (ज्ञानिनांवरःमहातेजावशिष्ठःतंउवाच) ज्ञानिनमे उत्तममहातेजवंत वशिष्ठ सुमंत प्रति बोलते भये अर्थात् जवमहाराज सुमंत को बुलाय आज्ञादिये कि वशिष्ठ मुनि तुमको जो जो आज्ञाकरैं सो सो कार्य शीघ्रही करौ सो मुनि सुमंत्र बोले कि हेमहाराज जैसा आपकहतेहौ तैसाही करौंगो ऐसा कहिपुनः सुमंत्र आनंदते जायवशिष्ठ प्रति इसभांति वचनबोले कि क्या कार्य करौ सोआज्ञा दीजिये डाति मुनि तबज्ञानिन में उत्तमतपोबलमहातेजवंत वशिष्ठ जी सुमंत्र प्रति बोलते भये ८ (श्वःप्रभा तेमध्यकक्ष्येस्वर्णभूषिता षोडशकन्यकातिष्ठंतुस्वर्णरत्नादिभूषितःगजः) काल्हिप्रभात होतही राज मंदिर केमध्य में सोनेके भूषणजरी केवसनादि करिकै विभूषित सोरह उत्तमकन्या स्थित रहैं तथा

सोना रत्नादिः भूषित अर्थात् लदाऊ कामदार भूल मोतिन की लरै किनारिनमें लगी मणि जटित सोने अंबारी खैची सर्वांग भूषित ऐसासजाहाथी तयारखडारहै ६ ॥

चतुर्दन्तःसमायातुऐरावतकुलोद्भवः ॥ नानातीर्थोदकैःपूर्णाःस्वर्णकुंभाःसहस्रशः
१० स्थाप्यतांनववैव्याघ्रचर्माणित्रीणिचानय ॥ श्वेतछत्रंरत्नदण्डंमुक्तामणिवि
राजितम् ११ दिव्यमाल्यानिवस्त्राणिदिव्यान्याभरणानिच ॥ मुनयःसत्कृतास्त
त्रतिष्ठंतुकुशपाणयः १२ ॥

(ऐरावतकुलउद्भवःचतुर्दन्तःसंभायातु) जो ऐरावतके कुलमें उत्पन्न अरुजाके चारिदांत होइ ऐसा हाथी संपूर्ण प्रकार ते साजि कै आवै (नानातीर्थ उदकैः पूर्णाः सहस्रशः स्वर्णकुंभाः स्थाप्य तां) अनेक तीर्थों के जल करिके परिपूर्ण हजारन सोनेके कलश स्थापित करौ १० (चव्याधूचर्माणिवै नवत्रीणिआनय) पुनः व्याघ्रके चर्मनिश्चयकरिके नवीन तीनिआनिये (मुक्तामणिविराजितंरत्नदण्डं श्वेतछत्रं) जामे मोतिनकी आलारि मणिजटित विराजमान हेम रत्नजटित जामे दण्डऐसाश्वेत छत्र उपस्थित राखौ ११ (दिव्यमाल्यानिवस्त्राणिचअन्यदिव्यआभरणानि) दिव्यमालादिव्यवसनपुनः और किरीट कुंडलादि दिव्य भूषण उपस्थितरहैं (सत्कृताकुशपाणयःमुनयःतंत्रतिष्ठंतु) दक्षिणादिते सत्कार कियेहुये कुशहाथ में लिहै मुनि समूह तहां परस्थितरहैं अर्थात् वशिष्ठ कहत कि ऐरावत के कुल में उत्पन्न भया चौदंता हाथी सजाठाढरहै पुनः पुष्कर प्राग नैमिषारण्य गंगोत्री गंगासागर इत्यादि अनेक तीर्थोंके जलकरिके परिपूर्ण भरे हजारनसोनेके कुंभ स्थापित करौ पुनः नवीन तीनि व्याघ्र के चर्म आनिये पुनः कनक मणि जटित किनारिन में मोतिन की आलारि लगीकनक रत्न जटितदण्ड सोनेके सलाका ऐसाश्वेत छत्रउहां धरारहै तथा मोती गजमुक्ता बिद्रुम सोना औरी मणीफूल इत्यादि के अनेक दिव्य माला तथा रेशमी जरतारी ऊनी इत्यादि अनेक दिव्य वसन तथा किरीट कुण्डल केयूर बलय मुद्रिकादि औरभी अनेक भूषणधरेराखौ पुनः भोजन बसनदक्षिणादि दैसत्कारकिये हुये अनेकन मुनिहाथे में कुशलिहै तहांपरबैठेरहैं १२ ॥

नर्तक्योवारमुख्याश्चगायकावेणुकास्तथा ॥ नानावादित्रकुशलानृपांगणेबादयंतु
ए १३ हस्त्यश्वरथपादातावहिस्तिष्ठंतुसायुधाः ॥ नगरेयानितिष्ठंतिदेवतायत
नानिच १४ तेषुप्रवर्ततांपूजानानाबलिभिरावृता ॥ राजानःशीघ्रमायांतुनानोपा
यनपाणयः १५ इत्यादिश्यमुनिःश्रीमान्सुमंत्रंनृपमंत्रिणं ॥ स्वयंजगामभवनं
राघवस्यातिशोभनम् १६ ॥

(गायकाचवारमुख्याःनर्तक्यःवेणुकाः तथानानावादित्रकुशलानृपांगणेबादयंतु) गावनेवाले पुनः बेश्या समूह नाचनेवाली अरु वेणु बजावनेवाले तथा मृदंग रवाव मजीरा ढोलतासाभांफ इत्यादि अनेक बाजा बजावने वाले राजमन्दिर के आंगन बिपे बजावैं १३ (हस्तिअश्वरथपादातासअयुधाव हिःतिष्ठंतु) हाथी घोड़ा रथ तिनपर सवार तथा पैदर सेना ते सब सहित हथियार भाव चतुरंगिनी सेना सर्जी बाहेर खड़ी रहै (चदेवताआयतनानियानिनगरेतिष्ठंति) पुनः देवतन के मन्दिर जेतें अयोध्यानगर में स्थापितहैं १४ (तेषुबलिभिःआवृतानानापूजाप्रवर्ततां) तिन मन्दिरन बिपे बलि-दान सहित गंधाक्षत फल धूप दीपादि अनेक सामग्री करिके पूजा किया जाय (नानाउपायनपाण यः राजानःशीघ्रमायान्तु) अनेक भांति भेंटकी सामग्री हाथ में लिहै देशन के राजा लोग आवैं १५

(इतिनृपमंत्रिणंसुमंत्रंआदिश्य श्रीमान्मुनिःस्वयंअतिशोभनं राघवस्यभवनंजगाम) इस भांति राज मंत्री जो सुमंत्र तिनहिं आज्ञा दै श्रीवन्त वशिष्ठ मुनि आपु अत्यन्त शोभायमान जो श्री रघुनन्दन को मन्दिर तहां को जाते भये अर्थात् मंगल गावनेवाले पुनः वेश्या नटादि नाचने योग्य वेनु बजावनेवाले तथा रवाव मृदंग तबला शारंगी सितार मंजीरा ढोल तासा भांभ इत्यादि अनेक बाजा बजावनेवाले राजमन्दिर के आंगनमें बजावैं अरु हाथी घोडा रथ पैदरादि सेना चतुरंगिनी उरदी हथियार सजे बाहेर खड़ी रहै पुनः गणेश देवी सूर्य शिव विष्णु इत्यादि देव प्रतिष्ठित यावत् मंदिर पुर में हैं तिनमें बलिदान चन्दन फूलादि सामान लै सब को पूजा कियाजाय भेटकी सामग्री मणि सोनदि हाथ में लिहे देशन के राजा लोग शीघ्रही आवैं इत्यादि राजमंत्री जो सुमंत्र तिनहिं आज्ञा दैकै श्रीवशिष्ठजी आप शोभायमान हेम रत्नमय रचित जो रघुनन्दन को मन्दिरतहांको जातेभये १६ ॥

रथमारुह्यभगवान्वशिष्ठोमुनिसत्तमः ॥ त्रीणिकक्षाण्यतिक्रम्य रथात्क्षितिम
वातरत् १७ अंतःप्रविश्यभवनंस्वाचार्यत्वादवारितः ॥ गुरुमागतमाज्ञायराम
स्तूर्णकृतांजलिः १८ प्रत्युद्गम्यनमस्कृत्य दण्डवद्भक्तिसंयुतः ॥ स्वर्णपात्रेण
पानीयमानिनायाशुजानकी १९ रत्नासनेसमावेश्यपादौप्रक्षाल्यभक्तितः ॥ तदा
पःशिरसाधृत्वासीतयासहराघवः २० ॥

(भगवान्मुनिसत्तमः वशिष्ठःरथंआरुह्यत्रीणिकक्षाणि अतिक्रम्यरथात्क्षिति अतरतभव) सब वस्तुको समर्थ मुनिनमें उत्तम वशिष्ठ रथपर चढे रघुनन्दनके मन्दिरके तीनिआवरण नांघि चौथेमें रथते भूमिपर उतरतभये १७ (भवनंअन्तः प्रविश्यस्वआचार्यत्वात् अवारितः) मन्दिरके भीतर पैठे चलेगये तहां आपने कुलके आचार्य विचारि ताते किसी द्वारपालने रोकानहीं परन्तु भीतर खबरि पहुंचायदिये (गुरुमागतं आज्ञायरामः) गुरुवशिष्ठ तिनहिं आवत जानि रघुनन्दन (तूर्णकृतांजलिः) १८ प्रत्युद्गम्यभक्तिसंयुतः दण्डवत्नमस्कृत्य) शीघ्रही उठि हाथजोरि आगे आय भक्ति सहित दण्डवत् प्रणाम कीन्है (स्वर्णपात्रेणजानकी आशु पानीयंआनिनाय) सोनेके पात्र करिकै जानकी जी शीघ्रही जललाई १९ (रत्नआसनेसमावेश्य भक्तितःपादौप्रक्षाल्य) रत्नजटित चौकीपर बैठाय भक्तिते दोऊ पांय धोवतेभये (तत्आयःसीतयासहराघवः शिरसाधृत्वा) तौनजल सीता सहित रघुनन्दन शीशपर धरिलिये अर्थात् रघुनाथजी के मन्दिरमें सात आवरण हैं तहां तीनिआवरण तक वशिष्ठजी रथपर चढे चलेगये भाव ऐश्वर्य धर्म यश श्रीवैराग्य मोक्ष युत इतिभगवान्हैं पुनः मनन शीलनमें उत्तम पुनः कुलके आचार्य ताते तीनि कक्षातक रथपर गये पुनः रथते उत्तरि भूमिपरचले अंतःपुरमें पैठे जहांकोऊ जायनहीं सकत परन्तु इक्ष्वाकु कुलके आचार्य विचारि द्वारपाल रोकि न सके परन्तु भीतर खबरि जनायदिये तब गुरुहि आवत जानि रघुनन्दन तुरतही उठे आगे आय भक्ति सहित हाथजोरि दण्ड प्रणाम करि भीतर लैगये तब सोनेकी झारीमें जानकीजी शीघ्रही जल लाई तब रत्नजटित चौकीपर मुनिको बैठारि जानकीजी के लायेहुये जलते भक्ति सहित प्रभु दोऊ पांयधोये बसन्दते पोंछि सिंहासनपर बैठाये पुनः पगधोवन जललैकै जनकनन्दनी सहित रघुनन्दन शीशपर धरिलिये २० ॥

धन्योऽस्मीत्यब्रवीद्रामस्तवपादांबुधारणात् ॥ श्रीरामेणैवमुक्तस्तुप्रहसन्मुनिरब्र
वीत् २१ त्वत्पादसलिलंधृत्वाधन्योऽभूद्विरिजापतिः ॥ ब्रह्मापिमत्पितातेहिपाद

तीर्थहताशुभः २२ इदानीं भाषसेयत्वं लोकानामुपदेशकृन् ॥ जानामित्वां परात्मा
नलक्ष्म्यामं जानमीश्वरम् २३ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थं भक्तानां भक्तिसिद्धये ॥ रावण
स्य वधार्थाय जातं जानानिराधव २४ ॥

(तव नादां ध्वजारणान् धन्योऽस्मि इति रात्रिः अभवत्) हे मुने आपको पादोदक शीशपर धारण करने
ते में धन्य भयो इत्यादि खुनायजी कहें (एवं रात्रेण उक्तः तमुनिः ब्रह्मन् अभवत्) मैं धन्य भयो ऐसा
वचन जब रघुनन्दन करिके कहा गया तब पुनः मुनि हैंतकें बोलते भये २२ (त्वन्मादत्ताल्लिलं
धृत्वा गिरिजापतिः धन्योऽभूत्) आपके पद धोवन गंगाजल शीशपर धारण करि गिरिजापति शिव
जी धन्य भये (मत्पिता ब्रह्मा अपि नेपादतीर्थे हि भगुभः हता) मेरे पिता ब्रह्मा तोऊ निश्चय करि
आपके पदतप तीर्थ स्पर्श करि निश्चय करि अशुभ कर्मोंको नाश किया २३ (इदानीं यत्त्वं भाषसे
लोकानां उपदेशकृन्) या समयमें जो आप कहतेहो तो लोकजननको उपदेश करतेहो (लक्ष्म्यामं
ईश्वरं जातं त्वां परात्मानं जानामि) लक्ष्मी सहित ईश्वर अवतीर्ण भयोहै आपको मैं परमात्मा जान-
ताहो २४ (भक्तानां भक्तिसिद्धये देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थम्) भक्तकी भक्ति पूर्ण करिवेहेत देवतनके कार्य
सिद्ध करिवेहेत (रावणस्य वधार्थाय जातं रावजानामि) रावणके वध हेतु अवतीर्ण भयो है रावणमें
जानताहो अर्थात् मुनि प्रति प्रभु कहे कि आपको पादोदक शीशपर धरतेमें धन्य भयो इति माधुर्य
वचन रघुनन्दन करि कहेगये तो मुनि पुनः ऐश्वर्य विचारि हैंतकें मुनि बोले हे रघुनन्दन आपके
पायँनको धोवन गंगाजल शीशपर धारण करि शिव धन्य भये तथा आपके पदतप तीर्थको स्पर्श
करि हमारे पिता ब्रह्मा अशुभ कर्मोंको नाश किये ऐसे समय आप या समय मोको गुत्मानि लेवक
के ऐसे वचन कहतेहो तो लोकजनों को उपदेश करतेहो अरु लक्ष्मी सहित ईश्वर आप अवतीर्ण
भयो है आपको जानताहो कि परमात्माहो तो भक्तकी भक्ति सिद्धभाव दर्शन देनेहेतु देवतकी
विपत्ति हरनेहेतु रावणके वधहेतु अवतीर्ण भयो है रावण आपको ऐश्वर्यरूप जानताहो २४ ॥

तथापि देवकार्यार्थं गुह्यं नोद्घाटयाम्यहं ॥ यथा त्वं मायया सर्वकरोषि रघुनन्दन २५
तथैवानुविधास्येहं शिष्यस्त्वं गुरुरप्यहं ॥ गुरुगुरुणां त्वं देवपितृणां त्वं पितामहः
२६ अन्तर्यामी जगद्यंत्रवाहकस्त्वमगोचरः ॥ शुद्धस्त्वमयं देहं धृत्वा स्वाधीनसंभ-
वम् २७ मनुष्य इव लोकेऽस्मिन् भूमित्वं योगमायया ॥ पौरोहित्यमहं जाने विगह्य
दुष्टं जीवनम् २८ ॥

(तथापि देवकार्यार्थं गुह्यं नोद्घाटयामि) आपको जानताहो तोभी देवतनके कार्यहोने हेतु
जो ऐश्वर्य-गुण-राखेहो तो मैं न प्रकट करिहो (हे रघुनन्दन यथा त्वं सर्वमायया करोषि) हे रघुनाय
जी जैसे आप सब कार्य माया करिकें करिरहेउहैं २५ (तथा अहं एव अनुविधास्ये त्वं शिष्यः अहं अपि
गुरुः) तेनेही मैं भी निश्चय करिकें अनुविधान करोंगो तामें आप शिष्यहो मैं निश्चय करिकें गुरु
हो (देव त्वं गुरुणां गुरुः त्वं पितृणां पितामहः) हे देव आप गुरुनके गुरु अरु आप पितरनके पितामह
आजा हो २६ (जगद्यंत्रवाहकः त्वमगोचरः अन्तर्यामी) जगत् रूप कोलू के चलावनेवाले आप
विषय रहित अन्तर्यामीहो (शुद्धस्त्वमयं स्वाधीनसंभवो देहं धृत्वा) शुद्ध संतोगुणमयी आपनी इच्छाते
उत्पन्नहै देहधरि २७ (योगमायया मनुष्य इव अस्मिन् लोके भूमित्वं) योगमाया करिकें मनुष्योंकी

नाई इस लोकमें प्रकाशमानहो अर्थात् वशिष्ठजी कहत कि यद्यपि आपको प्रभाव जानताहों तो भी जो देवनको कार्य भाव मनुष्य तनते रावणको बधहै ताते ऐश्वर्य रूप गुप्तराखेहों सो मैं भी न प्रकट करिहों हे रघुनन्दन जैसे आप मायामय सबकार्य करिरहेउहै ताहीं तुल्य मैं भी सब लौकिक विधान करिहों तिस रीतिमें आप शिष्यहों में निश्चय करिकै गुरुहों अरु यथार्थ रीति में हेदेव आप गुरुनके गुरु पितनके पिताहों भाव जन्मांतर में जेते पिताभये तिनके पिता जेते गुरुभये तिनके गुरुहों जगत्तरूप कोल्हूके प्रेरक विषय रहित अंतर्धामीहो आपनी इच्छाते शुद्ध सतो गुणी देहधरि उत्पन्नभयो योगमाया करिकै मनुष्योंकी नाई इस मृत्युलोकमें प्रकाशमानहो (अहंजानेपौरोहित्यविगर्ह्यदुष्यजीवनम्) मैं जानतारहा कि उपरोहिती कर्म निर्दितहै दोषनमय जीविका श्रुति स्मृति कहतहैं परंतु २८ ॥

इक्ष्वाकूणाकुलेरामःपरमात्माजनिष्यते ॥ इतिज्ञातंमयापूर्वब्रह्मणाकथितपु
रा२६ ततोहमाशयारामतवसम्बन्धकांक्षया ॥ अकार्षेगर्हितमपितवाचार्यत्वसि
द्ध्ये ३० ततोमनोरथोमेऽद्यफलितोरघुनन्दन ॥ त्वदाधीनामहामायासर्वलोकै
कमोहिनी ३१ मांयथामोहयन्नैवतथाकुरुरघूद्वह ॥ गुरुनिष्कृतिकामस्त्वंयदि
देहयेतदेवमे ३२ ॥

(इक्ष्वाकूणाकुलेपरमात्मारामःजनिष्यते इतिमयापूर्वज्ञातं पुराब्रह्मणाकथितम्) इक्ष्वाकुवंशिन के कुलमें परमात्मा रामनामे उत्पन्न हवैहैं यह मैंने पूर्वही जानारहै कौनभांति पूर्व समय ब्रह्माने कहाहै २६ (ततःआशयाग्रहंरामतव सम्बन्धकांक्षया) तवते बड़ी आशा सहित मैं हेरघुनन्दन आप के सम्बन्धकी कांक्षा करिकै (तवआचार्यत्वसिद्ध्ये अकार्षेअपिगर्हितम्) आपके आचार्यत्व सिद्धीके अर्थ निर्दित उपरोहिती कर्मभी ग्रहण किया ३० (ततःमेमनोरथः अद्यफलितः रामसर्वलोकैकमोहिनी महामायात्वतुअधीना) तवते मेरा मनोरथ अब सफलभया हेरघुनन्दन सब लोकनको मोहित करनहारी एकजो महामाया है सो आपहीके अधीन है ३१ (यदित्वंगुरुनिष्कृतिकामः एवमेतत् देहि) जो आपको गुरुदक्षिणा देनेकी कामना होयतो निश्चय मेरे अर्थ यह दान दीजिये (रघूद्वहय थामांएवनमोहयत्तथाकुरु) हेरघुवंशिनको कृतार्थ करनेवाले जौन प्रकार मायामोहिं निश्चय करि न मोहित करिसकै सो कीजिये अर्थात् वशिष्ठजी कहत हेरघुनन्दन उपरोहिती निर्दित कर्म मैं न ग्रहण करता परन्तु ब्रह्मार्जनि आपकी प्राप्तीको हाल पूर्वही कहाहै तिनते सुनि मैं प्रथमहीते जान तारहों कि इक्ष्वाकुवंशमें परमात्मा रामनामे उत्पन्न हवैहैं हेरघुनन्दन तवते बड़ी आशासहित आप के सम्बन्धकी कांक्षा करिकै विशेषि आपके आचार्य होने हेत मैं उपरोहिती कर्मभी ग्रहण किया तब ते मेरा मनोरथ अब सफलभया अब यह प्रार्थनाहै हेरघुनन्दन सब लोकनको मोहित करनहारी एक जो महामाया है सो आपहीके अधीनहै अब जो आपको गुरुदक्षिणा देनेकी कामना होयतो निश्चय करिकै मेरे अर्थ यह दान दीजिये हेरघुवंशिनके कृतार्थ करनेवाले जौन प्रकार मायामोहिं निश्चय करि न मोहित करिसकै सो उपाय कीजिये इत्यादिकहि जाहेत आये सो कहतेहैं ३२ ॥

प्रसंगात्सर्वमप्युक्तन्नवाच्यंकुत्रचिन्मया ॥ राज्ञादशरथेनाहंप्रेषितोऽस्मिरघूद्व
ह ३३ त्वामासंनयितुंराज्येऽहोऽभिषेक्ष्यतिराघव । अद्यत्वंसीतयासार्द्धमुपवासय
थात्रिधि ३४ कृत्वाशुचिर्भूमिशायीभवरामजितेन्द्रियः॥ गच्छामिराजसन्निध्यत्वं

तुप्रातर्गमिष्यसि ३५ इत्युक्त्वारथमारुह्यययौराजगुरुद्रुतं ॥ रामोऽपिलक्ष्मणं
दृष्ट्वाप्रहसन्निदमब्रवीत् ३६ ॥

(प्रसंगात्मयासर्वत्रापिउक्तंकुत्रचित्तनवाच्यं) प्रसंग परते मेंने सब हाल निश्चय करि कहा परन्तु यह रहस्य कबहू किसीते कहने योग्य नहीं है (रघुद्वहश्मिन्अहंदशरथेनप्रेषितः) हे रघुवंश कृतार्थकरता या समयमें मोको दशरथने पठावाहै ३३ (राघवत्वां आमंत्रयितुंश्वः राज्येअभिषेक्यति) हे राघव आप प्रति कछु वार्ता करिवेहेत किसकारण कि काल्हिराज्य विषे आपको अभिषेक करेंगे (अद्यसीतयासार्द्धत्वंयथाविधिउपवासं ३४ कृत्वा) आजु सीताकरिकै सहितआप जैसी घेदकीआज्ञाहै ताही विधिते ब्रतकरो (हेरामजितेंद्रियःशुचिःभूमिशायीभव) हे रघुनन्दन मनते जीतेहुवे इन्द्रियोंको तनते पवित्रतासहित भूमिपै शयनकरो (राजसानिध्यंगच्छामितुत्वंप्रातर्गमिष्यसि में राजाके पासके जाताहौ पुनः आप प्रातःकाल आयो ३५ (इतिउक्त्वारराजगुरुःरथंआरुह्यद्रुतंययौ) ऐसाकहि राजगुरु वशिष्ठ रथपरचढ़ि तुरतही जातेभये (लक्ष्मणंदृष्ट्वा रामः अपिप्रहसन्इदंअब्रवीत्) लक्ष्मणजी आये तिनहि देखि रघुनन्दन हँसिकै ऐसा बोले अर्थात् वशिष्ठजी कहत हेरघुनन्दन आप प्राप्त मनुष्योंकी ऐसी वार्ताकिया इति प्रसंगते पुनः एकांतमें पाय में ऐश्वर्य रूपकी सबवार्ता किया परन्तु जो आप ऐश्वर्य गुप्तराखेहौ तौ यह रहस्य किसीते कबहू कहबेयोग्य नहीं है अब या समयमें मोको दशरथ ने पठावाहै हेराघव आप प्रति कछु वार्ता करिवे हेत कौन कारण कि काल्हि आपको राज्याभिषेक करेंगे ताते हे राघव सीता सहित आप वेद विधानते ब्रत करौ कौन विधि ते कि मनते सब इंद्री जीते तनते पवित्रता सहित भूमिमें कुशासन पर शयन करौ अब में महाराजके पासको जाताहौ पुनः आप काल्हि प्रातः भये महाराजके पास आयो ऐसा कहि राजगुरु वशिष्ठ प्रभुते विदा ह्वै रथ पर चढ़ि तुरतही जाते भये ताही समय लक्ष्मण जी आये तिनहि देखि रघुनन्दन निश्चय करि हँसिकै इस प्रकारके वचन बोलते भये सो आगे कहत ३६ ॥

सौमित्रेयौवराज्येमेऽवोऽभिषेकोभविष्यति ॥ निमित्तमात्रमेवाहंकर्ताभोक्तात्वमे
वहि ३७ ममत्वंहिवहिःप्राणोनात्रकार्याविचारणा ॥ ततोवशिष्ठेनयथाभाषितंतत्त
थाकरोत् ३८ वशिष्ठोपिनृपंगत्वाकृतंसर्वन्यवेदयत् ॥ वशिष्ठस्यपुरोराज्ञाह्युक्तरा
माभिषेचनं ३९ यदातदेवनगरेऽश्रुत्वाकश्चित्पुमान्जगौ ॥ कौशल्यायैराममात्रे
सुमित्रायैतथैवच ४० ॥

(सौमित्रेश्वरःमे यौवराज्येअभिषेकोभविष्यति) हेसुमित्रानंदन काल्हि मेरायुवराज विषे अभिषेक होई (निमित्तमात्रमेवाहंकर्ताभोक्ताएवहित्वं) निमित्तमात्र सबको कहिवेमात्र हमराजा होयेंगे अरु राजकाज करता राज्यसुख भोक्ता निश्चयकरिकै तुमहोउगे काहेते ३७ (त्वंहिममवहिःप्राणःअत्रविचारणानकार्या) तुमनिश्चयकरिकै मेरेवाहेरके प्राणहौ यामेंकछु विचारनेते कार्यनहीं है (ततःयथावशिष्ठेनभाषितंतत्तथाकरोत्) तब जो बात वशिष्ठने कहारहै तौन ताहीभांति ब्रह्मचर्य ब्रतादि करते भये ३८ (नृपंगत्वावशिष्ठःअपिसर्वन्यवेदयत्कृतं) राजाकेपास जाय वशिष्ठ निश्चयकरि सब प्रभुके पासको हाल निवेदनकरतेभये हालकहे (वशिष्ठस्यपुरोराज्ञारामअभिषेचनंहिउक्तं) जासमय वशिष्ठकेआगे महाराजने रघुनंदनके राज्याभिषेककरनेको कहे ३९ (यदातत्तएवनगरेकश्चित्पुमान्श्रुत्वा

जगो) जब वार्ताकरतेरहैं तब नगरवासी कोई पुरुष सुनिकै रनवासनको गया (राममात्रेकौशल्याचैतथासुमित्राचै) राममातु कौशल्याके अर्थ पुनः तैसेही सुमित्राके अर्थ सुनावताभया अर्थात् वशिष्ठ गये पीछे लक्ष्मण आये तिनहिं देखि प्रभु हँसिकै बोले हेसुमित्रानंदन काल्ह मेरा युवराज पदको अभिषेकहोई तामें सबको कहने मात्र हम राजा अरु राजकाजके करता राज्यसुखके भोक्ता तुमहोउगे काहेते तुम निश्चयकरिके मेरे बाहेरके प्राणहौ यामें कुछ विचार करनेते कार्य नहीं है पुनः जो बात वशिष्ठने कहारहै तौन ताही भांति ब्रह्मचर्य ब्रतादि प्रभु करतेभये अरु महाराज के पास जाय वशिष्ठजी रघुनंदनको सब हाल कहे अरु जा समय वशिष्ठ प्रति महाराजने रघुनन्दन को राज्याभिषेक करनेको कहे तब नगरवासी कोऊपुरुषबैठा सुनता रहै सो हर्ष सहित रनवासमेंजाय कौशल्याजी सों कहा तथा सुमित्राजी सों कहा ४० ॥

श्रुत्वातेहर्षसंपूर्णेददतुर्हारमुत्तमं ॥ तस्मैततःप्रीतमनाःकौशल्यापुत्रवत्सला ४१
लक्ष्मीपर्यचरद्देवीरामस्यार्थप्रसिद्धये ॥ सत्यवादीदशरथःकरोत्येवप्रतिश्रुतम् ४२
कैकेयीवशगःकिन्तुकामुकःकिंकरिष्यति ॥ इतिव्याकुलचित्तासादुर्गादेवीमपूज
यत् ४३ एतस्मिन्नन्तरेदेवादेवीवाणीमचोदयत् ॥ गच्छदेविभुवोलोकमयोध्या
यांप्रयत्नतः ४४ ॥

(तेश्रुत्वाहर्षसंपूर्णेउत्तमहारंददतुः) ते रानी सुनिकै आनन्द परिपूर्ण उत्तम हार देतीभई (ततः तस्मैपुत्रवत्सलाकौशल्याप्रीतिमनाः) तदनन्तर ता समयमें गोवत्सवत्पुत्रपर स्नेह राखनेवाली कौशल्या रघुनन्दनकी प्रीति मनमें राखि ४१ (रामस्यअर्थप्रसिद्धयेदेवीलक्ष्मीपर्यचरत्) रघुनन्दनको स्वार्थप्रसिद्धपूर्ण होने अर्थ देवी कौशल्या लक्ष्मीजो हैं तिनहिं पूजतीभई अरु विचारतीहैं (दशरथःसत्यवादी श्रुतप्रतिषेकरोति) महाराज सत्यही बोलतेहैं तो जो उत्सव सुनिपराहैं सो अपना कहा अवश्य करेंगे ४२ (किन्तुकामुकःकैकेयीवशगः किंकरिष्यति) परन्तु जो कामासक्तीते कैकेयीके वश हैं सो जो प्रतिकूलता करै तो क्या करेंगे भाववाको कहै तो करेंगे (इतिव्याकुलचित्तासादेवीदुर्गा अपूजयत्) इत्यादि विचारि व्याकुल चित्त जाको सो कौशल्या विघ्न निवारण हेत देवी दुर्गा जो हैं तिनहिं पूजती भई ४३ (एतस्मिन् अन्तरे देवाः) ताही समयके विषे इंद्रादि देवता (देवी वाणीं अचोदयत्) देवी सरस्वती जो है ताहि पढावते भये (देवि भुवः लोकं अयोध्यां गच्छ प्रयत्नतः) हे देवि भूलोक में अयोध्याजीको जाउ तहां यत्न पूर्वक यह कार्य करौ अर्थात् जब वह पुरुष कहा कलिह रघुनन्दन को राज्याभिषेक होई तब कौशल्या सुमित्रा ते दोऊ रानी सुनि कै आनन्द परिपूर्ण उत्तमहार वाकोदिये तदनन्तर गोवत्सवत्पुत्र परस्नेह राखनेवाली कौशल्या मनमेंप्रीति राखि रघुनन्दन को राज्याभिषेक परिपूर्ण सिद्ध होने हेत लक्ष्मीजीको पूजती भई पुनः विचार कीन्हें कि महाराज सत्यही बोलतेहैं तो जो राज्याभिषेक सुनि पराहैं सो अपना कहा निश्चयकरि करेंगे परंतु जो कामासक्तीते कैकेयी के वशहैं वह जो प्रतिकूलता करै तो क्याकरेंगे वाको कहा न त्यागिहैं इत्यादि विचारि व्याकुल चित्त कौशल्या विघ्न निवारण हेतदुर्गा देवी को पूजतीभई ताही समयविषे देवतन सरस्वती को पठाये यह कहे कि हेदेवि भूलोक अयोध्या को जाउ यत्नपूर्वक हमाराकार्यकरौ ४४ ॥

रामाभिषेकविघ्नार्थयतस्वब्रह्मवाक्यतः ॥ मंथरांप्रविशस्वादौकैकेयीचततःपर
म् ४५ ततोविघ्नेसमुत्पन्नेपुनरेहिदिवंशुमे ॥ तथेत्युक्त्वातथाचक्रेप्राविवेशाथमंथ

राम ४६ सापिकुब्जात्रिवक्रातुप्रासादाग्रमथारुहत् ॥ नगरं परिनोदपूवासर्वतः स
मलंकृतम् ४७ नानातोरणसंवाधंपताकामिरलंकृतम् ॥ सर्वोत्सवसमायुक्तं वि
स्मितापुनरागमत् ४८ ॥

(ब्रह्मवाक्यतः रामअभिषेकविध्नर्थायतस्व) ब्रह्माकी आज्ञाते रामचंद्रको अभिषेकमें विध्नकरिवे
हेतु जाउ (आदौमंथरांप्रविशंस्वचततः परमूर्कैकैर्यौ) प्रथम मंथरामें प्रवेशहोउ पुनः ताके पीछे कैके-
यीमें प्रवेशहूवै वाकी बुद्धि फेरिदेउ ४५ (विघ्नेसमुत्पन्नेततः दिवंशुभेपुनः एहि) विघ्न उत्पन्न करि
तदनंतर स्वर्गको पुनः आवौ (तयाडितिउक्त्वातथाचक्रंअथमंथरामप्रविवेश) जेसा कहतेहौ तेसाही
होई इत्यादिकहि सरस्वती तेसाहीकीन्ही प्रथम मंथरामें प्रवेशभई अर्थात् देवता कहैकि हेदेवि ब्रह्मा
की आज्ञाते रघुनंदनके राज्याभिषेकमें विघ्न करिवे हेतु जाउ प्रथम मंथरामें प्रवेश होउ पुनः पीछे
कैकेयीमें प्रवेशहूवै वाकी बुद्धि फेरिदेउ इति विघ्न उत्पन्नकरि तदनंतर स्वर्गको पुनः लौटि आवौ
इति सुनि सरस्वती बोली हेदेवतौ जेसा कहतेहौ तेसाही होई इत्यादि कहि तेसाही कीन्ही
जाय प्रथम मंथरा में प्रवेशहूवै बुद्धि फेरि दीन्ही ४६ (साअपिकुब्जातु त्रिवक्राअथ प्रासादाग्रं
अरुहत्) सो मंथरा निश्चय करिके कुवरी पुनः तीनि अंगनको टोढ़ि सो मन्दिर द्वारके ऊपर
चढ़ी (परितःनगरं दृष्ट्वा सर्वतः समलंकृतम्) तत्पूर्ण अयोध्या नगरको देखा मंगल साजते सर्वत्र
भूपितहै ४७ (नानातोरणसंवाधं) तोरणोंऽस्त्रीविहिद्वारं इत्यमरः संकटसंवाधः अल्पावकाशे इत्यमर
विवेके अर्थात् अनेक बहिरी द्वारनपर सयन (पताकाभिः अलंकृतम्) केतुध्वजा पताकादिकन करि-
कै भूपितहै (सर्वोत्सवसमायुक्तं विस्मितापुनः आगमत्) सबउत्सव सहित देखि विस्मय सहित पुनः
उतरिआई अर्थात् सो मंथरा निश्चय करिकै कुवरी पुनः तीनि अंगनको टोढ़ि सो मन्दिर द्वारके ऊपर
चढ़ी तत्पूर्ण नगरको देखा सबत्र भूपितहै कोनभांति कि अनेकन बहिरी द्वारनपर सयनकेतु ध्वजा
पताकादिकन करिके भूपितहै तथा बंजनवार चित्रामसदीप कलश चोके इत्यादि सब उत्सव सहित
देखि विस्मय सहित पुनः उतरिआई ४८ ॥

धात्रीपप्रच्छमातः किं नगरं समलंकृतं ॥ नानोत्सवसमायुक्ता कोशल्या चातिहर्षि
ता ४९ ददाति विप्रमुख्येभ्यो वस्त्राणि विविधानि च ॥ तामुवाच नदाध्यात्रिरामचं
द्राभिषेचनं ५० इवोभविष्यति तेनाद्य सर्वतोऽलंकृतं पुरं ॥ तच्छ्रुत्वा त्वरितंगत्वा
कैकेयी वाक्यमब्रवीत् ५१ पर्यंकस्थां विशालाक्षी मेकांते पर्यवस्थिताम् ॥ किं शेषे तु
भगे मूढे महद्भयमुपस्थितम् ५२ ॥

(धात्रीपप्रच्छमातः नगरं किं अलंकृतम्) धान्यानामे रघुनंदनकी धायी ताहि मंथरा पूछती भई
हेमाता अयोध्यानगर कोनेकारण भूपितहै (नानाउत्सवसमायुक्ता च कोशल्या अतिहर्षिता) अनेक उ-
त्सव सहित नगर पुनः कोशल्या अत्यंत आनंदहै ४९ (चविप्रमुख्येभ्यो विविधानि वस्त्राणि ददाति) पुनः
मुख्य ब्राह्मणोंके अर्थ अनेकविधिके वस्त्रन देती हैं (तदाध्यात्रीतां उवाच रामचंद्राभिषेचनम्) तब धायी
त्यहि मंथरा प्रति बोली भई कि रामचंद्रको राज्याभिषेकहै ५० (इवोभविष्यति तेनाद्य पुरं सर्वतः
अलंकृतम्) काल्हि राज्याभिषेक होई तिंहि करिकै आजु पुर सब भूपितहै (तत्श्रुत्वा त्वरितंगत्वा कैके-
यी वाक्यमब्रवीत्) तौ सुनि तुरतही जाय कैकेयी प्रति मंथरा बोली ५१ (एकांते पर्यंकस्थां विशाला

क्षीम्)एकांतमें पलंगपर बैठी हुई वड़े हैं नेत्रजाके त्यहि कैकेयी प्रति मंथरा कहत (मूढेदुर्भगेकिंशेषेपर्य
वास्थिताहे) मूढे कुभागिनी काहे सोवतीहै विरोधपर आरूढ़हो काहेते तेरेहेत (महत्भयंउपस्थितम्)
बड़ी भारी भय प्राप्तभई अर्थात् धान्यानामे रघुनन्दनकी धायीतासों मंथरा पूछतीभई कि हे माता
अयोध्या नगर कौनकारण मंगल साजते भूपितहै ध्वजपताक वंदनवार कलशचौकादि अनेक उत्सव
सहित नगर सजा पुनः कौशल्या अत्यंत आनन्दहैं पुनः मुख्य ब्राह्मणोंके अर्थ अनेक द्रव्य वसनादि
दान देतीहैं तव धायीत्यहि मंथरा प्रति बोलतीभई कि रामचन्द्रको राज्याभिषेकहै काल्हि राज्याभि-
षेक होई तेहि कारण आजुपुर सब भूपित कियागया इतिधायीने कहा ताहि सुनि तुरतही जाय
कैकेयी प्रति मंथरा बोली एकांत स्थानमें पलंगपर बैठी बड़ेहैं नेत्र जाके भावसुखी सुभगा स्वरूप-
वंतत्यहि कैकेयी प्रति मंथरा कहत हे मूढे भावतोको हानि लाभ नहीं सूझत हेदुर्भगे भावतेरी अभा-
ग्य आई क्यों सोवतीहै विरोधपर आरूढ़हो तोको बड़ी भय प्राप्तभई ५२ ॥

नजानीपेऽतिसौन्दर्यमानिनीमत्तगामिनी ५३ रामस्यराज्ञोनुग्रहात्स्वोभिषेकोभ
विष्यति ॥ तच्छ्रुत्वासहसोत्थायकैकेयीप्रियवादिनी ५४ तस्यैदिव्यंददौस्वर्णनू
पुरंरत्नभूषितम् ॥ हर्षस्थानेकिमितिमेकथ्यतेभयमागतम् ५५ भरतादधिकोरा
मःप्रियकृन्मेप्रियंवदः ॥ कौशल्यामांसमंपश्यन्सदाशुश्रूषतेहिमाम् ५६ ॥

(मत्तगामिनीअतिसौंदर्यमानिनीनजानीपे) हेमत्तगजगामिनि तोको अपनी अत्यन्त सुन्दरता
को मानहै ताते शिरपर भयप्राप्त भई ताको नहीं जानेउ अवसुनु ५३ (राज्ञोअनुग्रहात्स्वःरामस्य
अभिषेकःभविष्यति) राजाकी अनुग्रहते काल्हि रामको राज्याभिषेक होई (तत्श्रुत्वाकैकेयी सहसा
उत्थाय) तौन सुनिकै कैकेयी शीघ्रही उठी (प्रियवादिनी ५४ तस्यैरत्नभूषितम् दिव्यंस्वर्णनूपुरं-
दौ) प्रियवचन सुनावने वाली मन्थरा ताके अर्थ रत्नजटित दिव्य सोनेके नूपुर देतीभई (हर्षस्था
नेभयंआगतम् इतिमेकिंकथ्यते) हर्षके स्थानमें भयको आगमन ऐसामो प्रति क्यों कहिरही है ५५
(प्रियंवदःरामःभरतात् अधिकःमेप्रियकृत्) प्रियवचन बोलने वाले राम भरतते अधिक मेरा प्यार
करते हैं (कौशल्यामांसमंपश्यन् मां हि सदाशुश्रूषते) कौशल्याकी बरावरि मोको देखतेहैं मेरी सदा
सेवा करते हैं ५६ ॥

रामाद्भयकिमापन्नंतवमूढेवदस्वमे ॥ तच्छ्रुत्वाविषसादाथकुब्जाकारणवैरिणी ५७
शृणुमद्वचनंदेवियथार्थंतेमहद्भयम् ॥ त्वांतोषयन्सदाराजाप्रियवाक्यानिभाष
ते ५८ कामुकोऽतथ्यवादीचत्वावाचापरितोषयन् ॥ कार्यकरोतितस्यावैराम
मातुःसुपुष्कलम् ५९ मनस्येतन्निधायैवप्रेषयामासतेसुतम् ॥ भरतमातुल
कुलेप्रेषयामाससानुजम् ६० ॥

(रामात्किंभयंआपन्नं मूढेतवमेवदस्व) रघुनन्दनते कौनभय प्राप्तभई हेमूढे तू-मोप्रति कहू
अर्थात् कैकेयी प्रति मन्थरा कहत हे मत्तगजगामिनी तोको अत्यन्त सुन्दरताको अभिमान है भाव
पतिको स्वाधीन जानतीहै ताते नहीं जानेउ शिरपर भय प्राप्तभई सो सुनु महाराजकी अनुग्रहते
काल्हि रामको राज्याभिषेक होई इति मंगल वानीसुनि हर्षते कैकेयी तुरतही उठी प्रियवचन सुना
वने वाली मंथरा ताके अर्थ रत्नजटित दिव्य सोनेके नूपुर देतीभई पुनः कैकेयी बोलीहे मन्थरा

आनन्दको स्थान राम राज्याभिषेक तामें भयको आगेमन ऐता प्रतिकूल वचन मो प्रति क्यों कहि रही है काहेते प्रियवचन बोलनेवाले राम भाव जाको शीलमय सुभाव अरु भरतते अधिक मेरेमें प्रीति राखते हैं अरु कौशल्याकी बराबरि मोको देखते हैं अरु निश्चय करि मेरी सदा सेवा करते हैं तिन रघुनन्दनते मोको कौनमय प्राप्तभई हे मूढे मन्थरा जो भय होइ सो मोप्रति कहु (तत्श्रुत्वाअथकुब्जाकारण वैरिणीविषसाद) तौन कैकेयीके वचन सुनि प्रथम तौ कुवरी सौभाविक कुचाली पुनः पूर्वजन्म कारणते रघुनन्दन प्रति वैरराखे भुवंगिनि समहै पुनः सरस्वती प्रेरणा विष सहित ते अधिक सबलभई अर्थात् पूर्वजन्म मन्थरा वैरोचनकी कन्याहै किसी समय युद्धमें यह अपनी मायाते देवतोंको बांधिलिया कन्या विचारि इन्द्र नहीं मारतेरहैं भगवान्को कहते इन्द्र मारा वज्र शीघ्र फाटिगया सोई भगवान्ते वैर मानेहै इति कारण वैरिणी है यह सत्योपाख्यानमें लिखा है ५७ (मत्त्वचनंशृणुदेवि यथार्थंतेमहत्भयम्) मन्थरा कहत कि मेरे वचन सुनिये देवि सत्यही तेरे हेत बड़ीभय प्राप्तभई (त्वांतोपयन्त्राजाप्रियवाक्यानि सदाभाषते) तेरे सन्तोष करिवेको राजा मीठे वचन सदा कहते हैं ५८ (कामुकःचअतथ्यवादी वाचात्वांपरितोषयन्) कामके वशते पुनः असत्य बोलने वाले महाराज भूँठीवातोंते तेरा परितोष करिदेते हैं (राममातुःतस्यावैपुष्कलंकार्यं करोति) रामकी माता तिनका निश्चय करिउत्तम कार्य करते हैं ५९ (एतत्एवमनसिनिधायतेसुतं प्रेषयामास) यही निश्चय मनसे विचारि महाराज तुम्हारे पुत्रको पठाय देतेभये (सानुजंभरतं मातुलकुलेप्रेषयामास) सहित शत्रुहन भरतहि मामा के कुलमें भाव ननिहालको पठाय दिये जाततुमको भी न होई अर्थात् कैकेई प्रति मंथरा बोली कि मेरे वचन सुनिये हेदेवि सत्यही तेरे हेत महाभय प्राप्तभई काहेते पेटते महाराज कौशल्या को हितराखे हैं अरु तेरे संतोष करिवेको मुहँते प्रियवचन कहते हैं काहेते इधरकामासकीते तुम्हें प्रसन्न राखा चाहैं अरु उधर कौशल्याको हित कीन चाहत ताते महाराज भूँठी वातोंते तुम्हारा परितोष करिदेते हैं अरु रामकी मातु जो है तिनको निश्चय करि उत्तम कार्य करतेहैं यही निश्चय मन में विचारि शत्रुहन सहित भरततुम्हारे पुत्रहि ननिहालको पठायदिये तब कार्य ठाने ६० ॥

सुमित्रायाःसमीचीनंभविष्यतिनसंशयः ॥ लक्ष्मणोराममन्वेतिराज्यांशोऽनुभविष्यति ६१ भरतोराघवस्याग्रेकिंकरोवाभविष्यति ॥ विवास्यतेवानगरात्प्राणैर्बाह्यर्यतेऽचिरात् ६२ त्वंतुदासीवकौशल्यांनित्यंपरिचरिष्यसि ॥ ततोऽपिमरणंश्रेयोयत्सपत्न्याःपराभवः ६३ अतःशीघ्रंयतस्वाद्य भरतस्याभिषेचने ॥ रामस्यवनवासार्थंवर्षाणिनवपंचच ६४ ॥

(रामंअनुलक्ष्मणःइतिराज्यअंशःअनुभविष्यति) रामके अनुगामी लक्ष्मणहैं याते राज्य सुख भाग भी प्राप्तहोई ताते (समीचीनंसुमित्रायाःभविष्यतिसंशयःन) पूर्ववत् सुख सुमित्राको होई यामें संशय नहीं ६१ (रामस्यअग्रेभरतःवाकिंकरःभविष्यति) रामके आगे भरत यातौ सेवकहोयेंगे (वा नगरात्विवास्यतेवाअचिरात्प्राणैःह्यर्यते) अथवा नगरते निकारिबाहरे करि दियेजायेंगे वा थोरेही दिनमें प्राणन करिकै रहित होईगे ६२ (नुत्वंदासीइवनित्यंकौशल्यांपरिचरिष्यसि) पुनः तुम दासी सम नित्यही कौशल्याकी सेवाकरोगी (यत्सपत्न्याःपराभवःततःअपिमरणंश्रेयो) जोसउतिनतेहारिकै रहनापरा ताते निश्चय करि मरिजानेही में कल्याण है ६३ (अतःशीघ्रंभरतस्यअभिषेचने अद्ययतस्व

इसकारण शीघ्रही भरतके राज्याभिषेक होने को आजुही यत्नकरौ (नवचपंचवर्षाणिरामस्यव नवासार्यः) नउ पुनः पंच अर्थात् चौदह वर्ष रामको वनवास होने अर्थ यत्नकरौ अर्थात् कैकेयी प्रति मन्थरा कहत कि रामके अनुगामी लक्ष्मण हैं याते राज्य सुखको भागभी प्राप्त होई ताते सुमित्राको पूर्ववत् सुख प्राप्तही यामें संशय नहीं अरु जो राम राजाभये तिनके आगे भरत यातौ सेवकाई करेंगे तौ घरमें रहने पावेंगे नाहींतौ नगरते बाहर करिदिये जायेंगे कितौ थोरेही दिनमें प्राणन करिके रहित होइगे भाव जो बराबरी करेंगे तो थोरेही दिनोंमें मारिदारेजायेंगे पुनः हे कैकेयी तुम दासी की समान नित्यही कौगल्याकी सेवा करौगी तब रहने पावोगी ताते जो सउतिन के तावेदार रहना परा तौ निश्चय मरिजानेहींमें कल्याण है शत्रुवशरहि जीवन वृथाहै इस कारण शीघ्रही भरतके राज्याभिषेक होनेकी आजुही यत्न करो पुनः चौदह वर्ष रामको वनवास होनेकी यत्न आजुही करो भाव रामके रहे उपद्रो ठाढ़ होई अरु जो चौदह वर्ष वनमें रहेंगे तबतक भरत देशकोश मंत्री मित्र सेनासेनपस्वाधीन करिलेंइगे ६४ ॥

ततोरूढोभवेत्पुत्रःतव राज्ञिभविष्यति ॥ उपायं ते प्रवक्ष्यामिपूर्वमेवसुनिश्चितम् ५ पुरादेवासुरेयुद्धेराजादशरथःस्वयम् ॥ इन्द्रेणयाचितोधन्वीसहायार्थमहारथः ६६ जगामसेनयासार्द्धत्वयासहशुभानने ॥ युद्धप्रकुर्वतस्तस्यराक्षसैःसहधन्विनः ६७ तदाक्षकीलोन्यपतच्छिन्नस्तरयनवेदसः ॥ त्वंतुहस्तंसमावेश्यकीलरध्रेतिर्धैर्यतः ६८ ॥

(ततःअरूढ भवेत्तवपुत्रःराज्ञिभविष्यति) तव राज पदपर आरूढ़ रहेते तुम्हारे पुत्रकी राज्य पुष्ट होई (तेउपायंप्रवक्ष्यामिपूर्वमेवसुनिश्चितम्) तुमते उपाय में कहतीहों जो पूर्वहींते निश्चय करिके सुन्दरि निश्चिन्त बनी तयारहै सो सुनिये ६५ (पुरादेवासुरेयुद्धेसहायार्थइन्द्रेणयाचितः) पूर्वकालमें देवासुर संग्राम विषे अपनी सहायता हेतु महाराजते इन्द्रने याचना किया बुलाये तब (महारथःधन्वीराजादशरथःस्वयम् ६६ जगाम) महारथी धनुष धारी राजा दशरथ आपु जातेभये कौन भांति (शुभाननेत्वयासहसेनयासार्द्ध) हे सुमुखी तुम सहित सेनासहित गये (तस्यराक्षसैः सहधन्विनःयुद्धंप्रकुर्वतः) तिन राक्षसन करिके सहित धनुषारी महाराज युद्धकरते भये ६७ (तदा अक्षकीलःछिन्नःन्यपतत्तस्यसःनवेद) ता समय रथके धुराकी कील खियायकै गिरिपरी ताको सो राजा दशरथ नहीं जाने पाये (त्वंतुहस्तंसमावेश्य) पुनः तुम बड़े धैर्यते कील के छिद्रमें अपना हाथ प्रवेश करिदिया अर्थात् कैकेयी प्रति मन्थरा कहत कि जो चौदह वर्ष राम वनमें रहें तब अकंटक राज्य पदपर आरूढ़ रहेते तुम्हारे पुत्रकी राज्य पुष्ट हवेजाई ताते रामको वनभरत को राज्य येदोऊ हवैजानेकी उपाय जो निश्चय करिके निश्चिन्त सुन्दरि पूर्वहींते बनी तयारहै सो तुम प्रति में कहतीहों सुनिये पूर्वकालमें देवता दैत्योंके युद्धमें इन्द्रने दशरथ महाराजते सहायता मांगी तब सेना लैके तुमको संग लिहै महारथी धनुषारी महाराज दशरथ आपही जातेभये तहां धनुषवाणादि अस्त्र धारण कि हे महाराज तुम सहित रथपर आरूढ़ राक्षसनके साथ युद्ध करने लगे ता समय रथके धुराकी कील जो चक्रके बाहर रहतीहै सो पूर्वते खियाय ढीलिपरिगई रहै सो गिरि परी ताको महाराजने नहीं जाना अरु तुम अत्यन्त धैर्यकरि कीलवाले धुराके छिद्रमें अपना हाथ प्रवेश करिदियो ताके आधार चक्र धँभा ६८ ॥

स्थितवत्यसितापांगीपतिप्राणपरीप्सया ॥ ततोहत्वाऽसुरान्सर्वान्ददर्शत्वामरिं
दमः ६६ आश्चर्यं परमं लेभेत्वामालिङ्ग्यमुदान्वितः ॥ वृणीष्वयत्ते मनसि वाञ्छि
तं वरदोऽस्म्यहम् ७० वरद्वयं वृणीष्वत्वमेवं राजा वदस्व यम् ॥ त्वयोक्तो वरदो राज
न्यदिदत्तं वरद्वयम् ७१ त्वय्येव तिष्ठतु चिरं न्यासभूतं ममानघ ॥ यदामेऽवस
रो भूयात्तदा देहि वरद्वयम् ७२ ॥

(हे असितअपांगीपतिप्राणपरीप्सयास्थितवति) हे श्यामनयनी अपने पतिके प्राणोंकी रक्षा हेत
धुराके छिद्रमें हाथ डारे स्थित रही (ततः असुरान्सर्वान्हत्वा अरिंदमःत्वांददर्श) तब असुरनको सबको
मारि शत्रुनको नाश करनेवाले महाराज तुमहिं देखते भये ६६ (परमं आश्चर्यं लेभेमुदान्वितःत्वां आ
लिङ्ग्य) छिद्रमें हाथ डारे देखि परम आश्चर्य मानि आनन्दसहित तुमहिं हृदयमें लगाय बोले (च-
स्म्यह्वाञ्छितं वरदः यत्ते मनसि वृणीष्व) मैं तोको मनभावत वर देउंगो जो तेरे मनभावै सो मांगु ७० (त्वं
द्वयं वरं वृणीष्व एवं राजा स्वयं अवदत्) तुम दुइ वर मांगौ इस भांति महाराज आपही कहे (त्वया उक्तः हे
राजन्यदिद्वयं वरदत्तं वरदः) तुमने कहा हे महाराज जो दुइ वर देनेके वरदायक हौ ७१ (हे अनघम
मन्यासभूतं त्वयि एव चिरं तिष्ठतु) हे निःपाप भरे वरो हरि धरे हुये आपके पास बहुतकाल रहेंगे (मेय
दा अवसरो भूयात्तदा वरद्वयं देहि) मोको जब अवसर होई तब वर दोऊ दिहेउ अर्थात् कैकेयी प्रति
मंथरा कहत कि हे श्यामनयनी तुम अपने पतिके प्राण बचाइवे हेत धुराके छिद्रमें हाथ डारे स्थित
रही तब सब असुरनको मारि दशरथ महाराज तुमहिं देखे धुराछिद्रमें हाथ डारे देखि परम आश्चर्य
माने भाव स्त्रीमें ऐसा धैर्य साहस जो रणसंकटमें सहायता दिये इति विचारि प्रसन्न हैं तुमहिं हृ-
दयमें लगाय बोले कि हम तुमहिं मनभावत वर देइंगे जो तुम्हारे मनभावै सो दो वर मांगौ इस
भांति महाराज आपही कहे तब तुमने कहा कि हे राजन् जो दुइ वर देनेके वरदायक हौ तो हे निःपाप
भरे धरो हरि धरे हुये आपके पास बहुतकाल रहेंगे भाव जबतक मैं न मांगौ तबतक थाती राखेरहिये
जब मोको अवसर होई भाव जब मेरा कार्य लगी तब मांगौगी तब दोऊ वरदान दीजिये ७२ ॥

तथेत्युक्त्वा स्वयं राजा मन्दिरं ब्रजसुब्रते ॥ त्वत्तः श्रुतं मया पूर्वमिदानीं स्मृतिराग
मत् ७३ अतः शीघ्रं प्रविश्याद्यक्रोधागारं रूपां न्विता ॥ विमुच्य सर्वभरणं सर्वतो
पिविकीर्य च ७४ भमावेव शयानात् त्वं तूष्णीमातिष्ठ भामिनी ॥ यावत्सत्यं प्रतिज्ञाय
राजाऽभीष्टं करोति ते ७५ श्रुत्वा त्रिवक्रयोक्तं तत्तदा केकयनं दिनी ॥ तथ्यमेवाखिलं
मेनेदुःसंगाहितविभ्रमा ७६ ॥

(सुब्रते मंदिरं ब्रजतथा इति राजा स्वयं उक्त्वा) तुम्हारे बचन सुनि महाराज बोले हे शुभव्रत धारण
करनेवाली अब मंदिरहि चलो जैसा कह्यो है तैसा ही होई इस भांति राजा आपही कहे यह इति-
हास (पूर्वत्वत्तः मया श्रुतं इदानीं स्मृतिरागतम्) पूर्वकालमें तुमहीते मैंने सुना रहै सोई यासमय मो
को सुधि आइ गई ७३ (अतः रूपां न्विता अद्य शीघ्रं क्रोधागारं प्रविश्य) इससे क्रोधयुत आजु शीघ्र ही
कोपभवनमें पैठो (सर्वाभरणं विमुच्य च सर्वतः अपि विकीर्य) सब आभूषण उतारि पुनः सब भांति नि-
श्चय करि कुरु है ७४ (त्वं भूमौ एव शयानात् भामिनी तूष्णीमातिष्ठ) तुम भूमिपै निश्चय करि शयन
कहिहउ पुनः हे भामिनी मौन परी रह्यो कबतक (यावत् राजा सत्यं प्रतिज्ञायते अभीष्टं करोति) जबतक

महाराज सत्य प्रतिज्ञा करि तेरे मनोरथको पूर्ण न करें ७५ (त्रिवक्रयाउक्ततत्तुभ्रुत्वातदाकैकेयनंदिनी)
 तीनि शंगनकी कुवरीके कहे वचन तिनहि सुनि तब कैकेयी (अखिलं एव तथ्यमेनेदुः संगग्रहितविभ्र
 मा) सब बातोंको निश्चय करि सत्य मानिलिये यह कुसंगको प्रभाव है जो ग्रहितको विभ्रम वश है हित
 माने अर्थात् कैकेयी प्रति संभरा कहत कि तुम्हारे वचन सुनि महाराज बोले कि हे सुव्रते जैसा क-
 ह्यो है तैसाही छोड़ भाव दोऊवर धार्ती हैं जब चह्यो तब मांगिलिह्यो यह वचन राजा आपही कहे
 यह इतिहास पूर्वकालमें तुम्हारेही मुखते मने सुनारहै सोई या समयमें मोको सुधि आइगई इस
 से क्रोध सहित आजुही की राति शीघ्रही कोपभवन में पैठी भावप्रातहोतही रामको राज्याभिषेक
 ह्वैजाई तब कृत्तु न बनिपरी ताते अथही कोपभवन में जाउ सब भूषण वसन उत्तारि मलिन
 वसन पहिरि गिर उयागि बिना धिछोना भूमिपे शयन किहे मौनह्वै तबत रु परीरह्यो जबतक म-
 हाराज सत्य प्रतिज्ञा करि तुम्हारे मनोरथ जो पूरा न करें इत्यादि कुवरीने कहा तिनको सुनि तब
 कैकेयीने सब सत्य मानिलिया यह कुसंगको प्रभाव है कि विभ्रम वशत ग्रहितको हितमाने ७६ ॥

तामाहकैकेयीदुष्टाकुनस्तबुद्धिर्गदृशी ॥ एवंत्याबुद्धिसम्पन्नां न जाने वक्रसुन्दरि ७७
 भरनोयदिराजासे भविष्यति सुतः प्रियः ॥ ग्रामान् शतम्प्रदास्यामि मम त्वं प्राणव-
 त्तमा ७८ इत्युक्त्वा कोपभवनं प्रविश्य न हसारुपा ॥ विमुच्य सर्वाभरणं परिकीर्य
 समंततः ॥ भूमौ शयाना मलिना मलिना मन्वरधारिणी ७९ प्रोवाच कुब्जे मन्त्रेण
 वद्रामो वनं व्रजेत् ॥ प्राणांस्त्यक्ष्येऽथवा वक्रेशयिष्ये तावदेव हि ८० ॥

(तां दुष्टा कैकेयीमाह ईदृशी बुद्धिः तेकुतः) त्यहि संभरा प्रति दुष्टा कैकेयी बोली है संभरा इस
 प्रकार की बुद्धि तेरे कहां ते भई (वक्रसुन्दरीत्यां एवं बुद्धितम्पन्नां न जाने) हे कुवरी सुन्दरी तोहि
 ऐसी बुद्धिवन्त में नहीं जानती रहों ७७ (मे प्रियसुतः भरत यदि राजा भविष्यति) मेरे प्रियपुत्र
 भरत जो राजा होयेंगे तौ तोको (शतं ग्रामान् प्रदास्यामि त्वं मम प्राणवत्तमा) सौ गांव देउँगी तू
 मोको प्राणसम प्रिया है ७८ (इति उक्त्वा रुपा सट्टता कोपभवनं प्रविश्य) ऐसा कहि क्रोधित ह्वै
 तुरतही कोपभवन में गई (सर्वाभरणं विमुच्य समंततः परिकीर्य) सर्वांग भूषण वसन उत्तारि स-
 न्पूर्ण कुरूपता वनाय (मलिना मन्वर धारिणी मलिना भूमौ शयाना) मैले वस्त्र पहिरि मैली ह्वै
 भूमि में पड़ुही ७९ (प्रोवाच कुब्जे मन्त्रेण शयित्वा वनं व्रजेत्) कैकेयी बोली है कुब्जे मेरे वचन
 सुन जबतक राम वनहि न जायेंगे (तावत् एव हि शयिष्ये अथवा वक्रप्राणांस्त्यक्ष्ये) तबतक निश्चय
 करि भूमिपे परी रहोंगी अथवा हे कुवरी प्राणें त्यागोंगी अर्थात् त्यहि मन्थरा प्रति दुष्टा कैकेयी बोली
 है संभरे इत प्रकार आगम जानिलेनेवाली बुद्धि तेरे कहां ते भई हे कुविज्ञा सुन्दरी तोहि ऐसी बुद्धि-
 वन्त में नहीं जानती रहों प्रिय मेरे प्रिय पुत्र भरत जो राज्य पदपर आरूढ़ होईंगे तब तोको सौ
 गांव माफी देउँगी काहेते हे संभरा तू मोको प्राणसम प्रिय है ऐसा कहि कैकेयी क्रोधित ह्वै तुरतही
 कोपभवनमें गई सर्वांगके भूषण वसन उत्तारि टारिदिया केश छोरि अंजन सिंदूर पोछि देहमें
 धूरि लगाय सर्वांग कुरूपता वनाय इति मैलीह्वै मैले वस्त्र पहिरि भूमिपे परी पुनः कैकेयी बोली है
 कुब्जे मेरे हृदय वचन सुन अब जबतक मुनि वेष वनाय राम वनवासको न जायेंगे तबतक इसी
 प्रकार भूतलमें परीरहोंगी अथवा हे कुब्जे जो मेरा मनोरथ न भया तो प्राणें त्यागि देउँगी भाव बिना
 वरदानपायें गिरिभीति काहूके समुझाये न मानोंगी इति पुष्टजानु ८० ॥

निश्चयंकुरु कल्याणिकल्याणं ते भविष्यति ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ कुब्जागृहं साऽपि
तथाकरोत् ८१ धीरोत्यन्तदयान्वितोऽपि सुगुणाचाराण्वितो वाऽथवा नीतिज्ञो
विधिवाददेशिकपरो विद्याविवेकोऽथवा दुष्टानामतिपापभावि तदधियांसंगं सदा चे
द्भजेत् तद्बुद्ध्या परिभावितो ब्रजति तत्साम्यं क्रमेण स्फुटम् ८२ ॥

(कल्याणि निश्चयंकुरु ते कल्याणं भविष्यति) हे कल्याणि निश्चय कोपकरु इसीमें तेरा कल्याण
होयगो (इति उक्त्वा कुब्जागृहं ययौ सा तथा अपि अकरोत्) ऐसा कहि कुवरी घरको गई अरु सो
कैकेयी तैसेही निश्चय करि करती भई ८१ (धीरः अत्यन्त दयान्वितः) धीर्यवन्त अत्यन्त दयासहित
होइ (अपि गुणाः वा आचाराण्वितः) निश्चय करि शीलादि गुण होइ वा वर्णाश्रमके धर्म कर्म परिपूर्ण
आरूढ रहनेवाला (नीतिज्ञः अथवा विधिवाददेशिकपरो) नीति जाननेवाला अथवा शास्त्र जानने
वाला तथा गुरुभक्त (अथवा विद्याविवेकः) अथवा सब विद्यापढ़े सारासारको जाननेवाला ऐसेह
जन हवै कै जो (अतिपापभावि तदधियांसंगं चेत् सदा भजेत्) अत्यन्त पाप मिलीहुई बुद्धि
जिनकी ऐसे दुष्टनको संग जो सदा सेवन करै तो (तत्परिभावितः बुद्ध्या क्रमेण स्फुटम् तत्साम्यं
ब्रजति) तिन सुमार्गिनकी उत्तम संस्कार मिली भी बुद्धि क्रम करिकै धीरा धीरा पुष्ट तिन
दुष्टनैकी समान हवैजातीहै अर्थात् समुभाय पुष्ट करि कोपभवनमें पठै पुनः कैकेयी प्रति मंथरा
कहत हे कल्याण स्वरूपे निश्चय हठकरु इसी में तेरा कल्याण होयगो ऐसा कहि घरको गई अरु
जैसे मंथरा कहा तैसेही कैकेयी करती भई इस कुसंगको प्रभाव शिवजी कहत हे गिरिजाधीर
यथा भगवद्गुणदर्पणे ॥ वेगेनावध्यमाने त्वं मिते कामक्रोधयोः । गदितं धीमता धैर्यं बलेभूयसि ते-
जसि ॥ अर्थात् कामक्रोधादिको वेग मनमें न व्यापै तथा हानि वियोग शूल शत्रु संघादि संकटको
वेगमनमें न व्यापै ताको धैर्य कही इति धैर्यवन्त पुनः दया दयावताज्ञेयं स्वार्थं यत्र न कारणम् अर्थात्
वे स्वारथ जीवनकी रक्षा करना सोई दयाहै इति अत्यन्त दया युत होइ पुनः शीलक्षमा शांति संतोष
सौलभ्य उदारतादि निश्चय करिकै जामें अनेक गुण होय अथवा अपने वर्णाश्रमके धर्म कर्मनपर
सदा तत्पर होइ पुनः नीतिलोकमत वेदमत साधुमत इनकी अनुकूल कार्यकरना इति नीति जान
नेवाला अथवा शास्त्र जाननेवाला भाव धर्म शास्त्रमें प्रवीण तथा गुरुभक्त अथवा व्याकरणादि सब
विद्या पढ़े सारासार जाननेवाला ऐसाहूजन हवै कै जो अत्यन्त पापनकी सानीहुई बुद्धि जिनकी
ऐसे दुष्टनको संग जो सदा सेवन करै भावलगे बैठे उनकी बातें सदा सुना करै तो तिन सुमार्गिन
की नीति धर्म धैर्य विद्या विवेक दयादि उत्तम संस्कार मिली भी बुद्धि क्रम करिकै धीरा धीरा वदत
संतें कछु कालमें तिन दुष्टनैकी ऐसी पापमय पुष्टबुद्धि हवैजातीहै ८२ ॥

अतः संगः परित्याज्यो दुष्टानां सर्वदैवहि ॥ दुःसंगीच्यवते स्वार्थाद्यथेयं राजकन्यका ८३ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे अयोध्याकाण्डे द्वितीयः सर्गः २ ॥

(अतः दुष्टानांसंगः सर्वदा एव रिपिरित्याज्यः) इस कारणते दुष्टनको संग सर्वकालमें निश्चय
करिकै परि त्यागकीजे काहेते (दुःसंगः स्वार्थात् च्यवते यथा इयं राजकन्यका) दुस्संग के प्रभावते सु-
जनभी अपने परमारथ पथते च्युत होते हैं यथा यह राजकन्या दुष्ट भई अर्थात् शिवजी कहते हैं हे
गिरिजा कैसेहू उत्तम जन होइ जो दुष्टन को संग करै तो सोभी दुष्टवत हवै जाय इस कारण सर्व

समय निश्चयकरि दुष्टनको संगत्यागेरहै भाव न उनके लगे बैठै न उनकी वार्त्ता सुनै न उनते आपना हित कहै काहेत दुःसंग के प्रभावते सुजन भी अपने परमारथ पथते गिरि दुष्टवत् ह्वै जाते हैं यथा केकय राजकन्या कैकेयी शीलवन्त सहज सुभाव कुलवन्ती उत्तम पतिव्रता सोऊ मंथरा दुष्टा के संगते दुष्टा ह्वै गई ८३ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतबैजनाधिविरचिते अध्यात्मभूषणे अयोध्या काण्डेशारदाप्रेरितमन्थराउपदेशात्कैकेयीकोपभवनप्राप्तवर्णनो नाम द्वितीयः प्रकाशः २ ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ ततो दशरथो राजारामाभ्युदयकारणात् ॥ आदिश्य मंत्रिप्रकृतीः सानन्दो गृहमाविशत् १ तत्रादृष्ट्वा प्रियां राजा किमेतदिति विक्लः ॥ यापुरामं दिरंतस्याः प्रविष्टे मायि शोभना २ हसंती मां मुपायाति सार्किनैवाद्यदृश्यते ॥ इत्यात्मन्येव संचिंत्य मनसाऽतिविदूयता ३ ॥

सवैया ॥ नृपसों वर केकयि मांगि लिये यूवराज करौ ममनन्दनको । बनवास करैं तिमि राघव सो सुनि शोक भयो दशस्यन्दनको ॥ प्रभु आय पितै समुझाय पुनः गमने जननीपद बन्दनको । कृतबन्धन बैजसुनाथ सदा सिय सानुज श्रीरघुनन्दनको १ (ततः राजा दशरथः रामाभि उदयकारणात् मंत्रिप्रकृती आदिश्य सानन्दः गृहमाविशत्) तदनन्तर राजा दशरथ महाराज रघुनन्दनके विभव उदय होने कारण ते सुमंत्रादि सब मंत्रिनको तथा सब प्रजा लोगनको यथायोग्य कार्य करिबेको आज्ञा दैकै सहित सानन्द कैकेयीके मंदिरमें पैठे १ (तत्र राजा प्रियां अदृष्ट्वा एतत् किं इति विह्वलः) तहां राजा अपनी प्रिया जो कैकेयी ताहि सन्मुख न देखे तब विचारे कि यह क्या कारण है इति विचारि शोचते, विकल ह्वै पुनः विचारने लगे (तस्यामं दिरं मयि प्रविष्टे मायि शोभना पुरा) ताके मंदिरमें मेरे पैठत संते जो शोभामय पूर्बहीं आगे आवती रहै २ (हसंती मां मुपायाति सार्किनैवाद्यदृश्यते) हंसत मेरे समीप आवती रहै सो आजु निश्चय करिकै काहे नहीं देखि परती है (इति आत्मनि एव संचिंत्य मनसा अतिविदूयता) ऐसा आत्माविषे निश्चय चिंतवन करि मन अत्यंत संतप्त भया अर्थात् रघुनन्दनके राज्याभिषेक में विभव साजके व्यापार करनेको मंत्री पुरवासिनको आज्ञा दै प्रसन्न कैकेयी के मंदिरको गये भीतर पैठत हों प्रियपत्नी कैकेयीको न देखे तैसेही शंका करिकै विकल ह्वै गये कि यह क्या कारण है कि जब मैं इसके मंदिरको आवतार हों द्वारमें पैठत ही सर्वांग शृंगार कीन्हे शोभामय पूर्बहीं आय हैं सिकै मेरे को मिलती रहै सो आजु निश्चय करिकै काहे नहीं देखि परती है इत्यादि आत्माविषे निश्चय चिंतवन करि भाव मंगल काजमें जो उदासीनता है तौ कराल बाधा है तौ ईश्वर कैसे कुशल निवाही इत्यादि चिंतवन करि मनमें महासंताप भया ३ ॥

पप्रच्छ दासीनिकरंकुतो वः स्वामिनी शुभा ॥ नयाति मां यथा पूर्वं मत्प्रिया प्रियदर्शना ४ ता ऊचुः क्रोधभवनं प्रविष्टानैव विद्महे ॥ कारणं तत्र देवत्वंगत्वा निश्चेतुमर्हसि ५ इत्युक्तो भयसंत्रस्तो राजा तस्याः समीपगः ॥ उपविश्य शनैर्देहं स्पृशन् पाणिना व्रवीत् ६ किशेषे वसुधा पृष्ठे पर्यङ्कादीन् विहाय च ॥ मां त्वं खेदयसे भीरुयतो मां न विभाषसे ७ ॥

(दासीनिकरंपप्रच्छवःस्वामिनीशुभाकुतः) दासी जो समूह हैं तिनते महाराज पूछे कि तुम्हारी स्वामिनी मंगलीक कहाँ हैं (प्रियदर्शनामत्प्रियापूर्वयथामानआयाति) प्रिय है दर्शन जाको सो मेरी प्रिया पूर्व जैसे मेरे पास आवती रहै तैसे नहीं आई तो कौन कारण है अर्थात् जब कैकेयीको न देखे तब जो दासी समूह रहै तिनते महाराज पूछे कि आजु तुम्हारी स्वामिनी मंगल मूर्ति कहाँ हैं जो देखतहीं प्रिय लागत सो मेरी प्राण प्रिया पूर्व सदा जैसे मेरे पासको आवती रहै तैसे या समय नहीं आई तो कौन कारण है सो कहौ ४ (ताःऊचुःक्रोधभवनंप्रविष्टाकारणंएवविद्वहे) तौनी सब दासी बोलौ कि कोपभवनमें प्रवेश भई हैं ताको कारण निश्चय करिहम नहीं जानतीहैं (देवतत्र गत्वात्वंनिश्चेतुमर्हसि) हे देव तहां जाइये कारण निश्चय करिबेको आपही समर्थहौ ५ (इति उक्तःभयसंत्रस्तः) इत्यादि दासियोंने कहा तब भयकरिकै अधीर (राजातस्यसर्मापिगः) महाराज त्यहि कैकेयीके पास गये (उपविश्यपाणिनाशनैःदेहंस्पृशन्अब्रवीत्) तहां बैठि हाथ करिकै धीरे ता की देह छुइ महाराज बोलते भये ६ (पर्येकआदीनविहायचऽसुधापृष्ठेकिंशेषे) पलंगादि बिछौना त्यागि पुनः भूमिपर काहे पौढीहौ (भीरुत्वंमांखेदयसेयतःमानवभाषसे) हे भीरु तू मोहिं खेद करावती है जो मोहिं प्रति प्रसन्नहवै बोलती नहीं है अर्थात् जब महाराज पूछे तब दासी गण बोलौ कि रानीजी कोपभवनमें गई हैं परन्तु याको कारण निश्चय करि हम नहीं जानतीहैं हे महाराज उहां जाइये कोपको कारण निश्चय करि जानबेको आपही योग्यहौ इति दासियोंने कहा तैसे डरकरिकै अधीर महाराज त्यहि कैकेयीके पास जाय बैठि हाथन करिकै धीराते ताकी देह पकरि महाराज बोले कि तकिधा तोसक पलंगादि त्यागि क्यों भूमिपर परीहौ हे भीरुभाव तेरासडर स्वभाव रहै अब तूसक्रोधित हवै मोको खेदमानसी दुःख करावती है जो प्रसन्न मन मोसों बोलती नहींहै ७ ॥

अलंकारंपरित्यज्यभूमौमलिनवाससा ॥ किमर्थंब्रूहिसंकलंविधास्येतववाञ्छितम् ८ कोवातवाहितंकर्तानारीवापुरुषोऽपिवा ॥ समैदण्ड्यश्चवध्यश्चभविष्यति नसंशयः ९ ब्रूहिदेवियथाप्रीतिस्तदवश्यंममाग्रतः ॥ तदिदानींसाधयिष्येसुदुर्लभमपिक्षणात् १० जानासित्वंममस्वान्तंप्रियेमांस्ववशेस्थितम् ॥ तथापिमांखेदयसेवृथातवपरिश्रमः ११ ब्रूहिकंधनिनंकुर्यान्दरिद्रंतेप्रियंकरम् ॥ धनिनंक्षणमात्रेणनिर्द्धनंचतवाहितम् १२ ब्रूहिकंवावधिष्यामिवधाहोवाविमोक्ष्यसे ॥ किमत्रेबहुनोक्तेनंप्राणान्दास्यामितेप्रिये १३ ॥

(अलंकारंपरित्यज्यमलिनवाससाभूमौकिंमर्थंसंकलंब्रूहितववाञ्छितमविधास्ये) कैकेयी प्रति महाराज कहत हे प्रिया भूषण बसन परित्याग करि मल्लौन बसन सहित भूमि बिषे कौने कार्य अर्थ परीहौ सो सब हाल कहौ तुम्हारा मनोर्थ पूर्ण करिहौ ८ (तवअहितंकर्त्ताकःवानारीवापिपुरुषःवासमेदण्ड्यःचवध्यःचभविष्यतिसंशयःन) हे प्रियातेरा अहित करनेवाला कौन वहहै चहै नारिहोइ अथ वा निश्चय करिकै पुरुषहोय सो मेरेदण्डमें परी बावाकी मृत्यु होई यामें संशय नहीं है सत्य जानु ९ (देवियथाप्रीतिःतत्तुममग्रतः अवश्यंब्रूहिदुर्लभंअपितत्तदिदानींक्षणात्साधयिष्ये) हे देवि जैसी तेरी रुचि होई तौन बात हमारे आगे अवश्य कहु जो निश्चय करि दुर्लभभी बस्तु होई तौन अबहीं क्षण भरेमें कार्य पूरा करिसकाहौ १० (प्रियेमांस्ववशेस्थितममस्वअन्तत्वंजानासितथापिमांखेदयसेतवपरिश्रमःवृथा) हे प्रिये मोहिं अपनी बशकरि राखे मेरेआपने अन्तरकी अभिप्राय जानती है

कि मैं तेरेही बशहों ताहूँ पर मोहिं खेद करावती है तौ तेरा परिश्रम करना मिथ्याहै भाव आपना मनोरथ क्यों न कहै ११ (ब्रूहितेप्रियंकरमूकंदरिद्रंयनिनंकुर्यात्तवमहितंधनिनक्षणमात्रेणनिर्द्धनं) कहु तेरे हितकार कौने दरिद्रीको धनी करिदेंउ कहु तेरे अहित करनेवाले कौने धनीको क्षणमात्रमें निर्द्धन करिदेंउ १२ (वात्रूहिकंवाधिष्यामिवावधारहःविमोक्ष्यसेअत्रवहुनाउत्तेनकिंप्रियेप्राणंतेदास्यामि) अथवा कहु किसको बध करौं अथवा जो बध करबे योग्य होय ताको कहु छाहिदेंउ इहां बहुत कहने ते क्याहै हेप्रिये परमप्यारे जो आपने प्राणहैं सोभी तेरेअर्थ दैसकाहौं १३ ॥

ममप्राणात्प्रियतरोरामोराजीवलोचनः ॥ तस्योपरिशपेब्रूहित्वद्धितंतत्करोम्यहम् १४ इतिब्रूवाणंराजानंशपन्तंराघवोपरि ॥ शनैर्विमृज्यनेत्रेसाराजानप्रत्यभाषत १५ यदिसत्यप्रतिज्ञोसिशपथंकुरुषेयदि ॥ याच्जामेसफलीकर्तुंशीघ्रमेवत्वमर्हसि १६ पूर्वदेवासुरेयुद्धेमयात्वंपरिरक्षितः ॥ तदावरद्वयंदत्तत्वयामेतुष्टचेतसा १७ तद्द्वयंन्यासभूतमेस्थापितंत्वयिसुव्रत ॥ तत्रैकेनवरेणाशुभरतंमेप्रियंसुतम् १८ एभिःसम्भूतसम्भारैर्योवराज्येऽभिषेचय ॥ अपरेणवरेणाशुरामोगच्छतुदण्डकान् १९ ॥

(ममप्राणात्प्रियतरःराजीवलोचनःरामःतस्यउपरिशपेब्रूहित्वद्धितंतत्करोमि) मेरे प्राणते अधिक प्रिय कमलनयन रामहैं तिनके ऊपर शपथ करताहौं हे प्रिये कहु जामें तेरा -हितहोइ तौन मैंकरौं १४ (राघवःउपरिशपंतंइतिराजानंब्रूवाणंसाशनैःनेत्रेविमृज्यराजानंप्रतिभाषत) रघुनंदनके ऊपर शपथहै इत्यादि राजा कहे तव सो कैकेयी धीरा धीरा नेत्रमें आंशुपोछि राजा प्रति बोलती भई १५ (यदिसत्यप्रतिज्ञोसिशपथंकुरुषेमेयाच्जामेसफलीकर्तुंत्वमर्हसि) कैकेयी बोली हेमहाराज जो सत्यप्रतिज्ञहौ जो रामकी शपथ करतेहौ तौ मेरे मांगनको शीघ्रही निश्चय करि कै सफल करिबेको आप योग्यहौ १६ (पूर्वदेवासुरेयुद्धेत्वंमयापरिरक्षितःतदातुष्टचेतसात्वयावरद्वयंमेदत्तं) पूर्व समय देवता दैत्योंके युद्धमें आपकी मैंने रक्षा कीन्ही भावकठिन युद्धसमय रथके धुराकी कील गिरि गई आपने नहींजाना अरु मैंउस छेदमेंहाथडारे रही सोदेखि प्रसन्नचित्त सहित आपनेवरद्वय मोको दिया १७ (तद्द्वयंमेस्थापितं त्वयिन्यासभूतं हेसुव्रत तत्रएकेनवरेण मे प्रियंसुतं भरतं आशु) तौनिबर दोउ मेरे धरो हरि धरेहुये आपकेपास थातीहैं हेसुधर्मव्रतधारी तामें एक वरदान करिकै मेरे प्रियपुत्र जो भरत हैं ताहि शीघ्रही १८ (सम्भूतसम्भारैःएभिःराज्यःअभिषेचय अपरेणवरेण रामःआशुदण्डकान् गच्छतु) रामराज्यहित उपार्जन किईहुई जो सब सामग्री है इसी करिकै, मेरेपुत्रको युवरानपदपर राज्याभिषेक करौ तथा अपर दूसरे वरदान करिकै राम शीघ्रही भाव प्राप्त होतहीं दण्डकवन जो है तहां को गमन करें कौनभांति सो आचरण आगे कहतीहै १९ ॥

मुनिवेषधरःश्रीमान्जटावलकलभूषणः ॥ चतुर्दशसमास्तत्रकंदमूलफलाशनः २० पुनरायातुतस्यांतेवनेवातिष्ठतुस्वयम् ॥ प्रभातेगच्छतुवनंरामोराजीवलोचनः २१ यदिकिंचिद्विलंबेतप्राणांस्त्यक्ष्येतवाग्रतः ॥ भवसत्यप्रतिज्ञस्त्वमेतदेवमप्रियम् २२ श्रुत्वैतद्वारुणंवाक्यंकैकेय्यारोमहर्षणम् ॥ निपपातमहीपालोवज्राहतइवाचलः २३ शनैरुन्मील्यनयनेविमृज्यपरयाभिया ॥ दुस्स्वप्नोवामयादृष्टो

अथवाचित्तविभ्रमः २४ इत्यालोक्यपुरःपत्नीव्याघ्रीमिवपुरःस्थितां ॥ किमिदं
भाषसेभद्रेममप्राणहरंवचः २५ ॥

(श्रीमान्जटावलकलभूषणःसुनिवेषधरःतत्रचतुर्दशसमाःकंदमूलफलभक्षणः) श्रीमान् जोरामसो शीशमें जटा वृक्षके बकला इत्यादि बसन तनमें भूपितकरि इस भांति सुनिको ऐसो वेष धरि तहां दण्डकवनमें चौदह वर्ष तक बराबरि कंदमूल फल भोजन करें २० (तस्यअंतेपुनःआयातुवास्वयं नेतिष्ठतुरामराजीवलोचनःप्रभातेवनंगच्छतु) तिस चौदह वर्षके अंतभये पुनः घरको आवहिं वा अपनी इच्छाते बनैमें बास किहेरहैं अब राम कमलभयन प्रातहोत संते बनहिं जाहिं २१ (यदिकिंचि त्विलंवेततवअग्रतःप्राणांस्त्यक्ष्येएतत्त्वमप्रियंत्वंसत्यप्रतिज्ञभव) कैकेयी कहत हेमहाराज रघुनन्दनको बनजानेमें जो नेकहू बिखंब भई तौ आपके आगे प्राणै त्यागदेवोंगी यही निश्चय करिके मोको प्रियहै ताते आप सत्य प्रतिज्ञ हूजिये भाव अपनाकहा पूराकरो २२ (रोमहर्षणंदारुणंएतत्कै केय्यावाक्यंश्रुत्वावज्राहतअचक्षःइव महीपालः निपपात) जिनकोसुनतै रोमखड़े होत ऐसे भयानक ये कैकेयी के वचन सुनि क्यादशा भई यथा इन्द्रके वज्र मारेते अपक्ष हवै पर्वत गिरे इसीभांति महाराज भूमिपैगिरे २३ (शनैःउन्मील्य नयने विमृज्यपरयासिग्रा वा दुःस्वप्नोदृष्ट्वा हि अथवाचित्त विभ्रमः) महाराज किंचिच्चैतन्यहवै धीराते पलक खेलि नेत्रमें आंशुपोछि बड़ेभय करिके विचारत किं या मैंने दुष्टस्वप्न देखा निश्चयकरि तातेसभीत हों अथवा मोको चित्तभ्रमभया ताते बढहोशहों २४ (इतिपुरःआलोक्य पत्नीव्याघ्रीइव पुरःस्थिताम् ममप्राणहरंवचःभद्रे किं इदंभाषसे) इति विचारि आगेदेखे आपनी स्त्री बाधिनी असि आगे बैठिहै तब महाराज बोले कि मेरेप्राणहरणहारे वचन हे कल्याणरूपे ऐसा क्यों कहती है कि राम वनजाहिं २५ ॥

रामःकमपराधंतेकृतवान्कमलेक्षणः॥ममाग्रेराघवगुणान्वर्णयस्यनिशंशुभान्२६
कौशल्यामांसमंपश्यन्शुश्रूषांकुरुतेसदा ॥ इतिब्रुवंतीत्वंपूर्वमिदानींभाषसेऽन्य
था २७ राज्यंगृहाणपुत्रायरामस्तिष्ठतुमंदिरे ॥ अनुगृहणीष्वमांवामेरामान्ना
स्तिभयंतव २८ इत्युक्त्वाऽश्रुपरीताक्षःपादयोर्निपपातह ॥ कैकेयीप्रत्युवाचेदं
सापिरक्तांतलोचना २९ राजेंद्रकिंत्वंआंतोऽसिउक्तंतद्भाषसेन्यथा ॥ मिथ्याकरो
षिचैत्स्वीयंभाषितंनरकंभवेत् ३० वनंगच्छेद्यदिरामचंद्रःप्रभातकालेऽजिन
चीरयुक्तः ॥ उद्वंधनंवाविषभक्षणंवाकृत्वामरिष्येपुरतस्तवाहम् ३१ ॥

(कमलेक्षणःरामःतेकिंपराधंरुतवान्अनिशंममअग्रेराघवगुणान्शुभांवर्णयसि) कमल नयन राम तेरा क्या अपराध किया दिनोराति तो तू मेरे आगे रघुनन्दनके गुण संगलीक वर्णन करती रहै २६ (मांकौशल्यांसमंपश्यन्सदाशुश्रूषांकुरुतेपूर्वत्वंइतिब्रुवंतीइदानींअन्यथाभाषसे) मोहिं राम कौशल्याकी बराबर देखतेहैं सदा मेरी सेवा करतेहैं पहिले तौ तू इसभांति कहतीरही अब औरै कछु कहतीहै भाव बनैजायँ २७ (पुत्रायराज्यंगृहाणरामःमंदिरेतिष्ठतुवामेमांअनुगृहणीष्वरामात्तवभयं नास्ति) अपने पुत्रके अर्थ राज्यले परन्तु राम मन्दिरमें रहैं हे बामे मोहिं पर अनुग्रह करु भाव अंगीकार करु अरु रामते तोको कछु भय डर नहीं है भाव तेरा कछु न बिगारैगे २८ (अश्रुपरीताक्षः इतिउक्त्वापादयोः निपपातहत्तकैकेयीरक्तांतलोचनःइदंप्रतिउवाच) आंशु बहत नेत्र इस प्रकार

आरतवचन कहि पायँन परे तब सो कैकेयी लाले नेत्र भाव सक्रोधित इसप्रकार राजासों बोली २९
(राजेंद्रत्वंकिंभ्रातःअसिउक्तंतत्अन्यथाभापसेस्वीवंभापितंचेतुमिथ्याकरोपिनरकंभवेत्) हे राजेंद्र
आपको क्या चित्त भ्रम प्राप्त भया जो पहिले कहि ताको अब कह्यु और कहतेहौ जोअपने कहेवचन
को भूँठ करोगे तौ तुमको नरक होई अरु मेरी अभिप्राय सुनिये ३० (अजिनचीरयुक्तःरामचन्द्रः
प्रभातकालेयदिवननगच्छेत्वाउद्वंधनंवाविपभक्षणंकृत्वातवपुगतःअहंमरिष्ये) मृगचर्म वसन युक्त
रामचन्द्र प्रभात होतसंते जोवनहिं न गये तौ कितौ गलवन्धन वा विप भक्षणकरि भाव फैसरीव्याधि
वाजहरखाइ तुम्हारे आगे में मरिजैहों यह सत्य जानो ३१ ॥

सत्यप्रतिज्ञोऽहमितीहलोकेविडं वसे सर्वसभांतरेषु ॥ रामोपरित्वंशपथंचकृत्वामि
धराप्रतिज्ञोनरकंप्रयाहि ३२ इत्युक्तःप्रिययादीनोमग्नेदुःखार्णवेनृपः ॥ मूर्च्छितः
पतितो भूमौविसंज्ञोमृतकोयथा ३३ एवंरात्रिर्गतातस्यदुःखात्संवत्सरोपमा ॥ अ
रुणोदयकालेतुवंदिनोगायकाजगुः ३४ निवारयित्वातान्सर्वान्कैकेयीशेषमास्थि
ता ॥ ततःप्रभातसमये मध्यकश्रमुपस्थिताः ३५ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्रपयः
कन्यकास्तथा ॥ शत्रंच चामरंदिव्यगजोवाजीतथैवच ३६ ॥

(अहंसत्यप्रतिज्ञा इतिइहलोकेसर्वसभा अंतरेषुविडंवसेचत्वंरामोपरिशपथंकृत्वामिथ्याप्रतिज्ञाःनरकं
प्रयाहि) हम सत्यप्रतिज्ञहैं भावजो कहतेहैं सोईकरतेहैं इत्यादिवचन इहिलोक विपेसवसभनकेवीचमें
विडंवना करतेरहेउभाव क्या भूठही सत्यवादी वनेरहेउहैं ताहूँपर आप रघुनंदनकेऊपरशपथकिहेउहैं
अब जो मिथ्या प्रतिज्ञाभावजो कहेउ सोई न करौंगे तो नरकहिजाउगे ३२ (प्रिययाइतिउक्तःनृपःदीनः
दुःखार्णवेमग्नेःविसंज्ञःयथायुतकःमूर्च्छितःभूमौपतितः) राम वनहिं न जैहैं तौमें प्राण त्यागिहों
इत्यादि वचन प्राणप्रिया ने कहा अरु रघुनन्दन प्राणनते अधिक प्रियदोऊ असमंजसते महाराज
दीन पुरुषार्थ हीन दुःखरूप समुद्र में बूडिगये कैसे वेसुधियथा मृतक मूर्च्छित हवै भूमिपर गिरि
परे ३३ (एवंदुःखात्तत्परात्रिःसंवत्सरउपमागतात्तुअरुणोदयकालेवंदिनःगायकःजगुः) इसीभांति
महाराजको दुःखतेतौनिराति वर्षके समानवीती सूर्य उदयकाल विपेवंदीजन विरुवावलीबोले ढाढी
कलाउतादि गायक जन गावने लगे ३४ (शेषमास्थिताकैकेयीतान्सर्वान्निवारयित्वाततःप्रभात
समयेमध्यकश्रमुपस्थिताः) क्रोधमें बसी ऐसी कैकेयी गायकादि सबको रोकि देतीभई तदनन्तर
प्रभातसमय विपे मध्यकक्षा अर्थात् जनाने मर्दाने के बीचकी अंगनाईमें सहित साज सब समाज
आय प्राप्तभई सो आगे कहत ३५ ब्राह्मण विद्यावंत क्षत्री देशीराजा लोग वैश्य महाजन लोग शूद्रपि
वशिष्ठादि कन्यापोदंशसभूपित तथा राज्याभिषेक योग्य दिव्य छत्रचामर तथागज सर्वांग सजा
हुआ हाथी तैसेही निश्चय करि सजेहुये उत्तमपोड़े ३६ ॥

अन्याश्चवारमुख्यायाःपौरजानपदास्तथा ॥ वशिष्ठेनयथाज्ञासंतत्सर्वतत्रसंस्थि
तम् ३७ स्त्रियोवालाश्चदृद्धाश्चरात्रोनिद्रानलेभिरे ॥ कदाद्रक्षामहेरामपीतकौ
शेयवाससम् ३८ सर्वाभरणसम्पन्नकिरीटकटकोज्वलम् ॥ कौस्तुभाभरणंश्या
मंकन्दर्पशतसुन्दरम् ३९ अभिषिक्तंसमायांतंगजारूढंस्मिताननम् ॥ श्वेतवस्त्रधरं
तत्रलक्ष्मणलक्षणांन्वितम् ४० रामंकदावाद्रक्ष्यामःप्रभातंवाकदाभवेत् ॥ इत्यु

त्सुकधियःसर्वेवभूवुःपुरवासिनः ४१ नेदानीमुत्थितोराजाकिमर्थंचेतिचिंतयत् ॥

सुमंत्रःशनकैःप्रायाद्यत्रराजावतिष्ठते ४२ ॥

(अन्यावारमुख्यायाःचपौरतथाजानपदाःयथावशिष्टेनअज्ञप्ततत्सर्वतत्रसंस्थितम्) औरहूँ वेश्या आदिक पुनः पुरवासी तैसे राज्यके वासी इत्यादि यथा वशिष्ठजीने आज्ञादियारहै तौन सबतहांपर प्राप्त भया ३७ (बालाःचवृद्धाःस्त्रियःचरात्रौनिद्रानलेभिरेपीतकौशेयवाससमरामंकदाद्रक्ष्यामहे) बाल तथा वृद्ध स्त्री पुरुष राति विपे नींद किसीने न लिया जागतैरहे किसहेत कि पीत रेशमी बसन धारण किहे रघुनन्दनकोकब देखेंगे भाव राज्याभिषेक देखनेकी हर्षते पुरवासी लोगनको राति भरि नींद नहीं परी ३८ (किरीटकटकोज्वलमसर्वआभरणसम्पन्नकौस्तुभआभरणद्रयामंशतकंदर्पसुंदरम्) किरीट कुंडल हार केयूर कड़ा मुद्रिकादि स्वर्ण हीरादि जटित उज्ज्वले भूषणों तेसर्वांग भूषित कौस्तुभ मणि भूषण कंठमें भूषित श्याम तन सैकड़ों कामसम सुन्दर ३९ (अभिषिक्तंसंआयातंस्मितानन मृगजारूढंलक्षणांनवितमूलक्षमणसुतत्रदेवतछत्र धरम्) अभिषेक भये पीछे आवते हैं मंद मुसुकानि युत प्रसन्न मुख सजे हाथीपर चढ़े उत्तम लक्षण युत लक्ष्मणजी तहाँ उज्ज्वल दिव्य छत्र धारण किहेहैं ४० (प्रभातंवाकदाभवेत्त्रामंकदावाद्रक्ष्यामःइतिउत्सुकधियःपुरवासिनःसर्वेवभूवुः) प्रभात कबहोई कब इसी भांति रघुनन्दनहिं देखब ऐसी अभिलाषयुत बुद्धि अवधपुर वासी जन सबहवैरहे हैं तावत भोरभया ४१ (राजाकिंअर्थइदानींनउत्थितःइतिचिंतयत्चयत्रराजावतिष्ठतेसुमंत्रःशनकैः प्रायात्) वशिष्ठादि सब समाज विचार करतेहैं कि महाराज अबहीं नहींउठे तो क्या कारण ऐसा मनमें चिंतवन करि पुनः सबके पठायेते जहां महाराज रहैं तहांको सुमंत धीरा धीरा जातेभये४२॥

वर्द्धयन्जयशब्देनप्रणमञ्जिच्छरसानृपम् ॥ अतिखिन्नंनृपंदृष्ट्वा कैकेयीसमप्रच्छ
त् ४३ देविकैकेयिवर्द्धस्वर्किंराजादृश्यतेऽन्यथा॥तमाहकैकेयीराजारात्रौनिद्रानल
ब्धवान् ४४ रामरामेतिरामेतिराममेवानुचिंतयन् ॥ प्रजागरेणवैराजाह्यस्व
स्थइवलक्ष्यते ४५ सुमंत्रबुद्धिसंपन्ननीतिशास्त्रविशारद ॥ राममानयशीघ्रत्वं
राजाद्रष्टुमिहेच्छति ४६ सुमंत्रउवाच ॥ अश्रुत्वारजवचनकथंगच्छामिभामि
नि ॥ तच्छ्रुत्वामंत्रिणोवाक्यंराजामंत्रिणमब्रवीत् ४७ सुमंत्ररामंद्रक्ष्यामिशीघ्रमा
नयसुंदरम् ॥ इत्युक्तस्त्वरितंगत्वासुमंत्रोराममंदिरम् ४८ अवारितःप्रविष्टोऽयं
त्वरितंराममब्रवीत् ॥ शीघ्रमागच्छभद्रंतेरामराजीवलोचन ४९ ॥

(जयशब्देनवर्द्धयन्नृपंशिरसाप्रणमत्तनृपंअतिखिन्नंनृपंवाकैकेयीसंअपृच्छत्) जय शब्द करि बढ़ती मनाय महाराज जो हैं तिनहिं शीश नवाय प्रणाम कीन्हे पुनः महाराजको अत्यंत दुःख स-
हित देखि सुमंत कैकेयीसौं पूछतेभये४३(देविकैकेयिवर्द्धस्वराजाअन्यथाकिंदृश्यतेकैकेयीतंआहरात्रौ
राजानिद्रानलब्धवान्) सुमंत बोले हेदेवि कैकेयि आपकी बढ़तीहोवै बताइये महाराज और भांति
क्यहि कारण देखातेहैं भाव ऐसा दुःख क्यहि कारणभया तब कैकेयी तिन प्रति बोली कि राति
विपे राजा नींद नहीं लीन्हे ४४ (रामरामइतिरामइतिएवरामंअनुचिंतयन्प्रजागरेणवैराजाहिअस्व
स्थइवलक्ष्यते) राम राम राम इसी भांति निरवचकरि रामहिंको चिंतवन करतेरहे ताते प्रकर्षकरि
जागनेमें महाराज असावधान ऐसे देखातेहैं ४५ ॥

नीति शास्त्र विशारद बुद्धिसंपन्नसुमंत्रइहराजाद्रष्टुंइच्छाति त्वंशीघ्रंरामंआनय) नीति शास्त्रमें प्रवीन बुद्धिवंत हे सुमंत्र यहिसमय राजा देखनेकी इच्छाकिहे हैं ताते तुम शीघ्रही रामहिं लवायलावो ४६ (भामिनीराजवचनंअश्रुत्वाकथंगच्छामिमंत्रिणोवाक्यंतत्श्रुत्वामंत्रिणंराजाअब्रवीत्) सुमंत्र बोले कि हे भामिनी विना राजाके वचन भाव विना महाराजकी आज्ञापाये रघुनन्दनको बुलावै कैसे मैं जाऊँ इति मंत्रीके वचन तिनको सुनि मंत्री प्रति महाराज बोलते भये ४७ (सुमंत्रद्रक्ष्यामिरामसुन्दरम् शीघ्रंआनयइतिउक्तःसुमंत्रःराममन्दिरमृत्वरितंगत्वा) महाराज बोले हे सुमंत्र मोको देखनेकीइच्छा है सुन्दर रघुनन्दनको शीघ्रही लवायलावो इत्यादि जब महाराज कहे तब सुमंत्र तुरतही रघुनन्दन के मन्दिरको गये ४८ (अवारितःअयंप्रविष्टवरितंरामंअब्रवीत् रामराजीवलोचनतेभद्रंशीघ्रंआगच्छ) किसी ने रोका नहीं ये सुमंत्र मन्दिरके भीतर चलेगये तुरतही रघुनन्दन प्रति बोले हे राम कमल नयन आपको कल्याण होइ शीघ्रही चलिये किसहेत सो आगे कहत ४९ ॥

पितुर्गेहंमयासाद्धैराजात्वांद्रष्टुमिच्छति ॥ इत्युक्तोरथमारुह्यसम्भ्रमात्वरितोय यौ ५० रामःसारथिनासाद्धैलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ मध्यकक्षेवशिष्टादीन्पश्यन्ने वत्वरान्वितः ५१ पितुःसमीपंसंगम्यननामचरणौपितुः ॥ राममालिंगितुराजा समुत्थायससम्भ्रमः ५२ बाहूप्रसार्यरामेतिदुःखान्मध्येपपातह ॥ हाहेतिराम स्तंशीघ्रमालिङ्ग्यांकैन्यवेशयत् ५३ राजानंमूर्च्छितंदृष्ट्वाचुकुशुःसर्वयोषितः ॥ किमर्थंरोदनमितिबशिष्ठोऽपिसमाविशत् ५४ रामःपप्रच्छकिमिदंराज्ञोदुःखस्य कारणम् ॥ एवंपृच्छतिरामेसाकैकेयीराममब्रवीत् ५५ ॥

(मयासाद्धैपितुःगेहंत्वांद्रष्टुराजाइच्छतिइतिउक्तः संभ्रमारथंमारुह्यत्वरिताययौ) सुमंत्रबोले हे रघुनन्दन मेरे साथै पिताके घरको चलौ आपको देखनेकी महाराज इच्छा किहेहैं ऐसा कहि तब संभ्रम रथपर चढ़ि तुरतहीं चले ५० (सारथिनासाद्धैलक्ष्मणेनसमन्वितःरामःमध्यकक्षेवशिष्टादीन्पश्यन्ने वत्वरान्विताएव) सुमंत्र सहित लक्ष्मणसाथ युक्त रघुनन्दन बीचके आंगनमें बशिष्ठ आदि गुरु जननकी समाज देखतहूँ थैंमे नहीं आतुरता युत निश्चय करि भीतरहीको चलेगये ५१ (पितुःसमीपंसंगम्यचपितुःचरणौननामरामंआलिंगितुंसंभ्रमःराजासमुत्थाय) पिताके समीप जाय पुनः रघुनन्दन पिताके ढोऊ पायँ जो हैं तिनहिंप्रणाम कीन्हे तब रघुनन्दनहिं उरमें लगावने हेत संभ्रमता सहित महाराज उठे ५२ (रामइतिबाहूप्रसार्यदुःखात्मध्येपपातःरामःहाहाइतिशीघ्रंतंआलिङ्ग्य अंकैन्यवेशयत्) राम ऐसा कहि रघुनन्दनको उरमें लगावने हेत महाराज ढोऊ हाथ पसारे परन्तु उहांतक अटेनहीं दुःखते शिथिलहूँ बीचहीमें गिरिपरे देखि रघुनन्दन हां हां ऐसाकहि शीघ्रही तिन महाराजको उठाय उरमें लगाय अकोरामें बैठारि लिये ५३ (मूर्च्छितंराजानंदृष्ट्वासर्वयोषितःचुकुशुः रोदनंकिमर्थंइतिबशिष्ठःअपिसंआविशत्) महाराजको मूर्च्छित देखि स्त्रीलोग विलाप करने लगीं सो सुनि बाहरेके लोग विचारने लगे कि राजमंदिर में रोदन किसकारण होताहै इतिदेखने हेत बशिष्ठजी निश्चयकरिकै तहांपरगये ५४ (रामःपप्रच्छराज्ञःइदंदुःखस्यकिंकारणंएवंरामेपृच्छतिसाकैकेयीराममब्रवीत्) रघुनन्दन पूछे कि महाराजके इस दुःखको क्या कारणहै इस प्रकार रघुनन्दन के पूछतसंते सो कैकेयी रघुनन्दन प्रति बोलतीभई ५५ ॥

त्वमेवकारणं ह्यत्र राज्ञो दुःखोपशान्तये ॥ किञ्चित्कार्यं त्वयारामकर्त्तव्यं नृपते हितम् ५६ कुरु सत्यप्रतिज्ञास्त्वं राजानं सत्यवादिनम् ॥ राज्ञा वरद्वयं दत्तं मम संतुष्टचेतसा ५७ त्वदधीनं तु तत्सर्वं वक्तुं त्वां लज्जते नृपः ॥ सत्यपाशेन संवद्धं पितरत्रा तुमर्हसि ५८ पुत्रशब्देन चैतद्धिनरकात्त्रायते पिता ॥ रामस्तयोदितं श्रुत्वा शूलेनाभिहतो यथा ५९ व्यथितः कैकेयी प्राह किं मामेवं प्रभाषसे ॥ पित्रर्थं जीवितं दास्येपिवेयं विषमुल्बणम् ६० सीतां त्यक्षेऽथ कौशल्यां राज्यं चापित्य जास्यहम् ॥ अनाज्ञतोऽपि कुरुते पितुः कार्यं स उत्तमः ६१ ॥

(राज्ञः दुःखोपशान्तये च त्रत्वं एव कारणं हिनृपतेः हितं रामत्वया किञ्चित् कार्यं कर्त्तव्यं) रघुनन्दन प्रति कैकेयी कहतराजाको दुःखशान्त होने हेतु इहांतुमर्हो निश्चय करि कारणहो ताते जामेराजाको हित है तामें हे राम तुम करिकै कुछ कार्यकी न होई ५६ (राजानं सत्यवादिनं त्वं सत्यप्रतिज्ञाः कुरु संतुष्टचेतसाराज्ञाममवरद्वयं दत्तम्) राजा सत्यवादी जा हैं तिनहिं तुम सत्यप्रतिज्ञाकरो भाव जो तुम चाहिहो तो राजा सत्यवादी रहते हैं काहेते प्रसन्न चित्तहवैकै महाराज मोको द्वै वर देनेको कहेहैं ५७ (नृपः त्वां वक्तुं लज्जते तु तत्सर्वं त्वत्तु अधीनं पितरं सत्यपाशेन संवद्धं त्रातुं अर्हसि) राजा तुम प्रति कहत लजातेहैं पुनः तौन सबबात तुम्हारेही आधीनहै अरु तुम्हारे पिता सत्यपाश करिकै बंधेहैं तिनहिं रक्षाकरिबे के योग्य तुमर्हो ५८ (पुत्रशब्देन च एतत् हि पितानरकात् त्रायते तथा उदितं रामः श्रुत्वा यथा शूलेन अभिहतः) पुत्र शब्दकरिकै यही अर्थ निश्चय करिकैहै कि पिता नरकते रक्षाकिया जावै भावपुत्र जो नरक त्यहिते पिताकी त्राना नाम रक्षाकरै ताको कही पुत्र उक्तंच ॥ पुत्रान्नो नरकाद्यस्मात्पितरं त्रायते सुतः । तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयं भुवः ॥ अर्थात् जो तुम नरकते पिताकी रक्षा करौ तवतौ पुत्रहो नातरुपुत्र नहीं इत्यादि बचन त्यहि कैकेयीने कहासो रघुनाथजी सुनिकै कैसे व्यथित भये जैसे शूल उरमें भारिदिया ५९ (व्यथितः कैकेयी प्राह मां एवं किं प्रभाषसे पितृव्यर्थं उल्बणम् विषं पिवेयं जीवितं दास्ये) वचन शूलते व्यथित रघुनन्दन कैकेयी प्रतिबोले कि मोप्रति इसप्रकारके वचन क्यों कहतीहो पिताके हेतु पुष्टकरि विष पानकरि प्राणदै सकाहो ६० (कौशल्यां अथ सीतां त्यक्षे च अपि अहं राज्यं त्यजामि अनाज्ञतः अपि पितुः कार्यं कुरुते स उत्तमः) कौशल्या अरु सीता तिनहिं त्यागि सकाहो पुनः निश्चय करि कै मैं राज्य त्याग करौंगो काहेते जो बिना आज्ञापाये पिताको कार्य करै सो उत्तम पुत्र कहाताहै ६१ ॥

उक्तः करोति यः पुत्रः समध्यम उदाहृतः ॥ उक्तोऽपि कुरुते नैव स पुत्रो मल उच्यते ६२ अतः करोमि तत्सर्वं यन्मामाह पिता मम ॥ सत्यं सत्यं करोम्येव रामो द्विर्नाभिभाषते ६३ इति रामप्रतिज्ञां सा श्रुत्वा वक्तुं प्रचक्रमे ॥ रामत्वदभिषेकार्थं संभाराः संभ्रताश्च ये ६४ तैरेव भरतोऽवश्यमभिषेच्यः प्रियो मम ॥ अपरेण वरेणाशुचिरवासाजटाधरः ६५ वनं प्रयाहि शीघ्रं त्वमद्यैव पितुराज्ञया ॥ चतुर्दशसमास्तत्र वस मुन्यन्नभोजनः ६६ एतदेव पितुस्तेव कार्यं त्वं कर्तुमर्हसि ॥ राजा तुलज्जते वक्तुं त्वामेवं रघुनन्दन ६७ ॥

(यःपुत्रःउक्तःकरोतिसमध्यमउदाहृतःउक्तःअपिनएवकुरुतेसपुत्रःमलउच्यते) जो पुत्र पिताकेकहेते कार्य करताहै सो मध्यम कहावताहै अरुजो पिताके कहेपर निश्चय करिनहीं करताहै सो पुत्र पिता को पाप कहाताहै ६२ (अतःममपितामांयत्आहतत्सर्वकरोमिसत्यंसत्यंएवकरोमिरामःद्विर्नाभिभा पते) याते मेरे पिता मोप्रतिजो कहें तौन सब करिहों सत्यसत्य निश्चयकरिकैं करिहों राम दूसरी भांति नहीं कहतेहैं भाव मैं जो कहताहों सोई करताहों ताते पिता की प्रतिज्ञा निश्चय करि सत्य करिहों ६३ (इतिरामप्रतिज्ञांश्रुत्वासावकुंप्रचकूमेरामत्वत्अभिपेकअर्थयेसंभाराःसंभृताःच) पिताको वचन सत्य करिहों इत्यादि रघुनन्दनकी प्रतिज्ञा ताहि सुनि तवसो कैकेयी आपना मनोर्थ कहनेको प्रारम्भ किया हे राम तुम्हारे अभिपेकके अर्थ जो सामग्री बटोरीगईहै ६४ (तैःएवममप्रियःभरतः अवश्यंअभिपेक्ष्यःअपरेणवरेणआशुचीरवासाजटावरः) ताही सामग्री करिकैं मेरे प्यारे पुत्र भरतको अश्यही राज्याभिषेक होवै और जो दूसर वरहै त्यहि करिकैं शीघ्रही मुनिनको ऐसो बसन जटा धारण करि ६५ (पितुःआज्ञायात्वंअद्यएवशीघ्रंवनंप्रयाहितत्रचतुर्दशसमाःमुनिअन्नभोजनःवस) पिता की आज्ञा करिकैं तुम आजु निश्चय करि शीघ्रही वनहिं जाउ तहां चौदह वर्षतक मुनिन कैसोअन्न फल मूलादि भोजन करि वास करौ ६६ (एतत्एवतेपितुःअद्यकार्य्यत्वंकर्तुंअर्हसितुरघुनन्दनत्वांएव वक्तुंराजालज्जते) यही निश्चय करिकैं तुम्हारे पिताको आजु कार्यहै अरु तुमसो कार्य करिवे योग्यहो पुनः हे रघुनन्दन जो कहो कि पिता हमते क्यों नहीं कहतेहैं तो काल्हि राजदेनेको कहे आजु वनवास इत्यादि तुम प्रति कहते राजा लजातेहैं ताते नहीं कहतेहैं ६७ ॥

श्रीरामउवाच ॥ भरतस्यैवराज्यःस्यादहंगच्छामिदण्डकान्॥ किंनुराजानवक्तीह
मांनजानेऽत्रकारणम् ६८ श्रुत्वैतद्रामवचनंदृष्ट्वारामंपुरःस्थितम्॥ प्राहराजादश
रथोदुःखितोदुःखितंवचः ६९ स्त्रीजितंभ्रातृहृदयमुन्मार्गपरिवर्त्तिनम् ॥ निगृह्य
मांगृहाणेदंराज्यंपापंनतद्भवेत् ७० ॥

(भरतस्यएवराज्यंस्यात्अहंदण्डकान्गच्छामिकिंनुराजामांनवक्तीहअत्रकारणंनजाने) रघुनन्दन बोले कि भरतको निश्चय करिकैं राज्य होवै मैं दण्डक वनको अभी जाताहों परन्तु महाराज मों प्रति कुछ नहीं बोलतेहैं इसका क्या कारणहै सो नहीं जानिसकाहों ६८ (एतत्तुरामवचनंश्रुत्वारामंपुरः स्थितं दृष्ट्वाराजादशरथःदुःखितःअदुःखितंवचःप्राह) ये रघुनन्दनके वचन सुने रघुनन्दनको आगेखडे देखि राजा दशरथ दुःखितहैकैं अदुःखित जो रघुनन्दन तिन प्रति वचन बोले भाव नहींहै दुःखको लेश जिनमें अखंड आनंदरूप तिन रघुनन्दन प्रति महाराज दुःखित है बोले इहां एदोतोतः सूत्र लागेते ऐश्वर्यरूपमें यह अर्थ भया अरु जब सूत्र न लगाइये तो माधुर्यरूपमें ऐसा अर्थ हैसकाहै यथा (दुः खितःराजादशरथःदुःखितंरामंवचःप्राह) दुःखित जो राजा दशरथ तिन दुःखित जो रघुनन्दन तिन प्रति वचन बोले अर्थात् एक तो पिताको दुःखित देखि करुणागुणते आपहू दुःखित भये ताहूपर कैकेयीको वचन शूलसम लाग ताते अधिक दुःखित भये इति दुःखित रघुनन्दन प्रति महाराज बोले अथवा ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीलामें यद्यपि प्रभुमें दुःख नहींहै परन्तु सुकुमार पुत्र विषम वनको कैसे जायेंगे इति वात्सल्य सनेहते महाराज दुःखित मानिलिये ताते करालकालकी दुसह बाधाते वचिवे योगसमय अनुकूल नीति धर्म सहित स्वार्थमय वचन महाराज कहतेहैं ६९ (स्त्रीजितंभ्रातृ हृदयंउन्मार्गपरिवर्त्तिनंमानिगृह्यइदंराज्यंगृहाणतत्पापंनभवेत्) हे रघुनन्दन मोको स्त्रीने जीति लिया

भाव कैकेयीके परवश ताते भ्रात हृदयभाव हृदयमें यथार्थ ज्ञान नहीं है ताते अधर्म मार्गपर चलता हों भावलोक वेद रीति कुलको धर्म पाट महिषीके पुत्र भाइनमें बड़े तुम तिनको राज्य देनेको साज साजि अब वनको पठावताहों अरु छोटे पुत्रको राज्य देताहों इति अधर्मपर चलताहों ताते दशरुके योग्यहों अरु तुम नीति धर्मपर आरूढ समर्थ हों अरु मंत्री मित्र सेना सेनप सब तुम्हांग अधीन हैं ताते मां निगृह्य अर्थात् मोको बांधि कारागारमें बन्दराखि इस राज्यको स्वाधीन करौ तौ यामें तुमकोपाप न होई यह नीतिहै जो गुरु जन भी अनीतिकरें तौ वाको भी दण्ड देना चाहिये यथा ॥ भारते ॥ गुरोरप्यवलितस्यकार्यकार्यमजानतः । उत्पथंप्रतिपन्नस्यदण्डएवविधीयते ७० ॥

एवंचेदनृतंनैवमांस्पृशेद्रघुनन्दन ॥ इत्युक्त्वादुःखसंतप्तोविललापनृपस्तदा ७१
हारामहाजगन्नाथहाममप्राणवल्लभ ॥ मांविस्मृज्यकथंघोरंविपिनंगन्तुमर्ह
सि ७२ इतिरामंसंमालिङ्ग्यमुक्तकण्ठोरुरोदह ॥ विस्मृज्यनयनेरामःपितुःसज
लपाणिना ७३ आश्वासयामासनृपंशनैःसनयकोविदः ॥ किमत्रदुःखेनविभो
राज्यंशासतुमेऽनुजः ७४ ॥

(रघुनन्दनएवंचेत् मां अनृतं न एवस्पृशेत्इतिउक्त्वातदानृपःदुःखसन्तप्तःविललाप) महाराजक-
हत है रघुनन्दन इसीभांति कदाचित् करौ भाव जोमोको बन्धनकरि राज्य ग्रहणकरिलेउ तौ मोको
भी झूठ वचन को पाप निश्चयकरि न छुड़जाई भाव झूठको पाप तवैतकहै जवतक मैं स्वाधीनहों
जव बन्धन में परवश भयों तब कैसे पाप लागी इत्यादि कहि पुनः विचारे कि रघुनन्दन उत्तम पिता
भक्त धर्म धुरीण ऐसा क्यों करेंगे निश्चय वनको चले जायेंगे यह विचारे तब महाराज दुःखते संतप्त
है रोदन करनेलगे ७१ (हाममप्राणवल्लभमहाराजगन्नाथमांविस्मृज्यघोरंविपिनंगन्तुमर्हसि)
हा मेरेप्राणप्रिय हा रघुनन्दन हा जगत् के स्वामी भाव यद्यपि जगके रक्षकहौ तौ भी मेरेप्राणप्रिय
पुत्र है अवतीर्ण भयो तौ अब मोको त्यागि भयंकर वनहिं जानेको कैसे योग्यहों भाव आपकेसंगही
प्राण जाँयगे ७२ (इतिरामंसंमालिङ्ग्यमुक्तकण्ठःरुरोदहरामःपाणिनापितुःनयनेसजलविस्मृज्य) ऐसा
कहि महाराज रघुनन्दनहिं उरमें लगाय कण्ठस्वर त्यागि ऊँस्वरते विलाप करनेलगे तवरघुनन्दन
हाथ करिकै पिताके नेत्रनकोजल पोछतेभये ७३ (सनयकोविदःनृपंशनैःआश्वासयामासविभो अत्र
दुःखेन किं मेऽनुजःराज्यंशासतु) सो रघुनन्दन नीतिमें प्रवीन नृप दशरथ जो तिनहिं धीरा धीरा
अर्थात् प्रिय वचन कहि कहि समुझावतेभये हे विभो भाव सौर्य धीरता वीरता आदि सब भांति
आप समर्थहौ इहां धर्मके कार्य में दुःख करने में क्या लाभहै हमारे छोटेभाई भरत ते तौ इहां
राज्यकाज सब सँभारि लेइंगे ७४ ॥

अहंप्रतिज्ञानिस्तीर्यपुनर्यास्यामितेपुरम् ॥ राज्यात्कोटिगुणंसौख्यंसमराजन्वने
सतः ७५ त्वत्सत्यपालनंदेवकार्यञ्चापिभविष्यति ॥ कैकेय्याश्चप्रियोराजन्वन
वासोमहागुणः ७६ इदानींगन्तुमिच्छामिव्येतुमातुश्चहज्ज्वरः ॥ सम्भाराश्चो
पह्नीयंतामभिषेकार्थमागताः ७७ मातरञ्चसमाश्वास्यअनुनीयचजानकीम् ॥
आग्रत्यपादौवंदित्वातवयास्येसुखंवनम् ७८ इत्युक्त्वातुपस्क्रिन्धमातरंद्रष्टुमा

यथो ॥ कौशल्यापिहरेः पूजांकुरुते रामकारणात् ७६ होमं च कारयामास ब्राह्मणे
भ्यो ददौ धनम् ॥ ध्यायते विष्णुमेकाग्रमनसामो न गास्थिता ८० ॥

(अष्टप्रतिज्ञानिस्तीर्य पुनः ते पुरं यास्यामि राजन् वने रातः राज्यात्कोटिगुणं मम सौख्यम्) में आप की प्रतिज्ञा पूर्ण करि भाव चौदहवें वनवास करि पुनः आपके पुर जयोध्याजीको आवहूँगो भरु है राजन् वनमें वसतमें राज्यते रोगुण अधिक मोको सुख छोड़ ७५ (च देन त्वत्सत्यपालनं कार्यं अपि भविष्यति च राजन् कैकेयः प्रियः वनवासः मदागुणः) पुनः हे देव आपको सत्यव्रत पालन कार्य निश्चय करिके छोड़ पुनः हे राजन् मातृ कैकेयीको यही प्रिय है ताते वनवासमें मदागुण है भाव इसीमें देवनको कार्य छोड़ ७६ (मातृश्च हृज्ज्वरः व्येतु इदानीं गन्तुं इच्छामि च भविष्ये कर्णार्थं संभाराः भागताः उपपूर्यन्तां) मातृ कैकेयी के हृदयको पथर दूरि होने ऐत पुनः इसी रामय वन जाने की इच्छा करता हूँ पुनः मेरे राज्याभिषेक ऐत जो सामग्री आई है सो इति करी जाय ७७ (यमातरं संभाष्य नारद च जानकीं अनुनीय भाग्यतत्त्वपादो बंधित्वारुखं वनं यास्ये) पुनः माता कौशल्या तिनहि रावधान करि पुनः जानकी जो है ताहि समुभाय भैरवै पुनः इहां आय आपके दोऊ पद कमलोंको प्रणाम करि सुख पूर्वक वनहिं जैहों ७८ (इति उद्यत्वा तु परिक्रम्य मातरं द्रष्टुं प्राययौ कौशल्या अपि रामकारणात् एरेः पूजांकुरुते) इत्यादि कति पुनः रघुनन्दन पिताके परिक्रमा करि माता कौशल्या तिनहि देखेन ऐत जातें भय उहां देखे कौशल्या जी निश्चय करि रघुनन्दनको दित होने कारणते हरिको पूजन करती रहें ७९ (होमं च कारयामास ब्राह्मणेभ्यः धनं स ददौ एकाग्रमनसामो न गास्थिता विष्णुं ध्यायते) पूर्व होम करि ब्राह्मणोंके भर्ष स्वर्णरत्नादि धनवान देती भई पुनः एकाग्रमन कि हे आसनपर मोनता युत धैरी हृदयमें विष्णु भगवान जो हैं तिनहि ध्यान चितवन करती हैं ८० ॥

अन्तरस्थमेकं घनचित्प्रकाशं निरस्त सर्वातिशय रचरूपम् ॥ विष्णुं सदानन्दमयं हृद्
ब्जे राभावयन्ती न ददर्श रामम् ८१ ॥

इति श्रीमद्भ्यात्मरामायणे उगामहेद्वरसम्वादे अयोध्याकाण्डे तृतीयः सर्गः ३ ॥

(सारामनववर्ष) सो कौशल्या रघुनन्दनहि न देखे काहेते (हृत्तब्ज्जे विष्णुं भावयन्ती) उर कमल विषे विष्णु भगवान् जो हैं तिनहि ध्यान करती हैं कैसे विष्णु हैं (सर्वनिरस्तचित्प्रज्ञानप्रकाशं एकं अन्तरस्थम्) सतरजतमादि सब कारण माया दूरि गिये चैतन्य समूह प्रकाशमान एक अंतर्धामीरूप सो सधक अन्तरमें बसे हैं पुनः कैरो हैं (सदाशतिशय आनन्द स्वरूपम्) सदा अत्यंत करिके आनन्द स्वरूप हैं अर्थात् रघुनाथजी जाय जाग खड़े भये परन्तु कौशल्याजी नही देखे काहेते कि राव इंद्रि मना दिकी वृत्ति खेचै हृदय कमलमें विष्णु भगवानको ध्यान किये हैं कैसे विष्णु हैं जो सब विकार रहित चैतन्य समूह प्रकाशमान एक अंतर्धामीरूप सो राधके अन्तरमें बसे सदा अत्यन्त आनन्द स्वरूप हैं ८१ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमशिवब्रह्मपद्मशरणगतधेननाथभिरचिते भ्यात्मभूषणे
कैवेयीवर्ममंगनवर्णनो नाम तृतीयः प्रकाशः ३ ॥

ततः सुमित्रादृष्टेन रामं राज्ञीं स संभ्रमा ॥ कौशल्यां चोभयामास रामोऽयं समुपस्थितः ॥

तः १ श्रुत्वैवरामनामैषाबहिर्दृष्टिप्रवाहिता ॥ रामंदृष्ट्वाविशालाक्षमालिंग्याकेन्य
वेशयत् २ ॥

सवैया ॥ जननी मृदुबैन बतावतहीं वनजानसुने अति दुःख किये । लघुबन्धु विलोकि सशोक
जहीं समुझाय तबै प्रभु बोधदिये ॥ पितु पास गये पुनि आनंदसों सप्रिया प्रियबन्धुहि संग लिये ।
बसिये ससियानुज राघवजी शरणागत बैजसुनार्थहिये ॥ (ततः सुमित्राएनरामंदृष्ट्वाससंभ्रमारा
र्जीकौशल्यांबोधयामासअयंरामःसंडपस्थितः) तदनन्तर रानी सुमित्राजी खडेहुये जो राम तिनहि
देखि सहित संभ्रमता रानी कौशल्या जो हैं तिनहि जनावतीभई कि ये रघुनन्दन तुम्हारे आगे खडेहैं
क्यों नहीं देखतीहौ भाव ध्यान त्यागि इनपर दृष्टिकरो ? (रामनामएपाएवश्रुत्वाबहिःदृष्टिप्रवाहि
ताविशालाक्षरामंदृष्ट्वाअलिंग्यअकेन्यवेशयत्) राम ऐसा नाम यह निश्चय करि सुनती भई तब
कौशल्याजी ध्यान त्यागि बाहेरको दृष्टि करतीभई बडेहैं नेत्र जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनहि खडे
देखि कौशल्याजी हृदयमें लगाय अकोरामें बैठायेलेतीभई २ ॥

मूर्ध्न्यवघ्रायपस्पर्शगात्रनीलोत्पलच्छवि ॥ भुंक्ष्वपुत्रेतिचप्राहमिष्टमन्नंभुंक्ष्व
तः ३ रामःप्राहनमेमातर्भोजनावसरःकृतः ॥ दण्डकागमनेशीघ्रंममकालोऽद्य
निश्चितः ४ कैकेयीवरदानेनसत्यसंधःपितामम॥भरतायददौराज्यंममाप्यारण्य
मुत्तमम् ५ चतुर्दशसमास्तत्रह्युषित्वामुनिवेषधृक् ॥ आगमिष्येपुनःशीघ्रंनचिं
तांकर्तुमर्हसि ६ तच्छ्रुत्वासहसाद्विग्नमूर्च्छितापुनरुत्थिता ॥ आहरामंसुदुःखा
र्तादुःखसागरसंघुता ७ यदिरामवनंसत्यंयासिचैन्नयमामपि ॥ त्वद्विहीनाक्षणाद्धि
वाजीवितंधारयेकथम् ८ ॥

(मूर्ध्न्यवघ्रायनीलउत्पलच्छविगात्रपस्पर्शचइतिप्राहपुत्रभुंधार्दितःमिष्टमन्नंभुंक्ष्व) रघुनन्दनकोशी-
शसूँधि नीलकमलवत् छवि जोगात्रताहि उरमें लगाय पुनः कौशल्याजी इस प्रकार बचनबोलीं हे
पुत्र तुम्हारे भूख लागिहोई ताते मिष्टमन्न जोहै ताहि भोजन करौ ३ (रामःप्राहमातःमेभोजनकृतः
अवसरःनअद्यनिश्चितःशीघ्रंममदण्डकागमनेकालः) रघुनन्दन बोले कि हेमातः मेरेभोजन करनेको
समयनहीं है भाव राज्याभिषेक न होइगो कौन कारण कि आजु निश्चयकरिकै शीघ्रही मेरा दण्डक
वन जानेको समय आयाहै ४ (सत्यसंधःममपिताकैकेयीवरदानेनभरतायराज्यंददौममअपिउत्तम
मृआरण्यम्) सत्यप्रतिज्ञाहै जिनकी ऐसे हमारे पिताकैकेयीके वरदान करिकै भरतके अर्थराज्य दिये
अरु मोको निश्चयकरिके उत्तमवनमें बास दिये ५ (मुनिवेषधृक्तत्रहिचतुर्दशसनाःउषित्वापुनःशी-
घ्रंआगमिष्ये चिंतांकर्तुमर्हसि) मुनिनको ऐसो बेप धारण करि बनजो है तहांनिश्चयकरि चौदह
वर्ष बासकरिं बिताय पुनःशीघ्रहीं तुम्हारे पास ऐहौं ताते चिंता करिबे को नहीं योग्यहौं भाव मन में
खेद न किहेउ ६ (तत्श्रुत्वासहसाद्विग्नमूर्च्छितापुनःउत्थितासुदुःखआरतादुःखसागरसंघुतारामं
आह) हमवनको जातेहैं इति रघुनन्दनके बचनतौनि सुनिकै सहसि सूखिमूर्च्छित हैं भूमिपरगिरिपरी
पुनः उठिकै दुःखपीडितदुःखसमुद्रमें बूडीहुई कौशल्या रघुनन्दन प्रतिबोलतीभई ७ (रामयदिसत्यं
वनंयासिमांअपिनयचेत्त्वत्विहीनाक्षणाद्धिवाजीवितंकथमधारये) कौशल्याजी कहतहे रघुनन्दन जो
सत्यहीवनहि जातेहौं तौ मोकोभी साथै लैचलौं नाहीं तौ तुम बिनाक्षणको आधा पांचपल्लामें अपना
जीवन कौने प्रकारते राखिसकिहौं ८ ॥

यथागौर्वालकंवत्संत्यक्त्वातिष्ठेन्नकुत्रचित् ॥ तथैवत्वांनशक्नोमित्यक्तुंप्राणात्प्रियं
सुतं ६ भरतायप्रसन्नश्चेद्राज्यंराजाप्रयच्छतु ॥ किमर्थंवनवासायत्वामाज्ञापय
तिप्रियं १० कैकेयावरदोराजासर्वस्वप्रयच्छतु ॥ त्वयाकिमपराधंकिंकैकेयावा
नृपस्यवा ११ पितागुरुर्यथारामतवाहमधिकाततः ॥ पित्राज्ञप्तोवनंगंतुंवारये
यमहंसुतम् १२ यदिगच्छसिमद्वाक्यमुल्लंघ्यनृपवाक्यतः ॥ तदाप्राणान्परित्य
ज्यगच्छामियमसादनम् १३ लक्ष्मणोपिततःश्रुत्वाकौशल्यावचनंरुषा ॥ उवाच
राघवंवीक्ष्यदहन्निवजगत्रयम् १४ ॥

(यथावालकंवत्संत्यक्त्वागौःकुत्रचित् न तिष्ठेत् तथा एव प्राणात्प्रियं सुतं त्वां त्यक्तुं न शक्नोमि) जैसे छोटे
बछवा को त्यागि गौ कहों नहीं स्थित होती है तैसेही निश्चय करिके प्राण ते अधिक प्रिय पुत्र तुमहि
त्यागिने को मैं नहीं समर्थ हों ६ (राजाप्रसन्नःचेत्त्राज्यंभरतायप्रयच्छतुप्रियंत्वांवनवासायकिंअर्थ
आज्ञापयति)महाराज प्रसन्न मन राज्य भरत के अर्थ खुसी ते देवें परन्तु प्रियपुत्र तुमहि वनवास के
अर्थ कि सहेत आज्ञा देते हैं १० (वाराजाकैकेयावरदःसर्वस्वंप्रयच्छतुत्वयानृपस्यवाकैकेयाकिमप
राधंहि) अथवा महाराज कैकेयी को वरदान देते हैं तौ अपना सर्वस्व देदेवें परन्तु हे पुत्र तुमने
राजाको वा कैकेयी को क्या अपराध किया है जो वने पठावते हैं ११ (यथापितागुरुःरामतवअहंत
तःअधिकःपित्राज्ञप्तःवनंगंतुंअहंसुतंवारयेयम्) जैसे तुम्हारे पिता गुरु हैं हे रघुनन्दन तुमको मानिने
को मैं तिनते अधिक हों भाव वेदरीति पिताते अधिक माताको पद होता है ॥ यथा वशिष्ठ स्मृतौ ॥
उपाध्यायादशाचार्यश्चाचार्याणांशतंपिता ॥ पितुर्दश शतमातागौरवेणातिरिच्यते ॥ तौ जोपिता आ-
ज्ञा करते हैं वनजाने को तौ मैं अपने पुत्रहि रोकती हों भाव मेरी आज्ञा मानि घरमें रहौ १२ (स
त्वाक्यंउल्लंघ्यनृपवाक्यतःयदिगच्छसितदाप्राणान्परित्यज्ययमसादनमृगच्छामि] अरु मेरे बचन
त्यागि जो राजा के वचन मानि वनको चले जातेहौ तौ मैं अपने प्राण जो हैं तिनहि परित्यागकरि
यमराज के मंदिरहि जाती हों १३ (कौशल्यावचनंश्रुत्वाततःलक्ष्मणःअपिराघवंवीक्ष्यजगत्रयंदहनइ
वरुपाउवाच) कौशल्याजीकोकहा जोवचन ताहिसुनि तदनन्तर लक्ष्मणजी निश्चयकरि रघुनन्दन
की दिशि देखि कैसे क्रोध युक्त भये मानहुं तीनिहुं लोकन को भस्म करि देवेंगे ऐसे रोष करिकै
वचन बोले १४ ॥

उन्मत्तंभ्रांतमनसंकैकेयीवशवर्त्तिनम्॥वध्वानिहन्मिभरतंतद्वंधून्मातुलानपि १५
अद्यपश्यंतुमेशौर्यलोकान्प्रदहतःपुरा ॥ रामत्वमभिषेकायकुरुयत्नमरिंदम १६
धनुःपाणिरहंतत्रनिहन्यांविघ्नकारिणः॥इतिब्रुवंतंसौमित्रिमालिङ्ग्यरघुनन्दनः १७
शूरोसिरघुशार्दूलममात्यंतांहितेरतः ॥ जानामिसर्वंतेसत्यंकितुतेसमयो नहि १८
यदिदं दृश्यतेसर्वराज्यं देहादिकंचयत् ॥ यदि सत्यं भवेत्तत्र आयासः सफलश्च
ते १९ भोगो मेघवितानस्य विद्युल्लेखेव चंचलः ॥ आयुरप्यग्निसंतप्तलोहस्थज
लविन्दुवत् २० ॥

(कैकेयीवशवर्त्तिनम्भ्रांतमनसंउन्मत्तंवध्वानिभरतंतद्वंधून्मातुलान्अपिहन्मि) कैकेयी के वशी



भूत भ्रांत है मन जिनको भाव यथार्थ ज्ञान नहीं है उन्मत्त भाव सिद्धी है गये जो राजा तिनहि बांधि कारागार में बंदराखें अरु भरतहि तथा उनके बंधु वर्ग यावत् सहायक तथा उनके मामा तिनहि हम मारि डारेंगे १५ (अरिन्दमरामत्वं अभिषेकाय यत्नं कुरु पुरालोकान् प्रदहतः अद्य मे शौर्यं पश्यन्तु) हे शत्रु-नाशक रघुनाथ जी आप राज्याभिषेक हेत यत्न करिये पूर्वकाल में यथालोकन को भस्म करता हों तथा आजु मेरी शूरता को सब संसार देखै १६ (तत्र अहं धनुः पाणि विघ्नकारिणः निहन्त्यांडातिव्रवंतं सौमित्रिरघुनन्दनः आलिङ्ग्य) जहां राज्याभिषेक होई तहां हम धनुष बाण हाथमें लिहे खड़े रहेंगे जो उहां विघ्न करता आई ताको हम नाश करि देंगे इत्यादि कहत ही सुमित्रा नन्दन जो लक्ष्मण तिनहि उरमें लगाय रघुनन्दन बोले इतिशेषः १७ (रघुशार्दूलशूरोऽसिममहितेऽत्यन्तरतः ते सर्वे सत्यं जानामि किंतु ते समयो न हि) लक्ष्मण प्रति रघुनन्दन कहत हे रघुवंशिन में सिंह तुम शूरहौ अरु मेरे हित करिवेमें अत्यंत प्रीति किहे हौ अरु जो तुम कहते हौ सो सब सत्य है यह मैं जानता हौ परंतु तुम्हारे पराक्रम करने को यह समय नहीं है १८ (राज्यं च देहादिकं यत्तद्दं सर्वं यत्तद्दृश्यते यदि सत्यं भवेत् तत्र च ते आयासः सफलः) राज्यादि यावत् ऐश्वर्य पुनः देहादि यावत् संबंध स्त्री पुत्रादि यह सब जो देखि परता है सो जो सत्य होय तहां पुनः तुम्हारे परिश्रम भी सफल होय १९ (मेघवितान नस्य विद्युत्स्तेखेव भोगचंचलः अग्नि संतप्तलोहस्थजलविद्वत् आयुः अपि) मेघ मंडल में जैसे विजुली चमकि तुरतै मिटि जाती है तैसे बाहन भूषण वसन भोजनादि भोग भी चलायमान थिर नहीं रहि सके हैं पुनः अग्निमें संपूर्ण तप्त हुआ लोहा पर डारे जैसे जल बुंद लोप होता है तैसे आयुर्वल निश्चय करि क्षणभंगी है २० ॥

यथा व्याल गलस्थोऽपि भेको दंशान् अपेक्षते ॥ तथा कालाहिनाग्रस्तो लोको भोगान्
शाश्वतान् २१ करोति दुःखेन हि कर्मतंत्रं शरीरभोगार्थं महर्त्तु शनरः ॥ देहस्तु भिन्नः
पुरुषात् समीक्ष्यते को वात्र भोगः पुरुषेण भुज्यते २२ पितृमातृसुतभ्रातृदारबंध्यादि
संगमः ॥ प्रपायामिव जंतूनां नद्यां काष्ठौ घ्नवच्चलः २३ ॥

(व्याल गलस्थः भेकः अपियथा दंशान् अपेक्षते तथा लोकः कालाहिनाग्रस्तः शाश्वतान् भोगान्) सर्पके लीलिये गलेमें स्थित जो मेढक निश्चय करि जैसे सर्प के गलेको मांस खाने की इच्छा करता है अरु निकट प्राप्त जो आपनी मृत्युताको नहीं विचारता है तैसे ही लोकको कालरूप सर्पने ग्रास किया भावकाल के मुखमें परेता की सुधि नहीं है अरु नित्य ही सबलोग विषय भोगमें परेहैं २१ (शरीरभोग अर्थनरः अहः निशं हि दुःखेन कर्मतंत्रं करोति) देहभोग के अर्थ मनुष्यादि नौराति निश्चय दुःखः करि कै कर्म प्रधान करता है (तु देहः पुरुषात् भिन्नः समीक्ष्यते अत्र को वा भोगः पुरुषेण भुज्यते) पुनः जिस देहके सुखके हेत शुभाशुभ कर्म करता है सो पंचभौतिक देह पुरुषते अर्थात् आत्माते भिन्न देखि परत है तौ इहां कौन ऐसा सुख है जो पुरुष करिके भोगभोगा जावै अर्थात् रघुनन्दन कहत हेलक्ष्मणजी इसी देहके सुख भोगके अर्थ लेखी वणिज चाकरी भीषचोरी ठगीआदि अनेक व्यापार मनुष्यकर्म करि धन बटोरि भोजन वसनादि सुखभोग करता है तथा यज्ञपूजा तपतीर्थ दान व्रतादि स्वर्गभोग के अर्थ सवातिक कर्म करता है इति दिशौराति श्रम करिके जिस देहके भोग हेत कर्म करता है सो देह आत्मपुरुषते अलग है अरु आत्मपुरुष तौ स्वयं आनन्द रूप है ताके हेत इस लोकमें कौन ऐसा अपूर्व सुख है जाको आत्म पुरुष भोगकरै भाव लुच्छ है केवल अज्ञानताते सुख माने है देहको आत्ममाननाय ही अज्ञानता है २२

(प्रपायांजतूनांइवनद्यांचलः काष्ठग्रौधवतुबंधु आदिसंगमः) देह सम्बन्धिन को मिलन कैसा है जैसे जलशालामें जलपीने हेत अनेक जीव आवतेहैं तिनको क्षणभरि मिलान ह्वै पुनः अपनी राह न लगे अथवा नदी विषे बहेजात काष्ठजो समूह तिनको जैसे मिलान ह्वै पुनः भिन्न ह्वैजाते हैं ताही भांति पितामाता पुत्रभाई स्त्री वंधु वर्गादि देह संबन्धिन को मिलान जन्म जन्मांतर होताहै छूटता जाताहै तामें कहां सत्यताहै २३ ॥

छायेवलक्ष्मीश्चपलाप्रतीतातारुण्यमंबूमिवदध्रुवंच ॥ स्वप्नोपमंस्त्रीसुखमायुरल्पं
तथापिजंतोरभिमानेषः २४ संसृतिःस्वप्नसदृशीसदारोगादिसंकुला ॥ गंधर्व
नगरप्रख्यामूढस्तामनुवर्त्तते २५ आयुष्यंक्षीयतेयस्मादादित्यस्यगतागतेः ॥ दृ
ष्ट्वाऽन्येषांजरामृत्युकथंचिन्नैवबुध्यते २६ सएवदिवसःसैवरात्रिरित्येवमूढधीः ॥
भोगाननुपतत्येवकालवेगान्नपश्यति २७ प्रतिक्षणंक्षरत्येतदायुरामघटांबुवत् ॥
सपत्नाइवरोगोघाःशरीरंप्रहरन्त्यहो २८ ॥

(लक्ष्मीःछायाइवचपलाप्रतीताचग्रंवुडमिवतारुण्यंअध्रुवंस्त्रिसुखंस्वप्नउपमंअल्पंआयुःतथापिजं
तोःएपाअभिमान) राज्य धनादि जो लक्ष्मीहै सो छायाकी समान चंचलहै ताकेरहनेका विश्वास
नहीं पुनः जलकी लहरीकी समान युवा अवस्था की निश्चय नहीं तथा युवतीसंग भोगसो स्वप्नेकै-
सो सुखभूठा है अल्पकाल जीवन ताहूपर देहधारी ऐसा अभिमान करतेहैं कि इसकभी मरेंगे नहीं
हमारा सुख अचलहै २४ (संसृतिःस्वप्नसदृशीरोगादिसदासंकुलातामूढः गंधर्वनगरप्रख्याअनुवर्त्तते)
संसार स्वप्नेकी समान भूठा सुखहै काहेते रोगादि दुःखनते सदा परिपूर्णहै ताहिमूढ अज्ञानी गंधर्व
नगर अर्थात् स्वर्गलोक सम अचल सुख मानतेहैं २५ (आदित्यस्यगतआगतेः यस्माद्व्यायुष्यंक्षीयते
अन्येषांजरामृत्युदृष्ट्वाकथंचित्नएवबुध्यते) सूर्यनके उदयअस्त करिकै जोकाल बीतता जाताआयु-
र्वैल घटत जातीहै तथा औरनकी वृद्धा अवस्था अरु मृत्यु देखतेहैं तौ काहेनहीं मनमें ज्ञान लावते
हैं भाव इसी भांति मैंभी बुढाडकै एकदिन मरिजाऊंगो इसभांति क्योंनहीं ज्ञान लावतेहैं २६ (सएव
दिवसःसाएवरात्रिःइतिएवमूढधीःकालवेगान्नपश्यतिभोगान्एवअनुपतति) जोदुख सुखमय बीतत
जात सोई निश्चय करिकै दिनहै सोई निश्चय करिकै रात्रीहै इत्यादि जैसे पूर्वबीते तैसे निश्चय
करिकै आगेके बीत जाँयगे यही कालको वेगहै इसीमें सब बहेजातेहैं परंतु मूढबुद्धी अज्ञानी कालके
वेगको नहीं देखतेहैं कि एक दिन मरिजाऊंगो सबइंद्री भोगमें आसक्त पर रहतेहैं २७ (आमघटांबु-
वत्एतत्आयुःप्रतिक्षणंक्षरतिरोगओघाःसपत्नाइवशरीरंप्रहरन्तिअहो) माटीको कच्चाघट जल भरते
जैसे गलिजाताहै इसीभांति यह उमिरि क्षण प्रति घटत जाती है तथा ज्वरातीसारशूल वायु कफादि
रोग समूह शत्रुनकी नाई शरीर जोहै ताहि चोटमारतेहैं इत्यादि देखत हूं नहीं सूक्ति परततौ बड़े
आश्चर्य की बातहै २८ ॥

जराव्याघ्रीवपुरतस्तर्जयंत्यवतिष्ठते ॥ मृत्युःसहैवयात्येषासमयंसंप्रतीक्षते २९
देहेऽहंभावमापन्नोराजाऽहंलोकविश्रुतः ॥ इत्यस्मिन्मनुतेजन्तुःकृमिविट्भस्मसं
ज्ञिते ३० त्वगस्थिमांसविएमूत्ररेतोरक्तादिसंयुतः ॥ विकारीपरिणामीचदेहश्चा
त्माकथंवद ३१ यमास्थायभवांल्लोकंदग्धुमिच्छातिलक्ष्मण ॥ देहाभिमानिनः

सर्वेदोषाः प्रादुर्भवन्ति हि ३२ देहोऽहमिति याबुद्धिरविद्या सा प्रकीर्तिता ॥ नाहं देह
इति च दात्मेति बुद्धिर्विद्येति भण्यते ३३ अविद्या संसृतेर्हेतुर्विद्या तस्या निवर्त्तिका ॥
तस्माद्यत्नः सदा कार्यो विद्याभ्यासे मुमुक्षुभिः ३४ ॥

(व्याघ्री इव जरातर्जयंति पुरतः अवतिष्ठते एष समग्रं प्रतीक्षते मृत्युः सह एव याति) बाधिनि अस्ति
बुद्ध्यापा अवस्था भय देखाती हुई मनुष्यनके आगे खड़ी है तथा या जीवको अन्तःसमयकी प्रती-
क्षा करती हुई मृत्यु सदा निश्चय करिके साथ ही बनी रहती है भाव कब काल आवै तब
मैं याको घात करौं २९ (रुमिविदुर्मस्मसंज्ञिते देहे अहं भावं आपन्नः अस्मिन् जन्तुः इति मनु ते
अहं लोकविश्रुतः राजा) मृतक परी रहै तो रुमि परि जायँ जीव खाय जायँ तो विष्ठा है जाय फूँकि
दिहे पर राख हवै जाती है ऐसी देह में अभिमान भाव में बँधे इसी में देह धारी ऐसा मानते हैं कि
हम लोक प्रसिद्ध राजा हैं ३० (त्वक् अस्थि मांस विण्मूत्र रेतः रक्तादिसंयुतः परिणामः विकारो देहकथं
आत्मा वद) रघुनन्दन कहत कि हे लपण जो त्वचा हाड मांस विष्ठा मूत्र वीर्य रक्तादि सहित वाल
युवा वृद्ध मरणान्त है जाको कामादि विकार भरी देह को कैसे आत्मा कहते हौ भाव सत्य मानते हौ
तुया देहको ३१ (लक्ष्मणयं अस्थाय भवान् लोकं दग्धुं इच्छति देह अभिमानिनः दोषाः सर्वे हि प्रादुर्भवन्
ति) हे लक्ष्मण जिस झूठे देह व्यवहार को सोंचा स्थापित करि तुम लोक जो है ताहि क्रोधित है
भस्म करने की इच्छा करते हौ सोई जीव को बंधन है काहेते देहाभिमानि यावत् दोष करते हैं तिन
सबको फल निश्चय करि प्रसिद्ध होता है विना भोगे छुट्टी नहीं पावते हैं ३२ (अहं देहः इति जाबुद्धिः सा
अविद्या प्रकीर्तिता अहं देहः न चित् आत्मा इति बुद्धिः इति विद्या भण्यते) मैं देह हौं ऐसी जो बुद्धि सोई अविद्या
भव बंधन कहावता है अरु मैं देह नहीं सदा चैतन्य आत्मा हौं ऐसी बुद्धि यही विद्या ब्रह्मज्ञान
है ३३ (संसृतेः हेतुः अविद्या तस्याः निवर्त्तिका विद्या तस्मात् मुमुक्षुभिः विद्या अभ्यासे यत्नः सदा कार्यः)
जन्म मरणादि संसार को कारण अविद्या है ताको निवृत्त करने वाली विद्या है ताते उचित है कि
मुक्तिकी इच्छा करने वालेन करिके विद्या अभ्याससे सदा यत्न करै ३४ ॥

कामक्रोधादयस्तत्र शत्रवः शत्रुसूदन ॥ तत्रापि क्रोध एवालंमोक्षविघ्नाय सर्वदा ॥ ये
नाविष्टः पुमान् हन्ति पितृभ्रातृसुहृत्सखीन् ३५ क्रोधमूलो मनस्तापः क्रोधः संसारबंध
नः ॥ धर्मक्षयकरः क्रोधस्तस्मात् क्रोधं परित्यज ३६ क्रोध एष महाच्छत्रुस्तृष्णावत
रणीनदी ॥ संतोषो नन्दनवनंशांतिरेव हि कामधुक् ३७ तस्माच्छांतिं भज स्वाद्य शत्रु
रेवं भवेन्नते ॥ देहेन्द्रियमनः प्राणबुद्ध्यादिभ्यो विलक्षणः ॥ आत्मा शुद्धः स्वयं ज्योति
रविकारी निराकृतिः ३८ ॥

(शत्रुसूदन तत्र कामक्रोधादयः शत्रवः तत्रापि मोक्षविघ्नाय क्रोध सर्वदा एव अलंयेन आविष्टः पुमान् पितृ
भ्रातृसुहृत्सखीन् हन्ति) हे शत्रुनाशन जहां अविद्या है तहां कामक्रोधादि शत्रु हैं तिनमें भी मुक्तिमार्गमें
विघ्न करने के अर्थ क्रोध सब कालमें निश्चय करिके सबल समर्थ शत्रु है जिस क्रोध करिके भराहुआ
पुरुष पिताभाई मित्रसखा इत्यादि जो हैं तिनहिं मारि डारता है ३५ (मनः तापः मूलः क्रोधः संसार
बंधनं क्रोधः धर्मक्षयकरः क्रोधः तस्मात् क्रोधं परित्यज) मनमें ताप होनेका मूल क्रोध है भाव जब क्रोध आवत
तब मन तप्त हवै जात पुनः संसारमें बंधन क्रोध है भाव क्रोध भये विचार हीन हवै अनुचित कार्य करि

पापवैधन में परत पुनः धर्मको नाश करने वाला क्रोध है भाव क्रोधभये धर्मको त्यागि अधर्मी जीव हवे जात ताते क्रोध जो है ताहि परित्याग करौ ३६ (महाशत्रुः एपक्रोधः वैतरणी नदी तृष्णानंदनवन संतोषः एव हि कामधुक्शांतिः) काहे ते त्याग करौ हे लक्ष्मण वड़े भारी शत्रु की तुल्य घात करता क्रोध ही है तथा वैतरणी नदी जो यमपुरी को परिपा अशुद्ध वस्तु मिला नष्ट जल भगाध है जाको तरणा दुर्घट है तिहि की तुल्य इहाँ तृष्णा अर्थात् जोराज्य धनादि पावने की अत्यंत प्यास सो संसार में वैतरणी है तथा जामें समूह कलह लगे ऐसा जो नंदन वन स्वर्ग में लगा है ताकी तुल्य इहां संतोष है जाके भये सब फल प्राप्त होत ऐसे ही निश्चय करि कामयेनु की समान इहां शांति है ३७ (तस्मात्प्रद्यक्षांतिं भजस्व एवं ते शत्रुः न भवेत् देह इन्द्रियमनः प्राणबुद्धि आदिभ्यः विलक्षणः आत्मा स्वयं ज्योतिः अविकारी शुद्धः निराकृतिः) तिसकारण हे लक्ष्मण आजु शांति सेवन करौ इस प्रकार तुम्हारा शत्रु कोई न होई पुनः देह श्रवणादि इंद्रिय मन प्राणादि वायु बुद्धि इत्यादिक न ते विलक्षण अर्थात् कारण रहित आत्मा स्वयं प्रकाशमान विकारही न शुद्ध आकार रहित है ३८ ॥

यावद्देहं द्विप्रणैर्भिन्नत्वं नात्मनो विदुः ॥ तावत्संसारदुःखो घैः पीड्यन्ते मृत्युसंयुताः ३६ तस्मात्त्वं सर्वदा भिन्नमात्मानं हृदि भावय ॥ बुद्ध्यादिभ्यो वहिः सर्वमनुवर्तस्व मा खिद ४० भुंजन् प्रारब्धमाखिलं सुखं वा दुःखमेव वा ॥ प्रवाहपतितः कार्यं कुर्वन्नपि न लिप्यते ४१ बाह्ये सर्वत्र कर्तृत्वमावहन्नपि राघव ॥ अंतः शुद्धस्वभावस्त्वं लिप्यते न च कर्मभिः ४२ एतन्मयोदितं कृत्स्नं हृदि भावय सर्वदा ॥ संसारदुःखैरखिलैर्वाध्य सेन कदाचन ४३ ॥

(देह इन्द्रिय प्राणैः भिन्नत्वं नात्मनः यावत् न विदुः तावन्मृत्युसंयुताः संसारदुःखो घैः पीड्यन्ते) देह श्रवणादि इंद्रिय प्राण वायु इत्यादिक न करिके विलग आत्मा को जवतक नहीं जानता है तवतक मृत्यु सहित संसार में दुख समूह करिके जीव पीडित रहता है भाव जवतक देह व्यवहार को सत्य मानता है तवतक शुभाशुभ कर्म करि सुख दुःख भोगता है अरु जो देह ते भिन्न आत्मा को जानी तो स्वयं आनंदरूप है वाते कर्म न हवै सकेंगे ३९ (तस्मात्त्वं आत्मानं सर्वदा भिन्नं हृदि भावय वहिः बुद्ध्यादिभ्यः सर्वमनुवर्तस्व खिदः मा) तिसकारण हे लक्ष्मण तुम आत्मा जो है ताहि सर्वकाल में देह ते भिन्न हृदय में जाने रहो अरु बाहेर ते देह इंद्रिय बुद्धि आदिक न ते लोक के सब कार्य करो अरु खेद मति मन में करो ४० (सुखं वा एव दुःखं वा प्रारब्धमाखिलं भुंजन् प्रवाहपतितः कार्यं अपि कुर्वन् न लिप्यते) सुख वानिश्चय करिके दुःख प्रारब्ध में जो आवै सो सब भोग करो संसार प्रवाह में पतित भी होके भाव संसार मे रहो परंतु संसारी कार्य निश्चय करिके किये भी तुम में न लागेंगे ४१ (राघव अंतः शुद्धस्वभाव बाह्ये सर्वत्र कर्तृत्वं आवहन् अपि च कर्मभिः त्वं न लिप्यते) हेरघुवंशज लक्ष्मण जो अंत समय आत्मदृष्टि ते शुद्धस्वभाव वने रहौ तो बाहेर देह इंद्रिय द्वारा सब काल में कर्ता भाव को प्राप्त निश्चय करि भाव सदा कर्म किया करौ तो भी पुनः कर्म न करिके तुम न लिप्त होउगे ४२ (एतत्कृत्स्नं मया उदितं सर्वदा हृदि भावय अखिलैः संसारदुःखैः कदाचन न वाध्यसे) रघुनन्दन कहत हे लक्ष्मण यह जो सम्पूर्ण मेरा कहाहुआ ज्ञान है ताहि सब काल में हृदय में धारण किहे रहौ तो सम्पूर्ण संसार के दुःख न करिके कबहुं न बाधित हवै हौ भाव संसार के दुःख जन्म मरणादि तुमको कबहुं न बाधा करि सकि हैं ४३ ॥

त्वमप्यम्बमयादृष्टं हृदि भावय नित्यदा ॥ समागमप्रतीक्षस्वनदुःखैः पीड्यसेऽचिरम् ४४ नसदैकत्रसंवासः कर्ममार्गानुवर्तिनाम् ॥ यथाप्रवाहपतितल्लवानां सरितां तथा ४५ चतुर्दशसमासं ख्याक्षणाद्धमिव जायते ॥ अनुमन्यस्व मामंबदुःखं संत्यजदूरतः ४६ एवं चेत्सुखसंवासो भविष्यति वने मम ॥ इत्युक्त्वा दण्डवन्मातुः पादयोरपतच्चिरम् ४७ उत्थाप्यांके समवेक्ष्य आशीभिरभिनन्दयत् ॥ सर्वे देवाः संगंधर्वा ब्रह्मविष्णुशिवादयः ४८ रक्षंतु त्वांसदायांतं तिष्ठंतं निद्रया युतम् ॥ इति प्रस्थापयामास समां लिङ्ग्य पुनः पुनः ४९ ॥

(अम्बत्वं अपि मया दृष्टं नित्यदा हृदि भावय समागमं प्रतीक्षस्व अचिरमदुःखैः न पीड्यसे) अब कौशल्या प्रति रघुनंदन कहतहे माता तुमहूँ निश्चय करिकै मेरा कहा हुआ जो ज्ञान है ताहि नित्यही हृदयमें धारण किहे उतौ थोरे दिनोंको जो वियोगहै त्यहि दुःख करिकै न दुःखित हवैहौ ४४ (कर्ममार्ग अनुवर्तिनाम् न सदा एकत्र संवासः न) हे माता यही लोकरीतिहै कि कर्ममार्ग परजे चलनेवाले हे तिनको सब कालमें एकठौर सम्पूर्ण प्रकारते वास नहीं रहिसक्ताहै कौन भांति (यथा सरितां प्रवाहपतितल्लवानां तथा) जैसे नदीके प्रवाह वेगवंत धारामें परते नौका नहीं यिररहती है ताही भांति ४५ (अन्वदुःखं दूरतः संत्यज्य चतुर्दशसमासं ख्यामां क्षणाद्धमिव जायते अनुमन्यस्व) हे माता दुःख जोहै ताहि दूर हींते त्याग करौ चौदह वर्ष गनती जो दिनहैं ते मोको आधे क्षणके समान बीति जानो अनुमान किहेउ ४६ (एवं चेत् वने मम सुखसंवासो भविष्यति इति उक्त्वा मातुः पादयोः दण्डवत् अपतत् चिरम्) हे माता मेरा वनवास पांचपलाभरि मानि प्रसन्न रहैउ ऐसा जो करौगी तो वनविषे मेरा सुख पूर्वक वासहोई ऐसा कहि रघुनंदन माताके पाँयन विषे दंड की नाई गिरे बहुतवार परे रहे ४७ (उत्थाप्य अंके संभवेक्ष्य आशीभिः अभिनन्दयत् ब्रह्मा विष्णु शिवादयः सर्वे देवाः संगंधर्वाः) कौशल्याजी रघुनंदन को उठाय अकोरामें बैठाय आशीर्वादन करिकै आनंदित करती भई पुनः बोली कि ब्रह्मा विष्णु शिवादिक सब देवना सहित गंधर्व ४८ (यांतं तिष्ठंतं निद्रया युतं त्वांसदारक्षंतु इति पुनः पुनः आलिङ्ग्य प्रस्थापयामास) राह जात बैठत शयन करत तुम्हारी सदा देवता रक्षारै ऐसा कहि रघुनंदन को बारम्बार हृदयमें लगाय कौशल्याजी जानेकी आज्ञा देती भई ४९ ॥

लक्ष्मणोपितदारामं नत्वा हर्षाश्रुगद्गदः ५० आहरामममांतस्थः संशयोऽयं त्वया हतः ॥ यास्यामि पृष्ठतो रामसेवां कर्तुं तदादिश ५१ अनुगृह्णीष्व मामां राम नोचेत्प्राणास्त्यजाम्यहम् ॥ तथेति राघवोऽप्याह लक्ष्मणं याहि माचिरम् ५२ प्रतस्थेतांस्तमाधातुंगतः सीतापतिर्विभुः ॥ आगतं पतिमा लोक्ष्य सीता सुस्मितभाषिणी ५३ स्वर्णपात्रस्थसलिलैः पादौ प्रक्षाल्य भक्तिः ॥ पप्रच्छ पतिमा लोक्ष्य देव किं सेनया विना ५४ आगतोसि गतः कुत्र श्वेतछत्रं च ते कुतः ॥ वादित्राणि न वाद्यं ते किरीटादिविवर्जितः ५५ ॥

(तदालक्ष्मणः अपि हर्षाश्रुगद्गदः रामं नत्वा) ताही समयमें लक्ष्मणजी निश्चय करि प्रेमानंद के आँसू गिरावत गद्गद वानी सहित रघुनंदन जोहैं तिनहिं प्रणाम कीन्हे ५० (रामं आहममग्रंत

स्थःअयंसंशयःत्वयाहृतःसेवाकर्तुंपृष्ठतःयास्यामिरामतत्त्वादिश) रघुनन्दन प्रति लक्ष्मणजी बोले कि मेरे अंतरमें स्थित यह जो संशयरहै सो तो आपने नाश किया अब आपकीसेवा करनेहेतु मैं भी पीछे पीछे चला चाहताहूँ हे रघुनाथजी ताकी आज्ञादीजे ५१ (राममांअनुगृह्णीष्वनोचेत्तद्वहंप्राणांस्त्यजामिलक्ष्मणराघवःअपिआहतथाइतिमाचिरमूयाहि) हे रघुनाथजी मोपर अनुग्रह करो साथ लै चलो नाही तो मैं प्राणै त्याग करोंगो तब लक्ष्मण प्रति रघुनन्दन निश्चय करिकै बोले कि जैसा कहतेहौ तैसाही होय ऐसा कहि पुनः कहे विलंब न करो शीघ्रही चलो ५२ (प्रतस्थेसीतातांसमाधातुंपतिविभुगतःपतिआगतंआलोक्यसुस्मितभापिणीसीता) लक्ष्मणजीको आज्ञा दैकै रघुनन्दन प्रतस्थे अर्थात् माताके घरते चले सीता जोहैं तिनहिं समुझावने हेत सीतापति समर्थ धरैगये पतिहि आवत देखि मंद मुसकाय बोलनेवाली सीता उठी ५३ (स्वर्णपात्रस्थसलिलैःभक्तितःपादौप्रक्षाल्यपतिंआलोक्यपप्रच्छदेवसेनयाविनाकिं) जानकीजी उठिकै सोनेके पात्रमें भराहुआ जल लैकै त्यहि करिकै भक्ति पूर्वक दोउ पांय धोय पुनः पतिहि एकाकी देखि पूछती भई हे देव राज्याभिषेक समयहै तो चतुरंगिनी सेना विना अकेले किस कारण आयो ५४ (किरीटादिविवर्जितःखादित्राणिनवाद्यंतेचतेद्वेतच्छत्रंकुतःकुत्रगतःआगतोसि) किरीटादि भूषण रहित वाजाभी नहीं वाजते हैं पुनः आपको इवेत छत्र कहाँहै अरु या समयमें सुमंत्रके बुलाय लयजानेते कहाँ गयोरहै जहांते साधारण चले आवतेहौ ५५ ॥

सामंतराजसहितःसंभ्रमान्नागतोऽसिकिम् ॥ इतिस्मसीतयापृष्ठोरामःसस्मितमब्रवीत् ५६ राज्ञामेदण्डकारण्येराज्यदत्तंशुभेऽखिलम् ॥ अतस्तत्पालनार्थाय शीघ्रंयास्यामिभामिनि ५७अद्येवयास्यामिवनंत्वंतुश्वश्रूसमीपगा ॥ शुश्रूषांकुरु मेमातुर्नमिथ्यावादिनोवयम् ५८ इतिब्रुवंतंश्रीरामंसीताभीताऽब्रवीद्वचः ॥ किमर्थंवनराज्यंतेपित्रादत्तमहात्मना ५९ तामाहरामःकैकेय्येराजाप्रीतोवरंददौ ॥ भरतायददौराज्यंवनवासंममानघे ६० चतुर्दशसमास्तत्रवासोमेकिलयाचितः॥ तयादेव्याददौराजासत्यवादीदयापरः ६१ ॥

(सामंतराजसंभ्रमानसहितःकिनआगतोसिइतिस्मसीतयापृष्ठःसस्मितरामःअब्रवीत्) सामंत जो मिले हुये देशनकेराजासंभ्रम तिनको साथ सहित क्यों नहीं आयो भाव आजु राज्याभिषेक समयहै ता अनुकूल राज साज विभव आपके साथ किस कारण नहींहै इस भांति जानकीजी ने पूछा तब मुसकायकै रघुनाथजी बोले ५६ (राज्ञामेशुभेदण्डकारण्येखिलंराज्यदत्तंअतःभामिनि तत्पालनार्थायशीघ्रंयास्यामि) महाराजने मोको मंगलीक दण्डक वनकी समग्र राज्य दिया है इसते हे भामिनि तिनकी आज्ञा पालन हेत शीघ्रही वनहि जाउँगो ५७ (वनंअद्येवयास्यामितुत्वंश्वश्रूसमीपगामेमातुःशुश्रूषांकुरुवयम्मिथ्यानवादिनः)मैं वनहि इससमय जाताहूँ पुनःहेप्रिया तुम अपनी सासुके समीप जाय मेरी माताकी सेवा करो यह सत्यही कहताहूँ मैं झूठ नहीं बोलताहूँ यही निश्चयहै ५८ (इतिब्रुवंतंश्रीरामंभीतासीतावचःअब्रवीत्महात्मनापित्रातोकिंअर्थंवनराज्यंदत्तम्) मो को पिता वनकी राज्य दिया इत्यादि कहे श्रीरघुनन्दन तिन प्रति भयभीत श्रीजानकीजी वचन बोलीं कि महात्मा पिताने तुम्हारे अर्थ किस हेत वनकी राज्य दिया ५९ (तामाहःआहराजाप्रीतःकैकेय्येवरंददौअनघेभरतायराज्यंददौममवनवासं) तिन सीता प्रति रघुनन्दन बोले कि पिता

प्रसन्न हँकै कैंकेथीके अर्थ दो वरदान देतेभये हे अनये पाप रहित तिनमें एक वरदानमें भरतकेअर्थ राज्य दिये तथा दूसरे वरदानमें मोको वनवास दिये ६०(तत्रचतुर्दशसमामेकिलवासःतयादेव्याया चितःराजासत्यवादीदयापरःददौ) तहां चौदह बर्षमेरा वनवास निश्चय करिकै तिस देवी कैंकेथी ने वरमांगा घरु महाराज सत्यवादीहैं अरु मोपर दया राखतेहैं तहां सत्यव्रतके प्रभावते वरदानदेते भये कदाचित् दयाते उरमें कादरतान धारण करिलेवै यह शंका मेरे मनमें आवतीहै ऐसी उपाय करें जामें सत्यव्रत बनारहै ६१ ॥

अतःशीघ्रङ्गमिष्यामिमाविघ्नंकुरु भामिनि ॥ श्रुत्वातद्रामवचनंजानकीप्रीतिसंयुता ६२ अहमग्रेगमिष्यामिवनंपश्चात्त्वमेष्यसि ॥ इत्याहमांविनागंतुंतवराधव नोचितम् ६३ तामाहराधवःप्रीतःस्वप्रियांप्रियवादिनीम् ॥ कथंवनंत्वांनेष्येऽहं बहुव्याघ्रमृगाकुलम् ६४ राक्षसाघोररूपाश्चसंतिमानुषभोजिनः ॥ सिंहव्याघ्रं वराहश्चसंचरंतिसमंततः ६५ कट्वम्लफलमूलानिभोजनार्थमुमध्यमे ॥ अपूपानिव्यंजनानिविद्यन्तेनकदाचन ६६ कालेकालेफलंवाऽपिविद्यतेकुत्रसुन्दरि ॥ मार्गेनदृश्यतेक्वापिशर्कराकण्टकान्वितः ६७ ॥

(अतःशीघ्रंगमिष्यामिभामिनिविघ्नंमाकुरुतत्ररामवचनंश्रुत्वाजनकीप्रीतिसंयुता) रघुनंदन बोले कि जामें पिताको सत्यव्रतवनारहै इसते शीघ्रहीबनहि जावाचाहतहौं तामें हेभामिनि विघ्न नकिहेउ भाव प्रसन्नता सहित जानेको कहौ तौन रघुनाथजीको जो वचनहै ताहि सुनि जानकीजी प्रीति सहित बोली इति शेषः ६२ (अहंबनंअग्रेगमिष्यामित्वंपश्चात्त्वमेष्यसिइतिआहराधवमांविनातवगंतुं नउचितम्) जानकीजी बोलीं कि मैं वनहिं आपके आगे चलौंगी आप पीछे चलौंगे इत्यादि कहि पुनः बोलीं हेराधव मोहिं विना आपको वन जाना उचित नहीं अनुचितहै भाव विवाह समय स्त्री पतिसौं मांगिलेती है कि जो सत्कर्म करौ सो हम सहितकरौ ताते पितुआज्ञा धर्मपालन हम विना वनवास अनुचितहै ताते संग लैचलिये ६३(प्रियवादिनीमस्वप्रियांतांराधवःप्रीतःआहवहुव्याघ्रमृगाकुलंवनंत्वांकथंअहंनेष्ये) प्रियवचन बोलनेवाली जो आपनी प्राणप्रिय जानकी तिनप्रति रघुनन्दन प्रीतिपूर्वक बोले कि जहां व्याघ्रादि मृगा परिपूर्ण वनतहां तुमहिं कैसे मैं लैचलौं ६४ (चमानुष भोजिनःघोररूपाःराक्षसाःसंतिचसमंततःसिंहव्याघ्रवराहाःसंचरंति) पुनः मनुष्योंको खाइजानेवाले भयंकर राक्षस जहां बसते हैं पुनः वनमें सबठौर सिंह व्याघ्र शूकर विचरतेहैं ६५ (सुमध्यमेभोज नार्थंकटुअम्लफलमूलानिअपूपानिव्यंजनानिकदाचननविद्यंते) सुन्दर कटि इतिहे सुमध्यमे वनमें भोजनके हेत करू खट्टे फल मूलादिहैं अरु लाडू मालपुवा दिव्यव्यंजन कभी देखनेको न मिलेंगें ६६ (सुन्दरिकालेवाअकालेफलंअपिकुत्रविद्यतेमार्गःनदृश्यतेक्वापिशर्कराकण्टकान्वितः) समयपर वा असमयपर फलभी निश्चयकरि कहौ मिले कहौ न मिले अरु राह नहीं मिलतीहै कहौ देखिपरती है सो कंकरी कौंटायुक्त राहहै तहां कैसे तुम चलितकौंगी ६७ ॥

गुहागङ्गरसंबाधभिल्लीदंशादिभिर्युतम् ॥ एवंबहुविधंदोषंवनंदण्डकसंज्ञितम् ६८ प्राद्वारेणगन्तव्यंशीतवातातपादिकम् ॥ राक्षसादीन्वनेदृष्ट्वाजीवितं हास्यसेचिरात् ६९ तस्माद्भेदेगृहेतिष्ठशीघ्रंक्षयसिमांपुनः॥रामस्यवचनंश्रुत्वा

सीतादुःखसमन्विता ७० प्रत्युवाचस्फुरद्वक्त्राकिञ्चित्कोपसमन्विता ॥ कथं
मामिच्छसेत्यक्तुंधर्मपत्नीपतिव्रताम् ७१ त्वदनन्यामदोषांमांधर्मज्ञोसिदयापरः ॥
त्वत्समीपेस्थितारामकोवामांधर्षयेद्वने ७२ फलमूलादिकंयद्यत्तवभुक्तावशेषि
तम् ॥ तदेवामृततुल्यंमेतेनतुष्टारमाम्यहम् ७३ ॥

(भिक्षीदंशादिभिःयुतमृगुहागद्वरसंवायंएवंबहुविधंपदशङ्कसंज्ञितंवनम्)भीमुरादि कीट भूमि ते
काटत डांस मसादि उड्डिकै काटत इत्यादि यत्तत्स्वयं वनेहुये पहारनमें गुहामें रहना तहां संपूर्ण बाधाहै
ऐसे बहुत विधिके दोषमय दंडकनामे वनहै ६८ शीतवातआतपादिकम्पादचारेणंगंतव्यंवनैराक्षसादी
नृदृष्ट्वाअधिरात्जीवितमहास्यसे)जाड वयारि घामेआदिक दुःखसहित पैदर चलनापरी अरु वनमें
राक्षसआदि भयानक जीवनको देखतहीं तुम प्राणत्यागकरौगी भाव एकतौ राहैमें न जीवनरही कदा
चित् वची तौ वनमें राक्षसादि देखिडरते प्राणत्यागकरौगी ६९ (तस्मात्गृहेतिष्ठभद्रेशीघ्रमांपुनःद्रक्ष्य-
सि)ताते घरहींमें रहौ हेकल्याणरूपेशीघ्रही मोहिं पुनः देखौगी भाव चौदहवर्ष बाढि तुरतही आइहौं
(रामस्यवचनंश्रुत्वादुःखसमन्वितासीता)वियोगकारक रघुनंदनके वचन सुनि दुःखसहित सीता तन्मु
खभई ७० (किञ्चित्कोपसमन्वितवक्त्रास्फुरत्प्रतिउवाचधर्मपत्नीपतिव्रताम्मांकथंत्वंत्यक्तुंडच्छसे)जान
कीजी थेरेकोप सहित ओष्ठ फरकत रघुनंदन प्रति बोलीं मेंपाणिगृहीता आपकी पत्नी पुनः पतिव्रताहौं
तौ मोहिं क्यों त्यागौकी इच्छा करतेहौ ७१ (अदोषात्वत्अनन्यामांदयापरःधर्मज्ञःअसिरामत्वत्समीपे
स्थितामांवनैकोवाधर्षयेत्)दोषनते रहित आपकीअनन्य भाव आपके सिवाय दूसरासंबंध नहीं मानती
हौंमें अरु आप दयावंत धर्मके जाननेवालेहौ हेरघुनंदन आपके समीपरहे मोहिं वनमें कौन ऐसाहै
जोतिरस्कार करिसकी ७२(तवभुक्तःअवशेषितंयत्तत्फलमूलादिकंतत्तुएवअमृततुल्यंतेनमेतुष्टाअहं
रमामि) आपके भोजनते बाकी रहिगये जो जो फल मूलादि तिनहिं निश्चयकरि अमृतके तुल्य
भोजन करि तेहि करिकै तुष्टरहि आपके संग रमन क्रीड़ा करिहौं ७३ ॥

त्वयासहचरन्त्यामेकुशाःकाशाश्चकंटकाः ॥ पुष्पास्तरणतुल्यामेभविष्यन्तिनसं
शयः ७४ अहंत्वांक्लेशयेनैवभवेयंकार्यसाधिनी ॥ वालेमांवीक्ष्यकश्चिद्वैज्योतिः
शास्त्रविशारद ७५ प्राहतेविपिनेवासःपत्यासहभविष्यति ॥ सत्यवादीद्विजोभू
याद्वमिष्यामित्वयासह ७६ अन्यत्किञ्चित्प्रवक्ष्यामिश्रुत्वामानयकाननम् ॥ रा
मायणानिवहुशःश्रुतानिवहुभिर्द्विजैः ७७ सीतांविनावनंरामोगतःकिंकुत्रचिद्व
द ॥ अतस्त्वयागमिष्यामिसर्वथात्वत्सहायिनी ७८यदिगच्छसिमांत्यक्त्वाप्राणां
स्त्यक्ष्यामितेग्रतः ॥ इतितंनिश्चयंज्ञात्वासीतायाःरघुनन्दनः ७९ ॥

(त्वयासहमेचरन्त्याःकुशाःकाशाःचकंटकाःमेपुष्पास्तरणतुल्याभविष्यन्तिसंशयःन) आपके साथ जो
में वनको चलींगी तौ राहमें कुश काशपुनः कांटा मोको फूलन के बिछौना तुल्यहोंयगे यामें संशय
नहीं है ७४ (अहंक्लेशयेनत्वांकार्यसाधिनीएवभवेयं) में क्लेशउपजावने वाली नहीं हौं आप को जो
वनमें कार्य है ताको साथन सिद्ध करावनेवाली निश्चयकरिकै होउंगी (वालेकश्चिद्वैज्योतिपशास्त्र
विशारदःमांवीक्ष्य) मेरी बाल अवस्थामें कोऊ निश्चय करि ज्योतिप विद्यामें प्रवीन ब्राह्मण मोहिं

देखि भाव जन्मपात्रिका वा हस्तरेखादि देखि ७५ (प्राहपत्यासहतेविपिनेवासःभविष्यतित्वचासहगमि
प्यामिद्विजःसत्यवादीभूयात्)उसने मोसो कहा कि पतिकरिकै सहित तेरा वनमेंवासहांई ताते आप
केसाथै वनकोजाऊंगी तब वह ब्राह्मण सत्यवादीहोइगो ७६ (किंचित्त्रन्यत्रवक्ष्यामिश्रुत्वासांज्ञाननं
यबहुभिःद्विजैःबहुशःरामाणानिश्रुतानि) हे प्राणनाथ कुछ औरहू कहतीहों ताहिसुनिकैमोहिं वनहिंलै
चलिये बहुतेब्राह्मणन करिकैबहुती रामायणय जोहैं तिनही सुनेउहैं तिनकी अनुकूल आजतककोसब
चरित आपको है ७७ (सीतांविनारामःगतःकिंकुत्रचित्त्वदसर्वथात्वत्सहायनीअतःत्वयागमिष्यामि)अब
क्या आपनई करौंगे कोहेते किसी रामायणमें जो सीता विनारामवनको गयेहोंय सो कुछकहों लिखा
होइ सो आपही कहिये नातरु सबकालमें आपकी सहाय करताहों इसकारण आपके साथही चलौं-
गी ७८ (यादिमांत्यक्त्वागच्छसितेअग्रतःप्राणांस्त्यक्ष्यामिइतितंसीतायाःनिश्चयंरघुनंदनःज्ञात्वा)जो
मोहित्यागि कै चलिहौ तुम्हारे आगे प्राणें त्यागि देउंगीइति तिन सीताकी निश्चय प्रतिज्ञा रघुनंदन
जाने भावजो इनको साथनलेउंगो तौ जावत न रहि सकिहैं निश्चय प्राण त्यागिदेहैं ७९ ॥

अब्रवीदेविगच्छत्वंवन्शीघ्रमयासह ॥ अरुन्धत्यैप्रयच्छाशुहारानाभरणानि
च ८० ब्राह्मणेभ्यो धनं सर्वदत्त्वा गच्छामहे वनम् ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणेनाशुद्विजा
नाहूयभक्तिः ८१ ददौ गवांश्चतुर्दशतंधनानि वस्त्राणि दिव्यानि विभूषणानि ॥ कु
टुम्बवद्भ्यः श्रुतशीलवद्भ्यो मुदा द्विजेभ्यो रघुवंशकेतुः ८२ अरुन्धत्यै ददौ सी
तामुख्यान्याभरणानि च ॥ रामो मातुस्सेवकेभ्यो ददौ धनमनेकधा ८३ स्वकांतः
पुरवासिभ्यः सेवकेभ्यस्तथैव च ॥ पौरजानपदेभ्यश्च ब्राह्मणेभ्यस्सहस्रशः ८४ ल
क्ष्मणोऽपि सुमित्रां कौशल्यायै समर्पयत् ॥ धनुःपाणिः समागत्य रामस्य अग्रे व्यव
स्थितः ८५ ॥

(अब्रवीत् देवित्वं शीघ्रं मया सह वनं गच्छ हारान् च आभरणानि आशु अरुन्धत्यै प्रयच्छ) रघुनन्दन बोले
हे देवि सीते तुमशीघ्रहीं मेरे साथ वनहिं चलौ और आपने हार पुनः और हूं भूषण उतारि शीघ्रहीं
वाशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती के अर्थ दै देउ ८० (सर्वधनं ब्राह्मणेभ्यः दत्त्वा वनं गच्छामहे इति उक्त्वा आशु ल
क्ष्मणेन द्विजान् आहूय भक्तिः) मैं भी सब धन ब्राह्मणों के अर्थ दैकै वनहिं चलताहों ऐसा कहि रघु-
नन्दन शीघ्रहीं लक्ष्मण करिकै ब्राह्मणों को बुलाय भक्ति ते सन्माने ८१ (गवांश्चतुर्दशतंधनानि वस्त्राणि
दिव्यानि विभूषणानि रघुवंशकेतुः मुदा ब्राह्मणेभ्यः ददौ कथं भूतेभ्यः कुटुम्बवद्भ्यः श्रुतशीलवद्भ्यः) गौयन
के वृन्द सैरुन सोन माणि आदि समूह धनरेशमी जरतारी ऊनी आदि समूह वसन किरीट कुण्डल
मालाकेयूरादि दिव्य भूषण इत्यादि सब वस्तु मंगाय रघुवंश केतु श्रीरघुनन्दन आनन्दते ब्राह्मणोंके
अर्थ देते भयेकसनकोजे कुटुम्ब वंत विद्वान् सुशीलहैं ८२ (सीतामुख्यानि आभरणानि अरुन्धत्यै ददौ च राम
मातुः सेवकेभ्यः अनेकधा धनं ददौ) जानकीजी अपने मुख्य भूषण अरुन्धतीके अर्थ देती भई पुनः रघुनाथ
जी आपनी माताके सेवकनके अर्थ अनेक प्रकारको धन देते भये ८३ (स्वकांतः पुरवासिभ्यः सेवकेभ्यः
च तथा एव पौरजानपदेभ्यः सहस्रशः ब्राह्मणेभ्यः) आपने महल के दासीदास पुरकेवासी सेवक तैसे
निश्चय करि पुरके अरुराज्यके जे हजारन ब्राह्मण आये इत्यादि सबके अर्थ रघुनाथजी धनदिये ८४
(लक्ष्मणः अपि सुमित्रां कौशल्यायै समर्पयत् धनुःपाणिः समागत्य रामस्य अग्रे व्यवस्थितः) लक्ष्मणजी

निश्चयकरि माता सुमित्रा तिनहिं कौशल्याके अर्थ अर्पन किये भावसौं पि दिये आप धनुष बाणहाथ में लैके आय रघुनाथजीके आगे खड़े भये ८५ ॥

रामःसीतालक्ष्मणश्चजग्मुःसर्वेनृपालयम् ८६ श्रीरामःसहसीतयानृपपथेग
च्छन्नशनैसानुजः पौरान्जानपदान्कुतूहलदृशःसानन्दमुद्वाक्षयन् ॥ श्यामःका
मसहस्रसुन्दरवपुःकान्त्यादिशोभासयन् पादन्यासपवित्रिताऽखिलजगत्प्रापाल
यन्तत्पितुः ८७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकाण्डेचतुर्थस्सर्गः ४ ॥

(रामःसीतालक्ष्मणःसर्वेनृपालयम्जग्मुः) रघुनन्दन जानकीपुनः लक्ष्मण इतिसब जन साथ ह्वै महाराज दशरथके मंदिरहि चलते भये ८६ (सानुजसीतयासहश्रीरामः श्यामः सहस्रकाम सुन्दरःवपुःकांत्यादिशोभासयन्) सहित लक्ष्मण सीता करिकै सहित श्रीराम श्याम वरण हजारों काम सम सुन्दर तन आपने तनकी प्रभा करिकै सब दिशनको प्रकाशित करते हुये (पादन्यासअ खिलजगत्पवित्रित) पिताकी प्रतज्ञा ताको पालत ताते भूमि में पायें धरत ताते सम्पूर्ण जगत्को पावन करते हुये (कुतूहलदृशःपौरान्जानपदान्सानन्दमुद्वाक्षयन्शनैर्नृपपथेगच्छन्पितुःआलयंत प्राप) कौतुक देखनेवाले पुरवासी तथा राज्यवासी जो राहके दोऊ दिशिखड़ेहैं तिनहिं आनन्द सहित देखते हुये धीरा धीरा नृपपथ जो सड़क तामें चलेजातेहुये पिताके मंदिरमें प्राप्तभये अर्थात् पिताके मन्दिरको चलेजात समयकी शोभाको वर्णन करतकि लक्ष्मण जानकी सहित श्रीरघुनन्दन श्यामवर्ण हजारन काम समसुन्दर तनताकी प्रभाकरिकै सबदिशा प्रकाशित करतेहु ये पिताकी प्रतिज्ञा पालतताते भूमिपै पायेंधरत सब जगको पावन करते हुये पुनः राज्याभिषेक समय वनगमन इत्यादि अद्भुत तमाशा देखने वाले पुरवासी राज्यके लोग जो खड़ेहैं तिनको आनन्द सहित देखते हुये धीरा धीरा राजमार्गमें चले जातेहुये पिताके धाममें पहुँचे ८७ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेकौशल्यालपणजानकी
प्रभुसंवादवर्णनोनामचतुर्थःप्रकाशः ॥ ४ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ आयान्तंनागरादृष्ट्वा मार्गेरामंसजानकीम् ॥ लक्ष्मणेनस
मंवीक्ष्यऊचुःसर्वेपरस्परम् १ कैकेय्यावरदानादिश्रुत्वादुःखसमावृताः॥ वतराजा
दशरथःसत्यसन्धमिप्रयंसुतम् २ स्त्रीहेतोरत्यजत्कामीतस्यसत्यवतःकुतः ॥ कैके
यीवाकथंदुष्टारामंसत्यंप्रियङ्करम् ३ विवासयामासकथंकूरकर्माऽतिमूढधीः ॥
हेजनानात्रवस्तव्यंगच्छामोऽद्यैवकाननम् ४ यत्ररामःसभार्यश्चसानुजोगन्तु
मिच्छति ॥ पश्यन्तुजानकीसर्वेपादचारेणगच्छतीम् ५ पुंभिःकदाचिदृष्ट्वाजानकी
लोकसुन्दरी ॥ सापिपदेनगच्छन्तीजनसङ्क्षेप्वनावृता ६ ॥

सवैया ॥ निज मंदिरते पितुधाम चले निरखै पुरलोग विपादभरो । पितुवन्दिवसे तमसातटगंग
मिले सुनि पादहि लायगरो॥ सजटामहिसोवत देखि दुखी गुहलक्ष्मण तासु विपाद हरो । सिय
सानुज राघव वैजसुनाथहिये विचनित्य निवास करो १ (लक्ष्मणेनसमंसजानकीमरामंमार्गेआयांतं

दृष्टवानागरास्सर्वेवीक्ष्यपरस्परंऊचुः) लक्ष्मण करिकै समेत सहित जानकी रघुनन्दन जोहैं तिनहिं राहमें आवत देखि नगरवासी सब सुकुमारता देखि आपुसमें वार्ता करते भये १ (कैकेय्या) कैकेयी को महाराज वरदान दिये ताते रघुनन्दन बनहि जातेहैं इत्यादिकथा सुनिकै दुःखपीडित सब कहत कि (वत) अर्थात् बड़े खेदकी बातहै कि राजादशरथ कैसे ह्वै गये जो सत्यव्रत धारी प्रियपुत्र रघुनन्दन तिनहिं २ (कामीस्त्रीहेतोःअत्यजत्तस्यसत्यवतःकुतः) जो कामबशस्त्रीके प्रियत्वहेत रघुनन्दन को त्यागततौ महाराज की सत्यता कहाहै (वाकैकेयीदुष्टाकथंरामसत्यप्रियंकरं) वाकै केयी दुष्टा पूर्व कैसे रघुनन्दन सत्यसंधतिनहिं प्यार करती रही जो प्रिय पुत्रहि ३ (अतिमूढधीःक्रूरकर्माकथंविवासयामास) जाकोहानि लाभनहीं सूझत अत्यंतमूढ बुद्धी कुटिल कर्मकरने वाली कैसे रघुनन्दन को बनहिपठाई (हेजनाअत्रनवस्तव्यंअद्यैवकाननंगच्छामः) हे पुरजनौ इहां नबसौ कै केयी के नगरमें रहना उचित नहीं है अबहीं उसी बनहिं चलते हैं ४ (सानुजःचसभार्यःरामःयत्रगंतुंइच्छति) सहित छोटेभाई पुनःसहित जानकी रघुनन्दन जिस बनहिं जानेकीइच्छाकरते हैं तहैं चलव(सर्वपश्यं तुजानकीपादचारेणगच्छतीम्) सबजने देखौ जानकी ऐसी सुकुमारी पैदरचली जाती हैं ५ (कदाचिदपुंभिःदृष्ट्वालोकसुन्दरीजानकीसाअपिअनावृताजनसंधेपुपादेनगच्छन्ती) जाको कबहू पुरुषोंने देखा नहीं पुनः लोकमें एकही सुन्दरी सुकुमारी जानकी सोऊ निश्चय करि परदारहित जननके विषे पावन करिकै चलती हैं ६ ॥

रामोऽपिपादचारेणगजाश्वादिविवर्जितः ॥ गच्छतिद्रक्ष्यथविभुंसर्वलोकैकसुन्दरम् ७ राक्षसीकैकेयीनाम्नीजातासर्वविनाशिनी ॥ रामस्यापिभवेदुःखंसीतायाः पादयानतः ८ बलवान्विधिरेवात्रपुंप्रयत्नोहिदुर्बलः ॥ इतिदुःखाकुलेचंदेसाधूनांमुनिपुंगवः ९ अत्रवीद्वामदेवोऽथसाधूनांसंघमध्यगः ॥ मानुशोचथरामंवासीतांवावचमितत्त्वतः १० एषरामःपरोविष्णुरादिनारायणःस्मृतः ॥ एषासाजानकी लक्ष्मीर्योगमायेतिविश्रुतः ११ असौशेषस्तमन्वेतिलक्ष्मणारुणश्च सांप्रतम् ॥ एषमायागुणैर्युक्तस्तत्तदाकारवानिव १२ ॥

(सर्वलोकैकसुन्दरम्विभुंन्द्रक्ष्यथरामःअपिगजाश्वादिविवर्जितःपादचारेणगच्छति) जो सब लोकनमें एकही सुन्दर समर्थ स्वामी हैं तिनहिं देखिये रघुनन्दन निश्चयकरि हाथी घोडादि वाहनबिना पायँन की चाल करिकैचले जाते हैं तब हमको कौन दुर्घटनाहैइतिभावः७ (सर्वविनाशिनीकैकेयीनाम्नीराक्षसीजातासीतायाःपादयानतःरामस्यअपिदुःखंभवेत्) हम सबको नाशकरिवे हेत कैकेयी नामे कोऊराक्षसी उत्पन्न भईहै काहेते इसीकी दुष्टताते ऐसीदशाभई कि सीताको पायँन चलनेते रघुनन्दनको भी निश्चय करिकै दुःख होई८ (अत्रविधिःएवबलवान्पुंप्रयत्नोहिदुर्बलःइतिदुःखाकुलेसाधूनांचंदेमुनिपुंगवः) इहां विधाताकी गति निश्चयकरिकै बलवान् है अरुसंसारी पुरुषोंकी प्रकर्ष यत्ननिश्चय करिकै निर्वलहै भाव भाग्य उदयभयेपर किसी की उपाय नहीं चलतीहै जो होनहार है सोई होताहै इत्यादि दुःख करिकै व्याकुल साधुनके चन्दमें मुनिश्रेष्ठ ९ (साधूनांसंघमध्यगःवामदेवःअथअत्रवीतरामंवासीतांवामाअनुशोचथस्तत्त्वतःवचिम्) साधुनके संघ मध्य स्थित जो वाम देवसों बोलते भये कि राम अथवा सीता वा लक्ष्मण तिनहिं मति शोच करौ इनको सत्य तत्त्व में कहता हौं

सोसुनहु १० (आदिनारायणःस्मृतःपरोविष्णुःएपरामःयोगमायाइतिविश्रुतःलक्ष्मीःसाएषाजानकी) जो आदि नारायण सुनि परतेहैं प्रकृतितेपरे विष्णुलोकनके पालनहारे थेरामहैं तथा योगमाया ऐसा जो सुनि परताहै लक्ष्मी सोई ये जानकी हैं ११ (तंअनुलक्ष्मणइतिआख्याअसौशेषःचसांप्रतममाया गुणैःयुक्तःएतत्तत्तत्आकारवान्इव) तिस रघुनन्दनके पीछे जाने वाले जो लक्ष्मण ऐसा नाम प्रसिद्ध सो शेषहैं ते सब यासमयमें माया गुणों करिकैं युक्तहैं त्यहि माया की जो जो चेष्टा होती है तव एभी ताही ताही आकार बंत सम दिखतेहैं १२ ॥

एषएवरजोयुक्तोब्रह्माऽभूद्विश्वभावनः ॥ सत्त्वाविष्टस्तथाविष्णुस्त्रिजगत्प्रतिपा
लकः १३ एषरुद्रस्तामसोतेजगत्प्रलयकारणम् ॥ एषमत्स्यःपुराभूत्वाभक्तंवैव
स्वतमनुम् १४ नाव्यारोप्यलयस्यांतंपालयामासराघवः॥समुद्रमथनेपूर्वमंदरेसु
तलंगते १५ आधारयत्स्वयष्ट्रेऽद्रिंकूर्मरूपीरघूत्तमः ॥ महीरसातलंयाताप्रलयेसू
करोऽभवत् १६ तोलयामासदंप्राग्रेतांशोर्णीरघुनन्दनः ॥ नारसिंहवपुःकृत्वा
प्रह्लादवरदःपुरा १७ त्रिलोककंटकरक्षःपाटयामासतन्नखैः ॥ पुत्रराज्यंहतदृष्ट्वा
हृद्यदित्यायाचितःपुरा १८ ॥

(एपरजःयुक्तःविश्वभावनःएवब्रह्माभूततथासत्त्वाविष्टःत्रिजगत्प्रतिपालकःविष्णुः) इनहीं रघुनन्द
न रजोगुण युक्त हवै संसार को उत्पन्न करण हारे निश्चय करि ब्रह्मा होतेहैं ताही भांति सतोगुण
युक्तहवै तीनहूं लोकन के पालन हार विष्णु होतेहैं १३ (अंतजगत्प्रलयकारणम्एपतामसोरुद्रः)
अंत काल में जगतके प्रलय करणे कारण इनही राम तमोगुण युक्त रुद्र होतेहैं (वैवस्वतमनुभक्तं
एपपुरामत्स्यःभूत्वा) वैवस्वत नामे जो मनु भक्त तिनके हेत इनही पूर्व काल में मत्स्य रूपभये १४
(नाव्यारोप्यराघवःलयस्यांतंपालयामास) नावपर बैठारि मत्स्य रूपते राघव प्रलयकाल पर्यंत
प्रजन सहित मनुकी रक्षा किये (पूर्वसमुद्रमथनेमन्दरेसुतलंगते) पूर्वकाल समुद्र मथत समय
मन्दराचल पतालहि चलोजात संते १५ (कूर्मरूपीरघूत्तमःस्वष्ट्रेऽद्रिंकूर्मरूपधरि
रघुनन्दन अपनी पीठिपर पहार धारण किये तव सिन्धु मथा गया (प्रलयेमहीरसातलंयातासूकरः
अभवत्) प्रलय काल के जल में भूमि रसातल को जातीरहै तव सूकर रूप भये (रघुनन्दनःतांशो
णीन्दंप्राग्रेतोलयामास) सूकर रूपते रघुनन्दन पृथ्वी जो है ताहि अपने दांतेकी नोकपरधारणकिये
१६ (पुराप्रह्लादवरदःनारसिंहवपुःकृत्वा) पूर्वकालमें प्रह्लादकोबरदेनहारे नृसिंहरूपभये १७ (रक्षःत्रि
लोककंटकतनखैःपाटयामास) नृसिंह रूपते रघुनन्दन प्रह्लादकी रक्षाकिये अरू तीनिहूं लोकनको
कंट भावदुःखदायक हिरण्यकशिपु ताहि आपने नखोंकीरकै पेटफारि मारिडारे (पुत्रराज्यंहितदृष्ट्वा
एवाग्रदित्यापुरायाचितः) पुत्र जो इंद्र तिनकी राज्य निश्चय करिहरिजात दोखि अर्थात् बलिने छीनि
लिया तव इंद्रकीमाता अदितिने पूर्वकालमें रघुनन्दनते प्रार्थनाकरि अपनापुत्र होनेको वरमँगा १८ ॥

वामनत्वमुपागम्ययाञ्चयाचाहरत्पुनः ॥ दुष्टक्षत्रियभूभारनिवृत्त्यैभार्गवोऽभवत्
१९ सएवजगतांनाथइदानीरामतांगतः ॥ रावणादीनिरक्षांसिकोटिशोनिहनि
ष्यति २० मानुषैवमरणंतस्यदृष्टंदुरात्मनः ॥ राज्ञादशरथेनापितपसाराधितो
हरिः २१ पुत्रत्वाकांक्षयाविष्णोस्तदापुत्रोभवद्धरिः ॥ सएवविष्णुःश्रीरामोराव

णायवधायहि २२ गताद्यैववनंरामोलक्ष्मणेनसहायवान् ॥ एषासीताहरेर्माया
सृष्टिस्थित्यंतकारिणी २३ राजावाकैकयीवाऽपिनात्रकारणमएवपि ॥ पूर्वेषुनारदः
प्राहभूभारहरणायच २४ ॥

(वामनत्वंउपागम्यचयाञ्चयाअहरत्पुनःक्षत्रियदुष्टभूभारनिवृत्त्यैभार्गवःअभवत्) वामन रूपधरि
कै रघुनन्दन भिक्षाको वहाना करिकै बलिते छीनि पुनःराज्य इंद्रको दिये जब सहस्रबाहु आदि क्षत्री
दुष्टभये तिनको भूमिपै भार भया ताको नाशकरणे हेत भृगुवरपरशुरामभये १९ (सजगतांनाथइन्द्रा
नीएवरामतांगतःरावणादीनिकोटिशःरक्षांसिनिहनिष्यति) सोई जगत्केनाथ अवरामनामे अंवतीर्ण भये
सोवनको जायकारण लगाय रावण इत्यादि करोरिनरक्षस जो त्रिलोक दुःख दायक भूमिपै भारहैं
तिनहिं नाशकरि हैं २० (दुरात्मनःतस्यएवमानुषेणमरणमदृष्टंराज्ञादशरथेनअतितपसाहरिःआरा
धितः) दुष्टात्मा रावणताकी निश्चय करि मनुष्यही के हाथोंकरिकै मरण देखागया ताते मनुष्य
रूपधरे अरु महाराज दशरथने निश्चय करि पुत्रहोने हेत पूर्वजन्ममें तपस्याकरि भगवान्को आरा-
धन किये २१ (विष्णोःपुत्रत्वाकांक्षयातदाहरिःपुत्रःअभवत्सविष्णुःएवश्रीरामःहिरावणादिवधाय) वि-
ष्णु ही को पुत्र होने की कांक्षा करिकै आराधन किये तात हरि आपही आय दशरथ के पुत्र भये सो
ई विष्णु निश्चय करि श्रीराम हैं सो निश्चय करि रावणादिक राक्षसों के मारणे हेत २२ (सहाय
वान्लक्ष्मणेनरामःअथएववनंगतःसृष्टिस्थितिअंतकारिणीहरेःमायाएषासीता) सहाय वंत लक्ष्मण
करिकै सहित रघुनन्दन आजु निश्चय करि वनहिं जायेंगे अरु सृष्टिकी उत्पत्ति पालन संहार करण
हारी हरिकी माया ये सीता हैं २३ (राजावाअपिकैकयीवाअत्रकारणमएवपिनचभूभारहरणायपू
र्वेषुःनारदःप्राह) राजा विना विचारे वर दिया अथवा निश्चयकरि कैकयीने वनवासदिया इत्यादि
कारण इहां न मानो स्वइक्षित वनहि जातेहैं पुनः भूमिको भार हरनेहेत वन जानेको कल्हिही ना-
रद कहियेहैं २४ ॥

रामोऽप्याहस्वयंसाक्षात्श्वोगमिष्याम्यहंवनम् ॥ अतोरामंसमुद्दिश्यचिंतांत्यज
तवालिशाः २५ रामरामेतियेत्यंजपन्तिमनुजामुवि ॥ तेषामृत्युभयादीनिन
भवंतिकदाचन २६ कापुनस्तस्यरामस्यदुःखशङ्कामहात्मनः ॥ रामनाम्नैवमु
क्तिःस्यात्कलौनान्येनकेनचित् २७ मायामानुषरूपेणविडंबयतिलोककृत ॥ भ
क्तानांभजनार्थायरावणस्यवधायच २८ राज्ञश्चाभीष्टसिद्ध्यर्थमानुषंवपुराश्रि
तः ॥ इत्युक्त्वाविररामाथवामदेवोमहामुनिः२९ श्रुत्वातेऽपिद्विजाःसर्वे रामंज्ञात्वा
हरिंविभुम् ॥ जहुर्हृत्संशयग्रंथिराममेवान्वर्चितयन् ३० ॥

(रामःसाक्षात्स्वयंअपिआहअहंवनंदवःगमिष्यामिअतःवालिशाःरामंसमुद्दिश्यचिंतांत्यजत) रघु-
नन्दन साक्षात् आपही निश्चय करि नारद सों कहेरहैं कि मैं वनहि कल्हि प्रभातही जाउँगो इस
कारणते हेमूढो रघुनन्दनहि वनजानो देखि जो चिन्ता करतेहो कि इनको दुःख होइगो यह त्याग
करो ये अखंड आनन्दरूपहैं २५ (भुवियेमनुजानित्यंरामरामइतिजपंतितेषामृत्युभयादीनिकदाचन
नभवंति)भूमिपै जे मनुष्य नित्यहीं रामराम ऐसा जपतैहैं तिनको मृत्यु आदिक भय कवहूं नहींहो
ताहै भाव जन्म मरणादि भव दुःखोंते छूटि जातेहैं २६ (कलौरामनाम्नाएवमुक्तिःस्यात्अन्येनकेन

चित्तनुपुनः तस्य महात्मनः रामस्य कादुःखशङ्का) कलियुगमें राम नामही करिकै निश्चय मुक्तिहोती है और काहू साधन करि नहीं होती है तब फिरि तिन महात्मा रघुनन्दनको क्या दुःख होनेकी शङ्का करतेहौ २७ (रावणस्य बधाय च भक्तानां भजनार्थाय मायामानुषरूपेण लोककृतविडम्बयति) रावणको बध करने अर्थ पुनः भक्तनको स्वतन्त्र भजन करावने अर्थ दिव्य मायामय मनुष्य रूप करिकै लोकको आपने उत्तम कर्म दर्शाय शिक्षा करनेहैं उत्तम धर्म उपदेशतेहैं २८ (चराज्ञः अभीष्टसिद्ध्यर्थमानुषं वपुः आश्रितः इति उक्त्वा अथ महासुनिः वामदेवः विरराम) पुनः राजा दशरथ ईश्वरको पुत्र करि पावनेको आराधन किया तिनको मनोरथ पूर्ण करिवेहेत मनुष्य तन ग्रहण किये ऐसा करि तब महासुनि वामदेव चुपायरहे २९ (ते सर्वे द्विजा अपिश्रुत्वा हरिं विभुं रामं ज्ञात्वा हृत्संशयग्रं धिं जहुः राम एव अनुचिन्तयन्) ते सब ब्राह्मण निश्चय ऐश्वर्यमय वामदेवके वचन सुनिकै हृदयमें जो संशयग्रं धारहै भाव रघुनन्दनको मनुष्य मानेरहैं सो ग्रन्थीभेदन करि भावसंशय त्यागि हरि समर्थ जानि रघुनन्दन जोहैं तिनहिं चिंतवन करनेलगे ३० ॥

यद्द्विचिंतयेन्नित्यं रहस्यं रामसीतयोः ॥ तस्य रामे दृढा भक्तिर्भवेद्विज्ञानपूर्विकाः ३१
रहस्यंगोपनीयं वयूयं वैराघवप्रियाः ॥ इत्युक्त्वा प्रययौ विप्रस्तेऽपिरामं परं बिदुः ३२
ततो रामः समाविश्य पितृगेहं मवारितः ॥ सानुजः सीतया गत्वा कैकेयीमिदमब्रवीत् ३३
आगतास्मो वयं मातस्त्रयस्ते समतं वनम् ॥ गतुं कृतधियः शीघ्रमाज्ञापयतु नः पिता ३४
इत्युक्त्वा सहसोत्थाय चीराणि प्रददौ स्वयम् ॥ रामाय लक्ष्मणायाथ सीतायै च पृथक् पृथक् ३५
रामस्तु बस्त्राण्युत्सृज्य वन्य चीराणि पर्यधात् ॥ लक्ष्मणोऽपि तथा चक्रे सीता तन्न विजानती ३६ ॥

(रामसीतयोः इदं रहस्यं नित्यं चिंतयत तस्य विज्ञानपूर्विकारामे दृढा भक्तिः भवेत्) श्रीरघुनन्दन जनक नंदिनी की यह जो रहस्य भाव माधुर्यमें ऐश्वर्य गुप्त चरित्र ताहि जो पुरुष नित्यहीं चिन्तवन ध्यान करैगो ताको उत्तम ज्ञान सहित रघुनन्दन बिपेपुष्ट भक्तिहोयगी ३१ (वः यूयं वैराघवप्रियाः रहस्यंगोपनीयं इति उक्त्वा प्रययौ ते विप्रा अपिरामं परं बिदुः) वामदेव कहत हे ब्राह्मणो तुम को रघुनन्दन परमप्रिय हैं ताते इस रहस्य को गुप्त राखेउ भावबाहेर राजकुमारवत् व्यवहार किहेउ अंतरते परब्रह्मजाने रहेउ ऐसा कहि वामदेव चले गये अरु सुनने वाले ते सब ब्राह्मण रघुनन्दन को परब्रह्मकरिजाने ३२ (ततो रामः सीतया सानुजः अवारितः पितृगेहं समाविश्य गत्वा कैकेयीं ददं अब्रवीत्) तदनन्तर रघुनन्दन सीता लक्ष्मण सहित द्वार पर बिनारुके पिता को जो मन्दिर है तामें प्रवेश करि भीतर जाय कैकेयी प्रति ऐसा वचन बोले ३३ (मातः ते सम्मतं वनं गंतुं कृतधियः वयं त्रयः आगतास्मः नः पिता शीघ्रमाज्ञापयतु) हे मातः तुम्हारा सम्मत जो वन तहां को जाने की बुद्धि करि हम तीनि हूं जने तयार हूवै आये हैं अब ऐसी उपाय करौ जामें हमको पिता शीघ्रही वन जाने की आज्ञा देवें भाव जाने में जो पिता को दुःख है ताको दोष हम परन आवै ३४ (इति उक्त्वा स्वयं सहसा उत्थाय अथ रामाय लक्ष्मणाय च सीतायै पृथक् पृथक् चीराणि प्रददौ) ऐसा रघुनन्दन कहे तब कैकेयी आपही शीघ्र उठी तब रघुनन्दन के अर्थ लक्ष्मण के अर्थ पुनः जानकी के अर्थ अलग अलग मुनि वसन लाइ देती भई ३५ (तुरामः बस्त्राणि उत्सृज्य वन्य चीराणि पर्यधात् तथा अपि लक्ष्मणः चक्रे तत् सीता न विजानती)

पुनः रघुनन्दन पूर्व के वसन उतारि कैकेयी के दिये वन योग्य वसन पहिरे ताही प्रकार लक्ष्मणौ जी कीन्हे तिन वनवीर पहिरनेकी रीति जानकीजी नहीं विशेषि जानती हैं ताते न पहिरे सकीं ३६॥

हस्ते गृहीत्वारामस्य लज्जयामुखमैक्षत ॥ रामो गृहीत्वा तच्चीरमंशुके पर्यवेष्टयत् ३७ तद्दृष्ट्वा रुरुदुःसर्वे राजदाराः समंततः ॥ वशिष्ठस्तु तदा कर्ण्यरुदितं भर्त्सयन् रूपा ३८ कैकेयी प्राह दुर्दृष्टे राम एव त्वया वृतः ॥ वनवासाय दुष्टे त्वं सीतायै किं प्रयच्छसि ३९ यदि रामं समन्वेति सीता भक्त्या पतिव्रता ॥ दिव्यांबरधरानित्यं सर्वाभरणभूषिता ४० रमयत्वनिशं रामं वनदुःखनिवारिणी ॥ राजा दशरथोऽप्याह सुमंत्रं रथमानय ४१ रथमारुह्य गच्छन्तु वनं वनचरप्रियाः ॥ इत्युक्त्वा राममालोक्य सीतां चैव स लक्ष्मणम् ४२ ॥

(हस्ते गृहीत्वा लज्जयारामस्य मुखं ऐक्षत तत् चीरं रामः गृहीत्वा अंशुके पर्यवेष्टयत्) मुनि चौरको जानकीजी हाथमें लैलिया पहिरत नबना अरु संग जानाहि ठिकै कहेरही ताते लज्जा करिकै रघुनन्दन के मुख की दिशि देखने लगी भाव सौभागिनीको पतिसंयोगमें भूषण वसन उतारना उचित नही तामें स्वामी की आज्ञा प्रधान है इति जानि तौ न जो मुनि चौर हाथमें लिहेरही तिनहि रघुनन्दन आपने हाथमें लै कै पूर्व के वसन जो पहिरेरही तिनके ऊपर मुनि चौर लपेटि दिये भावभीतर पूर्ववत् राखौ बाहेर भरे बेष सम राखौ ३७ (तद् दृष्ट्वा राजदारास्सर्वे रुरुदुःसमंततः रुदितं आकर्ण्य तदा तु वशिष्ठः रूपां भर्त्सयन्) जब यह चरित्र भयाताको देखि राजा दशरथ की यावतरानीरही ते सब रोय उठी सो समग्र रोदन सुनितव पुनः वशिष्ठजी रिसाय कै कैकेयीको धुरुके ३८ (कैकेयी प्राह दुर्दृष्टे त्वयाराम एव वनवासाय वृतः दुष्टे त्वं सीतायै किं प्रयच्छसि) कैकेयी प्रति वशिष्ठ बोले हे खोटे कर्म करणे वाली तूने रघुनन्दन को निश्चय करि वनवासके अर्थ वरदान मांगा तौ दुष्टे तू सीता के अर्थ क्यों वन वसन देती है ३९ (सीता पतिव्रता यदि भक्त्यारामं समन्वेति नित्यं दिव्य अंबरधरा सर्व आभरणभूषिता) सीता पति व्रता हैं जो भाक्ति करिकै रघुनन्दन के संग जाती हैं तो नित्य ही दिव्य वसन धरे सब भूषण ते भूषित रहे ४० (वनदुःखनिवारिणी अनिशं रामं रमयतुराजा दशरथः सुमंत्रं अपि आहरथं आनय) वन में जो रघुनन्दन को दुःख होई ताको से वाते मिटावने वाली हैं दिनौराति रघुनन्दन हि रमावहिं गी ता समय राजा दशरथ सुमंत्र प्रति निश्चय करि कहे कि रथ सजिलावो ४१ (वनचरप्रियाः रथं आरुह्य वनं गच्छन्तु इति उक्त स लक्ष्मणं च एव सीतां रामं आलोक्य) वनचर वानर अथवा मुनि प्रिय हैं जिनको ऐसे रघुनन्दन रथपर सवार हवै बनहि जायँ ऐसा कहि सहित लक्ष्मण पुनः निश्चय करि सीता रघुनन्दन तिनहि देखि कै मह राज कैसी दशा को प्राप्त भये सो आगे कहत ४२ ॥

दुःखान्निपतितो भूमौ रुरोदाश्रुपरिप्लुतः ॥ आरुरोहरथं सीता शीघ्रं रामस्य पश्यतः ४३ रामः प्रदक्षिणं कृत्वा पतिरं रथमारुहत् ॥ लक्ष्मणः खड्गयुगलं धनुस्तूणीयुगं तथा ४४ गृहीत्वा रथमारुह्य नोदयामास सारथिम् ॥ तिष्ठतिष्ठ सुमंत्रेति राजा दशरथो ब्रवीत् ४५ गच्छ गच्छेति रामेण नोदितोऽचोदय द्रथम् ॥ रामे दूरं गते राजा मूर्च्छितः प्रापतद्भुवि ४६ पौरास्तु बालवृद्धाश्च वृद्धा ब्राह्मणसत्तमाः ॥ तिष्ठतिष्ठेति

रामेतिक्रोशन्तोरथमन्वयुः ४७ राजारुदित्वासुचिरंमानयंतुगृहंप्रति ॥ कौशल्या
धाराममातुरित्याहपरिचारकान् ४८ ॥

(रुरोदग्धपरिप्लुतः दुखाद्भूमौ निपतितः रामस्य पश्यतः सीताशीघ्रं रथं आरुरोह) रोवतनेत्रेन ते
आंशु वहावत दुःखते महाराज भूमिमें गिरिपरे अरु रघुनन्दनके देवतही जानकीजी शीघ्रही रथपर
चढ़ी भाव पूर्वकहेरही कि मैं आपके आगे वनहि चलींगी ताते पूर्वही चढ़ी ४३ (पितरंप्रदक्षिणं कृत्वा
रामः रथं आरुहत् लक्ष्मणः खड्गयुगलंतथाधनुःतूण्युगम्) पिता जोहैं तिनहिं प्रदक्षिणाप्रणाम करि
रघुनन्दन रथपै चढ़े अरु लक्ष्मण जी आपनी अरु रघुनन्दनकी ये दोऊ तरवारी तैसे धनुष तरकस
दोऊ ४४ (गृहीत्वारथं आरुह्य सारथिम् नोदयामास तिमिष्ठतिष्ठति राजा दशरथः सुमंत्रमब्रवीत्) सबअस्त्र
लैके लक्ष्मणों जी रथपर चढ़े तब सारथी जो सुमंत्र तिनहिं प्रभु आज्ञा दिये कि रथ चलावौ रथ हा
के तब ठाढ़होउ ठाढ़होउ ऐसा वचन दशरथ जी सुमंत्र प्रति कहते हैं ४५ (गच्छगच्छ इति रामे
ण नोदितः रथं अचोदयत् रामे दूरंगते मूर्च्छितः राजा भुवि प्रापतत्) गच्छगच्छ चलो चलो ऐसा रघुनन्दनके
आज्ञा देतसंते सुमंत्ररथहिहाकि दिये रघुनन्दन दूरिगये संते निराशताते मूर्च्छित है महाराज भूमिपर
गिरिपरे ४६ (तु शौरावाल्लुब्धाः च वृद्धब्राह्मणसत्तमाः रामतिष्ठतिष्ठति क्रोशन्तोरथमन्वयुः) पुरवासी
सबलरिका बूढ़ेतक पुनः वृद्ध ब्राह्मणजे उत्तम रहेते सब गोहरावत कि हे राम ठाढ़होउ ठाढ़होउ इत्या
दि वेगते पुकारत रथके पाछे धाये चले जातेहैं ४७ (राजा सुचिरं रुदित्वा परिचारकान् इति आहराम
मातुः कौशल्यायाः गृहंप्रति मां नयंतु) महाराज दशरथ बहुत वारतकरोवत परेरहे पुनः सेवकन प्रति
यह कहोकि रघुनन्दनकी माताजी कौशल्या तिनके मन्दिरहि मोहि लवायलयचलो भावजीवन प्रर्थत
केकेयी मेरी दृष्टिमें नपरै इसहेत शीघ्रलै चलो ४८ ॥

किञ्चित्कालं भवेत्तत्र जीवनंदुःखितस्य मे ॥ अत ऊर्ध्वं न जीवामि चिरं रामं विना कृ
तः ४९ ततो गृहंप्रविश्यैव कौशल्यायाः पपात ह ॥ मूर्च्छितश्च चिराद्वुध्वातूष्णीमे
वावतस्थिवान् ५० रामस्तु तमसा तीरंगत्वा तत्रावसत् सुखी ॥ जलं प्राश्य निराहारो
वृक्षमूलेऽस्वपद्भिः ५१ सीतया सह धर्मात्मा धनुःपाणिस्तु लक्ष्मणः ॥ पालया
मां सधर्मज्ञः सुमंत्रेण समन्वितः ५२ पौरास्सर्वे समागत्य स्थितास्तस्या विदूरतः ॥ श
क्ता रामं पुरं नेतुं नो चेद्गच्छामहे वनम् ५३ इति निश्चयमाज्ञायते षारामोतिबिरिम
तः ॥ नाहंगच्छामि नगरमेतेर्वैक्लेशभागिनः ५४ ॥

(दुःखितस्य मे तत्र किञ्चित्कालं जीवनं भवेत् अत ऊर्ध्वं रामं विना कृतः चिरं न जीवामि) वियोगते दुःखित
जो मैं तहां कौशल्याके मंदिरमें गये ते कुछकाल जीवन होई भाव यावत् सुमंत्र नहीं आवते हैं अरु
सुमंत्रके लौटि आये तिसके उपरान्त रघुनन्दन जो हैं तिनहिं विना देखे बहुतकाल न जीहों ४९
(ततः कौशल्यायाः गृहंप्रविश्यैव पपात ह च मूर्च्छितः चिराद्वुध्वातूष्णीमे वावतस्थिवान्) तदनन्तर
महाराज कौशल्याजी के मंदिरमें प्रवेश करि निश्चय करि भूमिमें गिरिपरे पुनः मूर्च्छित परेरहे बहु-
त बारमें चेत भया निश्चय करि मौन हवै बैठेरहे ५० (तुरामः विभुः तमसा तीरंगत्वा तत्र सुखी अवसत्
तं निराहारः जलं प्राश्य वृक्षमूलेऽस्वपत्) पुनः रघुनन्दन प्रभु तमसा नदी तीरगये तहां सुखपूर्वक
वास कीन्हे बिना भोजन कीन्हे जलपान करि वृक्षकी मूल समीप शयन कीन्हे ५१ (सीतया सह
सधर्मज्ञः सुमंत्रेण समन्वितः) ५२ (पौरास्सर्वे समागत्य स्थितास्तस्या विदूरतः) ५३ (इति निश्चयमाज्ञायते षारामोतिबिरिम
तः) ५४ ॥

हृधर्मात्मातुसुमंत्रेणसमन्वितःधर्मज्ञःलक्ष्मणःधनुःपाणिःपालयामास)सीता करिकै सहित धर्मात्मा रघुनन्दन भूमिमें समय कीन्हे पुनःसुमंत्र सहित धर्मको जाननेवाले जो लक्ष्मणते धनुष बाणहाथन में लिहे रघुनन्दनकी रक्षाहेत बैठेरहे ५२ (पौरास्त्वैसंभ्रागत्यतस्यअबिदूरतःस्थिताःरामंपुरनेतुंशक्ता नोचेत्वनंगच्छामहे) ताही समय पुर वासी लोगसब आय तिन रघुनन्दन के अबिदूरतः नगी चहीं स्थित भये यह निश्चय करि कि कितौ रघुनन्दनको लौटारिलैं चलेंगे जो रघुनन्दनहि पुरहि न लौ टारिसकेंगे तौ वनहि साथै सब चलेंगे ५३ (इतिनिश्चयंआज्ञायअतिविस्मितः रामः अहंनगरंनग च्छामि एतेवैकेशभागिनः) हमहूँ साथै चलेंगे यह पुरवासीन की निश्चय जानि अत्यन्त विस्मययुत रघुनन्दन बिचारे कि हम पुरहि तौ लौटि जायेंगे नहीं तौ येपुरवासी निश्चय करि साथ चलि वन में दुःख पावहिगे ५४ ॥

भविष्यंतीतिनिश्चित्यसुमंत्रमिदमब्रवीत् ॥ इदानीमेवगच्छामःसुमंत्ररथमान य ५५ इत्याज्ञप्तःपुमंत्रोपिरथंवाहैरयोजयत् ॥ आरुह्यरामःसीताचलक्ष्मणोपि ययुर्द्रुतम् ५६ अयोध्याभिमुखंगत्वाकिंचिद्दूरंततोययुः ॥ तेषूपिराममदृष्ट्वैवप्रां तरुत्थादुःखिताः५७रथनेमिगतंमार्गंपश्यंतस्तेपुरंययुः ॥ हृदिरामंससीतंतेध्याय न्तस्तस्थुरन्वहम् ५८ सुमंत्रोऽपिरथंशीघ्रंनोदयामाससादरम् ॥ स्फीतान्जनप दान्पश्यन्रामःसीतासमन्वितः ५९ गंगातीरंसमागच्छच्छृंगिवेराद्विदूरतः ॥ गंगादृष्ट्वा नमस्कृत्यस्नात्वासानंदमानसः ६० ॥

(भविष्यंतीतिनिश्चित्यसुमंत्रंइदंअब्रवीत्सुमंत्ररथंआनयइदानींएवगच्छामः)संगगये पुरवासीनको दुःखहोई ताते छोड़ि जानै ठीकहै ऐसा निश्चय करि रघुनन्दन सुमंत्र प्रति ऐसा वचन बोले हे सुमंत्ररथआनि ये इसीसमय निश्चयकरि हमचलेंगे ५५ (इतिआज्ञप्तःसुमंत्रःअपिवाहैःरथंअयोजयत्)रामःसीतालक्ष्मणःअपिआरुह्यद्रुतमययुः)रथलावौ ऐसीआज्ञापाय सुमंत्र निश्चय करिकै घोड़ेन करिकै रथयुक्त कीन्हे तब रघुनन्दन जानकी लक्ष्मण निश्चय करि रथपर चढ़ि तुरतहीं चले गये ५६ (किं चिद्दूरंअयोध्याअभिमुखंगत्वाततःययुःतेअपिप्रातःउत्थायरामंअदृष्ट्वाएवदुःखिताः)कुछदूरि अयोध्याकी सन्मुख रथहांके तदनन्तर वनहि गये अरुते सब पुरवासी प्रातउठे रघुनन्दन जो हैं तिनहिंन देखे तब निश्चय करि दुःखित भये ५७ (तेरथनेमिगतंमार्गंपश्यंतःपुरंययुःतेससीतंरामंहृदिध्यायन्तःअनुअहमस्तथुः)ते अयोध्यावासी सबरथकी पहिया जिधरगईहैं सोई राहदेखत २ अयोध्यापुरहि चले गये जबल्लिककी पता नपायेतबहारि मानि घरनको गये तहां सहित जानकी रघुनन्दन जो हैं तिनहिं हृदयमें ध्यानकरतेही एक एक दिन बितावतहुये अवधि आशबसेरहे ५८ (सुमंत्रः अपि सादरंशीघ्रंरथंनोदयामाससीतासमन्वितःरामःस्फीतान्जनपदान्पश्यन्) सुमंत्रभी सहित आदर घोड़ेनको चुचुकारते हुये शीघ्रताते रथहि हांकेचले जातेहैं अरु सीता सहित रघुनन्दन रथते ऐश्वर्यते परि पूर्ण राज्य ताहि ग्रामग्राम देखते जातेहैं ५९ (शृंगिवेरात्विदूरतःगंगातीरंसमागच्छत्तृगंगादृष्ट्वावैनमस्कृत्य सानन्दमानसः स्नात्वा) शृंगबेर पुरते थोरी दूरि पूर्व गंगातीरहिगये गंगाजीको देखि सीता लक्ष्मण सहित रघुनन्दन रथते उतरि नमस्कार कीन्हे पुनः सहित आनन्दमन गंगाजीमें स्नान कीन्हे ६० ॥

शिशपावृक्षमूलेसनिषसादरधूतमः ॥ ततोऽगुहोजनैःश्रुत्वारामागममहोत्सवः

(सुरोत्तमग्रहंतेदासःभगवन्भनगृह्णीष्वत्वत्प्रथमैसंचितानिफलमूलानिगृहाण) हेसुरोत्तम ब्रह्मा
दि देवतो मे श्रेष्ठ मे आपको दासहो हे भगवन् सर्व ऐश्वर्य परिपूर्ण लोकपालन हारे मोपर अनु
ग्रह करौ भाव अंगीकार करो आपके भोजन के अर्थ मेरे संचित किये जो फल मूलादि तिनहि अ-
हणकरौ ६७ (सुप्रीतःरामःतंआहसखेमवचनंशृणुनवषपंचवर्षाणिग्रामंगृहंनवेक्ष्यामि) प्रीति पूर्वक

रघुनन्दन त्यहि गुहं प्रति बोले हे सखे मेरो जो वचन ताहि सुनौ नव पुनः पांच अर्थात् चौदह वर्ष तक किसी गाउँ काहू घर मौं न प्रवेश करोंगो ६८ (अन्यैनदत्तंफलमूलादिकंवनोभुजेएतत्तत्सर्वं राज्यंममत्वंसखामेअतिवल्गुभः) सिवाय आपने हाथों के लाये और न करिके दिये हुये फल मूला दि हम नहीं भोजन करेंगे अरु यह जो तुम्हारी राज्य है सो मेरी है काहेते तुम सखा मोको अत्यन्त प्रियहौ ६९ (वटन्नरिसंआनाय्यअवल्लक्ष्मणेनसहितःरघुनन्दनःआदरात्जटामुकुटंवंध) गुहाते क हि वरगदको दूध मैमाय अब लक्ष्मण करिके सहित रघुनन्दन आदर ते भाव प्रसन्न मनते वारन में दूध लगाय जटा के मुकुट बांधते भये ७० (तुलीतयासहरायवःजलमात्रंसंप्राप्यलक्ष्मणेनहिकुशप णाद्यैःशयनंआस्तुतं) पुनः सीता करिके सहित रघुनन्दन भोजनरहित जलमात्र पान कीन्हे अरु लक्ष्मण जीने कुश पत्ता आदिके न करिके शय्या बिछाये ७१ (तत्रउवासयथापुरानगरग्रासादाग्नेस्तृष्ण तेपर्यंकइवतत्रवेदेह्यासुप्वाप) तहां दृष्ट तर वात्त करते भयं कौन भांति जैसे पूर्व अयोव्यानगर त्रिपे मन्दिर में रहते रहे तथा सुखपूर्वक जैसे बिछाये हुये पलंग पर ताही भांति कुश पत्तोंकी करीजा शय्या है तापर जानकी करिके सहित रघुनन्दन सुखपूर्वक सोवते भये ७२ ॥

ततोविदूरेपरिगृह्यचापंसवाणतूणीरधनुःसलक्ष्मणः॥रक्षरामंपरितोविपश्यन्गुहेनसद्विसशरासनेन ७३॥ इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअथो ध्याकाण्डेपंचमःसर्गः ५ ॥

(ततोसजरासनेनगुहेनसोद्विलक्ष्मणःतथनुःसवाणतूणीरचापंपरिगृह्यविदूरेपरितःपश्यन्रामंरक्ष) तदनन्तर सहित धनुष बाण जो निपादराजे त्यहि करिके सहित लक्ष्मणजी धनुष सहित बाण तरक संकटिमें बांधि वाम हांथमें धनुष चढ़ाय दहिनेमें बाणालिहे रघुनन्दनकी विश्राम भूमि ते थोरा बीच दिहे चारिहु दिशि देखत. राति भरि खड़े रघुनन्दनकी रक्षा करत रहे भाव पहरा देत रहे ७३ इति श्री रसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिंयत्रलभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे रघुनन्दनचंद्रगंवरपुर प्राप्तवर्णनोनामपंचमःप्रकाशः ५ ॥

सुसंरामंसमालोक्यगुहःसाऽश्रुपरिप्लुनः ॥ लक्ष्मणंप्राह्विनायाद्भ्रातःपश्यसिरा धवम् १ शयानंकुशपात्रौघसंस्तरेसीतियासह ॥ यःशेतेस्वर्णपथ्यैकेस्वास्तीर्णेभ वनोत्तमे २ ॥

सखैया ॥ लखि भूपरि सोवत रामतिया कहू भापि निपाद विपाद भरो । नयभाक्तिविवेक भरेवचन कहि लक्ष्मण तासु प्रबोध करो॥चलिप्रात महामुनि भेंटि भली विधि पूजि देखावत धामपरोवसि येसियतानुजरायवजीउरबैजसुनाथवनायवरो ॥ (रामंतुप्तंसंआलोक्यसाऽश्रुपरिप्लुतःगुहःविनयान् लक्ष्मणंप्राह्विनायाद्भ्रातःपश्यवंपश्यति) सहित जानकी रघुनन्दन जो भूमिपै सोवतहैं तिनहि देखिके करुणारस उत्पन्न भयो शोकस्थार्ड लय उरते प्रेम उमंगातवोंग विह्वल होगया ताते सहित आंशुवहत निपाद राल विनय पूर्वक लक्ष्मण प्रति बोला हे भाई रघुनन्दन जोहैं तिनहि देखिये भावपुरमें कैसे सुख में रहैं अब कैसे दुख में परहैं ? (उत्तमेभवनेस्वर्णपथ्यैकेसुआस्तीर्णैःयःशेतेसीतयासहकुशपात्रौ घसंस्तरेशयानं) केनक मणि जटिन सतखंडा जाल भरोखा चौवारी चन्दोवा भाँडै मणि दीपादि दिव्य इत्यादि उत्तम मन्दिर में सोने के पलंग पर तोसक फूलचादरि बिछी ढोरी कसी ऐसे सुन्दर

विछोना परजे रघुनन्दन सदा शयन करते रहें सोई अब जानकी करिके सहित रघुनन्दन कुश अरु पाता समूह विछेहुयेविछोने पर शयन किंहे २ ॥

कैकेयीरामदुःखस्यकारणविधिनाकृता ॥ मंथराबुद्धिमास्थायकैकेयीपापमाचर
त ३ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणःप्राहसखेशृणुवचोमम ॥ कःकस्यहेतुर्दुःखस्यकश्चेतुःसुख
स्यवा ४ स्वपूर्वार्जितकर्मवकारणसुखदुःखयोः ५ सुखस्यदुःखस्यनकोऽपिदाता
परोददातीतिकुबुद्धिरेपा ॥ अहंकरोमीतिवृथाऽभिमानःस्वकर्मसूत्रग्रथितोहि
लोकः ६ सुहृन्मित्रार्युदासीनद्वेष्यमध्यस्थवांधवाः ॥ रवयमेवाचरन्कर्मतथातत्र
विभाव्यते ७ सुखंवायदिवादुःखंस्वकर्मवशगोनरः ॥ यद्यद्यथागतंतत्तद्भुक्त्वा
स्वस्थमनाभवेत् ८ ॥

(विधिनारामदुःखस्यकारणविधिनाकृता कैकेयीमंथराबुद्धिमास्थायपापमाचरत्) विधाताने रघुनन्द
न के दुःखको कारण कैकेयी को किया जो कैकेयी मंथराकी जो कुबुद्धी ताहि धारण करि महापाप
कर्मकरती भई ३ (तत् श्रुत्वालक्ष्मणःप्राहसखेशृणुवचोमम ॥ कःकस्यहेतुः वासुखस्यहेतुःकश्च)
तौन निषाद राजके वचन सुनिके लक्ष्मणबोले हं सखे मेरा वचनसुनो कितके दुःख को कौनकारण
है अथवा कितके सुखको कारण कौन है भाव अरुने दुःख सुखको कारण आपही है दूसरा कोई नहीं
है ४ (पूर्वार्जितस्वकर्मवकारणसुखदुःखयोः) पूर्व जन्मों को किया हुआ जो शुभाशुभ कर्म है सोई
निश्चय करिके सुख दुःखको कारण है ५ (सुखस्यदुःखस्यदाताकःअपिनपरःददातिइतिपापकुबुद्धि
अहंकरोमीतिअभिमानःवृथालोकःस्वकर्मसूत्रग्रथितोहि) सुखवा दुःख देनेवालाकोऊ निश्चय क
रि नहीं है अरु और कोऊ दूसरा सुख दुःख देता है इत्यादि जो कहतेहैं तो यही कुबुद्धि है अरु जो
कहै कि मैं ऐसा करता हों इत्यादि अभिमान सो भी वृथा है काहेते लोकजन आपने कर्मरूप
वागामें गुटे हैं निश्चय करिके भाव जो अनेकन जन्म को किया शुभाशुभकर्म संचित हैं ताही मेंते
कुछ देहके साथ प्रारब्ध धागाडवजीवमें व्याप्त है सोई स्वभाव होतताही अनुकूलकर्म पुनःकरत ६
वत्स्वार्थ सहज सनेही सुहृद्वहें स प्रयोजन सनेही मित्र है सहज वैरी अरिहैं शत्रुता मित्रता रहित
उदासीन है प्रयोजनते वैर द्वेष्य है मिलाप करानेवाला मध्यस्थहैं देह सम्बन्धी वांधवहैं इत्यादि
(स्वयंएवकर्मआवर्त्ततत्रतथाविभाव्यते) जामें आपु निश्चय करिके जैसे कर्म करताहै तामें तैसे
हो शत्रु मित्रादि भाव देखि परताहै भाव जाके साथ जैसा कर्म करो सो तैसाही ह्वे जाताहै ७ ॥
(स्वकर्मवशगोनरःसुखंवायदिदुःखंस्वकर्मवशगोनरः) अपने कर्मन के
वश हवे मनुष्य सुख अथवा दुःख ज्यों ज्यों जैसा प्राप्त होताजाताहै त्यों त्यों भोग करिके तब म-
नुष्य स्वस्थमन होताहै भाव जबतक प्राग्बुद्धी दुःख सुख भोगिनहीं लेताहै तबतक रागद्वेषमय व्या-
पारमें धावा धावा फिरताहै जब सब भोगि भया तब किसी व्यापारमें मनुनहीं लागताहै ८ ॥

नमेभोगागमेवांश्चानमेभोगविवर्जनं ॥ आगच्छत्वथमागच्छत्वभोगवशगोभवे
तु ९ यस्मिन्देशेचकालेचयरमाह्वयनकेनवा ॥ कृतंशुभाशुभकर्मभोग्यंतत्तत्रनान्य
था १० अलं हर्षविषादाभ्यांशुभाशुभफलोदये ॥ विधात्राविहितंयद्यत्तदलंघ्यं

सुरासुरैः ११ सर्वदासुखदुःखाभ्यांनरःप्रत्यवरुध्यते ॥ शरीरंपुण्यपापाभ्यामुत्पन्नं
सुखदुःखवत् १२ ॥

(भोगआगमेवांछामेनभोगवर्जनेवांछामेनआगच्छतुअथमागच्छतुभोगवशगःअभवे) हे निपाद
राज सुख भोग प्राप्तीकी इच्छा हमको नहीं है तथा दुःख भोग अप्राप्तीकी इच्छा हमको नहीं है प्रा-
रब्ध बशते सुख प्राप्त होइ अरु चहै दुःख न प्राप्त होइ भाव सदा सुखै भोग प्राप्त रहै तबहुँ हमभोग
के वश नहीं होतेहैं अर्थात् रघुनन्दन अंगी हैं हम उनको एक अंगहैं जो हमहींको दुःख सुख नहीं
व्यापत तो रघुनाथजीमें दुःख सुख कैसे व्यापि सकेहैं १ (यस्मिन्देशेचयस्मिन्कालेचयस्मात्वा
येनकेनवाशुभाशुभकर्मकृतंतत्तत्रभोज्यंअन्यथा न) जिसदशमें पुनः जिस कालमें पुनः जोनेकारण
ते जिस किसीने शुभ यथा यज्ञ तीर्थव्रत दान तप पूजापाठ परोपकारादि अशुभ यथा हिंसा चोरी
पर स्त्री गमन झूठपर अपकारादि इत्यादि कर्म कियाहै ताको फल सुख दुःख सो जहैं वह जीवरही
तहां निश्चय करि भोगना परी अन्यथा न होई यथा मिताक्षरायां ॥ नोऽभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटि
शतैरपि।अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् १० (शुभाशुभफलोदयेहर्षविपादास्यांअलंविधात्रवि
हितंयत्तत्तत्सुरासुरैःअलंघ्यं) शुभ कर्मको फल उदय भये सुख तामें हर्ष अशुभ को फल उदय
भये दुःख तामें विपादइति हर्ष विषादकरि कै क्या हवैसक्ताहै काहेते शुभाशुभ कर्मनको फल वि-
धाताने जो जो रचि राखाहै सो देव दैत्यादि कोंकरिकै उलंघन नहींहवैसक्ताहै ११ (पुण्यपापाभ्यां
सुखदुःखवत्उत्पन्नंशरीरंसर्वदानरःसुखदुःखाभ्यांप्रत्यवरुध्यते) पुण्य पापों करिकै सुखदुःख युक्त
उत्पन्न शरीर सब कालमें मनुष्यको सुखदुःखों करिकै युक्त रहताहै भाव दुःख सुखमय शरीर है १२ ॥

सुखस्यानन्तरंदुःखदुःखस्यानन्तरंसुखम् ॥ द्वयमेतद्विजन्तूनामलंघ्यंदिनरात्रिव
त् १३ सुखमध्येस्थितंदुःखदुःखमध्येस्थितंसुखम् ॥ द्वयमन्योन्यसंयुक्तंप्रोच्यते
जलपङ्कवत् १४ तस्माद्वैरेणविद्वांसइष्टानिष्टोपपत्तिषुानहप्यन्तिनमुह्यंतिसर्वमा
येतिभावनात् १५ ॥

(सुखस्यअनन्तरंदुःखदुःखस्यअनन्तरंसुखंएतदिनरात्रिवत्द्वयंहिजन्तूनांअलंघ्यं) कैसा दुःख सुख
मय शरीरहै सो लक्ष्मण जी कहत हे निषादराज जब सुख होताहै ताके पाछे दुःख होता है अरु
जब दुःख होताहै ताके पाछे सुख होताहै ये दिनौराति सम दोऊ निश्चय करिकै आते जातेहैं ते देह
धारी को अलंघ्यहैं किसी के मिटाये मिटते नहींहैं १३ (सुखमध्येदुःखंस्थितंदुःखमध्येसुखंस्थितं
अन्योन्यजलपंकवत्द्वयंसंयुक्तंप्रोच्यते)काहेते सुखके पाछे दुःख दुःखके पाछे सुख होता है तापरकहत
कि जहां प्रसिद्ध देखने में सुखहै ताके बीचमें दुःख स्थितहै अरु जहां प्रसिद्ध दुःखदेखात ताके बीच
सुख स्थितहै इत्यादि परस्पर जल कीचर की नाई दोऊ मिले रहतेहैं ऐसा आचार्य कहत अर्थात्
पंद्रस भोजन पान गन्ध राग नृत्य भूषण बसन बाहन मन्दिर धन युवती इत्यादि भोगकरनासुख है
जब जीव रजोगुणते विषयाशक्त है सुखभोगमें परा तब पूर्वकी सुकृत तौ घटतजात अरु अनीति अ-
धर्मते असत्कर्म करते रहे जब सुकृति चुकी अरु पाप बढ़े तबै दुःख अर्थात् हानि बियोग रुज बन्धन
दरिद्र संकटादि परनेलगे तब बिलखाते हैं तथा तपस्या तीर्थगमन दान व्रत साधु ब्राह्मण गुरुजनों
की सेवा परोपकार इत्यादि को में श्रम करना दुःखहै जब जीव सत्गुणते श्रद्धासहित तपादिकों
में श्रम करनेलगा तबपूर्वकेपाप कटतेगये अरु सुकृति बढ़ती ई ताके प्रभावते सब भांतिके सुखहोने

लगे इति दुःखमें सुख सुखमें दुःखको मूल कारणहै तथा कार्यरूपमें भी जब सुख मिला तब विपया सक्ती ते काम क्रोध राग द्वेषादि अनेक विपमता जीवमें होत सोई दुःखहै अरु दुःखपरेपर विपमता जातरहत शुद्ध हवै ईश्वर को यादि करत सोई सुखहै यथा जलमें वोढा वोढामें जल मिला ताही मय भूमिहै तथा दुःख सुखमय देहहै १४ (सर्व मायाइतिभावनात्तस्मात् विद्वांस धैर्येण इष्ट उप- पत्तिपुष्ट्यांति न अनिष्टउपपत्तिपुमह्यन्तिन) संसार में दुःखसुख यह सब माया अर्थात् झूठा व्यापार है ऐसा विचारते छारासार जानि तिस कारणते ज्ञानवन्त पुरुष धीर्य करिकै मनोरथ प्राप्ति में हर्ष नहीं करतेहैं तथा मनोरथ हानि प्राप्तिमें मोह नहीं करते हैं सदा एकरस रहतेहैं १५ ॥

गुहलक्ष्मणयोरेवंभाषतोविमलंनभः ॥ बभूवरामःसलिलंस्पृष्ट्वाप्रातःसमाहि-
तः १६ उवाचशीघ्रसुदृढानावमानयमेसखे ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंनिषादाधिपति-
गुहः १७ स्वयमेवसुदृढानावमानिनायसुलक्षणाम् ॥ स्वामिन्नारुह्यतान्नोकासीत-
यालक्ष्मणेनच १८ बाह्येज्ञात्रिभिःसार्द्धमहमेवसमाहितः ॥ तथेतिराघवःसीता-
मारोप्यशुभलक्षणाम् १९ गुहस्यहस्तावालम्ब्यस्वयञ्चारुहदच्युतः ॥ आयुधादी-
न्समारोप्यलक्ष्मणोऽप्यारुरोहच २० गुहस्तान्बाह्यामासज्ञातिभिःसहितः
स्वयम् । गङ्गामध्येगतागङ्गांप्रार्थयामासजानकी २१ ॥

(एवंगुहलक्ष्मणयोःभाषनोःनभः विमलम्बभूवप्रातः रामःसलिलंस्पृष्ट्वासमाहितः) इसीभांति निपादराज लक्ष्मणके वार्ता करतहीं राति बीति गई आकाश अमलभया प्रात उठि रघुनाथजीजल स्पर्श भाव प्रातःक्रिया करि सावधान भये १६ (उवाचहेसखेमेसुदृढानावंशीघ्रंघानयरामस्यवचनं श्रुत्वानिषादाधिपतिःगुहः) निपादराज प्रति रघुनन्दन बोले कि हे सखे हमारे उतरने हेत सुन्दरि पुष्ट नाव शीघ्रही आनिये इत्यादि जो रघुनाथजी के वचन तिनहि सुनिकै निपादोंको राजा गुहानाम है जाको १७ (स्वयमेवसुलक्षणाम्दृढानावमानिनायस्वामिन्सीतयाचलक्ष्मणेननोकाआरुह्यताम्) निपादराज आपही जाय विविध वनी पुष्ट नाव आनि बोला हे रघुनन्दन स्वामी जानकी करिके लक्ष्मण करिकै सहित आप इस नावपर चढ़िये १८ (ज्ञातिभिःसार्द्धमहमेवसमाहितःबाह्येतया इतिराघव शुभलक्षणाम्सीतामारोप्य) निपाद राज बोले कि जब आप नावपर चढ़ो तो परिवार सहित हम निश्चय करि सावधानहवै नाव चलाई हे निपादराज जो कहतेहो तैसाही हांय ऐसा कहि रघुनन्दन शुभ लक्षणयुत जो सीता तिनहिं प्रथमै नावपर चढ़ाये १९ (चगुहस्यहस्तोआलम्ब्यच्युतःस्वयञ्चारुहत्आयुधादीन्समारोप्यचलक्ष्मणःअपिआसरोह) पुन गुहाके ढोऊहाथपकरि अच्युत रघुनाथजी आपहू चढ़े सब हथियारोंको नावपर धरि पुनः लक्ष्मणो चढ़े २० (ज्ञातिभिःसहितःगुहःस्वयंतान्बाह्यामासगंगामध्येगताजानकीगंगंप्रार्थयामास) जानकी रघुनन्दन लक्ष्मण सवार भये तब परिवार सहित गुहा आपही तिस नावको चलावता भया जब गंगाजिके बीचधारा मे नावगई तब श्रीजानकीजी करजोरि गंगाजी प्रति प्रार्थना पूर्वक वचन बोलतीभई २१ ॥

देविगंगेनमस्तुभ्यांनवृत्तावनवासतः ॥ रामेणसहिताऽहत्वांलक्ष्मणेनचपूजये २२
सुरामांसोपहारैश्चनानात्रलिभिरादृता ॥ इत्युक्त्वापरकूलांतशनेरुत्तायजग्मतुः
२३ गुहोऽपिराघवंप्राहंगमिष्यामित्वयासह ॥ अनुज्ञादैहिराजेंद्रनोचेत्प्राणांस्त्य

जाम्यहम् २४ श्रुत्वानैषादिबचनं श्रीरामस्तमथाब्रवीत् ॥ चतुर्दशसमाः स्थित्वा
दण्डके पुनरप्यहम् २५ आयास्याम्युदितं सत्यं नासत्यं रामभाषितम् ॥ इत्युक्त्वा
लिंग्यतं भक्तं समाश्वास्य पुनः पुनः २६ निवर्तयामास गुहं सोऽपि कृच्छ्राद्ययो गृहं ॥
तत्र मेध्यं मृगं हत्वा पक्त्वा हुत्वा च ते त्रयः २७ ॥

(देवि गंगे तुभ्यं नमः वनवासतः निवृत्ता लक्ष्मणेन चरामेण सहिता अहं त्वां पूजये) जानकी जी बोली
कि हे देवि गंगे तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मेरा यह मनोरथ सफल कीजे वनवासतः कुशल पूर्वक लौटि लक्ष्म
ण पुनः रघुनन्दन करिके सहित मैं तुम्हारी पूजन करोंगी २२ (सुरामांस उपहारैः च नाना वलिभिः आह
ता इति उक्त्वा परकुलांतशनैः उतीर्य जग्मतुः) सुरामांस पूजा की सामग्री वलिदानादिक अनंक उप-
चारों करिके आदरसहित पूजन करोंगी इत्यादि कहि पुनः दूसरे किनारे पहुँचि धीरेते उतरि लक्ष्मण
जानकी रघुनन्दन आगे चले गुहा को लौटने को कहे २३ (राघवं गुहः अपि आह त्वया सह गमिष्यामि राजे
न्द्र अनुज्ञादि हे नो चेत् अहं प्राणांस्त्यजामि) रघुनन्दन प्रतिगुहा निश्चय करिके बोला कि आप करिके
सहित महुँ वनहि चलेहों हे राजेन्द्र चलन की आज्ञा दीजे कदाचित् न संग लै चलोगे तो मैं प्राणे
त्याग करोंगी २४ (नैषादिबचनं श्रुत्वा अथ श्रीराम तं ब्रवीत् चतुर्दशसमा दण्डके स्थित्वा पुनः अपि अहम्)
निषाद के बचन सुनिके तब श्रीरघुनन्दन त्यहि निषाद प्रति बोले कि चौदह बर्ष दण्डक वनमें रहि
पुनः निश्चय करिके हम उहाँते लौटेंगे २५ (आयास्यामि सत्यं उदितं रामभाषितम् असत्यं) इति
उक्त्वा तं भक्तं आलिंग्य पुनः पुनः समाश्वास्य) तब पुनः तुम्हारे इहाँ आवोंगे यह सत्य ही कहता हों
क्योंकि राम अर्थात् हम असत्य बचन कभी नहीं भाषते हैं ऐसा कहि तौ न जो भक्त है ताहि उरमें
लगाय बारम्बार वाको समुझायकै २६ (गुहं निवर्तयामास सः अपि कृच्छ्रात् गृहं ययौ ते त्रयः तत्र मेध्यं मृगं
हत्वा पक्त्वा च हुत्वा) गुहा जो है ताहि लौटारे सो निश्चय करि बड़े क्लेशते घरहि लौटि जाता भया
लक्ष्मण जानकी रघुनन्दन ते तीनिहुँ जने तहां वनमें पावन मृग मारि पकाय वेद रीतिते बलि वैश्व
देवादि हवनादि कीन्हे २७ ॥

भुक्त्वा वृक्षदले सुप्त्वा सुखमास ततां निशाम् ॥ ततो रामस्तु वैदेह्या लक्ष्मणेन सम-
न्वितः २८ भरद्वाजाश्रमपदंगत्वा बहिरुपस्थिता ॥ तत्रैकं वटुकं दृष्ट्वा रामः प्राह
चहे बटो २९ रामो दाशरथिः सीतालक्ष्मणाभ्यां समन्वितः ॥ आस्ते अहिर्बनस्येति
ह्युच्यतां मुनिसन्निधौ ३० तच्छ्रुत्वा सहसा गत्वा पादयोः पतितो मुनेः ॥ स्वामिन् रा-
मः समागत्य वनाद् बहिरवस्थितः ३१ स भार्यः सानुजः श्रीमानाहमां देवसन्निभः ॥
भरद्वाजाय मुनये ज्ञापयस्व यथोचितम् ३२ तच्छ्रुत्वा सहसोत्थाय भरद्वाजो मुनी-
श्वरः ॥ गृहीत्वा धर्मचपाद्यं च रामसामीप्यमाययौ ३३ ॥

(भुक्त्वा वृक्षदले सुप्त्वा तानि शां सुखं आस ततो वैदेह्या लक्ष्मणेन समन्वितः तुरामः) भोजन करिके
वृक्ष के नये पत्तों की शय्या विछाय तापर शयन करि उस रातिमें सुख पूर्वक वास कीन्हे भोर भये तद-
नन्तर जानकी लक्ष्मण सहित पुनः रघुनन्दन चले २८ (भरद्वाजस्य आश्रमपदंगत्वा बहिः उपस्थिता
तत्र एकं वटुकं दृष्ट्वा च रामः प्राह चहे बटो) जाय प्रयागमें पहुँचि भरद्वाज ऋषिके आश्रम को गये द्वारपर
बाहेर, खड़े भये तहां एक ऋषि बालक को देखि पुनः रघुनन्दन बोले हैं बटो २९ (मुनिसन्निधौ इति

हिउच्यतांसीतालक्ष्मणाभ्यांसमन्वितःदाशरथीरामःवनस्थबहिःआस्ते)भरद्वाज मुनिके समीपमेंजाय
ऐसा कहो कि सीता लक्ष्मण सहित दशरथके पुत्र राम वनके बाहेर खड़ेहैं ३० (तत्श्रुत्वासहसाग
त्वामुनेःपादयोःपतितःस्वामिन् रामःसंआगत्यवनात्बहिःअवस्थितः) सो रघुनाथजीको बचन सुनि
मुनि बालक तुरतही जाय मुनि भरद्वाजके पाँयन परि बोला हे स्वामिन् रामचन्द्र आयेहैं सो वनते
बाहेर खड़ेहैं ३१ (सभार्यासःअनुजःदेवसन्निभःश्रीमान्सांआहभरद्वाजायमुनयेयथोचितमज्ञापयस्व)
सहित स्त्री सहित छोटे भाई देवतुल्य प्रकाशवन्त श्रीमान् रघुनाथजी मो प्रति कहे कि भरद्वाजमुनि
के अर्थ यथा उचिन होइ ता भांति हमारे आवनेको हाल कहोजाय ३२(तत्श्रुत्वामुनीश्वरःभरद्वाजः
सहसाउत्थायअर्घ्यंचपाद्यगृहीत्वाचरामसामीप्यंआययौ) ऋषि बालकको कहा हुआ बचन सो सुनि
कै मुनिनमें श्रेष्ठ भरद्वाज तुरतहीं उठे अर्घ्यपाद्य अर्थात् हाथ पग धोवन आचमनादि करनेहेत न्यारे
न्यारे पात्रनमें जल पुनः गन्धदल फूल धूप दीप नैवेद्यादि पूजनकी सामग्री लैकै पुनः रघुनाथजीके
समीपको मुनि आनन्द सहित जातेभये ३३ ॥

दृष्ट्वारामंयथान्यायंपूजयित्वासलक्ष्मणम् ॥ आहमेपर्णशालांभोरामराजीवलोच
न ३४ आगच्छपादरजसापुनीहिरघुनन्दन ॥ इत्युक्त्वोटजमानीयसीतयासहराघ
वो ३५ भक्त्यापुनःपूजयित्वाचकारातिथ्यमुत्तमम् ॥ अद्याहंतपसःपारंगतो
स्मिनवसंगमात् ३६ ज्ञातंरामतवोदंतंभूतंचागामिकंचयत् ॥ जानामित्वांपरा
त्मानंमाययाकार्यमानुषम् ३७ यदर्थमवतीर्णोऽसिप्रार्थितब्रह्मणापुरा ॥ यदर्थं
वनवासस्तेयत्करिष्यसिर्वैपुनः ३८ जानामिज्ञानदृष्ट्याऽहंजातयात्वदुपासनात् ॥
इतःपरंत्वांकिंवक्ष्येकृतार्थोऽहंरघूत्तम ३९ ॥

(सलक्ष्मणंरामंदृष्ट्वायथान्यायंपूजयित्वाआहभोरामराजीवलोचनमेपर्णशालां) सहितलक्ष्मण
रघुनन्दन तिनहिं देखि जैसा चाहिये ताही विधिते पूजनकरि भरद्वाज बोले हेराम कमलनयन
मेरा जो पत्तनरचित आश्रमहै तहां को ३४ (आगच्छरघुनन्दनपादरजसापुनीहिइतिउक्त्वासतिपास
हराववौउटजंमानीय) मेरे आश्रममें आइये हे रघुनन्दन आपने पायनकी धूरिकरिकै आश्रम पवित्र
कीजिये इत्यादि कहि सीता करिकै सहित लक्ष्मण सहित रघुनन्दन तिनहिं पर्णशालको लवाय
लाये ३५ (पुनःभक्त्यापूजयित्वाउत्तमंआतिथ्यंचकारतवसंगमात्अद्यअहंतपसःपारंगतोस्मि-) आ-
श्रम आयेपर पुनः भक्ति करिकै रघुनन्दनको पूजि उत्तम पाहुनकी रीति कंदमूल फलादि भोजन
कराय मुनि बोले हे रघुनन्दन आपके दर्शनते आजु हम तपस्याके पारगयन भाव तपस्या करने को
पूर्ण फल पावा ३६ (रामतवउदंतंयत्भूतंचयत्आगामिकंतज्ञातंत्वांपरात्मानंजानामिमाययाकार्य
मानुषं) हे रघुनन्दन आपको वृत्तान्त जो पूर्वहोचुका है पुनः जो आगे होनेवालाहै सोसब मैं जानता
हों अरु आपको परमात्मा जानताहों सोईपर रूप माया करिके जगत्के कार्य करिवेहेत भाव राव-
णादि खल मारनहेत भूभार उतारि धर्म स्थापन हेत मनुष्य तनु धरण किहेउहैं ३७ (पुराब्रह्मणा
प्रार्थितंयत्अर्थमवतीर्णःअसियत्अर्थतेवनवासःपुनःयत्वेकरिष्यसि) क्या जानताहों सो सुनिये पूर्व
ब्रह्माने प्रार्थना किया तिस कारण जौने अर्थ अवतार धरेउ जौनेअर्थ आपको वनवास भया पुनः
जो कार्य आगे करेंगे सो सब ३८ (त्वत्तुउपासनात्जातयाज्ञानदृष्ट्याअहंजानामिइतःपरंरघूत्तम

त्वाकिंवक्ष्येअहंकृतार्थः) आपकी उपासनाते उत्पन्न जो ज्ञानदृष्टि त्यहिकरिकै में सबजानताहों याते अधिक हे रघुनन्दन और क्या कहों दर्शनपाइ में धन्यभया ३९ ॥

यस्त्वांपश्यामिकाकुत्स्थंपुरुषंप्रकृतेःपरं ॥ रामस्तमभिवाद्याहसीतालक्ष्मणसंयुतः ४० अनुग्राह्यास्त्वयाब्रह्मन्वयंक्षत्रियत्रांधवाः ॥ इतिसंभाष्यतअन्योऽन्यमुषित्वामुनिसन्निधौ ४१ प्रातरुत्थाययमुनामुत्तीर्य्यमुनिदारकैः ॥ कृताप्लवेनमुनिनादृष्टमार्गेणराघवः ४२ प्रययौचित्रकूटाद्रिवालमीकेर्यत्रचाश्रमम् ॥ गत्वारामोथवालमीकेराश्रमंऋषिसंकुलम् ४३ नानामृगद्विजाकीर्णैर्नित्यपुष्पफलाकुलम् ॥ तत्रदृष्ट्वासमासीनंवालमीकिमुनिसत्तमम् ४४ ननामशिरसारामोलक्ष्मणेनचसीतया ॥ दृष्ट्वारामंरमानाथंवालमीकिलोकसुंदरम् ४५ ॥

(प्रकृतेःपरंपुरुषंकाकुत्स्थंत्वांयःपश्यामिसीतालक्ष्मणसंयुतःरामःतंअभिवाद्यआह) काहे में धन्यभयों कि प्रकृतिमायाताते परे आप परमात्मा पुरुषसोई ककुत्स्थवंशमें अवतीर्ण जो आप तिनहिं जो नेत्रन भरि देख्यों ताते धन्यभयों इति सुनि तब जानकी लक्ष्मण सहित रघुनन्दन भरद्वाज जो हैं तिनहिं प्रणामकरि बोले ४० (वयंक्षत्रियवान्धवाःब्रह्मन्त्वयाअनुग्राह्याः इतितेअन्योन्यंसंभाष्यमुनिसन्निधौउपित्वा) रघुनन्दन कहे कि हम तौ क्षत्रीकुल में उत्पन्न भये हैं हे ब्रह्मन् आप करिकै अनुग्रह करिबे योग्यहैं इत्यादि परस्पर वार्ता करतेहुये रातिभरि मुनिके समीपमें वास कीन्हे ४१ (प्रातःउत्थायराघवःमुनिदारकैःयमुनाउत्तीर्य्य) प्रातःकाल उठिकै रघुनन्दन मुनि बालकोंकी सहायता करिकै यमुना उतरे कौन भांति (कृताप्लवेनमुनिनादृष्टमार्गेण) कियाहै स्नान जिन्हों ने भाव यमुनामें अवगाहन करि थाहायाह जानेहैं तिन मुनियोंने दिखाई निस मार्ग करिकै उतरे ४२ (चित्रकूटअद्रिचयत्रवालमीकेःआश्रमंययौअथरामःऋषिसंकुलंवालमीकेःआश्रमंगत्वा) चित्रकूट पर्वत पुनः जहां वालमीकिजीको आश्रमहै तहांगये तब रघुनन्दन जो ऋषिन करिकै परिपूर्ण भराहै वालमीकिजी को आश्रम तहां गये ४३ (नित्यपुष्पफलाकुलमूनानामृगद्विजाकीर्णैर्नित्यमुनिसत्तमंवालमीकिसंभाषी नंदृष्ट्वा) जहां नित्यही फूल फलनते परिपूर्ण वृक्षहैं भूमिमें अनेक रंगके मृग वृक्षनपर अनेकपक्षी भरे हैं तहां मुनिनमें उत्तम जो वालमीकि तिनहिं बैठे देखिकै ४४ (लक्ष्मणेनचसीतयारामःशिरसाननामलोकसुंदरंरमानाथंरामंवालमीकिःदृष्ट्वा) लक्ष्मण जानकी सहित रघुनन्दन शीश नवाइ प्रणाम कीन्हे जो लोकमें एक इनहीं सुन्दरहैं दूसरा नहीं ऐसे रमालक्ष्मी तिनके नाथ जो श्रीरघुनन्दन तिनहिं प्रणाम करते वालमीकि मुनि सन्मुख देखे ४५ ॥

जानकीलक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमण्डितम् ॥ कंदर्पसदृशाकारंकमनीयांबुजेक्षणम् ४६ दृष्ट्वैवंसहसोत्तस्थौविस्मयानिमिषेक्षणः ॥ आलिंग्यपरमानन्दंरामंहर्षाश्रुलोचनः ४७ पूजयित्वाजगत्पूज्यंभक्त्याऽर्घ्यादिभिरादृतः ॥ फलमूलैःसमधुरैर्भोजयित्वाचलालितः ४८ राघवःप्रांजलिःप्राहवालमीकिंविनयान्वितः ॥ पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदण्डकानागतावयम् ४९ भवंतोयदिजानंतिकिंवक्ष्यामोऽत्रकारणम् ॥ यत्रमेसुखवासायभवेत्स्थानंवदस्वतत् ५० सीतयासहितःकालंकिंचित्तत्रनयाम्यहम् ॥ इत्युक्तोराघवेणासौमुनिःसस्मितमब्रवीत् ५१ ॥

(जानकीलक्ष्मणोपेतंजटामुकुटमंडितमंत्रजुर्झक्षणकंदर्पसदृशःआकारंकमनीयम्) कैसे रघुनन्दनहैं जानकी लक्ष्मण सहित हैं जटाको मुकुट शीशपर विराजमान कमलसम नेत्र कामदेव सम तनकी आकार सर्वांग सुन्दर ४६ (एवंदृष्ट्वाविस्मयाअनिमेषदृक्षणः सहसाउत्तस्थौरामंआलिङ्ग्यपरमानन्दं हर्षमश्रुलोचनः) इस प्रकार सुन्दर स्वरूप जो रघुनन्दन तिनहि देखि आश्चर्य करिकै पला चलन रहित एक टक नेत्र भये जिनके ऐसे वाल्मीक शीघ्रही उठि रघुनन्दन जो हैं तिनहि उरमें लगाय परम आनन्दको प्राप्त भये प्रेमानन्द उमगि आँशुनेत्रमें वहिआये ४७ (अर्घ्यआदिभिःआदृतःजगत्पूज्यंभक्त्यापूजयित्वासमधुरैःफलमूलैःभोजयित्वाचलाजितः) अर्घ्यपाद्यादिपोडंशोपचारण करिकै आदरते जगत्के पूज्य जो रघुनन्दन तिनहि भक्ति भाव करिकै पूजे तथा सहित मधुरता फल मूलादि भोजन कराय पुनः लाड लड़ायेदुलारे ४८ (राघवः प्रांजलिःविनयान्वितःवाल्मीकिंप्राहपितुः आज्ञांपुरस्कृत्यवयमदण्डकान्आगता) रघुनाथजी हाथ जोरि नमूता सहित वाल्मीकि प्रति बोले हैं मुने पिताकी आज्ञा करि हम दण्डक वनहिं आयेहैं ४९ (अत्रकारणंयदिभवंतःजानंतितदिकिवक्ष्यामः यत्रमेसुखंभवेत्तत्तत्वासायस्थानंवदस्व) इहां आवनेको कारण जोहै ताहि जो आप जानते हौ तौ क्या प्रयोजनहै जो हम कहैं ताते जहां के रहे हम को सुख होय तौन वास करिवे अर्थ उत्तम स्थान जोहै ताहि कहिये ५० (तत्रकिंचित्कालंसीतयासहितःअहंनयामिराधवेण्डातिउक्तःअसौमुनिः सस्मितमंत्रवार्त्त) सुखदस्थान बताइये तहां कछु काल सीताकरिकै सहित हम वासकरि व्यतीत करें श्रीरघुनाथजी करिकै जब ऐसा वचन कहागया तब ये मुनि वाल्मीकिजीसहित मुसुकानि वचन बोले भाव प्रभु ऐश्वर्य छपाय कैसी माधुर्य देखावतेहैं ५१ ॥

त्वमेवसर्वलोकानानिवासस्थानमुत्तमम् ॥ तवापिसर्वभूतानिनिवाससदनानि हि ५२ एवंसाधारणस्थानमुक्तंतेरघुनन्दन ॥ सीतयासहितस्येतिविशेषपृच्छत स्तव ५३ तद्वक्ष्यामिरघुश्रेष्ठयत्तेनियतमंदिरम् ॥ शांतानांसमदृष्टीनामद्वेष्टाणां चजंतुषु॥त्वामेवभजतांनित्यंहृदयंतेऽधिमंदिरम् ५४ धर्माधर्मान्परित्यज्यत्वामेवभजतौऽनिशम् ॥ सीतयासहतेरामतस्यहस्तसुखमंदिरम् ५५ त्वन्मंत्रजापकोय स्तुत्वामेवशरणगतः ॥ निर्द्वंद्वोनिस्पृहस्तस्यहृदयंतेसुमंदिरम् ५६ ॥

(सर्वलोकानांउत्तमंनिवासस्थानंत्वंएवतवअपिनिवाससदनानिहिसर्वभूतानि) हे रघुनन्दन सब लोकनको उत्तम वासस्थान अर्थात् सुखदवास मन्दिर आपही निश्चय करिकैहो भाव जो जन आप के विषे वास करत सोई सुखी रहत तथा आपको भी निश्चय करि निवास करिवे हंत मन्दिर सब भूत चराचरहैं भाव सबमें वसेहो ५१ (रघुनन्दनएवंतेसाधारणस्थानउक्तंसीतयासहितस्येतिविशेषपंतवपृच्छतः) हे रघुनन्दन इस प्रकार आप प्रति में साधारण केवल आपके वसिवे योग्य मन्दिर कहाहै अरु सीता करिकै सहित आपने वसिवेको मंदिर इत्यादिते विशेषि मन्दिर आप पूछतेहो ५३ (रघुश्रेष्ठयत्तेनियतमंदिरमत्तत्तद्वक्ष्यामिसमदृष्टीनांशांतानांचजंतुषुअद्वैष्टाणानित्यंत्वांएवभजतांहृदयंते अधिमंदिरम्) हे रघुवंशनाथ जो आपके नियत मन्दिरहैं भाव जहां दिव्य गुणनयुक्त सुन्दरे स्वरूप ते जहां वास करतेहो जो ज्ञान विराग भक्तिमय दिव्य मन्दिरहैं तौन अब में कहताहो सो सुनिये जे भूत मात्रमें समदृष्टि राखतेहैं जिनको चित्त शांतहै पुनः सबमें ईश्वरको व्यापकमानि किसी जी-वनमें विरोध नहीं करतेहैं इति शुद्ध ह्वै नित्यही आपहीको निश्चय करि भजते आपकी परिचर्या

में लगे रहते हैं तिनको हृदय आपको उच्चम मन्दिर है तामें वसो ५४ (धर्म अधर्मान्परित्यज्य अनि शंत्वा एव भजतः तस्य हृत्पदमसीतया सह ते सुखमन्दिरम्) धर्म यथा सत्य शौच युत यज्ञ तप संघ्या पूजा व्रत पाठ मन्त्र जप तीर्थवास गुरुजन सेवादानादि पुनः अधर्म यथा झूठ अपावनता हिंसा परस्त्री वेश्यागमन परहानि चोरी इत्यादि धर्म अधर्म जो हैं तिनहीं परित्याग करि जेदिनो राति आपहीको भजते हैं निश्चय करि दूसर काम नहीं तिनको जो हृदय है हे श्रीरघुनाथजी सीताकरिकै सहित आप के बसने योग्य सोई मन्दिर है ५५ (निर्द्वन्द्वः निस्पृहः तुल्योऽवशरणगतः यः त्वत्तन्मन्त्रं जापकः तस्य हृदयं ते समन्दिरम्) हर्ष विषाद राग द्वेषादि द्वंद्वरहित अरु स्त्री पुत्र धन धाम राज्य स्वर्गादि सुख सिद्धी इत्यादि किस्ती वातकी कांक्षा नहीं है पुनः आपकी निश्चय करि शरणागत हवै जो आपको मन्त्र जाप करता है ताको हृदय आपको सुन्दर मन्दिर है ५६ ॥

निरहंकारिणः शांता येरागद्वेषवर्जिताः ॥ समलोष्टाश्मकनकास्तेषां ते हृदयं गृहम् ५७ त्वयि दत्तमनो बुद्धिर्यः संतुष्टः सदा भवेत् ॥ त्वयि संत्यक्तकर्मा यस्तन्मनस्ते शुभं गृहम् ५८ यो न द्वेष्ट्यप्रियं प्राप्य प्रियं प्राप्य न हृष्यति ॥ सर्वमायेति निश्चित्य त्वां भजेत् तन्मनो गृहम् ५९ षड्भावो विविकारान्यो देहे पश्यति नात्मनि ॥ क्षुत्तृट्सुखं भयं दुःखं प्राणबुद्धयोर्निरीक्ष्यते ६० संसारधर्मे निर्मुक्तस्तस्य ते मानसं गृहम् ६१ पश्यन्ति ये सर्वगुहा शयस्थं त्वांचिद्धनं सत्यमनंतमेकम् ॥ अलेपकं सर्वगतं वरेण्यन्ते षाहदब्जे सहस्रतया वस ६२ ॥

(येरागद्वेषवर्जिताः निःअहंकारिणाः शांताः लोष्टाश्मकनकाः समः तेषां हृदयं ते गृहम्) जे पुरुष प्रीति विरोध रहित सबसों साधारण प्रीति राखे अहंकार त्यागे शांत चित्त पुनः ढेला पत्थर सोना इत्यादि बराबरि माने हैं तिनके हृदय आपके मंदिर है ५७ (यः मनः बुद्धिः त्वयि दत्तः सदा संतुष्टः भवेत् कर्मायः त्वयि संत्यक्तः तन्मनः तेषु भं गृहम्) जे जन मन बुद्धि आपके नाम रूप लीलादिमें लगाये सदा संतोष राखते हैं अरु कर्म जो शुभदायक करते हैं ते सब आप विषे समर्पण करते हैं तिनको मन आप को मंगलीक मंदिर है ५८ (प्रियं प्राप्य हृष्यति न अप्रियं प्राप्य यः द्वेष्टि न सर्वमाया इति निश्चित्य त्वां भजेत् तत् मनः गृहम्) प्रिय पदार्थ पाय हर्षते नहीं तथा अप्रिय पदार्थ प्राप्त भये तामें विरोध नहीं करते हैं संसार में हानि लाभ मै यावत् व्यापार है यह सब माया झूठा कौतुक देखने मात्र है सत्यता नहीं है इति निश्चय करि सबसों मन खैचि आपकी सेवामें तत्पर रहते हैं तिनको मन आपको मंदिर है ५९ (षड्भाव यथा जन्म, सत्ता, परिणाम, तनवृद्धि, क्षीणता, नाश इत्यादि (अन्यः विकाराः) और जो छः विकार हैं यथा काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मात्सर्य अथवा शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुन इति (देहे पश्यति आत्मनि) ये षड्भाव विकारादिकोंको देह विषे जे देखते हैं अरु आत्मा में नहीं देखते हैं तथा (क्षुत्तृट्सुखं भयं दुःखं प्राणबुद्धयोर्निरीक्ष्यते) भूख प्यास प्राणोंमें अरु सुख दुःख डर बुद्धि में देखते हैं ६० (संसारधर्मे निर्मुक्तः तस्य मानसं ते गृहम्) यज्ञ तपस्या तीर्थ व्रत दान गुरुजन मान्यता देवपूजन इत्यादि जो संसारमें धर्म हैं तिनकी वासना करिकै छूटि गये होय जे तिनको मन आपको मंदिर है ६१ (अलेपकं सर्वगतं वरेण्यं चिद्धनं सत्यमनंतं एकं त्वां सर्वगुहा शयस्थं पश्यन्ति तेषां हृत्तु अब्जे सीतया सह वस) माया लेपरहित सबमें व्यापक सबसों श्रेष्ठ चैतन्य समूह सत्य जाकी महिमाको अंत कोऊ नहीं

पावत ऐसे जो एक आपहो तिनहिं सब भूत मात्रके अंतःकरण रूप गुहामें जे जन देखतेहैं तिनके हृदयरूप कमलमें सीता करिकै सहित वासकरौ ६२ ॥

निरंतराभ्यासदृढीकृतात्मनां त्वत्पादसेवापरिनिष्ठितानां ॥ त्वन्नामकीर्त्याहतकल्मषाणां सीतासमेतस्य गृहं हृदये ६३ रामत्वन्नाममहिमावर्ण्यते केन वा कथम् ॥ यत्प्रभावादहं रामब्रह्मर्षित्वमवाप्तवान् ६४ अहंपुरा किरातेषु किरातैः सह वर्द्धितः ॥ जन्ममात्रद्विजत्वं मे शूद्राचाररतः सदा ६५ शूद्रायां बहवः पुत्रा उत्पन्ना मेऽजितात्मनः ॥ ततश्चोरैश्च संगम्य चोरोऽहमभवन्पुरा ६६ धनुर्वाणधरो नित्यं जीवानामंतकोपमः ॥ एकदामुनयः सप्तदृष्टामहतिकानने ६७ ॥

त्वन्नामकीर्त्या कल्मषाणां हतः निरंतरं अभ्यासेन दृढीकृतः आत्मनां त्वत्पादसेवापरिनिष्ठितानां तस्य हृत्तद्वज्रे सीतासमेतस्य गृहम् हेरघुनन्दन आपको नामकीर्तन करि पापोंको नाश करि दिया है जिन्होंने अरु श्रवण कीर्तन स्मरण अर्चन सेवनादि अभ्यास अर्थात् इसी आचरणमें सदा लगे रहिकै इति अभ्यास करिकै आपकी प्राप्तिमें पुष्ट कर लिया है आत्माको जिन्होंने अरु आपके पायें की सेवामें निष्ठा किया है जिन्होंने तिनको हृदयरूप जो कमल है तामें सीतासहित वास करनेको आपको मंदिर है ६३ (रामत्वन्नाममहिमा कथं केन वर्ण्यते रामयत्प्रभावात् अहं ब्रह्म ऋषित्वं प्राप्तवान्) हेरघुनन्दन आपके नामकी जो महिमा है सो कौन प्रकार किसी करिकै वर्णन की जाय भाव किसी भांति कोई नहीं वर्णन करि सक्ता है काहेते हेरघुनन्दन जिस नामके प्रभावते मेव्याधते ब्रह्म ऋषित्व पदको प्राप्त भयों ६४ (पुरा अहं किरातेषु किरातैः सह वर्द्धितः जन्ममात्रमेद्विजत्वं शूद्राचाररतः) हेरघुनन्दन पूर्वकालमें मैं किरात देशमें बालपनते रहा किरातन करिकै मेरा पालन पोषण भयो उनहींके संग शरीर बढ़त युवा भयों जन्ममात्र तौमें विप्र प्रचेता ऋषिको पुत्र हों अरु कर्म शूद्रोंके करने लगा शूद्रोंको पत्नी किया इति शूद्रोंके आचारमें सदा रतरहा ६५ (अजितात्मनः मे शूद्रायां बहवः पुत्राः उत्पन्नाः ततः चोरैः च संगम्य पुरा अहं चोरः अभवत्) नहीं जीति सक्यों आत्माभाव विषया तत्त जोंमें शूद्र जाति स्त्री में रतरहा तामें बहुत पुत्र पैदा भये तदनंतर पुनः चोरोंको संग भया ताके प्रभावते पूर्व समयमें भी चोर भया ६६ (नित्यं धनुर्वाणधरः जीवानां अंतकः उपमः एकदामहतिकानने सप्तमुनयः दृष्टा) नित्यही धनुष बाण धारण किहे जीवनको घात करन हारा यमकी समान भया एक समय महाभारी वनमें आवत सात मुनिनको देखा भाव जो सप्त ऋषि प्रसिद्ध हैं ६७ ॥

साक्षान्मया प्रकाशां तो ज्वलनार्कसमप्रभाः ॥ तानन्वधावह्लोभेन तेषां सर्वपरिच्छेदा नूढं गृहीतुं कामस्तत्राहं तिष्ठतिष्ठेति चाब्रुवम् ॥ दृष्ट्वा मां मुनयो पृच्छन्किमायासि द्विजाधम ६९ अहंतानव्रुवं किंचिदादातुं मुनिसत्तमाः ॥ पुत्रदारादयः संति बहवो मे बुभुक्षिताः ७० तेषां संरक्षणार्थाय च रामि गिरिकानने ॥ ततो मामूचुरव्यग्राः पृच्छ गत्वा कुटुंबकम् ७१ यो यो मया प्रतिदिनं क्रियते पापसंचयः ॥ यूयंतद्वागिनः किं वा नेति वेति पृथक् पृथक् ७२ वयं स्थास्यामहे तावदागमिष्यसि निश्चयः ॥ तथेत्युक्त्वा गृहं गत्वा मुनिभिर्यदुदीरितम् ७३ ॥

(ज्वलनः अर्कः समः प्रभाः प्रकाशांतः साक्षान्मया लोभेन ते पांस्वपरिच्छदान्तां अनुअधावत्) अग्नि सूर्यसम प्रभा प्रकाश करतेहुये साक्षात् देखि मैंने लोभ करिकै तिन मुनिनकी सब वस्तु हरिलेने को तिनके पाछे धार्यो ६८ (तत्र अहं गृहीतुकामः च तिष्ठतिष्ठइति अब्रुवन् मां हृष्ट्वा मुनयः पृच्छन् द्वि जायमर्कि आयासि) तहां मैं उनकी वस्तु लेनेकी कामनाते पुनः खड़ेहोउ खड़ेहोउ ऐसा कहा तब मोहि देखि मुनि लोगोंने पूछा कि हे द्विज अधम किसहेतु आवताहै ६९ (तान् अहं ऽब्रुवन् मुनिसत्तमाः किंचित् आदातुं मे पुत्रदारादयः बहवः बुभुक्षिताः संति) तिन प्रति मैं बोल्यो हे मुनि उत्तमो आपके वस नादि कछु लेने हेतु आताहौं क्योंकि मेरेपुत्र स्त्री आदि बहुत भूखेहैं ७० (तेषां संरक्षणार्थाय गिरिका ननेचरामिततः अव्यग्राः मां ऊचुः गत्वा कुटुंबकमुपृच्छ) तिन पुत्रादिकोंके रक्षा करने अर्थ पहाड वनमें पथिक लूटता हुआ घूमताहौं इत्यादि मुनिकै नहीं बिकल भये प्रसन्न मन मुनि मों प्रति बोले कि तू घरको जाय परिवारके लोगों प्रति पूछु तौ ७१ (प्रतिदिनं मया यः पापसंचयः क्रियते तत् भागिनः यूयं किं वानइति पृथक् पृथक् वेत्ति) घरके लोगों प्रति पूछौ कि तुम लोगोंकी जीविका हेतु रोज रोज हम करिकै जीव हिंसा परधन हरणादि जो जो पापोंको बटोर किया जाताहै तामें हिस्सेदार तुमहो तेहौं अथवा नहीं यही वचन स्त्री पुत्रादि सब सों एक एक प्रति पूछि सबको उत्तर जानिलेउ ७२ (यावत् आगमिष्यसि तावत् वयं निश्चयः स्थास्यामहे तथा इति उक्त्वा गृहं गत्वा यत् मुनिभिः उदीरितम्) मुनि लोग कहे कि जबतक तुम घरते लौटिकै ऐहौ तबतक हम सब निश्चय करतेहैं कि इहांपर बैठि रहेंगे तब मैं मुनिन प्रति कहा कि जो आप कहतेहौ तैसाही करेंगो ऐसा कहि घरको गयो उहांक्या किया कि जो बात मुनिलोगों करिकै मोसों कहीगईरहै ताहेतु सबको बुलाया ७३ ॥

आपृच्छन् पुत्रदारादीन् तैरुक्तोऽहं रघूत्तम ॥ पापं तवैव तत्सर्वं वयंतु फलभागिनः ७४
तच्छ्रुत्वा जातनिर्वेदो विचार्य पुनरागमम् ॥ मुनयो यत्र तिष्ठंतिकरुणा पूर्णमानसाः ७५
मुनीनां दर्शनादेव शुद्धांतः करुणाऽभवत् ॥ धनुरादीन् परित्यज्य दण्डवत्पतितो
स्म्यहम् ७६ रक्षध्वं मां मुनिश्रेष्ठाः गच्छन्तं निरयार्णवम् ॥ इत्यग्रेपतितं दृष्ट्वा मामूचु
र्मुनिसत्तमाः ७७ ॥

(रघुसत्तमपुत्रदारादीन् आपृच्छन् अहंतैः उक्तः तत्सर्वं पापं तवैव तु वयंतु फलभागिनः) हे रघुनाथजी पुत्र स्त्री आदि सबन सों पूछा कि जो पाप करि धन लावते हैं सो तुम सब खाते हौ तौ उम पापोंमें तुम हिस्सेदारहौ कि नहीं यह मुनि तब मो प्रति तिन सबों ने कहा कि ऐसा काम करने को हम लोग कब कहा है जो पाप भागी होय यह हिंसकी क्रिया तुम अपनीइच्छाते करतेहौ तौ न सब पाप तुमको निश्चय करि होंगे पुनः हम लोग तौ इस कर्तव्यता को जो फल धन लाभ ताकेहिस्से दार हैं भाव जो धन लावोगे तामें भोजन वसनको निर्वाह करेंगे ७४ (तत् श्रुत्वा निर्वेदः जातविचार्य पुनः आगममयत्र करुणा पूर्णमानसाः मुनयः तिष्ठन्ति) स्त्री पुत्रादिकोंके कहे उदासीन वचन सो मुनिकै मेरे मनमें निर्वेद उपजा यथा काव्य रस तरंगे ॥ दोहा ॥ करि अपनोई निदरिबो करि करि मन में वेद । जगु तजिबेकी बुद्धिकै यहि है विधि निर्वेद ॥ भाव संसारमें कोऊ किसीको नहीं इति मनमें वैराग्य उपज्योकि लोकसुख ब्रथा है परलोक सुख साँचा देखा चाहिये ऐसा विचारि पुनः लौटि आर्यो जहां करुणारस पूर्ण भरे मन मुनि लोग बैठेहैं ७५ (मुनीनां दर्शनात् एव अंतः करुणाः शुद्धाः अभवत् धनुः आदीन् परित्यज्य दण्डवत्पतितः अस्म्यहम्) मुनि लोगनके दर्शनते निश्चय करि मेरेअन्तः करुण

अर्थात् अहंकार मनचित बुद्धि इत्यादि शुद्ध हवैगये विपमता विकारजातरहा तब धनूपवाणादि अत्र परित्याग करि मुनिके पायेंन समीप दण्डकीनाई भूमिपै गिरिपरेउँ अरुदीन अधीनहवै बचन बोल्यो ७६ (मुनिश्रेष्ठःनिरयःअर्णवंआगच्छंतंमारक्षध्वंइतिमांअग्रेपतितंदृष्ट्वामुनिसत्तमाःमांडुचुः) क्या बोल्यो कि हे मुनि श्रेष्ठ भाव आप पतित जीवनको उद्धार करनहारेहो अरु मैं नरकरूप समुद्रहि जाताहो भाव असंख्य पाप कीन्हैउँहैं नाको फल भोग हेतु अवश्य नरकहि जाउँगो ताते दया दृष्टि ते मेरी रक्षा करो इत्यादि मुनि मोहिं आगे परा देखि मुनिनमें श्रेष्ठ जो सातो मुनिते दया करि मैं जो पतितता प्रति उपदेश बचन बोलतेभये ७७ ॥

उत्तिष्ठोत्तिष्ठभद्रतेसफलःसत्समागमः॥उपदेक्ष्यामहेतुभ्यंकिंचित्तेनैवमोक्ष्यसे७८
परस्परंसमालोच्यदुर्वृत्तोऽयंद्विजाधमः॥उपेक्ष्यएवसद्वृत्तैस्तथापिशरणंगतः॥रक्ष
णीयःप्रयत्नेनमोक्षमार्गोपदेशतः ७९ इत्युक्त्वारामतेनामव्यत्यस्ताक्षरपूर्वकम् ॥
एकाग्रमनसात्रैवमरेतिजपसर्वदा ८० आगच्छामःपुनर्यावत्तावदुक्तंसदाजप ॥
इत्युक्त्वाप्रययुःसर्वमुनयोदिव्यदर्शनाः८१ अहंयथोपदिष्टंस्तथाकरवमंजसा ॥
जपन्नेकाग्रमनसाबाह्यंविस्मृतवानहम् ८२ ॥

(तेभद्रंउत्तिष्ठउत्तिष्ठसत्समागमःसफलःतुभ्यंकिंचित्उपदेक्ष्यामहेतेनैवमोक्ष्यसे) मुनि बोले हे विप्र तेरा कल्याणहोय उठु उठु सज्जननको मिलन सफलभया काहेते अब तेरेअर्थ हमकछु उपदेश करतेहैं त्यहि करिकै तू निश्चय करिकै भवबंधनते छूटि हरिपदको प्राप्तहोइगो ७८ (परस्परंसमालोच्यअयंद्विजःअधमःसद्वृत्तैःउपेक्ष्यएवतथापिशरणंगतःप्रयत्नेनमोक्षमार्गोपदेशतःरक्षणीयः) पुनः मुनिलोग आपुसमें विचार पूर्वक वार्ता करनेलगे कि यह विप्र अधम यद्यपि दुष्ट आचरणमें रतहै संभाषण करने योग्य नहींरहे संतन करिके त्यागवे योग्य निश्चय करिकै है तबहूँ जो हम लोगोकी शरणमें आया तौ किसी यत्न करिकै भाव सुगम रीतिते मुक्तिकी मार्ग उपदेशते याकी रक्षा कि या चाहिये ७९ (इतिउक्त्वारामतेनामव्यत्यस्ताक्षरपूर्वकममराइतिअत्रएवएकाग्रमनसासर्वदाजप) ऐसा कहि पुनः मुनिलोग क्या किया हेरघुनन्दन आपको जो राम इति नामहै ताको प्रतिकूल अक्षर पूर्वक अर्थात् मकार आदि राकार अंत इति अक्षरोंको उलटी रीति यथा मरा इत्यादि उपदेश दै पुनः कहे कि इसी ठौर निश्चय करि स्थितरहु एकाग्र मन करिकै मरा मरा इति सब कालमें जपाकरुट ० (यावत्पुनःआगच्छामःतावत्उक्तंसदाजपइतिउक्त्वादिव्यदर्शनाःसर्वमुनयःप्रययुः) पुनः कहेकि जब तक हम लोग लौटिकै पुनः इहांको आई तब तक तू हमारा कहा हुवा जो नामहै ताहि सदाजपु इत्यादि कहिपुनः दिव्यहैं दर्शन जिनके ऐसे सब मुनिलोग चले जातेभये ८१ (तैः यथाउपदिष्टंयथाअहंअंजसाकरवमंएकाग्रमनसाजपन्अहंबाह्यंविस्मृतवान्) तिनमुनिनकरिकै जिस प्रकार उपदेश दियागया ताही प्रकार हमशीघ्रता सहित करतेभये अरु एकाग्रमन करिकै नामजपत संते हम देहके बाहेर इंद्रिनकी सुधि भूलि जातेभये भाव कानकोसुनब नेत्रकोदेखब त्वचा स्पर्शादि सुधि न रही ८२ ॥

एवंबहुतिथेकालेगतेनिश्चलरूपिणः ॥ सर्वसंगविहीनस्यबलमीकोऽभवन्ममो
परि ८३ ततोयुगसहस्रांतेऋषयःपुनरागमन् ॥ मामूचुर्निष्क्रमस्वेतितच्छ्रुत्वा

तूर्णमुत्थितः ८४ बल्मीकान्निर्गतश्चाहं नीहारादिवभास्करः ॥ ममाप्याहुर्मुनिग
णा बाल्मीकिस्त्वं मुनीश्वरः ८५ बल्मीकात्संभवो यस्मात् द्वितीयं जन्म तेऽभवत् ॥
इत्युक्त्वा ते ययुर्दिव्यगतिं रघुकुलोत्तम ८६ अहं ते रामनाम्नश्च प्रभावादीदृशोऽभव
म् ॥ अद्य साक्षात् प्रपश्यामि ससीतं लक्ष्मणेन च ८७ रामं राजीवपत्राक्षं त्वां मुक्तो ना
त्र संशयः ॥ आगच्छ राम भद्रं ते स्थलं वैदर्श्याम्यहम् ८८ ॥

(एवं निश्चलरूपिणः बहुतिथे काले गते सर्वसंगविहीनस्वममोपरि बल्मीकः अभवत्) इसी प्रकार ना-
म जपत में डंडी मनादि वृत्ति एकत्र हवै आत्मरूपमें लय भई ताते उठन बैठन गमनादि क्रिया हीन
निश्चल तन जब तिथि पक्ष मास वर्ष युगादि बहुत काल बीति गये अरु दूसरा कोऊ संग में नहीं जो
देहकी रक्षाराखै इति सबको संग विशेषि हीन जो मैं ताके ऊपर देवारने समूह माटी लगाय दिया ता
ते बाँबी हवै जाती भई ८३ (ततः सहस्रयुगं तेषु नः ऋषयः आगमन्निष्क्रमस्व इति मां ऊचुः तत् श्रुत्वा
तूर्णमुत्थितः) तदनंतर हजार युग बीते पछि पुनः ऋषि लोग आय कहै कि हे विप्र बाँबीते निकसु इ-
त्यादि मो प्रति बोले तो वचन सुनि तुरत ही उठे ८४ (बल्मीकात् अहं नीहारात् भास्करः इव निर्गतः
मुनिगणाः मम अपि आहुः त्वं बाल्मीकिः मुनीश्वरः) बाँबी ते मैं कैसा प्रकाशवंत भयो यथा कुहिराते
सूर्य कहैं इसी भांति मैं बाँबीते नितरे ८५ तब मुनि लोग मोको निश्चय करि कहै कि तू बाल्मीकि नामे
मुनीश्वर है ८५ (यस्मात् बल्मीकात् संभवः ते द्वितीयं जन्म अभवत् इति उक्ताः रघुकुलोत्तम ते दिव्यगतिं
ययुः) काहेते जितकारण बाँबीते उत्पन्न तुम्हारा दूसरा जन्म भया ताते बाल्मीकि नाम भया ऐसा
कहि हेरघुवंशनाथ ते मुनि देवलोकको जाते भये ८६ (राम ते नाम्नः प्रभावात् अहं च ईदृशः अभवत् ससी
तं च लक्ष्मणेन अद्य साक्षात् प्रपश्यामि) हे रघुनंदन आपके नामके प्रभावे मैं ऐसा भया कि सहित
जानकी पुनः लक्ष्मण सहित या समय साक्षात् सन्मुख देखता हों ८७ (राजीवपत्राक्षं रामं त्वां
मुक्तः नात्र संशयः ते भद्रं राम आगच्छ अहं वै स्थलं दर्शयामि) कमलदल नेत्र रघुनन्दन आपजो हौं तिनहिं
देखता हों ताते मैं मुक्त भया यामें संशय नहीं है आपको कल्याण होय हे रघुनन्दन आइये मैं निश्चय
करि कै आपके वास हेतु स्थान बतावता हों ८८ ॥

एवमुक्त्वा मुनिः श्रीमाल लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ शिष्यैः परिवृतो गत्वामध्ये पर्वतगं
गयोः ८९ तत्र शाखां सुविस्तीर्णां कारयामास वासभूः ॥ प्राक्पश्चिमं दक्षिणोदक्
शोभनं मंदिरद्वयं ९० जानक्या सहितो रामो लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ तत्र देवसदृशा
ह्यवसन् भवनोत्तमे ९१ बाल्मीकिना तत्र सुपूजितो यं रामः ससीतः सह लक्ष्मणेन ॥
देवैर्मुनीन्द्रैः सहितो मुदाऽऽस्ते स्वर्गे यथा देवपतिः सशच्या ९२ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे अयोध्याकांडे षष्ठः सर्गः ६ ॥

(एवं उक्त्वा श्रीमान् मुनिः लक्ष्मणेन समन्वितः शिष्यैः परिवृतः पर्वतगंगयोः मध्ये गत्वा) इस प्रकार
कहिकै तपोधन ऐश्वर्यवंत मुनि बाल्मीकि लक्ष्मण करि कै सहित अपने शिष्यनको साथलै कामद
पर्वत मन्दाकिनी गंगा दोऊ के मध्य में गये ८९ (तत्र वासभूः सुविस्तीर्णां शाखां कारयामास दक्षिण
उदक् प्राक् पश्चिमं द्वयं शोभनं मंदिरम्) तहां वास करि वेयो गय भूमि देखि सुन्दर बड़े फैलाव सहित शाला

अर्थात् समाज बैठने योग्य भूमिका बनाय द्वार शेष चारिहु दिशि सकण्ट वृक्षों की वारी घेरि दिये तामें किनारे एक दक्षिण उत्तर को लम्बा एक पूर्व पश्चिम को लम्बा इति द्वय शोभामय मन्दिर बनाये ९० (तत्रभवनोत्तमेलक्ष्मणेनसमन्वितःजानक्यासहितः रामः तेदेवसदृशाःहिभवसन्) तहां मंदिर उत्तम विपेलक्ष्मण करिकैं युक्त जानकी करिकैं सहित श्रीरघुनाथजी देवनकी समतादेवे योग्य निश्चय करिकैं वासकीन्हे भाव यथा देवलोकमें देवताताही समान आनंदपूर्वक वासकीन्हे ९१ (तत्रबाल्मीकिनासुपूजितःससीतालक्ष्मणेनसहअयंरामःदेवैःमुनींद्रैस्सहितः मुदाभास्तेयथास्वर्गेसशच्या देवपतिः) तहां त्याहि आश्रम विपे बाल्मीक करिकैं सुन्दरी भांति पूजेगये सहित जानकी लक्ष्मण करिकैं सहित ऐसे जो श्रीरघुनाथजीते देवतन मुनीन्द्रन करिकैं सहित आनन्द पूर्वक चित्रकूट में वास कीन्हे कौन भांति जैसे स्वर्गलोकमें इन्द्राणी सहित देवनके पति इन्द्र वसतहैं ९२ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म

भूषणेअयोध्याकाण्डेश्रीरघुनन्दनचित्रकूटप्राप्तवर्णनोनामपष्ठःप्रकाशः ६ ॥

सुमंत्रोपितदाऽयोध्यादिनांतेप्रविवेशह ॥ वस्त्रेणमुखमाच्छाद्यबाष्पाकुलितलोचनः१ बहिरैवरथंस्थाप्यराजानंद्रष्टुमाययौ॥ जयशब्देनराजानंस्तुत्वातंप्रणनामह २ ततोराजानमंतंतंसुमंत्रंविह्वलोब्रवीत् ॥ सुमंत्ररामःकुत्रास्तेसीतयालक्ष्मणेनच३ कुत्रत्यक्तस्त्वयारामःकिंमांपापिनमब्रवीत् ॥ सीतावालक्ष्मणोवाऽपिनिर्दयंमांकिमब्रवीत् ४ हारामहागुणनिधेहासीतेप्रियवादिनि ॥ दुःखार्णवेनिमग्नंमांघ्रियमाणं पश्यसि ५ विलप्यैवंचिरंराजानिमग्नोदुःखसागरे ॥ एवंमन्त्रीरुदंतंतंप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ६ ॥

सवैया ॥ बनगे सुतलौटि सुमंतकहे कहि शाप दिये म्वहिं अन्धकदा । नृपप्राण तजे मुनि दूत पठैभरताय लखे पुर दाहयदा ॥ धिगमातु दिये गुरु आयसुते विधि वेदकिये सक्रियादि तदा । ज्याहि दर्शचहैं भरतादि सवै त्यहि वैजसुनाथ नमामिसदा १ ॥ (तदासुमंत्रःअपिबाष्पाकुलितलोचनःवस्त्रेणमुखंआच्छाद्यदिनांतेअयोध्यांप्रविवेशह) जब रघुनन्दन बनकोगये तवसुमंत्र लौटे प्रभुवियोग दुःखतं औसुभरे नेत्र सकोच वश बस्त्रकरिकैं मुखढाँकि सांभभये २ अयोध्या विपे पैठे भावकोऊ देखै न पावा राजद्वारपर पहुँचे १ (रथंएवबहिःस्थाप्यराजानंद्रष्टुमाययौराजानंजयशब्देनस्तुत्वातंप्रणनामह) रथ जोरहा ताहि निश्चय करि द्वारके बाहेर राखि भीतर जो महाराजहैं तिनके देखने हेत सुमन्त मंदिरके भीतर जातेभये तहां दशरथजीको देखि जयजीव इति शब्दकरिकैं स्तुति करि तिनहिं प्रणाम कीन्हे २ (ततःसुमंत्रंनमंतंतंराजाविह्वलःअब्रवीत् सुमंत्रलक्ष्मणेनचसीतयारामःकुत्रास्ते) तव सुमंत जोप्रणाम करतेहैं तिनहिं देखि राजादशरथ दुःखते विकलहैं बोले हे सुमंत लक्ष्मणपुनः सीता करिकैं सहित रामकहाँ हैं ३ (त्वयारामःकुत्रत्यक्तःपापिनंमांकिंअब्रवीत् वासीतावालक्ष्मणःअपिनिर्दयंमांकिंअब्रवीत्) हे सुमंत्र तुमने रामको कहां त्यागा अरु बिन अपराध बनको पठावने वाला ऐसा पापी जोमैंहों ताप्रतिरामने क्या संदेशकहा है अथवा सीता वा लक्ष्मण निश्चयकरिकैं दयाहीन जोमैं ताप्रति क्याकहा है ४ (गुणनिधेरामहाप्रियवादिनिसीतेहादुःखार्णवेनिमग्नंघ्रियमाणं मानं पश्यसि) कृपा दया करुणादि गुणनके भरे हेरघुनन्दन हा प्रियवचनबोलने वाली भावशीलक्षमा-

वन्त स्वभाव हे सीते भाव जगत्के पालनपोषण हारे दोऊ प्रणतपालहौं अरु आपके वियोग जनित दुःखरूप समुद्रमें बूझताहुआ मरणकालको प्राप्त जो मैं हौं ताहि दयादृष्टि नहीं देखतेहौं इति हामो पर क्यों निर्दयी है गयो ५ (एवंराजाविलप्यचिरंदुःखसागरेमग्नःएवंरुदंतंतमंत्रांप्रांजलिः वाक्यमब्रवीत्) इसीप्रकार वार्ता करि रोवतेहुये महाराज दुःखरूप समुद्रमें बहुत बीच बूझेहे इसप्रकार रो-
दनकरतेहुये जोमहाराज तिन प्रति मंत्री सुमंत्र दोऊ हाथ जोरि दुखित है बचन बोलतेभये ६ ॥

रामःसीताचसौमित्रिर्मयानीतारथेनते ॥ शृङ्गिवेरपुराभ्याशेगंगाकूलेव्यवस्थिताः ७ गुहेनकिञ्चिदानीतंफलमूलादिकंचयत् ॥ स्पृष्ट्वाहस्तेनसंप्रीत्यानाग्रहीद्विससर्जतत् ८ वटक्षीरंसमानाय्यगुहेनरघुनन्दनः ॥ जटामुकुटमावध्यमामाहन्पतेस्वयम् ९ सुमंत्रब्रूहिराजानंशोकस्तेऽस्तुनमत्कृते ॥ साकेतादधिकंसौख्यंविपिनंनोभविष्यति १० मातुर्मेवंदनंब्रूहिशोकंत्यजतुमत्कृते ॥ आश्रवासयतुराजानंबृद्धंशोकपरिप्लुतम् ११ सीताचाश्रुपरीताक्षीमामाहन्पसत्तम ॥ दुःखगद्गदयावाचारामंकिञ्चिदवेक्षती १२ ॥

(सीतारामःचसौमित्रिःतेरथेनमयानीता गंगाकूलेशृङ्गिवेरपुराभ्याशेव्यवस्थिताः) सुमन्त्र बोले हे महाराज जानकी रघुनन्दन पुनः लक्ष्मण ये तीनिहुन को सवार कराय मैंने रथ चलाया जब पहुँचे गंगा तट में तहां शृङ्गिवेरपुर के समीप एक वृक्षतर स्थित भये रात्री बसे ७ (गुहेनफलंचमूलादिकंचयत्किञ्चिदानीतं तत्संप्रीत्याहस्तेनस्पृष्ट्वाग्रहीतुनाविससर्ज) तहां निपादराजगुहा ने भोजन हेत फल पुनःमूलादि जो कछु लाय आगे धरा सो देखि रघुनन्दन प्रीति से हाथे करिके छुई लिया अरु ग्रहण नहीं किये सब लौटारि दिये भाव जलमात्र पान किये ८ (गुहेनवटक्षीरंसमानाय्यरघुनन्दनः जटामुकुटमावध्यमामाहन्पतेमास्वयमब्रूह) गुहा करिके बरगद को दूध मँगाय रघुनन्दन जटा के सुकुट बांधे पुनः हे महाराज मो प्रति आपही रघुनन्दन बोले ९ (सुमन्त्रराजानंब्रूहिमत्कृते शोकःतेनअस्तुविपिनेनःसाकेतात्अधिकंसौख्यंभविष्यति) रघुनन्दन कहे कि हे सुमन्त्र महाराज ते ऐसा कहेउ कि मेरे वियोग को अथवा वनवास को दुःख सो आपन करिहैं क्योंकि वन में मोंको अयोध्याते अधिक सुख होइगो १० (मेमातुःवंदनंब्रूहिमत्कृतेशोकंत्यजतुतुशोकपरिप्लुतंबृद्धंराजानं आश्रवासय) पुनः रघुनन्दन कहे कि हमारी माता सो प्रणाम कहि पुनः सन्देश कहेउ कि मेरे अर्थ जो दुःख है ताहि त्याग करिहैं भाव क्षत्री धर्मवन्त की माता को हृदय कठोर राखना चाहिये इति विचारि शोक न करिहैं पुनः दुःखमें बूझे हुये वृद्ध जो महाराज हैं तिनहिं अनेक उपचार करि सावधान करिहैं भाव यही पतिव्रत धर्म है ११ (नृपसत्तमचसीताकिंचित्प्रसन्नंवेक्षती आश्रुपरीताक्षी गद्गदयावाचामाब्रूह) सुमन्त्र बोले हे महाराज पुनः सीता जी किंचित् रघुनन्दनकी दिशि देखती हुई आंशु भरे नेत्र जिनके मुखते अपुष्टाक्षर इति गद्गदबानी करिके मो प्रति बोलती भई १२ ॥

साष्टांगप्रणिपातंमेब्रूहिश्वश्रोःपदांबुजे ॥ इतिप्ररुदतीसीतागताकिञ्चिदवाङ्मुखी १३ ततस्तेऽश्रुपरीताक्षानावमारुरुहुस्तदा ॥ यावद्वदंतांसमुत्तीर्यगतास्तावदहंस्थितः १४ ततोदुःखेनमहतापुनरेवाहमागतः ॥ ततोरुदंतीकौशल्याराजानमिदमब्रवीत् १५ कैकेय्यैप्रियभार्यायैप्रसन्नोदत्तवान्वरम् ॥ त्वंराज्यंदेहितस्यै

वमत्पुत्रः किं विवासितः १६ कृत्वा त्वमेव तत्सर्वमिदानीं किं नुरोदिषि ॥ कौशल्या वचनं श्रुत्वा क्षते स्पृष्ट्वाग्निना १७ पुनः शोकाश्रुपूर्णक्षः कौशल्यामिदमब्रवीत् ॥ दुःखेन स्थियमाणं मां किं पुनर्दुःखयस्य लम् १८ ॥

(इव श्रो. पदांशु जेमे साष्टांग प्रणिपातं ब्रूहि इति सीता प्ररुदती किंचित् अवाद्मुखी गता) सासुके पद कमल में मेरा साष्टांग प्रणाम कहियो ऐसा काहे सीता प्रकर्ष रोदन करती रही ताते कछु दूरि अवाक्मुखी गई कण्ठारोदन ते मुख ते वचन न कहि सका रोवते चली गई १३ (ततः ते अश्रुपरीता क्षाः तदनां वंशारुद्भुः यावत् गंगां न उतीर्य तावत् अहं स्थितः) तदनन्तर तीनिहु जने आंशु भरे नेत्र ताही समय नाव पर चढ़े जब तक गंगा उतरि पार गये तब तक मे खड़ा देखा किया १४ (ततो महता दुःखेन पुनः एव अहं आगतः तदा कौशल्या रुदती राजानं दृढं ब्रवीत्) जब रघुनन्दन चले गये तब बड़े दुःख करिके व्यकल पुनः निश्चय करि में इहां चला आयो इत्यादि सुमन्त्र के वचन सुनि तब कौशल्या रोवती हुई महाराज प्रति इस प्रकार बोलती भई १५ (प्रियभार्या कैकेय्ये प्रसन्न त्वं वरम् दत्तवान् तस्य एव राज्ञ्यं देहि मत्पुत्रं किं विवासितः) कौशल्या कहत है महाराज आप की प्रिय पत्नी जो कैकेयी है ताके अर्थ प्रसन्न हवै आप जो चाहते सो वरदान देते अरु ताको राज्य निश्चय करि देते अरु मेरे पुत्र को किस हेतु वनको पठा दिया १६ (तत्सर्वं त्वं एव कृत्वा इदानीं किञ्चुरादिपक्षते अग्निना स्पृष्ट्वा कौशल्या वचनं श्रुत्वा) हे महाराज यावत् उपद्रव भया तौन तब कर्म तुमहीं निश्चय करिके किहेउ भाव बिना भरत के आये बिना कैकेयी को जनाये राज्याभियेक ठानेउ जब वाने कोप किया तब अधीन हवै वर दिया इत्यादि सब हर्ष ते किया तो अब क्यों रोते हो इत्यादि यथा पाके धाव में आगि को भँगार लागे तेसे ही कौशल्या के जो वचन हैं तिनहिं सुनिके १७ (पुनः शोकस्य अश्रुभिः पूर्णः अक्षः कौशल्या दृढं ब्रवीत् दुःखेन स्थियमाणं पुनः मां किं अलसं दुःखयसि) रानी के वचन सुनि पुनः नवीन दुःख भया ताके आंशुन करिके भरे नेत्र महाराज कौशल्या प्रति इस प्रकार वचन बोले कि दुःख करिके मरता जो मेंहो ताहि पुनः क्यों अत्यन्त दुःख करती है १८ ॥

इदानीमेव मे प्राणा उत्क्रमिष्यंति निश्चयः ॥ शस्तेहं बाल्यभावेन केन चिन्मुनिना पुरा १९ पुरा हं यौवने दत्तः चापवाणधरो निशि ॥ अचरं नृगया सक्तो नद्यास्तीरे महावने २० तत्रार्द्धरात्रसमये मुनिः कश्चित् तृषादितः ॥ पिपासादितयोः पित्रोर्जलमानेतुमुद्यतः ॥ अपूरयज्जले कुम्भं तदा शब्दोऽभवन्महान् २१ गजः पिबति पानीयमिति मत्त्वामहानिशि ॥ बाणधनुषसंघायशब्दो धीनमाक्षिपम् २२ हाहतोस्मीति तत्राभूच्छब्दो मानुषसूचकः ॥ कस्यापि न कृतो दोषो मया केन हतो विधे २३ प्रतीक्षते माम्माता च पिता च जलकाक्षया ॥ तच्छ्रुत्वा भयसंनतस्ततोऽहं पौरुषं वचः २४ ॥

(मे प्राणाः इदानीं एव उत्क्रमिष्यंति निश्चयः पुरा बाल्य भावेन अहं केनचित् मुनिना शप्ता) मेरे प्राण इसी समय तनते निश्चय करि निमरि जान चाहते हैं यहै निश्चय होती है काहेते पूर्व समय अज्ञान दशा में माहिं किसी मुनिने शाप दिया है १९ (पुरा यौवने दत्तः अहं चापवाणधरः, नृगया सक्तः नद्याः तीरे महावने निशि अचरम्) किस कारण शाप दिया सो सुनिये पूर्वकाल में

युवा अवस्थामें बल वीरता के गर्वभरा धनुष बाण धारण किहे शिकार खेलने में आसक्त सरयूनदी के तीर महावन में रात्री विषे विचरते रहे २० (अर्द्धरात्र समये तत्र कश्चित् मुनिःतृषा अर्दितः पित्रोः पिपासादितयोः जलं आनेतुं उद्यतः) आधीराति के समय तिसी वनमें तहां कोऊ एक मुनि जलकी प्यासते पीड़ित तथा उनके माता पिता प्यासते पीड़ित तिनके हेत जललेने कार्य कुम्भ लिये नदी तीर आया (जले कुम्भं अपूरयत् तदा महान् शब्दः अभवत्) जल में घट भरने लगा तासमय भारी शब्द होताभया जल भरत घट भभका २१ (गजः पानीयं पिवति इति मत्वा महा निशि शब्द बेधिनं बाणं धनुषि संवाय अक्षिपम्) कोई हाथी पानी पीताहै यह विचारि महा अँधेरी रातिमें शब्दबेधी बाण धनुष में चढाय मारि दिये उसी मुनि के लागिगया २२ (हाहतोस्मि इति मानुष सूचकः तत्र शब्दः अभूत् मया कस्यापि नदोषः कृतः विषे केन हतः) हाय मारेसि मोको भाव काहूने मेरे बाण मारा हाय इत्यादि मानुष बोधक तहां पर पूर्व शब्द भया पुनः बोला कि मैंने तो किसीका दोष नहीं किया हे विधाता विन अपराध किसने मोंकोमारा २३ (माताच पिताच जलकांक्षया मां प्रतीक्षते पौरुषंबचः तत् श्रुत्वा ततः अहं भयसंत्रस्तः) पुनः बोला कि मेरीमाता पुनः पिता प्यासते जल की कांक्षा करिकै मेरी प्रतीक्षा करते होयँगे भाव कब हमारा पुत्र जललावे पावै इति पुरुष के कहे वचन सो मुनिकै तब में दोष लागने की भयते त्रसित भयो डरेउं २४ ॥

शनैर्गत्वाऽथ तत्पाद्वर्षस्वामिन्दशरथोऽस्म्यहम् ॥ अज्ञानतामया विद्वस्त्वा तुमर्हसि मां मुने २५ इत्युक्त्वा पादयोस्तस्य पतितो गद्गदाक्षरः ॥ तदामामाह स मुनिर्मा भैषीर्नृपसत्तम २६ ब्रह्महत्या रूष्टसेन्न त्वां वैश्योऽहं तपसि स्थितः ॥ पितरौ मां प्रतीक्षेते क्षुत्तृड्भ्यां परिपीडितौ २७ तयोस्त्वमुदकं देहि शीघ्रमेवाविचारयन् ॥ नचेत्त्वां भस्मसात्कुर्यात्पितामेयदिकुप्यति २८ जलं दत्त्वा तु तौ नत्वा कृतं सर्वं निवेदय ॥ शल्यमुद्धर मे देहात् प्राणांस्त्यक्ष्यामि पीडितः २९ इत्युक्तो मुनिना शीघ्रम्बाणमुत्थाप्य देहतः ॥ स जलं कलशं धृत्वागतोऽहं यत्र दम्पती ३० ॥

(अथ शनैः तत्पाद्वर्षं गत्वा स्वामिन् अहं दशरथः अस्मि अज्ञानता मया विद्वः मुने मां त्रातुं अर्हसि) अब धीराधीरा करिकै ताके पास जाय बोल्पां हे स्वामिन् मैं दशरथहों अनजानत भाव पशुकी भ्रमते भेने-बाण चलावा सो आपके वेधिगया ताते हे मुने आप मेरी रक्षा करिबे योग्यहौ २५ (इति गद्गदाक्षरं उक्त्वा तस्य पादयोः पतितः तदा स मुनिः मां आह नृपसत्तम मा भैषीः) इस भाँति गद्गद अक्षर विलाप युक्त अपुष्टाक्षर कहिकै तिनके पाँयन में गिरपरेउं तासमय सो मुनिमो प्रति बोले कि हे नृपसत्तम राजों में उत्तम न डरासि २६ (त्वां ब्रह्महत्यान रूष्टेत् अहं वैश्यः तपसि स्थितः पितरौ क्षुत्तृड्भ्यां परिपीडितौ मां प्रतीक्षेते) हे राजन् तुमहि ब्रह्महत्यादि न लागी काहेते हम वैश्य वर्णहैं तपस्या व्यापारमें स्थित ताते तापस वेप कियेहैं पुनः हमारे माता पिता मँख प्यास करिके पीड़ित दोऊ मेरा आगमन देखते होयँगे २७ (त्वं अविचारयन् शीघ्रं एव तयोः उदकं देहि नोचेत् यदि मे पिता कुप्यति त्वां भस्मसात् कुर्यात्) ताते हे राजन् अब तुम कछु विचार न करौ शीघ्रही निश्चय करि जाय मेरे माता पिता दोऊन को जल पियाय देउ नाहीं तौ जो मेरा पिता को पकरी तो तुमहि भस्म करि देउ गो ताते जलले शीघ्रही जाउ २८ (जलं दत्त्वा तु तौ नत्वा सर्वं कृतं निवेदय मे देहात् शल्यं उद्धर पीडितः प्राणांस्त्यक्ष्यामि) प्रथम जल दैके पुनः दोऊ जोहैं तिनहि प्रणाम करि सब जो

अपना कियाकर्म है ताहि नम्रता पूर्वक कहि सुनायो भरु मेरी देहते इस बाणको निकारौ इसकी व्यथाते मैं प्राण त्यागताहौं २६ (मुनिनाइति उक्त्वा शीघ्रं देहतः बाणं उत्पाट्य अहं सजलं कलशं धृत्वायत्र दम्पती तत्र गतः) जब मुनिने ऐसा कहा तब शीघ्रही उनकी देहते बाण निकारि पुनः मैं सहित जल कलश लैकै चला जहां वै दोऊ स्त्री पुरुष रहैं तहां को गया ३० ॥

अतिवृद्धावंधदृशोक्षुत्पिपासादिर्तौनिशि ॥ नायातिसलिलंगृह्यपुत्रः किंवाऽत्रकारणम् ३१ अनन्यगतिकौवृद्धौशोच्यौतृट्परिपीडितौ ॥ आत्रामुपेक्षतेकिंवाभक्तिमानावयोःसुतः ३२ इतिचिंताव्याकुलौतौमत्पादन्यासजंध्वनिम् ॥ श्रुत्वाप्राहपितापुत्रकिंविलंबःकृतस्त्वया ३३ देह्यावयोःसुपानीयंपिवत्वमपिपुत्रक ॥ इत्येवंलपतोभीत्यासकाशमगमंशनैः ३४ पादयोःप्रणिपत्याहमाब्रुवन्विनयान्वितः ॥ नाहंपुत्रस्त्वयोध्यायाराजादशरथोऽस्म्यहम् ३५ पापोऽहंमृगयासक्तोरात्रौमृगविहिंसकः ॥ जलावतारादूरेऽहंस्थित्वाजलगतंध्वनिम् ३६ ॥

(अंधदृशौअतिवृद्धौक्षुत्पिपासादिर्तौनिशिसलिलंगृह्यपुत्रः ननायातिभत्रकिंवाकारणम्) अंधहैं आंखी जिनकी वृद्ध दोऊ भुँख प्यास करिकै पीड़ित पदचात्ताप करतेहैं कि रात्रीमें जल लैकै पुत्रन आया तौ यामें क्या कारणहै ३१ (वृद्धौतृट्परिपीडितौअनन्यगतिकौशोच्यौभावयोःसुतःभक्तिमानकिंवाआवांडपेक्षते) एक तौ वृद्ध दोऊहैं पुनः प्यास करिकै पीड़ित भरु पुत्रकी सिवाय औरकी हमको गति नहीं ताते शोच करिवे योग्य हैं क्योंकि हमारा पुत्र भक्तिमान कहूँहम अंधनको त्यागि तौनहीं गयाभाव देरभई तौ हमें त्यागि कहूँ चला तौ नहीं गया नहीं धर्मवंतहै न त्यागि जाई ३२ (इतिचिंताव्याकुलौमत्पादन्यासजंध्वनिर्तौश्रुत्वापिताप्राहपुत्रत्वयाकिंविलंबःकृतः) इसीभांति पदचात्तापकरिं चिंतामें व्याकुलता समयमेरे पाँय भूमिपै परते उपजी जो ध्वनिताहि दोऊ सुनिकै पिताबोला हेपुत्र तुमने क्यों जललानेमें देरकिया ३३ (आवयोःसुपानीयंदेहिपुत्रकत्वंअपिपिवइतिएवंलपतोःभीत्याशनैःसकाशमगमम्) हम दोऊनको सुन्दर पानी देहु हे पुत्र तुमहूँ निदचय करिजल पीवहु इसभांति के बचन कहिते दोऊ वृद्धताही समय हम डर करिकै धीराधीरा उनके पासगये ३४ (पादयोःप्रणिपत्यअहंविनयान्वितःअब्रुवन्अहंत्वयापुत्रःनअयोध्यायाराजादशरथःअस्मिअहम्) दोऊके पांयन परिकै हम विनय युक्त बचनबोले कि मैं तुम्हारा पुत्र नहींहौं अयोध्याको राजादशरथहौं मैं ३५ (मृगविहिंसकःपापःअहंमृगयाआसक्तःअहंरात्रौदूरेस्थित्वाजलावतारात्जलगतंध्वनिम्) मृगनको विशेषबध करनेवाला मैं पापयुक्त शिकार खेलनेमें आसक्त मैं रात्रीविषे घाटतेदूरि बैठारहौं भावजलपीने हेत मृगाघाटपर आवैं तिनके मारने हेत दूरि बैठारहा रात्रिते कछु देखि परै नहीं ताही समय तुम्हारे पुत्र जल भरनेहेत जलमें पैठे घटबोरे तामें जल पैठत समय शब्दभया ३६ ॥

श्रुत्वाऽहंशब्दवेधित्वादेकंवाणमथात्यजम् ॥ हतोऽस्मीतिध्वनिंश्रुत्वाभयात्तत्राहमागतः ३७ जटाविकीर्यपतितंदृष्ट्वाऽहंमुनिदारकम् ॥ भीतोऽगृहीत्वातत्पादौरक्षरक्षेतिचाब्रुवम् ३८ माभैषीरितिमांप्राहब्रह्महत्याभयंनते ॥ मत्पित्रोःसलिलंदत्त्वा नत्वाप्रार्थयजीवितम् ३९ इत्युक्तोमुनिनातेनह्यागतामुनिर्हिंसकः ॥ रक्षेतांमांदयायुक्तोयुवांहिशरणागतम् ४० इतिश्रुत्वातुदुःखातौविलप्यबहुशोच्यतम् ॥ पति ।

तोनीसुतोयत्रनयतत्राविलम्बयेन् ४१ ततोनीतौसुतोयत्रमयातौवृद्धदंपती ॥ स्पृ-
ष्टासुतंतौहस्ताभ्यांबहुशोऽथविलेपतुः ४२ ॥

(श्रुत्वाअर्थग्रहंशब्दवेधित्वात्एकबाणंअत्यजम्अस्मिहतःइतिध्वनिंश्रुत्वाभयात्तत्रग्रहंआगतः)
जलमें ध्वनिभिई ताहि सुनिकै बिचारेउँ कि गजादि पशु कोई जल पीताहै इति निश्चयकरि तब में
शब्द बेधीरीतिते संधानि एकबाण छांडि दिया सों तुम्हारे पुत्रके लागिगया सो बोला कि मैं मारागया
इत्यादि ध्वनि सुनिकै अपराध लागनेकी भयते तहांको मैं चलागया ३७ (जटाविकीर्यमुनिदारकंप-
तितंदृष्टाभीतःग्रहंतत्पादौगृहीत्वाचरक्षरक्षइतिअब्रुवम्) जा के शीशमें जटा बिथरी हैं ऐसा मुनिवालक
ताहि परादेखिकै मैं तिनके पांयपकरि पुनः मेरी रक्षाकरौ रक्षाकरौ इसभांति दीनबचन बोलेउँ ३८
(माभैपीःतेब्रह्महत्याभयंनइतिमांप्राहसलिलंमत्पित्रोःदत्त्वानत्वाजीवितंप्रार्थय) तब तुम्हारे पुत्रबोले
कि नडरासि तुमको ब्रह्महत्याकी भयनहीं है इत्यादि मोप्रतिकहि पुनः बोले कि जल जो है ताहि
लैजाउ हमारे माता पिताकोदेकै नमस्कारकरि अपने जीवनरक्षाहेतउनते प्रार्थनाकरेउ ३९ (इति
मुनिनाउक्तःतेनमुनिर्हिसकःहिआगताशरणागतमहिमांयुवांदयायुक्तौरक्षेतां) मेरे पिताके ढिगजाउ
इत्यादि मुनिने कहा त्पहि करिकै भाव उनको पठवाहुवा मैं मुनिको बधकरने वाला हियां आयाहौं
भाव निश्चयकरि उनको पठाया आयाहौं इति आपकी शरणागत जो मैंहौं ताहि आप दोऊदयावंत
रक्षाकरौ ४० (इतिश्रुत्वादुःखार्तौतुबहुशोऽन्यतंविलप्यनौसुतःयत्रपतितःअविलंबतत्रनय) इत्यादि
मेरे बचन सुनिकै अंधी अंधकिस दशाको प्राप्तभये कि एक तौ भूखे प्यासे दूम्हरे पुत्रके आवने में
विलंबताही दुःखमें दोऊ पीड़ितरहैं पुनः पुत्रको बधसुने तब बड़े शोचते रोदनकरि बोले कि जहां
हमारा पुत्रपराहै सो बिना विलंब शीघ्रही तहां पर हमको लैचलो ४१ (ततःतौवृद्धदंपतीमयानी
तौयत्रसुतःतौहस्ताभ्यांसुतंस्पृष्ट्वाअथबहुशःविलेपतुः) तदनंतर दोऊ स्त्री पुरुषोंको मैं लैआया
जहां उनको पुत्ररहै ते दोऊ हाथन करिकै पुत्रहि स्पर्शकरि तब बहुतसा बिलापरोदन करतेभये ४२ ॥

हाहेतिक्रंदमानौतौपुत्रपुत्रेत्यवोचताम् ॥ जलंदेहीतिपुत्रेतिकिमर्थनददास्यल-
म् ४३ ततोमामूचतुःशीघ्रंचित्तिरचयभूपते॥मयातदैवरचित्ताचितिस्तत्रनिवेशि-
ताः ॥ त्रयस्तत्राग्निरुत्सृष्टोदग्धास्तेत्रिदिवंययुः ४४ तत्रवृद्धःपिताआहत्वम-
प्यैवंभविष्यसि ॥ पुत्रशोकेनमरणंप्राप्स्यसेवचनान्मम ४५ सइदानींममप्राप्त-
शापकालोनिवारितः ॥ इत्युक्त्वाविललापाथराजाशोकसमाकुलः ४६ हाराम-
पुत्रहासीतेहालक्ष्मणगुणाकर ॥ त्वद्वियोगादहंप्राप्तोमृत्युकैकेयिसंभवम् ४७ वद-
न्नेवंदशरथःप्राणांस्त्यक्त्वादिवंगतः॥कौशल्याचसुमित्राचतथान्याराजयोषितः४८॥

(तौहाहाइतिक्रन्दमानौपुत्रपुत्रइतिअवोचताम् जलंदेहिइतिपुत्रअलम्किमर्थनददासिइति) म-
हाराज कहत हे कौशल्ये मृतक पुत्र को देखि अन्धी अन्ध दोऊ हाय हाय ऐसा कहि बिलाप करते
पुत्र पुत्र ऐसा पुकारे हे पुत्र जल देहु ऐसा कहें हे पुत्र समर्थ कौने अर्थ जल नहीं देते हौं इत्यादि
कहे ४३ (ततोमांउचतुःभूपतेशीघ्रंचित्तिरचयतदामयाएवचितिःरचितान्तत्रत्रयःनिवेशिताः तत्रअ-
ग्निंउत्सृष्टःदग्धाःतेत्रिदिवंययुः) शोक बिलाप करि तदनन्तर अन्धी अन्ध दोऊमों प्रति बोले कि
हे भूपते शीघ्रही चितारचौ इति सुनितब मैंने निश्चय करि चितारचि दिया तापर तीनिहूँको बैठाया

अग्नि लगाय दिया भस्म हैकै तेतीनिहूँ स्वर्गहि जातेभये ४४ (तत्रवृद्धः पिता ब्राह्ममवचनात्त्वं
पि एवं भविष्यसि पुत्रशोकेन मरणं प्राप्स्यसे) तव मरणकाल वृद्ध पिता बोला कि हे राजन् मेरे वचनते
तुम्हारी भी निश्चय करिकै ऐसेही दशाहोइगी भावमेरी तुल्यतुमहूँ पुत्र दुःखकरिकै मृत्युको प्राप्त हो
उगे ४५ (सशपकालः अनिवारितः इदानीममप्राप्तः इति उक्त्वा अथ राजा शोकसंभ्राकुलः विललाप)
सोई शापकाल जो किसीको रोकानहीं रुकिसक्ताहै सोई या समयमें मोको प्राप्त भया इसी समय
प्राण जातेहैं ऐसा कहि महाराज दुःखमें व्याकुल विलाप करने लगे ४६ (पुत्ररामहासतिहालक्ष्मण
गुणाकरहाकैकेयीसंभवस्त्वत्त्वियोगात्प्रहंमृत्युं प्राप्ताः) हे पुत्र राम सबको रमावनहारे हा हे सीते
सबको शीतल करणहारीहाहे लक्ष्मण सब लक्षणयुत तुम तीनिहूँ दिव्य गुणनके खानिहाभाव तुम
समर्थ वनेहौ अरु तुच्छ स्त्री कैकेयी त्यहि करिकै उत्पन्न जो तुम्हारा वियोग ताहोते मैं मृत्युको प्राप्त
होताहौं क्यों नहीं रक्षा करतेहौ ४७ (एवं वदन् दशरथः प्राणांस्त्यक्त्वा दिवंगतः) इसी प्रकार कहत महा-
राज प्राण त्यागि स्वर्गहि गये तब कौशल्या पुनः सुमित्राः पुनः ताही प्रकार अन्य औरी यावत् महा-
राज की रानी रहें ते सब ४८ ॥

चुक्रुशुश्च विलेपुश्च उरस्ताडनपूर्वकम् ॥ वशिष्ठः प्रययौ तत्र प्रातर्मन्त्रिभिरावृतः
४६ तैलद्रोण्यां दशरथं क्षिप्त्वा दूतान्वाब्रवीत् ॥ गच्छ तत्त्वरितं सा श्वायुधाजि
नगरं प्रति ५० तत्रास्ते भरतः श्रीमान् च शत्रुघ्न सहितः प्रभुः ॥ उच्यतां भरतः शीघ्र
मागच्छेति ममाज्ञया ५१ अयोध्यां प्रति राजानं कैकेयी चापि पश्यतु ॥ इत्युक्त्वा
त्वरितं दूतागत्वा भरतमातुलम् ५२ युधाजितं प्रणम्योचुर्भरतं सानुजं प्रति ॥ व
शिष्ठस्त्वाब्रवीद्राजन् भरतः सानुजः प्रभुः ५३ शीघ्रमागच्छतु पुरीमयोध्यामविचा
रयन् ॥ इत्याज्ञप्तोऽथ भरतस्त्वरितो भयविह्वलः ५४ ॥

(उरस्ताडनपूर्वकम् चुक्रुशुः च विलेपुः च प्रातः मन्त्रिभिः आवृतः वशिष्ठस्तत्र प्रययौ) छाती पीटन सहित
गुण प्रताप वर्णन करि प्राणपति इत्यादि कहि पुकारती हैं पुनः रोदन करती हैं जब भोरभया तब
सुमंत्रादि सब मन्त्रिनको संगलें वशिष्ठजी तहां जातेभये जहां महाराज मृतकहैं ४६ (दशरथ तैल
द्रोण्यां क्षिप्त्वा अथ दूतान्वाब्रवीत् युधाजितं नगरं प्रति तत्संश्रवात्त्वरितं गच्छ) दशरथजीको तनतेल
नावमें भरितामें धरि तब दूतन प्रति वशिष्ठजी बोले कि युधाजितके नगरमें जहां भरतहैं तहांको
सहित अश्वभाव घोडेन पर सवार है शीघ्रही जाउ ५० (शत्रुघ्न सहितः श्रीमान् भरतः प्रभुः तत्रास्ते
मम आज्ञया भरतः शीघ्रं मागच्छ इति उच्यतां) शत्रुघ्न सहित श्रीमान् राजा भरत तहां हैं सो मेरी आज्ञा
करिकै भरत शीघ्रही अयोध्याको आवैं ऐसा जायकहेउ ५१ (अयोध्यां प्रति राजानं च अपि कैकेयी पश्य
तु इति उक्तः दूतात्त्वरितं गत्वा भरतमातुलम्) अयोध्यामें आयकै राजा दशरथाहि पुनः निश्चय करि कै-
केयी जो है ताहि देखें भाव राजाको मृतकर्म कैकेयीकी कुबुद्धि इति दोऊ सँभारिवे योग्य भरतहैं
इत्यादि वचन जब वशिष्ठजी कहा तब दूत ऐसे वेगतेचले जो शीघ्रही पहुँचे तहांके राजा जो भरत
के मामाहैं ५२ (युधाजितं प्रणम्योचुः राजन् सानुजं भरतं प्रति वशिष्ठः त्वाब्रवीत् सानुजः भरतः प्रभुः ५३
अविचारयन् अयोध्यां पुरीं शीघ्रं मागच्छतु इति आज्ञप्तः भरतः भयविह्वलः त्वरितः) युधाजित भरतके मामा
तिनिहैं प्रणाम करि दूतबोले हे राजन् सहित शत्रुघ्न भरत प्रति यह संदेश वशिष्ठजी कहाहैं कि सहित

शत्रुहन भरत प्रभु बिना बिचारकिहें अयोध्यापुरीको शीघ्रही आवैं इत्यादि वशिष्ठकी आज्ञासुनि भरत भयकरिकैं अत्यंत डरतें बिकल शीघ्रही चले ५४ ॥

आययौगुरुणादृष्टः सहदूतैस्तुसानुजः ॥ राज्ञो वाराधवस्यापि दुःखं किंचिदुपस्थितम् ५५ इति चिन्तापरोमार्गे चिन्तयन्नगरं ययौ ५६ नगरं भ्रष्टलक्ष्मीकं जनसंवाधवर्जितं ॥ उत्सवैश्च परित्यक्तं दृष्ट्वा चिन्तापरो भवत् ५७ प्रविश्य राजभवनं राजलक्ष्मीर्विवर्जितम् ॥ अपश्यत् कैकेयी तत्र एका मेवासने स्थिताम् ॥ ननामशिरसापादौ मातुर्भक्तिसमन्वितः ५८ आगतं भरतं दृष्ट्वा कैकेयी प्रेमसंभ्रमात् ॥ उत्थाया लिंग्य रभसा स्वाङ्गमारोप्य संस्थिता ५९ मूर्ध्नि अवघ्राय पप्रच्छ कुशलं स्वकुशलस्य सा ॥ पितामेकुशली भ्राता माता च शुभलक्षणा ६० ॥

(गुरुणादृष्टः दूतैः सह तु सन्नुजः आययौ राज्ञः वाराधवस्य अपि किंचित् दुःखं उपस्थितम्) गुरुकी आज्ञामानि दूतन करिकैं सहित पुनः सहित शत्रुहन रथपर सवारहैं भरत चले राह में बिचार करते हैं कि महाराज को वा रघुनाथजी को निश्चय करिकैं कछु दुःख प्राप्त भयाहैं ५५ (इति मार्गे चिन्ता परः चिन्तयन् नगरं ययौ) इसी भांति चिन्तामें बूढ़ेहुये चिन्तवन करते भरत अयोध्यामें पहुँचे ५६ (भ्रष्ट लक्ष्मीके जन सन्वाधवर्जितम् च उत्सवैः परित्यक्तं नगरं दृष्ट्वा चिन्तापरः अभवत्) नष्ट हँगई है शोभाजामें समूहजन बटुरे कहूँ नहीं देखातेहैं पुनः जो कोई देखात सो उत्साह त्यागे उदासीन अकेला बैठाहैं इति उदासीन जो नगर ताहि देखि भरतजी चिन्तापरायण भये ५७ (राजभवनं प्रविश्य राजलक्ष्मीं विवर्जितम् अपश्यत् तत्र एका एव कैकेयी आसने स्थिताम् भक्ति समन्वितः मातुः पादौ शिरसाननाम) पुनः राजमंदिर में पैठे सो राजश्री करिकैं रहित शून्य देखते भये तहां राजानहीं अकेले निश्चय करि एक कैकेयी आसनपर बैठी है ताहि देखिकैं भरतजी भक्ति संयुक्त माताके पांयनबिबे शीश नवाय करि प्रणाम कीन्हें ५८ (भरतं आगतं दृष्ट्वा कैकेयी प्रेम संभ्रमात् उत्थाय रभसा आलिंग्य स्वङ्गं आरोप्य संस्थिता) भरतहि आवत देखि कैकेयी प्रेमके संभ्रमताते उठिकैं शीघ्रही उर में लगाय परमानन्द युत भेंटि पुनः अकोरा में लैंकैं आसन पर बैठिजाती भई ५९ (मूर्ध्नि अवघ्राय सास्वकुशलस्य कुशलं पप्रच्छ मे पिता भ्राता च शुभ लक्षणा माता कुशली) अकोरा में बैठाये भरतजीको शीश सूँधि पुनः सो कैकेयी आपनेबाप के कुलकी कुशल जोहैं ताहि पूँछतीभई कि हमारे पिता तथा भाई पुनः मंगलक लक्षण न युक्त जां हमारी माता इत्यादि यावत् परिवार सो सब कुशल क्षेमसहित है ६० ॥

दृष्ट्या त्वमद्य कुशली मया दृष्टोऽसि पुत्रक ॥ इति पृष्टः स भरतो मात्राचिन्ताकुलेन्द्रियः ६१ दूयमानेन मनसामातरं समपृच्छत ॥ मातः पितामेकुत्रास्ते एका त्वमिह संस्थिता ६२ त्वया विनानमेतातः कदाचिद्रहसि स्थितः ॥ इदानीं दृश्यते नैव कुत्र तिष्ठति मेव ६३ अदृष्ट्वा पितरं मेऽद्य भयं दुःखञ्ज जायते ॥ अथाह कैकेयी पुत्रां किं दुःखेन तवानघ ६४ यागतिर्धर्मशीलानां अश्वमेधादिवाजिनाम् ॥ तांगतिं हत

वानद्यपितातेपितृवत्सल ६५ तच्छ्रुत्वानिपपातोर्व्याभरतःशोकविह्वलः ॥ हा
तातक्गतोसित्वंत्यक्त्वामांघ्रिजिनार्णवे ६६ ॥

(पुत्रकत्वं कुशली अथ मया दृष्ट्यादृष्टः भसि इति मात्रापृष्टः भरतः स चिन्ता आकुलः इन्द्रियः) कैकेयी कहत हेपुत्र तुमहिं कुशल सहित आजु मैं दृष्टि करिके देखतीहों सोई परम आनन्द है इत्यादि प्रसन्नमन यद्यपि मातानेपूछा तदपि नगरउदासीनदेखते भरत सहितचिन्ता व्याकुलहैं सब इन्द्रीजाकी ६१ (मनसादूयमानेन मातरं संअपृच्छत मातःत्वं एकाइह संस्थिता मेपिता कुत्रास्ते) मनकरिके सन्तापयुक्त भरत माता प्रति पूछे कि हे मातः तुमहीं एक इहां बैठीहों अरु हमारे पिता कहाहैं ६२ (मेमातः त्वयाविना कदाचिन्न रहसि स्थितः इदानीं एव न दृश्यते मेवदकुत्र तिष्ठति) भरत कहत हे माता हमारा पिता तुम विना अकेला कवहूँ नहीं एकान्त स्थानमें बैठता रहा अरु या समय में निश्चय करिके नहीं देखि परतेहैं सो मोंप्रति कहु कहां बैठे हैं ६३ (पितरं अदृष्ट्वा अथ मे भयंच दुःखं जायते अथकैकेयी पुत्रं आह अनघ तव दुःखेन किं) किस हेत पूछताहों कि पिता जोहैं ताहि विनादेखे यासमय में मोंको डर पुनः दुःख उत्पन्न होताहै तव कैकेयी पुत्रप्रति बोलती भई हे अनघ निःपाप तुमको दुःख करिके क्याहै भाव दयाही दुःख करतेहों ६४ (पितृवत्सल धर्मशालिनां अद्वमेयादि याजिनां यागतिः) हे पितृवत्सल माता पितापर परम प्रीति करने वाले धर्म मार्ग में आरूढ होनेवालेनको जो गति प्राप्तहोती है तथा अद्वमेध यज्ञ करनेवालेन को जो गति होतीहै (तां गतिं अद्यते पिता गतवान्) ताही गतिको आज तुम्हारा पिता गयाहै तव दुःख करनेते क्या प्रयोजनहै ६५ (तत्श्रुत्वा भरतः शोक विह्वलः उर्व्या निपपात ऋजिन अर्णवे मांत्यक्त्वा तातहा त्वं कगतोसि) कैकेयीके मुखते पितामरण सो सुनिके भरत दुःखकरिके बिकल हवैगये मूर्च्छित पृथ्वीपर गिरपरे पुनः बोले कि दुःखरूपसमुद्रमें मोहित्यागि हेतात तुमकहांगयो ६६ ॥

असमर्प्यैव रामायराज्ञेमांक्गतोसिभो ॥ इतिविलपितंपुत्रंपतितंमुक्तमूर्द्धजम् ६७
उत्थाप्यामृज्यनयनेकैकेयीपुत्रमब्रवीत् ॥ समाश्वसिहिभद्रंतेसर्वसंपादितंमया ६८
तामाहभरतस्तातोघ्रियमाणःकिमब्रवीत् ॥ तमाहकैकेयीदेवीभरतंभयवर्जिता ६९
हारामरामसीतेतिलक्ष्मणेतिपुनःपुनः ॥ विलपन्नेवसुचिरंदेहंत्यक्त्वादिवंययौ ७०
तामाहभरतोहंवैरामःसन्निहतोनकिम् ॥ तदानींलक्ष्मणोवाऽपिसीतावाकुत्रतेगताः
७१ कैकेय्युवाच ॥ रामस्ययौवराज्यार्थंपित्रातेसंभ्रमःकृतः ॥ तवराज्यप्रदानाय
तदाऽहंविघ्नमाचरन् ७२ ॥

(राज्ञेरामायमांएवअसमर्प्यभोक्गतोसिइतिविलापितंमुक्तमूर्द्धजम्पतितंपुत्रं) राजारामके अर्थ मोहिं निश्चयकरि विना सौंपिगये हे पिता तुम कहांगये इस भांति विलापकरतेहुये शीश में बारछूटे भूमि में परे पुत्र जो भरत तिनहिंकैकेयी ६७ (उत्थाप्यनयनेअमृज्यकैकेयीपुत्रंअब्रवीत्तेहिभद्रंसंआश्वसि मयासर्वसंपादितं) उठाय नेत्रोंते आशुपोंछि कैकेयी पुत्रप्रतिबोलती भई कि तुम्हारा निश्चयकरि कल्याणहोय अपने मनको सावधान करौ मैंने तुम्हारा सबकार्य सिद्धकरि राखाहै ६८ (भरतःतां आहम्रियमाणःतातःकिंअब्रवीत्भयवर्जिताकैकेयीदेवीभरतंतंआह) तव भरतजीत्यहिकैकेयी प्रतिबोले कि मरणसमय पिता क्या कहतेभये तव भयत्यागि कैकेयीदेवी भरत प्रतिबोलती भई ६९ (हारामराम सीताइतिलक्ष्मणइतिपुनःपुनःसुचिरंविलपन्तएवदेहंत्यक्त्वादिवंययौ) हेपुत्र तुम्हारे पिता मरणसमय

यही कहते रहे कि हारामिराम सीता इत्यादि हालक्ष्मण इत्यादि बारम्बार पुकारत बहुतवारतक विलाप करते ही निश्चय करि देह त्यागि स्वर्गको गये ७० (भरतः तां आह्वये अंवरामः किं न सन्निहितः लक्ष्मणः वा अपि सीतावाते तदानीं कुत्र गताः) भरतजी यहि कैकेयी प्रतिबोले हे माता रघुनन्दन क्या नहीं पिताके पास बैठे रहे अरु लक्ष्मण वा निश्चय करि जानकी वा रघुनन्दनते सत्रता समय में कहां गये हैं जो हासहित उनको नामलै प्राणत्यागे सो कहु ७१ (तेषां त्राणमस्य द्यौर्वराज्यार्थं संभ्रमः कृतः तदा अहंत वराज्यप्रदानाय विघ्नं आचरन्) कैकेयीबोली कि हे पुत्र तुम्हारे पिताने रामको युवराज पद देने हेतु सामग्री मुहूर्तादि सब काजमें शीघ्रता किया भाव भरतन आवे वीचही कार्य करिलेवे इति जानिता समयमें मैं तुमको राज्यप्राप्ति हेतु राखराज्य होनेमें विघ्न परनेके आचरण किया ७२ ॥

राज्ञादत्तं हि मे पूर्ववरदेन वरद्वयम् ७३ याचितं तद्विदानीं मे तद्यरे केन तेऽखिलम् ॥
राज्यं रामस्य चैकेन वनवासो मुनिव्रतम् ॥ ततः सत्यपरो राजा राज्यं दत्त्वा तवैव हि ७४
रामं संप्रेषयामास वनमेव पिता तव ॥ सीताऽप्यनुगतारानं पातिव्रत्यमुपाश्रिता ७५
सोऽत्रात्रं दर्शयन् राममनुयातोऽपि लक्ष्मणः ॥ वनंगतेषु सर्वे पुराजा तानेव चिन्तयन् ७६
प्रलपन् रामरामेति ममारुपसत्तमः ॥ इति मातुर्वचः श्रुत्वा वज्राहत इव द्रुमः ७७
पपात भूमौ निःसंज्ञस्तं दृष्ट्वा दुःखिता तदा ॥ कैकेयी पुनरप्याह वत्स शोकेन किं तव ७८
राज्ये महति संप्राप्ते दुःखस्यावसरः कृतः ॥ इति ब्रुवंती मालोक्य मातरं प्रदहन्निव ७९ ॥

(राज्ञा पूर्ववरदेन वरद्वयं मे हि दत्तं) राजाने पूर्व समय प्रसन्न है के वरदान है मोंको देराखे रहें ७३ (तत्तद्विदानीं मे याचितः तयोः एकेन तेऽखिलं राज्यं च एकेन रामस्य मुनिव्रतम्वनवासः राजा सत्यपरः ततः तवैव हिराज्यं दत्तं) सोई वर दोऊ वा समयमें मैं याचा तिन दोऊनमें एक वर करिके तुम्हारे अर्थ संपूर्ण राज्य मोंगा पुनः एक वर करिके रामको मुनिव्रत सहित वनमें वास मोंगा तब राजा जो सत्य परायण ताते तुम्हारे अर्थ निश्चय करि सब राज्य दिये ७४ (रामं तव पिता वनं एव संप्रेषयामास सीता पातिव्रत्यं उपाश्रितारामं अनुपगता) अरु राम जो हैं तिनहिं तुम्हारे पिता वनहि निश्चय करि पठाये सीता पातिव्रतके आश्रयण करिके रामके पीछे निश्चय करि चली गई ७५ (सोऽत्रात्रं दर्शयन् लक्ष्मणः अपि रामं अनुयातः सर्वे पुनंगतेषु तान् एव चिन्तयन् राजा) उत्तमभाई को धर्म देखावत संते लक्ष्मण भी निश्चय करिके रामके पीछे चले गये इस भांति तानिहू जनेनको वनमें जात संते तिनहिं निश्चय करि चितवन करते हुये महाराज ७६ (रामराम इति प्रलपन् उपसत्तमः ममारु इति मातुर्वचः श्रुत्वा वज्राहत इव) राम राम इत्यादि प्रलाप करत संते महाराज प्राणत्यागि दिये इत्यादि माताके वचन सुनि यथावज्रको माराहुआ वृक्षगिरै ताही सम मूर्च्छित है ७७ (भूमौ पपात तं निःसंज्ञः दृष्ट्वा तदा दुःखिता कैकेयी पुनः अपि आह वत्स तव शोकेन किं) भूमिपै गिरे परे भरत तिनहिं मूर्च्छित देखि तब दुखित जो कैकेयी सो पुनः निश्चय करि बोलती भई हे बत्स तुमको दुःख करिके क्या प्रयोजन है ७८ (महति राज्ये संप्राप्ते दुःखस्य कुतः अवसरः इति ब्रुवंती प्रदहन्निव मातरं मालोक्य) क्योंकि भारी राज्य संपूर्ण प्राप्त भये संते तब तुमको दुःख करनेको कहां समय है इस भांति के वचन कहती यथा उरको भरत किहे देती है ऐसी कराख शत्रुवत् जो माता कैकेयी ताहि देखिके भरत सक्रोध बोले ७९ ॥

असंभाष्यसिपापेमेघोरेत्वभर्तृघातिनि ॥ पापेत्वद्भर्जजातोऽहंपापवानेस्मिंसांप्र
तम् ८० अहमग्निंप्रवेक्ष्यामिविषंवाभक्षयाम्यहम् ॥ खड्गेनवाऽथचात्मानंहत्वा
यामियमक्षयम् ८१ भर्तृघातिनिदुष्टेत्वंकुंभीपाकंगमिष्यसि ॥ इतिनिर्भर्त्स्यकैके
श्रीकौशल्याभवनंययौ ८२ सापितंभरतंदृष्ट्वामुक्तकण्ठारुरोदह ॥ पादयोःपति
तंस्तस्याभरतोऽपितदारुदन् ८३ आलिंग्यभरतंसाध्वीराममातायशस्विनी ॥
कृशातिदीनवदनासाश्रुनेत्रेदमब्रवीत् ८४ पुत्रत्वयिगतेदूरमेवंसर्वमभूदिदम् ॥
उक्तमात्राश्रुतंसर्वत्वयातेमातृचेष्टितम् ८५ पुत्रःसभार्योवनमेवयातःसलक्ष्मणोमेर
घुरामचंद्रः ॥ चीराम्वरोबद्धजटाकलापःसंत्यज्यमांदुःखसमुद्रमग्नान् ८६ ॥

• (भर्तृघातिनिघोरेपापेत्वंमेअसंभाष्यसिपापेत्वत्गर्भजातःअहंसांप्रतस्मिंसांपापवान्) पतिकोघात
करनेवाली हेभयंकर पापभूति तू मेरे सन्मुख न वार्ताकरु हेपापिनि तेरेगर्भते उत्पन्नमें भयाहौं ताते
या समयमेंभी पापवन्तहौं ८० (अहंअग्निंप्रवेक्ष्यामिवाअहंविषंभक्षयामिअथवाखड्गेनचचात्मानंह-
त्वायमक्षयस्यामि) मैं अग्निमें पैठिजैहौं वा मैं विषखाइहौं अथवा तरवारिते शिरकाटिकै मरिजैहौं
तूराज्य किसको देइगी ८१ (दुष्टेभर्तृघातिनित्वंकुंभीपाकंगमिष्यसिइतिकैकेयीनिर्भर्त्स्यकौशल्याभ-
वनंययौ) हे दुष्टे पतिको घातकरनेवाली तू कुंभीपाक नरकहि जायगी इत्यादि कैकेयीको अनादर
करि भरत कौशल्याके मंदिरको चलेगये ८२ (तंभरतंदृष्ट्वासाअपिमुक्तकंठारुरोदहतस्यापादयोःपति
तःभरतःअपितदारुदन्) तिन भरतहि आवत देखिकै सो कौशल्या निश्चय करि खोलिकै कण्ठ रो-
दन करनेलगी तिनके पायनमें गिरिकै भरतभी निश्चय करि ता समय रोदन करनेलगे ८३ (भरतं
आलिंग्यसाध्वीयशस्विनीराममाताकृशातिदीनवदनासाश्रुनेत्रेदमब्रवीत्) भरतहि हृदय में
लगाय पतिव्रता यशवन्ती रामकी माता दुर्बल तन अत्यन्त दुखितमुख करिकै सहितआश्रुनेत्र
इसप्रकार बचन बोली ८४ (पुत्रत्वयिदूरएवगतेइदंसर्वमभूत्मात्राउक्तंतेमातृचेष्टितंसर्वत्वयाश्रुतं)
हे पुत्र तुम्हारे दूरि जातसंते निश्चय करि यहसर्व उत्पातभया तुम्हारी माताने कहाहोगा तुम्हारी
माताके कीन्हें यावत् कर्मते सब तुमने सुनाहोगा ८५ (मेपुत्रःरघुरामचंद्रःचीराम्वरःजटाकलापःबद्ध
दुःखसमुद्रमग्नान्मांसंत्यज्यसभार्यःसलक्ष्मणःवनंएवजातः) हे पुत्र भरत मेरा जो पुत्र रघुकुल कुमुद
प्रकाशक रामचंद्र मुनि वसन धारण करि जटा समूहको बाँधि तयारभये वियोग जनित दुःख रूप
समुद्रमें बूझी जोमैं ताहि त्यागि जानकी लक्ष्मण सहित वनहि निश्चय करि चले गये ८६ ॥

हारामहामेरघुवंशनाथजातोऽसिमेत्वंपरतःपरात्मा ॥ तथापिदुःखंनजहातिमांवै
विधिर्वलीयानितिमेमनीषा ८७ सएवंभरतोवीक्ष्यविलपंतीभृशंशुचा॥ पादौगृही
त्वाप्राहेदंशृणुमातर्वचोमम ८८ कैकेय्यायत्कृतंकर्मरामराज्याभिषेचने ॥ अन्य
द्वायदियानामिसामयानोदितायदि॥ पापंमेऽस्तुतदामातर्ब्रह्महत्याशतोद्भवम् ८९
हत्वावाशिष्ठंखड्गेनअरुंधत्यासमान्वितम् ॥ भूयात्तत्पापमखिलममजानामियद्य
हम्॥ इत्येवंशपथंकृत्वारुरोदंभरतस्तदा ९० कौशल्यातमथालिंग्यपुत्रजानामि
माशुचः ॥ एतस्मिन्नंतरेश्रुत्वाभरतस्यसमागमम् ९१ ॥

(हामेरघुवंशनाथ'हाराम परतः परात्मा त्वं मे जातोसि तथापि मां वैदुःखंनजहाति मे मनीषा

इति विधिःवलीयान्) हमारे पुत्र रघुवंशनाथ भावमोंको त्यागि कहांगयो हाराम परात्पर परमात्मा तुम मेरे उरते उत्पन्न भयो भाव परब्रह्म पुत्र हवै प्राप्तभयो ताहूपर जोमोहिं निश्चय करि दुःखनहीं त्यागता है तौ अब मेरी बुद्धि विचारकर यही निश्चय होताहै कि विधि जो कर्म सोई बलवानहै ८७ (एवंशुचापभृशं विलपन्ती वीक्ष्य सभरतः पादौ गृहीत्वा इदंप्राह मातः ममवचः शृणु) इसप्रकार शोचपूर्वक अत्यन्त रोदन करती हुई कौशल्याको देखि सो भरत पांथ पकरि इसप्रकार बोले कि हे माता मेरे वचनसुनु ८८ (रामं राज्य अभिपेक्षने कैकेय्या यत्कर्मकृतं सायदि मया नोदितावायदि अन्यत् यानामि तदा मातः ब्रह्मइत्या शतोद्भवम् पापंमे अस्तु) रघुनन्दन के राज्याभिषेकमें कैकेयी ने जो कर्म कियाहै सो कैकेयीको जोमैंने प्रेरणा कियाहोय वा और किसीने सिखवाहोयसोऊ जोमैं जानताहोऊँ तौहेमातः ब्रह्मइत्या सैकरोंकरिकै जोपाप सोईपाप मोंकोलागै ८९ (अरुन्धत्यासमन्वितं वशिष्ठं खड्गेन हत्वातत् अखिलं पापं ममभूयात् यदिअहं जानामि इति एवंशपथंकृत्वा तदा भरतः रुरोद) अरुन्धती करिकै सहित वशिष्ठ जोहैं तिनहिं तरवारिकरिकै मारे जो पापहोय तौन संपूर्ण पाप मोंको होय जो मैं कुछभी हालजानताहोऊँ इसप्रकार शपथकरि तब भरतजो रोदन करनेलगे ९० (अथकौशल्यातं आर्त्तं गीतं जानामि पुत्रमाशुच एतस्मिन् अन्तरे भरतस्यसमागमं श्रुत्वा) तब कौशल्या तिन भरतहि उरमें लगायबोली कि मैंजानतीहौं तुम कुछ नहीं जानतेहौं हेपुत्र न शोच करौ ताहीसमयके बीचमें भरतके आवने को हाल पुरवासी लोगोंने सुनिकै तब ९१ ॥

वशिष्ठोमंत्रिभिःसार्द्धं प्रययौ राजमंदिरम् ॥ रुदंतम् भरतं दृष्ट्वा वशिष्ठः प्राह सादरम् ॥ ९२ वृद्धो राजा दशरथो ज्ञानी सत्य पराक्रमः ॥ भुक्त्वा मर्त्यसुखं सर्वमिष्टा विपुल दक्षिणैः ॥ ९३ अश्वमेधादिभिर्यज्ञैर्लब्ध्वारामं सुतं हरिम् ॥ अंतर्जगाम त्रिदिवं देवेन्द्रा र्द्धासनं प्रभुः ॥ ९४ तं शोचसि वृथैव त्वमशोच्यं मोक्षभाजनम् ॥ आत्मानित्यो व्ययः शुद्धो जन्मनाशादिवर्जितः ॥ ९५ शरीरं जडमत्यर्थमपवित्रं विनश्वरम् ॥ विचार्यमाणेशोकस्य नावकाशः कथंचन ॥ ९६ पिता वातनयो वापि यदिसृष्युवशंगतः ॥ मूढास्तमनुशोचन्ति स्वात्मताडनपूर्वकम् ॥ ९७ ॥

(मंत्रिभिःसार्द्धं वशिष्ठः राजमंदिरं प्रययौ भरतं रुदंतं दृष्ट्वा वशिष्ठः सादरं प्राह) सुमंत्रादि मंत्रिन करिकै सहित वशिष्ठजी राजमंदिरहि जातेभये तहां भरतहि रोदनकरते देखि वशिष्ठजी सहित आदर बोलते भये ९२ (राजा दशरथः वृद्धः ज्ञानी सत्य पराक्रमः मर्त्य सुखं सर्वं भुक्त्वा विपुल दक्षिणैः इष्टा) हे भरत राजा दशरथ वृद्ध रहैं ताते लोक में कलु हानि नहीं पुनः ज्ञानी रहे ताते परलोक में कलु हानि नहीं पुनः सत्य पराक्रम रहा ताते मृत्पुल्लोक में यावहु सुख हैं ते सब भोग कीन्हें पुनः बहु दक्षिणाकरके अभीष्ट पूर्ण करि लिये ९३ (अश्वमेधादिभिः यज्ञैः हरिरामं सुतं लब्ध्वा अन्ते प्रभुः त्रिदिवं जगाम देवेन्द्रस्य अर्द्धासनं) अश्वमेधादिकन करिकै हरि जो राम तिनहिं पुत्र करि पाये इत्यादि सब वाञ्छा पूर्ण करि अन्त समय स्वर्ग लोकहि गये तहां राजा देवराज इन्द्र के आये सिंहासन पर आसन पाये ९४ (मोक्षभाजनम् अशोच्यम् तत्त्वं वृथा एव शोचसि आत्मा जन्मनाशादिवर्जितः नित्यः अव्ययः शुद्धः) मोक्ष के पात्र पुनः नहीं हैं जो शोचवे योग्य ऐसे जो महाराज दशरथ तिनहिं तुम वृथाही निश्चय करि शोच करतेहो अरु आत्मा तौ जन्म मरणादि रहित नित्य एक रस अखण्ड शुद्ध निर्विकार है ९५ (शरीरं जडं विनश्वरं अत्यर्थं अपवित्रं विचार्यमाणे कथंचन शोक

त्यभवकाशः) शरीर जड़ है बिना आत्माकी प्रकाश देह में चेतन्यता नहीं है विशेषिनद्वर भाव निश्चय एक दिन नाश है जाइगी पुनः अत्यन्त अपवित्र भाव रोम त्वचा हाड़ मांस रक्त विष्ठा मूत्रादि अपावन वस्तु भरा इत्यादि बिचार किहे ते किसी भांति दुःख करने को अवकाश ठौर नहीं है ६६ (पिता वान्तनयः अपिवायदि मृत्युवशंगतः तंमूढः स्वआत्मताङ्गन पूर्वकम् अनुशोचन्ति) पिता अथवा पुत्र निश्चय करि वा कोऊ देह सम्बन्धी होइ जो मृत्युवश गया भाव मरि गया ताहि अज्ञानी अपनी आत्मा को ताङ्गन पूर्वक भाव शिर छाती पीटनादि दण्ड देत सन्ते शोच करते हैं भाव ज्ञानी नहीं शोचते हैं ९७ ॥

निःसारेखलुसंसारेवियोगोज्ञानिनायदा॥भवेद्वैराग्यहेतुःसशांतिंसौख्यंतनोतिच
६८ जन्मवानयदिलोकेस्मिन्तार्हितमृत्युरन्वगात् ॥ तस्मादपरिहार्योऽयंमृत्युर्ज
न्मवतांसदा६९ स्वकर्मवशतःसर्वजंतूनांप्रभवाप्ययौ ॥ विजानन्नप्यअविद्वान्यः
कथंशोचतिवांधवान्१००ब्रह्माण्डकोट्योनष्टाःसृष्टयोबहुशोगताः॥ शुष्यंतिसा
गराःसर्वेकैवास्थाक्षणाजीविते १०१ चलपत्रांतलग्नान्बुबिन्दुवत्क्षणभंगुरम् ॥
आयुस्त्यजत्यवेलायांकस्तत्रप्रत्ययस्तव १०२ देहीप्राक्तनदेहोत्थकर्मणादेहवा
प्नुनः ॥ तदेहोत्थेनचपुनरेवंदेहःसदात्मनः १०३ ॥

(खलुनिःसारेसंसारेज्ञानिनायदावियोगःसःवैराग्यहेतुःभवेत्शांतिचसौख्यंतनोति) निश्चयकरि असार संसारविषे ज्ञानी पुरुषनको जब किसी प्रियजनको वियोग होताहै सोई वैराग्य उपजनेको कारण है जाताहै भाव विनात्यागही त्याग है जाताहै अरु शांति पुनः सुखको उत्पन्न करत भाव वियोग दुःख विषमता हरिचित्त शांतकरत असंगते सुखीरहत ९८ (अस्मिन्लोकेयदिजन्मवान्तर्हि तंमृत्युःअनुभगात्तस्मात्जन्मवतांभयंमृत्युःसदाअपरिहार्यः) इतमृत्युलोकमें जब जीव जन्म धरता है तब ते ताकी मृत्यु वाके पाछेही फिरा करती है तिस कारणते जन्म धारिणको यह मृत्यु अपरि हार्यभाव किसीके रोकने योग्य नहीं है ९९ (जंतूनांस्वकर्मवशतःप्रभवअपिभयौविजानन्यःअपिअ-विद्वान्वांधवान्कथंशोचति) देहधारी मनुष्योंको आपने कर्मनके वशतेलोकमें उत्पन्नहोना निश्चय करि मरिजाना होता है यह लोक प्रसिद्ध विशेषि करि सब जानते हैं तौ जो पुरुष निश्चय करि अ-विद्वान् नहीं तत्त्व ज्ञाता हैं तवहूं पिता बन्धु आदि के मरे कैसे शोच करें १०० (कोटयःब्रह्माण्डान-ष्टाः बहुशःसृष्टयः गताः सर्वेसागराः शुष्यंतिक्षणजीवेकैवास्था) जब करोरिन ब्रह्माण्ड प्रलयते नाश हवै गये तथा बहुत प्रकार की सृष्टि भई वीति गई तथा सब समुद्र उत्पन्न भये भरे रहे पुनः सोखि जायेंगे इत्यादि दीर्घायु तौ रहत ही नहीं तब मनुष्यदेह क्षणों में जीवन नाश होने योग्य ताको किसकी समान जीवन को विश्वास कियाजाय १०१ (चलपत्रांतलग्नः अम्बुबिन्दुवत् आयुः क्षण भंगुरम् अवेलायांत्यजतितत्रतवकः प्रत्ययः) पीपर के पत्ता में नीचे जो सूक्ष्म फुनगी में लगाहुवा जल बुन्द ताके गिरते बार नहीं ताही तुल्य मनुष्य की आयुः क्षणभंगी जो बिना वृद्धान्त काल आये वाल युवादि अवस्था में बीचही प्राण देह को त्यागि देते हैं तामें भरत जी तुमको किसकी प्रतीति है १०२ (देहीप्राक्तनदेहोत्थकर्मणापुनः देहवान् चतत्तदेहोत्थेनपुनः देहः एवंसदात्मनः) देह धरन-हार देही जो जीव सो पूर्व देहनसों उत्पन्न जो कर्म तिन करिकै पुनः देह धरता है तिस देहते

उत्पन्न कर्मन करि पुनः देह धरत इसी भांति जब तक देहै में आत्म बुद्धी बनी है तब तक कर्मबश आत्म सदा देहधारी बना है १०३ ॥

यथात्यजतिवैजीर्णबासोगृहणातिनूतनम् ॥ तथाजीर्णपरित्यज्यदेहीदेहंपुनर्नवम् १०४ भजत्येवसदातत्रशोकस्यावसरःकुतः ॥ आत्मानम्रियतेजातुजायतेन चवर्द्धते १०५ षड्भावरहितोऽनन्तःसत्यप्रज्ञानविग्रहः ॥ आनन्दरूपोबुद्ध्यादिसाक्षीलयाविवर्जितः १०६ एकएवपरोह्यात्माह्यद्वितीयःसमस्थितः ॥ इत्यात्मानंदृढंज्ञात्वात्यक्त्वाशोकंकुरुक्रियाम् १०७ तैलद्रोण्याःपितुर्देहमुद्धृत्यसचिवैस्सह ॥ कृत्यंकुरुयथान्यायमस्माभिःकुलनंदन १०८ इतिसम्बोधितःसाक्षाद्गुरुणाभरतस्तदा ॥ विसृज्याज्ञानजंशोकंचक्रेसविधिवत्क्रियाम् १०९ ॥

(यथाजीर्णबासःवैत्यजतिनूतनंगृहणाति तथादेहीजीर्णपरित्यज्यनवदेहंपुनः) यथामनुष्यपुराना वसन निश्चय करि त्याग नवा पहिरताहै तैसेही जीवात्मा पुरानी देह को त्याग करि नई देह पुनः धरता है १०४ (सदाभजति एवतत्रकुतः शोकस्यअवसरः आत्मानजायतेचनवर्द्धते नम्रियतेजातु) जो देह को सदा सेवन करता है निश्चय करि जीवन मरण हुवै करता है तिस देह के मरने में कहा दुःख को अवसर है भाव दुःख को समय नहीं है क्योंकि जो आत्मा है सो तौ न उत्पन्न होय न वृद्धहोय न मरिजाय १०५ (षड्भाव रहितः) जन्म वृद्ध पुष्ट क्षीन कामादि विकार मरण इत्यादि षड्भाव जामें नहीं है (अनन्तः सत्यः प्रज्ञान विग्रहः) जाको अन्त नहीं सत्य पदार्थ है पुष्ट ज्ञानमय स्वरूप भाव इंद्री विषय रहित (लयविवर्जितः बुद्ध्यादि साक्षी आनन्दरूपः) नाशरहित बुद्धि चित्त मन अहंकारादि अन्तःकरण को साक्षात् देखनेवाला अखंड आनन्दरूप आत्माहै १०६ (एकएवहि परः द्विअद्वितीयः आत्मा समस्थितः इति आत्मानं दृढंज्ञात्वा शोकं त्यक्त्वा क्रियांकुरु) एकही निश्चयकरिहै निश्चयकरि प्रकृतितेपरे निश्चय करि अद्वितीय आत्मा एकसम सब भूतमात्र में स्थित है इस भांति आत्मा जोहै ताहि दृढज्ञानि देहभावको जो दुःखहै ताहि त्यागि महाराज को परलोक बनिबेहेत मृतक क्रिया करौ १०७ (कुलनंदनअस्माभिस्तचिवैःसहतैलद्रोण्याःपितुःदेहंउद्धृत्ययथान्यायंकृत्यंकुरु) हे रघुकुलनंदनभरत हमलोग अरु मंत्रिनकरिकैं सहित तैलभरी नावते पिताकी देह निकारि जैसी बेदकी आज्ञाहै ताहीरीति ते दाहादि क्रियाकरौ १०८ (इति साक्षाद्गुरुणा बोधितः तदा भरतः अज्ञानजं शोकं विसृज्य सविधिवत् क्रियां चक्रे) इसभांति साक्षात् गुरु बशिष्ठ ने बोधकराया तब भरत अज्ञानते उत्पन्न जो दुःखरहै ताहि त्यागि सावधान ह्वै जैसे वेदकी आज्ञाते उचितरहै ताही विधि सहित महाराज की मृतकक्रिया करतेभये १०९ ॥

गुरुणोक्तप्रकारेणआहिताग्नेर्यथाविधिः॥संस्कृत्यसपितुर्देहंबिधिदृष्टेनकर्मणा ११०॥

(गुरुणा उक्त प्रकारेण यथा आहिताग्नेः विधिः बिधि दृष्टेन कर्मणा सपितुः देहं संस्कृत्य) गुरु वशिष्ठ ने जो कहा ताहीप्रकार करिकैं जाभांति मृतक अग्निदाह की बिधिहै सो जैसी वेदकी आज्ञा है ताही रीति सब कर्म करिकैं सो भरतजी पिताकी देहको सब संस्कार कीन्हें अर्थात् उसी मृतक स्थानपर अन्न बल्ल गोधनादि युत एक पिंडदान कीन्हें शवनाम वाक्ययुक्त तेहिते गृहमें वास्तुदेवता वृषभये तब विचित्र विमान पर स्थितकरि द्वारपर आय पूर्ववत् एक पिण्ड दान कीन्हें त्यहिकरिकैं

द्वारस्थ देवता तृप्तभये पुनः सुरनांघ्रि रामघाटपर पूर्ववत् एक पिण्डदानकीर्णं ताते देवयोनि भूतादि तृप्तभयेपुनः दुइकोस जाइ तहां पूर्ववत् एकपिण्डदानकीर्णं ताते पिशाच यक्ष राक्षस दिशिवासी तृप्त भये पुनः सरयूतट विल्वहरि घाटपर गये तहां एक पिण्डदान करि प्रेतत्वउपजाये पुनः मृतक तन क्षौर कराय सरयू में स्नानकराय केशरि कर्पूर अगर चन्दन सघृत तनमें लेपकरि उत्तमवसन वेष्टित करि पुनः आम्र चंदन अगर तुलसी इत्यादि काष्ठको संचय करि अदग्धभूमि शोधि तापै चितारोपि तापै मृतकतन स्थापित करि ताके समीप भूमिलीपि वेदीवनाय अग्निजराय पुष्पाक्षतादिके क्रव्याद देव की पूजनकरि धृतते हवन करि एक गऊदान करि तब चितामें अग्नि लगाये जब शरीर अर्द्ध दग्धभया तब धृतकी समूह आहुती दिये सब दग्धभये पर संचयन क्रिया भाव अस्थि भस्म बटोरि दिये तब दाह दुःख निवारण हेत एक पिण्डदान कीर्णं पुनः भरत स्नान करि तिलांजलि दीर्णं पुनः चिताभस्म पर दुग्धनाये अरु सरयू में प्रवाहि धामहिआये पुनः जलांजलियुत एक पिण्डदान प्रतिदिन दशदिनतक कीर्णं यथा गरुडपुराणे प्रेतखंडे पौंड्रशे अध्याये एक विंश श्लोकात् गरुडप्रति भगवानुवाच मृतस्योत्क्रांतिसमयात् पट्पिण्डदानक्रमशोददेत् । मृतस्थानेतथाद्वारे चत्वरंताक्षर्य कारणात् ॥ विश्रामेकाष्टचयने तथासंचयनेचषट् । शृणुतत्कारणंताक्षर्यं पट्पिण्डान्परिकल्पते ॥ मृत स्थानेश्वेनामतेननाम्नाप्रदीयते । तेनदत्तेनतृप्यंतिगृहेवास्त्वधिदेवताः ॥ द्वारेतुपिण्डदेयंचपान्थ मित्यविधायतु । तेनदत्तेनपीडंतिद्वारस्थागृहदेवताः ॥ चत्वरंलेखरोनामतमुद्दिश्यप्रदापयत् । नचो पयातंकुर्वन्तिभूताद्यादेवयोनयः ॥ विश्रामेभूतसंज्ञोऽयंतेनतत्रप्रदापयेत् । पिशाचाराक्षसायक्षायेचान्ये दिशिवासिनः ॥ तस्यहोतव्यदेहस्यनैवायोग्यत्वकारकाः । चितापिण्डप्रभृतितःप्रेतत्वमुपजायते ॥ चितायांसाधकंनामवदन्तेकेल्वगेश्वर । केचित्तंप्रेतमेवाहुर्नृथाकल्पविदोबुधैः ॥ तदादितत्रतत्रापि प्रेतना म्नाप्रदीयते । इत्येवंपंचभिःपिण्डैः शवस्याहुतियोग्यता ॥ अन्यथाचोपघातायपूरीकृतास्तेभवन्तिहि । संमृज्यचोपलिप्याथ उल्लिख्योदृत्यवेदिकाम् ॥ अभ्युक्ष्योपसमाधाय वह्नितत्रविधानतः । पुष्पाक्ष तैश्चसम्पूज्य देवंक्रव्यादसंज्ञकम् ॥ त्वंभूतरुज्जगद्योनेत्वंलोकपरिपालकः । उपसंहारकस्तस्मादेनं स्वर्गमृतनय ॥ इतिक्रव्यादमभ्यर्च्य एवंतस्यसुखंभवेत् । अर्द्धदग्धप्रेतथादेहेदद्यादाज्याहुतिततः ॥ दग्ध स्थानंतरंतत्र कृत्वासंचयनक्रियाम् । प्रेतपिण्डप्रदद्याच्चदाहार्तिशमनंखग ॥ तावद्भूताःप्रतीक्षन्तेतंप्रेत वान्धवार्थिनम् । दहनानन्तरंकार्यपुत्रैःस्नानंसंचैलकम् ॥ तिलोदकंततोदद्यान्नामगोत्रेणतिष्ठतु । केचिद्दुग्धेनसिंचंतिचित्तास्थानंखगेश्वर ॥ दुग्धेचमृगमयेपात्रेतोयंदद्याद्दिनत्रयम् । सूर्येचास्तंगतेताक्षर्यं वलभ्यांचत्वरंऽपिवा ॥ बद्धं संमूढहृदयोदेहमिच्छन्कृतानुग । श्मशानंचत्वरंगेहंवीक्षन्याम्यःसनीयते ॥ गर्तेपिण्डादशाहंचदातव्याश्चदिनेदिने । तावद्वृद्धिश्चकर्तव्यायावत्पिण्डदशाहिकम् ११० ॥

एकादशेऽहनिप्राप्तेब्राह्मणान्वेदपारगान् ॥ भोजयामासविधिवच्छतशोऽथसहस्र शः १११ उद्दिश्यपितरंतत्रब्राह्मणेभ्योऽधनंवहु ॥ ददौगवांसहस्राणिग्रामान् रत्नान् अम्बराणि च ११२ ॥

(एकादशे अहनिप्राप्तेशतशः अथसहस्रशः वेदपारगान् ब्राह्मणान् विधिवत् भोजयामास) गेरहों दिन प्राप्त भये सन्ते सैकरन अथवा हजारन वेद पारगामी समग्र वेद पढ़े हुये आपने धर्म कर्मपर तत्पर जो ब्राह्मण तिनहिं विधिवत् भाव नवीन भूषण वसन पहिराय नवीन पात्र दै धृत शर्करादि युक्त रचित उत्तम अन्न भोजन कराये १११ (तत्रपितरंउद्दिश्यसहस्राणि गवांग्रामान् रत्नान् अम्बरा-

णिच बहुधनं ब्राह्मणेभ्योददौ) तहां पिता के अर्थ हजारन गाई तथा ग्राम मणी वसन बहुत सो-
नादि धन ब्राह्मणों के अर्थ देते भये यद्यपि विप्र को गेरहें दिन क्षत्री वरहें वैश्य पन्द्रहें शूद्र मास में
आद्ध चाही तथापि गेरहें दिन सामान्य चारिहू वर्ण को उचित है काहे ते दश दिन में दशौ भंग
पूर्ण ह्वै भुखाता है गेरहें वरहें दिन भोजन करत तेरहें दिन यमपुर को पथ गहत इन समयमें दान
वाको सहायकहोत यथा गरुडपुराणे एकादशाहे दातव्यं तेन शुद्धो द्विजोत्तमः । क्षत्रियो द्वादशाहे तु वैश्यः
पञ्चदशे तथा ॥ शुद्धिः शूद्रस्य मासेन मृतके जातसूतके । एकादशाहे यच्छ्राद्धं तत् सामान्यमुदाहृतम् ॥
चतुर्णामेकवर्णानां शुद्धयर्थं स्नानमुच्यते । एकादशद्वादशाहे प्रेक्तो भुंक्ते दिनद्वयम् ॥ दीपमन्त्रं जलं वस्त्रं यत्
किंचिद्वस्तु दीयते । प्रेतशब्देन तद्वयं मृतस्यानन्ददायकम् ॥ त्रयोदशेऽह्नि संप्रेतो नीयते च महापथे ।
क्षुरिपासादि तौ नित्यं प्रेतो मार्गे प्रयाति हि ११२ ॥

अवसत्स्वगृहे तत्र राममेवानुचितयन् ॥ वशिष्ठेन सह भ्राता मंत्रिभिः परिवारितः
११३ रामेऽरण्यं प्रयाति सह जनकसुतालक्ष्मणाभ्यां सुघोरं मातामेराक्षसीवप्रदह-
ति हृदयं दर्शनादेव सद्यः ॥ गच्छाम्यारण्यमद्य स्थिरमतिमखिलं दूरतोऽपास्य राज्यं
रामं सीतासमेतं स्मितरुचिरमुखं नित्यमेवानुसेव्यम् ११४ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे अयोध्याकाण्डे सप्तमः सर्गः ७ ॥

(मंत्रिभिः परिवारितः वशिष्ठेन सह भ्राता रामं एव अनुचिन्तयन् स्वगृहे अवसत्) सुमंत्रादि मंत्रिनस-
हित आपन सब परिवार वशिष्ठादि मुनिन सहित अपने छोटे भाई शत्रुहन सहित भरतजी राम जी
हैं तिनहिं चिन्तवन करत संते अपने मन्दिर में वास करते भये ११३ (सहजनकसुतालक्ष्मणाभ्यां रा-
मे सुघोरं अरण्यं प्रयाते) जनकसुता लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन घोरवनहिं जात संते (राक्षसी इ-
व मे माता दर्शनात् एव सद्यः हृदयं प्रदहति) राक्षसी तुल्य हमारी माता अपने दर्शनते निश्चय करि
तुरतही मेरे हृदयको प्रकर्ष करि दाह करती है (राज्यं अखिलं दूरतः अपास्य अद्य अरण्यं गच्छामि) राज्य
संपूर्ण दूरहीते त्याग करि इसी समय वनहि जाउँगो (स्मितरुचिरमुखं रामं सीतासमेतं स्थिरमतिं नित्यं
एव अनुसेव्यं) मुसुकानियुत सुन्दर मुखहै जिनको ऐसे रघुनन्दन जानकी समेत तिनहिं स्थिरबुद्धि
करि नित्यही निश्चय करि सेवन करिहौं अर्थात् गिरिजा प्रति शिवजी कहत कि घरमें बैठे भरत क्या
चिन्तवन करते हैं कि मैं तौ मन बचन कर्मते सेवक मरु रघुनन्दन सुस्वामी परम सुकुमार तिनको
मेरी राज्यहेतु कैकेयीने तहां पठावा जहां व्याघ्र सिंह राक्षस रहते हैं घाम जाड़ बयारि कांटा कंकरादि
दुसहदुःख इति जानकी लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन घोरवनहिं जात संते सूचित होता है कि रघु-
नन्दनते विमुखता राक्षसोंको काम है इति राक्षसी तुल्य हमारी माता अखितर परतही निश्चय करि
मेरे उरमें आगि सी लागि जाती है ताहि शीतल करि वेहेत संपूर्ण राज्य दूरहीते त्यागि इसी समय
वनहिं स्वामीकी शरण जाउँगो तहां मुसुकानियुत सुन्दर सदाप्रसन्न मुखहै जिनको ऐसे रघुनन्दन
जानकी समेत तिनहिं मैं आपनी बुद्धि स्थिर करि निश्चय करि नित्यही सेवन करिहौं ११४ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखल्लभशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे अयो-
ध्याकाण्डे भरतपुरागमपितुक्रियकृतवर्णनो नाम सप्तमः प्रकाशः ॥ ७ ॥

महादेवउवाच ॥ वशिष्ठोमुनिभिःसार्द्धमंत्रिभिःपरिवारितः ॥ राज्ञःसभादेवसभा
सन्निभामविशद्विभुः १ तत्रासनेसमामीनश्चतुर्मुखइवापरः ॥ आनीयभरतंत
त्रउपवेश्यसहानुजम् २ अब्रवीद्वचनंदेशकालोचितमरिदमम् ॥ वत्सराज्येऽभिषे
क्ष्यामस्त्वामद्यपितृशासनात् ३ कैकेय्यायाचितंराज्यंत्वदर्थेपुरुषर्षभ ॥ सत्यसं
घोदशरथःप्रतिज्ञायददौकिल ४ ॥

सवैया । ऋषि आय सुराज्य सुत्यागि चले भरताय मिलो गुहशंक धरे । प्रभु बासं विलोकि स-
शोक चले ऋषि भेटि प्रयाग सुवास करे ॥ उठिभोर चले बन पूछत सो प्रभु आश्रम देखि अनन्द
भरे । पद बन्दत बैज सुनाथ सदा सिय सानुज राम वसौ हिधरे ॥ (मंत्रिभिः परिवारितः मुनिभिः
सार्द्धविभुर्वशिष्ठः देवसभासन्निभाराज्ञः सभाभविशत्) सुमंत्रादि मन्त्रिन करिकै सहित परिवार के
रघुवंशी लोग तथा बामदेवादि मुनिन करिकै सहित समर्थ जो वशिष्ठ जी इत्यादि सब आय देवसभा
की तुल्य प्रकाशमान जो महाराज की सभा है तामें प्रवेशभये अर्थात् शिवजी कहत हे गिरिजा दश-
रथ जी की क्रिया भये पीछे भरत को राज्याभिषेक करिवे हेत बैशाख शुक्ल पञ्चमी मृगशिरा चन्द्र
वार इति शुभ मुहूर्त शोधि सत्र मंत्री परिवार के लोग मुनिनसहित वशिष्ठजी राजसभा में आये १
(अपरःचतुर्मुखःइवतत्रासनेसंभासीनःसहप्रनुजंभरतंआनीयतत्रउपवेश्य) यथा दूसरेब्रह्माहैं ताही
सम वशिष्ठ मुनि तहा आसन पर बैठे तब सहित शत्रुहन जो भरत हैं तिनहि बोलाय ताही समाज
में वशिष्ठ जी आपने समीप बैठारें २ (देशकालउचितंवचनं भरिन्दमम्अब्रवीत् वत्सपितृशासनात्
अद्यत्वारजेअभिषेक्ष्यामः) देश अवध मण्डल बिना राजा है काल आजु अभिषेक योग्य उत्तम दिन
है यहि समय में जैसा उचित है तैसा वचन अरिन्दम शत्रुनाशन जो भरत तिन प्रति वशिष्ठ जी
बोले हे वत्स पिता की आज्ञा ते आजु तुमहि अयोध्या की राज्य विषे अभिषेक युक्त करेंगे ३ (पुरु
षर्षभत्वत्तुर्थे कैकेय्याराज्यंयाचते सत्यसंघः दशरथः किलप्रतिज्ञायददौ) सब पुरुषन में उत्तम इति
हे पुरुषर्षभ भरत तुम्हारे अर्थ कैकेयी ने महाराज ते राज्य की याचना किया है भाव पूर्व बरदान
द्वारा तुम्हारे हेतु राज्य मांगा अरु सत्यसन्ध अर्थात् सत्य प्रतिज्ञा को धारण करनेहारे जो राजादश-
रथ तिन निश्चय प्रतिज्ञाकरि भाव रघुनन्दनकी शपथकरिकै बरदान देतेभये सो अंगीकार करौ ४ ॥

अभिषेकोभवत्वद्यमुनिभिर्मंत्रपूर्वकम्॥तच्छ्रुत्वाभरतोऽप्याहममराज्येनकिमुने५
रामोराजाधिराजश्चवयंतस्येवकिंकराः ॥ इवःप्रभातेगमिष्यामोराममानेतुमंज
सा ६ अहंयूयमातरश्चकैकेयीराक्षसीविना ७ हनिष्याम्यधुनेवाहंकैकेयीमातृगं
विनीम् ॥ किन्तुमानोरघुश्रेष्ठःस्त्रीहंतारंसहिष्यते ॥ तच्छ्रोभूतेगमिष्यामिपाद
चारेणदण्डकान् ८ शत्रुघ्नसहितस्तूर्णयूयमायातवानवा ॥ रामोयथावनेयातस्त
थाऽहंवल्कलांवरः ९ फलमूलकृताहारःशत्रुघ्नसहितोमुने ॥ भूमिशायीजटाधारी
यावद्रामोनिवर्तते १० ॥

(मुनिभिः मंत्रपूर्वकम् अद्यअभिषेकः भवतुतत्श्रुत्वा अपिभरतः आह मुनेममराज्येनकिं) वशिष्ठ
बोले हे भरत मुनिन करिकै मंत्र पूर्वक आजु तुम्हारा राज्याभिषेक होय भाव सब व्यापार करनेकी
आज्ञा देउ इति वशिष्ठ के वचन सो मुनिकै निश्चय करिकै भरत बोले कि हे मुने मोको राज्य करि-

कै क्या प्रयोजन है भाव सेवक राज्य के अधिकारी नहीं हैं ५ (राजाविराजःरामःचतस्यएवर्किकराः
वयंरामंआनेतुंअंजसाश्वः प्रभातेगमिष्यामः) राजाविराज श्री रघुनाथजी हैं पुनः तिनको निश्चय
करिकै सेवक हम सब भाई हैं ताते राम जो हैं तिनहिं अनिवे हेतु शघ्रिता ते काहिं प्रात होतही
समय हम चित्र कूटहि जायेंगे ६ (राक्षसीकैकेयीं विनाअहंयूयंचमातरः) एकराक्षसी कैकेयी वराय
भाव यह न जाइगी अरु हम तुम सब पुनः कौशल्यादि माता सब इत्यादि सब चित्रकूट को च-
लेंगे ७ (मातृगंधिनीं कैकेयींअधुनाएवअहंहनिष्यामि किन्तुस्त्रीहंतारं मांरघुश्रेष्ठः न सहिष्यते तत्त्वः
भूतेपादचारेणदण्डकान् गमिष्यामि) कैकेयी की माता भी पति के प्राणघातक हठ किया है सोई
वासना इसमें भी है इति मातृगंधिनी कैकेयी जो है ताहि इसी समय निश्चय करि मैं मारि दारता
भाव याके मारिदारे, मोको लोक कलङ्क न देत परन्तु स्त्री को मारनेवाला जो मैं होउँ ताहि रघुवंश-
नाथ न सहि सकेंगे ताते भोर होतही पांयन करिकै दण्डक वन जाइहों भाव स्त्री पुनः माताघातक
जानि धर्मात्मा रघुनन्दन मेरा मुखै न देखेंगे ताते राजश्री त्यागि जैहों ८ (तूर्णशत्रुघ्नसहितःयूयंआ
यातु वानवायथारामः वनेयातः तथा अहंवलकलांबरः) शीघ्रही शत्रुहन सहित मैं तौ जैहों अरु आप
लोग चलौ अथवा न चलौ अरु हम निश्चय करि जायेंगे कौन भांति जिसप्रकार रघुनाथ जी वनमें
गये ताही प्रकार मैं भी वलकल वसन धारण करिहों ९ (शत्रुघ्नसहितः फलमूलआहारः कृतभूमि-
शायी जटाधारी मुने यावत्त्रामःनिवर्तते) शत्रुहन समेत फल मूल अहार करत भूमिमें शयन जटा
धारण किहे यह रीति कबतक हे सुनि जब तक रघुनाथ जी न लौटि आइहैं तबतक यही नेम है १० ॥

इतिनिश्चित्यभरतस्तूष्णीमेवावतस्थिवान् ॥ साधुसाध्वितितंसर्वेप्रशशंसुर्मुदा
न्विताः ११ ततःप्रभातेभरतंगच्छंतंसर्वसैनिकाः ॥ अनुजग्मुःसुमंत्रेणनोदिताः
साश्वकुंजराः १२ कौशल्याद्याराजदारावशिष्टप्रमुखाद्विजाः ॥ द्वादयंतोभुवंस
र्वेपृष्ठतःपार्श्वतोऽग्रतः १३ शृंगवेरपुरंगत्वागंगाकूलेसमंततः ॥ उवासमहती
सेनाशत्रुघ्नपरिचोदिता १४ आगतंभरतंश्रुत्वागुहःशंकितमानसः ॥ महत्या
सेनयासार्द्धमागतोभरतःकिल १५ पापंकर्तुनवायातिरामस्याविदितात्मनः ॥
ज्ञात्वातद्दृढयज्ञेयंयदिशुद्धस्तरिष्यति १६ ॥

(इतिभरतः निश्चित्यएवतूष्णीं अवतस्थिवान्सर्वेमुदान्विताःतंसाधुसाधुइतिप्रशशंसुः) इसभांति
भरत निश्चयकरिकै वात कहि चुपाइकै बैठतेभये सो सुनि वशिष्ठादि सब सभाजन आनन्द युक्त
तिन भरतहि साधुहौ साधुहौ इत्यादि प्रशंसाकीन्हे ११ (प्रभातेभरतंगच्छंतं ततःसुमंत्रेणनोदिताः
सअश्वकुंजराःसर्वसैनिकाःअनुजग्मुः) प्रात भये जब भरत चले तदनन्तर सुमंत्रने आज्ञा दिया
ताते सहित घोड़ा हाथी रथादि सब सेना पीछे पीछे चलती भई १२ (राजदारा कौशल्या आद्या
वशिष्ट प्रमुखा द्विजाः सर्वेभुवं द्वादयंतः पृष्ठतः पार्श्वतः अग्रतः) महाराज की यावत रानी कौशल्या
आदि वशिष्ठहैं मुखिया जिनमें ऐसे सब ब्राह्मण इत्यादि सब पृथ्वी को आच्छादन किये कोऊ पाछे
कोऊ भरत के दोऊ दिशि कोऊ आगे इसीभांति सब चलेजातेहैं १३ (गंगाकूले शृंगवेरपुरं समंततः
गत्वाशत्रुघ्न परिचोदिता महती सेनाउवास) गंगाजी के किनारे शृंगवेर पुरहि गये ताके समीप
शत्रुहनकी आज्ञाकरिकै बड़ीभारी जो सेनाहै सो वास करतीभई भाव जल थलवृत्त छायादि सुपास
तकिताकि लोग उतरे १४ (भरतं आगतं श्रुत्वा गुहः शंकित मानसः भरतः महत्या सेनया सार्द्ध

आगतः किल) भरत जोहैं तिनहिं आवन सुनिकै गुहं निपाद गजा शंका युत मनमें विचार करता भया कि भरतजी बड़ी सेनामहित आयेहैं तामें यह निश्चय होनीहै १५ (अविदित आत्मनः रामस्य पापं कर्तुं याति वानगत्वा तत् हृदयज्ञेयं यदि शुद्धः तरिष्यति) नहीं है विदित हाल आत्मा को भाव अन्तरमें प्रीति है वा विरोध है सो हाल प्रसिद्ध नहीं है अरु राम विरोधा केकयी के पुत्र सेना सहित हैं इस अनुमानते निश्चय होत कि रघुनाथजीके मारनेहेतु जाते हैं अथवा नहीं भाव भरत धर्मवन्त रामभक्त प्रेमीरहे त्यहि भावते कदाचित् मनावने जातेहोयें इत्यादि जानिवेहेतु भरतकेपास जाताहों बैर प्रीति उनके हृदय की बात जानलेंउंगो जो शुद्ध हृदय राम में प्रीति राखे होयेंगे तौ तौ सुखपूर्वक उतरने पावेंगे १६ ॥

गंगांनोचेत्समाकृष्य नाब्रूहि नृपतये सायुधाः ॥ ज्ञातयो मे समायत्ताः पश्यन्तः सर्वतो दिशम् १७ इति सर्वान्समादिश्य गुहो भरतमागतः ॥ उपायनानि संगृह्य विविधा निबहून् अपि १८ प्रययौ ज्ञातिभिः सार्द्धं बहुभिर्विविधायुधैः ॥ निवेद्योपायनान्यग्रे भरतस्य समन्ततः १९ दृष्ट्वा भरतमासीनं सानुजं सह मात्रिभिः ॥ चीराम्बरं घनश्यामं जटामुकुटधारिणम् २० राममेवानुशोचन्तं रामरामेति वादिनम् ॥ ननामशिरसाभूमौ गुहो ह्रमिति चाब्रवीत् २१ शीघ्रमुत्थाप्य भरतगोढमालिङ्ग्य सादरम् ॥ पृष्ठानामयमव्यग्रः सखायमिदमब्रवीत् २२ ॥

(गंगा नोचेत् नावः समाकृष्य स आयुधाः तिष्ठन्तु मे ज्ञातयः संआयत्ताः ताः सर्वतः दिशं पश्यन्तः) गंगा जोहैं तिनहिं उतरि सुखपूर्वक जायें नहीं तौ सब घाटनकी नावै खोंचि बीचधारा में राखौ अरु सहित हथियारन सजे युद्धहेतु सजग बैठे रहैं सब लोग इस हेतु मेरे बन्धुवर्ग यावत् हैं सब आवैं ते सब दिशन को देखतरहैं १७ (इति गुहः सर्वान्सं आदिश्य आगतः भरतं उपाय नानि विविधानि बहूनि अपि संगृह्य) इसप्रकार निपादराज यावत् आपने बन्धुवर्ग रहैं तिनहिं आज्ञा दैकै तब आये हुये जो भरत तिनहिं देनेहेतु जो भेटकी सामग्री अनेक प्रकार की वस्तु बहुत निश्चयकरिलैकै १८ (विविधायुधैः ज्ञातिभिः बहुभिः सार्द्धं प्रययौ उपायनानि समन्ततः भरतस्य अग्रे निवेद्य) अनेक प्रकारके हथियारन करिकै सजेहुये बन्धुवर्ग बहुत साथमें लैकै जातभयो भेट सामग्री सम्पूर्ण भरत के आगे निवेदन कियो १९ (घनश्याम चीराम्बरं जटा मुकुट धारिणम् भरतं मंत्रिभिः सह सभानुजं आसीनं दृष्ट्वा) मेघसम श्यामतनु मुनि बसन जटाके मुकुट धारण किहे ऐसे जो भरत तिनहिं मंत्रिन करिकै सहित तथा सहित शत्रुहन बैठे देखा २० (रामं एव अनुशोचन्तं राम राम इति वादिनम् भूमौ शिरसाननामच अहंगुहः इति अब्रवीत्) रघुनन्दन जो बनवासी तिनहिं शोचते राम राम ऐसा उच्चारण करते जो भरत तिनहिं देखि भूमिविषे शीशलगाय करि प्रणामकरि पुनः मैं गुहहों ऐसाबोलता भया २१ (भरतः शीघ्रमुत्थाप्य सादरम् गोढमालिङ्ग्य अव्यग्रः सखायं अनामयं पृष्ठवा इदं अब्रवीत्) प्रणाम करते देखि भरत तुरतही उठायकै सहित आदर दृढ़करि हृदयमें लगाय मिलि सावधान है सखा जो निपादराज ताहि कुशल क्षेम पूछिकै भरतजी पुनः इसप्रकार वचन बोले २२ ॥

आतस्त्वं राघवेणात्र समेतः समवस्थितः ॥ रामेणालिङ्गितः सार्द्धं नयनेनामलात्मना २३ धन्योऽसि कृतकृत्योऽसि यत्त्वया परिभाषितः ॥ रामो राजीवपत्राक्षो लक्ष्मणेन च

सीतया २४ यत्ररामस्त्वयादृष्टस्तत्रमानयसुब्रत ॥ सीतयासहितोयत्रसुप्तस्तद्दर्श
यस्वमे २५ त्वंरामस्यप्रियतमोभक्तिमानसिभाग्यवान् ॥ इतिसंस्मृत्यसंस्मृत्यरामं
साश्रुविलोचनः २६ गुहेनसहितस्तत्रयत्रराम स्थितोनिशि ॥ ययौददर्शशयन
स्थलं कुशसमास्तृतम् २७ सीताभरणसंलग्नस्वर्णविंदुभिरांचितम् ॥ दुःखसंतप्त
हृदयोभरतःपर्यदेवयत् २८ ॥

(भ्रातःस्वराधवेणसमेतः अत्रसंभवस्थितः सपार्द्रनयनेनभ्रमलः अत्मनारामेणआलिङ्गितः) हे
भाई निषादराज तुम रघुनन्दन करिके समेत इहां अवस्थित रहेउ है भाव एकत्र रहेउ है अरु स-
हित आंसुन भीजे हुये नेत्रन करिके भ्रमल निर्विकार है आत्मा जिनकी ऐसे राम ने तुमहिं उर में
लगाय मिले हैं २३ (सीतयाचलक्ष्मणेनराजीव पत्रभाक्षः रामःयत्त्वयापरिभाषितः धन्यः असिकृत
कृत्यः असि) सीता करिके लक्ष्मण करिके सहित कमल नयन श्री रघुनन्दन जो तुम करिके वार्ता
कीन्हें तौ हे निषाद राज तुम धन्य बड़े सुरुती कृतार्थ रूप हौ २४ (सुब्रतत्वयायत्ररामः दृष्टःतत्रमानय
सीतयासहितः यत्रसुप्तःतत्तद्दर्शयस्व) हे सुब्रत निषादराज तुमने जहां रघुनन्दन को बैठे देखा है
भाव जहां आय उतरि बैठे हैं तहां मोहिं ले चलो पुनः सीता करिके सहित रघुनन्दन जहां रातिको
सोये हैं सो ठौर मोहिं देखावो २५ (रामस्यप्रियतमःत्वंभाग्यवानभक्तिमान् असिइतिरामंसंस्मृत्य
संस्मृत्यसआश्रुविलोचनः) भरतबोले हे निषादराज रघुनन्दनको अत्यन्त प्रिय तुमबड़े भाग्यवाले
रघुनाथजीके भक्तहौ इत्यादि रघुनन्दन जो हैं तिनहिं स्मरणकरिकरि सहित आंसुननेत्र शोभितभाव
प्रेम उमगि आंसुनेत्रनते बहते हैं २६ (यत्ररामः निशिस्थितः तत्रगुहेनसहितःययौकुशसंआस्तृतम्श
यनस्थलंददर्श) जहां पर रघुनाथजी रात्रीमें स्थितरहे तहाको गुहकरिके सहित भरतजी जाते भये
तहां कुश बिछेहुये स्थलको देखतेभये २७ (सीताभरणसंलग्नस्वर्णविंदुभिःआंचितम् भरतःदुःख
संतप्तहृदयःपर्यदेवयत्) कुश पर जो कोमल पत्र विछे रहेहैं तिनमें शयन करनेते जानकीजीके भूष
णकी रगरलागेते सोनेके बिंदुन करिके चिन्हित पल्लवदल तथा जरीबसनके गिरेहुये सितारादेखि
भरत दुःखते संतप्तहृदय बिलाप करनेलगे २८ ॥

अहोऽतिसुकुमारीयासीताजनकनन्दिनी॥प्रासादेरत्नपर्यंकेकोमलास्तरणेशुभे २९
रामेणसहिताशेतेसाकथंकुशविष्टरे ॥ सीतारामेणसहितादुःखेणममंदोषतः ३०
धिङ्मांजातोऽस्मिकैकेय्यांपापराशिसमानतः ॥ मन्निमित्तमिदंक्लेशंरामस्यपरमा
त्मनः ३१ अहोऽतिसफलंजन्मलक्ष्मणस्यमहात्मनः ॥ राममेवसदान्वेतिवनस्थ
मपिहृष्टधीः ३२ अहंरामस्यदासायेतेषांदासस्यकिंकरः ॥ यदिस्यांसफलंजन्म
ममभूयान्नसंशयः ३३ आतर्जानासियदितत्कथयस्वममाखिलम् ॥ यत्रतिष्ठति
तत्राहंगच्छाम्यानेतुमंजसा ३४ ॥

(अहोयाजनकनन्दिनी सीताअतिसुकुमारी रामेणसहिताप्रासादे रत्नपर्यंके शुभेकोमलस्तरणेशेते
साकुशविष्टरेकथं) बड़ी आश्चर्य की बात है जो जनकनन्दिनी सीता अत्यन्त सुकुमारी रघुनन्दन
करिके सहित कनक भवन में रत्न जटित पलंग पर मंगलीक कोमल बिछावने पर सोवती रही सो
सीता कुशके आसनपर भूमि में कैसे सोई है २९ (ममदोषतः रामेणसहितसीतादुःखेन) मेरे दोष

ते भाव मेरी राज्य हेत वनवास भया ताते रघुनन्दन सहित सीता दुःख करिकै युक्तभई ३० (पा पराशिसमानतः कैकेयांजातः अस्मि मत्निमित्तंपरमात्मनः रामस्यइदंक्लेशधिष्मां) पापों की ढेरी सम कैकेयी विषे उत्पन्न भयों भरु मेरे निमित्त परमात्मा रघुनन्दनको इस प्रकार को क्लेश भया कि भूमि में शयन करते हैं तौ धिक्कार है मोहिं वृथाही जन्म भया ३१ (महात्मनः लक्ष्मणस्यअतिभ होजन्मसफलं वनस्थंएवरामंअन्वेति सदाअपिदृष्टयीः) महात्मा लक्ष्मण जी को अत्यन्त आश्चर्य मय जन्म सफल भया काहे ते वनवासी जो निश्चयकरि रघुनाथ जी तिनके अनुगामी सदा निश्चय करि प्रसन्न मन रहते हैं ३२ (रामस्ययेदासातेषांदासस्यअहंकिंकरः यदिस्थान् ममजन्म सफलं भू-यात्तरांशयःन) रघुनन्दन के जे दास तिनके दासन को मैं सेवक होऊँ तो मेरा जन्म सफल होय यामें संशय नहीं है भाव सेवक मैं ताको कैकेयी ने स्वामीपद यह दूपण करि दिया ताते जन्म वृथा भया अब जो राम सेवकन के सेवकनको सेवक होऊँ तौ जन्म सफल होइ ३३ (आतःयदिजाना सितत् अखिलंसमकथयस्वयत्रतिष्ठति तत्रअहंप्रानेतुं अजसागच्छामि) भरत कहत हे भाई निपाइ राज रघुनन्दन के रहने को हाल जो तुम जानते होउ सो सब हाल मोसों कहौ जहां रघुनन्दन वास किहे होयें तहां को मैं लवाय लाने हेत शीघ्रही जाऊँगो ३४ ॥

गुहस्तंशुद्धहृदयंज्ञात्वासरनेहमब्रवीत् ॥ देवत्वमेवधन्योऽसियस्यतेभक्तिरीदृ-
शी३५रामेराजीवपत्राक्षेसीतायांलक्ष्मणेतथा३६चित्रकूटाद्रिनिकटेमन्दाकिन्या
विदूरतः ॥ मुनीनामाश्रमपदेरामस्तिष्ठतिसानुजः३७जानक्यासहितोनन्दात्सुख
मास्तेकिलप्रभुः॥ तत्रगच्छामहेशीघ्रंगंगांतर्तुमिहार्हसि३८इत्युक्त्वात्वरितंगत्वा
नावःपचशतानिह ॥ समानयत्ससैन्यस्यतर्तुंगंगामहानदीम्३९स्वयमेवानिनायै
काराजनावंगुहरतदा ॥ आरोप्यभरतंतत्रशत्रुध्नंराममातरम्४० वशिष्ठंचतथा
ऽन्यत्रकैकेयीचान्ययोपितः ॥ तीर्त्वांगंगाययौशीघ्रंभरद्वाजाश्रमंप्रति ४१ ॥

(त शुद्धहृदयं ज्ञात्वा गुहः सस्नेहं अब्रवीत् ते यस्य ईदृसी भक्तिः देवत्वं एवधन्यःअसि) तिन भरतहि शुद्ध हृदय जानिके गुहः सहित स्नेह बोलताभया तुम जाकी इसप्रकार भक्ति रामपदनमें है तौ हे देव भरत तुम निश्चयकरिके धन्य बड़े भाग्यवालेहो ३५ (राजीवपत्राक्षेरामेसीतायांतथालक्ष्म णे) कमल नयन रघुनन्दन विषे जनक नन्दिनी विषे जैसी भक्ति है तैसीही भक्ति लक्ष्मणजीमें राखे हो ३६ (चित्रकूट अद्रि निकटे मन्दाकिन्या अविदूरतः मुनीनां आश्रम पदे सानुजः रामः तिष्ठति) चित्रकूट पहाड़के समीपही मन्दाकिनी नदीते थोरीदूर मुनिनके आश्रम जहां हैं तहां सहितलक्ष्मण रघुनाथजी वास किहेहैं ३७ (जानक्या सहितः प्रभुः किल नन्दात् सुखं आस्ते तत्र शीघ्रं गच्छाम हे इह गंगां तर्तुं अर्हसि) जान की करिके सहित प्रभु श्रीरघुनाथजी निश्चय करि आनन्दते भाव वनफलादि ऐश्वर्य युक्त सुखपूर्वक बसतेहैं तहां तुम हम सब चलेंगे परन्तु हे भरतजी या समयमें तौ गंगा जो हैं तिनहिं तरिवे योग्यहो ३८ (इति उक्त्वा त्वरितंगत्वा पंचशतानिह नावः संभ्रानंय त्ससैन्यस्य महानदीम् गंगां तर्तुं) चलना तौ अवश्यही है प्रथम गंगा तौ उतरौ इत्यादिकहि गुह तुरतही जाय सेवकनद्वारा पांचसयनावै भेगावताभया सो तौ सब सेनाको महानदी गंगा उतरने हेतु ३९ (तदा गुहः स्वयं एव एकां राजनावं आनिनाय तत्र भरतं शत्रुध्नं राममातरम् आरोप्य) तासमय गुह आपही निश्चय करि एक नाव राजांके चढ़िबे योग्य लावा तामें भरत जीहैं शत्रुहन्

जोहैं कौशल्या जोहैं तिनहिं चढ़ावताभया ४० (तथा अन्यत्र वशिष्ठं च कैकेयीं च अन्य योषितः गंगां तीर्त्वा भरद्वाज आश्रमं प्रति शीघ्रं ययौ) ताही भांति की ओर उत्तम नाव पर वशिष्ठ पुनः कैकेयी पुनः सुमित्राआदि औरी यावत् स्त्री रहीं तिन सबको चढ़ाय गंगा उतरि चले प्रयागजामि पहुँचि भरद्वाजमुनिके आश्रमहि तुरतहोगये ॥

दूरेस्थाप्यमहासैन्यं भरतः सानुजो ययौ ४१ आश्रमे मुनिमासीनं ज्वलन्तमिव पावकम् ॥ दृष्ट्वा ननाम भरतः साष्टांगमतिभक्तितः ४२ ज्ञात्वा दाशरथिं प्रीत्या पूजयामास मौनिराट् ॥ पप्रच्छ कुशलं दृष्ट्वा जटाबल्कलधारिणम् ४३ राज्यं प्रशासतस्तेऽद्य किमेतद्वल्कलादिकम् ॥ आगतोऽसि किमर्थं त्वं विपिनं मुनिसेवितम् ४४ भरद्वाज वचः श्रुत्वा भरतः साश्रुलोचनः ॥ सर्वजानासि भगवन् सर्वभूताशयस्थितः ४५ तथापि पृच्छसे किंचित्तदनुग्रह एव मे ॥ कैकेय्याय त्कृतं कर्म रामराज्यविघातनम् ४६ वनवासादिकं वापि न हि जानामि किंचन ॥ भवत्पादयुगं मेऽद्य प्रमाणं मुनिसत्तम ४७ ॥

(महासैन्यं दूरे स्थाप्य सानुजः भरतः ययौ) बड़ीभारी जो सेना रही ताहि दूरिहीराखि सहित शत्रुहर्न भरत आश्रम के भीतर जाते भये ४१ (आश्रमे पावकसूइव ज्वलन्तं मुनिं आसीनं दृष्ट्वा भरतः अति भक्तितः साष्टांगं ननाम) आश्रममें अग्निसम ज्वलत तपतेजयुक्त मुनिभरद्वाज तिनहिं बैठे देखि भरत अत्यन्त भक्तिते साष्टांग प्रणाम कीन्हे ४२ (दाशरथिं ज्ञात्वा मौनिराट् प्रीत्या पूजयामास कुशलं पप्रच्छ बल्कल धारिणं दृष्ट्वा) दशरथके पुत्र भरतहैं ऐसाजानि मुनिराज भरद्वाज प्रीति करिके पूजाकरते भये भाव आसनते उठि आदरते भिलि आसनपर बैठारे अरु कुशल पूछे क्योँकि बल्कलादि वसन धारण किहे मुनिको बेपदेखि संदेह भई ४३ (राज्यं प्रशासतः तेऽद्य एतत् बल्कलादिकम् किम् मुनिसेवितं विपिनं किञ्चिदर्थं त्वं आगतोसि) महाराजकी आज्ञाते राज्यकाज को शिक्षाकरने वाले तुम या समय में ये बल्कलादि वसन जो हैं तिनहि क्योँ धारण किहे हौं अरु मुनिन के वसने योग्य जो बन है तहाँ को कोने प्रयोजन अर्थ तुम आये हौं ४४ (भरद्वाज वचः श्रुत्वा साश्रुलोचनः भरतः भगवन् सर्वभूताशयस्थितः सर्वजानासि) भरद्वाज के वचन सुनि करुणा ते सहित आशुनेत्र भरत बोले हे भगवन् भाव आपतत्त्वज्ञ हौं सबभूतमात्र में स्थित जो अंतर्धामी ताकी आश्रयहैं आप भूत भविष्य वर्तमानादि सब जानते हौं ४५ (तथापि किंचित् पृच्छसे तत्मे एव अनुग्रहं रामराज्यविघातनम् कैकेय्याय त्कृतं कर्मरुतं) मुनि प्रति भरत बोले कि यद्यपि आप सब जानते हौं ताहू पर जो कुछ पूछते हौं सो सोपर निश्चय करि अनुग्रह किहेउ अब सुनिये रामराज्य भंग हेत कैकेयी ने जो कर्म किया है भाव हठिकरि सोको राज्यमोँगा अरु ४६ (वा अपि वनवासादिकं किंचन न जानामि मे मुनिसत्तम अद्य भवत्पादयुगं प्रमाणम्) वा निश्चय करि रघुनन्दन को वनवास भया इत्यादि कुछभी हाल नहीं जानता हौं मैं हे मुनिराज या समय में आप के दोऊ पाँव इसबात की प्रमाण हैं भाव पाँवन की सौगंद करि कहता हौं ४७ ॥

इत्युक्त्वा पादयुगलं मुनेः स्पृष्ट्वाऽर्त्तमानसः ॥ ज्ञातुमर्हसि मां देवशुद्धो वा शुद्ध एव वा ४८ मम राज्येन किं स्वामिन् रामेतिष्ठति राजानि ॥ किङ्करोऽहं मुनिश्रेष्ठ रामचंद्रस्य शाश्वतः ४९ अतो गत्वा मुनिश्रेष्ठ रामस्य चरणान्तिके ॥ पतित्वाराज्यसम्भारान्समर्प्या

त्रैवराघवम् ५० अभिषेक्षेयवशिष्टाद्यैः पौरजानपदैः सह ॥ नेष्येऽयोध्यां रमाना
यदासः सेवेऽतिनीचवत् ५१ इत्युदीरितमाकर्ण्य भरतस्य वचो मुनिः ॥ आलिख्य
मूर्धन्यवधाय प्रशशंस स विस्मयः ५२ वत्सज्ञातं पुरैवैतद्भविष्यं ज्ञानचक्षुषा ॥ मा
शुचस्त्यपरो भक्तः श्रीरामे लक्ष्मणादपि ५३ ॥

इति उक्त्वा भार्गवमानसः मुनेः पादयुगलं स्पर्श्या देवशुद्धः नाएव अशुद्धः नामाज्ञातुं गर्हति । ऐसा कहि
हुः खित मन भरत मुनि के पायें दोऊ छुड़कें पुनः बोले हे देव शुद्ध राम सनेही अथवा निश्चय करि
अशुद्ध राम विरोधी हों सो मोहि जानि लेवे योग्य हों आप ५० (स्वामिन् राजनिरामेतिष्ठति मम राज्ये
न किमुनिश्रेष्ठशश्वतः रामचन्द्रस्य अहं किंकरः) हे स्वामिन् भाव आप तत्त्वज्ञ हों विचार करि दे-
खिये राज्य में रघुनाथ जी को आसीन होत सन्ते मोको राज्य करिके क्या प्रयोजन है क्योंकि हे
मुनिन में श्रेष्ठ सदा सर्वदा रघुनाथ जी को मैं किंकर हों रघुनन्दन अंश में अंश हों इति भाव
सूचित किये ५१ (अतः मुनिश्रेष्ठरामस्य चरणांतिके गत्वा पतित्वा अत्र एवराघवम् राज्यसम्भारान् स
मर्प्य) इस ते हे मुनिराज रघुनाथ जी के चरण कमलों के समीप जाय गिरिके भाव साष्टाङ्ग प्र-
णाम करि इहै निश्चय करि चित्रकूट में रघुनन्दन जो हैं तिनहिं राज्याभिषेक की सामग्री समर्पण
करिहों ५० (वशिष्टाद्यैः पौरजानपदैः सह अभिषेक्षे रमानाथं अयोध्यां नेष्ये दासः अतिनीचवत् सेवे)
वशिष्ट आदि दैकें यावत् पुरवासी हैं अरु राज्य के बासी इत्यादि करिके सहित स्वामी को राज्या-
भिषेक करिहों रमानाथ जो रघुनन्दन तिनहिं अयोध्या में लै जायकें मैं दास नीच की नाई सेवा
करिहों ५१ (इति उदीरितं भरतस्य वचः आकर्ण्य मुनिः स विस्मयः आलिख्य मूर्धन्यवधाय प्रशशंस)
इस भांति कहते हुये भरत के वचन सुनि मुनि भरद्वाज स विस्मय भाव पिताकी वई राज्य त्यागि
नीच दास बना चाहत ऐसे उत्तम राम भक्त हैं इति आश्चर्य मानि उरमें लगाय शशि संधि प्रशंसा
करते भये ५२ (वत्स एतत् भविष्यं ज्ञानचक्षुषा पुराज्ञातं माशुचः श्रीरामे लक्ष्मणात् परः अपित्वं भक्तः) हे
वत्स यह वनवासावि लीला यावत् होनहार रहै सो तत्र ज्ञान दृष्टि करिके हम पूर्वही जानि जिये रहै
ताते जनि शोच करौ श्री रघुनाथ जी में लक्ष्मण ते अधिक निश्चय करि तुम भक्त हों ५३ ॥

आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि ससैन्यस्य तवानघ ॥ अद्य भुक्त्वा ससैन्यस्त्वं श्वो गंतारा
मसन्निधिं ५४ यथाज्ञापयति भवान्तथेति भरतोऽब्रवीत् ॥ भरद्वाजस्त्वपः स्पर्श्या
मौनी होमगृहे स्थितः ५५ दध्यौ कामदुधां कामवर्षिणीं कामदो मुनिः ॥ अमृतं काम
धुक् सर्वयथा काममलौकिकम् ५६ भरतस्य ससैन्यस्य यथेष्टं च मनोरथम् ॥ तथा
ववर्ष सकलं तत्प्रास्ते सर्वसैनिकाः ५७ वशिष्ठं पूजयित्वा प्रेशास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥
पञ्चात्स सैन्यं भरतं तर्पयामास योगिराट् ५८ उपित्वा दिनमेकं तु आश्रमे स्वर्गसं-
निभे ॥ अभिवाद्य पुनः प्रातर्भरद्वाजं सहानुजः ५९ ॥

(अनघ तव ससैन्यस्य आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि ससैन्यः त्वं अद्य भुक्त्वा श्वः रामसन्निधिं गन्तारा
भरत तुमका सहित सेनाका पाहुन करिवेकी इच्छा है हमारे ताते सहित सैन्य तुम आजुइहाँ भो-
जन करौ काल्हि रघुनन्दन के समीप को जायहु ५४ (भवान्यथा ज्ञापयति तया इति भरतः अब्रवीत्
तु भरद्वाजः अपः स्पर्श्या मौनी होमगृहे स्थितः) आप जैसी आज्ञा करते हैं तैसाही होगा भाव आपकी

आज्ञा करेंगे ऐसा जब भरत बोले तब पुनः भरद्वाज जल लैकै आचमनकरि मोन है होमके मन्दिर में बैठे ५५ (कामदः कामवर्षिणीकामदुषां मुनिः दध्यौ यथा कामं सर्वं अलौकिकम् कामधुक् असृजत्) काम को देने वाली सम्पूर्ण मनोकामना को बर्पने वाली ऐसी जो कामधेनु ताहि मुनि ध्यान करते भये सो प्रसिद्ध भई तब जाके मनमें जैसी कामना रहै सो सब अलौकिक पदार्थ कामधेनु उत्पन्न किया ५६ (भरतस्य च ससैन्यस्य मनोरथम्यथा इष्टम् तथा सकलं वर्षते सर्वसैनिकाः तृप्ताः) भरतका पुनः सहित सेना का मनोरथ में जैसे इच्छा रही तैसेही सकल पदार्थ कामधेनु बर्पती भई ताको पाइ ते सब सेना के लोग तृप्त भये ५७ (शास्त्रदृष्टेण कर्मणा अथैव शिष्टं पूजयित्वा पश्चात् योगिराट्स सैन्यं भरतं तर्पयामास) धर्मशास्त्रमें जैसा लिखा है ताको देखि सोई कर्मन करिकै यथा आसन स्वागत पाद्य अर्घ आचमन स्नान बस्त्रभूषण गंधदल फूल धूप दीप नैवेद्य भारती प्रदक्षिणा प्रणाम स्तुति इत्यादि कर्मन करि प्रथम मुनिराज जो बशिष्ठ हैं तिनहि पूजते भये ताके पाछे योगिराज भरद्वाज सहित सेन जो भरत हैं तिनहि पूजि तृप्तकीन्हें ५८ (स्वर्गं संनिभे आश्रमे तु एकं दिनं उपित्वा पुनः प्रातः सह अनुजः भरद्वाजं अभिवाद्य) स्वर्गकी समान ऐश्वर्य प्रकाशवंत जो भरद्वाज को आश्रम तामें एक दिन राति बासकीन्हें पुनः प्रातः भये पर सहित शत्रुहन भरतजी भरद्वाज मुनिहि प्रणाम करिकै

भरतस्तु कृतानुज्ञः प्रययौ रामसन्निधिम् ५९ चित्रकूटमनुप्राप्य दूरं संस्थाप्य सैनिकान् ॥ रामसंदर्शनाकांक्षी प्रययौ भरतः स्वयम् ६० शत्रुघ्नेन सुमंत्रेण गुहेन च परंतपः ॥ तपस्विमण्डलं सर्वविचिन्वानो न्यवर्तत ६१ अट्टद्वारामभवनमपृच्छदृषि मण्डलम् ॥ कुत्रास्ते सीतया सार्द्धं लक्ष्मणेन रघूत्तमः ६२ ऊचुरग्रे गिरेः पश्चात् गंगाया उत्तरे तटे ॥ विविक्तरामभवनं रम्यं काननमंडितम् ६३ सफलैराश्रपनसैः कदलीखण्डमंडितम् ॥ चम्पकैः कोविदारैश्च पुष्पागैर्विपुलैस्तथा ६४ एवं दर्शितं मालोक्य मुनिभिर्भरतो ग्रतः ॥ हर्षाद्ययोरघुश्रेष्ठभवनं मंत्रिणा सह ६५ ॥

(तु भरतः अनुज्ञः कृतारामसन्निधिं प्रययौ) पुनः भरत जी मुनिकी आज्ञा लैकै रघुनाथजी के पास को चले ५९ (चित्रकूटं अनुप्राप्य सैनिकान् दूरं संस्थाप्य रामदर्शनाकांक्षी भरतः स्वयं प्रययौ) चित्रकूट समीप पहुँचि सेनाको दूरिही थँभाय रघुनन्दन के दर्शन की इच्छा है जिनके ऐसे भरत आपही जाते भये ६० (शत्रुघ्नेन सुमंत्रेण गुहेन) शत्रुहन सुमंत्र पुनः निपादराजगुह इनकरिकै सहित भरत जाय (परंतपः तपस्विमण्डलं सर्वविचिन्वानः न्यवर्तत) परम तप करने वाले तपस्विनको जो मंडल समूह बासस्थान तिन सबमें दृष्टिकै न्यवर्त भये प्रभुको न पाये ६१ (रामभवनं अट्टद्वाराश्रममण्डलं अपृच्छत् लक्ष्मणेन सीतया सार्द्धं रघूत्तमः कुत्रास्ते) रघुनन्दन को जो बासस्थान है ताहि जब न देखि पाये तब ऋषि मंडल में पूछे कि लक्ष्मण सीताकरिकै सहित रघुनाथजी कहाँ पर रहते हैं ६२ (ऊचुरः अग्रे गिरेः पश्चात् गंगाया उत्तरे तटे रम्यं काननमंडितम् विविक्तरामभवनम्) भरत प्रति ऋषि लोग बोले की आगे जाउ पर्वतके पाछे मंदाकिनी गंगा के किनारे में जहाँ सुन्दर बन शोभित है तहाँ एकांत स्थान में रघुनन्दनको मंदिर है ६३ (पनसैः आश्रपनसैः कदलीखण्डमंडितम् चम्पकैः च कोविदारैस्तथा विपुलैः पुष्पागैः) कटहर आश्र के वृक्ष फलन करिकै युक्त हैं केलाके वृक्ष सघन समूह शोभित हैं चंपा कचनार तैसे बहुत नागकेशरि इत्यादि लृक्षन करिकै शोभित है ६४ (एवं मुनिभिः दर्शितं अग्रतः पालोक्य भरतः मंत्रिणा सह रघुश्रेष्ठभवनं हर्षात् ययौ) इसप्रकार सब लृक्ष मुनिन करिकै देखि दा

हुषा स्थान आगे देखि भरत मंत्रिनसहित रघुनाथजीको मंदिरहै तहां को आनन्दते जातेभये ६५॥
ददर्शदूरादतिभासुरंशुभंरामस्यगेहंमुनिवृन्दसेवितम् ॥ वृक्षाग्रसल्लग्नसुवल्क
लाजिनैरामाभिरामंभरतःसहानुजः ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेअयोध्याकांडेअष्टमःसर्गः ८ ॥

(सह अनुजः भरतः दूरात् रामस्य गेहं ददर्श) सहित शत्रुहन भरतजी दुरिते रघुनन्दनको मंदिर
जो है ताहि देखतेभये(कथंभूतं मंदिरम् भासुरंशुभं मुनिवृन्द सेवितम्) कैसाहै मन्दिर दिव्यप्रकाश
मान मंगलीक अरु मुनिन करिकै सेवितहै (पुनः वृक्षस्य अग्र सल्लग्न सुवल्कलाजिनं) अरु वृक्ष
की डारनपर धरे लटकते हैं वल्कल वन मृगचर्मादि (पुनः रामाभिरामम्) अरु रघुनाथजी को
आनन्द देनहाराहै इसभांतिको रघुनाथजी को आश्रम है ६६ ॥

इतिश्रीरसिकज्ञताश्रितकल्यद्गुप्तसिखवल्गुभगवदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेअयोध्याका
ण्डेअभिरतचित्रकूटप्राप्तवर्णनोनामअष्टमःप्रकाशः ८ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथगत्वाऽश्रमपदसमीपंभरतोमुदा ॥ सीतारामपदैर्युक्तं प
वित्रमतिशोभनम् १ सतत्रवज्रांकुशवारिजांचितध्वजादिचिह्नानिपदानिसर्व
तः ॥ ददर्शरामस्यभुवोतिमंगलान्यचेष्टयत्पादरजःसमानुजः २ ॥

सवैया ॥ भरतांघ्रि परे कहिजान पुरै न फिरे प्रभुदै ध्रुव धर्म चिन्हें । हठि प्राण तजौ गुरु बोध
दिये खलहा हरिना नर जानु इन्हें ॥ पद वन्दि चले पद पीठलिये पुरपूजि नितै हरि जानाजिन्हें ।
चलि अत्रिमिले अनुसूयतहां सिय सानुज राम नमामि तिन्हें ॥ (सीताराम पदैः युक्तं पवित्रं भति
शोभनम् आश्रम पद समीपं अथ भरतः मुदागत्वा) श्रीजनकनन्दिनी रघुनन्दनके पद कमलौंकरिकै
युक्त ताते पवित्र अत्यन्त शोभायमान जो प्रभुको आश्रमपदहै ताके समीपको अब भरतजी आनन्द
पूर्वक जातेभये १ (सतत्र वज्रअंकुश वारिज ध्वजादि रामस्य पदानि चिह्नानि अंचित अतिमंगला
निभुवः ददर्श सअनुजः सपाद रजः अचेष्टयत्) सो भरत तहां क्या देखा कि जो रघुनाथजी विचरे
हैं तिनके पाँयनके चिह्न धूरिमे बनेहैं कौन चिह्न यथा वज्र अंकुश कमल ध्वजा इत्यादि रघुनाथजी
के पाँयनके चिह्नन करिकै अंकित जो मंगलीक भूमि है ताहि देखतेभये तब सहित शत्रुहन सो
भरत रघुनन्दनके पायनकी स्पर्शित जो धूरिहै तामें दोऊजने लोटतेभये २ ॥

अहोसुधन्योऽहममूनिरामपादारविदांकितभूतलानि॥पश्यामियत्पादरजोविमृग्यं
ब्रह्मादिदेवैःश्रुतिभिश्चनित्यम् ३ इत्यद्भुतप्रेमरसाप्लुताशयोविगादचेतारघुनाथ
भावने ॥ आनंदजाश्रुनपितस्तनांतरःशनैरवापाश्रमसन्निधिहरेः ४ सतत्रदृष्ट्वा
रघुनाथमास्थितंदूर्वादलश्यामलमायतेक्षणम् ॥ जटाकिरीटनवबल्कलांवरंप्रसन्न
वक्त्रंतरुणारुणद्युतिं ५ विलोकयंतंजनकात्मजांशुभांसौमित्रिणासेवितपादपंकज
म् ॥ तदाभिदुद्रावरधूतमंशुचाहर्षाच्चित्तपादयुगंत्वरारुह्यीत् ६ ॥

(यत्पादरजः ब्रह्मादिदेवैः च श्रुतिभिः नित्यं विमृग्यं अमूनिरामपादारविंदैः अंकितभूतलानि पश्यामि अहं बहो सुधन्यः) जिन पाँयन की रज कैसी अगम्य है जो ब्रह्मादिक देवतन करिकै पुनः श्रुतिन करिकै नित्यही हृद्विगे योग्य है सोई ये राम पद कमजों करिकै चिह्नित भूमितल ताहि प्रसिद्ध देखताहों ताते मैं आश्चर्य मय सुन्दर धन्य हों अपूर्व भाग्यवन्तहों ३ (इति अद्भुतः प्रेमरसः अद्भुतः आशयः रघुनाथ भावने विगाह चैता आनंदजः आश्रुस्तनांतरः स्नपितः शनैः हरेः आश्रमसन्निधिं अवपि) यद्यपि प्रभु के छोटे भाई हैं सदा संगही रहे प्रयोजन मात्र किंचित् वियोग भया तामें प्रभु पदांकित रज स्पर्श पाय अपनी अहोभाग्य सराहत वह प्रेमकी बिक्रान्त दशा है इत्यादि आश्चर्य मय जो प्रेम रस उमंगिकै व्याप्त है सर्वांगमें इति अन्तःकरणकी अभिप्राय कि रघुनाथजीके ध्यानमें मगन ताते देहकी सुधि नही प्रेमानन्द करिकै बहे जो आँशुजल त्याहि करिकै स्तनको मध्य देश भीजिरहा है इति प्रेम दशाते भरत धीराधीरा करि जाय रघुनाथ जी के आश्रम के समीप प्राप्त भये ४ (तत्र आस्थितं रघुनाथं सदृष्ट्वा) त्याहि आश्रम में बैठे जो रघुनाथ जी तिनहिं सो भरत देखा कैसे हैं (दुर्वादलश्यामलं आयतदक्षिणजटाकिरीटनवलकलअम्बरप्रसन्नवक्त्रं तरुणवरुणद्युतिं) दूबके दल तुल्यश्यामल वरण तन बड़े लंबे नेत्र जटाको मुकुट बांधे नवीन वल्कल वसन धारण कीन्हें प्रसन्नमुख प्रभात के सूर्यन की ऐसी प्रभा है जिनमें ५ (जनकात्मजां विलोकयंतं सौमित्रिणा सेवितपादपंकजंतदारघूनमभ्रभिदुद्रावंच शुचाहर्षात् तत्पादयुगंतवराग्रहीत्) जनकनन्दिनी जो हैं तिनहिं विलोकते हैं तथा लक्ष्मण करिकै सेवित हैं पद कमल जिन के इसभांति देखि ता समयमें भरत रघुनन्दन के सन्मुख धाये पुनः पूर्वशोच युत रहे दर्शन पाय आनन्दते तिन रघुनन्दन के दोऊपद जो हैं तिनहिं शीघ्रही पकरि लिये भाव आगेपरि हाथों ते पद गहि लिये ६ ॥

रामस्तमाकृष्य सुदीर्घबाहुर्दोभ्यां परिष्वज्य सिषिंचनेत्रजैः ॥ जलैरथांकोपरि संन्यवेशयत् पुनः पुनः संपरिष्वजे विभुः ७ अथ तामातरः सर्वाः समाजग्मुस्त्वरान्विताः ॥ राघवं द्रष्टुकामास्तस्तर्षाता गौर्यथा जलं ८ रामः स्वमातरं वीक्ष्य द्रुतमुत्थाय पादयोः ॥ वन्दे साश्रुसापुत्रमालिङ्ग्यातीव दुःखिता ९ इतराश्च तथानत्वा जननीं रघुनन्दनः ॥ ततः समागतं दृष्ट्वा वशिष्ठं मुनिपुंगवं १० साष्टांगं प्रणिपत्या हृदयान्दस्मीति पुनः पुनः ॥ यथाऽर्हमुपवेश्याह सर्वानेवरघूद्वहः ११ पितामेकुशली किं वामां किमाहातिदुःखितः ॥ वशिष्ठस्तमुवाचे दंपिताते रघुनन्दन १२ ॥

(रामः सुदीर्घबाहुः दोभ्यां आकृष्य परिष्वज्य नेत्रजैः जलैः सिषिंच अथ अंक उपरि संन्यवेशयत् विभुः पुनः पुनः संपरिष्वजे) भरतहिं देखि रघुनन्दन सुन्दरी लम्बायमान भुजा हैं जिनकी सो दोऊ भुजन करिकै भरत जो हैं तिनहिं उठाय करि हृदय में लगाय नेत्रन ते बहा जो आँशु जल त्याहि करिकै भिजै दिये अरु फिर गोदी पर भरत को बैठारि समर्थ प्रभु पुनः उर में लगाय राखे ७ (अथ मातरः ताः सर्वाः राघवं द्रष्टुकामाः त्वरान्विताः समाजग्मुः यथा तृषा आर्त्ताः गौः ताः जलम्) अब कौशल्या आदि यावत् माता हैं ते सब रघुनन्दन जो हैं तिनहिं देखने की अभिलाष राखे कैसे शीघ्रता युत सम्पूर्ण आवती भई जैसे प्यास करिकै दुःखित गाई ते जल जो है ताहि देख धावती हैं ८ (स्वमातरं वीक्ष्य रामः द्रुतं उत्थाय पादयोः वन्दे सा अतीव दुःखिता स आश्रुपुत्रं मालिङ्ग्य) आपनी माता जो हैं कौशल्या तिनहिं देखि रघुनन्दन शीघ्रही उठि पाँयन में परि प्रणाम कीन्हें सो कौशल्या अत्यन्त

दुःखित सहित अशुन नेत्र पुत्रजो रघुनन्दन तिनहि उरमें लगाय लिये ९ (चइतराजननीतधारघु नन्दनःनत्वाततःमुनिपुंगवम्वशिष्ठंआगतंदृष्ट्वा) पुनः सुमित्राआदि औरी जो माता रहीं तिनहिं उसी प्रकार रघुनन्दन प्रणामकीन्हें तब मुनिनमेंश्रेष्ठ जो वशिष्ठ तिनहि आवतदेखे १० (साष्टांगं प्राणिपति अस्मिन्धन्यःइतिपुनःपुनः आहपुनः सर्वान्एवयथाअर्हउपवेश्यरघूद्वहआह) वशिष्ठहि साष्टांग प्रणाम करि मैं धन्य हुआ इति वारम्बार कहि पुनः सवाहिन को निश्चय करि यथायोग्य सत्कार पूर्वक आसन पर बैठारि रघुवंश नाथ बोले ११ (मेपिता कुशली किंवा अति दुःखितःमांकिंआहतंवशिष्ठःइदं उवाच रघुनन्दन ते पिता) मेरा पिता कुशल पूर्वक है अथवा अत्यंत दुःखित मो प्रति क्या कहा है तिन प्रति वशिष्ठ इसप्रकार बोले कि हे रघुनन्दन तुम्हारा पिता १२ ॥

त्वद्वियोगाभितप्तात्मात्वामेवपरिचिंतयन् ॥ रामरामेतिसीतेतिलक्ष्मणेतिममार ह १३ श्रुत्वातत्कर्णशूलाभमृगुरोर्वचनमञ्जसा ॥ हाहतोस्मीतिपतितोरुदनू रामःसलक्ष्मणः १४ ततोनुरुरुदुःसर्वामातरश्चतथाऽपरे ॥ हाहातातमांपरित्य ज्यक्कगतोसिघृणाकर १५ अनाथोऽस्मिमहाबाहोमांकोवालालयंदितः॥ सीताच लक्ष्मणश्चैवविलेपतुरतोभृशम् १६ वशिष्ठःशांतवचनैःशमयामासतांशुचम् ॥ ततोमंदाकिनींगत्वास्नात्वातेवीतकल्मषाः १७ राज्ञेददुर्जलंतत्रसर्वेतेजलकाक्षि णे ॥ पिण्डान्निवार्ययामासरामोलक्ष्मणसंयुतः १८ ॥

(त्वत्त्वियोगात्अभितप्तआत्मात्वांएवपरिचिन्तयन् रामरामइतिसीताइति लक्ष्मणइतिममारह) हे रघुनन्दन तुम्हारे वियोग ते सन्तप्त आत्मा तुम जो हो तिनहिं चिन्तवन करते हुये हे राम हे राम ऐसा हे सीता ऐसा हे लक्ष्मण ऐसा पुकारते हुये प्राण त्याग किये १३ (कर्णशूलाभंगुरोर्वचनंतत् श्रुत्वाभ्रंजसारामः सलक्ष्मणःहाहतोस्मिइतिरुदनपतितः) कानों को शूल रोग के तुल्य जो गुरु के वचन तिनहिं सुनि शीघ्रही रघुनन्दन सहित लक्ष्मण पुकारे कि हा मे हत भया इस प्रकार रोदन करत भूमि पै गिरे १४ (ततःसर्वमातरः चमपरे तथा अनुरुरुदुःहातातघृणाकरमां परित्यज्यक्कगतः अस्ति) तदनन्तर सब माता पुनः औरदू जन ताही प्रकार सब पाछे रोवने लगे रघुनन्दन कहत हा पिता क्या सागर मोहिं परित्याग करि कहां गयो १५ (महाबाहोअनाथःअस्मिइतः मांकोवालालय त् सीताचलक्ष्मणः चएवभृशम् विलेपतुः) हे महाबाहु मैं अनाथ भया विना पिता अबमोहिं कां लाड दुलार करी इत्यादि प्रभुको विलाप देखि सीता पुनः लक्ष्मण ते भी निश्चय करि अत्यंत विलाप करने लगे १६ (शांतवचनैःवशिष्ठःतांशुचम्शमयामासततो मंदाकिनींगत्वास्नात्वातेवीतकल्मषः) एकदिन अवश्य मरना पुनः जाके उत्तम चारि पुत्र तिन वृद्ध महाराज के मरनेको कौन शांति इत्यादि शांत वचनन करिकै वशिष्ठ जी शोच जो रहा ताहि शांत किये तब मंदाकिनी में जाय स्नान करि सब शुद्धभये १७ (तत्रजलकाक्षिणे राज्ञेमर्वे जलंददुःरामोलक्ष्मणसंयुतः पिण्डान्निवार्ययामासरामोलक्ष्मणसंयुतः १८) तहाँ मंदाकिनीमें रघुनन्दनके हाथ जलकीकांक्षाहै जिनको ऐसे राजादशरथके अर्थ राम जानकी लक्ष्मण ये सब तिलांजलि देते भये पुनः रघुनन्दन लक्ष्मण सहित पिण्डदान करते भये १८ ॥

इंगुदीफलपिण्याकरचितान्मधुसंस्तुतान् ॥ वयंयदन्नाःपितरस्तदन्नाःस्मृतिनोदि

ताः १९ इतिदुःखाश्रुपूर्णाक्षःपुनःस्नात्वागृहंययौ ॥ सर्वैरुदित्वासुचिरंस्नात्वाजग्मु

स्तथाश्रमम् २० तस्मिन्स्तुदिवसेसर्वे उपवासं प्रचक्रिरे ॥ ततः परेद्युर्विमलेस्नात्वा मं
दाकिनीजले २१ उपविष्टं समागम्य भरतोराममब्रवीत् ॥ रामराममहाभाग
स्वात्मानमभिषेचय २२ राज्यम्पालय पित्र्यं ते ज्येष्ठस्त्वस्मे पिता तथा ॥ क्षत्रिया
णामयं धर्मो यत्प्रजापरिपालनम् २३ ॥

(इंगुदीफलपिण्याकमधुसंस्तुतान् रचितान्यत् अन्नाः वयं स्मृतिनोदिताः तत् अन्नाः पितरः) इंगुदी
के फल तिलन को चूर्ण मधु अर्थात् सहत डारि ताके पिण्ड बनाय रघुनाथ जी बोले कि यद्यपि
हविष्य अन्न घृत दुग्ध शर्करायुत पिण्डमहाराजके देने योग्य रहें परन्तु वनमें जो अन्न हम भोजन
करते हैं सो धर्म शास्त्रके कहेहुये वचनोंके प्रमाणते सोई अन्न पितरोंको देते हैं इंगुदीको प्रसिद्धनाम
एक निश्चय नहीं होती क्योंकि अमरमें लिखा है ॥ इंगुदीतापसतरुर्भूर्जे चर्मि मृदुत्वचौ अस्वार्थः इंगु
दीतापसतरुः तापसस्य तरुः तपस्विन उपयुक्ततरुत्वात् त्वे इंगुद्याः हिं गणबेट इति ख्यातायाः द्वयोरित्युक्त
त्वात्पुंसितु इंगुदः भूर्जा चर्मि मृदुत्वक्त्राणि भूर्जवृक्षस्य पुनः महेशदत्त अमरमें भाषा तिलक किया तामें
इंगुदी पांखी नाम कहा अध्यात्म भाषा तिलकमें उमादत्तगोदनी लिखा तब किसकी बात प्रमाण करें
१६ (इति दुःखाश्रुपूर्ण अक्षः पुनः स्नात्वा गृहं ययौ तथा सवै सुचिरं रुदित्वा स्नात्वा आश्रममजग्मुः) जो अन्न
हम खाते हैं सोई पितरोंको देते हैं इति कहत दुःख करि आशुभरेनेत्र पुनः स्नान करि आश्रमहि जाते
भये तैसेही सवै जन बहुत बारतक रोदन करि स्नान करि सबै आश्रमहि जाते भये २० (तस्मिन्स्तु
दिवसे सर्वे उपवासं प्रचक्रिरे ततः परेद्युः मन्दाकिनी विमले जले स्नात्वा) जादिन क्रिया कीन्हे तौने दिन
तौ सबै जनव्रत कीन्हे दूसरे दिन मन्दाकिनी के अमल जलमें सब स्नान कीन्हे २१ (उपविष्टं रामं
संआगम्य भरतः अब्रवीत् रामराममहाभाग स्वआत्मानं अभिषेचय) आसनपर बैठेहुये जो रघुनन्दन
तिन प्रतिजायकै भरतबोलते भये हे राम हे राम हे महाभाग आपनी जो देह है ताहि राज्याभिषेक
घृत कीजिये भाव तापसवेष उतारि राज साज करि अभिषेक कराइये २२ (यथामे पिता तथा ज्येष्ठः स्वं
पित्र्यं राज्यं ते पालय यत्प्रजाप्रतिपालनम् अयं क्षत्रियानां धर्मः) जैसे मेरे पिता तैसे सब भाइनमें बड़े
तुमहौ ताते उचित है कि पिताकी जो राज्य है ताहि पालन करौ अरु प्रजाको प्रतिपाल करना यही
क्षत्रियोंको धर्म है २३ ॥

इष्ट्वा यज्ञैः बहुविधैः पुत्रान् उत्पाद्य तंतवे ॥ राज्ये पुत्रं समारोप्य गमिष्य सिततो वनम्
२४ इदानीं वनवासस्य कालो नैव प्रसीद मे ॥ मातुर्मैदुष्कृतं किंचित्स्मृतुन्नार्हसि पा
हिनः २५ इत्युक्त्वा चरणौ भ्रातुः शिरस्याधाय भक्तितः ॥ रामस्य पुरतः साक्षादण्ड
धत्पतितो भुवि २६ उत्थाप्य राघवः शीघ्रमारोप्यांकेति भक्तितः ॥ उवाच भरतं रामः
स्नेहार्द्रनयनः शनैः २७ शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि त्वयोक्तं यत्तथैव तत् ॥ किन्तु मामब्र
वीत्तातो न ववर्षाणि पंच च २८ उषित्वा दण्डकारण्ये पुरं पश्चात्समाविश ॥ इदानीं
भरतायेदं राज्यं दत्तं मया ऽखिलम् २९ ॥

(बहुविधे यज्ञैः इष्ट्वा तंतवे पुत्रान् उत्पाद्य पुत्रं राज्ये संआरोप्य ततः वनं गमिष्यसि) राज्यपद
पर आ पूजा आ तुमूय बाजपेय अश्वमेध इत्यादि बहुविधि यज्ञैकरिकै देवनको पूज्य वंशवृद्धार्थपुत्र
भातरवीक्ष्य रामः प्रसूय करि जब समर्थ होय तब ज्येष्ठ पुत्र जो होइ ताहि राज्य विषे स्थापित करि तब
हैं कौशल्या तिन

आप बनहिं जायो २४ (बनबासस्यकालः इदानीं न एवमे प्रसीदमे मातुः दुष्कृतं किंचित् स्मर्तुं न अर्हसि नः पाहि) युवावस्थाने पुत्र रहित ताते बनबास को समय अवर्ही नहीं है निश्चय करिके ताते मोपर प्रसन्नहोहु अरु मेरी माता ने जो दुष्टकर्म किया है ताहि किंचित् स्मरण करिवेके नहीं योग्यहो मेरी रक्षाकरा भाव कैकेयी विमुखहै ताके बचन प्रमाणनकरौ शरणागत सेवकजानि मोहिं अपयशते बचावौ २५ (इति उक्त्वारामस्य पुरतः साक्षात् दंडवत् भुवि पतितः भक्तिः भ्रातुः चरणौ शिरस्य आधाय) मेरी रक्षाकरौ ऐसा कहि भरत रघुनाथजी के आगे साक्षात् दंडकी नाई भूमिपै गिरिपरे अरु भक्ति बड़े भाई जो रघुनाथजी तिनके दोऊ चरण शीशके ऊपर धरिलिये २६ (राघवः शीघ्रं उत्थाप्य अतिभक्तिः अंके आराप्य स्नेह अर्द्रनयनः रामः शनैः भरतं उवाच) रघुनाथजी शीघ्रही उठाय अत्यन्त प्रीति ते गोदमें बैठारि स्नेह करि जलभरे नेत्र रघुनन्दन धीरा धीराकरि भरत प्रतिबोले २७ (वत्स शृगुप्रवक्ष्यामि त्वया यत् उक्तं तत् तथा एव किंतु मां तातः अत्र वीत्न वचपचवर्षाणि) हे बत्स भरत सुनौ कछु मैं भी कहताहौं तुमने जो कहा सो यथार्थ है निश्चय करिके परन्तु मोप्रति पिता ऐसा बचन कहाहै कि नवपुनः पांच वर्ष तक २९ (दण्डकारण्ये उपित्वा पश्चात् पुरं संभावित इदानीं मया अखिलं राज्यं भरताय दत्तः) पिताने कहा कि चौदह वर्ष तुम दण्डकबनमें बास करि पीछे अवधपुरहि आयो अरु या समयमें मैंने सम्पूर्ण आयोध्याकी राज्य भरतके अर्थ दै दियाहै यह पिताको बचनहै २६ ॥

ततः पित्रैव सुव्यक्तं राज्यं दत्तं न वै वाहि ॥ दण्डकारण्यराज्यं मे दत्तं पित्रा तथैव च ३०

अतः पितुर्वचः कार्यं मावाभ्यामति यत्नतः ॥ पितुर्वचनमुल्लंघ्य स्वतन्त्रो यस्तु वर्तते ३१

सजीवन्नेव मृतको देहांते निरयं ब्रजेत् ॥ तस्माद्राज्यं प्रशाधित्वं वयं दंडकपालकाः ३२

भरतस्त्वब्रवीद्रामं कामुको मूढधीः पिता ॥ स्त्रीजितो भ्रांत हृदय उन्मत्तो यदि वक्ष्यति ॥ तत्सत्यमिति न ग्राह्यं भ्रांतवाक्यं यथा सुधीः ३३

राम उवाच ॥ न स्त्रीजितः पिता ब्रूयान्न कामी नैव मूढधीः ॥ पूर्वसेति श्रुत तस्यै सत्यवादी ददौ भयात् ३४ ॥

(ततः पित्रा एव तव एव हितुर्व्यक्तं राज्यं दत्तं तत् तथा एव पित्रा दण्डकारण्यराज्यं मे दत्तं) तौ जब पिताने निश्चय करि तुमहीं को प्रसिद्ध में राज्य दिया पुनः ताही प्रकार निश्चय करि पिताने दण्डकबन की राज्य जोहै ताहि मोको दिया ३० (अतः आवाभ्यां अति यत्नतः पितुः वचः कार्यन्तु पितुः वचनं उल्लंघ्य यः स्वतन्त्रः वर्तते) इसकारणते हम तुम दोऊजने अत्यन्त यत्नपूर्वक पिताको बचन जोहै ताहि प्रतिपाल करी पुनः पिताको बचन जोहै ताहि उल्लंघ्य अनादरि जो आपनी इच्छा अनुकूल कार्य करताहै ३१ (सजीवन एव मृतकः देह अंते निरयं ब्रजेत् तस्मात् त्वं राज्यं प्रशाधि वयं दंडकपालकाः) हे भरत जो पितु बचन त्यागि स्वइच्छित कार्य करता है सो जीवतही निश्चय करि मरेकी तुल्यहै अरु देह त्यागे पर नरक को जाताहै ताते तुम तौ राज्य जोहै ताहि पालन करौ अरु हम दंडकबन को पालन करी भाव पितु आज्ञानुकूल तुम राज्य करौ हम चौदहवर्ष बन में रही ३२ (तु भरतः रामं अब्रवीत् पिता मूढधीः कामुकः स्त्रीजितः भ्रांत हृदय उन्मत्तः यदि वक्ष्यति तत् सत्यं इति न ग्राह्यं यथा भ्रांत वाक्यं सुधीः) पुनः भरत रघुनन्दन प्रति बोले कि पिता मूढबुद्धी कामवश स्त्री करि जीतिलिया गया ताते भ्रान्त हृदय उन्मत्त नसासे खाये जो कहाहै सो सत्यहै ऐसा न ग्रहण करिये जैसे भ्रान्तचित्तवाले की बातको सुबुद्धी नहीं ग्रहण करते हैं तथा पितुवचन न प्रमाण करौ ३३ रघुनन्दन कहत (न कामी न एव मूढधी न स्त्रीजितः पिता ब्रूयात् सपूर्वं तस्यै इति श्रुतं सत्यवादी

भयात् ददौ) न कामी रहे न मूढबुद्धी रहें न स्त्रीके बशहैकै पिताने बर देने को कहा भाव जो इसी समय बरदान नये देते तौ स्त्रीजित सूचित रहे येजो बरदान हैं सो तौ पूर्वही काल में प्रमन्नहृवैके कैकेयी जोहै ताके अर्थ दैराखे थातीरहै यह हम सुनाहै ताते पिता सत्यवादी रहै आपना प्रतिज्ञा के भंगहोनेकी भयते बरदान देतेभये ते कैसे असत्यहै ३४ ॥

असत्याद्रीतिरधिकामहतान्नरकादपि ॥ करोमीत्यहमप्येतत्सत्यंतस्यैप्रतिश्रुतम् ॥ कथंवाक्यमहंकुर्यामसत्यंराघवोहिसन् ३५ इत्युदीरितमाकर्ण्यरामस्यभरतोऽब्रवीत् ३६ तथैवचरिवसनोवनेवत्स्यामिसुव्रत ॥ चतुर्दशसमास्त्वंतुराज्यं कुरुयथासुखम् ३७ ॥ रामउवाच ॥ पित्रादत्तंनवैवैतद्राज्यंमह्यंवनंददौ ॥ व्यत्ययंयद्यहंकुर्यामसत्यंपूर्ववत्स्थितम् ३८ ॥ भरतउवाच ॥ अहमप्यागमिष्यामि सेवेत्वालक्ष्मणोयथा ॥ नोचेत्प्रायोपवेशेनत्यजाम्येतत्कलेवरम् ३९ इत्येवंनिश्चयंकृत्वादभानास्तीर्यचातपे॥मनसापिविनिश्चित्यप्राङ्मुखोपविवेशसः ४० ॥

(महतान्नरकात् अधिकं अपि असत्यात् भीतिः एतत् अपि अहं सत्यं करोमि इति तस्यै प्रतिश्रुतं राघवः हिसन् अहं वाक्यं कथं असत्यं कुर्याम्) प्रभु कहत हे भरत महात्मा जनन को नरकते अधिक निश्चय करिकै असत्य ते भय होती है यह दृढ जानो पुनः मैं जो सुना कि ये बरदान महाराज ने पूर्वही दै राखा है तब मैं ने कहा कि ये जो महाराज के दिये बचन हैं तिनहिं निश्चय करिकै मैं सत्य करौंगो भाव बन को जाउँगो इत्यादि बचन त्यहि कैकेयी के प्रसन्नतार्थ ताही प्रति सुनाय कै कहा है तौ सत्यवादी रघुवंश में उत्पन्न है कै हम अपना जो बचन है ताहि कैसे भूठकरि सके हैं ३५ (इति रामस्य उदीरितं भरतः अब्रवीत्) इत्यादि रघुनाथ जी के कहे बचन तिनहिं सुनि भरत बोले ३६ (सुव्रत तथा एव चरिवसनः चतुर्दशसमाः वने वत्स्यामि तु त्वं यथा सुखं राज्यं कुरु) भरत कहत हे सुव्रतधारी यथा आपको व्रत है तथा निश्चय करि सांचु करिबे हेत सुनि बसन धारण करि चौदहवर्ष तक बन में मैं वास करिहौं पुनः आप यथा सुखपूर्वक राज्य करौ ३७ (पित्रा तव एव राज्यं दत्तं मह्यं वनं ददौ यदि अहं व्यत्ययं कुर्याम् पूर्ववत् असत्यं स्थितम्) रघुनन्दन बोले कि हे भरत पिताने तुमको निश्चय करि राज्य दियाहै अरु मेरे अर्थ वन दियाहै तामें जो बिपर्यय भाव बदलिकै रीति बन तुम्हेंदैं मैं राज्य करौ तौ पूर्वकी नाई असत्यपथपै स्थित होताहौं यह अयोग्य कैसे करौ ३८ (अहं अपि गमिष्यामि यथा लक्ष्मणः त्वां सेवे नोचेत् प्रायः उपवेशेन एतत्कलेवरं त्यजामि) भरत बोले कि जो वह न करौ तौ हमहूँ बनहिं चलैंगे जैसे लक्ष्मण तैने मैंभी आपकी सेवा करौंगो अरु जो न साथरखिहौं तौ बहुत उपवास करिकै यह कलंकी देहैं त्यागि करिहौं ३९ (इति एवं निश्चयं कृत्वा मनसा अपि विनिश्चित्य चातपे कुशान् आस्तीर्य सः प्राङ्मुखः उपविवेश) कितौ साथलंड नाहीं तौ बिना अन्नजल रहि प्राणत्यागि हौं इत्यादिकहि यही निश्चय करि मन करिकै भी यही निश्चय राखि वामें मैं कुश बिछाय तापर सो भरत पूर्वमुख बैठे ४० ॥

भरतस्यापि निर्वन्धं दृष्ट्वा रामोऽतिविस्मितः ॥ नेत्रांतसंज्ञांगुरवेचकार रघुनन्दनः ४१ एकांते भरतं प्राह वशिष्ठो ज्ञानिनाम्बरः ॥ वत्सगुह्यं शृणुष्वेदं मम वाक्यं त्सु निश्चितम् ४२ रामो नारायणः साक्षाद्ब्रह्मणा याचितः पुरा ॥ रावणस्य वधा

र्थायजातोदशरथात्मजः ४३ योगमायापि सीतेति जाता जनकनन्दिनी ॥ शेषो
पिलक्ष्मणोजातो राममन्वेतिसर्वदा ४४ रावणं हन्तुं कामास्ते गमिष्यान् तनसंशयः ॥
कैकेय्या वरदानादियद्यन्निष्ठुरभाषणम् ४५ सर्वदेवकृतं नो चेदेवं सा भाषयत्कथम् ॥

(अपिनिर्वधं भरतस्य दृष्ट्वा रामः अतिविस्मितः रघुनन्दनः नेत्रांतसंज्ञां गुरवे चकार) निश्चय हठ
कान्हे भरत को देखि रघुनाथजी अत्यन्त विस्मित भये भाव प्रेम सत्व साहस आश्चर्यवत् भरत में
जानि कछु कहि न सके तब रघुनन्दन माधुर्य चरित में हारि मानि ऐश्वर्य दर्शायवे हेत नेत्र कोरकी
सज्ञा गुरु के अर्थ करते भये भाव वशिष्ठ को सनकारे कि अन्य उपाय न चली मेरी ऐश्वर्य सुनाय
भरत को सावधान करौ ४० (ज्ञानिनां वरः वशिष्ठः एकान्तं भरतं प्राहवत्सहृदं सुनिश्चितं गुह्यममवा
क्यात् शृणुष्व) ज्ञानिनमें श्रेष्ठ वशिष्ठ एकान्त में जाय भरत प्रति बोले हे वत्स यह जो निश्चय
कियाहुवा भाव याकी सेवाय दूसरी भांति नहीं हे सक्ता है सो गुप्त सिद्धान्त मेरे वचन ते सुनौ ४१
(रामः साक्षात् नारायणः रावणस्य वधार्थं पुरा ब्रह्मणा याचितः दशरथात्मजः जातः) वशिष्ठ बोले
हे भरत राम साक्षात् नारायणहैं सो रावणके वध करिवे हेत पूर्वही ब्रह्माने याचना किया ताते दश
रथ नन्दनद्वै अवतर्णि भये भाव पूर्व ब्रह्माकी याचना पूरी करि तब पुरको काज देखेंगे ४३ (योग-
माया अपि जनकनन्दिनी सीता इति जाता शेषः अपि लक्ष्मणः जातः सर्वदा रामं मन्वेति) जिस
शक्तिको नारायण को सदा संयोग रहताहै सो योगमाया जनक नन्दिनी सीता इति नाम उत्पन्न भई
पुनः शेष सोई लक्ष्मण उत्पन्न भये जो सर्वदा अर्थात् सवकाल में श्री रघुनन्दन के अनुगामी भाव
शुद्ध हृदय श्रद्धा प्रेमयुक्त स्वामी की सेवा में तत्पर रहते हैं ४४ (रावणं हन्तुं कामास्ते गमिष्यन्ति
संशयः न कैकेय्या वरदानादि निष्ठुरभाषणं यत्तु) रावण जो है ताहि वध करिवेकी कामना करिकै
ते तानिहूँ जने जायेंगे यामें संशय नहीं है अरु कैकेयी को वरदान मँगन आदि निष्ठुर वचन कहन
इत्यादि जो जो कार्य भया ४५ (सर्वदेवकृतं नो चेत् सा एवं कथं अभायत्) ॥

तस्मात्तजाग्रहं तात रामस्य विनिवर्त्तने ४६ निवर्त्तस्व महासैन्यैर्भ्रातृभिः सहितः
पुरम् ॥ रावणं सकुलं हत्वा शीघ्रमेवागमिष्यति ४७ इति श्रुत्वा गुरोर्वाक्यं भरतो विस्म-
यान्वितः ॥ गत्वा समीपं रामस्य विस्मयोत्फुल्ललोचनः ४८ पादुके देहिराजेंद्रराज्या
यतव पूजिते ॥ तयोः सेवां करोम्येव यावदागमनं तव ५६ उत्पुङ्गवा पादुके दिव्ये यो
जयामास पादयोः ॥ रामस्य ते ददौ रामो भरतायातिभक्तितः ५० गृहीत्वा पादुके
दिव्ये भरतो रत्नभूषिते ॥ रामः पुनः परिक्रम्य प्रणनाम पुनः पुनः ५१ ॥

(तस्मात्तात रामस्य निवर्त्तने आग्रहं त्यज) तिसकारण ते हे तात भरत श्रीरघुनाथ जीके लौटा-
रने की जो प्रतिज्ञा दृढ किहेहौ ताहि त्याग करौ ४६ (भ्रातृभिः सहितः महासैन्यैः पुरं निवर्त्तस्व सकुलं-
रावणं हत्वा शीघ्रमेवागमिष्यति) प्रभुसों विदामांगि भाइन करिकै सहित महासैन्य करिकै सहित तुम तों
अवध पुरहि लौटि जाउ अरु रघुनन्दन वनमें रहि सहित कुल रावणहिं मारिकै शीघ्रही निश्चय करि
पुरहि लौटि आवैंहिगे ४७ (इति गुरोः वाक्यं श्रुत्वा विस्मयान्वितः विस्मया उत्फुल्ललोचनः भरत रामस्य
समीपं गत्वा) हे भरत तुम घरको जाउ रघुनन्दन ईश्वर सत्यप्रतिज्ञ रावणको मारिकै घरहि आवैंहि
ग इत्यादि गुरुके वचन सुनि आश्चर्ययुक्त भावमाधुर्यमें भूलैरहे ऐश्वर्यजानि प्रभावविचारिं विस्मय

करिकै हर्षते नेत्र कमलवत् प्रफुल्लित जिनके ऐसे भरत रघुनाथ जीके समीपगये ४८ (राजेन्द्र राज्याय पूजिते तव पादुके देहियावत तव आगमनं तावत् एव तयोः सेवां करोमि) रघुनन्दन प्रति भरत बोले कि हे राजेन्द्र राज्य करबेके अर्थ पूजित जो आपके दोऊ खड़ाऊँ हैं तिनहिं दीजिये जबतक आपको आवन होई तबतक निश्चय करि पादुकोंकी सेवा करिहौं ४९ (इति उक्त्वा रामस्य पादयो योजयामासते पादुके दिव्ये रामः अतिभक्तितः भरताय ददौ) ऐसा कहिके भरत जी रघुनाथ जीके पाँयन में पहिराय देते भये ते दोऊ पादुका दिव्य रघुनाथ जी अत्यन्त प्रीतिते भरतके अर्थ दे देते भये ५० (रत्नभूषिते दिव्ये पादुके भरतः गृहीत्वा पुनः रामः परिक्रम्य पुनः पुनः प्रणनाम) रत्नजटित देव लोकके बनेहुये अलौकिक शोभा है जिनमें ऐसे दोऊ खड़ाऊँ भरत लै लेते भये पुनः रघुनन्दन की परिक्रमा करिके भरत जी बारम्बार साष्टांग प्रणाम करि कै ५१ ॥

भरतः पुनराहेदं भक्त्या गद्गदया गिरा ॥ नवपंचसमांते तु प्रथमे दिवसे यदि ५२
नागमिष्यसि चेद्रामप्रविशामि महानलम् ॥ बाढमित्येव तं रामो भरतं संन्यवर्त्तय
त् ५३ ससैन्यः सवशिष्ठश्च शत्रुघ्न सहितः सुधीः मातृभिर्मंत्रिभिः सार्द्धं गमनायोपच
क्रमे ५४ कैकेयी राममेकांते स्त्रवन्नेत्रजलाकुला ॥ प्रांजलिः प्राह हे राम तव राज्यवि
धातनम् ५५ कृतं मया दुष्टधियामायामोहितचेतसा ॥ क्षमस्व मम दौरात्म्यं क्ष
मासाराहिसाधवः ५६ त्वं साक्षाद्बिष्णुरव्यक्तः परमात्मा सनातनः ॥ मायामानुष
रूपेण मोहयस्य खिलं जगत् ५७ ॥

(भरतः भक्त्या गद्गदया गिरा पुनः इदं आह नवपंचसमांते तु प्रथमे दिवसे यदि) भरत भक्ति करिके गद्गद अर्थात् प्रेम उमंगि कण्ठारोधन है अपुष्टाक्षर बानी इस प्रकार बोले कि अबतौ मैं जाता हौं परंतु चौदह वर्ष बीते पर पुनः पहिलेही दिन जो ५२ (राम न आगमिष्यसि चेत् महाअनलम् प्रविशामि इति एव बाढं रामः तं भरतं संन्यवर्त्तयत्) हे रघुनन्दन उस दिन न आइहौ कदाचित् तौ मैं महाप्रचंड अग्निमें पैठिजो उगो मैं उसी दिन आवोंगो यह निश्चय करि दृढ़ जानौ ऐसा रघुनाथ जी कहिके तिन भरतहि लौटारते भये ५३ (ससैन्यः सवशिष्ठः च शत्रुघ्न सहितः मातृभिः मंत्रिभिः सार्द्धं सुधीः गमनाय उपचक्रमे) सहित सेना सहित वशिष्ठ पुनः शत्रुघ्न सहित सबमाता मंत्रिन सहित सुबुद्धी भरत अयोध्यहि चलिबेहेत व्यापार प्रारम्भ करते भये ५४ (स्त्रवन्नेत्रजलाकुला कैकेयी एकांते रामं प्रांजलिः प्राह हे राम तव राज्यविधातनम्) बहिरहा है नेत्रोंमें आंशु जलस्व अपराध विचारि नर्क भयते आकुल कैकेयी एकांत स्थान में बुलाय रघुनन्दन प्रति हाथ जोरि बोली हे राम तुम्हारी राज्यको भंग ५५ (मया कृतं मायामोहितचेतसा दुष्टधिया मम दौरात्म्यं क्षमस्व साधवः क्षमा साराहि) मैंने आपकी राज्य भंग किया सो आपकी माया करिके मोहित भया चित ताते दुष्ट भई बुद्धि सो मेरी दुष्टता क्षमा करौ काहेते आप साधुहौ साधुन मैं क्षमा सार होती है ५६ (त्वं अव्यक्तः परमात्मा सनातनः साक्षात् बिष्णुः माया मानुष रूपेण अखिलं जगत् मोहयसि) आप अव्यक्त भाव गुप्त सबमें व्यापक परमात्मा सनातन साक्षात् बिष्णु हैं दिव्य मायामय मानुष रूप करिके भाव राजकुमार रूपवने नरनाट्य करि सम्पूर्ण जग सुरासुर नर नागादि सबको मोहित करते हौ भाव माधुर्य लीला में भूले ऐश्वर्य कोऊ नहीं जानि पावत ५७ ॥

त्वयैवप्रेरितोलोकः कुरुते साधुसाधुवा ॥ त्वदधीनमिदं विश्वमस्वतंत्रं करोति किं
मू ५८ यथा कृत्रिमनर्तक्यो नृत्यति कुहकेच्छया ॥ त्वदधीना तथामायानर्तकी बहु
रूपिणी ५९ त्वयैवप्रेरिताऽहञ्च देवकार्यं करिष्यता ॥ पापिष्ठं पापमनसा कर्माच
रमरिंदम ६० अद्यप्रतीतोऽसि मम देवानामप्यगोचरः ॥ पाहिविश्वेश्वरानन्तज
गन्नाथनमोस्तुते ६१ छिन्धि स्नेहमयं पाशं पुत्रवित्तादिगोचरम् ॥ त्वत्ज्ञानामल
खड्गेन त्वामहं शरणंगता ६२ कैकेय्यावचनं श्रुत्वारामः सस्मितमब्रवीत् ॥ यदा
हमामहाभागेनानृतं सत्यमेव तत् ६३ ॥

(लोकः एव त्वया प्रेरितः साधुअसाधुवाकुरुते इदं विश्वं त्वत्अधीनं अस्वतंत्रं किं करोति) लोक नि-
श्चय करिकै तुमहीं करिकै प्रेरित साधु हवै सुकृत करता है पुनः तुमहीं करिकै प्रेरित असाधु हवै पाप
कर्म करता है क्योंकि यह संसार तुम्हारी ही आधार है तो परबश जीव क्या करै ५८ (यथा कुहकस्य
इच्छया कृत्रिमनर्तक्यः नृत्यति तथा त्वत् अधीनामायानर्तकी बहु रूपिणी) जौनी भांति नचावनेवाले
सूत्रधार की इच्छा करिकै कठपुतरी नाचती है ताही भांति तुम्हारे आधीन माया नाचनेवाली बहु
ते रूपन ते नाचती है ५९ (देवकार्यं करिष्यताच अरिंदम त्वया प्रेरिता एव अहं पापिष्ठं मनसा पापक
र्माचरम्) देवतों को कार्य करने को पुनः हे शत्रु नाशन तुम करिकै प्रेरित निश्चय करिकै मैं पापी
मन करिकै पाप कर्म करती भई ६० (देवानां अपि अगोचरः अद्य मम प्रतीतः असि विश्वेश्वर अनन्त
जगन्नाथ तेनमोस्तु पाहि) कैकेयी कहत कि देवन को भी निश्चय करिकै अगोचर भाव नहीं जानि
सके ऐसे गूढ़तत्त्व जो आपसो आजु मैंने जाना ऐश्वर्य रूप में विश्वास भई हे विश्वेश्वर हे अनंत
हे जगन्नाथ तुम्हारे अर्थ नमस्कार है मेरी रक्षा करौ ६१ (पुत्रवित्तादि गोचरं स्नेहमयं पाशं अमलज्ञा
नखड्गेन छिन्धि अहं त्वां शरणंगता) कैकेयी कहत हे रघुनन्दन पुत्र धनादि विषयमें लगा हुआ जो
स्नेहरूप फांस है ताहि अमल ज्ञानरूप तरवारि करिकै काटिये क्योंकि अब मैं सब भरोसाहीन केवल
आपही की शरण आई हों ६२ (कैकेय्यावचनं श्रुत्वा सस्मितं रामः अब्रवीत् महाभागे यत्तमां आहतत्
एव सत्यं न अनृतं) कैकेयी कहा जो बचन है ताहि सुनि सहित मुमुकानि रघुनन्दन बोले हे महा
भागे जो मो प्रति तुमने कहा सो निश्चय करिकै सत्य है नहीं झूठ है भाव सब कार्य मेरी इच्छा ते
भया तुम्हारा दोष नहीं है ६३ ॥

मयैवप्रेरिता प्राणी तव वक्त्राद्विनिर्गता ॥ देवकार्यार्थसिद्ध्यर्थमत्र दोषः कुतस्तव ६४
गच्छ त्वंहदिमां नित्यं भावयंती दिवानिशम् ॥ सर्वत्र विगतस्नेहामद्भक्त्या भूषसे
चिरात् ६५ अहं सर्वत्र समदृक् द्वेष्यो वा प्रिय एव वा ॥ नास्ति मे कल्पकस्येव भ
जतोऽनुभजाम्यहम् ६६ मन्मायामोहितधियो मामम्बमनुजाकृतिम् ॥ सुखदुःखा
द्यनुगतं ज्ञानन्ति ननु तत्त्वतः ६७ ॥

(देवकार्यार्थसिद्धिअर्थमया प्रेरितवाणी एव तव वक्त्राद्विनिर्गता अत्र तव कुतः दोषः) कैकेयी प्रति प्रभु
कहत कि देवन को कार्यके सिद्ध करने हेतु भाव रावणादि खलनको नाश करने हेतु वनको अवश्य
आवनार है उधर पिता राज्याभिषेक साजा तामें विघ्न करने हेतु हम करिकै प्रेरित शरदा निश्चय
करि तुम्हारे मुखते कटीवरमौंगनादि कठोरवाणी तामें तुम्हारा क्या दोष है ६४ (त्वंगच्छ सर्वत्र विग

तस्नेहा दिवानिशानित्यंहृदिमांभावयंतीमत्भक्त्याग्रचिरात्मोक्षसे) तुम जाउ सब सों प्रीति त्यागि
दिनों राति नित्यहीं हृदयमें मेरा ध्यानकरतीरहौ इतिमेरी भक्ति करिकै थोरही कालमें भवबंधनते
छूटि परमपद पावहुगी ६५ (द्वेष्यःवाएवप्रियवामेनमस्तिकल्पकस्यइवअहंसर्वत्रसमदृक्भजतःअनु
अहंभजामि) कितामें विरोध वा निश्चयकरि किसीमें प्रीति यह मेरे नहीं है कल्पककी नाई सर्वत्र
समदृष्टि राखताहों तामें जो कोऊ मोहिं भजताहै ताहि में भी भजाताहों अर्थात् कैकेयी प्रति रघु-
नाथजी आपनी रीति कहते हैं कि काहूजीव सो विरोध काहूजीवसों प्रीति यह रीतिमेरी दिगिते
नहीं है कौन भांति जैसेमाटी काठ वसनयातु इत्यादिकनकी वस्तुनके बनावनेवालेको आपनी बनाई
हुई वस्तुनमें किसीपर प्रीति किसी पर विरोध नहीं होताहै सबपर बराबरि प्रीति होती है ताहीभांति
पिपीलिकाते ब्रह्मापर्यन्त भूतमात्रमेरावनाया है तिन सबपर मेरी बराबरिही प्रीतिहै तिनमें जोजीव
मेरी सन्मुख है जैसी प्रीति करताहै ताके हेत तैसेही प्रीतिवंत में भी देखातहों ६६ (अम्बमत्माया
मोहितधियःमांसुखदुःखादिअनुगतस्मनुजाकृतिस्मृजानंतितुतत्त्वतःन) हे मातः मेरी माया करिकै
मोहितहै बुद्धिजिनकी ऐसे मनुष्य मोहिं सुख दुःखादि लौकिक धर्मोंमें प्राप्त मनुष्यही जानते हैं
पुनः मेरा तत्व नहीं जानते हैं भाव इन्द्रीमनादि प्रकृति कारण रहित स्वयंप्रकाशवंत अखंड आनन्द
सदा एकरस ऐसा तत्त्व करि नहीं जानतेहैं नरनाट्यमें भूलेपरे हैं ६७ ॥

दिष्ट्यामद्गोचरंज्ञानमुत्पन्नतेभवापहम् ॥ स्मरतीतिष्ठभवनेलिप्यसेनचकर्मभिः६८
इत्युक्तासापरिक्रम्यरामंसानंदविस्मया ॥ प्रणम्यशतशोभूमौययौगेहंमुदान्वि-
ता ६९ भरतस्तुसहामात्यैर्मातृभिर्गुरुणासह ॥ अयोध्यामगमच्छीघ्रंराममेवानु-
चितयन् ७० पौरजानपदान्सर्वानयोध्यायामुदारधीः ॥ स्थापयित्वायथान्यायंनन्दी-
ग्रामंययौस्वयम् ७१ तत्रसिंहासनेनित्यंपादुकेस्थाप्यभक्तितः ॥ पूजयित्वायथा-
रामगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ राजोपचारैरखिलैःप्रत्यहंनियतव्रतः ७२ ॥

(भवापहम्मदज्ञानंतेदिष्ट्यागोचरंउत्पन्नंस्मरंतीभवनेतिष्ठवकर्मभिःनलिप्यसे) संसार रूप रुज
को नाशक दिव्य औषध सम मेराज्ञान तुम्हारी दृष्टि विषय ह्वै उत्पन्न भया भाव मेरा तत्त्व देखि
परा इसी भांति मोहिं स्मरण करती हुई घर में वास करु तौ कर्मन करिकै न बन्धन में परैगी भाव
कर्मतोकों न लागेंगे ६८ (इति उक्तासाविस्मया सानन्दरामं परिक्रम्यभूमौशतशो प्रणम्यमुदान्विता
गेहंययौ) मोहिं स्मरत रहेउ तुमको कर्म न लागेंगे इति रघुनन्दन कहेतव सो कैकेयी आश्चर्यमाना
भाव कुलवन्ती पतिव्रता राम सनेही ह्वै कुल धर्म त्यागि हठ करि पातेके प्राण हरि राम ते वि-
मुखता इतिमेरे महा पाप शरण मात्रते माफ कीन्हें ऐसे शरणपाल क्षमावन्त कृपा सिन्धु हैं इति
विस्मय करि सहित आनन्द रघुनन्दनहिं परिक्रमा करि भूमि में रौकड़ों प्रणाम करिकै आनन्दयुत
घरें जाती भई ६९ (तुमातृभिः अमात्यैः सहगुरुणासहभरतः रामेवअनुचिन्तयन् शीघ्रंअयोध्यांअ-
गमत्) पुनः मातन करिकै मंत्रिनकरिकै सहित गुरु वशिष्ठ करिकै सहित भरतजी रघुनन्दन जो हैं
तिनहिं निश्चयकरि चिन्तवन करते हुये शीघ्रही अयोध्याहि जाते भये ७० (अयोध्यायांउदारधीःपौर-
जानपदान्सर्वान्यायान्यायंस्थापयित्वास्वयंनन्दीग्रामंययौ) अयोध्यात्रिषे आयउदारधी अर्थात् सरलहै
बुद्धि जिनको ऐसे भरतजी पुरवोसी अरु राज्यके वासी सब तिनहिं जो जिनकार्यके योग्य रहैताको
ताही कार्यपरस्थापित करि पुनः आपु भरत नन्दीग्रामहिगये ७१ (तत्रभक्तितःसिंहासने पादुकेस्था

प्यप्रतिग्रहंनियतव्रतःनित्यंअखिलैःराजोपचारैःगंधपुष्पअक्षतादिभिःयथारामपूजयित्वा) तर्हानन्दी ग्राममें भरतजी भक्तिसे अर्थात् प्रीतिसे सिंहासनके ऊपरखड़ाउनको स्थापित करिप्रति दिन नैम व्रत से नित्यही सम्पूर्ण राजसी उपचार यथाछत्र चमर व्यजनादि करिकै अरुचंदनफूल अक्षत इत्यादि करिकै जैसे रघुनाथजी तैसेही मानि खड़ाउन को पूजते हैं ७२ ॥

फलमूलाशनोदांतोजटावल्कलधारकः ॥ अधःशाशीब्रह्मचारीशत्रुघ्नंसहितस्त दा ७३ राजकार्याणिसर्वाणियावन्तिपृथिवीतले ॥ तानिपादुकयोःसम्यक्निवेदय तिराघवः ७४ गणयन्दिवसान्येवरामागमनकांक्षया ॥ स्थितोरामार्पितमनाःसा क्षात्ब्रह्ममुनिर्यथा ७५ रामस्तुचित्रकूटाद्रौवसन्मुनिभिरावृतः ॥ सीतयालक्ष्म णेनापिकिंचित्कालमुपावसन् ७६ नागराश्चसदायांतिरामदर्शनलालसाः ॥ चि त्रकूटस्थितंज्ञात्वासीतयालक्ष्मणेनच ७७ दृष्ट्वातज्जनसंवाधंरामस्तत्याजतंगिरि म् ॥ दण्डकारण्यगमनेकार्यमप्यनुचितयन् ७८ ॥

(तदाशत्रुघ्नसहितः जटावल्कलधारकः फलमूलअशनः दांतः ब्रह्मचारीअधः शाशी) तब शत्रु- घ्न सहित भरत शीश में जटा तनमें बल्कल बसन धारण करि फल मूलादि भोजन करि इन्द्रियों को दमन करते हुये ब्रह्मचर्य व्रत ते भूमि में शयन करने लगे ७३ (पृथिवीतलेयावन्तिराजकार्याणि तानिसर्वाणिराघवः पादुकयोः सम्यक्निवेदयति) आदि खर्च रक्षा दण्ड सेना सुभट बाहनादि सार सँभार देशों की खबरि इत्यादि पृथिवी तल बिपे जहाँ तक राज काज हैं तौन सब भरत जी पादुकन के आगे सत्य सत्य सुनाय देते हैं ७४ (रामअर्पितमनः यथासाक्षात् ब्रह्ममुनिः स्थितःराम आगमनकांक्षयादिवसानि एवगणयन्) रघुनंदन बिपेमन अर्पित किहे जैसे साक्षात् ब्रह्मवेत्तामुनिबैठे हैं रघुनन्दन के आवने की कांक्षाकरिकै ज्योंज्यों दिनबीततेहैं त्योंत्यों शेषादिन निश्चय करि गनाकर ते हैं ७५ (तुरामःसीतयालक्ष्मणेन मुनिभिःआवृतःचित्रकूटाद्रौवसन्अपिकिंचित्कालमुपावसन्) पुनः रघुनन्दन जानकी लक्ष्मण सहित मुनिन करिकै युक्त चित्रकूट पर्वतमें वासकरतसंते निश्चय करि कलुकाल इहँरहे गेरहवर्ष गेरहमास बीसदिन अग्निवेशकोमत ७६ (चित्रकूटस्थितंज्ञात्वासीतया लक्ष्मणेनरामदर्शनलालसानागराश्चसदायांति) चित्रकूट में वासकिहे जानिकै जानकी पुनः लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन के दर्शन की लालसाकरिकै अवधवासी पुनः देशवासी सदाजातेहैं चित्रकूटहि ७७ (जनसंवाधंतद्दृष्ट्वाकार्यंअनुचितयन्दण्डकारण्यगमनेरामःतत्याजतंगिरिम्) जन आवनकी भीरसो देखिपुनः रावणादि वधसोकार्य चितवनकरि दण्डक वनमें जानेहेतु रघुनाथजी सो वास चित्रकूट को त्यागि आगे को चले ७८ ॥

अन्वगात्सीतयाआत्राह्यत्रेराश्रममुत्तमम्॥सर्वत्रसुखसंवासंजनसंवाधवर्जितम्७९ गत्वामुनिमुपासीनंभासयंतंपोवनम् ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याहरामोहमभिवादये ८० पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदण्डकानहमागतः ॥ वनवासमिषेणापिधन्योहंदर्शनात्तव ८१ श्रुत्वारामस्यवचनंरामंज्ञात्वाहरिंपरम् ॥ पूजयामासविधिवद्भक्त्यापरमयामुनिः८२ वन्यैःफलैःकृतातिथ्यमुपविष्टंरघूत्तमम्॥सीतांचलक्ष्मणंचैवसंतुष्टोवाक्यमब्रवीत्८३ भार्यामतीवसंतुष्टाह्यनुसूयेतिविश्रुता ॥ तपश्चरंतीसुचिरंधर्मज्ञाधर्मवत्सला८४॥

(जनसंवाधवर्जितं सर्वत्र सुखवासं उत्तमं हि अत्रेः आश्रमं सीतया भ्रात्रा भन्वगात्) जनोंकी भीर रहित एकांत जगहवन नदी पहारके बीचमें जहां सर्वत्र सुख पूर्वक वासकरिबे योग्य उत्तम निश्चय- करि अत्रिमुनिको जो आश्रमहै तहांको जानकी लक्ष्मण सहित रघुनन्दनगये ७६ (गत्वा तपोवनं भा सयंतं उपासीनं मुनिं दण्डवत्प्रणिपत्या ह अहं रामः अभिवादये) आश्रमहि गये देखे कि तपोवन जो है ताहि प्रकाशमानकरि रहेहैं आसन पर बैठे जो अत्रिमुनि तिनहिंदण्ड प्रणामकरि बोले कि मैं रामहों प्रणाम करने अर्थ आयाहों ८० (पितुः आज्ञां पुरस्कृत्य अहं दण्डकान् आगतः वनवासं इषेण अपितव दर्श नात् अहं धन्यः) पिताकी आज्ञा करिकै हम दण्डकवनहिं आयेहैं वनवासके वहाने निश्चय करिकै आपके दर्शनते हम धन्य भये ८१ (रामस्य वचनं श्रुत्वा परं हरिं रामं ज्ञात्वा परमया भक्त्या मुनिः विधिव त्पूजयामास) रघुनाथजी के वचन सुनिकै परमहरि रघुनन्दनहिं जानिकै परम भक्ति करिकै अत्रि- मुनि विधिवत् षोडशोपचार यथावेदमें लिखाहै ताहीविधिते पूजतेभये ८२ (वन्यैः फलैः अतिथ्यं कृ त्वा सीतां च लक्ष्मणं च एव रघूत्तमं उपाविष्टं संतुष्टः वाक्यं अब्रवीत्) वनकरिकै उपजेहुये फलोंकरिकै अति थ्यकिये भोजन कराये पुनः सीतालक्ष्मण पुनः निश्चय रघुनन्दनहिं बैठेदेखि अत्रिमुनि प्रसन्न हैं बचनबोले ८३ (अनसूया इति विश्रुता भार्या अतीव संवृद्धा हि धर्मज्ञा धर्मवत्सला सुचिरतः पदचरंती) रघुनन्दन प्रति अत्रिमुनिबोले कि अनसूया ऐसा प्रतिद्धहै नाम जाको यहमेरी भार्या अत्यन्त वृद्धहै निश्चयकरि धर्मको जाननेवाली धर्ममें प्रीतिहै जाकी सो बहुत कालसे तपकरती हुई भावस्त्री धर्ममें प्रवीनहै ८४ ॥

अंतस्तिष्ठति तां सीतां पश्यत्वरिनिषूदन ॥ तथेति जानकीं प्राहरामोराजीवलोचनः ॥
 ८५ गच्छ देवी नमस्कृत्य शीघ्रमेहि पुनः शुभे ॥ तथेति रामवचनं सीताचापितथाक
 रोत् ८६ दण्डवत्पतितामग्रे सीतां दृष्ट्वाऽतिहृष्टधीः ॥ अनसूयासमालिङ्ग्य वत्से
 सीतेति सादरम् ८७ दिव्येददौ कुण्डले द्वे निर्मिते विश्वकर्मणा ॥ दुकूले द्वे ददौ तस्यै
 निर्मले भक्तिसंयुता ८८ अंगरागं च सीतायै ददौ दिव्यं शुभानना ॥ न त्यक्षतेऽग्रा
 गेण शोभात्वां कमलानने ८९ पातिव्रत्यं पुरस्कृत्य राममन्वेहि जानकि ॥ कुशली
 राघवो यातु त्वया सह पुनर्गृहम् ९० ॥

(अरिनिषूदन अंतःतिष्ठति तां सीतां पश्यतु तथा इति राजीवलोचनः रामः जानकीं प्राह) अत्रि कहत हे शत्रुनाशन रघुनन्दन सो अनसूया आश्रमके भीतर बैठी है ताहि सीताजाय दर्शनकरै तब प्रभुबोले कि यथा आपकहेउ तैसाहीहोय इति कहि कमल नयन रघुनन्दन जानकी प्रतिबोले ८५ (शुभं गच्छ देवी नमस्कृत्य पुनः शीघ्रं एहि तथा इति च सीता अपिरामवचनं तथा अकरोत्) प्रभु कहे कि हे मंगलरूपे देवी जो अनसूया ताहि प्रणामकरि पुनः शीघ्रही मेरोढिग आवौ तैसाहीहोय इति कहि पुनः सीता जैसे रघुनन्दनके बचनरहैं तैसाही करती भई भावजाय प्रमाण कीन्ही ८६ (अग्रे दण्डवत्पतितां सी तां दृष्ट्वा अनसूया अतिहृष्टधीवत्से सीता इति सादरम् संमालिङ्ग्य) आगेदंडकी नाई प्रणामकरती परी जो सीता तिनहिं देखि अनसूया अत्यन्त आनन्द बुद्धितेबोलीं हे वत्से सीता उठो इति कहि सहित आदर हृदयमें लगायलिये ८७ (विश्वकर्मणानिर्मिते दिव्ये द्वे कुण्डले ददौ तस्यै भक्तिसंयुते द्वे दुकूले निर्मले द्वौ) विश्वकर्मा करिकै बनायेहुये द्वौ दिव्य देवलोकके ऐसे कुंडलदिये तथा अनसूयाजी तिन जानकी

के अर्थ प्रीति सहित द्वै वस्त्र अमलदेतीभिर्भाव जो सदानवीन रहैं मलीनकबहूँनहोयँ ८८ (चशु भाननादिव्यभंगरागंसीतायैददौकमलाननेअंगरागेणत्वांशोभानत्यक्षते) पुनः मंगलीक मुखहै जिन को ऐसी अनसूया दिव्य अंगराग अर्थात् केशरि कस्तूरी अगर कंकोल कर्पूर चन्दनमें उताराहुआ अंगमें लगावनेहेत ताहि सीताके अर्थ देतीभिर्भाव ताको गुण कहत हे मंगलबदने सीते जो याको अंग में लगावौगी तौ इसअंगराग करिकै तुमहिं शोभाकबहूँन परि त्यागकरैगी सदाबनीरहैगी ८९ (जान किपातिव्रत्यंपुरस्कृत्यरामंअन्वेहित्वयासहराधवःकुशलीपुनःगृहम्यातु) भूषण वसन पहिराय अंग रागलगाय अनसूयाजी बोलीं हे जानाकि पातिव्रत धर्म की जो उत्तमरीतिं है यथा शिवपुराणे स्वप्नेपियन्मनोनिर्त्यंस्वपतिं पश्यति ध्रुवम् ॥ नान्यंपरपतिं भद्रे उत्तमासापतिव्रता ॥ अर्थात् सेवाय अपनापति दूसरे पतिको स्वप्नेहूमें न देखना इति जोउत्तम पातिव्रत है ताही रीतिते रघुनन्दनकी सेवाकरौ अर्थात् सर्वांग भूषण बसन अंगराग युत तन शुद्ध मनप्रेम सहितप्रिय बचनयुत दिनौ राति निरालस श्रद्धा सहित रघुनन्दनकी सेवाकरौ हेजानकीजी तुम करिकै सहित रघुवंशनाथ चौदहवर्ष बादि कुशल सहित पुनः धरहि लौटि आवहिंगे ९० ॥

भोजयित्वायथान्यायंरामंसीतासमन्वितं ॥ लक्ष्मणंचतथारामंपुनःप्राहकृतांज

लिः ६१ रामत्वमेवभुवनानिविधायतेषांसंरक्षणायसुरमानुषतिर्यगादीन् ॥

देहान्विभर्षिनचदेहगुणैर्विलिप्तस्त्वत्तोविभेत्यखिलमोहकरीचमाया ६२ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेअयोध्याकांडेनवमःसर्गः ६ ॥

(सीतासमन्वितं रामंच तथा लक्ष्मणं यथान्यायं भोजयित्वा पुनः कृतांजलिःरामंप्राह) जनक नन्दिनौ सहित रघुनन्दन जो हैं तिनहिं पुनः ताहीप्रकार लक्ष्मण जो हैं तिनहिं यथा न्याय अर्थात् जैसा वेदमें लिखाहै ताही रीतिते उत्तम फल मूलादि भोजन कराये जब अचवन करिवैठे तब पुनः अनसूया हाथ जोरि रघुनन्दन प्रति बोलीं ६१ (रामत्वं एव भुवनानि विधाय तेषां रक्षणाय सुर मानुष तिर्यक् आदीन् देहान्विभर्षिच देहगुणैः न विलिप्तः च अखिल मोहकरी माया त्वत्तोविभेति) अनसूया कहत हे रघुनन्दन आपही निश्चय करि सब भुवन जोहैं तिनहिं रचेउ पुनः तिनकी रक्षा करने हेत सुर यथा हरि सनकादि वामन तथा मानुष यथा कपिल मनु पृथु परशुराम रघुबीरादि तिर्यक् मत्स्य कमठ वाराह इत्यादि देहैं धरि लोकन की रक्षा करतेहौ अरु इन्द्री विषय कामादि तम रज सत्त्वादि देहके गुणन करिकै लिप्त नहीं होतेहौ क्योंकि सम्पूर्ण संसारको मोहित करनहारी जो मायाहै सो आपको डराती है ताते सदा एकरस ज्ञान अखंड आनन्द रूपहौ ६२ पद ॥ पिय के मिलने करु चाह नई जुवृथा लरिकाई गई सुगई १ जग मोह पिता ममता जननी तजु लोभ कुबन्धु इषा भगनी अलिइन्द्रिय संगति शोकलई विषयासकुखेल कई सुकई २ जल प्रेम सुमज्जन शुद्ध घटै धरि धर्म दयादिक शीलपटै बुधि लोचन अंजन ज्ञानमई सिंदुरा अंग राग चई सुचई ३ श्रवणादि विभूषित अंग किये नथशांति सबै गुणमाल हिये शरणागत चादर ओढि नई चलुयौ ध्रुव आत्म दर्ईसुदर्ई ४ करु धूषुट ध्यान सुभक्तिपरे तुरिया पति सेज सु अंक भरे पतिको प्रिय बैज सु नाथ भई विलसौ बय नित्य नई सुनई ५ ॥

इतिश्री रसिक लताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे

अयोध्याकांडेनवमःप्रकाशः ६ ॥



अथ आरण्यकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ अथ तत्र दिनं स्थित्वा प्रभाते रघुनन्दनः ॥ स्नात्वा मुनिसमामं
त्र्यप्रयाणायोपचक्रमे १ मुने गच्छामहे सर्वे मुनिमण्डलमण्डितम् ॥ विपिनं दण्ड
कं यत्र त्वमाज्ञातुमिहार्हसि २ मार्गप्रदर्शनार्थाय शिष्यानां ज्ञप्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वा रा
मस्य वचनं प्रहस्या त्रिर्महायशाः ३ सर्वस्य मार्गदृष्टा त्वं तव को मार्गदर्शकः ॥ तथापि द
र्शयिष्यंति तव लोकानुसारिणः ४ इति शिष्यान् समादिश्य स्वयं किञ्चित्तमन्वगात् ॥
रामेण वारितः प्रीत्या अत्रिः स्वभवनं ययौ ५ ॥

सवैया ॥ ऋषि आयसु बंदि सशिष्य चले वन घोर विराध मिलो सुतदा । यह गंधर्व राक्षस रूप
भयो दुर्बास जु शाप दिये सकदा ॥ त्यहिमारि उधारि स्वभक्तिदिये बिनती करिगो निज आसपदा ।
सिय सानुज राघव हीय बसौ मम बैजसुनाथ नमामि सदा ॥ (तत्र दिनं स्थित्वा अथ प्रभाते रघुनन्दनः
स्नात्वा प्रयाणाय मुनिसंभ्रामं उपचक्रमे) शिवजी कहत हे गिरिजा जिस दिन चित्रकूट ते चले ता
दिन अत्रि मुनि के आश्रम में बास कीन्हे रात्री बिगत जब भोर भया तां समय में रघुनन्दन मंदा-
किनी में स्नान करि पुनः आगे चलिबे हेत मुनि प्रति मंत्र किये सलाह पूछे १ (मुने यत्र मुनिमण्ड
लमण्डितं दण्डकं विपिनं सर्वे गच्छामहे इह आज्ञातुं त्वं अर्हसि) अत्रि प्रति रघुनन्दन बोले हे मुने जहां मुनि
वृन्द करिके शोभित ऐसा जो दण्डक वन तहां को हम सब जने जावा चाहते हैं सो या समय में
हमहि आज्ञा देने को आपही योग्य हौ २ (मार्गप्रदर्शनार्थाय शिष्यान् आज्ञप्तुं अर्हसि रामस्य वचनं श्रु
त्वामहायशः अत्रिः प्रहस्य) वन में राह देखावने हेत शिष्य जो हैं तिनहि आज्ञा देने के योग्य हौ
भाव शिष्यनको पठावो हमको राह बताय आवैं ऐसे माधुर्य रघुनन्दनके बचन मुनि महा यशी अत्रि
हंसि कै बोले ३ (त्वं सर्वस्य मार्गदृष्टा तव मार्गदर्शकः कः तथापि लोकानुसारिणः तव दर्शयिष्यति)
अत्रि बोले कि हे रघुनाथ जी आप सबन को मार्ग देखावने वाले हौ भाव सुधर्म मार्ग अज्ञावने हेत
अवतीर्ण भयो तौ आप को सुमार्ग दर्शवने वाला संसार में कौन है ताहु पर जो आप राजकुमार
बने लोक रीति चलते हौ ताते शिष्य लोग आप को मार्ग देखाय आवहिंगे ४ (इति शिष्यान् सं
आदिश्य किञ्चित्स्वयं भन्वगात् प्रीत्यारामेण वारितः अत्रिः स्वभवनं ययौ) इत्यादि कहि शिष्य जो

रहे तिनहिं आज्ञा दै साथ कीन्हें पठावने हेत कुछ दूरि आपहू गये जब बड़ी प्रीति करिकै रघुनाथ जी ने लौटारा तब अत्रि आपने मन्दिर गये ५ ॥

क्रोशमात्रंतोगत्वाददर्शमहतींनदीम् ॥ अत्रेःशिष्यानुवाचेदंरामोराजीवलोचनः ६ नद्याःसंतरणेकश्चिदुपायोविद्यतेनवा ॥ ऊचुस्तेविद्यतेनौकासुदृढारघुनदन ७ तारयिष्यामहेयुष्मान्वयमेवक्षणादिह ॥ ततोनाविसमारोप्यसीतांराघवलक्ष्मणौ ८ क्षणात्संतरयामासुर्नदीमुनिकुमारकाः ॥ रामाभिनंदिताःसर्वेजग्मुरत्रेःरथाश्रमम् ९ तावेत्यविपिनंघोरंभिल्लीभ्रकारनादितम् ॥ नानामृगगणाकीर्णसिंहव्याघ्रादिभीषणम् १० राक्षसैर्घोररूपैश्चसेवितंरोमहर्षणं ॥ प्रविश्यविपिनंघोरंरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ११ ॥

(ततः क्रोशमात्रं गत्वा महतीं नदीम् ददर्श राजीव लोचनः रामः अत्रेः शिष्यान् इदं उवाच) तदनन्तर कोश भरि गयो तहां एक बड़ी भारी अगाध नदी देखतेभये तब कमल नयन रघुनन्दन अत्रिके शिष्यन प्रति इसप्रकार बचन बोलतेभये ६ (नद्याःसंतरणे उपायः कश्चित् विद्यते वानते ऊचुः रघुनन्दन सुदृढा नौका विद्यते) रघुनन्दन पूछे कि नदी उतरनेकी उपाय पुल नाव घनई इत्यादि में कछु है वा नहीं है सो सुनि मुनि शिष्य बोले हे रघुनन्दन सुंदर पुष्ट नावहै ७ (वयं इदक्षणात् एव युष्मान् तारयिष्यामहे ततः सीतां राघव लक्ष्मणौ नावि समारोप्य) शिष्य लोग कहे कि नावपर बैठारि हमलोग इसी क्षणमें निश्चय करि तुमहिं नदीपार उतारि देइंगे तदनन्तर सीता जोहैं तिनहिं रघुनन्दन लक्ष्मण जोहैं तिनहिं नावमें बैठारे ८ (मुनिकुमारकाः क्षणात् नदीः संतारयामासुः रामाभि नंदिताः सर्वे अथ अत्रेः आश्रमं जग्मुः) मुनिबालक नाव को खेड़ क्षणभरे में नदी के पार उतारि दिये तब रघुनन्दन आनन्दहै प्रशंसा करि बिदाकिये तब सब अत्रिके आश्रमहि जातेभये ९ (तौ विपिनं घोरं एत्य भिल्लीभ्रकार नादितं नानामृगगणाः आकीर्ण सिंहव्याघ्रादि भीषणम्) श्री रामलक्ष्मण दोऊ बन जो भयंकर है तहां प्राप्त भये कैसा भयङ्कर है जहां भिल्ली पतंगसरीखे मैलोकीटसो भौंगुर कैसो भ्रंकार शब्दकरिरहेहैं अनेक भांति मृगनकेभुंडभरे हैं सिंह व्याघ्र आदि भयंकर जीव बहुतहैं १० (च घोर रूपैः राक्षसैः सेवितं रोम हर्षणम् घोरंविपिनं प्रविश्य रामः लक्ष्मणम् अब्रवीत्) पुनः भयंकररूप राक्षसों करिकै सेवित जिसकोदेखे रोमखड़े होत'ऐसा भयंकर जो बन है तामें पैठे तब रघुनन्दन लक्ष्मण प्रति बोलतेभये ११ ॥

इतःपरंप्रयत्नेनगंतव्यंसहितेनमे ॥ धनुर्गुणेनसंसज्यशरानपिकरेदधत् १२ अत्रेयास्याम्यहंपश्चात्त्वमन्वेहिधनुर्धरः ॥ आवयोर्मध्यगासीतामायेवात्मपरात्मनोः १३ चक्षुश्चारयसर्वत्रदृष्टरक्षोभयंमहत् ॥ विद्यतेदण्डकारण्येश्रुतपूर्वमरिंदम १४ इत्येवंभाषमाणौतौजग्मतुःसार्द्धंयोजनम् ॥ तत्रैकापुष्करिण्यास्तेकङ्कारकुमुदोत्पलैः १५ ॥

(इतः परंमे संगेन प्रयत्नेन गन्तव्यं गुणेन धनुः संयोज्य करेशरान् अपि दधत्) रघुनन्दन बोले हे लक्ष्मण इहांते आगे मेरे साथ यत्नकरिकै चलना चाहिये कौन यत्न रोंदा करिकै धनुष युक्त करौ भाव धनुष चढाय बामहाथ में राखौ अरु दक्षिण हाथमें बाण जो हैं तिनहिं निश्चय करि धारण

किहेरहौ १२ अये अहं यास्यामि पश्चात् धनुःधरः त्वं अन्वेहि आत्म परात्मनोः मायाइव सीता आवयो मध्यगा) रघुनन्दन बोले हे लक्ष्मण आगे तौ हमचले अरु पाछे धनुषबाण धरे तुम चलो पुनः यथा आत्मा परात्माके बीच माया रहती है ताहीं भांति सीता हमारे तुम्हारेमध्यमें चलें यह प्रभुको बचन लोक शिक्षात्मक उपदेशहै अर्थात् माया तीनि हैं एक अविद्या जो बीच परि जीव परमात्माते भेद करावत ताते बेह बुद्धीते विषयासक्त रहत दूसरी विद्या माया जो बीच परि जीव परमात्मते सम्बन्ध करावत ते जीव बुद्धीते परमात्मके प्राप्तहिंते उपाय अर्थात् विवेक विरागादि ज्ञाननके साधन करत तीसरी आह्लादिनी माया जो बीचपरि जीवके अन्तर परब्रह्मकी दीप्ति प्रकाशत तव आत्मबुद्धिते परमात्म की भक्ति करत इत्यादि आत्म परात्म के बीच आह्लादिनी माया अर्थात् भक्तिरहत सोजाभांति भक्तजन भक्ति परदृष्टि राखत तैसेजानकीपर दृष्टिराखौ १३ (अरिंदमपूर्व श्रुतं दंडकारण्ये रक्षो महत् भयं विद्यते दृष्टं सर्वत्र चक्षुः चारय) प्रभु बोले हे शत्रुनको नाशकरने वाले लक्ष्मण ऋषिलोगनके मुखते हम पूर्वही सुनाहैं कि दंडक वनविषे राक्षसोंते बड़ी भयहै सोई प्रसिद्ध अनेकप्रकारके अशकुन देखिपरते हैं भाव कछुभय आगम देखातहैं ताते सब दिशों में दृष्टि करते सजग चलो १४ (इति एवं भाषमाणौ तौ सअर्द्धं योजनं जग्मतुः तत्र एका पुष्करिण्या आस्ते कल्हार कुमुद उत्पलैः) इसी भांति वार्त्ता करत दोऊ डेढ़ योजन गये तहां एक भीलमिली जिसमें श्वेत कमल कोकी पुनः कोकीके तुल्य साधारण कमल इत्यादि करिकें शोभितहै १५ ॥

अम्बुजैः शीतलोदेनशोभमानाव्यदृश्यत ॥ तत्समीपमथोगत्वापीत्वा तत्सलिलं शुभम् १६ ऊषुस्ते सलिलाभ्यासेक्षणं छाया मुपाश्रिताः ॥ ततो ददृशुरायांतं महासत्त्वं भयानकम् १७ करालदंष्ट्रवदनं भीषयंतं स्वगर्जितैः ॥ वामासेन्यस्तशूलाग्रग्रथितानेकमानुषम् १८ भक्षयंतं गजव्याघ्रमहिषं वनगोचरम् ॥ ज्यारोपितं धनुर्धृत्वा रामो लक्ष्मणमब्रवीत् १९ पश्य आत्तमहाकायो राक्षसोऽयमुपागतः ॥ आयात्यभिमुखं नोऽग्रे भीरूणां भयमावहन् २० सज्जीकृतधनुस्तिष्ठमाभैर्जनकनन्दिनि ॥ इत्युक्त्वा बाणमादाय स्थितो राम इवाच लः २१ ॥

(शीतलोदेन अम्बुजैः शोभमानाव्यदृश्यत अथः तत्समीपं गत्वा तत्शुभं तत्सलिलं पीत्वा) शीतल जल करिकें तथा कमलन करिकें विशेषि शोभायमान देखातीहैं अवताहि समीप जाय लक्ष्मण जानकी रघुनंदन ताको मंगलमै जो जलहै ताहि पानकरते भये १६ (सलिलाभ्यासे छायां मुपाश्रिताः तेक्षणं ऊषुः ततः महासत्त्वं भयानकं आयांतं ददृशुः) जलके समीपमें तृलकी छाया जो है ताहि सुखद विचारि तामें लक्ष्मण जानकी रघुनंदन तेक्षण भरि विश्राम करते भये तबतक एक महाबली भयानक राक्षस आवता हुआ देखते भये १७ (करालदंष्ट्रवदनं स्वगर्जितैः भीषयंतं शूलाग्रे अनेकमानुषं ग्रथितः वामासेन्यस्त) बड़े भयंकर दौत हैं जामें ऐसा मुख अरु आपनी गर्जनि शब्द करिकें सबको डरपाय रहाहै पुनः त्रिशूल की नोकमें अनेक मनुष्यों को गुहेसो वास काँधेपर धरेहै १८ (गजव्याघ्रमहिषं वनगोचरम् भक्षयंतं रामः ज्यारोपितं धनुर्धृत्वा लक्ष्मणमब्रवीत्) हाथी व्याघ्र भैंसा तथा और जो वन पशुहैं तिनहिं भक्षण करता है ताहिदेखि रघुनंदन रोदाचढ़ाय धनुष हाथमें लैकै लक्ष्मण प्रतिबोल ते भये १९ (आतः पश्य महाकायः अयं राक्षसः अभिमुखं आयाति नः अग्रे उपागतः) प्रभु बोले हे भाई देखिये बड़ी भारी देहको यह राक्षस सत्सुख आवता है हमजोगोंके आगे समीप आय प्राप्त भयापुनः

जे डरनेवाले पुरुष हैं तिनको डरउपजायरहाहै भाव हममहीं डरते हैं जो पूर्व कहारहै कि भयहोन हारहै इसहेतु तुमतेकहा २० (धनुःसज्जीकृततिष्ठजनकनंदिनिमाभैःइतिउक्तवांवाणंआदायअचलः डवरामस्थितः) हे लक्ष्मण धनुष वाण साजिकै स्थितरहौ हे जनक नंदिनि तुम नडरेउ ऐसाकहि वाण धनुषमें घटाय पर्वत की नाई अचल है रघुनंदन खड़ेभये २१ ॥

सतुष्ट्यारमानाथंलक्ष्मणंजानकीतथा ॥ अट्टहासंततःकृत्वाभीषयन्निदमब्रवी
तु २२ कौयुवांवाणतूणीरजटावलकलधारिणो ॥ मुनिवेषधरौबालोस्त्रीसहायौसुदु
र्मदो २३ सुंदरौवतमेवक्तप्रविष्टकवल्लोपमौ ॥ किमर्थमागतौघोरंवनंव्यालनिषे
वितं २४ श्रुत्वारक्षोवचोरामःस्मयमानउवाचतं ॥ अहंरामस्त्वयंभ्रातालक्ष्मणो
ममसम्मतः २५ एषासीताममप्राणवल्लभावयमागता ॥ पितृवाक्यंपुरस्कृत्य
शिक्षणार्थंभवादृशाम् २६ श्रुत्वातद्रामवचनमट्टहासमथाकरोत् ॥ व्यादायवक्तंवा
हुभ्यांशूलमादायसत्वरः २७ ॥

(तुरमानाथंलक्ष्मणंतथाजानकी दृष्ट्वासअट्टहासंरुत्वा ततःभीषयन्इदमब्रवीत्) पुनः रघुनंदन लक्ष्मण तैसे जानकी इनहिं देखिके माधुर्य में उत्तम मनुष्यभोजन दिव्यस्त्री प्राप्त विचारि अथवा ऐश्वर्य में अपने उद्धारको समयविचारि मनमें आनंद है ठट्टायकें हास्यकरि तदनंतर डरपावत संते ऐसा वचन बोलता भया २२ (वाणतूणीरजटावलकलधारिणौमुनिवेषधरौस्त्री सहायौबालौसुदुर्म दौयुवांको) विराधबोलाकि वाणोंते भरे तरकस धनुष लिहेजटा के मुकुटवलकलचीरतनमें धारौ मुनिन कैसे वेष धारण किहे स्त्रीभी साथलिहे होतौ वालअवस्था परंतुवीरताते बड़ेमद युक्त भाव धनुषवाण साजे निशंक खड़ेहौ तुमदोऊ कांहौ २३ (वतसुंदरौमेवक्तप्रविष्टकवल्लोपमौव्यालनिषे वितंघोरंवनंकिमर्थमागतौ) ईश्वर हैं वा मानुष इतिभ्रम निवारणार्थ पुनः पूछत कि वत अर्थात् बड़ेखेदकी बातहै कि तुमसुन्दर दोऊ मेरे मुखमेंप्रवेश करने वाले ग्राससम प्राप्तभये पुनः सर्पादिहिं सकजन्तुनकरिके सेवित जोभयंकर वनतहाँकोने हेतआयाहौ भावतुमको तौमेंअभी खाइ जाउंगोपरंतु भयंकर वनमें कौन कार्यहेत आयो है सो कहौ २४ (रक्षोवचःश्रुत्वास्मयमानरामःतंउवाचअहं रामः तुभ्यंलक्ष्मणःममसम्मतःभ्राता) राक्षसके वचन सुनिके मुसुकाय कै रघुनंदन त्यहि राक्षस प्रतिबोलतेभये कि हमरामहैं पुनः ये लक्ष्मण हमारे प्रियभाई हैं २५ (एषासीताममप्राण वल्लभा पितृवाक्यंपुरस्कृत्यभवादृशाम्शिक्षणार्थवयंआगताः) येसीता मेरी प्राणप्यारीपत्नी है अरुपिता की आज्ञाते तुम सरीखेदुष्टोंको सिखावन बनेहेतहमतीनहूँ जनेवनहिआये हैं २६ (तत्ररामवचनंश्रुत्वा अथअट्टहासंअकरोत्वक्तंव्यादायवाहुभ्यांसत्वरःशूलंआदाय) मोरघुनंदन के वचन सुनिके ठट्टायकें हासकरि मुख पसारि शीघ्र हाथमें त्रिशूलले कै बोलताभया २७ ॥

मानंजानासिरामत्वंविराधंलोकविश्रुतम् ॥ मद्भयान्मुनयःसर्वेत्यक्त्वावनमितोग
ताः २८ यदिजीवितुमिच्छाऽस्तित्यक्त्वासीतांनिरायुधौ ॥ पलायतंनचेच्छीघ्रंभक्ष
यामियुवावहम् २९ इत्युक्त्वारक्षसःसीतामादातुमभिदुद्रुवे ॥ रामश्चिच्छेदत
द्वाहूशरेणप्रहसन्निव ३० ततःक्रोधपरीतात्माव्यादायविकटंमुखम् ॥ राममभ्य
द्रवद्रामश्चिच्छेदपरिधावतः ३१ पदद्वयंविराधस्यतदद्भुतमिवाभवत् ३२ ततः

सर्पइवास्येनग्रसितुंराममापतत् ॥ ततोर्द्धचन्द्राकारेणवाणेनास्यमहच्छिरः ॥ चि
च्छेदरुधिरौघेणपपातधरणीतले ३३ ततःसीतांसमालिङ्ग्यप्रशशंसरघूत्तमम् ३४

(मत्भयात्सर्वे मुनयःवनं त्यक्त्वा इतःगताः लोकविश्रुतं विराधं भारामत्वं न जानासि) राक्षस
बोला कि मेरे डर ते सब मुनि वन त्यागि इहां ते चले गये लोक में प्रसिद्ध विराध नाम जो मैं हों
ताहि हे राम तुम नहीं जानते हों २८ (यदिजीवितुं इच्छा अस्ति सीतां त्यक्त्वानिर्भ्रायुधौ शीघ्रपला
यतं न चेत् अहं युवां भक्षयामि) विराध बोला कि जो तुमको जीवने की इच्छा हो तो सीता जो हैं
तिनहिं त्यागि हथियार डारि शीघ्रही भागि जाउ नाहीं तौ मैं तुम दोऊ जोहौ तिनहिं खायलेउंगो
२९ (इति उक्त्वा राक्षसः सीतां आदातुं अभिदुद्रुवे प्रहसन् इवरामः शरणे तत् बाहूचिच्छेद) ऐसा
कहिकै राक्षस सीतहि गहि लेने को दौरता भया तब हास क्रिया की तुल्य रघुनंदन बाण करिकै
ताकी दोऊ बाहु काटि डारे भाव लीलामात्र बाण चलाय बाहु काटि डारे ३० (ततः क्रोधपरीता
त्मा विकटं मुखं व्यादायरामं अभ्यद्रवत् धावतः परिरामः विराधस्य पदद्वयं चिच्छेद तन् अद्भुतं ददधम
वत्) बाहु कटे पर तब क्रोध ते परिपूर्ण भयंकर मुख पसारि रघुनन्दन को निगलने हेत धावा
धावते समय रघुनन्दन विराध के दोऊ पांय बाण करिकै काटि डारे तब कर पद रहित अद्भुत कुरूप
भया ३१ । ३२ (ततः आस्येन रामं ग्रसितुं सर्प इव अपतत् ततः अर्द्धचन्द्राकारेण वाणेनास्यमहच्छिरः चि
च्छेदरुधिरौघेण धरणीतले पपात) तब मुख करिकै रघुनन्दनहिं निगलने हेत सर्प की नाई लोटत
चला तब रघुनन्दन अर्द्धचन्द्राकार गौसी है जामें ऐसे बाण करिकै बाको मुख युत जो बड़ा भारी शिर
है सो ग्रीवा ते काटि डारे तब रक्त बहुत बहता हुआ भूमि पर गिरि पड़ा ३३ (ततः सीतारघूत्तमम्
समालिङ्ग्य प्रशशंस) राक्षस मरा तब सीता रघुनन्दन जो हैं तिनहिं उर में लगाय बड़ी प्रशंसा
करती भई ३४ ॥

ततोऽदुन्दुभयोनेदुर्दिविदेवगणैरिताः ॥ ननृतुश्चाप्सरोहृष्टाजगुर्गंधर्वकिन्नराः ३५
विराधकायादति सुंदराकृतिर्विभ्राजमानो विमलांवरावृतः ॥ प्रतप्तचामीकरचारु
भूषणोऽव्यहृश्यताग्रे गगनेरविर्यथा ३६ प्रणम्य रामं प्रणतार्तिहारिणं भवप्रवाहोप
रमं घृणाकरम् ॥ प्रणम्य भूयः प्रणनामदण्डवत्प्रपन्नसर्वार्तिहरं प्रसन्नधीः ३७ ॥
विराध उवाच ॥ श्रीरामराजो वदलायताक्षविद्याधरोऽहं विमलप्रकाशः ॥ दुर्वास
साकारणकोपमूर्त्तिना शप्तः पुरा सोऽद्य विमोचितस्त्वया ३८ ॥

(ततः देवगणैरिताः दिवि दुन्दुभयोनेदुःखहृष्टा अप्सरः ननृतुः गंधर्व किन्नराः जगुः) तदनंतर देव
गणों के बजाये हुये आकाश में नगरादि बाजा बाजते भये पुनः बड़ी आनंद ह्वै अप्सरा नाचने
लगीं गंधर्व किन्नर गान करते भये ३५ (विराधकायात् अतिसुन्दर आकृतिः विभ्राजमानः प्रतप्तचा
मीकरचारुभूषणः विमलः अम्बरः आवृतः अग्रेऽव्यहृश्यत यथा गगनेरविः) विराध की देह ते निसरि
घट्यन्त सुंदर आकृत विशेषि भ्राजमान अर्थात् सर्वांग सुठौर बने देवाकार स्वरूप विशेषि विराज-
मान तप्त सोना सीकांतिमान सुन्दर भूषण तथा अमल वस्त्र धारण किहे रघुनन्दन के आगे कैसा प्रका-
शमान देखि परा जैसे आकाश में सूर्य ३६ (रामप्रणम्य) रघुनन्दन जो हैं तिनहिं प्रणाम करता
भया (कथंभूतं) कैसे हैं राम (प्रणतार्तिहारिणम्) प्रणत जो शरणागत ताके आर्ति जो दुःख तिन
को हरि लेनेवाले हैं पुनः कैसे हैं (भवप्रवाहस्य उपरमम् घृणायाः आकरम्) संसार सागर प्रवाह

को उपरामं अर्थात् नाश है जामें ऐसी घृणा दया ताके आकर खानि हैं पुनः कैसे हैं (सर्वाचिंहारिणम्) सब प्रकार के भार्ति दुःख ताके हरणहार हैं ऐसे जो रघुनन्दन तिनहिं (दण्डवत्प्रणामभूयः प्रणम्यप्रसन्नधीः) दण्डकी समानगिरिके जो प्रणाम इति अनेकवार प्रणामकरि आनंदमन बोलता भया ३७ (राजीवदलायताक्ष श्रीरामग्रहं विमलप्रकाशः विद्याधरः अकारणकोपमूर्तिना दुर्वाससा पुराशप्तः अद्य त्वया विमोचितः) विराध बोला है कमल दलवत् विशाल नयन श्री रघुनाथजी मैं विमल प्रकाशवन्त्र विद्याधर हों अरु बिना कारणे कोपमूर्ति दुर्वासा ऋषि ने पूर्व कालमें शाप दिया ताते राक्षस भयों सो आपने आजु शाप ते छुड़ा दिया ३८ ॥

इतः परं त्वच्चरणारविन्दयोः स्मृतिः सदा मेऽस्तु भवोपशान्तये ॥ त्वन्नामसंकीर्तनमेव वाणीकरोतु मे कर्णपुटं त्वदीयम् ३६ कथामृतं पातु करद्वयं ते पादारविन्दार्चनमेव कुर्यात् ॥ शिरश्च ते पादयुगप्रणामं करोतु नित्यं भवदीयमेवम् ४० नमस्तुभ्यं भगवते विशुद्धज्ञानमूर्तये ॥ आत्मारामाय रामाय सीतारामाय वेधसे ४१ अपन्नपाहि मां रामयास्यामित्वदनुज्ञया ॥ देवलोकरघुश्रेष्ठमायामांमावृणोतु ४२ इति विज्ञापितस्तेन प्रसन्नो रघुनन्दनः ॥ ददौ वरं तदा प्रीतो विराधाय महामतिः ४३ ॥

(इतः परं भवउपशान्तये त्वत्चरणारविन्दयोः स्मृतिमे सदा अस्तु वाणी त्वत्त्नामसंकीर्तनमेव करोतु मे कर्णपुटं त्वदीयं) शापते तौ आपउद्धार किया इसके उपरांत भवदुःख शांत होने हेतु आपके पद कमलों को स्मरण मेरे अन्तस्समें सदा रहै मेरी वाणी आपके नामको कीर्तन किया करे तथा मेरे श्रवण रूपदोना सो आपके ३६ (कथामृतं पातु) कथा रूप असृत को पान करे (करद्वयं ते पादारविन्दयोः अर्चनमेव कुर्यात् च शिरः ते पादयुगप्रणामं करोतु एवमनित्यं भवदीयं) हाथदोऊ आपके पद कमलों की पूजन निश्चय करिके किया करे पुनः शिर आपके पददोउनको प्रणाम किया करै इसी भाँति नित्यही आपकी कैर्कशता में लगा रहों ४० (विशुद्धज्ञानमूर्तये भगवते तुभ्यं नमः रामाय आत्मारामाय सीतारामाय वेधसे) विशेषि शुद्धज्ञानसोई मूर्तिजाकी ऐश्वर्य रूप आप के अर्थ नमस्कार है परात्पर साकेत बिहारी रामके अर्थ आत्म रूपमें क्रीड़ा करने वाले अंतर्धामी रूप रामके अर्थ माधुर्य रूप सीता सहित रामके अर्थ नमस्कार है ४१ (रामप्रपन्नमां पाहित्व अनुज्ञया देवलोकां यास्यामि रघुश्रेष्ठ ते मायामांमावृणोतु) स्तुति प्रणाम करि विराधप्रार्थना करत है श्रीरघुनाथ जी भवकी भयते मैं आपकी शरण हों मोहिं रक्षा करौ कैसे रक्षा करौ कि अब आपकी आज्ञा करि कै मैं देवलोकहि जावा चाहता हों तहाँ रहे पर हेरघुश्रेष्ठ भाव उत्तम उदार रघुवंश में आप उत्तम परम उदार हों मेरी याचना पूर्ण करौ यह कि आपकी मायामेरी आत्म दृष्टिमें आवरण न करै ४२ (इतितेन विज्ञापितः रघुनन्दनः प्रसन्नः तदा महामतिः प्रीतः विराधाय वरं ददौ) शिवजी कहत इस प्रकार विराधने अपना दुःख सुनावा ताते रघुनन्दन प्रसन्न ह्वै तब महा बुद्धिवन्त प्रभु प्रीतिपूर्वक विराध के अर्थ वरदान देते भये ४३ ॥

गच्छ विद्याधरा शेषमायादोषगुणाजिताः ॥ त्वयामहर्शनात्सद्यो मुक्तो ज्ञानवतां वरः ४४ मद्भक्तिर्दुर्लभा लोके जाता चेन्मुक्तिदायकः ॥ अतस्त्वं भक्तिसम्पन्नः परं या

हिममाज्ञया ४५ रामेणरक्षोनिधनंसुघोरंशापाद्विमुक्तिर्वरदानमेवम् ॥ विद्याधर
त्वंपुनरेवलब्धंशमंगृणन्नेतिनरोऽखिलार्थान् ४६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(विद्याधरगच्छमतदर्शनात्त्वयाभशेषमायादोपगुणा जिताः ज्ञानवतांवरःसद्यःमुक्तः) रघुनन्दन बोले कि हेविद्याधर सबबातसे अभयहै आपने धामहिं जाउमेरेदर्शनके प्रभावते तुमने सम्पूर्ण माया के दोष मय जो गुण हैं जीति लिया अब ज्ञानवंतन में श्रेष्ठ हवै शीघ्रही मुक्त होउगे ४४ (मत्भक्ति लोकेदुर्लभाचेत्आता मुक्ति दायतःत्वंभक्तिसम्पन्नः अतःममआज्ञयापरंयाहि) हे विद्याधर मेरी भक्ति प्राप्त होना लोक में दुर्लभ है-साधारण नहीं होती कदाचित् जो किसी में उत्पन्न होइ तौ मुक्ति की देनहारी है सोई तुमको परिपूर्ण भक्ति प्राप्त भई इस कारण मेरी आज्ञा करिकै परम्पदहिं प्राप्त हो-उगे ४५ (रामेणरक्षः निधनं सुघोरं शापात् विमुक्तिः एवंवरदानं पुनः एवविद्याधरत्वं लब्धंशमं गृणन्नरः अखिलार्थानएति) शिव जी कहत कि श्री राम ने राक्षस को बध किया ताते घोर दुष्टहिं शाप ते छुड़ाया अरु ऐसा बरदान दिया जाते यम शासति ते बधि पुनःनिश्चयकरि विद्याधर पदको प्राप्त भया इत्यादि जो रामचरितहैं ताहि गानकरताहै सो मनुष्य सम्पूर्ण जो अर्थहैं तिनहिं पावताहै ४६॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्गुभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणआरण्यकाण्डेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

विराधेस्वर्गतेरामोलक्ष्मणेनचसीतया ॥ जगामशरभंगस्यवनंसर्वसुखावहम् १॥

सवैया ॥ शरभंग मिले स्तुति पूजि लही गति रोपि चितानल सोपि जले । ऋषि वृन्दन भेटत प्रहित लखे सब दुष्ट बधौ प्रण कीन भले ॥ चलि भेटि सुतीक्ष्ण पूजि कहै अब धन्य भयौ मम भाग फले । तिन राम नमामि सुतीक्ष्ण लै सिय सानुज कुम्भज धाम चले ॥ (विराधेस्वर्गतेलक्ष्मणेनचसीतयारामः शरभंगस्यवनं जगामसर्वसुखावहम्) शिव जी कहत हे गिरिजा विराध स्वर्ग लोक जात सन्ते लक्ष्मण जानकी करिकै सहित रघुनन्दन शरभंग के बनहिं जाते भये जो वन सब सुख को देनहारा सदा रहत १ ॥

शरभंगस्ततोदृष्टारामंसौमित्रिणासह ॥ आयातंसीतयासार्द्धसंभ्रमादुत्थितःसु
धीः २ अभिगम्यसुसम्पूज्यविष्टरेषूपवेशयत् ॥ आतिथ्यमकरोत्तेषांकन्दमूल
फलादिभिः ३ प्रीत्याहशरभंगोऽपिरामंभक्तपरायणम् ॥ बहुकालमिहैवासंतप
सेकृतनिश्चयः ४ तवसंदर्शनाकांक्षीरामत्वंपरमेश्वरः ॥ अद्यमत्तपसासिद्धयत्पु
ण्यंबहुविद्यते ॥ तत्सर्वतवदास्यामिततोमुक्तिंब्रजाम्यहम् ५ समर्प्यरामस्यम
हत्सुपुण्यं फलंविरक्तःशरभंगयोगी ॥ चित्समारोहयदप्रमेयं रामंससीतंसह
साप्रणम्य ६ ॥

(सौमित्रिणासह सीतया सार्द्धं रामंआयातं दृष्ट्वा ततःसुधीःशरभंगः संभ्रमादुत्थितः) लक्ष्मण जानकी करिकै सहित रघुनन्दन जोहैं तिनहिं आवतदेखि तव सुबुद्धी शरभंग शीघ्रताते उठे आगे

आय मिले २ (अभिगम्य विष्टरेषु उपवेशयत् सम्पूज्य कन्दमूलफलादिभिः तेषां आतिथ्यंभकरोत्) सन्मुखजाय मिलि आदर सहित आश्रममें आनि आसनके ऊपर बैठारि सुन्दरी प्रकार पोड़शोप-चार पूजनकरि कन्दमूल फलादिकन करिकै तिनकी आतिथ्य किये, भाव तीनिहूँ जनेनको भोजन कराये ३ (भक्तपरायणरामंशरभंगःअपि प्रत्या आह बहुकालं इहैवतपसे निश्चयःकृतवासं) भक्तन को निरन्तर सेवन सुमिरण अर्चन वन्दनादि करिवे योग्य जो श्री रघुनाथ जी तिनप्रति शरभंग निश्चय प्रीति करिकै बोले कि बहुतकाल भये इसी आश्रम में तपस्या करतसंते यह निश्चयकरि वास किया ४ (तवसंदर्शनाकांक्षी रामत्वं परमेश्वरः मत् तपसा अद्य सिद्धं बहु पुण्यं यत् विद्यते तत् सर्वं तव दास्यामि ततः अहं मुक्तिं ब्रजामि) क्यानिश्चय किहेरहौं हे रघुनन्दन आपके दर्शन की कांक्षाकिहे इहां वासं करतारहौं हे रघुनाथजी आप परमेश्वरहौं आपके दर्शन पायेते आज मेरा तप सिद्धभया अरु बहुत मेरी पुण्य जो प्रसिद्धहै सो सब आपको दैकै मुक्तिको प्राप्त होताहौं ५ (म-हत्पुण्यं रामस्य समर्प्य फलं विरक्तः शरभंगयोगी ससीतं अप्रमेयरामं प्रणम्य सहसाचित्तिसं आरोह यत्) बड़ी भारी जो पुण्य रही ताहि रघुनाथ जीको समर्प्य दैकै पुण्यके फलसों विरक्त कांक्षारहित शरभंग योगी अर्थात् अन्तरवृत्ति परमेश्वर में मिलाय बाह्य भावते सहित सीता जो प्रमाण रहित श्रीरघुनाथजी तिनहि प्रणाम करि शीघ्रही चित्ताके ऊपर बैठजाते भये ६ ॥

ध्यायच्चिरंराममशेषहृत्स्थंदूर्वादलश्यामलमम्बुजाक्षम् ॥ चीराम्बरंस्निग्धजटा कलापंसीतासहायंसहलक्ष्मणंतम् ७ कोवादयालुस्मृतिकामधेनुरन्योजगत्यांर घुनायकादहो ॥ स्मृतोमयानित्यमनन्यभाजाज्ञात्वास्मृतिमेस्वयमेवयातः ८ प श्यत्विदानींदिवेशोरामोदाशरथिःप्रभुः ॥ दग्ध्वास्वदेहंगच्छामिब्रह्मलोकमक लमषः ९ अयोध्याऽधिपतिर्मेऽस्तुहृदयेराघवस्सदा ॥ यद्वामांकेस्थितासीतामे घस्येवतडिल्लता १० इतिरामंचिरंध्यात्वाट्टट्टाचपुरतःस्थितम् ॥ प्रज्वाल्यसह सावह्निन्दग्ध्वापञ्चात्मकम्बपुः ११ ॥

(अशेष हृत्स्थं अम्बुज अक्षं दूर्वादलश्यामलं चीर अम्बरं स्निग्ध जटाकलापं सहलक्ष्मणं सीता सह अयं रामं तंचिरं ध्यायन्) जो अन्तर्यामी रूपते सबके हृदय में वास किहे हैं सोई लोकोद्धार हेत कृपारस भरे कमलवत् नयन भाव कृपाट्टि लोकमें अवतीर्ण भये तेकैसेहैं दूबके दलसमश्या-मल भंगहैं जिनको तनमें बल्कलादि मुनिनके ऐसे बसन धारण किहे अरु कोमल जटासमूह शीश में शोभित सहित लक्ष्मण सीतासहित इनहीं राम जो आगेखड़ेहैं तिनहिं बहुतबार तक ध्यानकिहे रहे पुनः शरभंग बोले ७ (अहो जगत्यां स्मृति कामधेनुः रघुनायकात् अन्यः कोवादयालुः अनन्य भाजा मया नित्यंस्मृतः मेस्मृतिज्ञात्वा स्वयमेवयातः) शरभंग बोले कि आश्चर्य मय प्रशंसाकरने की बातहै देखिये पृथ्वीके बिपे स्मरण करतसंते कामधेनु तुल्य सब फल दायक एक रघुनाथ जी सेवाय और ऐसा को दयालु है काहेते अनन्यभाव करिके मैने नित्यही स्मरण किया सो मेरा जानि प्रभु आपही निश्चयकरि आय दर्शन दीन्हें ८ (देवेशः प्रभुः८दाशरथिः रामः पश्यतु स्मरण इदानीं स्वदेहं दग्ध्वा अकलमपः ब्रह्मलोकं गच्छामि) देवन के ईश सबके स्वामी दशरथपुत्र श्री-राम देखें इसी समयमें आपनी देह भस्मकरि पापरहितहैं ब्रह्मलोकहि जाताहौं ९ (अयोध्याऽधि पतिः राघवः मे हृदये सदा अस्तु यत् वामांके सीता स्थिता, मेघस्य तडित लताइव) अयोध्या के

महाराज रघुवंशनाथ मेरे हृदयमें सदा वास करें जिनके वाम अंक में सीता शोभित हैं कौन भाँति जैसे मेघके समीप विजुली विराजत १० (इति रामं चिरं ध्यात्वाच पुरतः स्थितम् दृष्ट्वा वर्तिप्रज्वाल्य पञ्चात्मकं वपुः सहसादग्ध्वा) इसप्रकार रघुनन्दन जो हैं तिनहि बहुतवार तक ध्यानकरि पुनः आगे स्थित देखि अग्नि प्रज्वलितकै पंच भौतिक तन शङ्खिही भस्म करिदिये ११ ॥

दिव्यदेहधरः साक्षाद्यौ लोकपतेः पदं ॥ ततो मुनिगणाः सर्वे दण्डकारण्यवासिनः ॥

आजगमूराघवंद्रपुंशरभंगानिवेशनम् १२ दृष्ट्वा मुनिसमूहं तं जानकीरामलक्ष्मणाः ॥

प्रणमः सहसामूमौ मायामानुषरूपिणः १३ आशीर्भिरभिनन्द्याथ रामं सर्वहृदि स्थि

तम् ॥ ऊचुः प्राञ्जलयः सर्वे धनुर्वाणधरं हरिम् १४ भूमेर्भारावताराय जातो सि ब्रह्म

णाऽर्थितः ॥ जानीमस्त्वां हरिं लक्ष्मीं जानकीं लक्ष्मणं तथा १५ शेषांशं शङ्खचक्रे द्वे

भरतं सानुजं तथा ॥ अतश्चादौ ऋषीणां त्वंदुःखं भोक्तुमिहार्हसि १६ ॥

(दिव्यदेहधरः साक्षात् लोकपतेः पदं यौततः दण्डकारण्यवासिनः मुनिगणाः सर्वे राघवंद्रपुंशरभंग निवेशनम् आजगमू) दिव्य देह धरि शरभंग साक्षात् लोकपति ब्रह्मा तिनको पद सत्यलोक ताको जाते भये तब दण्डक वन के वासी मुनि समूह सब रघुनन्दन जो हैं तिनहि देखने हेत शरभंग के आश्रमहि आवते भये १२ (मायामानुषरूपिणः जानकी राम लक्ष्मणाः मुनिसमूहं दृष्ट्वा तं सहसामूमौ प्रणमः) दिव्य माया करि मानुष रूप धारण किहे जानकी रघुनन्दन लक्ष्मण ते सब मुनिन को वृंद आवत देखि तिनहि शीघ्रही भूमि में गिरि प्रणाम कीन्हें १३ (आशीर्भिः अभिनन्द्य अथ सर्वहृदि स्थितम् हरिं धनुर्वाणधरं रामं सर्वप्राञ्जलयः ऊचुः माधुर्य में राजकुमार रूपते प्रणाम करते देखि आशीर्वादन करिकै आनंद है तब जो अन्तर्यामी रूप ते सब के उर में वास किहे ऐसे हरि लोकोद्धार हेत राजकुमार भये इति ऐश्वर्य विचारि तब धनुष वाण धारण किहे जो श्री रघुनाथ जी हैं तिन प्रति सब ऋषिलोग हाथ जोरि बोलते भये १४ (ब्रह्मणा अर्थितः भूमेः भारावताराय जातः अस्तित्वां हरिं जानीमः जानकी लक्ष्मीं तथा लक्ष्मणं) ऋषि लोग बोले हे श्री रघुनाथ जी सुर नर नागादि सबको दुखित देखि तब ब्रह्मा ने आप ते प्रार्थना किया ताते भूमि को भार उतारिबे हेत अवतीर्ण भयो आप साक्षात् हरि परमात्मा हौ यह हम जानते हैं अरु जानकी लक्ष्मी हैं तैसे ही लक्ष्मण १५ (शेषांशं तथा शंखचक्रे द्वे सानुजं भरतं अतः च आदौ इह ऋषीणां दुःखं भोक्तुं त्वं अर्हसि) शेष को अंश लक्ष्मण हैं तैसे शंख चक्र दोऊ सहित अनुज भरत अर्थात् शंख भरत हैं चक्र शत्रुहन हैं भू भार उतारने आयो हैं इस कारण प्रथम इहां ऋषिन को जो दुःख है ताहि भोग करिबे योग्य हौ भाव भ्रम करि खरादिकों को बध करौ १६ ॥

आगच्छयामो मुनिसेवितानि ब्रनानि सर्वाणि रघूत्तमक्रमात् ॥ द्रष्टुं सुमित्रा सुतजान

कीभ्यां तदा दयास्मा सुदृढा भविष्यति १७ इति विज्ञापितो रामः कृताञ्जलिपुटैर्विभुः ॥

जगाम मुनिभिः सार्द्धं द्रष्टुं मुनिव्रनानि सः १८ ददर्श तत्र पतितान्यनेकानि शिरांसि

सः ॥ अस्थिभूतानि सर्वत्र रामो वचनमब्रवीत् १९ अस्थीनिकेषामेतानि किमर्थं प

तितानि वै ॥ तस्मै चूर्मुनयो राम ऋषीणां भस्तकानि हि २० राक्षसैर्भक्षितानीशप्रभक्ता

नां समाधिनः ॥ अन्तरायं मुनीनां ते पश्यन्तोऽनुचरन्ति हि २१ ॥

(रघूत्तमसुमित्रासुतजानकीभ्यांआगच्छयामःमुनिसेवितानिबनानिसर्वाणिक्रमात् द्रष्टुंदाभस्मासु दृढादयाभविष्यति) ऋषि लोग बोले हे रघुवंश शिरोमणि सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण जानकी करिके सहित आप हमारे साथ आवो मुनिन करिके सेवित भाव जहां जहां मुनि लोग वास किहे रहे हैं सो वन सब क्रम ते भाव एक एक आश्रम हम देखावेंगे तब हम लोगन पर आप को सुंदर पुष्ट दया होयगी भाव ऋषिन को राक्षस खाय लीन्हें हैं तिनके अस्थि देखि दया आवैगी १७ (इतिरुतांजलि. विज्ञापितः विभु.रामः मुनिवनानिस. द्रष्टुंमुनिभिःसार्द्धजगाम) इस प्रकार हाथ जोरि जब ऋषिलोगन प्रार्थना किया तब समर्थ श्री रघुनाथ जी मुनि सेवित जो वन सो देखने हेत मुनिन करिके सहित चलतेभये १८ (तत्रअस्थिभूतानि अनेकानि शिरांसिसर्वत्रपतितानिसः ददर्शरामः बचनंअब्रवीत्) तहां वन में हाड़ पुराने अनेक मनुष्यों की खोपड़ी सूखी सब ठौर पड़ी हैं सो देखि रघुनन्दन ऋषिन प्रति वचन बोले १९ (एतानिअस्थिनिकेपावैर्किंअर्थपतितानितं मुनयःऊचुःरामःऋषीणामस्तकानिहि) रघुनाथ जी पूछे कि समूह परे हुये ये हाड़ किनके हैं निश्चय करि किसप्रयोजन अर्थ परे हैं तिन प्रति मुनि लोग बोले कि हे श्री रघुनाथ जी ये ऋषिन की खोपड़ी हैं आप के देखने हेत निश्चय करि परी हैं इति भाव २० (ईगसमाधितःअंतरायंपश्यंत. अनुचरंतिहितेराक्षसैः प्रमत्तानामुनानांभक्षितानि) परमेश्वरकी समाधि ते अनर परिजाना ताहि देखत विचरते हुये राक्षसों ने विषयासक्त मुनि को खाय लिया भाव परमार्थ साधन में अंतर परना ढूँढतेहुये राक्षस घूमा करते हैं तेई जिन मुनिनको विषय में मत्त देखे तिनको खाइ लिये २१ ॥

श्रुत्वावाक्यंमुनीनांसभयदेन्यसमन्वितम् ॥ प्रतिज्ञामकरोद्रामोब्रधायशेषरक्षसाम् ॥ २२ पूज्यमानःसदातत्रमुनिभिर्वनवासिभिः ॥ जानक्यासहितोरामोलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ २३ उवासकतिचित्तत्रवर्षाणिरघुनन्दनः ॥ एवंक्रमेणसंपश्यन्ऋषीणामाश्रमान्विभुः ॥ २४ सुतीक्ष्णस्याश्रमंप्रागात्प्रख्यातमृषिसंकुलम् ॥ सर्वतुंगुणसम्पन्नंसर्वकालसुखावहं ॥ २५ राममागतमाकर्ण्यसुतीक्ष्णःस्वयमागतः ॥ अगस्तिशिष्योरामरयमंत्रोपासनतत्परः ॥ विधिवत्पूजयामासभक्त्युत्कण्ठितलोचनः ॥ २६ ॥

सभयदेन्यसमन्वितम्मुनीनांवाक्यंसंश्रुत्वारामः (अशेषरक्षसाम्ब्रधायप्रतिज्ञां अकरोत्) राक्षसों के खायजाने की भयमानिदीनद्वे प्रार्थना कीन्हें इतिसभय दीनतायुत मुनिन की वाक्य ताहि मुनि के रघुनाथ जी सम्पूर्ण राक्षसों के मारने हेतप्रतिज्ञा कीन्हें भाव भूतल राक्षसहीन करिदेंउगो २२ (लक्ष्मणेनसमन्वितःजानक्यासहितःरामःतत्रवनवासिभिःमुनिभिःसदापूज्यमान.) लक्ष्मणकरिके युक्त जानकी सहित रघुनाथजी तहां वनवासी मुनिन करिके सदापूज्यमानभये भावआपने आश्रम मेंले जायपोड़शो पचारपूजनकरि मूल फलादे भोजन करावते हैं इसीप्रकार सबमुनिलोग करते रहे २३ (एवंक्रमेणऋषीणांआश्रमान् संपश्यन्विभुःरघुनन्दनः कतिचित्त्रर्षाणितत्रउवास) एकएक दिन सबके रहं इसीक्रमकरिके ऋषिनके यावत् आश्रम दण्डक वनमें रहेतिनहिं देखतसंते समर्थ रघुनन्दन कई वर्षतकतिसी वनमें वासकीन्हें २४ (सर्वकालसुखावहमसर्वऋतुगुणसंपन्नऋषिसंकुलम् प्रख्यातंसुतीक्ष्णस्याश्रममप्रागात्) जहाँवर्षाजाड़ आतपादि सबकालमें सुखदायक अरुग्रीवम यावल शर्क हेमंत शिशिर वसंतादि सबऋतुन में गुणनकरिके परिपूर्ण जहाँ ऋषिलोग बहुत वास

किहेहैं लोकमें प्रतिद्व ऐसा जो सुतीक्ष्ण मुनि को आश्रम तहाँ रघुनंदनजाते भये २५ (अगस्ति शिष्यः रामस्य मंत्र उपासनतत्परः सुतीक्ष्णः रामं भागतं आकर्ष्य स्वयं आगतः भक्ति उत्कण्ठितलोचनः विधिवत् पूजयामास) अगस्तिमुनि को शिष्य रघुनाथ जीके मंत्र उपासनामें निचलगा रहने वाला सुतीक्ष्ण है नामजाको सो रघुनाथजीको भावनसुनि आपही आगेआय आपने आश्रमको लवाय लयगया तहाँ भक्तिकरि कै दर्शनके प्यासेहैं नेत्रजाके ऐसे सुतीक्ष्णा विधितमेतर धुनंदनको पूजन किया २६ ॥

सुतीक्ष्ण उवाच ॥ त्वन्मंत्रजाप्यहमनंतगुणाप्रमेयसीतापतेशिवविरंचिसमाश्रितं ॥ संसारसिंधुतरणामलपोतपादरामाभिरामसततंतवदासदासः २७ नमोऽद्य सर्वजगतामविगोचरस्त्वं त्वन्मायया सुतकलत्रगृहं धूपे ॥ मग्नं निरीक्ष्य मलमुद्रलपिण्डमोहपाशानुबद्धहृदयः स्वयमागतोऽसि २८ त्वंसर्वभूतहृदयेषु कृतालयोऽपित्वन्मंत्रजाप्यविमुखेषु तनोषि मायाम् ॥ त्वन्मंत्रसाधनपरेष्वपयाति माया सेवा नुरूपफलदोऽसि यथामहीपः २९ ॥

(सीतापते अप्रमेय अनंतगुण शिव विरंचि समाश्रित अंग्रेज संसार सिंधु तरण अनलपोतपाद अभिराम राम त्वत् मंत्रजापी अहं सततंतवदासदासः) सुतीक्ष्ण बोले हे सीतापते संख्यातौलादि प्रमाण रहित इतिहे अप्रमेय जाके दिव्य गुणन को अंत कोऊ नहीं पावत इतिहे अनंतगुण शिव ब्रह्मादिकों करि कै सेवित चरणजाके संसार रूपसमुद्र उतरने हेत अमल नावसम चरणजाके अभिराम सबको आनंद दायक परम सुंदर हे रघुनाथ जी आपके मंत्रको जाप करने वाला मैं सदा आपके दासों को दास हों २७ (मलमुद्रल पिण्डमोहपाशानुबद्ध हृदयत्वत् मायया सुत कलत्र गृह अंध कूपे मग्नं मम निरीक्ष्य त्वं सर्व जगतां अविगोचरः अद्य स्वयं आगतः असि) सुतीक्ष्ण बोले हे रघुनाथजी मैं कैसा हों कि रजबीजादि मलको मोगदरसरखि पिण्डभावकाठ कै सोकुंदा जो जड़ शरीर है सो मोहरूपपाशमें बैधा हृदय आपकी माया करिकै पुत्रत्नी आदि जल अगाध है जामें ऐसा गृहरूप जो अंधकूप है तामें बूझता हुवा मोको देखि आपके दयाआई काहेते यद्यपि आप अगत्जन जोहैं तिनहिं अविगोचर भाव किसीकी दृष्टि में नहीं आवतेहों सोऊ दया करि आज आपही आय मोहिं दर्शन दीन्हे २८ (सर्व भूतहृदयेषु त्वं आलयः कृत अपित्वत् मंत्रजाप्य विमुखेषु मायास्तनोपि त्वत् मंत्रसाधनपरेषु माया अपयाति सेवा अनुरूप फलदः असि यथा महीपः) सुतीक्ष्ण कहत हे रघुनंदन सब भूत जीव मात्र के हृदय बिषे आप मंदिर किहे अंतरायामी रूपते निश्चय करि बात किहेहों तौभी जे आपके मंत्र जापते विमुख हैं तिनके उर में माया को विस्तार करतेहों ताते विषयासक्त हैं अनेक कर्म करि दुख भोगते हैं पुनः जे आपके मंत्र साधन में लगे हैं तिनमें माया नहीं व्यापती है तिनको सेवा अनुरूप जैसी सेवा करतेहैं तैसा फल देतेहों जैते लोक में राजालोग सेवकन को काम देखि न उकरी घटाते बढ़ाते हैं २९ ॥

विश्वस्य सृष्टिलयसंस्थितिहेतुरेकस्त्वं मायया त्रिगुणया विधिरीशविष्णु ॥ भासीश मोहितधियां विविधाकृतिस्त्वं यद्वद्विःसलिलपात्रगतो ह्यनेकः ३० प्रत्यक्षतोऽद्य भवतश्चरणारविंदं पश्यामिरामतमसः परतः स्थितस्य ॥ दृष्ट्वूपतस्त्वमसताम विगोचरोऽपित्वन्मंत्रपूतहृदयेषु सदा प्रसन्नः ३१ पश्यामिरामतवरूपमरूपणोऽपि

मायाविडम्बनकृतंसुमनुष्यवेषम् ॥ कंदर्पकोटिसुभगंकमनीयचापवाणंदयाद्रह
दयंस्मितचारुवक्त्रम् ३२ ॥

(विडम्बनस्यसृष्टिसंस्थितिलयहेतुः एकः त्वं ईश त्रिगुणयामाययामोहितवियांविधिः ईशविष्णुत्वंवि
विश्वभ्रूतिः भासिषद्वत्सालिलपात्रगतः हिरविः अनेकः) हे रघुनाथजी संसार की उत्पत्ति पालन
प्रलयइत्यादिके कारणएक आपही परमेश्वरहो अरुआपकी त्रिगुणात्ममाया करिके मोहित है बुद्धि
जिनकी तिनहिं ब्रह्माशिव विष्णु इत्यादि आपअनेक रूपकरिके न्यारे न्यारे प्रकाशित होतेहो कौन
भांति जैसे जल भरे पात्रन में प्राप्त भये ते निश्चय करिके एकही सूर्य अनेक रूप देखि परते हैं इसी
भांति एक आप माया में प्रभा परि अनेक रूप देखाते हो ३० (रामतमसः परतः स्थितस्यभवतः
चरणारविदभ्यप्रत्यक्षतः पश्याभिन्नसतांअविगोचरः अपित्वत्तमंत्रपूतहृदयेपुसदाप्रसन्नः त्वंहृदयपतः)
हे रघुनाथ जी कारणमायाते परेजो आपहो तिनके चरण कमल आजु प्रत्यक्ष में देखताहो अरुअसत
पुरुषोंको अगोचर भाव नहीं देखिपरतेहो अरुआपको मंत्रजापकरिके पवित्र भयाहै हृदय जिनको
तिन जननपै सदा प्रसन्न है आपउनके नेत्रन की विषय होतेहैं देखिपरतेहो ३१ (रामअरूपिणः अपि
दया आर्द्रहृदयंमायाविडम्बनकृतंसुमनुष्यवेषंकंदर्पकोटिसुभगंस्मितचारुवक्त्रंकमनीयचापवाणंतवरूपं
पश्यामि) हे रघुनन्दन यद्यपि आप रूप रहित हो तौ भी दया रस करिके भीजा हुवा हृदय माया
विडम्बनकृतं भाव लोक जननको दुःखित देखि उर में दया आई ताते लोकोद्धार हेत मायामय तन
धरि आपना उपहास अंगीकार करि सुन्दर मनुष्य को ऐसो भेष किहेउ जामें कामदेव ते करोरिन
गुण अधिक शोभा है मन्द मुसुकानि युत सुन्दर मुख हाथों में सुन्दर धनुषबाण शोभित ऐसा जो
आप को रूप ताहि में प्रत्यक्ष देखता हो ३२ ॥

सीतासमेतमजिनावरमप्रधृष्यंसौमित्रिणानियतसेवितपादपद्मम् ॥ नीलोत्पल
द्युतिमनंतगुणंप्रशांतमद्भागधेयमनिशंप्रणमामिरामं ३३ जानन्तुरामतवरूपम
शेषदेशकालाद्युपाधिरहितंघनचित्प्रकाशम् ॥ प्रत्यक्षतोऽद्यममगोचरमेतदेवरूपं
विभातुहृदयेनपरंविकांक्षे ३४ इत्येवंस्तुवतस्तस्यरामः सस्मितमब्रवीत् ॥ मुने
जानामितेचित्तंनिर्मलमदुपासनात् ३५ अतोऽहमागतोद्रष्टुमदृतेनान्यसाधनम् ॥
मन्मन्त्रोपासकालोकेमामेवशरणंगताः ३६ ॥

(मत्तुभागधेयंरामंअनिशंप्रणमामि) कथंभूतं (नीलउत्पलद्युतिंअजिनअम्बरंअप्रधृष्यंअनंतगुणं
प्रशांतं सीतासमेतंसौमित्रिणा नियतसेवितपादपद्मम्) सुतीक्ष्ण कहत कि मेरी अहोभाग उदितरूप
जो श्रीराम हैं तिनहिं दिनो राति में प्रणाम करता हो कैसे हैं राम नील कमल सम तनमें है दीप्ति
जिनके मृग चर्मादि बसन धारण किहे जिनको अनादर कोऊ करैया नहीं रुपा दया सौलभ्य उदा-
स्तादि परम कल्याण गुणन को अन्त नहींहै जिनके प्रकर्षकरि सतोगुणी वृत्ति जिनकी सीता समेत
विराजमान लक्ष्मण करिके नियम सहित सेवन किये जाते हैं पद कमल जिनके ३३ (रामअशेष
देशकालादि उपाधिरहितं चित्घनप्रकाशं तवरूपं जानन्तु अद्यप्रत्यक्षतः ममगोचरं एतत् एवरूपं हृदये
विभातु परंविकांक्षेन) हे रघुनाथजी सम्पूर्ण देश में परिपूर्ण सब काल में एक रस उपाधि रहित
सदा चैतन्य समूह प्रकाशमय ऐसा जो अगुण आप को रूप ताहि जो ध्यावते हैं ते जानै अरु मोकों

तौ जो आजु प्रत्यक्ष मेरे नेत्रन की विषय आगे खड़े हौ यही निश्चय करि राज कुमार रूपह ताहि हृदय में बास चाहता हौ अपर रूप की बिशेषि कांक्षा नहीं है ३४ (इति एवंतरयस्तुवतः सस्मितं रामा ब्रवीत् मुनेमत् उपासनात् ते चिन्तनं निर्मलं जानामि) इस प्रकार तेहि सुतीक्ष्ण के स्तुति करने ते प्रसन्न हैं मुसुकाय कै रघुनाथ जी बोले कि हे मुने मेरी उपासना करने ते तुम्हारा चित्त अमल है तारि मैं जानता हौ ३५ (मत्कृते अन्यसाधनं न भवतः अहं द्रष्टुं आगतः लोके मत्संभ्रम उपासकामां एव शरणं गताः) सुतीक्ष्ण प्रति प्रभु बोले कि मेरी भक्ति बिना तुम्हारे अन्य साधन नहीं है इसी ते मैं तुमहि देखने आया हौ क्योंकि लोक में जे मेरे मंत्र के उपासक हैं ते मेरी निश्चय करि शरणागत रहते हैं ३६ ॥

निरपेक्षानान्यगतास्तेषां दृश्योऽहमन्वहम् ॥ स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तु त्वत्कृतं मत्प्रियं सदा ३७ सद्भक्तिर्मे भवेत्तस्य ज्ञानं च विमलं भवेत् ॥ त्वं ममोपासनादेव विमुक्तोऽसौ ह सर्वतः ३८ देहांते मम सायुज्यं लप्स्यसे नात्र संशयः ॥ गुरुं ते द्रष्टुमिच्छामि ह्यगस्त्यं मुनिनायकम् ॥ किंचित्कालं तत्र वस्तुं मनो भवेत्वरयत्यलम् ३९ सुतीक्ष्णोऽपि तथेत्याह श्रवोगमिष्यसि राघव ॥ अहमप्यागमिष्यामि चिराद् दृष्टुमहामुनिः ४० अथ प्रभाते मुनिना समेतो रामः ससीतः सह लक्ष्मणेन ॥ अगस्त्यसंभाषणलोलमानसः शनैरगस्त्यानुजमं दिरं ययौ ४१ इति श्रीमदध्यात्मरामायणे आरण्यकाण्डे द्वितीयः सर्गः २ ॥

(निरपेक्षा अन्यगताः न तेषां अन्वहं दृश्यः अहं तु त्वत् कृतं एतत् स्तोत्रं सदा मत् प्रियं यः पठेत्) नहीं है कछु इच्छा जिनके सेवाय मेरी और गति नहीं है जिनके तिनके साथ रहि तिनहीं को देखि परता हौ मैं पुनः हे सुतीक्ष्ण तुम्हारा किया हुआ यह जो स्तोत्र है ताहि जो सदा मोको प्रिय ऐसो जो जन पाठ करेगा ३७ (तस्य विमलं ज्ञानं भवेत् च मे सत् भक्तिः भवेत् त्वं मम उपासनात् इह सर्वतः एव विमुक्तः असि) यह स्तोत्र जो पढ़ेगा ताके विमल ज्ञान उत्पन्न होई पुनः मेरी उत्तम भक्ति होगी पुनः हे मुने तुम तो मेरी उपासना ते इसी देह में सब बंधनों ते निश्चय करिके छूटि जाउगे ३८ (देहांते मम सायुज्यं लप्स्यसे नात्र संशयः न मुनिनायकम् ते गुरुं हि अगस्त्यम् द्रष्टुं इच्छामि तत्र किंचित्कालं वस्तुं मे मनः त्वरयति अलम्) देह के अंत भये पर मेरी सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होउगे यामें संशय नहीं है अब मुनिन में श्रेष्ठ तुम्हारे गुरु निश्चय करि अगस्त्य जो हैं तिनहि देखने की मोको इच्छा है तहां कछु काल बास करिबे की इच्छा है तहां जावे हेत मेरे मनमें संभ्रमता परिपूर्ण है ३९ (तथा सुतीक्ष्णः अपि इति आह राघव इवः गमिष्यसि अहं अपि आगमिष्यामि चिरमहामुनिः अदृष्टः) जैसे रघुनाथ जी जाने को कहै तैसे सुतीक्ष्ण यह कहै कि हे राघव कालि प्रात ही चलो हमहूँ निश्चय करिके साथ ही चलेंगे क्योंकि बहुत काल ते महामुनि को नहीं देख्यो आपको साथ लै दर्शन करिहौं ४० (अथ प्रभाते रामः अगस्त्य संभाषणलोलमानसः ससीतः लक्ष्मणेन सह मुनिना समेतः शनैः अगस्त्य अनुजमं दिरं ययौ) अब प्रात ही रघुनन्दन अगस्त्य सों बार्त्ता करने हेत उत्कंठित चित्त है जिनको ताते सहित जानकी लक्ष्मण करिके सहित सुतीक्ष्ण समेत प्रभु अगस्त्य के छोटे भाई अग्नि जिह्वा ऋषि तिनके मंदिरहि प्रथम जाते भये ४१ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागत बैजनाथ

विरचिते अध्यात्मभूषणे आरण्यकाण्डे द्वितीयः प्रकाशः २ ॥

अथरामःसुतीक्ष्णेनजानक्यालक्ष्मणेनच ॥ अगस्त्यस्यानुजस्थानंमध्याह्नेसमप
द्यत १ तेनसंपूजितःसम्यक्भुक्तामूलफलादिकं ॥ परेद्युःप्रातरुत्थायजग्मुस्तेऽ
गस्त्यमण्डलं २ सर्वतुफूलपुष्पाद्यनानामृगगणैर्युतम् ॥ पक्षिसद्यैश्चविविधैर्ना
दितनन्दनोपमम् ३ ब्रह्मर्षिभिर्देवर्षिभिःसेवितंमुनिमंदिरैः ॥ सर्वतोऽलंकृतंसाक्षा
द्ब्रह्मलोकमिवापरम् ४ वहिरेवाश्रमस्याथस्थित्वारामोब्रवीन्मुनिम् ॥ सुतीक्ष्णग
च्छ्रत्वंशीघ्रमागतंमांनिवेदय ॥ अगस्त्यमुनिवर्यायसीतयालक्ष्मणेनच ५ ॥

सवैया ॥ घटजानुज भेंटिबसे निशिमें उठि प्रातगये सुमहामुनि धामहिं । सहसा उठि आय
अगस्त्य मिले विधिपूजे सुभासन दै अभिरामहिं ॥ बहुभाँति बिनय करि आनिदिये धनुखड्ग सुतूण
अछैशरजामहिं । कृत बंदन बैजसुनाथ सदा करुणाकर श्रीसियसानुजरामहिं ॥ (अथजानक्या
लक्ष्मणेन च सुतीक्ष्णेन राम. मध्याह्ने अगस्त्यस्य अनुजस्थानं समपद्यत) शिवजी बोले हेगिरिजा
अब जानकी लक्ष्मण करिकै सहित पुनः सुतीक्ष्ण सहित चलते हुये रघुनाथ जी दुपहरके समयमें
जो अगस्त्यके क्षोटे भाई अग्निजिह्व ऋषि तिनके आश्रममें जाय प्राप्तभये १ (तेन सम्यक् संपू-
जितः मूल फलादिकं भुक्त्वा परेद्युः प्रातः उत्थायते अगस्त्य मंडलं जग्मुः) तिनऋषि करिकै साँचे
भावते संपूर्ण प्रकार पूजे गये मूल फलादि भोजन करि राति भरि रहे दूसरे दिन प्रातभये उठि
रघुनन्दन जानकी लक्ष्मण सुतीक्ष्ण इत्यादिते सब अगस्त्य के आश्रमके बाह्य सीवों के भीतर जाते
भये २ (फलपुष्पैः आढ्यं सर्वतु नानामृगगणैः युतम् च पक्षिसद्यैः विविधैः नादितम्वन्दनः उपम्) फलफूलन
करिकै शोभित सबठौर बनहै अनेक प्रकारके मृगकुंडन करिकै युतहै पुनः पक्षीसमूह अनेक बोली
बोलि रहेहैं इत्यादि यथानंदन बनहै मुनिको आश्रम ३ (ब्रह्मऋषिभिः देवऋषिभिः सेवितं सर्वतः
मुनिमंदिरैः अलंकृतं साक्षात् अपरं ब्रह्मलोकं इव) ब्राह्मणोंमें स्वधर्मव्रतीदेवतों में ऋषिधर्म व्रतीतिनकरि
कै सेवित चारिहुदिशि सबठौर मुनिन के मंदिरन करिकै भूपित कैसा शोभित यथा साक्षात् दूसरा
ब्रह्मलोकही है ४ (अथआश्रमस्यबाहिः एवस्थित्वारामः मुनिम् अब्रवीत्सुतीक्ष्णत्वंशीघ्रगच्छलक्ष्मणेन
चसीतयामांआगतंअगस्त्य मुनिवर्यायनिवेदय) अबआश्रमके बाहेर निश्चय करिठाढ़हवै रघुनन्दन
मुनिप्रतिबोले कि हे सुतीक्ष्णआश्रमके भीतरतुम शीघ्रही जाउ लक्ष्मण सीता सहित मेरा आवन
अगस्त्यमुनिवरके अर्थ निवेदनकरौ भावलक्ष्मण सीता सहित रामआपके दर्शनहेतु द्वारपरखड़ेहैं ५ ॥

महाप्रसादइत्युक्त्वासुतीक्ष्णःप्रययौगुरोः ॥ आश्रमंत्वरयातत्रऋषिसंघसमावृत
म् ६ उपविष्टंरामभक्तैर्विशेषेणसमायुतम् ॥ व्याख्यातराममंत्रार्थशिष्येभ्यश्चा
तिभक्तितः ७ दृष्ट्वागस्त्यंमुनिश्रेष्ठंसुतीक्ष्णःप्रययौमुने ॥ दण्डवत्प्रणिपत्याहवि
नयावनतःसुधीः ८ रामोदाशरथिर्ब्रह्मन्सीतयालक्ष्मणेनच ॥ आगतोदर्शनार्थं
तेबहिस्तिष्ठतिसांजलिः ९ ॥ अगस्त्यउवाच ॥ शीघ्रमानयभद्रंतैरामममहदि
स्थितम् ॥ तमेवध्यायमानोहंकाक्षमाणोऽत्रसंस्थितः १० इत्युक्त्वास्वयमुत्था
यमुनिभिःसहितोद्भुतम् ॥ अभ्ययात्परयाभक्त्यागतवाराममथाब्रवीत् ११ ॥

(महाप्रसादइतिउक्त्वासुतीक्ष्णःगुरोः आश्रमंत्वरयाप्रययौ तत्रऋषिसंघसंआवृतम्) आप की

महा अनुग्रह है ऐसा कहि सुतीक्ष्ण गुरु को जो आश्रम है ताके भीतर शीघ्रही जातेभये तहां ऋषि समूह बैठे हैं और पास ६ (विशेषेणरामभक्तैः समायुतंउपविष्टंविशिष्येभ्यः अतिभक्तितःराममंत्रार्थव्याख्यात) विशेष करिकै ये राम भक्तहैं ऐसे ऋषिन करिकै सहितबैठे अगस्त्यऋषि पुनःशिष्यलोगनते अत्यन्त भक्तिते राम मंत्र के अर्थ की व्याख्या करि रहे हैं ७ (सुतीक्ष्णःप्रययौमुनिश्रेष्ठंअगस्त्यंमुने दृष्ट्वासुधीः दण्डवत्प्रणिपत्यविनयावनतःआह) सुतीक्ष्ण आश्रम में जाय तहां मुनिनमें श्रेष्ठ अगस्त्य मुनि को देखि बुद्धि सुंदरि है जिनकी ऐसे सुतीक्ष्ण दण्डप्रणाम करि नम्रता से प्रिय वचन बोले ८ (ब्रह्मन्सीतयालक्ष्मणेनचदाशरथिःरामः तेदर्शनार्थमागतः सांजलिःवहिःतिष्ठति) सुतीक्ष्ण बोले हे ब्रह्मन् सीता लक्ष्मण करिकै सहित दशरथनंदन राम आप के दर्शन हेत आये हैं हाथ जोड़े-वाहेर खड़े हैं ९ (भद्रंममहृदिस्थितम् रामंशीघ्रंआनयतं एवध्यायमानः अहंअत्रसंस्थितः) अगस्त्य बोले हे सुतीक्ष्ण तुम्हार कल्याण होय मेरे हृदय में सदा वास किहे हुये जो राम हैं तिनहिं शीघ्र ही लवाय लावो तिनहींको ध्यान करता हुवा प्राप्तीकी कांक्षाराखे मैं इहां स्थितहैं १० (इतिउक्त्वा स्वयंउत्थायमुनिभिः अभ्ययात् द्रुतंगत्वाअथपरयाभक्त्यारामं अब्रवीत्) रघुनन्दनहिं शीघ्रही लावो ऐसा कहि अगस्त्य आपही उठे मुनिन सहित चले शीघ्रही प्रभु समीप प्राप्त भये तब परामर्श करि कै भाव अनुराग सहित अगस्त्य रघुनन्दन प्रति बोले ११ ॥

आगच्छारामभद्रंतेदिष्ट्यातेऽद्यसमागतः ॥ प्रियातिथिर्ममप्राप्तोस्यद्यमेसफलं दिनम् १२ रामोऽपिमुनिमायान्तंदृष्ट्वाहर्षसमाकुलः ॥ सीतयालक्ष्मणेनापिदण्डवत्पतितोभुवि १३ द्रुतमुत्थाप्यमुनिराट् राममालिङ्ग्यभक्तितः ॥ तद्गात्रस्पर्शजाल्हादश्रवन्नेत्रजलाकुलः १४ गृहीत्वाकरमेकेनकरेणरघुनन्दनम् ॥ जगामस्वाश्रमं हृष्टोमनसामुनिपुंगवः १५ सुखोपविष्टंसंपूज्यपूजयाबहुविस्तरम् ॥ भोजयित्वाथ थान्यायंभोजैर्वन्यैरनेकधा १६ सुखोपविष्टमेकांतरामंशशिनिभाननम् ॥ कृतांजलिरुवाचेदमगस्त्योभगवानृषिः १७ ॥

(तेभद्रंरामआगच्छदिष्ट्याअद्यतेसमागमःममप्रियअतिथिःप्राप्तोसिअद्यमेदिनंसफलम्) अगस्त्य बोले कि आप को कल्याण होय हे रघुनन्दन आइये मेरी बड़ी भाग्य करिकै या समय में आप को समागम भया मेरे प्रिय पाहुन आप प्राप्त भयो आजु मेरा दिन सफल भया १२ (मुनिअपिआयां तंदृष्ट्वा रामः हर्षसंआकुलः सीतयालक्ष्मणेनअहिदण्डवद्भुविपतितः) मुनि जो अगस्त्य तिनहिं निश्चय करि आवते देखि रघुनन्दन आनन्द ते परिपूर्ण सीता लक्ष्मण करिकै सहित दण्ड की नाई भूमि में गिरि प्रणाम कीन्हें १३ (मुनिराट्मंहृतं उत्थाप्यभक्तितः आलिङ्ग्यतत्गात्रस्पर्शजाल्हादनेत्रश्रवत् जलाकुलः) मुनि राज अगस्त्य रघुनन्दन जो हैं तिनहिं शीघ्रही उठाय भक्ति ते हृदय में लगाय लिये तिन प्रभु के तन स्पर्श ते उत्पन्न जो प्रेमानन्द ताकी उमंग सो नेत्रन में बहिरहा है आंशु जल समूह १४ (मुनिपुंगवःएकेनकरेणरघुनन्दनम् करंगृहीत्वामनसाहृष्टः स्वआश्रमंजगाम) मुनिन में श्रेष्ठ अगस्त्य अपने एक हाथे करिकै रघुनन्दन को हाथ पकरि मन करिकै आनन्द हवै अपने आश्रमहिं लै गये १५ (सुखोपविष्टंबहुविस्तरम् पूजयासंपूज्यअनेकधावन्यै भोजैर्यथान्यायैः भोजयित्वा) सुख पूर्वक आसन पर बैठारि बहुत विस्तार पूर्वक पूजा की सामग्री जो गंध फूलादि करि

कै पोड़शोचार पूजि वन में भये मूल फलादि भोजनकी सामग्री करिकै जैसा उचित रहै ताही रीति भोजनकराये १६ (एकांतसुखोपविष्टं शशिभाननं रामं भगस्त्यः भगवान् ऋषिः कृतांजलि इदं उवाच) एकान्त में सुख पूर्वक बैठे चन्द्रमा सम प्रकाशमान मुख जिनको ऐसे जो रघुनन्दन तिन प्रति भगस्त्य भगवान् समर्थ ऋषि हाथ जोरि ऐसा वचन बोले १७ ॥

त्वदागमनमेवाहं प्रतीक्षन् समवस्थितः ॥ यदाक्षरिसमुद्रांते ब्रह्मणा प्रार्थितः पुरा भूमेभारपनुत्त्यर्थं रावणस्य वधाय च १८ तदादिदर्शनाकांक्षीतव रामतपश्चरन् ॥ वसामि मुनिभिः सार्द्धं त्वामेव परिचितयन् १९ सृष्टेः प्रागेक एवासीन् निर्विकल्पोऽनुपाधिकः ॥ त्वदाश्रया त्वद्विषयमाया तेशक्तिरुच्यते २० त्वामेव निर्गुणशक्तिरावृणोति यदा तदा ॥ अव्याकृतमिति प्राहुर्वेदांतपरिनिष्ठिताः २१ ॥

(त्वत् आगमनं प्रतीक्षन् एव अहं सं अवस्थितः पुरा रावणस्य वधाय च भूमेः भारापनुत्त्यर्थं यदाक्षरिसमुद्रांते ब्रह्मणा प्रार्थितः) भगस्त्य बोले हे रघुनन्दन आपके आगमन की प्रतीक्षा भाव दर्शनकी अभिलाष करता हुआ निश्चय करि मैं स्थित रहा जब पूर्वकालमें रावणके वधहेतु पुनः भूमि को भार उत्तारन हेतु जा समयमें ब्रह्माने आपसो प्रार्थना किया भावनर राजतन वरि रावणादि दुष्टोंको मारि भूभार दूरिकरौ १८ (तदादि रामतव दर्शनाकांक्षीत्वा एव परिचितयन् तपश्चरन् मुनिभिस्तार्द्धं वसामि) जब ब्रह्माकी प्रार्थना आपने अंगीकार किया तबते हे श्रीरघुनाथजी आपके दर्शनकी इच्छाते अंतरमें आपको चितवन देहते तपस्या करता हुआ बहुत मुनिन करिकै सहित इस आश्रम में वास करताहौ १९ (सृष्टेः प्रागेक एव उपाधिकः निर्विकल्पः एक एव आसीत् माया त्वत् आश्रया त्वत् विषया तेशक्तिः उच्यते) माधुर्यमें लोप परब्रह्मरूपकी ऐश्वर्य प्रसिद्ध करि समाजको बोध कराने हेतु भगस्त्यबोले हे रघुनाथ जी सृष्टिके पूर्व आपकैसे रहेहौ अन् उपाधिकः अर्थात् नहींहै उपाधि धर्म चिंता जामें पुनः निर्विकल्प नहींहै विकल्प कारण रूपजामें ऐसे एकही निश्चय करि आपही रहेहौ अरु माया जो है सो तुम्हारे आश्रित भाव तुम्हारे बलते बलीहै पुनः तुमहीहौ जाकी विषय भाव तुमहीको सेवन करतीहै ताते तुम्हारी शक्ति कहातीहै यथा सूर्यकी शक्तिप्रभा सूर्यते न्यारी नहीं अरु प्रभाको सब व्यापार सूर्यनैके बलतेहै तथामायाको व्यापार आपहीके बलतेहै ताते माया आपकी शक्ति है ताते आदि एक आपहीहौ २० (त्वं निर्गुणं एव यदाशक्ति आवृणोति तदा वेदांतपरिनिष्ठिताः अव्याकृतं इति प्राहुः) आप निर्गुण निश्चय करि तीनि गुणनते परेहौ तिनको जब शक्ति आवरण करतीहै भाव दिव्य माया सहित मूर्तिमान् होतेहौ तब वेदांतलोग आपको अव्याकृत भाव नाश रहित आत्मरूप कहतेहैं २१ ॥

मूलप्रकृतिरित्येके प्राहुर्मायेतिकेचन ॥ अविद्यासंसृतिर्वन्ध इत्यादि बहुधोच्यते २२ त्वया संक्षोभ्यमाना सामहत्तत्त्वप्रसूयते ॥ महत्तत्त्वादहंकार च त्वया संचोदिता दभूत् २३ अहंकारो महत्तत्त्वसंवृतस्त्रिविधो भवत् ॥ सात्त्विको राजश्चैव तामसश्चेति भण्यते २४ ॥

(एके मूलप्रकृतिः इति प्राहुः केचन माया इति बहुधा अविद्यासंसृतिर्वन्ध इत्यादि उच्यते) एककोऊ अर्थात् कपिलादि सांख्यमतवाले उसीशक्ति को मूल आदि कारण प्रकृति है ऐसा कहतेहैं कोऊ वाको माया भूठा व्यवहार ऐसा कहते हैं बहुधा अर्थात् बहुत आचार्य उसी शक्तिको अविद्यासंसारबन्धन

इत्यादि कहते हैं भावजे समयरूप आपसी करिकै नहीं जानते हैं ते आपने मतमनकूल अनेक तर्कनाकरते हैं २२ (सात्वयाक्षोभमाणामहत् तत्त्वं प्रसूयते त्वया संचोदिता त्महत्तत्त्वात् अहंकारः अभूत्) हे रघुनन्दन सोई शक्ति आप करिके क्षोभमान चञ्चल जड़ ते चैतन्य लघुदीर्घादि विस्तार हवै महत् तत्त्व को उत्पन्न किया अर्थात् यथा पुरुष को बीज स्त्री के रजमों मिलि पिण्ड भयो ताके अन्तरगत अनेक गुण होते हैं ताही भांति परमेश्वर को अंश प्रकृति में मिलि महा तत्त्व भयो ताके अन्तरगत पांचौ तत्त्व तीनों गुण चारिहु अन्तःकरणादि सब हैं परन्तु सतोगुण बुद्धि प्रधान होती है इति महत् तत्त्व प्रथम भयो पुनः आप करिकै प्रेरणा करने ते सोई जो महत् तत्त्व है ताते रजतम सत्त्वादि त्रिगुणात्म अहंकार उत्पन्न भयो २३ (महत्तत्त्वत्रिविधः अहङ्कारः संवृतः अभवत् सात्त्विकः च एव राजसः च तामसः इति भण्यते) अगस्त्य बोले हे रघुनाथजी सो अहंकार कैसा भया कि महत् तत्त्व जो है तामें तीनि विधिको अहंकार सम्पूर्ण प्रकारते आवृत घेरेहुये होता भया कौन तीनि प्रकार एक सात्त्विक अहंकार पुनः निश्चय करि राजस पुनः तामस इत्यादि तीनि प्रकार कहे जाते हैं भाव जो महातत्त्व है सोई कारण शरीर है तामें केवल कारण माया पिण्डमें आत्मा व्याप्त ताहीके प्रभाव ते सतोगुणी बुद्धि होती है भाव मैं जप तपादि सुख साधन करि सका हौं इति सतोगुणी बुद्धि है पुनः ताही महातत्त्व में ईश्वर की प्रेरणा ते कार्य भया प्रवेश भई जामें शब्द स्पर्श रूप रस गन्धादि सूक्ष्म रूप ते पांचौ तत्त्व गर्भित हैं तीनों गुणनमें अहंकार उत्पन्न भया यथा ॥ दोहा ॥ सकल वस्तु को ज्ञान अरु बुद्धि विमल जब होय । तवै सतोगुण जानिये कहत सयाने लोय ॥ लोभलिये व्यवहार जो सोई रज गुण ज्ञान । आलस निद्रा विकल मन मोह तमोगुण मान ॥ इति त्रिगुणात्म अहंकार युत कार्य मायामय सूक्ष्म तन भया २४ ॥

तामसात् सूक्ष्मतन्मात्राण्यासन् भूतान्यतः परम् ॥ स्थूलानि क्रमशो रामक्रमोत्तरगुणानि हि २५ राजसानीन्द्रियाण्येव सात्त्विका देवता मनः ॥ तेभ्योऽभवत् सूत्ररूपं लिङ्गं सर्वगतं महत् २६ ॥

(तामसात् सूक्ष्मतन्मात्राणि आसन् अतः परं रामक्रमशः स्थूलानि भूतानि क्रमोत्तर गुणानि हि) तिनमें तामस अहंकार ते शब्द स्पर्श रूप रस गंध इत्यादि तत्त्वनके सूक्ष्मरूप तन्मात्रा आसन् अर्थात् होते भये अतः परं अर्थात् इसके उपरांत हे रघुनाथ जी इनही तन्मात्रनते क्रमशः स्थूलानि भूतानि अर्थात् क्रम सहित स्थूल रूपजो आकाशादि भूतन के होते होते भये तब क्रमेण उत्तर गुणानि हि तिनमें क्रमकरिकै एकएक गुण अधिक होते गया यथा तामस को प्रसिद्ध रूप है क्रोधतामें पांच अंग प्रथम पारुष्यता ते शब्दभया दूसरा हिंसाताते स्पर्शभया तीसरा वैर ताते रूपभया चौथामान ताते रसभया पांचौ ईर्ष्या ताते गंध इति तन्मात्रा सूक्ष्मरूप है तिनमें शब्दते आकाश भया शब्दसहित स्पर्शते पवन भया शब्दस्पर्श सहित रूप तन्मात्राते अग्निभया शब्द स्पर्श रूपसहित रसते जल भया शब्दस्पर्श रूपरस सहित गंधते पृथिवी उत्पन्न भई अरुजित शब्दादि सूक्ष्मरूपन ते आकाशादि स्थूलरूप होते गये ताही क्रमस्थूल रूपन में एकएक गुण अधिक होतागया यथा आकाश में शब्द एकै गुण पवन में शब्दस्पर्श दो गुण अग्नि में शब्दस्पर्श रूपतीनि गुणजल में शब्दस्पर्श रूपरस चारिगुण पृथ्वी में शब्दस्पर्श रूपरस गंधपांचौ, गुण हैं २५ (राजासात् इन्द्रियाणि एव सात्त्विकात् देवता मनः तेभ्यः सर्वगतं लिङ्गं सूत्ररूपं महत् अभवत्) राजस अहंकार ते श्रवणादि दशौ इन्द्रि भई सात्त्विक अहंकार ते इन्द्रिनके देवता अरु मनभया अर्थात्

राजस के प्रसिद्धरूपकाम अरुलोभ है काममें पांच अंशहैं प्रथम आशा ताते श्रवण इन्द्री भई शब्दविषय दूसरि तृष्णा ताते त्वचा इन्द्री स्पर्शविषय तीसरि ममता ताते नेत्र इन्द्रिरूप विषय चौथि लोलुपताताते जिह्वा इन्द्रीरस विषय पांचौ असत्वासनाताते नासिका इन्द्रीभयी गन्ध विषय इति कामके पांचौअंशन ते सहितविषयन पांचौ ज्ञानइन्द्रीभई पुनः राजसको दूसरारूप लोभहैताहू में पाच अंश प्रथम चाहताते हाथ इन्द्री भई व्यवहार विषयहै दूसर अविचार ताते पगइन्द्री चलन विषय तीसर तन पोपता ताते मुख इन्द्री भईभक्षणविषय है चौथीकुमति ताते गुदाइन्द्री मलत्याग विषय पाचौरतिताते लिंग इन्द्री मैथुन विषय इति कर्म इन्द्री पांच इत्यादि दशोइन्द्रीराजस अहंकारते भई पुनः सात्त्विक अहंकारको प्रसिद्धरूप सांति है तामें गेरह अंशहैं प्रथममुदितहै ताते दिशा भयो जो श्रवणकोदेवता है दूसरशतवासना ताते पवन भयो जो त्वचा को देवताहै तीसरप्रकाश ताते सूर्य भये जो नेत्रके देवता हैं चौथनम्रता ताते वरुण भये जो जिह्वाके देवता हैं पंचम धिरता ताते अश्वनी कुमार भये जो नासिकाके देवताहैं छठौ उदासी नता ताते अग्निभयो जो मुखके देवताहैं सातौ श्रद्धाताते इन्द्रभये जो हाथके देवताहैं आठौक स्णा ताते यश विष्णुभये जो पगके देवताहैं नवमलज्जा ताते यम भये जो गुदा के देवताहैं दशमअभ्यास ताते ब्रह्माभये जो लिंगके देवताहैं गेरहौ प्रवृत्तताते मनभया जो अंतर की इन्द्रीहै सबइन्द्रिन को स्वामी है ताको देवता चन्द्रमाहै इत्यादि सबमिलि एकत्रभयेते तेभ्यः सर्व गतं अर्थात् तिनसब सूक्ष्म तत्त्वन ते सबमें जो व्यापक है लिंगसूत्ररूपं महत् अभवत् लिंग जोसब कार्य को करनेवाला सूत्ररूपहिरण्यगर्भ सबको प्रकाशकरता महान् पुरुषभाव सेंद्री देहको अभिमानी भया २६ ॥

ततोविराट्समुत्पन्नःस्थूलाद्भूतकदंबकात् ॥ विराजःपुरुषात्सर्वजगत्स्थावरजंगमम् ॥ देवतिर्यङ्मनुष्याश्चकालकर्मक्रमेणतु २७ त्वंरजोगुणतोब्रह्माजगतःसर्वकारणम् ॥ सत्त्वाद्विष्णुस्त्वमेवास्यपालकःसद्भिरुच्यते ॥ लयेरुद्ररत्वमेवास्य त्वन्मायागुणभेदतः २८ ॥

(ततःविराट्समुत्पन्नः) तदनन्तर हिरण्यगर्भ ते विराट् अर्थात् स्थूल ब्रह्मांड सम्पूर्ण उत्पन्न भयो (स्थूलात्कदंबकात् विराजःअभूत्) स्थूल जोभूमि गिरिसरि सागर भुवनादि कदंबकहे समूह तिनते विराजः ब्रह्मांड भरेको स्वामी महाविष्णुभये (विराजःपुरुषात्स्थावरजंगमम् देवतिर्यङ्मनुष्याः सर्वजगत्) विराज पुरुष ते स्थावर वृक्षादि जंगम यथा देवता सर्पादि पुनः मनुष्य इत्यादि सब जगत् भया (तुक्रमेणकालकर्म) पुनः क्रम करिकै तिथि पक्ष मास वर्ष युगादि काल अरु शुभा शुभ कर्म होता भया २७(त्वंरजोगुणतः ब्रह्मासर्वजगतः कारणम् अस्यपालकः त्वंएवसत्त्वात्विष्णुः सद्भिःउच्यते अस्यलयेत्वंरुद्रः एवत्वत् मायागुणभेदतः) अगस्त्य बोले हे रघुनाथ जी आप रजोगुण ते ब्रह्मारूप ते सब जगत् के कारण भाव सृष्टि करते हौ पुनः इसी संसार के पालन कर्त्ता आप निश्चयकरि सतोगुणते विष्णु होतेहौ ऐसा सन्तन करिकै कहा जात तथा इस संसार के प्रलयसमय आपु तमोगुण ते रुद्र ह्वै निश्चय करि संहार करते हौ इत्यादि आप मायागुणों ते भेद ते रूप देखाते हौ २८ ॥

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्याख्यवृत्तयोबुद्धिजैर्गुणैः॥तासांबिलक्षणोरामस्त्वंसाक्षीचिन्मयो

व्ययः २६ सृष्टिलीलांयदाकर्तुमीहसेरघुनन्दन ॥ अंगीकरोषिमायां त्वं तदा वै गुणवानिव ३० रामायाद्विधाभाति विद्याविद्येतिते सदा ॥ प्रवृत्तिमार्गनिरता अविद्यावशवर्तिनः ३१ निवृत्तिमार्गनिरता वेदांतार्थविचारकाः ॥ त्वद्भक्तिनिरता ये च ते वै विद्यामयाः स्मृताः ३२ अविद्यावशगायेतु नित्यं संसारिणश्च ते ॥ विद्याभ्यासरता येतु नित्यमुक्तास्त एव हि ३३ ॥

(बुद्धिजैः गुणैः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति आख्यातृत्तयः तासां साक्षी विलक्षणः रामत्वं चिन्मयः अव्ययः) बुद्धिकरिकै उत्पन्न तमरज सत्त्वादि गुणन करिकै जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति आदिप्रसिद्ध वृत्ती जीवके व्यापार जो तीनहुँ अवस्थाहैं तिनको प्रसिद्ध जाननेवाले साक्षी विलक्षण अर्थात् किसी कारणते बनाये नहीं स्वयं हेरघुनाथ जी आपसदा चैतन्य अविनाशीहौ २६ (रघुनन्दन यदा सृष्टिलीलां कर्तुं ईहसे तदा त्वं वै गुणवान् इव मायां अंगीकरोषि) हेरघुनन्दन जासमैमें संसार रचना रूपलीला करवेकी इच्छा करते हौ ता समैमें आप निश्चयकरि गुणवान् की नाई मायाजोहै ताहि अंगीकार करतेहौ भावमाया मयरूप धारण करि मायिक व्यापार करतेहौ ताते सतोगुणी रजोगुणी तमोगुणी से भासित होतेहौ ३० (रामते मायाविद्या अविद्याइति द्विधा सदा भाति अविद्यावशवर्तिनः प्रवृत्तिमार्गनिरताः) हेरघुनाथजी आपकी माया एक विद्या दूजी अविद्या इत्यादि दोभाँति सदा लोकमें प्रकाशितहैं तहां जे जीव अविद्या के आधीनहैं ते प्रवृत्ति मार्गमें निरतभाव संसारही व्यवहार में आसक्त रहतेहैं ३१ (वे त्वद्भक्तिनिरता च वेदांतस्य अर्थविचारकाः निवृत्तिमार्गनिरता ते वै विद्यामयाः स्मृताः) हेरघुनन्दन ये जन श्रवणादि आपकी भक्तिमें लगेहैं पुनः वेदांतको अर्थ आत्मरूप विचारतेहैं इत्यादि प्रवृत्ति भाव परलोक मार्गमें लगेहैं ते निश्चयकरि विद्यामयहैं ऐसा जाना चाहिये ३२ (तु ये अविद्यावशगाते च नित्यं संसारिणः तु ये विद्याभ्यासरतास्त एव हि नित्यमुक्ताः) पुनः जे अविद्याके वशमें प्राप्तहैं ते जन पुनः नित्यही संसारी जीवहैं पुनः जे विद्याके अभ्यासमें लगेहैं वे नित्यही मुक्त जीवहैं ३३ ॥

लोके त्वद्भक्तिनिरतास्त्वन्मन्त्रोपासकाश्च ये ॥ विद्याप्रादुर्भवेत्तेषां नेतरेषां कदाचन ३४ अतस्त्वद्भक्तिसम्पन्ना मुक्ता एव न संशयः ॥ त्वद्भक्त्या मृतहीनानां मोक्षः स्वप्नेऽपिनोऽभवत् ३५ किं रामबहुनोक्तेन सारं किञ्चिद्द्वीप्सिते ॥ साधुसंगतिरेवात्र मोक्षहेतुरुदाहृतः ३६ साधवः समचित्ता ये निरुष्टहार्विगतैषिणः ॥ दांताः प्रशांतास्त्वद्भक्तानि वृत्ताखिलकामतः ३७ इष्टप्राप्तिविपत्योश्च समाः संगविवर्जिताः ॥ संन्यस्ताखिलकर्माणि सर्वदा ब्रह्मतत्पराः ३८ ॥

(लोके ये त्वद्भक्तिनिरताः च त्वद्भक्त्युपासकाः तेषां विद्याप्रादुर्भवेत् इतरेषां कदाचन न) हेरघुनाथ जी लोक में जे जन श्रवण कीर्तनादि आप की भक्ति में लगे हैं पुनः आप के षडक्षर मंत्र के उपासक भाव विधि समेत नित्य जाप करते हैं तिनको विद्या आप ही आप प्रकट होती है पुनः इतरेषां भाव जे भक्तिते विलग विषयी विमुखन को कबहूँ नहीं विद्या होती है ३४ (अन्तः त्वद्भक्तिसम्पन्नाः एव मुक्ताः संशयः न त्वद्भक्तिमृतहीनानां स्वप्नेऽपि मोक्षः न अभवत्) इस कारण ते हे रघुनन्दन आप की भक्ति में आरूढ़ है भाव सेवन स्मरणादि जिन में परिपूर्ण हैं ते निश्चयकरिकै मुक्त हैं यामें संशय नहीं है अरु ये आप की भक्तिरूप अमृत करिकै हनि हैं तिनको स्वप्ने में भी

मोक्ष नहीं प्राप्त हवै सकी है ३५ (रामबहुनाउत्तेन किंसारंकिञ्चित् तेब्रवीमिभ्रममोक्षहेतुः साधु संगतिः एवउदाहृता) हे रघुनन्दन बहुत कहने से क्या प्रयोजन है जो सारांश वेस्तु है सो कलु थोरा आपुप्रति कहताहौं यामें मोक्षहोने को कारण साधुजनन की संगति निश्चयकरि कहीगई है ३६ (ये साधवःएपिणः विगतनिस्पृहाः समचित्ताः अखिलकामतः निवृत्तादांताः प्रशांताःत्वत्भक्ताः) जिनकी संगति मुक्तिको कारण ऐसे जे साधुहैं तिनकेसुत चित्तनारि इत्यादि सबभौतिकी इच्छा विशेषजात रहीहै हानिलाभादिकी नहींहै इच्छाराग द्वेपरहित समसवपर बराबरि चित्तराखे देहसुखमान स्वर्गादि सबकामना निवृत्त त्यागि किहे दांत अर्थात् इंद्रिनको दमन किहेशांत स्वभावते आपके भक्तहैं ३७ (इष्टप्राप्तिविषयोः समाःअखिलकर्माणः संन्यस्तसंगविवर्जिताः सर्वदाब्रह्मतत्पराः) मनोरथ सुख प्राप्तभये पर पुनः विपत्ति परेपर समाः बराबरिही आनंद बने रहतेहैं शुभाशुभादिसम्पूर्ण कर्मन को त्यागि दूसरे को संग रहित अकेले एकांत स्थानमें बैठे ब्रह्मतत्पर सर्व समय ब्रह्म विचार में लगेरहते हैं ३८ ॥

यमादिगुणसंपन्नाः संतुष्टायनेकेनचित् सत्संगमो भवेद्यर्हित्वत्कथाश्रवणेरतिः ३९
समुदेतिततो भक्तिस्त्वयिरामसनातने ॥ त्वद्भक्तावुपपन्नायां विज्ञानं विपुलं स्फुटम्
उदेति मुक्तिमार्गोऽयमाद्यश्चतुरसेवितः ४० तस्माद्राघवसङ्गतिस्त्वयि मे प्रेमल
क्षणा ॥ सदाभूयाद्धरेः संगरत्वद्भक्तेषु विशेषतः ४१ अद्य मे सफलं जन्म भवत्संदर्श
नादभूत् ॥ अद्य मे क्रतवः सर्वे बभूवुः सफलाः प्रभो ४२ दीर्घकालं मया तप्तमनन्यम
तिनातपः ॥ तस्येहतपसो रामफलं तव यदचर्चनम् ४३ ॥

(येनकेनचित् संतुष्टायमादिगुणसंपन्नाः सत्संगमोयर्हित्वत्कथाश्रवणेरतिः भवेत्) निरूपाय जो कलु प्राप्त भया ताही में सन्तोष राखते हैं यमादि यथा जीवन पर दया सत्य बोलना चोरी न करना ब्रह्मचर्य इन्द्री स्वाधीन इति यम हैं पुनः शौच सन्तोष तप सद्यंथ ईश्वर प्रीति इति नियम कमलादि आसन मनस्वाधीन इति प्रत्याहार स्वास रोकना प्राणायाम है चित एकाग्र धारणा ध्यान समाधि इति योगके यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इनगुणन करिके परिपूर्ण हैं ऐसे सन्तन को सत्संग जब होताहै तब आपकी कथा श्रवणमें प्रीति होती है ३९ (ततः रामत्वयिसनातने भक्तिः संउदेतित्वत्भक्तौ उपपन्नायां विपुलं विज्ञानं स्फुटमुदेति अयं मुक्ति मार्गः आद्यचतुरैः सेवितः) हे रघुनन्दन आपविषे सनातन भक्ति परिपूर्ण उदय होती है भाव सन्तन तेकथासुनि आपमें प्रेमहोताहै श्रवण कीर्तनादि भक्तिमें उत्पन्न बहुत प्रकार को विज्ञान प्रकाशमान उदय होताहै यह मुक्तिमार्ग आदि कालते चतुरन करिके सेवितहै ४० (तस्मात् राघव त्वयि प्रेम लक्षणा सत्भक्ति हरे विशेषतः त्वद्भक्तेषु संगः मे सदाभूयात्) तिस कारण हे राघव आप विषे प्रेम लक्षणा उत्तमभक्ति अरु हे हरि विशेषतों आपके भक्तोंमें संग मोंको सदाहोय ४१ (प्रभो भवत्संदर्शनात् अद्य मे जन्म सफलम् अभूत् अद्य मे क्रतवः सर्वे सफलाः बभूवुः) हे प्रभो आपके दर्शनते अब मेरा जन्म सफल भया आजमेरे किंयेयज्ञादि सर्वसत्कर्म सफल होतेभये ४२ (अनन्यमतिनामया दीर्घ कालंतपः तप्तं तस्य तपसः इह फलं रामयत्तव अचर्चनम्) सबको भरोसा त्यागि सर्वोपरि जानिएक आपही में मन वचन कर्म ते लगारहा इति अनन्यमति करिके मैने बहुत काल तप किया तिस

तपकी यहफलहै हे रघुनाथजी जो आप को अर्चन किया भाव कृपा करि आप ही आयदर्शन दै
कृतार्थ कीन्है ४३ ॥

सदामेसीतयासाद्धैहृदयेवसराधव ॥ गच्छतस्तिष्ठतोवाऽपिस्मृतिःस्यान्मेसदा
त्वयि ४४ इतिस्तुत्वारमानाथमगस्त्योमुनिसत्तमः ॥ ददौचापमहेन्द्रेणरामार्थं
स्थापितंपुरा ४५ अक्षयोबाणतूणीरौयःखड्गोरत्नभूषितः॥जहिराधवभूभारभूतं
राक्षसमण्डलम् ४६ यदर्थमवतीर्णोसिमायामानुषजाकृतिः ॥ इतोयोजनयुग्मे
तुपुण्यकाननमण्डितः ४७ अस्तिपंचवटीनाम्नाआश्रमोगौतमीतटे ॥ नेत
व्यस्तत्रतेकालःशेषोरघुकुलोद्बह ॥ तत्रैवबहुकार्याणिदेवानांकुरुसत्पते ४८ श्रु
त्वातदागस्त्यसुभाषितंवचःस्तोत्रंचतत्त्वार्थसमन्वितंविभुः ॥मुनिसमाभाष्यमुदा
न्वितोययौप्रदर्शितंमार्गमशेषविद्धरिः ४९ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेआरण्यकाण्डेतृतीयःसर्गः ३ ॥

(राघवसीतयासाद्धैहृदयेवसदावस गच्छतःवातिष्ठतःअपित्वयिस्मृतिःमेसदास्यात्) अगस्त्य
बोले हेराघव सीतासहितमेरे हृदयमें सदा वासकरौ चलते अथवा बैठे निश्चय करिकै आपकी
स्मरण मोको सदा बनीरहै ४४ (मुनिसत्तमःअगस्त्यःइतिरमानायस्तुत्वारामार्थं पुरामहेन्द्रेणस्था
पितंचापंददौ) शिवजी कहत कि मुनिन में उत्तम अगस्त्य इसभांति रघुनन्दनप्रति स्तुतिकरि पुनः
जो रघुनाथ जी को देने हेत इन्द्र ने इहां स्थापित किया रहै सो धनुष देते भये ४५ (अक्षयोबाण
तूणीरौरत्नभूषितः खड्गःराघवभूभारभूतराक्षसमंडलमजहि) जिनमें बाण कभी चुकि न सकै ऐसे
दो तरकस तथा रत्न जटित तरवारि दिये पुनः अगस्त्यजी बोले हे राघव भूमिपर पापभारहै गया
है सो उतारने हेत रावणादि जो राक्षसोंको वृन्दहै ताहिनाश करौ इन अस्त्रों करिकै इतिशेषः ४६
(यत्त्रार्थमायामानुषजाकृतिःअवतीर्णोसितुइतःयोजनयुग्मेपुण्यकाननमण्डितः) हे रघुनन्दन जिस
हेत मायाकरिकै मनुजाकाररूपते अवतीर्ण भयो है सो कार्य करिवे योग्य वास स्थान इहांते योजन
दो आठकोश पर पुण्यमय वन शोभितहै ४७ (गौतमीतटेपंचवटीनाम्नाआश्रमःतत्रतेशेषःकालःने
तव्यःतत्रएवरघुकुलोद्बहसत्पतेदेवानांबहुकार्याणिकुरु) गौतमीनदी किनारेपर पंचवटीनामें आश्र-
महै तहां बसि आपके बनवासके जो दिन बाकी हैं सो व्यतीतकरौ अरुतहै निश्चय करि हेरघुवंश
नाथ सज्जननको पालनेवाले देवतनको जो बहुतकार्य है खलबधादि सोकरौ ४८ (तत्त्वार्थसमन्वि
तंस्तोत्रंचअगस्त्यभाषितंसुवचःश्रुत्वाविभुः मुनिसंभाष्यअशेषविद्धरिः प्रदर्शितंमार्गमुदान्वितःययौ)
सब तत्त्वनको अर्थ सहित जो स्तोत्रहै पुनः अगस्त्यके कहेहुये और हू जो सुन्दर वचनहैं सो मुनि
प्रभु मुनि प्रति वार्ता करि पुनः संपूर्ण वस्तुके जानन हारे हरि, मुनिकी देखाई हुई जो पंचवटीको
मार्गहै तामें आनन्द सहित जाते भये ४९ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणांगतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणेआरण्यकाण्डे
रघुनन्दनअगस्त्याश्रमप्राप्तवर्णनोनामतृतीयःप्रकाशः ३ ॥

मार्गे ब्रजन्ददर्शार्थशैलशृंगमिवस्थितम् ॥ वृद्धं जटायुपं रामः किमेतदिति विस्मितः
१ धनुरानयसोमित्रे राक्षसोऽयं पुरःस्थितः ॥ इत्याह लक्ष्मणं रामो हनिष्याम्यृषिभ
क्षकम् रतच्छ्रुत्वारामवचनं गृद्धराट् भयपीडितः ॥ वधाहोऽहं न ते राम पितुस्तेहं प्रियः
सखा ३ जटायुर्नाम भद्रं ते गृद्धोऽहं प्रियकृत्तव ॥ पंचवट्यामहं वत्स्ये तवैव प्रियका
म्यया ४ मृगयायां कदाचित्नु प्रयाते लक्ष्मणेऽपि च ॥ सीताजनककन्याभिरक्षितव्या
प्रयत्नतः ५ ॥

सवैया ॥ वासि भेटि जटायु सुपंचवटी वरप्रद न कियो लघु बंधु कदा । विप या वशजीव
भवारणवते क्यहि भांति लहैं ध्रुवमुक्ति पदा ॥ कहि मायहि ईश्वर जीवन भेद विरागहु ज्ञान
सुभक्ति तदा । इति बोध कियो सिय सानुज सो करुणा कर राम नमामि सदा (अथ मार्गे
ब्रजन्गैल शृंगइवस्थितं वृद्धं जटायुपं ददर्श रामः इति विस्मितः एतत् किं) शिवजी बोले हे
गिरिजा अब राहमें जात समय पर्वत के कंगूरा सम बैठेहुआ जो वृद्ध जटायू ताहि देखते भयं
रघुनाथ जी तव इसप्रकार विस्मय किये कि ऐसा भारी यह कौनजीवहै इति विचारि लक्ष्मण प्रति
बोले १ (लक्ष्मणमुरामः इति आह सोमित्रे धनुः आनयपुरः स्थितः अयं राक्षसः ऋषिभक्षकम् हनि-
ष्यामि) लक्ष्मण प्रति रघुनन्दन इसप्रकार बोले किहे सुमित्रानन्दन मेरा धनुष लावो तौ आगेवैठा
हुआ यह राक्षस ऋषियों को खाइ जानेवाला ताहि बधकरो २ (रामवचनं तत् श्रुत्वा गृद्धराट् भय
पीडितः रामतेवध अहः अहं न गृहं ते पितुः प्रियः सखा) मुनिन को भक्षण करने वाला राक्षसहै या
को मारो इति भ्रमयुत रघुनन्दन को जो वचनताहि सुनि गृद्धराज विचारेउ कि वेप्रयोजन मेरा बय
रघुनन्दनको अयश पश्चात्ताप होयगो इति हानि की भयमानि दुखितहैं गृद्धबोला हेराम आपकेबध
करिवे योग्यमें नहींहो काहेते किमें आपके पिता को प्रिय सखाहो ३ (तेभद्रं तव प्रियकृत् अहं जटायु-
नाम गृद्धः तवैव प्रियकाम्यया अहं पंचवट्यां वत्स्ये) हे रघुनन्दन आपका कल्याण होय आपको प्रिय
कार्य करने वाला मैं जटायु नाम गृद्ध भाव राक्षस विमुख नहीं हों आप की प्रीति की कामनाकरि
कै मैं पंचवटी में वास करि रहाहो ४ (तदाचित् मृगयायां प्रयाते लक्ष्मणे अपि जनककन्यासीता
मे प्रयत्नतः रक्षितव्या) पुनः किसी समय आप मृगया में जाउ पुनः जो लक्ष्मण भी चले जायंगे
तब जनक पुत्री जो सीता तिनकी मैं यत्नपूर्वक रक्षा करोंगो भाव कलु बाया न होने पावैगी ५ ॥

श्रुत्वा तद् वृद्धवचनं रामः सस्नेहमब्रवीत् ॥ साधु गृद्धमहाराज तथैव कुरु मे प्रियम् ६ अ
त्रैव मे समीपस्थो नातिदूरे वने वसन् ॥ इत्यामंत्रितमालिङ्गय यो पंचवटी प्रभुः ॥ लक्ष्म
णेन सह भ्रात्रा सीतयारघुनन्दनः ७ गत्वा ते गौतमीतीरं पंचवट्यां सुविस्तरम् ॥ मं
दिरंकारयामास लक्ष्मणेन सुबुद्धिना ८ तत्र ते न्यवसन् सर्वे गंगाया उत्तरे तटे ॥ कदंब
पनसाद्यादिफलवृक्षसमाकुले ९ विविक्ते जनसंवाधवर्जिते निरुजस्थले ॥ विज्ञोद
यं जनकजालक्ष्मणेन विपदि च ता १० अधुना स सुखं रामो देवलोका इवामरः ॥ कंदमू
लफलादीनि लक्ष्मणेन विपदि च ता ११ ॥

(तद् गृद्धवचनं श्रुत्वारामः सस्नेहं अब्रवीत् महाराज साधु गृद्धमे प्रियं तथा एव कुरु) सो गृद्धके

बचन तिनहिं सुनि रघुनन्दन सहित स्नेह बोले हे महाराज साधुगृह जो कार्य मोको प्रियहै ताही भांति निश्चय करि करौ ६ (मेसमीपस्थो न अतिदूरे अत्रवने एववसन् इति आमंत्रितं प्रभुःभालिङ्ग्य सीतयाभ्रात्रा लक्ष्मणेन सह रघुनन्दनः पंचवटीययौ) आपगुरुजनहौ ताते मेरे अत्यंत समीप न वसौ पुनः सहायकहौ तौ न अत्यंत दूरवसौ ऐसाबास बिचारि इसीवनमें निश्चयकरि बसौ इत्यादि सल्लाह पूर्वक बोध करि प्रभुजटायु को हृदयमें लगाय सीता करिकै भरुबंधु लक्ष्मण करिकै सहित रघुनन्दन पंचवटी को जातेभये ७ (गौतमी तीरं सुबिस्तरं पंचवट्यांते गत्वा लक्ष्मणेन सुबुद्धिना मंदिरंकारयामास) गौतमीनदीके समीपबड़े विस्तारयुत जो पंचवटीहै तहांको सीतालक्ष्मणरघुनन्दन ते सब जाते भये सुथल में लक्ष्मण जीने बुद्धि करिकै सुंदर मंदिररचते भये ८ (कदंबपनसभ्रात्रा दिवृक्षफलसमाकुले गंगायाउत्तरेतटे तत्रतेसर्वेन्यवसन्) कदंब कटहर भ्रात्रादि के वृक्ष फलन करि परि पूर्ण लगे गौतमी गंगाके उत्तर किनारे पर तहां आश्रम करि लक्ष्मण जानकी रघुनन्दनते सब वास कीन्हे ९ (जनबिविक्तेसंबाध वर्जितेनिरुजस्थले विपश्चितालक्ष्मणेन जनकजां विनोदये) मनुष्य रहित सब बाधा रहित रोगादि जहां नहीं होताहै त्याहि स्थल विपे पुनः सब कार्य के करने वाले सेवक वीर परम ज्ञानी लक्ष्मणसहित वासकीन्हे रघुनन्दन सो अनेकभांति क्रीड़ाकरि जनक नंदिनी जोहैं तिनहिं आनन्ददै रहेहैं १० (देवलोकैअमरः इवरामःसुखंअधिउवा सतयोःअनुदिनं कंद मूल फलादीनिलक्ष्मणः) देवलोक में यथा देवता ताहीभांति जानकी सहित रघुनन्दनसुख समेत वास करते हैं तिनके भोजन हेत अनुदिन रोज रोज लक्ष्मण जी साधन करते हैं ११ ॥

आनीयप्रददौरामसेवातत्परमानसः ॥ धनुर्बाणधरोनित्यंरात्रौजागर्तिसर्वतः १२
स्नानंकुर्वन्त्यनुदिनत्रयस्तेगौतमीजले ॥ उभयोर्मध्यगासीताकुरुतेचगमाग
मौ १३ आनीयसलिलानित्यंलक्ष्मणःप्रीतिमानसः ॥ सेवतेऽहरहःप्रीत्याएवमा
सन्सुखत्रयः १४ एकदालक्ष्मणोरासुतेकांतेसमुपस्थितम् ॥ विनयावनतोभूत्वा
पप्रच्छपरमेश्वरम् १५ भगवन्श्रोतुमिच्छामिमोक्षस्यैकांतिकांतिम् ॥ त्वतःक
मलपत्राक्षसंक्षेपाद्वक्तुमर्हसि १६ ज्ञानंविज्ञानसहितंभक्तिवैराग्यवृंहितम् ॥ आ
चक्ष्वमेरघुश्रेष्ठवक्तानान्योस्तिभूतले १७ ॥

(आनीय प्रददौ मनसः राम सेवा तत्पर नित्यं धनुः बाण धरः सर्वतः रात्रौ जागर्ति) लक्ष्मण जी कन्दमूलफलादि बनते आनि रघुनन्दन को देतेहैं भरु मन रघुनन्दन की सेवा में तत्पर है ताते नित्यही धनुष बाण हाथ में धारण कीन्हे सब राति भरि बैठे जागा करते हैं १२ (तेत्रयः अनु दिनं गौतमी जले स्नानं कुर्वन्ति च सीता उभयोः मध्यगागमागमौ कुरुते) लक्ष्मण जानकी रघुनन्दन ते तीनिहैं जने प्रतिदिन गौतमी नदीके जल में स्नान करतेहैं पुनः जानकी जी दोऊजनेनके बीच में जाती आवतीहैं १३ (प्रीति मानसः लक्ष्मणः नित्यं सलिलं आनीय अहरहः प्रीत्या सेवते एवं त्रयः सुख आसन्) प्रीतिवंत मन सहित लक्ष्मणजी नित्यही जल भरि लावतेहैं भरु प्रीति करिकै जानकी रघुनन्दन को सेवतेहैं इसीप्रकार तीनिहैं जने सुखपूर्वक वास करतेहैं १४ (एकदा एकांते संउपस्थितम् परमेश्वरं रामं लक्ष्मणः विनयावनतो भूत्वा पप्रच्छ) एक समय एकांत स्थानमें बैठे हुये परमेश्वर रघुनाथ जी तिनप्रति लक्ष्मणजी विनती करिकै नम्र हैं पूछते भये अर्थात् लोक सिक्षा हेत जीव कल्याण होनेकी उपाय पूछे १५ (भगवन् मोक्षस्य एकांतिकांतिं गतिं त्वत्तः श्रोतुं इच्छामि)

कमलपत्राक्ष संक्षेपात् वक्तुं अर्हसि) लक्ष्मणजी बोले कि हे भगवन् जीवन को भव बन्धनते मोक्ष होनेकी एकांतिकी गति निश्चय मुक्तहोने योग्य मार्ग सो आपके मुखते सुनवैकी इच्छा है हे कमल दल नयन आप संक्षेप थोरेमें कहवैयोग्यहौ १६ (रघुश्रेष्ठ भक्ति वैराग्य तृहितं विज्ञान सहितं ज्ञानं मे आचक्ष्व अन्यः वक्ता भूतले न अस्ति) हे रघुश्रेष्ठ जामें प्रेमा भक्ति भरु वैराग्य गर्जता होय भरु विज्ञान सहित ऐसा जां ज्ञानहै ताहि वर्णन करिये इसवात के कहने वाले सेवाय आपके और वक्ता पृथ्वीतल में नहीं है १७ ॥

श्रीरामउवाच ॥ शृणुवक्ष्यामितेवत्सगुह्याद्गुह्यतरंपरम् ॥ यद्विज्ञायनरोजह्या
त्सद्योवैकल्पिकंभ्रमम् १८ आदौमायास्वरूपंतेवक्ष्यामितदनन्तरम् ॥ ज्ञानस्य
साधनंपश्चात्ज्ञानंविज्ञानसंयुतम् १९ ज्ञेयञ्चपरमात्मानंयज्ञात्वामुच्यतेभया
त् २० अनात्मनिशरीरादायात्मबुद्धिस्तुयाभवेत् ॥ सैवमायातयैवासौसंसारः
परिकल्पते २१ रूपेद्वेनिश्चितेपूर्वमायायाःकुलनन्दन २२ विक्षेपावरणेतत्रप्रथ
मंकल्पयेज्जगत् ॥ लिंगाद्याब्रह्मपर्यंतस्थूलसूक्ष्मविभेदतः २३ अपरंत्वखिलं
ज्ञानरूपमावृत्यतिष्ठति ॥ माययाकल्पितविश्वंपरमात्मनिकेवले २४ ॥

(वत्सशृणुगुह्याद्गुह्यतरंपरमतेवक्ष्यामि यत्विज्ञायनर. वैकल्पिकंभ्रमम्सद्यःजह्यात्) रघुनन्दनबोले हे वत्स सावधान है सुनौ जो गुप्तते गुप्त अत्यन्त परम गुप्त तत्त्व है सो तुम प्रतिमैं कहताहों जाको जानि कै मनुष्य वैकल्पिक भाव संसार सांचाहै बाझूठा इत्यादि जो भ्रम है भाव पदार्थकी निश्चय नहीं ऐसा जो अज्ञान ताहि शीघ्रही त्यागि देता है भाव देह व्यवहार त्यागि आत्मरूप ग्रहण कर ताहै १८ (आदौतेमाया स्वरूपम्वक्ष्यामितत्तन्नतरमज्ञानस्यसाधनंपश्चात् विज्ञानसंयुतंज्ञानम्) हे लक्ष्मण प्रथम तौ तुम प्रति माया को स्वरूप कहता हों ताके पाछे ज्ञानके साधन भाव जिनके कीन्हें ज्ञान होताहै ताके पाछे विज्ञान सहित ज्ञान कहताहों १९ (चज्ञेयंपरमात्मानंयत्ज्ञात्वाभयात् मुच्यते) पुनः जानिवे योग्य जो परमात्मा है ताहि कहता हों जाको जानि कै जीव भव भयते छूटि जाता है २० (शरीरादौअनात्मनितुयाआत्मबुद्धिःभवेत् साएवमायातयाएव असौसंसारःपरि कल्पते) देह आदि जो आत्मरहित असार ताहीमें आत्म बुद्धि होती है यथा मैं ब्राह्मण पूज्यहों मैं क्षत्रियराजाहों इत्यादि देहैकोसत्यमानना सोईनिश्चय करिकैमायाहै ताही करिकै सत्यताकी निश्चय यह संसार कल्पित किया जाताहै भाव झूठेको सत्यकरि लिया जाताहै २१ (कुलनन्दनमायायाःपूर्व द्वेरूपे निश्चिते) हे लक्ष्मण तिस माया के पूर्व दो रूप निश्चित किये गये हैं २२ (विक्षेप आवरणे तत्रप्रथमं लिंगाद्या ब्रह्मपर्यंतस्थूलसूक्ष्म विभेदतः जगत्कल्पयेत्) एक विक्षेप अर्थात् कार्य माया दूसरी आवरणकारण माया ये दो रूप हैं तामें प्रथम जो विक्षेप करणहारी कार्यमाया है ताको यह व्यापारहै कि लिंग जोजड़ चेतन्य मिलि कारण शरीरहै सो आदि दैकै ब्रह्मातक स्थूल आकाश वायु अग्नि जल भूम्यादि अरुसूक्ष्म शब्द स्पर्शरूप रस गंधादि भेदते जगत् की रचना करतीहै २३ (तुअप रंमाययाकेवलेपरमात्मनिअखिलंज्ञानरूपं आवृत्यतिष्ठति विश्वंकल्पित) पुनःदूसरी जोआवरणकरने वाली कारण माया है त्यहि करिकै केवल परमात्मामें जो संपूर्ण ज्ञानरूप जो है ताहिआवरण करि बैठती है संसार जो है ताहि कल्पित करतीहै भाव आत्मरूपको ज्ञान दांकि संसार ही को सांच करि देखावती २४ ॥

रज्जौभुजंगवद्भ्रांत्याविचारेनास्ति किंचन ॥ श्रूयते दृश्यते यद्यत्र मर्यते वानरैः स
दा ॥ असदेव हितत्सर्वं यथा स्वप्न मनोरथौ २५ देह एव हि संसारवृक्षमूलं दृढं स्मृतम् ॥
तन्मूलः पुत्रदारादिबंधः किंतेऽन्यथाऽत्मनः २६ ॥

(भुजंगवत् रज्जौ भ्रांत्या विचारे न किंचन अस्ति यत् श्रूयते दृश्यते वा यन् वानरैः सदा स्मर्यते तत्सर्वं
असत् एव हि यथा स्वप्न मनोरथौ) कारणं माया आत्मरूप में आवरण करि कैसे संसार को सांचा
देखावती है जैसे सर्पकी सत्यता रसरीबिषे भ्रांति करिकै होती है अर्थात् यथा अंधेरे में रसरी परी है
सो भ्रांति करिकै सर्प सूचित होता है तथा मायाकृत मोहरूप अंधकार में देह व्यवहार आत्मवत्
सांचेकी भ्रांति होती है अरु विचार करिकै देखिये तौ कछुभी सत्यता नहीं है काहेते जो सुनाजाता है
यथामेरे पिता पितामहादि धनी विद्वान् स्वरूप वानरहे हैं पुनः जो देखा जात यथा तनस्त्री पुत्रधन धामादि
अथवा जो मनुष्यों करिकै स्मरण किया जात यथा अधिकधन उत्तम पुत्र पौत्र बड़ाई ऋद्धि सिद्धि
अचल सुख इत्यादि यावत् सुनव देखव स्मरण करना है (तत्सर्वं असत् एव हि) तौ न सब भूँठा है निश्चय
करिकै कौन भ्रांति यथा स्वप्ने बिषे मनोरथ सत्य देखाते हैं जागेपर वृथा हैं तथा विचारे लोक व्यवहार
भूँठा है २५ (संसारवृक्षरथ दृढमूलं देह एव हि स्मृतम् तन्मूलः पुत्रदारादिबंधः अन्यथा आत्मनः
ते किं) प्रभु कहत है लक्ष्मण संसार रूपवृक्ष अनादि है जामे सत्त्व रजतम महातत्त्वये चारि त्वचा
षड् उर्मिस्कंध पचीस प्रकृती शाखा मनोरथ दल वासना फूल दुःख सुख फल इति संसार वृक्षकी
पोढीजर देहै को निश्चय करि जानिये तन्मूल अर्थात् तिस देहकी मूल पुत्रदारा धनधाम धराभोजन
वासन भूषण बाहन शय्या गान गंधपानादि यावत् देह सुखसाजके मनोरथ हैं सोई बंधन है अर्थात्
संसार वृक्षकी मुख्यजर देह है ताके सुखहेतु जो अनेक मनोरथ की वस्तु हैं सो उस जरमें अनेक
जरै लगीं जिनते वृक्षपुष्ट है अरु जो देह व्यवहार न होता तौ अन्यथा कहे और कछु आत्मामें तेही पुत्रादि
कहां हैं जो बंध न होता तौ संसार की दृढमूल देह है २६ ॥

देहस्तु स्थूलभूतानां पंचतन्मात्रपंचकम् ॥ अहंकारश्च बुद्धिश्च इंद्रियाणि तथा द
श २७ चिदाभासो मनश्चैव मूलप्रकृतिरेव च ॥ एतत्क्षेत्रमिति ज्ञेयं देह इत्यभिधीय
ते २८ एतैर्विलक्षणो जीवः परमात्मानिरामयः ॥ तस्य जीवरयविज्ञाने साधनान्यपि न
शृणु २९ जीवश्च परमात्मा च पर्यायो नात्र भेदधीः ॥ मानाभावस्तथा दंभहिंसादि
परिवर्जनम् ३० पराक्षेपादिसहनं सर्वत्रावकृतस्तथा ॥ मनोबाह्याय सद्गुणाय सद्
गुरोः परिसेवनम् ३१ ॥

(स्थूलदेहः पंचभूतानां तु तन्मात्रपंचकम् अहंकारश्च बुद्धिश्च च तथा दश इंद्रियाणि) पशुपक्षी
मनुष्यादि देह जो प्रसिद्ध देखिपरती है स्थूल देह सो आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी इन पांचौ
भूतनकी है पुनः शब्द स्पर्शरूप रस गंध इति तन्मात्रा पांचौ अरु अहंकार पुनः बुद्धि पुनः तथा दश
इंद्री यथा कान्तत्त्वचा नेत्र जिह्वा नासिका इति पंचज्ञान इंद्री हैं हाथ पद मुख गुदालिंग ये पंचकर्म
इंद्री २७ (च एव मनः मूलप्रकृतिः एव च चित् आभासः एतत्क्षेत्रं इति ज्ञेयं देह इति अभिधीयते) पुनः
निश्चय करिके मन इत्यादि अठारह तत्त्व की सूक्ष्म देह है तिन स्थूल सूक्ष्म दोऊ को बनावने
वाली मूल प्रकृति निश्चय करिकै है जो कारण देह कहावती इसको चैतन्य करने वाला चित्

आभासः अर्थात् चैतन्य जोपरमात्मा ताकी आभास नामप्रकाश है ताहीके प्रकाश ते देह प्रकाशित है यह सब जो कहि आये यही क्षेत्र है ऐसा जानिये देह भी इसी को कहते हैं २८ (जीवः एतैः विलक्षणः निरामयः परमात्मा तस्य जीवस्य अपि विज्ञाने साधनानि मेष्टृणु) अरु जीव कैसा है कि स्थूल सूक्ष्म कारणादि देहन करि विलक्षण हेतु रहित स्वइच्छित है नहीं है रोग दोषादि जामें ऐसा परमात्मा ही है सोई कारण माया ग्रहण करि आत्मदृष्टि भूलि प्राकृत है कार्य माया वश देह व्यवहार में परा ताही जीव को निश्चय विज्ञान होने के साधन हमसों सुनौ २९ (परमात्मा च जीवः पर्यायः अत्र भेदधीनमानाभावः तथा दंभ हिंसा आदि परिवर्जनम्) प्रभु बोले हे लक्ष्मण परमात्मा पुनः जीवात्मा दोऊ की पर्याय अर्थात् परिपाटी रीति में भेद बुद्धी यहां नहीं है भाव यथा पिता को अंशमाता में परि पुत्र होत तामे स्वरूपता जाति पद स्वभावादि पितैके गुण होने ते प्रशंसा पूर्वक पितै को पद पावत अरु प्रतिकूलते सब जात तथा परमात्मा को अंश आदि प्रकृति में परि जीवात्मा भयो सोऊ परमात्मा की रीति पर चलै तो भेद बुद्धी नहीं है अभेद बुद्धी विज्ञान धाम है कब जब मान को अभाव देहाभिमान न राखै तथा दंभ हिंसादि त्याग करै भाव सांचे आचरण करै जीवन पर दया राखै ३० (सर्वत्र अवकृतः पराक्षेपादिसहनंतथामनः वाक्कायसद्वक्त्या सत् गुरोः परितेवनं) सबठौर टट्टाई त्यागि सीधे स्वभाव ते रहै कौन भांति (पराक्षेप आदिसहनं) अर्थात् कोऊ निंदादि करे ताको सहिलेना ताही भांति अमान है मन लगाय कै प्रिय वचन बोलिकै श्रद्धायुत देहकरि इत्यादि भक्ति अर्थात् प्रीतिसहित सद्गुरु की सेवा करना ३१ ॥

बाह्याभ्यन्तरसंशुद्धिः स्थिरतासत्क्रियादिषु ॥ मनोवाक्कायदण्डचविषयेषु निरीहता ३२ निरहंकारता जन्मजराद्यालौचनंतथा ॥ असक्तिः स्नेहशून्यत्वं पुत्रदारधनादिषु ३३ इष्टानिष्टागमे नित्यं चित्तस्य समता तथा ॥ मयि सर्वात्मके रामे हि न्यविषयामतिः ३४ जनसंवाधरहितशुद्धदेशनिषेवणम् ॥ प्राकृतेर्जनमंघेऽचह्यरतिः सर्वदा भवेत् ३५ ॥

(बहिः अभिः अन्तरयोः संशुद्धिः) बाहेर दिशादि मे अनेक बार साटी लगाय स्नानादिते शुद्ध रहै भीतर कामादि विकार त्यागि शुद्ध रहै (सत्क्रियादिपुस्थिरता) संध्या तर्पण पूजा पाठादि जो सत् क्रिया हैं तिन के करने में मन तन मे स्थिरता राखै (मनः वाक्कायदण्डः) मनमें परधन परस्त्री हरणादि न आवै पावे वचन ते काहूको अपवाद न करै देहते असत्कर्म न होने पावे इति दण्ड राखै (चविषयेषु निरीहता) शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषयनमें इन्द्री द्वारा इच्छान उठने पावे ३२ (निरहंकारता तथा जन्मजरादिआलोचनं पुत्रदारधनादिषु असक्तिः शून्यत्वं) जातिविद्या महत्त्व रूप यौवनादि देहाभिमान न होने पावे ताही प्रकार जन्म वृद्धावस्था मरण नरकसांसति गर्भवास इत्यादि दुःखों पर दृष्टि राखै भाव संसार बन्धनके साज न करै पुनः स्त्रीविषे असक्ती पुत्र में सनेह इत्यादि करिकै शून्यभाव देहके सनेहिन ते उदासीन रहै धनपर लोभ न राखै ३३ (इष्ट अनिष्ट आगमे नित्यं चित्तस्य समता) इष्ट जो प्रियवस्तु यथा धरणी धन पुत्रादि की लाभ तथा अनिष्ट अप्रियवस्तु यथा पुत्रादि वियोग हानि रुजादि इत्यादि के आये पर हर्ष विषाद रहित नित्यही चित्तको बराबर राखै पुनः (तथा सर्वात्मके मयि रामे हि अनन्यविषयामतिः) तैसेही सर्वात्म

जो मैं रामहों त्यहिबिषे निश्चयकरि अनन्य भक्तिकी विषयमें बुद्धिराखै भाव सवमें व्यापकजानि केवल मोहीं में प्रीतिराखै ३४ (जनसंवाधरहित) मनुष्यों की भीर जहां न होतीहो (शुद्धवेशनिषे-
वणम्) जो तीर्थादि पावन देशहोइ तहां बासकरै (चप्राकृतैःजनसंघैःसर्वदाहि भरतिः भवेत्) पुनः
प्राकृत विषयी मनुष्यों को साथहू रहिकै सर्वकालमें निश्चय करिकै उनसो प्रीति न करै उदासीनै
बनारहै मनु न मिलावै ३५ ॥

आत्मज्ञानेसदोद्योगोवेदान्तार्थावलोकनम् ॥ उक्तेरेतैर्भवेज्ज्ञानंविपरीतैर्विपर्य-
यः ३६ बुद्धिप्राणमनोदेहाऽहंकृतिभ्योविलक्षणः ॥ चिदात्माऽहंनित्यशुद्धोबुद्धएवेति
निश्चयम् ॥ येनज्ञानेनसंवितेतज्ज्ञानंनिश्चितंचमे ३७ विज्ञानंचतदैवैतत्साक्षाद्
नुभवद्यदा ॥ आत्मासर्वत्रपूर्णःस्याच्चिदानंदात्मकोऽव्ययः ३८ ॥

(आत्मज्ञानेसदाउद्योगः) आत्मज्ञान होनेमें सदा उद्योग अर्थात् उत्साह राखै अरु (वेदांतस्य
अर्थअवलोकनम्) आत्मरूप सांचा लोक व्यवहार मिथ्या इत्यादि जो वेदांतशास्त्रको अर्थ है ताही
को सदा देखना (उक्तैःएतैःज्ञानं भवेत् विपरीतैः विपर्ययः) हे लक्ष्मण जो हमकहि आये हैं इसी
व्यापार करिकै ज्ञान होताहै अरु इस व्यापार ते विपरीत भाव देहादि सांचा मानि ताही सुखकी
उपाय में लगे रहने ते विपर्यय अर्थात् उलटा अज्ञानकरि भव बंधन होताहै ३६ (बुद्धि प्राण मनः
देह अहंकृतिभ्यः विलक्षणः नित्यशुद्ध बुद्धः अहंचित् आत्मा इति एवमेव ज्ञानेन निश्चयं संविते
तत् ज्ञानंचमे निश्चितं) पदार्थ निरूपण करनेवाला अंतःकरण बुद्धि है श्वासादि वायु प्राण हैं संक-
ल्प विकल्प करने वाला अंतःकरण मन है सूक्ष्म स्थूल कारणादि देह पदार्थ निश्चय करने वाला
जो अहंकार है इत्यादि ते विलक्षण न्यारा कारण रहित नित्यही शुद्ध बुद्ध में जो चैतन्य आत्माहों
इति सत्यता (येन ज्ञानेन निश्चयं संविते) अर्थात् जोने ज्ञान करिकै निश्चयको प्राप्त होय भाव देह
प्राण मनादि ते भिन्न आत्मासदा एकरस चैतन्यहै इति सत्यता जब आवै (तत्ज्ञानंच मे निश्चितं)
अर्थात् सोई ज्ञान मेरा निश्चय है भाव देह व्यवहार झूठामानि आत्महीको सत्यमानना यही मेरो
कहा हुआ ज्ञानहै ३७ (अव्ययः चित्आनंद आत्मकः सर्वत्र आत्मापूर्णः स्यात् एतत्साक्षात् अनुभ-
वत् यदा तदा एवच विज्ञानं) अव्यय नाशरहित चित्त सदा चैतन्य आनंदरूप आत्मा जो है सो
सर्वत्र भूतमात्र में एक आत्माही परिपूर्ण है एतत् अर्थात् यही विचार साक्षात् अनुभवत् प्रसिद्ध
तदाकारहोत यदा जोने समय में (तदा एवच विज्ञानं) ताहीसमय में निश्चय विज्ञानहै भाव देह
व्यवहार असार आत्मसार सत्य विचारना ज्ञान है अरु जब देहसुख भूलि आत्मरूपही में तदाकार
बने रहना सो विज्ञान है ३८ ॥

बुद्ध्याद्युपाधिरहितःपरिणामादिवर्जितः ॥ स्वप्रकाशेनदेहादीन्भासयन्ननपाठ-
तः ३९ एकएवाद्वितीयश्चसत्यज्ञानादिलक्षणः ॥ असंगःस्वप्रभोद्रष्टाविज्ञाने
नावगम्यते ४० आचार्यशास्त्रोपदेशादैक्यज्ञानंयदाभवेत् ॥ आत्मनोर्जीवपर-
योर्मूलाविद्यातदेवहि ॥ लीयतेकार्यकरणैःसहैवपरमात्मनि ४१ सावस्थामुक्तिरि-
त्युक्ताह्युपचारोयमात्मनि ४२ इदंमोक्षस्वरूपंतेकथितंरघुनंदन ॥ ज्ञानविज्ञान
वैराग्यसहितंमेपरात्मनः ४३ ॥

(बुद्धिआदिउपाधिरहितः) आत्मा कैसा है कि अहंकारकी निश्चय मनकी विकल्प चित्तकी चिंतवन बुद्धिको विचार इत्यादि उपाधि जामें नहीं है (परिणामआदिवर्जितः) कामक्रोधादि विकार जामें नहीं हैं (अनपातृतःस्वप्रकाशेनदेहादीनभासयन्) आप आवरण रहित स्वयं प्रकाश रूप अपनीप्रकाश करिके मन इंद्री देहादि को प्रकाशमान चैतन्य किहे हैं ३६ (सत्यज्ञानादिलक्षणः अद्वितीयःएकएव) सत्य ज्ञान आनंद इत्यादि लक्षणयुत जाकी समताको दूसरा नहीं है एक ही निश्चय करिके है (असंगः) जाके संग कोऊ नहीं है (स्वप्रभोद्वृष्टा) स्वयं प्रकाशमान सब को देखने वाला है (विज्ञानेनअवगम्यते) विज्ञान करिके जानिबे की गम्य है ४० (आचार्यशास्त्रउपदेशात्तदा जीवात्मनःपरयोःऐक्यज्ञानं भवेत्) आचार्यों के उपदेश वा वेदांत अवलोकनरूप उपदेशते जब जीवात्मा परमात्मा की एकता ज्ञान होत (तदाएवहिमूल अविद्याकार्यकारणैः सहएव परमात्मनिलीयते) तासमै में निश्चयकरि मूल अविद्या माया जोहै सो कार्य कारण माया करिके सहित निश्चयकरि परमात्मा विषे लीन है जात ४१ (साअवस्थामुक्तिः सो अवस्था मुक्ति है (अयंआत्मनि उपचारः) यही आत्मरूप में उपायहै अर्थात् जीवात्मा परमात्माकी एकता ज्ञानहोना सोई अवस्था मुक्ति इत्यादि कही जाती है निश्चय करि हे लक्ष्मण जो पूर्व कहि आये यही आत्म रूप विषे सत्यता लावने की उपाय है सो विचार करने समय में वह कैसी रीतिहै यथा किसी राजा को स्वप्न में सर्वस हरिगया शत्रु बंधन में परा यद्यपि न कलु गया न दुःखहै परंतु बिना जागे मिटी न तथा जीव विषय निद्रा वश मोह रात्री में सोवत स्वप्नवत् चिदानंद घन रहित भव बंधन में परा सोहानि दुख वृथाहीहै परंतु बिना ज्ञान भये मिटै गो नहीं ज्ञान भये हानि दुःख वृथाही है ४२ (रघुनन्दनज्ञान विज्ञान वैराग्यसहितं परमात्मनिद्वंदं मोक्षस्वरूपमेते कथितं) हे लक्ष्मण ज्ञान विज्ञान वैराग्य सहित परमात्म संबंधी यह जो मोक्ष को स्वरूप है सो तौ हम परिपूर्ण तुम प्रति कहा है ४३ ॥

किंतेतदुर्लभंमन्येमद्भक्तिविमुखात्मनाम् ॥ चक्षुष्मतामपियथारात्रौसम्यक्नदृश्यते ४४ पदं दीपसमेतानां दृश्यते सम्यगेव हि ॥ एवं मद्भक्तियुक्तानामात्मा सम्यक् प्रकाशते ४५ मद्भक्तेः कारणां किंचिद्वक्ष्यामि शृणु तत्त्वतः ॥ मद्भक्तसंगो मत्सेवा मद्भक्तानां निरंतरम् ४६ एकादश्युपवासादि मम पर्वानुमोदनम् ॥ मत्कथाश्रवणोपाठव्याख्याने सर्वदारतिः ४७ ॥

(किंतु मद्भक्तिविमुखात्मनाम् एतदुर्लभंमन्ये) प्रभु बोले हे लक्ष्मण यह जो साधन सहित भक्ति को स्वरूप कहा सो मेरी भक्ति सहित सुलभ है परंतु मेरी भक्ति ते विमुख जिन की आत्मा हैं तिनको यह साधन युत मुक्ति दुर्लभही होताहै भाव रूखाज्ञान अम वृथा है यथा भागवते ॥ श्रेयः सृतिं भक्ति मुदस्यते विभोऽक्षयं तिये केवल बोधलब्धये ॥ तेषामसौ क्लेश एव शिष्यते नान्यद्यथास्थूलतुपावयातिनाम् ॥ महारामायणे ॥ ये रामभक्तिममज्ञांसुविहाय रम्यां ज्ञानेरताः प्रतिदिनं परि क्लिष्टमार्गे ॥ आरान्महेंद्रपुरभोपारित्यज्यमूर्त्ताः अर्कभजंति सुभगे सुखदुःखहेतुम् ॥ इत्यादि बिना भक्ति आत्म रूप की प्राप्ती नहीं है सक्तीहै कौन भाति (यथाचक्षुष्मतां अपिरात्रौ सम्यक् न दृश्यते) जैसे नेत्रवंत को भी निश्चय करि रात्रीमें संपूर्ण यथार्थ वस्तु नहीं देख परती है ४४ (दीपसमेतानां सम्यक्पदं एव हि दृश्यते एवं मद्भक्ति युक्तानां सम्यक् आत्मा प्रकाशते) जे जन दीपक समेत हैं

तिनको सम्यक् पदं संपूर्ण स्थान जो है सो सब निश्चयकरि देखिपरता है इसी प्रकार जे जन, मेरी भक्ति युक्त हैं तिनको संपूर्ण आत्मा प्रकाश करता है ४५ (मत्भक्तेः किंचित्कारणं तत्त्वतः वक्ष्यामि शृणु मत्भक्तसंगः मत्सेवा निरंतरं मत्भक्तानां सेवा) हे लक्ष्मण मेरी भक्तिको जो कछु कारण है ताहि तत्त्व करि मैं वर्णन करता हों सो सुनौ, मेरे भक्तन को संग करै अरु मेरी सेवा अरु सदा मेरे भक्तन की सेवा करै ४६ (एकादशी आदि उपवासममपर्वणि अनुमोदनमूर्त्तवदा मत्कथाश्रवणे पाठे व्याख्या नेरतिः) एकादशी बरहौ महीना की अरु भाद्र कृष्ण अष्टमी रामनेवमी वावन द्वादशी अनंत चतुर्दशी इति व्रत करै पुनः मेरे पर्व नवमी आदि आदिकों में उत्साह करै अरु सब काल में मेरी कथा रामायणादि श्रवण करने में तथा पाठ करने में ताको व्याख्यान अर्थात् विधि पूर्वक अर्थ प्रसिद्ध करने में रति अर्थात् प्रीति राखै ४७ ॥

मत्पूजापरिनिष्ठा च मम नामानुकीर्तनम् ॥ एवं सततयुक्तानां भक्तिरव्यभिचारिणी
मयि संजायते नित्यं ततः किमवशिष्यते ४८ अतो मद्भक्तियुक्तस्य ज्ञानं विज्ञानमेव
च ॥ वैराग्यं च भवेच्छीघ्रं ततो मुक्तिमवाप्नुयात् ४९ कथितं सर्वमेतत्तत्त्वप्रणु-
सारतः ॥ अस्मिन् मनः समाधाय यस्तिष्ठेत्स तु मुक्तिभाक् ५० न वक्तव्यमिदं यत्ना-
न्मद्भक्तिविमुखाय हि ॥ मद्भक्ताय प्रदातव्यमाहूयापि प्रयत्नतः ५१ य इदं तु पठेन्नित्यं
श्रद्धाभक्तिसमन्वितः अज्ञानपटलध्वातं विधूय परिमुच्यते ५२ ॥

(मम नामानुकीर्तनम् च मत्पूजा परिनिष्ठा एवं सतत युक्तानां अव्यभिचारिणी भक्तिः मयि संजायते नित्यं ततः अवशिष्यते किं) मेरे नाम को सदा जाप करना पुनः मेरी पूजा करने में विश्वास राखना इसी प्रकार सदा इन साधन युक्त रहने वालेन के उरमें अव्यभिचारिणी भाव जो किसी समय जो छूटि नहीं सकती है अवल प्रेमाभक्ति मेरे बिषे उत्पन्न ह्वै नित्यहीं बनी रहती है तब फिरि विराग ज्ञान विज्ञानादि बाकी क्या रहिगया ४८ (अतः मत्भक्ति युक्तस्य ज्ञानं च विज्ञानं च वैराग्यं एव शीघ्रं भवेत् ततः मुक्तिं अवाप्नुयात् ताते हे लक्ष्मण मेरी प्रेमाभक्ति युक्त पुरुषके ज्ञान पुनः विज्ञान पुनः वैराग्य निश्चय करिकै शीघ्रहीं होते हैं ताते मुक्ति पदको प्राप्त होता है ४९ (तव प्रदानानुसारतः एतत् सर्वं तं कथितं अस्मिन् मनः समाधाय तु यः तिष्ठेत् समुक्तिभाक्) हे लक्ष्मण तुम्हारी प्रण-
नुसार अर्थात् जै बातें पूछेउ तिनकी योग्य प्रति उत्तर जैसा चाहिये सो सब तुमप्रति कहा इन सा-
धन बिषे मनको लगाय पुनः जो स्थिर बनारही सो मुक्तिको भागी होई ५० इदं यत्नात् मत्भक्ति विमुखाय हि न वक्तव्यं मद्भक्ताय प्रयत्नतः अपि आहूय प्रदातव्यं) हे लक्ष्मण यह जो मेरा सिद्धांत है ताहि यत्नते गुप्त राखना काहेते जो मेरी भक्ति ते बिमुख हैं तिनके अर्थ निश्चय करि न कहि देना अरु मेरे भक्तके अर्थ यत्नपूर्वक निश्चय करि बुलायकै कहि देना भाव भक्तनको प्रिय है ते हर्षयुत ग्रहण करेंगे अरु बिमुख अनादर करेंगे तिनसो कहना अपराध है ५१ (तुय श्रद्धाभक्ति समन्वितः इदं नित्यं पठेत् अज्ञान पटल कृतध्वातं विधाय परिमुच्यते) पुनः जो मनुष्य श्रद्धा अर्थात् मनकी चाह समेत पुनः भक्ति अर्थात् प्रीति सहित यह जो प्रसंग है ताहि नित्यहीं पढ़ी सो भक्ति ज्ञान प्रकाश करिकै अ-
ज्ञान की धँकियों को किया हुआ जो मोहार्थकार है ताहि नाश करि मुक्त होजायगा ५२ ॥

भक्तानां मम योगिनां सुविमलस्वांतातिशयात्मनां मत्सेवाभिरतात्मनां च विमलज्ञा

नात्मनांसर्वदासंगंयःकुरुतेसदोद्यतमतिःसत्सेवनानन्यधर्मोक्षस्तस्यकरोस्थितोऽ
हमनिशं दृश्योभवेनान्यथा ५३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेआरण्यकाण्डेचतुर्थः सर्गः ४ ॥

(सुविमलस्वातंत्र्यतिशांतात्मनांयोगिनांविमलज्ञानात्मनांचमत्सेवाभिरतात्मनाममभक्तानांसंगः सर्वदाकुरुतेसदाउद्यतमतिःसत्सेवनानन्यधीस्तस्यकरोक्षःस्थितःअनिशंग्रहदृश्योभवेअन्यथान) प्रभु बोले हैं लक्ष्मण यम नियम आसन प्रत्याहार प्राणायामादिकरि सुंदर विमल काम क्रोध लोभादि मलरहित हृदयहै जिनको अरुधारणा ध्यान समाधि आदिकरि विषमता रहित अत्यंत शांत आत्माहै जिनको ऐसे योगिनकी अरु शमदम उपराम तितीक्षा श्रद्धा समाधान विराग विवेक मुमुक्षुता करि विमल ज्ञान आत्मामें है जिनके पुनःमेरीसेवामें प्रीतिसहितलगीरहती है आत्मा जिनकी ऐसे उत्तम मेरे भक्तन को संग जो सदाकालमें करता है अरु ज्ञान भक्ति उत्पन्न हेत सदा उद्यम में बुद्धि लगी रहती है जिनको साधुजन जो हैं तिनहि सेवनमें अनन्य एकांगी बुद्धिहै जिनकी तस्यकरे मोक्षः स्थितः अनिशंतिनके हाथहीमें मोक्ष बसीहै दिनौराति अन्यथा न और उपायते नहीं अर्थात् परिपूर्ण योग ज्ञान युत जे हमारे भक्त हैं तिनको संग सेवन युतज्ञान युतमेरी भक्ति करते हैं तिनहीं को सदा मोक्ष प्राप्त है औरी उपायते नहीं ५३ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे
आरण्यकाण्डेलक्ष्मणप्रवरघुनंदनज्ञानभक्तिवर्णनोनामचतुर्थः प्रकाशः ४ ॥

तस्मिन्कालेमहारण्येराक्षसीकामरूपिणी ॥ विचचारमहासत्वाजनस्थाननिवा
सिनी १ एकदागौतमीतीरेपंचवट्याःसमीपतः ॥ पद्मवज्रांकुशांकानिपदानिजग
तीपतेः २ दृष्ट्वाकामपरीतात्मापादसौंदर्यमोहिता ॥ पश्यंतीसाशनैरायाद्राघवस्य
निवेशनम् ३ तत्रसातंरमानाथंसीतयासहसंस्थितम् ॥ कंदर्पसदृशंरामंदृष्ट्वाकाम
विमोहिता ४ राक्षसीराघवंप्राहकस्यत्वंकःकिमाश्रमे ॥ युक्तोजटावल्कलाद्यैःसा
ध्यंकिंतेऽन्नमेवद ५ ॥

सवैया ॥ शूर्पणखादिकुरुपकियेखरजूभक्तगैवहरावणपाही । हालसुनेभयशोचतहींसुविचारिकियो
तवहींत्यहिताहीं ॥ भारहरेविधिअर्थितयेजगदीशअहैंखलुमानुपनाहीं । सानुजराघवसीयनमोअवतार
धरेजिनभूतलमाहीं ॥ (तस्मिन्कालेजगस्थाननिवाभिनीराक्षसीमहासत्वाकामरूपिणीमहारण्येवि
चचार) शिवजी बोले हे गिरिजा जा समय में लक्ष्मण प्रतिरघुनंदन वार्ताकरतेरहे ताही समय में
कलु और चरित भया सो सुनो जहाँ खरदूपगादि रहतेरहे सोई जन स्थान में रहनेवाली शूर्पणखा
नामे राक्षसीविडापराक्रम है जाके जैसावहै तैसास्वरूप धरिलेनेवाली महावनमें विचरती हुई १
(एकटापंचवट्याःसमीपतःगौतमीतीरेजगतीपतेः पदानिपद्मवज्रअंकुशादिभिःअकानि) एकसमय
पंचवटीके समीपगौतमीनदी के तीर आयवालुकामें क्या देखती है कि पृथ्वीके पतिजो रघुनंदन
तिनके पाँयन के जो कमल वज्रअंकुश इत्यादि सहित पाँयन के चिह्नवने हैं २ (दृष्ट्वापादसौंदर्य

मोहिताकामपरीतात्मापश्यन्तीसाशनैः राघवस्यनिवेशनंआयात्) देखतीभई पाँयन की सुंदरता तातेमोहितहै कामपीडित आत्माचिन्होंको देखती हुई सो शूर्पणखा धीराधीरा रघुनंदनके आश्रमहि अई ३ (तत्रसाकामविमोहिताकंदर्पसदृशंरमानाथंरामंतंसीतयासहसंस्थितंदृष्ट्वा) तहाँआश्रमबिप सो काम मोहित शूर्पणखा कामतुल्य सुंदरलक्ष्मीनाथजो रघुनंदनतिनहि सीताकरिकै सहितबैठे हुये देखिकै तबजानिवेकीइच्छाकरिबोली ४ (राक्षसीराघवंप्राहत्वंकःकस्यजटावलकलाद्यैः युक्तःकिंआश्रमे अत्रतेकिंसाध्यमेवद) शूर्पणखा राक्षसी रघुनंदन प्रतिबोली कि तुम कोहो भाव कौनवरणहो क्या नामहै किसके पुत्र हो शीशमें जटा तनमें बलकलादि मुनिवसन युक्त क्यों इसआश्रममेंवास किहे अरुइहाँ तुम क्याप्रयोजनसाधतेहो सो मो प्रतिकहो ५ ॥

अहंशूर्पणखानामराक्षसीकामरूपिणी ॥ भगिनीराक्षसेंद्रयरावणस्यमहात्मनः
६ खरेणसहिताभ्रात्रावसाम्यत्रैवकानने ॥ राज्ञादत्तंचमेसर्वमुनिभक्षावसाम्यहम्
७ त्वांतुवेदितुमिच्छामिवदमेवदतांवर ॥ तामाहरामनामाहमयोध्याधिपतेःसुतः
८ एषामेसुंदरीभार्यासीताजनकनंदिनी ॥ सतुभ्राताकनीयान्मेलक्ष्मणोऽतीवसुं
दरः६किंकृत्यंतेमयाब्रूहिकार्यंभुवनसुंदरि ॥ इतिरामवचःश्रुत्वाकामार्तासाऽब्रवीदि
दम् १० एहिराममयासाक्षिरमस्वगिरिकानने ॥ कामार्ताऽहंनशक्नोमित्यक्तुत्वांक
मलेक्षणम् ११ ॥

(राक्षसेंद्रस्यमहात्मनःरावणस्यभगिनीअहंशूर्पणखानामकामरूपिणीराक्षसी) मोकोजानां चाहोँ तौ राक्षसों के राजामहानपुरुष रावणकी बहिन में शूर्पणखा नामे इच्छापूर्वक रूपधरने वालीराक्षसी हों ६ (भ्रात्राखरेणसहिताभ्रात्रकाननेएववसामिचराज्ञामेसर्वदत्तंअहंमुनिभक्षावसामि) अपने भाई खरकरिकै सहित इसी वनमें निश्चय करिबसतीहों पुनः राजा रावणने मोको इहाँकी सवराज्य दे दियाहै ताते मैं मुनिनको भक्षण करती हुई इहाँ वास करतीहों ७ (तुत्वांतुवेदितुमिच्छामिवदतांवरमे वदतांआहअहंरामनामअयोध्याधिपतेःसुतः) पुनः जातिकुल पिताधामादि आपको जानाचाहतीहों हे बोलने वालेन में उत्तम मो प्रतिआपना हालकहिये त्यहि शूर्पणखा प्रतिप्रभु बोले हमारा रामनाम है अयोध्याके राजा दशरथके पुत्रहैं ८ (एषामेसुंदरीजनकनंदिनीसीतामेभार्यातुसअतीवसुंदरःलक्ष्मणः मेकनीयान्भ्राता) यहजो सुंदरीहै सो जनक की पुत्री सीतानाम मेरी प्रत्नीहै पुनः सो जो अत्यंत सुंदर हैं ये लक्ष्मण नामे हमारे छोटे भाई हैं ९ (भुवनसुंदरिमयाकृत्यतेकिंकार्यंब्रूहिइतिरामवचः श्रुत्वासाकामार्ताइदमब्रवीत्) प्रभुबोले हे भुवन भरेमें प्रसिद्ध परम सुंदरी हम करिकै करिबे योग्य तेरा क्याकार्य है सो कहूँ यामे रावणसों विरोधको कारण है ऐसाजानिअनुकूलता जनाय बचनकहे इत्यादि रघुनंदन के बचन मुनि सो शूर्पणखा काम बाधाकरि दुखित ऐसाबचन बोली १० (राम एहिरिकाननेमयासाक्षिरमस्वअहं कामार्ताकमलेक्षणमत्वांत्यक्तुंशक्नोमिन्) हेराम इहाँ आवौ पर्वत बनबिपेमेरेसाथ सुखपूर्वक बिहारकरौ क्योंकि तुमहिदेखि मैं कामकरिकै पीड़ितहों अरुकमलवत्नयन परम सुंदर जो आप तिनहिं त्यागिबे योग्य मैं नहींहों भावअसंक हों ताते ११ ॥

रामःसीताकटाक्षेणपश्यन्सस्मितमब्रवीत् ॥ भार्याममेषाकल्याणीविद्यतेह्यनपा
सुनी १२ त्वंतुसापत्न्यदुःखेनकथंस्थास्यसिसुंदरि ॥ बहिरास्तेममभ्रातालक्ष्मणोऽ

तीवसुंदरः १३ तवानुरूपोभवितापतिस्तेनैवसचर ॥ इत्युक्तालक्ष्मणंप्राहपति
मेभवसुंदर १४ आतुराज्ञांपुरस्कृत्यसंगच्छावोऽद्यमाचिरम् ॥ इत्याहराक्षसीघो
रालक्ष्मणंकाममोहिता १५ तामाहलक्ष्मणसाध्विदासोऽहंतस्यधीमतः ॥ दासी
भविष्यसित्वंतुनतोदुःखतरंनुकिम् १६ तमेवगच्छभद्रंतेसतुराजाऽखिलेश्वरः ॥
तच्छ्रुत्वापुनरप्यागाद्राघवंदुष्टमानसा १७ ॥

(कटाक्षेणसीतांपश्यन् रामः सस्मितं ब्रवीत् एपाकल्याणीममभार्या अनपायनी विद्यते हि) कटाक्ष
करि कै सीतहि देखतमंते रघुनन्दन सहित मुसुकानि वचन बोले कि मैं कैसे तुम्हारे पास आवी
देखिये यह कल्याणी भाव स्वरूपवंत मुग्धा पद्मिनी प्रियभाषिणी शीलक्षमावंत पतिव्रता इत्यादि
कल्याण गुण भरी मेरी वामाङ्गी जो किसी समय में छूटने वाली नहीं सो प्रसिद्धमेरे पासही बैठी
है १२ (तुसुंदरित्वंसापत्न्यदुःखेनकथस्यास्यसि अतीवसुंदरः ममभ्रातालक्ष्मणः बहिःआस्ते) पुनः
हे सुंदरि तुम जो दूसरी पत्नी है रहाचाहत हौं तौ सर्वांत जनित महा दुःख करिकै पीड़ित कौन
भांति मेरे पास रहि सकौगी ताते मेरा कहा करौ निश्चित विहरौ अत्यंत सुंदर मेरे भाई लक्ष्मण
बाहेर बैठे हैं पत्नी हीन हैं १३ (तवअनुरूपःपतिः भविता तेन एव संचरइति उक्ता लक्ष्मणं प्राह
सुंदरमेपतिःभव) मो लक्ष्मण तेरी योग्य पति होयेंगे ताके संगनिश्चय करि वन में विहार करुं ऐ
सा रघुनाथ जी कहे तव शूर्पणखा जाय लक्ष्मण प्रति बोली हेसुंदर राजकुमार मेरे पति होउ १४
(आतुआज्ञांपुरस्कृत्य अद्यसंगच्छावःमाचिरम् इतिकाममोहिताघोरा राक्षसीलक्ष्मणंप्राह) कैसे मेरे
पतिहोउ आपने बड़े भाई की आज्ञा लैकै आवो तुम हम विहार हेत इसी समय वनमें चली मति
विलम्ब करौ इत्यादि वचन काम मोहित है भयंकर राक्षसी लक्ष्मण प्रति बोली १५ (लक्ष्मणः
तांप्राहसाध्विअहंधीमतः तस्यदासःतुत्वदासी भविष्यसिततः नुदुःखतरंकिम्) लक्ष्मण जी त्यहिशू
र्पणखा प्रति बोले हेसाध्वि भाव तुम पति सेवामें तत्पर रहने योग्य बुद्धिवंत हौं तौ मेरी अनुकूल
अवश्यही रहौं गी अरु मैं बुद्धिवंत आज्ञानुकूल कार्य करने वाला तिन रघुनन्दन को दास हौं पुनः
तुमहूँ दासी हैहौं तव फिरि याते अधिक दुःख क्याहै ताते मेरी पत्नी नहो १६ (तेभद्रंतंएवगच्छ
तसअखिलेश्वरःराजातत्श्रुत्वादुष्टमानसा राघवंपुनःअपिआगात्) तेरा कल्याण होय उनहींके पास
निश्चयकरि जासोरघुनाथजी सबकेस्वामीराजाहैं भावउनको अनेकन रानी करनायोग्य इतिलक्ष्मण
जीको कहा पुष्टवचन सो सुनि दुष्टहैमनजाको सो शूर्पणखा रघुनन्दनके पास पुनःनिश्चय करिगई १७॥

क्रोधाद्रामकिमर्थमांभ्रामयस्यनवस्थितः ॥ इदानीमेवतांसीतांभक्षयामितवाग्र
तः १८ इत्युक्ताविकटाकाराजानकीमनुधावती ॥ ततो रामाज्ञयाखड्गमादायपरि
गृह्यताम् १९ चिच्छेदनासाकर्णौचलक्ष्मणोलघुविक्रमः ॥ ततोघोरध्वनिंकृत्वा
रुधिराक्तवपुर्द्रुतम् २० क्रंदमानापपाताग्रेखरस्यपरुषाक्षरा ॥ किमेतदितितामाह
खरःखरतराक्षरः २१ केनैवकारितासित्वंमृत्योर्वक्त्रानुवर्तिना ॥ वदमेतदधिष्या
मिकालकल्पमपिक्षणात् २२ ॥

(क्रोधात् राम अनवस्थितः कि अर्थ मां भ्रामयसि सीतां तां इदानीं एवतव अग्रतः भक्षयामि)
क्रोधते बोली इति शेषः हे राम सत्यवात पर नहीं स्थितहोते हौं किम हेत मोहिं इत्थर उधर भ्रमा-

वते हौ जो प्रीति बश सीता की भयमानते हौ तिनहिं इसी समय निश्चय करि तुम्हारे आगे खाये लेती हौं १८ (इति उक्त्वा विकटाकारा जानकी अनुधावती) सीता को खाय लेउंगी ऐसा कहि शूर्पणखा भयंकर रूप करि जानकी जीकी दिशि धावती भई १९ (ततः रामाज्ञया लक्ष्मणः लघुविक्रमः तां परिगृह्य खड्गं आदाय नासांच कर्णौ चिच्छेद ततः घोरध्वनिं कृत्वा बभूव रुधिराक्तद्रुतम्) तब रघुनन्दनकी आज्ञा करिके लक्ष्मणजी थोरेही बलसों शूर्पणखा जोहै ताहि पकरि तरवारिलैकै नाक पुनः कानदोऊ काटि डारतेभये तब घोरध्वनि करती भई भावमेरे सहायक निकटहोंय तौ धावैं जब छोड़ न देखिपरा तबदेह रक्तसे वूड़ी दशाते शीघ्रहीजाय जनस्थानमें पहुंची २० (क्रंदमाना परुषाक्षरा खरस्य अग्रे पपात खरः खरतराक्षरः तां आह एतत् इति किम्) बड़े बेगते रोवती हुई अरु कठोर बचन कहती हुई शूर्पणखा अपने भाई खरकेआगे गिरि परती भई ताकी दशा देखि खर क्रोधवश खरतर अत्यंत तीक्ष्ण अक्षर मै बानीते त्याहि शूर्पणखा प्रति बोला कि तेरी इसदशाको कारण क्या है २१ (मृत्योः बन्धेऽनुवर्तिना केन एवं त्वं कारितासि मे वद तं कालकल्पं अपिक्षणात् वधिष्यामि) मृत्युके मुखमे जाने वाला किसने इसप्रकार की दशा तेरी करी है सो मो प्रति कहु ताहि जो कल्पों त में काल होने वाला होई तबहुं क्षणै भरे में बध करिहौं २२ ॥

तमाहराक्षसीरामः सीतालक्ष्मणसंयुतः ॥ दण्डकं निर्भयं कुर्वन्नास्ते गोदावरीतटे २३
मामेवं कृतवांस्तस्य भ्राता तेनैव चोदितः ॥ यदि त्वंकुलजातोऽसि वीरोसि जहितौ रिपू २४
तयोस्तुरुधिरं प्रास्ये भक्षयेतौ सुदुर्मदौ ॥ नो चेत्प्राणान् परित्यज्य यास्यामि यमसादनम् २५
तच्छ्रुत्वा त्वरितं प्रागात् खरः क्रोधेन मूर्च्छितः ॥ चतुर्दशसहस्राणि रक्षसां भीमकर्मणाम् २६
चोदयामास रामस्य समीपं बधकांक्षया ॥ खरश्च त्रिशिरश्चैव दूषणश्चैव राक्षसः २७
सर्वे रामं ययुः शीघ्रं नानाप्रहरणोद्यताः ॥ श्रुत्वा कोलाहलं तेषां रामः सौमित्रिमब्रवीत् २८ ॥

(राक्षसीति आह सीतालक्ष्मण संयुतः रामः दण्डकं निर्भयं कुर्वन् गोदावरीतटे आस्ते) राक्षसी शूर्पणखा खर जोहै ताप्रति बोली कि सीताभार्या लक्ष्मणबंधु सहित राम जो हैं अवधेश दशरथ के पुत्र सो दण्डक बनवासी मुनिनको निर्भय करतसंते गोदावरीके समीप पंचवटीमें बास करतेहैं २३ (तेनैव चोदितः तस्य भ्राता मां एवं कृतवान् यदि त्वंकुलजातः असि वीरः असि तौ रिपू जहि) तिसराम की आज्ञा करिके ताहीको भाई लक्ष्मण मेरी यह दशाकरी ताते जो तू राक्षस कुल में उत्पन्न भये होय वीर होय तौ दोऊ शत्रुनको मारु २४ (तुतयोः रूधिरं प्रास्ये एतौ दुर्मदौ भक्षय नो चेत्प्राणान् परित्यज्य यमसादनम् यास्यामि) पुनः उनदोऊ को रक्तजो है ताहिमें पान करिहौं अरु तेदोऊ बलवीर ताको गर्वभरे तिनहिं तुम भक्षण करौ नाहीं तौ मै प्राणत्यागि यमधामहिं जाउँगी २५ (तत् श्रुत्वा खरः क्रोधेन मूर्च्छितः त्वरितं प्रागात् भीमकर्मणाम् चतुर्दशसहस्राणि रक्षसां) शूर्पणखा को कहा बचन सो सुनिके खरक्रोधकरिके बेसुधि तुरतही चलताभया अरु युद्धमें भयंकर कर्म करनेवाले चौदा हजार राक्षस सजिके २६ (वधकांक्षया रामस्य समीपं चोदयामास खरः चैव दूषणश्चैव राक्षसः) मारि डारने की इच्छा करिके रघुनन्दनके पास चलने की आज्ञादिया तथा खरदूषण त्रिशिरादि राक्षस सब अस्त्रसजि बाहनन पर सवारभये २७ (नानाप्रहरणोद्यताः सर्वे शीघ्रं रामं ययुः तेषां कोलाहलं श्रुत्वा

रामःसौमित्रिं अत्रवीत्) चतुरंगिनी सेनासजे खरादि सब राक्षस अनेक भौतिके प्रहरण जो हैं हथियार यथा धनुस्त्राण खड्ग त्रिशूल शक्तिगदा तोमरादि लिहे सब शीघ्रही रघुनाथ जी के सन्मुख जातेभये तिनके अनेकनशब्द एकमेंमिलिभारी शब्दभया ताहिसुनि रघुनन्दन लक्ष्मणप्रतिबोले २८॥

श्रूयतेविपुलःशब्दोनूनमायांतिराक्षसाः॥ भविष्यतिमहद्युद्धंनूनमद्यमयासह २९
सीतांनीत्वागुहांगत्वातत्रतिष्ठमहाबल ॥ हंतुमिच्छाम्यहंसर्वान्राक्षसान्घोररु
पिणः ३० अत्रकिंचिन्नवक्तव्यंशापितोऽसिममोपरि ॥ तथतिसीतामादायलक्ष्म
णो गङ्गरंययौ ३१ रामःपरिकरंवध्वाधनुरादायनिष्ठुरम् ॥ तूणीरावक्ष्यशरौवध्वाय
त्तोऽभवत्प्रभुः ३२ ततआगत्यरक्षांसिरामस्योपरिचिक्षिपुः ॥ आयुधानिविचि
त्राणिपाषाणान्पादपानपि ३३ तानिचिच्छेदरामोऽपिलीलयातिलशःक्षणात् ॥
ततोवाणसहस्रेणहत्वातान्सर्वराक्षसान् ३४ ॥

(विपुलःशब्दः श्रूयतेनूनराक्षसाः आगन्ति अद्यमयासह नूनं महद्युद्धंभविष्यति) प्रभुबोले हे लक्ष्मण बडाभारी शब्दसुनि परताहै तौ निश्चय करि राक्षस आवते हैं ताते या समयमें राक्षसों ते हमकरिके अवश्यही महाभयंकर युद्धहोइगो २९ (महाबल सीतानीत्वा गुहांगत्वातत्रतिष्ठ घोर रुपिणः राक्षसान् सर्वान् हंतुमिच्छामि) हे महाबल लक्ष्मण सीता जो हैं तिनहिं साथलै पहारके गुहाको जाउ तहांवैठो कहते भयंकर रूपराक्षस यावत् आवेंगे तिनहिं सवनको मारिडारिवेको मोको डच्छाहै ३० (ममोपरि शापितः असिअत्र किंचित् न वक्तव्यं तथाइति लक्ष्मणःसीतां आदाय गङ्गरं ययौ) हे लक्ष्मण कदाचित् कहौ तुमगुहाको जाउ हम युद्ध करेंगे इसहेत आपनी गतदै कहताहौ मेरीवातमें कछुभी प्रतिकूल न कहना तव लक्ष्मण बोले कि जैसा आप कहतेहौ तैसाही करोंगा ऐसा कहि लक्ष्मण सीता जो हैं तिनहिं साथलैके पहारकी गुप्त गुहामें जातेभये ३१ (रामःपरिकरंवध्वा निष्ठुरंधनु आदायअक्षयशरौतूणीरौवध्वाप्रभुः यत्तः अभवत्) रघुनंदन उठि बसनते फेट बाँधि कठोर धनुपहाथमें लै जिनमें कवहुं बाणचुकेन ऐसेदोतरकसकटिमें बाँधि इत्यादि युद्धकरिवे योग्य प्रभुवीर ताको बानापहिरते भये ३२ (ततरक्षांसिआगत्यविचित्राणिआयुधानिपाषाणान्पादपान्अपिरामस्य उपरिचिक्षिपुः) ताके पाछे राक्षसभी आय बाण शक्तिगूलादि अनेक भौतिके हथियारपत्थर वृक्षादि निश्चयकरि रघुनंदन के ऊपरचलावतेभये ३३ (तानिराम अपिलीलयाक्षणात्तिलशःचिच्छेदततः सर्वराक्षसान् तान्वाणसहस्रेणहत्वा) राक्षसोंके चलायेजो हथियारहैं तिनहिं रघुनंदन लीलाकरि क्षणे में तिलसम काटि गिराये तब फिरि सब राक्षस जो हैं तिनहिं आपने बाण हजारन चलाय करि मारते भये ३४ ॥

खरंत्रिशिरसंचैवदृषणंचैवराक्षसम् ॥ जघानप्रहराद्धनसर्वानेवरघूतमः ३५ लं
क्ष्मणोऽपिगुहामध्यात्सीतामादायराघवे ॥ समर्पराक्षसान्दृष्ट्वाहतान्विस्मयमाय
यौ ३६ सीतारामंसमालिङ्ग्यप्रसन्नमुखपंकजम् ॥ शस्त्रब्रह्मानिचांगेषुममार्जज
नकात्मजा ३७ सापिदुद्रावदृष्ट्वातान्हतान्राक्षसपुंगवान् ३८ लंकांगत्वासभाम
ध्येक्रोशंतीपादसन्निधौ ॥ रावणस्यप्रपातोव्यामगिनीतस्यरक्षसःदृष्ट्वातारावणः

प्राहभगिनीभयविक्कलाम् ३६ उतिष्ठोतिष्ठवत्सेत्वंविरूपकरणंतव ॥ कृतंशक्रेण
वाभद्रेयमेनवरुणेनवा ४० ॥

(खरंचएवत्रिशिरसंदूषणम् चएवराक्षसंप्रहराद्धैनरघून्तमःसर्वान्एवजघान) खर पुनः त्रिशिरदूष
ण पुनः यावत् राक्षस रहे तिनहिं रघुनन्दन आधे पहरमें सवनको संहार करि दीन्हें ३५ (गुहाम
ध्यातुलक्ष्मणः अपिसीतांआदायराघवेसमर्प्य राक्षसान्हतान् दृष्ट्वाविस्मयंआययौ) गुहा मध्यते ल
क्ष्मण भी सीता जो हैं तिनहिं लाय रघुनन्दन के अर्थ समर्थ सौपि पुनः राक्षस मरेदेखि विस्मय
को प्राप्त भये भाव चौदह हजार चारिदश में अकेले बध किये इति आश्चर्य भया ३६ (प्रसन्नमुख
पंकजमूरामंसीतासंआलिंग्यचअंगेषुशस्त्रव्रणानिजनकात्मजा ममार्ज) प्रसन्नहैं मुख जिन को ऐसे
जो रघुनन्दन तिनहिं जानकी जी हृदय में लगाइ लीन्ही पुनः अंगन में जो शस्त्रव्रण अर्थात् हथि
यारन की चोटै तिनहिं जानकी जी मीजती हैं ३७ (राक्षसपुंगवान्हतान् दृष्ट्वासाअपिदुद्राव)
राक्षसों में श्रेष्ठ खरादि तिनहिं मरे देखि सो शूर्पणखा निश्चय करि लंका को धाई ३८ (लंकां
गत्वा सभामध्येरावणस्यभगिनी तस्यपादसन्निधौ क्रोशंतीउर्व्यापपात राक्षसः रावणःभगिनीविह्वलां
दृष्ट्वातांप्राह) लंका को गई सभा के बीच में रावण की बहिनि शूर्पणखा तिसरावण के पाँयन के
समीप रोदन करती हुई भूमि में गिरि परी तब राक्षस रावण बहिनि जो है ताहि अंग भंग बिकल
देखि त्यहिप्रति बोला ३९ (वत्सेत्वंउत्तिष्ठउत्तिष्ठ तवविरूपकरणंशक्रेणवाभद्रेयमेन वावरुणेनकृतं)
शूर्पणखा प्रति रावण बोला हे वत्से भाव हे बच्ची तू उठु उठु तेरारूप विरूप होना ताहि कहु इंद्र
ने किया अथवा हे कल्याणरूपे तेरा कुरूप यमराजने किया अथवा वरुण ने किया ४० ॥

कुवेरेणाथवाब्रूहिभस्मीकुर्याक्षणेनतम्॥राक्षसीतमुवाचेदंत्वंप्रमत्तोविमूढधीः४१
पानासक्तःस्त्रीविजितःषण्डःसर्वत्रलक्ष्यसे ॥ चारचक्षुर्विहीनस्त्वंकथंराजाभविष्य
सि ४२ खरश्चनिहतःसंख्येदूषणस्त्रिशिरास्तथा ॥ चतुर्दशसहस्राणिराक्षसानां
महात्मनाम् ४३ निहतानिक्षणेनैवरामेणासुरशत्रुणा ॥ जनस्थानमशेषेणमुनी
नानिर्भयंकृतम्॥ नजानासिविमूढस्त्वमतएवमयोच्यते४४॥रावणउवाच॥कोवा
रामःकिमर्थवाक्यंतेनासुराहताः ॥ सम्यक्कथयमेतेषांमूलघातंकरोम्यहम्४५ ॥

(अथवाकुवेरेणब्रूहितंक्षणेन भस्मीकुर्यात् राक्षसीइदंउवाचप्रमत्तः त्वंविमूढधीः) अथवा कुवेर
ने तोहिं कुरूपकिया सो हाल कहु भावजाको बताउ ताहि क्षणे में भस्म करि देउँ इति कहता
हुआ त्यहि रावण प्रति राक्षसी शूर्पणखा इसप्रकार बोली कि मदिरा पान करि प्रमत्त तू मूढ बुद्धी
है ४१ (स्त्रीविजितःपानासक्तःसर्वत्रषण्डः लक्ष्यसेत्वंचारचक्षुःविहीनःकथंराजाभविष्यसि) स्त्री क
रिके जीति लिया गया भाव काम वश है तथा मदिरा पान में असक्त मदांध इति मूढ बुद्धी सर्व
त्र पृथ्वी भरे के बीर तोको नपुंसकें देखाते हैं हरकारा रूप नेत्रन करिके हीन किसप्रकार राजा
होइ गो भाव सर्वत्र को हाल जानता नहीं शत्रु प्रवल भये तू कैसे बच सकता है ४२ (खरःचदूषणः
तथा त्रिशिराःसंख्येनिहतः चतुर्दशसहस्राणिमहात्मनाम् राक्षसानाम्) खर पुनः दूषण तैसे त्रिशिरा
इत्यादि संग्राम में मारेगये अरु चौदह हजार बड़े बलीबीर राक्षसनको ४३ (असुरशत्रुणारामेणएव
क्षणेन निहतानिजनस्थानं अशेषमुनीनां निर्भयंकृतं त्वंविमूढः नजानासिमतएवमयाउच्यते) असु-

रक्षसोंको शत्रु अकेले राम ने निश्चय करि क्षणे में तब राक्षसों को मारि जनस्थानवासी तब मुनिन को अभय डर हीन करि दिये ऐसा हाल है चुका अरु तू ऐसा विगेपि मूढ़ है कि अवहीं तक न जाने ताते मदांघ्रि निश्चय करि ताते मैंने कहा ४४ (रामः कः वार्किर्अर्थवाक्यं तेन असुरा हताः भस्मयन् कथयतेषां अहं मूलघातं करोमि) रावण बोला हे शूर्पणखे राम कौन है अरु कित अर्थ अरु कौन प्रकार अकेलेही तब असुरोंको मारा सो हाल तत्पूर्ण सत्य मो प्रति कहु तौ ताको मैं मूलघात करों भाव परिवार सहित वाको नाग करों ४५ ॥

शूर्पणखावाच ॥ जनस्थानादहं याता कदाचिद्गौतमीतटे ॥ तत्र पंचवटीनामपुरामु निजनाश्रया ४६ तत्राश्रमे मया दृष्टो रामो राजीवलोचनः ॥ धनुर्बाणधर श्रीमान् जटावल्लभमण्डितः ४७ कनीयाननुजस्तस्य लक्ष्मणोऽपि तथाविधः ॥ तस्य भार्या विशालाक्षी रूपिणी श्रीरिवापरा ४८ देवगंधर्वनागानां मनुष्याणां तथाविधा ॥ न दृष्टा न श्रुताराजन्द्योतयंती वनं शुभा ४९ आनेतुमहमुद्युक्ता तां भार्या रथं तवानघ ॥ लक्ष्मणो नाम तद्भ्राता चिच्छेदममनासिकाम् ५० कर्णो च नोदितस्तेन रामेण च महाबलः ततो ह मतिदुःखेन रुदन्ती खरमन्वगात् ५१ ॥

(कदाचित् अहं जनस्थानात् याता गौतमीतटे पंचवटीनाम तत्र पुरामु निजनाश्रया) शूर्पणखा बोली हे रावण एकसमय खरादिके वातस्थल जनस्थानते जाती हुई गौतमीनदीके तटमें पंचवटीनामे स्थल तहां पूर्व मुनिजन बहुत रहते रहें ४६ (तत्राश्रमे श्रीमान् रामः राजीवलोचनः जटावल्लभ मण्डितः धनुर्बाणधरः नया दृष्टः) तिस आश्रममें अपूर्व शोभायुक्त राम कमल नयन शीर्षमें जटा मुनि वसन तनमें शोभित धनुषबाण धारण किहे बैठे मैंने देखा ४७ (तथाविधः तस्य कनीयान् अनुजः लक्ष्मणः अपितस्य भार्या अपराश्रीः इवरूपिणी विशालाक्षी) ताही विधि स्वरूपवंत तिन रामके छोटे भाई लक्ष्मणभी हैं अरु तिन रामकी पत्नी कैसी है जो दूसरी लक्ष्मी के तुल्य स्वरूपवंत सुंदर बड़े हैं नेत्र जाके ४८ (देवगंधर्व नागानां मनुष्याणां तथाविधा न श्रुता न दृष्टा राजन् शुभा वनं द्योतयंती) इंद्रादि देवता तुंबुरादि गंधर्ववासुकी आदि नागभूमिपर यावत् मनुष्य हैं तिनकी स्त्रीनमें वाकी तुल्य न मैंने देखा है न सुना है हे राजन् बठ मंगलमूर्ति रामकी पत्नी आपनी दीक्षिकरि बनहि प्रकाश करती है ४९ है श्लोक एकान्वय है (अनय तव भार्यार्थं तां आनेतुं अहं उद्युक्ता) शूर्पणखा बोली हे निष्पाप रावण तुम्हारी स्त्री वनावै के अर्थ सीता जो है ताहि इहां आनिवै को मैं यत्नि करती रहों सो जानि (महाबलः रामेण नोदितः तद्भ्राता लक्ष्मणः नाम तेन मम नासिकाम् च कर्णो चिच्छेद) महाबलवंत रामने आज्ञा दिया तिन रामके भाई लक्ष्मण नाम ताने मेरी नाक पुनः कान दोऊ काटि डारे (ततः दुःखेन रुदन्ती अहं खरमन्वगात्) तदनंतर दुःख करिकै रोवती हुई मैं खरके समीप जाती भई ५०।५१ ॥

सोऽपि रामं समासाद्युद्धं राक्षसयूथपैः ५२ ततः क्षणेन रामेण तेनेव लशालिना ॥ सर्वे तेन विनष्टा वैराक्षसा भीमचक्रमाः ५३ यदिरामो मनः कुर्यात्त्रैलोक्यं निमिषा दंतः ॥ भस्मीकुर्यान्न संदेह इति भाति मम प्रभो ५४ यदिसा तव भार्या स्यात्स फलं तव जीवितम् ॥ अतो यतस्वराजेंद्र यथा ते वल्लभा भवेत् ५५ सीताराजीवपत्राक्षी सर्व लोके कसंदरी ॥ साक्षाद्भस्मस्य पुरतः स्थातुं त्वं न क्षमः प्रभो ५६ साययामो हयित्वा तु

प्राप्स्यसेतारघूत्तमम् ॥ श्रुत्वा तत्सूक्तवाक्यैश्च दानमानादिभिस्तथा ५७ आश्वा
स्य भगिनीं राजा प्रविवेश स्वकं गृहं ॥ तत्र चिंतापरो भूत्वा रात्रौ निद्रानलब्धवान् ५८ ॥

(सः अपिराक्षसयूपैः संभाताद्य रामं युद्धं) सोखर निश्चय करि राक्षसों के यूपों को साथ लै करि
कै सन्मुख प्राप्त भयाराम प्रति युद्ध किया ५२ (ततः बलशालि नारामेण तेन एव राक्षसा भोम विक्रमा
सर्वेक्षणेन तेन विनष्टा वै) तदनंतर बलशाली राम के संग युद्ध करिके निश्चय करि सब राक्षस बड़े परा-
क्रमी युद्ध में सब क्षण भर में राम ने नाश करि दिया ५३ (प्रभो मम इति भातियदिरामः मनः कुर्यात्निमि-
षार्द्धतः त्रैलोक्यं भस्मीकुर्यात्संदेहः न) हे प्रभु उनको विक्रम देखि मेरे मन में ऐसा भासन कि जो राम
मन करे तो निमेष के आधे काल में तीनि हूलोक भस्म करि देइं यामें संशय नहीं है ५४ (सायद्वित्त्वभार्या
स्यात्तव जीवितं फलम् अतः राजेन्द्र यत्स्वयथा ते वल्लभा भवेत्) सो सीता जो तेरी भार्या होवै तो तेरा
जीवन सफल होवै इस कारण हे राजेन्द्र सोचल करु नित प्रकार तेरी वल्लभा अर्थात् प्रिया पत्नी होइ ५५
(राजीवपत्राक्षी सर्वलोकेषु एक तुंदरी सीता साक्षात् रामस्य पुरतः स्थातुं प्रभो त्वं क्षमः न) कमलदल समनेत्र
जाके सब लोक न बिषे एक ही तुंदरि जो सीता सो साक्षात् राम के आगे बैठी है तिनको जीतिके हरिलीन
चहौ तो हे प्रभो तुम ऐसे समर्थ नहीं हो भावमारे जाउगे ५६ (रघूत्तमं माययामो हयित्वा तु तां प्राप्स्यसे
तत् श्रुत्वा सूक्तवाक्यैः तथा दानमानादिभिः) प्रथम माया करिके रघुवर जो हैं तिनहि मोहित करोत
पुनः युक्ति करितो सीता जो है ताहि प्राप्त होउगे इति ताके वचन सुनि रावण समुभावन योग्य बातों
करि तथा दान आदर करिके ५७ (भगिनी आश्वास्य राजा स्वकं गृहं प्रविवेश तत्र चिंतापरो भूत्वा रात्रौ निद्रां
नलब्धवान्) बहिन जो शूर्पणखा ताहि समुभाय राजा रावण आपने घर में प्रवेश करता भया तहां
चिंता के परवश भया चिंता करते ही राति में नींद न परी शोचि विचार करता रहा ५८ ॥

एकेन रामेण कथं मनुष्यमात्रेण नष्टः भवतः खरो मे ॥ आता कथं मे वल्लभीर्यदर्पयुतो
विनष्टो वतराघवेण ५९ यद्वा न रामो मनुजः परेशो मां हंतुं कामः सवलं बलौघैः ॥ संप्रा
र्थितो यं द्रुहिणेन पूर्वमनुष्यरूपोऽद्य रघोः कुलेऽभूत् ६० वध्यो यदि स्यां परमात्मना हं
वैकुण्ठराज्यं परिपालयेऽहं ॥ नो चेदिदं राक्षसराज्यमेव भोक्ष्ये चिरं राममतो ब्रजा
मि ६१ इत्थं विचिंत्या खिलराक्षसेन्द्रो रामं विदित्वा परमेस्वरं हरिम् ॥ विरोधबुद्धौ
वह्निं प्रयामि द्रुतं न भक्त्या भगवान् प्रसीदेत् ६२ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमासहेश्वरसंवादे आरण्यकाण्डे पंचमः सर्गः ५ ॥

(मे सवलः खरः मनुष्यमात्रेण एकेन रामेण कथं नष्टः वत में आता वल्लभीर्यदर्पयुक्तः राघ-
वेण कथं विनष्टः) रावण चिंता पूर्वक विचार करता है कि मेरी समान बली खर रहा अरु देवता
देव्यादि कोई नहीं मनुष्यमात्र सौऊ सेना रहित अकेलें राम ने कौन प्रकार वाको मारा वत अ-
र्थात् बड़े आश्चर्य की बात है मेरे भाई बलशक्ति अभिमान युक्त ते सेना सहित राघव करिके कैसे
नाश भये ५९ (यद्वा रामः मनुजः न परेणः पूर्वद्रुहिणेन संप्रार्थितः मां हंतुं कामः सवलं बलौघैः अयं
मनुष्य रूपः अद्य रघोः कुले अभूत्) अथवा राम मनुष्य नहीं हैं सब ईशान ते परे ईश परमेस्वर हैं
काहेते पूर्व ही ब्रह्माने प्रार्थना किया है मोहि मारिबे की इच्छा राखि ता हेत सेना बली वानर समूह

सहित ये मनुष्य रूपया समय रघुके कुलमें अवतीर्ण भये हैं ६० (यदि परमात्मना अहं बध्यः स्यां तदा अहं बैकुण्ठराज्यं परिपालये नोचेत् इदं राक्षसराज्यं एव चिरं भोक्ष्ये अतः रामं व्रजामि) रावण विचारे कि जो परमात्मा करिके मेरा बध होई तौ मैं बैकुण्ठ की अविचल राज्य जोहै ताहि पालन करिहौं नाहीं तौ यह दुष्ट राक्षसों की जो नष्टराज्यहै पापरूप ताहि निश्चय करि बहुत काल भोगि हौं इसकारण रामही के समीप जाँउ ६१ (इत्थं विचिंत्य रामं परमेश्वरं हरिं विदित्वा अखिलराक्षसानां इंद्रः विरोधं बुद्ध्या एव हरिं प्रथामि भगवान् भक्त्या द्रुतं न प्रसीदित्) इसप्रकार चिंतवन करि रामहि परमेश्वर हरिजानि के सबराक्षसों को राजा रावण बिचारा कि विरोधबुद्धि करि हरि-को प्राप्त है सकाहौं क्योंकि भगवान् भक्ति करि शीघ्र नहीं प्रसन्न होते हैं ६२ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे
आरण्यकाण्डेशूर्पणखाकुरूपखरादिबधरावणबिचारवर्णनोनामपंचमः प्रकाशः ५ ॥

विचिंत्यैवं निशायांसः प्रभाते रथमास्थितः ॥ रावणो मनसा कार्यमेकं निश्चित्य बुद्धि-
मान् १ ययौ मारीचसदनं परम्पारमुदन्वतः ॥ मारीचस्तत्र मुनिवज्जटाबलकलधार-
कः २ ध्यायन् हृदि परात्मानं निर्गुणं गुणभासकम् ॥ समाधिविरमेपश्यद्रावणं गृह-
मागतम् ३ द्रुतमुत्थाय चालिङ्ग्य पूजयित्वा यथाविधि ॥ कृतातिथ्यं सुखासीनं मारी-
चो वाक्यमब्रवीत् ४ समागमनमेतत्ते रथे नैकेन रावण ॥ चिन्तापरइवाभासि हृदि
कार्यं विचिन्तयन् ५ ॥

सवैया ॥ हरिहाथ मरौं ध्रुवमुक्ति लहौं गतमारीच पै तिनमंत्र दिया । जनि मानुष जानहु भूलि तिन्हें
परमात्म अहैं जिन जन्म दिया ॥ लखि रावण कोप मृगा वनिगो परधाम लहौं दृढ राखि दिया ।
पदबंदत बैजसुनाथ सदा करुणानिधि सानुज राम सिया ॥ (एवं निशायां विचिंत्य सः रावणः बुद्धि-
मान् मनसा एकं कार्यं निश्चित्य प्रभाते रथं आस्थितः) शिवजी कहत हे गिरिजा इसीप्रकार रात्री
में चिंतवन करि सो रावण बुद्धिमान् मनकरिके सीताहरण इति एकही कार्यं निश्चय राखि प्रात
होतहीं रथपर सवार भया १ (परम्पारमारीच सदनं मुदन्वतः ययौ तत्र मारीचः मुनिवत् जटाबलक-
लधारकः) समुद्रपार जो मारीच को मंदिर रहा तहाँ को आनंद युक्त रावण जाता भया तहाँ मा-
रिच मुनिकी नाई शीशमें जटा तनमें बलकल बसन धारण किहे बैठा है २ (गुणभासकम् निर्गुणं
परात्मानम् हृदि ध्यायन् समाधि विरमे रावणं गृहं आगतम् अपश्यत्) रजतम सत्त्वादि प्रकृति गुणों
को प्रकाश करणे वाला निर्गुण जो परमात्माहै ताहि हृदयमें ध्यान करि रहाहै मारीच पुनः समाधिते
सावकाश भये पर रावण घरमें आया ताहि देखता भया ३ (द्रुतमुत्थाय च चालिङ्ग्य यथाविधि पूजयित्वा
आतिथ्यं कृता सुखासीनं मारीचः वाक्यं अब्रवीत्) मारीच शीघ्रहीं उठि मिला पुनः जैसा चाहिये
ताहीविधि षोडशोपचार पूजनकरि भोजनकराया जब सुख पूर्वक आसन पर बैठा तब रावण प्राति
मारीच वचन बोला ४ (रावण एकेन रथेन एतत् ते समागमनं हृदि कार्यं विचिन्तयन् चिन्तापरइव
आभासि) मारीच बोला हे रावण एकरथ करिके अकेले यह जो तुम्हारा आगमनहै तामें चेष्टा ऐसा
है कि आपने हृदय में कछु विशेषि कार्य करने को चिंतवनकरि रहेउ है ऐसा मेरे मन में भासतहै कि
चिन्तामें परायण हौं ५ ॥

ब्रूहिमेनहिगोप्यंचेत्करवाणितवाप्रियम् ॥ न्यायंचेद्ब्रूहिराजेंद्रवृजिनंमांसृष्टशेन्नहि
 ६ ॥ रावणउवाच ॥ अस्तिराजादशरथःसाकेताधिपतिःकिल ॥ रामनामासुत
 स्तस्यज्येष्ठःसत्यपराक्रमः७विवासयामाससुतंबनंवनजनप्रियम्॥भार्ययासहितं
 भ्रातालक्ष्मणेनसमन्वितम् ८ सआस्तेविपिनेघोरेपंचवव्याश्रमेशुभे ॥ तस्यभा
 र्याविशालाक्षीसीतालोकविमोहिनी९रामोनिरपराधान्मेराक्षसान्भीमविक्रमान् ॥
 खरंचहत्वाविपिनेसुखमास्तेतिनिर्भयः १० भगिन्यामेशूर्पणख्यानिर्दोषायाश्च
 नासिकाम् ॥ कर्णौचिच्छेददुष्टात्मावनेतिष्ठतिनिर्भयः ११ ॥

(मेब्रूहिगोप्यंचेत् नहितवाप्रियम् करवाणिराजेंद्र न्यायंचेत् ब्रूहिमांवृजिनं नहि स्पृशेत्) मारीच
 बोला कि जोमेरे करनेयोग्य होयतौ मोप्रति कहिये अरुगुप्त राखनेवाला कदाचित् होइतौ न कहिये
 क्योंकि जो आपको प्रियकार्य सोईमें करिहौ पुनः हेराजेंद्र जो न्यायपूर्वक होइतौ कहिये जामेंमोहिं
 पाप न छुइजाइ ६ (साकेताधिपतिः किलराजादशरथः अस्ति तस्य ज्येष्ठः सुतः रामनामा सत्यं परा-
 क्रमः) रावण बोला हेमारीच अयोध्यापुरी को पति निश्चयकरि राजा दशरथ भयाहै ताको जेठापुत्र
 राम ऐसानामहै जाको सो सत्यव्रतधारी पराक्रमवंत है ७ (भ्रातालक्ष्मणेन समन्वितम् भार्यया
 सहितंवनजनप्रियं सुतंबनं विवासयामास) वाको छोटाभाई लक्ष्मण सहित वाकी स्त्री सहित बन
 वासी मुनिजन प्रियहैं जाको ऐसे पुत्रहि राजा बनको वास दोइया ८ (सविपिनेघोरेषुभे पञ्चवव्याश्रमे
 आस्ते तस्य भार्या सीता विशालाक्षी लोकविमोहिनी) सोराम अब दण्डकवन भयंकरमें मंगलीक पंच-
 वटी आश्रममें वास किहेहैं तिनकी स्त्री सीता बड़े सुंदरहैं नेत्रजाके लोकको मोहन करणहारी परम
 सुंदरिहैं ताको हरा चाहताहौं इतिमन की आशयहै ९ (खरंचमेराक्षसान् भीमविक्रमान् निःअपरा-
 धान् रामः हत्वा अतिनिर्भयः विपिनेसुखं आस्ते) मेराभाई खरजोहै ताहि अरु त्रिशिरादि मेरे राक्षस
 चौदह हजार जो बड़े पराक्रमी रहे तिनहिं विना अपराधै राम मारिडारे अरु अत्यंत निर्भय बनमें
 सुख पूर्वक बसेहैं १० (शूर्पणख्यामे भगिन्यानिर्दोषायाः नासिकाम् च कर्णौचिच्छेद दुष्टात्मानिर्भयः
 वनेतिष्ठति) शूर्पणखा मेरी बहिनि निर्दोष ताकी नाक पुनः कानदोऊ काटिडारे ऐसे दुष्टात्माहैं
 पुनःमेरी भयत्यागे निर्भय बनमें वास किहेहैं इतिमेरी अपराध युक्तहैं ११ ॥

अतस्त्वयासहायेनगत्वातत्प्राणबल्लभाम् ॥ आनयिष्यामिविपिनेरहितेराघवेणता
 म् १२ त्वंतुमायासृगोभूत्वाह्याश्रमादपनेष्यसि ॥ रामंचलक्ष्मणंचैवतदासीताहरा
 म्यह १३ त्वंतुतावत्सहायमेकृत्वास्थास्यसिपूर्ववत् ॥ इत्येवंभाषमाणंतंरावणंवीक्ष्य
 विस्मितः १४ केनेदमुपदिष्टंतेमूलघातकरंवचः ॥ सएवशत्रुर्बध्यश्चयस्त्वन्नाशंप्र
 तीक्ष्णते १५ रामस्यपौरुषंस्मृत्वाचित्तमद्यापिरावण ॥ बालोपिमांकौशिकस्ययज्ञ
 संरक्षणायसः १६ आगतस्त्विषुणैकेनपातयामाससागरे ॥ योजनानांशतंरामस्त
 दादिभयबिह्वलः १७ ॥

(अतःत्वयासहायेन विपिनेगत्वा राघवेणरहिते तत्प्राणबल्लभाम् ताम् आनयिष्यामि) इस कारणते
 हेमारीच तुम्हारी सहायकरिकै बनमें जाँउगो जब राघव करिकै रहित शून्य आश्रम होई ता समय

मैं ताकी प्राणप्रिय जो सीताहैं ताहि हरिलाइहों १२ (तुत्वं मायामृगोभूत्वामंचएवलक्ष्मणमहिआश्र-
मात् अपनेप्यसि तदासीतां अहंहरामि) पुनः हेमारीच तुममाया करिकै मृगाहोउ कंचनमणिमय
विचित्र-उनके निकट जाय राम जो हैं पुनः विशेषि करि लक्ष्मण जो हैं तिनहिं निश्चयकरि आश्र-
मते निकारि लैजाउ ता समयमें सीता जो हैं तिनहिं मैं हरिलेंउ १३ (तुत्वंतावन्मे सहायं ऊत्वा
पूर्ववत्स्थास्यासि इतिएवंभाषमाणं रावणंतं वीक्ष्यविस्मितः) पुनः जबतक मैं सीता न हरिलेंउ तब
तक तुम मेरी सहायताकरौ जब मेराकार्य हैजाय तब पुनःपूर्ववत् इहांवासकरौ इत्यादि कहता हुआ
जो रावण ताहि देखि मारीच विस्मय वशभया भाव सबल सो बैर नाशकी मूलहै १४ (मूलघात
करंवचःइदंकेनते उपादिष्टं च यः त्वन्नाशं प्रतीक्षते सएवशत्रुःवध्यः) मारीच बोला हे रावण कुल
सहित नाश करने वाला वचन यह किसने तोहि उपदेश दियाहै पुनः जो तेरे नाश होनेकी सलाह
देताहै सोई निश्चयकरि शत्रु बधकरवे योग्यहै १५ है श्लोक एकमें अन्वय (रावण रामस्य पौरुषं
अद्यापि चिंतंस्मृत्वा) हे रावण रामको जैसा पौरुषहै ताहि अबहूँ मेरा चित्त स्मरण करताहै कैसाहै
सोसुनिये (कौशिकस्ययज्ञसंरक्षणाय आगतःबालःअपि सःरामःतुएकेनइपुणाशतं योजनानां सागरेमां
पातयामास तदादिभयबिह्वलः) विद्वामित्रकी यज्ञरक्षा करनेहेतु चरित वनमें आये तब वालै अब-
स्थारहै निश्चय करि सोराम सुबाहुको मारि पुनः एकही बाण करिकै उडाय दिये सोयोजनके पार
समुद्रमें मोहि गिराये तबते आजुतक उनके डरते मैं व्यकल बनाहों १६।१७ ॥

स्मृत्वास्मृत्वातदेवाहंरामंपश्यामिसर्वतः १८ दंडकेऽपिपुनरप्यहंवनेपूर्ववैरमनु
चित्तयन् ॥ हृदितीक्ष्णशृंगमृगरूपमेकदामादृशैर्बहुभिरावृतोऽभ्ययाम् १९ राघ
वंजनकजासमन्वितंलक्ष्मणेनसहितंत्वरान्वितः ॥ आगतोऽहमथहंतुमुद्यतोमां
विलोक्यशरमेकमक्षिपत् २० तेनविद्धहृदयोऽहमुद्भ्रमनूराक्षसंद्रपतितोस्मि
सागरे ॥ तत्प्रभृत्यहमिदंश्रमाश्रितःस्थानमूर्जितमिदंभयार्दितः २१ राममेवस
ततंविभावयेभीतभीतइवभोगराशितः ॥ राजरत्नरमणीरथादिकंश्रोत्रयोर्यदिग
तंभयंभवेत् २२ ॥

(तदाएवस्मृत्वास्मृत्वा सर्वतःरामंपश्यामि) हे रावण जबते मेरे बाण लगा तब ते उनहीं को
स्मरण करता हुआ सर्वत्र रामही मोको देखाते १८ (पूर्ववैरं हृदिअनुचित्तयन् एकदातीक्ष्णशृंगमृग
रूपमादृशैः बहुभिः आवृतः अहं दण्डके वने अपिपुनः अभिगयाम्) पूर्व कौशिक मख को वैर हृदय
में चिंतवन करि एक समय पैने शृंगन युत मृगा को रूप वरेउं अरु मेरिही तुल्य बहुत राक्षस
मृगरूप चारिहु दिशि घेरे झुंड के बीच में हम रामहि मारिबे हेतु दण्डक वन में पुनः निश्चय
करि गयेंउ १९ (लक्ष्मणेनसहितंजनकजासमन्वितम् राघवंहंतुमुद्यतःअहंत्वरान्वितः आगतः अथ
मां विलोक्य एकशरं अक्षिपत्) लक्ष्मण जानकी करिकै सहित राघव जो हैं तिनहिं मारिबे कीयत्न
किहे मैं वडे बंग ते आवतारहों तब राम मोहि देखि एक बाण मारे २० (राक्षसेंद्रतेनविद्धहृदयःअ
हंउद्भ्रमनसागरेपतितोस्मितत्प्रभृतिअहंइदंस्थानंश्रमाश्रितःइदंऊर्जितंभयार्दितः) मारीच बोला हे
राक्षसों के राजा रावण जो बाण रामने मारा उसी बाण करिकै बेयाहुवा हृदय में अकाशमें भ्रमण
करता हुआ समुद्रमें आइ गिरेंउ तबते बहुत दिनभये मुनिबेषते में इसी स्थान में बासकरताहों इहां

भी उनके आवने की भयकरिकै पीड़ित रहताहों २१ (भोगराशितः भीतभीतइवरामंएवसततंविभावयेराजरत्नरमणीरथादिकंयदिश्रोत्रयोःगतंभयंभवेत्) रकारहै आदि जिनमें ऐसे नामजो सुख भोग के समूह पदार्थ हैं तिनको भी सुनि भीतभीत अर्थात् भययुक्तनमें अत्यंतभययुक्त सम रामजो हैं तिनहींको निश्चय करिसदा ध्यानकरताहों यथा राजरत्नरमणी रथ इत्यादि शब्दजो कानोंमें परते हैं तबै भयहोत डरलागता है २२ ॥

रामआगतइहेतिशंकयाबाह्यकार्यमपिसर्वमत्यजम् ॥ निद्रयापरिवृतोयदास्वपेरा
ममेवमनसाऽनुचिन्तयन् २३ स्वप्नदृष्टिगतराघवंतदाबोधितोविगतनिद्रास्थि
तः ॥ तद्भवानपिबिमुच्यचाग्रहंराघवंप्रतिगृहंप्रयाहिभो २४ रक्षराक्षसकुलंचिरा
गतंतस्मृतौसकलमेवनश्यति ॥ तवहितंवदतोममभाषितंपरिगृहाणपरात्मनिरा
घवे २५ त्यजविरोधमर्तिभजभक्तितःपरमकारुणिकोरघुनंदनः ॥ अहमशेषमि
दंमुनिवाक्यतोशृणुवमादियुगेपरमेश्वरः २६ ॥

(रामइहआगतंतडतिशंकयाबाह्यकार्यमपिसर्वमत्यजम्यदानिद्रयापरिवृतः स्वपेरामंएवमनसाऽनुचिन्तयन्) राम इहां आवतेहैं इत्यादि शंकारिकै बाहेरके देह व्यवहारके यावत् कार्य हैं तेतव निश्चय करिकै त्यागकिहे रहों जबनिद्राकरिकै घेराहुवा स्वप्नेमें भी रामही को मन करिकै चिंतवन करता रहों २३ (स्वप्नदृष्टिगतराघवंतदानिद्राविगतबोधितःअस्थितःतत्भोभवान्अपिराघवंअग्रहंविमुच्यचगृहंप्रतिप्रयाहि) जो स्वप्ने की दृष्टिमें आयगये राघव तव नोंदगये जागि आसनपर बैठेपर भी रामहीं की भयबनी रहती है ऐसे सबल हैं ताते भो रावण आपहू निश्चय करिराघव जो हैं तिनहिं अग्रह अर्थात् बैर भाव जो गहेहों सो बिशेषि छाड़िके पुनः आपने घरहि चलेजाउ २४ (चिरागतंराक्षसकुलंरक्षततस्मृतौसकलंएवनश्यतितवहितंवदतःममभाषितंपरिगृहाण) हेरावण बहुत कालते बढ़ता चला आतहै जो राक्षस कुल ताहि रक्षाकरौ अरुजो विरोध बुद्धि करि तिन राघवको स्मरण करौगे तौ सबकुल भरि निश्चय करिनाशहोई ताते तुम्हारे हितको कहने वालामैंहों ताको भाषित वचन ग्रहणकरौ (परात्मनिराघवे २५ विरोधमर्तित्यजभक्तितःभजरघुनंदनःपरमकारुणिकःपरमेश्वरः इदं अशेषंमुनिवाक्यतःआदियुगेअहंशृणुवम्) परमात्मारघुनंदन विपेविरोधबुद्धिते भजौ क्यौंकि रघुनंदन परम कारुणीक परमेश्वर हैं भावसेवक को दु खनहीं सहिसक्ते हैं शीघ्रही सुखीकरते हैं यह सम्पूर्ण हाल नारद मुनिकी बाक्य ते में शतयुगमें सुनिराखेंउ है ताते तुमप्रति कहताहों २६ ॥

ब्रह्मऽणार्थितउवाचतंहरिर्भक्तवेप्सितंमहंकरवाणितत् ॥ ब्रह्मणोक्तमरविंदलोच
नत्वंप्रयाहिभुविमानुषंवपुः ॥ दशरथात्मजभावमंजसाजहिरिपुंदशकंधरंहरे २७
अतोनमानुषोरामःसाक्षान्नारायणोऽव्ययः ॥ मायामानुषवेषेणवनंयातोऽतिनिर्भ
यः २८ भूमाहरणार्थायगच्छतातगृहंसुखम् ॥ श्रुत्वामारीचवचनंरान्नणःप्रत्न
भाषत २९ परमात्मायदारामःप्रार्थितोब्रह्मणाकिल ॥ मांहंतुमानुषोभूत्वायत्नादि
हसमागतः ३० करिष्यत्यचिरादेवसत्यसंकल्पईश्वरः ॥ अतोहंयत्नतःसीतामा
नेष्याम्येवराघवात् ३१ ॥

(ब्रह्मणाअर्थिततंहरिः उवाच तवईप्सितं किंतत्तुअहंकरवाणिब्रह्मणाउक्तंअरविंदलोचनत्वं मानुषं वपुः भुविप्रयाहिदशरथस्य आत्मजभावहरेदशकंवरंरिपुंभंजताजहि) मारीच बोला हेरावण जो नारद ने कहा सो सुनु किसी समय भगवान् सो ब्रह्माने प्रार्थना किया त्यहि ब्रह्मा प्रति हरि बोले कि तुम्हारा क्या मनोरथ है कहिये सोई हमकरें तब ब्रह्मा ने कहा हे कमलनयन आप मनुष्य तन धरि भूतल में जाहु अवधेश दशरथ के पुत्र भाव है हे हरि दशकंवर रावण जो देवतन को शत्रु है ताहि शीघ्रही मारौ २७ (अतः रामः मानुषः नअव्ययः साक्षात्नारायणः मायामानुषवेपेण अतिनिर्भयःवनंयातः) इस कारण ते राम मनुष्य नहीं हैं नाशरहित साक्षात् नारायण हैं माया करि कै मानुष वेप कि हे अत्यंत निर्भय वनहि आयेहैं किस हेत २८ (भूभारहरणार्थाय तातसुखंगृहंगच्छमा रीचवचनंश्रुत्वा रावणःप्रतिभभापत्) भूमिको पाप भारउतारने हेत आये हैं नाव कुल सहित तोको संहार करेंगे इस हेत हे तात रावण सुख पूर्वक धरहि लौटि जाउ इत्यादि मारीचके वचनसुनि रावण प्रति उत्तर बोला २९ (यदारामःपरमात्माब्रह्मणाप्रार्थितःकिल मांहंतुमानुषोभूत्वा यत्नात्इ हसमागतः) हे मारीच जब राम परमात्मा हैं ब्रह्मा करि कै प्रार्थना किये गये निश्चय मोहि मारने को मानुष भये यत्न ते इहाँ दण्डक वन मेंप्राय प्राप्त भये ३० (सत्यसंकल्पईश्वरः अचिरात्एवक रिष्यति अतःअहंयत्नतः राघवात्एवसीतां आनेष्यामि) सत्य प्रतिज्ञा है जिनकी ऐसे ईश्वर राम हैं तौ शीघ्रही निश्चय करि मेरा वय करि हैं इस कारण मैं भी यत्न ते राघवके समोप ते निश्चय करि सीता जो हैं तिनहि हरि लैहों ३१ ॥

वधेप्राप्तेरणेवीरप्राप्स्यामिपरमपदम् ॥ यद्वारामंरणेहत्वासीतांप्राप्स्यामिनिर्भयः ३२ अतोत्तिष्ठमहाभागविचित्रमृगरूपधृक् ॥ रामंचलक्ष्मणंशीघ्रमाश्रमादतिदूरतः ॥ आकृष्यगच्छत्वंशीघ्रंसुखंतिष्ठयथापुरा ३३ अतःपरंचेद्यत्किंचिद्भाषसे मद्भिभीषणम् ॥ हनिष्याम्यसिनाऽनेनत्वामत्रैवनसंशयः ३४ मारीचस्तद्वचःश्रुत्वा स्वात्मन्येवानुचितयत् ॥ यदिमांराघवोहन्यात्तदामुक्तोभवार्णवात् ३५ मांहन्याद्यदिचेद्दुष्टस्तदामेनिरयोधुवम् ॥ इतिनिश्चित्यमरणंरामादुत्थायवेगतः ३६ ॥

(वीररणेवधेप्राप्तेपरमपदम् प्राप्स्यामियद्वारामंरणेहत्वानिर्भयः सीतांप्राप्स्यामि) रावण बोला हे वीर मारीच राम करि कै रण भूमि में वध प्राप्त भये संते परम पदको प्राप्त हैहों अथवा रण में राम हि मैं वय करि होंतौ निर्भयसीता जो हैं तिनहि पाइ हों ३२ (अतमहाभागउत्तिष्ठ विचित्रमृगरूप धृक् रामंचलक्ष्मणंआश्रमात् अतिदूरतःशीघ्रंआकृष्यत्वंशीघ्रंगच्छ यथापुरासुखंतिष्ठ) इस हेत हे महा भाग मारीच उठु कंचन मणिमय विचित्र मृग रूप धरु वन में जाय राम लक्ष्मण जो हैं तिनहि आश्रम ते अत्यंत दूरि शीघ्रही खिंचि लैजाउ जब मेराकार्य है जाय तब तुम तुरत हीं चले-आवो जैसे पूर्व रह ते रहौ तैसे सुख पूर्वक यहाँ वास करौ ३३ (अतःपरंचेत्तमत् विभीषणम् यत्किंचित् भाषसे अनेनअसिनात्वांअत्रएव हनिष्यामिसंशयःन) रावण बोला हे मारीच इस के उपरांत कदा चित् मोहि डर पावने योग्य वचन जो किंचित् धोरिहूँ वात कहौगे तौ इसी तरवारि करिकै तोहि इहैं निश्चय करि मारि डरि हों यामें संशय नहीं है ३४ (तत्त्वचःश्रुत्वामारीचः स्वआत्मनिएवअनुचितयत्त्यदिराघवःमांहन्यात् तदाभवार्णवान्मुक्तः) सो रावण को वचन सुनि मारीच आपने मन

में निश्चय विचार किया कि जो रावण मोहिं मारेंगे तौ भव सागर ते मुक्तवै हौं ३५ (यदिचेतदुष्टः मांहन्यात् तदामेनिरयोधुवम्इतिरामात् मरणम् निश्चित्यवेगतःउत्थाय) जो कदाचित् दुष्ट रावण मोहि मारी तौ मोको नरक निश्चय होई ऐसा विचारि रामते मरण निश्चय राखि मारीच हर्ष सहित शीघ्र ही उठा ३६ ॥

अब्रवीद्रावणं राजन् करोम्याज्ञांतवप्रभो ॥ इत्युक्त्वा रथमास्थाय गतौ रामाश्रमं प्रति ३७ शुद्धजांबूनदप्रख्योमृगोभूद्रौप्यविन्दुकः ॥ रत्नशृंगोमणिखुरोनीलरत्नविलोचनः ३८ विद्युत्प्रभोविमुग्धास्योविचचारवनांतरे ॥ रामाश्रमपदस्यान्तेसीता दृष्टिपथेचरन् ३९ क्षणंचध्यावत्यवातिष्ठतेक्षणंसमीपमागत्यपुनर्भयावृतः ॥ एवं समायामृगवेषरूपधृक्चचारसीतापरिमोहयन्खलः ४० ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे आरण्यकाण्डेषष्ठः सर्गः ६ ॥

(रावणम् अब्रवीत् राजन् प्रभो तव आज्ञां करोमि इति उक्त्वा रथं मास्थाय रामाश्रमं प्रति गतः) रावण प्रति मारीच बोला हे राजन् हे प्रभो आपकी आज्ञाकरिहौं ऐसा कहि दोऊ रथपर चढ़ि रघु-नन्दन के आश्रमहिचले ३७ शुद्धजाम्बूनद प्रख्यः रौप्यविन्दुकः मृगः अभूत्मणिखुरः रत्नशृंगः नील-रत्नविलोचनः) शुद्ध कंचन वर्ण तामें चांदीसमबिन्दु ऐसा मृगाबना श्याम मणिमय खुर रत्नमय शृंग नीलरत्नमय नेत्र दोऊ ३८ (विमुग्ध आस्यः विद्युत् प्रभः वनांतरे विचचार रामाश्रमपदस्य अन्तेसीता दृष्टिपथेचरन्) विशेषि नवीन सुहावन मुखहै विजुली की समान जाके तनमें प्रभा प्रकाश-मान ऐसा बिचित्र अद्भुत मृगा दण्डकवन के अंतर बिचरता हुवा रघुनाथ जी को आश्रम जो पंच बटी ताके समीप जानकी जी की दृष्टि के आगे मार्ग में बिचरने लगा ३९ (क्षणंचध्यावतिच क्षणं अव-तिष्ठते समीप आगत्य पुनः भयावृतः एवं समृगं रूप धृक् मायावेष खलः सीतापरिमोहयन् चचार) क्षणभरि दौरता है पुनः क्षणमें खड़ा है जाता है आश्रम के समीप आवत पुनः डरायके भागत इसी प्रकार सो मारीच मृगरूप धरे तामें मायाकरि अद्भुत वेष किहे दुष्ट जानकी जी जो हैं तिनहिं मोहित करता हुवा बिचरता है ४० ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतबैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे आरण्यकाण्डे मायामृगपंचबटीआगमनवर्णनो नाम षष्ठः प्रकाशः ६ ॥

अथ रामोऽपितत्सर्वज्ञात्वा रावणचेष्टितम् ॥ उवाच सीतामेकां तेशृणु जानकिमेव चः परावणो भिक्षुरूपेण आगमिष्यति तेऽतिकम् ॥ त्वंतु द्वायां त्वदाकारां स्थापयित्वा दृजे विश २ अग्न्यावदृश्यरूपेण वर्षं तिष्ठ ममाज्ञया ॥ रावणस्य बधांति मां पूर्ववत् प्राप्स्यसे शुभे ३ श्रुत्वा रामो दितं वाक्यं साऽपि तत्र तथाऽकरोत् ॥ मायासीतां बहिः स्थाप्य स्वयं तर्दधेऽनले ४ मायासीता तदा पश्यन्मृगं मायाबिनिर्मितं ॥ हसन्ती शममभ्येत्य प्रोवाच विनयान्वितः ५ ॥

सवैया ॥ क्षितिजाग्निवसी प्राति बिंब प्रिया मृगभानिय पीप्रति वात कही । शरचाप गहे चलि दूरिह ते भ्रमपाय गये लघुबंधुतही ॥ खलसीय हरी लरिगीध गिरो कपि भूषण है गतलंकमही । नरनाट्य कलाबसि बैजसुनाथ सदानुज राघव सीय सही ॥ (अथ रावण चेष्टितम् तत्तर्बे अपि ज्ञात्वा रामः एकांते सीतां उवाच जानकि मेवचः शृणु) शिवजी बोले हे गिरिजा अब रावण को किया व्यापार सो सब निश्चय करि जानि रघुनन्दन एकांत स्थान में सीता प्राति बोले हे जनकनंदिनी मेरे बचन सुनौ १ (भिक्षुरूपेण रावणः ते अंतिकम् आगमिष्यति त्वदाकारां छायां ऊटजेस्थापयित्वा तु मम आज्ञयात्वं भग्नौ विश अदृश्यरूपेण वर्षतिष्ठ) रघुनन्दन बोले हे प्राण प्रिय यतीरूप करिके रावण तुम्हारे समीप आवै गो हरिलैजाने हेत ताते तुम्हारिहीं आकार जो तुम्हारी छाया है ताहि मूर्तिमान आश्रम में स्थापित करि पुनः मेरी आज्ञा करिके तुम अग्नि विषे प्रवेश करि जामे किसी को देखि न परौ ऐसे अदृश्य रूपकरिके बर्यभरि तहाँ वास करौ २ (शुभे रावणस्य बधांते पूर्ववत् मां प्राप्स्यसे) हे मंगलरूपे रावण के बध भये पछि पूर्वकी नाई पुनः मोहि फेरि प्राप्त होउगी ३ (रामस्य उदितं वाक्यं श्रुत्वा सा अपि तत्र तथा अकरोत् मायायाः सीतां बहिः स्थाप्य स्वयं अनले अंतर्दधे) रघुनन्दन को कहा बचन सुनि सो जानकी निश्चय करि तहाँ पर तैसाही करती भई मायाकी सीता तिनहि बाहेर राखि आप अग्नि में प्रवेश करि अंतर्द्वान भई ४ (मायानिर्मितं मृगं पश्यत तदा मायासीता हसन्ती विनयान्वितः रामं अभ्येत्य प्रोवाच) मायाकरिके बना हुआ मृग ताहि देखि ता समय में माया की सीता हसी भाव जो जैसा भाव राखत ताको तैसाही प्रभु प्राप्त होतेहैं पुनः नम्रता पूर्वक रघुनन्दन के सन्मुख है बोलती भई ५ ॥

पश्यराममृगंचित्रंकानकरत्नभूषितम् ॥ विचित्रविन्दुभिर्युक्तंचरंतमकुतोभयम् ६
बध्वादेहिममक्रीडामृगोभवतुसुंदरः ॥ तथेतिधनुरादायगच्छन्लक्ष्मणमब्रवीत् ७
रक्षत्वमतियत्नेनसीतामत्प्राणबल्लभाम् ॥ मायिनःसंतिविपिनेराक्षसाघोरदर्शनाः ॥
अतोत्रावहितःसार्ध्वरक्षसीतामनिन्दिताम् ८ लक्ष्मणोराममाहेदं देवायंमृगरूपधृक् ॥
मारीचोत्रनसंदेहएवंभूतोमृगःकुतः ९ श्रीरामउवाच ॥ यदिमारीच एवायंतदाहन्मिनसंशयः ॥
मृगश्चैदानयिष्यामि सीताविश्रामहेतवे १० ॥

(रामकानकंचित्रं रत्नभूषितं विचित्रविन्दुभिः युक्तं अकुतोभयंचरंतं मृगं पश्य) हे रघुनन्दन हेरघुनाथजी कनकमय चित्र रत्नन करिके भूषित चांदीके बिन्दुन करिके युक्त अभय विचरता हुआ जो अद्भुतमृगहै ताहि देखिये ६ (सुंदरः मृगः बध्वा देहिममक्रीडामभवतु तथा इति धनुः आदाय गच्छन् लक्ष्मणं अब्रवीत्) हे प्राणनाथ यह सुंदर मृगा पकरि दीजिये मेरा खेलौना होइगो तव प्रभुबोले कि जो कहती हौ सोई करिहौ ऐसा कहि धनुषबाणलै रघुनाथ जी चले तव लक्ष्मण प्रतिबोले ७ (मत्प्राणबल्लभाम् सीतामति यत्नेन त्वं रक्ष घोरदर्शनाः मायिनः राक्षसाः विपिने संति) प्रभुबोले हे लक्ष्मण मेरी प्राणप्रिया जो सीताहै ताहि अत्यंत यत्न करिके तुम रक्षा किहेउ क्योंकि भयंकर तन देखतमें छलकारी राक्षस बहुत बनमें हैं (अतः अत्र अवहितः अनिन्दिताम् सार्ध्वं सीतारक्ष) राक्षस बहुत फिरतेहैं इसकारण इहां सावधान है स्थित रहि निंदारहित पतिव्रता जो सीताहै ताहि रक्षा करौ ८ (रामं लक्ष्मणः इदं आह देवमृगरूपधृक् अयं मारीचः अत्र संदेहनमृगः एवं कुतः भूतः) रघुनन्दन प्रति लक्ष्मण ऐसाबोले कि हे देवमृगाको रूपधारण किहे यह मारीच राक्षसहै इसमें संदेह नहींहै निश्चय यही सत्य मानिये

क्योंकि मृगा इसप्रकार को कहा होता है १ (यदि भयंमारीच एव तदाहन्मिसंसयः न चेत्सृगः सीता विश्राम हेतवे आनिष्यामि) रघुनन्दन बोले हे लक्ष्मण दोऊ भांति कछुहानि नहीं है यो यह सृगपमारीच निश्चय करि है तब याको बध करिहों यामें संशय नहीं है अरु कदाचित् मृगा है तो जानकी के आनंद देने हेत यहांको पकरिलाइहों इतिद्विउदिशि लाभही है १० ॥

गमिष्यामिमृगं बध्वाह्यानिष्यामिसत्वरः ॥ त्वंप्रयत्नेन संतिष्ठ सीता संरक्षणे च
तः ११ इत्युक्त्वा प्रययौ रामो मायामृगमनुद्रुतः ॥ मायायदा श्रया लोकमोहिनी ज
गदाकृतिः १२ निर्विकारश्चिदात्माऽपि पूर्णोऽपि मृगमन्वगात् ॥ भक्तानुकंपी भग
वानितिसत्यं चो हरिः १३ कर्तुं सीता प्रियार्थाय जानन्नपिमृगं ययौ ॥ अन्यथा पूर्ण
कामस्य रामस्य विदितात्मनः १४ ॥

मृगं बध्वाहि आनिष्यामिसत्वरः गमिष्यामि त्वंप्रयत्नेन सीता संरक्षणे उद्यतः संतिष्ठ) मृगा जो है ताहि बांधि निश्चय करि लिहे आवताहों शीघ्रही ता हेत में जाताहों अरु हे लक्ष्मण तुम युक्ति करिके सीताकी रक्षामें उद्यत अर्थात् धनुषबाण सजे सजगुस्थित रहौ ११ (इति उक्त्वारामः मायामृगं अनुद्रुतः प्रययौ जगदाकृतिः लोकमोहिनी मायायत् आश्रया) ऐसा कहि रघुनन्दन मायामृगके पाछे शीघ्रधावत भये इति माधुर्यमें नरनाट्य है अरु ऐश्वर्य ऐसी है कि सम्पूर्ण जगत् सोई है स्वरूप जिन को अरु लोकको मोहित करण हारी माया जिनके आश्रित है सोई लोक हेत नरनाट्य करते हैं १२ (निर्विकारः चित्त आत्मा अपि पूर्णः अपिमृगमन्वगात् भगवान् भक्तानुकंपी इति बचः सत्यं कर्तुं हरिः) अब ऐश्वर्य माधुर्य मिश्रित लीला देखावते हैं कि राग द्वेष हर्ष विषाद रजतमादि विकार रहित सदा एकरस चैतन्य आत्म तत्त्व हैं निश्चय करि सबमें व्याप्त परिपूर्ण हैं निश्चय करि सो प्रभु मृगाके पाछे धाये ताको हेतु एकतौ भगवान् षडैश्वर्य युक्त यथा पोषणं भरणार्थं शरणं सर्वव्यापकं कारुण्यं षड्भिः पूर्णो रामस्तु भगवान्स्वयम् पुनः अनुकंपा गुणयथा भगवद्गुण दर्पणे रक्षिताश्रितभक्ता नाम नुरागसुखेच्छया । भूयोभीष्ट प्रदानाय यश्च ताननुधावति अनुकंपा गुणे ह्येष प्रपन्न प्रियगोचरः अर्थात् भक्तन को सदा सुख देनेकी उपायमें लगे रहते हैं इत्यादि बचन सत्य करते हैं अर्थात् जब किशोरी जी की प्रार्थनाते नररूपते अवतीर्ण होने लगे तब प्रतिज्ञा कीन्हे कि सौभागिक भक्तन को सुख देइंगे विशेषि जीवन को उद्धार करेंगे यथा भगवद्गुण दर्पणे सर्वान् जीवान् भोषितारयेय मिति प्रभुः चित्तवन्न वतारस्य कार्यतस्थौ महीतले इत्यादि बचन सत्य करते हैं १३ (सीता प्रियार्थाय जानन् अपिमृगं ययौ पूर्व जानकी जीने प्रार्थना किया है कि सुंदर मनुष्य रूपते नरनाट्य करि मुलभ जीवन को उद्धार करी सोई जानकी जीकी प्रीति के अर्थ जानते भी माया मृगके पाछे धाये (अन्यथा विदितात्मनः पूर्णकामस्य रामस्य) जो किशोरी जीकी प्रार्थना न होती तौ प्रसिद्ध परमात्मा पूरणकाम जो राम हैं तिनको १४ ॥

मृगेण वास्त्रियावापिकिं कार्यं परमात्मनः ॥ कदाचिद्दृश्यते न्यासेक्षणं धावति लीयते
१५ दृश्यते च ततो दूरादेवं राममपाहरत् ॥ ततो रामोऽपि विज्ञाय राक्षसोऽयमिति
स्फुटम् १६ विव्याध शरमादाय राक्षसं मृगरूपिणम् ॥ पपातरु धिराक्तास्यो मारी
चः पूर्वरूपधृक् १७ हाहतोऽस्मि महावाहो ब्राह्मिलक्ष्मणमांद्रुतम् ॥ इत्युक्त्वा रामव-

द्वाचीपपातरुधिराशनः १८ यन्नामाज्ञोऽपिमरणेऽस्मृत्वा तत्साम्यमाप्नुयात् ॥ किं
मुताग्रे हरिं पश्यन् तेनेव निहतोऽसुरः १९ ॥

(मृगेण वास्त्रियावा अपि परमात्मनः किं कार्यं) भक्तन को सुखजीवन को उद्धार करना न होता तो मृगामारि वा पकरिके अथवा स्त्री को सुख साधन निश्चय करिके इन बातों में परमात्मा को क्या प्रयोजन रहे भावये कामके व्यापार हैं परंतु मृगद्वारा मारीचको उद्धार जानकी हरण द्वारा परिवार युतरावण को उद्धारि लोक में सुरनरादि सबको सुख है (कदाचिदभ्यासे दृश्यते धावति क्षणं लीयते) कबहुं प्रभुके निरुद्धे मृगदेखि परता है पुनः भागतर्ही क्षणमें लोप है जाता है १५ (चततो दूरात् दृश्यते एवं रामं अपाहरत् ततः रामः अपि अयं राक्षसः इति स्फुटं विज्ञाय) पुनः अंतर्द्वानभये पीछे दूरिते देखि परता है इसी प्रकार मृगारघुनंदन जो हैं तिनहि आपने पीछे लगाये दूरि निकारि लै गया तब रघुनंदन भी विचारि लिये कि यह राक्षस है ऐसा पुष्टजानि कै पकरने की आशा त्यागि दिये १६ (शरं आढाय मृगरूपिणं राक्षसं विव्याध रुधिराक्तस्यः मारीचः पपात पूर्वरूपधृक्) बाणलै यन्त्रमें संधानि मृगरूपवना जो राक्षस है ताहि मारते भये रक्तवहिरदा है मुखमें जाके सो मारीच भूमिपै गिरि परा मृगरूप त्यागि पूर्ववत् रूपधरता भया १७ (महाबाहो हाह तो स्मिलक्ष्मणमां द्रुतं त्राहि इति रामवत्वा चाउकृत्वारुधिराशनः पपात) हे महाबाहु हाथमें मारा जाता हौं हे लक्ष्मण मेरी शीघ्रही रक्षा करो इत्यादि रामके ऐसे वचन कहि रक्तवमत गिरि परा १८ (अज्ञः अपि यत्नाम मरणेऽस्मृत्वा तत्साम्यं आप्नुयात् हरिं अग्रे पश्यन् तेनेव निहतः असुरः किं उत) शिवबोले हे गिरिजा अज्ञान पुरुष भी निश्चय करि जिनको नाम मरण समय स्मरण करै तौ प्रभुके समान रूपको प्राप्त होय सोई हरि आगे खड़े तिनहि देखता है भरु तिनहीं प्रभुने निश्चय करि मारा सो राक्षस प्रभुको प्राप्त भया इसमें क्या तर्क है १९ ॥

तद्देहादुत्थितं तेजः सर्वलोकस्य पश्यतः ॥ राममेवाविशद्देवा विस्मयं परमं ययुः २०
किं कर्म कृत्वा किं प्राप्तः पातकी मुनि हिंसकः ॥ अथ वाराघवस्य महिमानात्र संशयः २१
रामवाणेन संविद्धः पूर्व राममनुस्मरन् ॥ भयात् सर्वपरित्यज्य गृहवित्तादिकं च
यत् २२ ह्यदिरामसदा ध्यात्वा निधूता शेषकल्मषः ॥ अंतरेणानिहतः पश्यन् राम
मवापसः २३ द्विजो वाराशसो वाऽपि पापी वा धर्मकोपि वा ॥ त्यजन्कलेवरं रामं स्मृ
त्वा याति परंपदम् २४ ॥

(तद्देहात् तेजः उत्थितं सर्वलोकस्य पश्यतः रामं एव विशद् देवा परमं विस्मयं ययुः) उस मारीचकी देहते अग्नि ज्वाला इव तेज उठा सो सबलोकके देखत ही रघुनंदनमें निश्चय करि प्रवेश भया सो कौतुक देखि देवता परम आश्चर्य को प्राप्त भये भावज्ञान भक्ति विना दुष्टको प्रभुसायुज्य मुक्तिये २० (मुनि हिंसकः पातकी किं कर्म कृत्वा किं प्राप्तः अथवा अयं राघवस्य महिमा अत्र संशयः न) देवता यह विस्मय किये कि मुनिनको घात करने वाला पापी मारीच कौन तौ कर्म करतारहा भाव नरक योग्य अरु किस गति को प्राप्त भया जो मुनिनको दुर्लभ इति वेदरीति प्रति कूल आचरण होना आश्चर्य है अथवा यह रघुनंदन की महिमा है यामे संशय नहीं है २१ (पूर्व रामवाणेन संविद्धः भयात् रामं अनुस्मरन् गृहवित्तादिकं च यत् सर्वपरित्यज्य) पूर्व विश्वामित्र की यज्ञरक्षण में रघुनंदन के बाण करिके वेधा हुवा मारीच सिंधु पार जाय गिरा तेहिभय ते रघुनंदन जो हैं तिनहि स्मरण करता रहा भाव यहां भी आय

मोको बधकरेंगे इस डरते घर स्त्री विचादिजो कुछ रहा सो सब त्यागि दिया विराग मान भया २२
(हृदिसदा रामं ध्यात्वा अशेषकल्मषः निर्धूतः अन्तरामेण निहतः रामं पश्यन् अवापतः) विरागयुत हृदय
मे रघुनन्दनजो हैं तिनहि ध्यान करता रहाताके प्रभाव ते चावत् पाप रहे ते सम्पूर्ण नाश है गये
पर अन्तसमय रामही करिके मारा गया रामही को देखत संते प्राण त्यागि रामही को प्राप्त भया २३
(द्विजोवा अपिराक्षसः वापापीवा अपि धर्मकः वा कलेवरं त्यजन् गमं स्मृत्वा परं याति) शिवजी कहत कि
चहै ब्राह्मण होइ अथवा निश्चय करि राक्षस होइ चहै पापी होइ अथवा निश्चय करि धर्मात्मा होइ जो
देह त्यागतमें रामको स्मरण करी सोई परमपद को जाई इति निश्चय है २४ ॥

इतितेऽन्योन्यमाभाष्य ततो देवादिवं ययुः २५ रामस्तच्चिंतयामास त्रियमाणोऽसु
राधमः ॥ हालक्ष्मणेति मद्वाक्यमनुकुर्वन् ममार किम् २६ श्रुत्वा मद्वाक्यं सदृशं वाक्यं
सीताऽपि किं भवेत् । इति चिंता परीतात्मा रामो दूरान्न्यवर्तत २७ सीता तद्भाषितं श्रु
त्वामारीचस्य दुरात्मनः ॥ भीताऽतिदुःखसंविग्ना लक्ष्मणं त्विदमब्रवीत् २८ गच्छ
लक्ष्मण वेगेन भ्राता तेऽसुरपीडितः ॥ हालक्ष्मणोऽतिवचनं भ्रातुस्तेन शृणोषि कि
म् २९ तामाह लक्ष्मणो देविरामवाक्यं न तद्ब्रवेत् ॥ यः कश्चिद्वाक्षसो देवि त्रियमाणो
ऽब्रवीद्बचः ३० ॥

(इति अन्योन्यं आभाष्य ततः ते देवादिवं ययुः) इस प्रकार परस्पर बार्ता करि तदनंतर ते सब
देवता स्वर्गहि जाते भये २५ (रामः तत् चिन्तयामास असुरः अधमः त्रियमाणः हा लक्ष्मण इति
मद्वाक्यं अनुकुर्वन् किं ममार) जब राक्षस हा लक्ष्मण कहि मरा तब रघुनन्दन तिसवात पर मन
में चिंता करते भये कि राक्षस अधम मरत समय हा लक्ष्मण ऐसी मेरी वाक्य समान पुकार करि
क्यों मरा २६ (मत्वाक्यं सदृशं वाक्यं श्रुत्वा सीता अपि किं भवेत् इति चिंता परीतात्मा रामः
दूरात् न्यवर्तत) मेरी वाक्य सम राक्षस की वाक्य सुनि सीता निश्चय करि कौन दशाको प्राप्त भई
होइगी इसी चिंता सो व्याकुल रघुनन्दन दूरिते लौटते भये २७ (दुरात्मनः मारीचस्य भाषितं
तत् श्रुत्वा सीता भीता अतिदुःखसंविग्ना तुलक्ष्मणं इदं अब्रवीत् दुष्टात्मा मारीच को कहा हुवा आ-
रत बचन सो सुनि सीता समीत अत्यंत दुखित है पुनः लक्ष्मण प्रति ऐसा बचन बोलीती भई २८
(लक्ष्मण वेगेन गच्छते भ्राता असुरेण पीडितः हा लक्ष्मण इतिते भ्रातुः वचनं किम् न शृणोषि)
जानकीजी बोलीं कि हे लक्ष्मण शीघ्रता करिके जाउ क्योंकि तुम्हारा भाई असुर करिके पीडित है भाव
कठिन रण संकट में परे हैं जो हा लक्ष्मण ऐसा तुम्हारे भाई का वचन उच्चारण भया ताहि क्या
तुम नहीं सुनते हो २९ (लक्ष्मणः तां आह देवित् रामवाक्यं न भवेत् देवि यः कश्चित् राक्षसः
त्रियमाणः वचः अब्रवीत् भाई को रण संकट है सहायता हेतु तुम शीघ्रहीं जाउ इत्यादि वचन सुनि
लक्ष्मण तिन सीता प्रति बोले हे देवि सो राम को वचन नहीं है फिरि किसको है हे देवि जो कोऊ
राक्षस मरा है सोई ऐसे वचन बोला है ३० ॥

रामस्त्रैलोक्यमपि यः क्रुद्धो नाशयति क्षणात् ॥ सकथं दीनवचनं भाष्यतेऽमरपूजि
तः ३१ क्रुद्धः लक्ष्मणमालोक्य सीतावाष्पबिलोचना ॥ प्राह लक्ष्मण दुर्बुद्धे भ्रा
तुर्व्यसनमिच्छसि ३२ प्रेषितो भरतेनैव रामनाशाभिकांक्षिणा ॥ मान्नेतुमागतो-

सित्वरामनाशउपस्थिते ३३नाप्राप्स्यसेत्वंमामद्यपश्यप्राणांस्त्यजाम्यहम्॥नजा
नातीदृशंरामोत्वांभार्याहरणोद्यतम् ३४ रामादन्यंनस्पृशामित्वांवाभरतमेववा ॥
इत्युक्त्वावध्यमानासास्वबाहुभ्यांरुरोदह ३५ तच्छ्रुत्वालक्ष्मणःकर्णोपिधायाती
वदुः खतः ॥ मामेवंभाषसेचंडिधिकृत्वांनशमुपैष्यसि ३६ ॥

(यःरामःक्रुद्धः क्षणात् त्रैलोक्यंअपिनाशयति सअमरपूजितः कथंदीनवचनंभाषते) लक्ष्मण बोले
कि जोरघुनन्दन क्रोधकरें तौ क्षणें में तीनिहूँ लोक निश्चय करि नाश द्वै जाय सोईप्रभु देवन करि-
कै पूज्य कैसे दीनवचन भाषि सके हैं इस अनुमान ते रघुनन्दन को वचन नहीं है ३१ (लक्ष्मण
आलोक्यसीता वाष्पविलोचना क्रुद्धाप्राह दुर्वुद्धेलक्ष्मणभातु व्यसनंइच्छति) लक्ष्मण जोहैं तिनहिं
स्वइच्छा प्रतिकूल देखि सीता आंशु भरेनेत्र क्रोधकरि बोली हं दुर्वुद्धे लक्ष्मण तू अपने भाई के
सुख भोग विलास प्राप्ती की इच्छा करता है ३२ (रामस्यनाशंअभिकांक्षिणा भरतेनएवप्रेषितःराम
स्यनाशउपस्थिते मानेतुंत्वंआगतःअसि) रघुनन्दन के नाश की इच्छा राखने वाले भरतने निश्चय
करि तुमहि पठावा है सो राम को नाश प्राप्त भये संते मोहि आनिवे हेत तुम आये हौ ३३ (अद्य
मांत्वंनप्राप्स्यसे पश्यअहंप्राणांस्त्यजामि भार्याहरणोद्यतमूर्द्धदृश त्वारामःन जानमति) अब में जो हो
ताहि तू नहीं प्राप्त है सका है देखु में अभी प्राण त्यागती हौं अरु स्त्री हरणे में तत्पर रहे ऐसा तोहि
रघुनन्दननहीं जानते हैं ३४ (रामात्अन्यंत्वांवाएवभरतं वानस्पृशामिदृति उक्त्वास्वबाहुभ्यांवध्य
मानासारुरोदह) राम की सेवाय और तुमहि वा निश्चय करि भरतहि किसी भाति मेंन अग स्पर्श
करौंगी ऐसा कहि बाहुन करि कै आपनी देह पीटती हुई सो सीतारोवने लगी ३५ (तत्श्रुत्वाअती
वदुःखनः कर्णोपिधायालक्ष्मणः चंडित्वाधिकृमांएवंभाषसनाशंउपैष्यसि) जानकीजी के कठोर वचन
सो सुनि अत्यंत दुःख ते कानों को मूँदि लक्ष्मण बोले हे चंडि तीक्ष्णदेवि तोहि धिक्कार है मो प्रति
इस प्रकार अयोग्य वचन कहती जो सुनत पापरूप हैं ताते तू नाश दश को प्राप्त होनहार है ३६ ॥

इत्युक्त्वावनदेवीभ्यःसमर्प्यजनकात्मजाम् ॥ ययौदुःखातिसंविग्नोराममेवशनैः
शनैः ३७ ततोतरंसमालोक्यरावणोभिक्षुवेषधृक् ॥ सीतासमीपमगमत्स्फुरद्वृंड
कमंडलुः ३८ सीतातमवलोक्याशुनत्वासंपूज्यभक्तिः ॥ कंदमूलफलादीनिद
वांस्वागतमब्रवीत् ३९ मुनेभुंक्ष्वफलादीनिविश्रमस्वयथासुखम् ॥ इदानीमेवभ
र्तामेह्यागमिष्यतितेप्रियम्॥करिष्यतिविशेषेणतिष्ठत्वंयदिरोचते ४० भिक्षुरुवा
चकात्वंकमलपत्राक्षिकोवाभर्तातवानघे ॥ किमर्थमत्रतेवासोवनेराक्षससेविते ॥
ब्रूहिभद्रेततःसर्वस्ववृत्तांतंनिवेदये ४१ ॥

(इतिउक्त्वाजनकात्मजां वनदेवीभ्यःसमर्प्यअतिदुःखेन संविग्नःशनैःशनैः रामंएवययौ) ऐसाक-
हि लक्ष्मण जनकनंदिनी जोहैं तिनहिं वन देविनके अर्थ समर्प्य सौंपि अत्यंत दुःख करिकै व्यकल
धीरा धीरा रघुनन्दन के पास निश्चय करि जाते भये ३७ (ततःरावणःअंतरं संमालोक्य भिक्षुवेष
धृक् दण्डकमंडलुः स्फुरत्सीतासमीपमगमत्) तदनंतर रावण शून्य बीच देखि रावण संन्यासी वेष
धरि प्रकाशमान है दण्ड कमण्डलु जाके सो सीता के समीपहि आवता भया ३८ (तंअवलोक्य
सीता आशुनत्वाभक्तिः संपूज्यस्वागतमब्रवीत् कंदमूलफलादीनिदत्त्वा) अभ्यागत आया ताहि

देखि सीता शीघ्रही प्रणामकरि भक्ति ते पूज्य स्वागत पूछि कंदमूल फलादि भोजन हेत देतीभई ३६ (मुनेफलादानिभुक्ष्वयथासुखंविश्रमस्व मेभर्ताएवददानीहि आर्गमिष्यति विशेषेणतोप्रियमकरिष्य तियदिरोचतेत्वंतिष्ठ) हेमुने फलादि भोजन करौ जो इच्छाहांइतौ सुखपूर्वक विश्रामकरौ मेरेपति निश्चय करि इसी समय अवश्यही आवेंगे सो विशेषि करि कै तुम्हारा प्रिय करेंगे जो उन के स-
मागम की रुचि होय तौ तुम बैठौ ४० (कमलपत्राक्षित्वंकातवभर्ताकः वाअनघेराक्षससेवितेवनेअ त्रार्किअर्थतेवासः भद्रेब्रूहिततः स्ववृत्तांतंसर्वनिवेदय) सन्यासी बोला कि हे कमल दलवत् नयने तुमकोहौ अरु तुम्हारा पति को है पाप रहित इति हे अनघे राक्षस भरे हुये वन में इहां किस कार्य हेत तुम्हारा वासहै हेभद्रे कल्याण स्वरूपे आपनाहाल कहौ सो सुनि तदनंतर हम अपना जो वृत्तांत अर्थात् नाम जाति गुण विभव आवने कारण इत्यादि सब आपके अर्थ निवेदन करिहौं भावप्रसिद्ध कहि सुनाइ हौं ४१ ॥

सीतोवाच॥अयोध्याधिपतिःश्रीमान्राजादशरथोमहान् ॥ तस्यज्येष्ठःसुतोरामः
सर्वलक्षणलक्षितः ४२ तस्याहंधर्मतःपत्नीसीताजनकनंदिनी ॥ तस्यभ्राताक
नीयांश्चलक्ष्मणोभ्रातृवत्सलः ४३ पितुराज्ञांपुरस्कृत्यदण्डकेवस्तुमागतः ॥ च
तुर्दशसमास्त्वांतुज्ञातुमिच्छामिमेवद ४४ भिक्षुरुवाच ॥ पौलस्त्यतनयोऽहंतुराव
णोराक्षसाधिपः ॥ त्वत्कामपरितप्तोहंत्वांनेतुंपुरमागतः ४५ ॥ मुनिवेषेणरामेण
किंकरिष्यसिमांभज ॥ भुक्ष्वभोगान्मयासार्द्धत्यजदुःखंवनोद्भवम् ४६ श्रुत्वातद्व
चनंसीताभीताकिंचिदुवाचतम् ॥ यद्येवंभाषसेमांत्वनाशमेष्यसिराघवात् ४७ ॥

(अयोध्यायांअधिपतिःश्रीमान्महान् राजादशरथःतस्यज्येष्ठःसुतः सर्वलक्षणलक्षितःरामः) जानकी-
जी बोली कि अयोध्यापुरी के पति ऐश्वर्यमान महान् पुरुष जो राजा दशरथ तिन के जेठे पुत्र जो
रूप शील तेज वीर्य बल सुभाव उदार इत्यादि शुभ लक्षण युक्त जो श्रीराम है ४२ (तस्यधर्मतः
पत्नीअहंसीता जनकनंदिनीतस्यकनीयांश्चभ्राताभ्रातृवत्सलःलक्ष्मणः) तिनकी धर्म पत्नी मैं हौं
सीता नाम जनक की पुत्री हौं तिन रघुनन्दन के छोटे भाई जो बड़े भाई को परम प्रिय तिन को
लक्ष्मण नामहै ४३ (पितुःआज्ञांपुरस्कृत्यचतुर्दशसमाः दण्डकेवस्तुमागतः तुत्वांज्ञांतुंइच्छामिवद)
सर्वंधुभार्या रघुनन्दन पिता की आज्ञा मानि चौदह वर्ष दण्डक वन में वास करने हेत आयेहैं पुनः
हे मुने तुमहि जाना चाहौं को हौ सो मो प्रति कहिये ४४ (पौलस्त्यतनयःराक्षसानां अधिपःतुअहं
रावणः त्वत्कामपरितप्तः त्वांपुरनेतुअहंआगतः) पुलस्तिको पुत्र बिश्वेश्वरः ताको पुत्र राक्षसों को
राजा पुनः मैं रावण हौं तुम्हारे हेत कामाग्नि करि परितप्त हौं तुमहि आप ने पुर लंकहि लै जाने
हेत मैं आया हौं ४५ (मांभजमुनिवेषेण रामेणकिंकरिष्यसिवनोद्भवदुःखं त्यजमयासार्द्धभोगान्भुं
क्ष्व) तेरे हेत आया हौं ताते हे राज कुमारि मोहि में प्रीति करु जो लोकोत्तर राजा हौं अरु मुनि
वेष धारी राम करि कै क्या करै गी यहां साक पात खाना घासपर सोना शीत बात आतप कंट
काकर सहना राक्षस व्याघ्रादि की भय इत्यादि वन ते उत्पन्न दुःख ताहि त्यागि मेरे साथ भूषण
वसन भोजन पान गंध विचित्र मंदिर शय्यादि भोग पदार्थ तिनहि भोगौ ४६ (तत्त्वचनंश्रुत्वासी
तार्किचित्भीतातमूडवाच यदिमांएवंभाषसे त्वंराघवात्तनाशंएष्यसि) रावण भाषित सो वचन ताहि

सुनि सीता कहू डर सहित ता प्राति बोलती मई कि जो मो प्राति इस प्रकार वार्ता करता है तौ तू र-
घुनन्दन ते आपनी नाश चाहता है ४७ ॥

आगमिष्यतिरामोऽपि क्षणं तिष्ठ स हानुजः ॥ मां को धर्षयितुं शक्तो हरे भार्या शशोय
था ४८ रामवाणैर्विभिन्नस्त्वंपतिष्यसि महीतले ॥ इति सीता वचः श्रुत्वा रावणः क्रो-
धमूर्च्छितः ४९ स्वरूपं दर्शयामास महापर्वतसन्निभम् ॥ दशास्यं विशतिभुजं का-
लमेघसमद्युतिम् ५० तद् दृष्ट्वा वनदेव्यश्च भूतानि च वितत्रसुः ॥ ततो विदार्य धर-
णीं नखैरुद्धृत्य बाहुभिः ५१ तोलयित्वा रथे क्षिप्त्वा ययौ क्षिप्रं विहाय सा ॥ हाराम
हालक्ष्मणेति रुदंती जनकात्मजा ५२ भयोद्विग्नमना दीना पश्यन्ती भुवमेव सा ॥
श्रुत्वा तत्क्रंदितं दीनं सीतायाः पक्षिसत्तमः ५३ ॥

(क्षणं तिष्ठ स हानुजः रामः अपि आगमिष्यति मां धर्षयितुं शक्तः यथा हरेः भार्या शशः) क्षणमात्र ठाढ़
रहु छोटे भाई सहित रघुनाथजी निश्चय करि आते हैं तिनके आगे मोहि हरिले जानेमें कोतमर्थ है
जैसे सिहकी स्त्री को हरिलेने को शशाचौ गड़ा क्या है ४८ (त्वं रामस्य वाणैः विभिन्नः महीत
लेपतिष्यसि इति सीता वचः श्रुत्वा क्रोधमूर्च्छितः रावणः) तू रघुनन्दन के बाणों करिके विभिन्न भाव
गिरकर पदादि खडित है भूमिपै गिरिहै इत्यादि सीता के अनादर वचन सुनि क्रोधभरा रावण ४९
(महापर्वतसन्निभं स्वरूपं दर्शयामास कालमेघसमद्युतिम् दशास्यं विंशतिभुजं) भारी पर्वताकार स्वरू-
प देखवता भया जो काले मेघसमतन की द्युति दशमुख वसि भुजाहैं ऐसा भयकारी है ५० (तत्
दृष्ट्वा वनस्य देव्यः च भूतानि च वितत्रसुः ततो नखैः धरणीं विदार्य बाहुभिः उद्धृत्य) तिसरावणको स्वरूप
देखिवनकी देवीपुनः चराचर भूतमात्र सब विशेषि करिके डरि गये भाव रक्षाकोन करै अरु भूमिकी
पुत्रीहैं माता की चलत पुत्री को कैसे कौजहरि सका है इति भूमि सीता को गहिलेइगी तव मेरी
उठाई न उठै गी इसविचार ते रावण अपने नखों करिके आसन के नीचेकी भूमि फारि विवर करि
तिसमें डारि बाहुन करिके सीता को उठाइ लिया ५१ (तोलयित्वा रथे क्षिप्त्वा विहाय सा क्षिप्रं ययौ
हाराम हालक्ष्मण इति जनकात्मजारुदन्ती) सीता तनको भार बाहुनपर तौलिभाव में उठायेले
जायसका हों इति विचारि रथमें डारि आकाश मार्ग करिके वेगताते चलता भया तब हाराम हालक्ष्मण
इत्यादि जानकी रोदन करती भई ५२ (भयोद्विग्नमना दीनामना सा भुवं एव पश्यन्ती सीतायाः दीनं क्रं-
दितं श्रुत्वा पक्षिसत्तमः) परवश भय करिके व्यकल दुखित है मनजिनको सो सीता भूमिपै निश्चय
करि देखती हैं भाव प्रभु आवते हैं तव सीता को दीनरोदन जो है ताहि सुनिके पक्षिन में उत्तम
जो गीय राज है ५३ ॥

जटायुरुत्थितः शीघ्रं नगाग्रं क्षीक्षन्तु एडकः ॥ तिष्ठतिष्ठेति तं प्राह को गच्छति ममा-
ग्रतः ५४ मुषित्वा लोकनाथस्य भार्या शून्या द्वनालयात् ॥ शुनको मत्र पूतं त्वं पुरोडा-
श इवाध्वरे ५५ इत्युक्त्वा तीक्ष्णतुण्डेन चूर्णयामास तद्रथम् ॥ बाहान्विभेदपादा-
भ्यां चूर्णयामास तदनुः ५६ ततः सीतां परित्यज्य रावणः खड्गमाददे ॥ चिच्छेद
पश्रोऽसामर्षः पक्षिराजस्य धीमतः ५७ पपाताकि चिच्छेपेण प्राणेन भुवि पक्षिराट् ॥

पुनरन्यरथेनाशुसीतामादायरावणः ५८ क्रोशंतीरामरामेतित्रातारंनाधिगच्छ
ती॥हारामहाजगन्नाथमांनपश्यसिदुःखिताम् ५९ ॥

(तीक्ष्णतुण्डकःजटायुःनगाग्रतुशीघ्रंउत्थितः तिष्ठातिष्ठममग्रतःकःगच्छतितंइतिप्राह) अत्यंत पैनी है चोच जाकी सो जटायुःवृक्षपरते शीघ्रहीउठा प्रचारा कि खड़ाहो२ मेरे आगेते ऐसी अनीति करितू कौनहै निर्भय चलाजाताहै इत्यादि त्यहि रावण प्रति कहे ५४ (मंत्रपूतंपुरोडागंअध्वरेइव नकःइवत्वंशून्यात्वनालयात्लोकनायस्यभार्यामुपित्वा) मंत्रोंकरिकै पवित्र यज्ञको भागताहि यज्ञते जैसे कुत्तलै भागै तैसेही तू शूने वनके आश्रम ते लोकनाय रघुनन्दनकी जां धर्मपत्नी है ताहिद्वर लिहे जाताहै भावमोसों न जाने पावैगा ५५ (इतिउक्त्वातीक्ष्णतुंडेनतत्रयं चूर्णयामासपादाभ्यः वाहानविभेदतत्पुनःचूर्णयामास) ऐसाकहि जटायु पैनी चोचकरिकै ताकोरथतोरि दोऊपायनकरि कै घोड़े मारि डारे अरुरावणको धनुपतोरिडारे ५६ (ततःरावणःसीतां परित्यज्यखड्गंआद दे धीमतःसामर्पःपक्षिराजस्यपक्षौचिच्छेद) तदनंतर रावणसीताहि त्यागि तरवारिलैकै बुद्धिमान्भाव पक्षीपक्षन सो बली है ये नरहैं तब कछु न करिसकैगो इति विचारिसक्रोधित रावणने पक्षिराज जटायुकै पक्ष काटि डारिस ५७ (प्राणेनकिंचित्शेषेणपक्षिराट्भुविपपातरावणः पुनःआशुअन्यरथेन सीतांआदाय) मृतक तुल्यहोगया परंतु प्रभु सो हालकहबे हेत प्राणकछुवाकी राखिकरि पक्षिन को राजाजटायु भूमिपै गिरिपरा तब रावणपुनः शीघ्रहीं औरैरथकरि सीताको लेकै चला ५८ (रामराम इतिक्रोशंतीत्रातारंनअग्निगच्छतीहाजगन्नाथहाराम दुःखिताममांनपश्यसि) रामरामऐसा पुकारत सीतारोदन करती हैं रक्षाकरने वाले कोनहीं पावती हैं तबकहतहा जगत् के नाथहा रघुनंदन दुखित जो मैं ताहि नहीं देखतेहौ ५९ ॥

राक्षसानीयमानांस्वांभार्यामोचयराघव ॥ हालक्ष्मणमहाभागत्राहिसामपराधिनी
म् ६० वाक्शरेणहतस्त्वंमेक्षन्तुमर्हसिदेवर ॥ इत्येवंक्रोशमानांतांरामागमनशं
कया६१जगामवायुवेगेनसीतामादायसत्वरः ॥ बिहायसानीयमानासीतापश्यद
धोमुखी६२पर्वताग्रस्थितान्पंचवानरान्वारिजानना॥उत्तरीयार्द्धखण्डेनाविमुच्या
भरणादिकम् ६३ बध्वाचिक्षेपरामायकथयंतित्वितिपर्वते ॥ ततःसमुद्रमुल्लंघ्यलं
कांगत्वासरावणः ६४ ॥

(राघवराक्षसेन आनीयमानां स्वांभार्यामोचय हालक्ष्मण महाभाग अपराधिनीम् मां त्राहि) हे राघव राक्षस करिकै हरीगई परवश ताको प्राप्त अपनी भार्या ताहि छुड़ाइये हालक्ष्मण महाभाग तुम शुद्ध सेवक तिनहिं अनादर इति अपराध को करने वाली जोमें हौं ताहि रक्षाकरौ ६० (देवर वाक्शरेणहतः त्वंमेक्षन्तुमर्हसि इतिएवंतांक्रोशमानां रामस्यआगमनशंकया) जानकी कहत हे देवर लक्ष्मण मैं तुम्हें बचन रूपबाण करिकै माराहै सो मेरा अपराध तुम क्षमा करिबे योग्यहौ इत्यादि निश्चय करि सीता जो है ताहि विलाप करते देखि ताके द्वारा रघुनन्दन के आवने की शंकाकरिकै रावण६१(सीतां आदाय वायुवेगेन सत्वरः जगामबिहायसानीयमानासीताअधोमुखीअपश्यत्) सीता जो हैं तिनहिं लेकै रथको पवन समवेग करिकै शीघ्र चलाजात आकाशमार्ग करिकै ताहि रथमें जो हरी जाती हुई सीता सो तरेको मुखकिहे देखती भई ६२(पर्वतस्यअग्रे पंचवानरान् स्थितान् वारि

जानना आभरणादिकं विमुच्य) क्या देखती भई कि पर्वतके गिखरपर पाँचवानर बैठे हैं तिनहिं राम रामस शोक उच्चारण करत देखि रामसनेही जानि कमल सममुखहैं जाको सो जानकी जी अपने भूषणादिक जो पहिरे रही तिनहिं अंगनत छोरि भरु ओढ़ने को जो बखरहा तामेंते एक टुकरा फारि त्यहि करिके भूषण जो हैं तिनहिं ६३ (वध्वारामायकथयंतु इतिपर्वते विश्वेपततः सरावणः समुद्रं उल्लंघ्यलंकगत्वा) बांधतीभईजामें जवरधुनन्दनयदाभावे तिनकंअर्थ वानरमेराहालकहैं इतिविचारि वह गठरी पर्वतपर डारिदिये तदनंतर रावण समुद्रनाधि लंकहि गया ६४ ॥

स्वांतःपुरेरहस्येतामशोकविपिनेऽलपत ॥ राक्षसीभिःपरिवृतांमातृवृद्ध्याऽनुपालयत ६५ कृशाऽतिदीनापरिकर्मवर्जितादुःखेनशुष्यद्वदनाऽतिविह्वला ॥ हारामरामेतिविलप्यमानासीतास्थिताराक्षसवृंदमध्ये ६६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणउमामहेश्वरसम्वादेअरण्यकांडेसप्तमःसर्गः ७ ॥

(स्वयंतःपुरं अशोकविपिनं रहस्येराक्षसीभिः परिवृतांतां अलपत मातृवृद्ध्या अनुपालयत) लंकामें अपने मंदिर में जो अशोक बाटिकाहैं तामें एकानस्थानमें समूह राक्षसीधेर हैं तहां सीता जो हैं तिनहिं गुप्तवास देताभया भरुमातु बुद्धिकरि रावण सेवताहैं तामें द्वैत जोदेह बुद्धिते विवेक रहित तमोगुणी राक्षमहैं तामेंयहकारणहै कि एक समयमें दिग्विजय समय कहैंरावण मुकाम किहें रहे चांदनी रातिमें उर्वशी अप्सरा शृंगार किहें कुंवरकं पुत्रजोनलकूवर तिनकं पासकोजातीरहैं तिस को रावण पकरि लिया तब अप्सरा बांजी कि नलकूवर तुम्हारेभतीजे हैं तिनके हेतु मेराशृंगारहैं ताते आजमें तुम्हारी पुत्रवधु हों मांको छाडिंदउ सो न माना वाकंसंग बरवस भोग किया सो छाल मृनि नलकूवर शाप दिया कि आजुतें जो किसी स्त्री कां बरवस भोग करी तो रावण के शाशकेसों म्वद है जायंग एकतों यह भयहै दूसरं पूर्व को भगवत् कां पार्यवहैं हरिदृच्छाते राक्षस भया विरोध भावतें उद्धार भया चाहत ताते माता भावते सेवत ६५ (परिकर्मवर्जिता अतिदीनाकृशादुःखेन शुष्यत् वदनाअतिविह्वला हारामरामइति विनप्यमाना सीता राक्षसवृंदमध्येस्थिता) अभ्यंग मज्जन केशसवॉरनादि शृंगार के संस्कार रहित दीनमन गरीर दुर्बल दुःख करिके सखिरहाहैं मुख अत्यंत विह्वल भावसर्वांग शिथिलहारामराम इत्यादि पुकारि रोवनकरतीहुई सीताराक्षसीवृंदमें स्थितहैं ६६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतध्वेजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणआरण्यकांडेसीताहृणवर्णनंनामसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

गमोमायाविनंहत्वारक्षसंकामरूपिणम् ॥ प्रतस्थेस्वाश्रमंगतंततोदूराद्दर्शयाम् १
आयातलक्ष्मणंदीनंमुखेनपरिशुष्यतां ॥ राघवाच्चितयामासस्वात्मन्येवमहामतिः २
लक्ष्मणरतन्नजानातिमायासीतांमयाकृताम् ॥ ज्ञात्वाप्येनंवंचयित्वाशोचामिप्राकृतो
यथा ३ यद्यहंविरतोभूत्वातूष्णींस्थास्यामिमंदिरे ॥ तदाराक्षसकोटीनांवधोपायःकं
थंभवेत् ४ यदिशोचामितांदुःखसंतप्तःकामुकोयथा ॥ तदाकमेणानुचिन्वन्सीतां
यास्येऽसुरालयम् ५ ॥

सवैया ॥ लखिआश्रम शोचत जातलखे रथबाण शरासन टूटिपरे । स्यगघायल सो सब हालकहे
 तजिदेह सुचौभुजरूपधरे ॥ बिनती करि बंदि बिमानचढे प्रभुप्रेरितगो हरियाम परे । पढबदत बैज
 सुनाथ सदा करुणानिधि सानुज रामहरे ॥ (मार्याविनंकामरूपिणम् राक्षसंहत्वारामः स्वआश्रमं
 गंतुंप्रतस्थे ततोमुखेन पंरिशुष्यता दीनंलक्ष्मणं आयातंतम् दूरात्दर्श) मायामेंप्रवीण इच्छापूर्वक
 रूप धरनेवाला राक्षस जो मारीच ताहिमारि रघुनन्दन अपने आश्रमहिं आवतेहैं ता समय मुख
 सूखिगयाहै जिनको ऐसे दीन दुःखभरे लक्ष्मण आवतेहैं तिनहिं दूरिहीते देखते भये १ (महामतिः
 राघवःस्वआत्मनि एवचितयामास) महाबुद्धि वाले रघुनन्दन लक्ष्मणको देखतही अपने उरमें निश्चय
 करि चिंताकरते भये २ (मयामायासीतां कृतम् तत्लक्ष्मणः न जानाति ज्ञात्वापि एनं वंचयित्वा यथा
 प्राकृतः शोचामि) मैंनेमाया करिकै सीता बनाय आश्रममें राखा मुख्य सीता अग्निमेंहै सोहाल लक्ष्मण
 नहीं जानतेहैं ताते जानिकैभी इन लक्ष्मण को ठगनेहेत जैसे प्राकृत विषयी मनुष्य ताही भांति शोच
 करिहौ ३ (यदि अहं विरतः भूत्वा तूष्णीं मंदिरं स्थास्यामि तदा कोटीनां राक्षसानां बधस्य उपायः कथं भवेत्) जो मैं शांतचित्तहूँ चुपहूँ मंदिरमें बैठरहौ तौ करोरिन राक्षसोंको मारनेकी उपाय कैसे होइगी
 भाव अन्य उपाय तेन मारते बनी ४ (यदि तांदुःख संतप्तः यथा कामुकः शोचामि तदा सीतां अनुचिन्वन् क्रमेण
 असुरालयम्यास्ये) जो ता सीताके वियोग दुःखमें संतप्तहूँ जैसे कामी पुरुष तैसे शोच करिहौ तौ सीता
 जो हैं तिनहिं हूँ दूत संते क्रमक्रम धीराधीरा राक्षसोंको घर जो लंकाहै तहांको चला जाऊंगो ५ ॥

रावणं सकुलं हत्वा सीतामग्नौ स्थितां पुनः ॥ मयैव स्थापितां नीत्वा याताऽयोध्याम्
 तंद्रितः ६ अहं मनुष्यभावेन जातोऽस्मि ब्रह्मणाऽर्थितः ॥ मनुष्यभावमापन्नः किंचि
 त्कालं वसामि कौ ७ ततो मायामनुष्यस्य चरितं मेनुशृण्वताम् ॥ मुक्तिः स्यादप्रयासेन
 भक्तिमार्गानुवर्तिनाम् ८ निश्चित्यैवं तदा दृष्ट्वा लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् ॥ किमर्थमाग
 तोऽसित्वं सीतां त्यक्त्वा मम प्रियाम् ९ नीता वा भक्षिता वाऽपि राक्षसैर्जनकात्मजा ॥
 लक्ष्मणः प्रांजलिः प्राह सीताया दुर्वचो रुदन् १० हालक्ष्मणेति वचनं राक्षसोक्तं श्रु
 तं तथा । त्वद्वाक्यं सदृशं श्रुत्वा मां गच्छेति त्वरा ब्रवीत् ११ ॥

(सकुलं रावणं हत्वा मया एव स्थापितां अग्नौ स्थितां सीतां पुनः नीत्वा अतंद्रितः अयोध्यां याता)
 लंकामें सहित कुल रावण को मारि पुनः जो हमने निश्चय करि स्थापित कियाहै अग्निबिपे स्थित
 जो सीताहैं तिनहिं प्रसिद्ध करि पुनः साथलै निरालस्य अयोध्या जो है तहांको जैहौ ६ (ब्रह्मणा
 अर्थितः अहं मनुष्यभावेन जातः अस्मि मनुष्य भावं आपन्नः किंचित्कालं कौ वसामि) ब्रह्मा करिकै प्रार्थना
 किया गया मैं मनुष्य भाव करिकै उत्पन्न भयाहौ सो मनुष्यही भवि को प्राप्त हूँ कुछकाल पृथ्वी में
 वास करिहौ ७ (ततो मायामनुष्यस्य मे अनुचरितं शृण्वताम् भक्तिमार्गानुवर्तिनाम् अप्रयासेन मुक्तिः
 स्यात्) तदनंतर माया मनुष्य रूपको मेरा कियाहुआ जो चरितहै ताहि सुनिके भक्ति पथमें चलने
 वाले जन बिना परिश्रम करिकै मुक्ति होइगी ८ (एवं निश्चित्य तदा लक्ष्मणं दृष्ट्वा वाक्यमब्रवीत् मम
 प्रियाम् सीतां त्यक्त्वा किमर्थमागतः असि) इस प्रकार निश्चय करि रघुनन्दन लक्ष्मण जो हैं तिनहिं
 आवंत देखि बचन बोले हे लक्ष्मण हमारी प्राणा प्रिया जो सीताहैं तिनहिं त्यागि किस हेत इहां आये
 हौ ९ (जनकात्मजा अपि राक्षसैः भक्षिता वानीता वा प्रांजलिः लक्ष्मणः रुदन् सीताया दुर्वचः प्राह)
 जनकनंदिनी को निश्चय करि राक्षसों ने खायलिया अथवा हरिलिया इति सुनि हाथ जोरि लक्ष्मण

रोवतसंते सीताके कहेहुये दुर्वचन को कहने लगे १० (हालक्ष्मणइतिराक्षसस्यउक्तवचनंश्रुतं तथा त्वदाक्ष्यसदृशं श्रुत्वात्तरागच्छ इतिमांभववीत्) हालक्ष्मण इत्यादि राक्षस को कहा वचन सुनिपरा तिहि करिके आपके वचन समसुनि मानिसडर बोली कि रघुनन्दन को संकटहै तुम शीघ्रजाउ इति सोप्रति कहतीभई ११ ॥

रुदंतीमामयाप्रोक्तादेविराक्षसभापितम् ॥ नेदरामस्यवचनंस्वस्थाभवशुचिस्मि ते १२ इत्येवंशांत्वितासाध्वीमयाप्रोवाचमांपुनः ॥ यदुक्तंदुर्वचोरामनवाच्यंपुर तस्तव १३ कर्णौपिधायनिर्गत्यजातोऽहंत्वांसमीक्षितुम् ॥ रामस्तुलक्ष्मणंप्राहतथा प्यनुचितंकृतम् १४ त्वयास्त्रीभाषितंसत्यंकृत्वात्यक्त्वाशुभाननाम् ॥ नीतावाभक्षि तावाऽपिराक्षसैर्नात्रसंशयः १५ इतिचिंतापरोरामःस्वाश्रमंत्वरितोययौ ॥ तत्रादृष्ट्वा जनकजांविललापातिदुःखितः १६ हाप्रियेकगताऽसित्वंनासिपूर्ववदाश्रमे ॥ अथवामद्विमोहार्थंलीलयाकविलीयसे १७ ॥

(सारुदंतीमयाप्रोक्तादेविराक्षसभापितम्इदंरामस्यवचनंनशुचिस्मितेस्वस्थाभव) सो सीतारोदन करनेलगी तवमेने कहा किहे देवि यहकिर्सी राक्षसको कहा वचन है यहरघुनंदन को वचन नहीं है पावनहै सुसकानि जाकी इति हे शुचिस्मिते चित्तको सावधानराखौ १२ (इतिएवंमयासाध्वीशांत्वि तापुनःमांप्रोवाचयत्तुर्वचःउक्तंरामतवपुरतःनवाच्यं) इसप्रकार मेने पतिव्रता महारानी को समु आवातव पुनः मो प्रति बोली तामें जो दुर्वचन कहिनिहै हे रघुनाथजी सो आपकेआगे कहिवे योग्य नहीं है १३ (कर्णौपिधायअहंनिर्गत्यत्वांसमीक्षितुं यातःतुरामःलक्ष्मणंप्राहतथापिअनुचितंकृतम्) महारानी के अयोग्य वचन सुनिकानों को मूँदि आश्रमसोंनिकरि आपके दर्शन करने को भाव कहां किसव्यापारमें हैं सो देखने हेत इहां प्राप्त भयाहौ पुनः रघुनंदन लक्ष्मण प्रतिबोले जो कुवचन सुनि चले आये तौभी अनुचित किया १४ (स्त्रीभाषितंसत्यंकृत्वात्वयाशुभाननामत्यक्त्वा राक्षसैः भक्षितावाअपिनीतावाअत्रसंशयःन)स्त्री को कहा सत्यकिया तुमने मंगल मुखी जो सीता ताहि अकेले त्यागि चले आयेतौ वाको राक्षसों ने खायलिया अथवा निश्चय करि हारिलिया यामें संशय नहीं है १५ (इतिचिंतापरःरामःत्वरितःस्वआश्रमंययौतत्रजनकजांअदृष्ट्वाअतिदुःखितःविललाप) इत्यादि चिंतायुतरघुनंदन तुरतही अपने आश्रमहि जातेभये तहां जानकी को न देखेतवअत्यंत दुःखित है विलापरोदन करने लगे १६ (पूर्ववत्आश्रमेनअसिहाप्रियेत्वंकगतासिअथवामत् विमोहि नार्थंलीलयाकविलीयसे)आश्रममें सीता न देखिरघुनंदन विलापयुतबोले कि प्रथम की नई आश्रममें नहीं हौ तौ हे प्रिये कहांगइउ अथवा मोको विशेषि मोहित करने हेत लीला करिके कहीं छपितौ नहीं रही तौ प्रकटहोउ १७ ॥

इत्याचिन्वन्वनंसर्वनापश्यज्जानकींतदा ॥ वनदेव्यःकुतःसीतांनुवन्तुममवल्लभा म् १८ सृगाश्चपक्षिणोवृक्षादर्शयंतुममाप्रियाम् ॥ इत्येवंविलपन्नेवरामःसीतांनकु त्रचित् १९ सर्वज्ञःसर्वथाक्वापिनापश्यद्दुःखनंदनः ॥ आनंदोऽप्यन्वशोचत्तामय लोऽप्यनुधावति २० निर्ममोनिरहंकारोऽप्यखंडानन्दरूपवान्नाममजायोतिसांते

तिविललापातिदुःखितः २१ एवंमायामनुचरन्नसक्तोऽपिरघूत्तमः ॥ आसक्तइव
मूढानांभातितत्त्वविदान्नाहि २२ एवंविचिन्वन्सकलंवनंरामःसलक्ष्मणः।भग्नंरथंछ
त्रचापंकूवरंपतितंभुवि २३ ॥

(इतिसर्ववनंअचिन्वन्जानकीनअपश्यत्तदावनदेव्यःममवल्लभांसीतांकुतःब्रुवन्तु) इसप्रकार
सबबन जो है ताहि ढूँढति में जानकी जो हैं तिनहिं न देखे तब वन देविनते पूछनेलगे हंवनदेवियो
हमारीप्राणप्रियासीताकहाँहैं बतावो १८ (मृगाःचपक्षिणावृक्षाःममप्रियाम्दर्शयंतुइतिएवंरामः विलप
न्एवकुत्रचित्सीतान) हे मृगोपुनः हे पक्षियो हे वृक्षों हमारी प्रिया जो है ताहिदेखावो इसप्रकार
रघुनंदन विलापकरतेफिरते हैं निश्चयकरिकहाँ सीता नहीं देखिपरती हैं १९ (रघुनंदनःसर्वज्ञःसर्व
थाक्कापिनअपश्यत्आनंदःअपितांअन्वशोचत्अचलःअपिअनुधावति) अबमाधुर्यमेंऐश्वर्य देखात कि
रघुनंदन सर्वज्ञ सर्ववस्तुके जानने वाले सर्वथा सबदेश सबकाल में सबको देखने वाले सोई माधुर्य
लीलाहेत सीता को कहूं नहीं देखते हैं आनंदरूप निश्चयकरि सो सीता जो हैं तिनहिं अग्राप्तीको
शोचकरते हैं अचलहैं निश्चय करि सोऊ ढूँढतमें धावते फिरते हैं २० (निर्ममःनिःअहंकारःअपिअखं
डआनंदरूपवान्ममजायाइतिसीताइतिअतिदुःखितःविललाप)नहींहैममता किसीकीन अहंकारहै कि
सीता को निश्चय अखंड आनंदरूपवंत सोऊ माधुर्य में विषयीसमं हे मेरी स्त्री इत्यादि हे सीता
इत्यादि पुकारत अत्यंत दुःखितरोदन करते हैं २१ (एवंमायांअनुचरन्अपिअसक्तःनरघूत्तमःमूढानां
आसक्तःइवभातितत्त्वविदान्नाहि) इसीभांति मायामनुष्योंके आचरण करते हैं अरुनिश्चय करि माया
में आसक्त नहीं हैं रघुनाथ जी सो अज्ञानिनको विषयासक्त मनुष्यों कीनाई स्त्रीमें आसक्तदेखिपरते
हैं परन्तु तत्त्ववेत्तनको नहीं भावज्ञानी नहीं भूलते हैं २२ (एवंसलक्ष्मणःरामःसकलंवनंविचिन्वन्
छत्रचापंकूवरंभग्नंरथंभुविपतितं) इसी प्रकारसहित लक्ष्मण रघुनंदन सबै वनढूँढते हुये तहाँ गये
जहाँछत्रधनुष युवा टूटा हुआ रथ भूमिमें पराहै भाव जहाँ रावण जटायुतेयुद्धभईरहै २३ ॥

दृष्ट्वालक्ष्मणमाहेदंपश्यलक्ष्मणकेनचित् ॥ नीयमानांजनकजातांजित्वाऽन्योजहा
रताम् २४ ततःकिंचिद्भुवोभागंगत्वापर्वतसन्निभम् ॥ रुधिराक्तवपुर्दृष्ट्वारामोवाक्य
मथाब्रवीत् २५ एषवैभक्षयित्वातांजानकींशुभदर्शनाम् ॥ शेतेविविक्तेऽतितृप्तः
पश्यहन्मिनिशाचरम् २६ चापमानयशीघ्रमेवाणंचरघुनन्दन ॥ तच्छ्रुत्वा
रामवचनंजटायुःप्राहभीतवत् २७ मांनमारयभद्रंतेस्त्रियमाणंस्वकर्मणा ॥ अहं
जटायुस्तेभार्याहारिणंसमनुद्रुतः २५ रावणंतत्रयुद्धंमेवभूवारिविमर्दन ॥ तस्यवा
हानूरथंचापंछित्वाऽहंतेनघातितः २६ ॥

(दृष्ट्वालक्ष्मणंइदंआह लक्ष्मणपश्य केनचित्जनकजानीयमानांतंजित्वा अन्यःतांजहार) धनुष
रथादिटूटेपरे तिनहिं देखि रघुनन्दनलक्ष्मण प्रति बोले हे लक्ष्मण देखिये कोऊ राक्षस जानकी जो
है ताहि हरे लीहै जाता रहा ताहि जीति अन्य राक्षस ने सीतहि हरि लैगया २४ (ततःकिंचित्भु
वःभागंगत्वारुधिराक्तपर्वतसन्निभम्वपुः दृष्ट्वाअथरामःवाक्यंअब्रवीत्) तदनंतर कछु भूमि को भाग
नाँधि आगे गये तहां रक्त सों भरा पर्वताकार तन परागीध को देखि तब रघुनन्दन वचन बोले २५
(जानकींशुभदर्शनाम् ताम्एषवैभक्षयित्वा अतितृप्तःविविक्तेशेते पश्यनिशाचरम्हन्मि) रघुनन्दनकहे

कि हे लक्ष्मण जानकी मंगलिक दर्शन हैं जाके ताहि इसी ने निश्चय करि कै खाय लिया है अ-
त्यंत अघाय एकांत देश में सोवता है देखिये यह निशाचरहै ताहिमारौ २६ (रघुनन्दनमेचापंचवा
णंशधिंअनय रामवचनंतत्श्रुत्वाजटायुः भीतवत्प्राह) हे लक्ष्मण मेरा धनुष पुनः बाण शीघ्रही
लावो इत्यादि रघुनन्दन को बचन ताहि सुनिकै जटायु सहर की नाई वचन बोला इहां अपने
मरने की भय नहीं है रघुनन्दनके अपयश की भयहै २७ (ते भद्रंमानमारयस्वकर्मणा त्रियमाण
अहंजटायुः तेभार्याहारिणंसंअनुद्रुतः) तुम्हारा कल्याण होय मोहिं न मारौ मेंतौ अपने कर्म करिकै
आपही मरापराहोंमें जटायु हों आपकी पत्नी को हरिलैजाने वाला जोरावणताके पाछे में प्रचारि
धावता भया २८ (अरिविमर्दनतत्ररावणमेयुद्वंभवभूवतस्यवाहनरथंचापं छित्वातेनअहंघातितः) हे
अरिमर्दन रघुनन्दन तहां रावण प्रति मोत्तौ युद्ध होती भई ताके बाहन घोड़े रथ धनुष तिनहिं मैं
मारि तोरि डारा तिस रावण ने मोहिं मारा भाव पक्ष काटिडारा २९ ॥

पतितोऽस्मिजगन्नाथप्राणांस्त्यक्ष्यामिपश्यमाम् ॥ तच्छ्रुत्वा राघवो दीनकंठप्राणंद
दर्शसः ३० हस्ताभ्यां संस्पृशन्नुरामोदुःखाश्रुवृत्तलोचनः ॥ जटायो ब्रूहि मे भार्या
केन नीता शुभानना ॥ मत्कार्यार्थं हतोऽसित्वमतो मे प्रियऽवांधवः ३१ जटायुः स
न्नयावाचा वक्तुं स मुद्रमन् ॥ उवाच रावणो रामराक्षसो भीमविक्रमः ३२ आ
दाय मे धिलीं सीतां दक्षिणाभिमुखो ययौ ॥ इतो वक्तुं न मे शक्तिः प्राणांस्त्यक्ष्यामि ते
ऽग्रतः ३३ दिष्ट्या दृष्टोऽसिरामत्वं धियमाणेन मेऽनघ ॥ परमात्माऽसि विष्णुस्त्वं
मायामनुजरूपधृक् ३४ अंतकालेऽपि दृष्ट्वा त्वां मुक्तोऽहं रघुसत्तम ॥ हस्ताभ्यां स्पृ
शमं रामपुनर्यास्यामि ते पदम् ३५ ॥

(पतितः अस्मि प्राणांस्त्यक्ष्यामि जगन्नाथ माम् पश्य कंठप्राणंदीनतत्श्रुत्वा राघवः ददर्श) जटायु
बोला कि पतित अधम पक्षी मैं अब प्राण त्याग कीन चाहत हों हे जगन्नाथ दयादृष्टि मोहिं देखौ
कंठ गत प्राण दीन जटायु ताके बचन सुनि रघुनन्दन दया दृष्टि देखते भये ३० (दुःखेन आश्रुवृत्त
लोचनः रामः हस्ताभ्यां स्पृशन् जटायो ब्रूहि शुभानना मे भार्या केन नीता त्वं मत्कार्यार्थं हतः अस्ति अतः मे
प्रियवांधवः) दुःख करिकै आंशु भरे नेत्र भाव करुणाकर रघुनन्दन हाथों करि स्पर्श करत संते
बोले हे जटायो कहु मंगल मय मुख है जाको ऐसी मेरी भार्या को किस ने हरा है अरु तुम मेरे
कार्य हेत मारे गयो है इसकारण मेरे प्रिय बंधु हों ३१ (वक्रात् रक्तं संउद्रमन् जटायुः सन्नयावाचा
उवाच रामभीमविक्रमः राक्षसः रावणः) मुखते रक्त बमन करताहुआ जटायु मधुरवचन करिकै बोला
हे राम भयंकर है पराक्रम जाके ऐसा जो राक्षस रावण है ३२ (मैथिलीं सीतां आदाय दक्षिणाभिमु
खः ययौ इतः वक्तुं न मे शक्तिः तेऽग्रतः प्राणांस्त्यक्ष्यामि) मिथिलेश की पुत्री जो सीता हैं तिनहिं लैके
रावण दक्षिण दिशा के सम्मुख जाता भया इससे आगे मोहिं कहिये की शक्ति नहीं है आप के
आगे प्राण त्यागता हों ३३ (दिष्ट्या प्रियमाणेन मे रामत्वं दृष्टः अस्ति अनघ विष्णुः त्वं परमात्मा अस्मि मा
यामनुजरूपधृक्) यह बड़े आनंद की बात भई कि मरण काल करिकै हे राम आप को साक्षा
त् मैं देखता हों मेरी भाग्य रूप आप आगे खड़े हो हे निष्पाप विष्णु आप परमात्मा हौ माया क
रिकै मनुष्य रूप धरेहौ ३४ (रघुसत्तम अंतकाले अपित्वा दृष्ट्वा अहं मुक्तः रामहस्ताभ्यां मां स्पृश पुनः ते

पदंयास्यामि) हेरघुवंशमें उत्तम अंत समय में निश्चय करि आपकोदेखातातेमें मुक्तहोउंगेहेराम
अबहाथों करिकै मोहिं स्पर्श करौ पुनः अब आप के परम् पद को जाता हौं ३५ ॥

तथेतिरामःपस्पर्शतदंगंपाणिनास्मयन् ॥ ततःप्राणान्परित्यज्यजटायुःपार्तितोभु
वि ३६ रामस्तमनुशोचित्वाबन्धुवत्साश्रुलोचनः ॥ लक्ष्मणेनसमानाप्यकाष्ठा
निप्रददाहतम् ३७ स्नात्वादुःखेनरामोऽपिलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ हत्वावनेमृगं
तत्रमांसखंडान्समन्ततः ३८ शाड्बलेप्राक्षिपद्रामःपृथक्पृथगनेकधाभक्षन्तुप
क्षिणःसर्वेतृप्तोभवतुपक्षिराट् ३९ इत्युक्त्वा राघवःप्राहजटायोगच्छमत्पदम् ॥
मत्सारूप्यंभजस्वाद्यसर्वलोकस्यपश्यतः ४० ततोऽनन्तरमेवासौदिव्यरूपधरः
शुभः ॥ विमानवरमारुह्यभास्वरंभानुसन्निभम् ४१ ॥

(स्मयन् राम तथा इति पाणिना तत् अंगंस्पर्शं ततः जटायुः प्राणान् परित्यज्यभुविपतितः)
पक्षी में ऐसा साहस इसप्रकार की बुद्धि ऐसा बिचारि मुसुकायकै रघुनन्दन बोले हे गंधराज जैसा
कहते हौ तैसाही करौंगो ऐसा कहि हाथकरिकै वाको अंग स्पर्श कीन्है तब जटायू प्राणत्यागि भूमि
पै गिरिपरा ३६ (बंधुवत् तं अनुशोचित्वा साश्रुलोचनः रामः लक्ष्मणेन काष्ठानि सं आनाप्यतम्
प्रददाह) बंधुकी नाई ताहि मेरे पीछे शोच करते भये आँशु बहते हैं नेत्रनमें ऐसे करुणासिंधु रघु-
नन्दन लक्ष्मण करिकै काठ मँगाय गीध मृतक तन ताहि दाह करते भये ३७ (लक्ष्मणेन समन्वितः
रामः अपि दुःखेन स्नात्वावने मृगं हत्वा तत्र मांसखंडान् समन्ततः) लक्ष्मण करिकै सहित रघुन-
न्दन दुख सहित स्नान करि बनमें एक मृग मारि ताके मांस के जो खंड हैं तिनहिं चारिहु दिशि ३८
(रामः पृथक् पृथक् अनेकधाशाड्बले प्राक्षिपत् सर्वे पक्षिणः भक्षन्तु पक्षिराट् तृप्तोभवतु) रघुनन्दन
उनमांस खंडन को अलग अलग अनेक भाग करि हरी नवीनीधास पर धरिबोले सब पक्षियो इस
मांस को भोजन करौ जामें पक्षिन को राजा गीध तृप्तहोय ३९ (इतिउक्त्वा राघवः प्राह जटायोम
त्पदं गच्छ अद्य सर्व लोकस्य पश्यतः मत्सारूप्यं भजस्व) सजाती के खाये गंधराज तृप्त होय ऐसा
कहि पुनः रघुनन्दन बोले हे जटायो मेरे पदको जाउ आज सबलोक के देखते हुये मेरी सारूप्य मुक्ति
को प्राप्त होउ भाव मेरासा रूपधरि मेरे लोकहि जाउ ४० (ततः अंतरं असौ एव दिव्यरूप धरः
शुभः भानुसन्निभम् भास्वरं विमान वरं आरुह्य) रघुनन्दन के बचन कहतै ताही समय में सो
गीध दिव्य रूप धरि मंगलाकि सूर्यन के तुल्य प्रकाशवंत जो विमान उत्तम तापर प्रसन्न मन
सवार है कै ४१ ॥

शंखचक्रगदापद्मकिरीटवरभूषणैः। द्योतयत्स्वप्रकाशेनपीताम्बरधरोऽमलः४२च
तुर्भिःपार्षदैर्विष्णोस्तादृशैरभिपूजितः॥स्तूयमानोयोगिगणैःराममाभाष्यसत्वरः।कृ
तांजलिपुटोभूत्वातुष्टावरघुनन्दनम् ४३ जटायुरुवाच॥ अगणितगुणमप्रमेयमा
द्यंसकलजगत्स्थितिसंयमादिहेतुं ॥ उपरमपरमंपरात्मभूतंसततमहंप्रणतोऽस्मि
रामचन्द्रम्४४निरवधिसुखमिन्दिराकटाक्षक्षयितसुरेन्द्रचतुर्मुखादिदुःखम्॥नरवर
मनिशंनतोस्मिरामंवरदमहंवरचापबाणहस्तं ४५ ॥

(अमलः पीताम्बर धरः शंख चक्र गदा पद्म किरीटवर भूषणैः स्वप्रकाशेन द्योतयत्) अमल तन में पीत वस्त्र धारण किहे चारि भुजन में शंख चक्र गदा पद्म लिहे किरीट कुंडल माल केयूर कांची मुद्रिकादि भूषणों करिके भूषित अपनी प्रकाश करिके सब दिशा प्रकाशित किहे हैं ४२ (विष्णोः चतुर्भिः पार्षदैः तादृशैः अभि पूजितः योगि गणैः स्तूयमानः सत्वरः रामं आभाष्य) विष्णुके चारि पार्षद ताही तुल्य तिन करिके पूजागया अरु योगि वृंदों करिके स्तुति किया गया ऐसा जटायू शीघ्रही रघुनन्दन प्रति बोला (कृताञ्जलि पुटो भूत्वा रघुनन्दनम् तुष्टाव) हाथजोरि सन्मुख है रघुनन्दन प्रति स्तुति करने लगा ४३ (अगणित गुणं अप्रमयं आद्यं स्थिति संयमादि सकल जगत् हेतुम् उपरमपरमं परात्म भूतं रामचन्द्रम् सततम् अहं प्रणतोस्मि) शक्ति प्रेरक तेज बरिष्ठ रूपा दया शील सुलभ उदारतादि नहीं गणने योग्य हैं कल्याण गुण जिन के पुनः प्रमाण रहित महिमा है जिनकी सबके आदि है रूपजिनको उत्पत्ति पालन संहारादि सब जगत् को कारण है जो कारण रहित अखंड ज्ञान शुद्ध परमात्म रूप जो ऐसे सुयश प्रकाशक रामचंद्र हैं तिनहि निरंतर सदा में प्रणाम करताहों ४४ (निः अवधि सुखं इंद्रिराकटाक्षं सुंद्रं चतुः सुखादि दुःखं क्षयित वरदं वर चाप बाण हस्तं नरवरं रामं अनिशं अहंनतोस्मि) नहीं है अवधि जिन के सुखकी भाव अखंड आनन्द रूप सदाहै अरु लक्ष्मीकी कटाक्ष जिनपर सदापरतहै भावशक्ति अनुकूल सदासेवामें तत्पर रहती हैं पुनः इन्द्र ब्रह्मादि के दुःख को सदा नाश करते हैं सबन को वरदायक हैं उत्तम धनुष बाण हाथों में धारण ऐसे मनुष्यों में उत्तम जो राम हैं तिनहि दिनोराति में प्रणाम करताहों ४५ ॥

त्रिभुवनकमनीयरूपमीड्यंरविशतभासुरमोहितप्रदानम् ॥ शरणदमनिशंसुराग मूलेकृतनिलयंरघुनंदनंप्रपद्ये ४६ भवविपिनिदवाग्निनामधेयंभवमुखदैवतदैव तंदयालुं ॥ दनुजपतिसहस्रकोटिनाशंरवितनयासदृशंहरिंप्रपद्ये ४७ अविरत भवभावनातिदूरंभवविमुखैर्मुनिभिःसदैवदृश्यम् ॥ भवजलधिसुतारणांघ्रिपोतं शरणमहंरघुनंदनंप्रपद्ये ४८ ॥

(त्रिभुवनकमनीयरूपमीड्यं) तीनिहूलोकन में परम सुंदर एकही रूप हैं पुनः सबके स्तुति करिबयोग्य हैं (रविशतभासुरमोहितप्रदानम्) सूर्यनके तेज ते सैकरन गुण अधिक प्रकाशहै जिन मेंसो ऐश्वर्य छपाये माधुर्यमें नरनाट्य करि लोक जनन को मोहित करते हैं (शरणदंसुरागमूलेनि लयंकृत रघुनंदनंअनिशंप्रपद्ये) शरणागत जनन को अभय सुख देन हारे सुंदर प्रीति उत्पन्न हो ती है जिन के मन में तिन के उर में मंदिर करि सदा वास करने वाले जो रघुनन्दनहैं तिनकी शरण में मैं दिनो राति प्राप्त रहों ४६ (भवविपिनिदवाग्निनामधेयं) संसार रूप जो बनहै ताको भस्म करि देवे को दावानल सम जिनको नाम है (भवमुखदैवतदैवतंदयालुं) महादेव ब्रह्मादिजो मुख्यदेव तिनके देवहैं पुनः विन स्वारथपरदुःख हरण दयाहै ताकेभरे मंदिरहैंसोईदया दृष्टिते (दनु जपतिसहस्र कोटिनाशं) जीवन को दुःख दायक राक्षसों को राजा रावणादि सैकरो करोरि राक्षस नको नाश करने वाले हैं (रवितनयासदृशंहरिंप्रपद्ये) सूर्यपुत्री जो यमुना जीतिन के जल सम अमल ड्याम तनहै जिन को ऐसे हरि जो श्री रघुनाथ जी तिनकी शरण में मैंप्राप्त हों ४७ सदासं सारही भावतहै जिनको भाव देहै सुख में भूले हैं तिन विषया सत्तों को अत्यंत दूरहै (भवविमुखैः मुनिभिःसदाएवदृश्यम्) पुनः संसार ते विमुख भाव जे देह को वृथा माने इंद्री विषय त्यागे शुद्ध

मन परमेश्वर में लगा ये हैं ऐसे जे मुनिहैं तिन करि कै सदा निश्चय करि दृश्यमान हैं समीपही देखि परते हैं (भवजलयेःतारणेभ्रंघ्रिपोतं) संसार रूप जो समुद्र है ताके पार उतारने हेत जिन के चरण जहाज हैं भाव जिनमें आरूढ़ रहे जीव सहजही भवपारजात (रघुनन्दनं शरणंभ्रंघ्रप्रपद्ये) विषयिन ते दूरि भक्तन के समीप भव तारक चरण जहाज जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनकी शरण में मैं प्राप्त हों ४८ ॥

गिरिशगिरिसुतामनोनिवासंगिरिवरधारिणमीहिताभिरामम् ॥ सुरवरदनुजेंद्र सेवितांघ्रिसुरवरदंरघुनायकंप्रपद्ये ४९ परधनपरदारवर्जितानांपरगुणभूतिषुतुष्टमानसानां ॥ परहितनिरतात्मनांसुसेव्यंरघुवरमम्बुजलोचनंप्रपद्ये ५० स्मितरुचिरविकासिताननावजमत्तिसुलभंसुरराजनीलनीलम् ॥ सितजलरुहचारु नेत्रशोभंरघुपतिमीशगुरोर्गुरुंप्रपद्ये ५१ ॥

(गिरिशगिरिसुतामनोनिवासं) शिवपार्वतीके मन रूपमानसरमेंहंसवत्जो वासकिहेहैं (गिरि वरधारिणंइहिताभिरामम्) पर्वतउत्तम धारण में जो चेष्टा सो सबको आनंददायक है प्रथमसिंधुमथतमेंपर्वत कच्छप रूपते धारे जवदेवता थके तब मंदराचलको पकरिमथने लगे ब्रजबूडत कृष्ण रूपते गोवर्द्धनधरे इत्यादि चेष्टासबमुखदायक हैं जिनकी (सुरवरदनुजेंद्रसेवितंघ्रिं) देवतनमें श्रेष्ठ इंद्रब्रह्माशिवादित्यन में इन्द्रप्रह्लादबलि इत्यादि करिकै सेवितहैंचरण जिनके (सुरवरदंरघुनायकं प्रपद्ये) तुम्हारे हेत नरतनुधरि दुष्टन को नाशकरिहों इत्यादि देवनको वरदेन हारे जो रघुनायक तिनकी शरण में मैं प्राप्तहों ४९ (परधनपरदारवर्जितानां) परारधन परनारी त्यागाकिहे हैं जे (परगुणभूतिषुतुष्टमानसानां) परारगुण सुनि अथवा परारी ऐश्वर्य देखिप्रसन्न होत मनजिनको (परहितनिरतात्मनां) परारहित करने में तत्पररहता है मन जिनको (सुसेव्यंरघुवरंम्बुजलोचनंप्रपद्ये) अनीतित्यागि सहजै सबसों प्रीतिकिहे परोपकारी ऐसे सुमार्गीपुरुषनके सेवाकरिवे योग्यरघुवररूपा रसभरेकमल समनेत्र तिनकी शरण में मैं प्राप्तहों ५० (स्मितरुचिरविकासिताननावजमत्तिसुलभं) मन्द मुसकानि सुन्दर प्रकाशमान् जामें ऐसा मुखकमलवत् है जिनको (अतिसुलभंमसुरराजनीलनीलम्) नीच ऊँच सबसों प्रीतिपूर्वक वार्ताकरिवे मैं अत्यंत सुलभ शीलमय स्वभावहै जिनको इन्द्र नील मणि सम श्याम तनहै जिनको (सितजलरुहचारुनेत्रशोभम्) श्वेत कमल सम सुंदर नेत्रों की शोभा है जिनके (ईशगुरोःगुरुरघुपतिंशरणंप्रपद्ये) ईश शिवादितिनके गुरुब्रह्मा तिनके गुरुजो रघुपति हैं तिनकी शरणागत में मैं प्राप्तहोताहों ५१ ॥

हरिकमलजशम्भुरूपभेदात्वमिहविभासिगुणत्रयानुवृत्तः ॥ रविरिवजलपूरितोदपात्रेण्वमरपतिस्तुतिपात्रमीशमीडे ५२ रतिपतिशतकोटिसुंदरांगंशतपथगोचर भावनाविदूरं ॥ यतिपतिहृदयेसदाविभातरघुपतिमार्तिहरंप्रभुंप्रपद्ये ५३ इत्येवंस्तुवस्तस्यप्रसन्नोऽभूद्रघूत्तमः ॥ उवाचगच्छभद्रंतेममविष्णोःपरम्पदम् ५४ ॥

(जलपूरितउदपात्रेपुरविःइवत्रयगुणअनुवृत्तः हरिकमलजशंभुरूप भेदात्वंइहविभासि अमरपति स्तुतिपात्रंईशंईडे) जलभरे हुये जलपात्रोंमें यथा सूर्यन की प्रतिविंब अनेक देखात इसीभांति आप मायाके तनिंगुण यथा सत्तोगुण आवृत भये ते विष्णु रजोगुण आवृत भये ते ब्रह्मा तमोगुण आवृत भये ते शंभु इत्यादि रूपभेदते इहां देखाते हो सोई देवन के पति जो ब्रह्मादि तिनके स्तुतिके पात्र

जो ईशआप हौं तिनहिं मैं स्तुति करताहौं ५२ (रतिपति शतकोटि सुंदरअंगं) कामदेव ते सौं करोरि गुण अधिक सुंदर अंगहै जिनको (शतपथगोचर भावनाविदूरं) शतपथ ब्राह्मण वेदांगहै तिनकी विषय अनुकूल जे भावना अर्थात् अंतरमें आपने सूक्ष्मरूपते परमात्मरूपके सेवनमें लगेरहते हैं देहव्यवहार को तृयाजानते हैं तिनते अविदूर भाव सदा समीपही रहते हैं (यतिपति हृदयेसदा विभातं) सन्यास मार्गिनमें जे उत्तम अर्थात् देहाध्यास रहित जे ब्रह्मबेनाहैं तिनके हृदयमें सदा प्रकाशमान (रघुपति मार्तिहरंप्रभुप्रपद्ये) आर्ति जो दुःख जन्ममरण त्रितापादि ताके हरणहारे जो रघुपतिहैं सुरनर नागादि सबके पति तिनकी शरणमें मैं सदाप्राप्तहों ५३ (इति एवंतस्यस्तुवतः रघूत्तमः प्रसन्नः अभूत् ते भद्रं मम विष्णोः परमम् पदम् गच्छ) शिवजी बोले हे गिरिजा इसप्रकारतिसजटायूकी स्तुतिसुनि रघुनाथजीप्रसन्न भयेपुनः बोले हे जटायू तुम्हारा कल्याण होइ अब तुम इसी विमानपर आरूढ़ पार्षदसहित प्रसन्न है मेरा जो विष्णु परमपद वैकुण्ठ है तहांको जाउ ५४ ॥

शृणोति य इदं स्तोत्रं लिखेद्वानियतः पठेत् ॥ स याति मम सारूप्यं मरणे मत्स्मृतिं लभेत् ५५ इति राघवभाषितं तदा श्रुतवान् हर्षसमाकुलो द्विजः ॥ रघुनन्दनसाम्यमास्थितः प्रययौ ब्रह्मसुपूजितं पदम् ५६ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे आरण्यकांडे अष्टमः सर्गः ८ ॥

(इदं स्तोत्रं यः शृणोति लिखेद्वानियतः पठेत् सममसारूप्यं याति मरणे मत्स्मृतिं लभेत्) इस स्तोत्रहि जो मनुष्य सुनहिगो वा लिखेगो अथवा नित्य नेमते पाठकरैगो सो मेरे समान रूपको प्राप्तहोइगो पुनः मरण समय सब वासना त्यागि वाको केवल एक मेरिही स्मरण रहैगी भाव सारूप्य मुक्तिको यही कारणहै ५५ (इति राघवभाषितं श्रुतवान् तदा द्विजः हर्षसमाकुलः रघुनन्दनसाम्यमास्थितः ब्रह्मसुपूजितं पदम् प्रययौ) इत्यादि रघुनन्दन को कहा वचन सुनि तासमयमें पक्षी जटायू हर्षते परिपूर्ण रघुनन्दनके समान रूपको प्राप्तहै पुनः ब्रह्माके सुंदर पूजिव्योग्य जो पदवैकुण्ठ तहांको जाता भया ५६ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमगियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे आरण्यकांडे जटायुस्तुतिवर्णनो नाम अष्टमः प्रकाशः ८ ॥

ततो रामो लक्ष्मणेन जगाम विपिनांतरं ॥ पुनर्दुःखं समाश्रित्य सीतान्वेषणतत्परः १ तत्राद्भुतसमाकारो राक्षसः प्रत्यदृश्यत ॥ वक्षस्येव महावक्त्रश्चक्षुरादिविवर्जितः २ ॥

सवैया ॥ मगजात करूपकबंध मिलो तुरतै वधिखण्डि दुबौ करको । धरिदिव्य तनै कहिगाप पुनः लखि आनन पूर्ण सुवायर को ॥ पदवंदि उदार बिनै करते बरने हरिरूप चराचर को । त्यहि जान कहे निजयाम तिन्हें प्रणमामि सदा करुणा करको ॥ (ततो लक्ष्मणेन रामः विपिनांतरं जगाम पुनः दुःखं समाश्रित्य सीतान्वेषणतत्परः) तदनंतर लक्ष्मण सहित रघुनन्दन दूसरे वनहिं जाते भये पुनः दुःखभरे सीताके दूढ़नेमें, तत्पर भये १ (तत्र राक्षसः अद्भुत संस्कारः प्रत्यदृश्यत चक्षुः आदिविवर्जितः महावक्त्रः वक्षसि एव) तहां वनमें एकराक्षस सम्पूर्ण अंगकरिकै आश्चर्य मय आकार संमुखदेखे जाके काननासा नेत्रादि कुछनहीं अरु बड़ा भारी मुख छातीविषे निश्चय करिके बनाई २ ॥

बाहुयोजनमात्रेण व्यापृतौ तस्य रक्षसः ॥ कबंधो नाम दैत्यैर्द्रः सर्वसत्त्वविर्हिसकः ३
तद्वाहोर्मध्यदेशे तौ चरंतौ रामलक्ष्मणौ ॥ ददर्श तुर्महासत्वं तद्बाहुपरिवेष्टितौ ४
रामः प्रोवाच विहसन् पश्य लक्ष्मण राक्षसम् ॥ शिरपादविहीनोऽयं यस्य वक्षसि चानन-
म् ५ बाहुभ्यां लभ्यते यद्यत्तत्तद्गच्छन् स्थितो ध्रुवम् ॥ आवामप्येतयोर्वाहोर्मध्यसं
कलितो ध्रुवम् ६ गंतुमभ्यत्र मार्गो न दृश्यते रघुनन्दन ॥ किं कर्तव्यमिदं तस्माभिरि-
दानीं भक्षयेत्स नौ ७ लक्ष्मणस्तमुवाचे दं किं विचारेण राघव ॥ आवामेकैकमव्य-
ग्रोऽस्त्रिंशारक्षो भुजौ ध्रुवम् ८ ॥

(रक्षसः तस्य बाहु योजनमात्रेण व्यापृतौ सर्व सत्त्व विर्हिसकः कबंधः नाम दैत्यैर्द्रः) राक्षस
जो है ताकी बाहु दोऊ ऐसी लंबी कि चारि कोश तक हाथों ते व्यापार करि सक्ताहै तिस द्वारा सब
वनके जीवन को गहि खाया जाता रहा कबंध नाम दैत्यन में उत्तम है ३ (तत् बाहोः मध्य देशे
रामलक्ष्मणौ तौ चरंतौ तत् बाहुपरिवेष्टितौ महासत्वं ददर्शतुः) तिस राक्षस की बाहुन के मध्यदेश
में रामलक्ष्मण दोऊ जने आय परे उसने पकरि लिया उसकी बाहुन में बंधे हुये दोऊ जने बड़ाभा-
री तन उसको देखते भये ४ (विहसन् रामः प्रोवाच लक्ष्मण राक्षसं पश्य अयं शिरः पाद विहीनः
च यस्य वक्षसि चाननः) विहसत संते रघुनन्दन बोले कि हे लक्ष्मण यह राक्षस जो है ताहि देखि
ये यह शीश पायन करिके हीन है पुनः जाके छार्ती विषे मुख है ५ (बाहुभ्यां यत् यत् लभ्यते तत्
तत् ध्रुवम् भक्षन् स्थितः एतयोः बाहोः मध्ये आवां अपि ध्रुवं संकलितः) बाहुन करिके जिस जिस
जीवनको पावताहै ताको ताको निश्चय करि खाता हुवा बैठैहै भव इसीकी बाहुनके बीचमें हे लक्ष्मण
तुम हम दोऊ जने निश्चय करि बंधे परे हैं ६ रघुनन्दन अत्र अभि गंतुं मार्गः न दृश्यते इतः अस्मा-
भिः किं कर्तव्यं इदानीं स नौ भक्षयेत् हे लक्ष्मण इहाँ बाहेर जानेकी राह नहीं देखि परतीहै इस
समय में हमकरिके क्या उपाय करना चाहिये काहेते जो उपाय न करेंगे तौ इसी समय में तौ रा-
क्षस तुमहम दोऊन को खाइ लेइगो ७ (लक्ष्मणः तं इदं उवाच राघव विचारेण किं रक्षः भुजौ
आवां अव्यग्रौ एकएकं ध्रुवांश्छिद्यां) लक्ष्मण तिन रघुनन्दन प्राति बोले हे राघव अब विचार करिके
क्या प्रयोजनहै राक्षस के जो दोऊ भुजाहैं तिनहिं तुमहम व्याकुलता रहित एक एकको निश्चयकरि
काटे डारते हैं ८ ॥

तथेति रामः खड्गेन भुजं दक्षिणमच्छिनत् ॥ तथैव लक्ष्मणो वामं चिच्छेद भुजमंजसा ९
ततोऽतिविस्मितो दैत्यः कौयुवांसुरपुंगवौ ॥ मद्बाहुच्छेदकौ लोके दिवि देवेषु वा कु-
तः १० ततो ब्रवीच्छसन्नेव रामो राजीवलोचनः ॥ अयोध्याधिपतिः श्रीमान् राजा दशर-
थो महान् ११ रामोऽहंतस्य पुत्रोऽसौ आतामेलक्ष्मणः सुधीः ॥ मम भार्या जनकजा
सीता त्रैलोक्यसुंदरी १२ आवां मृगययायातौ तदा केनापि रक्षसा ॥ नीतां सीतां वि-
चिन्वंतौ चागतौ घोरकानने १३ बाहुभ्यां वेष्टिता वत्र तव प्राणरिरक्षया ॥ छिन्नौ
तव भुजौ त्वंचक्रौवा विकटरूपधृक् १४ ॥

(तथाइति रामः खड्गेन दक्षिणं भुजं अच्छिनत् तथाएव लक्ष्मणः अंजसा वामं भुजं चिच्छेद) हे

लक्ष्मण जो कह ते हौ सोई होइ ऐसा कहि रघुनन्दन तरवारिकरिकै दाहिन जो भुजा है ताहि काटि डारे तैसेही निश्चय करि लक्ष्मण भी शीघ्रहीं वामजो भुजा है ताहि काटि डारे ६ (ततः दैत्यः अति बिस्मितः मत् बाहुच्छेदकौ लोके कुतः दिवि देवेषु बासुरपुंगवौ युवांको) तदनन्तर दैत्य कबंध अत्यंत बिस्मय करि पूछा कि मेरी बाहुन को काटने वाला इस नरलोक में कोऊ कहाँ है भाव नहीं है ताते देवलोकमें कोऊ देवतन बिपे कोऊ हौ अथवा देवतन मे श्रेष्ठ तुम दोऊ को हौ १० (ततः राजीव लोचनः रामः हसन्नेवाब्रवीत् अयोध्याधिपतिः श्रीमान् महान् राजा दशरथः) तदनन्तर कमल नयन रघुनन्दन हसतसंते निश्चय करि बोले कि अयोध्या पुरी के पति ऐश्वर्य वंत महान् पुरुष जो राजा दशरथ हैं ११ (तस्य पुत्रः अहं रामः असौ मे भ्राता लक्ष्मणः सुधीः जनकजा त्रयलोक्य सुन्दरी सीता मम भार्या) तिन दशरथ के पुत्र हम हैं रामनाम है वे हमारे छोटे भाई लक्ष्मण नाम बड़े बुद्धिमान हैं अरु जनक की पुत्री जो तीनिहू लोकनमें एकै सुन्दरी सीता नाम हमारी भार्या रही १२ (मृगयायाः आवांयातौ तदाकेन रक्षसः अपिनीतां बिचिन्वन्तोच धोरकाजने आगतौ) शिकार खेलने हमदोऊ भाय गये तासमय किसीराक्षस ने हरिलिया सो हरीहुई जो सीता ताहि ढूँढते हुये पुनः भयंकर वन में दोऊ आय प्राप्त भये १३ (अत्र तव बाहुभ्यां बेष्टितौ प्राणरिक्षया तव भुजौ छिन्नौ च त्वं कोवा बि कट रूपधृक्) इहाँ तुम्हारी बाहुन करिकै बँधिगये अपने प्राणों की रक्षा के हेत तुम्हारी भुजा काटि डारा पुनः कहाँ तुमको हौ भयंकर रूपधरे वनमें रहते हौ १४ ॥

कबंध उवाच धन्योऽहं यदि रामस्त्वमागतोऽसि मम अंतिकम् ॥ पुरा गंधर्वराजोऽहं रूपयौवनदर्पितः १५ बिचरल्लोकमखिलं वरनारी मनोहरः तपसा ब्रह्मणो लब्ध मब्रध्य त्वं रघूत्तम १६ अष्टावक्रं मुनिं दृष्ट्वा कदाचिदहं सन् पुरा ॥ क्रुद्धो सावाह दुष्ट त्वराक्षसो भवदुर्मते १७ अष्टावक्रः पुनः प्राह बंदितो मे दया परः ॥ शापस्यातं च मे प्राह तपसा द्योतित प्रभः १८ त्रेतायुगे दाशरथि भूत्वानारायणः स्वयम् ॥ आगमिष्यति ते वाहू छिद्ये ते यो जनायतौ १९ तेन शापाद्विनिर्मुक्तो भविष्यसि यथा पुरा ॥ इति शप्तोऽहं द्राक्षं राक्षसी तनुमात्मनः २० ॥

यदित्वं रामः मम अंतिकं आगतः असि अहं धन्यः अहं पूर्वगंधर्वराजारूपयौवनदर्पितः) कबंध बोला कि जो तुम राम हौ कृपा करि मेरे पास आय प्राप्त भयो है तौ मैं धन्य भया हे कृपासिन्धु मैं पूर्व गंधर्वों को राजा हौ सुन्दर स्वरूप अरु युवावस्था के गर्व युक्तरहा १५ (रघूत्तम ब्रह्मणः तपसा अब्रध्य त्वं लब्धं वरनारी मनःहरः अखिलं लोकं विवरन्) हे रघुवंशोत्तम ब्रह्मा को तपकरिकै अब्रध्यत्व भाव किसी को मारा नमरौ ऐसा बरपायो स्वरूपता करि उत्तम युवतिन को मनहरने वाला मैं सबलोकन मे घूमा करता रहौ १६ (पुरा काचित् अष्टावक्रं मुनिं दृष्ट्वा अहं सन् क्रुद्धः सावाह दुर्मते दुष्ट त्वराक्षसः भव) पूर्व किसी समय अष्टावक्र जो मुनि हैं तिनहि देखि मैं हस्यो भावइनकी देहमें आठकूवर हैं सो देखिकोप करिकै मुनि बोले हे दुर्मते दुष्ट त्वराक्षस हो १७ (मेवंदितः तपसा द्योतित प्रभः अष्टावक्रः दया परः पुनः प्राह च मे शापस्य अंतं प्राह) यद्यपि क्रोधित रहे जबमें प्रणाम करि विनती कीन्हें तव तपस्या करि प्रकाशमान हूँ प्रभाजिन की ऐसे अष्टावक्र दया करि पुनः बोले भावभय भतिकरु इतिकहि पुनः मेरी शापको उद्धार कह १८ (त्रेतायुगे नारायणः स्वयं दशरथिः भूत्वा आगमिष्यति यो जनायतौ ते वाहू छिद्ये ते त्रेतायुगे नारायण

आपही दशरथ के पुत्रहोंडगे ते वनमें आवहिंगे ते योजनभरि लंबीतेरी दोऊ बाहुँइकाटिडारहिगे १६
(तेनशापात्विनिर्मुक्तः यथापुराभविष्यसिइति अहंशतःआत्मनः राक्षसीतनुंभद्राक्षं) तिन रघु
नन्दन करि कै शाप ते छूटि जैसे पूर्व रहै तैसे फिरि है जायगा इस प्रकार मैं शाप को प्राप्त भयासो
अपनोराक्षसी तनु जो है ताहि देखता भया भाव उसो देह ते राक्षस भया २० ॥

कदाचिद्देवराजानमभ्यद्रवमहंरुषा ॥ सोपिवज्रेणमांरामशिरोदेशेऽभ्यताडय
त् २१ तदाशिरोगतंकुक्षिपादौचरघुनन्दन ॥ ब्रह्मदत्तवरान्मृत्युर्नाभून्मेवज्जता
डनात् २२ मुखाभावेकथंजीवेदयमित्यमराधिपम् ॥ ऊचुस्तर्वेदयाविष्टांमांविलो
क्यास्यवर्जितम् २३ ततोमांप्राहमघवाजठरेतेमुखंभवेत् ॥ बाहूतेयोजनायामौ
भविष्यतइतोव्रज २४ इत्युक्तोऽत्रवसन्नित्यंबाहुभ्यांवनगोचरान् ॥ भक्षयाम्यधु
नाबाहूखण्डितौमेत्वयाऽनघ २५ इतःपरंमांश्वभ्रास्येनिक्षिप्याग्नीधनावृते ॥ अ-
ग्निनादह्यमानोऽहंत्वयारघुकुलोत्तम २६ ॥

(रामकदाचित्अहं रुषा देवराजानंअभ्यद्रवमस्तः अपिवज्रेणमांशिरो देशेअभ्यताडयत्) हे रघुना-
थजी सोई राक्षसी स्वभाव ते किसी समय मैं मैं क्रोध करि इंद्र के संमुख धावा तब सो इंद्रने वज्र
मेरे शीश में मारा २१ (तदारघुनन्दनशिरः चपादौकुक्षिगतं ब्रह्मदत्तवरात् वज्रताडनात्में मृत्युःनअ-
भूत्) ता समय मैं हेरघुनन्दन वज्र की प्रहार ते मेरा शीश पुनः दोऊ पाय कोखि मे धुति गये परं
तु ब्रह्मा के दिये वरदान के प्रभाव तेवज्र लागेते मेरी मृत्युन भई २२ (आस्यवर्जितम् मांविलोक्य
दया विष्टास्तर्वेअमराधिपम् इतिऊचुःमुखाभावेअयंकथंजीवेत्) मुख रहित मोहि देखि दया युक्त
सब देवता इंद्र प्रति ऐसा बोले कि मुख विना इहु कैसे जीवत रहैगो २३ (ततोमघवामांप्राह जठ
रेतेमुखंभवेत् तेबाहूयोजनायामौ भविष्यत इतःव्रज) तब इंद्र मो प्रति बोले कि हे राक्षस अब मेरे
वचन प्रभाव ते तेरे पेट में मुख होइ गो अरु तेरी बाहु दोऊ योजन अर्थात् चारि कोश की लंबी-
होइ गो अरु ऊरु के बल धीरा चलै गो २४ (इतिउक्तःअत्रवसन् बाहुभ्यांवनगोचरान् नित्यंभक्षया
मि अधुनाअनघमे बाहूत्वयाखंडितौ) इत्यादि इंद्र कहे तब ते इहां बात करता हौं अरु बाहुन करि
कै पकरि खैंचि मृग महिष व्याघ्र बाराहादि वन चर जीव जोहैं तिनहिं खाता रहौं अब या समय
में हेअनघ पाप रहित रघुनन्दन मेरी लो बाहुइ तिनहिं तुमने काटि डारा २५ (इतःपरंरघुकुलो
त्तम श्वभ्रास्येइंधनावृतेअग्निं निक्षिप्यत्वयाअग्निना दह्यमानःअहं) इस के उपरांत हे रघुकुल में
उत्तम भूमि में गद्दा खादि तामे समूह ईंधन अग्नि लगाय तामे मो को डारि देइ आपकी लगाई
अग्नि करि कै भस्म हैकै तब मैं २६ ॥

पूर्वरूपमनुप्राप्यभार्यामार्गवदामिते ॥ इत्युक्तेलक्ष्मणेनाशुश्वभ्रंनिर्मायतव्रतम्
२७ निक्षिप्यप्रादहत्काष्ठैस्ततोदेहात्समुत्थितः ॥ कंदर्पसदृसाकारःसर्वाभरणभू
षितः २८ रामंप्रदक्षिणंकृत्वासाष्टांगंप्रणिपत्यच ॥ कृतांजलिरुवाचेदंभक्तिगद्गद
यागिरा २९ गंधर्वउवाच ॥ स्तोतुमुत्सहतेमेऽद्यमनोरामातिसंभ्रमात् ॥ त्वामनं
तमनाद्यंतमनोवाचामगोचरम् ३० सूक्ष्मंतेरूपमव्यक्तंदेहद्वयविलक्षणम् ॥ द्यू

पमितरत्सर्वदृश्यंजडमनात्मकम् ॥ तत्कथंत्वांविजानीयाद्व्यतिरिक्तमनःप्रभो ३१ ॥
 (पूर्वरूपं अनुप्राप्यते भार्यासर्गवदामिदृतिउक्ते आशुलक्ष्मणेन श्वभ्रं निर्माय तत्र तम्) भस्मभये पर
 में पूर्वरूपको प्राप्त हूँ तब आपकी भार्याकी राहवतावोंगो इत्यादि उसके कहतही शीघ्रलक्ष्मण करि
 के भूमिगद्वाखोदाय तामें वाको जोशरीरहै ताहि २७ (निक्षिप्यकाष्ठैः प्रादहत्ततो देहात्कंदर्पसदृशआ
 कारः संउत्थितः सर्वाभरणभूषितः) वाको शरीर गढामें डारिसमूह काष्ठकरिके अग्नि लगाय दियेतद
 नन्तर जरतेहुये शरीर ते कामदेवके तुल्यसुंदर स्वरूप निसराजो किरीटकुंडलमालादिसव आभूषण
 धारण किएहैं २८ (रामप्रदक्षिणंकृत्वा च साष्टांगं प्रणिपत्य कृतांजलिः भक्तिगद्गदया गिराड्डं उवाच) रघु-
 नन्दन जो हे तिनहि प्रदक्षिणाकरि पुनः साष्टांग प्रणामकरि सन्मुख हाथ जोरि प्रेमते कंठरुं विगया
 ताते गद्गदवाणी करिके गंयर्व ऐसा वचन बोला २९ (राममनःवाचां अगोचरमृन्मन आदि अंत अनंत मत्वां
 स्तोतुं अद्य मे मनः अतिसंभ्रमात् उत्पद्यते) गंयर्व बोला हे रघुनन्दन आपमन करिके जाने नहीं जाते हैं
 वाणी वखान नहीं करि सकी है इति मनवाणी सां अगोचरहोनही है आदि अंत भाव कवते हों कवतक
 रहोंय यहकोऊनहीं जानत महिमा को अतनहीं ताते अनंत ऐसे जो आपतिनकी स्तुति करवे में
 या समय मेरामन अत्यंत आदर ते उत्साह को प्राप्त होता है ३० (देहद्वयविलक्षणम् दृश्यसर्वजड
 अनात्मकम् दृगरूपं इतरत् ते सूक्ष्मरूपं अव्यक्तममनः व्यतिरिक्तं प्रभो तत्त्वां कथं विजानीयात्) हे रघु
 नन्दन आपकी देहें द्वय हैं स्थूल विराट् है सूक्ष्म अंतर्यामी है सो विलक्षण भाव जिनको कोई कारण
 नहीं है स्वयं है तामें विराट् रूप दृश्य अर्थात् देखि परता है ताके यावत् अंग हैं तेसव जड हैं अना
 त्मक अर्थात् सायामय देहवत व्यवहार है अरु दृग रूप इतरत् नेत्र विषय भिन्न जो आप को सूक्ष्म
 रूप है सो अव्यक्त अर्थात् प्रतिद्व नहीं है मनादिते विलग है प्रभु सो जो आप अंतर्यामी रूप हौ ति
 नहि कोऊ कैसे जानि सकै ३१ ॥

बुद्ध्यात्माभासयोरेक्यं जीवइत्यभिधीयते ॥ बुद्ध्यादिसाक्षीब्रह्मैव तस्मिन्निर्विषये
 अखिलम् ३२ आरोप्यतेऽज्ञानवशान्निर्विकारेऽखिलात्मनि ॥ हिरण्यगर्भस्तेसू
 क्ष्मदेहं स्थूलं विराट् स्मृतम् ३३ भावनाविषयो रामसूक्ष्मं ते ध्यातुं मंगलम् ॥ भूतं भ
 व्यभविष्यच्च यत्रेदं दृश्यते जगत् ३४ स्थूलं लोको देहे ते महदादिभिरावृते ॥ सप्त
 मिरुत्तरगुणैर्वैराजोधारणाश्रयः ३५ ॥

(बुद्धिआत्माभासयोः ऐक्यं इत्यभिधीयते जीवः बुद्ध्यादिसाक्षीब्रह्मैव तस्मिन्निर्विषये अखिलं)
 बुद्धि अरु आत्मा की प्रति त्रिव दोऊ की एकता माने ते भाव आत्म दृष्टि त्यागि बुद्धिद्वारा देह सुख
 के व्यापार में लगा इस प्रकार आत्म प्रतिविम्ब बुद्धि की आधार रहेते जीव भया अरु बुद्धि आदि
 कोंको साक्षी अर्थात् मन अहंकार चित्त बुद्धि इत्यादि को स्वरूप स्वभावनीकी प्रकार जाने रहै अरु
 इनके अंश विषय व्यापार में न भूलें सदा आत्म रूप में दृष्टि राखै तौ वही ब्रह्म है निश्चय करिके
 त्याहिनिर्विकार विषे संपूर्ण जो लोक व्यवहार है ताहि ३२ (अज्ञानवशात् अखिलात्मनि निर्विकारे
 आरोप्यते ते सूक्ष्मं देहं हिरण्यगर्भः स्थूलं विराट् स्मृतम्) अज्ञानता वश ते लोग जो जगत्को व्यापार
 है ताहि सब की आत्मा जो विकार रहित है त्याहि विषे आरोपित करते हैं हे रघुनन्दन विचार करि
 देंगे आपकी सूक्ष्म देह हिरण्य गर्भ है अरु स्थूल देह विराट् है ३३ (रामते सूक्ष्मभावनाविषयः ध्यान

मंगलमूदंजगत् यत्रभूतंभविष्यत्चभव्यंदृश्यते) हेरघुनन्दन आपको जो सूक्ष्म रूपहै सो भावना बिषय अर्थात् हृदय कमल में ध्यान करि ध्यानी को मंगल कारी है पुनः उसी के प्रभावते इस जग में जो कलु पूर्व भया जो आगे होनहारहै अब जो होताहै इत्यादि सब वाको देखि परता है ३४ (तेस्थूलदेहेअंडकोशेमहत आदिभिःसप्तभिः उत्तरगुणैः आवृतैवैराजः धारणाश्रयः) हेरघुनन्दन आप की स्थूल देह जो ब्रह्माण्ड कोश है तामें महातत्त्वादि जो सात आवरण हैं ते उत्तर गुणैः कहे एक ते दूसरा दशगुण आवृत कहे घेरेहैअर्थात् जो सावकाश में चौदहौ भुवनहैं ताको दशगुणा पृथ्वी तत्त्व घेरेहै पृथ्वी के बाहेर पृथ्वी ते दशगुणा मोटा जल तत्त्व घेरेहैजलते दशगुणा अग्नि तत्त्व अग्नि ते दश गुणा वायु तत्त्व वायु ते दश गुणा आकाश तत्त्व आकाशते दश गुणा अहंकार तत्त्व अहंकार के बाहेर दशगुणा महातत्त्व घेरेसोसोनेकैसो अंडा गोलाकार ब्रह्माण्डहै इत्यादि आवृत के मध्य जो सावकाश में चौदहौ भुवनहैं इत्यादि सब आपको स्थूल शरीरहै ताको अभिमानी जो बैराज पुरुषहैसो धारणा श्रय एकाग्र चित्त ध्यान करने योग्यहै ३५ ॥

त्वमेवसर्वकैवल्यंलोकास्तेऽवयवाःस्मृताः ॥ पातालंतेपादमूलंपार्ष्णिस्तवमहातं
लम् ३६ रसातलंतेगुल्फौतुतलातलमितिर्थाते ॥ जानुनीसुतलंरामऊरूतेबित
लंतथा ३७ अतलंचमहीरामजघनंनाभिगंनभः ॥ उरःस्थलंतेज्योतींषिग्रीवाते
महउच्यते ३८ बदनंजनलोकस्तेतपस्तेशंखदेशगम् ॥ सत्यलोकोरघुश्रेष्ठशीर्ष
ण्यास्तेसदाप्रभो ३९ इंद्रादयो लोकपालावाहवस्तेदिशःश्रुती ॥ अश्विनोनासि
केरामवक्तंतेऽग्निरुदाहतः ४० ॥

(सर्वस्य कैवल्यंत्वं एवलोकाः ते अवयवाःस्मृताः ते पादमूलं पातालं महातलं तव पार्ष्णिः) हे रघुनन्दन सबके कैवल्य मुक्ति स्थान आपही निश्चय करिके हौं अरु सबलोक आपही के अंगहैं यथा आपके तरवा सो पाताल लोक है महातल आपकी एँढी है ३६ (ते गुल्फौ रसातलंतु तलातलं इतीर्थाते सुतलं जानुनी तथा बितलं रामते ऊरू) आपके गुल्फ रसातल है पुनः तलातल सो निरोह है सुतल टिडुनी है तैसे बितल लोक है राम आपकी ऊरू अर्थात् फीली हैं ३७ (रामअतलंच महीजघनं नभः नाभिगम् ज्योतिषीते उरः स्थलम् महते ग्रीवाउच्यते) हे रघुनन्दन अतल लोक अरु भूमिलोक आपको जघन अर्थात् गलहरी अरु पेडू प्रयंत है औ गगन आपकी नाभी है पुनः नक्षत्र लोक छाती है पुनः महलोक आपकी ग्रीवाहै ३८ (जन लोकः ते बदनंतपः ते शंखदेशगम् रघुश्रेष्ठ प्रभो सत्यलोकःते सदाशीर्षण्याः) जन लोक आपको मुखहै तपलोक आपको ललाट देशहै हे रघुवंशोत्तम प्रभु सत्यलोक आपको सदाशीर्ष है ३९ (इंद्रादयः लोकपालाः ते वाहवःदिशः श्रुतीराम अश्विनौ नासिके अग्निः ते वक्त्रं उदाहतः) इंद्रवरुण यम कुबेर इत्यादि जो लोक पाल हैं ते आपकी बाँहुइ हैं सब दिशा सोई कान हैं अश्विनी कुमार नासिकाहैं हेरघुनन्दन अग्नि आपको मुखहै इत्यादि बेदादि कहते हैं ४० ॥

चक्षुस्तेसविताराममनश्चंद्रउदाहतः ॥ भ्रूमंगएवकालस्तेबुद्धिस्तेषाक्पतिर्भवे
त् ४१ रुद्रोऽहंकाररूपस्तेवाचश्छांदांसितेव्ययः ॥ यमस्तेदंष्ट्रदेशरथोनक्षत्राणि

द्विजालयः ४२ हासोमोहकरीमायासृष्टिस्तेपांगमोक्षणं ॥ धर्मःपुरस्तेऽधर्मश्चष्ट
पृष्ठभागउदीरितः ४३ निमिषोन्मेषणोरात्रिर्दिवाचैवरघूत्तम ॥ समुद्राःसप्ततेकुक्षि
र्नाड्योनद्यस्तवप्रभो ४४ रोमाणिवृक्षौषधयोरेतोवृष्टिस्तवप्रभो ॥ महिमाज्ञान
शक्तिस्तेएवंस्थूलंरूपस्तव ४५ यदस्मिन्स्थूलरूपेतेमनःसंधार्यतेनरैः ॥ अनाया
सेनमुक्तिःस्यादतोन्मयन्नहिर्किंचन ४६ ॥

(राम ते चक्षुः सविता मनः चंद्र उदाहृतः ते भूभंग एवकालः वाक्पतिः ते बुद्धिः भवेत्) हे
रघुनन्दन आपको नेत्र सूर्य हैं मन चंद्रमाहै आपकी भूकुटी भंग सोई कालहै निश्चय करि ब्रह्मा आप
की बुद्धिहै ४१ (रुद्रःतेअहंकार रूपः छदांसि ते अव्यय वाचः ते दंष्ट्र देशस्थानं यमः नक्षत्राणि द्वि
जालयः) रुद्र आपको अहंकार रूपहैं वेद अविचल आपकी वानी है आपकी दाढ़ि यमराज हैं नक्षत्र
दांतन की पाँती हैं ४२ (मोहकरी माया हासः ते अपांगमोक्षणम् सृष्टिः ते पुरतः धर्मः च अधर्म
पृष्ठभाग उदीरितः) लोकमोहित करन हारी माया आपकी हास्यहै आपकी कटाक्ष चलना सृष्टि
उत्पन्न होनाहै कटाक्ष बंदहोना प्रलय है छाती आदि आगेको भंग धर्म है पुनः अधर्म आपको पाछे
को भाग कहा गया ४३ (रघूत्तम निमिष उन्मिषणे रात्रिः चएव दिवा सप्त समुद्राः ते कुक्षिः प्रभो
नद्यः तवनाड्यः)हेरघुबंग में उत्तम आपकी निमिष पलक बंदहोना सो रात्रीहै उन्मेषणे पलकखुल
ना दिन है सातों समुद्र आपकी कोखिहैं हे प्रभो नदी सब आपकी नाडीहैं ४४ (वृक्षऔपययः रोमा-
णि वृष्टिः तवरेतः प्रभो ते महिमा ज्ञान शक्तिः एवं तव स्थूलवपुः) वृक्ष औषधी सब आप के रोमहैं
अरुजल वृष्टि सोई आपको वीर्यहै हे प्रभु आपकी महिमा ज्ञानशक्ति है इसीप्रकार यह विराट आप
को स्थूल तन है अर्थात् ब्रह्माण्ड रचना ४५ (यत्अस्मिन् स्थूलरूपे नरैः मनः धार्यते अनायासेन
मुक्तिः स्यात् अतः अन्यत् किंचननहि) कबंध कहत हे रघुनाथ जी जो इस आपके स्थूलरूप बिषे
मनुष्यों करिकै मन धारण किया जाय तो अनायास योगतापादि परिश्रम रहित सौभाविकही
मुक्ति होतीहै इसते परे और कछु सुगम उपाय नहीं है ४६ ॥

अतोऽहंरामरूपंतेस्थूलमेवानुभावये ॥ यस्मिन्ध्यातेप्रेमरसःसरोमपुलकोभवे
त४७तदेवमुक्तिःस्याद्रामयदातेस्थूलभावकः॥तदप्यास्तांनवैवाहमेतद्रूपंविचिंत
ये४८धनुर्बाणधरंश्यामंजटावल्कलभूषितम् ॥अपीच्यवयसंसीतांविचिन्वंतंसल
क्षमाणम्४९इदमेवसदामेस्यान्मानसेरघुनन्दन॥सर्वज्ञःशंकरःसाक्षात्पार्वत्यासहि
तःसदा ५० त्वद्रूपमेवंसततंध्यायन्नास्तेरघूत्तम ॥ मुमूर्षूणांसदाकाश्यांतारकंब्रह्म
वाचकम् ५१ रामरामेत्युपदिशन्सदासंतुष्टमानसः ॥ अतस्त्वंजानकीनाथपर
मात्मासुनिश्चितः ५२ ॥ •

(अतःरामतेस्थूलरूपं एवअहंअनुभावये यस्मिन्ध्याते सरोमपुलकः प्रेमरसःभवेत्) इसकारण
हेरघुनाथ जी आपको जो स्थूलरूप विराटहै ताहीको निश्चय करि मैं ध्यानकरताहों जिसमें ध्यान
राखेते सहित रोम पुलक प्रेमरस उत्पन्न होताहै ४७ (रामयदातेस्थूलभावकः तत्तएवमुक्तिःस्यात्
तत्अप्यास्तांतवएतत्तूरूपं एवअहंविचिंतये)हेरघुनाथजी जब आपके स्थूल रूपको जो जन ध्यान करता

है ताकी निश्चय करि मुक्ति होती है अरु जो त्पहि स्थूलरूपको ध्यानन है सकैतौ आपको यही जो राजकुमार रूप है ताही को निश्चय करि मैं चिंतवन करता हौं भाव जो सुलभ लोकोद्धारहित अवतीर्ण भयो ४८ (अपीच्यवयसंश्यामं जटावलकलभूपितम् धनुर्वाणधरं सलक्ष्मणम् सीतां विचिन्वंतं) तरुण अवस्था सुंदरश्याम स्वरूप शशिमं जटा तनमें वल्कल वसन भूपित करमें धनुषवाण धारण किहे सहित लक्ष्मण सीता जो हैं तिनहिं ढूँढते हुये ४९ (रघुनन्दन इदं एव मे मानसे सदा स्यात् पार्वत्या सहितः साक्षात् शंकरः सर्वज्ञः सदा) हेरघुनन्दन यही राजकुमार रूप निश्चय करि कै मेरे मनमें सदा रहै काहे ते पार्वती नहित साक्षात् महादेव सर्वतत्त्व ज्ञाता सोऊ सदा ५० (रघुत्तम एवं त्वत् रूपं सततं ध्यायन् आस्ते सदा काश्यां सुभूर्भूणां तारकं ब्रह्मवाचकम् ५१) (रामराम इति उपदिशन् सदा संतुष्टमानसः अतः जानकीनाथत्वं परमात्मानुनिश्चितः) हेरघु वंशमें उत्तम इसी प्रकार शंकर भी आपको यही जो रूप है ताहि निरंतर ध्यान करते हुये वास करते हैं सदा काशीजीमें मरणकाल मूर्पण को भी तारक ब्रह्मवाचक रामराम इत्यादि उपदेश है वाको मुक्त करि आपसदा संतुष्ट प्रसन्न मन रहते हैं भाव आपको ध्यान करि शंकर आनंद पावत अरु आपको नाम उपदेश है मूर्पण को मुक्ति देत इस कारण हे जानकीनाथ आप परमात्मा हौ निश्चय करि ५२ ॥

सर्वे ते मायया मूढास्त्वां न जानंति तत्त्वतः ॥ नमस्ते राम भद्राय वेधसे परमात्मने ५३
अयोध्याधिपते तुभ्यं नमः सौमित्रिसेवित ॥ त्राहि त्राहि जगन्नाथ मां मायानावृणोतु ते
५४ राम उवाच ॥ तुष्टोऽहं देवगंधर्वभक्त्यास्तुत्याचतेऽनघ ॥ याहि मे परमं स्थानं
योगिगम्यं सनातनम् ५५ जयंति ये नित्यमनन्यबुद्ध्या भक्त्या त्वदुक्तं स्तवमाग
मोक्तम् ॥ तेऽज्ञानसंभूतभवं विहाय मां यांति नित्यानुभवानुमेयम् ५६ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे आरण्यकाण्डे नवमः सर्गः ६ ॥

(त्वन्मायया सर्वे मूढास्त्वां न जानंति तत्त्वतः न जानंति राम भद्राय नमस्ते परमात्मने वेधसे) हेरघुनन्दन आपकी माया करि कै सब लोक जन मूढ अल्पज्ञते आपको तत्त्व नहीं जानते हैं अर्थात् मनुष्य करि माने हैं राम कल्याण रूप तिनके अर्थ नमस्कार है परमात्म जो आप तिनके अर्थ प्रणाम है ५३ (सौमित्रिसेवित अयोध्याधिपते तुभ्यं नमः जगन्नाथ त्राहि त्राहिते मायामां न आवृणोतु) सुमित्रा नन्दन करि कै सेवित अयोध्यानाथ आप के अर्थ नमस्कार है हे जगन्नाथ रक्षरक्ष आपकी मायामोहिं न घेरै ५४ (देवगंधर्व ते भक्त्या च स्तुत्या अहं तुष्टः योगिगम्यं सनातनं मे परमं स्थानं अनघ याहि) रघुनन्दन बोले हे देवगंधर्व तेरी भक्ति करि कै पुनः स्तुति करि कै हम प्रसन्न हैं योगिन को जहां जाने की गम्य है ऐसा जो सनातन मेरा परम उत्तम स्थान है तहां को हे निःपाप जाउ परमपद को प्राप्त होउ ५५ (आगम उक्तमूत्तवत् उक्तमस्तवम् ये अनन्यबुद्ध्या भक्त्या नित्यं जपंति अज्ञानसंभूतभवं विहाय नित्य अनुभव अनुमेयम् मां यांति) पुनः रघुनन्दन बोले हे गंधर्व सब शास्त्रन को सम्मत युत तुम्हारा कहा जो यह स्तोत्र है ताहि जे जन एकाग्र बुद्धियुक्त भक्ति करि कै नित्य पढ़ेंगे ते जन अज्ञान सो उत्पन्न भया जो भव अर्थात् संसार बंधन ताहि विहाय त्यागि अर्थात् संसार बंधन ते छूटि अनुभव ज्ञान करि कै जानिबे योग्य जो मैं परमात्मा हौं ताहि प्राप्त होंगे ५६ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथचिरचिते अध्यात्मभूषणे आर
ण्यकाण्डे कवंचस्तुतिवर्णनो नाम नवमः प्रकाशः ६ ॥

लब्ध्वावरंसगंधर्वः प्रयास्यनूरांममब्रवीत् ॥ शवर्यास्तेपुरोभागेआश्रमेरघुनन्द
न १ भक्त्यात्वत्पादकमलेभक्तिमार्गविशारदा ॥ तांप्रयाहिमहाभागसर्वतैकथ
यिष्यति २ इत्युक्त्वाप्रययौसोऽपिविमानेनार्कवर्चसा ॥ विष्णोःपदंरामनामस्मरणे
फलमीदृशम् ३ त्यक्त्वातद्विपिनंघोरं सिंहव्याघ्रादिदूषितम् ॥ शनैरथाश्रमपदं
शवर्यारघुनन्दनः ४ शवरीराममालोक्यलक्ष्मणेनसमन्वितम् ॥ आयान्तमारा
द्धर्षेणप्रत्युत्थायाचिरेणसा ५ ॥

सवैया ॥ लिखपाय कबंध स्वधाम पठे वनमारग अग्र पयान किये । शवरी मिलि पूजि खवाय
फलै विनतीकरि भक्ति सुदान लिये ॥ सियशोच कहै कपिसों मिलनो त्यहिको प्रभुनेनिजधामदिये ।
करुणाकर सानुज रामपथी वसियेनिज वैजसुनाथ हिये ॥ (सगंधर्वः वरं लब्ध्वा प्रयास्यनूरांममब्र
वीत् रघुनन्दन ते पुरो भागे आश्रमे शवर्याः) श्रीमहादेव जी कहत हे गिरिजा तदनंतर सो गंधर्व
वरपाय कै जात समय श्रीराम प्रति बोला हे रघुनन्दन आप ते पूर्व दिशि जो देखि परताहै तिस
आश्रम में शवरी रहती है १ (त्वत्पाद कमले भक्त्या भक्ति मार्ग विशारदा महाभाग तां प्रयाहि ते
सर्वकथयिष्यति) सो शवरी आपके पद कमल विषे भक्ति करिकै भक्तिमार्ग में बड़ी प्रवीण है हे महा
भाग रघुनन्दन ताके पास जाउ वह आपते सीता प्राप्ती को सब हाल कहैगी २ (इत्युक्त्वा सः अपि
अर्क वर्चसा विमानेन विष्णोः पदं प्रययौ रामनाम स्मरणे ईदृशम्फलम्) इसप्रकार कहिकै सो गं
धर्व निश्चय करि जो सूर्य सम प्रकाशमान विमान है तापर आरूढ़हैकै विष्णुको पद जोवैकुण्ठ तहाँ
को जाताभया सो रामनाम स्मरण करत संते इसप्रकार को फल है ३ (सिंहव्याघ्रादि दूषितम्
तत्घोरं विपिनं त्यक्त्वा अथ रघुनन्दनः शनैः शवर्या आश्रम पदं) सिंहव्याघ्र आदि जीव घातक हैं
जहाँ सो भयंकर वन जोहै ताहि त्यागि अब रघुनन्दन धीरा धीरा शवरी के आश्रमहि जाते भये ४
(लक्ष्मणेन समन्वितम् रामं आयातं सा शवरी आरात् आलोक्य हर्षेण अचिरेण सा प्रत्युत्थाय)
लक्ष्मण करिकै समेत रघुनन्दन जोहैं तिनहिं आवते हुये शवरी दूरिहीं ते देखि बड़ी भारी हर्षकरिकै
भाव अपनी अहोभाग्य मानि अचिरेण अर्थात् शीघ्रता करिकै सो शवरी आसन ते उठिकै आगे चलि
जाय कै रघुनन्दन के समीप ५ ॥

पतित्वापादयोरग्रेहर्षपूर्णाश्रुलोचना ॥ स्वागतेनाभिनंद्याथस्वासनेसंन्यवेशयत्
रामलक्ष्मणयोःसम्यक्पादौप्रक्षाल्यभक्तितः ॥ तज्जलेनाभिषिच्यांगमथाध्यादि
भिरादृतः ७ संपूज्यविधिवद्रामंससौमित्रिसपर्यया ॥ संगृहीतानिदिव्यानिरामा
र्थशवरमुदा ८ फलान्यमृतकल्पानिददौरामायभक्तितः ॥ पादौसंपूज्यकुसुमैः
सुगंधैःसानुलेपनैः ९ कृतातिथ्यंरघुश्रेष्ठमुपविष्टंसहानुजम् ॥ शवरीभक्तिसंपन्ना
प्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् १० ॥

(पादयोः अग्रे पतित्वा हर्षेण अश्रुपूर्णलोचना स्वागतेन अभिनंद्य अथस्वआसने संन्यवेश
यत्) प्रभुके पायँन के आगे शवरी दंडकी नाई गिरि प्रणाम कीन्ही पुनः उठी हर्षेण अर्थात् प्रेमा
नंदउमग करिकै अश्रु जलभरेनेत्र युत कुशल प्रश्नपूछिकै आनंद है तबलवायलाय अपने आसन
पर बैठावती भई ६ (रामलक्ष्मणयोः पादौ भक्तितः सम्यक् प्रक्षाल्य तत् जलेन अंगं अभिषिच्य

अथ अर्घ्यादिभिः आहृतः) श्रीराम के तथा लक्ष्मण के जो दोऊ पाँय हैं तिन्हिं शवरीभक्तिते भली भांति धोयकैसो जल करिकै अपना सर्वांग सींचती भई तब अर्घ्यादि पूजनकी सामग्री करिकै आदर सहित ७ (सपर्यया ससौमित्रिं रामं विधिवत् संपूज्य रामार्य संग्रहांतानि दिव्यानि मुद्राशवरी) पूजाकी सामग्री करिकै सहित लक्ष्मण रघुनन्दन जाँ हैं तिनहिं विधि पूर्वक पूजन करि पुनः जो रघुनन्दन के भोजन हेत जो पूर्वही ते संग्रह करि राखी रहै दिव्य फलादि सामग्री तिनहिं लाय आनंद समेत शवरी ८ (अमृतकल्पानि फलानि भक्तितः रामाय ददौ सुगंधैः सानुलेपनैः कुसुमैः पादौ संपूज्य) अमृत के तुल्य स्वाद है जिनमें ऐसे फल प्रेमाभक्ति ते रघुनाथ जी के भोजन हेत देती भई चंदनादि सुगंध लेपन करिकै फूलादि करिकै पाँयन को पूजन करती भई पाँदशों पचार यथा । आसनंस्वागतं पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकं । मधुपर्काचमनं स्नानं वस्त्राभरणानि च ॥ सुगंधं सुमनो धूपं दीपनैवेद्यवन्दनम् ॥ सीति यह है सो प्रेम ते शवरी आगे पाछे को नेम भूली गई ९ (आतिथ्यं कृत सहानुजम् रघुश्रेष्ठम् उपाविष्टं भक्तिसंपन्ना प्रांजलिः शवरी वाक्यं अब्रवीत्) प्रेम पूर्वक सत्कार किया जब लक्ष्मण सहित रघुनाथ जी आसन पर बैठे तिनहिं देखि भक्ति युक्त हाथ जोरि शवरी वचन बोली १० ॥

अत्राश्रमे रघुश्रेष्ठगुरवो मे महर्षयः ॥ स्थिताः शश्रूषणं तेषां कुर्वन्ती स मुपस्थिता ११
बहुवर्षसहस्राणि गतास्ते ब्रह्मणः पदम् ॥ गमिष्यन्तोऽब्रुवन् मां त्वं वसन्ति वसमाहि
ता १२ रामो दाशरथिर्जातः परमात्मा सनातनः ॥ राक्षसानां वधार्थाय ऋषीणां
रक्षणाय च १३ आगमिष्यति चैकाग्रध्याननिष्ठा स्थिरा भव ॥ इदानीं चित्रकूटाद्रौ
वाश्रमे वसति प्रभुः १४ यावदागमनं तस्य तावद्रक्ष कलेवरम् ॥ दृष्ट्वैव राघवं द
ग्ध्वा देहं यास्यसि तत्पदम् १५ तथैवाकरं वराम त्वद्धानैकपरायणा ॥ प्रतीक्ष्या
गमनं तेऽद्य सफलं गुरुभाषितम् १६ ॥

(रघुश्रेष्ठ अत्र आश्रमे मे गुरवः महर्षयः स्थिताः तेषां शश्रूषणं कुर्वन्ती स उपस्थिता) शवरी कहै कि हेर-
घुनाथ जी इस आश्रम में मेरे गुरु महाऋषि मतंग वास करते रहें तिन की सेवा करती हुई महूँ
उनके समीप रहती रहों ११ (बहुसहस्राणिवर्षाणि गताः ते ब्रह्मणः पदं गमिष्यन्तः सां ब्रुवन् त्वं वसन्ति वसमाहि
ता) इहां पर वास कर ते हुये बहुत हजार वर्ष बीति गये कछु काल भये ते मेरे गुरु जब
ब्रह्मलोक को जाने लगे तब मो प्रति बोले कि तू इस आश्रम को निश्चय करि अंगीकार करि इहें
वास कर १२ (ऋषीणां रक्षणार्थाय च राक्षसानां वधार्थाय सनातनः परमात्मा रामः दाशरथिः जातः)
ऋषि साधुन के रक्षा हेत रावणादि राक्षसों के वध करने अर्थ जो आदि सनातन परमात्मा हैं सोई
राम नामे दशरथ के पुत्र हैं उत्पन्न भये हैं १३ (इदानीं प्रभुः चित्रकूटाद्रौ आश्रमे वसति एकाग्र ध्यान
निष्ठा च स्थिरा भव आगमिष्यति) हैं शवरी या समय में रघुनन्दन प्रभु चित्रकूट पर्वत पै आश्रम में
वास करते हैं तू एकाग्र चित्त है ध्यान निष्ठा ध्यान में तत्पर पुनः स्थिर है इसी आश्रम में वास
किहे-रहु इहें रघुनन्दन आवहिगे १४ (यावत् तत्स्य आगमनं तावत् कलेवरं रक्ष राघवं दृष्ट्वा एव देहं दग्ध्वा
तत्पदं यास्यसि) जब तक तिन रघुनन्दन को आगमन न होय तब तक देह की रक्षा कर आये पर
रघुनन्दन के दर्शन करि पुनः देह अग्नि में जराय तब उन के पद को प्राप्त है है इति कहि गुरु विधि
धानको गये १५ (राम तथा एव करवं ते प्रतीक्ष्य आगमनं त्वद्धानैकपरायणा गुरुभाषितम् अद्य सफलम्)

हे रघुनन्दन जैसे गुरु कहि गये तेसाही किहेउँ आप के प्रसिद्ध आव ने की अभिलाष किहे आपहीके ध्यान में लगी रही गुरु को कहा वचन आज सफल भया ध्यान को फल मिला १६ ॥

तवसंदर्शनंरामगुरुणामपिमेनहि॥योषिन्मूढाऽप्रमेयात्मन्हीनजातिसमुद्भवा १७
तवदासस्यदासानांशतसंख्योत्तरस्यवा ॥ दासीत्वेनाधिकारोऽस्तिकुतःसाक्षात्तवै
वहि १८ कथंरामाद्यमेदृष्ट्वंमनोवागगोचरः ॥ स्तोतुंनजानेदेवेशकिंकरोमिप्र
सीदमे १९ श्रीरामंउवाच ॥ पुंस्त्वेस्त्रीत्वेविशेषोवाजातिनामाश्रमादयः ॥ नकार
णमद्भजनेभक्तिरेवहिकारणं २० यज्ञदानतपोभिर्वावेदाध्ययनकर्मभिः ॥ नैवद्रष्टु
महंशक्योमद्भक्तिविमुखैःसदा २१ तस्माद्भामिनिसंक्षेपाद्वक्ष्येऽहंभक्तिसाधनम् ॥
सतांसंगतिरेवात्रसाधनंप्रथमंस्मृतम् २२ ॥

(रामतवसंदर्शनंमृगेगुरुणांपिमेनहि अप्रमेयआत्मन्योषिन्मूढाहीनजातिसमुद्भवा) हेरघुनन्दन आप के दर्शन मेरे गुरुन को निश्चय करिकै नहीं भये प्रमाण रहित असंख्य महिमा शुद्ध परमात्मा रूप इति हे अप्रमेय आत्मन् मैं स्त्री अज्ञान पुनः नीच जाति में उत्पन्न उत्तम क्रिया रहित सहजै अपावन १७ (तवदासस्यदासानां शतसंख्याउत्तरस्य वादासीत्वेअधिकारः नअस्तिसाक्षात्तवएव हिकुतः) हे रघुनन्दन आप को दास एक ताको दास दो ताको दास तीनि ताको दास चारि इसी क्रम सौ के ऊपर जो दास हैं तिनकी दासी होने को मोको अधिकार नहीं है तौ साक्षात् आपहीकी निश्चय करि दासी होउँ यह कैसे योग्य है १८ (मनःवाक्अगोचरः रामत्वंमेअद्यकंधृष्टः स्तोतुंन जाने किकरोमि देवेशमेप्रसीद) मन वचन सौ अगोचर भाव मन वचन की विषयमें नहीं आवतेहौ हे रघुनन्दन आप जोहैं तिनहिं आजु मैं कैसे दर्शन किया सो नहीं जानि सक्ती हौं अरु आप की स्तुति करना भी नहीं जानती हौं कैसे करौं हे देवनके ईश प्रसन्न होउ १९ (पुंस्त्वेस्त्रीत्वेवाजातिनां आश्रमादयः विशेषःमद्भजने कारणंभक्तिःएवहिकारणं)रघुनन्दनबोले पुरुष त्व स्त्री त्व अथवा जाति-नके आश्रम इत्यादि विशेषता मेरे भजनमें कारण नहीं है भजनमें भक्तिही निश्चय करिकै कारण है २० (सदामत्भक्तिविमुखैः यज्ञदानतपोभिः वा वेदाध्ययनकर्मभिः अहंद्रष्टुंशक्यःनएव) जे सदा मेरी भक्ति सौ विमुख हैं तिन पुरुषों करि कै जो यज्ञदान तपस्या वा वेद पढना इत्यादि कर्म करि कै मोको देखिवे को शक्य नहीं है निश्चय करि नहीं पाय सक्ते हैं २१ (तस्मात्भामिनि भक्ति साधनम् संक्षेपात्अहंवक्ष्ये सतांसंगतिःएव प्रथमंसाधनंस्मृतम्) तिसकारण हे भामिनि अपनी भक्तिके जो साधन हैं तिनहिं संक्षेप थोरे विस्तार में हम कहते हैं संतन की जो संगतिहै सोई नि-श्चय करि प्रथम साधन जानिये २२ ॥

द्वितीयंमत्कथालापस्तृतीयंमद्गुणेरणम् ॥ व्याख्यातृत्वंमद्वचसांचतुर्थसाधनं
भवेत् २३ आचार्योपासनंभद्रेमद्बुद्ध्यामाययासदा ॥ पंचमंपुण्यशीलत्वंयमादि
नियमादिच २४ निष्ठामत्पूजनेनित्यंषष्ठंसाधनमीरितम् ॥ मममंत्रोपासकत्वंसां
गंसप्तममुच्यते २५ ॥

(मत्कथाआलापःद्वितीयं मद्गुणेरणमृतृतीयं मत्वचसांव्याख्यातृत्वं चतुर्थसाधनंभवेत्) मेरी कथाको श्रवणगान करना दूसरा साधन करुणा कृपादयाशील सुलभ उदारतादि मेरे गुणनको कीर्तन

करना तीसरा साधन है मेरे नाम रूपको प्रतिपादन करनेवाले वचन हैं जामें ऐसे उपनिषदोंको व्याख्यान अर्थ प्रसिद्ध करना चतुर्थ साधन है २३ (भद्रेऽभमायया सदा मत्तुद्धया आचार्यस्य उपासनम्पंचमम्) हे कल्याणरूपे निरछल है सदा मेरी बुद्धि करिकै भावमेरी समान मानि गुरुकी सेवा करना पंचम साधन है (पुण्यशीलित्वं यमादिचनियमादि) पुण्यकार्यमें सदा लगे रहना पुनः यमयथा योगशास्त्रे तत्राहिंसासत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परियहायमाः । जीवनपरदया अहिंसा है सत्यबोलना चोरी न करना अस्तेय है स्त्री संग्रह न करना सो ब्रह्मचर्य है सविषय पापवार्ता अंगीकार न करना सो अपरिग्रह है इति यम है पुनः शौच संतोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधाना नियमः । बाहर स्नानादि भीतर कुवासना त्याग सो शौच है यथा लाभ तामें तुष्ट रहना संतोष है कायकेशतप है सद्ग्रंथ अवलोकन स्वाध्याय है ईश्वरमें प्रीति राखना इत्यादि नियम हैं पुनः आदि पदते आसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यादि करना २४ (नित्यं मत्पूजने निष्ठाषष्ठं साधनं ईरितं) रामतापिनी आदिरीतिते त्रिविध पूर्वक नित्य मेरे पूजामें निष्ठा अर्थात् विश्वास राखि नित्य नियमते करना छठा साधन कहा गया है किष्किंया के चौथे सर्गमें पूजाकी विधि विस्तार ते लिखव ताते इहां नहीं लिखा (सांगमममंत्रं उपासकत्वं सप्तममुच्यते) अंग सहित मंत्र यथा अकडम चक्रते सुसिद्ध शोधि सो बीज आदि है पुनः बीज चतुर्थ्यंत नाम अंतमें नमः इति राजमंत्र पुनः जीवन जनन ताड़न बिमलीकरणादि संस्कार करि पुनः मार्गशीर्ष कालगुन ज्येष्ठ भाद्रादि मास शुक्लपक्ष सप्तमी आदि तिथि रविवार अश्विनी रोहिणी पुष्यादि नक्षत्र सिद्धादि योग बालवादि करण चंद्र तारा शुद्ध मीनादि बलीलग्नचन्द्र सन्मुख योगिनी पीछे इति मुहूर्त में प्रारंभ पुनः कूर्मचक्रते भूमिशोधि लीपि कूर्मचक्र लिखि ताके शीशपर कुशासन डसाय दिनते दिशा शोधि बैठि पुनः मुखते मुख पुच्छते पुच्छ मिला तुलसी माल मंत्रित गुहा गोमुखीमें किया अंगन्यास ध्यान करि गोमुखी उरके लग राखि अंगुष्ठ मध्यमाते गुरिया गहि मंत्रमें मन लगाय प्रत्यक्ष सहस्र वा अधिक जहां तक है सकै नित्य नेमते रोज उतनै जपे हविष्य स्वल्पान्न भोजन शुद्ध ब्रह्मचर्य रहै ताके निर्विघ्नहेतु राम सहस्रनाम स्तवराज रामरक्षा रामकवच पाठकरै इत्यादि अंगन सहित मेरे मंत्रकी उपासना करना भाव श्रद्धासमेत मन लगाय मंत्रजाप करना भक्ति को सतवांसाधन कहा गया है २५ ॥

मदभक्तेष्वधिका पूजा सर्वभूतेषु मनमतिः ॥ बाह्यार्थेषु विरागित्वं शमादिसहितं तथा ॥
२६ अष्टमं नवमं तत्त्वविचारो मम भामिनि ॥ एवं नवविधा भक्तिसाधनं यस्य कस्य
वा २७ स्त्रियो वा पुरुषस्यापि तिर्यग्योनिगतस्य वा ॥ भक्तिः संजायते प्रेमलक्षणा शु-
भलक्षणे २८ भक्तौ संजातमात्रायां मत्तत्त्वानुभवस्तदा ॥ ममानुभवसिद्धस्य मुक्ति-
स्तत्रैव जन्मनि २९ ॥

(सर्वभूतेषु मनमतिः मत्भक्तेषु अधिका पूजा शमादिसहितं तथा बाह्यार्थेषु विरागित्वं अष्टमं) सब भूतन विषे मेरी बुद्धि करना भावमेरा अंतर्यामी रूप सबमें व्यापक मानि चराचर ईश्वरमय जानै अरु मेरे भक्तन में अधिक प्रीति राखि उनकी सेवा पूजा करै अंतर मनादि की वासना त्याग इति शमादि सहित तैसे बाहेर इंद्रि विषय त्यागे रहै इति विरागयुत रहना अष्टम साधन है २६ (ममतत्त्वविचारः नवमम् भामिनि एवं नवविधा भक्तिसाधनं यस्य कस्य वा) लोक व्यवहार असार त्यागि ईश्वर सारांशमें प्रीतिकरना इति मेरा तत्त्व विचारना नवम साधन है भामिनि श्वरी इस प्रकार नवविधिके जो भक्ति

के साधन हैं तिनहिं जो कोऊकरै २७ (शुभलक्षणे स्त्रियःवापुरुषस्यवा अपितिर्यग्योनिगतस्य प्रेम लक्षणाभक्तिःसंजायते) हे शुभलक्षणे स्त्रीकेवापुरुषके वातिर्यग्योनि पशुपक्षीआदिकोंके जो नवसाधन होय तौवाके प्रेमलक्षणा भक्ति उत्पन्न होय भाव प्रेम सहित मेरे रूपमें मनलगा रहै और कछुन सुहाय २८(भक्तौसंजातमात्रायां मततत्त्वअनुभवः मांअनुभवसिद्धस्य तदातत्रजन्मनि एवमुक्तिः) प्रेमा भक्ति उत्पन्नहोतमात्र तामें मेरा तत्त्व अनुभव अर्थात् साक्षात् मेरारूप देखि परत अरु मेरेतत्त्वको अनुभव होनेवालेको तवै तिसी जन्ममें निश्चय करि मुक्ति होती है २९ ॥

स्यात्तस्मात्कारणंभक्तिर्मोक्षस्येति सुनिश्चितम् ॥ प्रथमंसाधनंयस्यभवेत्तस्यक्रमे

णतु ३० भवेत्सर्वततोभक्तिर्मुक्तिरवसुनिश्चितम् ॥ यस्मान्मद्भक्तियुक्तात्वंततोऽहं

त्वामुपस्थितः ३१ इतोमदर्शानाम्मुक्तिस्तवनास्त्यत्रसंशयः ॥ यदिजानासिमेब्रूहि

सीताकमललोचना ३२ कुत्रास्तेकेनवानीताप्रियामेप्रियदर्शना ३३ शवर्य्युवाच ॥

देवजानासिसर्वज्ञसर्वत्वंविश्वभावन ॥ तथापिपृच्छसेयन्मांलोकाननुसृतःप्रभो ३४

ततोऽहमभिधास्यामिसीतायत्राधुनास्थिता ॥ रावणेनहृतासीतालंकायांवर्ततेधुना ३५

(तस्मान्मोक्षस्यकारणम्भक्तिःस्यात् इति सुनिश्चितम् यस्य प्रथमं साधनं भवेत्तस्य क्रमेण) ताते मोक्ष होनेको कारण एक भक्तिहीहै दूसरा नहीं यही निश्चय जानौ अरुजाके प्रथम साधन संतनको संग होताहै ताको क्रमकरिकै दूसरा तसिरा चौथा इसी भांति होतेहोते ३० (सर्व भवेत् ततःभक्तिः एवमुक्तिः सुनिश्चितम् यस्मात् त्वं मत् भक्ति युक्ता अहंत्वां उपास्थितः) सबसाधन होते हैं तदनं तर प्रेमाभक्ति निश्चयकरि होती है सोई मुक्तिको निश्चय कारहै हे शवरी जिसकारण तू मेरीप्रेमा भक्ति युक्तहै इसी कारण हमतेरे समीप प्राप्तभये ३१ (इतः मत्दर्शनात् तवमुक्तिः अत्रसंशयःन अस्ति कमल लोचना सीता यदि जानासि मे ब्रूहि) इसमेरे दर्शनते तेरी मुक्ति होई यामें संशय नहींहै हे शवरी कमल नयनी सीताको जानती होउ तौ कहौ ३२ (प्रिय दर्शनामे प्रियाकुत्र आस्ते वाकेननीता) अबमाधुर्य लीला दर्शाय रघुनंदन कहत हे शवरी प्रियदर्शन हैं जाके ऐसी मेरी प्रिया जनक नंदिनी कहाँहै अरु किसने हरिलिया ३३ (विश्वभावन सर्वज्ञ देवत्वं सर्वजानासि तथापिलो काननुसृतः प्रभायेत्तमां पृच्छसे) शवरी बोली है विश्वभावन संसार को बनावनेवाले हे सर्वज्ञसब बात जानने वाले हेराम देव आप सब जानते हौ ताहूँपर लोक अनुसार प्राकृत मनुष्योंकी नाई हे प्रभो जोवात मोप्रति पूछतेहो ३४ (ततः अधुनायत्र सीता स्थिता अहं अभिधास्याम रावणेन हृता अधुना लंकायां सीतावर्तते) जो आप पूछतेहौतौ या समयमें जहां सीता स्थितहैं जो हरिलैगया सो सब हाल मैं अभी कहतीहौं राक्षसों को राजा रावण करिकै हरीगई अरुयासमय लंका बिषे सीता वर्तमान अशोकवाटिकामें हैं ३५ ॥

इतःसमीपेराभास्तेपपानामसरोवरम् ॥ ऋष्यमूकगिरिर्नामतत्समीपेमहानगः

३६ चतुर्भिर्मंत्रिभिःसार्द्धंसुग्रीवोवानराधिपः ॥ भीतभीतःसदातत्रतिष्ठत्यतुलविक्र

मः ३७ बालिनश्चभयाद्भ्रातुस्तदागम्यमृषेर्भयात् ॥ बालिनस्तत्रगच्छत्वंतेनसख्यं

कुरुप्रभो ३८ सुग्रीवेणससर्वेतेकार्य्यसंपादयिष्यति ॥ अहमग्निं प्रवेक्ष्यामितवाग्रे

रघुनंदन ३९ मुहूर्तंतिष्ठराजेंद्रयावद्गन्ध्वाकलेवरम् ॥ यास्यामिभगवन्नरामतव

विष्णोः परमपदम् ४० इति रामसंभामंत्र्यप्रविवेशहुताशनम् ॥ क्षणान्निर्द्वयसक
लमविद्याकृतबन्धनम् ४१ ॥

(राम इतः समीपे पंपानाम सरोवरम् आस्ते तत्समीपे ऋष्यमूकगिरिः नाम महानगः) हे
रघुनंदन इसी आश्रम के समीप थोरिही दूरिपर पंपानाम तड़ाग उत्तम है ताहीके समीप ऋष्यमूक
गिरि नाम महानग बड़ाभारा पर्वत है ३६ (वानराणां अधिपः अतुल विक्रमः सुग्रीवः भीत
भीतः चतुर्भिः मंत्रिभिः सार्द्धतत्रसदा तिष्ठति) वानरोंको राजा अतुलहै पराक्रम जाके सो सुग्रीव
भी तनमे भीत अर्थात् डरे हुयेनमेंभी महाडरवंत अरु चारि मंत्रिन सहित त्यहि पहार पर वासकरता
है ३७ आतुः वालिनः भयात्च ऋपेः भयात् तन्वालिनः अगम्यं प्रभो तत्र त्वं गच्छ तेन सख्यंकुरु)
अपने भाईबालिके डरते उहां सुग्रीव वास करताहै पुनः ऋषिकी शापके डरते सोपर्वत वालिको
अगमहै भाव उहां जायतौ भस्म हूँजाइ हे प्रभु तहां जाउ तिस सुग्रीव करिकै मित्रता करौ ३८
(ससुग्रीवेणते सर्वं कार्यं संपादयिष्याति रघुनंदन तवअग्रे अहं अग्निं प्रवेक्ष्यामि) सो सुग्रीव करि
कै आपको सबकार्य सिद्धहोय हे रघुनंदन अबआपके आगे मैं अग्नि में प्रवेश करौंगी भावपंच भौ-
तिक देहभस्मकरि देउंगी ३९ (यावत् कलेवरम् दग्ध्वा राजेंद्र मुहूर्तं तिष्ठ भगवन् रामतव वि-
ष्णोः परं पदम् यास्यामि) जबतक मैं आपनी देहजोहै ताहि भस्मकरौ तबतक हेराजेंद्र मुहूर्तदुइ
दण्ड भरि इहांभौ देह भस्म करि दिव्यदेहते हे भगवन् रामआप जो विष्णुहौ तिनके परमपद
बैकुण्ठ को जाउंगी ४० (इति रामं संभामंत्र्य हुताशनम् प्राविवेश अविद्याकृतसकलं बंधनम् क्षणात्
निर्द्वय) इसप्रकार रघुनंदन प्रतिवार्ता करि आज्ञापाय शवरी अग्निमें प्रवेश करती भई अविद्यामाया
को किया हुआ तनयन गेहादि सबबंधन क्षणमें नाशकरिकै ४१ ॥

रामप्रसादाच्छवरीमोक्षंप्राप्तातिदुर्लभम् ॥ किंदुर्लभं जगन्नाथेश्वरीरामेभक्तवत्स
ले ॥ प्रसन्नेऽधमजन्मापिशवरीमुक्तिमापसा ४२ किंपुनर्ब्राह्मणामुख्याः पुण्याः श्रीरा-
मचिन्तकाः ॥ मुक्तियांतीति तद्भक्तिर्मुक्तिरेव न संशयः ४३ भक्तिर्मुक्तिविधायि
नी भगवतः श्रीरामचंद्रस्य हे लोकाः कामदुष्कांघ्रिपद्मयुगलं सेवध्वमत्युत्सुकाः ॥ ना
नाज्ञानविशेषमंत्रविततिं त्यक्त्वासुदूरे भृशं ॥ रामं यामतनुं स्मरारिहृदये भातं भज
ध्वं बुधाः ४४ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे आरण्यकाण्डे दशमः सर्गः समाप्तः १० ॥

(रामप्रसादात् शवरी अतिदुर्लभम् मोक्षंप्राप्ता जगन्नाथे भक्तवत्सले श्रीरामे प्रसन्ने किंदुर्लभम् अधम
जन्मा शवरी अपि मुक्तिं आपसा) रघुनंदन के प्रसाद भाव रुपाकरनेते शवरी कैसी भई शिवजी
कहत कि जो मुनिन को अत्यंत दुर्लभ भाव दुखोंकरिकै नहीं पावते हैं त्यहि मोक्ष पदको प्राप्त भई
तौ जगत् के पालन हारे भक्तन पर अधिक प्रीति राखन हारे श्रीरघुनाथ जीके प्रसन्नहोत संते कौ-
न पदार्थ दुर्लभ है काहेते अधम जीव हिंसक कुलमें जन्मी जो शवरी सोऊ राम रुपाते मुक्तिको प्राप्त
भई ४२ (पुनः श्रीरामचिन्तकाः पुण्याः ब्राह्मणामुख्याः मुक्तियान्ति इति किंतु भक्तिः मुक्तिः एव संशयः
न) जो नीचन को मुक्ति दायक भक्ति है तौफिर श्रीरघुनंदन को चिन्तवन करने वाले पुण्यात्मा
ब्राह्मण मुख्य जो मुक्ति पदको जाँय यह क्या कहना है ताते रघुनंदन की भक्ति निश्चयकरि मुक्तिहै

यामें संशय नहीं है ४३ (भगवतः भक्तिमुक्ति विधायिनी अतः हे लोकाः कामदुष्टा श्रीरामचंद्रस्य भगि
पद्म युगलं प्रति उत्सुकाः सेवध्वं नाना अज्ञान विशेष मंत्र विदितं भृशं सुदूरे त्यक्त्वा बुधाः स्मरा
रि हृदये भातं श्याम तनुं रामं भजध्वम्) भगवत की भक्ति सबको मुक्तिदेन हारी है इसकारण हे
लोक जनो कामधेनु सम सब कामना को देन हारे श्रीरघुनाथ जी के चरण कमल दोऊ जोहैं तिनहिं
अत्यंत अभिलाख सहित सेवन करौ अरु अनेक प्रकार को जो अज्ञान विशेष मंत्रभाव देवसाधनादि
गुप्त मनोरथ की वितति जो समूहता ताहि भृशं अत्यंत दूरि त्याग करौ हे बुधजनो कामके शत्रु जो
सहादेव तिनके हृदय में प्रकाश मान श्याम तनु श्रीरघुनाथ जी तिनहिं भजौ ४४ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे
आरण्यकारणदेशमः प्रकाशः समाप्तः १० ॥

—



अथ अध्यात्मरामायण किष्किन्धाकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततःसलक्ष्मणोरामःशनैःपंपासरस्तटम् ॥ आगत्यसरसांश्रे
ष्ठं दृष्ट्वाविस्मयमाययौ १ क्रोशमात्रंसुविस्तीर्णमगाधामलशम्बरम् ॥ उत्फुल्लाम्बु
जकल्लारकुमुदोत्पलमंडितम् २ हंसकारंडवाकीर्णचक्रवाकादिशोभितम् ॥ जल
कुक्कुटकोयष्टिक्रौंचनादोपनादितम् ३ नानापुष्पलताकीर्णनानाफलसमावृतम् ॥
सतांमनःस्वच्छजलंपद्मकिंजल्कवासितम् ४ ॥

सवैया ॥ तकि पंथचले मिलि बात जलै कपिराज मिले करुणा करको । किय सख्य सवै कहि
हाल तवै दिय सो सियभूषण अंबरको ॥ बध बंधु समीत वसों वनमें दुखसेवक जानि भुजा फरको।
हनि बालि तुम्है कपिराज करों सुनि बंदत सो सीता वरको ॥ (ततःरामःसलक्ष्मणः शनैःपंपासरः
तटम्आगत्य श्रेष्ठंसरसांश्रेष्ठं विस्मयंआययौ) शिव जी बोले हे गिरिजा तदनंतर रघुनन्दन सहित
लक्ष्मण धीरा धीरा चलत पंपासर के किनारे पर आय उत्तम जो तडाग है ताहि देखि आदर्यको
प्राप्त होतेभये १ (क्रोशमात्रंसुविस्तीर्ण) जाको देखि विस्मय आइ तौकैसा पंपा सरहै जाको कोश
भरे को फैलावहै (अमलमगाधशंवरम्) निर्मल अथाह जल भराहै जामें (अम्बुजकल्लारकुमुदउ
त्पलउत्फुल्लमंडितम्) जलै में उत्पन्न भये कमलादि कहार शुक्ल कमल कुमुद कोकी उत्पल अरु-
णादि साधारण कमल इत्यादि फूले हुये जामें शोभितहैं २ (हंसकारंडवआकीर्ण) हंस अरु कारंड
व जो करकालै ये पक्षी भुंड के भुंड एकत्र रहते हैं ताते आकीर्ण नाम बहुत भरेहैं (चक्रवाकादि
शोभितम्) चक्र वाकी जोडाके जोडा एकत्र शोभा युत हैं (जलकुक्कुटाःकोयष्टयः क्रौंचाःनादःउप
नादितम्) जलमुरगा अरु कोयष्टि जो टिटिहरी अरु क्रौंच जो कुरकुंचा इत्यादि अपनी अपनी
बोली बोली रहेहैं ३ (नानापुष्पलताःआकीर्ण) कुंदो निवारी चँवेली बेला यूथी इस्कपेंचा इत्यादि
अनेक फूलोंते पारिपूर्ण लता वृक्षों पर सघन फैलीहैं तथा आम्र अमरूत पनत नाशपाती जामुनि
निंबूआदि अनेक फलन युत सघन वृक्ष चारिहुदिशि घेरे हैं (सतांमनःइवस्वच्छजलम् पद्मकिंजल्क
वासितम्) यथा सतन को मन तैसे अमल जल भराहै सो कमल की केसरि करिकै मिली हुई
सुगंध ताते जल सुगंधितहै ४ ॥

तत्रोपस्पृश्यसलिलं पीत्वाश्रमहरं विभुः ॥ सानुजःसरसस्तीरेशीतलेन पथाययौ ५ ॥
प्यमूकगिरेःपार्श्वे गच्छंतौ रामलक्ष्मणौ ॥ धनुर्बाणकरोदांतौ जटावल्कलमंडितौ ६ ॥

पश्यंतौविविधान्वृक्षान्गिरेःशोभांसुविक्रमोऽसुग्रीवस्तुगिरेर्मूर्ध्निचतुर्भिःसहवानरैः ॥ स्थित्वादर्शतोयांतौआरुरोहगिरेःशिरः ७ भयादाहहनुमंतंकौतौवीरवरो सखे ॥ गच्छजानीहिभद्रंतेवटुर्भूत्वाद्विजाकृतिः ८ वालिनाप्रेषितौकिंवामांहन्तुंसमुपागतौ ॥ ताभ्यांसंभाषणंकृत्वाजानीहिहृदयंनयोः ९ ॥

(तत्रउपस्पृश्यश्रमहरंतलिलं पीत्वासानुजःविभुःरारसःतीरे शतिलेनपथाययौ) तिस तडागमें स्नानकईहें पुनःपरिश्रमको रिलेनेवाला शतिल अमल उत्तम जो जलहै ताहिपानकरि पुनः सहित लक्ष्मण रघुनन्दन तडागके तीरतीर वृक्षोंकीछायामें ठंढीमार्ग करिके चलतेभये५ (धनुःवाणकरौदांतौ जटावलकलमडितौ रामलक्ष्मणौ ऋष्यमूकगिरेःपार्श्वगच्छंतौ) धनुष बाण हाथोंमें धारण किहे शीश जटा तनमें बलकलादि मुनि बमन शोभिन ऐसे श्री रामलक्ष्मण दोऊ ऋष्यमूक पर्वतके समीपगये (सुविक्रमौ विविधान् वृक्षान्गिरेः शोभापश्यंतौ) बड़े तेजवंत पराक्रमी चेष्टाते दर्शित होतहैं पुनः अनेक प्रकारके वृक्ष अरु पर्वतकी जो शोभाहै ताहि देखिरहैं ६ (चतुर्भिःवानरैः सहितःसुग्रीवःगिरेः मूर्ध्निस्थित्वायांतौ ददर्शतःगिरेः शिरःआरुरोह) नलनील सुखेन हनुमान् इनचारि वानरों करिके सहित पुनः सुग्रीव पहारके शिखर पर बैठेरहैं सो आवतेहुये श्रीरामलक्ष्मण तिनहि देखिके समीत द्वे अधिक पहारके शिखरपर चढ़िगयो ७ (भयात्हनुमंतं आहसखेते भद्रंद्विजस्य आकृतीवटुर्भूत्वागच्छ जानीहि वीरवरोतौकौ) डरवशते सुग्रीव हनुमान् प्रतिबोले हेसखे तुम्हारा कल्याण होय कपि आकृति त्यागि ब्राह्मणकी ऐसीआकृति करि विद्यार्थी वनिजाउ वार्ताकरि जानिलेउ ये बरि उत्तम दोऊकौनहैं कहाते आवते कहाँको जातेहैं ८ (किंवामांहंतु वालिनाप्रेषितौसंउपागतौ ताभ्यांसंभाषणं कृत्वातयोः हृदयजानीहि) अथवा मेरे मारनेको वालिने तौ नहीं पठावाहैं जो मेरेसमीप आय प्राप्तभयेहैं ताते जाय दोनोंते सनेह पूर्वक वार्ता करिके तिनदोऊ के हृदयकी बात जानिलेउ ९ ॥

यदितौदुष्टहृदयोसंज्ञांकुरुकराग्रतः॥साधुत्वेस्मितवक्त्रोभूरेवंजानीहिनिश्चयं १०
तथेतिवटुरूपेणहनुमान्समुपागतः ॥ विनयावनतोभूत्वारामंनत्वेदमब्रवीत् ११
कौयुवांपुरुषव्याघ्रौयुवानौवीरसंसर्तौ ॥ द्योतयंतौदिशःसर्वाःप्रभयाभास्कराविव १२
युवांत्रेलोक्यकर्तारवितिभातिमनोमम ॥ युवांप्रधानपुरुषौजगद्धेतूजगन्मयौ १३
माययामानुषाकारौचरंताविवलीलया ॥ भूभारहरणार्थायभक्तानांपालनायच १४
अत्रतीर्णाविहपरोचरंतौक्षत्रियाकृती ॥ जगत्स्थितिलयोंसर्गलीलयाकर्तुमुद्यतौ १५ ॥

(साधुत्वेस्मितवक्त्रोभूः एवंनिश्चयं जानीहि यदितौ दुष्टहृदयः कराग्रतः संज्ञांकुरु) जो उरमें साधुता होइगी तौ मुस्कानियुत प्रसन्न मुख होई अरु जो वालिके पठाये मेरे ब्यहेत आवते हैं तौ मुखपर मलीनता होई इन चेष्टोंते निश्चय जानिलेना जो दोऊदुष्टता हृदय में राखेहोई तौ मेरी दिशिदेखि हाथ हलायदेना भावमें भागिजाँउ १० (तथाइतिहनुमान् वटुरूपेणसमुपागतः रामंनत्वा विनयावनतः भूत्वाइदंअब्रवीत्) जैसा आपकहे तैसाही करौंगो इत्यादि कहि हनुमान् ब्रह्मचारी रूप करिके समीप जायकै रघुनन्दन जो हैं तिनहि प्रणामकरि विनय पूर्वक नम्रहैंकै यह बचन बोले ११ (पुरुषव्याघ्रौ युवानौवीरसंसर्तौ भास्करौ द्वप्रभयासर्वाः दिशःद्योतयंतौयुवांकौ) हेपुरुषोंमें व्याघ्रवत

सबल अशंक युवा वैसवीरता भरे सूर्यन की तुल्य अपनी प्रभा करिस्त्र दिशों को प्रकाश करने वाले आप दोऊ कोहों १२ (मममनःइतिभातियुवां त्रैलोक्यकतारोजगत्हेतूजगत् मयौयुवांप्रधानपुरुषौ) आपकी चेष्टा तेज बलवन्त देखि अनुमान ते मेरे मन में ऐसाभासत कि आप दोऊ स्वर्गभूषाता लादि तीनों लोकके करता जगत्के आदि कारण जगत्मय आपप्रधान पुरुष नर नारायण हों १३ (भूभारहरणार्थायचभक्तानां पालनाय माययामानुपःइव आकारोलीलयाचरंतौ) वा भूमिकोभार उतारने हेतु पुनः अपने भक्तोंको पालन हेतु माया करिकैमानुप की नाई आकार बनाये माधुर्य लीला करि कै पृथ्वी पर बिचरते हों १४ (परैइहअवतीर्णौक्षत्रियाकृतिःचरंतौजगत्सर्गस्थितिलयो कर्तुलीलयाउद्यतौ) मायाते पर इहां भूतल में अवतीर्णभयो क्षत्री की ऐसी आकृति देह बनाये बिचरतेहों जगत के धर्म की उत्पत्तिभक्तोंकी रक्षा राक्षसों की प्रलय इत्यादि करनेको साधुरूप ते उत्तम लीला करिकै उद्यत सजे तयार हों १५ ॥

स्वतंत्रौप्रेरकौसर्वहृदस्थाविहेइवरौ ॥ नरनारायणौलोकेचरंतावितिमेमतिः १६
श्रीरामोलक्ष्मणंप्राहप्रश्यैनंबटूरूपिणम्॥शब्दशास्त्रमशेषेणश्रुतंनूनमनेकधा १७
अनेनभाषितंकृत्स्नंनकिंचिदपशब्दितम्॥ततःप्राहहनूमंतराघवोज्ञानविग्रहः १८
अहंदाशरथीरामस्त्वयंमेलक्ष्मणोऽनुजः ॥ सीतयाभार्ययासार्द्धपितुर्वचनगौरवात् १९
आगतस्तत्रविपिनेस्थितोहृदंडकेद्विजः॥तत्रभार्याहतासीतारक्षसाकेनचिन्मम ॥ तामन्वेष्टुमिहायातौत्वंकोवाकस्यवावद २० ॥

(प्रेरकौसर्व हृदयस्थौ इहस्वतंत्रौ ईश्वरौ इतिमेमतिःनरनारायणौ लोके चरंतौ) जैसी इच्छा करौ तैसेही जीवोंकी बुद्धि ह्वैजाय इति प्रेरक अंतर्धामी रूपते सब भूतमात्रके हृदयमें बसेहों इसी ते स्वतंत्र इच्छाचारी ईश्वरहों ऐसामेरी बुद्धिमें भासत भावसाधुरूपमें ऐश्वर्यछिपायेहों इस अनुमान ते मेरी बुद्धिमें आवत कि नरनारायण हों मानुष रूप लोकमें बिचरतेहों १६ (श्रीरामः लक्ष्मणं प्राहएनं बटूरूपिणम् पश्य अशेषेण शब्द शास्त्र अनेकधा नूनं श्रुतं) न्याय सम्मतयुत शुद्ध वाक्य हनुमान के बचन सुनि श्री रघुनाथ जी लक्ष्मण प्रतिबोले किहे लक्ष्मण इस ब्रह्मचारी रूप किये हुये पुरुषको देखिये इसने संपूर्ण व्याकरण शास्त्र जोहै ताहि अनेक बार निश्चय करिकै सुनि स्पष्टकरि राखै १७ (अनेन भाषितं कृत्स्नं किंचित् अपशब्दितं) काहेते जाना कि व्याकरण भली भांति स्पष्ट कियेहै कि इन करिकै यावत् बचन कहेगये सो संपूर्ण शुद्धहैं कहूँ कछु भी अशुद्ध नहीं भया इत्यादिकहि पुनः (ततः ज्ञान विग्रहः राघवः हनूमंतंप्राह) हनुमानकी विद्वानता लक्ष्मण प्रति कहितदनंतरज्ञान स्वरूप रघुनंदन हनुमान प्रतिबोले १८ (अहंदाशरथीरामः तुअयंमे अनुजःलक्ष्मणः पितुः वचन गौरवात् भार्यया सीतयासार्द्ध) हमतौ अवधेश दशरथके पुत्रराम हैं पुनः ये हमारे छोटे भाईलक्ष्मणहैं अरुइस वेषते यहां आवने को कारण यहहै कि हमारी दूसरी माताने थातीदो वरदानते अपने पुत्रको राज्य अरुहमको तापस वेषते चौदह वर्ष वनवास मांगा इतिसत्य संध पिताको वचन गुरूमानि ताते अपनी भार्या सीताकरिकै १९ (अहं दण्डके विपिनेआगतःतत्र स्थितः द्विजतत्रममभार्या सीताकेनचित् रक्षसाहता) भार्याबंधुसहितहमदंडक वनमेंआये तहां बास किये पुनः हेद्विजतहैं हमारी भार्या सीतासो किसी राक्षसकरि कै हरिली गई भाव किसी राक्षस ने

हरलिया (तां अन्वेष्टुं इह आयातोत्वंकः वाकस्यवद सोदरीहुर्ह जो सीताहै ताहि दूढ़भेहेत हम इहा प्राप्तभये अरुतुम कोहौ अरु किसकेपुत्र वा सेवक हौ सो कहौ २० ॥

बटुरुवाच ॥ सुग्रीवोनामराजायोवानराणामहामतिः ॥ चतुर्भिर्मन्त्रिभिः सार्द्धं गिरि मूर्धनितिष्ठति २१ भ्राता कनीयान् सुग्रीवो बालिनः पापचेतसः ॥ तेन निष्काशितो भार्याहता तस्येह बालिना २२ तद्गयादृष्यमूकाख्यं गिरिमाश्रित्य संस्थितः ॥ अहं सुग्रीवसचिवो वायुपुत्रो महामते २३ हनूमान्नाम बिख्यातो ह्यंजनीगर्भसंभवः ॥ तेन सख्यं त्वया युक्तं सुग्रीवेण रघूत्तम २४ भार्यापहारिणं हंतुं सहायस्ते भविष्यति इदानीमेव गच्छाम आगच्छ यदि रोचते २५ ॥

(सुग्रीवोनाम महामतिः यः वानराणां राजा चतुर्भिः मन्त्रिभिः सार्द्धं गिरि मूर्धनितिष्ठति) बटुरूप हनुमान बोले कि सुग्रीव है नामजाको महाबुद्धिवंत जो वानरोंको राजा है सो बड़े भाईकी भयते चारि मन्त्रिन करिके सहित पहाड़पर वास किहे है २१ (पापचेतसः बालिनः तस्य इह कनीयान् भ्राता सुग्रीवः तेन बालिना निष्काशितः भार्याहता) पापकर्ममें रतचित्त जिसको बालिनाम वानरोंको राजा है तिसको यह छोटा भाई सुग्रीव है तिसी बालिने इसको घरते निकारि दिया सर्वश सहित याकी भार्याको हरलिया २२ तत्भयात् ऋष्यमूक आख्यं गिरिमाश्रित्य संस्थितः महामते अहं वायु पुत्रः सुग्रीव सचिवः) तिस बालिकी भयते ऋष्यमूक नाम प्रसिद्ध जो पर्वत है ताकी आश्रित्य अर्थात् मतंग ऋषिकी शाप है जो इहां बालि आवै तौ भस्म ह्वै जाय इति सहायता ते सुग्रीव वास किहे है पुनः हे महामते हम पवनके पुत्र सुग्रीवके मंत्री हैं २३ हि अंजनी गर्भसंभवः हनूमान्नाम बिख्यातः रघूत्तम त्वया युक्तं तेन सुग्रीवेण सख्यं) निश्चय करिके अंजनी के गर्भ ते उत्पन्न भयौ हनूमान् नाम प्रसिद्ध हौं हे रघुवंश में उत्तम तुम करिके युक्त यहि सुग्रीव करिके मित्रता उत्तम है भाव आपको कार्य सुग्रीव करेगा सुग्रीव को कार्य करिबे योग्य आपहौ इति उत्तम सख्यता है २४ (भार्या पहारिणं हंतुं ते सहायः भविष्यति आगच्छ यदि रोचते इदानीं एव गच्छामः) आपकी भार्या को जो हरि लेने वाला है ताहि मारिबे में सुग्रीव करिके आपकी सहायता होगी ताते वाके पास जाना जो रुचै तौ आप हम अभी उहाँ को चलै २५ ॥

श्रीराम उवाच ॥ अहमप्यागतस्तेन सख्यं कर्तुं कपीश्वर ॥ सख्युस्तस्यापियत्कार्यं तत्करिष्याम्यसंशयम् २६ हनूमान्स्वस्वरूपेण स्थितो राममथाब्रवीत् ॥ आरोहतां मम स्कंधौ गच्छामः पर्वतोपरि २७ यत्र तिष्ठति सुग्रीवो मन्त्रिभिर्बालिनोभयात् ॥ तथेति तस्यारुरोहस्कंधं रामो थलक्ष्मणः २८ उत्पपात गिरेर्मूर्ध्नि क्षणादेवमहाकपिः वृक्षत्रायां समाश्रित्य स्थितौ तौ रामलक्ष्मणौ २९ हनूमानपि सुग्रीवमुपागम्य कृतांजलिः ॥ व्येतुते भयमाया तौ राजन् श्रीरामलक्ष्मणौ ३० शीघ्रमुतिष्ठ रामेण सख्यं ते योजितं मया ॥ अग्निं साक्षिणमारोप्य तेन सख्यं द्रुतं कुरु ३१ ॥

(कपीश्वर तेन सख्यं कर्तुं अहं अपि आगतः तस्य सख्युः यत्कार्यं तत् अपि असंशयं करिष्यामि) रघुनन्दन बोले कि हे कपीश्वर तिन सुग्रीव करिके सख्यता करिबे को हम निश्चय करिके इहाँ आये हैं अरु तिन सुग्रीव सखा को कार्य होई सो निश्चय करिके बिना संशय करिहिंगे २६ (स्वस्वरूपेण

स्थितः हनुमान् अथरामं ब्रवीत् ममस्कंधौ आरोहतां पर्वतस्य उपरिगच्छामः) अपनो वानर स्वरूप प्रकट करिके बैठिके हनुमान् अब रघुनन्दन प्रति बोले कि पैदर चलने में परिश्रम है ताते मेरे कांधों पर दोऊ जने सवार होहु आपको सहित मैं पर्वत के ऊपर चलता हौं २७ (बालिनः भयात् यत्रमं त्रिभिः सुग्रीवः तिष्ठति तथाइतिरामः लक्ष्मणः अथ तस्यस्कंधं आरुरोह) बालिकी भयते जहाँ माँत्रे न सहित सुग्रीव बैठे हैं तहाँ लौ चलि हौं हे कपि जैसा कह ते हौ तैसाही करेंगे ऐसा कहि रघुनन्दन लक्ष्मण अब हनुमान् जो हैं तिनके कांधे पर चढ़े २८ (महाकपिः उत्पपात क्षणात् एवंगिरेः मूर्द्धनि वृक्षछायां सं आश्रित्य रामलक्ष्मणौ तौस्थितौ) महाबली कपि हनुमान् बेगते कूदि क्षणैभरे में पहार के शशिपर पहुँचि तहाँ वृक्ष की छाया के आश्रित्य भाव आतप के रक्षा हेत छायाकी सहायता में राम लक्ष्मण जो हैं तिनहिँ बैठारि दिये २९ (हनुमान् अपि सुग्रीवं उपआगम्य कृतांजलिः राजन् ते भयं व्येतु श्रीरामलक्ष्मणौ आयातौ) हनुमान् निश्चय करि सुग्रीव समीप जाय हाथजोरि बोले हे राजन् बालिकी जो तुमको भय रहै सो दूरिभई क्योंकि श्रीराम लक्ष्मण आय तुम्हारे समीप प्राप्त भये ३० (रामेण ते सख्यं मयायोजितं शीघ्रं उत्तिष्ठ अग्निं नाक्षिणं आरोप्य द्रुतं तेन सख्यं कुरु) राम करिके तुम्हारी जो सख्यता है ताहिँ मैंने मिलाया है अर्थात् वार्ता करि अंगीकार करा लिया है ताते शीघ्रहीं उठौ अग्नि साक्षी स्थापित करि शीघ्रहीं तिन के संग मित्रता कीजिये ३१ ॥

ततोऽतिहर्षात्सुग्रीवःसमागम्यरघूत्तमं ॥ वृक्षसाखांस्वयं छित्वा विष्टरायददौ मुदा ३२ हनुमान् लक्ष्मणायादात्सुग्रीवाय च लक्ष्मणः ॥ हर्षेण सहता विष्टाः सर्वे एवावतस्थिरे ३३ लक्ष्मणस्त्वब्रवीत्सर्वं रामवृत्तांतमादितः ॥ वनवासाभिगमनं सीता हरणमेव च ३४ लक्ष्मणोक्तं वचः श्रुत्वा सुग्रीवो राममब्रवीत् ॥ अहं करिष्ये राजेंद्र सीतायाः परिमार्गणम् ३५ साहाय्यमपिते रामकरिष्ये शत्रुघातिनः ॥ शृणु राममया दृष्टं किंचित्तेकथयाम्यहम् ३६ एकदामं त्रिभिः सार्द्धं स्थितोऽहं गिरि मूर्द्धनि ॥ विहाय सानीयमानां केनचित्प्रमदोत्तमाम् ३७ ॥

(ततः सुग्रीवः अतिहर्षात् रघूत्तमम् संआगम्य स्वयं वृक्ष शाखां छित्वा मुदा विष्टरायददौ) तदनंतर सुग्रीव अत्यन्त हर्षते उठि रघुनाथ जीके समीप आय प्रणाम करि कुशल प्रश्न कीन्हे इति शेषः पुनः अपने हाथ ते वृक्ष की शाखा काटि ताके नवीन पल्लव दल तूरि आनंद सहित बिछावने हेत देते भये लक्ष्मणाय हनुमान् अदात् च सुग्रीवाय लक्ष्मणः अदात् सर्वे एव हर्षेण सहता विष्टाः अवतस्थिरे) तथा लक्ष्मण के आसन हेत नवीन दल हनुमान् दीन्हे पुनः सुग्रीव के हेत लक्ष्मण दीन्हे तब सब निश्चय करि बड़े आनंद सहित पल्लव दलन पर बैठते भये ३३ (तुवनवासाभिगमनं च एव सीता हरणं रामवृत्तांतं सर्वं आदितः लक्ष्मणः अब्रवीत् पुनः माता पिता की आज्ञाते जो वन वास को आवन पुनः निश्चय करिके सीता को हरण इत्यादि यावत् रघुनाथ जी को हाल है ताहिँ सब आदिही ते लक्ष्मण जी कहते भये ३४ (लक्ष्मणस्य उक्तवचः श्रुत्वा सुग्रीवः रामं अब्रवीत् राजेंद्र सीतायाः परि मार्गणम् अहं करिष्ये) लक्ष्मण के कहे हुये वचन सुनि सुग्रीव रघुनन्दन प्रति बोले कि हे राजेंद्र सीता को ढूढनादि सब कार्य मैं करिहौं ३५ (रामशत्रुघातिनः ते सहायं अपि करिष्ये राममया किंचित् दृष्टं ते अहं कथयामि शृणु) हे रघुनाथ जी जब आप शत्रुको मारने पर तत्पर होहुगे तब आपकी सहायता निश्चय करिके करिहौं हे रघुनाथ जी मैंने कछु देखा है

ताहि आपसों कठता हों आप सुनिये ३६ (एकदा अहं मंत्रिभिः सार्द्धं गिरि मूर्धनि स्थितः केन वित् विहायमा उत्तमाम् प्रमदाम् नीयमानाम्) एकसमय में में मंत्रिन करिके सहित पहार के शीश पर बैठारहों तासमय कोई सकल अकाश मार्ग करिके विमानमें एक उत्तमस्त्री जो है ताहि हरे लिहेजाता रहे सो मे देखा ३७ ॥

क्रोशंतीरामरामेतिदृष्ट्वास्मान्पर्वतोपरि ॥ आमुच्याभरणान्याशुस्वोत्तरीयेणभा
मिनी ३८ निरीक्ष्याधःपरित्यज्यक्रोशंतीतेनरक्षसा ॥ नीताहंभूषणान्याशुगुहा
यामक्षिपंप्रभो ३९ इदानीमपिपश्यत्वंजानीहितववानवा ॥ इत्युक्तानीयरामाय
दर्शयामासवानरः ४० विमुच्यरामस्तदृष्ट्वाहासीतेतिमुहुर्मुहुः ॥ हृदिनिक्षिप्यतत्सर्वं
रुरोदप्राकृतोयथा ४१ आश्वास्यराघवंभ्रातालक्ष्मणोवाक्यमब्रवीत् ॥ अचिरे
एवतेरामप्राप्यतेजानकीशुभा ॥ वानरैर्द्रसहायेनहत्वा रावणमाहवे ४२ ॥

(रामराम इति क्रोशंती पर्वतोपरि अस्मान् दृष्ट्वाभामिनी आभरणानि आशुआमुच्यस्व उत्तरीयेण) रामराम ऐसापुकारि रोवती हुई तासमय पर्वत परबैठे हुये जो हमलोग तिनहिं देखि सो भामिनी सर्वांग भूषण शीघ्रही उतारि आपने ओढ़ने के वसन करिके बांधि ३८ (अयः निरीक्ष्य परित्यज्यतेनरक्षसा क्रोशंती नीता प्रभो भूषणानि अहंआशु गुहायां अक्षिपं) नीचे हमदिशि देखि वसनमेंबैथे भूषण डारि देती भई तिसराक्षसने रोवती हुईको लिहे चलागया हेप्रभो सो भूषण जो रहें तिनहिं मैं शीघ्रही उठायके आनि पर्वत गुहामें धरि दिया ३९ (इदानी अपित्वं पश्य जानीहि तववानवाडति उक्त्वा वानरः आनीय रामाय दर्शयामास) इनीसमय नि-
श्चयकरि आपदेखि जानिलीजिये आपकी पत्नीके भूषणहैं वानहीं ऐसाकहि वानर सुग्रीव भूषणोंको आनि रघुनाथजीके अर्थ देखावतेभये ४० (रामःविमुच्यतदृष्ट्वाहासीताडतिमुहुःमुहुःतत्सर्वंहृदिनिक्षि-
प्यथा प्राकृत.रुरोद) रघुनाथजी उत्सगठरी कोछोरि भूषणों कोदेखि विरह शोकते हासीता इत्यादि बारबार कहते हुये उनसब भूषणों को हृदय में लगाय जैसे विषयासक्त प्राकृत संतारी मनुष्य वियोग हानिमें रोवते हैं तैसेही रघुनंदन रोदन करते भये ४१ (भ्रातालक्ष्मणः राघवं आश्वास्य वाक्यं अब्रवीत् वानरैर्द्रसहायेन आहवे रावणं हत्वा राम अचिरेण एवते जानकी शुभाप्राप्यते) छोटे भाई जो लक्ष्मण सो विलाप करते देखि रघुनंदन जोहैं तिनहि धीरज दायक वचन बोलते भये कि वानरों के राजा जो सुग्रीव तिनकी सहायता करिके संग्राम बिषे रावण जो है ताहि मारिके हे रघुनंदन योरेही काल में निश्चय करि जानकी मंगल रूप आपको प्राप्तहोहिगी ४२ ॥

सुग्रीवोप्याहहेरामप्रतिज्ञांकरवाणिते ॥ समरेरावणंहत्वातवदास्यामिजानकीम् ४३
ततोहनूमान्प्रज्वाल्यतयोरग्निसमीपतः ॥ तावुभौरामसुग्रीवावग्नौसाक्षिणिति
ष्ठति ४४ बाहूप्रसार्यचालिग्यपरस्परमकल्मषो ॥ समीपेरघुनाथस्यसुग्रीवःस
मुपाविशत् ४५ स्वोदंतंकथयामासप्रणयाद्रघुनाथके ॥ सखेशृणुममोदंतंवालि
नायत्कृतंपुरा ४६ मयपुत्रोथमायावीनास्त्रापरमदुर्मदः ॥ किष्किंधांसमुपागत्य
वालिनंसमुपाकृत्य ४७ सिंहनादेनमहतावालीतुतदमर्षणः ॥ निर्ययौक्रोधता
स्त्राक्षोजघानदृढमुष्टिना ४८ ॥

(सुग्रीवः अपि आह्वे राम प्रतिज्ञां करवाणिते रावणं समरे हत्वा जानकीम् तव दास्यामि) सुग्रीव भी निश्चय करि बोले हे रघुनाथजी मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि रावणजो है ताहि समरमें मारिकै जानकी जीजो हैं तिनहि आपको मिलायदेहौं ४३ (ततः हनुमान् तयोः समीपतः अग्निं प्रज्वाल्य तौ उभौरामसुग्रीवौ अग्नौ साक्षिणि तिष्ठति) तदनंतर हनुमान् तिनदोऊके समीपही अग्निवारि बोले कि मित्रता करौ डाति शेषः तब दोऊ जोराम अरु सुग्रीवते अग्निको साक्षी करिकै ४४ (अकलमषौ परस्परं बाहू प्रसार्य च आलिं ग्य रघुनाथस्य समीपे सुग्रीवः सं उपाविशत्) नहीं है छलरूपी पाप जिनमें शुद्ध हृदयते परस्पर दोऊ हाथ पसारि पुनः हृदयमें लगाय मिलि पुनः रघुनंदनके समीप में सुग्रीव बैठते भये ४५ (प्रणयात् स्वउदं तरं रघुनाथके कथयामास सखे पुरायत् बालिना कृतं मम उदं तं शृणु) प्रातिपूर्वक सुग्रीव अपना वृत्तान्तरघुनाथजी सों कहते भये हे सखे पूर्व जो बालिने किया है सो मेरा वृत्तान्त बिरोध होनेको हाल सुनिये ४६ (मय पुत्रः मायावी नाम्ना परम दुर्मदः अथा किं किन्धां समुपागत्य बालिनं सं उपाह्वयत्) मयदानवको पुत्र माया वी जाको नाम परम दुर्मद अर्थात् बलबिर ताको बड़ा अभिमानी सो एक समय किष्किंधा में आय बालि जो है ताहि प्रचारिकै बुलावता भया ४७ (महता सिंहनादेन तु बाली तत् अमर्षणः क्रोधं तावन्न अक्षः निर्ययौ दृढमुष्टिना जघान) बड़ा भारी सिंहवत् नाद करि गर्जा सो सुनि पुनः बालि ताको प्रचारन सहिसका ताते कोपवन्त भया क्रोध नेत्र लाल भये वाके सन्मुख जाय पुष्टमूका करिकै वाके मारा ४८ ॥

दुद्रावतेन संविग्नो जगाम स्वगुहां प्रति ॥ अनुदुद्रावतं बाली मायाविनम हंतथा ४९
ततः प्रविष्टमालोक्य गुहां मायाविनं रुषा ॥ बाली मामाह तिष्ठ त्वं वहिर्गच्छाम्यहं गु
हाम् ५० इत्युक्त्वा विश्य गुहां मासमेकं न निर्धयौ ॥ मासादूर्ध्वं गुहाद्वाराभिर्गन्तं रुधि
रंबहु ॥ ५१ तद्दृष्ट्वा परितः सांगो मृतो बाली तिदुःखितः ॥ गुहाद्वारि शिलामेकां निधा
य गृहमागतः ५२ ततोऽब्रुवं मृतो बाली गुहायां रक्षसाहतः ॥ तच्छ्रुत्वा दुःखिताः स
र्वे मामनिच्छंत मप्युत ॥ राज्यो भिषेचनं चक्रुः सर्वे वानरमंत्रिणः ५३ शिष्टं तदामयारा
ज्यं किंचित्कालमरिंदम ॥ ततः समागतो बाली मामाह परुषं रुषा ५४ ॥

(तेन संविग्नः दुद्रावस्व गुहां प्रति जगाम तं मायाविनं अनुदुद्राव बाली तथा अहं) तिस मुष्टिककी चोट करिकै व्यकल है सर्भीत भागता दुआ आपने गुहा प्रति जाता भया त्यहि मायावी के पीछे धावा बालि तैसें महुँदौरा ४९ (मायाविनं गुहां प्रविष्टं आलोक्य ततः रूपा बाली मां आह त्वं वहिः तिष्ठ अहं गुहां गच्छामि) मायावी जो है ताहि गुहामें पैठत देखि तब क्रोधवन्त बालि मो प्रतिबोला कि तू बाहिरै रहूँ मैं गुहामें जाता हौं ५० (इति उक्त्वा स गुहां प्रविश्य एकं मासं न निर्धयौ मासात् ऊर्ध्वं गुहाद्वारात् बहु रुधिरं निर्गतं) मैं गुहामें जाता हौं ऐसा कहि सो बालि गुहामें पैठि गया एक महीना तक न निसरा महीना ते ऊपर गुहद्वारते बहुत रक्त बहि निकरा ५१ (तत्तदृष्ट्वा बाली मृतः इति दुःखितः परितः सांगः गुहाद्वारि एकां शिलां निधाय गृहमागतः) सो रुधिर देखि जानेउ कि बालि मारा गया इत्यादि दुःखित तथा आपने मारनेकी भय करि संताप भरा सर्बांग तब गुहाके द्वारमें एक शिला लगाय गृहमें आयौ ५२ (ततः अब्रुवत् बाली मृतः गुहायां रक्षसाहतः तत् श्रुत्वा सर्वे दुःखिताः मां अनिच्छंत अपि उत्तसर्बे वानर मंत्रिणः राज्ये अभिषेचनं चक्रुः) तदनंतर मैं कहता भया कि बालि मरा कैसे कि अकेले चला गया गुहामें राक्षसने मारि डारा सो सुनि सबै जन दुःखित भये पुनः मोहिं अनिच्छित भाव मोहिं राज्यकी इच्छा

नहीं रहे निश्चय करिके तौ भी बरवस सब बानर मंत्री लोग मेरा राज्यमें अभिषेक करि दिया ५३ (अरि दमतदामया किचित्कालं राज्यशिर्यतः बालीसमागतः रुषामांपरुषं ब्राह्म) हे शत्रुदमन रघुनन्दन ता समयमें मैंने कलकाल राज्य पालन किया तदनंतर राक्षसको मारि बाली घरको आया मोहिं राजपद पर देखि क्रोधकरि शत्रुवत मानि मोहिं अनेक भांति के कठोर वचन कहा ५४ ॥

बहुधा भर्त्सयित्वा मां निजघान च मुष्टिभिः ॥ ततो निर्गत्य नगरादधावंपरयाभिया ५५
लोकान्सर्वान्परिक्रम्य ऋष्यमूकं समाश्रितः ॥ ऋषेः शापभयात्सोपि नायातीमं
गिरिं प्रभो ५६ तदादिममभार्यासस्वयं भुंक्ते विमूढधीः ॥ अतो दुःखेन संतप्तो ह्यतदा
रोहताश्रयः ५७ वसाम्यद्य भवत्पादसंस्पर्शात्सुखितोऽस्म्यहं ॥ मित्रदुःखेन संतप्तो
रामो राजीवलोचनः ५८ हनिष्यामि तव द्वेषं शीघ्रं भार्यापहारिणम् ॥ इति प्रतिज्ञा
मकरोत्सुग्रीवस्य पुरस्तदा ५९ सुग्रीवोऽप्याहराजेंद्रवलीवलवतां वली ॥ कथं ह
निष्यति भवान्देवैरपि दुरासदम् ६० ॥

(मां बहुधा भर्त्सयित्वा मुष्टिभिः निजघानततो नगरात् निर्गत्य परयाभिया धाव) मोहिं बहुत भांति तौ वाग्दण्ड करि तर्जन किया पुनः मुष्टिकन करिके मारा तब मैं नगरते निकरि मारि डारने की बड़ी भय करिके भागता फिरा ५५ (सर्वानलोकान् परिक्रम्य ऋष्यमूकं समाश्रितः प्रभो ऋषेः शापभयात् सः अपि इमं गिरिं नायाति) स्वर्ग भूपातालादि सब लोकहैं तिनहिं परिक्रमा करि इस ऋष्यमूक गिरिके भरोसे स्थित भयों किस कारण हे प्रभो मतंग ऋषिकी शापकी भयते सो बाली निश्चय करिके इस पर्वत पर नहीं आवता है ५६ (तदादिममभार्या सविमूढधी स्वयं भुंक्ते हतदारः हतआश्रयः अतः दुःखेन संतप्तः) तबते अवतक मेरी जो स्त्री ताहि वह विशेषि मूढबुद्धी बाली आपही भोग करता है इति हरिगई स्त्री हरिगया घर इस कारण दुःख करिके संतप्त हों ५७ (वसामि अद्य भवत्पादसंस्पर्शात् स्म्यहं सुखितः मित्रदुःखेन राजविलोचनः रामः संतप्तः) दुखित इहां वास किहे रहै उँ अब आपके पद कमलों में लागेते मैं सुखी भयों इति सुनि मित्रके दुःख करिके कमल नयन रघुनाथ जी संतप्त भये यही करुणा गुण है (भगवद्गुणदर्पणपरदुःखानुसंधानाद्विल्ली भवनं विभो कारुण्यमात्मगुणस्त्वेव आर्ता नांभीतिवारकः ५८) तदा सुग्रीवस्य पुरः इति प्रतिज्ञां मकरोत् भार्यापहारिणमृतवद्वेषं शीघ्रं हनिष्यामि) ता समय सुग्रीव के आगे रघुनन्दन ऐसी प्रतिज्ञा कीन्हें कि स्त्री को हरनेवाला जो तुम्हारा द्रोही बाली है ताहि शीघ्र ही मारिहों ५९ (सुग्रीवः अपि आहराजेंद्रवलीवलवतां वली बाली देवैः अपि दुरासदम् भवान् कथं हनिष्यति सुग्रीवो लेहे राजेंद्रवदेवलवतनमें वली बाली जो देवतन करिके जीतना दुर्घट है सो बाली को आपकौनी प्रकार मारोंगे जो बहरी ६० ॥

शृणुते कथयिष्यामि तद्वलं वलिनां वर ॥ कदाचिद्दुर्भिनोममहाकायो महाबलः ६१
किं विधामगमद्राममहामहिषरूपधृक् ॥ युद्धाय बालिनं रात्रौ समाह्वयत भीष
णः ६२ तच्छ्रुत्वाऽसहमानोऽसौ बाली परमकोपनः ॥ महिषं शृङ्गयोर्धृत्वा पा
तयामास भूतले ६३ पादेनैकेन तत्कायमाक्रम्यास्य शिरो महत् ॥ हस्ताभ्यां भ्राम
यंश्चित्वा तोलयित्वा पतद्भुवि ६४ पपात तच्छिरो राममातंगश्रमसन्निधौ ॥ योजना

त्पतितंतस्मान्मुनेराश्रममण्डले ६५ रक्तवृष्टिःपपातोच्चैदृष्ट्वातांक्रोधमूर्छितः ॥

मातंगोवालिनंप्राहयद्यागंतासिमैगिरिम् ६६ ॥

(बलिनांवरशृणुतद्वलंतेकयधिष्यामि महाकायःमहाबलः दुंदुभिःनामकवाचित्) हे बलिन में उत्तम हे रघुनाथ जी सुनिये तिस वाली में जैसा बल है ताहि में आप सो कहोंगे एक दानव बड़ी भारी देह बड़ा बली दुंदुभी नामे दुर्मद लोक में विचरता हुआ किसी समय में ६१ (रामकिष्कियां अगमत् महामहिषरूपयूक्भीषणः रात्रौयुद्धायवालिनंसमाह्वयत्) हे रघुनाथ जी वह राक्षस किष्कि थाको आया बड़ा भारी महिष रूप धरे भयंकर रात्रौ विषे युद्धकरिवे हेत वालीको बुलावता भयादर (तत्श्रुत्वाअसहमानःअसौवालीपरमकोपनः शृंगयोःयुत्वामहिषंभूतलेपातयामास) राक्षसकी प्रचार सो सुनि नहीं सहि सका सो वाली क्रोध करि दोऊ सीधन को पकारे महिष जोहै ताहि भूमि तल में गिराय दिया ६३ (एकेनपादेनतत्कायां आक्रम्यमहत्त्रास्यशिरः हस्ताभ्यांभ्रामयच्छित्वा तोल यित्वा भुविअपतत्) भूमि में परेपर एक पांय करि कै दुंदुभी की देह ढावे रहे अरु बड़ा भारी जो मुख शिर सो दोऊ हाथन करिकै पकरि मिरोरि बारं बार घुमाय ग्रीवा तेभिन्न करि हाथ में ले अज माय भूमिपै फेकि दग्धे ६४ (रामतत्शिरः मातंगस्यआश्रमसन्निवौ पपातयोजनात्पतितं तस्मात् मुनेःआश्रममण्डले) हे रघुनाथ जी त्याहि दुंदुभी को सो शिरजाय मातंग ऋषिके आश्रम के समीप गिरा काहेते जहांते वाली ने फेका तहांते चारि कोश पर जाय गिरा तिस कारण ते मुनि के आश्रम के मण्डल विषे गिरा ६५ (रक्तवृष्टिःउच्चैःपपाततादृष्ट्वा मातंगःक्रोधमूर्छितःवालिनंप्राहमैगिरिमुद्यदि आ गंतासि) उस शिरते रक्त की वृष्टि ऊंचे करि कै गिर ती भई ताहि देखि मातंग ऋषि बड़े क्रोध सो वाली प्रति बोले कि तू ऐसा उपद्रो करता है अब आज ते नेरे गिरि पै जो फिरि आइहैतो ६६ ॥

इतःपरंभग्नशिरामरिष्यसिनसंशयः ॥एवंशप्तस्तदारभ्यऋष्यमूकंनयात्यसौ६७

एतज्ज्ञात्वाहमप्यत्रवसामिभयवर्जितः ॥ रामपश्यशिरस्तस्यदुंदुभेःपर्वतोपम

म् ६८ तत्क्षेपणेयदाशक्तःशक्तस्त्वंवालिनोवधे ॥ इत्युक्त्वादश्यामासशिरस्तद्

गिरिसन्निभं ६९ दृष्ट्वारामःस्मितंकृत्वापादांगुष्ठेनचाक्षिपत् ॥ दशयोजनपर्यंतं

तदद्भुतमिवाभवत् ७० साधुसाध्वितिसंप्राहसुग्रीवोमंत्रिभिःसह ॥ पुनरप्याहसु

ग्रीवोरामंभक्तपरायणम् ७१ एतेतालामहासाराःसप्तपश्यरघूत्तम ॥ एकैकंचाल

यित्वासौनिःपत्रान्कुरुतेंजसा ७२ ॥

(इतः परंभग्न शिरामरिष्यसिनसंशयः नएवंशप्तः तदारभ्यअसौ ऋष्यमूकंनयाति) आजु ते जो फिरि आइ है फाटि कै शिर मरि जाइहै यामें संशय नहीं है इस प्रकार ऋषिशाप दिया तब ते अब तक यह वाली ऋष्यमूकपै नहीं आवताहै ६७ (एतज्ज्ञात्वाभयवर्जितः अहंअपिअत्रवसामि रामतस्यदुंदुभेशिरः पर्वतोपमम्पश्य) यही शाप को हाल जानि कै अभय वाली की भय रहित में भी निश्चय करि इहैं बास करता हों अरु हे रघुनाथ जी तिस दुंदु भी को शिर पर्वत की तुल्य बड़ परा है ताहि आप देखि ये ६८ (यदातत्क्षेपणेयदाशक्तःशक्तस्त्वंवालिनःवधेशक्तः इतिउक्त्वागिरिसन्नि भमत्तत्शिरःदर्शयामास) हे रघुनन्दन जो उस शिर को उठाइकै फेंकि देने को समर्थ होउतों जाना जाय कि आप वाली के मारि डारनेमें समर्थहो ऐसा कहि पर्वताकार उस शिर को देखावतें भये ६९ (रामः दृष्ट्वास्मितंकृत्वाचपादस्य अंगुष्ठेनदशयोजनपर्यंतं अक्षिपत्तत्तद्भुतंइवअभवत्) रघुनन्दन

उस शिरको देखि सुग्रीव की अविश्वास विचारि मुसुकान करि कै बाँये पाँय के अगूठा करि कै फेके सो शिर दशयोजन चालिष कोस पर जाय गिरा सो आश्चर्य वत् कौतुक भया ७० (मंत्रिभिः सह सुग्रीवः साधुसाधु इति प्राह भक्तपरायणम् रामं पुनः अपि सुग्रीवः आह मंत्रिन करिकै सहित सुग्रीव साधुसाधु ऐसा बोले भाव सब कार्य साधवे को समर्थ हौ भक्तन पर प्रीति करने वाले, रघुनन्दन प्र-
ति पुनः निश्चय करि सुग्रीव बोले ७१ (रघूत्तमपश्यते सप्ततालः महासाराभसौ भ्रंजसा एक एकं चालयित्वा निः पत्रान् कुरुते) हेरघुवंशमें उत्तम और भी देखिये ये सातताल के वृक्ष महापुष्ट हैं तिन हिं वाली स्वभुज बल वेग करिकै नीचे पकरि हलाय रूखे पत्तों को गिराय देता रहै ७२ ॥

यदित्वमेकवाणेन विध्वा छिद्रं करोपि चेत् ॥ हतस्त्वया तदा वाली विश्वासो मे प्रजाय
ते ७३ तथेति धनुरादाय सायकतत्रसंदधे ॥ विभेदचतदारामः सप्ततालान् महाव-
लः ७४ सप्ततालान् विनिर्भियगिरिभूमिचसायकः ॥ पुनरागत्य रामस्य तूणीरे पू-
र्ववत् स्थितः ७५ ततोतिहर्षात् सुग्रीवोराममाहातिर्विस्मितः ॥ देवत्वं जगतां नाथः
परमात्मानसंशयः ७६ मत्पूर्वकृतपुण्योद्यैः संगतोद्यमया सह ॥ वां भजंति महात्मा-
नः संसारविनिवृत्तये ७७ त्वां प्राप्य मोक्षसचिवं प्रार्थये हं कथं भवम् ॥ दाराः पुत्राधनं
राज्यं सर्वं त्वन्मायया कृतम् ७८ ॥

(यदिचेत्त्वं एकवाणेन विध्वा छिद्रं करोपि तदा वाली, त्वया हतः मे विश्वासः प्रजाय ते) हैं रघु-
नन्दन जो कदाचि आप एकै वाण करिकै सातौ ताल वृक्षों को वेधि छिद्र करि देवें तब वाली आप
करिकै बधहोइगो यह मोको विश्वास उपजैगी ७३ (तथाइति धनुः आदाय तत्रसायकं संदधे च
तदारामः महावलः सप्ततालान् विभेद) जो कहते हौ सोई करों गो ऐसा कहि धनुष लयतामें वाण
संधानि पुनः तब रघुनन्दन महा बली बाण चलाय सातौ ताल जो हैं तिनहि विशेषि भेदन की-
न्हे ७४ (सप्ततालान् च गिरि भूमि विनिर्भिय सायकः पुनः आगत्य पूर्ववत् रामस्य तूणी रे स्थितः)
सातौ ताल जो हैं तिनहि पुनः ताके पाछे पहार भूमि जो रहै तिनहि भेदन करि बाण पुनः लौटि
पूर्व की नाई रघुनन्दन के तरकस में स्थित भया ७५ (ततः सुग्रीवः अति विस्मितः अति हर्षात्
रामं आह देवत्वं जगतां नाथः परमात्मा संशयः नः तदनंतर सुग्रीव अत्यंत आश्चर्य वंत इवै जानि
लिये कि ईश्वर हैं ताते अत्यंत हर्षते रघुनन्दन प्रति बोले हे देव आप जगत् के पालन हारे नाथ
परमात्मा हौ यामें संशय नहीं है ७६ (पूर्वमत्कृतपुण्योद्यैः अद्यमया सह संगतः संसार विनिवृत्तये
महात्मानः वां भजंति) पूर्व जन्मों की मेरी करी हुई पुण्य समूह उदय भई त्वहि प्रभाव करिकै
या समय में हम करिकै सहित आपकी संगति भाव मित्रता को प्राप्त भया यही सिद्धांत है यथा
महा रामायणे ॥ येकत्पकोटिसततं जपहोमयोगैर्ध्यानैः समाधिभिरहो रतब्रह्मज्ञानात् ॥ ते देवि
धन्यमनुजाहृदिवाह्यशुद्धाभक्तिस्तदाभवतितेष्वापिरामपादौ ॥ पुनः संसार बंधन छूटवे हेत महात्मा
लोग आपको भजते हैं ७७ (त्वं मोक्षसचिवं प्राप्य अहं भवं कथं प्रार्थये दाराः पुत्राधनं राज्यं त्वत्
मायया कृतं सर्वं आप मोक्ष देन हारे तिनको सचिव अर्थात् मित्रभाव को प्राप्त भया मैं सो भव जो
संसार ताकी प्राप्ती कैसे आपते प्रार्थना करों क्योंकि संसार में स्त्री पुत्र धन राज्य सो तौ आपकी
माया करिकै किये हुये सब पदार्थ भव के साधक भाक्ति के बाधक हैं ७८ ॥

अतोऽहं देवदेवेशनाकांक्षेऽन्यत्प्राप्तिदमे ॥ आनन्दानुभवं त्वाद्यप्राप्तोऽहं भाग्यगौरवात् ७६
मृदर्थं यतमानेन निधानमिव सत्यते ॥ आद्यविद्यासंसिद्धबन्धनं छिन्नमद्यनः ८०
यज्ञदानतपःकर्मपूर्तेष्टादिभिरप्यसौ ॥ न जीर्यते पुनर्दाढ्यं भजते संसृतिः प्रभो ८१
त्वत्पाददर्शनात्सद्यो नाशमेति न संशयः ॥ क्षणार्धमपि यच्चित्तं त्वयि तिष्ठत्यचंचलः ८२
तस्याज्ञानमनर्थानां मूलं नश्यति तत्क्षणात् ॥ तत्तिष्ठतु मनोराम त्वयि नान्यत्र मे
सदा ८३ ॥

(अतः अन्यत् ना कांक्षे देवेश देव में प्रसीद भाग्य गौरवात् अहं आनन्दानु भवं त्वाद्य प्राप्तः) स्त्री पुत्रादि लोक बंधन है इस कारण आपको भजन सेवाय मोहि अन्य पदार्थ की कांक्षा नहीं है हे देवेश मेरे ऊपर प्रसन्न होहु क्योंकि भाग्यकी अधिक ताते मैं आनंद अनुभव रूप आपको अब प्राप्त भयो ७९ (सत्पते मृदर्थं यतमानेन निधानं इव अनादि अविद्या संसिद्धबन्धनः अद्य छिन्नं) हे सत्पुरुषों के पाल ने वाले रघुनाथ जी आप कौन भांति मोको प्राप्त भयो जैसे कोऊ माटी लै जाने हेत भूखनना दियल करता है तहाँ निधान जो है धनराशि सो पाइ जाय ताही भांति मैं प्राण घात बचावने हेत आपको खोज करावा तामें परमात्मा आप प्राप्त भये ताते अनादि जो कारणकार्य रूप अविद्या माया तामें लगे रहते सिद्धभया जो विषय बासना रूप जीव को बंधन सो मेरा बंधन आज कट गया इति अपूर्व लाभ पाय किस हेत चूको ८० (पूर्तेष्टादिभिः अपि यज्ञ दान तपः असौ कर्म भजते प्रभो संसृतिः न जीर्यते पुनः दाढ्यं) बावली कूप तड़ाग धर्मशाला देवालय आदि पूर्त कर्म हैं यज्ञ तपादि इष्ट कर्म हैं यथा त्रिष्वथ क्रतु कर्मेष्टं पूर्त स्वातादि कर्म यत् इत्यमरः सुग्रीव कहत कि पूर्त इष्टादि निश्चय करिकै यज्ञ दान तप ये कर्म करने ते हे प्रभो संसार जीर्ण नहीं होत पुनः पुष्ट होत भाव कर्म करने ते बासना बढ़तै जात है ८१ (त्वत्पाददर्शनात् नाश मेति संशयः न यत्चित्तं अचंचलः क्षणार्धं अपि त्वयि तिष्ठति) आपके पद कमलों के दर्शन मात्र ते संसार शीघ्र ही नाश को प्राप्त होत पुनः जिस को चित्त चंचलता त्यागि क्षणको आधा पांचपला जो आप विषे स्थिर होइतौ ८२ (तस्य अनर्थानां मूलं अज्ञानं तत्क्षणात् नश्यति तत्तमनः मे राम त्वयि सदा तिष्ठतु अन्यत्र न) ताके अनर्थन को मूल अज्ञान उसी क्षण नाश होता है सो मन मेरा हे रघुनाथ जी आप विषे सदा बसा रहै अरु अन्यत्र अर्थात् स्त्री पुत्र राज्य धन मानादि और किसी बस्तु में मन न लगै ८३ ॥

रामरामेति यद्वाणीमधुरं गायति क्षणम् ॥ स ब्रह्महासुरापो वा मुच्यते सर्वपातकैः ८४
न कांक्षे विजयं राम न च दारसुखादिकम् ॥ भक्तिमेव सदा कांक्षे त्वयि बंधविमोचनीम् ८५
त्वन्मायाकृतसंसारस्त्वदंशोऽहं रघूत्तम ॥ स्वपादभक्तिमादिश्य त्राहि मां भवसंकटात् ८६
पूर्वमित्रार्युदासीनास्त्वन्मायावृतचेतसः ॥ आसन्मेद्यभवत्पाददर्शनादेव राघव ८७
सर्वब्रह्मैव मे भाति किमित्रं कच मे रिपुः ॥ यावत्त्वन्मायावद्भस्तावद्गुणविशेषता ८८
सा यावदस्ति नानात्वं तावद्भवति नान्यथा ॥ यावन्नानात्वमज्ञानात्तावत्कालकृतं भयम् ८९ ॥

(यत्वाणी रामराम इति मधुरं क्षणं गायति स ब्रह्महासुरापोः सर्वपातकैः मुच्यते) जाकी बाणी राम राम इत्यादि मधुर स्वरते क्षणमात्र गान करत सो चहै ब्रह्मघाती होइ चहै मदिरापीने वाला होय इत्यादि

सब पापन करिकै छूटिजाय ८४ (रामनविजयकांक्षे चनदारसुखादिकं बंधविमोचनीम् त्वयिभक्तिं एवसदाकांक्षे) हे रघुनाथ जी अब न मोंको वालीके बंधरूप विजय की कांक्षा है न स्त्री सुखादि की कांक्षा है भव बंधनते जीवको छुड़ावन हारी जो आपविषे भक्तिहै ताहि निश्चय करि सदाकांक्षाहै ८५ (रघून्मत्त्वत् मायाकृतसंसारः अहंत्वत्त्रयः स्वपादभक्तिआदिश्य भवसंकटात्मात्राहि) हेरघुबंशनाथ आपकी माया को कियाहुआ संसार रूप सागरमें बूढ़ता हुआ मैं आपको भंश हों शरण आया ताते अपने पद कमलोंकी जो भक्तिहै ताहि उपदेश करिकै भवसंकट ते मोहिं रक्षाकरौ ८६ (पूर्वत्वत् मायया आवृतचेतसः मित्रभरिउदासीनाः आसन्नाथव भवत्पाददर्शनात् एवमेव) पूर्व आपकी माया करिकै घेराहुआ चित्त जो मैं ताको हित करने वाला सो मित्र अनहित करता सो शत्रु जासों प्रयोजन नहीं सो उदासीन इत्यादि होतेभये हेरघुनन्दन आपके पद कमलों के दर्शन भयेते निश्चय करिकै मोंको अब ८७ (सर्वमेवब्रह्मएवभाति कमित्रचक्रमेरिपुः त्वत्मायायावत्बद्धः तावत्तद्गुण विशेषता) सब भूतमात्र मोंको ब्रह्मही निश्चय करिके प्रकाशमान देखाताहै तब कौन मित्रहै पुनः कौन मेरा शत्रुहै यहतौ आपकी माया करिकै जबतक जीव बँधारहताहै तबैतक गुणोंकी विशेषता भाव रजोगुण की विशेषता ते मित्रहै तमोगुण की विशेषताते शत्रु है सतोगुण की विशेषताते उदासीनहै ८८ (सायावत्भस्ति तावत्नानात्वंभवति अन्यथानभज्ञानात् यावत्नानात्वं तावत्कालकृतं भयं) सो माया जबतक जीवमें बनीहै तबतक शत्रु मित्रादि अनेक भाँति की भेद बुद्धी बनीरहतीहै इसी व्यापार की सेवाय परमार्थादि और कछु नहीं होताहै अज्ञान ते जबतक नानात्व अर्थात् भेद बुद्धीते शत्रुमित्रादि अनेक बने रहते हैं पुनः जबतक भेद बुद्धी है तबतक काल की भय है भावजन्म मरणादि छूटता नहीं है ८९ ॥

अतोऽविद्यामुपास्तेयःसोऽधेतमसिमज्जति ॥ मायामूलमिदंसर्वपुत्रदारादिवंध नम् ॥ अतोसारयमायात्वंदासीतवरघूत्तम ६० त्वत्पादपद्मार्पितचित्तवृत्तिस्त्वन्नाम संगीतकथासुवाणी ॥ त्वद्भक्तसेवानिरतौकरौमेत्वदंगसंगलभतामदंगम् ६१ त्वन्मूर्तिभक्तान्स्वगुरुंचचक्षुःपश्यत्वजस्रंशृणोतुकर्णः ॥ त्वज्जन्मकर्माण्यचपादयुग्मम्ब्रजत्वजस्रंतवमंदिराणि ६२ अंगानितेपादरजोविमिश्रतीर्थानिविभ्रत्वाहिशत्रुकेतो ॥ शिरस्त्वदीयंभवपद्मजायैर्जुष्टंपदंरामनमत्वजस्रम् ६३ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामयणेकिष्किधाकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(अतःयःअविद्यां उपासते सःअधेतमसिमज्जति पुत्रदारादिसर्वबंधनम् इदंमूलंमायाअतःरघूत्तम तवदासीमायात्वंउत्सारय) इस कारण जो जन मायाको उपासते भाव विषय सेवन करताहै सोई अधतम जो संसार सागरं ताहीमें बूढ़ा परा रहताहै पुत्र स्त्री आदि जो सब जीवको बंधनहैं इसीकी मूलमाया है इसकारण हे रघुनाथ जी आपकी दासी जो मायाहै ताहि दूरकरिये शुद्धरूपते आपनी कै कर्यता मे लगाइये ९० (चित्तवृत्तिःत्वत् पादपद्मार्पितसुवाणी त्वत्नामसंगीत कथामें करौत्वत् भक्तसेवानिरतौमत्त्वदंगत्वदंगसंगलभतां) मेरे चित्तकी वृत्ति आपके पदकमलों में अर्पितरहै मेरी सुंदर वाणी आपके नामस्मरण संगीत कीर्तिगान कथा कीर्तन करै मेरेहाथ दोऊआपकेभक्तोंकीसेवा में लगेरहैं मेरासर्वांग आपके अंगसंग को प्राप्तहोइ ६१(त्वत्मूर्तिभक्तान्स्वगुरुंचक्षुः पश्यत्वत्त्वज्जन्म

कर्माणिसमजस्रं कर्णशृणोतु चतवमंदिराणिमजस्रं पादयगमम्व्रजतु) आपकी मूर्ति जो है आपके भक्त जो हैं पुनः आपने गुरुजोहैं तिनहि मेरे नेत्र देखतरहैं आपके जन्म कर्मकी जो गाथा है सो नित्यही मेरेकान सुनै पुनः आपके मंदिरन को नित्यही मेरे पाँय दोऊ जावाकरैं १२ (अहिशत्रुके तोतेपादरजःविमिश्रतीर्थानिअंगानि विभ्रतुरामभवपद्मजायैः जुष्टं त्वदीयं पदं अजस्रं शिरःनमतु) हे गरुडध्वजआपके पाँयनकी रजमिले हुये अयोध्या मिथिला चित्रकूटादि तीर्थोंको जलरजादि मेरा अंगधारण करै हे रघुनाथजी शिवब्रह्मादि देवतों करिकै सेवित जो आपके पदहैं तिनहि नित्यही मेरा शिर प्रणामकरै ६३ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखबल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे
किष्किंयाकांडेश्रीरामसुग्रीवसमागमवर्णनोनामप्रथमः प्रकाशः १ ॥

इत्थं स्वात्मपरिष्वंगनिर्दूताशेषकल्मषम् ॥ रामः सुग्रीवमालोक्य सस्मितं वाक्यम्
ब्रवीत् १ मायां मोहकरीं तस्मिन्वितन्वन् कार्यसिद्धये ॥ सखे त्वदुक्तं यत्तन्मांसत्यमे
वनसंशयः २ किंतु लोकावदिष्यन्ति मामेवं रघुनंदनः ॥ कृतवान् किंकर्षी द्रायसख्यं
कृत्वा ग्निसाक्षिकम् ३ इति लोकापवादो मे भविष्यति न संशयः ॥ तस्मादाह्वयभद्रं
ते गत्वा युद्धाय वालिनम् ४ बाणेनैकेन तंहत्वा राज्ये त्वामभिषिचये ॥ तथेति गत्वा
सुग्रीवः किष्किंधोपवनं द्रुतम् ५ ॥

दोहा ॥ मित्रदुखितलखिबालिबधि । त्यहिदीन्हेनिजधाम ॥ रघुवरकरुणासिंधुको । पुनिपुनिकरौ
प्रणाम ॥ (स्वात्मपरिष्वंगअशेषकल्मषनिर्दूतइत्थंसुग्रीवंआलोक्यरामःसस्मितंवाक्यंअब्रवीत्) अपने
अंगमें लगाय लीन्हे ताके प्रभावते अनेक जन्मके संचित संपूर्ण पाप दूरभयेहैं जाके इसप्रकार शुद्ध
ज्ञानयुत रामानुरागी जो सुग्रीव ताहि देखिरघुनंदन मुसुकानि सहित वाक्य बोले मुस्काने को भाव
कि अबही तौ ज्ञान है जब स्त्री राज्यपावै गो तब पुनः ज्ञानमेरा सनेह भूलिजाइगो वाहास में माया
बसत सो मुसुकाय कै माया विस्तारे १ (कार्यसिद्धयेमोहकरींमायांतस्मिन्वितन्वन्सखेयत्मांस्त्वत्
उक्तंतत्सत्यंएवसंशयःन) जो कार्य किया चाहतेहैं ताकी सिद्धीके अर्थ मोहकरने वाली जो अविद्या
माया है ताहि सुग्रीवमें विस्तारि रघुनंदन बोले हे सखेसुग्रीव जो बातमोप्रति तुमने कहासो सब
सत्य है निश्चय करिकै यामें संशयनहीं २ (किंतुमांलोकाःएवंवदिष्यन्तिअग्निसाक्षिकमकर्षीद्राय
रघुनंदनःसख्यंकृत्वाकिंकृतवान्) परंतुमोहिं लोग सब इसप्रकार कहेंगो कि देखो अग्नि को साक्षी
करि सुग्रीव को बानरों को राजा बनायवे अर्थ रघुनंदन मित्रताकरि बालि बचकी प्रतिज्ञा करि क्या
किया जो नमारा ३(इतिमेलोकापवादोभविष्यतिसंशयःनतस्मात्गत्वातेभद्रंयुद्धायवालिनंअह्वय)
प्रतिज्ञापूरी न कियेतौभूठेहैं इत्यादि मोको लोकमें अपवाद अयशहोइगो यामें संशय नहीं तातेजाउ
तुम्हारा कल्याण होय युद्धकरने हेत बालिको बुल्लावौ ४(एकेनबाणेनतंहत्वात्वारज्येअभिषिचयेतथा
इतिसुग्रीवःद्रुतंकिष्किंधोपवनंगत्वा) एकहीबाणकरिकै उसबालिको मारितोंहि राज्य विषेअभिषेक
करिहौं जैसी आपकी आज्ञा तैसाही करिहौं ऐसाकहि सुग्रीव तुरतहौं किष्किंधाके उपवनमेंगये ५ ॥

कृत्वा शब्दं महानादंतमाह्वयत वालिनम् ॥ तच्छ्रुत्वा आतृनिनदं रोषता घबिलोचनः ६
निर्जंगामगृहाच्छीघ्रं सुग्रीवो यत्र बानरः ॥ तमापतंतं सुग्रीवः शीघ्रं वक्षस्यताडयत् ७

सुग्रीवमपिमुष्टिभ्यांजघानक्रोधमूर्च्छितः ॥ वालीतमपिसुग्रीवएवंक्रुद्धोपरस्पर
रम् ८ अयुध्येतामेकरूपोदृष्टारामोतिविस्मितः ॥ नमुमोचतदावाणंसुग्रीववधशं
कया ९ ततोदुद्रावसुग्रीवोवमनूरक्तम्भयाकुलः ॥वालीस्वभवनंयातःसुग्रीवोराम
मब्रवीत् १० किमांघातयसेरामशत्रुणाभ्रातृरूपिणा ॥ यदिमद्धननेवांछात्वमेवज
हिमांविभो ११ ॥

(वालिनंतंअद्वयतमहानादंशब्दंरुत्वाभ्रातृनिनदंतत्श्रुत्वारोपताप्रविलोचनः) वालीजो है ताहि
बुलावता हुआ सुग्रीव महाध्वनिगर्जि शब्दकिया भाईकी ललकार शब्दसोसुनिवालीके रोपकरिनेत्र
लालिहै गये ६ (गृहात्शीघ्रनिर्जगामयत्रसुग्रीवःवानरःतंभापतंतंसुग्रीवःशीघ्रतंवक्षसिअताडयत्)
गृहते निसरि शीघ्रही जाताभया जहाँ सुग्रीववानर खडाहै वाको भावत देखिसुग्रीव शीघ्रही तिस
वाली की छाती में मुष्टिक मारता भया ७ (क्रोधमूर्च्छितःवालीसुग्रीवं अपिमुष्टिभ्यांजघानसुग्रीवतं
अपिएवंक्रुद्धःपरस्परम्) क्रोधकरिदेहकी सुधि नहीं ऐसा जो वालीसो सुग्रीव जो है ताहि मुष्टिकन
करिके मारता भयापुनः सुग्रीव वालीको मारा इसी प्रकारक्रोधित परस्पर दोऊ ८ (अयुधंएकरूपौ
तांदृष्टारामःअतिविस्मितःसुग्रीववधशंकयातदावाणंसमुमोच) युद्धकरतमें एकही तुल्यदोऊ के रूप
तिनहिं देखिरघुनाथ जी अत्यंत विस्मित सुग्रीवके लागिजाने की शंकाकरिके ता समय में वाणन
छाड़े भावदोऊ भाई एकै रूपचिह्ननहींतो सुग्रीवके न वाणलागिजाय ९ (ततःरक्तवमनम्भयाकुलः
सुग्रीवःदुद्राववालीस्वभवनंयातःरामंसुग्रीवःअब्रवीत्) तदनंतररक्त मुखते उगिलताहुवा वधकी भय
करिके आकुलसुग्रीव भाग वालि आपने घरको गया इहाँ रघुनदन प्रतिभाय सुग्रीव बोले १० (राम
भ्रातृरूपिणाशत्रुणार्किमांघातयसे विभोयदिमत्तहननेवांछामांत्वंएवजहि) सुग्रीव बोले हे रघुनाथ
जी भाई रूप शत्रुकरि कै क्यों मेरे प्राणघात करावते हौ भावक्यों नहीं वाली को मारेउ हे प्रभुआप
को जो मेरे मारने की कांछाहोइतौमोहि आपही निश्चय करि मारिये ११ ॥

एवंमेप्रत्ययंकृत्वासत्यवादिनूरघूत्तम ॥ उपेक्षसेकिमर्थमांशरणागतवत्सल १२
श्रुत्वासुग्रीववचनंरामःसाश्रुविलोचनः ॥ आलिंग्यमास्मभैपीस्त्वंदृष्ट्वावामेकरू
पिणौ १३ मित्रघातित्वमाशंक्यमुक्तवान्सायकंनहि ॥ इदानीमेवतेचिह्नंकरिष्ये
अमशांतये १४ गत्वाङ्गयपुनःशत्रुहंतद्रक्ष्यसिवालिनम् ॥ रामोहंत्वांशपेभ्रातर्ह
निष्यामिरिपुंक्षणात् १५ इत्याङ्वास्यससुग्रीवंरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ॥ सुग्रीवस्य
गलेपुष्पमालामा मुच्यपुष्पितां १६ प्रेषयरवमहाभागसुग्रीवंवालिनंप्रति॥लक्ष्म
णस्तुतदावध्वागच्छगच्छतिसादरम् १७ ॥

(शरणागत वत्सल सत्यवादिनूरघूत्तम एवं मे प्रत्ययं कृत्वा किं अर्थ मां उपेक्षते) हे शरणागत
पर प्रीति करणे वाले हे सत्यवालेने वाले हे रघुवंश में उत्तम भाव शरण पाल हैं तौ मेरी पालना
करें मे सत्यवादी हैं तौ जो कहें सो करैं मे रघुवंश में उत्तम हैं तौ दीन जानि मेरी विपत्ति हरि लेइंगे
इसप्रकार मोको विदवास कराय अब किस हेत मोहिं त्याग तें हौ १२ (सुग्रीववचनं श्रुत्वा रामः
साश्रुविलोचनः आलिंग्य मास्मभैपीस्त्वं एकरूपिणो वां दृष्ट्वा) सुग्रीव के भारत वचन सुनिरघु-
नन्दन करुणावश सहित अश्रु नेत्र सुग्रीव को हृदय में लगाय बोले हे सखे मत डरौ तुम जो वाली

वचा ताको कारण यह है कि एकही रूप दोनों तुम देखि परे १३ (मित्राघाति त्वं आशंक्य सायकं नहि मुक्तवान् भ्रमशांतये इदानीं एव ते चिह्नं करिष्ये) दोऊ एकरूप तौ मित्र सुग्रीवैको न घात है जाय इस शंका करि बाण को नहीं छोड़ा सो भ्रम मिटाइवे हेत इसी समय निश्चयकरि तुम्हारे चिह्न किहे देताहों १४ (गत्वापुनः शत्रुं ब्रह्मय वालिनं हतं द्रक्ष्यसि अहंरामः भ्रातः त्वां शपेक्षणात् रिपुं ह निष्यामि) जाउ पुनः शत्रुको बुलावो वालि जो है ताहि मरै देखि हों क्यों कि मैं रामहों भाव जो कहों सोई करों हे भाई तुम्हारी सप्तहै क्षणे भरेमें शत्रुको मरिहों १५ (इतिसुग्रीवं आश्वास्य रामः लक्ष्मणम् अवब्रवीत् पुष्पितापुष्पमालां सुग्रीवस्य गलेऽग्रामुज्य) इसप्रकार प्रभु सुग्रीवको धैर्य दयलक्ष्मणप्रति बोले हे लक्ष्मण फूले हुये फूलों की माला सुग्रीव केगरे में बाँधि देउ १६ (महाभाग वालिनं प्रति सुग्रीवं प्रेषयस्वतु तदा लक्ष्मणः बध्वा गच्छ गच्छ इति सादरम्) हे महाभाग वालि प्रति सुग्रीव जो है ताहि पठवौ यह सुनि पुनः ता समय में लक्ष्मण फूलों की माला गले में बाँधि पुनः हे सुग्रीव जाउ जाउ ऐसा वचन सहित आदर कहे इहाँ जो प्रभुकहे कि तुमदोऊ एकैरूप त्यहि भ्रम ते मित्रघात की भय करिके मैं बाण नहीं छाड़्यो ये वचन संदग्धेहें क्योंकि प्रभु तबज्ञ प्रभुको बाण संकल्प अनुकूल कार्य करणे वाला तब ये वचन वाचकार्य कैसे सिद्ध हैं भरु रघुनाथ जी सत्य वादी हैं सत्यही कहे पुनः वालि वधकी संकल्प करि सुग्रीव को पठाये ताते नर नाट्य को भी अभाव ताते यह अभिप्राय है कि शत्रु मित्र भाव रहित सबसों एकरस प्रभु हैं तहांदर्पणे मुखवत् न्याय करि जो जैसा भाव राखत ताको तैसाही प्रभु देखात यथा गीतायां ॥ येयथामांप्रपद्यन्तेतां स्तथैवभजाम्यहं ॥ पुनः श्रुतितद्यथायथोपासतेतथातथातद्भवाति ॥ यहि रीतिते प्रभु विचारे कि सुग्रीव को मित्र भाव है भरु वालि कोई भाव प्रसिद्ध नहीं किया भरु जो वध की प्रतिज्ञा है सो सुग्रीव के दुख निवारणहेत है भरु पिता पुत्र पति पत्नी भाई इत्यादि की प्रीति तौ तांची भरु विरोध साँचा नहीं है यथा प्रह्लाद वध कराय पीछे नृसिंह सों पिता की मुक्ति मांगे गौतम पर पातिरत दोपते स्त्री को त्यागे पीछे मेरे पद रज स्पर्श कराय ग्रहण कीन्हे ताते इहाँ विचारि कार्य कीन चाहिये क्योंकि सुग्रीव की दिशि ते तौ बैर है नहीं केवल वालि ही की दिशि ते है जो मेरा बल पाय सुग्रीव जाय कदाचि बैर त्यागि वाली मिलि चलै तौ यथा सुग्रीव तथा वालि भी मेरा मित्रहै इस विचार ते रघुनन्दन कहे कि तुमदोऊ एकै रूपहों पुनः वाली बड़ाभाई वाली राजा है भरु सुग्रीव छोटा भवलसो प्रथमही जायगजि प्रचारि वाको गौसे तब वाली धावा तबौ सुग्रीवहीं प्रथम वाको मारे तब वालीने मारा जब सुग्रीव भागे तब वाली ने पीछा नहीं किया अपने धरै लौटि गया याते वालीमें साँचा बैर भी नहीं प्रसिद्ध भया तौयह लोक रीति है सौभागिके भाई भाई लड़ते हैं पुनः एकै होतेहैं तथा जो वालिमें बैर नहीं प्रसिद्ध भया तो जो अंतरमें प्रीतिहै तौ यथासुग्रीव तथावाली भी मित्रहै ताको कैसेमारेंइस हेत कहेकि मित्रघात शंका करिके मैं बाण नहीं छाड़ें पुनः तब आपना कोई चिह्ननहीं दिया रहै अब फूल माल अपनाचिह्नन है पठावै तब जो सुग्रीव को प्राणघात की इच्छाकरै तब बैर प्रसिद्ध देखि वालिकोमारों इसहेत लक्ष्मण जीके हाथ फूलमाल पहिराय पुनः जाने को कहे १७ ॥

प्रेषयामाससुग्रीवंसोपिगत्वातथाकरोत्॥पुनरप्यद्भुतंशब्दंकृत्वाबालिनमाह्वयत्१८
तच्छ्रुत्वाविस्मितोवालीक्रोधेमहतावृतः॥ बध्वापरिकरंसम्यक्गमनायोपचक्रमे
१९ गच्छंतंबालिनंतारागृहीत्वानिषिधेधतम्॥ नगंतव्यंत्वयेदानींशंकामेतीव

जायते २० इदानीमेव ते भग्नः पुनरायातिसत्वरः ॥ सहायो बलवांस्तस्य कश्चिन्नूनं समागतः २१ बालीतामाह हे सुभ्रुशंका ते व्येतु तद्गता ॥ प्रिये करं परित्यज्य गच्छ गच्छामितं रिपुम् २२ हत्वा शीघ्रं समायास्ये सहायस्तस्य को भवेत् ॥ सहायी यदि सुग्रीवस्ततो हत्वोभयं क्षणात् २३ ॥

(सुग्रीवं प्रेषयामास सः अपि गत्वा तथा करोत् बालिनं ब्रूयत् पुनः अपि ब्रूयत् शब्दं कृत्वा) सुग्रीव हि पठावते भये सो निश्चय करि जाय यथा पूर्व करे तैसे ही किया बाली को प्रचारि बुलाता हुआ पुनः निश्चय करि ब्रूयत् शब्द करि गर्जा १८ (तत् श्रुत्वा बाली विस्मितः महता क्रोधेन आवृतः सम्यक् परिकरं बध्वा गमनाय उपचक्रमे) सुग्रीव को किया हुआ शब्द सो सुनिकै बाली विस्मय अर्थात् आश्चर्य माना भाव मेरी भयते भाग फिर तारहा अब जो बारम्बार आय गर्जता है तो कुछ कारण है पुनः बड़े क्रोध करि घेरा हुआ युद्ध के सम्पूर्ण साज सहित कमर बाँधि चलने हेतु तय्यार भया १९ (बालिनं गच्छंतं तं तारा गृहीत्वा निषिषेत् ब्रूया इदानीं न गन्तव्यं मे अतीव शंका जायते) बालिको जात समय ताको तारा पकरिकै रोंका कि तुम या समयमें न जाउ क्योंकि मेरे उरमें अत्यंत शंका उत्पन्न होती है २० (इदानीं एव ते भग्नः सत्वरः पुनः आयातिसत्सहायः कश्चित् बलवान् नूनं समागतः) इसी समय निश्चय करि तुमते हारि भागि गया अरु शीघ्र ही पुनः आया इस अनुमानते सूचित होत कि तिस सुग्रीव को सहाय करता कोऊ बलवान् वीर निश्चय करिकै संग आया है २१ (तां बाली आह हे सुभ्रु शंकागता तत् व्येतु प्रिये करं परित्यज्य गच्छ रिपुम् तं गच्छामि) तिस तारा प्रति बालि बोला हे सुभ्रु सुंदर भौह वाली तेरे जो शंका उत्पन्न भई है सो त्यागु हे प्रिये मेरा हाथ छाँड़ि दे मंदिर को जा अरु मैं शत्रु प्रति जाता हों २२ (तस्य सहायः कः भवेत् शीघ्रं हत्वा सं आयास्ये यदि सुग्रीवः सहायी ततः क्षणात् उभयं हत्वा) ताको सहाय करता कौन है सक्ता है शीघ्र ही वाको मारि आवता हों जो सुग्रीव सहायक सहित होइ गो तब जो सहायक होइ अरु सुग्रीव इन दोऊको क्षणोंमें मारि हों २३ ॥

आयास्ये माशुचः शूरः कथं तिष्ठेद्गृहे रिपुं ॥ ज्ञात्वाप्याहूय मानं हि हत्वा यास्यामि सुंदरि २४ तारोवाच ॥ मत्तो न्यच्छृणुराजेंद्र श्रुत्वा कुरुयथोचितम् ॥ आह मामंगदः पुत्रो मृगयायां श्रुतं वचः २५ अयोध्याधिपतिः श्रीमान् रामो दाशरथिः किल ॥ लक्ष्मणेन सह भ्राता सीतया भार्यया सह २६ आगतो दण्डकारण्ये तत्र सीताहता किल ॥ रावणेन सह भ्राता मार्गमाणाथ जानकीम् २७ आगतो ऋष्यमूकाद्रसुग्रीवेण समागतः ॥ चकार तेन सुग्रीवः सख्यं चानलसाक्षिकम् २८ प्रतिज्ञां कृतवान् रामः सुग्रीवाय सलक्ष्मणः ॥ बालिनं समरे हत्वा राजानं त्वां करोम्यहम् २९ ॥

(आयास्ये माशुचः आहूय मानं रिपुं ज्ञात्वा अपिशूरः गृहे कथं तिष्ठेत् सुंदरि हि हत्वा यास्यामि) दोऊ को मारि आवता हों मत सोच करु अरु प्रचारि बुलावता हुआ शत्रु ताहि जानि कै निश्चय करि कै शूर है घरमें मैं कैसे बैठ रह सका हों हे सुंदरि निश्चय करि वाको मारि ही कै लौटोंगा २४ (राजेंद्र मत्तः अन्यत् शृणु श्रुत्वा यथोचितं कुरु पुत्रः अंगदः मृगयायां श्रुतं वचः मां आह) तारा बोली हे राजेंद्र मेरा कहा और कुछ हाल सुनि लीजे सुनिकै जैसा उचित होय सो करिये तुम्हारा पुत्र अंगद शिकार खेलने गया रहै तहां सुनि सोई वचन मो प्रति कहा है २५ (अयोध्याधिपतिः

श्रीमान् दाशरथिः किलरामः भ्रातालक्ष्मणेनसह भार्ययासीतयासह) अयोध्यापुरीके पति बड़े शोभायमान दशरथ के पुत्र निश्चय करिकै राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण करिकै सहित अपनी भार्या सीता करिकै सहित २६ (दण्डकारण्येआगतः तत्ररावणेन किलसीताहृता अथजानकीमुत्तह भ्रातामार्गमाणः) दण्डक वनमें आये तहां रावण निश्चय करि सीताको हरि लैगया अबहरीहुई जो जानकीहैं तिनहिं शोधहेत सहित भाई रघुनन्दन वनमें ढूँढते हुये २७ (ऋष्यमूकाद्रिआगतः सुग्रीवेणसमागतः चअनलसाक्षिकमतेन सुग्रीवःसख्यंचकार) राम लक्ष्मण ऋष्यमूक पै आये तहां सुग्रीव करिकै समागम भया पुनः अग्नि को साक्षी करि राम करिकै सुग्रीव सख्य अर्थात् राम सुग्रीव दोऊ मित्रता करते भयेहैं २८ (सलक्ष्मणःरामःसुग्रीवायप्रतिज्ञांरुतवान् अहंवालिनंसमरेहत्वात्वाराजा नंकरोमि) सहित लक्ष्मण राम सोसुग्रीव के हितहेत यह प्रतिज्ञा कीन्हे हैं कि वालिजोहै ताहि हम युद्धमें मारिकै हे सुग्रीव तोहिं किष्किया राजधानीमें बानरों को राजाकरिहों २९ ॥

इतिनिश्चित्यतौयातौनिश्चितंशृणुमद्वचः ॥ इदानीमेवतेभग्नःकथंपुनरुपाग तः ३० अतस्त्वंसर्वथावैरंत्यक्त्वासुग्रीवमानय ॥ यौवराज्येभिषिंचाशुरामंत्वंशर णंब्रज ३१ पाहिमामंगदंराज्यंकुलंचहरिपुंगव ॥ इत्युक्त्वासुमुखीतारापादयोःप्र णिपत्यतम् ३२ हस्ताभ्यांचरणौधृत्वारुरोदभयविह्वला ॥ तामालिङ्ग्यतदाबाली सस्नेहमिदमब्रवीत् ३३ स्त्रीस्वभावाद्भिषेपित्वंप्रियेनास्तिभयंमम ॥ रामोयदि समायातोलक्ष्मणेनसमंप्रभुः ३४ तदारामेणमेस्नेहोभविष्यन्निसंशयः ॥ रामो नारायणःसाक्षादवतीर्णोऽखिलप्रभुः ३५ ॥

इतितौनिश्चित्ययातौमत्वचःनिश्चितंशृणुदानींएवतेभग्नःपुनःकथंउपागतः) राम लक्ष्मण कहे कि हे सुग्रीव वालि को मारितोहिं राजा बनैहों इत्यादि दोऊ निश्चय करितव विश्राम स्थान को गये ताते मेरा वचन निश्चय करि सुनिये भाव सौंचा मानिये ना तरु अबहीं निश्चय करि तुम ते हारि भागिगया सुग्रीव फिरिकैसे आयतत्ता ३० (अतस्त्वंसर्वथावैरंत्यक्त्वासुग्रीवमानयआशुयौ वराज्येभिषिंचत्वंशरणंब्रज) इसकारण सब प्रकारवैर त्यागिनिश्छल स्नेहयुत सुग्रीवहिलेवाय लावै ताहि शीघ्रहीं राज्य बिषे अभिषेक करिअरुतुम रघुनंदन के शरण जाउ ३१ (हरिपुंगवमांभं गदंचराज्यंकुलंपाहिइतिउक्त्वाताराअश्रुमुखीतंपादयोःप्रणिपत्य) हे बानरोंमें श्रेष्ठमोहिं अंगदहिपुनः यह राज्य बानर कुल इत्यादि जो हैं तिनहिं रक्षा करौ ऐसा कहितारा अश्रु बहे मुख सहित वालि के पाँयन में गिरिपरी ३२ (हस्ताभ्यांचरणौधृत्वारुदभयविह्वलारुरोदतदाबालीतांअलिङ्ग्यसस्नेहंइदंअ ब्रवीत्) हाथों करिकै तारा बालीके दोऊ पाँयपकरि डरतेविकल रोदनकरती भई ता समयबाली ताराजो है ताहि उठाय उरमें लगाय सहित स्नेह इसप्रकारबोलता भया ३३ (प्रियेस्त्रीस्वभावात् त्वंभिषेममभयंनास्ति लक्ष्मणेनसमंप्रभुःरामःयदिसमायातः)ताराप्रति बाली बोला हे प्राण प्रिये स्त्री स्वभाव ते तू डरमानती है अरुमोको भयकछु नहीं है काहेते लक्ष्मण करिकै सहित प्रभु सबके पालन- हारेअरिघुनाथ जी जो इहाँको आयेहैं ३४ (रामःसाक्षात्नारायणःअखिलप्रभुः अवतीर्णः रामेणमेस्नेहःभविष्यत्तिसंशयः न) रघुनाथ जी साक्षात् नारायण संपूर्ण लोकन के प्रभु पालनहारे स्वामी लोकोद्धारहेत अवतीर्ण भयेहैं तिनरघुनाथ जी करिकै मेरा स्नेहहोई उनमें सांची प्रीति करिहों यामें संशय नहीं है निश्चयजानु ३५ ॥

भभाहरणार्थायश्रुतं पूर्वमयाऽनघे ॥ स्वपक्षः परपक्षो वानास्ति तस्य परात्मनः ३६
 आनेष्यामि गृहं साध्विनत्वात् चरणाम्बुजम् ॥ भजतो नु भजत्येष भक्तिगम्यः सुरे
 श्वरः ३७ यदि स्वयं समायाति सुग्रीवो हन्मि तं क्षणात् ॥ यदुक्तं यौवराज्याय सुग्रीवस्य
 भिषेचनं ३८ कथमाहूयमानोऽहं युद्धाय रिपुणा प्रिये ॥ शूरोऽहं सर्वलोकानां संम
 तः शुभलक्षणे ३९ भीतभीतमिदं वाक्यं कथं बाली वदेत् प्रिये ॥ तस्माच्छोकं परित्य
 ज्यतिष्ठ सुन्दरि वेश्मनि ४० एवमाश्वास्य तारांतां शोचंतीं मश्रुलोचनाम् ॥ ततो
 बाली समुद्युक्तः सुग्रीवस्य वधाय सः ४१ ॥

(भूभाहरणार्थाय अन्घे पूर्वमया श्रुतं परात्मनः तस्य स्वपक्षः वा परपक्षः नास्ति) भूमिको, भारहरने
 हेतु अवतीर्ण भये हे निः पापे यह हाल पूर्वही मैंने सुनिराखा है सो रघुनाथजी परात्मा हैं तिनके
 स्वपक्ष अर्थात् अपना मित्र वा परपक्ष शत्रु इत्यादि भाव उन में नहीं है ३६ (साध्वितत्त्वचरणाम्बुजं
 नत्वा गृहं आनेष्यामि भजतः अनुभजति एष सुरेश्वरः भक्तिगम्यः) हे पतिव्रते तिन रघुनाथ जीके चरण
 कमलों को प्रणाम करि आपने घरको लवाय लैहों क्योंकि उनको जो भजता है ताही को ओभी
 भजते हैं वे देवतां के ईश्वर भक्ति करि प्राप्त होते हैं ३७ (यदि सुग्रीवः स्वयं समायाति तत्क्षणात्
 हन्मि सुग्रीवस्य यौवराज्याय अभिषेचनं मयत्तु कम्) जो सुग्रीव आपही अकेला युद्ध हेतु भावहि गो
 तौ उसी क्षणताको मारि डारिहों अरु सुग्रीव के यौवराज्य हेतु अभिषेक करने को जो कहती है सो
 तौ स्नेहमें होनेवाला है ३८ (शुभलक्षणे सर्वलोकानां संमतः अहं शूरः प्रिये युद्धाय रिपुणा आहूयमानः
 कथं अहं बाली भीतभीत इदं वाक्यं कथं वदेत् अस्मत्प्रियेशो कं परित्यज्य सुन्दरि वेश्मनि तिष्ठ) हे शुभलक्षणे
 सब लोकन के संमत लोक प्रसिद्ध मैं शूरहों ताहू पर हे प्रिये युद्ध के अर्थ शत्रुकरि के प्रचारि
 बुलावा हुआ कैसे मैं बालीहैंके डरेहुयेन मैं डराहुआ ऐसा वचन कैसे मैं कहों अर्थात् शूरहैंके अब कैसे
 कादरवनि कहों कि हे सुग्रीव आउतोहि मैं राज्याभिषेक करि देउ सो नहीं होनहार है तिसकारण हे
 प्रिये शोक परित्यागि के हे सुन्दरि घरमें बैठ ३९।४० (आश्रुलोचनां शोचंतीं तां एव समाश्वास्य तः सः
 बाली सुग्रीवस्य वधाय समुद्युक्तः) आशुवाहि रहें नेत्रनमें जाके शोचंती हुई जो तारांताहि
 समुभाय धैर्यदे तदनंतर सो बाली सुग्रीव के मारने अर्थ उद्योग युक्त अर्थात् मारने परतत्पर
 हैं चलता भया ४१ ॥

दृष्ट्वा बालिनमायांतं सुग्रीवो भीमविक्रमः ॥ उत्पपात गले वद्ध पुष्पमालः पतंगवत् ४२
 मुष्टिभ्यां ताडयामास बालिनं सोपितं तथा ॥ अहं बाली च सुग्रीवं सुग्रीवो बालिनं त
 था ४३ रामं विलोक्य त्रेव सुग्रीवो युयुधेयुधि ॥ इत्येव युद्धयमानो तौ दृष्ट्वा रामः प्रता
 पधान् ४४ बाणमादाय तूणीरादेन्द्रन्धनुषि संदधे ॥ आकृष्य कर्णं पथैतमदृश्यो नृ
 क्षखंडगः ४५ निरीक्ष्य बालिनं सम्यग्लक्ष्य तद्धृदयं हरिः ॥ उत्सर्ज्य शनिसमं महा
 वेगं महाबलः ४६ विभेदसशरो वक्षो बालिनः कंपयन्महीम् ॥ उत्पपात महाशब्दं मुं
 चन् सनिपपात ह ४७ ॥

(पुष्पमालः गले वद्ध भीमविक्रमः सुग्रीवः बालिनं आयांतं दृष्ट्वा पतंगवत् उत्पपात) रघुनंदन को द्विया

हुवा फूलों को माला गलेमें बाँधा है जाके पुनः भयंकर पराक्रम है जाके ऐसा सुग्रीव बालिको आवता हुवा देखि युद्ध के हेतु संमुख पक्षी की नाई कूवि पहुँचता भया ४२ (सः अपि मुष्टिभ्यां बालिनं तं ता हयामास स च तथा बाली सुग्रीवं ग्रहन् तथा बालिनं सुग्रीवः) सो सुग्रीव निश्चय करि मुष्टिकन करिके बालीजो है ताहि प्रथमहि मारता भया पुनः ताही भाँति वाली सुग्रीवहि मारा तैसे पुनः बाली को सुग्रीव मारा इति परस्पर प्रहार करते हैं ४३ (सुग्रीवः रामं विलोक्य न एव युधि युधे इति एव तौ युद्धं मानौ प्रतापवान् रामः दृष्ट्वा) बालिके बधकी कांक्षा राखे सुग्रीव रघुनंदन को देखते हुये रण भूमिमें युद्ध करते भये इसी भाँति निश्चय करि दोऊ युद्ध करिरहे हैं तिनहिं प्रतापवान् रघुनंदन देखते हैं ४४ (तूणीरात् बाणं आदाय ऐंद्रं धनुषि संदधे कर्णपर्यंत आकृष्य वृक्षखंडगः भट्टयः) तरकसते बाण निकारि भगस्त्य को दिया हुवा जो इंद्रको धनुष है तामें संधानि कानें तकखेंचे परंतु सधन वृक्षोंके ओटखड़े हैं ताते बाली को देखि नहीं परते हैं ४५ (बालिनं सम्यक् निरीक्ष्य तत्तद्वदयं लक्ष्यं महाबलः हरिः महाबलं शनिसमं उरससर्ज) बाली को संपूर्ण तन देखिताकी छातीको निशाना शोधि महाबलवंत हरि श्री रघुनाथ जी बड़ा बेगवान् बज्रसम बाण छाड़ते भये अर्थात् बड़ा कराल बाण बाली की छाती परमारते भये ४६ (सशरः वक्षः विभेद बालिनः महीमूकं पयन उत्पपात महाशब्दं मुचयत् स निपापत ह) सो बाण छाती फोरि कै नाधिगया तिस घाउ पीरते बाली भूमिको कंपावता हुवा उछरता भया महा शब्दको छोड़न सहित अर्थात् चिल्लायकै गिरिपरा मूर्छित है जाता भया ४७ ॥

तदा मुहूर्तानिः संज्ञो भूत्वा चेतनमापसः ॥ ततो बाली ददर्श अग्रे रामं राजीवलोचनम् ॥
४८ धनुरालंब्य वामेन हस्तेनान्येन सायकम् ॥ बिभ्राणं चरिवसनं जटामुकुटधारि
णम् ४९ विशालवक्षसं भ्राजद्वनमालाविभूषितम् ॥ पीनचार्वायतभुजं नवदूर्वाद
लच्छविम् ५० सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यां च पाद्वयोः परिसेवितम् ॥ विलोक्य शनकैः
प्राह बाली रामं विगर्हयन् ५१ किं मया पकृतं रामतवेन हतोऽस्म्यहम् ॥ राजधर्म
मविज्ञाय गार्हितं कर्म ते कृतम् ५२ वृक्षखंडेतिरो भूत्वा त्यजतामयि सायकम् ॥ यशः
किं लप्स्यसे रामचोरवत्कृतसंगरः ५३ ॥

(तदा मुहूर्तानिः संज्ञो भूत्वा चेतनमापसः ततः बाली अग्रे रामं राजीवलोचनं रामं ददर्श) ता समय दोदण्ड मूर्छित परारहा पुनः चैतन्य हूवै तदनंतर बाली आगे खड़े हुये राजीव कमल तुल्य नेत्र जो रघुनंदन तिनहिं देखता भया कैसे हैं ४८ (वामेन हस्तेन धनुः प्रालम्ब्य अन्येन सायकम् चरिवसनं बिभ्राणं जटामुकुटधारिणम्) वामहाथ करिके धनुष जिहे दहिने करिके बाण लीन्हे मुनि वसन तनमें बिराजमान शिरमें जटाके मुकुट धारण किहे ४९ (विशालवक्षसं भ्राजत्) चौड़ी छात शोभित (वनमाला विभूषितम्) तुलसीदलकंदमंदार पारिजात कमल इत्यादि फूलोंते गुहाहुवायी वाते जानु प्रयंत वनामा लाशोभायमान करिके भूषित (पीन चार्वायतभुजं) पुष्ट सुदार सुंदर लबायमान भुजा हैं (नवदूर्वादलच्छविम्) नवीन दूर्वादल समदयामतनकी छवि है ५० (चपाद्वयोः सुग्रीवलक्ष्मणाभ्यां परिसेवितम् विलोक्य बाली रामं विगर्हयन् शनकैः प्राह) पुनः दहिने बाँये दोऊ समीपमें खड़े सुग्रीव लक्ष्मण करिके सेवित इस प्रकार देखिके बाली रघुनंदन को निंदा करत संते धीरा धीरा बोलता भया ५१ (रामतव मया किं पकृतं तेन हतोऽस्म्यहम् राजधर्ममविज्ञाय ते गार्हितं कर्म कृतम्) बालिबोला कि हे राम आपको जेने क्या अपकार किया जिस कारण मारेउ मोको राज नीति धर्म विना जाने निंदित कर्म आपने

कियाभाव यामें लोकमें आपकी निंदाहोगी ५२ (वृषखंडेतिरोभूत्वामयिसायकमृत्यजताग्राम चोरवत्संगरःकृतकियशःलप्स्यसे) वृषोंके समूह में गुप्तद्वैकै व्याध की भांति मेरे ऊपर बाण छाड़ि दिहेउ हे राम चोर की भांति छिपिकै संग्राम कान्हेउ तामें कौने यशको प्राप्त होउ गे अर्थात् अप-यश पावहु गे ५३ ॥

यदिक्षत्रियदायादोमनोर्वंशसमुद्भवः ॥ युद्धं कृत्वासमक्षं मे प्राप्स्यसे तत्फलं तदा ५४
सुग्रीवेण कृतं किं ते मया वानकृतं किमु ॥ रावणेन हता भार्या तव राम महावने ५५ सु-
ग्रीवं शरणं यातस्तदर्थमिति शुश्रुम ॥ तव राम न जानीषेम हलं लोकविश्रुतम् ५६ रा-
वणं सकुलं बध्वाससीतं लंकया सह ॥ आनयामि मुहूर्ताद्वाद्यदि चेच्छामि राघव ५७
धर्मिष्ठ इति लोके स्मिन् कथ्यसे रघुनन्दन ॥ वानरं व्याध वद्धत्वा धर्मं कलप्स्यसे वद ५८
अभक्ष्यं वानरं मांसं हत्वामां किं करिष्यसि ॥ इत्येवं बहुभाषंतं बालिनं राघवोऽब्र-
वीत् ५९ ॥

(मनोः वंशसमुद्भवः यदि क्षत्रियदायादः मे समक्षं युद्धं कृत्वा तदा तत्फलं लप्स्यसे) जोमनुके वंशमें उत्पन्न भयो जो क्षत्रिय के पुत्र पौत्र होते तौ मो प्रति प्रसिद्ध है युद्ध करते तौ ताके फलको प्राप्त हेते भाव सन्मुख युद्ध करि मोको मारते तब यश पावते वा मृत्यु पाते ५४ (सुग्रीवेण ते किं कृतं वा मया किमुन कृतं राम महावने तव भार्या रावणेन हता जो सुग्रीव के सहायक है मोको मारा तौ सुग्रीव ने आपको क्या उपकार किया जो सहायक भये अथवा मैंने आपको क्या कार्य नहीं किया हे राम महावन में तुम्हारी भार्या रावण ने हरा ५५ (तत्पर्यं सुग्रीवं शरणं यातः इति शुश्रुम मत्फलं लोक विश्रुतं राम तव न जानीषे) स्त्री रावण हरा ताही सहायता के अर्थ सुग्रीव की शरण प्राप्त भये यह मैंने सुना है अरु मेरा बल लोक में प्रसिद्ध है सो आपने नहीं जाना भाव मेरे घर क्यों न चले आये ५६ (राघव यदि चेत् इच्छामि सकुलं रावणं बध्वा लंकया सह ससीतं मुहूर्ताद्वात् आनयामि) बाली बोला कि हे राघव जो मैं इच्छा करता तौ सहित कुल रावण को बांधि लंकापुरी सहित सीता सहित मुहूर्त के आधे काल अर्थात् दंड भरेमें इहाँको उठाये लाता जो आपमेरे पास आते ५७ (रघुनन्दन अस्मिन् लोके धर्मिष्ठ इति कथ्यसे व्याध वत् वानरं हत्वा कं धर्मं लप्स्यसे वद) हे रघुनन्दन इसलोक बिपे आप धर्मिष्ठ कहावते हौ सो व्याधा की नाई मैं जो वानर ताहि बध करि कौने धर्मको प्राप्त भयो सो कहिये भाव धर्मवंत कहाय अर्धर्मिन को कार्य कान्हेउ कैसे धर्मवंत रहे ५८ (वानरं मांसं अभक्ष्यं मांसं हत्वा किं करिष्यसि इति बहुभाषंतं एव बालिनं राघवः अब्रवीत्) वानरको मांस अभक्ष्य है मनुष्य को भोजन में वर्जित है तौ मोहि मारिकै क्या करोगे इत्यादि बहुत भांति के वचन कहता हुवा जो निश्चय करि बाली ता प्रति रघुनन्दन बोलते भये ५९ ॥

धर्मस्य गोप्ता लोके स्मिन्श्च रामिसशरासनः ॥ अधर्मकारिणं हत्वा सद्धर्मं पालयाम्य-
हम् ६० दुहिता भगिनी भ्रातुर्भार्या चैव तथा स्नुषा ॥ समायोरमते तासामेकामपि
त्रिमूढधीः ॥ प्रातर्कीसतु बिज्ञेयः सवध्यो राजभिः सदा ६१ त्वं तु भ्रातुः कनिष्ठस्य भार्यया र-
मसंबलात् ॥ अतो मया धर्मविदाहतो सिवनगाचेर ६२ त्वं कपित्वान्न जानीषेम हा-
न्तो विचरन्ति यत् ॥ लोकं पुनानाः संचारैरतस्तान्नाति भाषयेत् ६३ ॥

(धर्मस्य गोप्तासशरासनः अस्मिन् लोके च रामि अहं सत् धर्मपालयामि अयं धर्मकारिणं हत्वा) धर्मको पालनेवाला सहित धनुष इस लोकविषे विचरता हों मैं सो सत् धर्म करने वाला नको पालन करता हों ६० अयं धर्म करने वाला नको बध करता हों (दुहिता भगिनी च एव भ्रातुः भार्या तथा स्नुषा समाता सां एका अपि यः विमूढ धारमते स पात की विज्ञेयः तु स राजभिः सदा वध्यः) अपनी कन्या अपनी बहिनि पुनः निश्चय करि छोटे भाई की पत्नी तैसे पुत्र की पत्नी अर्थात् कन्या बहिनि भय हो पतो हु एचारि हू बरा बरि है तिनमें एकोंमें निश्चय करि जो मूढ बुद्धी रमै सो पात की जानिये पुनः सो राजों करिकै सदा मारने योग्य हैं ६१ (तु त्वं कनिष्ठस्य भ्रातुः भार्यायाः वलात् रमसे अतः वनगोचर धर्मविदामयाहतोसि) पुनः तू छोटे भाई की स्त्री में बरबश रमता है इस कारण हे वनगोचर भाव वनमें चरने वाले बानर धर्म की रीति जानि मैने अयं रत विचारि तेरा बध किया यामे शंका है कि धर्म अधर्म तौ देव मनुष्योंमें हैं अरु पशु पक्षिन में धर्माधर्म को अभाव इति शास्त्र सिद्धांत है अरु बाली को वनगोचर कहि क्यों अधर्मी कहे इसका आशय यह है कि पशु पक्षिन में धर्माधर्म को अभाव केवल अज्ञान ते है तैसा अज्ञान पशु तू नहीं है क्योंकि इन्द्रके अंश ते उत्पन्न बालाही ते वेद शास्त्र पढ़े संध्यातर्पणादि करता है अरु लोक मर्यादा जानता है तापर लोक बेद प्रतिकूल कार्य कीन्हे ताते तू अधर्मी बधयोग्य रहसि ६२ (यत् महान्तः संचारैः लोकं पुनानाः विचरन्ति अतः तान् न अतिभावयेत् त्वंकपित्वात् न जानीषे) जो महात्मा लोग अपने संचार करिकै भाव आपने आचरण दर्शाय लोकको पवित्र करते हुये भूतल में बिचरते हैं इस कारण तिनहि न अतिभापयेत् अर्थात् अत्यंत कठोर बचन निन्दा आदि अनादर बचन न कहना चाहिए भाव जो निन्दा आदि करता है सो तत्काल पापको फल दण्ड भागी होता है तथा तू बानर स्वभाव ते मोको नहीं जाने अर्थात् तेरी स्त्री तारा ने समुझायकै मेरा समग्र हाल कहि सुनाया तथा तोहूं पूर्व मोको जानता रहा तबहूं बानर स्वभाव बश अपने बलबीरता के गर्व ते मेरी दण्डवत् करने न आये अरु शरणागत भयहारी मेरा प्रणबेद द्वारा लोक प्रसिद्ध है सो भी जानता है तौ सुग्रीव तौ मेरी शरण मेरा पठाया आया अरु मेरा दिया फूलों को माला धारण किहे तापर तू मो. सो बिमुख अरु इन्द्रके आशीर्वादी माला के भरोसे सुग्रीव को मारने की इच्छा किहे तौ अपनी मृत्यु अपने हाथै बुलाय लिया अब मरापरा हसितापर तेरा अभिमान नहीं गया बारम्बार मेरी निन्दा करता है तौ क्यायमसां सति सहाचाहता है ६३ ॥

तच्छ्रुत्वा भयसंत्रस्तो ज्ञात्वा रामं रमापतिम् ॥ बाली प्रणम्य रमसाद्रामं बचनमब्रवीत् ६४ रामराम महाभाग जाने त्वां परमेश्वरम् ॥ अजानता मया किंचिदुक्तं तत्क्षंतुमर्हसि ६५ साक्षात् च्छरद्या तेन विशेषेण तवाग्रतः ॥ त्यजाम्यसून्महायोगि दुर्लभमूतवदर्शनम् ६६ यन्नाम विवशो गृह्णन् विद्यमानः परंपदं ॥ याति साक्षात्स एवाद्यमुमूर्षोर्मे पुरःस्थितः ६७ ॥

(तत् श्रुत्वा रमापतिम् रामं ज्ञात्वा भयसंत्रस्तः बाली रमसात् प्रणम्य रामं बचनं अब्रवीत्) रघुनंदन के कहे बचन सो सुनि रमापति भाव ईश्वर करि रघुनंदन को जानि बिमुखता की भयते यम सांत तिकी त्रासमानि बाली शीघ्रताते प्रणाम करि रघुनंदन प्रति बचन बोला ६४ (रामराम महाभाग त्वां परमेश्वरं जाने मया अजानता किंचित् उक्तं तत्क्षंतुं अर्हसि) हे राम साकेत बिहारी हे राम सबके रक्षावनहारे हे महाभाग रघुवंशनाथ आप परमेश्वर हों मैं जाने उ मैने बिना प्रभाव जाने कछु प्रौढ बचन

कहा तो आप क्षमा करिवे योग्यहौ ६५ (तवदर्शनस्महायोगिदुर्लभसाक्षात्त्वत्तत्परघातेन विशेषेण तवअग्रतःअसूनृत्यजामि) बालीबोला हे रघुवंश नाथ आप के दर्शन योगीजनन को दुर्लभहैं नहीं पायसक्ते हैं सोई साक्षात् आप के बाण के घात करिकै पुनः विशेषि करिकै आपही के आगे भाव सन्मुख आपको देखता हुआ प्राणनको त्यागताहौं ६६ (विवशोन्नियमाणः यत्नामगृह्णन्परंपदंयातिसएवअद्यसाक्षात्मुमूर्षोःमेपुरःस्थितः) शोच संकटादि करि विवश सावधानता रहित मरण समय जो प्राणी जिनको नाम लेवै सो मरेपर परंपद को जाताहै सोई रघुनाथ जी निश्चय करि या समय में साक्षात् मरने की चाह किये जो मैं ताके आगे स्थित हैं तौ जो मेरीपर पद की प्राप्तिहोइ सो क्याकहना है ६७ ॥

देवजानामिपुरुषंत्वांश्रियंजानकींशुभाम्॥रावणस्यवधार्थायजातंत्वांश्रयणार्थितम् ६८ अनुजानीहिमांश्रयणार्थितंत्त्वत्पदमुत्तमम् ॥ ममतुल्यबलेवालेअंगदेत्वंदयांकुरु ६९ विशल्यंकुरुमेरामहदयंपाणिनास्पृशन् ॥ तथेतिबाणमुद्धृत्यरामः पस्पर्शपाणिनात्यक्त्वातद्धानरंदेहममरेंद्रोभवत्क्षणात् ७० बालीरघूत्तमशराभिहतोविमृष्टोरामेणशीतलकरेणसुखाकरेण ॥ सद्योविमुच्यकपिदेहमनन्यलभ्यंप्राप्तःपरमरमहंसगणैर्दुरापम् ७१ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंधाकांडेद्वितीयःसर्गः २ ॥

(रावणस्यवधार्थायत्वांश्रयणार्थितम् जातंदेवत्वंपुरुषंजानामिजानकींशुभाम्श्रियं) रावणके बधकरनेके अर्थ आप प्रति ब्रह्माने प्रार्थना किया ताकारण अवतीर्ण भयो हे देव आपको परमात्मा पुरुष जानता हौं जानकी मंगल रूप को लक्ष्मी जानता हौं ६८ (रामउत्तममत्त्वत्पदम्यांतंमां अनुजानीहि ममतुल्यबलेअंगदेवालेत्वंदयांकुरु) हे रघुनाथजी उत्तम जो आपको पद तहांकोजाता हुआ जोमैं ताहि जानेकी आज्ञादीजिये अरु मेरीतुल्यबल है जाके ऐसा अंगद नामे मेरा बालक ता पर दया कीजिये शरण राखिये ६९ (रामपाणिनामेहदयंस्पृशन्विशल्यंकुरुतथेतिरामःवाणंउद्धृत्य पाणिना (पस्पर्शवानरंदेहंत्यक्त्वाक्षणात्अमरेंद्रः अभवत्) पुनः बालीबोला कि हे रघुनाथजी अपनेहाथ करिकै मेरेहृदयको स्पर्श करत संते बाणको निकारि लीजिये जो कहेउ सोई करिहौं इत्यादि कहि रघुनंदन बाणको निकारि हाथकरिकै स्पर्श कीन्हे तबसो बालीवानर देहको त्यागि क्षणमें इंद्रकी देहत्व को प्राप्त भया७०(रघूत्तमशराभिहतः सुखाकरेणरामेणशीतल करेण विमृष्टः बालीकपिदेहं विमुच्य सद्यःपरंप्राप्तःकथंभूतपरंअनन्यलभ्यंपरमहंसगणैःदुरापम्) रघुनंदन के बाण करिकै मरासुखके खानि रघुनंदनके शीतल भव तापहारक हाथ करिकै स्पर्श कियागया सो बाली वानर देहको त्यागि शीघ्रही परंपदको प्राप्त भया कैसापरंपद है जो औरको नहीं प्राप्त होत परमहंस वृन्दोंको भी दुःखकरि प्राप्तहोताहै ७१ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे किष्किंधाकाण्डेबालीबधवर्णनोनामद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

निहतेवालिनिरणेरामेणपरमात्मना ॥ दुद्रुवुर्वानराःसर्वेकिष्किंधांभयविह्वलाः १
 तारामूचुर्महाभागेहतोवालीरणाजिरे ॥ अंगदंपरिरक्षाद्यमंत्रिणःपरिनोदय २ च
 तुर्द्वारकपाटादीन्वध्वारक्षामहेपुरीम् ॥ वानराणांतुराजानमंगदंकुरु भामिनि ३ नि
 हतंवालिनंश्रुत्वाताराशोकविमूर्च्छिता ॥ अताडयत्स्वपाणिभ्यांशिरोवक्षश्चभूरि
 शः ४ किमंगदेनराज्येननगरेणधनेनवा ॥ इदानीमेवनिधनंयास्यामिपतिनासह ५
 इत्युक्त्वात्वरितातत्ररुदन्तीमुक्तमूर्द्धजा ॥ ययौतारातिशोकार्तायत्रभर्तृकलेवरम् ६ ॥

सर्वेया ॥ जूझत बालिचले कपि संभ्रम शोक विलाप विलोकततारा । ज्ञानदिये प्रभुशोच विहाय
 प्रपन्न स्वभक्ति स्वरूप सँभारा ॥ बालि क्रियाकृत प्रेरिस्वबंधु सुकंठशिरे अभिपेकहिसारा । सानुजराम
 नमामि तहां कृतवास्त प्रवर्पण शोधि अगारा ॥ (परमात्मनारामेण रणेवालिननिहतेभयविह्वलाः
 सर्वेवानराः दुद्रुवुःकिष्किंधां) परमात्मा रघुनन्दन करिके रणमें वालीके जूझत संते डरते विह्वल हवै
 सब वानर भागिके किष्किंधा को जाते भये १ (तारांऊचुः महाभागेरणाजिरे वालीहतः अद्यअंगदं
 परिरक्षमंत्रिणःपरिनोदय) ताराप्रति सबबोले कि हे महाभागे रणरूपी आंगनमें वालीमरे अब या
 समयमें अंगदकी रक्षाकरो सेनासजग हेत मंत्रिन को आज्ञाकरौ २ (चतुर्द्वारकपाटादीन् वध्वापुरीम्
 रक्षामहेतुभामिनि वानराणां राजानमंगदंकुरु) चारिहूफाटकन के केवारादि बंदकरि वानरी सेनासजि
 सब मिलि पुरीकी रक्षाकरी पुनः हे भामिनि वानरीको राजा अंगदहि करो ३ (बालिनंनिहतंश्रुत्वा
 शोकविमूर्च्छितातारा स्वपाणिभ्यां शिरःवक्षःभूरिशः अताडयत्) बालिको मरण सुनिदुख करिके
 मूर्च्छित तारा अपने हाथों करिके शिर पुनः छाती बहुत भांति ताड़न करती भई ४ (अंगदेनराज्येन
 वा नगरेणधनेन किंपतिनासह इदानीमेवनिधनं यास्यामि) शोकार्ता ताराबोली कीं अंगदकरिके
 राज्य करिके अथवा नगर करिके मेराक्या प्रयोजनहै मैं तौ पति करिके सहित इसीसमय में निश्चय
 करि मृत्युको प्राप्त होहुँगी भाव सतीहोहुँगी ५ (इतिउक्ताशोकार्ता मुक्तमूर्द्धजा रुदन्तीतारात्वरिता
 तत्रययौ यत्रभर्तृकलेवरम्) मैं पतिसंगही जाउँगी ऐसाकहि दुःख करिके अधीर शीशमें केशबुले
 रोवती हुई तारात्वरितहीं तहां जातीभई जहां वाकेपति वालीको मृतक शरीर पराहुआहै ६ ॥

पतितंवालिनंदृष्ट्वा रक्तैःपांशुभिरावृतम् ॥ रुदन्तीनाथनाथेतिपतितातस्यपादयोः ७
 करुणंविलपन्तीसाददर्शरघुनन्दनम् ॥ राममांजहिवाणेनयेनवालीहतस्त्वया ८
 गच्छामिपतिसालोक्यंपतिर्मांभिकांक्षते ॥ स्वर्गेपिनसुखंतस्यमांविनारघुनन्द
 न ९ पत्नीवियोगजंदुःखमनुभूतंत्वयानघ ॥ बालिनेमांप्रयच्छाशुपत्नीदानफलं
 भवेत् १० सुग्रीवत्वंसुखंराज्यंदापितंवालिघातिना ॥ रामेणरुमयासार्द्धभुंक्ष्वसा
 पत्नवर्जितम् ११ इत्येवंविलपन्तीतांतारांरामो महामनाः ॥ सांत्वयामासदययात
 त्वज्ञानोपदेशतः १२ ॥

(रक्तैःपांशुभिःआवृतम् बालिनंपतितंदृष्ट्वा नाथनाथइति रुदन्तीतस्यपादयोःपतिता) रक्त करिके
 धूरिकरिके भराहुआ मृतक शरीर जोवालीताहिभूमिपै पराहुआदोखि करुण वशअधीर हवै ताराबोली
 हंनाथ हंनाथ इत्यादि शब्दसह रोवती हुई तिस वालीके पायों पर गिरिपरी ७ (करुणंविलपन्ती
 ताररघुनन्दनदर्शरामयेन वाणेनत्वयावालीहतः तेनमांजहि) करुणा रसको उद्दीपन कारक वचनों

सहित रोवती हुई सो तारा रघुनन्दन जो हैं तिनहिं देखती भई भाव इनहीं मेरे पतिको मारे इति विचारि बोली हेराम जौने बाण करिकै तुमने बालीको मारा ताही करिकै मैं जो हौं ताहिमारौ ८ (पतिसालोक्यंगच्छामि पतिःमांश्रभिकांक्षते रघुनन्दनमां विनातस्य स्वर्गेपिनसुखं) मैं भी पतिके लोकको जाउंगी काहेते मेरापति वहांभी मेरे प्राप्तीकी इच्छा किहेहोई किस कारण हेरघुनन्दन मोहिं विना ताको स्वर्गमें भी नहीं सुख है ९ (अनघपत्नी वियोगजंदुःखं त्वयाअनुभूतमांश्रु बालिने प्रयच्छ पत्नीदानफलंभवेत्) हेनिष्पाप पत्नीके वियोग करिकै उत्पन्न जो दुःख ताहि तुमने जानाहै ताते मोहिं शीघ्रही बालिके अर्थ दीजिये तौ पत्नीदान को फल होइगो भाव याही को फल तुमहिं पत्नी लाभ होइगी १० (सुग्रीवबालिघातिनारामेण दापितंसापन्नवर्जितम् राज्यं सुखंरुमयासार्द्धं स्वभुंक्ष्व) तारा कहत हे सुग्रीव बालिको घात करिकै राम करिकै दियाहुआ शत्रुरहित राज्य तथा सुख जोहै ताहि स्वपत्नी रुमा करिकै सहित तुम भोगकरौ ११ (इतिएवंविलपंती तारातांमहात्मनाः रामःसदययातत्त्व ज्ञानउपदेशतः सांत्वयामास) इस प्रकार रोवती हुई जो तारा ताहि महात्मा रघुनन्दन दया करिकै तत्त्वज्ञान उपदेशते अर्थात् पांचौतत्व माया कालकर्म स्वभाव जीवात्मा भिन्न दर्शाये सावधान करते भये १२ ॥

किंभीरुशोचसिव्यर्थशोकस्याविषयंपतिम् । पतिरतवायंदेहोबाजीवोवावदतत्त्व
तः १३ पंचात्मकोजडोदेहस्त्वङ्मांसरुधिरास्थिमान् ॥ कालकर्मगुणोत्पन्नःसो
प्यास्तेद्यापितेपुरः १४ मन्यसेजीवमान्मानंजीवस्तर्हिनिरामयःनजायतेनश्चियते
नतिष्ठतिनगच्छति १५ ॥

भीरुशोकस्यअविषयंपतिम्व्यर्थकिंशोचसितत्त्वतःबदअयंदेहःतवपतिःवाजीवः) रघुनंदन कहे कि हेसोभाविक ढरने बालीदुःखकी नहीं है आशय जामें भावउत्तम पुत्रवर्तमान है जाके पुनः वीरहरे रणसन्मुखमरण स्वर्गको अधिकारी ताहूमें मेरेहाथ मरण परमपदको अधिकारी ऐसा जो तेरापति ताहि व्यर्थ क्यों शोचकरती है अरुजो तू आपना पतिमाने है तौतत्त्व विचारते कहु यह देहतेरापति है अथवा जीवतेरा पतिहै १३ (पंचात्मकःदेहःजडः) हे तारा जो देहको पति मानती है तौ पूर्व जड कारण माया त्यहिते उत्पन्न आकाश वायु अग्नि जल पृथ्वी ये पाँचौ महाभूतसोभी जडते स्व मिलिकै एक पिण्डबांधिगया सो देह कहावत सो तौ जड है भाव जामें हानि लाभ सुख दुःखादि किसी वस्तुकी चैतन्यता नहीं है पुनः कैसी है (त्वक्मांसरुधिरास्थिमान्) जामें खालमांस रक्त हाड इत्यादि अपावन वस्तुभरी हैं ताते निपिद्ध है सो भई कैसे (कालकर्मगुणोत्पन्नः) काल जो समय कर्म जो पुण्य पाप गुण जो सत्वरजतम इत्यादि सो उत्पन्न है अर्थात् कारण मायाबश आत्म दृष्टि भूलि जीवत्व बुद्धीभई तब त्रिगुणात्म अहंकार भयो तब सतो गुणकी अधिकताते पुण्य कर्म करत तमोगुणते पापकरत रजोगुणते पाप पुण्य दोऊ करत जैसा कर्म करत तैसेही स्वभाव परि जातताही की बासना ते समयपाय देह धरत इसभांति देह उत्पन्न होत समय पाय मरत इसी भांति प्रति जन्म देह के संबंधी होते छूटते जाते हैं तौ कैसेदेहतेरा पतिहै पुनः (स.अद्यापितेपुर.अपिआस्ते) अरुजो देहहीतेरापतिहै सो तौ देह अबहीं तेरे आगेहीपरी है तौभी शोचकरना व्यर्थ है १४ (जीवात्मनमन्यसेतर्हिजीवःनिरामयःनजायतेनश्चियतेनगच्छतिनतिष्ठति) अरुजीवात्मा जो है ताहिजो अपना पतिमानती है तौ जीव तौ रुज मरणादि रहित है अनादि कालते एकरस चला

भावता है सोतौ नकभी जन्मताहै नकभी मरताहै भरुनकभी चलता है भरुनकभी बैठताहै १५ ॥

नस्त्रीपुमान्वाषण्डोवाजीवःसर्वगतोऽव्ययःएकएवाऽद्वितीयोयमकाशवदलेपकः॥नित्योज्ञानमयःशुद्धःसकथंशोकमर्हति१६तारोवाच॥देहोऽचित्काष्ठवद्रामजीवोनित्यश्चिदात्मकः ॥ सुखदुःखादिसंबंधःकस्यस्याद्राममेवद १७ श्रीरामउवाच ॥ अहंकारादिसंबंधोयावदेहेंद्रियैःतह ॥ संसारस्तावदेवस्यादात्मनस्त्वविवेकिनः १८ ॥

(स्त्रीवापुमान्वाषण्डःजीवःनःएकएवाद्वितीयःसर्वगतः अव्ययःयमकाशवत्अलेपकःशुद्धःज्ञानमयः नित्यःसकथंशोकमर्हति)रघुनंदन कहत हेतारा त्वां अथवा पुरुष अथवा नपुंसक इत्यादि जीवनहीं है एकही निश्चय करिहैजाकी बराबरीको दूतरानहीं है अस्तवभूत मात्रमें व्याप्तहै भरुनाज रहितहै जो अकाशकी नाईं निर्लेप अर्थात् काडूमें छुडनहीं लाताहै शुद्धज्ञानमयनित्य है सो कैसे शोचकरने योग्य है १६ (हेरामदेहःकाष्ठवत्अचित्जीवःचित्आत्मकःनित्यःहेरामसुखदुःखादिसंबद्धःकस्यमेवद) ताराबोली है रघुनाथजी जो देहकाठकी नाईं चैतन्यता रहित भाव जड़नाशमानहै अरुजीव चैतन्य आत्मनित्य नाशरहित है भाव देहजड़ ताको दुख सुखादि जानिबेकी गतिहीनहींहै अरुचैतन्य जीव दुःखसुख होतही नहीं है अरुलोकमें दुःख सुखवर्तमानसबमें है यह संदेह है हे रघुनाथजी तो सुख दुःखादि संबधकितको होताहै तो यथार्थ हाल मो प्रति कहिये १७ (यावत्तूदेहइन्द्रियैःतहअहंकारादिसंबंधःतुमविवेकिनःआत्मनःतावत्एवतंसंसारः) रघुनंदन बोले हे तारा जबतक देह इन्द्रियकरिके सहित अहंकारादि को संबधहै पुनः बिनाविवेक आत्माजीव बुद्धिकिहे देह सुखमें भूलाहै तबनक निश्चय करितंसंसार को सबव्यवहार सांचादेखाताहै आशय यहहै कि पांचौतत्व मयपांचदेहें हैं यथा पद्मपुराण कपिलगीतायां स्थूलसूक्ष्मकारणचनहाकारणतः परंकेवल्यंज्ञानदेहंचपंचदेहाःप्रकीर्तिता जाग्रत्स्वप्नःसुषुप्तिःइवतु १ यत्याचउन्मनीताचैवतहजावस्थाः पंचवस्याःप्रकीर्तितातहांआकाशवायु अग्नि जल इति चारिगुण द्रव्यी तत्त्व प्रतिद्व रजोगुण मयसाहेतीनि हाथ को ताम्रवर्ण स्थूल देह तो उत्पत्ति जाग्रत बोधव्या वृत्तइति चारिकलायुत जाग्रत अवस्थाविश्वामिमानि विपरीतज्ञान वैखरी बाणी इंद्रोद्वारा भोजन गान नृत्य भूषणवसन वाहन शय्यावन्तितादि भोगमें रतहै (तथाभूवायुतेज आकाश गुप्त प्रतिद्व जल तत्वको सत्त्वगुण मयइवेन वर्ण अंगुष्ठ मात्र सूक्ष्मदेह कण्ठमें वात सादृश्य अनादृश्य सादृशतादृशादि चारिकला युत स्वप्न अवस्थातेज साभिमान्ती अन्य धा ज्ञान मध्यमा बाणी मन चित अहंकारादि युत सर्वेद्री द्वारा विपचात्तकइति सूक्ष्म देह तथा भू अथ वायू अकाश गुप्त तेज प्रतिद्व तमोगुण मय दृग्गवर्ण कारण देह जब मात्र हृदय कमल में वात तो मरण त्वस्पृति मूर्च्छा निद्रादि कलायुत सुषुप्ति अवस्था प्राज्ञाभिमान्ती अज्ञान रूप पश्यंती बाणी सूक्ष्मवासना द्वारा आनंद मोक्ता तथा वायुतत्व प्रतिद्व शुद्ध तंतोगुण मयनीलवर्ण मसुद्धी मात्र मझ कारण देह शशिमें वात तो वैराग्य मुमुक्षुता आत्मत्व तत्व दर्शनादि कलायुतपराबाणी तुरीयभंवस्था प्रत्यगात्माभिमान्ती विवेक विज्ञान में सेवक सेव्य भावते ईश्वर की समीपते आनंद भोग तथा आकाश तत्त्वमय अंगुण आत्म कैवल्य देह आत्म परमात्म की एकता उन्मनी अवस्था में अवंड आनंद भोग परात्परा बाणी इन में कारण में मोह सूक्ष्म में ममता स्थूल में अवण त्वचा नेत्र रसना नाति कादि ज्ञान इंद्री हाथ पद मुख शिस्न गुद कर्म इन्द्री तिनकी विषय चाह करिके जीवमन चित बुद्धि अहंकारादि में भूला देह को सत्यमाने लोक सुखदेत शुभाशुभ अनेकन कर्म करता है ताको अधि-

मानी बना देह इन्द्री अंतःकरण के धर्म आत्मा में आरोपित करता है अरु आत्माके धर्म देह इन्द्री अंतःकरण में आरोपित करता है यद्यपि न आत्मा के धर्म अंतःकरण में हवै सकै न अंतःकरण के धर्म आत्मामें हवै सकै परंतु देहसंग कारणतेमिले दर्शित होत यथाजल शीतल अग्नि तप्त परंतु पात्रमें जलभरि अग्निपर धरौ तौ जल के संग ते पात्रलाल नहीं परत इति अग्नि शीतल होत अरु जल गरम हवै जात ये दोऊ देखने मात्र है यथार्थ नहीं हैं तथा देह के साथ इन्द्री अंतःकरण के धर्म मिलि आत्मा विवेक रहित जबतक है तथा संगते आत्माके धर्म मिले देह इन्द्री अंतःकरण में चैतन्यता है इत्यादि आत्मा के अविवेक ते जबतक देह व्यवहार सांचा माने है तबतक संसार निश्चय करि सांचा देखात अर्थात् मेरा घर है मेरा धन है मेरी स्त्री है मेरा पति है मेरा पुत्र है मेरी राज्य में ब्राह्मण विद्वान् सबको पूज्य मैं क्षत्री राजा सबको स्वामी मैं सुखी मैं दुखी इत्यादि भूठे को सत्यमाने १८ ॥

मिथ्यारोपितसंसारो न स्वयं विनिवर्तते ॥ विषयान्ध्यायमानस्य स्वप्ने मिथ्यागमो यथा १६ अनाद्यविद्यासंबन्धात्तत्कार्याहंकृतेस्तथा ॥ संसारोऽपार्थकोऽपि स्याद्वागद्वेषादिसंकुलः २० मन एव हि संसारो बन्धश्चैव मनः शुभे ॥ आत्मामनःसमानत्वमेत्य तद्गतबन्धभाक् २१ यथा विशुद्धः फटिकोऽलक्तकादिसमीपगः ॥ तत्तद्वर्णयुगाभांतिवस्तुतो नास्ति रंजनम् २२ ॥

विषयान्ध्यायमानस्य मिथ्यासंसारः आरोपित स्वयं न विनिवर्तते यथा स्वप्ने मिथ्यागमः) रघुनन्दन कहत है तारे शब्दस्पर्श रूपरसगंध मैथुनादि जो इंद्रिय की विषय हैं तिनहिं सेवन करने वाले पुरुष को मिथ्यासंसारसत्य आरोपित होता है भाव स्त्री पुत्र धन धामादि सब सत्यही अपना देखाता है सो बिना ज्ञानउदयभये आपही ते नहीं निवृत्त होता है कौन प्रकार यथा स्वप्ने कोई हानिलाभ प्राप्त भई यद्यपि भूठही है परंतु बिना जागे मिटती नहीं है तैसेही बिना ज्ञान संसार सत्य देखात १९ अबिद्या अनादि संबंधात् तत्कार्य अहंकृतेः तथा अपार्थकः अपिसंसारः स्यात् रागद्वेषादि संकुलः) अब संसारको कारण कहत कि जीव को भ्रमावने वाली जो अबिद्या माया है ताको अनादि काल ते जीव को संबंध है भाव माया के वशीभूत है इसकारण ते तिसको कार्य है अहंकार भाव भूठे को सत्य सत्य को भूठ यह संसारको व्यापार यथा अहंकार तैसे भूठा निश्चय करिकै संसार है परंतु प्रीति विरोधादि दोषों सों परि पूर्ण भरा है २० (हे शुभे मन एव हि संसारः च एव मनः बन्धः आत्मामनःसमान त्वं एत्यतत्त्वं धभाक् गत) हे मंगल रूपे मनै निश्चय करिकै संसारको कारण है पुनः निश्चय करिकै मनै जीव को बंधन करने वाला है कौन भांति जब जीवात्मा मनकी एकता को प्राप्त भाव मेरा मन जो चहै गो सोई करौंगो ऐसा अंगीकार करिकै ता मनको जो बंधन है ताके भागको प्राप्त होइगो भाव इंद्रि द्वारा विषय चाहते जो कर्म मन करौंगो ताही फल दुःख सुखादि को आत्मौ सहैगो सोई बंधन है २१ (शुद्धः फटिकः यथा अलक्तकादि समीपगः तत्त्वर्णयुगाभांति वस्तुतः रंजनमनास्ति) कौन रीति मन के धर्म आत्मा में दर्शित होते हैं जैसे शुद्ध अमल स्फटिक मणि लाखादि रंग के समीप प्राप्त भई तब ताही रंग को दर्शित होती है परंतु वास्तव में विचार पूर्वक देखने ते रक्तवर्ण तादि रंग वामें नहीं है तथा अमल आत्मा में मनके विकार देखाते हैं २२ ॥

बुद्धिन्द्रियादिसामीप्यादात्मनः संसृतिर्वलात् ॥ आत्मास्वलिंगंतु मनः परिगृह्यतदुद्भवान् २३ कामाज्जुषन्गुणैर्वृद्धः संसारे वर्तते वशः ॥ आदौ मनो गुणान्सृष्ट्वा ततः

कर्मायनेकधा २४ शुक्लोहितकृष्णानिगतयस्तत्समानतः॥ एवंकर्मवशाज्जीवो
भ्रमत्याभूतसंज्ञवम् २५ सर्वोपसंहतो जीवो वासनाभिः स्वकर्मभिः ॥ अनाद्यविद्याव
शगस्तिष्ठत्यभिनिवेशतः २६ ॥

(आत्मास्वर्लिङ्गं तु मनः तत्तद्बुद्धिर्इन्द्रियादिसामीप्यात् आत्मनः बलात् संसृतिः उद्भवान्परिगृह्य) आत्मा
आपमनमें मिला तिसीसे बुद्धि इंद्रि इत्यादि की समीपता भई तिनके धर्मों को ग्रहण करि आत्मा
बलात् अर्थात् अवशहो कै संसार की उत्पत्ति आदि ग्रहण किया अर्थात् यथारंग के समीप स्फ-
टिक रंगदार देखात अरु स्फटिक के समीप रंग अधिक चमकदार होते तथा आत्मा को संगपाय
मनमें चमत्कारी बढी ताते बुद्धि इंद्रिन को चमत्कार करदिया ते शुभाशुभ कर्मकरनेलगे तिनमन
बुद्धि इंद्रिन की समीपता ते उनकर्मोंमें अपनपौ मानि आत्मा अवश है उनकर्मों को फल जन्म
मरणादि ग्रहण किया २३ (गुणैः बद्धः अवशः संसारे वर्तते कामान्जुपन्मनः आदौ गुणान्सृष्ट्वा ततः अने
कधा कर्माणि) आत्मा मन के अधीन जीव बुद्धीते तीनों गुणोंमें बैया अवश संसारमें रहत विषयकाम-
नाजोहैं तिनहिं सेवत संतमन प्रथम तौ सतरजतमादि गुणोंको प्रकट कैया तदनंतर अनेक प्रकार
कर्म किया २४ (शुक्लोहितकृष्णानितत्समानतः गतयः एवं जीवः कर्मवशात् आभूतसंज्ञवम् भ्रमति)
ते कर्म दो प्रकार के हैं एक शुभ दूसरा अशुभ पुनः शुभमें दो भेद एक शुक्ल जो हिंसा रहित यथा
जप तप तीर्थ व्रत दान पूजा पाठादि दूसरा लोहित जो हिंसा सहित यथा यज्ञादि पुनः अशुभ कृष्ण
कर्म है यथा जीव हिंसाचोरी परस्त्री परापकारा दियावत्पाप कर्म हैं इति कर्म मनकर्ता है तिनकी
समान गतिफलकी प्राप्ती होती है अर्थात् कछु अशुभ हैं अरु शुक्ल कर्म किया तो उत्तम ब्राह्मण
भया जो केवल शुक्ल तौ सत्यलोक प्राप्ती कछु अशुभ सहित लोहित कर्म करि उत्तम राजा भया
केवल लोहित देवलोक केवल अशुभ करिनरक प्राप्ती अरु शुभाशुभामिले यथा योग्य योनिन में जन्म
पावता है इसी प्रकार जीव कर्म वशते प्रलयकाल पर्यन्त भ्रमता है २५ (सर्वोपसंहतः अभि
निवेशतः स्वकर्मभिः वासनाभिः जीवः अनाद्यविद्यावशगः तिष्ठति) प्रलयकाल आयेपर जबसब लोक
संहार हूँगे तब मनादि अंतः करण सहित लिंगशरीरको धारण किये आपने कर्मन सहित वासना
सहित अनाद्य विद्यामें लीन है रहता २६ ॥

सृष्टिकाले पुनः पूर्ववासनामानसैः सह ॥ जायते पुनरप्येवं घटीयंत्रमिवावशः २७
यदा पुण्यविशेषेण लभते संगतिं सताम् ॥ मद्भक्तानां सुशांतानां तदामद्विषयाम
तिः २८ मत्कथा श्रवणे श्रद्धादुर्लभा जायते ततः ॥ ततः स्वरूपविज्ञानमनायासेन जाय
ते २९ तदाचार्यप्रसादेन वाक्यार्थज्ञानतः क्षणात् ॥ देहेंद्रियमनः प्राणाहं कृतिभ्यः
पृथक्स्थितम् ३० ॥

(पुनः सृष्टि काले पूर्ववासनामानसैः सह अवशः घटीयंत्रं इव पुनः अपि एवं जायते) पुनः सृष्टिकाल
में पूर्व की वासना पूर्व कर्म मनादि अंतःकरण सहित सोई लिंग शरीर अवश घटी यंत्र इव अर्थात्
माया वशतीनिहूँ गुणों में बँधाहुआ जीव रहै घटियोकी नाई पुनः निश्चय करि इसी भाँति उत्पन्न
होता है यथा कूपमें चलते रहैट में रसरोंके आधार बँधी हुई मलिया छूँछी नीचेको जाती है भरी
ऊपर आय जलनाथ खाली फिरि नीचे को जाती है तैसे मायाके आधार त्रिगुणात्मरस्सीते वासना
रूपबंधे जीवकाल चक्र रहैट में भ्रमते हैं २७ (यदा पुण्यविशेषेण सुशांतानां सतां मद्भक्तानां संगतिं

जन्मते तदामृतविषयामतिः) रघुनन्दन कहत हे तारे अब ससार ते मुक्त होने को कारण सुनु जा समय जीव विशेष पुरय किया ताके प्रभाव करिकै शांतहैं चित्तजिनको ऐसे महात्मा मेरे भक्तों की सगति वाको प्राप्त होतीहैं तब मेरी विषय मति अर्थात् ईश्वर प्राप्तीकी चाह बुद्धि में होतीहै २८ (ततः दुर्लभामकथाश्रवणेन श्रद्धा जायते ततः अनायासेन स्वरूपविज्ञानं जायते) ईश्वर विषयिक बुद्धि भये तदनन्तर जो विषयी जननको दुर्लभहै सो मेरी कथा सुनिवेमें श्रद्धा उत्पन्न होती कथा सुनत संते तदनन्तर विनापरिश्रम भावयोग क्रिया तप साधनादि विनाकिहे मेरे स्वरूप जानिवे योग्य विज्ञान उत्पन्न होताहै २९ (तदा आचार्य प्रसादेन) जब विज्ञान भयातव वेद वेदांततत्त्व ज्ञाता आचार्यकी शरण गया तिनकी प्रसन्नता पूर्वक उपदेश करिकै (वाक्यार्थ ज्ञानतः क्षणात्) तत्त्व मासि इति जो महावाक्य है ताको अर्थ यथा तत्पद ईश्वर वाचकः त्वं पद जीव वाचकः असि इति क्रिया पदं तत्कोर्थः तस्य ईश्वरस्य हे जीवः त्वं असि भवसि इत्यर्थः तेन जीव ईश्वरयो रेव अनादिसंबन्धः इत्यादि वाक्यको अर्थ ताको ज्ञान भयेते एकक्षण भरेमें स्थूल सूक्ष्मकारण इतिदेह श्रवण त्वचानेत्र रसना नासिका लिंगादि जोइंद्री पान अपान उदान समान व्यान इति प्राण मन अहंकारदि इनसब सों विलंगजो स्थित है ३० ॥

स्वात्मानुभावतः सत्यमानन्दात्मानमद्वयम् ॥ ज्ञात्वा सद्यो भवेन्मुक्तः सत्यमेव मयो दितम् ३१ एवं यो दितं सम्यगालोचयति सोऽनिशम् ॥ तस्य संसारदुःखानि स्पृशंति कदाचन ३२ त्वमप्येतन्मया प्रोक्तमालोचय विशुद्धधीः ॥ न स्पृश्यसे दुःखजालैः कर्मबंधाद्विमोक्ष्यसे ३३ पूर्वजन्मनिते सुभ्रुकृता मद्भक्तिरुत्तमा ॥ अतस्तव विमोक्षाय रूपं मे दर्शितं शुभे ३४ ध्यात्वा मद्रूपमनिशमालोचय मयो दितम् ॥ प्रवाहपतितं कार्यं कुर्वत्यपि न लिप्यसे ३५ श्रीरामेणोदितं सर्वश्रुत्वा तारातिविस्मिता ॥ देहाभिमानजं शोकं त्यक्त्वा न त्वारघूत्तमम् ३६ ॥

(सत्यं अद्वयम् आनंदात्मानं स्वात्मानुभावतः ज्ञात्वा सद्यः मुक्तः भवेत् मया एव सत्यं उदितम्) सत्यद्वैत रहित अखण्ड आनंद स्वरूप जो आपनी आत्मा ताको अनुभवते जानिकै शीघ्रही मुक्तहोत यह मैंने निश्चय करिकै सत्य कहाहै ३१ (एवं यो उदितं सम्यक्कृत्यः अनिशम् आलोचयति तस्य संसार दुःखानि कदाचन न स्पृशंति) इस प्रकार मेरा कहाहुआ सम्पूर्ण ज्ञानको जो प्राणी दिनोराति विचारताहै ताको संसार के दुःख कभीनहीं छुइजातहैं ३२ (एतत्तु मया प्रोक्तं त्वं अपि विशुद्धधीः आलोचय दुःखजालैः न स्पृश्यसे कर्मबंधात् विमोक्ष्यसे) यह जो मेरा कहाज्ञानहै ताहि हेतारे तू भी अमल बुद्धिहोके विचार करती रह तौ संसारके समूह दुःखों करिकै नस्पर्श कीजावैगी दुःखतेरेन छुइजायगे अरु कर्म बंधनते छूटिजायगी मुक्तहोवैगी ३३ (सुभ्रुपूर्वजन्मनिते मत्पूजनाभक्तिः कृताद्यतः शुभे तव विमोक्षाय मे रूपं दर्शितं) हे सुंदरी भौंह वाली तारेपूर्वके जन्मनमें तू मेरी उत्तम भक्ति कियाहै इस कारण हेमंगलरूपे तेरे मोक्ष करने अर्थ मैं अपना रूपतोहि दिखाया ३४ (मत्पूजनाभक्तिं श्रद्धात्वा मया उदितं आलोचय प्रवाहपतितं कार्यं कुर्वति अपिलिप्यसेन) मेरा जो रूपहै ताहि दिनोराति ध्यान करतीहुई मेरा कहाहुआ जो ज्ञानहै ताहि विचारती रह तौ भव प्रवाहमें गिरने वाले जो देह संबंधी कार्यहैं ताहि करती हुई भी लिप्त न होइगी भाव कर्मफल भोगना न परी ३५ (अतिविस्मिता तारा श्रीरामेण उदितं सर्वश्रुत्वा देहिमानजं शोकं त्यक्त्वा रघूत्तमं नत्वा) पति वियोग को दुःख ईश्वर के

दर्शन को सुख तामें कौन भूँटा कौन साचा यह निश्चय नहीं ताते विस्मयवन्त तारारही जब रघुनाथ जीने ज्ञान कहा सो सब सुनिकै पूर्व जो देहाभिमान रहा भावमें वाली की प्रियपत्नी हौं इति अभिमान त्यहि करिकै उत्पन्न भया जो दुःख भाव मेरापति मरिगया मैं कैसे जी सकती हौं इत्यादि भूँटा व्यवहार विचारि त्यागि रघुनन्दन को प्रणाम करि ३६ ॥

आत्मानुभवसंतुष्टा जीवन्मुक्ता भूवह । क्षणसंगममात्रेण रामेण परमात्मना ॥ अनादिवन्धनिधूय मुक्ता सापि विकल्मषा ३७ सुग्रीवोपि च तच्छ्रुत्वारामवक्ता त्समीरितम् ॥ जहाव ज्ञानमखिलं स्वस्थचित्तो भवत्तदा ३८ ततः सुग्रीवमाहेदं रामो वानरपुंगवम् ॥ आतुर्ज्येष्ठस्य पुत्रेण यद्युक्तं सांपरायिकम् । कुरु सर्वेयथान्यायं संस्कारादिममाज्ञया ३९ तथेति वलिभिर्मुख्यैर्वानरैः परिणीयतम् ॥ बालिनं पुष्पके क्षिप्त्वा सर्वराजोपचारकैः ४० ॥

(आत्मा अनुभवसंतुष्टा) आत्मज्ञान साक्षात्प्राप्त भया ताते देह सुखकी आशा त्यागि संतुष्ट हूँ (जीवनमुक्ता भूवह) भव बंधन रहित तारा जीवन मुक्त भई (परमात्मनारामेण क्षणसंगममात्रेण ता अपि विकल्मषा अनादि बंधन निधूय मुक्ता) परमात्मा सर्वोपरि रघुनन्दन क्षणमात्र संगम भाव दर्शन दे उपदेश वार्ता करिकै जो पशुयोनिमें गनती सो तारानिःपाप की गई अनादि कालते जो अविद्या करिकै संसार बंधन सो नाश करि मुक्त की गई ३७ (रामवक्ता संईरितं तत् श्रुत्वा च सुग्रीवः अपि अखिलं ज्ञानं जहौ तदा स्वस्थचित्तः अभवत्) रघुनन्दन के मुखते कहा हुआ जो ज्ञान है सो सुनिकै पुनः सुग्रीव निश्चय करिकै संपूर्ण जो अज्ञान रहै भाव देहाभिमान ताहि त्यागि तासमयमें स्वस्थचित्त भये शुद्ध रूपते प्रभुमें अनुराग भया ३८ (ततः वानरपुंगवम् सुग्रीवम् रामः इदं ब्राह्मममाज्ञया ज्येष्ठस्य भ्रातुः सांपरायिकं संस्कारादियत् उक्तं तत् पुत्रेण यथान्यायं सर्वं कुरु) तदनंतर वानरों में श्रेष्ठ जो सुग्रीव तिन प्रति रघुनन्दन ऐसा बोले हे सुग्रीव अब मेरी आज्ञा करिकै आपने ज्येष्ठ भाई को जो संग्राम में जूझे हुये की पारलौकिक संस्कारादि क्रियाविधि जैसी धर्मशास्त्र में लिखी होइ सो उसीके पुत्र अंगद के हाथ करिकै जैसी रीति चाहिये ताही विधान करिकै सब स्मृतक कर्म करौ ३९ (तथा इति मुख्यैः वलिभिः वानरैः बालिनं परिणीयतम् सर्वराजोपचारकैः पुष्पके क्षिप्त्वा) जो आपकहे तैसाही करौंगे इत्यादि कहि सुग्रीव पुनः मुख्य वाली जो वानर हैं तिन करिकै बाली स्मृतक शरीर जो है ताहि उठवाय सब राजसी साज सामग्री सहित अर्थात् स्नान कराय गंध लगाय नवीन भूषण बसन पुष्प हार पहिराय मरछत्रादि साज सहित पुष्पकतुल्य विमान पर पौढ़ाये ४० ॥

भेरीदुंदुभिनिर्घोषैर्ब्राह्मणैर्मन्त्रिभिः सह ॥ यूथपैर्वानरैः पौरैस्तारयाचांगदेन च ४१ गत्वा चकार तत्सर्वे यथाशास्त्रं प्रयत्नतः ॥ स्नात्वा जगाम रामस्य समीपं मन्त्रिभिः सह ४२ नत्वारामस्य चरणौ सुग्रीवः प्राह हृष्टधीः ॥ राज्यं प्रशाधिराजेंद्र वानराणां समृद्धिमत् ४३ दासो हन्ते पादपद्मं सेवे लक्ष्मणवच्चिरम् ॥ इत्युक्त्वा राघवं प्राह सुग्रीवः ४४ त्वमेवाहं न संदेहः शीघ्रं गच्छ ममाज्ञया ॥ पुरराज्याधिपत्येवं स्वात्मानमभिषेचय ४५ नगरं न प्रवेक्ष्यामि चतुर्दश समाः सखे ॥ आगमिष्यति मे भ्राता लक्ष्मणः पत्तनं तव ४६ ॥

(ब्राह्मणैः मंत्रिभिः सहवानरैः यूथपैः पौरैः तारयाच अंगदेनच भेरी दुंदुभिनिर्घोषैः) ब्राह्मणमंत्रिवानर यूथपाति पुरवासी तारा अंगद इत्यादि सहित भेरी दुंदुभी आदि बाजों को शब्दसहित मृतकशरीर उठाये ४१ (गत्वा यथाशास्त्रतत्सर्वप्रयत्नतः चकार स्नात्वा मंत्रिभिः सह रामस्य समीपं जगाम) सब समाज सहित सुग्रीव ब्रह्मशान भूमिमें जायजैसा शास्त्रमें लिखा रहै सोई विधिते दाहक्रियादि सब यत्नपूर्वक करते भये पुनः स्नान करि मंत्रिन सहित सुग्रीव रघुनाथ जी के समीप जाते भये ४२ (रामस्य चरणौ नत्वा हृष्टः सुग्रीवः प्राह हे राजेंद्र समृद्धिमतु बानराणां राज्यप्रशाधि) रघुनाथ जीके चरणोंको प्रणाम करि प्रसन्न बुद्धि सुग्रीव बोले कि हे राजों में महाराज संपूर्ण ऋद्धियुत जो बानरोंकी राज्य है ताहि पालन करिये ४३ (अहं ते दासः लक्ष्मणवत् चिरम्पादपद्मं सेवेति इति उक्तः सुग्रीवं सस्मितं वचः राघवः प्राह) मैं तो आपको दासहो सो लक्ष्मण की नाई बहुत कालतक आपके पद कमल को सेवा करिहो लक्ष्मण के तुल्य सेवक भाई न भया न है नहोनहार तिनकी नाई मैं सेवा करिहो ऐसा कहे तब सुग्रीव प्रति सुसुकायकै वचन रघुनंदन बोले ४४ (त्वं अहं एव संदेहः नमम ब्रह्मया शीघ्रं गच्छ पुरं राज्याधिपति एवं स्वभात्मानं अभिषेचय) हे सुग्रीव तुमहींहो निश्चय करिकै यामें संदेह नहीं ताते मेरी आज्ञा करिकै शीघ्रहीं जाउ किष्किंधापुरकी राज्य को पति इसी प्रकार अपना अभिषेक करावो ४५ सखेच तुर्दशसमाः नगरं न प्रवेक्ष्यामि मेघाता लक्ष्मणः तव पत्तनं आगमिष्यति (हे सखे पिताज्ञाते चौदह वर्षतक नगरमें न प्रवेश करों गो ताते मेरा भाई लक्ष्मण तुम्हारे नगरको आवहिगो ४६ ॥

अंगदं यौवराज्ये त्वमभिषेचय सादरम् ॥ अहं समीपे शिखरे पर्वतस्य सहानुजः ४७
वत्स्यामि वर्षदिवसान् ततस्त्वं यत्नवान् भव ॥ किंचित्कालं पुरे स्थित्वा सीतायाः परि
मार्गणे ४८ साष्टांगं प्रणिपत्य आह सुग्रीवो रामपादयोः ॥ यदा ज्ञापयसे देव तत्तथैव क
रोम्यहम् ४९ अनुज्ञातस्तुरामेण सुग्रीवस्तु सलक्ष्मणः ॥ गत्वा पुरं तथा चक्रे यथा
रामेण चोदितः ५० सुग्रीवेण यथान्यायं पूजितो लक्ष्मणस्तदा ॥ आगत्य राघवं
शीघ्रं प्रणिपत्योपतस्थितवान् ५१ ततो रामो जगामाशु लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ प्रवर्ष
णागिरं रुर्ध्वं शिखरं भूरिविस्तरम् ५२ ॥

(यौवराज्ये अंगदं त्वं सादरं अभिषेचय अहं सह अनुजः समीपे पर्वतस्य शिखरे) पुनः प्रभु कहै कि हे सुग्रीव युवराज पद मे अंगद को तुम सहित आदर अभिषेक करि दिहेउ अरु भव हम सहित लक्ष्मण तुम्हारे पुरके समीपहीं प्रवर्षणपर्वतके शिखरपर मंदिर करि ४७ (वर्षदिवसान् वत्स्यामि त्वं किंचित्कालं पुरे स्थित्वा ततः सीतायाः परिमार्गणे यत्नवान् भव) उहाँवर्षाकालमें वास करिहो अरु हे सुग्रीव तुम अबहीं कुछ दिन पुरमें स्थित रहो तदनंतर सीता के दूढ़ने में यत्नवंत होहु भाव वर्षा वादि सीता के दूढ़ने की उपायमें लागेउ ४८ (रामपादयोः प्रणिपत्य सुग्रीवः आह देव यत् आज्ञापयसे तथा एव अहं करोमि) प्रभु के वचन सुनितव रघुनाथजी के पायनमें दण्डप्रणाम करि सुग्रीव बोले हे देव जो आप आज्ञा करते हो तैसाही निश्चय करि सब कार्य मैं करोंगो ४९ (तुरामेण अनुज्ञातः सलक्ष्मणः तु सुग्रीवः पुरं गत्वा यथारामेण चोदितः तथा चक्रे) पुनः रघुनंदन करिकै आज्ञाको प्राप्त सहित लक्ष्मण पुनः सुग्रीव किष्किंधा पुरको जायकै जैसे रघुनंदन ने प्रेरणा किया रहै भाव सुग्रीव को राज्याभिषेक अंगदको युवराज इत्यादि तैसाही करते भये ५० (तदा यथान्यायं सुग्रीवेण पूजितः लक्ष्मणः शीघ्रं आगत्य राघवं प्रणिपत्य उपतस्थितवान्) ता समयमें यथावेदोक्तबहेको जैसा सत्कार चाहिये ताही विधिते सुग्रीव करिकै पूजे

गये लक्ष्मण सो उहाँ ते विदहै शीघ्रही आय रघुनंदन को प्रणाम करि समीप बैठते भये ५१- (ततो लक्ष्मणेन समन्वितः रामः प्रवर्षणगिरिः ऊर्ध्वभूरिविस्तरं शिखरे आगुजगाम) तदनंतर लक्ष्मण सहित रघुनंदन प्रवर्षण गिरिके ऊपर जो बड़े विस्तारमे एक शिखर है भाव शिखरके ऊपर बड़ी फैली जागाहें तहाँ पर शीघ्र ही जाते भये ५२ ॥

तत्रैकंगङ्गरदृष्ट्वा स्फाटिकं दीप्तिमच्छुभम् ॥ वर्षवातातपसहं फलमूलसमीपगम् ॥
वासाय रोचयामास तत्र रामः सलक्ष्मणः ५३ दिव्यमूलफलपुष्पसंयुते मौक्तिकोप
मजलौघपल्वले ॥ चित्रवर्णमृगपक्षिशोभिते पर्वते रघुकुलोत्तमोऽवसत् ५४ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामयणे उमामहेश्वरसम्वादे किष्किंथाकाण्डे तृतीयः सर्गः ३ ॥

(तत्र स्फाटिकं दीप्ति मत्शुभम् एकंगङ्गरं दृष्ट्वा फल मूल समीपगम् वर्षवातातप सहं तत्र सलक्ष्मणः रामः वासाय रोचयामास) तहाँ पर स्फटिक मणिकी प्रकाशवत् एक गुहा देखे तहाँ फल मूलादि समीप ही हैं अरु वर्षा बयारि घाम इत्यादि जहाँ एकहूँ वाया नहीं हैं तहाँ सहित लक्ष्मण रघुनाथ जी बास करिबे अर्थ रुचि करते भये अर्थात् इहाँ कछु काल रघुनाथ जी बास करेंगे ऐसा जानि देवता लोग सब रचना पूर्वहीं रचिराखे जहाँ स्फटिक मय गुहा समीप ही जल सफल वृक्ष सब ऋतुन में सुख दायक है ५३ (दिव्य मूल फल पुष्प संयुते) देवलोक की ऐसी मूलजो वृक्षों की जैरे मधुर स्वादिष्ट होती हैं यथा सुधाकंद खाभी कसेरू भूँगफली सकरकंद इत्यादि तथा फल आँव अमरूद केला सरीफा नारियर छुहारा इत्यादि तथा फूल चँवेली बेल नारारी गुलाब चंपा इत्यादि फूल न संयुक्त है (मौक्तिक उपमजल औघपल्वले) मोतीकी उपमा देवे योग्य ऐसा अमल जल समूह भरा जिनमें ऐसे छोटे छोटे तड़ाग जिसमें (मृगपक्षि चित्र वर्ण शोभिते) मृगा अरु पक्षी विचित्र वर्ण अनेक रंगके शोभित हैं जहाँ (पर्वते रघुकुलोत्तमः अवसत्) ऐसे उत्तम शोभाय मान पर्वतमें रघुनाथ जी बास करते भये ५४ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपद्मशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे
किष्किंथाकाण्डे सुग्रीवराज्याभिषेकवर्णनो नाम तृतीयः प्रकाशः ३ ॥

तत्र वार्षिकदिनानि राघवो लीलया मणिगुहासुसंचरन् ॥ पद्ममूलफलभोगतोषितो
लक्ष्मणेन सहितोऽवसत्सुखम् १ वातनुजलपूरितमेघानंतरस्तनितवेद्युतगर्भा
न् ॥ वीक्ष्य विस्मयमगाद्भजयूथान्यद्बद्धाहितसुकांचनकक्षान् २ नवधासंसमास्वा
द्यहृष्टपुष्टमृगाद्विजाः ॥ धावन्तः परितोरासं वीक्ष्य विस्फारितेक्षणाः ३ ॥

तवैया ॥ सुखवास प्रवर्षण बंदन के प्रणयारत लक्ष्मण प्रदत्त किये । सुनिसो प्रभु वेद क्रिया बिधि सों निज पूजनको उपदेश दिये ॥ हनुमंत तवै कपिराज सिखै कपिवृंद पठै सियशोध लिये । पद वंदत वैजसुनाथ रूपाल दसौ नित सानुज राम हिये ॥ (तत्र लक्ष्मणेन सहितः राघवः लीलया मणिगुहासुसंचरन् पद्मफल मूल भोग तोषितः वार्षिक दिनानि सुखं अवसत्) शिव बोले हे गिरिजा तहाँ प्रवर्षण गिरिमें लक्ष्मण सहित रघुनंदन माधुर्य लीला करिके मणिमय गुहन विषे विचरते हुये पके फल

मूलादि भोग अर्थात् भोजन करि तोपित संतुष्ट वर्षाकाल के दिनन में सुख पूर्वक बास करते हैं १ (कांचन कथान् आहित सुगज यथान् यद्वत् अतनुन्नजल पूरित अतर बैद्युत् गर्भान् स्तनित मेघान् वीक्ष्य विस्मयं अगात्) यथा कंचन मयी कामदार भूछै पीठी परते दोऊ दिशि झूलि रही हैं जिन के ऐसे समूह गज राजों की समान आकाशमें पवन के वेगतेचले जातेहुये जलभरे जिनके अंतर बिजुली गर्भित गर्जतेहुये जो मेघहैं तिनहिं देखि रघुनन्दन विस्मयको प्राप्त भये भावमेघशृंगारके उद्दिपन विभाव हैं सो त्रियोग में बाधक देवाने अर्थात् अनुकामने हमपर चतुरगिनी सेन सजि धायो ताके आगे मेघ मानौ श्याम पुष्पांग गजराज हैं बिजुली जनु झूलै चमकती हैं गर्जनि जनु घंटा बाजि रहे हैं ते धाये आवते हैं प्राणप्यारी रक्षक बिना हम कैसे बचैंगे इति विस्मय को प्राप्त भये २ (नवधासंसमा स्वाद्य मृगद्विजा हृष्टपुष्ट परितः धावंत इक्षणाः विस्फारित रामं वीक्ष्य) वर्षे ते भूमि में नवीनिघास जामी है ताको चरिकै मृगा अरु पके फलन को खाइकै पक्षीति आनंदित पुष्पांग चारिहुं दिशिते इधर उधर धावत समय में नेत्रों की पलकें रोकि रघुनन्दन को देखि भाव श्यामसुंदर अद्भुत रूपकी माधुरी अवलोकत में तृप्त नहीं होते हैं ताते पला चलिनहीं शक्ती हैं ३ ॥

नचलंतिसदाध्याननिष्ठाइवमुनीश्वराः ॥ रामंमानुषरूपेणगिरिकाननभूमिषु ४
चरंतंपरमात्मानंज्ञात्वासिद्धगणाभुवि ॥ मृगपक्षिगणाभूत्वाराममेवानुसेविरे ५
सौमित्रिरेकदाराममेकांतध्यानतत्परम् ॥ समाधिविरमेभक्त्याप्रणयाद्विनयान्वि
तः ६ अत्रवीदेवतेवाक्यात्पूर्वोक्ताद्विगतोमम ॥ अनाद्यविद्यासंभूतः संशयो हृदिसं
स्थितः ७ इदानीं श्रोतुमिच्छामि क्रियामार्गेण राघव ॥ भवदाराधनं लोके यथा कुर्व
तियोगिनः ८ इदमेव सदा प्राहुर्योगिनो मुक्तिसाधनम् ॥ नारदोऽपि तथा व्यासो ब्र
ह्माकमलसंभवः ९ ॥

दोश्लोको की अन्वय एकहीमेंहै (सदाध्याननिष्ठामुनीश्वराः इव नचलंति) कैसे मृगपक्षी भये यथा ध्यानहीं की निष्ठाहै जिनको तिन मुनीश्वरों की नाई मृगपक्षी भी प्रभु निकटते अन्यत्र कहूँ नहीं जातेहैं काहेते (गिरिकाननभूमिषु मानुषरूपेण रामं चरंतं पश्य) पर्वत वन भूमिइत्यादि विषे मानुष रूप करिकै रघुनन्दन को विचरते देखिकै (परमात्मानं ज्ञात्वा सिद्धगणाभुवि मृगपक्षिणोभूत्वा) परमात्मा जानिकै सिद्धजनसमूह तेई जनु भूमिविषे मृगापक्षी भये (रामं एव अनुसेविरे) तेई रघुनन्दन को निश्चय करि सेवन करते हैं ४ । ५ (एकदा एकांते ध्यानतत्परम् समाधि विरमे रामं लक्ष्मणः भक्त्या विनयान्वितः प्रणयात् ६ अत्र वीत् देवपूर्वोक्तात् तेवाक्यात् अनाद्यविद्या संभूतः संशयः मम हृदिसंस्थितः विगतः) एक समय एकांत स्थानमें प्रभु बैठे ध्यान तत्पर भाव माधुर्य रूपकी सुधि त्यागे स्वयं रूपमें स्थिररहे सो समाधि त्यागि जब माधुर्यमें आये तब रघुनन्दन प्रति लक्ष्मण भक्ति करिकै भाव सेवक भाव दर्शय नम्रता युक्त प्रीतिते बोले हे देव पूर्व कहे हुये आपके बचन ते जो अनादि कालीन अविद्या माया करिकै उत्पन्न संशय मेरे हृदयमें स्थितरही सो छूटिगई ७ (राघव क्रियामार्गेण भवत् आराधनं इदानीं श्रोतुमिच्छामि यथा लोके योगिनः कुर्वन्ति) हे रघुनाथ जी कर्ममार्ग करिकै जो आपको आराधनहै पूजन विधि ताहि या समय में मोको सुनिवे की इच्छाहै जिस प्रकार लोकमें योगीजन आपको पूजन करतेहैं ८ (इदं एव मुक्ति साधनं योगिनः सदा प्राहुः नारदः अपि तथा व्यासः ब्रह्माकमलसंभवः) क्रियामार्ग आराधन यही निश्चय करि मुक्तिको साधनहै ताहि योगीजन

सदा कहते हैं तिनमें नारद निश्चय करिकै कहते हैं तैसे व्यास अरु कमलज ब्रह्मा कहते हैं १ ॥

ब्रह्मक्षत्रादिवर्णानामाश्रमाणांचमोक्षदम् ॥ स्त्रीशूद्राणांचराजेन्द्रसुलभमुक्तिसाधनम् १० तवभक्तायमेव्रात्रेब्रूहिलोकोपकारकम् ॥ श्रीरामउवाच ॥ ममपूजाविधानस्यनांतोस्तिरघुनंदन ॥ तथाऽपिवक्ष्येसंक्षेपाद्यथावदनुपूर्वशः ११ स्वगृह्योक्तप्रकारेणद्विजत्वंप्राप्यमानवः ॥ सकाशात्सद्गुरोर्मंत्रंलब्ध्वाभक्तिसंयुतः १२ तेनसंदर्शितविधिर्मांमेवाराधयेत्सुधीः ॥ हृदयेवानलेवार्चेत्प्रतिमादौविभावसौ १३ ॥

(ब्रह्मक्षत्रादिवर्णानांच आश्रमाणांमोक्षदम् चस्त्रीशूद्राणां सुलभम्मुक्तिसाधनम् लोकोपकारकम् राजेन्द्रतवभक्ताय भ्रात्रेमेब्रूहि) ब्राह्मण क्षत्री वैश्यादि उत्तम वर्णोंको पुनः ब्रह्मचर्य गृहिस्त वाणप्रस्त संन्यासादि आश्रमोंको मुक्तिदायकहै पुनःस्त्रीशूद्रादि नीचनको भी सुलभमुक्ति साधन जो पूजनहै ताहि लोकउपकारहेतुको हेराजेन्द्र आपकोभक्त भाई जोमैं ताकेअर्थकहिये १० (हेरघुनन्दन ममपूजाविधानस्य अंतःनअस्ति तथापि यथावत् अनुपूर्वशः संक्षेपात्त्वक्षे) रघुनाथजी बोले कि हेरघुवंशमें नन्दन लक्ष्मण मेरी पूजाके विधानको अंतनहींहै ताहूपर जैसा करना चाहिये ताही क्रम पूर्वक संक्षेपते भाव थोरेमें सब कर्म कहताहों ११ (स्वगृह्यउक्तप्रकारेण मानवःद्विजत्वं प्राप्यसकात् भक्तिसंयुतः सद्गुरोःमत्तमंत्रंलब्ध्वा) प्रथम अपने गृह्य सूत्रके कहेहुये प्रकार करिकै मनुष्य द्विजत्वको प्राप्तहोइ अर्थात् बालवयमें तीनहूँ वर्ष शूद्रवत हैं तावत् क्रियाको अधिकारी नहींहै ताते अपने गोत्रको जो वेदकी शाखाहै ताकी लिखीहुई विधानते उपनयन संस्कार करि यज्ञोपवीत युत द्विजसंज्ञक है विद्या पढ़िपुनः भक्ति सहित सद्गुरु यथा रामार्चन चंद्रिकायां ॥ शांतोदांतःकुलीनश्चविनीतःशुद्धवेषवान् शुद्धाचारः सुप्रसिद्धःशुचिर्दक्षःसुबुद्धिमान् ॥ आश्रमाध्याननिष्ठश्चमंत्रतंत्रविचक्षणःनिग्रहानुग्रहेशक्तोगुरु रित्यभिधीयते ॥ ऐसे सद्गुरुते शुभ मुहूर्त विशेषि ग्रहण समय में मेरा मंत्र लेवै १२ (तेनसंदर्शित विधिःसुधीः मांएवआराधयत् अनलेवाविभावसौ हृदयेवाप्रतिमादौअर्चयत्) तिन सद्गुरु करिकै बताई हुई विधिसो सुबुद्धी जन मेरा आराधनकरैं सोचहै हवनादि करि अग्निविषे अथवा वेद मंत्रन करिकै सूर्य मण्डल विषे वा मानसी भावना करि हृदयविषे अथवा चित्रपट श्रीविग्रह इत्यादि मेरी प्रतिमादिमें पूजन करै १३ ॥

शालग्रामशिलायांवापूजयन्मामतंद्रितः ॥ प्रातःस्नानंप्रकुर्वीतप्रथमंदेहशुद्धये १४ वेदतंत्रोदितैर्मंत्रैर्मृल्लेपनविधानतः ॥ संध्यादिकर्मयन्नित्यंतत्कुर्याद्विधिनावुधः १५ ॥

(वाअतंद्रितःशालग्रामशिलायांमांपूजयत्देहशुद्धयेप्रातःप्रथमंस्नानंप्रकुर्वीत) अथवाआलस्यरहित भाव श्रद्धा सहित शालग्रामशिलाविषेमेरी पूजाकरैं तहाँ देहकी शुद्धताहेत प्रातः काल उठि सब प्रात क्रिया युतस्नान करैं कौन भांति सो आगे कहत १४ (मृल्लेपनविधानतःवेदतंत्रोदितैःमंत्रैः) मृत्तिकालेपनआदिविधानते अरुवेद मंत्रतंत्रके मंत्रों करिकै स्नान करैं अर्थात् चारिदण्डरातिरहेउठि श्री राम जपराम इतिउच्चारण पूर्वक ध्यानकरैंपुनः पूर्व मुख न्यासध्यान युत चौविस गायत्री जपै पुनः जल युतवाहेरजाय सूर्य्य दहिने दै दिशाजाय एकवार लिंगमें पांचबारगुदा में माटी लगायशौच करैं पुनः दशबार वाम हाथे सातबार दौऊ हाथों में चारि बार पायनमें माटी लगाय धोय कुल्हा

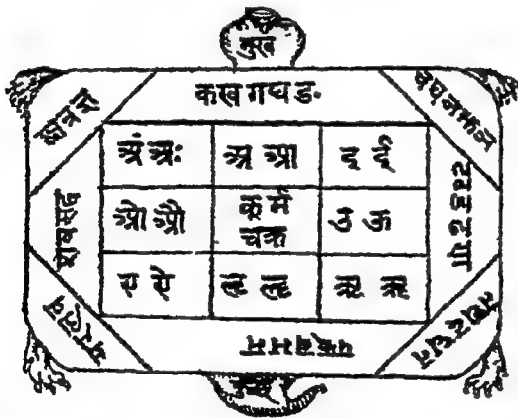
करि आघ्रादि दंत धावन करि पुनः चरणोदकतुलसी गंध शंखमें करि तीनि वारधुमाय शीशपरनावै यथा रामार्चन चंद्रिकायां॥शालग्राम शिलातोयं तुलसी गंधमिश्रितंरुत्वाशंखंध्रामयस्त्रीःप्रक्षिपेन्नज मूर्धनि॥पुनः सूर्यकी प्रार्थनासौजलमेंतीर्थोंका आवाहनकरै ॥ यथा ब्रह्मांडोदरतीर्थानिकरैः स्पर्शतेरवे। तेनसत्येनतेदेवतीर्थदेहिदिवाकर ॥ गंगेचयमुनेचैवगोदावारिसरस्वती नर्मदेसिंधुकावेरीजलेस्मिन्सन्नि धिंकुरु ॥ पुनः स्नान करि गायत्री तेन्यास युत त्रिवार प्राणायामकरि पुनः ब्रह्मादि देवसनकादि ऋषि पित्रादि को तर्पण करै तब बसन धारण करि आसन परबैठि पुनः (संध्यादियत्नित्यकर्मतत् विधिनावुधःकुर्यात्) संध्यादि जो नित्य कर्मसो विधि बिधान सहित बुद्धिमान करै अर्थात् हरिमुद्रा युत संप्रदाय अनुकूल तिलक करै शिखा बाँधि दक्षिणहाथे में जललै गुरुको ध्यान करि कुश मूलके जलमें चक्रलखिराममंत्र लिखिपूर्ववत् तीर्थोंको आवाहनकरि वहाँ जल बाम हाथमें लैशीशपर डारै शेषपान करिलेइ इसीभाँति तीनि बारकरै पुनः रामंतर्पयामि इसीरीति सपरिवार सांगदेव सबको तर्पण करै पुनः अंगन्यास सहित १००० वा १०० वा १० बारगायत्री जपैपुनः ओंहंसःसोहं इतिमंत्र एकमालाजपै इतिरामार्चनचंद्रिकाविधि संध्याकरै १५ ॥

संकल्पमादौकुर्वीतसिद्ध्यर्थकर्मणांसुधीः ॥ स्वगुरुंपूजयेद्भक्त्यामद्बुद्ध्यापूजकोम म १६ शिलायांस्नपनंकुर्यात्प्रतिमासुप्रमार्जनम् ॥ प्रसिद्धैर्गंधपुष्पाद्यैर्मत्पूजासि द्धिदायिका १७ अमायिकोऽनुवृत्त्यामांपूजयेन्नियतव्रतः ॥ प्रतिमादिष्वलंकारः प्रियोमेकुलनन्दन १८ ॥

(कर्मणांसिद्ध्यर्थसुधीःआदौसंकल्पंकुर्वीतममपूजकःभक्त्यामत्तुबुद्ध्यास्वगुरुंपूजयेत्) सर्वकर्मों के यथार्थ फल सिद्ध प्राप्ति अर्थ प्रथम संकल्पकरै पुनः प्रभुकहत कि मोको पूजनेवाला भक्तिकरिकै अरु मेरी बुद्धि अर्थात् ईश्वर भाव करिकै अपने गुरुकी पूजाकरै १६ (शिलायांस्नपनंकुर्यात्) शालग्राम शिलामें केशरिकपूर चंदनादि लगाय स्नानकरावै (प्रतिमासुप्रमार्जनम्) शिलाधातु मय जो मेरी प्रतिमा हैं तिनमें मार्जन अर्थात् तुलसीदल ते जल छिरकै वा बसन भेइ पोंछि लेइ विशेषितों सन्मुख आदरश करि तापर जल नाथ देय (मत्पूजासिद्धिदायिकागंधपुष्पाद्यैःप्रसिद्धैः) मेरी पूजा सिद्धिदेने योग्यगंध पुष्पदलादि प्रसिद्धहै यथा अग्नि पुराणे २४८ अध्याये ॥ पुष्पैस्तु पूजनाद्विष्णुः सर्व्व कार्य्येषुसिद्धिदःमालती मल्लिकायूथीपाटलाकरवीरकम् । यावन्तिरतिमुक्तश्चकर्णिकारःकुरन्टकः। कुञ्जकस्तगरीनीपोबाणोर्व्वरमल्लिका॥अशोकस्तिलकःकुन्दः पूजायैस्यात्तमालजम्।विल्वपत्रंशमीपत्रंपत्रंभृङ्गरजस्यत्॥तुलसीकालतुलसीपत्रंवासकमर्व्वने।केतकीपत्रपुष्पंचपद्मंरक्तोत्पलादिकम्॥इत्यादि फूल तथा चंदनकर्पूरअगरतगरकेशरिकुम् कुमादिगंधलोक में प्रसिद्ध है तथापि अगस्त्यसंहितायां ६ अध्याये २१ श्लोकात् ॥ चंदनागरुकस्तूरीसकर्पूरहिमांबुभिः।पंचामृताभिषेकैश्चपुष्पैस्तामरसैरपि॥पुष्पमालैश्चबहुभिर्दूर्वाभिश्चाक्षतैःसह।नीलोत्पलैर्मल्लिकैश्चकरवीरैश्चचंपकैः॥जातीप्रसूनैर्विल्वैश्चपुन्नागैर्वकुलैरपि॥कदंबैर्केतकीपुष्पैःकरुणाशोककिंशुकैः॥नागबाणादिपुष्पैश्चगंधवर्ज्जिमनोहरैः१७(अमायिकःअनुवृत्त्यानियतव्रतःमांपूजयेत्हेकुलनन्दनप्रतिमादिषुअलंकारःमेप्रियः दंभछलादिरहितवाहेरभी तर शुद्धहै जो रीति गुरुने सिखावा होइताहीविधि भाव अग्नि में सूर्यमें हृदय में प्रतिमामें इत्यादि जो मार्ग गहैं तामें नित्य नेम सहित मोको पूजै परंतु हे लक्ष्मण जो प्रतिमा आदिकोंमें बसन भूषण भूषित करि पूजन करते हैं ते जनमोको अत्यंत प्रियहोते हैं भाव यह विशेषिहै १८ ॥

अग्नौयजेतहविषाभास्करेस्थंडिलेयजेत् ॥ भक्तेनोपहतंप्रीत्यैश्रद्धयाममवार्य
पि१६किंपुनर्भक्ष्यभोज्यादिगंधपुष्पाक्षतादिकम् ॥ पूजाद्रव्याणिसर्वाणिसंपाद्येवं
समारभेत् २० चैलाजिनकुशैःसम्यगासनंपरिकल्पयेत् ॥ तत्रोपविश्यदेवस्य
सन्मुखेशुद्धमानसः २१ ॥

(अग्नौ हविषायजेत भास्करे स्थंडिले भक्तेन प्रीत्या श्रद्धया उपहतं वारि अपि ममयजेत) अग्नि
विषे भक्त धृतादि हवन करि मोको पूजै अथवा सूर्य मंडल विषे मेरा रूप जानि ताके अर्थ भूमि बेदी
विषे जो जन भक्ति करिकै भाव सेवक है प्रीति करिकै श्रद्धा करिकै युक्त है जलै सो निश्चय करि
मेरा पूजन करै भाव रवि सन्मुख मेरे अर्थ जलार्थ भूमि पर नाइ देवै सो भीमै बहुत मानि लेताहौं
इति शेषः १९ (भक्ष्यभोज्यादि गंध पुष्पादिकम् पुनः किम्) बौंदी लड्डू खाभा खुरमादि जो रूखे
इति भक्ष्य दालि भात तस्मिन् पूरी इति भोज्य इत्यादि नैवेद्य तथा चंदन फूलादि करिकै जो पूजन
करता है पुनः ताको क्या कहा चाहिये ताते (सर्वाणि पूजा द्रव्याणि संपाद्य एवं संभारभेत्) जल
आपधी दल फूल फल दधि मधु धूप दीप पक्वान्नादि सब पूजाकी सामग्री बटोरि अपने पास धरि
इसप्रकार पूजा प्रारम्भ करै २० (चैलाजित कुशैः सम्यक् आसनं परिकल्पयेत् तत्र शुद्धमानसः
देवस्य सन्मुखे उपविश्य रोमज कौशेय वसन मृग चर्म कुश इत्यादि संपूर्ण करिकै विधिवत् आसन
रचि तहाँ शुद्धमग है इष्टदेव के सन्मुख समीप बैठै अर्थात् जिस मंदिर में पूजाकरना होइ ताको न



कशा खेंचि ताके भीतर इस कूर्म चक्रको पूर्व मुख
लिखि देखै मंदिर के नामको प्रथमाक्षर जिसभाग
में होइ उसनवयें भाग में पुनः नवभाग करि तिन
में पूर्व मुख आदि आठौं धरनमें अकारादि स्वर
लिखि देखै उसी पूर्वाक्षरमें जौन स्वर होइ सोई
स्वर इहाँ जिसभागमें देखै सोई पूजाको स्थान करै
तहाँचौकादै तामें चांदी वा अनार की कलम ते इसी
कूर्मचक्रको लिखि ताके शीश पर कुशासन तापर
मृगचर्म तापर ऊनबस्त्र बिछाई तापरइष्टदेवके स-

न्मुखसमीप शुद्धमनकरि बैठैअरु शुद्ध चंद्रमा तारा युत शुभमुहूर्तविचारि जामें योगिनीबामें वा पीछे
परै चंद्रमा सन्मुख वा दहिनेपरै तब निर्विघ्न पूजा होइ २१ ॥

ततो न्यासं प्रकुर्वीत मातृका बहिरंतरम् ॥

(ततः बहिः अंतरम् मातृकान्यासं प्रकुर्वीत) तदनंतर बाहरे सर्व अंगों में अंतर सर्व कमल दलों
में अकारादि क्षकारांत पचासों वर्ण क्रमसे स्थापित करै यथा अगस्त्य संहितायां अथांतर्मातृकान्यासः
कंठहृन्नाभिगुह्यके । पादौभूमध्यगेषोपोदशद्वादशोद्धे ॥ दशपत्रेचषट्पत्रेचतुःपत्रेद्विपत्रके । पंचासद
र्णविन्यासःपत्रसंख्याक्रमाद्भवेत् ॥ एकैकवर्णमेकैकपत्रांतविन्यसेन्मुने ॥ अर्थात् कंठ में पौड़श दल
कमल तिनमें अं आ ई उ ऊ ऋ ॠ ल लृ ए ऐ ओ औ अं अः इति स्वर प्रति दल न्यास करै हृदय में
वारह दल कमल तिन प्रति दलन कल गय ड च छ ज झ ञ ट ठ न्यास करै नाभि में दशदल कमल
तिन दल प्रति ददण तथदधन पफन्यास करै गुह्यमें षटदल कमल प्रति दलमें बभम यरल न्यास

करै पाद में चारि दल कमल प्रति दल में वशपस न्यास करै भौह मध्ये द्विदल कमल तामें हक्ष न्यास भाव इसभांति ध्यान करै कि इनकमल दलों में ये ये वर्ण अंकित हैं इति सब कमल में पुनः वहिन्यासयथा ॥ शिरो १ वदनवृत्तेपि २ चक्षु २ श्रोत्रयुगेतथा २ नासा १ कपोलयुगले २ तथोष्ठाधरयोरपि २ ऊर्ध्वाधोदंतपंक्तौ २ चामूर्द्धास्यो १ षोडशस्वरान् कचवर्गद्वयं बाह्वोः पंचसंधिस्थलेन्यसेत् तटवर्गद्वयं पादे संध्या त्रेपितथान्यसेत् पवर्गपादवर्गयुगलेष्ठनाभ्युदरेपुच ॥ हृदोर्मूलकुक्षुकुक्षेहृदादिकरयोर्द्वयोः जठरानलयोश्चैव व्यापकं विनियोजयेत् ओमाद्यतो नमोऽतो वासविर्दुर्धुवर्जितः पंचाशदक्षरन्यासः क्रमेणैव विधीयते यथा भनमः शिरसि प्रांमुखावृत्ते इं दक्षिण नेत्रे ईं वामनेत्रे उं दक्षिणकर्णे ऊं वामकर्णे ऋं दक्षिणनासिकायां ॠं वाम लूं दक्षिण कपोले लूं वाम एं उर्ध्वोष्ठे ऐं अधरोष्ठे औं उर्ध्व दंत पंक्तौ औं अधोदंत पंक्तौ अं शिरसि अः मुखे कं दक्ष बाहु मूले खं दक्षकूर्परे गं दक्षिणमणि वंधे घं दक्षगुल्लो ङं दक्षिणांगुल्यग्रे चं वामबाहु मूले छं वामकूर्परे जं वाममणिबंधे भं वामांगुलि मूले जं वामांगुल्यग्रे टं दक्षिण पादमूले ठं दक्षिण जानुनि डं दक्षिण पाद गुल्फे ढं दक्षिण पादांगुलिमूले णं दक्षिण पादांगुल्यग्रे तं वामपादमूले थं वामपाद जानुनि दं वामपादगुल्फे धं वामपादांगुलिमूले नं वामपादांगुल्यग्रे पं दक्षकुक्षौ फं वामकुक्षौ बं पृष्ठे भ नाभौ मं उदरे यं हृदये रं दक्षांसे लंककुदि वं वामांसे शं हृदयादिदक्षबाहौ पं हृदयादि वामबाहौ सं हृदयादि दक्षपादं हं हृदयादि वामपादे लं हृदयादि उदरे लं हृदयादि मुखे इसी भांति आदि ओंकार तव मातृका तव नमः तव भंग को नाम लैकरसों स्पर्शकरै इति बाह्य मातृकान्यास ॥

केशवादिततः कुर्यात्तत्त्वन्यासंततः परम् २२ ॥

(ततः केशवादिकुर्यात्) मातृका न्यासकरि तदनंतर केशवादि न्यासकरै यथा रामार्चन चंद्रिकायां अंकेशवादि मातृका न्यासस्य प्रसाध्य नारायणऋपिः गायत्रीछंदः लक्ष्मीनारायणो देवता हलोवीजं स्वरसंग्रहशक्तिः इष्टार्थेजपेविनियोगः ॥ अथ ध्यानं ॥ विद्यारविंदमुकुटामृतपद्मकुंभः कौमोदकी सुर सुदर्शन शोभिहस्तम् । सौदामिनी मुकुलकांति विभातिलक्ष्मी नारायणात्मक मण्डित मादि मूर्तिम् ॥ अथ न्यासः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं (अं) क्लीं श्रीं ह्रीं केशवाय कोत्त्यैनमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं (प्रां) क्लीं श्रीं ह्रीं नारायणाय कोत्त्यैनमः (ऐसहीवीजोंको संपुटसवैमातृकौमें चाहिये) (इं) माधवाय तुष्ट्यैनमः (ईं) गोविदाय पुष्ट्यैनमः (उं) विष्णवे धृत्यैनमः (ऊं) मधुसूदनाय क्षांत्यैनमः (ऋं) त्रिविक्रमाय क्रियायैनमः (ॠं) वामनाय दयायैनमः (लं) श्रीधराय मेधायैनमः (लूं) हृषीकेशाय हर्षायैनमः (ऐं) पद्मनाभाय श्रद्धायैनमः (ऐं) दामोदराय लज्जायैनमः (औं) वासुदेवाय लक्ष्म्यैनमः (औं) संकर्षणाय सरस्वत्यैनमः (अं) प्रद्युम्नाय प्रीत्यैनमः (अः) अनिरुद्धाय रत्यैनमः (कं) चक्रिणे विजयायैनमः (खं) गदिने दुर्गायैनमः (गं) शार्ङ्गिणे प्रभायैनमः (घं) खड्गिने सत्यायैनमः (ङं) शंखिने चण्डायैनमः (चं) हलिने वारुणायैनमः (छं) मुशलिने बिलासिन्यैनमः (जं) शूलिने विजयायैनमः (झं) पाशिने विरजायैनमः (ञं) भृङ्गुशिने विदवायैनमः (टं) मुकुंदाय विमदायैनमः (ठं) नंदाय सनंदायैनमः (डं) नंदिने स्मृत्यैनमः (ढं) नारायणाय द्धयैनमः (णं) नरकघ्ने समृद्धयैनमः (तं) हरये शुद्धयैनमः (थं) रुष्णाय बुद्धयैनमः (दं) सत्याय भक्त्यैनमः (धं) सत्त्वताय सत्यैनमः (नं) शूरिणे क्षमायैनमः (पं) शूराय रमायैनमः (फं) जनार्दनाय उमायैनमः (वं) भूधराय क्लेदिन्यैनमः (भं) विदवमूर्तये क्लिप्तायैनमः (मं) वैकुण्ठाय वसुदायैनमः (यं) त्वगात्मने पुरुषोत्तमाय वसुधायैनमः (रं) असृगात्मने सखेलिने परमायैनमः (लं) मांसात्मने बलानुजाय परायणायैनमः (वं) वेदात्मने बलाय सूक्ष्मायैनमः (शं) अस्थ्यात्मने वृषणाय

संध्यायैनमः (.षं.) मज्जात्मनेवृषायप्रज्ञायैनमः (.सं.) शुक्रात्मनेहंसायप्रभायैनमः (.हं.) प्राणात्मनेवराहायनिशायैनमः (.क्षं.) क्रियाशक्त्यात्मनेविमलायमेधायैनमः ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षं क्लीं श्रीं ह्रीं परमात्मने नृसिंहाय विद्युतायैनमः इतिकेशवादि मातृकान्यासः (ततः परमूतत्वन्यासं) तदनंतरतत्वन्यासकरै यथा ॐ मं नमः परायजीवात्मनेनमः ओं भं नमः परायप्राणात्मनेनमः इतिसर्वांगेन्यसेत् ओं वं नमः परायबुद्ध्यात्मनेनमः ओं फं नमः परायहंकारात्मनेनमः ओं पं नमः परायात्मनेनमः एतत्त्रयं हृदये ओं नं नमः परायशब्दात्मनेनमः इतिमूर्द्धनि ओं धं नमः परायस्पर्शात्मनेनमः इतिमुखे ओं दं नमः परायरूपात्मनेनमः इतिहृदये ओं धं नमः परायरसात्मनेनमः इतिउपस्थे ओं तं नमः परायगंधात्मनेनमः इतिपादयोः ओं णं नमः परायश्रोत्रात्मनेनमः इतिश्रोत्रयोः ओं ठं नमः परायत्वगात्मनेनमः इति त्वाचि ओं डं नमः परायचक्षुरात्मनेनमः इतिचक्षुषे ओं ठं नमः परायजिह्वात्मनेनमः इतिजिह्वायां ओं टं नमः परायघ्राणात्मनेनमः इतिघ्राणे ओं जं नमः परायवागात्मनेनमः इतिवाचि ओं भं नमः परायपाण्यात्मनेनमः इतिहस्तयोः ओं जं नमः परायपाद्यात्मनेनमः इतिपायौ ओं छं नमः परायपादात्मनेनमः इतिपादयोः ओं चं नमः परायउपस्थात्मनेनमः इतिउपस्थे ओं डं नमः परायाकाशात्मनेनमः इति मूर्द्धि ओं धं नमः परायबाह्यात्मनेनमः इतिमुखे ओं गं नमः परायतेजात्मनेनमः इति हृदये ओं खं नमः परायसलिलात्मनेनमः इतिगुह्ये ओं कं नमः परायपृथ्व्यात्मनेनमः इतिपादयो ओं शं नमः परायहृत्पुंडरीकात्मनेनमः ओं हं नमः परायसोममण्डलात्मनेषोडशकलायनमः ओं सं नमः परायसूर्यमण्डलात्मनेद्वादशकलायनमः ओं रं नमः परायवन्दिमण्डलात्मनेदशकलायनमः एतच्चतुष्टयं हृदि ओं षं नमः परायपरमेष्ठ्यत्मनेवासुदेवायनमः मूर्द्धि ओं यं नमः परायपुरुषात्मनेप्रद्युम्नायनमः ओं लं नमः परायनिवृत्यात्मनेअनिरुद्धायनमः ओं क्षं नमः परायसर्वात्मनेनारायणायनमः इतिपादयोः ओं क्षों क्षो नमः परायकोपात्मने नृसिंहायनमः इतिव्यापकम् अतः तत्त्वस्य पूज्यस्य तत्प्राप्तेर्हेतुना पुनः तत्वन्यासमिति प्राहुः न्यासतंत्रविदो बुधाः इति तत्वन्यासः २२ ॥

मन्मूर्तिपंजरन्यासमंत्रन्यासंतोन्यसेत् ॥

(मन्मूर्तिपंजरन्यासं) पुनः मेरीमूर्तियोंको जो पंजरहै ताको न्यास करै यथा भगवत्स्य संहितायां तन्मूर्तिपंजरन्यासस्तस्य तन्मूर्तिसिद्धये आकर्ण्यैकचित्तः सन्यतोस्ति मयि नांतरम् नमो भगवते ब्रूयाद्वासुदेवाय इत्यपि ओमादेरस्य मंत्रस्य आदायैकाक्षरंततः एकैकमक्षरंतद्वत् श्रीरामाख्यमनोरपि द्विरावृत्त्या क्षरादानां विष्णोर्द्वादशनामसु नामैकैकमुपादाय सूर्यस्यापि च ॐ ततश्च स्वरस्तद्वासुदेवाक्षरंततः श्रीराममंत्रवर्णश्च ततः स्युः केशवादयः धातादयोनमोयं न्यस्तव्यो न्यासयोगतः अर्थात् ऋत्विजाग्निप्रणवादि एकस्वरवासुदेव मंत्रको एकाक्षर द्वै आवृत्ति करिराम मंत्रको एकाक्षर केशवादि भगवान्को एकनाम धाता आदि सूर्यको एक नाम चतुर्थ्यंतनमः इसी क्रम अंगों में न्यास करना यथा ओं अं ओं रां के शवाय धात्रे नमः ललाटे ओं आं नां रां नारायणाय आर्यम्णे नमः नाभौ ओं इं मां मां माधवाय मित्राय नमः हृदि ॥ ओं ईं भं यं गोविन्दाय वरुणाय नमः कंठे ॥ ओं उं गं नं विष्णवे अंशाय नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ ओं ऊं वं मं मधुसूदनाय भगवाय नमः दक्षिणांसे ॥ ओं एं तें रां त्रिविक्रमाय विवस्वते नमः दक्षिणस्कंधे ॥ ओं ऐं वां रां बामनाय इंद्राय नमः बामपार्श्वे ॥ ओं ओं लुं मां अधिराय पूष्णे नमः बामांसे ॥ ओं औं दें यं हृषिकेशाय पर्यन्याय नमः बामस्कन्धे ओं अं यां नं पद्मनाभाय त्वष्ट्रे नमः पृष्ठे ॥ ओं अं यं मं दामोदराय विष्णवे नमः ककुदि ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय इति मूर्द्धि न्यस्येत् इति मूर्ति पंजरन्यास (ततः मंत्रसंन्यसेत्) मूर्तिपंजरन्यासकरितदनंतर मंत्रराजकी न्यास विधि

करन्यासादि करै यथा ॐ रां अंगुष्ठाभ्यांनमः ॐ रीं तर्जनीभ्यांनमः ॐ रूं मध्यमाभ्यांनमः ॐ रैं
अनामिकाभ्यांनमः ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः इति अंगुलन्यास ॐ
रां हृदयायनमः ॐ रीं शिरसे स्वाहा ॐ रूं शिखायै वौषट् ॐ रैं कवचाय हुं ॐ रौं नेत्राभ्यांनमः ॐ
रः अस्त्राय फट् इति हृदयादि न्यास ॥

प्रतिमादावपितथाकुर्यान्नित्यमतंद्रितः २३ ॥

(तथा प्रतिमा आदौ अपि नित्यं कुर्यात् अतंद्रितः) पुनः प्रभु कहत हे लक्ष्मण जिसभांति
पूजा करने वाला अपने सर्व अंग में न्यास करै तिसी प्रकार मेरी प्रतिमा वा शालग्राम शिला वा
चित्रपट वा हृदय विषे ध्यान में वा अग्नि में वा सूर्य में जहां पूजा करै तिसी मूर्ति विषे मातृका
न्यास ऋष्यादि न्यास तत्त्वन्यास केशवादि न्यास मंत्र न्यास इत्यादि न्यासै निश्चय करि नित्यपूजा
समयमें करै यामें आलस न राखै भाव श्रद्धा समेत सब न्यासै करै २३ ॥

कलशं स्वपरो वामे क्षिपेत् पुष्पादिदक्षिणे २४ अर्घ्यपाद्यप्रदानार्थं मधुपर्कार्थमेव
च ॥ तथैवाचमनार्थं तु न्यसेत् पात्रं चतुष्टयं २५ हृत्पद्मे भानुविमले मत्कलां जीवसं
ज्ञिताम् ध्यायेत् स्वदेहमाखिलं तथा व्याप्तमरिंदम ॥ तामेवावाहयेन्नित्यं प्रतिमादिषु
मत्कलाम् २६ ॥

(स्वपुरःवामे कलशं पुष्पादिदक्षिणे क्षिपेत्) पूजा करने हेत जहां बैठै तहां अपने आगे वाम दिशि
जल पूर्ण कलश धरै तथा दल फूलादि आगे दहिनी दिशि धरै २४ (अर्घ्यपाद्यप्रदानार्थं च एवं मधुपर्कार्थं
तु तथा एव आचमनार्थं चतुष्टयं पात्रं न्यसेत्) अर्घ्य देने हेत तथा पाद्य देने हेत पुनः निश्चय करि मधु-
पर्क देने हेत पुनः ताही प्रकार निश्चय करि आचमन देने अर्थ इत्यादि सोनेके वा चाँदीके वा
उत्तम काँसके चारि पात्र स्थापित करै अर्थात् प्रथम त्रिपदीपर शंखधरि तामें जल गंध पुष्प अक्षत
करै ताके उत्तर जल भरि अर्घ्यपात्र धरै तामें गंध पुष्प यव अक्षत कुश तिल दूध सेरसौ डारै शंख
की दक्षिण दिशि जल भरि पाद्यपात्र धरै तामें श्याम कमल अक्षत करि कमल विष्णु क्रांता डारै
शंख के पूर्व जल भरि आचमन पात्र धरै तामें जायफर लवंग कंकोल मिलावै शंखके पश्चिम मधु-
पर्क पात्र धरै तामें दधि सहित घृत मिलाय धरै यथा अगस्त्य संहितायां ॥ आत्मनः रूपतः शंख-
पूर्वतः साधयेत्ततः । अर्घ्यपात्रे पाद्यपात्रे संपूर्य्य सलिलं शुभम् ॥ तथा अर्घ्यपात्रे दातव्यं गंध पुष्पयवाक्षताः ।
कुशाग्रतिलदूर्वाथ सर्पपाश चार्घ्यसिद्धये ॥ पाद्यपात्रे पिदातव्यं श्यामा कं पूर्वकोवचः । अञ्जं च विष्णु क्रांता
च पाद्यसिद्धये प्रयोजयेत् ॥ तथा आचमनपात्रे पिदद्याज्जातीफलं मुने । लवंगमपि कंकोलं शस्तमाचमनीयक
म् ॥ दध्ना च मधुसर्पिभ्यां मधुपर्को भविष्यति ॥ २५ (हे अरिंदम हृत्पद्मे जीवसंज्ञि भानुविमले मत्कलां त
या व्याप्तं स्वदेहं अखिलं तां ध्यायेत् तामत्कलाम् प्रतिमादिषु एव नित्यं अवाहयत्) हे शत्रु नाश करने
वाले लक्ष्मण हृदय कमल विषे वास जीव नाम है जाको सो सूर्य के समान अमल प्रकाशमान
जो मेरी कला है ताही करिकै व्याप्त प्रकाशित अपनी देह सम्पूर्ण जानि ताको ध्यान करै ताही मेरी
कला को प्रतिमादिकन विषे निश्चय करि नित्यही आवाहन करै यथा रामार्चन चंद्रिकायां ॥
हृदां बुजे ब्रह्मकंद संभूते ज्ञाननालके । ऐदं वर्णाष्टदलोपेते स्थिते वैराग्यकर्णिके ॥ आराग्रमात्रो
जीवस्थो चिंतनीयो मनीषिभिः । नेतव्यो हंसमंत्रे द्वादशांते स्थितः परः ॥ तेन संयोज्यविधिवत् भूतशु-
द्धिमया चरेत् । इति जीवस्थापनम् ॥ अथ भूतसंहारः ॥ पादाद्याज्ञान् वज्रां कं पीतं द्रुहिणदैवतम् ।

चतुरस्रापंचगुणांलौह्राहूःफट्भुवंजले ॥ जान्वाद्यानाभिपद्मांकंवेतमर्द्धेन्दुवैष्णवम् । रसरूपस्पर्शशब्दं
 वंहीहूःफट्जलंशुचौ ॥ नभ्याहूदतंप्रद्युम्नंत्रिकोणंस्वस्तिकारणम् । वह्निरूपस्पर्शशब्दंरंह्राहूःफट्समीरणे ॥
 भूपर्यंतंहृदोवायोः पट्विंदुस्पर्शशब्दवत् ॥ वृत्तंसाङ्कर्षणधूम्रंयहूहूःफट्विहायसि । भ्रूमध्यात्रह्वरंध्रांतंवा
 सुदेवस्यशब्दखं ॥ ह्राहूहूहूःफडहंकारेऽहंमहत्त्वकेचतम्प्रकृतौतारामचद्राख्येपरब्रह्मणिसंहरेत् ॥ इतिभूत
 संहारः । शरीराकारभूतानांभूतानांयद्विशोधनम् । अव्ययब्रह्मसंपर्काद्भूतशुद्धिरियंमता ॥ मूलाज्ञानंततःपापं
 जन्मादिदुःखदंचयत् ॥ पानापानौनिरुध्याथतस्यरूपंविचिंतयेत् । महापातकपंचांगपातकोपांगसंश्रयम् ॥
 उपपातकरोमाणांरुष्णंकरोतिभीषणमानाभौपट्विंदुसंयुक्तंपदस्त्रासितवर्तुलम् ॥ वामयापूरितेनवायो ॐ
 यं ॐ ८ वारंतेनशोधयत् । हृदित्रिकोणनिर्गच्छस्वस्तिकेरक्ततेजसे ॥ ॐ रं ॐ १६ कुंभकम्संदहामितम् । बीजं
 चंदसहास्त्राभेमस्तकाब्जेस्थितम्सितम् ॐ वं ॐ ३२ वारंकुस्तूत्पीयूषंष्ठाव्यतेतुतेनरेचयत् । इतिष्ठावनम् ॥
 कृतवैवंतुसहस्राब्जेरामोहमिति संस्मरेत् ॥ पूजकाप्त्येततोभक्त्यातदहंभावयेत्पुनः ॥ ध्यायन्जीवात्ममंत्रैकं
 शुद्धमंगंशुभप्रदम् । मूलाधारोत्थायासूक्ष्मभासासौषुम्णामार्गतः ॐ हुं फडितिसंयम्यप्राणं १६ वारं विन्यस्य
 सूर्द्धनि अखंडब्रह्मणोरात्मात्प्रेरकः पुरुषस्तथा प्रकृतिर्महान्प्रकृतेः ततोऽहंत्रिकोणात्मकतस्मादेतस्मादा
 त्सन आकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अप्पुन्यः पृथिवीपृथिव्याओपययः ओपयीभ्योऽन्नं
 अन्नाद्रेतोरेतसः पुरुषः एवं एष पुरुषोन्नरसमयः । ग्लामिति पृथिवीबीजेन तं रसं घनतानयेत् । ॐ ह मिति बीजे
 नाऽवयवीकरणं भवेत् । सोहं मंत्रेण मंरांवीनादांते सिद्धिं भाविताम् ॥ ध्यात्वेवं ब्रह्मरंध्रेण तत्र जीवकलान्यसेत् ।
 हृदिहस्तं संनिधाय तारप्राणप्रतिष्ठया ॐ प्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुस्त्राऋषयः यजुः सामानि छंदांसि अ
 तिछंदोवाछंदः क्रियामयबपुः प्राणाख्यादेवताप्राणप्रतिष्ठार्थविनियोगः ॐ कं खं गंधं छं अं पृथिव्यप्ते जो वायु
 राकाशात्मने आहृदयाय नमः ॥ ॐ चं छं जं भं जं इंशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने ईं शिरसे स्वाहा । ॐ टं ठं डं
 णं उं ओं त्रत्वक् चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने उं शिषायैवौषट् ॥ ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूमुखस्थात्मने ऐं क
 वचाय हुं । ॐ पं फं बं भं मं ॐ वक्तव्यादानविसर्गानंदात्मने औं नेत्राभ्यांवौषट् ॐ यं रं लं वं शं पं सं हं क्षं अं मनो
 बुद्ध्याहंकारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् ॐ आनाभेरयः औं ह्रीं हृदयादौ नाभिः ॐ क्रीं मस्तकादि हृदयं
 ततः ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ॐ रं असृगात्मने नमः ॐ लं मांसात्मने नमः ॐ वं मेदात्मने नमः ॐ शं
 अस्थ्यात्मने नमः । ॐ षं मज्जात्मने नमः ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॐ हं प्राणात्मने नमः ॐ लं जीवात्मने नमः
 ॐ क्षं परमात्मने नमः इतिन्यासः ॥ अथ ध्यानं ॥ रक्तांभोधिस्थपोतोत्पलसदरुणसरोजाधिरूढाकरा
 यैः पाशंकोदशडमिक्षूद्रवमथगुणमथांकुशंपंचवाणान् ॥ विभ्राणारुक्कपालां त्रिनयनविलसत्पीनवक्षो रुहा
 रा । देवीवालार्कवर्णाभवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परानः ॥ इति ध्यानं अथ प्राणप्रतिष्ठा ॥ ॐ आह्रीं क्रौं यं रं लं वं
 शं पं सं हं क्षं सः ॥ मम प्राण इह स्थितः पुनस्तान्येव बीजान्युच्चार्य मम जीव इहा स्थितः ॥ पुनः तथामम सर्वेन्द्रिय
 पुनः तथामम मनो बुद्धिरहंकारश्चित्तं पृथिव्यप्ते जो राकाशशब्दस्पर्शरूपरसगंधात्रस्त्वक् चक्षुर्जिह्वाघ्राण
 वाक्पाणिपादपायूस्थ जीवप्राणा इहा यांतु स्वस्तयेस्तु चिरं सुखेन तिष्ठतु हंसः सोहं स्वाहा इति मंत्रः ॥
 ततो जन्मादिक व्युष्टिक्रिया संस्कार सिद्धये षोडश प्रणवा वृत्तीः कृत्वा शक्तिं परां स्मरेत् इति पुनर्देहो
 त्पादनम् २६ ॥

पाद्यार्घ्याचमनीयाद्यैः स्नानवस्त्रविभूषणैः ॥ यावच्छक्त्योपचारैर्वा त्वर्चयन्माममा
 यया २७ विभवे सति कर्पूरकुंकुमागूरुचंदनैः ॥ अर्चयेन्मंत्रवन्नित्यं सुगंधकुसुमैः
 शुभैः २८ ॥



(पाद्यअर्घ्य आचमनीयआद्यैः स्नानवस्त्रविभूषणैः वायावत्शक्तिउपचारैः तुभ्रमाययामांअर्चयत्) पगधोवन जलदान मधुपर्क कुल्ला दंतधावन अभ्यंगादि स्नान वसन भूषण गंधदल फूल धूपदीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिण इत्यादि करिके अथवाछत्र चमर व्यजनादि यावत् शक्तिहोइ तिन उपचारन करिके परतु छल छांड़ि मेरा पूजनकरै २७ (विभवेसतिकर्पूरकुंकुमअगरुचंदनैःशुभैः सुगंधकुसुमैः मंत्रवत्नैर्यंअर्चयत्) प्रभु कहत हे लक्ष्मण ऐश्वर्यभये संते कर्पूर कुंकुम अगर केशरि मिश्रित चंदन करिक तथा मंगलीक सुगंधित चमेली बेला गुलावादि फूलों करिके उपचार मंत्रों करिके नित्य पूजन करै नेम सहित २८ ॥

दशावरणपूजावैद्यागमोक्तांप्रकारयेत् ॥ नीराजनैर्धूपदीपैर्नैवेद्यैर्बहुविस्तरैः २९ ॥

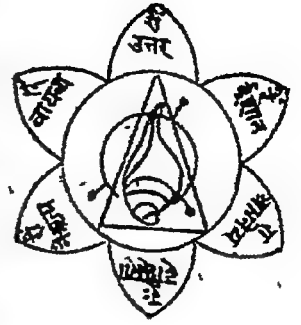
(हिआगमोक्ता) निश्चय करि जो विधि आगम शास्त्र में कहीगई यथा रामतापिनी अगस्त्यसंहिता शिवसंहिता सुंदरीतंत्र हारीत इत्यादिकों में जो विधि लिखी है ताही रीतिकरि अर्थात् भू वेदि कालीपितापर चौरंग चौरीठा सों षट् कोणादि वेदी रचि तापर चौकीवरि पुनः तापर (दशावरण) सोना वा चांदी वा ताम्र पत्र पर चांदी की कलम ते केशरि कर्पूर चंदनादि करिके दशा वरण यंत्र राज लिखि धरै तापर प्रतिमा युत सिंहासन धरै पुनः (धूपदीपैःनैवेद्यैः नीराजनैःबहुविस्तरैःपूजां वैप्रकारयत्) धूप दीप नैवेद्य आरती इत्यादि बहुत विस्तार उपचारों करिके सांग देव सपरिवार पूजन करै यथा उत्थापन आसन अर्घ्य पाद्य मधुपर्क आचमन अभ्यंग स्नान वस्त्र भूषण यज्ञोपवीत गंध दल फूल धूप दीप नैवेद्य आरती प्रदक्षिणा प्रणाम स्तुति इतिसूक्ष्मरीति अवदशावरण विधिवत लिखनेते अवश्यही ग्रंथ बढ़ता है अरु या समय हम लोगोंमें विस्तार देखने की श्रद्धा नहीं है पूजन कौन करि सका है परंतु उचित तौ यहहै कि जो बात मूल में होइ ताको परिपूर्ण रूप कहि देना चाहिये ताते मतिअनुसार लिखता हों यथा मंदिर के द्वारपर जाय प्रभुको जगावने हेत प्रथम भेरी नाद करै व कपाट बजाय देइ (यथावाराहपुराणे भगवानाह) भेरीशब्दमकृत्वाचयस्तुमाप्रतिबोधयेत् वधिरोजायतेभूमौजन्मैकतुनसंशयः ॥ कल्पमेवसमुत्थायहन्याद्देरींसमुचितं । यत्रभेरीनवाद्येतकपाटं तत्रवाद्येत् ॥ पुनःघंटानादकरैयथापद्म (सर्ववाद्यमयीघंटानादकेशवस्यसदाप्रिया) वादनाल्लभतेपुण्यंयज्ञकोटिसमुद्भवम् ॥ वैनतेयाकृताघंटानुदर्शनयुताथवा । ममाग्रेस्थापयेद्यस्तुतस्यपापंहराम्यहम् ॥ घंटानाद सदाकुर्यात्पूजाकालेविशेषतः । प्रीतोभवामिसततंघंटानादेनपुत्रक) श्री रामोजयति उच्चारण युत दक्षिण पद आगे धरि वाम हाथे घंटा नाद करत राम मंत्र उच्चारण युत दक्षिण हाथेके बार उधारै पुनः घृत वा तैल भरि ताम्र को दीपक बारै ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निःस्वाहा सूर्योर्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यस्वाहाअग्निर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चःस्वाहा सूर्योर्वर्चोर्ज्योतिर्वर्चःस्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्योर्ज्योतिः स्वाहा इस मंत्रको पढ़ि दीप मुद्रादिखाय पुनः प्रार्थनीमुद्रा करि प्रार्थना करै यथा ॥ दीपोज्ञानप्रदो नित्यं देवतानां सदाप्रियः । दानेनास्य भवेत्सौख्यं शांतिरस्तु सदा मम ॥ पुनः दीऊजानु भूमिधरि दीप अर्पणकरि यहमंत्रपढ़े यथा ॐ नमो भगवते नुग्रहते जाय विष्णो सर्वदेवाग्नि संप्रविष्ट एव चाग्निस्तव तेजः प्रविष्ट तेजश्चात्मानं समं त्रश्च तेजसः संसारार्थं देवगृह्यश्व दीपद्युति मंत्र मूर्तिमंत्र अभूत्वा इमं कर्मणि निष्कलाम् इति पढ़ि प्रभुके आगे दीपधरि पुनः दीपस्थान पर धरि देइ पुनः तुलसी मूल माटी लगाय हाथ धोय डारै (यथावाराहपुराणे कृत्वा तु मम कर्मणि गृह्य दीपकमुत्तमम् । तावन्न स्पृशते भूमि यावद्दीपो न ज्वाल्यते ॥ दीपे प्रज्वाल्यते तत्र हस्तशौचं तु कारयेत्) पुनः खसखसवा गोपुच्छ बारोंकी कुचरीते वासी फूल बलादि वहारै यह पढ़त यथा ॐ भूर्भुवःस्वः (यथाविष्णुधर्मोत्तरे ॥ उशीर

कूर्चकंदत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते । दत्त्वागोवाल कूर्चतु सर्वपापान्वयोहति ॥ अग्नि पुराणे । अथव्याहृ
तिभिर्निर्माल्यमपोह्या रायनस्नापयेत् पुनःप्रभुकां जगावनेहेत पर्येकपैते समीपपूर्वमुखठाढहैवामहाथे
धंटा बजावत यह पट्टै । राजन्जागृहिजागृहिक्षणमपित्वामंतरेणाखिलं ॥ नैवस्थातुमलंकृतःसुखफलं
भुंजतिविश्वंविभो ॥ तेनोत्तिष्ठरुपाविशिष्टनिलयस्थांष्टिमुन्मीलय त्रैलोक्योपरितांप्रसारयहरेपीयूष
धारामिव ॥ इति जगाय पुनःस्ववामे धंटाधरि दोऊहार्यो फूलगहि कूर्ममुद्रा करि पुनः मणिमय
पर्येकपर बैठेहुये रघुनन्दन जनकनंदिनी समेत आलस भरे अधखुले नेत्र कमलनवजलधरतडिल्ल-
ताइवश्यामगौर तन इसप्रकारध्यानकरै पुनःराममंत्र उच्चारण पूर्वकउठाय सिंहासनपर बैठायआत्र
अपामार्गादिकी दंतधावन करावैमंत्र यथावाराहे ॐभुवनभवनरविसंहरअनंतोमध्यचेति गृह्णेमं
भुवनंदेवभवनं दंतधावनम् मुखप्रच्छालिपुनः मंगलदृष्टिकरावैयथाकांस्थपात्रमेचंदनकरिकैस्वस्तिक+
इसभांतिचिह्न लिखि तामें जल फूल तुलसी दल दधि दूर्वा अक्षत चांदीकीहै मत्स्य फल इत्यादियुत
पात्रअरु दर्पण प्रभुके सन्मुखकरै मंत्रयथा ॐ क्लीं रां रामायनमः॥ मंगलार्थिमयादत्तमंगलदृष्टिकुरुप्रभो
पुनः गरुड मुद्रा देखाय भेरी शंख धरियारादि शब्द सहित मंगल आरती करै प्रथम चारिपायेंन पर
करै द्वै नाभी पर एक मुख मंडल पर पुनः सात आरती सर्वांग पर करै प्रति आरती एक एक श्लोक
पट्टै यथा ॥ मंगलंकोशलेन्द्राय महानिधिगुणाव्ययेचक्रवर्तितनूजायसर्वभौमायमंगलम् १ वेदवेदांतवे
द्यायमेघश्यामलमूर्तये । पुंसांमोहनरूपायपुण्यश्लोकायमंगलम् २ विश्वामित्रान्तरंगायमिधिलानगरी
यतेभाग्यानांपरिपाकायभव्यरूपायमंगलम् ३ पितृभकायसततंभ्रातृभिःसहसीतया॥नन्दिताखिललोका
यरामचंद्रायमंगलम् ४ इतिचरणदेशे॥त्यक्तसाकेतवासायचित्रकूटनिवासिने॥सेव्यायसर्वधर्माणांमहावी
रायमंगलम् ५ सौमित्रिणाचजानक्याचापवाणासिधारिणे । ससेव्यायसदाभक्त्यास्वामिनेमममंगलम् ६
इतिनाभिदेशेपठनीयः ॥ दण्डकारण्यवासायस्त्रिदशसुरशत्रवे । गृध्राज्यायभक्तायमुक्तिदायाशुमंग
लम् ७ इतिमुखे ॥ सादरंशवरीदत्तफलमूलाभिलाषिणे । सौलभ्यगुणपूर्णायसत्त्वोद्विक्तायमंगलम् ८
हनुमंतः समचित्तायहरीशभीष्टदायिने । बालीप्रमथनायास्तुमहावीरायमंगलम् ९ विभीषणकृते
प्रीत्याविश्वामीष्टप्रदायिने । सर्वलोकशरण्यायसत्यसंधायमंगलम् १० श्रीमतेरघुवीरायसेतुलंघित
सिंधवे । जितराक्षसराजायरणधीरायमंगलम् ११ ब्रह्मादिदेवसेव्यायब्रह्मण्यायमहात्मने ॥ जानकीप्राण
नाथयरामचंद्रायमंगलम् १२ अयोध्यानगरींदिव्यामभिपिक्तायसीतया ॥ राजाधिराजराजायरामचंद्राय
मंगलम् १३ श्रीसैमिजामातृमुनेः रुपयास्मानुपेयपे ॥ महतेममनाथायरघुनाथायमंगलम् १४ धृतव
र्तिसमायुक्तंथाकर्पूरसंयुतम् ॥ दीपंगृहाणदेवेशत्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥ इतिचरणादि भौह पर्यंत
उठाय आरतीकरै पुनः पुष्पांजली लैमंत्रयथा ॥ ॐयज्ञानांयज्ञयष्टायांभूतंभष्टारमेवच । अल्पपुष्पंहि
संगृह्यकल्पमुत्थायमाधवम् ॥ ॐश्रीरामायनमः ॥ इतिपट्टिफूलभागेछांड़िदेइपुनः बाहेरआय सा-
ष्टांग प्रणाम करै पुनः दशावरणपूजनहेतवेदीविधियथाअगस्त्यसंहितायां ॥ विलिप्यवेदिकांसम्भ
गमंडलंतत्रकारयेत् ॥ शालितंडुलचूर्णैश्चनीलपीतशितासितैः । लिखेदपटलपद्मचतुरस्रसमावृतम्॥
षट्कोणकर्णिकामध्येकोणाग्रेवृत्तसंयुतम् । मध्यमेतत्ततःशुभ्रंरेखाभिरुपशोभितम् ॥ संपूज्यमंडलंचैवं
तत्रसिंहासनंन्यसेत् । चंद्राउपपतौकश्चतोरणै रपिसर्वतः । अर्थात् बाराहकी खोदी हुई तालतेमाटी
खाय ताकी बेदिका बनावै तानि आंगुर ऊँचिहाथभरि लंबीचौड़ांताको लीपि तापर हरित पीतदेवत
श्याम रंग चौरीठा सों अष्टदल कमल बनावै ताके बीचमें षट्कोण बनावै कोण में गोलाकार बनावै
दलन के बाहेर मंडलाकाररेखा करि ताके बाहर खड़ी रेखा अनेकन बनावै तापर विचित्र चंदोवा

तानै चारिहु दिशिविचित्रध्वजा पताका खड़ेकरै इतिकरि उसवेदी परयंत्रराजधरै ताकीविधि यथा ॥
 पर्वरामतापिन्या॥ त्रिरेखापुटमालिख्यमध्येतारद्वयलिखेत् । तन्मध्येबीजमालिख्यतदधःसाध्यमालि-
 खत् ॥ द्वितीयांतचतस्योर्ध्वषष्ठ्यंतसाधकंतथा । कुरुद्वयंचतत्पाद्वैलिखेद्बीजांतरेरमां ॥ तत्सर्वप्रण-
 वाभ्यांचवेष्टयेच्छुद्धबुद्धिमान् । दीर्घभाजिषड्द्वेषु लिखेद्बीजं हृदादिभिः ॥ कोणपाद्वैरमामाये तद-
 ग्रेनङ्गमालिखेत् । क्रोध क्रोणाग्रांतरेषु लिख्यमंत्रभितोगिरं ॥ वृत्तत्रयंसाष्टपत्रं सरोजंवल्लिखे-
 त्स्वरान् । केशरेचाष्टपत्रेषुवर्गाष्टकमथालिखेत् ॥ तेषुमालामनोवर्णानवल्लिखेद्दूर्मिसंख्यया । अंतपंचा-
 क्षरानेवंपनरष्टदलंलिखेत् ॥ तेषुनारायणाष्टाणालिखेत्तत्केशरेमां॥ तद्वहिःद्वादशदलंवल्लिखेद्द्वादशाक्षर-
 म् ॥ तथोनमोभगवतेवासुदेवायइत्ययं ॥ आदिक्षांतान्केशरेपुत्रताकारेणसंलिखेत् । तद्वहिःषोडशदलं
 वल्लिख्यतत्केशरेह्यम् ॥ वर्मास्त्रनातिसंयुक्तंदलेषुद्वादशाक्षरम् । तत्संधिष्विरजादीनमंत्रान्मंत्रीसमा-
 लिखेत् ॥ हंसंभृंतुलंभंशृङ्गंशुचलिखेत्सम्यक्ततोवहिः । द्वात्रिंशारंमहाचक्रंनदर्विदुसमायुतं ॥ वलि-
 खेन्मंत्रराजाणांतेषुपत्रेषुयत्नतः । ध्यायेदष्टवसूनेकादशरुद्रांश्चतत्रवै ॥ द्वादशार्कान्चधातारंवषट्कारं
 चतद्वहिः । भृगुहंवज्रशूलाढ्यंरेखात्रयसमन्वितम् ॥ द्वारोपेतंचराश्यादिभूषितंफणिसंयुतम् । अनंतोवा-
 सुकिश्चैवतक्षककोटिपद्मकः ॥ महापद्मस्तथाशंखःकुलिकोऽष्टौकुलानिच । एवंमंडलमालिख्यतस्यदि-
 क्षुविदिक्षुच ॥ नारसिंहंचवाराहंलिखेन्मंत्रद्वयंतथा । इदंसर्वात्मकं यंत्रंप्रागुक्तंश्रुतिसेवितम् ॥ अब्रह्म
 ब्रह्मलोकं को अर्थलिखने की जरूरतनहीं है क्योंकि उद्धार किया हुआ यंत्र राज लिखा है ताको
 देखि सोना वा चांदी वा ताम्र पत्र पर चांदी की कलमते केशरि कुंकुम अगर कर्पूर युत चन्दन
 तेयंत्रराजलिखि पुनः पूर्वकहीहुईजो वेदीहै यथापाकपंचांग
 पूजन करि तापर यंत्रराज धरि ताकी प्राण प्रतिष्ठा करै सो
 विधियंत्रराजके कोनोंमें लिखी है पुनः पंचांग पूजि तापर
 सिंहासन धरि प्रभुको जानकी सहित पधरावै फूलदल
 फल गंध वसन ताम्बूल दर्पणादि अपनी दक्षिण दिशिधरै
 जलघट घंटा बामदिशिधरै अर्घ्य पाद्याचमन मधुपर्क धूप
 दीपादि पात्र आगेधरै पानी धोवने को पात्रपीछे धरै पुनः
 मंत्रन्यास प्राणायाम युत सर्वइंद्री मनादिधिरयुत प्रभुको
 ध्यानकरै यथा॥अयोध्यानगरेरम्ये रत्नमण्डपमध्यगे । स्मरे
 त्कल्पतरोर्मूले रत्नसिंहासनं शुभम् ॥ महासिंहासने तस्मि
 न्बीरासनसमाश्रितम् । सम्यग्ज्ञानमर्थीमुद्रांदधानंदक्षिणेकरे ॥ तेजःप्रकाशनंवाग्मेजानुमूर्द्धनिचापरम् ।
 जानकीवल्लभंदेवमिन्द्रनीलमणिप्रभम् ॥ व्याख्याननिरतं देवद्विभुजंरघुनन्दनम् । वशिष्ठवामदेवादि
 मुनिभिःपरिसेवितम् ॥ बामभागेसमासीनांसीतांकांचनसन्निभाम् । भजतांकामदानित्यंरक्तोत्पलक
 राम्बुजाम् ॥ लक्ष्मणपश्चिमेभागेधृतछत्रंसंचामरम् । पाद्वैभरतशत्रुघ्नौतालवृत्तकराम्बुजौ ॥ अग्रेव्य
 ग्रंहनूमंतंवाचयंतंसुपुस्तकम् । इति ध्यान करि शंखस्थापन करै अर्थात् कनिष्ठिकाते चंदन जललै
 भूमिमें त्रिकोण लिखि ताके बाहर मंडल करि षट्कोण लिखै ताके बीच में त्रिपदी धरि ताहि
 प्रच्छालि एकफूल धरि अंनमः पट्टि शंख प्रच्छालि त्रिपदी परधरितामेंगंधपुष्पाक्षतकरिअन्यपात्रमें
 घटते जल लय शंखमें जल भरि पूजनकरै यथा ॐ पुरात्वंसागरोत्पन्नविष्णुनाविधृतःकरे । नमितःसर्व
 देवैश्चपांचजन्यनमोस्तुते ॥ त्रैलोक्येयानितीर्थानिवासुदेवस्यचाज्ञया । शंखेचसंतिविप्रेन्द्रतस्मात्शंखं



प्रपूजयेत्॥ इति गरुडपुराणे॥ पुनः षट्कोनोंमें शंखमुद्रा देखाय राममंत्रकी षट्क्षरन्यासपट्टि फूलअक्षतोंकरिकैकोनों में पूजाकरै प्रथमअग्नेयमें राहद यायनमः ॥ नैऋत्ये रौशिरसे स्वाहा ॥ वायवे रुशिखायै वषट् ॥ ईशाने रैक वचाय हुं ॥ उत्तरे रौनेत्राभ्यां बौषट् ॥ दक्षिणेः अस्त्राय फट् इति बाह्यपूजन करि पुनः रां रामायनमः पट्टि भीतरको मंडल प्रच्छालि तापर अग्नि की दशौ कला स्थापित करै यथा अं अग्नि मंडलाय दशकलात्मने श्री रामार्घ्य पात्रासनायनमः आधारायनमः इस प्रकार आधार जो षट्कोण के भीतर मंडलाकार रेखा है तापर अग्नि की दशौ कला स्थापित करि पूर्वादि दशौ दिशनमें पूजन करै कलायथा ॥ ध्रुवाच नीलरक्ताच कपिला विस्फुलिगिनी । ज्वाला निष्पतिका चैव हव्यवाहनिका तथा ॥ कव्यवाहनिका रौद्री संहारिण्य त्रिमाकला ॥ पूजनयथा पूर्व तेयं धूम्रायैनमः रं नीलरक्तायैनमः लंकपिलायैनमः वं विस्फुलिगिन्यैनमः शंज्वालि न्यैनमः पं निष्पतिकायैनमः संहव्यवाहिन्यैनमः हंकव्यवाहिन्यैनमः लं रौद्रायैनमः ऊर्ध्वैक्षं संहारिण्यैनमः अधे पुनः फट् इति पट्टि शंखप्रच्छालितापरसूर्यकी द्वादश कला स्थापित करै यथा अं अं कर्म मंडलाय द्वादशकलात्मने श्री रामार्घ्य पात्रायनमः कलायथा ॥ तपिनी तापिनी चैव संधिनी बोधिनी तथा ॥ कालिनी शोषिणी चाथवरेण्या कर्षिणी तथा ॥ वैष्णवी विष्णुविद्याज्योत्स्ना हिरण्यातपैव च ॥ सूर्यस्य सूर्यसंख्याताः कलाः प्रोक्ताश्च सूरिभिः ॥ इति शंखके बाह्य अंगोंमें बारहौ पूजै यथा कं भंतपिन्यैनमः खं वं तापिन्यैनमः गं फं संधिन्यैनमः घं पं बोधिन्यैनमः डं नं कालिन्यैनमः चं थं शोषिण्यैनमः छं दं वरेण्यैनमः जं थं आकर्षण्यैनमः भं तं वैष्णव्यैनमः जं णं विष्णुविद्यायैनमः टं ठं ज्योत्स्नायैनमः ठं डं हिरण्यायैनमः इति फूल अक्षतन करिकै सर्वांग शंखपूजि पुनः प्रतिलोम मातृका राममंत्र उच्चारण करै यथा ॐ क्षं लं हं संपं शं वं लं रं यं मं भं वं फं पं नं थं दं थं तं णं डं डं टं जं भं जं छं चं डं थं गं खं कं अं अं आं ओं ऐं एं लूं लूं ऋं ॠं उं उं ईं इं आं अं मः नं यं मं आं रां इति उच्चारण करि शुद्धोदक शंखमें पूरि भीतर चंद्रमाकी षोडश कला स्थापित करै यथा ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने श्री रामार्घ्यामृतायनमः कलायथा ॥ अमृतां मानदां तुष्टिं पुष्टिं प्रीतिं रतिं तथा । लज्जां श्रियं स्वधारां त्रिज्योत्स्नां हंसवतीं तथा ॥ छायाच पूरणी वामा अमा चंद्रमसः कुलाः ॥ शंखभीतर पूजन यथा अं अमृतायैनमः आं मानदायैनमः इं तुष्टायैनमः ईं पुष्टायैनमः उं प्रीत्यायैनमः ऊं रत्यायैनमः ऋं लज्जायैनमः ॠं श्रियायैनमः लं स्वधायैनमः लूं रां श्रियायैनमः एं ज्योत्स्नायैनमः ऐं हंसवत्यायैनमः ओं छायायैनमः औं पूरण्यायैनमः अं वामायैनमः अः अमायैनमः पुनः ॥ गंगेच यमुने चैव गोदावरिसरस्वति । नर्मदे सिंधुकावेरि जलोस्मिन् संनिधिकुस ॥ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे । तेन सत्येन मे देवतीर्थं देहि दिवाकर ॥ इति पट्टि अंकुश मुद्रा करि तीर्थावाहन करि गंधाक्षत फूलन करि जलपूजि शंख हाथपर धरि सातबार राममंत्र पट्टि त्रिपदीपर धरि पुनः आवाहन स्थापन सन्निधापन सन्निरुद्ध संमुख अवगुंठन सकली करण ये सातमुद्रा देखाय अमृतायनमः पट्टि पुनः धेनु शंखचक्र गदापद्म गरुडमत्स्य मुद्रा देखाय सो जल प्रभुके शीशपर छिरकै कलशमें डारै पुनः पूजाकी सब सामग्री पर छिरकै पुनः हृदयमें ध्यान करै यथा धर्मकंदसमुद्भूतं ज्ञाननालं सुशोभनं । ऐदं वर्णाष्टदलं पद्मं परवैराग्यकारिणं ॥ तस्मिन् पीठे चिदात्मानं रामचंद्रस्वरूपिणम् ॥ इति ध्यानमें षोडशोपचार पूजन करि मंत्रजप होम करै पुनः सावधान है स्ववाम दिशि गुरुकी पूजा करै यथा ॐ गुंगुरुभ्योनमः पंपरमगुरुभ्योनमः पंपरमेष्ठिगुरुभ्योनमः पंपरापरगुरुभ्योनमः इति गंधाक्षत फूलन करि पूजि पुनः प्रभुके द्वारदेव यथा अगस्त्य संहितायां ॥ वंदे गणपतिं भानु



तिलकंस्वामिनंशिवं । क्षेत्रपालंतथाधात्रीं विधातारमनंतरं ॥ गृहाधीशंगृहगंगां यमुनांकुलदेवतां ।
 प्रचण्डौचतथाशंख गदापद्मनिर्धामपि ॥ वास्तोष्पतिंद्वारलक्ष्मीं गुरुवागधिदेवतां । एताःसंपूज्य
 भक्त्याहं श्रीरामद्वारदेवताः ॥ इत्यादिको जिसक्रमते पूजाचाहिये सोयथा स्वदक्षिणभागे गंगणपतये
 नमःसंस्तरस्वत्यैनमः दंदुर्गायैनमः क्षेत्रपालायनमः चांवास्तुपुरुषायनमःइत्यादिजलगंधाक्षतफूलन
 करि पूजिपुनः वेदीपर पीठिपूजा पाताल आदि सिंहासन पर्यंत ॐ मंदूकायनमः कालरुद्रायनमः
 कूर्मायनमः आधारशक्त्यैनमः ॐ रत्नदीपायनमः ॐ रत्नमंडपायनमः ॐ कल्पवृक्षेभ्योनमः ॐ रत्न
 वेदिकायैनमः ॐ रत्नसिंहासनायनमः पुनःवेदीपर अग्नेयेधंधर्मायनमः नैऋत्येज्ञाज्ञानायनमः वायु
 व्येवै वैराग्यायनमः ईशानेऐंऐश्वर्यायनमः पूर्वेंअग्रधर्मायनमः दक्षिणेअंअज्ञानायनमः ॥ पश्चिमे
 अंअवैराग्यायनमः उत्तरेअंअनैश्वर्यायनमः इति भू वेदीपर आठौदिशा पूजै पुनः वेदीपर जो अष्ट
 दल कमल तामें पूजा यथा मध्यमेंअंअनन्तायनमःआंभानंदकंदायनमः संतविन्नालायनमः संसरो-
 रुहायनमः पंपत्रेभ्योनमः केंकेशरेभ्योनमः कंकर्णिकायैनमः तांतारामण्डलायनमः अं अर्क मण्डन
 लायनमःचंचंद्रमंडलायनमःअंअग्निमंडलायनमः संसत्त्वगुणायनमःरंरजोगुणायनमःअंआत्मनेनमः
 अंअन्तरात्मनेनमः पंपरमात्मनेनमः ज्ञाज्ञानात्मनेनमः इति गंधाक्षत फूलनकरि कमलमध्यमेंपूजै
 पुनः तापरमांमायातत्वायनमः तापरकंकलातत्वायनमः तापरविंविद्यातत्वायनमःतापरपंपरतत्वाय
 नमः इतिपूजिपुनः पूर्वादि आठौ दलनमें अरुमध्यमें नवशक्ति को पूजै यथापूर्व विंविमलायैनमः
 अग्नेय उंउत्कर्षिण्यैनमः दक्षिणेज्ञाज्ञानायैनमः नैऋते क्रिंक्रियायैनमः । पश्चिमेयोंयोगायैनमः
 वायुव्येप्रंपद्ध्यैनमः । उत्तरेसंसत्यायैनमः ईशाने ईईशानायैनमः । कंजमध्ये अंअनुग्रहायैनमः इति
 पूजिपुनः फूल हाथोंमें लै पढै ॐ नमोभगवते विष्णवे सर्वं भूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्मसंयोग
 योग पद्म पीठात्मनेनमः पुष्पांजली मध्यमें छांदिदेइ इतिपीठपूजा पुनः यंत्रके कोनोंमें लिखी विधिते
 प्राणप्रतिष्ठा करिवेदीपर धरि यंत्रराजकी पूजाकरि तापर सिंहासनधरि प्रतिमा पधराय हाथोंमें फूल
 लै पढै ॐरामायनमः ॐ दाशरथायविद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नोरामः प्रचोदयात् सांगं
 सायुधंसवाहनं सपरिवारंस्वशक्तियुक्तं श्रीराममावाहयामिनमः इतिपढिस्वहृदयकमलते द्वासमार्ग
 करिकै पुष्पांजलि आनि पादुका मुद्राकरिकै मूर्तिमें मिलायदेय पुनः अह्वाहनी आदि सातमुद्रा
 देखावत प्रतिमुद्रा वाक्यपढै श्रीराम इहागच्छ श्रीराम इहतिष्ठ इहसन्निहितोभव इहसन्निरुद्धोभव
 इहसम्मुखोभव इहसकलकृतोभव इहअवगुंठितोभव पुनः शंखचक्र गदापद्म धेनु कौस्तुभ गरुड श्री
 वत्स वनमाला योनियेमुद्रा देखावै पुनः फूलहाथों में लै मंत्र गायत्री युक्त सांगाय सायुधाय सवा-
 हनाय सपरिवाराय स्वशक्ति युक्ताय श्रीरामाय पुष्पांजलि कल्पयामिनमः पढिफूल आगेछांदिदेइ
 पुनः दक्षिण हाथमें शंखते जल लै पढै ॐ नमोभगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्नविज्ञादाय मधुरप्रसन्न
 वदनयामित तेजसेवलाय रामायविष्णवेनमः इतिपढि जल तनपर छिरिकिलेइ पवित्री धारण करि
 पढै सर्ववाद्यमयीघंटा देवदेवस्यवल्लभा । तवनादेनसर्वेषां शुभंभवतिशोभने ॥ इतिपढि वामहाथेते
 घंटानादयुत इहिनेहाथे पाद्यपात्र उंठायपढै(एतावानस्वमहिमाअतोऽज्यायांश्चपुरुषःपादोऽस्यविश्वाभू-
 तानित्रीपादस्यामृतंदिवि॥स्नानार्थमुष्णतोयानिपुष्पगंधयुतानिच।पाद्यंगृहाणदेवेशभक्तानुग्रहकारक)
 इतिपढि पांयन पर धुमाय अन्यपात्रमें जलनायदेय पुनः सजल शंखहाथमें लेयपढै(त्रिपादूर्ध्वउदै-
 तपुरुषःपादोऽस्येहाऽभवत्पुनःततोविष्वडव्यक्रामत्सासनाज्ञशनेअभि॥शंखतोयसमायुक्तंगंधपुष्पाधि-
 वासितम् । अर्घ्यंगृहाणदेवेशप्रीत्यर्थमेतदाप्रभो) सम्मुख जल पात्रमें नायदेय मधुपर्क आगेधरि धेनु

मुद्रा देखाय आचमन पात्र उठाय पढ़ै (तस्माद्विराडजायतविराजोअधिपुरुषःसजातोअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥गंगातोयंसमानीतंसुवर्णकलशेधृतं । आचमनायदेवेशप्रीत्यर्थंप्रतिगृह्यताम्) मुख समीप करि जल पात्रमें नायदेय पुनः चौकीपर बैठारि वसन भूषण उतारि चिरौजी कर्पूर केशरि चंदन मिश्रित अभ्यंग करि कलशते शंखमें जललै स्नान करावतमें पढ़ै (तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतंपृषदाज्यं पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यान्आरण्यान् ग्राम्यांश्चये ॥ गंगासरस्वती तापीपयोष्णीनर्मदाकं जा । तज्जलैःस्नापितोदेवतेनशांतिकुरुष्वमे । इति स्नानकराय सर्वांग पौछि वसनपहिरावतमें पढ़ै ॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःऋचःसामानिजज्ञिरे छन्दांसिजज्ञिरे तस्मात्यजुस्तस्मादजायत्॥शीतवातोष्णसं त्राणलज्जादोषनिवारणम् । सुवेषधारिणंयस्मात्वासोयंप्रतिगृह्यतां ॥ पुनः यज्ञोपवीत पहिरावतमें पढ़ै ॥ तस्मादइवा अजायंत येकेचोभयादतः गावोहयज्ञिरेतस्मात्तस्माज्जाताअजावयः॥ब्रह्मणानिर्मितं सूत्रंविष्णुग्रंथिसमन्वितम् । यज्ञोपवीतंदेवेशगृह्यतांमेजनार्दन ॥ इन उपचारोंके मुद्रा देखावत जाय पुनः पादुका मुद्रादेखाय किरीट कुण्डलमालादि भूषण पहिराय गंधचढ़ावतमें पढ़ै॥तंयज्ञंवर्हिषिप्रोक्षन्पुरुषंजातमग्रतःतेनदेवाअयजंतसाध्याऋयश्चये । मलयाचलसंभूतंशीतमानंदवर्द्धनम्॥काश्मीरघनसारा ढ्यंचंदनंप्रतिगृह्यताम् ॥ तुलसीदल फूल चढ़ावतमें पढ़ै ॥ ॐ श्रीश्चतैलक्ष्मीश्चपल्थावहोरात्रेपाशैर्व नक्षत्राणिरूपमश्विनौव्यात्तम्इष्ण त्रिषाणामुष्मऽइषाणासर्वलोकम्मऽइषाणा॥नानाविधानिपुष्पाणि ऋतुकालोद्भवानिच । मयाहृतानिपूजार्थंपुष्पाणिप्रतिगृह्यतां ॥ पुनः वसन वोढावतमें पढ़ै ॥ यत्पुरुषं व्यदधुःकतिधाव्यकल्पयन् सुखंकिमस्यकौवाहू कावूरूपादावुच्यते ॥ सूर्यरश्मिसमज्योतिर्ब्रह्मणानिर्मितंपुरा । बस्त्रंगृहाणदेवेशप्रीत्यर्थंमेसदाप्रभो ॥ इन उपचारोंके मुद्रा देखाय पुनः ॐ श्रीसीतायैस्वाहा इस मंत्र करि कै प्रभुके बाम भाग में जानकी जीको पूजै पुनः ॐ लंलक्ष्मणायनमः इस मंत्रसों दक्षिणदिशि लक्ष्मण जी को पूजै पुनः ॐ शंशाङ्गायनमः इस मंत्र सों प्रभुके बाम दिशि धनुष पूजै पुनः ॐ शंशरेभ्योनमः इसमंत्रसों दक्षिण दिशिबाणों को पूजै पुनः परिवारांग देवन को पूजने हेतुहाथ जोरि प्रभुसों आज्ञासांगै यथा ॥ अनुज्ञां देहि मेनाथपरिवारार्चनायते॥पुनःयंत्रमध्यषट्कोणों की पूजा करै यथा ॐ राहृदयायनमः इति पढ़ि अग्नेय कोण में गंध पुष्प चढ़ावै पुनः ॐ रंशिरसे स्वाहा नैऋते ॐ रंशिखायैषट् वायव्ये ॐ रंक्वचायहुं ईशाने ॐ रंनेत्राभ्यांबौषट् उत्तरे ॐ रःअस्त्रायफट् दक्षिणे इति पूजि हाथ धोय पुष्पांजली देत पढ़ै॥दयाब्धेऽत्राहिसंसारसर्पान्मांशिरणागतं । भक्त्यासमर्पयेत्वाहं इति पढ़ि जल छांड़ि पुष्पांजलीदेय शंख मुद्रा देखावै इति प्रथमा वरण पूजनं पुनः दूसरे आवरणमें जो अष्ट दल हैं तामें पूर्व कबर्ग लिखीहै ताही दलते प्रारम्भ अग्नेय दक्षिणा दिक्रम आठहू दलमूल में पूजै पूर्वआत्मानेनमः अग्नेयर्निनिवृत्त्यैनमः दक्षिणे अंभंतरात्मने नमः नैऋतेप्रंप्रतिष्ठायैनमः । पश्चिमेपंपरमात्मनेनमः वायव्ये विंबिद्यायैनमः उत्तरे ज्ञांज्ञानात्मने नमः । ईशाने शंशांत्यैनमः इत्यादि आठोंदिशा में गंध पुष्पादि पूजि पूर्ववत् पुष्पांजली दय चक्र मुद्रा देखावै इतिद्वितीया वरण पूजनं पुनः तीसरे आवरण सोई अष्टदलन के बीचमें गंध फूलादि पूर्ववत् पूजै यथा ओं बांवासुदेवायनमः ॐ श्रीश्रियैनमः ॐ संसङ्कर्षणायनमः । ॐ शंशान्त्यैनमः ॐ प्रं प्रद्युम्नायनमः ॐ प्रीप्रीत्यैनमः ॐ अंअनिरुद्धायनमः । ॐ रंरत्यैनमः इति पूजिकर प्रक्षालन पुष्पांजली पूर्ववत् देइ गदा मुद्रा देखावै इति तृतीयावरणपूजनं पुनः चौथे आवरणपूजन यथा अब इसी दलनके अग्र भाग पर दूसरे अष्टदलों की मूल पर बंधुसखनकी पूजा पूर्वादि क्रमते करै ओं हंहनु मतेनमः । ओं सुंसुग्रीवायनमः । ओं भंभरतायनमः । ओं विंबिभीषणायनमः । ओं लंलक्ष्मणायनमः ।

ओंअंगदायनमः । ओंशंशुधनायनमः । ओं जांजाम्बवतेनमः । इत्यादि पूजि हाथ धोय पूर्ववत् पुष्पांजली दै पद्म मुद्रा देखावै (इति चतुर्थावरण पूजनं) पंचमावरणं यथा अवजो दूसरी आवृत्ति अष्टदल है तिनके मध्यमें आठौ मंत्रिन की पूजा पूर्वादि क्रम यथा ओंधृष्टयेनमः ओंजंजयंताय नमः ओं विंविजयायनमः ओं सौंसौराष्ट्रायनमः ओंरांराष्ट्रवर्द्धनायनमः ओं अंअकोपायनमः ओं धंय भंपालायनमः ओं सुंसुमंतायनमः इति पूजि हाथ धोय पूर्ववत् पुष्पांजली दै धेनु मुद्रा देखावै (इति पंचमा वरण पूजनं) षष्ठावरणं यथा अवजो तीजी आवृत्तिमें द्वादशदल है तिनमें मुनिन की पूजा पूर्वादि क्रमते यथा ओं नानारदायनमः ओं वंवशिष्ठायनमः ओं जांजावालायनमः ओं गौंगौत मायनमः ओं भंभरद्वाजायनमः ओं कंकदयपायनमः ओं बांवाल्मीकयेनमः ओं कौं कौशिकायनमः ओं संसनकायनमः ओं संसनंदनायनमः ओं संसनातनायनमः ओं संसनत्कुमारायनमः इति पूजि हाथ धोय पूर्ववत् पुष्पांजली दै कौस्तुभमुद्रा देखावै (इति षष्ठावरण पूजनम्) सप्तमावरणं यथा चौथी आवृत्ति में जो पौडशदल है तिन में यूप वानर भूषणाल्म पूर्वादि क्रम पूजै यथा ओं नौनीलायनमः ओं ननलायनमः ओं सुंसुपेणायनमः ओं मैमैदायनमः ओं संसरभायनमः ओं द्विद्विविदायनमः ओं चंचंदनायनमः ओं गंगवाक्षायनमः ओं किंकरीटायनमः ओं कुंकुडलायनमः ओं श्रीश्रीवत्सायनमः ओं कौकौस्तुभायनमः ओं शंशंखायनमः ओं चंचक्रायनमः ओं गंगदायैनमः ओं पंपद्मायनमः इति पूजि करप्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै गरुड मुद्रा देखावै (इति सप्तमावरणपूजनं) अष्टम यथा जो बाहिर वत्तिसदल है तिनमें ध्रुवादि नौदेव ग्यारहौस्त्र वारहौ सूर्य पूजै पूर्ववत्क्रमयथा ओं ध्रुध्रुवायनमः ओं धंधरायनमः ओं सौंसोमायनमः ओं आंआपायनमः ओं अंअनिलायनमः ओं अं अनलायनमः ओं प्रंप्रत्यूपायनमः ओं प्रंप्रभासायनमः ओं वींवीरभद्रायनमः ओं शंशंभवेनमः ओं गिं गिरीशायनमः ओं अंअजैकपदेनमः ओं अंअहिर्बुध्नायनमः ओं पिंपिनाकिनेनमः ओं अंअपराजितायनमः ओं भुंभुवनाधीशायनमः ओं कंकपालिनेनमः ओं दिंदिविक्पतयेनमः ओं स्थंस्थाणवेनमः ओं वंवरुणायनमः ओं सुंसूर्यायनमः ओं वेवेदांगायनमः ओं भांभानवेनमः ओं इंइंद्रायनमः ओं रंरवयेनमः ओं गंगभस्तये नमः ओं यंयमायनमः ओं स्वंस्वर्णरेतसेनमः ओं दिंदिनकरायनमः ओं मिंमित्रायनमः ओं विंविष्णवेनमः ओं धांधात्रेनमः इति पूजि करप्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै श्रीवत्समुद्रा देखावै (इति अष्टमावरण पूजनं) नौमावरणं यथा अव वत्तिसदलके बाहर आठौ दिशनमें इंद्रादि दिग्पाल तथा लोकपालोंकी पूजायथा पूर्व इंद्रको गंधफूलादि पूजै ओं इंइन्द्रायसुराधिपतये सायुधाय सवाहनायसपरिवारायस्व शक्तियुताय श्रीरामपार्षदायनमः येवाक्य सवमें पीछेदेय ओं रंअग्नयेतेजोधिपतये सायुधाय ० ओं धंधर्मराजायप्रेताधिपतयेसायुधाय ० ओं क्षंक्षेत्रधरेक्षोधिपतयेसायुधाय ० ओं वंवरुणायजलाधि पतयेसायुधाय ० ओं वांवायव्येप्राणाधिपतयेसायुधाय ० ओं संसोमायनक्षत्राधिपतयेसायुधाय ० ओं ईईशानायविद्याधिपतयेसायुधाय ० पुनःपूर्व ईशानके मध्यमें ब्रह्माको पूजै ओं अंअब्रह्मणेलोका धिपतयेसायुधाय ० नैऋत्य पदिचमके मध्यमें विष्णुकोपूजै ओं ह्रींविष्णवेभूताधिपतयेसायुधाय ० इति पूजिकर प्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै वनमाला मुद्रादेखावै ॥ इति नवमावरणपूजनं, दशम यथा भितरी रेखोंके मध्यके आयुध पूजै पूर्व ओं वंवज्रायनमः अग्नेय ओं शंशक्त्येनमः दक्षिणे ओं दं दशढाय नमः नैऋते ओं वंखड्गायनमः पदिचमे ओं पां पाशायनमः वायव्ये ओं धं ध्वजायनमः उत्तरे ओं गंगदायै नमः ईशाने ओं त्रिं त्रिशूलायनमः पूर्व ईशानमध्ये ओं पंपद्मायनमः नैऋत्यपदिचममध्ये ओं चंचक्राय नमः ॥ इति पूजि करप्रक्षालि पूर्ववत् पुष्पांजली दै योनिमुद्रा देखावै ॥ इति दशमा वरण पूजनम् ।

पुनः बहिरी रेखाके भीतर चारिहु द्वारनपर पार्षदपूजे पूर्वद्वारे ओंगंगरुद्रायनमः ओं विविष्वक्सेनाय नमः ओं जंजयायनमः ओं विविजयायनमः ओं प्रप्रवलायनमः पुनः दक्षिणद्वारे ओं वंजलायनमः ओं नंदायनमः ओं सुसुनंदनायनमः ओं सुसुभद्रायनमः पुनः पश्चिमद्वारे ओं भंभद्रायनमः ओं चंचंडायनमः ओं प्रप्रचंडायनमः ओं विविनीतायनमः पुनः उत्तर द्वारे ओं कुंकुमुद्राक्षायनमः ओं शीशीलायनयः ओं सुश्रीलायनमः ओं सुसुसेनायनमः पूजिपुष्पांजलीदेइ तथा नागन को पूजे ओं अंजनंतायनमः ओं कुंकुलिकायनमः ओं वांवासुकयेनमः ओं शंखपालायनमः ओं तंतक्षकायनमः ओं मंमहापद्मायनमः ओं पंपद्मायनमः ओं कंकर्कोटकायनमः तथाही बारहराशी नवग्रहों को पूजे ॥ इति पूजिपुष्पांजलीदेय लोकपाल अस्त्र नागन को पूजा मुख्य दिशनमें चाहिये और पूजन आवरण में सो पूज्यपूजक मध्य सोई पूर्व दिशामानी इति पूज्यपुनः फट्पट्टि धूपपात्र मार्जन करि ओं नमः पट्टि गंधपुष्पते पूजि अग्निपर धूपधरि वामकर कमिष्ठिकाते पात्रस्पर्श करि पट्टे ॥ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहूराज्यः कृतः उरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽबजायत वनस्पतिरसोऽत्पन्नोऽंगं वा दधोगंधमुत्तमस्त्राग्नेयः सर्वभूतानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यतां सांगाय सपरिवाराय श्रीरामाय धूपं समर्पयामिनमः ॥ इति पट्टि अध्येजल भूमि नाय धूपसुद्रा देखाय वामहाथे घंटानाद धूपपात्र दक्षिण हाथते प्रभुकी नाभीसमीप व्यजनवत् फेरत में पट्टे ॥ वामेकोदंडदंडानिजकरकमले दक्षिणेवाणमेकं । पश्चाद्भागेचनिर्यं दधतमभिमतं सासि तूणीरभारम् ॥ वामेवामेलसद्भ्यां सहमिलिततनुं जानकीलक्ष्मणाभ्यां । श्यामं रामं भजेहं प्रणतजन मनः खेदविच्छेददक्षम् ॥ पुनः जयजानकी रमणकरुणानिधे इति पट्टि धूपपात्र प्रभुके वामभागेधरि पुनः ओं फट् इति दीपपात्र पर शंखते जल छांड़ि ओं नमः इति गंधपुष्प चढाय सयूतवाती वारि वामकर मध्यमाते स्पर्शकरि पट्टे ॥ चन्द्रमामनसोजातः चक्षोः सूर्योऽबजायत सुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत सुप्रकाशो महान्दी पश्चैल्लोक्यतिमिरापहम् । सवाह्याभ्यां तराज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यतां सांगाय सपरिवाराय श्रीरामाय दीपं समर्पयामिनमः इति पट्टि शंखजल भूमिपैनाय दीप सुद्रा देखाय ओं नमो दीपेश्वराय इति पुष्पांजली दय दीप उठाय प्रभुके नेत्र पर्यंत फेरत समयपट्टे ध्यायेदाजानु बाहुं धृतशरधनुषं वद्वपद्मासनस्थं । पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्द्धिनेत्रं प्रसन्नं ॥ वामांकारुढसी तामुखकमलमिलिल्लोचनं नीरदाम्भम् । नानालंकारदीप्तिं दधत मुरुजटा मण्डलं रामचंद्रं ॥ श्रीराम जय राम जयजयराम पट्टे इति दीप अर्प्य पुनः भक्ष्यभोज्यादि दिव्यपदार्थ उत्तमपात्रमें करि आगे धरितुलसी डारि ओं रां रामायनमः सातवार पट्टि पुनः प्रभुको पाद्य आचमन कराय अपने दक्षिण हाथ में जल लै वाम हाथे ढांकि तापर पोडश बार राम मंत्र उच्चार करि जल नैवेद्य पर छिर कै पुनः दक्षिण हाथे जल लै तामें गंहं इति बीज लिखै दोऊ हाथमें जल करि थारको ढांके पुनः हाथे जल लेय ठंठं पट्टि नैवेद्य पर छिरकि देइ पुनः वाम हाथ में वंजीज लिखि तासों थार ढांकि उतकर पृष्ठ पर दक्षिण हाथ धरे सब पात्र पर घुमाय अमृत मय विचारे पुनः वामांगुष्ठ पात्र स्पर्श दहिने हाथे जल पात्रलै पट्टे नाभ्यामासीदंतरिक्षं शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथालोकां भक्त्यप्यत् अन्नं चतुर्विधं स्वादं रसैः षड्भिः समन्वितं । भक्ष्यभोज्यं समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यतां ॥ सांगाय सपरिवाराय श्रीरामाय नैवेद्यमुदकं वसमर्पयामि । इति पट्टि शंख जल भूमि पै नाय चक्र धेनु सुद्रा देखाय ओं हं निवेदयामि पट्टि थार उठाय तीनिबार प्रभु को देखाय त्रिपदी पर धरि प्रभुहित प्राण आहुती करै कनिष्ठा नामिका अंगुठा सो अन्न गहि पट्टे ओं प्राणाय स्वाहा पुनः तर्जनी मध्यमा अंगुठा सो गहि पट्टे ओं अन्नानाय स्वाहा पुनः मध्यमानामिका अंगुठा सो गहि पट्टे ओं व्यानानाय स्वाहा पुनः वेकनिष्ठा

चारि सौ गहि पढ़ै उँ उदानायस्वाहा पुनः पाँचौँ अंगुरिनते अन्न गहि पढ़ै समानायस्वाहा पुनः धार प्रभुके आगे धरि राम मंत्र पढ़ि दोऊ हाथ जानु पर धरि दोऊ अनामिका अंगुष्ठन में जोरि पढ़ै शालीभक्तसुभक्तशशिकरशितरूपायसापूपसूपं । लेह्यंचोष्यंसुपेयंसितममृतफलवारिकाद्यंसुस्वाद्यं “आज्यंप्राज्यंसुभोज्यंनयनरुचिकरंराजिकैलामरीचिः । स्वादीयःशाकरानीपरिमलममिताहारजोषंजुषस्वं ॥ ब्रह्मेशाद्यैःपरितउरुभिःसूपविष्टैःसमेतोलक्ष्म्यासिंजद्वलयकरयासादरंवीज्यमानः । नर्मक्रीडाप्रहसनमुखैर्हासयन्पक्तिभोक्तृन्भुंकोपात्रेपवित्रेकनकघटितेपङ्कसान्श्रीरमेशः ॥ भोजनांत धार उठाय अलग धरै जल पान करावत में पढ़ै उँ रां रामायनमः समस्तदेवदेवेशसर्वतृप्तकरंपरं । अखंडानंदसंपूर्णगृहाणजलमुत्तमम् ॥ इति जल पान कराय गंडूकाचमन शुद्ध आचमन कराय ताम्बूल देत में पढ़ै यतपुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत् वसंतोअस्यासी दाज्यंग्रीष्मइध्मः शरद्विः नागवह्निदलंदिव्यंपूगीखदिरसंयुतस् । वक्रस्याभरणंस्वाद्यंताम्बूलंप्रतिगृह्यतां ॥ पुनःदधिदूबप्रभु के शीश पर धरि माथ में गोरोचन लगाय पाँचदीपक अक्षत दूब दधि राई लोन पात्र में धरि दोऊ हाथों गहि राम मंत्रपढ़त आरती उतारै पुनः शंखपर वं पढ़ि धेनु मुद्रा देखाय उँ रांरामायनमः पढ़िअमृतमय विचारि वह जल प्रभु को अर्पण करै यह पढ़ि श्रीरामाय अमृत पानीयंकल्पयामि इति दशावरण पूजन यथा सुंदरीतंत्रे पट्कोणेप्रथमावृत्तिः स्यादंगैरग्नितःक्रमात् । द्वितीयात्मादिकैर्देवैरेष्टाब्जमूलकेतथा ॥ तृतीयावासुदेवाद्यैरेष्टमंत्रैतथैवच ॥ चतुर्थेवायुपुत्राद्यैःपत्राग्रेपूर्वतःक्रमात् । धृष्टाद्यैःपंचमावृत्तिर्द्वितीयाष्टदलेतथा ॥ पष्ठेद्वादशपत्रेपुनारदाद्यैर्महर्षिभिः । सप्तमेषोडशाब्जस्यान्नीलाद्यैःकपिपुंगवैः ॥ ध्रुवाद्यैरेष्टमेज्ञेयाद्वात्रिशद्वलपद्मके । इंद्राद्यैर्भूगृहेशाद्यैर्नवमावरणंभवेत् ॥ तदस्त्रैर्वज्रमुख्याद्यैर्दशमावरणंशुभम् । इत्सी भाति दशावरण यंत्रराज पर पूजनकरै २९ ॥

श्रद्धयोपहरेन्नित्यंश्रद्धाभुगहमीश्वरः॥होमंकुर्यात्प्रयत्नेनविधिनामंत्रकोविदः३० ॥

(अहंईश्वरः श्रद्धाभुक्नित्यंश्रद्धयाउपहरेत् मंत्रकोविदः प्रयत्नेनविधिनाहोमं कुर्यात्) प्रभु बोले हेक्षेमण हम ईश्वर हैं भाव पूर्ण काम हैं ताते श्रद्धा करिके दिया हुवा पदार्थ भोग करते हैं इस हेत भक्त जन नित्य श्रद्धा करिके मेरेहेत पदार्थ अर्पण करै भाव अश्रद्धाते परिश्रम वृथाहै पूजाकि हेपीछे मंत्र क्रिया में विद्वान् यत्नपूर्वक तंत्रन की विधि करिके होम करै यथा होमशालामें जाय पूर्ववत्आसनपर बैठि आचमनकरि पवित्री धारणकरि श्रीराममंत्रते करन्यास अंगन्यास प्राणायाम करिहाथ में जलाक्षत कुश लै पढ़ै उँ अद्ये हेत्यादि देश काल स्वनाम गोत्र इष्टसंकीर्त्य असुक द्रव्येन श्री रामं यक्ष्य इति संकल्प करि पुनः घृत शक्करतिल यवाक्षत जाउरि शुवाइत्यादिसामग्री आगे धरि पुनः ३० ॥

अगस्त्येनोक्तमार्गेणकुंडेनागमवित्तमः॥ जुहुयान्मूलमंत्रेणपुंसूक्तेनाथवाबुधः३१

अथवौपासनाग्नौवाचरुणाहविषातथा ॥ तप्तजांबूनदप्रख्यादिव्याभरणभू

षितम् ३२ ध्यायेदनलमध्यस्थंहोमकालेसदाबुधः ॥ पार्षदेभ्योबलिदत्त्वाहोमशे

षंसमापयेत् ३३ ॥

(अगस्त्येनउक्तमार्गेणकुंडेनागमवित्तमःबुधःमूलमंत्रेणअथवापुंसूक्तेनजुहुयात्) अगस्त्य ऋषि करिके कहीमार्ग जो संहितामें लिखीहै ताही विधि करिके बनेहुये कुंड करिके आगमशास्त्रमें प्रवीण विद्वान् मूल मंत्र पढ़क्षर अथवा पुरुष सूक्त करिके हवनकरै यथा अगस्त्य संहितायां ॥ भूमिस्थानं

समाकृष्यषट्चतुष्कांगुलांतरम् । तावत्त्रिखनेदंतश्चतुष्कोणंतथांततः ॥ दिशिदिश्यंतरे चैव पार्श्वं
स्थंचचतुष्टयम् । एवंसलक्षणंकृत्वा बहिःकुर्याच्चमेखलाम् ॥ द्वादशाष्टचतुर्थानांस्वांगुलैश्चक्रमान्मुने । एव
मुत्सेधत्रायामश्चतुरंगुलमेवतत् ॥ आयामोत्सेधरूपेण चतुष्काधिक्यतः क्रमात् । चतुष्कत्रितयंकु
र्यादेवंस्यान्मेखलाक्रमः ॥ कुण्डस्यपश्चिमेभागे योर्निकुर्यात्सलक्षणां । अश्वत्थपत्रसदृशीं कुणेकिंचि
त्प्रतिष्ठिताम् ॥ श्रुवंबाहुप्रमाणेन होमार्थंविदधीतवै । चतुरस्रंविधायादौ समंपंचांगुलंक्रमात् ॥ कुण्डस्य
लंसमागम्य गोमयेनोपलिप्यच । सांगाबाहनमंत्राग्नौ पूजयेद्ब्रधुनंदनम् ॥ समिदाज्यचरूणांच प्रत्येकंषो
डशाहुतिः । जुहुयान्मूलमंत्रेण परिवारिभ्यएवच ॥ तिलैश्चतंदुलैराज्यैर्हुत्वालोकस्यपूज्यताम् ३१
(अथवाउपासनाभग्नौचरूणावातथाहविषा) अथवा अग्निर्होमी उपासना भाव अग्नि होत्रकोविधि
करिकै अग्नि विपेजाउरि वा ताहीभांति घृतकरिकै हवनकरै (तप्तजांबूनदप्रख्यं) तपाये सोनाकेतुल्य
(दिव्याभरणभूषितम्) किरीटकुंडलमालाकेयूरादिदिव्यभूषणोंकरिकै भूषितऐसाजोमेरारूप ३२ (अनल
मध्यस्थं होमकाले बुधः सदा ध्यायेत्) सोई मेरा रूप अग्नि मध्यमें स्थित ताहि बुद्धिमान् सदा ध्यानकरै
भाव साकल्यउसीके अर्थअर्पणकरै (पार्षदेभ्यो बलिंदत्त्वा शेषं होमं समापयेत्) मेरेअर्थ आहुती करिपुनः
हनूमानादिकोंकेअर्थ बलि अर्थात् आहुतीदेवै बाकीजोरहै होम सोसमाप्तपूर्णाहुतिकरै अर्थात् राममंत्र
पट्टिकुंडमेंजलडारै ताप्रपात्रमें शुद्धअग्निलै आगेधरिराममंत्रपट्टि शुद्धकरि ओं ह्रीं वाह्वै तन्यायनमः पट्टि
तृणपरधरैतापरसमिधइंधनधरिपट्टै ॥ ओं चित्पिंगलहनहनदहदहपचपचसर्वज्ञापयस्वाहा ज्वलिनीमुद्रा
देखायहाथजोरिपट्टै वैश्वानरजातवेदइहावहलोहिताक्षसर्वकर्माणि साधय स्वाहा अग्निज्वलितकरिपट्टै
अग्निप्रज्वलितंवंदे जातवेदसमूर्जितं ॥ हिरण्यवर्णममलंसमिद्धंसर्वतोमुखं । इतिप्रार्थनाअस्याग्निमं
त्रस्यभृगुऋषिर्गायत्रीछंदो ऽग्निर्देवतारं बीजं स्वाहा शक्तिर्हवने विनियोगः । जलछांड़िन्यासयथा शिरसि
भृगवेऋषयेनमः मुखे गायत्रीछंदसेनमः हृदि वैश्वानरदेवतायै नमः गुह्ये रं बीजाय नमः पादयोः स्वाहा
शक्तये नमः ओं वैश्वानरहृदयाय नमः जातवेदः शिरसे स्वाहा इहावंशिखायै षट् लोहिताक्षकवचाय हुं
सर्वकर्माणि नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ साधय स्वाहा अस्त्राय फट् इति विन्यासपुनः । त्रिनेत्रमारक्ततनुं सुशुक्लव
स्त्रं सुवर्णसूजमग्निमीडे ॥ वराभयस्वस्तिकशक्तिहस्तं पद्मस्थमाकल्पसमूहयुक्तं ॥ इत्यग्निध्यात्वा श्री
रामाग्निमावाहयामि । इतिपुष्पांजलीदै अग्निकोआवाहनकरि । आवाहनादिमुद्रादेखायजलगंधा-
क्षत फूलनैवेद्यपूजिपूजायंत्रविभाव्यश्री रामपीठदेवेभ्यो नमः ॥ इतिपीठदेवतापूजि पूजामंडलाद्रा
मंत्रत्रा बाह्यावाहनादिमुद्राः प्रदृश्यं पंचोपचारैः संपूज्य घृतसाकल्यमेंडारैहुंपट्टिमिलावै । ओं फट् पट्टि
रक्षाकरै ओं रं रामायनमः ॥ इतिपट्टिबलियोग्यकरैपुनः आहुतीयथा । ओं भूः स्वाहा ओं भुवः स्वाहा ओं स्वः
स्वाहा ओं महः स्वाहा ओं जनः स्वाहा ओं तपः स्वाहा ओं सत्यः स्वाहा ओं रं रामायनमः स्वाहा इतमंत्रते
षोडशआहुतीदै पुनः ॥ श्रीं सीतायै स्वाहा ओं ललक्ष्मणाय स्वाहा ओं शंशार्ङ्गाय स्वाहा ओं शराय स्वाहा
अंगदेवेभ्यः स्वाहा भावरणदेवेभ्यः स्वाहा पीठदेवेभ्यः स्वाहा भूः आदिव्याहृतिनतेपुनः आहुतीकरि
सांगायसपरिवाराय सायुधाय श्रीरामाय स्वाहा इतिपूर्णाहुतीकरै पुनः अग्नि को पूजि प्रणाम यथा
ब्रह्मा चिंमहातेजो नमस्ते बहुरूपधृक् । सर्वाग्निं सर्वगतः पावकाय नमोस्तु ते इति भांति
हवन करै ३३ ॥

ततो जपं प्रकुर्वीत ध्यायन्मां यतवाक् स्मरन् ॥ मुखवासंचताम्बूलंदत्वा प्रीतिसम
न्वितः ३४ ॥

(ततः माध्यायन् जपं प्रकुर्वीत्य तवाकृतस्मरणचप्रीतिसमन्वितः मुखे वासंताबूलं दत्वा) तदनंतर मेरा ध्यान करता हुआ मंत्र जपकरै कौन भांति जो मंत्रवचनते उच्चारण करै सोई प्रत्यक्षरमन में स्मरण किहे रहै पुनः प्रीति सहित मुखवासहेत मोहो ताम्बूलदेवै अथ जपहेत माला विधिब्राह्मणी को कातासूत त्रिगुणवरि पुनः त्रिगुण करि तुलसीकी गुरिया मुखते मुख पुच्छते पुच्छमिली दोहरी गांठि देगुहत्तमें इस भांति मातृकापदैयया इस भांति मालागुहैसनत्कुमारसंहितायां ॥

कर्पासतमवंसूत्रं धर्मकामार्थमोक्षदं । तंच विभेदं रुच्याभिर्निर्मितंच सुशोभनम् ॥ त्रिगुणं त्रिगुणकृत्यग्रंथयेत् शिल्पशास्त्रतः । एकैकमातृवर्णसतारं प्रजपेत्सुधीः ॥ मणिमादाय सूत्रेण ग्रंथयेन्मन्त्रभागतः । ब्रह्मग्रंथं विधायेत्थं मेरुचग्रंथिसंयुतं ॥ ग्रंथयित्वा पुरोमालांततः संस्कारमाचरेत् । रामार्चनचंद्रिकायां गोपुच्छसदृशीकार्या एकग्रीवासमेरुका ॥ मुखं मुखेन संयोज्यं पुच्छं पुच्छेन योजयेत् । जपमालां विधायेत्थंततः संस्कारमारभेत् ॥ शुभेलग्नेशुभे वारेशुभक्षे च शुभेतिथौ । प्रतिष्ठां कारयेन्मन्त्रस्त्रियंगुरुरथापि वा ॥ अथ तथपत्रनवकैः पद्माकारं तु कल्पयेत् ॥ तन्मध्ये स्थापयेन्मालां मातृकामूलमुच्चरन् । क्षालयेत्पंचगव्यैस्तु सद्योजातेन सज्जनैः ॥

इस भांति पद्माकार पीपरके नवपत्रकरि तापर मालाधरि पंचगव्यते स्नान करावत यह पढ़ै ॐ सद्योजातप्रपद्यामि सद्योजाताय वैनमः चंदन फूलचढ़ावत पढ़ै ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमो रुद्राय नमः काल विकरणाय नमो बलप्रमथ सर्वभूतदमनाय नमो मनोमंथाय नमः धूप देतमें पढ़ै ॐ अघोरेभ्यो अथ घोरेभ्यो घोराघोरतरेभ्यो सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः । लेपकरत पढ़ै तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् प्रतिगुरिया पढ़ै ईशानः सर्वविद्यानां मश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिः शिवो मेस्तु सदा शिवो पुनः पढ़ै ह्रीं ॐ मालेमालेमहामाले सर्वतत्त्व स्वरूपिणी । चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदाभव ॥ इति पढ़ि लालि फूलचढ़ावै प्रणामयथा ऐश्रीं तुलसीमालिकायै नमः अथ प्राणप्रतिष्ठा ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य ब्रह्मविष्णुशिवाऋषयः ऋग्यजुः सामानि छंदांसि चैतन्यदेवतामालायाः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॐ आर्हो क्रोयं रंलं वंशं पंसंह ओं क्षंसंहंसः ह्रीं ॐ हंसः मालायावाङ्मनश्चक्षुर्घ्राणप्राणइहागच्छंतु सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा इति पढ़ि अक्षतछांड़ै पुनः पूर्ववत् पढ़ि मालायाप्राणइहागच्छंतु सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा पुनः पूर्ववत् पढ़ि मालायाजीवइहागच्छ सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा पुनः मालाया सर्वेन्द्रियाणि इहागच्छंतु सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा अक्षतछांड़ै पुनः ऐश्रीं तुलसीमालिकायै नमः इति पढ़ि जलगंधफूलधूपदीपादि पूजि पुनः अक्षतलै पढ़ै श्रीरामागच्छ भगवान् रघुवीर नृपोत्तम । जानक्यासहराजेंद्र सुस्थिरो भव सर्वदा ॥ यावत् पूजां समाप्येह तावत्त्वं सन्निधो भव ॥ रघुपुंगव राजर्षे रामराजीलोचन ॥ रघुनन्दन मे देव श्रीरामाभिमुखो भव ॥ इति पुष्पाक्षत मालापरछांड़ि आवाहनी आदि सातमुद्रा देखाय ॐ श्रीरामाय नमः इति पढ़ि जलगंधफूलधूपदीप नैवेद्यादि मालापर पूज्य १०८ राममंत्र पढ़ि गोमुखीमें करै इति मालागोमुखीयुत उरपर हाथराखि पट्सहस्रवा एकसहस्र प्रतिदिन जपै अधिकोनत्र ३४ ॥

मदर्थेनृत्यगीतादिस्तुतिपाठादिकारयेत् ॥ प्रणमेदंडवद्भूमौ हृदये मानिधाय च ३५
शिरस्याधाय मद्दत्तं प्रसादं भावनामयम् ॥ पाणिभ्यां मत्पदे मूर्द्धनि गृहीत्वा भक्तिसं-
युतः ३६ रक्षमांघोरसंसारदित्युक्त्वा प्रणमेत् सुधीः ॥ उद्वासयेद्यथा पूर्वप्रत्य-
ग्योतिषिसंस्मरन् ३७ ॥

(मत्पदार्थे पाठादिस्तुतिनृत्यगीतादिकारयेत् च हृदये मानिधाय भूमौ दण्डवत् प्रणमेत्) हे लक्ष्मण मेरी प्रीत्यर्थ सहस्रनामस्तव राजादि पाठद्वारा स्तुतिकरै मेरी प्रसन्नता हेतु गुणिनको बुलाय नृत्यगानादि करावै पुनः हृदय में मेरा ध्यान राखे भूमिपै दंडकी नाईं परि प्रणाम करै यथानृसिंह पुराणे ॥ उरसा शिरसा दृष्ट्वा वचसामनसा तथा पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां प्रणामोऽष्टांग ईरितः ३५ (भावनामयं मत्पदं प्रसादं शिरसि आधाय भक्तिसंयुतः मत्पदे मूर्द्धनि पाणिभ्यां गृहीत्वा) पुनः भावनाध्यानमें मेरा दियाहुआ प्रसाद लैकै शीशपर धरे पुनः भक्तजन भक्तिअर्थात् सेवक भावकी प्रातिसहित मेरेपायै-नमें शीशधरि दोऊहाथों करिकै मेरेपद गहै ३६ (घोरसंसारतः मारक्ष इति उक्त्वा सुधीः प्रणमेत् प्रत्यग्योतिषि यथा पूर्वस्मरन् तथा उद्वासयेत्) हेदयाब्धे भयंकर संसारदुःखते मेरी रक्षा करौ ऐसा कहि सुबुद्धी प्रणाम करै पुनः आदि ज्योति मेरी दिव्यकला जो हृदयमें बसीहुई ताहि जिसप्रकार प्रथम ध्यान द्वारा हृदयते खैचि प्रतिमामें स्थापित किया ताही भौति प्रतिमाते खैचि पुनः हृदयमें स्थित करै भाव पूजा किहे पीछे हृदय में मेरा ध्यान किहे रहै ३७ ॥

एवमुक्तप्रकारेण पूजयेद्विधिवद्यदि ॥ इहामुत्र च संसिद्धिं प्राप्नोति मदनुग्रहात् ३८
मद्भक्तो यदि मामेव पूजां चैव दिनेदिने ॥ करोति मम सारूप्यं प्राप्नोत्येव न संशयः ३९
इदं रहस्यं परमं च पावनं मयाैव साक्षात्कथितं सनातनं ॥ पठत्यजस्रं यदिव शृणोति
यः स सर्वपूजाफलभाङ्गं न संशयः ४० एवं परात्मा श्रीरामः क्रियायोगमनुत्तमं ॥ पृ-
ष्टः प्राह स्वभक्ताय शेषां शायमहात्मने ४१ पुनः प्राकृतवद्रामो मायामालंब्य दुःखि-
तः ॥ हासीतेति वदन् नैव निद्रालंभे कथंचन ४२ ॥

(एवं उक्तप्रकारेण यदि विधिवत् पूजयेत् मत्पदं अनुग्रहात् इह च अमुत्र संसिद्धिं प्राप्नोति) हे लक्ष्मण इस मेरी पूर्ब कहीहुई प्रकार करिकै जो प्राणी विधिवत् पूजन करै तो मेरी अनुग्रह अर्थात् आपना मानि सदावया राखनेते वाको इस लोकमें पुनः परलोकमें सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है ३८ (चमत्भक्तः यदि एवं मां पूजां एव दिनेदिने करोति सः मम सारूप्यं एव प्राप्नोति संशयः न) पुनः मेरा भक्त जो इसी प्रकार मेरा पूजा निश्चय करि प्रतिदिन जीवन पर्यंत करै सो मेरी सारूप्य मुक्तिको निश्चय करि प्राप्त होइ यामें संशय नहीं है ३९ (इदं परमं रहस्यं सनातनं च पावनं साक्षात् मयाैव कथितं यदि भजसुं पठति बायः शृणोति स सर्वपूजाफलभाङ्गं संशयः न) हे लक्ष्मण यह पूजाविधान परम गुप्त रहस्य सनातन प्राचीन कालते चली आवती है यथा हारीत अम्बरीष प्रतिकहे पुनः पावनभाव सुलभ जीवको पावन करता सोई साक्षात् मैने तुम प्रति निश्चय करि कहा ताहि जो नित्यही पढ़ताहै वा जो मन लगाय सुनताहै सो सबदशा वरण पूजाके फलको भागी होताहै यामें संशय नहीं है ४० (एवं पृष्टा क्रिया योगं अनुत्तमम् परात्मा श्रीरामः स्वभक्ताय महात्मने शेषां शायमहात्मने) शिवजी कहत हे गिरिजा इस प्रकार पृष्टा क्रिया जो लक्ष्मण जी क्रियायोग भाव पूजन द्वारा प्रभुकी प्राप्ति अनुत्तम भाव जासों उत्तम और पदार्थ नहीं ऐसा श्रेष्ठ ताहि विधिवत् परमात्मा श्री रघुनाथ जी आपने भक्त महात्मा

शेषको अंशश्री लक्ष्मण जी के अर्थ कहते भये भाव जो प्रथम पूछे सोई क्रियामार्ग प्रभु लक्ष्मण प्रति वर्णन कीन्हें ४१ (पुनः रामः प्राकृतवत् मायां बालंब्यदुःखितः हासीताइतिबदन एवकथंचन निद्राक्षेभे) पुनः रघुनन्दन प्राकृत मनुष्य की नाई मायाके बालंब्य करिके हासीता ऐसा शब्द बारम्बार उच्चारण करत निश्चयकरिके ताते किसी भांति नहीं निद्रा पावतेहैं ४२ ॥

एतस्मिन्नंतरे तत्र किष्किंधायां सुबुद्धिमान् ॥ हनूमान्प्राह सुग्रीवमेकांतिकपि नायकम् ४३ शृणुराजन् प्रवक्ष्यामि तवैवहितमुत्तमम् ॥ रामेण ते कृतः पूर्वमुपकारो ह्यनुत्तमः ४४ कृतघ्नवत्त्वयानूनं विस्मृतः प्रतिभाति मे ॥ त्वत्कृते निहतौ बाली वीरस्त्रैलोक्य सम्मतः ४५ राज्ये प्रतिष्ठितोऽसित्वं तारां प्राप्तोऽसि दुर्लभाम् ॥ सरामः पर्वतस्याग्रे भ्रात्रा सहवसन् सुधीः ४६ त्वदागमनमेकाग्रमक्षिते कार्यगौरवात् ॥ त्वंतुवानरभावेन स्त्री सक्तो नावबुद्ध्यसे ४७ करोमीति प्रतिज्ञायसीतायाः परिमार्गणम् ॥ न करोषि कृतघ्नस्त्वं हन्यसे बालिवद्रुतम् ४८ ॥

(एतस्मिन्नंतरे किष्किंधायां तत्र एकांतिकपि नायकं सुग्रीवं सुबुद्धिमान् हनूमान्प्राह) ताही समय किष्किंधा पुरमें तहां एकांत देशमें बैठेहुये जो बानरोंके राजा सुग्रीव तिन प्रति सुबुद्धी हनूमान् बोले ४३ (राजन् तव एव उत्तमं हितं प्रवक्ष्यामि शृणु हि अनुत्तमं ते उपकारः पूर्वमेव ते कृतः) हनूमान् बोले हे राजन् तुम्हारा निश्चय करिके उत्तम हित में कहताहों सो सुनिये निश्चय करिके उत्तम तुम्हारा उपकार पूर्वही रघुनन्दनने किया भाव अब तुमको उचितरहै उनको कार्य करते ४४ (त्वया कृतघ्नवत्तूनं विस्मृतः प्रतिभाति मे त्रैलोक्यसम्मतः वीरः बाली त्वत्कृते निहतः) तुमने कृतघ्न की नाई निश्चय करिके उपकारको भूलिगये ऐसा मालूम होताहै मोको देखिये तीनहैं लोकमें प्रसिद्ध रहा ऐसा वीरवाली सो तुम्हारे हेत रघुनन्दन ने मारा ४५ (त्वं राज्ये प्रतिष्ठितोऽसि दुर्लभाम् तारां प्राप्तोऽसि सरामः सुधीः भ्रात्रा सह पर्वतस्य आग्रे वसन्) हे सुग्रीव तुम राज्यपद पर स्थित भयो तथा दुःखों करिके नहीं लाभ होनेवाली रहै सो ताराके भोगको प्राप्त भयो जिनकी कृपाते सो राम सुबुद्धी भाई लक्ष्मण करिके सहित पर्वतपर बासकिहे ४६ (कार्यगौरवात् एकाग्रे वत्त्वागमनं ईक्षते तु त्वं वानरभावेन स्त्रीसक्तः अवबुद्ध्यसे न) सीताजीकी खबर शत्रुघात इत्यादि बड़े भारी कार्यकी चाहते रघुनन्दन एकांतमें तुम्हारे आगमन की इच्छा करतेहैं पुनः तुम बानर जातिके पशु स्वभाव करिके स्त्री में आसक्त कुछ ज्ञानतै नहींहो ४७ (सीतायाः परिमार्गणम् करोमि इति प्रतिज्ञाय करोषि न त्वं कृतघ्नः बालिवद्रुतम् हन्यसे) सीताको मैं ढूँढ़ोंगो इत्यादि प्रतिज्ञा करिके सो कार्य पूरा किहेउ न ताते तुम कृतघ्नहो इस दोषते बालीकी नाई तुमभी मारे जाउगे यही निश्चय जानिलेउ ४८ ॥

हनूमद्वचनं श्रुत्वा सुग्रीवो भयविक्कलः ॥ प्रत्युवाच हनूमन्तं सत्यमेव त्वयोदितम् ४९ शीघ्रं कुरु मदाज्ञां त्वं वानराणां तरस्विनाम् ॥ सहस्राणि दशेदानीं प्रेषयाशु दिशो दश ५० सप्तदीपगतान्सर्वान् वानरानानयंतु ते ॥ पक्षमध्ये समायांतु सर्वे वानरपुंगवाः ५१ येषामतिवर्त्तते ते वध्यामेन संशयः ॥ इत्याज्ञाप्य हनूमन्तं सुग्रीवो गृहमाविश ५२ सुग्रीवाज्ञां पुरस्कृत्य हनूमान्मन्त्रिसत्तमः ॥ तत्क्षणे प्रेषयामास हरीन्दशदिशः सुधीः ५३ अगणितगुणसत्त्वान्वायुवेगप्रचारान्वनचरणमुख्यान्पर्वताकार

रूपान्॥पवनहितकुमारःप्रेषयामासदूतानतिरभसतरात्मादानमानादितृप्तान् ५४ ॥

इतिश्रीमदध्यारामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किधाकाण्डेचतुर्थःसर्गः ॥

(हनूमत्बचनंश्रुत्वा भयविह्वलः सुग्रीवःहनूमंतंप्रतिउवाच त्वयाउदितंसत्यंएव) हनुमान् को बचन सुनि डरते व्यकल सुग्रीव हनुमान् प्रति बोले कि जो तुमने कहा सो सत्य है निश्चय करिके ४६ (मत्प्राज्ञांत्वंशीघ्रं कुरुदशसहस्राणि तरस्विनाम् वानराणां दशदिशः इदानीं आशुप्रेषय) सुग्रीव बोले हे हनुमान् अब मेरी आज्ञा को तुम शीघ्र ही करौ दशहजार वेगवन्त वानरों को दशोदिशों को इस) समय शीघ्र ही पठावौ ५० (ते सप्तदीपगतान् वानरान्सर्वान् आनयंतु पक्षमध्ये सर्वे वानरपुंगवाः संभ्रायांतु ते वानर दशो दिशि जाय कै सातौ दीपन में प्राप्त जहां तक वानर हैं तिन सबन को बुलाय लावें एक पक्ष के मध्य में सब वानर श्रेष्ठ इहां आय प्राप्त होवें भाव अधिष्ठ बिलंब न लगावहिं ५१ (ये पक्ष अतिवर्तते मेव ध्यासंशयः न हनूमंतं प्राज्ञाप्य सुग्रीवः गृहं अविशत्) जे वानर पक्ष को अत्यंत विताय कै आवेंगे तिनको मैं बध करौंगो यामें संशय नहीं इत्यादि हनुमान् को आज्ञा करि सुग्रीव घरमें प्रवेश किये ५२ (सुग्रीवश्च आज्ञां पुरस्कृत्य सुधीः हनूमान् मंत्रिसत्तमः दशदिशः हरीन् तत्क्षणे प्रेषयामास) सुग्रीव की आज्ञामानि सुबुद्धी हनुमान् मंत्रिनमें श्रेष्ठ सो दशोदिशोंमें वानरों को तिसीक्षण पठावते भये ५३ (अतिरभसतर आत्मापवनहितकुमारः दानमानादितृप्तान् दूतान् प्रेषयामास कथं भूतान् वनचरगणमुख्यान् पर्वताकाररूपान् अगणितगुणसत्त्वान् वायुवेगप्रचारान्) रघुनाथजिके कार्य करि-वेको अत्यंत हर्षत रहै आत्मा में जिनके ऐसे हनुमान् पवन के प्रियपुत्र सो दानदैं सन्मान करि तृप्त कीन्हेहुये जो दूत तिनहिं पठावते भये कैसेहैं दूत वानर गणमें मुख्य पर्वताकार रूप अनेकगण गुण पराक्रम पवन समवेगहैं जिनमें ५४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे
किष्किधाकाण्डेचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

रामस्तुपर्वतस्याग्रेसणिसानौनिशामुखे ॥ सीताविरहजंशोकमसहन्निदमब्रवीत् १
पश्यलक्ष्मणमेसीताराक्षसेनहतावलात् ॥ मृतामृतावानिश्चेतुंनजानेऽद्यापिभामि
नीम् २ जीवतीतिममब्रूयात्किंचिद्वाप्रियकृत्समे ॥ यदिजानामितांसाध्वींजीवतीं
यत्रकुत्रवा ३ हठादेवहरिष्यामिसुधामिवपयोनिधेः ॥ प्रतिज्ञांशृणुमेभ्रातर्येनमे
जनकात्मजानीतातंभस्मसात्कुर्यासपुत्रवलवाहनम् ४ ॥

सवैया ॥ बिरहार्त लखेऽनुज कोपिचले गिरिजा भ्रमपै शिवबोध करे । सुनि लक्ष्मण रोषसुकंठडरे
तियपूजि बिनम्र सुलाय घरे ॥ सभयातुर आय प्रणाम किये सुगैरै तिन भेंटि लगाय गरे ॥ सुगरानुज
सा चढ़ि यान चले जयश्री करुणाकर रामहरे ॥ (तुरामः मणिसानौ पर्वतस्याग्रेसीताविरहजंशो
कंनिशामुखे असहन् इदं अब्रवीत्) पुनः रघुनन्दन मणि मय एकांत स्थानपर्वतके शिखरपर बैठे हुये
सीता के बियोग ते बिरह करिके उत्पन्न जो दुःख ताहि सौंभ समय न सहि सके अर्थात् कार्तिक
शुक्ल पूर्णिमा को चंद्रमा उदय भयो सो करुणा रस को उद्दीपन बिभाव देखिं दुःख स्थाई परि पूर्ण
भई सो न सहि सके ताते लक्ष्मण प्रति ऐसा बचन बोले १ (लक्ष्मण पश्यरक्षसेन वलात्मेसीता

हृता मृताबा अमृताभामिनीम् निश्चेतुं अद्यापि न जाने) हे लक्ष्मण देखिये राक्षस करि कै जबरई मेरी सीता हरिगई सो मरि गई अथवा जीवत है यह भामिनी को निश्चय हाल अवहीं तक न जानि पाये भाव किसदशा ते कहां पर है २ (वाकश्चित् जीवती इति मम ब्रूयात् समेप्रियकृत्वा तां सार्वभौमिजीवतीं यत्र कुत्र जानामि) बा कोऊ जन सीता को जीवती ऐसा मोसो कहै सो मो को परम प्रिय अथवा हे लक्ष्मण उस पतिव्रता को जो जीवती हुई जहां कहों जानि पावों तौ ३ (पयो नियेः सुगंधं हठात् एव हरिष्यामि हे भ्रातः मे प्रतिज्ञां शृणु मे जनकात्मजा येन नीता तं स पुत्र बलवाहनम् भस्मसात्कुर्याम्) यथा क्षीर सागर मयिकै अमृत निकारा गया है ताहीं भांति बरबस बलते निश्चय करि हरि लैहों हे भाई लक्ष्मण मेरी प्रतिज्ञा को सुनौ मेरी प्रिय पत्नी जनक नंदिनी जिस करि कै हरी गई ताहि सहित पुत्र सेना हाथी घोड़े रथादि वाहन इत्यादि सर्वस भस्म करि देहों ४ ॥

हासीते चंद्रवदने वसंती राक्षसालये ॥ दुःखार्त्ता मामपश्यन्ती कथं प्राणान् धरिष्यसि ५
चंद्रोपि भानुवद्भाति मम चंद्राननां विना ॥ चंद्रत्वं जानकीं स्पृष्ट्वा करैर्मां स्पृश शीतलैः ६
सुग्रीवोऽपि दयाहीनो दुःखितमानं पश्यति ७ राज्यं निष्कंटकं प्राप्य स्त्रीभिः परितो रहः ॥ कृतघ्नो दृश्यते व्यक्तं पानासक्तोऽतिकामुकः ८ नायाति शरदं पश्यन्नपि मार्गयितुं प्रियाम् ॥ पूर्वोपकारिणं दुष्टः कृतघ्नो विस्मृतो हि माम् ९ हन्मि सुग्रीवमप्येवं स पुरसहबांधवम् ॥ बालीयथा हतो मेऽद्य सुग्रीवोऽपि तथा भवेत् १० इति रुष्टं समालोक्य राघवं लक्ष्मणोऽब्रवीत् ॥ इदानीमेव गत्वा हं सुग्रीवं दुष्टमानसम् ११ ॥

(हासीते चंद्रवदने राक्षसस्य बालये वसंती मां अपश्यन्ती दुःखार्त्ता प्राणान् कथं धरिष्यसि) विलापकरि प्रभु बोले हा सीते हा चंद्रवदने तुम राक्षसके घरमें वास करतीहों सो मोहिं बिना देखे दुःख करिकै पीड़ित प्राणनको कैसे धारण करौगी ५ (चंद्राननां विना चंद्रः अपि मम भानुवत् भाति चंद्रत्वं जानकीं स्पृष्ट्वा शीतलैः करैः मां स्पृश) चंद्रवदनी सीता बिना चंद्रमा शीतलभी सोऊ निश्चय करिकै मोको सूर्य वत्ताप कारक भासता है हे चंद्रतू आपनी किरणों सों जानकीको स्पर्श करि सोई शीतल किरणों करि कै मोहिं स्पर्श करु ६ (सुग्रीवः अपि दयाहीनः मां दुःखितं पश्यति) सुग्रीव भी निश्चय करिकै दयाहीन निठुर है काहेते मैं जो दुखित ताहि नहीं देखता है अपने आनन्दमें भूला पराहै ७ (निष्कंटकं राज्यं प्राप्य पानासक्तः अतिकामुकः रहः स्त्रीभिः परितोऽव्यक्तं पश्यते) निष्कंटक राज्य पाया सोमदपुनः मदिरापान में असक्त पुनः अत्यन्त कामवश अरु एकांत भंतहपुरमें स्त्रीगण घेरैतिनके भोगमें पराहै ताते प्रसिद्धही कृतघ्न देखि परताहै ८ (शरदं पश्यन्नपि प्रियाम् मार्गयितुं नायाति दुष्टः कृतघ्नः पूर्वोपकारिणं मां विस्मृतो हि) शरदं पश्यन्नपि प्राप्त देखतहू संते प्रिया के दूढ़बे हेतु अवतक न आया ऐसा दुष्ट कृतघ्न है कि पूर्व उपकार करनेवाला जो मैं हों ताहि भूलि गया निश्चय करिकै ९ सपुरसह बांधव सुग्रीवं अपि एवं हन्मि यथा मे बालीहितः तथा अद्य सुग्रीवः अपि भवेत्) सहित पुर सहित बंधुवर्ग सुग्रीव को निश्चय करिकै इसप्रकार मारिहों जा भांति पूर्वमेंने बालीको मारा ताही भांति अब आजु सुग्रीव भी निश्चय करिहोइगो १० (इति रुष्टं राघवं समालोक्य लक्ष्मणः अब्रवीत् दुष्टमानसं सुग्रीवं इदानीं एव अगंगत्वा) इसप्रकार क्रोधयुक्त रघुनन्दनको देखि लक्ष्मण बोलते भये कि दुष्टात्मा सुग्रीवके पास इसीसमय निश्चय करिकै मैं जाताहों ११ ॥

मामाज्ञापय हत्वा तमायास्ये रामतो तिकम् ॥ इत्युक्त्वा धनुरादाय खड्गं तूष्णीमेव च १२

गंतुमभ्युद्यतं वीक्ष्य रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥ न हन्तव्यस्त्वया वत्स सुग्रीवो मे प्रियः
सखा १३ किंतु भीषय सुग्रीवं बालिवत् त्वं हनिष्यसे ॥ इत्युक्त्वा शीघ्रमादाय सुग्रीवप्र-
तिभाषितम् १४ आगत्य पश्चाद्यत्कार्यं तत्करिष्याम्यसंशयं ॥ तथेति लक्ष्मणो ग-
च्छत्वरितो भीमविक्रमः १५ किष्किंधां प्रतिकोपेन निर्देहन्निव वानरान् ॥ सर्वज्ञो
नित्यलक्ष्मीको विज्ञानात्मा पिराधवः १६ सीतामनुशुशोचार्त्तः प्राकृतः प्राकृतामि-
व ॥ बुद्ध्यादिसाक्षिणस्तस्य मायाकार्यातिवर्तिनः १७ ॥

(हेराममां आज्ञापयतं हत्वा तैः इति उक्त्वा खड्गतूणरिच एव धनुः आदाय) हेरघुनाथ
जी मोहिं आज्ञा दीजिये तेहि सुग्रीवको मारिलाय तुम्हारे समीप प्राप्त करौं ऐसा कहि तरवारितरक-
स कटिमें बांधि पुनः निश्चय करि धनुषहाथमें लय करि १२ (गंतुं अभ्युद्यतं वीक्ष्य लक्ष्मणं रामः अब्र-
वीत् वत्स सुग्रीवः मे प्रिय सखा त्वयान हन्तव्यः) अब्रसजि चलने पर उद्यत देखि लक्ष्मण प्रतिरघु नंद-
न बोले हे बत्स लक्ष्मण सुग्रीव मेरा प्रिय सखा है इस कारण तुम करि ब्यकरण वियोग्य नहीं है १३ (किं-
तु सुग्रीवं भीषय बालिवत् हनिष्यसे इति उक्त्वा सुग्रीवप्रति भाषितं शीघ्रमादाय) क्योंकि सुग्रीव को ड-
रपाय दिहेउ कि जोराम कार्यभुलाये तौ बाली कीनाई तू भी मारा जायगो ऐसा कहि पुनः सुग्रीवको
कहा बचन शीघ्र ही आय हमको सुनावो १४ (आगत्य पश्चात् कार्यं तत् असंशयम् करिष्यामि तथा
इति भीम विक्रमः लक्ष्मणः त्वरितः अगच्छत्) उद्यते लौटि आये पीछे मोको जो कार्य करना मंजूर होई
सो बिना संशय करिहौं इति सुनि बोले हे महाराज जैसा आप कहतेहौं सोई करिहौं ऐसा कहि भयंकर
है पराक्रम जिनके सो लक्ष्मण तुरत ही चले १५ (वानरान् निर्देहन् इव किष्किंधां प्रतिकोपेन नित्य
लक्ष्मीकः सर्वज्ञः विज्ञानात्मा अपिराधवः) वानरोंको मानहु भस्म करि देवेंगे इस भांति किष्किंधा प्रति
कोप करि कै लक्ष्मण गये पूर्व ऐश्वर्य सुनि अब माधुर्य सुनि पार्वती शंका कीन्ही कि जो नित्य लक्ष्मी
युक्त सर्वज्ञ विज्ञानमय आत्मरूप रघुनाथजी १६ (प्राकृतः प्राकृता इव सीतां अनुशुशोचार्त्तः बुद्ध्यादि
साक्षिणः तस्य माया कार्यमतिवर्तिनः) यथा संसारी मनुष्य स्त्रीवियोगमें दुखित ताही भांति राधव
सीताके वियोगमें दुखित शोचकरते हैं तौ जो बुद्धिमनादिको साक्षीभाव सबके अंतःकरण की गति जा-
नने वाले सब सों भिन्नतिन रघुनन्दन के माया कार्य अत्यंत लक्ष्म देखि परते हैं १७ ॥

रागादिरहितस्यास्य तत्कार्यं कथमुद्भवेत् १८ ब्रह्मणोक्तं मृतं कर्तुं राज्ञो दशरथस्य
हि ॥ तपसः फलदानाय जातो मानुषवेषधृक् १९ मायया मोहिताः सर्वे जना अज्ञानसंयु-
ताः ॥ कथमेषां भवेन्मोक्ष इति विष्णुर्विचिंतयन् ३० कथां प्रथयितुं लोके सर्वलोक-
मलापहाम् ॥ रामायणाभिधारा मोभूत्वा मानुषचेष्टकः २१ क्रोधं मोहं च कामं च व्यव-
हारार्था सिद्धये ॥ तत्तत्कालोचितं गृह्णन् मोहयत्यवशाः प्रजाः ॥ अनुरक्त इवाशेषगु-
णेषु गुणवर्जितः २२ विज्ञानमूर्तिर्विज्ञानशक्तिः साक्ष्यगुणान्वितः ॥ अतः कामादि-
भिर्नित्यमावलितो यथानभः २३ ॥

(रागादिरहितस्य अस्य तत्कार्यं कथं उद्भवेत्) रागद्वेषादिरहित सदा एकरस अखंड आनन्दरूपतिन रघु-
नन्दन के तिस मायाके कार्य कैसे उत्पन्न भये इति संदेह परशिवजी समाधान करते हैं १८ (ब्रह्मणोक्तं
मृतं कर्तुं) रावण बध हेतु ब्रह्मा को कहा बचन सत्य करिबे हेतु पुनः (राज्ञो दशरथस्य हितपसः

फलदानायमानुष वेषधृक्जातः) राजा दशरथ के तपस्या को फल देने हेतु मनुष्य वेष धरि उत्पन्न भये भाव मनुष्य के हाथ रावण की मृत्यु पुत्र है प्राप्त होना दशरथ की तपस्या को फल सो बिना मनुष्य बने दोऊ कैसे पूरी है सती रहें इस हेतु मनुष्य वेष ते अवतीर्ण भये १६ (अज्ञानसंयुताः सर्वेजनाः मायामोहिताः एषामोक्षकथंभवेत् इतिविष्णुःविचिंतयन्) अज्ञान सहित सब जन मेरी माया करि कै मोहित इन लोक जनों की मोक्ष कैसे होय ऐसा विष्णु महाराज चिंतवन कीन्हे २० (सर्वलोकमलापहं रामायणाभिधांकथां लोके प्रथयितुंरामःमानुष चेष्टकःभूत्वा) सब लोक जनों के पाप नाश करने वाली रामायण नामे कथा लोक में बिस्तार करने हेतु रघुनन्दन मनुष्य की ऐसी चेष्टालिये उत्पन्नभये २१ (व्यवहारार्थसिद्धयेकामंच मोहंच क्रोधंकांलोचितंतत् तत्तृहणन् गुणवर्जितःअशेषगुणेषुअनुरक्तइव अवशाप्रजाःमोहयति) जिसहेतु मानुष तनधरे सोई व्यवहारसिद्ध करने अर्थ कामपुनः मोहपुनः क्रोध इत्यादि जिसकाल में जो कार्य करनाउचित है ता समयमेंसो सो व्यवहार ग्रहणकरते हैं अर्थात् वहीचेष्टा देखावते हैं यद्यपि रजादिगुण रहित शुद्धआत्मा रूपहैं परन्तु पूर्वकार्य हेतु संपूर्ण गुणोंमें अनुरक्त की नाईगुण अवश पूजनको मांहित करतेहैं २२ (विज्ञान शक्तिःविज्ञान मूर्तिःसाक्ष्यगुणान्वितःअतः नित्यकामादिभिःअविलिप्तःयथानभः) अघटघट नाकरणहारी विज्ञानरूपा शक्तिहै जिनकी तथा कारण रहित शुद्ध आत्मतत्त्व आनन्दधन विज्ञानमय मूर्ति है जिनकी सबके साक्षी अगुणयुत रघुनाथजी हैं इसकारण नित्यही एकरस आनन्दरूपकामादिवि कारों करिकै नहींलिप्त होते हैं यथा आकाशमें धूमधूरि जलपवन सब देखनेमात्र हैं लिप्तकुछ नहीं तैसेही रामहैं २३ ॥

विंदन्तिमुनयःकेचिज्जानन्तिसनकादयः ॥ तद्भक्तानिर्मलात्मानःसम्यक्जानन्तिनि
त्यदा २४ भक्तचित्तानुसारेणजायतेभगवानजः ॥ लक्ष्मणोऽपितदागत्वाकिष्कि
धानगरान्तिकम् २५ ज्याघोषमकरोत्तीव्रम्भीषयन्सर्ववानरान् ॥ तंदृष्ट्वाप्राकृता
स्तत्रवानरावप्रमूर्द्धनि २६ चक्रुःकिलकिलाशब्दंधृतपाषाणपादपाः ॥ तान्दृष्ट्वा
क्रोधताम्राक्षोवानरान्लक्ष्मणस्तदा २७ निर्मूलान्कर्तुमुद्युक्तोधनुरानम्यवीर्य
वान् ॥ ततःशीघ्रंसमागत्यज्ञात्वालक्ष्मणमागतम् २८ ॥

(केचिन्मुनयः विन्दन्तिसनकादयः जानन्तिनिर्मलात्मनः तद्भक्तानित्यदासम्यक् जानन्ति)
रघुनन्दनकी माधुर्य लीलामें सबैभूलें हैं परन्तु कोऊकोऊ मुनिलोग परमात्मतत्त्व करिकै देख
ते हैं अरुसनकादि समाधि द्वाराकछु जानतेहैं अरुजिनकी अमल आत्माहै ऐसेराम भक्तते नित्यही
रघुनन्दन को सम्पूर्ण प्रकार ते जानते हैं भाववै नहीं माधुर्यमें भूलते हैं २४ (भगवान् अजः भक्त
चित्तानुसारेण जायतेतदालक्ष्मणःअपि किष्किधा नगरान्तिकसंगत्वा) भगवान् अजन्महैं परन्तुभक्त
न के चित्त अनुसार भावजैसा भक्तोंको मनोर्थ होताहै तैसेही उत्पन्न होते हैं इसकारण भक्त सब
जानते हैं ता समय लक्ष्मण निश्चय करि किष्किधा नगर के समीप जातेभये २५ (सर्ववानरान्
भीषयन्तीव्रज्याघोषं अकरोत्तंदृष्ट्वावप्रमूर्द्धनितत्रप्राकृताःवानरा) सबवानरनको डरपावत संते
बड़ा कठोर रोदाकोशब्द करतेभये तिनहि देखि तहां किलाको जो धुस है तापर खड़ेनौकरी वाले
जे सामान्य वानर हैं २६ (पाषाणपादपाःधृतकिलकिलाशब्दंचक्रुःतान्वानरान् दृष्ट्वातदालक्ष्मणः
क्रोधताम्राक्षः) पत्थरके शिलावृक्ष धारन करि किलाकिला शब्द करतेभये भाव युद्धपरउद्यत तिन

बानरों को देखि लक्ष्मण क्रोधितो नेत्रलाले हँगये हैं जिनके २७ (वीर्यवान् धनुःआनम्यनिर्मूलान् कर्तुंउद्युक्तःततःलक्ष्मणंआगतमज्ञात्वाशङ्घिसमागत्य) बड़ेपराक्रमवंतलक्ष्मणसबाण धनुष खेंचिवान रोंको निर्मूलनाश करिवेको खड़ेभये ता समय अंगद लक्ष्मण को आगमन जानिकै मन्दिर ते उठि शीघ्रही आयकै २८ ॥

निवार्यवानरान्सर्वानंगदोमंत्रिसत्तमः ॥ गत्वालक्ष्मणसामीप्यंप्रणनामसदण्डवत् २९ ततोऽंगदं परिष्वज्य लक्ष्मणः प्रियवर्द्धनः ॥ उवाच वत्स गच्छ त्वं पितृव्याय निवेदय ३० समागतं राघवेण चोदितं रौद्रमूर्तिना ॥ तथेति त्वरितं गत्वा सुग्रीवाय निवेदयत् ३१ लक्ष्मणः क्रोधताम्राक्षः पुरद्वारि विहितः ॥ तच्छ्रुत्वा तीव्रसंश्रुतः सुग्रीवो वानरेश्वरः ३२ आहूय मंत्रिणां श्रेष्ठं हनूमन्तं तथा ब्रवीत् ॥ गच्छ त्वमंगदेनाशु लक्ष्मणं विनयान्वितः ३३ सांत्वयत् कोपितं वीरं शनैरानय मंदिरम् ॥ प्रेषयित्वा हनूमन्तं तारामाह कपीश्वरः ३४ ॥

(सर्वान्वानरान् निवार्य मंत्रिसत्तमः अंगदः लक्ष्मणसामीप्यंगत्वासदण्डवत् प्रणनाम) सबबानरों को रोकि पुनः मंत्रिमें उत्तम अंगद लक्ष्मणजीके समीप जाय दण्ड प्रणाम कीन्हे २९ (ततः प्रियवर्द्धनः लक्ष्मणः परिष्वज्य अंगदं उवाच वत्स त्वंगच्छ रौद्रमूर्तिनाराघेवणचोदितं समागतं पितृव्याय निवेदय तथा इति त्वरितं गत्वा सुग्रीवाय निवेदयत्) तदनन्तर प्रियजनोंके विभव बढ़ावनेवाले लक्ष्मण हृदयमें लगाय मिलि अंगद प्रतिबोले हे वत्स तुमजाउ क्रोध मूर्ति रघुनन्दन करिकै पठावाहूआ मेरा आगमन अपने पिताके अर्थ निवेदन करौ भाव खबरि जनायदेउ बहुत भली ऐसा कहि अंगद तुरतही जाय सुग्रीवके अर्थ निवेदन कीन्हे ३० । ३१ (क्रोधताम्राक्षः लक्ष्मणः वहिः पुरद्वारिस्थितः तत्श्रुत्वा वानरेश्वरः सुग्रीवः अतीव संश्रुतः) अंगद बोले हे महाराज क्रोधकरि अरुणहैं नेत्र जिनके ऐसे लक्ष्मण बाहेरपुरके द्वारपर खड़ेहैं भावजानकीके परिमार्गण हैत उनके पास नहीगयो तापर क्रोधकरि रघुनन्दन पठायेहैं इति अंगदको वचन सो सुनिकै बानरोंके राजा सुग्रीव अत्यंत डरि उठे ३२ (मंत्रिणां श्रेष्ठं हनूमन्तं आहूय अथ अब्रवीत् अंगदेन त्वं आशु गच्छ विनयान्वितः लक्ष्मणं) नीलनल सुखे न जामवानादि मंत्रिमें श्रेष्ठ जो हनूमान तिनहिं बोलाय तिन प्रति अब सुग्रीव बोलतेभये हे हनूमान् अंगद करिकै सहित तुम शीघ्रही जाउ नम्रता पूर्वक विनती करि लक्ष्मण जोहैं तिनहिं समुभाय ३३ (कोपितं वीरं सांत्वयत् शनैः मंदिरम् आनय हनूमन्तं प्रेषयित्वा कपीश्वरः तारां भाह) कोपवंतजो वीरलक्ष्मण तिनहिं शांतकरि समुभाते हुये धीरा धीरा मंदिरको लवायलावो इसभांति हनूमानको पठाय पुनः कपीश्वर सुग्रीव ताराप्रति बोले ३४ ॥

त्वंगच्छ सांत्वयंती तं लक्ष्मणं मृदुभाषितैः ॥ शांतमंतः पुरं नीत्वा पश्चाद्दर्शय मेऽनघे ३५ भवत्विति ततस्तारामध्यक्षं समाविशत् ॥ हनूमानं गदेनैव सहितो लक्ष्मणं तिकम् ३६ गत्वा ननामशिरसाभक्त्या स्वागतं ब्रवीत् ॥ एहि वीर महाभाग भवद्गृहमशंकितम् ३७ प्रविश्य राजद्वारादन्दिष्ट्वा सुग्रीवमेव च ॥ यदाज्ञापयसे पश्चात् तत्सर्वं करवाणिभो ३८ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं भक्त्या करे गृह्य समावृत्तिः ॥ आनयामा

सनगरमध्याद्राजगृहंप्रति ३६ पश्यंस्तत्रमहासौधान्यूथपानांसमंततः ॥ जगामभ
वनंराज्ञःसुरेंद्रभवनोपमम् ४० ॥

(अनघेत्वंगच्छ सृष्टुमापितैः तंलक्ष्मणं सांत्वयंतीशांतंभ्रंतः पुरंनीत्वापश्चात् मेदर्शय) ताराप्रति
सुग्रीव बोले हेनिःपापे तुमजाउ कोमल बात न करिकै तिनलक्ष्मणको चित्त शांतकरौ शांतभयेपर
मंदिरके भीतरलाय पीछेमोंसो भेटकराग्यो ३५ (भवतु इति ततः तारामध्यकक्षांसंघाविशत् धंगदेन
एव सहितः हनूमान् लक्ष्मणांतिकम्) जैसा कहतेहौ तैसाही होगा ऐसाकहि तदनन्तर तारामध्यक
क्षाजो जनानी मर्दानी के बीचकी अगनाई है तामे स्थितभई अरु अंगद सहित हनूमान् लक्ष्मणके
समीपको चले ३६ (गत्वाशिरसाननामभक्त्यास्वागत अग्रवीत्महाभागवीरभवद्गृहंभ्रशंकितंएहि)
समीपजाय शिरनाय करिकै प्रणामकरि भक्ति करिकै स्वागत बोलतेभये भावहमारी बड़ी भाग्यभई
जो आपआये पुनः बोले हे महाभागवीर यह आपही को घरहै शंकरहित भीतरचलेआइये ३७ (प्र
विश्यराजदारादीनचएवसुग्रीवंदृष्ट्वापश्चात्पुत्राज्ञापयसेतत्सर्वकरवाणिभो) मंदिरमें पोंठिकै तारा
रुमाआदि राजाकी स्त्रियोंको निश्चयकरि सुग्रीव को देखिये सावधानहै बैठि पीछे जो आज्ञाकरौगे
सो सबकार्य हमकरेंगे ३८ (इतिउक्त्वासमारुतिः भक्त्यालक्ष्मणंकरेगृह्यनगरमध्यात्त्राजगृहंप्रतिआ
नयामास) चलोघरमें बैठि जो आज्ञादेउगे सोईकरेंगे ऐसाकहि पवन पुत्र भक्तिकरिकै लक्ष्मणको
हाथमें हाथकरिगहि द्वारतेनगरमेंलायनगरमध्यते राजाके मंदिरको लावतेभये ३९ (समंततःपश्यंस्त
त्रयूथपानां महासौधान्सुरेंद्रभवनोपमम् । राज्ञःभवनंजगाम) चारिहूदिशि देखेतहां यूथपतिनके महा-
सुंदर मंदिरहैं तिनहि देखेतहुये जो इन्द्र के मंदिर की उपमा देवे योग्य राजा सुग्रीव को मंदिर है
तहां को जाते भये ४० ॥

मध्यकक्षेगतातत्रताराताराधिपानना ॥ सर्वाभरणसंपन्नामदरक्तांतलोचना ४१

उवाचलक्ष्मणनत्वास्मितपूर्वाभिभाषिणी ॥ पाहिदेवरभद्रंतेसाधुस्त्वभक्तवत्स

लः ४२ किमर्थकोपमाकार्पाभक्तेभृत्येकपीश्वरे ॥ बहुकालमनाश्वासंदुःखमेवानुभूत

वान् ४३ इदानींबहुदुःखौघाद्भवद्विरभिरक्षितः ॥ भवत्प्रसादात्सुग्रीवःप्राप्तसौख्यो

महामतिः ४४ कामासक्तोरघुपतेःसेवार्थनागतोहरिः ॥ आगामिष्यंतिहरयोनाना

देशगता प्रभो ४५ प्रेषितादशसाहस्राहरयोरघुसत्तम ॥ आनेतुंवानरान्दिग्भ्यो

महापर्वतसन्निभान् ४६ ॥

(मध्यकक्षेगतातत्रताराधिपाननामदरक्तांतलोचनासर्वाभरणसंपन्नातारा) मध्यकक्षामें जायलक्ष्म-
ण जी तहां ताराको खड़ी देखे कैसी है ताराविष चद्रमा तद्वत्मानन मुख है जिसको पुनः मदके
भरे लालिमानेत्र कोरमें हैं जाकेसब आभूषणों करिकै भूषित है गौरतनजाको ऐसी तारा सम्मुख
आई ४१ (नत्वास्मितपूर्वाभिभाषिणी लक्ष्मणंउवाचदेवरतेभद्रपाहित्वंसाधुभक्तवत्सलः) ऐश्वर्य
में सेवक भावते प्रथम प्रणाम करि साधुर्य में मित्रभाव ते मुसुकानि पूर्वक लक्ष्मण प्रति बोली हे
देवर तुम्हारा कल्याण होय हमारी रक्षाकरौ तुम साधुभक्तन परप्रीति करनेवाले हो भावसेवकपर
क्रोध न चाहिये ४२ (भक्तेभृत्येकपीश्वरेकिमर्थकोपमाकार्पाभक्तेभृत्येकपीश्वरेः अनाश्वासंदुःखमेवानुभूत
वान्) आपही को भक्त सेवक जो कपीश्वर सुग्रीव तापर किसप्रयोजनार्थ कोपकरते हो जो कहो

कार्य भूलि विषयासक्तरहे सो कारण यहहै कि निरंतर दुःख बहुत काल भोगतारहा ४३ (इदानीं बहुदुःखोघातभवद्भिः अभिरक्षितः भवत्प्रसादात् महामतिः सुग्रीवः प्राप्तसौख्यः) अवहीं बड़े दुःख समूह ते आपही करिकै रक्षा कियागया आपही के प्रसाद दयाते महामति सुग्रीव राज्य सुखपाया ४४ (कामासक्तः हरिः रघुपतेः सेवार्थं नागतः प्रभो नानादेशगताः हरयः आगमिष्यन्ति) जो कामवश सुग्रीव कपि रघुनन्दनकी सेवाके अर्थ समीप नहीं गया तौ हे प्रभो कार्य भूलानहीं इसी हेतु सुग्रीव के बुलाये हुये अनेक देशनमें प्राप्त जो बानर ते सब आवते हैं ४५ (रघुसत्तममहापर्वतसन्निभान् बानरान् आनेतुं दशसाहस्राहरयः दिग्भ्यः प्रेषिताः) हे रघुवंशमें उत्तम महापर्वताकारवानरन को सब दिशनते बुलावेन हेतु सुग्रीव ने दशहजार वानर सबदिशनमें पठायेहैंवे सबको बुलाये लिहे आवते होंगे तौ सुग्रीव कैसे कार्य मुलाया ४६ ॥

सुग्रीवः स्वयमागत्य सर्ववानरयूथपैः ॥ ब्रधयिष्यति दैत्यौघान् रावणं च हनिष्यति ४७
त्वयैव सहितोऽद्यैव गन्ता वानरपुंगवः ॥ पश्यान्तर्भवनं तत्र पुत्रदारसुहृद्वृतम् ४८
हृष्टा सुग्रीवमभयं दत्त्वा नय सहैव ते ॥ ताराया वचनं श्रुत्वा क्रोधोऽथ लक्ष्मणः ४९
जगामांतः पुरं यत्र सुग्रीवो वानरेश्वरः ॥ रुमामालिग्य सुग्रीवः पर्यंके पर्यवस्थितः ५०
हृष्टालक्ष्मणमत्यर्थं उत्पपातातिभीतवत् ॥ तं दृष्ट्वा लक्ष्मणः क्रुद्धो मदबिह्वलितेक्षणं ५१
सुग्रीवं प्राह दुर्वृत्तविस्मृतोऽसिरघूत्तमम् ॥ बालीयेन हतो वीरः स बाणोऽद्य प्रतीक्षते ५२

(सर्ववानरयूथपैः स्वयं सुग्रीवः आगत्य दैत्यौघान् ब्रधयिष्यति च रावणं हनिष्यति) सब वानरयूथ पोंकरिकै सहित आपही सुग्रीव आइकै दैत्य समूहोंको बधकरेंगे पुनः रावण को बधकरहिंगे ४७ (वानरपुंगवः त्वया एव सहितः अद्यैव गन्ता भवन्तर्भवनं पश्यतत्र पुत्रदारसुहृद्वृतम्) वानरों में श्रेष्ठ सुग्रीव तुम करिकै सहित इसी समय निश्चय करि प्रभुके समीपको जायंग हे लक्ष्मण अब सुग्रीव के रहने को भीतरको मन्दिर तौ देखिलीजिये तहां पुत्रस्त्री मित्रादि के घेरमें वानरेंद्र बैठे हैं ४८ दृष्ट्वा अभयं दत्त्वा सुग्रीवं ते सहैव आनयतारायाः वचनं श्रुत्वा अथ क्रोधः लक्ष्मणः) उहां देखि अभय बांंह द्यकै सुग्रीव को तुम अपने साथे निश्चय करि लवायलय जाइये इति ताराके वचन सुनि अब कमपराक्रोध जिनको ऐसे जो लक्ष्मण सो ४९ (अंतःपुरं जगाम यत्र वानरेश्वरः सुग्रीवः रुमामालिग्य सुग्रीवः पर्यंके पर्यवस्थितः) रनवास मन्दिर को लक्ष्मण जातेभये जहां बानरोंके राजा सुग्रीव हैं अपनीरानी रुमाको हृदयमें लगाये सुग्रीव पलंगपर बैठे हैं ५० (लक्ष्मणं दृष्ट्वा अत्यर्थं अतिभीतवत् उत्पपातमदबिह्वलितेक्षणं तं दृष्ट्वा लक्ष्मणः क्रुद्धः) लक्ष्मण को देखि अतिशय करिकै अत्यंत डरवन्त की नाई सुग्रीव पलंगते उठे मदभरे बिह्वल नेत्रतिन सुग्रीव को देखि लक्ष्मण क्रोधित ह्वै कै ५१ (सुग्रीवं प्राह दुर्वृत्तविस्मृतोऽसिरघूत्तमम् विस्मृतोऽसि बालीवीरः येन हतः स बाणः अद्य प्रतीक्षते) क्रोधयुत लक्ष्मण सुग्रीव प्रतिबोलेते भये कि हे दुर्वृत्तदुष्टोंके आचरण करने वाले पूर्वोपकारी रघुनन्दनको विसराय दिहे भावस्त्री में आसक्तपरा है रामकार्य की सुधि नहीं है तौ बालीऐसा वीरजिसकरिकै बधभया सो बाणतेरे हेतु अबहीं बनाहै ५२ ॥

त्वमेव बालिनो मार्गं गमिष्यसि मया हतः ॥ एवमत्यंतपुरुषवदंतं लक्ष्मणं तदा ५३
उवाच हनुमान् वीरः कथमेवं प्रभाषसे ॥ त्वत्तोधिकतरो रामे भक्तोऽयं वानराधिपः ५४

रामकार्यार्थमनिशं जागर्ति न तत्र विस्मृतः ॥ आगताः परितः पश्य वानराः कोटिशः प्र
भो ५५ गमिष्यन्त्यचिरेणैव सीतायाः परिमार्गणम् ॥ साधयिष्यति सुग्रीवो रामकार्य
मशेषतः ५६ श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं सौमित्रिर्लज्जितो भवतु ॥ सुग्रीवोऽप्यर्घ्यपाद्याद्यैर्ल
क्ष्मणं संप्रपूजयत ५७ आलिंग्य प्राहरामस्य दासोऽहं तेन रक्षितः ॥ रामः स्वतेज
सालोकान् क्षणाद्धैनैव जेष्यति ५८ ॥

(मया हतः त्वं एव बालिनः मार्गं गमिष्यसि एवं लक्ष्मणं भृत्यन्तं परुषं वदंतं तदा) मेरे हाथों करिके वध है
तुभी निश्चय करि बालिहीकी मार्गको जायगो इस प्रकार लक्ष्मण भृत्यन्त कठोर वचन सुग्रीवको कहत
हरिहे ताही समय में ५३ (हनूमान् नीरः उवाच एवं कथं प्रापसे अयं वानराधिपः त्वत्तः अधिकतरः रामे
भक्तः) हनूमान् वीरबोले हे लक्ष्मण जी ऐसे कठोर वचन क्यों कहतेहौ भावये वचन विमुखोंको क-
हना चाहिये अरु ये वानरोंके राजा सुग्रीव तुमते अधिकतर रघुनंदनमें भक्तहैं ५४ (तत्र विस्मृतः नरा
मकार्यार्थमनिशं जागर्ति प्रभो पश्य कोटिशः वानराः परितः आगताः) पुनः भूलिनहीं भये हैं रघुनन्दनके
कार्यके अर्थ दिनौराति सुग्रीव जागते हैं भाव उभी व्यापारको साधन करि रहे हैं हे प्रभु देखिये सुग्रीव
के बुलाये हुये करोरिन वानर सब दिशांतें बले आते हैं ५५ (अचिरेणैव सीतायाः परिमार्गणं गमिष्यं
ति मशेषतः रामकार्यं सुग्रीवः साधयिष्यति) बिना बिलंब वशी प्रही निश्चय करिके सीताके ढूँढे हेतये वानर
सब दिशनको जायगे अवश्य खबरि लावहिगे तैसेही जामें कछु बाकी न रहे संपूर्ण रघुनाथजीको
कार्य सुग्रीव करहिगे ५६ (हनूमत् वाक्यं श्रुत्वा सौमित्रिः लज्जितः अभवत् सुग्रीवः अपि अर्घ्यपाद्याद्यैः
लक्ष्मणं संप्रपूजयत हनूमान् के वचन सुनिके लक्ष्मण लज्जाको प्राप्त भये शिरनीचे करिलिये तासमय
में सुग्रीव भी अर्घ्यपाद्य इत्यादि पोडशोप चारों करिके लक्ष्मणजी को भलीभांति पूजन कीन्हे ५७
(आलिंग्य प्राह अहं रामस्य दासः तेन रक्षितः स्वतेजसा गमः क्षणाद्धैनैव लोकान् जेष्यति) हृदयमें ल-
गाय लक्ष्मण प्रति सुग्रीव बोले कि मैं तो रघुनंदन को दास हों रघुनाथजीने मेरी रक्षा किया अपने तेज
करिके रघुनंदन आधेक्षणमें सब लोकनको जीत सके हैं ५८ ॥

सहायमात्रमेवाहं वानरैः सहितः प्रभो ५९ सौमित्रिरपि सुग्रीवं प्राह किंचिन्मयोदित
म् ॥ तत्क्षमस्व महाभाग प्रणयाद्भाषितं मया ६० गच्छामोऽद्यैव सुग्रीवरामस्तिष्ठ
तिकानने ॥ एक एवातिदुःखार्तो जानकी विरहात् प्रभुः ६१ तथेति रथमारुह्य लक्ष्म
णेन समन्वितः ॥ वानरैः सहितो राजाराममेवानुपद्यत ६२ भेरीमृदंगैर्बहुऋक्षवा
नरैः श्वेतातपत्रैर्व्यजनैश्च शोभितः ॥ नीलांगदाद्यैर्हनूमत्प्रधानैः समारुतो राघव
मभ्यगाद्धरिः ६३ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे किष्किंधाकाण्डे पंचमः सर्गः ५ ॥

(प्रभो वानरैः सहितः अहं एव सहायमात्रं) हे प्रभु वानरन करिके सहित मैं निश्चय करिके सहाय
मात्र हों सब कार्य प्रभुके तेजते होइगो ५९ (सुग्रीवं अपि सौमित्रिः प्राह हे महाभाग किंचित् मया उ-
दितम् तत् क्षमस्व मया प्रणयात् भाषितम्) सुग्रीव प्रति लक्ष्मण जी बोले हे महाभाग मैंने कछु
कठोर वचन आपको कहा ताको क्षमा कीजिये क्यों कि मैं ने अपना जानि सौची प्रीति ते आपको

कठोरवचन कहेंउ ६० (जानकी विरहात् रामः प्रभुः अतिदुःखार्तः एकएव काननेतिष्ठति अतः सु-
ग्रीव अद्यएवगच्छामः) जनकनंदिनी के विरहते रघुनंदन प्रभु अत्यंतदुःख पीड़ित अकेलही वन में
वासकिहे हैं इस कारण हे सुग्रीव इसी समय निश्चय करिके उहाँजावाचाहतेहैं ६१ (तथा इतिराजा
लक्ष्मणेन समन्वितः रथं आरुह्य वानरैः सहितः रामंएव अनुपद्यत) हे लक्ष्मण जो कहतेहो सोई
भली ऐसा कहि राजा सुग्रीव लक्ष्मणसंयुक्त रथपरचढ़ि अपरवानरों करिके सहितरघुनाथजीके पास
को निश्चय करिचलते भये ६२ (भेरीमृदंगैः श्वेतघ्रातपैत्रैः च व्यजनैः शोभितः नीलअंगदाद्यैः
हनुमत्प्रधानैः बहुऋक्षवानरैः समावृतः हरिः राववं अभ्यगात्) भेरीमृदंगादि बाजोंकरिके सहितश्वेत
छत्रपुनः चमर व्यजनों करिके शोभित नीलअंगद हनुमानादि मुखिया बहुत ऋक्षवानरों करिक
संपूर्ण घेरमें सुग्रीव रघुनाथजी के पास को जाते हैं ६३ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेकिष्किंधाकाण्डेपंचमः प्रकाशः ५ ॥

दृष्ट्वारामंसमासीनं गुहाद्वारिशिलातले ॥ चैलाजिनधरं श्यामं जटामौलिविराजितम् ॥
१ विशालनयनं शांतस्मितचारुमुखाम्बुजम् ॥ सीताविरहसंतप्तं पश्यन्तं मृगपक्षि-
णः २ रथादूरात्समुत्पत्य वेगात्सुग्रीवलक्ष्मणौ ॥ रामस्य पादयोरग्रेपेतुर्भक्तिसंयु-
तौ ३ रामः सुग्रीवमालिङ्ग्य पृष्ठानामयमंतिके ॥ स्थापयित्वा यथान्यायं पूजयामास
धर्मवित् ४ ततो ब्रवीद्रघुश्रेष्ठं सुग्रीवो भक्तिनम्रधीः ॥ देवपश्यसमायाती वानरा-
णामहाचमूम् ५ ॥

सवैया । प्रभुवंदि कपीश्वर दूतपठै हनुमानहि को मुदरीस्वदिये । बनप्यास लगीवित्रांतरगे तिय
भेदि सवै जलपान किये ॥ कपिवोधि पठायतियायइतै सुखचंदमुधा न अघातपिये । बदरीहिस्वधाम
पठायस्वई बसिये नितसानुज रामहिये ॥ (गुहाद्वारिशिलातलेसमासीनं रामं दृष्ट्वा कथंभूतं श्यामं
चैलाजिनधरंमौलिजटा विराजितम्) गुहाके द्वारेशिला के ऊपर बैठेहुये जो रघुनाथ जी तिनहि
सुग्रीव देखतेभये कैसे हैं रघुनन्दन श्यामसुंदर तनमें मृगचर्म बसन धारण किहे शीशमें जटा विरा-
जमान १ (शांतरिमतचारुमुखाम्बुजंसीताविरहसंतप्तं विशालनयनंमृगपक्षिणःपश्यन्तं) शांत है
स्वभाव मुसुकानिधुत सुंदरमुख कमलसम है जिनका जानकी जीके वियोग जनित बिरहाग्नि
करिके संतप्तहै शरीरजिनका बड़ेसुंदर हैं नेत्र जिनके मृगपक्षिन को देखिरहे हैं २ (दूरात् रथात्स
मुत्पत्य सुग्रीवलक्ष्मणौवेगात् रामस्य पादयोरग्रे भक्तिसंयुतौपेतुः) प्रभुको बैठेदेखि दूरिहीते रथ
ते उतरि सुग्रीव लक्ष्मण दोऊबड़े वेगतेथाय आयरघुनंदनके पायँन के आगे भूमि में भक्तिसंयुक्त
गिरिपेर भावेदण्ड प्रणामकीन्हे ३ (रामः सुग्रीवमालिङ्ग्य अनामयं दृष्ट्वा अन्तिके स्थापयित्वा यथान्या-
यं धर्मवित् पूजयामास) रघुनाथजी सुग्रीव को उठाये हृदय में लगाय कुशल क्षेमपूछि आपने पास
बैठारि जैसी शास्त्रकी आज्ञामित्र वर्ग सत्कार में चाहिये ताहीरीति ते धर्मज्ञ रघुनंदन सुग्रीव को
पूजनकरते भये ४ (ततः सुग्रीवः भक्तिनम्रधीः रघुश्रेष्ठं ब्रवीत् देववानराणामहाचमूम् समायाती पश्य)
तदनंतर सुग्रीव भक्ति अर्थात् सेवकभावकी प्रीतिदर्शाय नम्रधी कोमल बुद्धिकरि प्रिय वचन रघुवंश
नाथ प्रति बोलतेभये हे देवस्वयंप्रकाशरूप आपके कार्यहेत मेरी बुलाई हुई सबदीपोंते वानरोंकी

बड़ी भारी सेना सबदिशों ते चली आवतीहै ताहि देखियेभावमेंआपके कार्यको भूलानहींरहाहैं॥५॥

कुलाचलाद्रिसंभूतामेरुमंदरसन्निभाः ॥ नानाद्वीपसरिच्छैलवासिनः पर्वतोपमाः ६
असंख्याताः समायांतो हरयः कामरूपिणः ॥ सर्वदेवाशंसंभूताः सर्वयुद्धविशारदाः
७ अत्र केचिद्गजवलाः केचिद्दशगजोपमाः ॥ गजायुतवलाः केचिदन्येऽमितवलाः
प्रभोऽ केचिदञ्जनकूटाभाः केचित्कनकसन्निभाः ॥ केचिद्रक्तांतवदनादीर्घवाला
स्तथापरे ८ शुद्धस्फटिकसंकाशाः केचिद्राक्षससन्निभाः ॥ गर्जन्तः परितोयांतिवान
रायुद्धकाक्षिणः १० त्वदाज्ञाकारिणः सर्वे फलमूलाशनाः प्रभो ॥ ऋक्षाणामधि
पोवारो जाम्बवान्नामबुद्धिमान् ॥ एषमेमंत्रिणां श्रेष्ठः कोटिभल्लूकवृन्दपः ११ ॥

(कुलाचलाद्रिसंभूतानानाद्वीपसरित्छैलवासिनः मेरुमंदरसंनिभापर्वतोपमाः) हिमालयादि समूह पर्वतनमें उत्पन्न भये अनेक द्वीपन में नदीतट पर्वतनके बसने वाले मेरु मंदराचल के तुल्य पर्वताकार शरीरहैं जिनके ६ (हरयः कामरूपिणः असंख्याताः समायांतिसर्वदेवानां अशैस्संभूतायुद्धविशारदाः सर्वे) वानर इच्छा पूर्वक रूप धरने वाले असंख्यन आवतेहैं सब देवनके अंशकरिके उत्पन्नभये युद्ध कलामें प्रवीण सब हैं ७ (अत्र केचित्गजवलाः) इनमें किसी वानरके एक हाथी भरेको बल है (केचित्दशगजोपमाः) काहूके दश हाथी के समान बल है (केचित्त्रयुतगजाः वलाः प्रभो अन्येऽमित वलाः) किसीके दशहजार हाथिनकी तुल्य बलहै हे प्रभो किसीके अमित बलहै जिसकी प्रमाणे नहींके तराबल है ८ (अंजन कूटाभाः केचित्कनकसन्निभाः केचित्द्रक्तांतवदनाः केचित् तथा अपरे दीर्घ वालाः) अंजनके पर्वत के समान कांऊनील वर्ण है सोने पर्वत समकोईहै किसीको लाल मुख है तेसेही औरनके शरीरमें बड़बड़े धारहैं ९ (केचित् शुद्धस्फटिकसंकाशाः राक्षससन्निभाः युद्धकाक्षिणः वानराः परितः गर्जन्तः यांति) कोऊ शुद्धस्फटिक मणिसम श्वेतवर्ण हैं बहुत राक्षस के सम महाभयं कर हैं युद्धकी इच्छाराखे सब वानर गर्जते चले आवते हैं १० (प्रभो त्वत्त्वाज्ञाकारिणः सर्वे फलमूल शनाः) हे प्रभु आपकी आज्ञाकरने वाले सब हैं अरु फल मूल इत्यादि को भोजनकरने वाले बनमें आपदृष्टि लेंइगे (ऋक्षाणामधिपः जाम्बवान्नाम बुद्धिमान् वीरः कोटिभल्लूकवृन्दपः मेमंत्रिणां श्रेष्ठः) ऋक्षन के राजा जाम्बवान् नामबड़े बुद्धिमान् वीर हैं करोरि ऋक्षवृंदोंको पालनेवाले स्वामी हैं अरु मेरे मंत्रिनमें ये जाम्बवान् सबते श्रेष्ठहैं ११ ॥

हनूमानेपविख्यातोमहासत्वपराक्रमः ॥ वायुपुत्रोऽतितेजस्वी मंत्रीबुद्धिमतांवरः
१२ नीलोनलश्चगवयो गवाक्षोगन्धमादनः ॥ शरभोमंदवश्चैव गजः पनसएव
च १३ वलीमुखोदधिमुखः सुषेणस्तारएवच ॥ केशरीचमहासत्वः पिता हनुम
तोवली १४ एतेमेयूथपाराम प्राधान्येनमयोदिताः ॥ महात्मानोमहावीर्याः शक्रतु
ल्यपराक्रमाः १५ एतेप्रत्येकतः कोटि कोटिवानरयूथपाः ॥ तवाज्ञाकारिणः सर्वे
सर्वदेवाशंसंभवाः १६ एषवालिसुतः श्रीमानंगदोनामविश्रुतः ॥ वालितुल्यबलो
वीरो राक्षसानां वलांतकः १७ एतेचान्येचबहवस्त्वदर्थेत्यक्तजीविताः ॥ योद्धारः
पर्वताग्रेश्च निपुणाः शत्रुघातने १८ आज्ञापय रघुश्रेष्ठ सर्वेतेवशवर्तिनः १९ ॥

(एषहनुमान् विख्यातः वायुपुत्रः महासत्वपराक्रमः अतितेजस्वी बुद्धिमतांवरः मंत्री) ये हनुमान् नाम करि लोकमें प्रसिद्धपवनके पुत्र हैं महावीर्यवान् पराक्रमी भाव दुर्घट कार्यको सुगमकरि सक्त हैं अत्यंत तेजस्वी भाव अकेले सब लोक परास्त करि सक्ते हैं बुद्धिमानों में श्रेष्ठ मेरे मंत्री हैं १२ (नीलः नलः चगवयः गवाक्षः गंधमादनः शरभः मैदवः चएव गजः चएव पनसः १३ बलीमुखः दधिमुखः चएव तारः चहनुमतः पिताकेशरी महासत्वः बली) नील नल पुनः गवय गवाक्ष गंध मादन शरभ मैदव गजपनस बलीमुख दधिमुख तार पुनः हनुमान्को पिताकेशरी बड़ा श्रीरवली १४ (हे राम एते मे यूथपामहात्मानः महावीर्याः शक्रतुल्यपराक्रमाः प्राधान्येन मया उदिताः) हे रघुनाथजी ये मेरे यूथपती महात्मा महा प्रभाववंत इंद्रके तुल्य पराक्रमी हैं इत्यादि मुख्य मुख्य मैंने कहा है १५ (एते एकतः प्रतिको टिकोटिवानर यूथपाः सर्वदेवांशसभवाः सर्वतवाज्ञाकारिणः) इसमें एक एक करोड़ करोड़ वानरों के यूथपों के पति हैं सब देवतों के अंश करिके उत्पन्न भये हैं सब आपके आज्ञाकार हैं १६ (एष श्रीमान् अंगदः नाम विश्रुतः बालिसुतः बालितुल्यबलः वीरः राक्षसानां बलांतकः) ये श्रीमान् अंगदनाम प्रसिद्ध बालि के तुल्य बलवंत वीर हैं राक्षसों की सेना को नाश करने वाले हैं काल के तुल्य १७ (एते च अन्ये च बहवः पर्वताग्रैः योद्धारः च शत्रुघातने निपुणाः त्वत्तर्प्येत्यक्तजीविताः) एते तो कहे पुनः और बहुत हैं पर्वतों करिके युद्ध करने वाले पुनः शत्रुके नाश करने में प्रवीण हैं हे रघुनाथजी आपके कार्य के अर्थ जीवन आश त्यागे हैं १८ (रघुश्रेष्ठ आज्ञापयते सर्वे वशवर्तिनः) हे रघुनाथजी आज्ञा कीजिये ते सब वानर आपके वश हैं १९ ॥

रामः सुग्रीवमालिङ्ग्य हर्षपूर्णश्रुलोचनः ॥ प्राह सुग्रीवजानासि सर्वत्वं कार्यगौरवम् २० मार्गणार्थं हि जानक्या नियुक्ष्यदिरोचते ॥ श्रुत्वारामस्य वचनं सुग्रीवः प्रीतमानसः २१ प्रेषयामास बलिने वानरान् वानरर्षभः ॥ दिक्षु सर्वासु विविधान्वानरान् प्रेष्य सत्वरं २२ दक्षिणां दिशमत्यर्थं प्रयत्नेन महाबलान् ॥ युवराजं जां वन्तं हनुमन्तं महाबलम् २३ नलं सुषेणं शरभं मैदं द्विविदमेव च ॥ प्रेषयामास सुग्रीवो वचनं चेदमब्रवीत् २४ विचिन्वन्तु प्रयत्नेन भवन्तो जानकीशुभाम् ॥ मासा दर्वाक् निवर्तध्वं मच्छासनपुरःसराः २५ ॥

(सुग्रीवं आलिङ्ग्य हर्षपूर्णश्रुत्वा लोचनः रामः प्राह सुग्रीवकार्यं गौरवं सर्वत्वं जानासि) सुग्रीव को हृदय में लगाय हर्ष आँशु जल ते पूर्ण भरे नेत्र रघुनन्दन बोले हे सुग्रीव कार्य की गुरुता सब तुम जानते हो भाव स्त्री वियोग दुःख तुम को व्यापा है २० (यदिरोचते जानक्या मार्गणार्थं हि नियुक्ष्य रामस्य वचनं श्रुत्वा सुग्रीवः प्रीतमानसः) हे सुग्रीव जो तुम्हारे मनते रुचैतौ जानकीके ढूँढ़ने अर्थ वानरोंको भेजिये इति रघुनाथजी के वचन सुनि सुग्रीव प्रीति मनमें राखे २१ (वानरर्षभः बलिनः वानरान् सर्वासु दिक्षु प्रेषयामास विविधान् वानरान् सत्वरं प्रेष्य) वानरोंमें श्रेष्ठ बली वानरनको सब दिशेन विषे पठावते भये अनेक वानरनको शीघ्र ही पठाय पुनः २२ द्वैलोककी अन्वय एकमें है (युवराजं जां वन्तं महाबलं हनुमन्तं नलं सुषेणं शरभं मैदं द्विविदं अत्यर्थं महाबलान् प्रयत्नेन दक्षिणां दिशं सुग्रीवः प्रेषयामास च ददं वचनं अब्रवीत्) अंगद जामवंत महाबली हनुमान् नील नल सुषेण शरभ मैद पुनः निश्चय करि द्विविद इत्यादि जे अति शय करिके बली वीर हैं तिनहि प्रकर्षयन करिके भाव दक्षिण दिशिमें रावणके मंदिर में जानकी जी हैं तहां राक्षसी सेना बली रावण महाबली ताके पुर्निबल

क्या करि सके हैं ताते उहां महाबलवंत वीरन को भेजा चाहिये इति विचारि' इनसब को दक्षिण दिशाको सुग्रीव पठावते भये पुनः इस प्रकारको वचन बोलते भये २३।२४ (प्रयत्नेन भवंतः शुभाम् जानकीं विचिन्वन्तु मत्पुत्रः सराः मासात् पूर्वा कृनिवर्तध्वम्) वानरनप्रति सुग्रीव कहत यत्नपूर्वक तुम सब मंगल रूप जानकी जी जो हैं तिनहि ढूँढी जाय अरु मेरी आज्ञा अंगीकार करि महीना के पूर्वहीं लौटि आयो अधिक दिन बीतैं तौ खबरिलैंकै आयो इति भावः २५ ॥

सीतामदृष्ट्वा यदि वो मासादूर्ध्वं दिनं भवेत् ॥ तदा प्राणांतिकं दण्डं मत्प्राप्स्यथ वानराः २६ इति प्रस्थाप्य सुग्रीवो वानरान् भीमविक्रमान् ॥ रामस्य पाशैर्वै श्रीरामं न त्वाचोपविवेशसः २७ गच्छन्तं मारुतिं दृष्ट्वा रामो वचनमब्रवीत् ॥ अभिज्ञानार्थमेतन्मे ह्यंगुलीयकमुत्तमम् ॥ मन्त्रामाक्षरसंयुक्तं सीतायै दीयतां रहः २८ अस्मिन् कार्ये प्रमाणं हि त्वमेव कपिसत्तम ॥ जानामि सत्वं ते सर्वं गच्छ पन्थाः शुभस्तव २९ एवं कपीनाराज्ञाते विसृष्टाः परिमार्गणे ॥ सीताया अंगदमुखा बभ्रमुस्तत्र तत्र ह ३० भ्रमन्तो विध्यगहने ददृशुः पर्वतोपमम् ॥ राक्षसं भीषणाकारं भक्षयन्तं मृगान् गजान् ३१ ॥

(यदि वः सीतां अदृष्ट्वा मासादूर्ध्वं दिनं भवेत् तदा वानराः प्राणांतिकं दण्डं मत्प्राप्स्यथ) जो तुम लो-
गोंको सीताको बिना देखे महीनाते ऊपर दिन हूँ गये तब वानर प्राणघात दण्डको मौसो प्राप्त होयेंगे
भाव जो बिना खबरिलाये मासते अधिक दिन बितायकै आवहुगे तौ मैं बध करौंगो २६ (इति सुग्री-
वः भीमविक्रमान् वानरान् प्रस्थाप्य सः श्रीरामं न त्वाचरामस्य पाशैर्वै उपविवेश) इस प्रकार सुग्रीव बड़े वली
वीर वानरनको पठाय सो सुग्रीव श्रीरघुनाथजीको नमस्कार करि पुनः रघुनाथजीके समीप बैठते भये
२७ (मारुतिं गच्छन्तं दृष्ट्वा राम वचनं अब्रवीत् एतत्मे हि अंगुलीयकं उत्तमं मत्पुत्रा माक्षरसंयुक्तं अभिज्ञाना-
र्थं रहः सीतायै दीयतां) हनुमान्को जाते देखि समीप बोलाय रघुनन्दन वचन बोलते भये कि यह मेरी
मुद्रिका उत्तम मेरे नामाक्षर अंकित सहित है याको लेउ पहिचानके हेतु एकांत स्थानमें सीताके अर्थ
इसको दिहेउ २८ (कपिसत्तम अस्मिन् कार्ये त्वमेव प्रमाणहिते सर्वसत्वं जानामि गच्छतव पन्थाः शुभः) ह-
नुमान् प्रति पुनः प्रभु कहत देवानरोंमें श्रेष्ठ सीतामार्गण यह जो कार्य है ताके साधनमें तुमहीं निश्च-
य करि समर्थ हो तुम्हारा बल बुद्धि साहस मैं जानता हों जाउ तुमको पथ मंगलहारी होयगो २९
(एवं कपीनाराज्ञा विसृष्टाः अंगदमुखा ते सीतायाः परिमार्गणे तत्र तत्र ह बभ्रमुः) इस प्रकार कपिराजके पठा-
ये हुये अंगद हैं मुखिया जिनमें ते सब वानर सीताको ढूँढते हुये वन पहाड़ादि भूमिमें जहांतहां घू-
मने लगे ३० (विध्यगहने भ्रमन्तः मृगान् गजान् भक्षयन्तं भीषणाकारं पर्वतोपमम् राक्षसं ददृशुः) विध्याच-
लवनमें घूमते हुये तहां मृगनको हाथिनको खाताहुआ भयंकर सूरति पर्वत तुल्य भारी तनको एकराक्ष-
स ताहि सब वानर देखते भये ३१ ॥

रावणो यमिति ज्ञात्वा केचिद्वानरपुंगवाः ॥ जघ्नुः किल किलाशब्दं मुचन्तो मुष्टिभिः
क्षणात् ३२ नायरावण इत्युक्त्वा ययुरन्यन्महद्वनम् ॥ तृषार्ताः सलिलंतत्र नाविंद
नृहरिपुंगवाः ३३ विभ्रमन्तो महारण्ये शुष्ककंठोष्ठतालुकाः ॥ ददृशुर्गङ्गरंतत्र त-
ण्डुलमावृतं महत् ३४ आर्द्रपश्चान्नर्जौ च हं सान्निःसृतान् ददृशुस्ततः ॥ अत्रास्ते

सलिलंनूनं प्रविशामोमहागुहाम् ३५ इत्युक्त्वाहनुमानग्रेप्रविवेशतमन्वयुः ॥ स
र्वेपरस्परंधृत्वा बाहून्बाहुभिरुत्सुकाः ३६ अंधकारेमहदूरं गत्वाऽपश्यन्कपीश्व
राः ॥ जलाशयान्मणिनिभतोयान्कल्पद्रुमोपमान् ३७ ॥

(केचित्त्वानरपुंगवाः ज्ञात्वाभयंरावणः किलकिलाशब्दमुच्यंतः क्षणात्मुष्टिभिः जघ्नुः) कोई वानरोत्त-
मजाना कि यही रावणहै इति विचारियुद्धकी उत्साह करि सब किलकिलाशब्दछोड़तेहुये क्षणमात्र
वाकोमुष्टिकों करिकै मारतेभये जब वह मूर्छित भया ३२ (अयंरावणः नइतिउक्त्वाअन्यमहत्बनंययुः
हरिपुंगवाः तृषार्ताः तत्रसलिलंनाविदन्) जब युद्धपर न उद्यत भया तब विचारे कि यह रावण नहीं
है ऐसाकहि औरेमहाबनहि जातेभये वानरभ्रष्टसब पियासकरि पीड़ितभये अरु तहां कहूँ जल न-
देखे ३३ (महारण्येविभ्रमंतः कंठओष्ठतालुकाशुष्कतत्रतृणगुल्मभातृतमहत्गह्वरंददृशुः) महाबन में
धूमते हुये प्यासते कण्ठ ओष्ठ तालू सूखिगया तासमय तहां तृण कुशकाशादि गुल्म गेंदा तुलसी इ-
त्यादि भूपाहुवा एकबड़ाभारी बिबर भूमिमें देखतेभये ३४ (ततः आर्द्रपक्षान्क्रौंचहंसान्निःसृतान्दृ-
शुः भत्रनूनंसलिलंआस्तेमहागुहाम्प्रविशामः) तदनन्तर उसते पानीसो भीजेहुये पक्षनसहित क्रौंच
हंसनकोनिसरते हुये देखते भये तबअनुमान किये किया बिबरमें निश्चयकरिकै जलहै तातेमहा
गुहामें सबमिलि पैठेंगे ३५ (इतिउक्त्वाउत्सुकाअग्रेहनुमान्तमन्वयुः सर्वेपरस्परंबाहुभिः बाहून्धृत्वा
प्रविवेश) जलहै यामेंपैठी ऐसाकहि जलकीचाहते भागे हनुमान् ताके पाछे सब आपुसमें हाथोंक
रिकै एक एक को हाथपकरे बिबर में पैठते भये अंधेरेमें भ्रमित हैं कोई छूटिनजाय इसहेत हाथपक
रहैं ३६ (महतांधकारेदूरंगत्वाकपीश्वराः अपश्यन्मणिनिभतोयान्जलाशयान्कल्पद्रुमोपमान्)
अत्यंतअंधकार में दूरितक चलेगये तहां सबवानर देखतेभये स्फटिकमणि सम भमलजलभरे उत्तम
तडाग ताके समीप वृक्षलगैहैं सोकल्पवृक्षके उपमा देबेयोग्य ३७ ॥

वृक्षान्पक्वफलैर्नम्रान्मधुद्रोणसमन्वितान् ॥ गृहान्सर्वगुणोपेतान्मणिवस्त्रादि
पूरितान् ३८ दिव्यभक्षान्नसहितान्मानुषैः परिवर्जितान् ॥ विस्मितास्तत्रभवने
दिव्येकनकविष्टरे ३९ प्रभयादीप्यमानांतुददृशुः स्त्रियमेकलाम् ॥ ध्यायंतीं चीरबस
नांयोगिनीयोगमास्थिताम् ४० प्रणेमुस्तांमहाभागाभक्ताभीत्याचवानराः ॥ दृष्ट्वा
तान्वानरान्देवीप्राहयूयंकिमागताः ४१ कुतोवाकस्यदूतावामत्स्थानं किंप्रधर्षथा ॥
तच्छ्रुत्वाहनुमानाहशृणुवक्ष्यामिदेविते ४२ अयोध्याधिपतिः श्रीमान् राजादश-
रथः प्रभुः ॥ तस्यपुत्रोमहाभागोज्येष्ठोरामइतिश्रुतः ४३ ॥

(पक्वफलैः नम्रान् वृक्षान् मधुद्रोणसमन्वितान् मणिवस्त्रादिपूरितान्सर्वगुणोपेतान् गृहान्) पकेफ
लन करिकै वृक्षों की शाखानय रही हैं मधु द्रोण प्रमाण युक्त अर्थात् बतिससेर जिनमेंसहतऐसी
ममाखी लगी हैं मणि बसन भरेहुये सबगुण युत अर्थात् आतप वर्षा हिमादि सब ऋतु में सुखद
ऐसे मंदिर ३८ (दिव्यभक्षान्नसहितान्मानुषैः परिवर्जितान् विस्मिताः तत्रभवनेदिव्येकनकविष्टरे)
देवतन के खाने योग्य अन्न सहित मंदिर मनुष्यों करिकै रहित ताहिदेखि सब वानर आश्चर्य वश
भये पुनः तहां मंदिर में दिव्य कंचन मय बिछावने पर ३९ (तुएकलाम्स्त्रियमददृशुः प्रभयादीप्य
मानांचीर बसनाम्योगिनीयोगमास्थितामध्यायंतीम्) पुनः कन कासनपर अकेलाएकस्त्री कोदेखते

भये कैसी है जो अपनी प्रभाकरिकै प्रकाशमान बल्कलादि बसन धारण किहे वह योगिनी योग में स्थित अर्थात् आसन किहे प्राणायाम ध्यान करिरहीहै ४० (भक्तघाचभीत्यावानराः तामहाभा गांप्रणेमुःतान्वानरान् दृष्ट्वादेवीप्राहयूयं किंआगताः) भक्तिकरिकै पुनः भयकरिकै सबवानर तिस महाभागस्त्रीको प्रणाम करतेभये तिनवानरों को देखि सो देवी बोलती भई कि तुमसब किस कारण ते इहां आयो है सो सबहाल कहिये ४१ (कुतःवाकस्यदूताःबाकिंमत्स्थानंप्रधर्पयतत्श्रुत्वा हनूमान् आहदेविशृणुतेवक्ष्यामि) कहाते आवतंहो अथवाकिसके दूतहो अथवा किसहेत मेरेस्थान को बर्बशप्रवेश करिआयो इत्यादि वचनसुनि कै हनूमान् बोले कि हे देविसुनिये आपसों में सब हाल कहताहों४२ (अयोध्यायाःअधिपतिःप्रभुःश्रीमान् राजादशरथःनस्यजेष्ठःपुत्रःमहाभागःरामइति श्रुतः) अयोध्यापुरी के पति सवराजोंके प्रभुवड़े ऐश्वर्यवंतराजा दशरथ तिनके ज्येष्ठपुत्र बड़े भागवाले जिनको रामचन्द्र ऐसोनाम लोकन में प्रसिद्धहै ४३ ॥

पितुराज्ञांपुरस्कृत्यसभार्यःसानुजोवनम् ॥ गतस्तत्रहताभार्यातस्यसाध्वीदुरात्म ना ४४ रावणेनततारामःसुग्रीवंसानुजोययो ॥ सुग्रीवोमित्रभावेनरामस्यप्रिय बल्लभाम् ४५ मृगयध्वमितिप्राहततोवयमुपागताः ॥ ततोवनंविचिन्वंतोजान कीजलकाक्षिणः ४६ प्रविष्टागङ्गरंधोरंदैवादत्रसमागताः ॥ त्वंवाकिमर्थमत्रासि कावात्वंवदनःशुभे ४७ योगिनीचतथादृष्ट्वावानरान्प्राहहृष्टीः ॥ यथेष्टंफल मूलानिजग्ध्वापीत्वामृतंपयः ४८ आगच्छततोवक्ष्येमममृत्तांतमादितः ॥ तथेति भुक्त्वापीत्वाचहृष्टास्तेसर्ववानराः ४९ देव्यासमीपंगत्वातेवद्वांजलिपुटाःस्थि ताः ॥ ततःप्राहहनूमंतंयोगिनीदिव्यदर्शना ५० ॥

(पितुःआज्ञांपुरस्कृत्य सानुजः सभार्यःवनमगतः तत्रसाध्वी तस्यभार्यादुरात्मना रावणेनहता ततः सानुजः रामः सुग्रीयंययो मित्रभावेनसुग्रीवः) पिता की आज्ञामानि छोटे भाई लक्ष्मण तथा अपनी भार्यासीता सहित घर त्यागि वन को गये तहां तिन राम चन्द्रकी पतिव्रता भार्या दुष्टात्मा रावण करिकै हरिगई तब लक्ष्मण सहित रामचंद्र सुग्रीवके पास आय मित्रता कियासोईमित्र भाव करिकै सुग्रीव हम लोगों को आज्ञा दिया ४४। ४५ (रामस्यप्रियवल्लभाम् मृगयध्वं इतिप्राह ततः वयंवनंउपागताः जानकींविचिन्वंतः ततःजलकाक्षिणः) रघुनन्दन की प्रिय पत्नीको दूहो इत्यादि सुग्रीव आज्ञादिया तब हम लोग वन को आये जानकी को दूहृत फिरेतुपार्तभयेतब जलकी इच्छा करते हुये ४६ (धोरंगह्वरं प्रविष्टादैवात्त्रसमागताः त्वंकावाकिमर्थमत्रासिशुभेनःवद) प्यास बशजल चाहते भयंकर गुहामें पैठे दैवयोग इहां प्राप्तभये अरु आपको हों अरुकित कार्यार्थ इहां वास किहेहों हे कल्याणरूपे अपना हाल हमलोगों प्रतिकहों४७ (तथादृष्ट्वायोगिनीहृष्टीःवानरान् प्राह फलमूलानियथेष्टंजग्ध्वाअमृतंपयःपीत्वा) यथा कहे तथा प्यासे भूखे देखियोगिनी प्रसन्नमनवानरों प्रति बोली किफलमूलादि जोइच्छाहोय सो भोजनकरौ अमृत समजल पानकरौ४८ (आगच्छततो मममृत्तांतमादितः वक्ष्येतथाइतिभुक्त्वाचपीत्वाहृष्टाःतेसर्ववानराः) भोजन पानकरि आवौतवमें अपना सबहाल पूर्वतेरहों बहुत भली ऐसाकहिजाय फल खायजल पानकरि प्रसन्न मनते सब वानर ४९ (गत्वादेव्यासमीपंगत्वातेवद्वांजलिपुटाःस्थिताःततःदिव्यदर्शनायोगिनीहनूमंतंप्राह) जायदेवीकेसमीपते सब वानर हाथ जोरि खड़ेभये तब दिव्य दर्शनहैं जाके सो योगिनी हनूमान् प्रति बोलतीभई ५० ॥

हेमानामपुरादिव्यरूपिणीविश्वकर्मणः ॥ पुत्रीमहेशं नृत्येन तोषयामास भामिनी ५१
तुष्टो महेशः प्रददादिदं दिव्यपुरं महत् ॥ अत्र स्थिता सा सुदती वर्षाणामयुतायुतम्
५२ तस्या अहं सखी विष्णु तत्परा मोक्षकांक्षिणी ॥ नाम्ना स्वयं प्रभा दिव्यगंधर्वतनया
पुरा ५३ गच्छंती ब्रह्मलोकं सामामाहेदंत पश्चर ॥ अत्रैव निवसंती त्वं सर्वप्राणिवि
वर्जिते ५४ त्रेतायुगे दाशरथिभूत्वानारायणो व्ययः ॥ भूभारहरणार्थाय विचरि
ष्यति कानने ५५ मार्गं तो वानरास्तस्य भार्यामायां तिते गुहाम् ॥ पूजयित्वा यत्ता
नूगत्वारामंस्तुत्वा प्रयत्नतः ५६ यातासि भवनं विष्णो र्योगिगम्यं सनातनं ॥ इतो
हं गंतुमिच्छामि रामं द्रष्टुं त्वरान्विता ५७ ॥

(पुरा विश्वकर्मणः पुत्री हेमानाम दिव्यरूपिणी भामिनी नृत्येन महेशं तोषयामास) पूर्वकाल म
विश्वकर्मा की कन्या हेमा नामे दिव्य रूप रहै जाको नाद कला में प्रवीण तो भामिनी एक समय
में गान नृत्य करिकै महेश को प्रसन्न करती भई ५१ (महेशः तुष्टः इदं महत् दिव्यपुरं प्रददौ सा सुदती
अयुतः अयुतम्वर्षाणां अत्र स्थिता (महेश प्रसन्न हैकै यह बड़ा दिव्य पुर सो हेमाके अर्थ देते भये सो
सुंदर दांत वाली हेमा दश हजार गुणे दश हजार अर्थात् दश करोड़ वर्ष तक इहाँ वास करती रही
५२ (तस्या सखी अहं मोक्षकांक्षिणी विष्णु तत्परा पुरा दिव्यगंधर्वतनया स्वयंप्रभानाम्ना) तिस हेमा
को सखी मैं हौं मोक्षकी इच्छा राखे विष्णु के आराधन में तत्पर हौं पूर्व दिव्य नामे गंधर्व रहा ताकी
पुत्री हौं स्वयंप्रभा मेरा नाम है ५३ (सा ब्रह्मलोकं गच्छंती मां इदं आह सर्वप्राणविवर्जिते त्वं अत्रैव नि
वसंती तपः चर (सो हेमा ब्रह्मलोक को जात समय मो प्रति ऐसा कही कि सर्व प्राणिन करिकै
रहित अकेले तू इहाँ वास करती हुई तपस्या कर ५४ (त्रेतायुगे व्ययः नारायणः दाशरथिः भूत्वा
भूभार हरणार्थाय कानने विचरिष्यति) त्रेता युग में नाश रहित नारायण दशरथ के पुत्र होंगे सो
भूमि को भार उतारणार्थ वनमें विचरहिंगे तिन की स्त्री रावण हरि लै जाइगो इति शेषः ५५
(तस्य भार्या मार्गतः वानराः ते गुहाम् आयांति तान् पूजयित्वा यत्प्रयत्नतः रामं गत्वास्तुत्वा) तिन रघु-
नन्दन की भार्या सीता को ढूढ़ ते हुये वानर तेरे गुहाको आवहिंगे तिनहिं पूजन करि तब यत्न पूर्वक
रघुनन्दन के पास जायस्तुति करि ५६ (योगिगम्यं सनातनं विष्णो भवनं यातासि इतः रामं द्रष्टुं अहं त्व
रान्विता गंतुं इच्छामि (जहां योगिन को गम्यऐसा सनातन विष्णुको स्थान तहांको जायगी इति हेमा
कहा सो सत्यभया हे वानरो अब रघुनाथजीके दर्शन करिबे को मैं शीघ्र ही जानेकी इच्छा कि हे हौं ५७ ॥

यूयं पि दध्वमक्षीणि गमिष्यथ वहिर्गुहाम् ॥ तथैव च क्रुस्ते वेगाद्गताः पूर्वस्थितं वन
म् ५८ सापित्य क्त्वा गुहां शीघ्रं ययौ राघव सन्निधिम् ॥ तत्र रामं ससुग्रीवं लक्ष्मणं च
दर्दशह ५९ कृत्वा प्रदक्षिणं रामं प्रणम्य बहुशः सुधीः ॥ आह गद्गदया वाचारो मां चि
तत नरुहा ६० दासी तवाहं राजेंद्र दर्शनार्थं मिहागता ॥ बहुवर्ष सहस्राणि तप्तं मे दु
श्चरन्तपः ॥ गुहायां दर्शनार्थं ते फलितं मे यत्तपः ६१ अद्य हित्वा नमस्यामि मायायाः
परतः स्थितम् ६२ सर्वभूतेषु चालक्ष्यं वहिरंतरवस्थितम् ॥ योगमाया जवनि काच्छन्नो
मानुषदिग्रहः ६३ ॥

(अक्षीणियूयंपिदध्वंगुहाम्बहिःगमिष्यथतथैवचक्रुःतेवेगात्पूर्वस्थितवनमृगताः) अपने अपने नेत्र तुम सब सुंदा तौ गुहाके बाहरजाउगे तैसाही सब करतेभये ते सबवानर शीघ्रही जहां प्रथम वनमें रहैं तहैं जायप्राप्त भये ५८ (सापिगुहामृत्यक्त्वाशीघ्रंराघवसन्निधिम्ययौतत्रससुग्रीवंचलक्ष्मणंरामंद दर्शह) सोस्वयंप्रभा निश्चयकरि गुहाको त्यागि शीघ्रही रघुनन्दनके समीपको जातीभई तहां सहित सुग्रीव पुनः लक्ष्मणको रघुनाथजीको देखतीभई ५९ (प्रदक्षिणं कृत्वा बहुशःरामं प्रणम्य तनूरुहारो मां चितसुधीः गद्गदयावाचा आह) प्रदक्षिणकरि पुनः बहुतबार रघुनन्दनको प्रणामकरि प्रेमउमगितनमें रोमखड़ेहैं जिसके ऐसी सुंदरिबुद्धिवाली स्वयंप्रभा गद्गद अर्थात् कंठारोधनते अपुष्टाक्षरबाणी करि- कैवोली ६० (राजेंद्र अहंतवदासी दर्शनार्थे इहागताते दर्शनार्थे गुहायां बहुवर्ष सहस्राणि दुःचरंतपः तप्तं तप्तपः मे भव्यफलितम्) हेराजेंद्र रघुवंशनाथमें आपकी दासीहौं आपके दर्शनकरने हेत इहांको आई हौं आपहीके दर्शनार्थे गुहामें बहुत हजार वर्षतक दुःखदभावरण तपरीति तपकिया सो तप मोको आजुसफल भया ६१ (मायया परतः स्थिता मत्वा अद्याहिनमस्यामि) मायाकरिकै परेस्थित जो आप हौं तिनहिं आजु निश्चयकरि सन्मुख खड़ी प्रणाम करतीहौं इतितपसफलभया ६२ (चञ्चलद्वयं सर्व भूतेषु बहिः अंतरास्थितं मयोगमायाजवनिकात्छन्नः मानुषविग्रहः) मायातेपरे हौ पुनः किसीको दे- खाते नहींहौं अरु सब भूतचराचर बिपे बाहरे भीतर वनेहौं अरु अपनी योगमाया रूप कनातते गुप्त मानुष विग्रह किहेहौं भावकारण रहित शुद्धअंतर्यामी रूप सोई लोकोद्धारहेत योगमायामयराजकु मार रूपधारण किहे विचरतेहौं ६३ ॥

नलक्ष्यसेऽज्ञानदृशां शैलूषड्वयरूपधृक् ॥ महाभागवतानां त्वं भक्तियोगविधित्सया
६४ अवतीर्णोऽसि भगवन् कथं जानामि तामसी ॥ लोके जानातु यः कश्चित्तत्त्वतत्त्वं
घूतम् ६५ ममैतदेवरूपं ते सदाभातु हृदालये ॥ रामतेपादयुगलं दर्शितं मोक्षदर्श
नम् ६६ अदर्शनं भवार्णानां सन्मार्गं परिदर्शनम् ॥ धनपुत्रकलत्रादिविभूतिपरि
दर्पितः ६७ ॥

(शैलूषड्वयरूपधृक् अज्ञानदृशानलक्षसे महाभागवतानां भक्तियोग विधित्सया त्वं अवतीर्णोऽसि) यथानट अनेकरूप बनाय सबको मोहित करताहै आप स्वतंत्र रहताहै ताहीभांति आप अपनी माया करिकै अनेक रूप धरतेहौं सो अज्ञान दृष्टि वालेनको नहीं देखिपरतेहौं भावरूपकी चेष्टोंको सत्य मानि मोहित होतेहैं अर्थात् आपको दुखी सुखी मानते हैं यथार्थ रूपको नहीं जानिनक्ते हैं अरु महा भागवतों को भक्ति योगके विधान करने की इच्छाकरिकै अवतीर्ण भयोहै अर्थात् अदेख रूपको ध्यान सेवन पूजनादि नहीं बनि परताहै ताते अवतीर्ण है सुंदर स्वरूप करिकै माधुर्यलीला करते हौं ताहीको देखि सुनिजे शुद्धात्मा रामानुरागी हैं ते भक्ति अर्थात् श्रवण कीर्तन स्मरण पादसेवन अर्चन वंदन दास्य सरस्य आत्मनिवेदन इत्यादि को योग अर्थात् प्रेमते आपके रूपमें लगेरहना इति विधान भक्तों ते सुलभ करावने की इच्छा करिकै अवतीर्ण होतेहौं ६४ (रघूत्तमतत्त्वतत्त्वं लोकेयः कश्चित्तजानातु भगवन् तामसी कथं जानामि) हे रघुवंशनाथ आपको तत्त्व यथार्थ रूप ताहि लोकमें जो कोऊ जानतहोइ सो जानै हे भगवन् सो आपको तत्त्व ताहि तामसी तमोगुणी प्रकृति स्त्री जातिमें कैसे जानिसकौं ६५ (ते एतत्तत्त्वं एवममहदालये सदाभातुराममोक्षदर्शनम् तेपादयुगलं दर्शितम्) आपको यह श्यामसुंदर दिभुज धनुवारी राजकुमार रूप निश्चय करिकै मेरे

हृदय रूप मंदिरमें सदा प्रकाशकरै हे श्रीरघुनाथजी मोक्षको देखावनेवाले जो आपके दोऊपदकमल तिनहिं आपने मोंको देखावा भाव दर्शन दिह्यौ तौ अवश्य मोक्ष ड़ेउगे ६६ (भवार्णानां भद्रशन सन्मार्गपरिदर्शनम्) कैसेहैं आपके पद कमल कि चौरासी लक्ष योनिनमें जन्म मरणादि जो भवसागर है ताको अदर्शन अर्थात् भव दुःखते छोड़ाव देनेवालेहैं पुनः ईश्वर की प्राप्तीकी जो सन्मार्ग ज्ञान भक्ति तिनको देखावने वालेहैं (कलत्रपुत्रधनादि विभूतिपरिदर्पितः) वनिता पुत्रधन इत्यादि लोक ऐश्वर्य में जे अभिमानीहैं ६७ ॥

अकिंचन धनं त्वाद्यनाभिधातुं जनोर्हति ॥ निवृत्तगुणमार्गाय निष्किंचन धनाय ते ६८ नमः स्वात्माभिरामाय निर्गुणाय गुणात्मने ॥ कालरूपिणमीशानमादिमध्यान्तवर्जितं ६९ समंचरंतं सर्वत्र मन्येत्वां पुरुषं परं ॥ देवते चेष्टितं कश्चिन्न वेद नृविडं वनम् ७० न ते स्ति कश्चिद्दयितो द्वेष्ट्यो वा पर एव च ॥ त्वन्मायापि हितात्मानस्त्वां पश्यंति तथा विधम् ७१ अजस्याकर्तुरीशस्य देवतीर्यङ्मनरादिषु ॥ जन्मकर्मादि कंयद्यत्तदत्यंतविडं वनम् ॥ त्वामाहु रक्षरं जातं कथाश्रवणसिद्धये ॥ केचित्कोशलराजस्य तपसा फलसिद्धये ७३ ॥

(जनः अभिधातुं नर्हति) जो लोक विभवके अभिमानी जनहैं सो आपको नाम लेने योग्य नहींहैं (अकिंचन धनं त्वाद्य) जिनके और कुछ नहीं एक आपही धनहो (निवृत्तगुणमार्गाय) छूटि गयाहै संसार जिनसे (निष्किंचन धनाय ते नमः) जिनके और कुछ नहीं धनकी तुल्य जो आप तिनको मेरा नमस्कारहै ६८ (निर्गुणाय गुणात्मने स्वात्माभिरामाय नमः आदिमध्यांत वर्जितं कालरूपिणं) कृपा दया क्षमा शील सुलभ उदारतादि अनंत कल्याण गुण धारण किहे रजादि गुणों करिके रहित अपने सच्चिदानंद रूपमें रमण करनहारे तिनके अर्थ नमस्कार है आप आदि भग्न्य अन्त रहित सदा एकरस कालरूप सबको संहार करनहारे ६९ (सर्वत्र समंचरंतं त्वां परमं पुरुषं मन्ये देव नृविडं वनं ते चेष्टितं कश्चिन्न वेद) अंतर्धामी रूपते सर्वत्र भूतमात्र में सम विचरते हौं हे देव प्राकृत मनुष्योंकैसी नकल यहजो आपको अद्भुत चरित्र ताको कोऊनहीं जानता है ७० (न ते कश्चिद्दयितो द्वेष्ट्यो वा पर एव च त्वन्मायापि हितात्मानस्त्वां पश्यंति तथा विधम्) न आपके कोई मित्रहै न शत्रुहै न उदाशीनहै निश्चयकरि पुनः आपकी मायाकरिके विषमताहै जीवमें जिनके तेजैसा भावराखै आपको ताहीविधि देखतेहैं ७१ (अकर्तुः अजस्य ईशस्य देवतीर्यङ्मनरादिषु जन्मकर्मादियत्तत्तत् अत्यंतविडं वनम्) अकर्ता अजन्म ईश्वरजो आप तिनको वामनादि देवयक्षादि तीर्यङ्मनादिनरइत्यादि देहनविषे जन्मधरनारक्षा दंडादिकर्म करना जो जो भया सो अत्यन्त करिके नकलहै ७२ (त्वं आहुः कथाश्रवण सिद्धये अक्षरं जातं केचित्कोशलराजस्य तपसा फलसिद्धये) हे रघुनाथजी आपको बहुत मुनिलोग कहते हैं कि आपने गुणनमय कथा श्रवण सिद्धी के अर्थ परब्रह्म प्राकृत तनधारण कीन्हें भावकथा श्रवण द्वारा जीवनको सुलभ मुक्ति हेत पुनः कोऊकहत कि राजा दशरथ के तपस्या को फलसिद्धी के अर्थ भाव पुत्र भावको सुख देने हेत भवतर्ण भये ७३ ॥

कौशिल्ययाप्रार्थमानं जातमाहुः परेजनाः । दुष्टराक्षसभूभारहरणा यार्थितो विभुः ॥
ब्राह्मणानररूपेण जातोऽयमिति केचन ७४ शृण्वन्ति गोयन्ति च ये कथास्ते रघुनन्दन

पश्यंतितवपादाब्जंभवाणवसुतारणम् ७५ त्वन्मायागुणवद्वाहंभ्यतिरिक्तं गु
णाश्रयम् ॥ कथंत्वांदेवजानीयांस्तोतुंवाविषयंविभुम् ७६ नमस्यामिरघुश्रेष्ठं
बाणासनशरान्वितम् ॥ लक्ष्मणेनसहभ्रात्रासुग्रीवादिभिरन्वितम् ७७ एवंस्तु
तोरघुश्रेष्ठःप्रसन्नःप्रणताघहत् ॥ उवाचयोगिनीभक्तांकिंतेमनसिकांक्षितम् ७८ ॥

(परेजनाःआहुःकौशल्याप्रार्थमानंजातं)अपरजन कहते हैं कि पूर्वजन्ममें आराधन द्वाराकौशल्या ने प्रार्थनाकिया कि मोकोपुत्रहै प्राप्तहोउताहीते अवतीर्णभये (दुष्टराक्षसभूभारहरणायब्रह्मणाअर्थि तःविभुःअयंनररूपेणजातःइतिकेचन)रावणादि दुष्ट राक्षस भूमिको भारहै सो उतारने हेत ब्रह्माने याचना किया ताते प्रभु ये नररूप करिकै अवतीर्ण भये ऐसा कोऊ कहताहै ७४ (रघुनन्दनतेकथाः येगायंतिचशृण्वंतिभवाणवसुतारणमूतवपादाब्जंपदयंति)हेरघुनंदन आपकीकथाने जनगावतेहैपुनः श्रवण करते हैं ते भवसागरको तारणहारे आपके पदकमलोंको देखतेहै७५(गुणाश्रयमूत्वन्मायागुण वद्वाहंभ्यतिरिक्तंदेवत्वां विषयंविभुम् वास्तोतुंकथंजानीयां) पद उत्तम गुणों के आश्रयहै अरु आपकी माया के गुणों करि बद्ध जे अहंकारी पुरुष तिन सों बिलग हैं भाव उनको दर्शन नहीं होते हैं हेदेव आप की विषय प्रभुता अथवा स्तुति में कैसे जानि सकौ ७६ (सुग्रीवादिभिःअन्वितम् भ्रात्रालक्ष्म णेन सइबाणासनशरान्वितम् रघुश्रेष्ठंनमस्यामि) सुग्रीव आदि बानरों करिकैयुक्त छोटेभाई लक्ष्मण सहित धनुष बाण युत ऐसे रघुवंशनाथ को मैं नमस्कार करती हौं ७७ (एवंस्तुतःप्रणताघहत् रघु श्रेष्ठःप्रसन्नःभक्तायोगिनी उवाचतेमनसि किंकांक्षितम्) इसप्रकार स्वयं प्रभाने स्तुति किया सोसुनि शरणागत के पाप हरने वाले रघुवंशनाथ प्रसन्न है परम भक्त योगिनी प्रति बोलते भये हेस्वयंप्रभे तेरे मन में क्या कांक्षा है सो माँगु ७८ ॥

साप्राहराघवंभक्त्याभक्तिंतेभक्त्वत्सल ॥ यत्रकुत्रापिजातायानिश्चलांदेहिमे
प्रभो ७९ त्वद्भक्तेषुसदासंगोभूयान्मेप्राकृतेषुन ॥ जिह्वामेरामरामेतिभक्त्यावदतु
सर्वदा ८० मानसंश्यामलंरूपंसीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ धनुर्बाणधरंपीतवाससंमु
कुटोज्ज्वलम् ८१ अंगदैर्नूपुरैर्मुक्ताहारैःकौस्तुभकुंडलैः ॥ भांतंस्मरतुमेरामवरंता
न्यंदृष्टेप्रभो ८२ ॥ श्रीरामउवाच ॥ भवत्वेवंमहाभागैगच्छत्वंवदरीवनम् ॥
तत्रैवमांस्मरंतीत्वंत्यक्तेदंभूतपंचकम् ॥ मामेवपरमात्मानंअचिरात्प्रतिपद्यसे ८३
श्रुत्वारधूतमवचोमृतसारकल्पंगत्वातदैववदरीतरुखंडयुष्टम् ॥ तीर्थतदारघुपतिं
मनसास्मरंतित्यक्त्वाकलेवरमवापपरंपदंसाः ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किंधाकांडेषष्ठःसर्गः६ ॥

(साभक्तधाराघवंप्राहभक्तवत्सलप्रभोयत्रकुत्रापिजातायातेनिश्चलांभक्तिंमेदेहि) सो स्वयंप्रभामक्ति करिकै रघुनंदन प्रति बोली हे भक्तनपर प्रीति करनेवाले प्रभो कर्मवश जहांकहों मैं जन्म पावोंतहां आपनी निश्चल भक्तिमोको दीजिये ७९(सदात्वत्भक्तेषुसंगःमेभूयान् प्राकृतेषुनजिह्वामे रामराम इतिभक्त्यासर्वदावदतु) सदा सबकाल में आप के भक्तन में मेरासंगहोवै अरु प्राकृतों को संग न होवै औ जिह्वा मेरी रामराम इति आप को नाम भक्ति करिकै सबकाल में कहा करै ८० (सीता लक्ष्मणसंयुतंश्यामलंरूपंमानसं कथंभूतंधनुर्बाणधरंपीतवाससंमुकुटोज्ज्वलम्) सीता

लक्ष्मणसहित आपको श्यामल स्वरूप मेरे मनमें सदावसा रहे कैसा रूप धनुष बाण धारणकि हे अंगमें पीतवस्त्र शशिपर सुकुटुज्ज्वल सूर्यवत् प्रकाशमान् ८१ (अंगदैः) वज्रुहों करि कै भुजमूल (नूपुरैः) पहुँटन करि कै पायँ (कौस्तुभमुक्ताहारैः) कौस्तुभमणि मुक्ताहारों करिकै ग्रीवा उर (कुंडलैः) कुंडलों करि कै श्रवण (भांतस्मरतुमेवरं रामप्रभोअन्यनवृणे) इन भूषणों करि कै सर्वांग श्याम रूप प्रकाशमान आप को लदा स्मरण करौं मोंको यही बर दीजिये हे रघुनन्दन प्रभु और कलु नहीं मांगती हों ८२ (एवंभवतुमहाभागे त्वंवदरीवनम् गच्छतत्रएवत्वं मांस्मरंतीइदंभूत पंचकम् त्यक्तपरमात्मानंमां एवअचिरात्प्रतिपद्यते) रघुनन्दन बोले हे स्वयंप्रभे जोकहेसोई होइगी हेमहाभागे अब तू वदरविन को जा तहां निश्चय करि तू मेरा स्मरण करती हुई यह भूत पंचक तन त्यागि परमात्मा जो मैंहीं ताको निश्चय करि थोरेही काल में प्राप्त होइगी ८३ (अमृतसारक त्पंरघूत्तमवचःश्रुत्वातदाएववदरी तरुखण्डयुष्टमूर्तीर्यगत्वातदामनसा रघुपतिंस्मरंती कलेवरंत्यक्त्वा सापरंपदंअवाप) अमृत के सारांश सम बनेहुये रघुनाथ जिके वचन सुनि तासमय जहां वदरी वृक्षों को समूह युत तीर्थ हैं तहां को गई तहां मन करि कै रघुनन्दन को स्मरण करती हुई देह त्यागि सो स्वयं प्रभा परमपद को प्राप्त भई ८४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवेजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेकिष्किंकाडिपण्डःप्रकाशः ६ ॥

अथतत्रसमासीनावृक्षखंडेषुवानराः ॥ चिंतयंतोविमुह्यंतःसीतामार्गणकर्षिताः १
तत्रोवाचांगदःकांश्चिद्वानरान्वानरर्षभः ॥ अमतांगद्वरेऽस्माकंमासोनूंगतो
ऽभवत् २ सीतानाभिगतास्माभिर्नकृतंराजशासनम् ॥ यदिगच्छामकिष्किंधां
सुग्रीवोस्मान्हनिष्यति ३ विशेषतःशत्रुसुतंमांमिषान्निहनिष्यति ॥ मयितस्य
कुतःप्रीतिरहंरामेणरक्षितः ४ इदानींरामकार्यमेनकृतंतन्मिषंभवेत् ॥ तस्यमद्भन
नेनूनंसुग्रीवस्यदुरात्मनः ५ मातृकल्पांभ्रातृभार्यापापात्मानुभवत्यसौ ॥ नगच्छे
यमतःपार्श्वतस्यवानरपुंगवाः ६ ॥

सवैया ॥ दुखअंगदपै हनुमानसिखै तटसागरगे सबशोचगहे । बतरातलखे गिरिकन्दरसों कटि
गीधतबै इनखानचहे ॥ बधबंधुसुने कररावणकेदुख पुंजदवानल देहदहे । चलि सिंधुनहाय क्रियाकरिकै
सियशोधनको सबहालकहे ॥ (अथतत्रवानराःवृक्षखंडेषुसमासीनाःसीतामार्गणकर्षिताचिन्तयंतःवि
मुह्यन्तः) अब तिस बनमें सब वानर वृक्षसमूह बिषे बैठे हैं सीताके ढूँढनेकी चिंताकरि देह दुर्बल
चितवन करतेहुये विशेषि मोहको प्राप्तहैं १ (तत्रवानरर्षभः अंगदः कांश्चित्वानरान् उवाचगह्वरे
अमतांअस्माकंनूनंमासःगतः) तहां वानरोंमेंश्रेष्ठ अंगद किसी वानरन प्रति बोले भाव सुग्रीवके पक्षी
हनूमानादि बराय अपने पक्षिन सों बोले कि बन पर्वतकी गुहामें घूमतेहुये हमलोगोंको निश्चयकरि
एक मास बीतिगया २ (अस्माभिः नसीता अंधिगतानराजशासनम् कृतयदिकिष्किंधांगच्छामसुग्री
वःअस्मान्हनिष्यति) हम करिकै न सीतामिली अरु न राजाकी आज्ञा किया भावमास भीतरलौ-
टिनगये जो अब किष्किंधाको जाँय तौ सुग्रीव हम लोगोंको वधकरी ३ (शत्रुसुतंमांमिषात् विशे-
षतःनिहनिष्यतिमयितस्यप्रीतिःकुतःअहंरामेणरक्षितः) उसके शत्रुको पुत्रमैंहीं मोंको इसी वहाने

तेविशेषि मारैगौ मेरे विषे ताकी प्रीति किसी भौति नहीं मैं तो रघुनन्दन करिकै रक्षाकियागयाहूँ ४
(इदानींमेरामकार्यनकृतंततनूनंमत्तहननेतस्यदुरात्मनः सुग्रीवस्यमिपंभवेत्) अब जो हम रघुनाथ
जीको कार्य न किया सोई निश्चय करिकै मेरे वधहेतु तिस दुष्टात्मा सुग्रीवको वहाना होइगो मातृ
कल्पंभ्रातृभार्याअसौपापात्मानुभवति अतःवानरपुंगवाःतस्यपादर्वनगच्छेयं) माताके तुल्यबड़ेभाईकी
स्त्री में जोयह पापात्मा रमता है इस कारण हेवानरों कुमार्गी जो सुग्रीवताके पासमें न जाउँगो ६ ॥

त्यक्ष्यामिजीवितंचात्रयेनकेनापिमृत्युना ॥इत्यश्रुनयनंकेचिद्दृष्ट्वावानरपुंगवाः७
व्यथिताःसाश्रुनयनायुवराजमथानुवन् ८ किमर्थतवशोकोत्रवयंतेप्राणरक्षकाः ॥
भवामोनिवसामोत्रगुहायांभयवर्जिताः ९ सर्वसौभाग्यसहितंपुरदेवपुरोपमम् ॥
शनैःपरस्परंवाक्यंवदतांमारुतात्मजः १० श्रुत्वांगदंसमालिङ्ग्यप्रोवाचनयको
विदः ॥ विचार्यतेकिमर्थंतेदुर्विचारोऽनयुज्यते ११ राज्ञोऽत्यंतप्रियस्त्वंहिता
रापुत्रोतिवल्लभः ॥ रामस्यलक्ष्मणात्प्रीतिस्त्वयिनित्यंप्रवर्द्धते १२ अतोऽनराध
वाद्भीतिस्तवराज्ञोविशेषतः ॥ अहंतवहितेसक्तोवत्सनान्यंविचारय १३ ॥

(चमत्रयेनकेन अपिमृत्युनाजीवितंत्यक्ष्यामि इतिअश्रुनयनं वानरपुंगवाःकेचित् दृष्ट्वा) पुनः इहां
जिस किसी उपाय निश्चय मृत्यु करिकै प्राणत्याग करोंगो इत्यादि कहत आंशुभरे नेत्र अंगदको
उत्तम वानर किसीने देखा ७ (व्यथिताःसमाश्रुनयनाअथयुवराजंअनुवन्) अंगदके दुखते व्याथित
सहित आंशु नेत्रकरि अब अंगदप्रति वानरबोले ८ (वयंतेप्राणरक्षकाःअत्रकिमर्थतवशोकः भयवर्जि
ताः अत्रगुहायांभवामःनिवसामः) वानरबोले हे युवराज हम सब तुम्हारे प्राणोंके रक्षकहैं तो इहां
किसहेतु तुम दुःखमानेहो सब की भय रहित इहां गुहाविषे तुम सहित हमलोग वासकरेंगे ९ (सर्व
सौभाग्यसहितं देवपुरोपमंपुरंपरस्परंशनैःवाक्यंवदतां) सब ऐश्वर्य सहित देव पुरकी उपमादेवे
योग्य जो गुहाके भीतरपुर है तहां वासकरेंगे इत्यादि आपुसमें धीरेधीरे वार्ता करतेरहैं ताहि १०
(नयकोविदःमारुतात्मजःश्रुत्वाअंगदंसमालिङ्ग्यप्रोवाचदुर्विचारःतेयुज्यतेनकिमर्थंविचार्यते) नीतिशा
स्त्रमें विद्वान्पवनपुत्र हनूमान् सांगदवानरोंकी बातोंको सुनि विचारे कि रामकाज तौ बीचही रहा
जो यही विचार ठीकभया तौ अंगद सुग्रीव ते विरोधखड़ा है जायगो ताते याको शीघ्रहीमिटाय देना
चाहिये यह विचारि अंगदकोहृदय में लगाय कै बोले हेअंगद यह दुष्ट विचार तुम्हारी योग्य नहीं है
तौ किस हेतु ऐसा विचार करतेहो ११ (त्वंहिराज्ञः अत्यंतप्रियः तारापुत्रः अतिवल्लभः रामस्यलक्ष्म
णात्त्वयिप्रीतिः नित्यंप्रवर्द्धते) हे अंगद तुम निश्चय करि राजाको अत्यन्त प्रियहो क्योंकि रुमाते
अधिक प्रियतारा तिनके पुत्रहो ताते अत्यन्त प्रियहो अरु रघुनन्दनके लक्ष्मणते अधिक तुम विषे
प्रीति नित्यही बढ़ती जाती है १२ (अतःतवनराधवात्भीतिःविशेषतः राज्ञः वत्सअहंतवहितेसक्तःअ
न्यंनविचारय) इस कारण तुम को न रघुनाथजीते भयहै अरु ताराके पुत्रहो ताते विशेषि करिकै
राजाते नहीं भयहै हे वत्सहम तुम्हारे हितकरनेमें समर्थ हैं भाव सीता शोधलावेंगे ताते रामकाज
की सेवाय और न विचारकरौ १३ ॥

गुहावासश्चनिर्भेद्यइत्युक्तंवानरैरनुयत् ॥ तदेतद्रामवाणानामभेद्यंकिंजगत्त्र
ये १४ यत्त्वादुर्वोधयंत्येतवानरावानरर्षभ ॥ पुत्रदारादिकंत्यक्त्वाकथंस्थास्यंति

तेत्वया १५ अन्यद्गुह्यतमंवक्ष्येरहस्यंशृणुमेसुत ॥ रामोनमानुषोदेवःसाक्षा
 नारायणोव्ययः १६ सीताभगवतीमायाजनसंमोहकारिणी ॥ लक्ष्मणोभुवना
 धारःसाक्षाच्छेषःफणीश्वरः १७ ब्रह्मणाप्रार्थिताःसर्वैरक्षोगणविनाशने ॥ माया
 मानुषभावेनजातालोकैकरक्षकाः १८ वयंचपार्षदाःसर्वेविष्णोर्वैकुण्ठवासिनः ॥
 मनुष्यभावमापन्नेस्वेच्छयापरमात्मनि॥वयंवानररूपेणजातास्तस्यैवमायया १९

(तुयत्गुहावासःचनिर्भेद्यइतिवानरैःउक्तंतत्तत्तत्परामवाणानां अभेद्यजगत्त्रयंकिं) पुनः हेअंगद
 गुह्यामें बास अभेद्य भाव वामें किसी कीगति नहीं है ऐसा बानरों ने कहाहै सो यह मिथ्याहै क्योंकि
 रघुनाथ जीके बाणोंको अभेद्य तीनिहूँ लोकमें क्याहै कौनस्थान बाणनहीं भेदिसक्ते हैं १४ (वानर
 र्भएतेवानराःयेत्वाद्बोधयंतितेपुत्रदारादिकंत्यक्त्वात्वयाकथंस्थास्यंति) बानरों में श्रेष्ठ हे अंगद ये
 बानर यह तुमको सलाह देते हैं कि हम तुम्हारे प्राणके रक्षकहैं इहांतुम्हारे साथै रहेंगे सोभीमिथ्या
 है क्योंकि ते बानर घरमें पुत्रस्त्री त्यागि तुम्हारे साथ कैसे रहेंगे १५ (सुतअन्यत्गुह्यतमंरहस्यमेव
 क्ष्येशृणुरामःमानुषःनव्ययःसाक्षात्नारायणःदेवः) हे पुत्र और कछु परमगुप्त रहस्य मैं कहताहों
 सुनु रघुनाथ जी मनुष्य नहीं हैं किंतु नाशरहित साक्षात् नारायण देवहैं १६ (जनसंमोहकारिणी
 भगवतीमायासीता भुवनाधारःफणीश्वरः साक्षात्शेषःलक्ष्मणः) जनलोक मनुष्यों को मोहवश
 करन हारी भगवत् की माया सीता हैं अरु भुवनहै आधारजाके सर्पोंके स्वामी साक्षात् शेष लक्ष्मण
 हैं १७ (रक्षोगणविनाशने ब्रह्मणाप्रार्थिताः लोकैकरक्षकाःमायामानुषभावेनसर्वेजाता) रावणादि
 राक्षसगणों को नाश करने हेत ब्रह्मा करि कै प्रार्थना किये गये जो सब लोकों के रक्षा करन हारे
 एक भगवान्हैं सोई माया मय मनुष्य भाव करिकै सब अवतर्णिभये १८ (चवयंसर्वेवैकुण्ठवासिनः
 विष्णोःपार्षदाः परमात्मनि स्वइच्छयामनुष्यभावं आपन्नेतस्यैवमायया वयंवानररूपेणजाताः)
 पुनः हम सब वैकुण्ठवासी विष्णु के पार्षद हैं तहां परमात्मा अपनी इच्छा करिकै मनुष्य भाव को
 प्राप्त होत संते तिनकी निश्चयकरि मायाकरिकै हम सब पार्षद बानर रूप करिकै उत्पन्नभये भाव
 जब स्वामी मनुष्य भये तब सेवक बानर भये १९ ॥

वयंतुतपसापूर्वआराध्यजगतांपतिं ॥ तेनैवानुग्रहीतास्मःपार्षदत्वमुपागतः २०
 इदानीमपितस्यैवसेवांकृत्वाविमायया ॥ पुनर्वैकुण्ठमासाद्यसुखंस्थायामहेवय
 म् २१ इत्यंगदमथाश्वास्यगताविंध्यमहाचलम् २२ विचिन्वंतोथशनकैर्जानकै
 दक्षिणांबुधैः ॥ तीरंमहेन्द्रास्यगिरेःपवित्रंपादमाययुः २३ दृष्ट्वासमुद्रंदुःपारमगा
 धंभयवर्द्धनम् ॥ वानराभयसंत्रस्ताःकिंकुर्मइतिवादिनः २४ निषेदुरुदधेस्तीरेस
 र्वेचिंतासमन्विताः ॥ मंत्रयामासुरन्योन्यमंगदायामहाबलाः २५ अमतामेवनो
 मासोगतोत्रैवगुहांतरे ॥ नदृष्टोरावणोवाद्यसीतावाजनकात्मजा २६ ॥

(तुपूर्ववयंतपसा जगतांपतिंआराध्य तेन एवअनुग्रहीतास्मः पार्षदत्वंउपागतः) पुनः पूर्वकालमें
 हमलोग तपस्या करिकै परमात्माको आराधन किया तिनकी अनुग्रह सदा एकरस दया करिकै हम
 लोग पार्षद पदको प्राप्तभये २० (इदानींअपिविमायया तस्यैवसेवांकृत्वा पुनःवयंवैकुण्ठ आसाद्यसुखं
 स्थास्यामहे) अबहूँ निश्चय करि छल छांड़ि तिन रघुनाथ जी की सेवा करते हैं ताहीते पुनः हम

लोग बैकुण्ठमें प्राप्त हैंके सुखपूर्वक वास करेंगे २१ (इति भृंगदं आदवास्य अथमहाचलंविध्यंगताः) इसप्रकार हनुमान् भृंगद को समुन्मायके अवमहान् पर्वत विंध्याचल को सबगये २२ (अथजानकी विचिन्वतः शनकैःदक्षिणाम्बुधेः तीरंमहेंद्राख्यगिरेः पादंपवित्रंभाययुः) अवजानकीजीको ढूँढते हुये धीरा धीरा दक्षिण दिशिमें जो समुद्रहै ताके तीर महेंद्र नामे जो पर्वत है ताके समीप एक छोटा पहार पवित्र भाव तीर्थसंज्ञक तहां सब जातेभये २३ (दुःपांगंअगाधंभयवर्द्धनंसमुद्रंदृष्ट्वाभयसंत्रस्ताः वानराः किंकुर्म इतिवादिनः) दुःखों करिपारजावे योग्य नहीं अरु अथाह समूह तरंगन की बेग करि कै भय बढाव ने वाला ऐसे समुद्र को देखि भय पीड़ित है वानर बोले कि यासमय में हमलोगों को क्या करना चाहिये ऐसी वार्ता करते हैं २४ (उदधेः तीरे चिंता समन्विताः तवेनिपेदुः भृंगदायामहावलाः अन्योन्यमंत्रयामासुः) समुद्रके तीर चिंतायुक्त सबवानर विपाद करते भये भृंगद आदि महावली आपुसमें सल्लाह करतेहुये २५ (गुहांतरेभ्रमतां एव नःमासःगतः अत्रएवअद्यनरावणः वानजनकात्मजासीतादृष्टा) गुहाके भीतर भ्रमते फिरतेहुये निश्चयकरि हम लोगोंको महीनावीतिगया इहांभीआये अबतकनरावणमिला अथवानजनकनंदिनीसीताकोदेखा २६ ॥

सुग्रीवस्तीक्ष्णदंडोस्मान्निहंत्येवनसंशयः ॥ सुग्रीववधतोस्माकंश्रेयःप्रायोपवेशनम् २७ इतिनिश्चित्यतत्रैवदर्भान्आस्तीर्थेसर्वतः ॥ उपाविवेशुस्तेसर्वेमरणेकृतनिश्चयाः २८ एतस्मिन्नंतरेतत्रमहेंद्राद्रिगुहांतरात् ॥ निर्गत्यशनकैरागाद्गृध्रः पर्वतसन्निभः २९ दृष्ट्वाप्रायोपवेशेनस्थितान्वानरपुंगवान् ॥ उवाचशनकैर्गृध्रः प्राप्तोभक्षोद्यमेवहुः ३० एकैकशःक्रमात्सर्वान्भक्षयामिदिनेदिने ॥ श्रुत्वातद्गृध्रवचनंवानराःभीतमानसाः ३१ भक्षयिष्यतिनःसर्वान्सौगृध्नोनसंशयः ॥ रामकार्य्यचनास्माभिःकृतंकिंचिद्धरीश्वराः ३२ सुग्रीवस्यापिचहितंनकृतंस्वात्मनामपि ॥ वृथातेनवधंप्राप्तागच्छामोयमसादनम् ॥ ३३ ॥

(तीक्ष्णदंडः सुग्रीवः अस्मान्एवनिहंतिसंशयः न सुग्रीववधतः प्रायउपवेशनम्अस्माकंश्रेयः) तीक्ष्णहै दंडजाको ऐसा सुग्रीव हमलोगनको निश्चयकरि मरिडारैगो यामें संशय नहीं है ताते सुग्रीव के वधते बहुत उपास करिके मरिजाना हमलोगनको कल्याणहै २७ (इतिनिश्चित्यसर्वतः मरणे निश्चयाःकृततत्रैवदर्भान्आस्तीर्थेसर्वेउपाविवेशुः) इहें मरणश्रेयहै ऐसा निश्चय करि सब प्रकार मरिजाने निश्चयकरि तहां सिंघुतट कुशोंको विछायते सब वानर बैठतेभये २८ (एतस्मिन्नंतरेतत्र महेंद्राद्रिगुहांतरात्निर्गत्यपर्वतसन्निभःगृध्रःशनकैःआगात्) ताही समयके बीचमें तहां महेंद्र पर्वतके गुहाके भीतरते निसरि पर्वताकार गृध्र धीरा धीरा आवताभया २९ (प्रायोपवेशेनस्थितान् वानरपुंगवान्दृष्ट्वागृध्रःशनकैःउवाचअद्यमेवहुःभक्षःप्राप्तः) मरणको निश्चयकरिके बैठेहुये जो वानरोत्तमतिनिर्हिदेखि गृध्र धीराते बोलताभया कि आजुमोको बहुतसा भोजन प्राप्तभया ३० (एकैकशः दिनेदिनेक्रमात्सर्वान्भक्षयामितत्तृगृध्रवचनंश्रुत्वावानराभीतमानसाः) एकएक वानर को रोजरोज इसीक्रमते सबनको भक्षण कियाकरौंगो सो गीधको वचन ताको सुनि वानर मनते डरायउठे ३१ (असौगृध्रःनःसर्वान्भक्षयिष्यतिसंशयःनहेहरीश्वराःअस्माभिःकिंचित् रामकार्य्यचनाकृतं) यह गीधहम सबनको खायलेइगो यामें संशय नहींहै हे वानरौ हमलोगोंने कछुतौ रघुनाथजीको कार्य नहीं किया ३२ (चअपिसुग्रीवस्यहितंनकृतंस्वात्मनाअपिअनेनवृथावधंप्राप्तायमसादनंगच्छामः) पुनःनिश्च-

यकरि सुग्रीवको हित कछु नहीं किया अरु कछु अपनाभी हितनहीं किया अब इस गृध्र करिकै वधको प्राप्त है भाव इसके खायलेनेते कुमृत्युहै यमधामको जायँगे ३३ ॥

अहोजटायुर्धर्मात्मारामस्यार्थेमृतःसुधीः ॥ मोक्षंप्रापदुरावापयोगिनामप्यरिंदमः
३४ संपातिस्तुतदावाक्यंश्रुत्वावानरभाषितम् ॥ केवायूयंममभ्रातुःकर्णपीयूषस
न्निभम् ३५ जटायुरितिनामाद्यव्याहरंतःपरस्परं ॥ उच्यतांभयंमामून्मत्तःप्लव
गसत्तमाः ३६ तमुवाचांगदःश्रीमानुत्थितोगृध्रसन्निधौ ॥ रामोदाशरथिःश्रीमान्
लक्ष्मणेनसमन्वितः ३७ सीतयाभार्ययासार्द्धविचचारमहावने ॥ तस्यसीता
हतासाध्वीरावणेनदुरात्मना ३८ मृगयांनिर्गतेरामेलक्ष्मणेचहताबलात् ॥ रामरा
मेतिक्रोशंतीश्रुत्वागृध्रःप्रतापवान् ३९ जटायुर्नामपक्षीन्द्रोयुद्धंकृत्वासुदारुणम् ॥
रावणेनहतोवीरोराघवार्थमहाबलः ४० ॥

(अहोधर्मात्मासुधीःजटायुःरामस्यार्थेमृतःयोगिनांदुरावापंअरिंदमःमोक्षंप्राप) आश्चर्यमय धर्मात्मा सुधीजटायुः रहाजो रामके कार्यहेत मरा जो योगिनको दुःख करि अप्राप्त सो शत्रुको नाशकरनेवाला जटायु मोक्षको प्राप्तभया ३४ (तुतदावानरभाषितंवाक्यंसंपातिःश्रुत्वाकर्णपीयूषसन्निभम्ममभ्रातुः केवायूयं) पुनः तासमयमें वानरोंको कहावचन संपाति सुनिकै बोला कि कानोंको अमृतसम मेरे भाईकी वार्तासुनावनेवालेको तुमसबहौ ३५ (प्लवगसत्तमाजटायुः इतिनामाद्यपरस्परंव्याहरंतःमत्तःवःभयंमामून्मत्तः) हेवानरोत्तमौ जटायुः ऐसानाम पूर्वकहि आपुसमें वार्ताकरतेहौ तौ मोसों तुमलोग भयमतिकरौ भावमोको न डरौ अपना हालकहौ तुमकोहौ ३६ (गृध्रसन्निधौउत्थितःश्रीमान्भंगदःतंतुवाचदाशरथिःश्रीमान्रामःलक्ष्मणेनसमन्वितः) गीधके समीपजाय श्रीमान् भंगदति-सगीध प्रतिबोलतेभये कि राजादशरथके पुत्रबड़े ऐश्वर्यवंतरामचन्द्र लक्ष्मणसहित ३७ (सीतयाभार्ययासार्द्धमहावनेविचचारतस्यसाध्वीसीतादुरात्मनारावणेनहता) सीतानामे आपनी भार्या सहित पितु आज्ञाते रामचन्द्र महाबनमें बिचरते हुये तिनकी पतिव्रता सीतासो दुष्टात्मारावणकरिकै हरी गई कौनभांति ३८ (रामेचलक्ष्मणेमृगयांनिर्गतेबलात्हृत्तारामरामइतिक्रोशंतीप्रतापवान्गृध्रःश्रुत्वा) रामचन्द्रपुनः लक्ष्मण मृगयामें गये संतेबरवशहरिलिया तब रामराम ऐसा पुकारि रोतीहुई सीता सोप्रतापवान्गृध्रने सुना ३९ (जटायुःनामपक्षीन्द्रःमहाबलः राघवार्थसुदारुणयुद्धंकृत्वारावणेनवीरः हतः) जटायु नामपक्षिनको राजा महाबली ताने रघुनाथजीके हेत रावण प्रति महा कठिन युद्ध किया तबरावणकरिकै बड़ाबरि जटायुः मारागया ४० ॥

रामेणदग्धोरामस्यसायुज्यमगमत्क्षणात् ॥ रामःसुग्रीवमासाद्यसख्यंकृत्वाग्नि
साक्षिकं ४१ सुग्रीवचोदितोहत्वाबालिनंसुदुरासदम् ॥ राज्यंददौवानराणांसुग्री
वायमहाबलः ४२ सुग्रीवःप्रेषयामाससीतायाःपरिमार्गणे ॥ अस्मान्वानरवृंदांनै
महासत्त्वान्महाबलः ४३ मासादर्वाङ्निवर्तध्वंनोचेत्प्राणान्हरामिवः ॥ इत्याज्ञा
याभ्रमंतोस्मिन्वनेगङ्गरमध्यगाः ४४ गतोमासोनजानीमःसीतांवारावणंचवा ॥
मर्तुप्रायोपविष्टास्मस्तीरेलवणवारिधेः ४५ यदिजानासिहेपक्षिन्सीतांकथयन्तः

शुभाम् ॥ अंगदस्यवचःश्रुत्वासंपातिर्हृष्टमानसः ४६ उवाचमत्प्रियोभ्राताजटा
युःप्लवगेश्वरः ॥ बहुवर्षसहस्रांतिभ्रातृवार्ताश्रुतामया ४७ ॥

(रामेणदग्धःक्षणात् रामस्यसायुज्यंअंगमत् रामः सुग्रीवंआसाद्यअग्निसाक्षिकमूसख्यंकृत्वा)रामचंद्र
ने वाको दग्ध किया क्षणभरे मे जटायु रामके रूपको प्राप्त भया तब रामचंद्र सुग्रीव के समीपजाय
अग्नि को साखीदय मित्रता कीन्हें ४१ (सुग्रीवचोदितःमहाबलःरामःदुरासदम्बालिनंहत्वावानरा
णांराज्यसुग्रीवायददौ) सुग्रीव की प्रेरणाते महाबली रामचंद्रने अजितवीर बालिकोमारा अरुवानरों
की राज्य सुग्रीवके अर्थदेते भये ४२ (महाबलःमहासत्त्वान्अस्मान्वानरवृंदान्बैसीतायाःपरिमार्ग
णेसुग्रीवःप्रेषयामास) महाबली महावीर्यवंत हमलोग वानरवृंदतिनहिं निश्चय करिसीता के ढूँढने
निमित्त सुग्रीव पठावा है किसआज्ञा ते ४३ (मासात्अर्वाकृनिवर्तध्वनोचेत्त्वःप्राणान्हरामि इति
आह्वयाभ्रमंतःअस्मिन्वनेगह्वरमध्यगाः) महिनाते पूर्वहोलौटि आयो नहीं तौ तुमल्लोगों के प्राण
हरिहों इसआज्ञा करिकै भ्रमते हुये इसवनमें गुहा के मध्य में परे ४४ (मासःगतःसीतावाचरावणं
वानजानीमःलवणवारिधेःतीरेमतुप्राय उपविष्टास्मः) एकमास बीतिगया अबतक सीताको अथवा
रावण को नहीं जानि पाये अबअर्धार ह्वै इस लवणसिंधुकेतीर मरनेकी इच्छा कि हे वैठेहैं ४५(हे
पक्षिन्शुभाम्सीतायदिजानासिनःकथयअंगदस्यवचः श्रुत्वाहृष्टमानसःसंपातिःउवाच) हे पक्षिन्
मंगलमूर्ति सीता को जो जानतेहोउतौ हमसों कहौ इति अंगद के वचनसुनि प्रसन्नमन सम्पाति
बोलताभया ४६ (प्लवगेश्वरजटायुःमत्प्रियःभ्राताबहुसहस्र वर्षांतिभ्रातृवार्तामयाश्रुता) हे वानरे
श्वरजटायुः मेरापरमप्रिय छोटाभाई है सो बहुतइजार वर्षवीते पीछे अपनेभाई की बार्ता तुम ते
आजु मैंने सुना ४७ ॥

वाक्सहायंकरिष्येहंभवतांप्लवगेश्वराः ॥ भ्रातुःसलिलदानायनयध्वंमांजलांति
कम् ४८ पश्चात्सर्वशुभंवक्ष्येभवतांकार्यसिद्धयै ॥ तथेतिनिन्युस्तेतीरंसमुद्रस्य
विहंगमम् ४९ सोपितत्सलिलेस्नात्वाभ्रातुर्दत्त्वाजलांजलिम् ॥ पुनःस्वस्थानमा
साद्यस्थितोनीतोहरीश्वरैः५० संपातिःकथयामासवानरान्परिहर्षयन् ॥ लंकाना
मनगर्यास्तेत्रिकूटगिरिमुद्घनि ५१ तत्राशोकवनेसीताराक्षसीभिःसुरक्षिता ॥
समुद्रमध्येसालंकाशतयोजनदूरतः ५२ दृश्यतेमेनसन्देहःसीताचपरिदृश्यते ॥
गृध्रत्वादूरदृष्टिर्मेनात्रसंशयितुंक्षमम् ५३ ॥

(प्लवगेश्वराःभवतांअहंवाक्यसहायं करिष्येभ्रातुःसलिलदानायमांजलांतिकमूनयध्वं) हे वानरोत्तमों
तुम्हारी मैं वचन सहाय करिहों भाव जानकी बतायदेहों अब भाई को तिलांजलि देने हेत मोको
जल के समीप लै चलो ४८ (पश्चात्भवतांकार्यसिद्धयेसर्व शुभंवक्ष्येतथेतिरेविहंगमंसमुद्रस्यती
रनिन्युः) प्रथम तिलांजलिदय तिसपीछे तुम्हारे कार्य की सिद्धीके अर्थ सब मंगलीक बार्ता मैंकहि
हों जैसा कहतेहों तैसाही करेंगे ऐसाकहिते सब वानर उसपक्षी को समुद्र के तीरलवायलय आये
४९ (सःअपितत्सलिलेस्नात्वाभ्रातुःजलांजलिमुदत्त्वापुनःहरीश्वरैःनीतःस्वस्थानं आसाद्यस्थितः)
सो सम्पाति निश्चय करि उससमुद्र के जलमें स्नान करि अपनेभाई को तिलांजलि दिया पुनः
वानरों करिकै आनाहुआ सम्पाति अपनेस्थान को प्राप्त ह्वै बैठा ५० (वानरान्परिहर्षयन्संपातिः

कथयामास त्रिकूटगिरिमुद्गनिलंकानामनगरीभास्ते) सब वानरोंको हार्पित करत संते सम्पाति सब हाल कहनेलगा हे वानरौ त्रिकूट गिरिपर्वतपर लंकानामे नगरी बसी है ५१ (शतयोजनदूरतःसमुद्रमध्येसा लंकातत्रअशोकवनेसीताराक्षसीभिःसुरक्षिता) इहांते सौयोजन दूरि अर्थात् चारिसौकोश पर समुद्रके बीचमें सो लंकापुरी है तहां एक अशोकवन है तामें सीताहैसो रावण की आज्ञा ते राक्षसिन करिके रक्षा की जाती है भाव उनहीं रखावती हैं ५२ (मेदृश्यतेसन्देहःनचसीतापरिदृश्यते गृध्रत्वात्मेदूरदृष्टिःअत्रसंशयितुंनक्षमम्) लंका अशोक वनादि सब में देखताहों यामें सन्देहनहीं है पुनः सीताको भी देखता हैं क्योंकि गीधतन होनेते में दूरदृष्टहों बहुत दूरतक देखता हों यामें संशय करनेको तुमनहीं समर्थहो भाव सत्यहीमानौ ५३ ॥

शतयोजनविस्तीर्णसमुद्रंयस्तुलंघयेत् ॥ सएवजानकींदृष्ट्वापुनरायास्यतिध्रुवम् ५४ अहमेवदुरात्मानंरावणंहन्तुमुत्सहे ॥ भ्रातृहंतारमेकाकीकितुपक्षविवर्जितः ५५ यतध्वमिति यत्नेनलंघितुंसरितांपतिम् ॥ ततोहंतारघुश्रेष्ठोरावणंराक्षसाधिपम् ५६ उलंघ्यसिंधुंशतयोजनायतंलंकांप्रविश्याथविदेहकन्यकाम् ॥ दृष्ट्वासमाभाष्यचवारिधिंपुनस्तर्तुसमर्थःकतमोविचार्यताम् ५७ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेकिष्किंकाकाण्डेसप्तमःसर्गः ७ ॥

(तुशतयोजनविस्तीर्णसमुद्रंयःलंघयेत् सएवजानकींदृष्ट्वापुनःध्रुवंआयास्यति) पुनः सौयोजन चारिसौकोश विस्तार जो समुद्र ताहिजो नाथैं सोलंकामें निश्चयजाय जानकीको देखि पुनःनिश्चय करि सोई लौटि आवैगो ५४ (एकाकीभ्रातृहंतारंदुरात्मानंरावणंहंतुं अहमेवउत्सहेकिंतुपक्षविवर्जितः) अकेले मेंरे भाई को मारनेवाला दुष्टात्मा रावणको बधकरने हेत मेंरे अतष्करण में निश्चय करि उत्साह होती है परंतु क्याकरो पंखरहितहों ताते किसी कामको नहींहों ५५ (सरितांपतियत्नेनलंघितुंइतियतध्वंततःराक्षसाधिपमूरावणंहंतारघुश्रेष्ठः) नदिन को पति जो समुद्र है ताहि यत्नपूर्वक नांघिजाउ ऐसी उपाय करौ तदनंतर राक्षसों को राजा जो रावण ताको तौ नाशकरनहारे रघुनाथ जी हैं भाव तुम जानकी जीकी खबरिलैजाउ तब रघुनाथ जी रावण को वंशसहितमारेंगे ५६ (शत योजनायतंसिंधुंउलंघ्यलंकांप्रविश्याथविदेहकन्यकाम्दृष्ट्वाचसंभाष्यपुनःवारिधिंतर्तुसमर्थः कतमःविचार्यताम्) संपाति कहत कि हे वानरोंजो सौयोजनअर्थात् चारिसौ कोशको विस्तार जोसमुद्र ताको नांघि कै लंका में पैठि अरुविदेहकी पुत्रीको देखै पुनः उन प्रतिवार्ता लाप करिपुनः समुद्रनांघि आवने को समर्थहोइ ऐसा तुमलोगोंमें कौनवानरसमर्थहै यहविचार तुमसबकोकरना चाहिये ५७ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथ

विरचितेअध्यात्मभूषणेकिष्किंकाकाण्डेसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

अथतेकौतुकाविष्टाःसंपातिसर्ववानराः ॥ पप्रच्छुर्भगवन्ब्रूहिस्वमुदंतंत्वमादितः १ संपातिःकथयामासस्ववृत्तांतंपुराकृतम् ॥ अहंपुराजटायुश्चभ्रातरौरूढयौव नौ २ बलेन दर्पितावावांबलजिज्ञासयाखगौ ॥ सूर्यमण्डलपर्यंतं गंतुमुत्पतितौ

मदात् बहुयोजनसाहस्रंगतोतत्रप्रतापितः ॥ जटायुस्तं परित्रातुं पक्षैराच्छाद्यमो
हतः ४ स्थितोऽहं रस्मिभिर्दग्धपक्षोऽस्मिन् विध्यमूर्धनि ॥ पतितो दूरपतनान्मू
र्च्छितोऽहं कपीश्वराः ५ दिनत्रयात्पुनः प्राणसहितो दग्धपक्षकः ॥ देशं वागिरिकू
टान्वानजाने भ्रातं मानसः ६ ॥

सवैया ॥ उड़िसानु ज पक्षजरे रबिसों दुखमें मुनिचंद सुज्ञान दिया । इत भावहिं राम प्रियार्थ कपशि वि-
लोकिसुखी तुबताय सिया ॥ मम पक्षजमें तकि धीर धरौ इति गीध भली बिधि बोध किया । कपि हृदबलीत
जिकादरता सब काज करौ प्रभुराखि हिया ॥ (अथ कौतुकाविष्टाः ते सर्व वानराः संपातिं प्रच्छुः भगवन्
स्वउदंतं त्वं आदितः ब्रूहि) अब बड़े आश्चर्य वशते सब वानर संपाति प्रति पूछते भये हे भगवन् अपना
सब हाल आप आदिहीते कहिये भाव किस कारण ते आपकी यह दशा भई ? (पुराकृतं स्ववृत्तांतं संपा
तिः कथयामास अहं च जटायुः भ्रातरौ पुरारूढ यौवनौ) पूर्व को किया हुआ अपना सब वृत्तांत ताको
संपाति कहता भया हे वानरो हम पुनः जटायुः दोऊ भाई हैं पूर्वकाल में जब युवा अवस्था को
प्राप्त रहे २ (बलेन दर्पितौ बलजिज्ञासया भावांखगौ मदात् उत्पतितौ सूर्यमंडलपर्यंतं गतुं) बलकरि के
अभिमानि बलके जिज्ञासा करिके भाव देखें किसके अधिक बल है यह कहि हम दोऊ पक्षी इसमद
ते उड़े कि सूर्यमंडल पर्यंत चले जायें ३ (बहुयोजनसाहस्रंगतः तत्र जटायुः प्रतापितः तं परित्रातुं मोह
तः पक्षैः आच्छाद्य) बहुत हजारयोजन ऊपर को उड़िये तहां जटायुः तस भया देखि ताहि रक्षा हेत
मोहते मैं पक्षों करिके वाको ढाकिके ४ (अहं स्थितः रस्मिभिः पक्षैः दग्ध अस्मिन् विध्यमूर्धनि पतितः हे
कपीश्वराः दूरपतनात् अहं मूर्च्छितः) पक्षों कि स्थित भयों सूर्य किरिणिन करिके पक्षभस्म है गये इसी
विध्या चलपर गिरि परे उँ दे वानरों दूरते गिरते मैं मूर्च्छित है गयो ५ (दिनत्रयात् पुनः प्राणसहितः दग्ध
पक्षकः भ्रातं मानसः देशं वागिरिकूटान्वानजाने) तीनदिन वादि पुनः प्राणसहित भयों परंतु पक्षजरे ते
अमयुत मन ताते किस देश में हों वा किस पर्वतके शिखर पर हों इत्यादि कुछ न जाने उँ ६ ॥

शनैरुन्मील्य नयने दृष्ट्वा तत्राश्रमं शुभम् ॥ शनैः शनैराश्रमस्य समीपं गतवानहम् ७
चंद्रमानाममुनिराट् दृष्ट्वा मां विस्मितोऽवदत् ॥ संपाते किमिदं तेद्य विरूपं केन वाकृ
तम् ८ जानामित्वामहं पूर्वमत्यंतं बलवानसि ॥ दग्धौ किमर्थं ते पक्षौ कथ्यतां यदि म
न्यसे ९ ततः स्वचेष्टितं सर्वं कथयित्वा तिदुःखितः ॥ अब्रुवं मुनिराट् हूलं दह्येऽहं दाव
वाह्निना १० कथं धारयितुं शक्तो विपक्षं जीवितं प्रभो ॥ इत्युक्तोऽथ मुनिर्वीक्ष्य मां दया
द्रविलोचनः ११ शृणु वत्सवचो मेऽद्य श्रुत्वा कुरु यथेप्सितम् ॥ देहमूलमिदं दुःखं
देहः कर्मसमुद्भवः १२ ॥ कर्म प्रवर्तते देहेऽहं बुद्ध्या पुरुषस्य हि ॥ अहंकारस्त्वना
दिः स्यादविद्यासंभवो जडः १३ ॥

(शनैः नयने उन्मील्य तत्र शुभम् आश्रमं दृष्ट्वा शनैः शनैः अहं आश्रमस्य समीपं गतवान्) धीरे धीरे
नेत्र खोलि निगाह किया तहां एक मंगलीक आश्रम देखा तब धीरे धीरे चलता हुआ मैं आश्रम के
समीप जाय प्राप्त भया ७ (चंद्रमानाममुनिराट् मां दृष्ट्वा विस्मितः अवदत् संपाते अद्य ते इदं किं वा केन विरू
पं कृतम्) उस आश्रम में चंद्रमा नामे मुनिराज मौको देखि बड़े आश्चर्य युत बोले कि हे संपाते
आजु तू ऐसा क्यों भया अथवा तोको किसने बिरूप किया ८ (अहं त्वं जानामि पूर्वमत्यंतं बलवान्

असितेपक्षौ किं अर्थदग्धौ यदि मन्यसे कथ्यतां) मैं तो को जानता हूँ पूर्व तुम बड़े बलवान रहे अब तेरे दोऊ पक्ष किस हेत जरि गये इति हाल जो मन भावै तौ कहिये ९ (ततः अतिदुःखितः स्वचेष्टितं सर्वकथयित्वा मुनिशार्दूलं अब्रुवन् दाववह्निना अहंदह्ये) तब अत्यंत दुःखित है अपना किया कर्म सब कहि कै पुनः मुनिराज प्रति बोल्यो हेनाथ दावानल सम मैं अन्तर तप्त है रहा हूँ १० (प्रभो विपक्षं जीवितं धारयितुं कथं शक्तः इति उक्तः मुनिः दयार्द्रविलोचनः मां वीक्ष्य) हे प्रभो विनापक्षन मैं जीवन राखने को कैसे समर्थ है सका हूँ कैसे जीहूँ ऐसा कहेउं तब मुनि दया वश आंशु भरे नेत्र मोंको देखि बोले ११ (वत्स अद्य मेव चः शृणु श्रुत्वा यथा इप्सितं कुरु कर्म समुद्रवः देहः इदं देहदुःखं मूलं) हे वत्स अब मेरा वचन सुनु सुनिकै जैसी इच्छा होय सो करु कर्मन करिकै उत्पन्न भई जो देह ताते यही देह दुःख की मूल है १२ (पुरुषस्याहि अहं बुद्ध्या कर्म प्रवर्तते तु अहंकारः अविद्या संभवः जडः अनादिः स्यात्) पुरुष के निश्चय अहंकार बुद्धि करिकै कर्म उत्पन्न होते हैं पुनः अहंकार अविद्या करि कै उत्पन्न भया ताते जड है अनादि कालते है १३ ॥

चिच्छाया सदा युक्तस्तथायः पिण्डवत्सदा ॥ तेन देहस्य तादात्म्यादेहश्चेतनवान्भवेत् १४ देहोऽहमिति बुद्धिः स्यादात्मनोऽहंकृतेर्बलात् ॥ तन्मूल एष संसारः सुखदुःखादिसाधकः १५ आत्मनो निर्विकारस्य मिथ्यातादात्म्यतः सदा ॥ देहोऽहं कर्मकर्ता हमिति संकल्प्य सर्वदा १६ जीवः करोति कर्माणि तत्फलैर्वध्यते वशः ॥ ऊर्ध्वाधो भ्रमते नित्यं पापपुण्यात्मकः स्वयम् १७ कृतं मया अधिकं पुण्यं यज्ञदानादिनिश्चितम् ॥ स्वर्गं गत्वा सुखं भोक्ष्ये इति संकल्पवान्भवेत् १८ ॥

(तप्तअयः पिण्डवत्सदाचित् छाया सदा युक्तः तेन देहस्य तादात्म्यात् देहः चेतनवान्भवेत्) अग्नि में तपाये हुये लोह पिण्ड की नाई सदा चैतन्य की छाया करि कै सदा युक्त अहंकार तेहिकरि कै देह की तादात्म्यते अर्थात् कि चैतन्ययुत अहंकार देह में मिलान भये ते देह भी चैतन्य युक्त भई १४ (अहंकृतेर्बलात् अहंदेहः आत्मनः इति बुद्धिः स्यात् तत्तन्मूलसंसारः सुखदुःखादिसाधकः) अहंकार के सब जता ते चैतन्यता तौ लोप भई अपना को मानि लिया कि मैं देह हूँ आत्मा में ऐसी बुद्धि भई सोई है मूल जाकी ऐसा जो संसार सोई सुख दुःखादि को उपजावने वाला है १५ (निर्विकारस्य आत्मनः मिथ्यातादात्म्यतः सदा अहंदेहः अहंकर्ता इति संकल्प्य सर्वदा) निर्विकार आत्मा को भी झूठे अहंकार संबंध ते सदा यही माने है कि मैं देह भाव हम ब्राह्मण हैं हम क्षत्री हैं हम वैश्य हैं इति सत्य माने हैं पुनः मैं कर्ता हूँ अर्थात् शुभाशुभकर्म करने वाला मैं हूँ इत्यादि संकल्प सदा बनी रहती है १६ (जीवः कर्माणि करोति तत्फलैः अवशवध्यते पापपुण्यात्मकः स्वयं ऊर्ध्वधो नित्यं भ्रमते) जीव शुभाशुभ कर्म करता है सोई फलों करि कै अवश उत्ती में वैया हुआ पापात्मा पुण्यात्मा बनि आपही ऊँची नीची गति में नित्यहीं भ्रमता है अर्थात् पुण्य करि पुण्यात्मा बनि स्वर्ग को जाता है पाप करि पापात्मा है नरक को जाता है फल भोगि भये दूनहु ठोरते आय पुनः जन्म लेता है इत्यादि सदा भ्रमता है १७ (मया यज्ञदानादि पुण्यं अधिकं कृतं निश्चितम् स्वर्गं गत्वा सुखं भोक्ष्ये इति संकल्पवान्भवेत्) मैंने यज्ञ तप तीर्थ व्रत पूजा जप परोपकार दानादि पुण्य कर्म अधिक किया है ताते निश्चय करि स्वर्ग को जाऊँगो उहां सुख भोग करौंगो ऐसा संकल्प करने वाला जीव होता भया १८ ॥

तथेवाध्यासतस्तत्रचिरंभुक्त्वासुखंमहत ॥ क्षीणपुण्यःपतत्यर्वाक्अनिच्छं कर्मचो
दितः १६ पतित्वामण्डलेचैदोस्ततोनीहारसंयुतः ॥ भूमौपतित्वाब्रह्मादौतत्र
स्थित्वाचिरंपुनः २० भूत्वाचतुर्विधंभोज्यंपुरुषैर्भुज्यतेततः ॥ रेतोभूत्वापुनस्तेन
ऋतौस्त्रीयोनिर्निश्चितः २१ योनिरक्तेनसंयुक्तंजरायुपरिवेष्टितम् ॥ दिनेनैकेनक
ललंभूत्वारूढत्वमाप्नुयात् २२ तत्पुनःपंचरात्रेणबुद्बुदाकारतामियात् ॥ सप्त
रात्रेणतदपिमांसपेशित्वमाप्नुयात् २३ पक्षमात्रेणसापेशीरुधिरेणपरिष्कृता ॥ त
स्याएवांकुरोत्पत्तिःपंचविंशतिरात्रिषु २४ ॥

(तथाएवअध्यासतःतत्रमहत्सुखंचिरंभुक्त्वाक्षीणपुण्यःकर्मचोदितः अनिच्छंअर्वाक्पतति) जैसा
कर्म किये तैसेही निश्चय करि अध्यासते अर्थात् मैं पुण्य किया ताही अभिमान ते अतर मैं सुख
की बासना है ताते त्यहि स्वर्गमें बड़ामारी सुख बहुतकाल भोगकिया जब पुण्यक्षीण अर्थात् चुकि
गई तब अन्यकर्मन की प्रेरणा ते अन्इच्छित विनाइच्छा किहे नीचेको गिरे १६ (चइंदोःमण्डले
पतित्वाततःनीहारसंयुतःभूमौपतित्वातत्रब्रह्मादौ चिरंस्थित्वापुनः) स्वर्गते आयजीव चंद्रमा के
मंडलमेंगिरा तदनंतर हिमि सहित भूमिपरगिरा तहां यव गोहूं धानादि अन्नादि में बहुतकाल स्थित
रहा पुनः २० (चतुर्विधंभोज्यंभूत्वाततःपुरुषैर्भुज्यतेरेतो भूत्वापुनःतेनऋतौ स्त्रीयोनिर्निश्चितः) अन्न
पुनः भक्ष्यभोज्यचोप्यलेह्यादि चारिप्रकारको भोजनभया सो पुरुषोंकरिके भक्षणकियागया ताकेरसते
उदरमें बीर्यभया पुनः त्यहिकरिके ऋतुसमयमें स्त्रीकी योनि सींचीगई २१ (योनिरक्तेनसंयुक्तंजरायु
परिवेष्टितंएकेनदिनेनकललंभूत्वारूढत्वमाप्नुयात्) योनिके रक्त करिके सहित बीर्य सूक्ष्मजारामेंल
पेटाहुआ दोऊ एकदिनमें मिलिके दृढताको प्राप्तभया २२ (पुनःतत्पंचरात्रेणबुद्बुदाकारतांइयात्
तत्अपिसप्तरात्रेणमांसपेशित्वमाप्नुयात्) पुनः सोपांचरातिमें पानीके बुज्जाके आकार उसीकी प्र-
माणको होताभया सो निश्चय करिके सातरातिमें यथामांसको अंडा ताही भावको प्राप्तभया मांस-
कोसोअंडाहैगया २३ (सापेशीपक्षमात्रेणरुधिरेणपुतःपंचविंशतिरात्रिषुतस्याःएवअंकुरोत्पत्तिः) सो
मांसपिंडपक्षभरे में रुधिरते लपटाहुआ देखिपरा पुनः पचीस दिनमें तामें निश्चय करि सर्वांग के
अंकुर उत्पन्न भये २४ ॥

ग्रीवाशिरश्चस्कंधश्चष्टुष्टवंशस्तथोदरम् ॥ पंचधांगानिचैकैकंजायतेमासतःक्र
मात् २५ पाणिपादौतथापाश्वर्यकटिर्जानुस्तथैवच ॥ मासद्वयात्प्रजायंतेक्रमेणैव
नचान्यथा २६ त्रिभिर्मसैःप्रजायंतेअंगानांसंघयःक्रमात् ॥ सर्वांगुल्यःप्रजायंते
क्रमान्मासचतुष्टये २७ नाशाकणौचनेत्रेचजायंतेपंचमासतः ॥ दन्तपंक्तिर्नखागु
ह्यंपंचमेजायतेतथा २८ अर्वाक्षमासतश्छिद्रंकर्णयोर्भवतिस्फुटम् ॥ पायुर्मे
ढमुपस्थंचनाभिश्चापिभवेन्वृणाम् २९ सप्तमेमासिरोमाणिशिरःकेशास्तथैवच ॥
विभक्तावयवत्वंचसर्वसंपद्यतेऽष्टमे ३० ॥

(ग्रीवाशिरःचस्कंधःचष्टुष्टवंशःतथाउदरम्एकएकंक्रमात्पंचधाअंगानिचमासतः जायंते) ग्रीवा
शिरपुनःस्कंधपुनः षष्ठरीरचाकटि तैसेही पेट इत्यादि एक एक अंग क्रमते अर्थात् प्रथम ग्रीव पुनः
शिरपुनःस्कंधपुनःषष्ठ पुनः उदर इति क्रमते पांचहुअंगपुनः एकमहीनाभरेमें उत्पन्नभये २५ (पाणि

पादौ तथा पार्श्वः कटिः तथा एव च जानुः क्रमेण एव मासद्वयात् प्रजायंते च अन्यथान्) हाथ पायँ पशुरी कटि जानु अर्थात् घोटना ये भी पूर्व क्रम निश्चय करि दोमहीनामें उत्पन्न भये पुनः और प्रकार नहीं २६ (अंगानां संधयः क्रमात् त्रिभिः मासैः प्रजायंते मासचतुष्टये क्रमात् सर्वांगुल्यः प्रजायंते) सब अंगन के मिलान स्थान क्रमते तीन महीनामें उत्पन्न भये चौथे महीनामें क्रमते सब अँगुरी उत्पन्न भई २७ (पंचमासतः नासाच कर्णौ च नेत्रे जायंते तथा पंचमे दंतपंक्तिः नखाच गुह्यं जायंते) पंचयें महीना तक नासिका पुनः दोऊ श्रवण अरु नेत्र उत्पन्न होते हैं ताही भांति पंचयें महीनामें दांतों की पांति प्ररु हाथ पांयके नख पुनः गुह्य अर्थात् दिशा फिरैकी इन्द्री इत्यादि उत्पन्न भये २८ (षट्मासतः प्रवाक् नृणां मूक्योः छिद्रं स्फुटम् भवति पायः च मेढू उपस्थं च अपि नाभिः भवेत्) षट्मासतक पूर्वही मनुष्यों के कानों के छिद्र प्रसिद्ध भये तथा लिंगेंद्री पुनः अंडकोश कन्या के योनि पुनः निश्चय करिके नाभी इत्यादि सब भये २९ (सप्तमे मासि रोमाणि च तथा एव शिरः केशः च अष्टमे सर्वे अवयवत्वां विभक्तः संपद्यते) सतयें महीनामें सब देह के रोम पुनः ताही भांति निश्चय करि शिर के बाल भये पुनः अठयें महीनामें देह के सर्वांग न्यारे न्यारे होते भये ३० ॥

जठरे वद्धे ते गर्भः स्त्रिया एवं विहंगमः ॥ नवमे मासि चैतन्यं जीवः प्राप्नोति सर्वशः ३१ नाभिसूत्राल्परंध्रेण मातृभुक्तान्नसारतः ॥ बद्धे ते गर्भगः पिंडो न ध्रियेत स्वकर्मतः ३२ स्मृत्वा सर्वाणि जन्मानि पूर्वकर्मणि सर्वशः ॥ जठरानलतप्तोऽयमिदं वचनमब्रवीत् ३३ नाना योनि सहस्रेषु जायमानोऽनुभूतवान् ॥ पुत्रदारादिसंबंधं कोटिशः पशुबांधवान् ३४ कुटुंबभरणे अशक्त्यन्यायन्याये धनार्जनम् ॥ कृतं नाकारवं विष्णुचिन्तां स्वप्नेऽपि दुर्भगः ३५ इदानीं तत्फलं भुंजे गर्भदुःखं महत्तरम् ॥ अशाश्वतेशाश्वतवदेहेतृणां समन्वितः ३६ ॥

(विहंगम एवं स्त्रिया जठरे गर्भः बद्धे ते नवमे मासि जीवः सर्वशः चैतन्यं प्राप्नोति) हे विहंगम गीध इसी भांति स्त्री के उदरमें गर्भ बद्ध तसन्ते नवयें महीना में जीव सब इंद्रियनमें चैतन्यताको प्राप्त भया ३१ (मातृभुक्तान्नसारतः नाभिसूत्राल्परंध्रेण गर्भगः पिंडः बद्धे ते स्वकर्मतः न ध्रियेत) माताको भोजन किया अन्न ताको सारांशरससो बालक की नाभीमें जो सूत्र लगा होता है तामें सूक्ष्म रंध्र होता है तिसमें हृदय वहीरस उदरमें जाता है ताके प्रभावते गर्भको पिंड बद्धता है अरु अपने कर्म प्रभावते नहीं मरता है ३२ (पूर्वसर्वाणि जन्मानि सर्वशः कर्मणि स्मृत्वा जठरानलतप्तः अयमिदं वचनमब्रवीत्) नवें मास जब चैतन्य भया तब पूर्वके सब जन्मों के सब कर्मोंको सुधिकरता भया अरु माता के जठराग्निमें तप्त वह बालक ऐसा वचन बोलता भया ३३ (नाना योनि सहस्रेषु जायमानः पुत्रदारादि पशुबांधवान् कोटिशः सम्बंधं अनुभूतवान्) अनेक प्रकार की योनी हजारों में उत्पन्न भयो तहां तहां पुत्रस्त्री गजवाजिगो आदि पशु बांधु बर्ग इत्यादि कोटिन संबंधभाव जिनमें अपन पौमाने उँ तिन करिके जो कुछ दुःख सुख भया सो सब जान ताहों ३४ (कुटुंबभरणे अशक्त्यन्यायन्याये धनार्जनं कृतं दुर्भगः विष्णुचिन्तां स्वप्नेऽपि नाकारवं) परिवार के पालन में प्रांति किहे धर्म अधर्म विचारहीन धन उपार्जन तौ किया जो दुःख मूल अरु अभागी में विष्णुको स्मरण स्वप्नेमें भी नहीं किया सुख की मूल ३५ (शाश्वतवत् अशाश्वतवदेहेतृणां समन्वितः महत्तरमगर्भदुःखं इदानीं तत्फलं भुंजे) नित्य के तुल्य माने अनित्य देहमें तृष्णाभाव विषय सुख की त्याग सहित बड़ा भारी गर्भ वास को दुःख इत्यादि या समय में सोई पूर्व कर्मनको फल भोगता हों ३६ ॥

अकार्यार्थायेवकृतवान्नकृतं हितमात्मनः ॥ इत्येवंबहुधा दुःखमनुभूयस्वकर्मतः ३७
कदानिष्क्रमणं मे स्याद्गर्भान्निरयसन्निभात् ॥ इत ऊर्ध्वं नित्यमहं विष्णुमेवानुपूज
ये ३८ इत्यादिचित्तयन् जीवो यो नियंत्र प्रपीडितः ॥ जायमानोऽतिदुःखेन नरकात्पा
तकी यथा ३९ पूतिव्रणान्निपतितः कृमिरेष इवापरः ॥ ततो बाल्यादिदुःखानि सर्वे ए
वं विभुंजते ४० त्वया चैवानुभूतानि सर्वत्र विदितानि च ॥ नवर्णितानि मे गृध्रयौवना
दिषु सर्वतः ४१ एवं देहोऽहमित्यस्मादभ्यासान्निरयादिकम् ॥ गर्भवासादिदुःखा
नि भवंत्यभिनिवेशतः ४२ ॥

(आत्मनः हितं न कृतं अकार्यार्थाणि एव कृतवान् इति एव स्वकर्मतः बहुधा दुःखं अनुभूय) जामें अपना
हित है हरिभजन सो तौन किया अरु जामें अकाज है देहसुखसाधन तिनहि निश्चय करि किया
इत्यादि अपने कर्मन को फल बहुत भांति के दुःख तिनहि समुक्ति ३७ (निरयसन्निभात् गर्भात्
कदामो निष्क्रमणं स्यात् इत ऊर्ध्वं अहं नित्यविष्णुं एकानुपूजये) नरक के तुल्य इस गर्भवासे कब मेरा
निकास होयगो इहिते उपरात अर्थात् इस दुःखसे जब छूटौ तबमें नित्यहीं विष्णुको पूजन करोंगो ३८
(इत्यादिचित्तयन् यो नियंत्र प्रपीडितः जीवः अतिदुःखेन जायमानः यथानरकात्पातकी) इस प्रकार चित्त-
वन करता हुआ जैसे जंतामें तार खँचा जाता है तैसे प्रसवपवन प्रेरित योनि यंत्र करिके पीडित जीव
अत्यन्त दुःख करिके उत्पन्न हुआ जैसे नरकते पापी पुरुष कहता है ३९ (पूतिव्रणात् निपतितः कृमिः
इव अपरः एततः बाल्यादिदुःखानि एवं सर्वे विभुंजते) यथापीव पूर्णव्रण फोड़ाते गिरा हुआ कीड़ा ताही
तुल्य दू नरायण बालक देखाता है तदनन्तर बाल अवस्थामें परार्थीनतादि दुःख इसी प्रकार अनेक दुःख
सब भाति भोगता है ४० (गृध्रत्वया चैवानुभूतानि च सर्वत्र विदितानि यौवनादिषु सर्वतः मे नवर्णितानि) हे
गृध्र तुम भी सब बात निश्चय करिके जानते हो पुनः लोकमें सर्वत्र प्रसिद्ध है ताते बाल अरु युवा अवस्था में
यावत् दुःख होते हैं ते सब में नहीं वर्णन किया सो जानत ही हो ४१ (एवं अहं देहः इति अस्मात् अभ्यासात्
अभिनिवेशतः निरयादिकं गर्भवासादिदुःखानि भवन्ति) इसी प्रकार मरता जन्मता जीवमानता है कि
में देह अर्थात् मैं ब्राह्मण हों मैं क्षत्री हों इत्यादि दे हैं सत्यमाने इसी अभ्यास ते अहंकार कि हे कर्म
करता है ताते नरक गर्भवासादि दुःख होते हैं ४२ ॥

तस्माद्देहद्वयादन्यमात्मानं प्रकृतेः परम् ॥ ज्ञात्वा देहादिममतां त्यक्त्वा आत्मज्ञानवान्
भवेत् ४३ जाग्रदादिविनिर्मुक्तं सत्यज्ञानादिलक्षणं ॥ शुद्धं बुद्धं सदा शांतमात्मानम्
वधारयेत् ४४ चिदात्मनि परिज्ञातेन श्रेयो हेऽज्ञा संभवे ॥ देहः पततु प्रारब्धकर्मवेगे
न तिष्ठतु ४५ योगियो न हि दुःखं वा सुखं वा ज्ञानसंभवम् ॥ तस्माद्देहेन सहितो या
वत्प्रारब्धसंक्षयः ४६ तावत्तिष्ठतु सुखेन त्वंधृतकंचुकसर्पवत् ॥ अन्यद्वक्ष्यामि ते प
क्षिन् शृणु मे परमं हितम् ४७ त्रेतायुगे दाशरथिर्भूत्वा नारायणोऽव्ययः ॥ रावणस्य
वधार्थाय दंडकान् गमिष्यति ४८ ॥

(तस्मात् देहद्वयात् अन्यं प्रकृतेः परं आत्मानं ज्ञात्वा देहादिममतां त्यक्त्वा आत्मज्ञानवान् भवेत्) ताते हे
गवि स्थूलसूक्ष्म दांड वेहोते भिन्न प्रकृति जो कारण माया ताते परमात्मा को जानि देहादि यावत्

अपन पौहैं ताकी समता त्यागि आत्मज्ञान युक्त हैंकै ४३ (जाग्रत्आदिबिनिर्मुक्तं) शब्दस्पर्शरूप-
संगंधमनचित्त बुद्धि अहंकार इनकी बशजीव स्थूल देहमें इंद्रादारा व्यवहार करना इति जाग्रत्अ-
वस्था स्वप्नद्वारा सूक्ष्मरूपको व्यवहार स्वप्नअवस्था कारणरूप वशसोइ जाना सुषुप्तिअवस्था इत्यादि
ते न्यारा (सत्यज्ञानादि लक्षणम्) सदा एकरस इति सत्यसदा चैतन्यआनन्द धन इति ज्ञानादि
लक्षण युत आत्मस्वरूप (शुद्धबुद्धंसदाशान्तिं) मायादोष रहित अमलज्ञान सदा शीतल (आत्मानं
अवधारयेत्) ऐसे आत्मा को ध्यानकरु ४४ (चित्आत्मनिपरिज्ञाते अज्ञसंभवेमोहेनष्टे आरब्धकर्म
वेगेनदेहः पततुवातिष्ठतु) चैतन्य आत्म स्वरूप जाने संते पुनः अज्ञान सो उत्पन्न मोह देह की
सत्यता सो नाश भये संते तब प्रारब्ध कर्मन के वेग करिकै देह त्याग होय वा बनीरहै ४५ (ज्ञान
संभवम् योगिनः दुःखंवासुखंवानहि) ज्ञान उत्पन्न होने सो योगी को देह त्याग को दुःख वा देह
रहे को सुख नहीं होता है (तस्मात्त्यावत् प्रारब्धसंक्षयः तावन्धृतकंचुकसर्पवत् देहेनसहितःत्वं
सुखेनतिष्ठ) ताते हेगीध जब तक तेरे प्रारब्ध कर्म नहीं नाश होते हैं तब तक धारण किये कंचुली
सर्प की नाई अनिच्छित देह को धारण किये तू भी सुखपूर्वक बास करु (पक्षिन्तेपरमंहितस्मे
अन्यत्वक्ष्यामिभृण) हे पक्षिन् तेरा परम हितमें और कछु हाल कहता हौं सो सुनु ४६।४७ (त्रेता
युगे अव्ययः नारायणः दशरथिःभूत्वा रावणस्य वधार्थं दंडकात्तु गमिष्यति) त्रेतायुगमें अविनाशी
नारायण आय राजा दशरथ के पुत्र होयेंगे सो रावण के बधहेतु दंडक वनहि जायेंगे ४८ ॥

सीतयाभार्ययासार्द्धलक्ष्मणेनसमन्वितः ॥ तत्राश्रमेजनकजांभ्रातृभ्यांरहितेवने
४९ रावणःचोरवन्नीत्वालंकायांस्थापयिष्यति ॥ तस्याःसुग्रीवनिर्देशाद्बानराः
परिमार्गणे ५० आगमिष्यंतिलजलधेस्तीरंतत्रसमागमाः ॥ त्वयातैःकारणवशा
द्भविष्यतिनसंशयः ५१ तदासीतास्थितितेभ्यःकथयस्वयथार्थतः ॥ तदैवतन
पक्षौद्वावुत्पत्स्यतेपुनर्नवौ ५२ संपातिरुवाच ॥ बोधयामासमांचंद्रनामामुनिकु
लोद्भवः ॥ पश्यंतुपक्षौमेजातौनूतनावतिकोमलौ ५३ ॥

(लक्ष्मणेनसमन्वितःसीतयाभार्ययासार्द्धतत्रवनेआश्रमेभ्रातृभ्यां रहितेजनकजांछोटेभाईलक्ष्मण
संयुक्त सीता नामे अपनी भार्या साथ में लैआय पंचवटीमें बास कीन्हें तहांवनमेंआश्रमबिषे भाइन
करि कै रहित भये संते अर्थात् लक्ष्मण सहित रघुनन्दन श्रृगया हेतु जब वन में दूरि जायेंगे तब
सूने आश्रम में जो जनकनंदनी रहैगी तिनहिं ४९ (चोरवत्त्रावणः नीत्वालंकायां स्थापयिष्यति
तिन सीता को चोर की नाई रावण हरि लै जाय लंकापुरी बिषे स्थापित करै गो ५० (तस्याः
परिमार्गणे सुग्रीवनिर्देशात् बानराःजलधेःतीरंआगमिष्यंतितत्रकारणवशात् तैःत्वयासमागमःभविष्य
तिसंशयःन) तिस सीता को दूँढने निमित्त बानरेश सुग्रीव की आज्ञाते बानर समूह समुद्रके तीर
को आवहिंगे तहां किसी कारण वशते तिन बानरों करिकै तेरे साथ मिलाय होइगो यामें संशयकरने
की बात नहीं है निश्चय मिलान होइगो ५१ (तदातेभ्यःसीतास्थितिं यथार्थतःकथयस्व तदा एव
द्वौपक्षौ पुनःनवौउत्पत्स्यते) तालसभ्य में तिन बानरों से सीता के आस करने को स्थान सत्त्वसत्त्व
कहि दीन्हेंसु ता समय में निश्चय करि कै तेरे दोऊ पक्ष अर्थात् उड़ने के पखना फिरि से नवीन
जामि आवहिंगे ५२ (चंद्रमानामामुनि कुलोद्भवः मांबोधयामास पश्यंतुमेपक्षौ नूतनौअति कोम
लौजातौ) अब तक मुनि के कहेहुये बचन कहतारहां अब संपाति शुद्ध आपने बचन कहत हेबानरों

चद्रमा नामे मुनि कुल में उत्तम सो मो को ज्ञान उपदेश द्वारा बोध किया अब देखौ मेरे पक्ष दोऊ नवीन अति कोमल जामि आये ५३ ॥

स्वस्तिवोस्तुगमिष्यामिसीताद्रक्ष्यथनिश्चयम् ॥ यत्नंकुरुध्वंदुर्लभ्यसमुद्रस्यविलंघने ५४ यन्नामस्मृतिमात्रतोऽपरिमितसंसारवारानिधितीर्त्वागच्छतिदुर्जनोऽपिपरमंविष्णोःपदंशाश्वतम् ॥ तस्यैवस्थितिकारिणस्त्रिजगतांरामस्यभक्ताःप्रियाःयूयंकिंनसमुद्रमात्रतरणेशक्ताःकथंवानराः ५५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टमः सर्गः ८ ॥

(वःस्वस्तिवोस्तुगमिष्यामिनिश्चयम् सीताद्रक्ष्यथदुर्लभ्यसमुद्रस्यविलंघनेयत्नंकुरुध्वं) हेवानरों तुम्हारा कल्याण होय अब मैं जाताहूँ निश्चयकरि तुमसीता को देखौंगे परंतु दुर्लभ्य अर्थात् साधारण किसी के नांघने योग्य नहीं ऐसा जो अगाध अपार समुद्र ताके नांघने की यत्न करौ भाव जो समर्थ होय सो नांघि लंका को जाय ५४ (यत्नामस्मृतिमात्रतःदुर्जनः अपिअपरिमितसंसारवारा निधितीर्त्वाशाश्वतम्विष्णोःपरमंपदंगच्छति) जिनको राम ऐसानाम स्मरणमात्रते दुष्टजनयमनादि भी जाकी प्रमाण नहीं ऐसा अपार संसार समुद्र ताको पार है जो सनातननित्य एकरस विष्णु को परम पद तहां को जाते हैं (त्रिजगतांस्थितिकारिणःएवतस्यरामस्यप्रियाःभक्ताःयूयंवानराःसमुद्रमात्रतरणेशक्थंकिंनशक्ताः) जिनके नाममें ऐसा प्रभाव सो तीनिहूँ लोकन के उत्पत्ति पालन करन हारेतिन श्री रघुनाथजी के प्रिय भक्त तुम सब वानर ते इसतुच्छ समुद्र मात्रके पारजाने में किस प्रकार कादरता धारण किहेहौ क्यों नहीं समर्थहौ अर्थात् सिंधुपार जाने को समर्थहौ ५५ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुममियवल्लभपदशरणागनवैजनाथ
विरचितेअध्यात्मभूषणेकिष्किन्धाकाण्डेऽष्टमःप्रकाशः ८ ॥

गतेविहायसागृधराजेवानरपुंगवाः ॥ हर्षेणमहताविष्टाःसीतादर्शनलालसा १
ऊचुःसमुद्रमपश्यंतोनक्रचक्रभयंकरम् ॥ तरंगादिभिरुन्नद्धमाकाशमिवदुर्ग्रहम् २
परस्परमवोचन्वैकथमेनंतरामहे ॥ उवाचचांगदस्तत्रशृणुध्वंवानरोत्तमाः ३
भवंतोत्यंतत्रलिनःशूराश्चकृतविक्रमाः ॥ कोवात्रवारिधितीर्त्वारजकार्य्यंकरिष्यति ४
एतेषांवानराणांसःप्राणदातानसंशयः ॥ अतोतिष्ठतुमेशीघ्रंपुरतोयोमहाबलः ५
एवानराणांचसर्वेषांरामसुग्रीवयोरपि ॥ सएवपालकोभूयान्नात्रकार्यविचारणाद् ॥

सवैया ॥ गतगीधपयोधिउलंघकऊन कहेवलअंगदथाहलिये । इतजावन आपनिशक्तिकहे फिर जावनमार्हिसंदेहकिये ॥ तुमनायकहौ कहिअक्षपती पुनियातजको ललकारिदिये । हनुमानतहीबल भापिउठेगतसिंधुतटेहरिरामदिये ॥ (विहायसागृधराजेगतेवानरपुंगवाः सीतादर्शनलालसामहत्हर्षेणाविष्टाः) आकाश मार्गकरिके गीधराजके चलैगये संतैसब वानरोत्तम सीता के देखनेकी लालसा करिके बड़े आनंद करिके युक्त भये १ (तरंगादिभिःउन्नद्धंआकाशंइव दुर्ग्रहमूनक्रचक्रभयंकरम् समुद्र पश्यंतःऊचुः) तरंगनकरिके ऊंचायथाआशकिसी को पकरे नहीं मिलता तैसेही पारजाने को दुर्ग-

मनक्रादि जल जंतुजल के भ्रमर इत्यादि भयंकर ऐसा जो समुद्र ताहि देखि वानर बोलते भये २ (परस्परंभवोचनंनैकथम् तरामहेचतत्रअंगदः उवाचवानरोत्तमाःशृणुध्वं) आपुस में सब वानर बोलते भये इस अपार समुद्रको निश्चय करि कौन प्रकार तरौंगे पुनः तहां अंगद बोलते भये हेवानरोत्तमौ सुनौ ३ (भवंतःअत्यंतबलिनःचशूराः विक्रमाःरुतअत्रकोवावारिधिंतीर्त्वारजकार्य्यकरिष्यति) तुमसब अत्यंतबलवान्पुनः शूरहौ पराक्रम बहुत कीन्हेउ है अबकौन समुद्र पारजायकै राज कार्य करौंगे ४ (सःएतेपावानराणांप्राणदातासंशयःनअतःयःमहाबलःशीघ्रमेपुरतःउत्तिष्ठतु) जो कार्यकरै सोई इनसब वानरों को प्राणदाता है यामें संशयनहीं है इसते जो महाबलवान्होय सो शीघ्रहीमेरे आगे उठै ५ (सर्वेषांवानराणांचरामसुग्रीवयोः अपिपालकःभूयात् अत्रकार्यं विचारणान्) सबवानरों को पुनः रघुनंदन सुग्रीव को भी सोई रक्षा करने वाला होयगो यामें कछु विचार करना नहीं है भाव महायश पावहिगो ६ ॥

इत्युक्तेयुवराजेनतूष्णींवानरसैनिकाः ॥ असन्नोचुःकिंचिदपिपरस्परंवल्लोकिनः
७ अंगदउवाच ॥ उच्यतां वै बलं सर्वैः प्रत्येकं कार्यसिद्धये ॥ केन वा साध्यते कार्यं
जानीमस्तदनंतरम् ८ अंगदस्यवचःश्रुत्वा प्रोचुर्वीराः बलं पृथक् ॥ योजनानां द
शारभ्य दशोत्तरगुणं जगुः ९ शतादवाग्जांबवांस्तु प्राह मध्ये वनौ कसाम् ॥ पुरा त्रिवि
क्रमे देवे पादं भूमा लक्षणम् १० त्रिसप्तकृत्वोऽहमगां प्रदक्षिण विधानतः ॥ इदा
नीं वार्द्धक्यस्तौ न शक्नोमि विलंघितुम् ११ अंगदोऽप्याह मे गंतुं शक्यं पारं महोद
धेः ॥ पुनर्लंघनसामर्थ्यं न जानाम्यस्ति वानवा १२ ॥

(इति युवराजेन उक्ते वानरसैनिकाः तूष्णीं आसन् परस्परं विलोकिनः किंचित् अपि न ऊचुः) ऐसा अंगदने कहा तब वानर सब चुप है गये आपुसमें एक एकनकी दिशि देखतेहैं कछु भी न बोलते भये ७ (कार्यसिद्धये प्रत्येकं बलं वै सवै उच्यतां तदनंतरं जानीमः केन वा कार्यं साध्यते) अंगदबोले कि कार्य सिद्धीके अर्थ अपना अपना बल सत्रन करिकै कहा जाय तिस पीछे जानिलेयेंगे कि कौन करिकै कार्य साधा जायगो ८ (अंगदस्यवचः श्रुत्वा वीराः योजनानां दशारभ्य दशोत्तरगुणं जगुः पृथक् बलं प्रोचुः) अंगदको बचन सुनि सब वीर दश योजन आदिदैं दशको द्विगुण त्रिगुण इसी भांति अधिक गमन अलग अलग सब कहते भये अर्थात् गज दश योजन जानेको अपना बल कहे गवाक्ष बीस शरभ तीस ऋषभ चालिस गंधमादन पचास मैदसाठि द्विविद सत्तरि सुषेण असी इस क्रमकहे ९ (वनौ कसाम् मध्येशतात् अर्वाक् जांबवांस्तु प्राह पुरा त्रिविक्रमे देवे भूमा लक्षणं पाद) वानरोंके बीचमें सौके भीतर अर्थात् नब्बे योजन जानेको जाम्बवंत कहे पुनः कहे पूर्वकाल जब वामन रूपधरे बलि सों मांगि लोक नापनेलगे तब पृथ्वीकी प्रमाण भरि भगवान्को एकपद भयाहै १० (अगां प्रदक्षिण विधानतः अहं त्रिसप्तकृत्वा इदानीं वार्द्धक्यस्तः विलंघितुं न शक्नोमि) ता समय में पृथ्वीको प्रदक्षिण विधानते में थकसिवार प्रदक्षिण किया तब युवारहा अब वृद्धावस्था अस्तहौं ताते समुद्र पार नांघि जानेको समर्थ नहीं हौं ११ (अंगदः अपि आह महोदधेः पारं गंतुं शक्यं पुनः लंघनसामर्थ्यं अस्ति वानवान् जानामि) अंगदभी बोले कि समुद्रके पारजानेको मेरी सामर्थ्यहै पुनः नांघि आवनेकी सामर्थ्यहै अथवा नहीं है यह मैं नहीं जानता हौं १२ ॥

तमाहजांववान्वीरस्त्वंराजानोनियामकः ॥ नयुक्तंत्वांनियोक्तुमेत्वंसमर्थेसियद्यपि
१३ अंगदउवाच ॥ एवंचेत्पूर्ववत्सर्वेस्वप्स्यामोदर्भविष्टरे ॥ केनाऽपिनकृतंका
र्थेजीवितुंचनशक्यते १४ तामाहजांववान्वीरोदर्शयिष्यामितेसुत॥येनास्माकंका
र्थसिद्धिर्भविष्यत्याचिरेणच १५ इत्युक्त्वाजांववान्प्राहहनूमंतमवस्थितम् ॥हनूम
न्किरहस्तूष्णीस्थीयतेकार्यगौरवे १६ प्राप्तेज्ञेनेवसामर्थ्यदर्शयाद्यमहाबल॥त्वंसा
क्षाद्यायुतनयोवायुतुल्यपराक्रमः १७ रामकार्यार्थमेवत्वंजनितोसिमहात्मना ॥ जा
तमात्रेणतेपूर्वदृष्टोद्यतंविभावसुम् १८ ॥

(जांववान्वीरःतंआहनः नियामकःत्वंराजायद्यपित्वंसमर्थःअसिमेत्वांनियोक्तुंनयुक्तं) जाम्बवंत
वीर तिन अंगद प्रतिबोले कि हम लोगों पर आज्ञा करनेवाले राजाहौ यद्यपितुम समर्थहौ तथापि
हम तुमको अकेले जानेको आज्ञा तौ नहीं देसकेहैं १३ (केनअपिकार्यनरुतच जीवितुंचनशक्यते
एवंचेत् पूर्ववत्दर्भविष्टरे सर्वेस्वप्स्यासः) तब अंगद बोले कि जब किसीने भी कार्य न किया तब
पुनः जीवको नहीं समर्थ है सकेहैं जो ऐसाही है तौ पूर्वकीनाई कुश बिछावने पर सब मरण की
निश्चय करि शयन करहिंगे १४ (जांववान्वीरः तंआहसुतअचिरेणच अस्माकंकार्यसिद्धिः येनभवि-
ष्यतितेदर्शयिष्यामि) तब जांबवंतवीर तिन अंगद प्रतिबोले हे पुत्र शीघ्रही हमलोगोंको कार्य सिद्धी
जिस करिके होइगी सो वीरको हम तुमहिं देखावते हैं १५ (इत्युक्त्वाजांववान् अवस्थितंहनूमंतं
प्राहहनूमन् कार्यगौरवे किंतूष्णीरहःस्थीयते) ऐसा अंगद प्रतिकहि जांबवंत बैठहुये हनूमान् प्रति
बोले हे हनूमन् ऐसे बड़ेकार्य समय क्यों चुपहैं एकांत स्थानमें बैठेहौ भाव सबतौ वार्ता करते हैं
अरु तुम क्यों चुपबैठे रहे १६ (साक्षात्वायुतनयः वायुतुल्यपराक्रमः त्वंअज्ञेनएवप्राप्ते महाबलअद्य
सामर्थ्यदर्शय) साक्षात् पवनके पुत्रहौ अरु पवनके तुल्य तुम्हारे पराक्रमहै सो तुम अज्ञताको प्राप्त
भये संते अपना बलभूले हौ ताते हेमहाबल अब अपनी सामर्थ्य दिखाइये भाव सिंधुपार जाय राम
कार्य करौ १७ (रामकार्यार्थमहात्मनात्वं एवजनितोसि जातमात्रेणपूर्वते विभावसुम्उद्यतंदृष्ट्वा)
रामके कार्य करनेहेतु महात्मा पवनने तुमको निश्चय करि उत्पन्न कियाहै अरु उत्पन्न होत मात्रही
प्रथम तुम ने सूर्यको उदय होत देखा १८ ॥

पक्कंफलंजिघृक्षामीत्युत्प्लुत्यबालचेष्टया॥योजनानांपंचशतंपतितोसिततोभुवि१९
अतस्त्वद्वलमहात्म्यंकोवाशक्रोतिवर्णितुं॥उतिष्ठकुरु रामस्यकार्यैःपाहिसुव्रत
२० श्रुत्वाजांववतोवाक्यंहनूमानातिहर्षितः ॥ चकारनादंसिंहस्यब्रह्मांडंस्फोटय
न्निव २१ बभूवपर्वताकारस्त्रिविक्रमइवापरः॥लंघयित्वाजलनिधिंकृत्वालंकांचभ
स्मसात् २२ रावणंसकुलंहत्वाऽनेष्येजनकनंदिनीम् ॥ यद्वावध्वागलेरज्ज्वारावणं
वामपाणिना २३ लंकांसपर्वतांधृत्वारामस्याग्रेक्षिषाम्यहम्॥यद्वाट्टट्वैवयास्यामि
जानकीशुभलक्षणां २४ ॥

(अमीपक्कंफलंइतिजिघृक्षाम्बालचेष्टयायोजनानांपंचशतंउत्प्लुतंततःभुविपतितोसि) सूर्य कोदेखि
विचारे कि यह पक्का फल है याको भक्षण करें इति इच्छाकरि बालकेलिकरिके पाँचसय योजनऊपर

को कूदिगये तदनंतर आयभूमिपै गिरे यह जन्म समयकी बात है १९ (अतःत्वत्त्वलमाहात्म्यं वर्णितुं कोवाशक्नोति सुव्रतउत्तिष्ठरामस्य कार्यकुरु नः पाहि) इसकारण तुम्हारे बलको माहात्म्य वर्णन करिवेको कौन समर्थ है सुंदर शोभायमान ब्रह्मचर्य व्रत है जाको इति हे सुव्रत उठौ रामको कार्यकरो अरु हमसब की रक्षाकरो २० (जाम्बवतःवाक्यं श्रुत्वाअतिहर्षितः हनूमान्ब्रह्माण्डस्फोटयन् डवर्षि हस्यनादंचकार) जाम्बवतके कहे सब वचन सुनिकै अत्यंत प्रसन्न होइके मानों ब्रह्मांडको फोरि डारेंगे ऐसा कठोर सिंहको नाद करते भये भावबल सँभारि वींगताकी उत्साहते गर्जिउठे २१ (अपरः त्रिविक्रमइवपर्वताकारः बभूवजलनिधिं लंघयित्वाच लंकांभस्मसात्कृत्वा) यथा दूसरे त्रिविक्रम अर्थात् भूमिनापत समय वाचन जी जैसे बाढि गयेहैं तैसेही हनूमान् जी पर्वताकारहूवै बोले कि समुद्रको नाधिकै पुनः लंका को सम्पूर्ण भस्म करिकै २२ (सकुलेरावणंहत्वा जनकनंदिनीं आने प्येयद्वारज्वागलेबध्वावामपाणिनारावणं) सहितकुल रावणको मारि जनक नंदिनीको लावों अथवा दुष्टके गरेमें रस्ती बांधि वामहाथे करि रावण को गहि अरु २३ (सपर्वतालंकांधृत्वारामस्यअयेअहं क्षिपामियद्वाशुभ लक्षणाम्जानकीदृष्ट्वाएवयास्यामि) दक्षिण हाथे सहित त्रिकूट पर्वत लंकाको उठाय लय आय रघुनंदन के आगे धरों अथवा मंगली कल क्षण है जिनके ऐसी जानकी को देखि निश्चय करि लौटि आवों २४ ॥

श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंजाम्बवानिदमब्रवीत् ॥ दृष्ट्वैवागच्छभद्रंतेजीवन्तींजानकींशु
भां २५ पश्चाद्रामेणसहितोदर्शयिष्यसिपौरुषम् ॥ कल्याणंभवताद्भद्रगच्छत
स्तेविहायसा २६ गच्छंतंरामकार्यार्थंवायुस्त्वामनुगच्छतु ॥ इत्याशीर्भिःसमामं
त्रयविसृष्टःछवगाधिपैः २७ महेन्द्राद्रिशिरोगत्वावभूवद्भुतदर्शनः २८ महानगं
द्रप्रतिमोमहात्मासुवर्णवर्णोऽरुणचारुवक्तः ॥ महाफणीन्दाभमुदीर्घबाहुर्वाता
त्मजोऽदृश्यतसर्वभूतैः २९ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमासहेश्वरसम्वादेकिष्किधाकाण्डेनवमःसर्गः ६ समाप्तः ॥

(हनूमतःवाक्यंश्रुत्वाजाम्बवान्इदमब्रवीत्तेभद्रंजीवन्तींशुभासुजानकीम् दृष्ट्वाएवआगच्छ) हनू-
मान्जीको वचनसुनिकै तब जाम्बवत ऐसाबोलतेभये हेहनूमान् तुम्हाराकल्याणहोय जाउजीवतीहुड
मंगलीक जानकी को देखि लौटि आवो २५ (पश्चात्त्रामेणसहितःपौरुषमर्शयिष्यतिभद्रविहाय
सागच्छतःतेकल्याणंभवतात्) पीछे लंकामें जाय रघुनंदन करिकै सहित पौरुष देखायो हे कल्याण-
रूपआकाश मार्ग करिकै जात समय तुम्हारा कल्याण होय २६ (रामकार्यार्थंगच्छंतंत्वांअनुवायुः
गच्छतु इतिआशीर्भिःसमामंत्रयप्लवगाधिपैःविसृष्टः) रामकार्य करने हेत जात समय तुम्हारे पाछे
पवन चलै भाव सहायक रहें इत्यादि आशीर्वाद न करिकै मन्त्रित वानरेश करिकै आज्ञाको प्राप्त
जो हनूमान् २७ (महेन्द्राद्रिशिरःगत्वाअद्भुतदर्शनःबभूव) महेन्द्रपर्वतके शिखर पर गये तहां अद्भुत
दर्शन होते भये भाव ऐसा भारी रूपभये जिनको देखि वानर विस्मितभये २८ (महानगेंद्रप्रतिमः
सुवर्णवर्णःचारुअरुणवक्त्रःफणीन्द्रआभमुदीर्घबाहुः वातात्मजः महात्मासर्वभूतैःअदृश्यत) बड़े भारी
पर्वत समदेह सोने के सोवर्ण सुंदर अरुण मुख शेषसम सुंदर चिह्नन लंबायमान भुजाऐसे अद्भुत
पवन के पुत्र महात्मा हनूमान सो सब भूतो करिकै देखे गये २९ ॥

इतिश्रीवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणोक्तिष्किधाकाण्डेनवमःप्रकाशः ६ समाप्तः ॥



अथ अध्यात्मरामायण सुन्दरकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेव उवाच ॥ शतयोजनविरतीर्णसमुद्रमकरालयम् ॥ लिलंघयिषुरानंदसं
दोहोमारुतात्मजः ॥ ध्यात्वारामंपरात्मानमिदं वचनमब्रवीत् १ पश्यन्तु वानरास्सर्वे
गच्छन्तं मां विहाय सा ॥ अमोघं रामनिर्मुक्तं महाबाणमिवाखिला २ पश्याम्यथैव रा
मस्य पत्नीं जनकनंदिनीम् ॥ कृतार्थोऽहं कृतार्थोऽहं पुनः पश्यामिराघवम् ३ प्राण
प्रयाणसमये यस्य नाम सकृत् स्मरन् ॥ नरस्तीर्त्वा भवाम्भोधिमपारं याति तत्पदम् ४
किंपुनस्तस्य दूतोऽहं तदांगुलिमुद्रिकः ॥ तमेव हृदये ध्यात्वा लंघयाम्यल्पवारि
धिम् ५ ॥

सत्रैया ॥ सुरसानन पैठि सुबोध किये अम पै मैनाक तुपास दये । जल छांह अस्यो हनि सिंह
कया गत सागर पार प्रमोदछये । लघुरूप धरे पुर पैठतहीं तहें द्वारहिं लंकिनि रोकिदये । हति
मुष्टिक ताहि प्रबोधकरे इति लंकपुरी हनुमानगये ॥ (मकरालयम् समुद्रशतयोजनविस्तीर्णं लिलं
घयिषुः आनंद संदोह मारुतात्मजः परमात्मानं रामं ध्यात्वा इदं वचनमब्रवीत्) शिव बोले किहे गिरिजा
मगर आदि जल जंतुन के रहने को स्थान समुद्र सौ योजन विस्तार है जाको ताहि नांघि जाने में
आनंद समूह है जाके ऐसे पवन पुत्र परमात्मा रामचन्द्र को ध्यान करि ऐसा वचन बोलते भये १
(रामनिर्मुक्तं अमोघं महाबाणं इव मां विहाय सागच्छंतं अखिलाः वानराः सर्वे पश्यन्तु) रघुनन्दन को
छाडाहुआ अमोघ जोखालीन जाय ऐसे महाबाण की नाई मोको आकाश मार्ग करिकै जात समय
यावत् वानरहें तेसव देखें २ (रामस्य पत्नीम् जनकनंदिनीम् अद्यैव पश्यामि पुनः राघवम् पश्यामि
अहंकृतार्थः अहंकृतार्थः) रघुनन्दन की पत्नी जनक पुत्री को आजु निश्चय करि देखिहों तिनकी खवरि
लाय पुनः रघुनन्दन को देखिहों ताते में धन्यहों धन्य हों यह प्रेमकी गलित दशा है ३ (प्राणप्रयाण
समये नरः यस्य नाम सकृत् स्मरन् अपारं भवभ्रंभोधिं तीर्त्वा तत्पदं याति) प्राण जात समय में मनुष्य
जिनको राम ऐसा नाम है एक बार स्मरण करिकै अपार भवसागर को तरिकै तिनही प्रभु के
परम पद को जाता है ४ (तस्य दूतः अहं तत् अंगुलिमुद्रिकः तमेव हृदये ध्यात्वा अल्पवारिधिम्
लघयामि पुनः किम्) जिनको नाम भवतारक तिन प्रभु को दूतमें तिनके अंग अंगुली की मुद्रिका
लीन्हें तिन रघुनन्दन को रूप हृदय में ध्यान धरे यह तुच्छ समुद्र नांघीं तौ पुनः यामें क्या कहना है ५ ॥

इत्युक्त्वा हनुमान्बाहूप्रसार्यायत बालधीः ६ ऋजुग्रीवोर्ध्वदृष्टिः सन्नाकुंचितपद
द्वयः ॥ दक्षिणाभिमुखस्तूर्णपुष्पुवेनिलविक्रमः ७ आकाशात्त्वरितं देवैर्वीक्ष्यमाणोज
गामसः ॥ दृष्ट्वाऽनिलसुतं देवा गच्छन्तं वायुवेगतः ८ परीक्षणार्थं सत्वस्य वानरस्ये
दमब्रुवन् ॥ गच्छत्येष महासत्त्वो वानरो वायुविक्रमः ९ लंकां प्रवेष्टुं शक्तो वानवाजा
नमिहे बलम् ॥ एवं विचार्य नागानां मातरं सुरसाभिधाम् १० अब्रवीद्देवतावृन्दः
कौतूहलसमन्वितः ॥ गच्छत्वं वानरेंद्रस्य किंचिद्विघ्नं समाचर ११ ज्ञात्वा तस्य बलं
बुद्धिः पुनरेव त्वरान्विता ॥ इत्युक्त्वा साययौ शीघ्रं हनुमद्विघ्नकारणात् १२ ॥

(इति उक्त्वा हनुमान् आयत बालधीः बाहूप्रसार्य) ऐसा कहि हनुमान लम्बी पूँछ अरु दोऊ बाहुन
को पसारि ६ (ऋजुग्रीवः ऊर्ध्वदृष्टिः सनपदद्वयः आकुंचित अनिल विक्रमः दक्षिणाभिमुखः तूर्णपुष्पुवे)
सीधीग्रीव ऊँचीदृष्टि किहे संते दोऊपांय सिकोरि पवनतुल्य पराक्रम है जिनके ऐसे हनुमान् दक्षिण
दिशिको मुखकरि पर्वतपर ते कूदते भये ७ (आकाशात् देवैः वीक्ष्यमाणः सत्त्वरितं जगाम वायुवेगतः
गच्छन्तं अनिलसुतं देवा दृष्ट्वा) आकाशते देवनकरिके देखत संते सो हनुमान् आकाशमें शीघ्रगमन की
न्हें पवनसम वेगते जाते हुये पवनपुत्र को देवतालोग देखे ८ (वानरस्य सत्वस्य परीक्षणार्थं ददं ब्रु
वन् एष वानरः महासत्त्वः वायुविक्रमः गच्छति) वानर के बलवीर्य की परीक्षा के अर्थ देवता ऐसा बोले
कि यह वानर महाबलवन्त पवनतुल्य वेगते जाता है ९ (लंकां प्रवेष्टुं शक्तः वानवाबलं जानीमहे एवं वि-
चार्य नागानां मातरं सुरसाभिधाम्) हनुमान को लंका में प्रवेश अर्थात् लंकापुरीके भीतर पैठिपुनः
लौटि आवने की शक्ति है अथवा नहीं है ऐसा विचारि देवता तब नागन की माता सुरसानामे ताहि
बुलाय कै १० (कौतूहलसमन्वितः देवतावृन्दः अब्रवीत् त्वं गच्छ वानरेंद्रस्य किंचिद्विघ्नं समाचर) एक
तमाशा देखने की चाह सहित देवतागण बोलते भये हे सुरसे तुम जाउ वानरन में श्रेष्ठजो हनुमान्
लंका को जाते हैं तिनका कछु विघ्न करौ भावबल बुद्धिकी परीक्षा लेउ ११ (तस्य बलं बुद्धिं ज्ञात्वा
त्वरान्वितः पुनः एहि इति उक्त्वा हनुमद्विघ्नकारणात् साययौ) तिन हनुमान् को बलअरु बुद्धि जानि
कै शीघ्रही पुनः लौटि आयो ऐसा देवतन कहा तब हनुमान् के विघ्न करने के कारण ते सो सुरसा
शीघ्रही जाती भई १२ ॥

आवृत्य मार्गं पुरतः स्थित्वा वानरमब्रवीत् ॥ एहि मेव दनं शीघ्रं प्रविशस्व महामते १३
देवैस्त्वं कल्पितो भक्षः सुधासंपीडितात्मनः ॥ तामाह हनुमान् मातरं हरामस्य शास
नात् १४ गच्छामि जानकीद्रष्टुं पुनरागम्य सत्वरः ॥ रामाय कुशलं तस्याः कथयित्वा
त्वदानमम् ॥ निवेक्ष्ये देहि मे मार्गं सुरसायैनमोस्तुते १५ इत्युक्त्वा पुनरेवाह सुरसाक्षुधि
तास्म्यहम् ॥ प्रविश्य गच्छ मे वक्तुं नो चेत्त्वां भक्षयाम्यहम् १६ इत्युक्त्वा हनुमानाह मु
खं शीघ्रं विदारय १७ प्रविश्य वदनं तेद्य गच्छामि त्वरयान्वितः ॥ इत्युक्त्वा योजना
याम देहो भूत्वा पुरःस्थितः १८ दृष्ट्वा हनुमतो रूपं सुरसापंचयोजनम् ॥ मुखं च का
पवत १९ नमान् द्विगुणं रूपमादधत् १९ ॥
पवन के
इति आवृत्य पुरतः स्थित्वा वानरं अब्रवीत् महामते एहि मे वदनं शीघ्रं प्रविशस्व) राहको रोंकि आगे

स्थित हवै सुरसा हनुमान् प्रति बोलती भई हे महामते इहां आवो मेरेमुख में शीघ्रही प्रवेश करौ किस हेत सो कहत १३ (क्षुधासंपीडितात्मनःदेवैःत्वंभक्षःकल्पितः हनूमान्तांआहमातःअहंरामस्य शासनात्) मैं भूखकरिकै दुखितहौं ताहेत देवतों करिकै तू भोजनदिया गया है सो सुनि हनूमान् तिस सुरसा प्रति बोले हे मातःमैं रघुनाथजी की आज्ञाते या समय में १४ (जानकीद्रष्टुंगच्छामित स्याःकुशलरामायकथयित्वापुनःसत्वरःआगम्यत्वत्माननंनिवेक्ष्येसुरसायैनमोऽस्तुतेमेमार्गदेहि) जानकीजीको देखने हेत लंकाको जाता हौं तिनकी कुशल क्षेमकी खबरि रघुनंदन के अर्थ कहिकै पुनः शीघ्रही आय तेरे मुखमें प्रवेश करिहौं सुरसा के अर्थ नमस्कार है मोंको राहदे रोकुन १५ (इतिउक्ता पुनःसुरसाएवआहअहंक्षुधितास्मिमेवक्रंप्रविश्यगच्छनोचेत्त्वांअहंभक्षयामि) मोंको राहदे ऐसाहनूमान् कहा पुनः सुरसा बोली कि मैं भूखी बहुतहौं मेरेमुख में पैठिकैजाउ नहीं तौ तोको मैं भक्षण करतीहौं १६ (इतिउक्तःहनूमान् आहशीघ्रंमुखं विदारय) ऐसासुरसा कहा तब हनूमान् कहे कि तुम शीघ्रही मुख पसारौ १७ (अद्यतेवदनंप्रविश्यत्वरयान्वितःगच्छामिइतिउक्त्वायोजनंआयामदेहः भूत्वापुरःस्थितः) अभीतेरेमुख में पैठि शीघ्रतायुत जाउँगो ऐसा कहि योजनभरि विस्तार देहकरि आगेस्थित भये १८ (हनूमतःरूपंदृष्ट्वासुरसापंचयोजनंमुखंचकारहनूमान् द्विगुणंरूपंआदधत्) हनूमान् को योजनभरि रूप को देखि सुरसा पांच योजन को मुख करतीभई तब हनूमान् वाकोद्विगुण दशयोजनका रूपधारणकीन्हें १९ ॥

ततश्चकारसुरसायोजनानांचविंशतिम् ॥ वक्रंचकारहनूमांस्त्रिंशद्योजनसंमि
तम् २० ततश्चकारसुरसापंचाशद्योजनायतम् ॥ वक्रंतदाहनूमांस्तुवभूवांगु
ष्ठसन्निभः २१ प्रविश्यवदनंतस्याःपुनरेत्यपुरःस्थितः ॥ प्रविष्टोनिर्गतोऽहंतेवद
नंदेवितेनमः ॥ २२ एवंवदंतदृष्ट्वासाहनूमंतमथाब्रवीत् ॥ गच्छसाधयरामस्यका
र्यंबुद्धिमतांवर २३ देवैःसंप्रेषिताऽहंतेबलंजिज्ञासुभिःकपे ॥ दृष्ट्वासीतांपुनर्गत्वा
रामंद्रक्ष्यसिगच्छभो २४ इत्युक्त्वासाययौदेवलोकांवायुसुतःपुनः ॥ जगामवायु
मार्गेणगरुट्मानिवप्रक्षिराट् २५ समुद्रोप्याहमैनाकंमणिकांचनपर्वतम् ॥ गच्छ
त्येषमहासत्वोहनूमान्मारुतात्मजः २६ ॥

(ततःसुरसायोजनानांचविंशतिम्वक्रंचकारहनूमांस्त्रिंशद्योजनसंमितंचकार) तदनन्तर सुरसा योजनवासको मुखकरती भई तब हनूमान्तीसयोजन प्रमाण शरीर करतेभये २० (ततःसुरसापंचाश त्रयोजनआयतंवक्रंचकारतदाहनूमांस्तुअंगुष्ठसन्निभःबभूव) तदनन्तर सुरसा पचासयोजन विस्तार मुख करती भई तब हनूमान् पुनः अंगुष्ठमात्र तुल्य लघुरूप है जातेभये २१ (तस्याःवदनंप्रविश्य पुनः एत्यपुरःस्थितःदेवितेवदनंअहंप्रविष्टःनिर्गतःतेनमः) लघुरूपते तिससुरसाके मुखमेंपैठि पुनः नासिका द्वारा निसरि आगे स्थितहै हनूमान्जी बोले कि हे देवि तेरे मुखमें पैठिकै मैं निसरिआयां तेरेअर्थ नमस्कार है भाव भवमें जाताहौं २२ (एवंहनूमंतवदंतदृष्ट्वाअथसाअब्रवीत्बुद्धिमतांवरगच्छरामस्यकार्यसाधय) इस प्रकार हनूमान् को वार्ता करते देखि तबसो सुरसा बोलतीभई हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ हनूमान् जाउ रघुनन्दनको कार्य करौ २३ (कपेतेवजंजिज्ञासुभिःअहंदेवैःसंप्रेषितःभोगच्छसीतांदृष्ट्वापुनःगत्वारामंद्रक्ष्यसि) हेकपे तुम्हारे बलकी जिज्ञासाकरिकै मोंकोदेवतोंने पठावारहै सोबलबुद्धि जानि चूकी हे हनूमान् प्रसन्नमनजाउ सीताको देखि पुनः लौटिआय रामको देखौंगे २४ (इ

तिउक्तासादेवलोकंययौपुनःवायुसुतःपक्षिराट्गरुत्मानइववायुमार्गेणजगाम) ऐसाकहि सो सुरसा देवलोकको जातीभई पुनः पवनपुत्र हनूमान् पक्षिनके राजगरुड़ समान पवन वेगकरिकै जातेभये २५ (मणिकांचनपर्वतमैनाकंसमुद्रःअपिआहएपमहासत्वः मारुतात्मजःहनूमान्गच्छति) मणिकांचनमयपर्वतजोमैनाकहै त्यहिप्रति समुद्र निश्चयकरि बोला हे मैनाक यह महाबली पवनको पुत्र हनूमान् जाताहै २६ ॥

रामस्यकार्यसिद्ध्यर्थतस्यत्वंसचिवोभव ॥ सगरेर्वर्द्धितोयस्मात्पुराहंसागरो
भवम् २७ तस्यान्वयेवभवासौरामोदाशरथिःप्रभुः॥ तस्यकार्यार्थसिद्ध्यर्थगच्छ
त्येषमहाकपिः २८ त्वमुत्तिष्ठजलात्तूर्णत्वयिविश्राम्यगच्छतु ॥ सतथेतिप्रादुर
भूज्जलमध्यान्महोन्नतः २९ नानामणिमयैश्रुंगैस्तस्योपरिनराकृतिः ॥ प्राहयातं
हनूमंतमैनाकोऽहंमहाकपे ३० समुद्रेणसमादिष्टस्त्वद्विश्रामायमारुते ॥ आग
च्छामृतकल्पानिजग्ध्वापक्वफलानिमे ३१ विश्राम्यात्रक्षणंपश्चाद्गामिष्यसिय
थासुखम् ॥ एवमुक्तोऽथतंप्राहहनूमान्मारुतात्मजः ३२ ॥

(रामस्यकार्यसिद्ध्यर्थत्वंतस्यसचिवःभवपुरायस्मात्सगरेःवर्द्धितःअहंसागरःभवम्) रामको कार्य सिद्धकरने अर्थ जाताहै ताते हे मैनाक तुम तिस हनूमान्के सचिवहोउ भाव मित्रवनि खानपान विश्रामदेउ क्योंकि पूर्वकालमें जिन सगरके पुत्रोंकरिकै बढावागया ताते मै सागरनाम भयों २७ (तस्यअन्वयेदाशरथिःप्रभुःअसौरामःबभूवतस्यकार्यार्थसिद्ध्यर्थएपमहाकपिः गच्छति) तिन सगरके वंशमें दशरथके पुत्र सबके स्वामी येराम अवतर्णि होतेभये तिनको कार्य सिद्धकरने अर्थ यह महाबली बानर लंकाको जाताहै २८ (तूर्णजलात्त्वंउत्तिष्ठत्वयिविश्राम्यगच्छतुसतथा इतिजलमध्यात् महाउन्नतःप्रादुरभूत्) शीघ्रही जलते तुम उठौ तुम्हारेऊपर विश्रामकरि तब हनूमान् जायँ इति सुनिसो मैनाक बोला जैसा कहतेहौ तैसाही करौंगो ऐसाकहि जलमध्यते महाऊंचा प्रसिद्धभया २९ (नानामणिमयैःश्रुंगैःतस्यउपरिनराकृतिःयातंहनूमंतंप्राहमहाकपेअहंमैनाकः) अनेके मणिनमय श्रृंगनकरिकै शोभायमान पर्वत ताके ऊपर मनुष्य कैसो स्वरूप धारण किहे मैनाक सो जातेहुये जो हनूमान् तिनप्रति बोलताभया कि हेकपे मै मैनाकनामे पर्वतहौ ३० (मारुतेत्वत्विश्रामायसमुद्रेणसमादिष्टःमेआगच्छअमृतकल्पानिपक्वफलानिजग्ध्वा) हे पवनपुत्र तुम्हारे विश्रामलेने अर्थ समुद्रने मौंको आज्ञादियाहै तातेमैं प्रसिद्धभया हौं आप आइये अमृतके तुल्य पक्केफल भोजन की-
ये ३१ (अत्रक्षणंविश्राम्यपश्चात्तथासुखंगमिष्यसिएवंउक्तः अथतंमारुतात्मजः हनूमान्प्राह) त्वदानने विश्रामकरितपश्चात्जब खुशीहोई तब जायउ इसप्रकार कहा तब तिसमैनाक प्रति तास्यहम् जान् बोलतेभये ३२ ॥

खंशीघ्रंविदारकार्यार्थंभक्षणमेकथंभवेत् ॥ विश्रामोवाकथंमेस्यात्गंतव्यंत्वरितंम
यामदेहोभूत्वाक्त्वास्पृष्टाशिखरःकराग्रेणययौकपिः ॥ किंचिदूरंगतस्यास्यछायां
पवतः ३३ नमान्द्विगुप्रहीत् ३४ सिंहिकानामसाधोराजलमध्येस्थितासदा ॥ आकाशगा
पवन के
प्रावृत्त्यपुयाकृम्याकृष्यभक्षयेत् ३५ तयागृहीतोहनुमांश्चितयामासवीर्यवान्॥के
ंगरोधनंविघ्नकारिणा ३६ दृश्यतेनैवकोऽप्यत्रविस्मयोमेप्रजायते ॥ ए

वंविचित्यहनुमानधोदृष्टिप्रसारयत् ३७ तत्रदृष्ट्वामहाकायांसिंहिकांघोररूपिणीम् ॥ पपातसलिलेतूर्णपद्भ्यामेवाहनद्रुषा ३८ ॥

(रामकार्यार्थगच्छतः मेभक्षणकथंभवेत् वामेविश्रामः कथंस्यात्मयात्वरितंगतव्यं) हनुमान् बोलेंहे मैनाक मैं रघुनाथ जीके कार्य करिवे अर्थ जाता हों तौ मेरा भोजन कैसेहैसकैअथवा मेरेकोविश्राम कैसे हूँ सक्ता है क्योंकि हम करिके शीघ्रही लंका को जाना है ३३ (इतिउक्त्वाकराग्रेणशिखरः स्पष्टक्रपिः ययौकिंचित्दूरंगतस्य अस्यछायांछायाग्रहः अग्रहीत्) ऐसा कहिहाथके नखकरिके बाको शिखर स्पर्श करि हनुमान् जाते भये कछु दूरे गये तबइनकी छायाको छाया पकरनेवाली सिंहिका ने पकरि लिया न चलि सके ३४ (जलमध्येसदा स्थितसिंहिकानामसाधोरात्राकाङ्गामिनांछायां आक्रम्यआकृष्यभक्षयेत्) समुद्र के जल मध्यमें सदा रहती रहै सिंहिका नाम है जाको सो भयंकर राक्षसी क्याकरै कि आकाशमें जानेवाले पक्षी आदिकोंकी छायाको गहि खैचिके भक्षण करिलेती रहै ३५ (तथागृहीतःवीर्यवान् हनुमांश्चितयामास इदंकेनविघ्नकारिणामेवेगरोधनंकृतं) तिसराक्षसी करि कै पकरे हुये बड़े बली हनुमान् सो मन में चिंतवन करते भये कि यह किस विघ्नकारी करि कै मेरी वेग रोक करीगई भाव किसने मेरी गति रोकिदिया ३६ (अत्रकोपिनएवदृश्यते मेविस्मयः प्रजायते एवंहनुमान्विचित्य अधोदृष्टिप्रसारयत्) इहां कोई भी नहीं देखाता है यह मों को बड़ा आश्चर्य मालूम होता है गति भंग में क्याकारण है इसप्रकार हनुमान् विचार करि नीचेको दृष्टि फैलावते भये भाव तरे निहारि जल में देखे ३७ (तत्रमहाकायां घोर रूपिणीम् सिंहिकां दृष्ट्वातूर्ण सलिलेपपात रूपापद्भ्यां एवअहनत्) तहां बड़ीभारीदेहहै जाकी भयंकररूपहैजाको ऐसी सिंहिका को देखे शीघ्रही जल में कूदि परे क्रोध करिके दोनों पांयन करिके सिंहिका को मारते भये ३८ ॥

पुनरुत्प्लुत्यहनुमान्दक्षिणाभिमुखोययौ ॥ ततोदक्षिणमासाद्यकूलंनानाफलद्रुमम् ३९ नानापक्षिमृगाकीर्णंनानापुष्पलतावृतम् ॥ ततोददर्शनगरंत्रिकूटाचलमूर्धनि ४० प्राकारैर्वहुभिर्युक्तंपरिखाभिश्चसर्वतः ॥ प्रवेक्ष्यामिकथंलंकांमितिचिंतापरोऽभवत् ४१ रात्रौवेक्ष्यामिसूक्ष्मोऽहंलंकांरावणपालितं ॥ एवंविचित्यतत्रैवस्थित्वालंकांजगामसः ४२ धृत्वासूक्ष्मंवपुर्द्वारंप्रविवेशप्रतापवान् ॥ तत्रलंकापुरीसाक्षाद्राक्षसीवेषधारिणी ४३ प्रविशंतंहनूमंतंदृष्ट्वालंकाव्यतर्जयत् ॥ कस्त्वं वानररूपेणमामनादत्यलंकिनीम् ४४ ॥

(हनुमान्पुनः उत्प्लुत्यदक्षिणाभिमुखोययौ ततोदक्षिणंकूलं आसादनानाफलद्रुमं) हनुमान् जी पुनः कूदि आकाश में दक्षिण दिशि को जातेभये समुद्र के दक्षिण किनारे पर पहुंचि देखे अनेक फलन युत वृक्ष लगे हैं ३९ (नानापुष्पलतावृतम् नानापक्षिमृगाकीर्णंततःत्रिकूटाचल मूर्धनिनगरं ददर्श) अनेक प्रकार के फूलन सहित लता वृक्षों पर फैलीहैं अनेकन पक्षी वृक्षोंपर भूमि में समूह मृगा भरे हैं तदनंतर हनुमान् जी त्रिकूटाचल पर्वत पर लंकानगर को देख ते भये ४० (प्राकारैः बहुभिःयुक्तंच सर्वतःपरिखाभिः लंकांकथंप्रवेक्ष्यामि इतिचिंतापरःअभवत्) मंदिर बहुतभांतिन करि कै युक्त पुर सब दिशि में खोवा करि कै गुप्त ऐसे दुर्गम लंका को किस प्रकार प्रवेश करौं इत्यादि चिंतापर होते भये भाव मनु में विचार करते हैं कि किसयुक्तिते निर्विघ्न भीतरजाऊँ ४१ (रावण

पालितंलंकां सूक्ष्मःमहारात्रौ वेक्ष्यामि एवंविचित्यतत्रएवस्थित्वासः लंकांजगाम) महाबली रावण करि कै रत्ना की जाती अगम जो लंका तामें छोटा रूप धरि में रात्री विषे प्रवेश करि हों ऐसा विचारि तहैं थैंभे रहे रात्रि भये सो हनुमान् लंका को जाते भये ४२ (सूक्ष्मवपुः धृत्वाप्रतापवान् द्वारप्रविवेश तत्रसाक्षात्त्राक्षसी वेषधारिणी लंकापुरी) छोटा तन धरि प्रतापवान् हनुमान् पुरद्वार में पैठे तहां प्रसिद्ध राक्षसी वेष धारण किहे लंकापुरी प्रथमहीं मिली ४३ (हनूमंतंप्रविशंतंदृष्ट्वा लंकाव्यतर्जयत् मांलंकिनीमृगनाहत्य वानररूपेणत्वंकः) हनुमान् को द्वार में पैठत देखि लंका अनादर पूर्वक बोली कि मैं जो लंकिनी ताहि निदरि वानर रूप करि कै तू को है ४४ ॥

प्रविश्यचोरवद्रात्रौकिंभवान्कर्तुमिच्छति ॥ इत्युक्त्वारोषताम्राक्षीपादेनाभिजघान तम् ४५ हनुमानपितांवाममुष्टिनावज्ञयाहनत् ॥ तदैवपतिताभूमौरक्तमुद्रमती भृशम् ४६ उत्थायप्राहसालंकाहनूमंतंमहाबलम् ॥ हनुमान्गच्छभद्रंतेजिता लंकात्वयानघ ४७ पुराहंब्रह्मणाप्रोक्ताह्यष्टाविंशतिपर्यये ॥ त्रेतायुगेदाशरथी रामोनाशयणोव्ययः ४८ जनिष्यतेयोगमायासीताजनकवेश्मनि ॥ भूभारहरणार्थायप्रार्थितोयंमयाक्वचित् ४९ सभार्योराघवोभ्रात्रागमिष्यतिमहावनम् ॥ तत्र सीतांमहामायांरावणोपहरिष्यति ५० पश्चाद्रामेणसाचिव्यंसुग्रीवस्यभविष्यति ॥ सुग्रीवोजानकींद्रष्टुंवानरान्प्रेषयिष्यति ५१ ॥

(चोरवद्रात्रौप्रविश्यभवान्कर्तुमिच्छतिइतिउक्त्वारोषताम्राक्षी पादेनाभितंजघान) चोरकी नाई रात्री में प्रवेश करिकै पुरमें आपक्या किया चाहते हैं ऐसा कहिकोप करि लाल भये हैं नेत्र जाके ऐसी लंकिनी पांये करिकै तिन हनुमान् को मारती भई ४५ (हनुमान्मपि वाममुष्टिनावज्ञया यातांअहनत् तदाएवभृशमृक्तंउद्रमतीभूमौपतिता) हनुमान् भी वामहाथ मूठी करिकै निदरिता को मारते भये ता समय बारंबार रक्त मुख सो उगिलती हुई भूमि पर गिरिपरी ४६ (सालंका उत्थायमहाबलंहनूमंतंप्राहअनघहनूमान्गच्छतेभद्रंत्वयांलंकाजिता) सो लंकिनी उठिकै पुनः महा बली जो हनुमान् तिन प्रति बोलती भई हे निःपापहनूमान् सुख पूर्वक जाउ तुम्हारा कल्याण होय तुमने लंका जीता ४७ (अहंपुराब्रह्मणाप्रोक्ताह्यष्टाविंशतिपर्यायेत्रेतायुगेअव्ययःनारायणः दाशरथी) सोप्रति पूर्वहीं ब्रह्मणे कहा है कि अष्टावसरे त्रेतायुगमें अविनाशी नारायण दशरथ के पुत्र होयगे ४८ (योगमायाजनकवेश्मनिसीताजनिष्यतेमयाप्रार्थितःअयंभूभारहरणार्थायक्वचित्) योगमाया आय जनक के मंदिर में सीता उत्पन्न होइंगी सो पूर्व मैंने प्रार्थना किया है ताते वैभूमि को भार हरनेअर्थ किसी समयमें ४९ (भ्रात्रासभार्यःराघवःमहावनंगमिष्यतितत्रमहामायासीतां रावणोपहरिष्यति) छोटेभाई सहित भार्यारघुनंदन महावन को जायगे तहां महामाया सीता को रावण हरिलै जायगे ५० (पश्चाद्रामेणसुग्रीवस्यसाचिव्यंभविष्यतिजानकींद्रष्टुंसुग्रीवःवानरान्प्रेषयिष्यति) पीछे राम करिकै सुग्रीव के साथमित्रता होई तब जानकी को देखिवे हेत सुग्रीव वानरन को पठावहिगे ५१ ॥

तत्रैकोवानरोरात्रावागमिष्यतितेंऽतिकम् ॥ त्वयाचभर्त्सितःसोपिऽत्वांहनिष्यतिमु ष्टिना ५२ तेनाहतात्वंव्यथिताभविष्यसिदानघे ॥ तदैवरावणस्यांतोभविष्यन्ति

नसंशयः ५३ तस्मात्त्वयाजितालंकाजितंसर्वत्वयानघ ॥ रावणांतःपुरवरेक्रीडा
काननमुत्तमम् ५४ तन्मध्येऽशोकवनिकादिव्यपादपसंकुला ॥ अस्तितस्यामहा
वृक्षःशिशपानाममध्यगः ५५ तत्रास्तेजानकीघोरराक्षसीभिःसुरक्षिता ॥ दृष्ट्वै-
वगच्छत्वरितंराघवायनिवेदय ५६ धन्याहमप्यद्यचिरायराघवस्मृतिर्ममासीद्वव
पाशमोचनी ॥ तद्भक्तसंगोप्यतिदुर्लभममप्रसीदतांदाशरथिःसदाहृदि ५७ ॥
उलंघितेऽवधौपवनात्मजेनधरासुतायाश्चदशाननस्य ॥ पुस्फोरवामाक्षिभुजश्च
तीव्ररामस्यदक्षांगमतीन्द्रियस्य ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेसुन्दरकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(तत्रएकःवानरःरात्रौतेभंतिकंआगमिष्यतिचत्वयाभर्त्सितःसःअपित्वांमुष्टिनाहनिष्यति) तिनमें
ते एक वानर रात्री में तेरे समीप आवेगो पुनः तू करिके तिरस्कार भया वह वानरभी तोहि मुष्टिका
करिके मारैगो ५२ (अनवेयदातेनाहतात्वंव्यथिताभविष्यतितदाएवरावणस्यअंतःभविष्यतिसंशयः
न) निः पापेजव तिसवानर करिके ताड़न करीगई तू बड़ी व्यथित होइगी तवै रावण को भंत
काल होइगो यामें संशय नहींहै ५३ (अनवत्वयालंकाजितातस्मात्त्वयासर्वजितंरावणस्यअंतःपुरवरे
उत्तमम्क्रीडाकाननम्) हे निःपापतुमने लंकाजो मेंहों ताको जीता ताते अवतुमने इहां के वासिन
को सबको जीतिलिया अब जिस हेत आयेहों सो हाल सुनिये रावणको को जो राजमंदिर
विस्तारते उत्तमहै त्यहि सोंवां के बीचमें क्रीडा करिवे योग्य उत्तम वन है ५४ (तत्मध्येदि-
व्यपादपसंकुलाअशोकवनिकाअस्तितस्यामध्यगःशिशपानाममहावृक्षः) तिसके मध्यमें दिव्यवृक्षों
करिके परिपूर्ण अशोक वाटिका है ताके मध्यमें शिशम नाम बड़ाभारी वृक्ष है ५५ (तत्रजानकी
आस्तेयोरराक्षसीभिःसुरक्षितागच्छत्वाएवत्वरितंराघवायनिवेदय) तहांजानकीहैंअरु भयंकरराक्षसिन
करिके सुंदरी प्रकार रक्षाकीजाती हैं तहां जाउ जानकी को निश्चय करि देखि शीघ्रही जाय
रघुनंदनके अर्थ खबरि सुनावो ५६ (भवपाशमोचनीराघवस्मृतिःचिरायममआसीत्अद्यअहंपि
धन्याअतिदुर्लभःतत्भक्तसंगःअपिममहृदिसदादाशरथिःप्रसीदतां) भवबंधनको छोड़ावन हारी श्री
रघुनाथकी स्मृति अर्थात् नामरूप की स्मरण बहुत कालके अर्थमोको होतीभई भावबहुत कालतक
प्रभुकी स्मरणवनी रहैगीताते या समयमेमेंभी धन्यभई पुनः जोलोकमें अत्यन्तदुर्लभ तिनकेभक्तको
संगनिश्चय करिभया तातेअव मेरेहृदयमें सदावास किहे दशरथनन्दनप्रसन्नरहैं भावध्यान न छूटै ५७
(पवनात्मजेन अव्योउलंघिते अतीन्द्रियस्यरामस्यदक्षांगधरासुतायाःचदशाननस्य वामाक्षिचभुजःतीव्रं
पुस्फोर) पवन नन्दनकरिके समुद्रपार नांघत संतेजे इन्द्रिनके व्यवहारतेपरहैं रघुनाथजी तिनको भी-
मौधुर्यदेशमें दक्षिणभंगतया धरासुता जानकीजीकोपुनः रावणकोवामनेत्र वामभुजाअत्यन्तफरकिउठे
भावरघुनन्दन को दक्षिणनेत्र भुजाफरका तयाजानकीजीको वामनेत्र भुजाफरका सोमिलन सूचकस-
गुनभया अरु रावणको वामनेत्र भुजा फरका सोमृत्युसूचक असगुनहै ५८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पदुमसियवल्गुभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणसुन्दरकाण्डेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

ततो जगाम हनुमान् लंकां परमशोभनाम् ॥ रात्रौ सूक्ष्मतनुर्भूत्वा बभ्राम परितः पुरीम् १
सीतान्वेषणकार्यार्थं प्रविवेश नृपालयम् ॥ तत्र सर्वप्रदेशेषु विविच्य हनुमान् कपिः २
नापश्यज्जानकीं स्मृत्वा ततो लंकां अभिभाषितम् ॥ जगाम हनुमच्छ्रीं प्रमशोकवनि-
कां शुभां ३ सुरपादपसंबाधारत्नसोपानवापिकाम् ॥ नानापक्षिमृगाकीर्णं स्वर्णप्र-
सादशोभिताम् ४ फलैरानघशाखाग्रपादपैः परिवारिताम् ॥ विचिन्वन् जानकीं तत्र
प्रतिवृक्षं मरुत्सुतः ५ ददर्श भ्रलिहंतं तत्र चैत्यप्रासादमुत्तमम् ॥ दृष्ट्वा विस्मयमाप-
न्नो मणिस्तंभशतान्वितम् ६ समतीतपुनर्गत्वा किंचिद्दूरं समारुतिः ॥ ददर्श शिं-
शिपावृक्षमत्यंतानिविडच्छदम् ७ अदृष्ट्वा तपमाकीर्णं स्वर्णवर्णविहंगमम् ॥ तन्मूले
राक्षसीमध्ये स्थितां जनकनंदिनीम् ८ ॥

सवैया ॥ गतलंकपुरीधरद्वंद्वि अशोकवनेद्रुममूल सुसीयलहे । द्रुमगुप्तरहे त्यहिऔसर रावणधायसियाहि
कुबैनकहे ॥ गतशासन देखल राक्षसि कोटिन सासति कैतिनहीयदह । दुखीपीडित शोचत देखिसियाह-
नुमानतहीदृगनीरवहे (ततः हनुमान् परमशोभनां लंकां जगाम रात्रौ सूक्ष्मतनुः भूत्वा परितः पुरीं बभ्राम)
तदनन्तर हनुमान् परमशोभायमानलंकापुरके भीतरजाते भये रात्रीविषे धोटातनुधरिचारिहु दिशिलंका
पुरीमें घूमते भये २ (सीतान्वेषणकार्यार्थं नृपालयम् प्रविवेश तत्र हनुमान् कपिः सर्वप्रदेशेषु विविच्य) सीता
द्वंद्वनकार्यके स्वारथी है ताते राजमंदिर में पैठि हनुमान् कपि तहांसव मंदिर के भीतरमें द्वंद्वि फिर
परन्तु २ (जानकीं न अपश्यत् ततः लंकां अभिभाषितं स्मृत्वा शीघ्रं हनुमान् शुभाम् अशोकवनिकां जगाम)
राजमंदिर में जानकी को न देखे तबतक लंकिनी को कहाहुआवचन सुधिभया तबशीघ्रही हनुमान्
मंगलीक जो अशोक बाटिकाहै तहांकोजाते भये ३ (सुरपादपसंबाधाम्) जहां कल्पवृक्षसमूहलगेहैं (रत्न
सोपान वापिकाम्) जिनमें मणिनमयसीढ़ी ऐसी बावली बनीहैं (नानापक्षिमृगाकीर्णं) अनेकन पक्षी
अरु मृगा भरेहैं (स्वर्णप्रासादशोभिताम्) सोने के अनेकन मंदिर शोभितहैं ४ (फलैः शाखाग्रमनम्रपा
दपैः परिवारिताम् तत्र मरुत् सुतः प्रतिवृक्षं जानकीम् विचिन्वन्) फलन करिके डारनकी फुनगालाचि-
रहीहैं जिनमें ऐसे वृक्षों करिके अशोक बाटिका आच्छादितहै तहां पवनपुत्र हनुमान्जी एकएक वृक्ष
केतरे जानकीजीको द्वंद्वते भये ५ (तत्र उत्तमम् चैत्यप्रासादं भ्रलिहंतं ददर्श मणिस्तंभशतान्वितम्
दृष्ट्वा विस्मयमापन्नः) तहां अशोक बाटिका में उत्तम विस्तार सहित ऊंचा ऐसा जो मेघोंको स्पर्शकरताहै
ताको देखते भये जामें मणिनके खंभा सैकरन युक्तहैं ताको देखि हनुमान् आश्चर्ययुक्त भये ६ (सं-
तीत्यसमारुतिः किंचित् दूरं पुनर्गत्वा अत्यन्त निविडच्छदम् शिशिपावृक्षं ददर्श) तिसमंदिर कोनाधिके
सोमारुतनन्दन हनुमान् कछुदूरि पुनः गयेतहां अत्यन्त सघनं जामें बल पल्लवहैं ऐसा एक शिशिपाव-
र्यात् शिशिमको वृक्ष देखते भये ७ (आतपं अदृष्टं स्वर्णवर्णविहंगमम् आकीर्णं तन्मूले राक्षसी मध्ये
जनकनंदिनीम् स्थितां) घामजिसकेतरे देखि नहीं परताहै सोने कैसो रंग जिनको ऐसे पक्षी समूह
जिस्में बैठेहैं तिस वृक्षकी मूलसमीप राक्षसिन के मध्य में जनक नंदिनी बैठीहैं तिनको कौनभाँति
देखे सो कहत ८ ॥

ददर्श हनुमान् वीरो देवतामिव भूतले ॥ एकवर्णी कृशादीनां मलिनाम्बरधारिणीम् ९
भूमौ शयानां शोचन्तीं रामरामेति भाषिणीम् ॥ आतारं नाधिगच्छन्तीमुपवासकृशां

शुभाम् १० शाखांतच्छदमध्यस्थोददर्शकपिकुंजरः ॥ कृतार्थोऽहंकृतार्थोऽहं
पृवाजनकनंदिनीम् ११ मयैवसाधितंकार्यरामस्यपरमात्मनः ॥ ततःकिलकिला
शब्दोवभूवांतःपुराद्वहिः १२ किमेतदितिसंलीनोवृक्षपत्रेषुमांसुतिः ॥ आयांतं
रावणंतत्रस्त्रीजनैःपरिवारितम् १३ दशास्यंविंशतिभुजंनीलांजनचयोपमम् ॥
दृष्ट्वाविस्मयमापन्नोपत्रखण्डेष्वलीयत १४ ॥

(भूतलेदेवतांइवहनुमान्वाहिरःददर्शकृशांदिनांएकवेणीमूमलिनाम्बरधारिणीम्) यथा भूतलमें देवता
ताही भांति जानकीजीको हनुमान्वाहिर देखतेभये दुर्बल शरीर मनतेदीन सबवारोंकी एकवेणी जटा
जूट सो बांधे अंगमें मलिन वस्त्र धारण कीन्हे हैं ९ (भूमौशयानांशोचंती) भूमिपरशयन किहे मन
में शोचकरि रहीहैं (रामरामइतिवादिनीम्) मुखते रघुवर रघुनन्दन इत्यादिनाम उच्चारण करती
हैं (त्रातारंनाधिगच्छंतीउपवासकृशांशुभाम्) रक्षाकरनेवाले को नहीं प्राप्तहोतीहैं तिस शोकते उ-
पासकरि दुर्बलहैं इतिमाधुर्य अरु ऐश्वर्यमें मंगलमूर्ति हैं १० (शाखांतच्छदमध्यस्थःकपिकुंजरःद-
दर्शजनकनंदिनीमृष्ट्वाअहंकृतार्थःअहंकृतार्थः) शाखन को सघनदल पल्लव मध्यछिपिकै स्थित
है वानरोंमें उत्तम हनुमान् देखतेभये पुनः विचारे किजनकनंदिनीकोदेखा अब मैंधन्यभया धन्यभया
११(परमात्मनःरामस्यकार्यमयाएवसाधितंततःअंतः पुरात्त्वहिःकिलकिलाशब्दःवभूव) परमात्मा
रघुनाथजीको कार्यमैंने निश्चयकरि साधिलिया भाव अब मुद्रिकादे प्रसिद्धवातांकरों ऐसा विचारे
तदनंतर राज मंदिरते बाहेर किलकिलाशब्द होताभया १२ (एतत्किंइतिमारुतिःवृक्षपत्रेषुसंलीनः
तत्रस्त्रीजनैःपरिवारितंरावणंआयांतं) जो शब्द भया यह क्याहै इसको भी जानिलेवै ऐसा विचारि
हनुमान्जी वृक्षके पत्तोंविषे छिपेरहे ताही समयमें देखेके स्त्रीजनों करिकै सहित रावण भावता है
सांकैसाहै १३ (दशमास्यंविंशतिभुजंनीलांजनचयउपमंमृष्ट्वाविस्मयं आपन्नःपत्रखण्डेषुअलीयत)
रावणके दशमुखहैं वंशभुजाहैं नीलांजनको समूह पहार तुल्यभारी देहदेखि हनुमान्जी विस्मय
आश्चर्यको प्राप्त है समूह दलनमें छिपिरहे १४ ॥

रावणोराघवेणाशुमरणमेकथंभवेत् ॥ सीतार्थमपिनायातिरामःकिंकारणंभवे
त् १५ इत्येवंचितयन्नित्यंराममेवसदाहृदि ॥ तस्मिन्दिनेपररात्रौरावणोराक्षसा
धिपः १६ स्वप्नेरामेणसंदिष्टःकश्चिदागत्यवानरः ॥ कामरूपधरःसूक्ष्मोवृक्षाग्र
स्थोऽनुपश्यति १७ इतिदृष्ट्वाद्रुतंस्वप्नस्वात्मन्यवानुचित्यसः ॥ स्वप्नःकदाचि
त्सत्यःस्यादेवंतत्रकरोम्यहम् १८ जानकीवाक्शरोर्बिध्यदुःखितांनितरामहम् ॥
करोमिदृष्ट्वारामायनिवेद्यतुवानरः १९ इत्येवंचितयन्सीतासमीपमगमद्द्रुत
म् ॥ नूपुराणांकिंकिणीनांश्रुत्वासंजितमंगना २० ॥

(रावणःप्रेमरंणराघवेणआशुकथंभवेत्सीतायाःअर्थअपिरामःनआप्नातिकिंकारणंभवेत्) रावण
विचारकरताहै कि मेरामरण रघुनन्दनकरिकै शीघ्रही कैसेहोय बहुत दिन बीतिगये सीताके अर्थराम
अवर्तितक न आये क्याकारण भया जो विलम्बभई १५ (इतिएवंनित्यंचितयत्परामंएवसदाहृदित
स्मिन्दिनेपररात्रौराक्षसाधिपःरावणः) इसीप्रकार अपनीमृत्युहेतु नित्यही विशेषि चितवन करता
हुआ रामरूपको सदा हृदयमें ध्यानराखतारहै ताहीदिन पछिली रातिमें राक्षसोंको राजारावण

सोवतमें स्वप्न देखा १६ (स्वप्नेरामेणसांदिष्टः कश्चिद्वानरः आगत्य कामरूपधरः सूक्ष्मः वृक्षायस्थः अनुपश्यति) स्वप्नेमें क्या देखा कि रघुनन्दनकरिकै पठावा हुवा कोई एक वानर आया इच्छाचारी सूक्ष्म रूपधारण किहे वृक्षकी फुनगीमें बैठा सीताको देखिरहाहै १७ (इतिअद्भुतंस्वप्नं दृष्ट्वा सः स्वभात्मनि एव अनुचित्य कदाचित् स्वप्नः सत्यः स्यात् तत्र अहं एवं करोमि) ऐसा अद्भुत स्वप्न देखिकै सो रावण अपने मनमें चिंतवन किया कि कदाचित् यह स्वप्न सत्यही होय भाव सत्यही वानर आया होइ तौत हांजाय मैं ऐसा हाल करों १८ (अहं नितराम् वाक्शरैः विध्य जानकीं दुःखितां करोमि दृष्ट्वा वानरः रामाय निवेदयतु) मैं नित्यही वचनरूप बाणोंकरिकै बेधनकरि भाव कुवचन कहि जानकी को दुखित करों सो हाल देखिकै वही वानर शीघ्रही जाय रामके अर्थ निवेदन करै सब हाल कहै जाय १९ (इति एवं चिंतयन् द्रुतमसितासमर्पि अगमत् अंगनानूपुराणां किंकिणीनां सिजितं श्रुत्वा) ऐसा चिंतवन करत संते रावण स्निग्ध सहित शीघ्रही सीताके पासको चला तासमें स्त्रियनके नूपुर पायजे बधुंधुरुकटि किंकिणी की ध्वनिको सुनिकै २० ॥

सीताभीतालीयमाना स्वात्मन्येव सुमध्यमा ॥ अधोमुख्यश्रुनयनास्थितारामार्पितांतरा २१ रावणोऽपि तदा सीतामालोक्याह सुमध्यमे ॥ मां दृष्ट्वा किं वृथा सुभ्रूस्वात्मन्येव विलीयसे २२ रामो वनचराणां हि मध्येतिष्ठति सानुजः ॥ कदाचिद् दृश्यते कैश्चित् कदाचिन्नैव दृश्यते २३ ॥

(सुमध्यमा सीताभीतास्वात्मनि एव लीयमाना रामाय अर्पित अंतरा अधोमुखी अश्रुनयनास्थिता) सुंदर मध्यम है जिनको सो सीता शब्द सुनि रावण आवत जानि डरायकै आपने शरीरही में लीन भई भाव सर्वांग में समेटि लीन्ही रघुनन्दनके अर्थ अंतरवृत्ति अर्पिभाव उरमें ध्यान किहे नीचेको मुख कीन्हे अश्रु भरे नेत्रस्थित भई २१ (सीतां आलोक्य तदा रावणः अपि आह सुमध्यमे सुभ्रूमां दृष्ट्वा किं वृथा स्वात्मनि एव विलीयसे) सीताको देखि तब रावण बोला हे सुमध्यमे सुभ्रूवा व सुन्दर कटि सुन्दरी भौहैं वाली सीते मोको देखि क्यों वृथाही आपने सर्वांग अंगहीमें छिपाय लान्हे भाव प्रसन्नतापूर्वक मेरी दिशि क्यों नहीं कटाक्ष करि हेरती है इति माधुर्यमेव चकार्थ पुनः ऐश्वर्यमें व्यंग्यार्थ यथा हे सुमध्यमे भाव जीव ईश्वरके मध्यस्थ आपहीहौ चहौ विमुख करौ चहौ प्रभुकी सन्मुख करौ पुनः हे सुभ्रूभाव जीवनपर मदा सुन्दरि दयायुत आपकी भृकुटी हैं ऐसी जगत् मातृजानि मैं आपहीकी शरण आयाहौ ऐसा जानि क्यों नहीं शीघ्रही कृपा कटाक्ष करि मेरी ओर हेरतीहौ २२ (सानुजः रामः वनचराणां हि मध्येतिष्ठति कदाचित् कैश्चित् दृश्यते कदाचित् न एव दृश्यते] जो रामके स्नेहते मेरी दिशि नहीं हेरतीहौ सो आशरा त्यागों क्योंकि छोटे भाई सहित राम वनवासिनके भाव वानप्रस्थ संन्यासिनके बीच में रहता है तिसके स्त्री पर प्रीति कहां है ताहू पर किसी समयमें काहू को देखि परताहै किसी समय में नहीं देख परताहै भाव अब है या नहीं है इति निश्चय नहीं इति माधुर्यमें वाच्यार्थ अथैश्वर्य व्यंग्यार्थ हे जगदंब जो कहौ कि रघुनाथजीकी शरण हो तब तेरा कल्याण होइगो सो बात मेरे मानकी नहीं है क्योंकि प्रभुकी तौ यह रीति है कि जे स्त्री पुत्र धन धाम देह सुखादि सब त्यागि वनमें एकाग्र स्मरण ध्यान करते हैं तिनके हृदय मध्य में रहते हैं सो भी सबको सुलभ प्राप्ति नहीं कवहुं किसीको ध्यान करिकै देखि परते हैं अरु कभी नहीं देखि परते हैं अरु तुम जिसपर कृपा करतीहौ ताके प्रभु वशीभूत रहते हैं यथा शिव दिव्य सौ वर्ष मंत्रराज जप किये तब प्रभु ध्यानमें आये शिव कहै ऐसे बने रहौ प्रभु बोले बिना सीता हम क्षण भर

नहीं रहित कहे हैं यथा अगस्त्यसंहितायां ॥ कदाचिच्छ्रीशिवोरूपं ज्ञातुमिच्छुर्हरेः परं । दिव्यं वर्षशतं वेदविधि-
ना विधिवेदना ॥ जजाप परमं जाप्यं रहस्ये स्थितचेतसा । प्रसन्नो भूतदा देवः श्रीरामः करुणाकरः ॥ मंत्राराध्ये
न रूपेण भजनीयः सतां प्रभुः । द्रष्टुमिच्छासि यद्रूपं मदीयं भावनास्पदं ॥ आह्लादिनीं परां शक्तिं स्तूयाः सा त्वत्सं-
मतां । तदाराध्यस्तदारामस्तदधीनस्तया विना ॥ तिष्ठामि न क्षणं शम्भो जीवनं परमं मम ॥ इत्यादि प्रभुकी
प्राप्ति आपके आधीन है इति आपकी शरण हों २३ ॥

मया तु बहुधा लोकाः प्रेषितास्तस्य दर्शने ॥ न पश्यन्ति प्रयत्नेन ब्रक्षिमाणाः समंत-
तः २४ किं करिष्यसि रामेण निस्पृहेण सदा त्वयि ॥ त्वया सैदालिङ्गितोऽपि समी-
पस्थोऽपि सर्वदा २५ ॥

(तुनस्य दर्शने मया बहुधा लोकाः प्रेषिताः समंततः प्रयत्नेन ब्रक्षिमाणाः न पश्यन्ति) पुनः तिसरामके
देखने हेतु मैंने बहुत से दूत पठावा ते सर्वत्र लोकमें यत्न पूर्वक ढूँढे परंतु रामको किसीने न देखा ताते
आशा त्यागो वे अब नहीं हैं इति माधुर्ये वाच्यार्थः अर्थे श्वर्ये व्यंग्यार्थः हे जगदंब जो आपक हों कि तुम
स्मरण ध्यान कभी किया नहीं जो करते तो क्यों न प्राप्त होते सो प्रभुके देखने हेतु मैंने मन चित्त
बुद्धि अहंकार सर्वेन्द्रिय इत्यादि बहुतसे दूत पठावा ते सब लोकमें यत्न पूर्वक ढूँढि फिरे रामको किसीने
न देखा भाव विचार करि देख्यों कि काम क्रोधादि युत तामसी तनते कैसे प्रभुकी प्राप्ति है मक्ती है
अरु आप पुत्र मातृवत् नीच ऊंच सबको प्रतिपाल करन हारी हों ऐसा जानि आपकी शरण आया
हों २४ (सर्वदा अपि समीपस्थः त्वया सैदालिङ्गितः अपि त्वयि सदानिस्पृहेण रामेण किं करिष्यसि) सब
कालमें भी राम तेरे समीप रहा अरु तूने सदावा हो हृदयमें भी लगाया तब हूँ तू विषे वाकी प्रीति
नहीं रही क्योंकि अब तक तेरी सुधि न किया ऐसे अनिच्छित राम करि कै तू क्या करेगी मेरी दिशि प्री-
तिकरु इति माधुर्ये वाच्यार्थः अर्थे श्वर्ये व्यंग्यार्थः हे महारानीजी जो आपक हों कि जब रघुनन्दन आ-
वर्हिगे तब तेरा उद्धार होइगो तदा रघुनन्दन सब कालमें आपके समीप ही हैं अरु आप उनहीं की
आश्रित हैं लोककी उत्पत्ति पालन संहारादि सब व्यापार करती हों सो जो आपको व्यापार तिससे
रघुनन्दन अनिच्छित हैं भाव कार्य कारण माया रहित शुद्ध आत्म रूप कुछ नहीं करते हैं तिनकरि
कै क्या करौगी बद्ध मोक्ष करने को आपही समर्थ हों २५ ॥

हृदयेऽस्य न च स्नेह रत्नयिरामस्य जायते २६ त्वत्कृतान्सर्वभोगांश्च त्वद्गुणान्
पिराधवः ॥ भुञ्जानोऽपि न जानाति कृतघ्नो निर्गुणोऽधमः २७ त्वमानीता मया सा
ध्वी दुःखशोकसमाकुला ॥ इदानीमपि नायाति भक्तिहीनः कथं ब्रजेत् ॥ निःसत्त्वो
निर्ममो मानीमूढः पण्डितमानवान् २८ ॥

(अस्य रामस्य हृदये त्वयि स्नेहः न च जायते) इन रामके हृदय में तेरे विषे स्नेह नहीं उत्पन्न होता है
तौ तू क्यों उसमें प्रीति राखे है भाव उधर प्रीति त्यागि मेरेमें प्रीतिकरु इति माधुर्ये वाच्यार्थः अर्थे श्वर्ये
व्यंग्यार्थः हे महारानी जी यावत् देह बुद्धी संसार सो सब आपही को रूप है तामें रघुनन्दन प्रीति नहीं
करते हैं भाव जे आत्म रूप को सत्य माने हैं तिनपर स्नेह करते हैं अरु मैं तो विषयासक्त देह को
सत्य माने हों तौ रघुनन्दन मोपर कैसे रुपा करेगे ताते मोपर रुपा करवे को आपही समर्थ हों २६
(त्वत्कृतान्सर्वभोगान् भुञ्जान् अपि च त्वद्गुणान् अपिराधवः न जानाति कृतघ्नः अधमः निर्गुणः) हे
सीते तेरे किये हुये सब भोग पदार्थों को भोग भी करता है पुनः तेरे गुणोंको निश्चय करिके राम नहीं

जानता है ताते कृतघ्नभाव किसी को किया सलूकनहीं मानताहै ऐसा अधम गुणहीन है इति माधुर्येवाच्यार्थः अथैश्वर्येव्यंग्यार्थः हे जगदंब रावासश्रुत्वास्वतन शोभा अर्पण इत्यादि तुम्हारे किये भोगों को सुख भोगकरते भी हैं पुनः तुम्हारे कियेहुये जो गुणसुख संकल्प कामादि तिनको नहीं जानत अरु कर्मको अभिमानी नहीं ताते कृतघ्न हैं पुनः किंचिनधमति शब्द विषयोभवति इति अधमः कलु भी शब्द विषय जिनसे नहीं होती ताते अधमहै पुनः निर्गुण रजतमगदि गुणोंत पर सच्चिदानन्दहैं तिनको मैं विषयी कैसे पाय सका हों केवल आपकी शरणहों २७ (साध्वीत्वांमयानी तादुःखशोकसमाकुला इदमभीअपिनआयाति निःसत्वःमानांनिःममः भक्तिहीनः कथं ब्रजेत् मूढः पंडितमानवान्) हे पतिव्रतेतोको मैंने बरवश हरिलाया इहां तू दुःखशोक करिकै व्याकुल है तरेहेत अवतक भी राम इहां न आयातौ पराक्रमहीन अरुमानी तथानिर्मोही तेरेमेंप्रीति हीन कैसेआवै पुनः हैतौमूढअरुअपना को पंडित माने है इतिमाधुर्ये वाच्यार्थ अथैश्वर्ये व्यंग्यार्थ हेरामानन्द प्रदायनी मैं दुःखशोक करिकै व्याकुल हों अपने उद्धार हेत प्रभुसों वर भाव करि मैंने तुमको हरिलाया सो अवतक प्रभु इहां न आये ताते शोच करता हों कि हौतौ मूढ अरु अपना को पंडित माने हों पुनः न प्रभुमें मेरी ममता है न भक्ति है तौकैसे प्रभु आवैं ताते केवल आपकी शरण हों २८ ॥

नराधमं त्वद्विमुखं किं करिष्यसि भामिनि ॥ त्वय्यतीवसमासक्तं मां भजन्वा सुरोत्तमम् २९ देवगंधर्वनागानां यक्षकिन्नरयोषिताम् ॥ भविष्यसि नियोक्ता त्वं यदि मां प्रतिपद्यसे ३० रावणस्य बचः श्रुत्वा सीतामर्षसमन्विता ॥ उवाचा धोमुखी भूत्वा निधाय तृणमंतरे ३१ राघवाद्विभ्यतानूनं भिक्षुरूपं त्वया धृतम् ॥ रहिते राघवाभ्यां त्वं शुनीव हविरध्वरे ३२ हतवानसि मां नीचतत्फलं प्राप्यसेऽचिरात् ॥ यदाराम शराघातविदारितवपुर्भवान् ३३ ज्ञायसे मानुषं रामं गमिष्यसि यमांतिकम् ॥ समुद्रं शोषयित्वा वाशरैर्वध्वाथ वारिधिम् ३४ ॥

(भामिनित्वत्विमुखं नरः अधमं किं करिष्यसि त्वयि अतीव सक्तं असुरोत्तमं मां भजस्व) हे भामिनि तुमते विमुख प्रीति रहित पुनः मनुष्य अधम तिसकोलेकै क्या करोगी तुम्हारे विषे अत्यंत प्रीति करने वाला राक्षसों को राजा जो मैंहों ताहि भजौ प्रीति करौ २९ (यदि मां प्रतिपद्यसे देवगंधर्व नागानां यक्ष किन्नर योषिताम् त्वं नियोक्त्री भविष्यसि) हे सीतेजोमोको प्राप्त होइगी तौदेवता गंधर्व नागयक्ष किन्नर इत्यादि की स्त्रियोंपर तू आज्ञाकरने वाली होइगी ३० (रावणस्य बचः श्रुत्वा सीता अधो मुखी भूत्वा अंतरेतृणं निधाय अमर्ष समन्विता उवाच) रावणके बचनसुनिकै सीता नीचे को मुख करि पर पुरुष भाषण अलाक्षात् अनुचित बिचारि बीचमें तृणधरि क्रोध सहित बोलती भई ३१ (राघवात् विभ्यता त्वया नूनं भिक्षुरूपं धृतम् राघवाभ्यां रहिते अध्वरे हविः शुनी इव त्वं) रघुनन्दन ते डरमानि तूने निश्चय करिसंन्यासीको रूप धरि जब रघुनन्दन लक्ष्मण करिकै रहित आश्रममें यथायज्ञ भाग को कुत्तलै भागै तैसेतू ३२ (नीचमां हतवानसि तत्फलं अचिरात् प्राप्यसे यदाराम शराघात भवान् वपुः विदारित) नीचतू मोको हरिलाये ताको फलशीघ्रही पैहै जब रघुनन्दन के बाणों करिकै तेरा शरीर विदारण किया जायगा ३३ (यमस्य अंतिकमागमिष्यसि रामं मानुषं ज्ञायसे शरैः समुद्रं शोषयित्वा अथ वारिधिम् बध्वा) जबयम के पासको जैहै तबरामको मनुष्यजनिहै जब प्रभु आवैंगे तौबाणों करिकै समुद्रको शोषिलेइंगे अथवा समुद्रमें सेतु बांधिलेइंगे ३४ ॥

हंतुं त्वां ममेरामो लक्ष्मणेन समन्वितः ॥ आगमिष्यत्यसंदेहो द्रक्ष्यसे राक्षसाध-
म ३५ त्वां स पुत्रं सह वलं हत्वा नेष्यति मां पुरम् ॥ श्रुत्वा राक्षःपतिः क्रुद्धो जानक्याः परु-
षाक्षरम् ३६ वाक्यं क्रोधसमाविष्टः खड्गमुद्यम्य स त्वरः ॥ हंतुं जनकराजस्य तनयां
ताम्रलोचनः ३७ मंदोदरीनिवार्याहपतिं पतिहिते रता ॥ त्यजेनां मानुषी दीनां दुःखि-
तां कृपणां कृशाम् ३८ देवगंधर्वनागानां वद्ध्यः संति वरांगनाः ॥ त्वामेव वरयंत्यु-
च्चैर्मदमत्तविलोचनाः ३९ ततो ब्रवीद्दशग्रीवो राक्षसीर्विकृताननाः ॥ यथामेव श-
गासीता भविष्यति सकामना ॥ तथायतध्वत्वरितं तर्जनादरणादिभिः ४० ॥

राक्षसे पुत्रमसमरे त्वां हंतुं लक्ष्मणेन समन्वितः रामः आगमिष्यति द्रक्ष्यसे असंदेहः) हे राक्षसन मे अ-
धर्मसमर मे तोहिं मारिखे हेत लक्ष्मण सहित रघुनन्दन आवहिं गेते ब देखिहै यामे संदेह नहीं है ३५
(सहवलं स पुत्रं त्वां हत्वा मां पुरं नेष्यति जानक्याः परुषाक्षरम् वाक्यं श्रुत्वा राक्षःपतिः क्रुद्धः) सहित सेना
सहित पुत्रतोको मारिके रघुनन्दन मोको अवधपुरको लै जाँयगे इति जानकी के कहे कठोर वचन सु-
निके राक्षसोंको राजारावण क्रोधित है ३६ (ताम्रलोचन क्रोधसमाविष्टः जनकराजस्य तनयां हंतुं स त्व-
रः खड्गमुद्यम्य) लालहँगये नेत्रक्रोधभरा दृष्टजानकी को मारने हेत शीघ्रही तरवार खँचि उड़ाव कर
तामया ३७ (पतिहिते रता मंदोदरीनिवार्याह दीनां दुःखितां कृपणां कृशानां मानुषीत्यज) पतिके
हित में रत जो मंदोदरी सो पति को मना करि बोली है नाथ दीन परवश दुःख पीड़ित पति बंधु
हीन इति कृपण दुर्बल इस मानुषी को त्याग करौ ३८ (देवगंधर्वनागानां उच्चैः वरांगनाः बहुव्यः
संति मदमत्तविलोचनाः एव त्वां वरयंति) देवता गंधर्व नाग इत्यादि ऊंचे कुल करिके उत्पन्न उत्तम
स्त्री तुम्हारे बहुती हैं काम मद करि कै माते हैं नेत्र जिन के तौनी सर्ष निश्चय करि तुम्हीं को
वरती हैं भाव जो तुम्हारे ही संग भोग की इच्छा राखे हैं तिन के साथ भोग करौ दीन मानुषी को
क्यों सतावते हो ३९ (ततः विकृताननाराक्षसीः दशग्रीवः अब्रवीत् यथासीता सकामनामे वशगा
भविष्यति तर्जनादरणादिभिः तथात्वरितं यतध्वं) तदनंतर भयंकर हैं मुख जिनके तिनराक्षसिन
सों रावण बोला कि जिस भांति सीता विषय कामना सहित मेरी वश होइ भय देखाय वा आदरादि
उपाइ करिके तैसी शीघ्रही यत्न करौ ४० ॥

द्विमासाभ्यन्तरे सीताय दिमेव शगा भवेत् ॥ तदा सर्वसुखोपेताराज्यं भोक्ष्यति साम-
या ४१ यदि मासद्वयादूर्ध्वमच्छय्यानां भिनंदति ॥ तदामे प्रातराशाय हत्वा कुरुत
मानुषीम् ४२ इत्युक्त्वा प्रययौ स्त्रीभिः रावणो तः पुरालयम् ॥ राक्षस्यो जानकीमेत्य-
भीषयंत्यः स्वतर्जनैः ४३ तत्रैका जानकीमाह्वयौ वनं ते वृथागतम् ॥ रावणेन समासा-
द्य सफलं तु भविष्यति ४४ अपराचाह कोपेन किं विलंबेन जानकीम् ॥ इदानीं ब्रिद्यतामं
गां विभज्य च पृथक् पृथक् ४५ अन्या तु खड्गमुद्यम्य जानकीं हंतुमुद्यता ॥ अन्या
करालवदना विदार्यास्यमभीषयत् ४६ एवतां भीषयंतीस्ताराक्षसीर्विकृताननाः ॥
निवार्यत्रिजटावृद्धाराक्षसी वाक्यमब्रवीत् ४७ ॥

(द्विमासाभ्यन्तरे यदि सीतामेव शगा भवेत् तदामया सा सर्वसुखोपेताराज्यं भोक्ष्यति) दो मास

के बीच में जो सीता मेरी वशी भून होय तब तौ सर्व प्रकार के सुखन सहित मेरे साथ राज्य भोग करै ४१ (यदिमासद्वयात् ऊर्ध्वमत्शय्यान्तमभिनन्दति तदामेप्रातःआशायमानूपीमूहत्वाकुरुत) जो दो मास ते अधिक बीति जाँय अरु मेरीशय्यामें आनन्द पूर्वक न आवे तौमेरे प्रातःकाल के मांजन हेत इस मानुषी को मारि पाक करौ ४२ (इतिउक्त्वारावणः स्त्रीभिःअंतःपुरालयसुप्रययौराश्रया एत्यस्वतर्जनैः जानकीभीषण्यत्यः) ऐसा कहि रावण स्त्रिन सहित राज महलको चलागया राक्षसी समीप जाय आपनी बुद्धि कल्पना करि अनेक दुखद उपायी करि के सीता को डरपावती हैं ४३ (तत्रएकाजानकीआहते यौवनवृथागतंतु रावणेनसमासाद्य सकलंभविष्यति) तिनमें एकराक्षसी जानकी प्रति बोली कि हे राज कुमारी दुःखनेपरी तुम्हारा यौवन वृथाही बीता जाता है पतिको आशात्यागि पुनः रावण को संग करौ तौसफल होई ४४ (चक्रोपेनअपराभाह विलंबेनकिंइदानीं जानकीछेद्यंतांचष्टयक्ष्ण्य अंगंविभज्य) पुनः कोप करिके और राक्षसी बोली कि विलंब करिकै क्या प्रयोजन है इसी समय जानकी को काटि पुनः अलग अलग सब भंग करि बाँटि खाय ४५ (तुअन्याखड्गंउद्यम्य जानकींहन्तुं उद्यताअन्या करालवदना आस्थंविदार्यअभीषयत्) (पुनः और राक्षसी तरवारि खैचि जानकी के मारिवे को उद्यत भई औरि भयंकर वदन वाली राक्षसी मुख पसारि डरावती है भाव में ऐसेही खाय लेऊँगी ४६ (एवंविद्वताननाःताःराक्षसीतांभी पयंती त्रिजटावृद्धराक्षसी निवार्यवाक्यंअब्रवीत्) इस प्रकार भयंकर मुख वाली तोनिराक्षसी तिन सीताको डरपावनी हैं तहां त्रिजटानामे एक वृद्धराक्षसी तो सबकोमनाकरि बचन बोली ४७ ॥

शृणुध्वं दुष्टराक्षस्योमहाक्यं वोहितं भवेत् ॥ न भीषयध्वं रुदतीं न मरुकुरुत जानकीम् ४८ इदानीमेव मे स्वप्ने रामः कमललोचनः ॥ आरुह्यैरावतं शुभ्रं लक्ष्मणेन समागतः ४९ दग्ध्वा लंकां पुरीं सर्वाहत्वा रावणनाहवे ॥ आरोप्य जानकीं मूर्ध्नां के स्थितो हृष्टोऽगमूर्धनि ५० रावणो गोमयहृदे तैलाभ्यक्तो दिगंबरः ॥ आगाहत् पुत्रपौत्रैश्च कृत्वा वदनमालिकाम् ५१ विभीषणस्तुरामस्य सन्निधौ हृष्टमानसः ॥ सेवां करोति रामस्य पादयोर्भक्तिसंयुतः ५२ सर्वधारावणं रासो हत्वा सकुलं मजसा ॥ विभीषणायाधिपत्यं दत्वा सीतां शुभाननां ५३ ॥

(दुष्टराक्षस्यः शृणुध्वं मत्वाक्यं वोहितं भवेत् रुदतीं जानकीं भीषयध्वं न मरुकुरुत) त्रिजटा-बोली है दुष्टराक्षसि तू नौ शोक समुद्र में बूढ़त समय यही मेरा वचन तुमको जहाज होवैगो दुःखपीडित रोवती हुई जानकी ताहि डरपावो न किंतु इसको नमस्कार करौ ४८ (इदानीं एव स्वप्ने शुभ्रं ऐरावतं आरुह्य कमल लोचनः रामः लक्ष्मणेन समागतः) अभी निश्चय करि मेने स्वप्ने में देखा किश्वेतवर्ण ऐरावत हाथीपर सवार कमल नयन रघुनन्दन लक्ष्मण सहित आये हैं ४९ (लंकां पुरीं सर्वाहत्वा आहवे रावणं हत्वा स्वयं के जानकीं आरोप्य हृष्टः अगमूर्धनि स्थितः) लंकापुरी सब भस्म करि संश्राममें सुरेन रावणको मारि रावण अपने अकोरामें जानकीको लैके आनन्दपूर्वक पर्वत परवै-ठे हैं ५० (रावणः दिगंबरः तैलाभ्यक्तः च वदनमालिकां कृत्वा पुत्रपौत्रैः गोमयहृदे आगाहत्) रावण नग्न तनमें तैल लगाये पुनः अपने मूँड़ोंकी माला बनाये हाथमें लिहे पुत्र पौत्रों करिके सहित गोवरभरे कुंडमें बूढ़ता उतराता है ५१ (तु विभीषणः हृष्टमानसः रामस्य सन्निधौ भक्तिसंयुतः रामस्य पादयोः सेवकरोति) पुनः विभीषण प्रसन्न मनसों रघुनाथजीके समीप बैठे भक्तिसहित अर्थात् स्वामी मानि

सेवक भावकी प्रीतिराखे रघुनाथजीके पौंगनकी रोवाकशतेहैं हसरगमेको फल जो होनहार है सोसु नौ ५२ (राक्षसराक्षसरावणरामःभजसाहस्वाविभीषणभानुपराक्षराक्षसीभिःसहित फुलसख सेना सहित रावणको रघुनन्दन सीताही मारि विभीषण के साथ लंकाकी राज्य देंके मंगल मुखी जो श्रीजानकी जीहैं तिनहि ५३ ॥

अंकेनिधायस्वपुरीगमिष्यतिनसशयः ॥ त्रिजटायावचःश्रुत्वाभीतास्ताराक्षस स्त्रियः ५४ तूष्णीमासंस्तत्रतत्रनिद्रावशमुपागताः ॥ तर्जिताराक्षसीभिःसाक्षी ताभीतातिविह्वला ५५ प्रातारंभाभिगच्छंतीकुःखेनपरिभूर्जिता ॥ आश्रुभिः पूर्णनयनान्वितयंतीदमब्रवीत् ५६ प्रभातेभक्षमिष्यतिराक्षस्योमांससंशयः ॥ इदानीमेवमरणंकेनोपायेनभवेत् ५७ एवंसुदुःखेनपरिप्लुतासाविभुक्तकंठरुद तीचिराय॥आलंब्यशाखांकृतनिश्चयामृतौनजानतीकंचित्तुपायमंगना ५८ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेस्वरसंवादेसुंदरकांडेद्वितीयःसर्गः २ ॥

(अंकेनिधायस्वपुरीगमिष्यतिनसशयःनत्रिजटायावचःश्रुत्वाभीतास्ताराक्षस स्त्रियःभीतास्ताराक्षसीभिःसाक्षी) जानकी को अफोरामें लैकै रघुनन्दन आपनी पुरीको जायगे यामें राक्षस नहीं भावजो इन को पुःसाधैशखीमी तो रावण मरे पीछे तुम्हारी क्यापणा होइगी इत्यादि त्रिजटाके पवन सुनिराक्षरी डरामउठी राख ५४ (तूष्णीमासंस्तत्रतत्रनिद्रावशमुपागताःराक्षसीभिःतर्जिताराक्षसीताभीतातिविह्वला) रामराक्ष सी सुपहूँषे छेठी जहाँ कि तहाँ नीयके लखको प्राप्तभई राखरोइगई सबराक्षरिन करिके डरपाईहुई सो जानकी भय करिके व्यकलहैं ५५ (प्रातारंभाभिगच्छंतीकुःखेनपरिभूर्जिताचिंतयंतीसाश्रुभिः पूर्णनयनाद्वयमब्रवीत्) इस समय रक्षाकरणहारा किराकी नहीं पावती भीरपुत्रवकरिके भूर्जित अंतरमें चिंतनकरती आशुनकरिके भरेनेत्र ऐसा पवन बोली ५६ (प्रभातेराक्षस्योमांससंशयः इदानीमेवमरणंकेनोपायेनभवेत्) प्रातहोतही राक्षसी मोको भक्षण करिखेइगी ताते इसी समयमें मेरामरण कौन उपाय करिके होय सोकरौ ५७ (एवंसुदुःखेनपरिप्लुतासाविभुक्तकंठ रिरायरुवतीसुतौनिश्चयामृतौनजानतीकंचित्तुपायमंगना) इसी प्रकारसे सीता दुःखकरिके परिपूर्ण कंठलोखि बहुत बारतक रोवतरही मरणमें निश्चयकरि लक्ष्मी शाखागहे साढ़ा रही उसम खीहैं ताते मरणकी कछु उपाय नहीं जानती हैं तो क्याकरै ५८ ॥

इतिश्रीरसिकलताभितकल्पद्रुमसिगमल्लभपक्षरणागतनैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणोरुपरकाण्डेद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

उद्धनेनवामोक्ष्येशरीरंराघवंविना ॥ जीवितेनफलंकिंरंगममरक्षोधिमाभ्यतः १ दीर्घवेणीममात्यर्थमुद्धनयमविष्यति ॥ एवंनिद्रितसुखिंतांमरणायाभजानकी म् २ विलोक्यहनुमान्किंचिदिचार्यैतदभाषत ॥ शनैःशनैःसूक्ष्मरूपोजानक्याः श्रोत्रगंधनः ३ इक्ष्वाकुवंशसंभूतोराजादशरथोगहान् ॥ अयोध्याधिपतिस्तस्य पत्वारोलीकविश्रुताः ४ पुत्रादेवसमास्सर्वैलक्षणैरुपलक्षिताः ॥ रामश्चलक्ष्मणश्चैवभरतश्चैवशत्रुहा ५ ॥

सवैया ॥ सियसौबतराय उजारिवनै बहुराक्षस वृंदसँहारभयो । शरसेनपती सुतमंत्रिनहू पुनि
अक्ष कुमारहु प्राणहयो ॥ त्यहिवन्धुचलो बलवीरभिरो त्यहिसाथ महाकपि युद्धकयो । वरपांसवँधे
हनुमन्त लिये घननादतहाँ पितु पास गयो ॥ (राघवंविनारक्षोधिमध्यतोममजीवितेनकिंफलंस्यात्
उद्धंधनेनवाशरीरंमोक्षये) शिवजी कहत हे गिरिजा अब जानकी जी अपने मनमें विचारती हैं कि
रघुनंदन बिना राक्षसिनि के बचिमें मोको जीवन करिकै क्या फल है भाव एकदिन मरनेतौ है ताते
गले में फँसरी बांधि करिकै शरीरको छाडिदेउ (ममवेणीअत्यर्थदीर्घाउद्धंधनायभविष्यतिएवंमरणा
यनिश्चितबुद्धिअथतांजानकीम्) मेरे शिरके वारोंकी वेणी अत्यंतलम्बी है सोई फसरी बांधने केअर्थ
होइगी इसप्रकार मरने के अर्थ निश्चय किया जिन्होंने ऐसीजो सीताहैं तिनहिं१।२ (हनुमान् विलो
क्य किंचित्विचार्यसूक्ष्मरूपःजानक्याःश्रोत्रं वचःशनैःशनैःएतत्प्रभाषत्) जानकीजीकोदुखितहनु
मान् देखि कछवार विचारकीन्हें भाव कैसे वार्ता करौपुनःछोटेरूपते कैसा बोले जो जानकी जीके
कानमें सुनिपरै ऐसे वचन धीरा धीरा ऐसाकहे ३ (इक्ष्वाकुवंशसंभूतःमहानराजादशरथःअयोध्या
अधिपतिःतस्यलोकविश्रुतःचत्वारः) इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न महात्मा राजादशरथ अयोध्यापुरी के
पति तिनके लोकमें प्रसिद्धचारि ४ (पुत्राःसर्वैलक्षणैःउपलक्षिताःदेवसमाःरामःचलक्ष्मणःचएवभ
रतःचएवशत्रुहा) चारिपुत्र नीति धर्म उदारता बलवीरता तेजप्रतापादि सब लक्षणनकरिकै युक्त
देवताके तुल्य हैं राम पुनः लक्ष्मण पुनः तेसेही भरत पुनः शत्रुघ्न इतिचारि पुत्रभये ५ ॥

ज्येष्ठोरामःपितुर्वाक्यादृण्डकारण्यमागतः ॥ लक्ष्मणेनसहआत्रासीतयाभार्यया
सह ६ उवासगौतमीतीरेपंचवट्यामहामनाः ॥ तत्रनीतामहाभागासीताजनकनं
दिनी ७ रहितेरामचंद्रेणरावणेनदुरात्मना ॥ ततोरामोऽतिदुःखार्तोमार्गमाणोथ
जानकीम् ८ जटायुषंपक्षिराजमपश्यत्पतितंभुवि ॥ तस्मैदत्त्वादिवंशीघ्रंऋष्यभू
कमुपागमत् ९ सुग्रीवेणकृतामैत्रीरामस्यविदितात्मनः ॥ तद्भार्याहारिणंहत्वात्रा
लिनंरघुनंदनः १० राज्येभिषेच्यसुग्रीवंमित्रकार्यचकारसः॥ सुग्रीवस्तुसमानायवा
नरान्वानरप्रभुः ११ ॥

(ज्येष्ठोरामःसीतयाभार्ययासहआत्रालक्ष्मणेनसहापितुःवाक्यात्दण्डकारण्यंआगतः) चारि में
ज्येष्ठराम सीता नामे अपनीभार्या सहित छोटैभाई लक्ष्मण सहित पिताके वचन ते दण्डकवनको
आये ६ (गौतमीतीरेपंचवट्यामहामनाःउवास) दण्डकवन में गौतमी नदीके तीरेपंचवटी विषे
जानकी लक्ष्मणसहित महाउदारमन रघुनन्दन वास करतेभये ७ (तत्ररामचंद्रेणरहितेमहाभागा
जनकनंदिनीसीतादुरात्मनारावणेननीता) तहां रामचन्द्रकरिकै रहित सूने आश्रममें महाभागवती
जनकपुत्री सीता सो दुष्टात्मा रावण करिकै हरीगई ८ (ततःअतिदुःखार्तःरामःजानकीं मार्गमाणः
अथपक्षिराजंजटायुषंभुविपतितंअपश्यत्तस्मैशीघ्रंदिवंदत्त्वाऋष्यभूकमुपागमत्) तदनंतर अत्यन्त
दुःख करिकै आरत रघुनंदन जानकी को ढूँढतेहुये तहां मार्गमें पक्षिनको राजा जटायु को घायल
भूमि में परादेखे ताके अर्थ शीघ्रहीस्वर्ग वास दैकै रघुनंदन ऋष्यभूक पर्वतपर गये९ (विदितात्मनः
रामस्यसुग्रीवेणमैत्रीकृतातत्भार्याहारिणंवालिनंरघुनंदनःहत्वा) विदित है आत्माजिनकी ऐसे राम
के साथ सुग्रीवने मित्रता किया तिससुग्रीव की स्त्रीको हरि लेनेवालाजो बाली ताहि रघुनंदनमारि
कै १० (राज्येसुग्रीवंअभिषेच्यसःमित्रकार्यचकारतुवानरप्रभुःसुग्रीवःवानरान्वत्समानाय) वानरों की

राज्य विप्रेसुग्रीवको अभिषेक किये इत्यादि सो रघुनन्दन मित्र सुग्रीव को कार्यकरते भये पुनः रघुनन्दन के कार्य हेतु वानरों को राजासुग्रीव सबलोक के वानरों को अपनी राजधानी को बोलाया है कि णिष्ठधामें जमाकरिके ११ ॥

प्रेषयामासपरितोवानरान्परिमार्गणे ॥ सीतायास्तत्रचैकोऽहंसुग्रीवसचिवोहरिः
१२ संपातिवचनाच्छीघ्रमुल्लङ्घ्यशतयोजनम् ॥ समुद्रंनगरीलंकांविचिन्वन्जान
कीशुभां १३ शनैरशोकवनिकांविचिन्वन्शिशपातरुम् ॥ अद्राक्षंजानकीमत्र
शोचन्तीदुःखसंस्तुताम् १४ रामस्यमहिर्षीदेवीकृतकृत्योहमागतः ॥ इत्युक्तोपररामा
थमारुतिर्बुद्धिमत्तरः १५ सीताक्रमेणतत्सर्वश्रुत्वाविस्मयमाययौ ॥ किमिदंमेश्रु
तंव्योस्मिन्वायुनासमुदीरितम् १६ स्वप्नोवामेमनोभ्रातिर्यदिवासत्यमेवतत् ॥ नि
द्रामेनास्तिदुःखेनजानास्येतत्कुतोभ्रमः १७ येनमेकर्णपीयूषवचनंसमुदीरितम् ॥
सदृश्यतांमहाभागःप्रियवादीममाग्रतः १८ ॥

(सीतायाःपरिमार्गणेपरितःवानरान्प्रेषयामासतत्रचैकःहरिःअहंसुग्रीवसचिवः) सीताके ढूँढने निमित्त सुग्रीव सब दिशनोंको वानरों को पठावता भया तिनमें एक वानर मेंभी सुग्रीव को मंत्री हों १२ (संपातिवचनात्शतयोजनंसमुद्रंशीघ्रंउल्लङ्घ्यलंकांनगरींशुभाम्जानकींविचिन्वन्) संपातिके वचनते सौयोजन समुद्र को शीघ्रही नांघि के लंका नगरीमें मंगलरूप जानकी को ढूँढत संते १३ (शनैःविचिन्वन्अशोकवनिकांअत्रशिशपातरुदुःखसंस्तुतांशोचन्तीजानकींअद्राक्षम्) धीरा धीरा ढूँढत संते अशोक वनिकामें इहां शीशम वृक्षके तरेदुःखकी भरीहुई शोचती जानकी को देख्यो १४ (राम स्यमहिर्षीदेवी अहंकृतकृत्यःआगतःइतिउक्त्वाअथबुद्धिमत्तरःमारुतिःउपरराम) रामकीपाट महिषी देवी को देखि मैं कृतार्थभयो ऐसा कहि अब बुद्धिमान् मरुत नन्दन हनुमान् चुप है रहे १५ (तत्सर्व क्रमेणश्रुत्वासीताविस्मयंआययौव्योस्मिन्वायुनासमुदीरितंइदंमेकिश्रुतं) जो हनुमान् कहे सो सब क्रम करिके आदिते अंत तक सुनिके सीता आश्चर्य को प्राप्त भई विचारती हैं कि आकाशसे पवन का कहाहुआ यह मैंने क्या सुना १६ (सत्यंवामेमनःभ्रातिःवायदिस्वप्नःदुःखेनमेनिद्रानास्तिजानामिएत तभ्रमःकुतः) यह सत्यही किसीने कहावा मेरे मनमें भ्रांति है अथवा जो स्वप्न है तौ दुःखकरिके मोको निद्रानहीं आती तौ स्वप्न कैसा पुनः सब बात जानतीहों तौ यह भ्रांति कैसे है ताते सत्यही कोई कहाहै इति निश्चय करि बोली १७ (मेकर्णपीयूषवचनंयेनसमुदीरितंसप्रियवादी महाभागः ममाग्रतःदृश्यताम्) मेरे कर्णोंको अमृततुल्य वचन जिसने कहा है सो प्रिय वचन बोलेने वाला महामागीमेरे आगे प्रसिद्ध है देखिपरे १८ ॥

श्रुत्वातज्जानकीवाक्यंहनुमान्पत्रखण्डतः ॥ अवतीर्यशनैःसीतापुरतःसमवस्थि
तः १९ कलर्विकप्रमाणांगोरक्तास्यःपीतवानरः ॥ ननामशनकैःसीतांप्रांजलिः
पुरतःस्थितः २० दृष्ट्वातंजानकीभीतारावणोऽयमुपागतः ॥ मांमोहयितुमायातो
माययावानराकृतिः २१ इत्येवंचितयित्वासातूष्णीमासीदधोमुखी ॥ पुनरप्याहतां
सीतांदेवियत्त्वंविशंकसे २२ नाहंतथाविधोमातस्त्यजशंकांमयिस्थिताम् ॥ दासो

हंकोशलेन्द्रस्यरामस्यपरमात्मनः २३ सचिवोऽहंहरिन्द्रस्यसुग्रीवस्यशुभप्रदे ॥

वायोःपुत्रोऽहमखिलप्राणभूतस्यशोभने २४ ॥

(जानकीवाक्यंश्रुत्वाशनैःपत्रखंडतःअवतीर्य हनुमान्सीतापुरतःसमवस्थितः) जानकी जीको बचन सुनि धीरा धीरा समूह पत्नों ते उतरि हनुमान् सीता के आगे आय स्थितभये १६ (कलर्विक प्रमाणअंगःपीतवानरःरक्तआस्यःशनकैःपुरतःस्थितःप्रांजलिःसीतांननाम) घरके रहने वाले पक्षीगौ रौवा बरावरि सर्वांग पीतवर्ण को वानर लाल मुख ऐसे रूपते हनुमान् धीरा धीरा आगे समीप जाय हाथजोरि सीताजीको प्रणाम कीन्हे २० (तदृष्ट्वाजानकीभीताअयंरावणःमाययावानराकृतिः मांमोहयितुंउपागतआयातः) तिन हनुमान् को देखि जानकी डरायउठीं कि यह रावण है माया करिके वानराकार बनि मोको मोहिवेहेत समीप आया २१ (इतिएवंचितयित्वासाअधोमुखीतूष्णीं आसीत्तांसीतांपुनःअपिआहदेवियत्त्वंविशंकसे) इस प्रकार चितवन करि सो सीता नीचे को मुख करि चुप है बैठीतिन सीता प्रति पुनः भी हनुमान् बोले हे देवि जो तुम शंका करती हौ कि यह मायावी रावण है २२ (तथाविधःअहंनमातःमयिस्थिताम् शंकांत्यजपरमात्मनः कोशलेन्द्रस्यरामस्य अहंदासः) जो शंका किहेउ तिस विधिको मैं नहीं हौं हेमातः मेरे विपे जो स्थापित किहे हौं सो शंका त्याग करौ क्योंकि परमात्मा कोशलेन्द्रघुनंदन को दास हौं २३ (शुभप्रदेहरिन्द्रस्यसुग्रीवस्य अहंसचिवःशोभने अखिलप्राणभूतस्यवायोपुत्रःअहं) हे कल्याण को देनहारी वानरन के राजा सुग्रीव तिनको मैं मन्त्री हौं हे शोभने सम्पूर्ण जगत्को प्राण पवन तिनको पुत्र मैंहौं २४ ॥

तच्छ्रुत्वाजानकीप्राहहनुमंतंकृतांजलिम् ॥ वानराणांमनुष्याणांसंगतिर्घटतेकथ
म् २५ यथात्वंरामचन्द्रस्यदासोऽहमितिभाषसे ॥तामाहमारुतिःप्रीतोजानकींपु
रतःस्थितः २६ ऋष्यमूकमगाद्रामःशवर्यानोदितःसुधीः॥ सुग्रीवोऽऋष्यमूकस्थो
दृष्टवान् रामलक्ष्मणौ २७ भीतोमांप्रेषयामासज्ञातुरामस्यहृद्गतम् ॥ ब्रह्मचारि
वपुर्धृत्वागतोऽहंरामसंनिधिम् २८ ज्ञात्वारामस्यसद्भावस्कंधोपरिनिधायतौ ॥
नीत्वासुग्रीवसामीप्यंसख्यंचाकारवंतयोः २९ सुग्रीवस्यहताभार्यावालिनातरंघूत
मः ॥ जघानैकेनबाणेनततोराज्येभ्यषेचयत् ३० सुग्रीवंवानराणांसःप्रेषयामास
वानरान् ॥ दिग्भ्योमहाबलान्वीरान्भवत्याःपरिमार्गणे ३१ ॥

(तत्श्रुत्वाकृतांजलींहनुमंतंजानकीप्राह मनुष्याणांवानराणांसंगतिःकथंघटते) सो सुनिके हाथ जोरेहुये जो हनुमान् तिनप्रति जानकीबोलीं कि मनुष्योंकी अरु वानरोंकी संगति कौन प्रकार है सक्ती है २५ यथात्वंइतिभाषसेअहरामचन्द्रस्यदासः प्रीतःमारुतिःपुरतःस्थितःतांजानकींप्राह) जैसे तू ऐसाकहे कि मैं रामचन्द्रको दासहौं यह संगति कैसे भई सो कहू तब प्रीतिपूर्वक पवनपुत्र आगे खड़ेहैं तौन हाल जानकीप्रति कहनेलगे २६ (शवर्यानोदितः सुधीरामःऋष्यमूकं अगात्ऋष्यमूकस्थःसुग्रीवःरामलक्ष्मणौदृष्टवान्) शवरीके कहते सुबुद्धिरघुनन्दन ऋष्यमूकपर्वतको आवतेरहैं ऋष्यमूकपरबैठेहुये सुग्रीव राम लक्ष्मणको आवतेदेखा २७ (भीतःरामस्यहृद्गतसंज्ञातुंमांप्रेषया मास ब्रह्मचारिवपुःधृत्वाअहरामसंनिधिगतः) सुग्रीवडरायके रामके हृदयकी बात जानिवेहेत मोको पठावतेभये ब्रह्मचारीरूपधरि मैं रघुनन्दनके समीपगया २८ (रामस्यसत्भावज्ञात्वातोस्कंधेउपरि

निधायसुग्रीवसामीप्यं नीत्वा तयोः सख्यं चकार वं) रघुनन्दनको सत्भाव जानिकै राम लक्ष्मण दोऊको अपनेकाँये ऊपरचढ़ाय सुग्रीवके समीपको लायों तिनके साथ सुग्रीवने मित्रता किया २९ (वालिना सुग्रीवस्य भार्या ह्येता तं रघून्तमः एकेन वाणेन जघान ततः वानराणां राज्ये सुग्रीवं अभ्यपेक्षयत्) वालिने सुग्रीवकी भार्याको हरिलिया तिसवालीको रघुनन्दन एकही वाण करिकै मारे तदनन्तर वानरोंकी राज्य में सुग्रीवको अभिषेक किये ३० (सः भवत्यापरिमार्गणे महाबलान् वीरान् वानरान् दिग्भ्योऽप्रेषयामास) सो सुग्रीव तुम्हारे ढूँढ़ने हेत महाबली वीरवानरनको सब दिशनको पठावते भये ३१ ॥

गच्छेत्तराघवो दृष्ट्वा मामभाषत सादरम् ॥ त्वयि कार्यं मशेषं मे स्थितं मारुतनन्दन ३२
ब्रूहि मे कुशलं सर्वं सीतायै लक्ष्मणस्य च ॥ अंगुलीयकमेतन्मे परिज्ञानार्थमुत्तमम्
३३ सीतायै दीयतां साधुमन्नामाक्षरमुद्रितम् ॥ इत्युक्त्वा प्रददौ मङ्गलं रात्रादङ्गुली
यकम् ३४ प्रयत्नेन मयानीतं देवि पश्याङ्गुलीयकम् ॥ इत्युक्त्वा प्रददौ देव्यै मुद्रिकां
मारुतात्मजः ॥ नमस्कृत्वा स्थितो दूराद्वद्वाङ्गलिपुटो हरिः ३६ दृष्ट्वा सीताप्रमुदि
तारामनामाङ्कितां तदा ॥ मुद्रिकां शिरसा धृत्वा स्रवदानंदनेत्रजा ३७ कपे मे प्राणदा
तात्वं बुद्धिमानसिराधवे ॥ भक्तो सि प्रियकारी त्वं विश्वासोऽस्ति तवैव हि ३८ ॥

(गच्छेत्तराघवो दृष्ट्वा मामभाषत) चलत समय देखिके रघुनन्दन सहित आदरमों प्रति बोले ३२ (मारुतनन्दन मे अशेष कार्य त्वयि स्थितं लक्ष्मणस्य च मे सर्वं कुशलं सीतायै ब्रूहि) रघुनन्दन कहै कि हे मारुतनन्दन मेरा सम्पूर्ण कार्य तुमविषे स्थित है भावसवकार्य तुमहीं करिहौ ताते लक्ष्मणकी पुनः मेरी सब भांतिकी कुशल सीताके अर्थ मुनायउ ३३ (साधुमन्नामाक्षरमुद्रितम् एतत् मे अंगुलीयकम् उत्तमम् परिज्ञानार्थं सीतायै दीयताम्) हे साधुहनुमान् मेरे नामके अक्षरन करिकै अंकित यह मेरी मुद्रिका उत्तमलै जाउ ताको अपने पहिचान करावने के हेत सीताके अर्थ देना ३४ (इति उक्त्वा क रात्रात् अंगुलीयकम् मङ्गलं प्रददौ प्रयत्नेन मयानीतं देवि अंगुलीयकम् पश्य) ऐसा कहि रघुनन्दन अपनी अंगुलीते उतारि मुद्रिका मेरे अर्थ देते भये ताहि यत्न पूर्वक मैने लाया हे देवि मुद्रिकाको देखिये ३५ (इति उक्त्वा मारुतात्मजः मुद्रिकां देव्यै प्रददौ वद्वाङ्गलिपुटः हरिः दूरात् नमस्कृत्वा स्थितः) ऐसा कहि मारुतनन्दन मुद्रिकाको जानकीदेवी के अर्थ दै देते भये पुनः हाथ जोरि हनुमान दूरि हीते नमस्कार करि खड़े भये ३६ (तदारामनामाङ्कितामुद्रिकां दृष्ट्वा मुदिता सीता शिरसा धृत्वा आनंदनेत्रजा स्रवत्) ता समयमें राम नाम करिकै चिह्नित जो मुद्रिका ताहि देखि मनमें हर्ष सहित मुद्रिकाको शीश पर धरि प्रेमानन्द आंगु नेत्रन ते गिरने लगे ३७ (कपे त्वं मे प्राणदा तात्वं बुद्धिमानसि त्वं प्रियकारी राघवे भक्तोसि तवैव हि विदवाः अस्ति) हे कपि तू मेरे प्राण देनेवाला बड़ा बुद्धिमान हसि प्रिय कार्य करनेवाला रघुनन्दन विषे परमभक्त हसि इसीते तुम्हारे विषे रघुनन्दनकी विश्वास है निश्चय करि ३८ ॥

नो चेन्मत्सन्निधिं चान्यं पुरुषं प्रेषयेत् कथम् ॥ हनूमन् दृष्ट्वा खिलं मम दुःखादिकं त्वया
३९ सर्वं कथय रामाय यथामे जायते दया ॥ मासद्वयावधि प्राणाः स्थास्यन्ति मम सत्त
म ४० नागमिष्यति चेद्रामो भक्षयिष्यति मां खलः ॥ अतः शीघ्रं कपीन्द्रेण सुग्रीवे
ण समन्वितः ४१ वानरानीकपेः सार्द्धं हतारावणमाहवे ॥ सपुत्रं सवलं रामो यदि
मां मोचयेत् प्रभुः ४२ तत्तस्य सदृशं वीर्यं वीरवर्णय वर्णितम् ॥ यथामां तारयेद्रामो ह

त्वाशीघ्रंदशाननम् ४३ तथायतस्वहनुमन्वाचाधर्ममवाप्नुहि ॥ हनुमानपितामा
हदेविदृष्टोयथामया ४४ रामःसलक्ष्मणःशीघ्रमागमिष्यतिसायुधः ॥ सुग्रीवेणस
सैन्येनहत्वादशमुखं वलात् ४५ ॥

(नोचेत्त्रयं पुरुषं मत्सन्निधिं च कथं प्रेषयेत् हनूमान् मम दुःखादिकं अखिलं त्वया दृष्टं) नार्हतौ
अन्यप्राकृत पुरुष को मेरे समीप को रघुनन्दन कैसे पठावते हे हनूमान् मेरा दुःखादिक संपूर्ण हाल
तुमने देखा है ३६ (रामायसर्वकथय यथा मे दया जायते सत्तममासद्वयावधिममप्राणाः स्थास्यंति) रघु
नाथजी के अर्थ मेरा सब हाल ऐसी भांति कहेउ जिसते मेरे ऊपर प्रभु की दया उत्पन्न होय हे हनू-
मान् परसोत्तम दुइ मास तक मेरे प्राण शरीर में स्थित रहि सके हैं ४० (चेत् रामः न आगमिष्यति
खलः मां भक्षयिष्यति अतः कर्पीद्रेण सुग्रीवेण समन्वितः शीघ्रं) कदाचित् दो मास के भीतर रघुनन्दन
न आवहिं गे तौ खल रावण मोको भक्षण करि लेइगो इसकारण ते कपिराज सुग्रीव करिकै सहित
शीघ्रहीं ४१ (वानरानीकपैः सार्द्धं रामः प्रभुः सपुत्रं सवलं रावणं आह वेहत्वामां मोचयत्) वानरी सेना
सेना पतिन करिकै सहित रघुनन्दन प्रभु इहां आयकै सहित पुत्र सहित सेना रावणको संग्राममें मारैं
जो मोको इस संकटते छुड़ावा चाहैं ४२ (वीरवर्णितं तस्य सदृशं तत्त्वैर्यवर्णय यथारामः शीघ्रं दश
ननम् हत्वामां तारय) हेमहावीर यज्ञ रक्षा धनुभंग परशुराम पराजय खर वध इत्यादि पूर्व की जो
प्रभुको बल लोकमें वर्णनहै रहा है ताहीकी तुल्यसो बल वर्णन किहेउ जिस प्रकार रघुनन्दन शीघ्रहीं
रावण को मारि मोको शोक सिंधुते पारकरैं ४३ (हनुमत्तथायतस्ववाचाधर्ममवाप्नुहि हनुमान् अ
पितां आह देवि मया यथा दृष्टः) हे हनुमत् जैसे मेरा उद्धार होय तैसेही यत्न करना यामें तुम वाचा
धर्म को प्राप्त होउगे भाव वचन द्वारा तुम को धर्म होइगो तब हनुमान् भी जानकी पूति बोले हे देवि
मैंने जैसे उद्यत प्रभु को देखा है ताते ऐसा अनुमान होत ४४ (ससैन्येन सुग्रीवेण सलक्ष्मणः सायु
धः रामः शीघ्रं आगमिष्यति वलात् दशमुखं हत्वा) सहित सैन्य सुग्रीव सहित लक्ष्मण सहित हथिया-
रन सहित रघुनन्दन शीघ्रही आवैंगे अपनेबलते रावण को मारिकै ४५ ॥

समानेष्यति देवित्वामयोध्यां नात्र संशयः ॥ तमाह जानकी रामः कथं वारिधिमातत
म् ४६ तीर्त्वा यास्यत्यमेयात्मा वानरानीकपैः सह ॥ हनुमानाह मेस्कंधावारुह्यपु
रुषर्षभौ ४७ आयास्यतः ससैन्यश्च सुग्रीवो वानरेश्वरः ॥ विहाय साक्षणेनैव तीर्त्वा
वारिधिमाततम् ४८ निर्देहिष्यति रक्षौघान् त्वत्कृतेनात्र संशयः ॥ अनुज्ञां देहि मे
देवि गच्छामि त्वरयान्वितः ४९ द्रष्टुं रामः सह भ्रात्रा त्वरयामित्वांतिकम् ॥ देविकिं
चिदभिज्ञानं देहि मे येन राघवः ५० विश्वसेन्मां प्रयत्नेन ततो गता समुत्सुकः ॥ ततः
किंचिद्विचार्याथ सीता कमललोचना ५१ ॥

(देवित्वां अयोध्यां संज्ञानेष्यति अत्र संशयः न) हे देवि जानकी तुमको प्रभु अयोध्या को लैजाँयगे
यामें संशय नहीं है ४६ (तं सीता आह वानरानीकपैः सह अमेयात्मारामः आततं म् वारिधिर्यिकथं तीर्त्वा
आयास्यति) तिन हनुमान् प्रति जानकी बोलीं कि अप्रमाण आत्मा रघुनन्दन वानरी सेना सहित
ऐसे भारी विस्तार समुद्र को कैसे उतरि कै आवहिंगे ४७ (हनुमान् आह मेस्कंधौ आरुह्य पुरुषर्षभौ
आयास्यतः च ससैन्यं वानरेश्वरः सुग्रीवः विहाय साक्षणेनैव आततं वारिधिरिति तीर्त्वा) हनुमान् बोले कि

मेरे काँधों पर चढ़ि पुरुषोंमें उत्तम राम लक्ष्मण आवहिंगे पुनः सहित सेना वानरोंके राजा सुग्रीव स्वबल ते आकाश मार्ग करिकै क्षणै भरे में विस्तार युत समुद्र को उतरि पार चले आवहिंगे ४८ (स्वत्कृतेरक्षौघान् निर्दहिष्याति अत्रसंशयः न देवि मे अनुज्ञादेहि त्वरयान्वितः गच्छामि) हनुमान्बोले हेमात. तुम्हारे हेत राक्षस समूहन को रघुनाथ जी भस्म करि देईंगे इसमें संशय नहीं है हेदेवि अब मोको प्रभु पास जाने की आज्ञा दीजिये शीघ्रता युत जाँउ गो ४९ (सहभ्रात्रारामः द्रष्टुं तव अंतिकमृत्वरयामि देविकिंचित् अभिज्ञानं मे देहि येन राघवः मां विश्वसेत्) सहित भ्राता लक्ष्मण रघुनन्दन के देखने को मोको आतुरता है उहाँ ते पुनः तुम्हारे पास को शीघ्रही आवोंगो हे देवि अब कुछ विहन की वस्तु मोको दीजिये जिस करिकै रघुनन्दन मेरी विश्वास करें ५० (ततः प्रयत्नेन संउत्सुकः गताततः कमललोचनः सीता किंचिद्विचार्यार्थ) तदनन्तर आपकी दीहुई वस्तुको यत्नपूर्वक गुप्त राखे उत्कंठा सहित प्रभुके पास जाउँगो इति सुनि तदनन्तर कमलसमनेत्रहैं जिनके ऐसी जो सीता सो मनमें कुछ विचार करिकै भाव कौन भूषण देंवें इति विचारि तव ५१ ॥

विमुच्य केशपाशातिस्थितं चूडामणिददौ ॥ अनेन विश्वसेद्रामस्त्वांकर्षीन्द्रसलक्ष्मणः ५२ अभिज्ञानार्थं मन्यच्च वदामि तव सुव्रत ॥ चित्रकूटगिरौ पूर्वमेकदारहसि स्थितः ५३ मदं केशिराधाय निद्रातिरघुनन्दनः ॥ ऐन्द्रः काकस्तदागत्य नखैस्तु डेन चासकृत् ५४ मत्पादांगुष्ठमारक्तं विददारामिषाशया ॥ ततो रामः प्रबुद्धयाथ दृष्ट्वा पादं कृतव्रणम् ५५ केन भद्रे कृतं चेत्तद्विप्रियं मे दुरात्मना ॥ इत्युक्त्वा पुरतोपश्य ह्याय संमां पुनः पुनः ५६ अभिद्रवंतं रक्तस्य नखतुंडं चुकोपह ॥ तृणमेकमुपादाय दिव्यस्त्रेणाभ्ययोज्यतत् ॥ चिक्षेप लीलयारामो वायसो परितज्ज्वलत् ५७ ॥

(केशपाशातिस्थितं चूडामणिं विमुच्य ददौ कर्षीन्द्र अनेन सलक्ष्मणः रामः स्त्वां विश्वसेत्) जूडामें स्थित जो चूडामणि ताहि छोरिके जानकीजी देती भई पुनः बोली हेकपि नायक हनुमान् इसमणि करिकै सहित लक्ष्मण रघुनन्दन तुम विषे विश्वास करेंगे ५२ (चसुव्रततव अभिज्ञानार्थं मन्यत् वदामि पूर्वचित्र कूटगिरौ एकदारहसि स्थितः रघुनन्दन मत्केशिराधाय निद्राति) सुंदर ब्रह्मचर्य व्रतधारण करनेवाले इति हे सुव्रत हनुमान् तमको पहिचान देने हेत और कछु गुप्तवार्ता में कहतीहों सुनो पूर्वकाल चित्र कूट पर्वतमें एकांत में बैठहुये रघुनन्दन मेरे अकोरामें शिरको धरि निद्राको प्राप्त भये ५३ तदा ऐन्द्रः काकः आगत्य आमिषाशया आरक्तं मत्पादांगुष्ठं नखैः चतुर्देन असकृत् विददार) ताही समय इंद्रको पुत्रका करूपते आवामासकी आशा करिकै लालवर्ण मेरे पायँनको अंगुष्ठा देखि ताहिनखों करिकै पुनः चोच करिकै बारम्बार विदारन अर्थात् धावकरि देता भया ५४ (ततः रामः प्रबुद्ध्य भयकृतव्रणमुपादं दृष्ट्वा भद्रे एतत् मे विप्रियं दुरात्मना केन कृतं) तदनन्तर रघुनन्दन जागे तब किया गया है धावजामें ऐसा जो मेरा पाँव ताहि देखिमो प्रतिबोले हे कल्याण रूपेयह तेरेपद अंगुष्ठको विदारण रूप मेरा अप्रिय कार्य को दुष्टात्मा किसने किया ५५ (इति उक्त्वा पुरतः नखचोच रक्तआस्थं मां पुनः पुनः अभिद्रवंतं वायसं अपश्यत् चुकोपह) ऐसा कहि आगे दृष्टि कियेतहाँ रक्तभरे नखचोंच मुखलाल है जाको मेरी दिशि बारम्बार धाव ताहुआ काकको देखि रघुनन्दन कोप करते भये तव ५६ (एकं तृणं आदाय दिव्यस्त्रेणाभ्य योज्यतत् लीलयारामः वायसस्य उपरि चिक्षेप तज्ज्वलत्) एक तृणलैके दिव्य ब्रह्मास्त्रमंत्रसों मंत्रित करि सो लीलामात्र रघुनन्दन उसीकाक के ऊपर छाँड़ि दिये सो अग्निवत् बरताहुआ ५७ ॥

अभ्यद्रवद्वायसश्चभीतोलोकाभ्रमत्पुनः ॥ इन्द्रब्रह्मादिभिश्चापिनशक्योरक्षितुं
तदा ५८ रामस्यपादयोरग्रेऽपतद्भीत्यादयानिधेः ॥ शरणागतमालोक्यरामस्त
मिदमब्रवीत् ५९ अमोघमेतदस्त्रमेदत्वेकाक्षमितोव्रज ॥ सव्यंदत्वाततःकाकएवं
पौरुषवानपि ६० उपेक्षतेकिमर्थमामिदानींसोपिराधवः ॥ हनुमानपितामाहश्रु
त्वासीतानुभाषितम् ६१ देवित्वांयदिजानातिस्थितामत्ररघूत्तमः ॥ करिष्यतिक्ष
णाद्भस्मलंकांराक्षसमण्डिताम् ६२ जानकीप्राहृतं वत्सकथं त्वं योत्स्यसेऽसुरैः ॥
अतिसूक्ष्मवपुःसर्वेवानराश्चभवादृशाः ६३ ॥

(अभ्यद्रवत्चवायसःभतिःलोकान्भ्रमत्पुनः इन्द्रब्रह्मादिभिःचापिरक्षितुंनशक्यः) अग्नितुल्य
वरताहुआतृण वाण आवत देखि काकभयभीत सबलोकन में भ्रमता फिरा तहां इन्द्रब्रह्मादिकों करि
जब रक्षाको न प्राप्त भया ५८ (तदा भीत्यादयानिधेःरामस्यपादयोः अग्रेअपतत्शरणागतंआलोक्य
रामःतद्वदंब्रवीत्) तबडर करिकै दयाभरे रघुनंदन के पांयन के आगेत्राहि त्राहि करिगिरिपरा शर
णागत काकको देखि रघुनंदन त्यहि प्रतिऐसा वचन बोलतेभये ५९ (एतत्मेअस्त्रंअमोघंएकाक्षंदत्वा
इतःव्रजततःकाकसव्यंदत्वाएवंपौरुषवान्अपि)रघुनंदन कहे कि यहमेरा वाण वृथानहीं जायसत्ताहै
ताते आपनाएक नेत्रदेकै यहांते चलाजा तदनन्तर काक आपनावामनेत्रदेकै प्राण बचाय गया ऐसे
पराक्रम युक्तप्रभु ६०(सःअपिराधवःकिंअर्थमाइदानींउपेक्षतेसीतानुभाषितंश्रुत्वाहनुमान्अपितांआह)
सोई राधव किसहेत मोको या समय ऐसी दशामें दयादृष्टि नहींदेखते हैं इति आरत सीताको कहा
वचन सुनि हनुमान् भी तिन जानकीजी प्रति बोलतेभये ६१ (देवियदिअत्रस्थितात्वारघूत्तमःजाना
तिराक्षसमण्डितामूलंकांमूक्षणात्भस्मकरिष्यति) हनुमान् कहे किहे देविजो इहांपर रहतीहुई तुम
को मेरेकहेते रघुनाथजी जानेंगे तौ राक्षसों करिकै भूषित यह जो लंका है ताहि प्रभुएक क्षणभरे में
भस्म करि देंगें ६२ (तंजानकीप्राहवत्सअतिसूक्ष्मवपुःचभवादृशाःसर्वेवानराःत्वंअसुरैःकथंयोत्स्यसे
तिनहनुमान् प्रति जानकी बोलती भई हे वत्स तुम्हारा अत्यन्त छोटाशरीर अरु तुम्हारेही समसबै
वानरहोंगें तौ तुम राक्षसों करिकै कैसे युद्धकरि सकोगे ६३ ॥

श्रुत्वातद्वचनं देव्यै पूर्वरूपमदर्शयत् ॥ मेरुमंदरसंकाशं रक्षोगणविभीषणम् ६४
दृष्ट्वासीताहनुमंतं महापर्वतसन्निभम् ॥ हर्षेणमहताविष्टाप्राहृतं कपिकुंजरम् ६५
समर्थोसिमहासत्वंद्रक्ष्यंतित्वांमहावलम् ॥ राक्षस्यस्तेशुभःपंथागच्छरामांतिकं
द्रुतम् ६६ बुभुक्षितःकपिःप्राहदर्शनात्पारणमम ॥ भविष्यतिफलैःसर्वैस्तवदृष्टौ
स्थितैर्हिमे ६७ तथेत्युक्तःसजानक्याभक्षयित्वाफलंकपिः ॥ ततःप्रस्थापितोऽग
च्छज्जानकीं प्रणिपत्यसःकिंचिद्दूरमथोगत्वास्वात्मन्येवानुचिंतयत् ६८ कार्यार्थ
मागतोदूतःस्वामिकार्याविरोधतः ॥ अन्यत्किंचिदसंपाद्यगच्छत्यधमएवसः६९॥

(तत्त्वचनंश्रुत्वारक्षोगणविभीषणंमेरुमंदरसंकाशंपूर्वरूपंदेव्यैअदर्शयत्) सोसीता को वचनसुनि
कै हनुमान् राक्षस समूहको भयदायक ऐसाकराल पुनःसुमेरुगिरि मंदराचल की तुल्यभारी उन्नत
ऐसा आपना पूर्वको रूपप्रकट करि सीता देवीके अर्थ देखावते भये ६४(महापर्वतसंनिभमहनुमंतं

दृष्ट्वासीताहर्षेणमहताविष्टातंकपिकुंजरंप्राह) महाभारी पर्वत समरूप हनुमान् को देखिकै सीता आनंद समूह करिकै युक्तितन हनुमान् प्रतिबोलतीभई ६५ (महासत्वसमर्थोसिमहाबलमत्त्वांराक्षस्यः द्रक्ष्यंतिरामांतिकद्रुतंगच्छतेपंथाःशुभः) हेहनुमान् तुममहापराक्रमी सर्वकार्यकोसमर्थहोअबमहाबल-वंतरूप तुमको राक्षसी देखैंगी तौ जाय रावणते कहैंगी तौतुम्हारे जानेमें बाधा लागैगी तातेअबतुम शीघ्रही रघुनन्दनके पासको चलेजाउ तुमको मार्गमंगलकारीहोवै ६६ (कपिःबुभुक्षिनःप्राहतवदर्शनात्ममपारणतवदृष्टौस्थितैःहिसर्वैःफलैःमेभविष्यति) हनुमान् भूखेहैतातेबोले हे मातःयावत्देख्यो नहींतावत् उपवासकिहेउ अब आपके दर्शन भयेते व्रतपूर्ण भया ताते मांको पारण उचित है सो आपकी दृष्टि के आगेस्थित जो बाग में सबफल हैं तिनहो करिकै मेरा पारण होइगो ६७ (जान क्यातथाइतिउक्तःसकपिःफलंभक्षयित्वाततःअगच्छत्जानकींप्रणिपत्यप्रस्थापितःसः किंचित्दूरंगत्वा अथःस्वआत्मनिएवअनुचिंतयत्) जानकी के तथाइति कहेभाव आज्ञापाय सो कपि हनुमान् फल खाय तदनन्तर आय जानकीको प्रणामकरि विदहै चले सो कछु दूरगये अब आपने मनमें चिन्त वनकीन्हे ६८ (कार्यार्थदूतःआगतःस्वामिकार्यअविरोधनःकिंचित्अन्यत्असंपाद्यगच्छतिसः एवअधमः) मालिकके पठाये किसी कार्यहेत दूतआया तहां जिसमें स्वामीकेकार्यमें विरोध न आवताहोय भावउसीकी अनुकूल कछु और कार्य न सायिलिया केवल स्वामीकी आज्ञापूर्णकरि चलागया सो दूतभी अधम है ६९ ॥

अतोऽहंकिंचिदन्यच्चकृत्वादृष्ट्वाथरावणम् ॥ संभाष्यचततोरामदर्शनार्थं ब्रजाम्यहम् ७० इतिनिश्चित्यमनसा वृक्षखण्डान्महाबलः ॥ उत्पाट्याशोकवनिकांनिर्वृक्षामकरोत्क्षणात् ७१ सीताश्रयनगत्यक्त्वावनंशून्यंचकारसः ॥ उत्पाटयंतंविपिनंदृष्ट्वा राक्षसयोषितः ७२ अपृच्छन्नजानकीकोऽसौवानराकृतिरुद्भटः ७३ जानक्युवाच ॥ भवत्येवजानन्तिमायांराक्षसनिर्मिताम् ॥ नाहमेनंविजानामि दुःखशोकसमाकुला ७४ इत्युक्तास्त्वरितंगत्वा राक्षस्योभयपीडिताः ॥ हनूमताकृतंसर्वरावणायन्यवेदयत् ७५ देवकिञ्चिन्महासत्वोवानराकृतिदेहभृत् ॥ सीतयासहसंभाष्यअशोकवनिकांक्षणात् ॥ उत्पाट्यचैत्यप्रासादंभंजामिताधिक्रमः ७६ ॥

(अतःअहंकिंचित्अन्यत्कृत्वाचरावणंदृष्ट्वाचसंभाष्यततःरामदर्शनार्थंअहंब्रजामि)इस कारणमें कछु और हू कार्यकरो पुनः रावणको देखिलउ पुनः तासों कछु वार्ताकरि तदनन्तर रघुनाथजीके दर्शनहेत को मैं जाउँ ७० (इतिमनसनिश्चित्यमहाबलः वृक्षखण्डान्उत्पाट्यक्षणात्अशोकवनिकां निर्वृक्षामकरोत्) ऐसा मनमें निश्चयकरि महाबलीहनुमान् वृक्षसमूहोंको उखारि क्षणभरेमें अशोकवाटिकाको विनावृक्षकीकरिदेतेभये ७१ (सीताश्रयनगत्यक्त्वावनंशून्यंचकार विपिनंउत्पाटयंतं दृष्ट्वा राक्षसयोषितः)सीताके वास स्थानको एक वृक्ष वरायसो अशोकवन सब शून्यकरिदिये उसवन को उचारत देखि राक्षसों की स्त्री ७२ (जानकीअपृच्छन्नजानराकृतिःउद्भटःअसौकः) जानकी प्रति पूछती हैं कि वानरकी आकार उद्भटवीर यह कौनहै ७३ (राक्षसनिर्मितामायांभवत्येवजानन्तिदुःखशोकसमाकुलाभं एनंनविजानामि) जानकी बोलीं कि राक्षसों की रचीहुई माया को तुमहीं लोग जानती हो दुखशोक में आकुल मैं इस वानर को नहीं जानतीहो कौन है ७४ (इतिउक्ताभयपीडिताः राक्षस्यः स्वरितंगत्वाहनूमताकृतंसर्वरावणायन्यवेदयत्) ऐसा जानकी कहें तब भय

पीडित राक्षसी त्वरतहीं जाय हनुमान् को किया हुआ सब हाल रावणके अर्थ सुनावती भई ७५ (देवकश्चित्तवानराकृतिः देहभृत्महासत्वः सीतया तहसंभाष्यक्षणात् अशोकवनिकां उत्पाद्य अमितवि क्रमः चैत्यप्रासादं वभञ्ज) हे देव कोऊ एक देवादिवानरकी देहधरे महापराक्रमी आयसीता के साथवार्ता करिक्षणमें अशोक बाटिका उखारि द्वारा ऐसा अमितवली है कि देवमंदिर को तोरि फोरि गिरायदीन्होसि ७६ ॥

प्रासादरक्षिणः सर्वान्हत्वा तत्रैव तस्थिवान् ॥ तच्छ्रुत्वा तूर्णमुत्थाय वनभंगं महाप्रियम् ७७ किंकरान्प्रेषयामास नियुतं राक्षसाधिपः ॥ निर्भग्नचैत्यप्रासादप्रथमांतरसंस्थितः ७८ हनुमान्पर्वताकारो लोहस्तंभकृतायुधः ॥ किंचित्त्लांगूलचलनोरक्तास्योभीषणाकृतिः ७९ आपतंतं महासंधं राक्षसानां ददर्श सः ॥ चकार सिंहनादं च श्रुत्वा ते मुमुहुर्भृशम् ८० हनूमंतं मथोदृष्ट्वा राक्षसाभीषणाकृतिम् ॥ निर्जघ्नुर्विविधास्त्रौघैः सर्वराक्षसघातिनाम् ८१ तत उत्थाय हनुमान्मुद्गरेण समंततः ॥ निष्पिपेषक्षणादेवमशकानिव्यूथपः ८२ ॥

(प्रासादस्वरक्षिणः सर्वान्हत्वा तत्रैव तस्थिवान् महाप्रियं वनभंगं तत् श्रुत्वा तूर्णमुत्थाय) मंदिर के रक्षा करनेवाले रोकतिन सब को मारिकै वानर वही बैठा भी है परमप्रिय वनको भंग सो मुनि रावणशीघ्रहीउठा ७७ (राक्षसाधिपः नियुतं किंकरान्प्रेषयामास चैत्यप्रासादनिर्भग्नप्रथमांतरसंस्थितः राक्षसोंको राजा रावण एकलाख सेवकनको पठावता भया नियुत लक्षकोकहीयथा (शतंतहत्वमयुतं नियुतं प्रयुतं मतम् । स्त्रीकोटिरवुदमितिक्रमादशगुणो त्रयमितिरत्नकोशः) ते आय देखे टूटाहुवा जो देवमंदिर ताके नीचे के दर्जेमें वह बैठा है ७८ (पर्वताकारः भीषणाकृतिः रक्तास्यः हनुमान् लोहस्तंभ आयुधः कृतकिंचित्त्लांगूलचलनः) पर्वत सम भारीतनभयंकर सूरति लालमुख ऐसे हनुमान् लोह खंभाको हथियार बनाय हाथमें लिहे कछु पूछको चलायरहे हैं ७९ (राक्षसानां महासंधं आयतं तं ददर्श सः सिंहनादं चकार च ते श्रुत्वा भृशम् मुमुहुः) राजसोंको महाभारीयूथआवताहुआ ताहि देखते भये सो हनुमान् सिंहसमभारी नादकरते भये सो गर्जपुनः ते सब राक्षस मुनि कै अत्यंत मोहित भये अर्थात् सबके मूर्च्छाभागया ८० (अथ हनूमंतं भीषणाकृतिं राक्षसादृष्ट्वा सर्वराक्षसघातिनां विविध अस्त्रत्रौघैः निर्जघ्नुः) अथ हनुमान्को महाभयंकर रूप ताहि सब राक्षस देखिकै सब राक्षसों को घात करने वाले जो हनुमान् तिनहिं अनेक प्रकार के हथियार बहुताँ करिकै राक्षस मारते भये ८१ (हनुमान् उत्थाय तत् मुद्गरेण क्षणात् एव तमंततः निष्पिपेषयूथपः मशकान् डब) हनुमान् उठिकै तोई मुद्गर अर्थात् लोह खंभ करिकै क्षणै भरे में सब राक्षसों को पीसिडारे कसे चूर्ण है गये यथा यूथ पति हाथी समूह मसन को पीसिडारै तथा वे परिश्रम चूर्णकिये ८२ ॥

निहतान् किंकरान् श्रुत्वा रावणः क्रोधमूर्च्छितः ॥ पंचसेनापतींस्तत्र प्रेषयामास दुर्मदान् ८३ हनूमानपितान्सर्वान् लोहस्तंभेन चाहनत् ॥ ततः क्रुद्धो मंत्रिसुतान् प्रेषयामास सप्तसः ८४ आगतानपितान्सर्वान् पूर्ववद्भानरेश्वरः ॥ क्षणांशिशेषतो हत्वा लोहस्तंभेन मारुतिः ८५ पूर्वस्थानमुपाश्रित्य प्रतीक्षन् राक्षसान् स्थितः ॥ ततो जगाम बलवान् कुमारोक्षः प्रतापवान् ८६ तमुत्पपात हनुमान् दृष्ट्वा काशे स मुद्गरः ॥

गगनात्त्वरितोमूर्ध्निमुद्गरेणव्यताडयत् ८७ हत्वातमक्षंनिःशेषबलंसर्वचकारसः

८८ ततःश्रुत्वाकुमारस्यबध्नराक्षसपुंगवः ॥ क्रोधेनमहताविष्टइंद्रजेतारमब्रवीत् ८९ ॥

(किंकरान् निहतानश्रुत्वा क्रोधमूर्च्छितः रावणः दुर्मदानुपंचसेनापतींस्तत्रप्रेषयामास) अपनेसेवकन को मरण सुनिकै क्रोधविवश रावण बल बरितामें दुर्मद पांच सेनापतिन को तहां को पठाव ताभया जहां हनुमान् रहै ८३ (हनुमान् अपिलोहस्तम्भेनच तान्सर्वानहनत् ततः क्रुद्धः सः सप्त मंत्री सुतान्प्रेषयामास) सेनापतिन को आवत देखि हनुमान् भी संमुखआय उसी लोह खंभ करिकै उन सबन को मारे सो सुनि तदनंतर क्रोध करि सो रावण सातमंत्रीके पुत्रनको पठावताभया ८४ (तान्सर्वान् आगतान् अपिवानरेश्वरः मारुतिः पूर्ववत् लोहस्तंभेनक्षणात् निःशेषतः हत्वा) तिन सबन को आवत देखि वानरेश्वर मारुत नन्दन हनुमान् पूर्व कीनाई लोहखंभ करिकै क्षणें भरे में सबनकोमारिकै ८५ (पूर्वस्थानं उपाश्रित्यस्थितः राक्षसान्प्रतीक्षन् ततः बलवान्प्रतापवानक्षः कुमारः जगाम) राक्षसों को मारि जायपूर्वके स्थान में बैठा हुआ राक्षसों के आवने की राह देखि रहा है तदनंतर महाबली प्रतापवंत अक्षकुमार जाताभया ८६ (तदृष्ट्वाहनुमान् समुदगरः आकाशेउत्प पात् गगनात्त्वरितः मुद्गरेणमूर्ध्निव्यताडयत्) तिस अक्षकुमार को देखि हनुमान् मुद्गर सहित आकाश में कूदिये आकाशते शीघ्रही आय लोह खंभ करिकै ताके शीश में मारते भये ८७ (तं अक्षं निःशेषबलंसर्वसः हत्वाचकार) तिस अक्षकुमार को ताके संग जो सेना रही तिन सब को नाश करते भये ८८ (कुमारस्यबध्नंश्रुत्वा ततः राक्षसपुंगवः क्रोधेनमहताविष्टः इंद्रजेतारमब्रवीत्) अक्ष कुमार को मरण सुनि तदनंतर राक्षसों को राजा बड़े क्रोध करिकै युक्त इंद्रको जीतनेवाला जो मेघनाद त्यहि प्रति बोलता भया ८९ ॥

पुत्रगच्छाम्यहंतत्रयत्रास्तेपुत्रहारिपुः ॥ हत्वातमथवावध्वाआनयिष्यामितेंऽति कम ९० इन्द्रजित्पितरंप्राहृत्यजशोकमहामते ॥ मयिस्थितेकिमर्थत्वंभाषसेदुः खितंवचः ९१ बध्नानेप्येद्रुतंतातवानरंब्रह्मपाशतः ॥ इत्युक्त्वारथमारुह्याराक्ष सैर्बहुभिर्वृतः ९२ जगामवायुपुत्रस्यसमीपंवीरविक्रमः ॥ ततोऽतिगर्जितंश्रुत्वा स्तंभमुद्यम्यवीर्यवान् ९३ उत्पपातनभोदेशंगरुत्मानिवमारुतिः ॥ ततोऽभ्रमंतं नभसिहनूमंतंशिलीमुखैः ९४ धिधातस्यशिरोभागमिषुभिश्चाष्टभिः पुनः ॥ हृदयं पादयुगलषड्भिरेकेनबालधिम् ॥ भेदयित्वाततोघोरांसिंहनादमथाकरोत् ९५ ॥

(पुत्रपुत्रहारिपुः यत्रास्तेतत्रअहंगच्छामितंहत्वाअथवावध्वातेअंतिकम्आनयिष्यामि) हे पुत्रमेघनाद मेरेपुत्रको मारनेवाला शत्रु जहांपरहै तहांको मैं जाताहूँ ताकोमारिहूँ अथवा बांधिकै तेरेपास कोलाइहूँ ९० (पितरंइन्द्रजित्प्राहमहामतेशोकंत्यजमयिस्थितेत्वंदुःखितंवचः किंअर्थभाषसे) पिता प्रति मेघनाद बोला कि हेमहामते शोकमानसो खेदको त्यागकरौ काहेते मेरेबनेरहेसंते तुम दुःखित वचन किस हेत कहते हौं ९१ (तातब्रह्मपाशतः वानरंबध्वाद्रुतंआनेप्येद्रुतिउक्त्वारथमारुह्यबहुभिः राक्षसैर्वृतः) रावण प्रति मेघनाद बोला कि हेतात ब्रह्मपाशते वानरको बांधिकै शीघ्रही लिहेआव ताहौं ऐसाकहि मेघनाद रथपर सवार हूँ तथा बहुतेराक्षसों करिकै वृत अर्थात् अन्य बहुत सुभटरथ के सब दिशि घेरे हुये चलेजातेहैं ९२ (वायुपुत्रस्यसमीपंवीरविक्रमः जगामततः अतिगर्जितंश्रुत्वा

वीर्यवान्स्तंभेऽद्यम्य) पवनपुत्रके समीप को वीर पराक्रमी मेघनाद जाताभया तदनन्तर अत्यन्त गर्जनि राक्षसोंकी सुनि बड़ेबली हनुमान् लोहखंभको उड़ावकरि ९३ (गरुत्मान् हवमारुतिः नभः देशं उ त्पपात् भ्रमंतं हनूमंतं तस्य शिरोभागं शिलीमुखैः विध्वा) गरुड़की नाई पवनपुत्र आकाशको उड़िगये तहां भ्रमते हुये हनुमान् के शिरदेशहि मेघनाद वाणोंकरिकै वेधताभया ९४ (पुनः अष्टभिः इपुभिः हृ दयं षड्भिः पादयुगलं एकेन बालार्धं भेदयित्वा ततः घोरं सिंहनादं त्रयमकरोत्) पुनः आठवाणों करि हृद- यको वेधन किया छावाणों करि दोऊ पायनको भेदन किया अरु एकवाण करिकै पूछको भेदन कि- या तदनन्तर मेघनाद महाभयंकर सिंहसमनादकरताभया ९५ ॥

ततोऽतिहर्षाद्धनुमांस्तंभमुद्यम्य वीर्यवान् ॥ जघान सारथिं साश्वरथं चाचूर्णयत्क्ष णात् ९६ ततोऽन्यं रथमादाय मेघनादो महाबलः ९७ शीघ्रं ब्रह्मास्त्रमादाय बध्वा वानरपुंगवम् ॥ निनाय निकटं राज्ञो रावणस्य महाबलः ९८ यस्य नाम सततं जपं तिये ज्ञानकर्मकृतबन्धनं क्षणात् ॥ सद्य एव परिमुच्यत त्पदं यांतिको टिर विभासुरं शिवम् ९९ तस्यैव रामस्य पदं ब्रुजं सदा हृत्पद्ममध्ये सुनिधाय मारुतिः ॥ सदैव निर्मुक्तसमस्त बंधनः किं तस्य पाशैरितैरैश्च बंधनैः १०० ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे सुन्दरकांडे तृतीयः सर्गः ३ ॥

(ततः अतिहर्षात् वीर्यवान् हनुमान् स्तंभेऽद्यम्य जघान सश्वरथं च सारथिं क्षणात् चूर्णयत्) तदनन्तर वीररसकी परिपूरणताते अत्यन्त हर्षतेबड़े बली हनुमान् लोहखंभको उठाय मारते भये ताकीचोट ते सहित घोड़ारथ पुनः सारथी इत्यादि सबको क्षणमें चूर्ण करिदिये ९६ (ततः मेघनादः महाबलः अन्यं रथं आदाय) तदनन्तर मेघनाद महाबली औरे रथपर सवार है ९७ (महाबलः शीघ्रं ब्रह्मास्त्रं आ- दाय वानरपुंगवं बध्वा राज्ञः रावणस्य निकटं निनाय) महाबली मेघनाद शीघ्रही ब्रह्मास्त्रलै हनुमान्को बाँधिकै राजारावण के समीप लै जाताभया ९८ (यस्य नाम सततं जपं तिये ज्ञानकर्मकृतबन्धनं क्षणा त्परिमुच्यको टिर विभासुरं शिवं तत्पदं सद्य एव यांति) जिनको रामऐसानाम सदा जे जन जपते हैं ते अज्ञानकर्म करिकै जो भवबंधन ताहि क्षणमें छोरि पुनः जहां करोरिन सूर्यनकैसो प्रकाश ऐसा कल्या- ण रूप तिन रघुनन्दनको पद तहांको शीघ्रही जातेहैं ९९ (तस्यैव रामस्य पदं ब्रुजं एव मारुतिः हृत्पद्म मध्ये सदा सुनिधाय समस्तबंधनः सदैव निर्मुक्तस्य च इतरैः पाशैः बंधनैः किं) तिन रघुनन्दन के पद कमल निश्चयकरि हनुमान् हृदय कमलमध्यमें सदा सुंदरी प्रकारते धारण किहे रहते हैं ताके प्रभावते सब बंधनसो सदा मुक्तहैं तिन हनुमान्को पुनः और पाशादि बंधनोंकरिकै क्या कोई बाँधिस काहै भावस्वइच्छित बाँधिगयेकछु और कार्य किया चाहते हैं १०० ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणे सुन्दरकांडे तृतीयः प्रकाशः ३ ॥

यांतं कर्पींद्रिधृतपाशबंधनं विलोक्य तं नगरं विभीतवत् ॥ अताडयन् मुष्टितलैः सुको पनाः पौराः समं तादनुयांतं ईक्षितुम् १ ब्रह्मास्त्रमेनं क्षणमात्रसंगमं कृत्वा गतं ब्रह्मव रेण सत्वरम् ॥ ज्ञात्वा हनूमानपि फल्गुरज्जुभिर्धृतो ययौ कार्यविशेषगौरवात् २

सभांतरस्थस्यचरावणस्यतंपुरोनिधायाहवलारिजित्ता ॥ वद्धोमयाब्रह्मवरेण
वानरःसमागतोऽनेनहतामहासुराः ३ ॥

सवैया ॥ कहिरावणको कपिराघवदूत इतांचकहांसिचशोधलये । हितरामभजे शरणागतहोयहि
प्राणहरोकहिक्रोधतये ॥ वधदेखिविभीषणरोकतहीं पटतैलसपुच्छजरायदये । खलघालिमहाकपिफू
किसवै पुरपूछबुझावनसिन्धुगये ॥ (धृतपाशबंधनंविभीतवन् नगरंवलोकयंतयान्तंकपींद्रईक्षितुं पौराः
समंतात् अनुयातसुकोपनाःमुष्टितलैःअताडयन्) शिवजी बोले हे गिरिजा आपनी डच्छाते धारणकिये
पाशबंधन भयभीतकीभांति लंकानगरको देखतेहुये चले जाते जो हनुमान् तिनहिदेखनेहेतआये जो
पुरवासी राक्षसतेधरेहुये पीछेपीछे जातेहुयेको पकरिकै हनुमान्की छष्टिमें मुष्टिकोंकरिकैमारतेहैं १ (ए
नब्रह्मास्त्रंक्षणमात्रसंगमंरुक्ताब्रह्मवरेणसत्त्वरंगतंफलगुरज्जुभिः धृतःहनुमान्ज्ञात्वाअपिकार्यं गौरवात्
विशेषयथौ) इन हनुमान्को ब्रह्मास्त्रआय एकक्षणभरि संगमाकिया भाव भंग में लागिमात्रगया फिरि
न रहिसका क्योंकि इनको बालअवस्थामें ब्रह्माने वरदानदियारहे कि मेरा अस्त्र तमको न बाधाकरैगा
इतिब्रह्माके वरदानके प्रभावकरिके ब्रह्मास्त्रशीघ्रहीचलागया अब निर्वल रसरिनकरिकैबंधाहों यह
हनुमान्जानतेभी हैं परन्तु रावणतें वार्ताकरना लंकाभस्मकरना इत्यादिकार्य बड़ेभारीकरनाहै ताते
विशेषकरि विनाबंधनैजातेभये २ (सभायाःअंतरस्थस्यचरावणस्यपुरःतंहनुमंतंनिधायतदाबलारि
जित् आहमयाब्रह्मवरेणवानरःवद्धःसमागतःअनेनमहासुराःहताः) सभा मन्दिरके मध्यमें बैठेहैं मंत्री
आदि पुनः रावण ताके आगे तिन हनुमान्को स्थापितकरि ता समय में मेघनाद बोलताभया कि मैं
ब्रह्माके वरदानकरिकै इस वानरको बांधिके इहांकोलायाहों भावबलकरिकै नहीं बांधिसक्तारहे काहेते
इसने अक्षकुमारादि बड़ेबलीवीर राक्षसोंको मारिडारा है सो बलकरिकै कैसेबांधिसका था ३ ॥

यद्युक्तमत्रार्थविचार्यमंत्रिभिर्विधीयतामेषनलौकिकोहरिः ॥ ततोविलोक्याहसरा
क्षसेश्वरःप्रहस्तमग्रेस्थितमंजनाद्रिभम् ४ प्रहस्तपृच्छैनमसौकिमागतःकिमत्र
कार्यकुतएववानरः ॥ वनंकिमर्थंसकलंविनाशितंहताःकिमर्थंममराक्षसावलात् ५
ततःप्रहस्तोहनुमंतमादरापप्रच्छकेनप्रहितोसिवानर ॥ भयंचतेमास्तुविमोक्ष्य
सेमयासत्यंवदस्वाखिलराजसन्निधौ ६ ततोऽतिहर्षात्पवनात्मजोरिपुंनिरीक्ष्य
लोकत्रयकंटकासुरम् ॥ वक्तुं प्रचक्रे धुनाथसत्कथांक्रमेणरामंमनसास्मरन्मुहुः ७ ॥

(आर्यमंत्रिभिःविचार्ययदिउक्तंअत्रविधीयतांएपलौकिकःहरिः नततःअंजनाद्रिभंप्रहस्तमग्रेस्थितं
विलोक्यराक्षसेश्वरःआह) पुनः मेघनाद बोला कि हे आर्यभाव नीति विद्या बुद्धि चातुर्यता आदि
सवभांति आप श्रेष्ठहौ पुनः मंत्रिनकरिकै सहित विचारकरिकै जो बात कहीजाय सोईइहांपरविधान
कीजिये बंधादेखि न भूलिये क्योंकि यह लोकके अन्य वानरों में नहीं है भाव अतुलबलीवीर है ऐसा
जानि विचारपूर्वक कार्यकीजिये इति सुनि तदनन्तर अंजनके पर्वततुल्य शरीरहैजाको ऐसाप्रहस्त
मंत्री आगेबैठाहुवा ताकीदिशिदेखि राजसोंको राजा रावण बोलताभया ४ (प्रहस्तएनंपृच्छवानरःकु
तएवअसौकिंआगतःअत्रकिंकार्यंसकलंवनंकिंअर्थंविनाशितंममराक्षसाःकिंअर्थंवलात्हताः) रावणबो-
ला हेप्रहस्तयाहि पूछौ वानरकहांकोहै यहक्यों यहांआयाहै यहांआकोक्याकार्यहै सब अशोकवनकिस
हेत विनाशकरादिया पुनः मरे राक्षस किसहेत इसने ५ (ततःहनुमंतंप्रहस्तःआदरात्प्रपच्छ

वानरकेन प्रहितो ति च ते भयं मा अस्तु अखिल राजसन्निधौ सत्यं वदस्व मया विमोक्ष्यसे) तदनन्तरं हनुमान प्रति प्रहस्त आदरते पूछता भया हे वानर किसने तोको पठावा है पुनः तोको कछु भय नहीं है सब राजों के राजा रावण के आगे सत्य ही कहू तो हम करिके छोड़ा यदिया जायगा ६ (ततः त्रयलोककंटकं असुररिपुं निरीक्ष्य पवनात्मजः मनसा मुहुः रामं स्मरन् अतिहर्षात् रघुनाथसत्कथाक्रमेण वक्तुं प्रचक्रे) तब हनुमान जी बिचार किये कि एक तो तीन हि लोकोनको कंटक भावनिर्दयी पुनः असुरतामसी प्रकृति पुनः रिपु भाव याके पुत्रसेन पशु भटनको बध किया तासों वार्ता करिना कुशल जानेकी समय नहीं है इत्यादि बिचार पूर्वक रावणको देखि पवन नन्दन मन करिके बारम्बार रघुनन्दनको स्मरण करि तब अति हर्षत भावयुत वीरताकी स्थाई उत्साहते रघुनन्दनकी जो उत्तम कथा है ताहिक हवेको प्रारम्भ करते भये ७ ॥

शृणु स्फुटं दैव गणाद्यमित्र हे रामस्य दूतोऽहमशेष हृत्स्थिते ॥ यस्य अखिलेशस्य हता धुना त्वया भार्या स्वनाशाय शुनेव सद्धविः ८ सराधवोऽभ्येत्य मतंग पर्वतं सुग्रीवमैत्री मनलस्य सन्निधौ ॥ कृत्वैकवाणेन निहत्य वालिनं सुग्रीवमेवाधिपतिं चकार ते मू६ सवा नराणामधिपो महाबली महाबलैर्वानरयूथकोटिभिः ॥ रामेण सार्द्धं सह लक्ष्मणेन भो प्रवर्षणेऽमर्षयुतोऽवतिष्ठते १० संचोदितास्तेन महाहरीश्वराधरासुतां मार्गयितुं दि शोदश ॥ तत्राहमेकः पवनात्मजः कपिः सीतां विचिन्वन् शनकैः समागतः ११ ॥

(हे देव गणादि मित्र स्फुटं शृणु अशेष हृत्स्थिते रामस्य अहं दूतः यस्य अखिलेशस्य भार्या स्वनाशाय त्वया त्वया शुना इव त्वया अधुना हता) हे देव गणादि कौं के शत्रु रावण मेरे वचन स्पष्ट सुनो जौ अंतर्हामी रूपते सबके हृदय में स्थित हैं तिन रामको मैं दूत हौं जिन सर्वेश्वर की स्त्री अर्थात् जानकी को तुम अपने नाश होने अर्थ यथा यज्ञमें स्थित उत्तम हव्यसो कुत्ता करिके हरी जाय ताही भांति तुमने अब हरा है ८ (सराधवः मतंग पर्वतं अभ्येत्य अनलस्य सन्निधौ सुग्रीवमैत्री कृत्वा एकवाणेन वालिनं निहत्य तं सुग्रीवं एव अधिपतिं चकार) हे रावण जिन की भार्या हरि लायो सोई राघव मतंग पर्वत अर्थात् ऋष्य मूक पर जाय प्राप्त भये तहां अग्नि के समीप सुग्रीव सो मित्रता कीन्हे अरु एक ही वाण करिके बाली को मारि तिस सुग्रीव को किष्किंधा में राजा कीन्हे ९ (भो रावण महाबली वानराणां अधिपः महाबलैः वानरयूथकोटिभिः सह लक्ष्मणेन रामेण सार्द्धं अमर्षयुतः प्रवर्षणे अवतिष्ठते) हे रावण सोई महाबली वानरों को राजा सुग्रीव तथा महाबल करिके युक्त वानरों के करोरिन यूथ सहित तथा सहित लक्ष्मण राम को साथ लीन्हे बड़े क्रोध युत प्रवर्षण गिरि पर स्थित हैं १० (ते न संचोदिताः महाहरीश्वराः दिशदिशाः यरासुतां मार्गयितुं तत्र एक अहं पवनात्मजः कपिः शनकैः सीतां विचिन्वन् सन् आगतः) तिन सुग्रीव करिके पठाये हुये महाबली वीर वानर बहुत दशौ दिशनमें सीता को ढूँढे हेत गये हैं तिन दिनमें एक महूपवन को पुत्र वानर हौं धीरे धीरे सीता को ढूँढत संते इतै आय गयो ११ ॥

दृष्ट्वा मया पद्मपलाशलोचना सीता कपित्वा द्विपिनं विनाशितम् ॥ दृष्ट्वा ततोऽहं रभसा समागतान् मां हंतुकामान् धृतचापसायकान् १२ मया हतास्ते परिरक्षितं वपुः प्रियो हि देहोऽखिल देहिनां प्रभो ॥ ब्रह्मास्त्रपाशेन निबध्यमां ततः समागमन् मेघनिनाद नामकः १३ स्पृष्ट्वैव मां ब्रह्मवरप्रभावतरत्यक्तागतं सर्वमवौमिरावण ॥ तथाप्यहं बद्ध

वागतोहितंप्रवक्तुकामः करुणारसार्द्रधीः १४ विचार्यलोकस्यविवेकतो गतिं नरा

क्षसीं बुद्धिमुपैहिरावण ॥ देवीं गतिं संसृतिमोक्षहेतुं कीं समाश्रयात्यंतहिताय देहि नः १५

(पञ्चपलाशलोचनासीतामया दृष्टाकपित्वात् विपिनं विनाशितमृततः अहं दृष्ट्वा चापशायकान् धृत माहंतुकामान् रभसासमागतान्) कमलदलवत् नेत्र हैं जिनके ऐसी सीताइहां मैंने देखा पुनः वानरको चंचलस्वभाव ताते वनको विनाश किया तदनन्तर मोको देखि धनुष बाण धारण किहे मोको मारने की कामनाराखि बड़े वेग करिकै राक्षस जे मेरे संमुख आये १२ (प्रभो अखिल देहिना देहः प्रियो हिव पुः परि रक्षितं ते मया हताः ततः मेघनिनादनामक ब्रह्मास्त्रपाशेन मानि बध्य समागमन्) हे प्रभो समग्र देह धारि नको अपनी देह प्रिय होती है ताते अपनी देह की रक्षा हेत जे मोको मारने लगे तिनको मैंने मारा तदनन्तर मेघनादनाम तुम्हारा पुत्र ब्रह्मास्त्रपाश करिकै मोको बांधिकै तुम्हारे निकटको लय आवत भया १३ (रावण ब्रह्मवर प्रभावतः मां स्पृष्ट्वा एव त्पृच्छागतं सर्वं अवेमितथापि अहं कस्मिन् रसार्द्रधीः हितं प्रवक्तु कामः बुद्धिश्च आगतः) हे रावण मोको पूर्व ब्रह्माने वर दिया कि तोको मेरा अस्त्र न बाधा करेगा इति ब्रह्माके वर प्रभावते ब्रह्मास्त्र मोको स्पर्श किया भी परन्तु त्यागि चला गया सो सब मैं जानतारहा ताहू पर करुणा रसमें भीजी बुद्धि तेरा हित कहिये कामसों बंधेहुये की नाई मैं तेरे समीप चला आया हौं १४ (रावण लोकस्य गतिविवेकतः विचार्य राक्षसीं बुद्धिमुपैहि देहि नः अत्यंत हिताय संसृतिमोक्षहेतुं कीं देवीं गतिं समाश्रय) तेरा हित कहता हौं सो सुनु हे रावण लोक की जो गति है यथा पापते नरकादि दुःख है पुण्यते स्वर्गादि सुख हैं हरि भक्तिते मोक्ष इत्यादि सारासार विवेक करि आपना हिताहित विचारु अरु तमोगुणी राक्षसी बुद्धि को न प्राप्त हो भाव अयमं अर्नाति त्याग करु अपने जीवके अत्यन्त हित होने अर्थ सारा वंनते छूटवें हेतु देवी देवन की भापी परमार्थ गतिको ग्रहण करौ १५ ॥

त्वं ब्रह्माणो ह्युत्तमवंशसंभवः पौलस्त्यपुत्रोऽसि कुबेरबांधवः ॥ देहात्मबुद्ध्यापि च प

श्य राक्षसो नास्यात्मबुद्ध्या किमु राक्षसो न हि १६ शरीरबुद्धीं द्रियदुःखसंततिर्न तेन

च त्वं तव निर्विकारतः ॥ अज्ञानहेतोश्च तथैव संतते रसत्वमस्याः स्वपतो हि दृश्यव

त् १७ इदं तु सत्यं तव नास्ति विक्रिया विकारहेतुर्न च तेऽद्वयत्वतः ॥ यथानमः सर्व

गतं न लिप्यते तथा भवान् देहगतोऽपि सूक्ष्मकः १८ ॥

(आत्मबुद्ध्या राजसः न हि इति किमु च देहात्मबुद्ध्यापि पश्य राजसः नासि कुबेरबांधवः पौलस्त्य पुत्रः असि हि उत्तमवंशसंभवस्त्वं ब्राह्मणः) हे रावण जो कहौ कि मैं राक्षस हौं उत्तम क्रिया को अधिकारी नहीं हौं तौ जो आत्मबुद्धि करिकै कहिये कि तु राक्षस नहीं है यह क्या कहना है पुनः जो देह को निश्चय आत्म करि देखौ तौ भी राक्षस नहीं हौं काहे ते कुबेरके भाई पौलस्त्य अर्थात् पुलस्त्य के पुत्र को पुत्र हसि निश्चय करि उत्तमवंशमें उत्पन्न भये ताते ब्राह्मण हसि १६ (देहबुद्धीं द्रियदुःखसंततिः तेन) मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इस भांति देह को सत्य मानना इत्यादि जो देहबुद्धी है ताहीते काम क्रोध लोभ राग द्वेषादिवश इंद्रि विषयासक्त हैं अनेक कर्म करत ताही ते दुःख उत्पन्न होता है सो केवल देह में है तेरे आत्मरूपमें दुःख नहीं है (च त्वं तव निर्विकारतः) पुनः तू भी उस दुःखके आश्रित नहीं है क्योंकि तमरज कामादि विकार रहित अमल शुद्ध आत्मरूप सदा एक रस है (च अज्ञानहेतोः स्वप्नो हि दृश्यवत् तथा एव अस्याः संततेः असत्त्वं) पुनः मेरे स्त्री पुत्र वन परिपूर्ण मैं सुखी हौं व मेरे धन पुत्रादि नहीं मैं दुखी हौं इत्यादि जो सत्य मानना ताको अज्ञान कारण है भाव अज्ञान ते भूठे को सत्य माने है

कौनभांति यथा किसीराजाने स्वप्न देखा कि मैं कंगाल हूँ गया वा कंगाल स्वप्न में राजा भयो ते यावत् सोवते तावत् सत्यमाने जागेभूठही है तैसेही निश्चयकरि इससंसारके दुःख सुखकी उत्पत्ति को अज्ञान ते सत्यमाने सोई ज्ञानभूये परलोक व्यवहारभी भूठही है १७ (विकारहेतुःतेनचअद्वयत्व तःइदंसत्यंतुतवविक्रियानास्ति) हे रावण रजतमादि विकार कारण तेरे आत्मरूप में नहींहै क्योंकि वेदने ब्रह्मको अद्वैतकहा ताते यही आत्मरूपै सत्यहै पुनः जो तुमदेहको सत्यमानेहो सो सत्यनहीं है (यथानभःसर्वगतंलिप्यतेनतथाभवान्देहगतःसूक्ष्मकःअपि) जैसे आकाश सूक्ष्मरूपते सबतत्त्वन में व्याप्तहै परन्तु स्पर्शरूपरस गंधादिकछु भी आकाश में छुई नहीं जाताहै तैसे तुम्हारी देहमें व्या पक सूक्ष्मआत्मा भी देहके विकार में नहीं लिप्तहोता है (तुशरीरसंगतःदेहइंद्रियप्राणआत्माइति बुद्ध्याअखिलबंधभागभवेत्) पुनःशरीरके संगहोने ते मेरी देहहै मेरीइंद्री हैं मेरेप्राण हैं इत्यादिआत्म अर्थात् सत्यहै ऐसी अज्ञान बुद्धि करिकै आत्मा भी देह के सम्बन्धनको भागीहोत १८॥

देहेंद्रियप्राणशरीरसंगतस्स्वात्मेतिबुद्ध्याखिलबंधभागभवेत् ॥ चिन्मात्रमेवाह मजोहमक्षरोह्यानन्दभावोहमितिप्रमुच्यते ॥ देहोऽप्यनात्मापृथिवीविकारजो नप्राणआत्मानिलएषएवसः १६ मनोप्यहंकारविकारएवनोनचापिबुद्धिःप्रकृतः विकारजा ॥ आत्माचिदानंदमयोविकारवान्देहादिसंघाद्व्यतिरिक्तईश्वरः २० नि रंजनोमुक्तउपाधितःसदाज्ञात्वेवमात्मानमितोविमुच्यते ॥ अतोहमात्यंतिकमो क्षसाधनंवक्ष्येशृणुष्ववावहितोमहामते २१ ॥

(अहंएवचिन्मात्रंअहंअजःअहंअक्षरःहिआनंदभावः इतिप्रमुच्यते) हेरावण जबऐसीबुद्धिआवैकै मैं निश्चयकरिकै चैतन्यमात्रहोमैं जन्मरहित होंमैं अक्षरअर्थात् नाशरहित निश्चयकरि आनन्द रूपहो तबतौ वह मुक्तहोई (देहःअपिअनात्मापृथिवीविकारजःएवप्राणआत्मानसःअनिलएव) देह निश्चयक- रिअनात्माहै क्योंकि पृथिवीको विकार अन्नादिसो उत्पन्नहै पुनः येप्राण भी आत्मानहींहैं क्योंकि सोतौ पवनको रूपहै निश्चयकरिकै १९ (मनःअपिनोअहंकारविकारएवचबुद्धिःअपिनप्रकृतेःविका रजादेहादिसंघातव्यतिरिक्तअविकारवान्चिदानन्दमयःआत्माईश्वरः) मनभी आत्मानहीं है क्योंकि मनतौ अहंकार को विकारहै अहंकार पुनः बुद्धिभी आत्मानहीं है क्योंकि प्रकृतिके विकार महात त्वते उत्पन्नभये पुनः प्राणेन्द्रिय देहादि समूह विकारते भिन्ननिर्विकार सदाचैतन्यआनन्दमय आत्मा ईश्वरहै २० (उपाधितःसदामुक्तनिरंजनःआत्मानंज्ञात्वाएवइतोविमुच्यतेअतःआत्यान्तिकमोक्षसाध नंअहंवक्ष्येमहामतेअवहितःशृणुष्व) धर्माधर्मकी चिंतवनजो उपाधिहै त्यहिते छूटा पुनः निरंजन अर्थात् कारणमाया रहित शुद्ध आत्मारूपको जानेत ते निश्चयकरि पुरुषकी मुक्तिहोतीहै इससे जो अत्यन्त उन्नम मुक्तिको साधनहै ताहि हम कहतेहैं हे महामते बड़ी बुद्धिवाले रावण एकाग्र चित करिकै सुनौ २१ ॥

विष्णोर्हिभक्तिःसुविशोधनंधियस्ततोभवेज्ज्ञानमतीवनिर्मलम् ॥ विशुद्धतत्त्वानुभ वोभवेत्ततःसम्यग्विदित्वापरमंपदं व्रजेत् २२ अतोभजस्वाद्यहरिरमापतिंरामं पुराणंप्रकृतेःपरंविभुम् ॥ विसृज्यमौर्ख्यंहृदिशत्रुभावनांभजस्वरामंशरणागत प्रियम् ॥ सीतांपुरस्कृत्यसपुत्रबांधवोरामंनमस्कृत्यविमुच्यसेभयात् २३ रामं

परात्मानमभावयन् जनो भक्त्या हृदि स्थं सुखरूपमद्वयम् ॥ कथं परंतीरमवाप्नुयाज्ज
नो भवांश्चुधेर्दुःखतरंगमालिनः २४ ॥

(विधेयः सुविशोधनहि विष्णोः भक्तिः ततः अतीव निर्मलं ज्ञानं भवेत् ततः विशुद्धतत्त्व अनुभवः भवेत् सम्यग्
ग्विदित्वा परमपदं ब्रजेत्) बुद्धि के विशेष शोधनको विष्णु की भक्ति है अर्थात् हरि यश श्रवण कार्तन
नाम स्मरण पदं सेवन पूजन वदन दास्य सख्य आत्मनिवेदनादि करनेसे बुद्धि चित्तादि अंतःकरण
शुद्ध हो जाते हैं तब अत्यंत निर्मल ज्ञान भाव आत्म रूप की पहिचान होती है देहव्यवहार वृथा देखात
तब विशेषि शुद्ध आत्मतत्त्व साक्षात्कार होता है तब मायाब्रह्म परब्रह्म इत्यादि संपूर्ण पदार्थ जानेते
पुरुष परमपदको जाता है २२ (अतः प्रकृतेः परं विभुं पुराणं आद्य हरिं रमापतिं रामभजस्व) इस कारणते
हे रावण प्रकृति ते परे सबमें व्यापक पुराण पुरुष आद्य हरि लक्ष्मी के पति जो राम हैं तिनहिं भजो
कौन भांति कि (हृदि शत्रुभावानां मोक्षार्थं विस्मृत्य शरणागतप्रियम् रामं भजस्व) हृदयमें जो शत्रुभाव
है सो मूर्खता त्यागि के शरणागत प्रिय है जिन को ऐसे राम को भजो ताकी उपायमें बतावता हों
(सीतापुरस्कृत्य सपुत्रवां यवः रामेन मस्कृत्य भयात् विमुच्यसे) हे रावण सादर जानकीजीको आगेकरि
सहित पुत्र भाइन चलौ श्री रघुनाथजी को प्रणाम करौ तौ लोक में प्राण घात परलोकमें यम
सांसति इत्यादि सब भयते छूटि जाहुगे २३ (हृदि स्थं सुखरूपमद्वयम् परात्मानं रामं भक्त्या जनः
अभावयन् दुःखतरंगमालिनः भवांश्चुधेः परंतीरं जनः कथं भवाप्नुयात्) हे रावण जो अंतर्द्वारी रूपते
सब के हृदय में स्थित आनंद रूप अद्वैत ऐसे परमात्मा जो रघुनन्दन तिनहिं भक्ति करिके जो
जन नहीं भावना करता है तौ तनिउ तापें जराजन्म मरण गर्भवास यमसांसति इत्यादि दुःखोंकी
समूह तरंगें हैं जामें ऐसा भवसागरके पार तीरको जन कैसे प्राप्त हो सक्ता है भाव बिना रघुनाथजीके
भजे कोई जीव भवसागरके पार नहीं जायसक्ता है २४ ॥

नोचेत्त्वमज्ञानमयेन वह्निना ज्वलन्तमात्मानमरक्षितारिवत् ॥ नयस्य धोधः स्वकृतैश्च
पातकैर्विमोक्षशंकानचते भविष्यति २५ श्रुत्वा मृतास्वादसमानभाषितं तद्वायुसूनो
दशकंधरोऽसुरः ॥ अमृत्यमाणोऽतिरुषाकपीश्वरं जगाद रक्तांतविलोचनोज्ज्वल
म् २६ कथं ममाग्रे विलपस्य भीतवत्प्लवंगमानामधमोसिदुष्टधीः ॥ कएष रामः क
तमो वनेजरो निहन्मि सुग्रीवयुतं नराधमम् २७ त्वांचाद्यहं त्वाजनकात्मजांततो नि
हन्मिरामं सह लक्ष्मणं ततः ॥

(नोचेत् अज्ञानमयेन ज्वलन्तं वह्निना अरिवत् त्वं आत्मानं अरक्षितः च स्वकृतैः पातकैः अथः अधः नयसि
चते विमोक्षशंकान भविष्यति) हे रावण जो मेरा कहना नहीं मानते हो अरु अज्ञानमय बरतीहुई अग्नि
करिके जरतीहुई देखिके शत्रुकी नाई तुम आत्माको नहीं रक्षा करते हो पुनः ज्जीवहिंसा परधन परस्त्री
हरणादि आपने कियेहुये पापोंकरिके नीचीते नीचीगतिको आत्माको लिहे जाते हो भावजो यासमयमें
चूकते हो तौ पुनः अब तुमको कबहुं मोक्षकी शंकान होइगी भाव ऐसे असंख्य पापकिहेउ है तिनके प्र-
भावते कभी भवबंधनते न छूटोगे २५ (अमृतस्य अस्वादसमान वायुसूनोः भाषितं तत् श्रुत्वा असुरः दश
कन्धरः अमृत्यमाणः रक्तांतविलोचनः ज्वलन्मृतिरुपाकपीश्वरं जगाद) खाने में मधुर पीछे अमरता
ऐसे अमृतके स्वादसमान पवनपुत्रको कहाहुआ वचन सो सुनिके दुष्ट रावण न सहिसका क्रोधवशला-
लहै गये हैं नेत्रगोउ अग्नि तुल्य प्रज्वलित अस्यन्त कोपकरि हनुमान प्रति बोलता भया २६ (प्लवंग

मानांअधमःअसिदुष्टीःमभीतवत्समाग्रेकयंविलपसिएपरामः कःवनेचरःकतमः सुग्रीवयुतंनराधमम्
निहन्मि) तू वानरोमें अधम है ह दुष्टी निडरकी नाई मेरे आग केसो वार्ताकरता हसि यह राम
कौनबड़ाबलीवीर है जिसको छोटाभाई धरतेनिकारि राज्यलैलिया तिसकी क्या प्रशंसाकरताहै तथा
वनके चरनेवाला सुग्रीव काहे में है जो वाल्मीके डरते भागभागफिरतारहा तिसकी क्या प्रशंसाकर-
ताहै सुग्रीव सहित नरनमें अधम रामकोमारोंगो २७ (अद्यत्वाहत्वाततःजनकात्मजाततःसहलक्ष्म
णरामंनिहन्मि) हे अधम वानर अभी तोकोमारताहों तदनन्तर जनकपुत्रीकोमारोंगो तदनन्तर स-
हितलक्ष्मण रामकोमारोंगो ॥

सुग्रीवमग्रेबलिनंकपीश्वरंसवानरैर्हन्म्यचिरेणवानर २८ श्रुत्वादशग्रीववचःसमा
रुतिर्विवृद्धकोपेनदहन्निवासुरम् ॥ नमेसमारावणकोटयोऽधमारामस्यदासोहम
पारविक्रमः २९ श्रुत्वातिकोपेनहनूमतोवचोदशाननोराक्षसमेकमब्रवीत् ॥ पा
श्वैस्थितंमारयखंडशःकर्पिपश्यंतुसर्वेऽसुरमित्रबांधवाः ३० निवारयामासततो
विभीषणोमहासुरंसायुधमुद्यतंवधे ॥ राजन्वधारो न भवेत्कथंचनप्रतापयुक्तैःपररा
जवानरः ३१ हतेस्मिन्वानरेदूतेवार्ताकोवानिवेदयेत् ॥ रामायत्वंसमुद्दिश्यवधाय
समुपस्थितः ३२ ॥

(वानरअग्रेकपीश्वरंवलिनंसुग्रीवंसवानरैःअचिरेणहन्मि) हे वानर ताके आगेवानरोंको राजाजो
बड़ाबली सुग्रीवहै ताको सहित वानरनथोरही कालमें मरिहों २८ (दशग्रीववचःश्रुत्वात्समारुतिः
असुरमदहन्निवविबृद्धकोपेनअधमाःसवणकोटयःमेसमानअपारविक्रमःअहंरामस्यदासः) दशग्रीवरा-
वणके वचन सुनि सो मारुत नन्दन रावणको भस्मकरने के समान बड़े कोपकारिके बोले कि तू
सबको क्यामारैगा जो अधम रावण करोरिनहोंइतो युद्धमें अकेले मेरी समान नहीं हैं क्योंकि अपार
है पराक्रम जाके ऐसा मैं रघुनाथजी को दासहों २९ (हनूमतःवचःश्रुत्वाअतिकोपेनदशाननःएकं
राक्षसंपाश्वैस्थितंअब्रवीत्खंडशःकर्पिमारयअसुरमित्रबांधवाःसर्वेपश्यंतु) हनूमान् को वचन सुनि
अत्यन्त कोपकारिके रावण एकराक्षस समीप बैठारहा ताप्रति बोलताभया कि सर्वांग खंडखंड करि
इस वानरको मारडाल जामें राक्षस मंत्री बंधु आदि सब देखें भाव जिनको इसने माराहै तिनके
संबंधी शत्रुको वध देखिलेवें ३० (ततः सायुधंउद्यतंवधेमहासुरंविभीषणःनिवारयामासरान्प्रता
पयुक्तैःपरराजवानरःअधार्हःकथंचननभवेत्) तदनन्तर सहित हथियार उद्यत मारत सन्तुष्टराक्ष-
सको विभीषण मनाकरते भये पुनः रावण प्रति बोले हे राजन् प्रतापकारिके युक्त पुनः तुम्हारे शत्रु
राजाको वानर मारिये योग्य किसी प्रकारते नहीं भाव एकतौ बलीवीर याको कौन मारि सकाहै
पुनः दूतको वधनीति विरोधहै ३१ (तस्मिन् दूते वानरेहतेवार्तारामायकःवानिवेदयेत्वंवधायत्वंउ
द्दिश्यसमुपस्थितः) तिसदूत वानरके मारे संते तुम्हाइ वार्ता रामके अर्थको जाय सुनाई जिनराम
के वधके हेत तुम उद्यत बैठहों व्यंग्यजिनके हाथ आपनी श्रुत्यु चाहते हों ३२ ॥

अतोबधसमंकिंचिदन्यच्चितयवानरे ॥ सचिह्नोगच्छतुहरिर्यंहृष्टवायास्यतिद्रुत
म् ३३ रामःसुग्रीवसहितस्ततोयुद्धंभवेत्तव ॥ विभीषणवचःश्रुत्वावणोप्येतद
ब्रवीत् ३४ वानराणांहिलांगूलेमहामानोभवेत्किल ॥ अतोवस्त्रादिभिःपुच्छंवेष्ट

यित्वाप्रयत्नतः ३५ वह्निनायोजयित्वैनंभ्रामयित्वापुरेऽभितः ॥ विसर्जयतपश्यं
तुसर्वेवानरयूथपाः ३६ तथेतिशणपटैश्चवस्त्रैरन्यैरनेकशः । तैलाक्तैर्वेष्टयामासु
लांगूलमारुतेर्दृढम् ३७ पुच्छाग्रेकिंचिदनलंदीपयित्वाथराक्षसाः ॥ रज्जुभिःसु
दृढं बध्वाधृत्वातंबलिनोऽसुराः ३८ समंताद्भ्रामयामासुश्चोरोयमितिवादिनः ॥
तूर्यघोषैर्घोषयंतस्ताडयंतोमुहुर्मुहुः ३९ ॥

(अतःवधसमंवानरेकिंचित्अन्यत्चितयसचिह्नःहरिःगच्छतुयंदृष्ट्वासुग्रीवसहितःरामःद्रुतंआया
स्यति) इसकारणते वधके समान वानर विपे कछु और दंड विचार करौ जामेंसहित चिह्न वानर
जाय जाको देखि सुग्रीव करिकै सहित रामशीघ्रही आवहिं ३३ (ततःतवयुद्धभवेत्विभीषणवचःश्रु-
स्वारावणःअपि एतत्प्रव्रवीत्) तदनन्तर तुम्हारे साथ रामका युद्धहोई इतिविभीषणको वचन सुनि
रावण भी ऐसा बोलताभया ३४ (वानराणांहिलांगूलेकिलमहामानःभवेत्अतःप्रयत्नतःवस्त्रादिभिः
पुच्छेष्टयित्वा) वानरनको लांगूलविपे निश्चयकरि महामान अर्थात् प्रीति होतीहै इस कारणते
यत्न पूर्वक वस्त्रादिकोंकरिकै पूछको लपेटौ ३५ (वह्निनायोजयित्वापुरेअभिहितःएनंभ्रामयित्वावि
सर्जयतसर्वेवानरयूथपाःपश्यन्तु) अग्नि करिकै घोजितकरौ भाव पूछमें अग्नि करिजराय पुनः लंका
पुरमें सबदिशि घुमायकै छोड़िदेउ जब इहांते जायगा तब सब वानर यूथपूछहीन देखेंगे तब जानै
गेकि लंकागये को यही फलहै ३६ (तथा इतिशणपटैःचअनेकशःअन्यैःवस्त्रैःतैलाक्तैःमारुतेःलांगू-
लंदृढम्वेष्टयामासुः) तैसही होय ऐसा कहि राक्षसनकेपटटाट करिकै पुनः अनेक प्रकार उन लू-
तादि वस्त्रों करिकै तेल वोरिकरिकै हनुमानके लांगूलको पुष्टकरि लपेटतेभये ३७ (अथराक्षसाःपु-
च्छाग्रेकिंचित्अनलंदीपयित्वाथराक्षसाः) अब राक्षस पूछके अग्रेक-
छुआगि जरायकै रसरिनकरिकै पुष्टवांनि ताको बली राक्षस गहिकै ३८ (अयंचोरः इति वादिनःत
मंताद्भ्रामयामासुःतूर्यघोषैःघोषयतः मुहुःमुहुःताडयंतः) यहचोर है ऐसा कहते हुये सर्वत्र घुमावते
भये साथ में तुरही आदि बाजों करिकै शब्द होता है बारंवार मारते हैं ३९ ॥

हनूमतापितत्सर्वसोढुंकिंचिच्चिकीर्षुणा ॥ गत्वातुपश्चिमद्वारसमीपंतत्रमारुतिः
४० सूक्ष्मोवभूवबंधेभ्योनिःसृतःपुनरप्यसौ ॥ वभूवपर्वताकारस्ततउत्प्लुत्यगो
पुरम् ४१ तत्रैकरतंभमादायहत्वातानूरक्षिणःक्षणात् ॥ विचार्यकार्यशेषंसः
प्रासादाग्राद्गृहाद्गृहम् ४२ उत्प्लुत्योत्प्लुत्यसंदीप्तपुच्छेनमहताकपिः ॥ ददाह
लंकामखिलांसाष्टप्रासादतोरणाम् ४३ हातातपुत्रनाथेतिक्रंदमानाःसमंततः ॥
व्याप्ताःप्रासादशिखरेप्यारूढादैत्ययोषितः४४ देवताइवदृश्यंतेपतंत्यःपावकेऽखि
लाः ॥ विभीषणगृहंत्यक्त्वासर्वभस्मीकृतंपुरम् ४५ ॥

(किंचित्चिकीर्षुणाहनूमताऽपितत्सर्वसोढुंतु पश्चिमद्वारसमीपंगत्वातत्रमारुतिः) कछु और कार्य
करने की इच्छा करिकै हनुमान् भी राक्षसों को तिरस्कार सो सब सहतेहैं पुनः जब पश्चिकाद्वार
के समीप गये तहां पवन पुत्र ४० (सूक्ष्मःवभूवबंधेभ्यः निःसृतःअपि असौपर्वताकारःवभूवततःगोपु
रंतुत्प्लुत्य) उहांसूक्ष्म तन हो जाते भये ढल्लेपरे रस्सी बंधनोते निसरि पुनः निश्चय करिये हनुमान्
बाहिकै पर्वताकार हू जाते भये तदनंतर द्वार के ऊपर कूदि चढ़ि गये ४१ (तत्रएकस्तंभं आदायर

रक्षिणः तान्क्षणात् हत्वा शेषं कार्यं विचार्य सः प्रासादं ग्रात् गृहात् गृहम्) द्वार ऊपर जाय तहाँ एक खंभा उचारि लैकै यावत् इनके रखावनेवाले रहैं तिन को क्षण भरे में मारि डारे पुनः और वाकी जो कार्य रहै है ताको विचार करिकै ऊँचे महल पर जाय तापरते एक मंदिर ते दूसरे मंदिर पर ४२ (उत्प्लुत्य महता कपिः पुच्छेन संदीप्तसंघट्टप्रासादतोरणाम् अखिलाम् लंकाम् ददाह) एक मंदिर परते कूदि दूसरे पर जाय महा कपि हनुमान् पूछ की अग्नि करिकै अग्नि ज्वलित करते हुये सहित अटारी मंदिर द्वारादि संपूर्ण लंकापुरी भस्म करि देते भये ४३ (प्रासादशिखरेऽपि आरूढा दैत्ययोपितः हातातपुत्र नाथ इति क्रंदमानाः समंततः व्याप्तः पावके अखिलाः पतंत्यः देवता इव दृश्यन्ते विभीषणं गृहंत्य कृत्वा सर्वं पुरं भस्मीकृतम्) मंदिरन के ऊपर चढ़ी हुई राक्षसों की स्त्रोते हा तात हा पुत्र हा नाथ ऐसा पुकारि रोवती चिल्लाती हुई अरु सर्वत्र व्यापक अर्थात् वरती हुई अग्नि बिषे वरती हुई गिरती हैं ते देवता सम देखाती हैं इसी भांति एक विभीषण को घर बराय और सब पुर भस्म करि दिये ४४ । ४५ ॥

तत उत्प्लुत्य जलधौ हनूमान्मारुतात्मजः ॥ लांगूलं मज्जयित्वा तः स्वस्थचितो बभूव सः ४६ वायोः प्रियसखित्वाच्च सीतया प्रार्थितोऽनलः ॥ न ददाह हरेः पुच्छं बभूव तस्य तशीतलः ४७ यन्नाम संस्मरणधूतसमस्तपापास्तापत्रयानलमपीहतं रंतिसद्यः ॥ तस्यैवाकिं रघुवरस्य विशिष्टदूतः संतप्तते कथमसौ प्रकृतानलेन ४८ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमासहेश्वरसंवादे सुन्दरकाण्डे चतुर्थः सर्गः ४ ॥

(तत्मारुतात्मजः हनूमान् उत्प्लुत्य जलधौ लांगूलं मज्जयित्वा तः अंतः स्वस्थचितः बभूव) सब लंका भस्म करि तब पवन पुत्र हनुमान् लंकाते कूदे आय समुद्र विषे जल में ज्वलित लांगूल बोरि दिये अग्नि बुझाय तब सो हनुमान् अंतःकरण में स्वस्थ चित्त अर्थात् श्रम रहित प्रसन्न होते भये अब पार्वती जी शंका किया कि प्रचंड अग्नि की ज्वाला में रहे अरु हनुमान् क्यों न जरे तापर शिव जी कहते हैं ४६ (वायोः प्रियसखित्वाच्च सीतायाः प्रार्थितः अनलः अत्यंत शीतलः बभूव हरेः पुच्छं न ददाह) हनुमान् के पिता पवन तिनको प्रिय सखा है अग्नि इति मित्र को पुत्र जानि पुनः सीता करिकै प्रार्थना किया गया ताते अग्नि अपनी दाहकता त्यागि अत्यंत शीतल होता भया इस कारण हरि जो बानर अर्थात् हनुमान् जी तिनकी पूछ को अग्नि नहीं जरावता भया ४७ (यन्नाम स्मरणसमस्तपापाः धूततापत्रयानलमपीहतसद्यः तरंतितस्य एव रघुवरस्य विशिष्टदूतः किं भसौ प्रकृतानलेन कथं संतप्तते) पूर्वमाधुर्य में कहे अब ऐश्वर्य में कहत कि जिन प्रभुको राम ऐसा नाम स्मरण करि जन सब प्रकार के पाप दूरि करि देते हैं पुनः तापत्रय यथा अधिदैहिक ज्वर शूलादि अथि भौतिक शत्रुराज दंडादि पुनः अधिदैविक दरिद्र हानि वियोगादि जो तीनिहु तापै तिन करिकै उत्पन्न जो दुःखाग्नि तिसको भी निश्चय करि शीघ्रतरि जाता है भाव ताप दुःख नहीं व्यापता है ऐसा प्रभाव जाके नाम में है तिन रघुनंदन को उत्तमदूत हनुमान् को क्या है तुच्छ यह लौकिक अग्नि तिस करिकै कैसे संतप्त होवें ४८ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथ
विरचिते अध्यात्मभूषणे सुन्दरकाण्डे चतुर्थः प्रकाशः ४ ॥

तत सीतांनमस्कृत्यहनूमानब्रवीद्वचः ॥ आज्ञापयतुमांदेविभवतीरामसन्निधि
म् १ गच्छामिरामस्त्वाद्विष्टुमागमिष्यतिसानुजः ॥ इत्युक्त्वात्रिःपरिक्रम्यजान
कीमारुतात्मजः २ प्रणम्यप्रस्थितोगंतुंइदंवचनमब्रवीत् ॥ देविगच्छामिभद्रंते
तूर्णद्रक्ष्यसिराघवम् ३ लक्ष्मणंचससुग्रीवंवानरायुतकोटिभिः ॥ ततःप्राहहनूमं
तंजानकीदुःखकर्षिता ४ त्वांदृष्ट्वाविस्मृतंदुःखमिदानींत्वंगमिष्यसि ॥ इतःपरं
कथवर्तेरामवार्ताश्रुतिंविना ५ मारुतिरुवाच ॥ यद्येवंदेविमेस्कंधमारोहक्षणमा
त्रतः ॥ रामेणयोजयिष्यामिमन्यसेयदिजानकि ६ ॥

सवैया ॥ सियबोधि प्रणम्य चलेकपि सोफल खात सुकंठसुमोदलहे । हनुमान् पुराकरिआयसबै
कपिराजसराघव पय्यगहे ॥ मणिदीन सिया कुशलातदुखी निजकृत्य सवैहनुमान् कहे । फलखाय
समग्रउपारि वनैखलमारि घनेपुरलंकदहे ॥ (ततःहनुमान्सीतांनमस्कृत्यवचःअब्रवीत्देविरामसन्नि
धिमभवतीमांआज्ञापयतु) तदनंतर हनुमान् सीताको नमस्कार करि वचन बोलते भये हे देवि रघु-
नाथजीके समीपजाने को आपमोको आज्ञा दीजिये १ (गच्छामित्वांष्टुंसानुजःरामःआगमिष्यति
इतिउक्त्वामारुतात्मजःजानकीत्रिःपरिक्रम्य) मैं जाउतौ तुम्हारे देखने को सहित लक्ष्मण रघुनाथ
जी आवहिंगे ऐसाकहि हनुमान् जानकी को तीनि परिक्रमा करिकै २ (प्रणम्यगंतुंप्रस्थितःइदंवच-
नंअब्रवीत्देवितेभद्रंगच्छामितूर्णद्रक्ष्यसि) प्रणामकरि चलिये पर उद्यत हूँ हनुमान् ऐसावचन
बोलतेभये हे देवि तुम्हारा कल्याण होय अब मैं जाताहूँ शीघ्रही रघुनाथजी को देखहुगी कौन
भांति ३ (लक्ष्मणंचवानरायुतकोटिभिःसुग्रीवंततःदुःखकर्षिताजानकीहनूमंतप्राह) लक्ष्मणको पुनः
हजारन करोरिवानरन सहित सुग्रीवको देखौगी तबदुःख करिकै दुर्बल जानकी सो हनुमान् प्रति
बोलती भई ४ (त्वांदृष्ट्वादुःखंविस्मृतंदुःखमिदानींत्वंगमिष्यसिइतःपरंविनारामवार्ताश्रुतिकथंवर्ते) हेहनुमान्
तुमको देखिकै दुःख बितरि गयारहै अबतुम जातेहौं इसके पाछे विना रघुनंदन की वार्ता सुने कैसे
रहौंगी ५ (देवियदिएवंमेस्कंधमारोहजानकियदिमन्यसेक्षणमात्रतःरामेणयोजयिष्यामि) तबहनु-
मान् बोले किहे देवि जो ऐसही है तौ मेरेकांधेपर चढौ हे जानकी जो मेरा कहा मानौ तौएकभण-
मात्र में रघुनंदन करिकै तुमको मिलाय देऊंगो ६ ॥

सीतोवाच ॥ रामःसागरमाशोष्यवध्वावाशरपंजरैः ॥ आगत्यवानरैःसार्द्धंहत्वा
रावणमाहवे ७ मांनयेद्यदिरामस्यकीर्तिर्भवतिशाश्वती ॥ अतोगच्छकथंचापि
प्राणान्संधारयाम्यहम् ८ इतिप्रस्थापितोवीरःसीतयाप्रणिपत्यताम् ॥ जगाम
पर्वतस्याग्रेगंतुंपारंमहोदधेः ९ तत्रगत्वामहासत्वःपादाभ्यांपीडयन्नगिरिम् ॥ ज
गामवायुवेगेनपर्वतश्चमहीतलम् १० ततोमहीसमानत्वांत्रिशयोजनमुच्छ्रितः॥
मारुतिर्गगनांतस्थोमहाशब्दंचकारसः ११ तंश्रुत्वावानराःसर्वेज्ञात्वामारुतिमा
गतम् ॥ हर्षेणमहताविष्टःशब्दंचक्रुर्महास्वनम् १२ ॥

(रामःसागरंआशोष्यवाशरपंजरैःवध्वावानरैःसार्द्धंआगत्यआहवेरावणंहत्वा) हनुमान् के वचन
सुनि जानकीजी बोली कि चोरी ते जाना लघुता है ताते रघुनंदन बाण की अग्नि करिकै समुद्रको
शोपिलेवै अथवा बाणसमूहों को पजरकरिकै सेतुबांधि वानरों करिकै सहित आयसंग्राम में रावण

को मारिकै ७ (यदिमानंयेत् रामस्यशादवतीकीर्तिःभवति प्रतःगच्छग्रहंकथंचापि प्राणान् लंघयामि) रावण मारिकै जो मोको लैजायगे तौ रघुनंदन की बहुतकालान कीर्ति होइगी इससे हे हनुमान तुमजाउ अब मैं किसी भांति प्राणन को धारण किहे रहौंगी ८ (इति सीतया प्रस्थापितः वीरः तां प्रणि पत्यमहोदधेः पारंगंतु पर्वतस्य अग्रे जगाम) इसप्रकार सीताकरिकै पटावा हुआ वीरहनुमान् तिन सीताको प्रणाम करिसमुद्रके पारजाने को पर्वतके ऊपर को कूदिकै चढिजाता भया ९ (तत्र गत्वा महासत्वः गिरिम्पादाभ्यां पीडयन् वायुवगेन जगाम च पर्वतः महीतलं जगाम) तिसपर गये महाबली हनुमान् उसपर्वत को पायन करिकै दबाय पवन के तुल्यवेग करिके चलते भये पुनः जहां तेकूदेसो पर्वत इनकेदबाने ते भूमि में समायजाताभया १० (ततः त्रिंशत् योजनं उज्झितः महीसमानत्वं मारुतिः गगनांतस्थः सः महाशब्दं चकार) तदनंतर जो तीसयोजन ऊंचा पर्वतरहा सो हनुमान् के दबाने ते ऐसा समाय गया कि ऊपर को शिराभूमि के बरावरि होगया अरु हनुमान् जाय आकाश में स्थित हवै सो महाभारी शब्द करतेभये ११ (तं श्रुत्वा सर्वे वानराः मारुतिं भागतं ज्ञात्वा हर्षेण महता विष्टः महा स्वनं शब्दं चक्रुः) हनुमान् को कियाजो शब्द ताहि सुनिकै सब वानर हनुमान् को आगमन जानि कै बड़े आनंद सहित महाभारी रवते शब्दकरते भये प्रथात् हर्षवशगर्ज उठे १२ ॥

शब्देनैव विजानीमः कृतकार्यः समागतः ॥ हनुमानेव पश्यध्वं वानरा वानरर्षभम् १३
एवं ब्रुवत्सु वीरेषु वानरेषु समा रुतिः ॥ अवतीर्य गिरेर्मूध्नवानरानि दमब्रवीत् १४
दृष्ट्वा सीतामया लंकाधर्षिता च सकानना ॥ संभाषितो दशग्रीवस्ततोऽहं पुनरागतः १५
इदानीमेव गच्छामो रामसुग्रीवसन्निधिम् ॥ इत्युक्त्वा वानराः सर्वे हर्षेणालिङ्ग्य
मारुतिम् १६ केचिच्चुचुर्लागूलं नमृतुः केचिदुत्सुकाः ॥ हनुमता समेतास्ते जग्मुः
प्रस्रवणं गिरिम् १७ गच्छंतो ददृशुर्वीरा वनं सुग्रीवरक्षितम् ॥ मधुसंज्ञं तदा प्राहुरं
गदं वानरर्षभाः १८ ॥

(हनुमान् एव कृतकार्यः समागतः शब्देनैव विजानीमः वानराः वानरर्षभं पश्यध्वम्) कोई वानर बोला कि हनुमान् निश्चय करिकार्य पुरा करिकै आयेहैं यह अनुमान हनुमान्के शब्दैकरिकै हमजानिगये कोई बोला हे वानरो वानरों में श्रेष्ठ जो हनुमान् ताहि देखौ अर्थात् आयगया १३ (एवं वीरेषु वानरेषु समा रुतिः गिरेर्मूध्नवानरानि दमब्रवीत्) इसप्रकार वीरवानरसत्र परस्परवार्ताकरते रहे ताही समयमें हनुमान् पहार केशिखरपर आकाशते उत्तरि वानरनप्रतिऐसोवचन बोलतेभये १४ (मया सीता दृष्टा च सकानना लंकाधर्षिता दशग्रीवः संभाषितः ततः अहं पुनः आगतः) मैंने सीता देखी इति कहि सावधान किये पुनः सहित वनलंका जीता रावण सों वार्ता किया भाव वन उजारि घने राक्षसों को मारि रावण सों वार्ता करिलंका भस्म करि तदनंतर मैं पुनः यहां को आया १५ (इदानीमेव रामसुग्रीवसन्निधिम् गच्छामः इति उक्त्वा हर्षेण सर्वे वानराः मारुतिं आलिङ्ग्य) इसी समय में निश्चय करि रघुनंदन सुग्रीव के समीप को हम सब चलेंगे ऐसा जब हनुमान् कहे तब आनंद करि कै सब वानर हनुमान् को हृदय में लगाय मिले १६ (केचित् लांगूलं चुचुवुः केचित् उत्सुकाः नमृतुः ते हनुमता समेताः प्रस्रवणं गिरिम् जग्मुः) कोई तौ हनुमान् की पूछको चूँवते हैं कोई अभीष्ट प्राप्तिके आनंद वशनाचते हैं ते सब वानर हनुमान् समेत प्रवर्षण गिरिको जहां रघुनंदन वास किहे हैं तहां को यात्रा करते १७ (सुग्रीवरक्षितं मधुसंज्ञं वनं गच्छंतं वीराः ददृशुः तदा वानरर्षभाः अंगदं प्राहुः) सुग्रीव

करिकै रक्षा किया हुवा जो मधुनामे वनहै फलाहुवा ताको जाते हुये वानर बीर देखतेभये तासमय में उत्तम वानर सब अंगद प्रति बोलते भये १८ ॥

क्षुधिताःस्मोयंवीरदेह्यनुज्ञांमहामते ॥ भक्षयामःफलान्यद्यपिवामोऽमृतवन्म
धु १९ संतुष्टाराधवंद्रष्टुंगच्छामोऽद्यैवसानुजं २० ॥ अङ्गदउवाच ॥ हनुमान्कृ
तकार्योयंपिवतैतत्प्रसादतः ॥ जक्षध्वंफलमूलानित्वरितंहरिसत्तमाः २१ ततःप्र
विश्यहरयःपातुमारोभिरेमधु॥रक्षिणस्ताननादृत्यदधिवक्त्रेणनोदितान् २२ पिव
तस्ताडयामसुर्वानरानवानरर्षभाः॥ततस्तान्मुष्टिभिःपादैश्चूर्णयित्वापपुमधु २३
ततोदधिमुखःक्रुद्धःसुग्रीवस्यसमातुलः ॥ जगामरक्षिभिःसार्द्धयत्रराजाकपीश्व
रः २४ गत्वातमब्रवीदेवचिरकालाभिरक्षितम् ॥ नष्टमधुवनंतेद्यकुमारेण
हनुमता २५ ॥

(वीरवयंक्षुधिताःस्मःमहामतेअनुज्ञांदेहि अद्यफलानि भक्षयामःअमृतवनमधुपिवामः) वानर बोले हे अंगद वीर हमसब भूखे हैं ताते हे महामते आज्ञादीजिये आज फल खांयगे तथा अमृत के तुल्यजो मधुवृक्षों को मीठारस पान करहिंगे १९ (अद्यएवसंतुष्टारासानुजंराधवंद्रष्टुंगच्छामः) भोजन पान करि अब निश्चय करि संतुष्ट हूँकै तब सहित लक्ष्मण रघुनंदन को देखने को चलें २० (अयंहनुमान्कृतकार्यःएतत्प्रसादतःहरिसत्तमाःपिवतफलमूलानित्वरितंयक्षध्वं) अंगद बोलतेभये कि ये हनुमान् कार्य करिआये हैं सो इनहीं के प्रसादते हे उत्तम वानरो मधुपीवो फल मूलादि शीघ्रही भोजनकरो २१ (ततःहरयःप्रविश्यमधुपातुंआरोभिरेदधिवक्त्रेणनोदितान्रक्षिणःतान्अनादृत्य) तदनंतर अंगदकी आज्ञापाय सब वानर वनमें पैठि मधुपान करिवेको प्रारंभ किये उहांदधिमुखके आज्ञाकार रखवार रहे ते मना किये तिनहिं अंगदादि अनादर करि दिये उनका कहा न माने २२ (पिवतःवानरान्वानरर्षभःताडयामासुःततःतान्मुष्टिभिःपादैःचूर्णयित्वापपुमधुपुः) मधुपान करते हुये जो वानर तिनहिं वानरनमें श्रेष्ठजो दधिमुख अपने आज्ञाकार वानरन सहित मारने लगे तद-
नंतर दधिमुख की जो समाज रही तिनहिं अंगदादि मुष्टिक लातों करिकै मारि चूरकरिदिये अरु मधुपान करते भये २३ (ततःसुग्रीवस्यसमातुलःमदधिमुखःक्रुद्धःरक्षिभिःसार्द्धजगामयत्रराजाकपीश्वरः) तदनंतर सुग्रीव को मामासो दधिमुख क्रोधवश रखवारन सहित उहां जाताभया जहां वानरोंके राजा सुग्रीव बैठे रहें २४(गत्वातमब्रवीत्एवचिरकालतेअभिरक्षितंमधुवनंअद्यकुमारेणहनुमतानष्टं) उहां जाय दधि मुख सो तिन सुग्रीव प्रति बोलते भये हे राजन् बहुत कालते आपकरि कै रक्षा किया गया जो मधुवन ताहि आज अंगद और हनुमान्ने नष्ट किया २५ ॥

श्रुत्वादधिमुखेनोक्तंसुग्रीवोहृष्टमानसः ॥ दृष्ट्वागतोनसंदेहःसीतांपवननंदनः २६
नोचेन्मधुवनंद्रष्टुंसमर्थःकोभवेन्मम ॥ तत्रापिवायुपुत्रेणकृतंकार्यंनसंशयः २७
श्रुत्वासुग्रीववचनंहृष्टोरामस्तमब्रवीत् ॥ किमुच्यतेत्वय्याराजन्वचःसीताकथान्वि
तम् २८ सुग्रीवस्त्वब्रवीद्वाक्यंदेवदृष्टावनीसुता ॥ हनुमत्प्रमुखाःसर्वेप्रविष्टामधु
काननम् २९ भक्षयंतिस्मसकलंताडयंतिस्मरक्षिणः ॥ अकृत्वादेवकार्यंतेद्रष्टुं

धुवनंमम ३० नसमर्थास्ततोदेवीदृष्टासीतेतिनिश्चितम् ॥ रक्षिणोवोभयंमास्तु
गत्वान्नूतममाज्ञया ३१ ॥

(दधिमुखेन उक्तं श्रुत्वा सुग्रीवः हृष्टमानसः सीतां दृष्ट्वा पवननन्दनः आगतः संदेहः न) दधिमुख करिकै
कहाहुआ वचन सुनिकै सुग्रीव आनंदमन कहते भये कि अनुमानते मालूम होता है कि सीता को देखिकै
हनुमान् आये हैं यामें संदेह नहीं है २६ (नोचेत्तमममधुवनं द्रष्टुं समर्थः कः भवेत्तत्रापि वायुपुत्रेण कार्यं
कृतं संशयः न) नाहींतौ अर्थात् जो कार्य न किहे होते तौ मेरे रक्षा कियेहुये मधुवन को देखने को
कौन समर्थ है ताते निश्चय करि हनुमान् ने कार्य किया यामें संशय नहीं है २७ (सुग्रीववचनं श्रुत्वा
रामः हृष्टः तं अब्रवीत् राजन् सीता कथान्वितम्वचः किं त्वया उच्यते) सुग्रीव को वचन सुनिकै रघुनन्दन
प्रसन्न ह्वै सुग्रीव प्रति बोलते भये हे राजन् सीता की कथा युक्त वचन क्या तुमने कहा २८ (तु सुग्रीवः
वाक्यं अब्रवीत् देवअवनी सुता दृष्ट्वा हनुमत्प्रमुखाः सर्वे मधुकाननमम्प्रविष्टाः) पुनः सुग्रीव वचन बोलते
भये हे देवभूमि की पुत्री अर्थात् सीता देखिकै आये हनुमान् मुखिया हैं जिनमें तं सत्रवानर मधुवन
में पैठिगये फलादिखाते हैं २९ (भक्षयंति स्म रक्षिणः सकलं ताडयंति स्म देवते कार्यं अकृत्वा मम मधुवनं
दृष्टुं न समर्थाः) वरवश फल खाते हैं पुनः जे वन के रक्षकरहे तिन सब को मारे हे देवरघुनन्दन आप को
कार्य विना किहे मेरे मधुवन को देखने को कोऊ वानर समर्थ नहीं है ३० (ततः सीता देवी दृष्ट्वा
इति निश्चितम रक्षिणः वः भयं मास्तु ममाज्ञया गत्वान्नूत) ताते सीता देवी देखि आये यह निश्चय करि
साची है इति रघुनन्दन प्रतिकहि पुनः सुग्रीव बोले हे रक्षकों अब तुमको मारने की भय नहीं है मेरी
आज्ञा करिकै मधुवन को जाउ वानरों ते कहौ भाव तुमको बुलावते हैं इति जाय कहौ ३१ ॥

वानरानंगदमुखानानयध्वं ममांतिकम् ॥ श्रुत्वा सुग्रीववचनं गत्वा ते वायुवेगतः ३२
हनुमत्प्रमुखानूचुर्गच्छते श्वरशासनात् ॥ द्रष्टुमिच्छति सुग्रीवः सरामो लक्ष्मणान्वि
तः ३३ युष्मानतीव हृष्टास्ते त्वरयंति महाबलाः ॥ तथेत्यम्बरमासाद्य युस्ते वानरो
त्तमाः ३४ हनूमंतं पुरस्कृत्य युवराजं तथांगदम् ॥ रामसुग्रीवयोरग्रे निपेतुर्भुविस
त्वरम् ३५ हनूमान् प्राघवं प्राह दृष्ट्वा सीतानिरामया ॥ साष्टांगं प्रणिपत्याग्रे रामं पश्चा
द्धरीश्वरम् ३६ कुशलं प्राहराजेंद्र जानकीत्वां शुचान्विता ॥ अशोकवनिकामध्ये
शिशपामूलमाश्रिताः ३७ ॥

(अंगदमुखान् वानरान् ममांतिकम् आनयध्वम् सुग्रीववचनं श्रुत्वा ते वायुवेगतः गत्वा) अंगद आदि सब
वानरन को मेरे पास को बुलाय लावौ इति सुग्रीव को कहा वचन ताहि सुनिकै ते रक्षक पवनवेग करिकै
शीघ्र ही मधुवन को गये ३२ (हनुमत्प्रमुखानूचुः ईश्वरशासनात् गच्छत लक्ष्मणान्वितः सरामः सुग्रीवः
द्रष्टुमिच्छति) हनुमान् आदि वानरन प्रति बोलते भये स्वामी की आज्ञा ते चलो लक्ष्मण संयुक्त सहित
रघुनन्दन सुग्रीव तुम लोगन को देखने की इच्छा करते हैं भाव शीघ्र ही चलो ३३ (महाबलाः युष्मान्
अतीव हृष्टाः ते त्वरयंति तथा इति ते वानरोत्तमाः अम्बरं आसाद्य युः) हे महाबली वानरों तुम लोगन प्रति
अत्यन्त प्रसन्नते राम लक्ष्मण सुग्रीव तुम्हारे देखने की शीघ्रता करि रहे हैं इति सुनि बहुत भली ऐसा
कहि ते हनुमानादि वानरोत्तम आकाश मार्ग करिकै शीघ्र ही जाते भये ३४ (हनूमंतं पुरस्कृत्य तथा युवराजं अंगदं को आगे
जं अंगदं सत्वरम् रामसुग्रीवयोः अग्रे भुवि निपेतुः) हनुमान् को आगे करि तैते युवराज अंगद को आगे

करि सब वानर शीघ्रही आयरघुनंदन सुग्रीव के आगेभूमि में गिरि दण्डप्रणाम करतेभये ३५ (अये रामंसाष्टांगप्रणिपत्यपश्चात्हरीश्वरंहनुमान्गवंप्राह्निरामयासीतादृष्टा) प्रथमरघुनंदन को साष्टांगप्रणाम करि पीछे वानरेश्वर सुग्रीव को प्रणाम करि तब हनुमान् रघुनंदन प्रति बोलते भये कि अदूषित कुशल सीता मैंने देखी ३६ (राजेंद्रअशोकवनिकामध्येशिंशपामूलंआश्रिताशुचान्वितासीता त्वाकुशलंप्राह) रघुनंदन प्रति हनुमान् कहत कि हे राजेंद्र अशोकवनिकामध्यमें शशिमवृक्ष के तरे बैठी शोकयुत सीता आपकी कुशल पूछा है ३७ ॥

राक्षसीभिःपरिवृतानिराहाराकृशाप्रभो ॥ हारामरामरामेतिशोचंतीमलिनाम्बरा
३६ एकवेणीमयादृष्टाशनैराश्वसिताशुभा ॥ वृक्षशाखांतरेस्थित्वासूक्ष्मरूपेणते
कथाम् ४० जन्मारभ्यतवात्यर्थदण्डकागमनंतथा ॥ दशाननेनहरणंजानक्या
रहितेत्वयि ४१ सुग्रीवेणयथामैत्रीकृत्वाबालिनिवर्हणम् ॥ मार्गणार्थंचवैदेह्याःसु
ग्रीवेणविसर्जिताः ४१ महाबलामहासत्वाहरयोजितकाशिनः ॥ गताःसर्वत्रसर्वेवै
तत्रैकोऽहमिहागतः ४२ अहंसुग्रीवसचिवोदासोऽहंराघवस्यहि ॥ दृष्टायज्जान
कीभाग्यात्प्रयासःफलितोद्यमे ४३ ॥

(प्रभोराक्षसीभिःपरिवृतानिराहाराकृशामलिनाम्बराहारामरामरामइतिशोचंती) हेप्रभोराक्षसिन करिकै घेरमें परी भोजन रहित दुर्बल होरहाहै शरीर जिनको मलीन वस्त्रधारण किहे हाराम हाराम हाराम ऐसा उच्चारणकरि शोचकरतीहैं ३८ (वृक्षशाखांतरेस्थित्वासूक्ष्मरूपेणमयाएकवेणीदृष्टाशुभाते कथा मृशनैःआश्वसिता) वृक्षशाखों के बीचमेंबैठा सूक्ष्मरूपकरिकै मैंने एकवेणी धारणकिये जानकी को देखा तब मंगलीक आपकी कथाहै ताहि धीरा धीरा कहि सावधान किया ३९ (तव जन्म आरभ्यतथा अत्यर्थदंडकागमनंतवयिरहितेदशाननेनजानक्याहरणं) हेरघुनन्दनआपके जन्मते प्रारंभकरि ताही भांति विवाहादिविस्तारसहित दंडक वनको गमन तहां आपकरिकै रहित सूने आश्रममें रावण करिकै जानकी को हरण ४० (यथासुग्रीवेणमैत्रीकृत्वा बालिनिवर्हणम् चवैदेह्याःमार्गणार्थं सुग्रीवेणविसर्जितः) जैसे सुग्रीव करिकै मित्रता किया जिस प्रकार बालि को मारा आपने पुनः जानकी जीके ढूंढनेहेतु सुग्रीव करिकै भेजे हुये ४१ (महाबलामहासत्वाजितकाशिनः हरयःसर्वेवै सर्वत्रगताः तत्रैकःअहंइहागतः) बड़े बली बड़ेवीर्यवंत अजितव्योममार्ग गमन करने वाले वानर सब निश्चय करि सब दिशन को गये हैं बहुत तिन वानरन में एम मैंभी हों सो ढूंढतसंते इहांआया हों ४२ (अहंसुग्रीवसचिवः हि अहंराघवस्यदासः यत्भाग्यात्जानकीदृष्टा अद्यमेप्रयासःफलितः) मैं सुग्रीव को मंत्री हों पुनः निश्चय करिकै मैं रघुनन्दन को दास हों जो भाग्य वशते मैंने जानकी देखी तो अब मेरा परिश्रम सफल भया ४३ ॥

इत्युदीरितमाकर्ण्यसीताविस्फारितेक्षणा ॥ केनवाकर्णपीयूषंश्रावितंमेशुभाक्षर
म् ४४ यदिसत्यंतदायातुमदर्शनपथंतुसः ॥ ततोऽहंवानराकारःसूक्ष्मरूपेणजान
क्रीम् ४५ प्रणम्यप्रांजलिर्भूत्वादूरादेवस्थितःप्रभो ॥ पृष्ठोऽहंसीतयाकस्त्वमित्या
दिबहुविस्तरम् ४६ मयासर्वक्रमेणैवविज्ञापितमरिंदम ॥ पश्चान्मयार्पितदेव्यै
भवद्गतांगुलीयकम् ४७ तेनमामतिविश्वस्तावचनंचेदमब्रवीत् ॥ यथादृष्टास्मि

हनुमन्पीड्यमानादिवानिशम् ४८ राक्षसीनांतर्जनेस्तत्सर्वकथयराघवे ॥ मयाक्तं
देविरामोपित्वच्चिन्तापरिनिष्ठितः ४९ ॥

(इतिउद्गिरितंआकर्ण्यसीता विस्फारितेक्षणामेकर्णपीयूषगुभाक्षरम् केनवाभावितं) इत्यादिमेरा
कहा ताहि सुनिकै सीता खोलि नेत्रों करिकै सर्वत्र निहारे जब न देखे तब बोली कि मेरे कानों
को सुनत में अमृततुल्य मंगलमय वचन किसने सुनावाहै ४३ (सयादिसत्यंमर्दनपथंतुतदायातु
ततःअहंवानराकारःसूक्ष्मरूपेण) यह सुनावनेवाला सो जो सत्यहै तोमरे नेत्रनके आगे प्रसिद्धहोय
जब ऐसा कहे तब मैं वानराकार छोटा रूप करिकै प्रसिद्ध हूँ ४५ (प्रमोजानकीम्प्रणम्यप्रांजलिः
भूत्वादूरात्एवस्थितःत्वंकःइत्यादिवहुविस्तरंसीतयाष्टुष्टःअहम्) हे प्रमो जानकी को प्रणाम करिकै
हाथ जोरेहुये दूरही खड़ाहों मोको देखि बोली कि तू कौनहै कहाँते आया इहांका कार्य है इत्यादि
बहुत विस्तार पूर्वक सीता करिकै मैं पूछागया भाव वानर देखि मायावी राक्षस रावण की शंकाकर
तोभई ४६ (अरिंदममयाक्रमेणएवसर्वविज्ञापितंपञ्चात्भवत्तत्तत्रंगुलीयकम्प्रयादेवैर्भार्षितं) हे
शत्रुनाशक मैंने क्रमकरिकै अपना सब हाल जनाय दिया पीछे जो आपकी दीन्हों मुद्रिकारहै ताको
मैंने देवीजानकी के अर्थभार्षित किया हाथ में धरिदिया ४७(तेनमांअतिविश्वस्ताचइदंवचनंअब्रवीत्
हनुमत्दिवानिशम्पीड्यमानायथादृष्टास्मि) तिसमुद्रिका करिकै मेरेमें अत्यन्त विश्वास राखि पुनः
यह वचन बोलती भई हे हनुमन् दिनौराति दुःखपीडित जैसे देखेउहैं मोको ४८ (राक्षसीनांतर्जनैः
तत्सर्वैराघवेकथयनयाउक्तंदेवित्वत्चिन्तापरिनिष्ठितःरामःअपि) राक्षसिनको तर्जन(ताड़न)डरपाव
नादि करिकै जो दुःख देखेउहैं सो सब रघुनंदन के अर्थ कहेउ इतिसुनि तब मैंने कहा कि हे देवि
तुम्हारी चिन्तामें बूड़े रघुनंदन भी हैं ४९ ॥

परिशोचत्यहोरात्रंत्वद्वार्तानाधिगम्यसः॥इदानीमेवगत्वाहंस्थितिंरामातेब्रुवे ५०
रामःश्रवणमात्रेणसुग्रीवेणसलक्ष्मणः ॥ वानरानीकपैःसार्द्धमागमिष्यतितेत्तिक
म् ५१ रात्रणंसकुलंहत्वानेप्यतित्वांस्वकंपुरम् ॥ अभिज्ञांदेहिमेदेवियथामांवि
श्वसेद्विभुः ५२ इत्युक्तासाशिरोरत्नचूडापाशेस्थितंप्रियम् ॥ दत्त्वाकाकेनयद्वृत्तं
चित्रकूटगिरौपुरा ५३ तदप्याहाश्रुपूर्णाक्षीकुशलंब्रूहिराघवम् ॥ लक्ष्मणंब्रूहिमे
किंचिदुरुक्तंभाषितंपुरा ५४ तत्क्षमस्वाज्ञभायेनभाषितंकुलनंदन ॥ तारयेन्मां
यथारामस्तथाकुरुकृपान्वितः ५५ ॥

(त्वत्त्वार्तानाधिगम्यसः अहोरात्रंपरिशोचतिइदानींएवअहंगत्वातेस्थितिंरामायब्रुवे) हे मातः
आपकीवार्ताभली प्रकार नहीं जानते हैं ताते सो रघुनंदन दिनौराति शोचाकरते हैं अबमें जाताहों
तुम्हारे इहां रहनेको सबहाल रघुनंदन के अर्थ जायकै सुनाइहों ५० (श्रवणमात्रेणरामःसलक्ष्मणः
वानरानीकपैःसार्द्धसुग्रीवेणतेअतिकंआगमिष्यति) तुम्हारा हालसुनतेही रघुनंदन सहित लक्ष्मण
वानरी सेनासेनापतिन करिकै सहित सुग्रीव सहित प्रभुतुम्हारे समीपअर्थात् लंकाको आवहिगे ५१
(सकुलंरावणंहत्वात्वांस्वकंपुरन्नेप्यति देविमेअभिज्ञांदेहियथाविभुःमांविश्वसेत्) सहित परिवार
रावण को मारिकै तब तुमको अपनेपुर अयोध्या जीको लवाय लै जायगे अब हे देवि मोको कुछ
आपनी चिह्न दीजिये जिसमें रघुनंदन प्रभुमेरे में विश्वास करें ५२ (इतिउक्तासाचूडापाशेस्थितं

प्रियम्शिरोरत्नदत्त्वापुराचित्रकूटगिरौकाकेनयत्तृत्तं) ऐसा मैंने कहातब सो जानकी जी अपनेजूड़ा के पाद्वर्भागम स्थित प्रियजो चूड़ामणि ताहि उतारि दैकै पुनःपूर्वकाल चित्रकूट में जो जयंतकाक करिकै जो पायें मैं क्षतभया सो वृत्तांत ५३ (तत्प्रपिआहअश्रुपूर्णाक्षीराघवंकुशलंब्रूहिलक्ष्मणंब्रूहि पुरामे किंचित्तदुरुक्तंभाषितं) काकको वृत्तांत सो निश्चय करिकहिआशुबहत नेत्रनयुत बोली कि रघुनंदन प्रति मेरीकुशल कहेउ पुनः लक्ष्मण प्रति कहेउ उनको पूर्वमें कछु दुष्ट वचन कहेउ हैं ५४(कुलनंदनअज्ञभावेनभाषितंतत्तन्मस्वयथामारामःतारयन्तथाकृपान्वितःकुरु) लक्ष्मणप्रतिकहेउ हे कुलनंदन अज्ञानता करिकै जो मैंने कुवचन कहाहै सो क्षमाकरौ पुनः जिसभांति मोको रघुनंदन दुःखते उबारैं तैसेही कृपासमेत तुमभी मेरा उबारकरौ ५५ ॥

इत्युक्त्वारुदतीसीतादुःखेनमहतावृता ॥ मयाप्याश्वासितारामवदतासर्वमेवते ५६ ततःप्रस्थापितोरामत्वत्समीपमिहागतः ॥ तदागमनवेलायामशोकवानिकां प्रियाम् ५७ उत्पाट्यराक्षसांस्तत्रबहून्हत्वाक्षणादहम् ॥ रावणस्यसुतंहत्वारारवणेनाभिभाष्यच ५८ लंकामशेषतोदग्ध्वापुनरप्यगमंक्षणात् ॥ श्रुत्वाहनूमतोवाक्यंरामोत्यंतप्रहृष्टधीः ५९ हनूमांस्तेकृतंकार्यंदेवैरपिसुदुष्करम् ॥ उपकारंनपश्यामितवप्रत्युपकारिणः ६० इदानींतेप्रयच्छामिसर्वस्वंमममारुते ॥ इत्यालिङ्ग्यसमाकृष्यगाढंवानरपुंगवम् ६१ ॥

(इतिउक्त्वारुदतीसीतामहतादुःखेनवृत्तारामतंसर्वेएववदतामयापिआश्वासिता) ऐसा कहिकै रोवती हुई सीताबडेदुःख करिकै घेरी हुई हे रघुनंदन आप प्रति कहने हेत सब वृत्तांत कहती हुई जो सीता तिनको मैंने समुभाय कै सावधान किया ५६ (ततःरामत्वत्समीपंप्रस्थापितःइहागतःगमनवेलायांतदाप्रियाम्अशोकवानिकाम्) तदनंतर हेरघुनंदन आप के समीप आवने हेत जानकी जी मोको बिदाकिया इहांको आवने हेत चलत की बेला में तब रावण की परम प्रिय जो अशोकवाटि कारहै ५७ (उत्पाट्यतत्रअहंक्षणात्बहून्राक्षसांहत्वारारवणस्यसुतंहत्वारारवणेनअभिभाष्य) उस अशोकवनवृक्षों को उचारि तहां रावणके पठाये हुये मैं क्षणैभरे में बहुते राक्षसोंको मारापुनःरावण को पुत्रअक्षःहुमार आयाताको मारा पुनःरावण से वार्ता करिकै ५८ (अशेषतःलंकांदग्ध्वापुनःअपि क्षणात्अगममहनूमतःवाक्यश्रुत्वारामःअत्यंतप्रहृष्टधीः) पुनःसंपूर्ण लंकापुरीको भस्म करिकै पुनः क्षणैभरे में इहां को आगया इत्यादि हनुमान् के वचन सुनिकै रघुनाथजी अत्यंत प्रसन्न हवैं बोलते भये ५९ (हनूमान् देवैःअपिसुदुष्करमृतेकार्यं कृतंतवप्रत्युपकारिणःउपकारंनपदयामि) हे हनुमन् जो देवतन करिकै होना दुर्घट रहै सो तुम कार्य किया ताते जैसा तुमने मेरा उपकारकिया ताकी समान उपकार मैं नहीं देखताहौं जो वै तुमते उन्नत होउं ६० (मारुतेममसर्वस्वंइदानींते प्रयच्छामि इतिसमाकृष्यवानरपुंगवमगाढंआलिङ्ग्य) हे पवनपुत्र मेरेजो कछु है सो सब याहीसमय में मैंतोको देताहौं ऐसाकहि रघुनंदन हाथ गहि खैंचि वानरन में श्रेष्ठ जो हनुमान् तिनईदृढकरि हृदयमें लगाये ६१ ॥

सार्द्रनेत्रोरघुश्रेष्ठःपरांप्रीतिमवापसः॥ हनूमंतमुवाचेदंराघवोभक्तवत्सलः६२परि रंभोहिमेलोकेदुर्लभःपरमात्मनः ॥ अतस्त्वंममभक्तोसिप्रियोसिहरिपुंगव ६३

यत्पादपद्मयुगलंतुलसीदलाद्यैः संपूज्यविष्णुपदवीमंतुलांप्रयांति ॥ तेनैवकिं
पुनरसौपरिरब्धमूर्तीरामेणवायुतनयःकृतपुण्यपुंजः ६४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेसुन्दरकाण्डेपञ्चमः सर्गः॥५॥
सुन्दरकाण्डःसमाप्तः ॥

(परांप्रीतिअवापसः रघुश्रेष्ठःसआर्द्रनेत्रः भक्तवत्सलःराघवः हनूमंतंइदंउवाच)हनुमान्को हृदयमें लगाय तब परम प्रीति को प्राप्त भये सो रघुवंश में श्रेष्ठ सहित आशु जल सो भीजे नेत्र भक्तन पर गोवत्सवत् प्रीति है जिनके ऐसे रघुवंश नाथ हनुमान् प्रति ऐसा वचन बोलते भये ६२ (मेपरमात्मानः परिरंभःहिलोकेहिदुर्लभः अतःहरिपुंगवत्त्वममभक्तः असिप्रियःअसि) मैं जो परमात्मा हौं ताको परिरंभ अर्थात् हृदय में लगाय मिलना यह निश्चय करि लोक में जीवन को दुर्लभ है सो मेरा आर्लिगन तुम को प्राप्त भया इस कारणते हेवानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् तुम मेरे परम भक्तहौ भाव मेरे आर्लिगन करनेते जन्म जन्मांतर के कर्मनाश भये ताते देहाभिमान जीवबुद्धी नाश होगई अब शुद्ध आत्मरूप ते परम अनुरागी मेरे भक्त भयो ताते मोको भी परम प्रिय है जाते भयो ६३ (तुलसीदलाद्यैर्यत्पाद पद्मयुगलंसंपूज्यअतुलां विष्णुपदवींप्रयांति तेनएवरामेणपरिरब्ध मूर्तीवायुतनयः कृतपुण्यपुंजःपुनःअसौकिं) जलफल फूल तुलसी दलादिकों करिकै मनुष्य जिनभगवत्के पदक्रमल दोउन को पूजन करिकै अतुल है माहात्म्य जाको ऐसी विष्णु पदवी भगवान्के समीप को जाते हैं तिनहीं निश्चय करि रघुनन्दन करिकै आर्लिगन कियागया सर्वांग जिसको सो पवननन्दन हनुमान् कियागया पुण्य समूह अर्थात् परम उत्तम भक्त भया तौ पुनः यह क्याकहना है ६४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवह्मभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणेसुन्दरकाण्डेपञ्चमःप्रकाशः ५ समाप्तः ॥



अथ अध्यात्मरामायण लंकाकाण्ड सटीक ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ यथावद्भाषितंवाक्यंश्रुत्वारामोहनूमतः ॥ उवाचानन्तरंवा
क्यंहर्षेणमहतावृतः १ कार्यकृतंहनुमतादेवैरपिसुदुष्करम् ॥ मनसापियदन्येन
स्मर्तुंशक्यंनभूतले २ शतयोजनविस्तीर्णलंघयेत्कःपयोनिधिम् ॥ लंकांचरक्षसै
र्गुप्तांकोवाधर्षयितुंश्रमः३ भृत्यकार्यंहनुमताकृतंसर्वमशेषतः ॥ सुग्रीवस्येदृशोलोके
नभूतो न भविष्यति ४ अहंचरघुवंशश्चलक्ष्मणश्चकपीश्वरः ॥ जानक्यादर्शनेना
द्यरक्षिताःस्मोहनूमता ५ सर्वथासुकृतंकार्यंजानक्याःपरिमार्गणम् ॥ समुद्रंमन
सास्मृत्वासीदतीवमनोमम ६ ॥

सवैया ॥ सुनिहाल प्रशंसि प्रभू हनुमन्तहि लंकपुरी कलिप्रणकये । हनुमन्तकहे अति दुर्गपुरी
बहुकंचनधाम अनूपनये ॥ गजवाजि सवीरनद्वारखडे सुनिसानंद तत्र पयानकये । तुरतैकपिराजस
वानरसानुज राघवसागरपासगये ॥ (यथावत्भाषितंहनुमतः वाक्यंश्रुत्वारामःमहताहर्षेणावृतःअनं
तरंवाक्यंउवाच) अब शिवजी बोले हे गिरिजा जैसा कछुभया है सो यथार्थकहे इत्यादि हनुमान्के
बचनसुनिकै रघुनन्दन बड़ेआनन्दकरिकै मग्नहै तदनन्तर बचन बोलतेभये १ (देवैःअपिसुदुष्करम्
कार्यंहनुमताकृतंयत्अन्येनमनसाअपिस्मर्तुंभूतलेनशक्यं) देवतनकरिकै भी करनेको दुर्घटहै सो
कार्य हनुमाननेकिये जो सुर नरादि औरनको मनकरिकै भी स्मरणकरिवेको भूतल में अशक्य है भाव
लोक में ऐसा समर्थ कोऊ नहीं है २ (शतयोजनविस्तीर्णपयोनिधिकःलंघयेत् चरक्षसैःगुप्तांलंकां
धर्षयितुंकःवाक्षमः) सौयोजन विस्तार अर्थात् चारिसौ कोस चौड़े समुद्रको और कौन नाधिसकै पुनः
महावली राक्षसोंकरिकै रक्षित लंकाको सेवायहनुमान् दूसराकौन नाशकरिवेको समर्थ है ३ (सुग्री
वस्यभृत्यकार्यमशेषतःसर्वंहनुमताकृतंलोकेईदृशः नभूतो न भविष्यति) सुग्रीवकी सेवाकाईको कार्य
जैसा उचितरहै तामें बाकी नहीं राखे सब हनुमानने किया ताते लोक में इन हनुमान्के समान
सेवक न भयाहै न होनहारहै ४ (जानक्याःदर्शनेनअद्यहनुमताअहंचलक्ष्मणःचरघुवंशःचकपीश्वरः
रक्षिताःस्मः) जानकीको देखि आवनेकरिकै आजु हनुमानने हमको पुनः लक्ष्मण तथा रघुवंशभरि
पुनः सुग्रीव इत्यादि सबको रक्षाकीन्हे हैं ५ (जानक्याःपरिमार्गणंसर्वथासुकृतंकार्यंसमुद्रंमनसास्मृत्वा
मममनःसीदतीव) जानकीको ढूँढन यह एक कार्य करने में सर्व प्रकार सुकृत कार्यकिये अब समुद्र
को मनकरिकै सुधिकीन्हे मेरा मनदुखितहोताहै ६ ॥

कथंनक्रभषाकीर्णसमुद्रंशतयोजनम् ॥ लंघयित्वारिपुंहन्यांकथंद्रक्ष्यामिजानकी
म् ७ श्रुत्वातुरामवचनं सुग्रीवः प्राहराघवम् ॥ समुद्रंलंघयिष्यामोमहानक्रभषा
कुलम् ८ लंकांचविधमिष्यामोहनिष्यामोऽद्यरावणम् ॥ चिंतांत्यजरघुश्रेष्ठचिं
ताकार्यविनाशिनी ९ एतान्पश्यमहासत्वान्शूरान्वानरपुंगवान् ॥ त्वत्प्रियार्थं
समुद्युक्तान्प्रवेष्टुमपिपावकम् १० समुद्रतरणेषुबुद्धिकुरुष्वप्रथमतः ॥ दृष्ट्वालंकांद
शग्रीवोहतइत्येवमन्महे ११ नहिपश्याम्यहंकंचित्त्रिषुलोकेषुराघव ॥ गृहीतध
नुषोयस्तेतिष्ठेदभिमुखोरणे १२ ॥

(नक्रभषाकीर्णशतयोजनंसमुद्रंकथंलंघयित्वारिपुंहन्यांकथंजानकीमद्रक्ष्यामि) नाक मत्स्यादिसमूह
हैं परिपूर्णजामें ऐसा सौयोजन विस्तार समुद्रको कैसे नाँधिके शत्रु रावणको मारि कैसे जानकीको
देखेंगे इतिमाधुर्य लीलामें नरनाट्यहै ७ (रामवचनंश्रुत्वातुसुग्रीवःराघवंप्राहमहानक्रभषाकुलंसमुद्रं
लंघयिष्यामः) अधीरता सहित रघुनन्दनके वचन सुनि पुनः सुग्रीवधीर्यदायक वचन रघुनन्दन
प्रतिबोले हे महाराज आपधैर्य राखिये महाभारी नाक मत्स्यादि परिपूर्ण समुद्रको हमसब वानर
आपने बलकरिकैनाँधिजायेंगे ८ (लंकाविधमिष्यामःवअद्यरावणंहनिष्यामःरघुश्रेष्ठचिंतांत्यजचिंताकार्य
विनाशिनी) लंका गढतोरि देइंगे पुनः अभी चलिकै रावणको मारेंगे ताते हे रघुवंशमें उत्तम भावकु-
लकी रीति सँभारिकै चिंताको त्यागकीजिये क्योंकि धैर्यकी प्रतिकूल यह चिंतासब कार्य नाशकरती
है ९ (महासत्वान्शूरान् वानर पुंगवान् एतान् पश्यत्वत्प्रियार्थपावकंमपिप्रवेष्टुममुद्युक्तान्) हे रघु-
नन्दन महावीर्यवंत शूरवानरोंमें श्रेष्ठ हनुमान् अंगदादिकोंको देखिये आपके प्रियकार्य करनेको अग्नि
में प्रवेशकरनेको भी आनंद युक्तहैं भावनिशंक अग्निमें पौंठि जायसक्तेहैं १० (प्रथमंसमुद्रतरणेषुबुद्धिं
कुरुष्वततःलंकांदृष्ट्वादशग्रीवःहतइति एवमन्महे) हे रघुनन्दन अब प्रथमतः समुद्रके पारजानेकी
बुद्धि विचार करना चाहिये तदनन्तर जब लंकापुरको देखा भाव घेरिलिया तब रावणतौ मारही
पराहै यह निश्चयकरि मेरे मनमें आताहै ११ (राघवःधनुषःगृहीतत्रिषुलोकेषुअहंकंचित्नहिपश्यामि
यःतेअभिमुखःरणेतिष्ठेत्) हे रघुनन्दन जब आप धनुष चढाय हाथमेंलै बाणसंधानोगे तब ऐसाती-
निहूँलोकनमें मैं किसीको नहीं देखताहूँ जो आपके सन्मुखरणमें खड़ाहोइ इतिरावणमरापराहै १२ ॥

सर्वथानोजयोरामभविष्यतिनसंशयः ॥ निमित्तानिचपश्यामितथाभूतानिसर्व
शः १३ सुग्रीववचनंश्रुत्वाभक्तिवीर्यसमन्वितम् ॥ अंगीकृत्याब्रवीद्रामोहनूमंतं
पुरःस्थितम् १४ येनकेनप्रकारेणलंघयामोमहार्णवम् ॥ लंकास्वरूपमेवब्रूहिदुःसा
ध्येदेवदानवैः १५ ज्ञात्वातस्यप्रतीकारंकरिष्यामिकपीड्वर ॥ श्रुत्वारामस्यवच
नंहनूमान्विनयान्वितः १६ उवाचप्रांजलिर्देवयथादृष्टंब्रवीमि ते ॥ लंकादिव्यापु
रीदेवत्रिकूटशिखरेस्थिता १७ स्वर्णप्राकारसहितास्वर्णाट्टालकसंयुता ॥ परि
खाभिःपरिवृतापूर्णाभिर्निर्मलोदकैः १८ ॥

(रामसर्वथानः जयःभविष्यतिसंशयःनःचनिमित्तानिपश्यामितथासर्वशःभूतानि) हे रघुनन्दन
आपके अनुचरहैं ताते सब प्रकार से हमारीही जयहोइगी भाव राक्षस सब मारेंजायेंगे पुनः अनेक
भांति शकुनादि देखतेहैं ताही प्रकारसबकार्य होनहारहैं भाव सबग मारिजानकी सहितलौटेंगे १३

(भक्तिवीर्यसमन्वितसुग्रीववचनंश्रुत्वारामः भंगकृत्यपुरःस्थितंहनूमंतंभववीत्) सेवक भावकी प्रीतिमें पराक्रम युक्तऐसे सुग्रीव के वचन सुनि रघुनन्दन भंगीकार करि पुनः आगे बैठे हुये जो हनुमान् तिन प्रति बोलतेभये १४ (येनकेनप्रकारेणमहार्णवम्लंघयामःदेवदानवैःदु साध्यलंकास्वरूपमेब्रूहि) प्रभु बोले हे हनुमान् जिस किसीउपाय करिके बनेगो ता विधि करि महासागरके पार जावैकरेंगे भव जो देव दैत्यन करिके युद्धमेंजीतने योग्य नहीं तिस लंकागढ़को स्वरूप हमसों कहिये १५ (कपीदिवरज्ञात्वातस्यप्रतीकारंकरिष्यामिरामस्यवचनंश्रुत्वाविनयान्वितः हनुमान्) हनुमान् प्रति प्रभुबोले हे वानरनमें उत्तम जबलंकाको स्वरूपजानिलेवें तब ताके नाशको उपाय करेंगे इति रघुनन्दन को वचनसुनिके नम्रता युक्तहनुमान् सन्मुखहैकै १६ (प्रांजलिःउवाचदेवयथा दृष्टंतेब्रवीमिदेवत्रिकूटशिखरेस्थितालंकादिव्यापुरी)हाथजोरिके हनुमान् बोलते भये हे देव जैसामें देखा है तैसा आप प्रति कहताहों हे रघुनाथजी त्रिकूट पर्वतके शिखरपर बसीहै लंकादिव्यपुरीहै देवलोक तुल्यविचित्रशोभामयवनीहै १७ (निर्मलोदकैः पूर्णाभिः परिखाभिः परिवृतास्वर्णप्राकार सहिता स्वर्णभट्टालकसंयुता) निर्मल जल करिकेपरिपूर्ण अगाधखावां करिके सब दिशोंते पुरी घेरीहै सोनेको धुस रौनी सब दिशि बनी हैं सहित अटारी दिवार सोनेके सब मंदिर बनेहैं १८ ॥

नानोपवनशोभाढ्यादिव्यवापीभिरावृता ॥ गृहैर्विचित्रशोभाढ्यैर्मणिस्तम्भमयैः

शुभैः १९ पश्चिमद्वारमासाद्यगजवाहाःसहस्रशः ॥ उत्तरेद्वारितिष्ठंतिसाश्ववाहाःसप्ततयः २० तिष्ठंत्यर्बुदसंख्याकाःप्राच्यामपितथैवच ॥ रक्षिणोराक्षसावीरा द्वारंदक्षिणमाश्रिताः २१ मध्यक्षेप्यसंख्यातागजाश्वरथपत्तयः॥रक्षन्तिसर्वदा लंकांनानास्त्रकुशलाःप्रभो२२ संक्रमैर्विविधैर्लंकाशतघ्नीभिश्चसंयुता ॥ एवंस्थितेपिदेवेशशृणुमेतत्रचेष्टितम् २३ दशाननवलौघस्यचतुर्थीशोमयाहतः ॥ दग्ध्वा लंकांपुरीस्वर्णप्रासादोधर्षितोमया २४ ॥

(मणिस्तम्भमयैःशुभैःगृहैःविचित्रशोभाढ्यैःनानाउपवनशोभाढ्यादिव्यवापीभिःआवृता) मणि न के ग्वम्भन करिके युक्त मंगलीक मन्दिरन करिके विचित्र शोभाकरिके शोभितपुरीमें अनेकप्रकार के उपवन शोभायुक्त दिव्यवावलिन करिके पुरघेरा है सबैदिशि बनी हैं १९ (पश्चिमद्वारंसहस्रशः गजवाहाःआसाद्यसप्ततयःसश्ववाहाःउत्तरेद्वारितिष्ठंति) पुरके पश्चिम द्वारपर हजारन राक्षस हाथिनपर सवार प्राप्त रहतेहैं पुनः सहित पैदर सेना सहित घोड़ोंपर सवार उत्तर द्वारपर खड़े रहते हैं २० (अर्बुदसंख्याकाःप्राच्यामपितिष्ठंतितथाएवराक्षसाःवीराः रक्षिणःदक्षिणद्वारंआश्रिताः) अर्बगन्ती में राक्षसवीर पूर्वद्वारपर भी टिके रहते हैं पुनः ताही भांति निश्चय करि एक अर्ब राक्षस वरि रक्षा करनेवाले दक्षिणद्वार के आश्रित अर्थात् सदैव टिकेरहते हैं २१ (प्रभोमध्यक्षेअपिगज अश्वरथपत्तयःनानाअस्त्रकुशलाःअसंख्यातासर्वदालंकारक्षति) हेप्रभो राजद्वार के बीचकी डेउट्टीपर भी हाथी घोड़े रथोंपर सवार तथा पैदरसेना अनेकप्रकार हथियार धारण किहे युद्धकला में प्रवीन असंख्यनवीर सदा लंकाकी रक्षाकरते हैं २२ (लंकासंक्रमैःविविधैःचशतघ्नीभिःसंयुताएवंस्थितेअपि देवेशतत्रमेचेष्टितंशृणु) धुसधुंघुटबुर्जन के बीच है लंकाजाने की माँग अनेकप्रकार करिके दुर्घट हैं तिनके भी सन्मुख बुर्जनपर अनेकन तोपें लगी हैं तिनकरिके सहित अधिकदुर्घट हैं इसप्रकार दुर्घट भी हैं परन्तु हे देवेशतहां मेरा किया जो व्यापार है, सो सुनिये २३ (स्वर्णप्रासादःमयाधर्षितालं

कांपुरीदग्ध्वादशाननबलमोघस्यचतुर्थांशःमयाहतः) अशोकवनमें सोनेको मंदिर रहा सो मैंने तोरि डारा लंकापुरीको भस्मकिया रावण की जो समूह सेनारही तामें चौथाई मैंने नाश करिदिया २४ ॥

शतघ्न्यःसंक्रमाश्चैवनाशितामेरघूत्तम ॥ देवत्वदर्शनादेवलंकाभस्मीकृतांभवे
त् २५ प्रस्थानंकुरुदेवेशगच्छामोलवणांबुधेः ॥ तीरंसहमहावीरैर्वानरौघैः समंत
तः २६ श्रुत्वाहनूमतोवाक्यमुवाचरघुनंदनः ॥ सुग्रीवसैनिकान्सर्वान्प्रस्थानाया
भिनोदय २७ इदानीमेवविजयोमुहूर्तःपरिवर्तते ॥ अस्मिन्मुहूर्तेगत्वाहंलंकांरा
क्षससंकुलम् २८ सप्राकारांसुदुर्ध्वानाशयामिसरावणाम् ॥ आनेष्यामिचसी
तांमेदक्षिणाक्षिस्फुरत्यधः २९ प्रयातुवाहिनीसर्वावानराणांतरस्विनाम् ॥ रक्षंतु
यूथपाःसेनामग्रेष्टेचपार्श्वयोः ३० ॥

(शतघ्न्यःचएवसंक्रमाःमेनाशितारघूत्तमदेवलंकात्वत्दर्शनात्एवभस्मीकृताभेवत्) तोपै पुनः
विषममार्गें सोतौ फोरि तोरि मैं नाशकरि दिया भाव अबलंकाजाने हेत सुगंम मार्गें बहुती होगई हे
रघूत्तम देव अबजो लंकारही सो आपको देखतही नाश है जायगी २५ (देवेशप्रस्थानंकुरुमहावीरैः
वानरौघैःसमंततःसहलवणांबुधेःतीरंगच्छामः) हे देवन के देव रघुनाथजी अब यात्राकीजै महाबली
वीरजो वानर समूह हैं तिनसब करिकै सहित लवण समुद्रके तीर को हमलोग चलेंगे २६ (हनूमतः
वाक्यंश्रुत्वारघुनंदनःउवाचसुग्रीवप्रस्थानायसैनिकान्सर्वान्अभिनोदय) हनूमान् के वचन सुनिकै
रघुनंदन बोलते भये किहे सुग्रीव अब बिलम्ब ते क्या प्रयोजन है लंकाको चलने अर्थ यावत् सेना
पती हैं तिन सबन को आज्ञा करिये २७ (विजयःमुहूर्तःइदानींएवपरिवर्ततेअस्मिन्मुहूर्तेअहंगत्वा
राक्षससंकुलाम्लंकां) पौषरुष्ण अष्टिमी मध्याह्नकाल अभिजित्वेला उत्तरा नक्षत्रग्यारहों चंद्र
बली वामें युद्धार्थ शुभदिगद्वारी मकरलग्न इति विजय मुहूर्त इसी समय में वर्तमान है इसी मुहूर्त
में मैं यात्रा करौंगो तो राक्षसों करिकै परिपूर्ण जो लंका है २८ (सुदुर्ध्वसप्राकारांसरावणांनाशया
मिचसीतांआनेष्यामिमेदक्षिणाक्षिस्फुरत्) जो किसी के तुरिबे योग्यनहीं तिसलंका को कोट
सहित रावण को नाश करिहैं पुनः कुशल पूर्वक सीताको लाइहैं क्योंकि मेरा दक्षिण नेत्रनीचे से
फरकिरहा है २९ (तरस्विनांवानराणांसर्वावाहिनीप्रयातुसेनामग्रेष्टेचपार्श्वयोःयूथपाःरक्षंतु) बली
वेगवंत वानरन की सब सेना व्यूहबांधि मध्यमें चलै ताके आगे पीछे दहिने बायें इति सबदिशि मैं
नल नील द्विविदजामवंतादि यूथपती रक्षाकरते चलैं ३० ॥

हनूमंतमथारुह्यगच्छाम्यग्रेऽगदंततः ॥ आरुह्यलक्ष्मणोयातुसुग्रीवत्वंमयास
ह ३१ गजोगवाक्षोगवयोमैंदोद्विविदएवच ॥ नलोनीलःसुषेणश्चजांबवांचत
थापरे ३२ सर्वेगच्छंतुसर्वत्रसेनपाःशत्रुघातिनः ॥ इत्याज्ञाप्यहरीनृरामप्रतस्थे
सहलक्ष्मणः ३३ सुग्रीवसहितोहर्षात्सेनामध्यगतोविभुः ॥ वारणेंद्रनिभाःसर्वे
वानराःकामरूपिणः ३४ क्ष्वेलंतःपरिगर्जंतोजग्मुस्तेदक्षिणांदिशम् ॥ भक्षयंतो
ययुःसर्वेफलानिचमधूनिच ३५ ब्रुवंतोराघवस्याग्रेहनिष्यामोघरावणम् ॥ एवंच
वानरश्रेष्ठागच्छंत्यतुलविक्रमाः ३६ हरिभ्यामुह्यमानौतौशुशुभातेरघूत्तमौ ॥ न
क्षत्रैःसेवितौयद्वच्चन्द्रसूर्याविवांवरे ३७ ॥

(अथहनूमंतंभारुह्यअग्रेगच्छामिततः अंगदंभारुह्यलक्ष्मणःयातुसुग्रीवत्वंमयासह) अब हनुमान् पर सवार है आगे में चलताहों मेरे पीछे अंगदपर सवार है लक्ष्मण चलें पुनः हे सुग्रीव तुममेरे साथचलो ३१ (गजःगवाक्षःगवयःमैदःद्विविदचएव नलःनीलःसुषेणःचजाम्बवान्चतथाअपरे ३२ (शत्रुघातिनःसेनपाःसर्वेसर्वत्रगच्छंतुइतिहरिनिअज्ञाप्यरामःसहलक्ष्मणःप्रतस्थे) गजगवाक्षगवयमैद द्विवि-
दनलनीलसुषेणजावन्त तेसे भोरहू जे शत्रुन को नाशकरने वाले सेना पति हैं तेसव सेनाके आस पास सब दिशनमें रक्षा करते हुये चलें इस प्रकार बानरन को आज्ञा है कै रघुनंदन लक्ष्मण समेत चलते भये ३३ (सुग्रीवसहितःविभुःदर्पात्सेनामध्यगतःवारणेंद्रनिभाःबानराःसर्वेकामरूपिणः) सुग्रीव सहित प्रभु आनंद ते सेना के मध्यमें चले जाते हैं गजराजों के समान हैं बानर सब जैसा चहें तैसा रूप धरि लेवें ३४ (क्ष्वेलंतःपरिगर्जतःतेदक्षिणादिशमज्जग्मुःफलानिचमधूनिभक्षयंतःसर्ववयुः) पटेवाजी पैतरादि युद्ध के व्यापारकरत गर्जते हुये तेसब बानर दक्षिण दिशाको जाते हुये फल मधु आदि खाते हुये सब जाते भये ३५ (राघवस्यअग्रेब्रुवन्तःअद्यरावणमूहनिष्यामःएवंतेबानरश्रेष्ठाःअतुलविक्रमाःगच्छन्ति) रघुनंदनके आगे सब बानर ऐसाकहते हैं कि आजही चलि कै रावणको मारेंगे इस प्रकार ते बानर अतुल बलवन्त जाते हैं ३६ (हरिभ्यांउत्थमानोरघूत्तमौतौशुशुभातेयद्वत्चंद्रसूर्यौ इवअंवेरेनक्षत्रैः सेवितौ) हनुमान् अंगद जो कांधोंपर बैठारे हैं तिन दो बानरों करिके ऊंचे पर राम लक्ष्मण दोऊ सब बानरोंके मध्यमें कैसे शोभित होते हैं यथा चंद्रमातूर्यहैं ते आकाश में नक्षत्रों करिके सेवित हैं ३७ ॥

आवृत्तपृथिवीकृत्स्नांजगाममहतीचमूः ॥ प्रस्फोटयंतःपुच्छाग्रान्उद्धृतश्चपाद-
पान् ३८ शैलानारोहयंतश्चजग्मुर्मारुतवेगतः ॥ असंख्यातश्चसर्वत्रबानराः
परिपूरिताः ३९ हृष्टास्तेजग्मुरत्यर्थरामेणपरिपालिताः ॥ गताचमुर्दिवारात्रंक्व-
चिनासज्जतक्षणम् ४० काननानिविचित्राणिपश्यन्मलयसह्ययोः ॥ तेसह्यसम-
तिक्रम्यमलयंचतथागिरिम् ४१ आययुश्चानुपूर्वेणसमुद्रंभीमनिस्वनम् ॥ अब
तीर्थहनूमंतंरामःसुग्रीवसंयुतः ४२ सलिलाभ्यांसमासाद्यरामोवचनमब्रवीत् ॥ आ-
गताःस्मोवयंसर्वेसमुद्रमकरालयम् ४३ इतो गंतुमशक्यंनोनिरुपायेनबानराः ॥
अत्रसेनानिवेशोस्तुमंत्रयामोऽस्यतारणे ४४ ॥

(कृत्स्नपृथिवींआवृत्तमहतीचमूःजगामपुच्छाग्रान्प्रस्फोटयंतःचपादपान्उद्धृतः) संपूर्ण पृथिवीको घेरे हुये बड़ी भारी बानरी सेना जाती भई अपनी पूछको अग्र भाग पृथिवी पर पटकते हैं पुनः लृप्तों को उखारि उखारि धारण किहे हैं ३८ (शैलान्भारोहयंतःचमारुतवेगतःजग्मुःचअसंख्याताः बानराः सर्वत्रपरिपूरिताः) पर्वतन के ऊपर चढ़िजाते हैं पुनः पवन तुल्य बेगते जाते हुये पुनः असंख्यन भनगंतिन बानर सर्वत्र पृथिवी भरेमें परिपूर्ण भरे देखाते हैं ३९ (रामेणपरिपालिताःतेअत्यर्थहृष्टाः जग्मुःदिवारात्रंगताचमूःक्वचित्क्षणमनासज्जत) रघुनंदन करिके पालन किये गये ताते ते बानर अत्यंत आनंद युत जाते भये दिनो राति चली जाती है सेना कहीं क्षणमात्र नहीं बिभ्रामकरते भये ४० (मलयसह्ययोःविचित्राणिकाननानिपश्यन्तेसह्यंचतथामलयंगिरिम्संभतिक्रम्य) मलय अरु सह्यपर्वत के समीप जो विचित्र वनहैं तिनहिं देखत संते ते सब बानर सह्यगिरि पुनः तैसे मलय गिरि तिनहिं नाधिके ४१ (अनुपूर्वेणचभीमनिस्वनंसमुद्रंआययुःसुग्रीवसंयुतःरामःहनूमंतंअवतीर्थ)

क्रम करिकै जाते हुये पुनः भयंकर है शब्द जामें ऐसे समुद्र के समीप जाते भये तहां हनुमान् ते उतरि रघुनंदन सुग्रीव सहित ४२ (सलिलाभ्यांसंआसाद्यरामः वचनंअब्रवीत्त्वयंसर्वेमकरालयम् समुद्रंआगताःस्मः) जल समीप प्राप्त द्वै रघुनंदन वचन बोले कि अब हम सब मगरादिकों के वास को स्थान समुद्र ताके समीप आय गये ४३ (वानराःनिःउपायेनइतःगंतुनःअशक्यंअत्रसेनानिवेशः अस्तुअस्यतारणेमंत्रयामः) रघुनंदन बोले कि हे वानरों अब विना उपाय कीन्हे इहांते आगे जाने को हम लोगों को सामर्थ्य नहीं है ताते यहांहीं सेनाको विश्रामहोय तब इस समुद्र के पार जाने की सलाहकरेंगे ४४ ॥

श्रुत्वारामस्यवचनंसुग्रीवःसागरांतिके॥सेनान्यवेशयक्षिप्रंरक्षितांकपिकुञ्जरैः४५
तेपश्यंतोविषेदुस्तंसागरंभीमदर्शनम् ॥ महोन्नततरंगाढ्यंभीमनक्रभयंकरम्४६
अगाधंगगनाकारंसागरंवीक्ष्यदुःखिताः ॥ तरिष्यामःकथंधोरंसागरंवरुणालय
म् ४७ हन्तव्योस्माभिरद्यैवरावणोराक्षसाधमः ॥ इतिचिंताकुलाःसर्वेरामपाश्वे
व्यवस्थिताः४८ रामःसीतामनुस्मृत्यदुःखेनमहतावृतः ॥ विलप्यजानकींसीतां
बहुधाकार्यमानुषः ४९ अद्वितीयश्चिदात्मैकःपरमात्मासनातनः ॥ यस्तुजानाति
रामस्यस्वरूपंतत्त्वतोजनः ॥ तन्नस्पृशतिदुःखादिकिमुतानंदमव्ययम् ५० ॥

(रामस्यवचनंश्रुत्वासुग्रीवःकपिकुञ्जरैः रक्षितांसेनांसागरांतिकेक्षिप्रंन्यवेशयत्) रघुनन्दन को वचन सुनिकै सुग्रीव तब जो बड़े बली बानरों करिकै रक्षित सेनाहै ताहि समुद्र के किनारे शीघ्रही वास कराते भये ४५ (महाउन्नततरंगाढ्यं भीमनक्रभयंकरम् भीमदर्शनम् तंसागरंपश्यंतःतेविषेदुः) महा ऊँची तरंगन करिकै युक्त तथा भयकारी नक्रादि जल जंतु भरे तिन करिकै भयंकर ऐसा भयं-
कर दर्शन है जाको तिस समुद्र को देखते भये तेसब बानर विषादको प्राप्त होते भये मन भंग भया ४६ (गगनाकारं अगाधसागरंवीक्ष्यदुःखिताःवरुणालयंधोरंसागरंकथंतरिष्यामः) आकाशके तुल्य अगाध समुद्र को देखि बानर दुःखित भये विचारते हैं कि वरुण को वास स्थान भयंकर समुद्रको हम कैसे पार होवेंगे ४७ (राक्षसाधमःरावणः अद्यएवस्माभिःहंतव्यः इतिसर्वेचिंताकुलाःरामपा-
श्वेव्यवस्थिताः) राक्षसों में अधम रावण या समय में निश्चय करि हम लोगोंको मारिवेके योग्य है इस भांति सब बानर चिंता करिकै व्याकुल जाय रघुनायजीके समीप बैठते भये ४८ (बहुधा मनुषःकार्यरामःसीतामनुस्मृत्य महतादुःखेनआवृतःजानकीं सीतांविलप्य) बहुत मानुषवत् कार्य नरनाट्य करतेहैं ऐसे राम सीता को स्मरण करि बड़े दुःख करि मग्न जानकी को सीता को नाम लैकै बिलाप करते हैं ४९ (अद्वितीयःचिदात्माएकः सनातनः परमात्मा रामस्यतत्त्वतःस्वरूपयः जनःजानातितत्तुदुःखादिनस्पृशति तु अव्ययमनंदंकिमुत) जिसको दुसरिहा कोई नहीं चैतन्य आत्मा एकही परमात्मा रामके तत्त्व स्वरूप को जोजन जानताहै उस को दुःखादि नहींछुई जाता है पुनः नाश रहित आनंद रूप राम को दुःखहै यह क्या कहनाहै ५० ॥

दुःखहर्षभयक्रोधलोभमोहमदादयः ॥ अज्ञानलिंगान्येतानिकुतस्संतिचिदात्म
नि ५१ देहाभिमानिनोदुःखंनदिहस्यचिदात्मनः ॥ संप्रसादेद्वयाभावात्सुखमात्रं
हिदृश्यते ५२ बुद्ध्याद्यभावात्संशुद्धेदुःखंतन्नदृश्यते ॥ अतोदुःखादिकंसर्वबुद्धे

रेवनसंशयः ५३ रामःपरात्मापुरुषःपुराणो नित्योदितो नित्यसुखो निरीहः ॥ तथा
पिमायागुणसंगतोऽसौ सुखी वदुःखी विभाव्यते बुधैः ५४ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकाण्डे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

(दुःखहर्षभयक्रोधलोभमोह मददयः एतानि अज्ञानलिंगानि चिदात्मनिकुतः संति) हानिवियो
रुजादि जो दुःख धनस्त्री पुत्रादि प्राप्ति जो हर्ष दण्डते वचने की चाह भय दण्ड देने की चाह क्रोध
धनादि चाह लोभ चैतन्यता रहित मोह धनादि ते हर्ष बढावना मद इत्यादिक ये सब अज्ञान के
चिह्न हैं ते चैतन्य रूप राम में कैसे उत्पन्न हो सके हैं ५१ (दुःखं देहाभिमानिनः भवेदस्य चिदात्मनः
न संप्रसादे दयाभावात्सुखमात्रं हि दृश्यते) यावत् दुःख है सो देहाभिमानिन को होता है यथा धन
धाम स्त्री पुत्रादि मेरे हैं इत्यादि वियोग भये अवश्य ही दुःख होयगो भरु जो देहाभिमान रहित
चैतन्य आत्म रूप में दुःख नहीं होता है यथा सुपुत्र अवस्था को प्राप्त होत संते दूसरा नहीं देखाता है
केवल सुख मात्र ही देख परता है ५२ (बुद्धिमादिभवात् तसंशुद्धेतत्र दुःखं न दृश्यते अतः दुःखादिकं
सर्वबुद्धेः एव संशयः) परिपूर्ण आनंद में बुद्ध्यादिकों को अभाव होने ते शुद्धात्म रूप में दुःख नहीं
देखि परता है ताते दुःखादि सबको कारण बुद्धी है निश्चय करि यामें संशय नहीं है ५३ (रामः प
रमात्मा पुरुषः पुराणः) रघुनन्दन प्रकृतिते पर शुद्ध आत्मरूप मायाके प्रेरक पुरुष पुराण सबके आदि
कारण हैं (नित्य उदितः नित्य सुखः निरीहः) नित्यस्वयं प्रकाशमान सदा अखण्ड आनंद रूप क्षी-
नपीनादि चेष्टा रहित (तथा पिमाया गुणसंगतः असौ अबुधैः सुखी वदुःखी विभाव्यते) ताहू पर तस
रजतमादि माया गुण संगते ये राज कुमार रूप रघुनन्दन माधुर्य में अज्ञानी पुरुषों करि कैवल्यादि
में सुखी की नाई वन में जानकी वियोग में दुःखी की नाई कल्पना किये गये ५४ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागत वैजनाथ
विरचिते अध्यात्मभूषणे युद्धकाण्डे प्रथमः प्रकाशः १ ॥

लंकायां रावणो दृष्ट्वा कृतं कर्म हनूमता ॥ दुष्करं देवतैर्वापि द्विष्यार्किचिदवाङ्मुखः १
आहूय मंत्रिणः सर्वानिदं वचनमब्रवीत् ॥ हनूमता कृतं कर्म भवद्भिर्दृष्टमेव तत् २ प्रवि
श्य लंकां दुर्धर्षा दृष्ट्वा सीतां दुरासदाम् ॥ हत्वा चराक्षसान् वीरानक्षमं दोदरी सुतम् ३
दग्ध्वा लंकां मशेषेण लंघयित्वा च सागरम् ॥ युष्मान् सर्वानातिक्रम्य स्वस्थो गात्पुनरे
वसः ४ किं कर्तव्यमितोऽस्माभिर्युगं मंत्रविशारदाः ॥ मंत्रयध्वं प्रयत्नेन यत्कृतं मे हि
तं भवेत् ५ रावणस्य वचः श्रुत्वा राक्षसास्ते तथा ब्रुवन् ॥ देवशंका कुतोरामात् तव लो
कजितोरणो ६ ॥

सवेया ॥ वनतोरि सबै पुरजारि जहाँ हनुमान निशाचर वीरदले । लखिरावण मंत्रिनबोलि तहीं
तिन पूछत भो शुभमंत्र भले ॥ हितबंधु कहन सुहान सुवाच कुवाच कहै खल क्रोधजले । गतव्यो मसि-
खावन देत तही सुबिभीषण राघवपास चले ॥ (देवतैः वापि दुष्करं लंकायां हनूमता कृतं कर्म दृष्ट्वा रावणः
किंचित् द्विष्य भवाङ्मुखः) शिवजी कहत हे गिरिजा जो देवतों करि कै दुर्घट रहे सो लंका विषे हनुमा-

नने कर्म किया सो देखि रावण कछुलज्जा करि कछु बोलानहीं मुख नीचे किहे बैठारहा १ (सर्वान् मंत्रिणःआहूयइदंवचनंअब्रवीत्हनुमताकृतंकर्मतत्भवद्भिःदृष्टंएव) सब मंत्रिनको बुलाय, तिनसों रावण ऐसा वचन बोला कि हनुमान् ने किया जो कम सो तौ तुमलोगों करिकै देखै गया है २ (दुर्धर्पांलंकांप्रविश्यदुरासदामूलांतांदृष्ट्वाराक्षसान्वीरान्चमंदोदरीसुतंअशंहत्वा) जो किसी के प्रवेश करने योग्य नहीं तिसलंका में हनुमान् प्रवेश करि पुनः जाके पास कोई न जायसकै तिस सीताको देखि अरु राक्षस वीरन को पुनः मंदोदरी को पुत्रअक्षःकुमार इत्यादि को मारा ३ (अशेषेणलंकां दग्ध्वाचसागरमूलंघयित्वायुष्मान् सर्वान्अतिक्रम्यसःपुनःएवस्वस्थःऽगात्) संपूर्णलंकाको भस्म किया पुनः समुद्रको नाधिगया तुम सबको निदरि सो हनुमान् कुशल सहित पुनः भी चलागया ४ (इतः अस्माभिःकिंकर्तव्यंयूयंमंत्रविशारदःप्रयत्नेनमंत्रयध्वंयत्कृतंमेहितंभवेत्) इस के उपरांत हमलोगों करिकै क्या करना चाहिये सो कहौ तुमसब सलाह में प्रवीणहौ ताते यत्न पूर्वक ऐसी सलाह करि कहौ जोकिहे ते मेरा हित होय ५ (रावणस्यवचःश्रुत्वातथाराक्षसाःअब्रुवन्देवरणेतवलोकजितः रामात्कुतःशंका) रावण के बचन सुनि तैसेही सब राक्षस बोले कि हे देव रण भूमि में आप सब लोक जीति लिया तौ मानुष मात्र रामते रणमें क्या शंका है ६ ॥

इन्द्रस्तुबध्वानिक्षितःपुत्रेणतवपत्तने ॥ जित्वाकुवेरमानीयपुष्पकंभुज्यतेत्वया ७
यमोजितःकालदंडाद्वयंनभूतवप्रभो॥वरुणोहुंकृतेनैवजितःसर्वेपिराक्षसाःमयो
महासुरोभीत्याकन्यांदत्वास्वयंतव ॥ त्वद्भशेवर्ततेद्यापिकिमुतान्येमहासुराः ६
हनुमद्वर्षणंयत्तुतदवज्ञाकृतंचनः॥वानरोयंकिमस्माकमस्मिन्पौरुषदर्शने १० इत्यु
पेक्षितमस्माभिर्धर्षणंतेनकिंभवत् ॥ वयंप्रमत्ताःकिंतेनवंचिताःस्मोहनुमता ११
यानीमोयदितंसर्वेकथंजीवनगमिष्यति ॥ आज्ञापयजगत्कृत्स्नमवानरममा
नुषम् १२ ॥

(निक्षितःपुत्रेणइन्द्रःबध्वातवपत्तनेतुकुवेरंजित्वापुष्पकंमानीयत्वयाभुज्यते) हे महाराज आपकी आज्ञाते पुत्र मेघनाथने इन्द्रको बांधिलाया तुम्हारे पुर में डारिदिया आप कुवेरको जीति पुष्पकविमान छीनिलाये सो आपकरिकै भोगकिया जाताहै ७ (प्रभोयमःजितःतवकालदण्डात् भयंनअभूत्हुंरुतेनवरुणःएवजितःराक्षसाःअपिसर्वे) हे प्रभो जब यमराजको जीता तब आपको कालदंडते भय न भई भाव तब मानुषते क्या भयहै तथा हुंकारकरिकै वरुणको भी जीतिलिया अरु राक्षसभी सब आपके आधीन हैं ८ (महासुरःमयःभीत्यास्वयंकन्यांतवदत्वाअद्यापित्वत्त्वशेवर्तते अन्येमहासुराः किमुत) महाअसुर मयनामेदानवडरकरिकै आपनीकन्या मंदोदरीको लाय तुमको बिवाहिदिया सो तौ अबतक तुम्हारे वशमेंहै बाकी और जो महाअसुर तिनकी क्या गनती है काहेमेंहै ९ (तुयत्हनुमत्धर्षणंतत्चनःअवज्ञाकृतंचयंवानरःअस्मिन्पौरुषदर्शनेअस्माकंकिं) पुनः जो हनुमान् करिकै हमार तिरस्कारभया सो तौ हमलोग उसको अनादरकिया वाको तुच्छमानिलिया कि यह बानर पशुजाति इसमें बलदेखानेसे हमको कौनबड़ाई है इस हमारी ढीलमें उसका सब कार्य बनगया १० (इति अस्माभिःउपेक्षितंतेनकिंधर्षणंभवेत् वयंप्रमत्ताःहनुमतावंचिताः स्मः तेनकिं) यह तुच्छहै ऐसा हम लोगोंने अनादरकरिदिया तब उसने जो कुछ बिगारिडारा तिसकरिकै हमारा क्या तिरस्कारभया पशु बिचारि हमलोग भूलेरहे ताते हनुमानने हमको छलिलिया पुर में अग्निलगाय भागिगया

तिसकारिकै भय क्या है ११ (यदि तं सर्वे जानीमः कथं जीवन्गमिष्यति आज्ञापय जगत्कृत्स्नं भवानरं
अमानुषं कृत्वा) जो ताको हम सब जानते कि यह ऐसा बली है तो पूर्वही मारि डारते जीवत कैसे
जाने पावता परन्तु जो अब आज्ञा दीजिये तो सम्पूर्ण जगत्को विना वानर विना मानुषको करि देवें १२ ॥

कृत्वा यास्यामहे सर्वे प्रत्येकं वानियो जय ॥ कुम्भकर्णस्तदा प्राहरावणं राक्षसेश्वरम् १३
आरब्धं यत्त्वया कर्म स्वात्मना शायकेवलम् ॥ न दृष्टो सितदाभाग्यात्वं रामेण महा
त्मना १४ यदि पश्यति रामस्त्वां जीवन्नायासिरावण ॥ रामो न मानुषो देवः साक्षा
न्नारायणो व्ययः १५ सीता भगवती लक्ष्मी रामपत्नी यशस्विनी ॥ राक्षसानां विनाशाय
यत्त्वयान्तासु मध्यमा १६ विषपिण्डमिवागीर्य महामीनो यथा तथा ॥ आनीता जानकी
पश्य च त्वया किं वा भविष्यति १७ यद्यप्यनुचितं कर्म त्वया कृतमजानता ॥ सर्वं
समं करिष्यामि स्वस्थचितो भव प्रभो १८ ॥

(आयास्यामहे सर्वे वा प्रत्येकं नियो जयत दाराक्षसेश्वरं रावणं कुम्भकर्णः प्राह) संसारभरेके वानर मा-
नुषोंको नाश करि लौटि आवैं हम सब अथवा एक एक राक्षस वानर नसों युद्ध कराय दीजे तासमय
राक्षसों के राजा रावण प्रति कुम्भकर्ण बोलता भया १३ (त्वया यत्कर्म आरब्धं केवलम् स्वआत्मना शाय
तदाभाग्यात् महात्मनारामेण त्वं न दृष्टोसि) कुम्भकर्ण बोला कि हे रावण तुमने जो सीताहरणादि कर्म
प्रारंभ किया है सो केवल अपने नाशके अर्थ किया है जब सीता हरने गये तासमय में तुम्हारी कोई बड़ी
भाग्य उदयर है ताते महात्मा रामने तुमको नहीं देखा १४ (रावण यदि रामः स्त्वां पश्यति जीवन्नायासि
रामः मानुषः देवः न भव्ययः साक्षात् नारायणः) हे रावण जो राम तो को देखते तो तू जीवत न आवता
भाव उहें मार डालते पुनः राम मानुष राजा नहीं हैं किंतु अविनाशी साक्षात् नारायण हैं १५ (राम
पत्नी यशस्विनी सीता भगवती लक्ष्मी सुमध्यमा त्वयान्ता राक्षसानां विनाशाय) रामकी पत्नी यशवंती
सीता सो भगवती लक्ष्मी है सुंदर मध्यदेश है जाको ताको तुमने हरिऔनी सो राक्षसन के नाशके अर्थ
लायो कौन प्रकार १६ (यथा महामीनः विषपिण्डमिवागीर्य तथा त्वयान्ता जानकी आनीता पश्य च त्वया
किं वा भविष्यति) जैसे महामत्स्य विषके पिण्ड की नाई कांटा सहित चाराको लीलि जाती है पीछे प्राणों वावत तैसे
तुमने जानकी हरिऔनी है तामें देखें पीछे क्या हो नहार है १७ (प्रभो यदि अजानता त्वया अनुचितं अपि
कर्म कृतं स्वस्थचितः भव सर्वसमं करिष्यामि) हे प्रभो जो अजान भूलते तुमने अनुचित भी कर्म किया
तो आपने चित्तको सावधान करौ मैं अपने बल करिके तुम्हारा टढ़ा भी यावत् कार्य है सो सब मैं
सीधा करि देउंगो १८ ॥

कुम्भकर्णवचः श्रुत्वा वाक्यमिन्द्रजित् ब्रवीत् ॥ देहि देवममानुजां हत्वारामं सलक्ष्मण
म् ॥ सुग्रीवं वानरांश्चैव पुनर्यास्यामि ते तिकम् १९ तत्रागतो भागवत् प्रधानो विभीष
णो बुद्धिमतां वरिष्ठः ॥ श्रीरामपादद्वय एकतानः प्रणम्य देवारिमुपोपविष्टः २० विलो
क्य कुम्भश्रवणादि दैत्यान् मत्तप्रमत्तानति विस्मयेन ॥ विलोक्य कामातुरमप्रमत्तो द
शाननं प्राह विशुद्धबुद्धिः २१ न कुम्भकर्णेन्द्रजितौ च राजन् तथा महापाश्वर्महोदरौ
तौ ॥ निकुम्भकुम्भौ च तथा तिकायः स्थातुं न शक्ता युधि राघवस्य २२ ॥

(कुम्भकर्णवचः श्रुत्वा इन्द्रजित् वाक्यं ब्रवीत् देवममानुजां देहि वानरांश्चैव सुग्रीवं सलक्ष्मणं रामं

इत्वातेअतिकंपुनर्यास्यामि)कुंभकर्णकेवचनसुनि इंद्रजित् मेघनाद रावणप्रति वचनबोला हे देव और न सो पूछनेते क्या प्रयोजन है केवल मोको आज्ञादीजिये तौ सब वानरोंको अरु सुग्रीवको अरु लक्ष्मण सहित रामको मारिकै कुशलपूर्वक तुम्हारे पासको पुनः लौटिआवों १९ (तत्रभागवतप्रधानःबुद्धिमतांवरिष्ठः श्रीरामपादद्वयएकतानः विभीषणःआगतःदेवारिप्रणम्यउपोषविष्टः) ताही समय में तहां भगवद्भक्तों में मुख्यबुद्धिमानों में श्रेष्ठ श्रीरघुनाथजीके दोऊपदकमलों में एकाग्रचित्तकी वृत्तिलगी है जाकी ऐसा विभीषण आवताभया रावणको प्रणामकरि समीपही बैठजाताभया २० (मनप्रमत्तान्कुंभश्रवणादिदैत्यान् विलोचयकामातुरंअप्रमत्तः दशाननं विलोक्य अतिविस्मयेनविशुद्ध बुद्धिःप्राह) मतवारेन में मतवार कुंभकर्ण आदि दैत्यन को देखि तथा कामातुर महामतवार रावण को देखि भाव मन वचनतेहरिविमुखता विचारि वंशनाशहोतेजानि बड़ी विस्मयकरिकै विशेषशुद्धहै बुद्धि जाकी सो विभीषण रावणप्रति बोलताभया २१ (राजन्कुंभकर्णेन्द्रजितोचमहापाशर्वमहोदरौ तौनअतिकायः चतथानिकुंभकुम्भौ राघवस्ययुधिस्थातुंनशकाः)हेराजन् कुंभकर्ण मेघनाद येदोऊ पुनः तैसे महापाशर्व महोदर ये दोऊ पुनः अतिकाय तैसे निकुंभ कुंभ ये दोऊ इत्यादि सब रघुनाथजी के संमुख युद्ध में ठाढ़ होने को समर्थ कोऊ नहीं है भाव सबमारि डारे जायगे २२ ॥

सीताभिधानेनमहाग्रहेणग्रस्तोसिराजन्नचतेविमोक्षः ॥ तामेवसत्कृत्यमहाधनेन दत्त्वाभिरामायसुखीभवत्वम् २३ यावन्नरामस्यशिताःशिलीमुखाःलंकांमभिव्याप्यशिरांसिरक्षसाम् ॥ छिंदंतितावद्रघुनायकस्यभोतांजानर्कात्त्वंप्रतिदातुमर्हसि २४ यावन्नगाभाःकपयोमहाबलाहरीन्द्रतुल्यानखदंष्ट्रयोधिनः ॥ लंकांसमाक्रम्यविनाशयंतितेतावद्रुतंदेहिरघून्तमायताम् २५ जीवन्नरामेणविमोक्ष्यसेत्वंगुप्तःसुरेन्द्रैरपिशंकरेण ॥ नदेवराजांकगतोनमृत्योःपाताललोकानपिसंप्रविष्टः २६ ॥

(राजन्सीताभिधानेनमहाग्रहेणग्रस्तोसिचतेविमोक्षःन महाधनेनतांएवसत्कृत्यअभिरामायदत्त्वात् सुखीभव) हे राजन् सीतानाम करिकै महाग्राहने तुमको असिलिया है पुनः तुमको छूटना दुर्घटहै ताते स्वर्णमणी आदि महाधन करिकै सहित तिस सीताको भी आदर सहित लैकै आनन्दरूप राम के अर्थ दैकै तुमसुखीहोउ २३ (भोरावण रामस्यशिताःशिलीमुखाःलंकांअभिव्याप्ययावत्क्षसांशि रंशिनछिंदंतितावत्त्वंतांजानर्करिघुनायकस्यप्रतिदातुंअर्हसि) भो रावण रामके पैनेबाण लंकामें व्यापिकै जबतक राक्षसों के शिरनहीं खण्डन करते तबतक तुम तिसजानकी को लैकै रघुनन्दन को दैदेनेके योग्यहौ २४ (नगाभाःहरीन्द्रतुल्यानखदंष्ट्रयोधिनःमहाबलाःकपयः तेलंकांसमाक्रम्ययावत् नविनाशयंतितेतावत्तरघून्तमायतांद्रुतंदेहि) पर्वताकार शरीर सिंहोंके तुल्यअशंक विक्रमी कराल नख दांतों करिकै युद्धकरने वाले ऐसे महाबली बानर ते लंकामें प्रवेशकरि जबतक राक्षसों को नहीं नाश करते हैं तबैतक रघुनन्दन के अर्थ तिन जनकनन्दिनी को शीघ्रहीदेउ २५ (सुरेन्द्रैःशंकरेणअपिगुप्तःत्वंरामेणजीवन्नविमोक्ष्यसेदेवराजांकगतःनमृत्योःपाताललोकान्अपिसंप्रविष्टःन) देवन में श्रेष्ठकुबेरादिकों करिकै रक्षितहोउ अथवा शंकर करिकै भी रक्षा किये जाउ तुमरामसे जीवतनछुटि हौ जा स्वर्ग में जाय इन्द्रके अकोरामें बैठिहौ तहांनबचिहौ मृत्युलोक पुनः पाताल लोकन में भी प्रवेश करिजैहौ तहां न बचिहौ भाव के वलप्रभु की शरणागतै में बचि सकेहौ २६ ॥

शुभंहितंपवित्रंचविभीषणवचःखलः॥प्रतिजग्राहनैवासौधियमाणइवौषधम् २७

कालेननोदितोदैत्योविभीषणमथाऽब्रवीत् ॥ मदत्तभोगैःपुष्टांगोमत्समीपेवस
न्नपि २८ प्रतीपमाचरत्येषममैवहितकारिणः ॥ मित्रभावेनशत्रुर्मेजातोनास्त्यत्र
संशयः २९ अनार्येणकृतघ्नेनसंगतिर्मेनयुज्यते ॥ विनाशमभिकांक्षतिज्ञातीनां
ज्ञातयस्सदा ३० योन्यस्त्वेवंविधंब्रूयाद्वाक्यमेकंनिशाचरः ॥ हन्मिन्तस्मिन्क्षणेए
वधिकृत्वारक्षःकुलाधमम् ३१ रावणेनैवमुक्तःसन्पुरुषंसविभीषणः ॥ उत्पपात
सभामध्याद्गदापाणिर्महाबलः ३२ ॥

(विभीषणवचःशुभं हितं च पवित्रं खलः असौ प्रतिजग्राह न एव म्रियमाण औपधं इव) विभीषणको
वचन कैसा है कल्याणमय हित है जामें भाव रामशरण जानापुनः पवित्र है भाव जानकी को दै देना
ताहि खल यह रावणअंगीकार नहीं किया कौन भाति यथा बिपमरुज वशमरणहार औषध नहीं खाता
है २७ (अथ कालेन नोदितः दैत्यः विभीषणं अब्रवीत् मत्तदत्तभोगैः पुष्टांगः मत्समीपेव सन्नपि) अब
काल करिकै प्रेरित दैत्य रावण विभीषण प्रति बोला कि तू मेरे दिये हुये भोगों करिकै पुष्टांग भयापुनः
मेरे ही समीप बसता भी है २८ (हितकारिणः मां एव प्रतीपं आचरति एष मित्रभावेन मेशत्रुः जातः अत्र सं-
शयः न अस्ति) पालन पोषणादि हित करने वाला जो मैं हौं ताको भी प्रतिकूल आचरण भाव विमु-
खता है ताते यह विभीषण मित्र भाव करिकै मेरा शत्रु उत्पन्न भया यामें संशय नहीं है सत्य है २९
(कृतघ्नेन अनार्येण मे संगतिः न युज्यते ज्ञातयः विनाशं ज्ञातीनां सदा अभिकांक्षति) सलूकन माने इति कृत-
घ्नकुल धर्म त्यागी अनार्य ऐसे विभीषण करिकै मेरी संगति मिलती नहीं है यथा साधु असाधु
स्वभाव प्रतिकूल है पुनः कुटुंबी को विनाश होने की कुटुंब के लोगनको सदा रक्षारहती है ३० (तुयः
अन्यः एकं निशाचरः एव विधं वाक्यं ब्रूयात् तस्मिन् क्षणे एव हन्मिन् रक्षः कुलाधमं त्वां धिक्) तू भाई है क्या
मारौं पुनः जो और एक निशाचर इसी विधिकी वाक्य बोलता तौ उसी क्षण मारि डारता राक्षसकुल
में ऐसा अधम भया तोको धिक्कार है मुख देखने योग्य नहीं है ३१ (एवं पुरुषं रावणेन उक्तः सन् सवि-
भीषणः महाबलः गदापाणिः सभामध्यात् उत्पपात) इस प्रकार कठोर वचन रावण करिकै कहत सन्ते
सो विभीषण महाबली गदाहाथ में लै कै सभामध्य ते ऊपर को जाता भया ३२ ॥

चतुर्भिर्मंत्रिभिः सार्द्धं गगनस्थो ब्रवीद्वचः ॥ क्रोधेन महता विष्टो रावणं दशकंधरम्
३३ मां विनाशमुपेहित्वं प्रियवादिन मेव माम् ॥ धिक्करोषि तथापि त्वं ज्येष्ठो भ्रातापि
तुः समः ३४ कालो राघवरूपेण जातो दशरथालये ॥ काली सीताभिधानेन जाता
जनकनंदिनी ॥ तावुभावागता वत्र भूमेर्भारपनुत्तये ३५ तेनैव प्रेरितस्त्वं तु नष्ट
णोषि हितं मम ॥ श्रीरामः प्रकृतेः साक्षात् परस्तात् सर्वदा स्थितः ३६ बहिरंतश्च भूता
नां समः सर्वत्र संस्थितः ॥ नामरूपादिभेदेन तत्तन्मय इवामलः ३७ यथानानाप्रका
रेषु दृष्टेष्वेको महानलः ॥ तत्तदावृत्तिभेदेन भिद्यते ज्ञानचक्षुषाम् ३८ ॥

(चतुर्भिः मंत्रिभिः सार्द्धं गगनस्थः महता क्रोधेन आविष्टः दशकंधरम् रावणं वचः अब्रवीत्) चारि मंत्रिनस-
हित विभीषण आकाशमें स्थित बड़े क्रोधसे परिपूर्ण दशकंधर रावण प्रति वचन बोले ३३ (मां वि-
नाशं मुपेहि प्रियवादिनं मां एव धिक्करोषि तथापि त्वं ज्येष्ठो भ्राता) विभीषण बोले हे रावण मैं
जाता हौं अब मेरे विना तुम सुख करौ प्रियवचन बोलने वाला जो मैं हौं ताको भी धिक्कार करते हौता हू

पर तुम पिताके समहौ क्योंकि ज्येठे भाईहौ तातेमें तुम्हारे हितैकी कहोंगो ३४ (राघवरूपेणकालः दशरथालयेजातःसीताभिधानेनजनकनादिनी कालीजातातौउभौभूमेःभारापनुतयेभत्रआगतौ) हे रावण राघवरूपकरिकै तुम्हाराकाल दशरथके मंदिर में उत्पन्नभया पुनः सीतानाम करिकै जनक पुत्रीकाली उत्पन्नभई ते दोनों रामजानकी भूमिकोभार उतारिवे अर्थ इहाँ को आयेहैं ३५ (तेनएव प्रेरितःतत्त्वहितममनशृणोपिश्रीरामःप्रकृतेःपरस्तात्साक्षात्सर्वदास्थितः) हे रावण तिनहीं की प्रेरणा अर्थात् अंतर्यामीरूपते अंतरमें बसे तिनराम करिकै प्रेरणा कियेगये जो तुम ताते अपना हित मेराकहा वचन नहीं सुनतेहौ अरु श्रीरामप्रकृतिते परसाक्षात् अंतर्यामी रूपते सबकाल सबमें बसेहैं सो प्रेरकहैं ३६ (भूतानां बहिःच अंतःसर्वत्रसमःसंस्थितःअमलःनामरूपादिभेदेनतत्तत्तमयइव) भूतचराचरके बाहेर पुनः भीतर सब ठौर बराबरिही बसाहै विकार रहित अमल परन्तु नामरूपभेदन करिकै ताहीसम देखाताहै यथा सोनाकनककुण्डलादि नामरूपभयेते सोनाभी वही मय देखा है विचारैतेसोना एकही है ३७ (नानाप्रकारेषुवृक्षेषुयथामहाअनलःएकःतत्तत्तत्आकृतिभेदेनअज्ञानचक्षुषाम्भियते) संसार में अनेकप्रकारके वृक्षहैं तिनविषे जैसे महा अग्नि एकही व्याप्तहै जैसेजैसे वृक्ष तैसी तैसी आकृति सूरति भेद करिकै अज्ञान दृष्टिवालेनको भेददेखि परताहै यथा वट पीपर आँख इसी भाँति परमात्मा भी एकव्याप्त है ३८ ॥

पंचकोशादिभेदेनतत्तन्मयइवाबभौ ॥ नीलिपीतादियोगेननिर्मलःस्फटिकोयथा ३९ सएवनित्यमुक्तोपिस्वमायागुणविवितः ॥ कालःप्रधानंपुरुषोऽव्यक्तंचेतिचतुर्विधः ४० प्रधानपुरुषाभ्यांसजगत्कृत्स्नंसृजत्यजः ॥ कालरूपेणकलनांजगतःकुरुतेव्ययः ४१ कालरूपीसभगवान् रामरूपेणमायया ॥ ब्रह्मणाप्रार्थितोदेवस्त्वद्बधार्थमिहागतः ४२ ॥

(पंचकोशादिभेदेनतत्तन्मयइवाबभौ) पंचकोशादि भेदन करिकै ताही ताही मयसम देखात अर्थात् प्रथम अन्नमयकोशदेहहै ताके भेद करिकै परमात्मा ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि देखात दूसरा प्राणमयकोशतन व्याप्त जो वायुहै ताकेभेद करिकै स्वासापला क्षुधाप्यास मलमूत्रत्यागादि देखात तीसरा मनोमय कोशमन चित्तबुद्धि अहंकारादि तिनके भेदते शुभाशुभ मनोरथादि अनेक व्यापारकरते देखात चौथा आनन्दमय कोश ताके भेदकरिकै विषयानंद प्रेमानंद ब्रह्मानंदादिकरते देखात पांचवां विज्ञानमयकोश ताकेभेद करिकै ब्रह्मनिरूपणादि करते देखात इति पंचकोशादिमय कैसादेखात (यथानीलिपीतादियोगेननिर्मलःस्फटिकः) जैसे वसन फूलादि नील पीत अरुणादि समीपता योग करिकै अमलस्फटिकमणि भी रंगदार देखात ३९ (सएवनित्यमुक्तःअपि) तैसेही रघुनन्दन नित्यमुक्तभी हैं परन्तु (स्वमायागुणविवितः) अपनी मायाके रजतमसत्त्वादि गुणोंमें प्रतिबिंबितहैंकै (कालःप्रधानंपुरुषःचअव्यक्तंचेतिचतुर्विधः) काल अरु प्रधान अरु पुरुष पुनः अव्यक्त इत्यादि चारि विधि करिकै जानेजात ४० (सअजःप्रधानपुरुषाभ्यांसजगत्कृत्स्नंसृजतिकालरूपेणकलनांजगतःव्ययःकुरुते) सोई राम जन्मरहित अज रजोगुणमय प्रधान अरु पुरुषरूपन करिकै जगत् जो संपूर्ण हैताको उत्पन्न पालन करतेहैं तमो गुणमय कालरूप करिकै संहार करि जगत्को नाशकरि देते हैं शुद्ध सतोगुणमय अव्यक्त अंतर्यामीरूपकरि सबमें व्याप्तहैं ४१ (सभगवान् कालरूपी ब्रह्मणाप्रार्थितः देवःमाययारामरूपेणत्वत्त्वार्थमिहागतः) सो भगवान् कालरूपी ब्रह्माकरिकै प्रार्थनाकियेगये देवमाया

रामरूप करिके तुम्हारे वधके अर्थ इहां आये हैं भाव तेरे मारने की प्रतिज्ञा करिके आये हैं ४२ ॥
 तदन्यथाकथंकुर्यात्सत्यसंकल्पईश्वरः ॥ हनिष्यतित्वांरामस्तुसपुत्रवलवाहनम्
 ४३ हन्यमानंनशक्रोमिद्रष्टुंरामेणरावण ॥ त्वांराक्षसकुलंकृत्स्नंततो गच्छामिराघ
 वम् ॥ मयियातेसुखीभूत्वारमस्वभवनोचिरम् ४४ विभीषणोरावणवाक्यतःक्षणा
 द्विसृज्यसर्वेसपरिच्छदंगृहम् ॥ जगामरामस्यपदारविंदयोःसेवाभिकांक्षीपरिपूर्ण
 मानसः ४५ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेद्वितीयः सर्गः २ ॥

(सत्यसंकल्पईश्वरःतत्तदन्यथाकथंकुर्यात्सपुत्रवलवाहनंतुत्वांरामःहनिष्यति) जो तेरेमारनेकी प्रतिज्ञा करिके आये हैं तौसत्य है संकल्प जाको सोईश्वर अपने वचन को वृथा कैसे करेंगे ताते सहित पुत्र सेनावाहन पुनः तुमको राम निश्चयकरि मारेंगे ४३ (रामेणहन्यमानंनरावणत्वांकृत्स्नं राक्षसकुलंदृष्टुंनशक्रोमिततःराघवंगच्छामि) भवरामकरिके मारेजाउगे रावण तुमतथा सम्पूर्णराक्षस कुल सो मैं देखिनसकौंगो ताते रघुनंदन के समीपको जाताहों (मयियातेसुखीभूत्वाभवनेचिरंरमस्व) हे रावण मेरेचले गयेसन्ते तुम सुखीहोउ अरु मंदिरमें बहुतकालतक रमण करो सुख भोगकरो ४४ (रामस्यपदारविंदयोः सेवाभिकांक्षीपरिपूर्णमानसः विभीषणःरावणवाक्यतः सपरिच्छदंगृहंमर्वक्ष णात्सृज्यजगाम) श्रीरघुनाथजी के पदकमलों के सेवन करनेकी अभिलाषा परिपूर्ण है मनमें जिसके ऐसा रामानुरागी विभीषण सो रावण के विषकार वचनमात्रते स्त्री पुत्रादि आपने पक्षी सहित सम्पूर्ण ऋद्धिभरा मंदिर इत्यादि यावत् लौकिकविभव रहा सो सम्पूर्ण क्षणे भरेमें त्याग करिशुद्ध विरागमान द्वे कै रघुनाथजीकी शरणागत को जाताभया ४५ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्गुभपदशरणागतवैजनाथ विरचिते
 अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डेद्वितीयः प्रकाशः २ ॥

विभीषणोमहाभागश्चतुर्भिर्मंत्रिभिःसह ॥ आगत्यगगनेरामसंमुखेसमवस्थितः १
 उच्चैरुवाचभोस्वामिनूरा मराजीवलोचन ॥ रावणस्यानुजोऽहंतेदारहर्तुर्विभीषणः
 २ नाम्नाभ्रात्रानिरस्तोहंत्वामेवशरणंगतः ॥ हितमुक्तंमयादेवतस्यचाविदिता
 त्मनः ३ सीतांरामायवेदेर्हीप्रेषयेतिपुनःपुनः ॥ उक्तोपिनशृणोत्येषःकालपाशव
 शंगतः ४ हंतुंमांखड्गमादायप्राद्रवद्राक्षसाधमः ॥ ततोचिरेणसचिवैश्चतुर्भिःस
 हितोभयात् ५ त्वामेवभवमोक्षायमुमुक्षुःशरणंगतः ॥ विभीषणवचःश्रुत्वासुग्रीवो
 वाक्यमब्रवीत् ६ ॥

सवैया ॥ शरणायविभीषण की विनती वरदै प्रभुता अभिषेक किये । शुकआय वधेकपि सेनघनी
 सुनि रावणशोक उसास लिये ॥ शरखेंवतसिंधु समीतचलो प्रभु वंदनके मणिभेटदिये । शरदुष्ट
 हतौ म्वहि सेतुबंधे कहि बंदिचलो सहमोदहिये ॥ (चतुर्भिःमंत्रिभिःसहचमहाभागःविभीषणआगत्यगगने
 रामसंमुखेसमवस्थितः) शिवजीबोले हे गिरिजा चारिहुमंत्रिन सहित पुनः महाभाग्यवंत विभी-

षण आयकै अकाशमें रघुनाथजीके संमुख स्थितभया १ (उच्चैः उवाचभोस्वामिन् राज्ञिविलोचन राम ते दारहर्तुःरावणस्यअनुजःअहंविभीषणः) ऊंचेस्वरकरिकै बोलते भये भो स्वामिन्कमलनयन रघुनन्दन आपकी भार्या सीता को हरने वाला जो रावण ताको छोटाभाई में २ (विभीषण नाम्नाभ्रात्रा निरस्तःअहंत्वाएवशरणंगतःदेवअविदितात्मनःतस्यचहितंमयाउक्तं) विभीषणनाममैंभाई रावणकरिकै तिस्कार किया गया मैं आपकी शरण को आयाहौं हे रामदेव आपको ऐश्वर्यरूपनहीं जानैता जो रावण ताके हितकारी बचन को मैंने कहा ३ (वैदेहींसीतारामायप्रेषयइतिपुनःपुनःउक्तःअपि एषःकालपाशवशंगतःनशृणोति) विदेह पुत्री सीता को राम के अर्थ पठायादीजे ऐसा बारम्बार कहा तौभी यह रावण काल पाश के वश प्राप्त ताते मेरे वचन नहीं सुना ४ (राक्षसाधमःखड्गंआदायमाहं तुंप्राद्रवत् ततः भयात्अचिरेणवतुर्भिःसचिवैःसहितः) राक्षसों में अधमरावण तरवारि खैंचि मेरे मारने को दौरा तब डरते मैं शीघ्रही चारिमंत्रिन करिकै सहित ५ (मुमुक्षुःभवमोक्षायत्वाएवशरणंगतःविभीषणवचःश्रुत्वासुग्रीवःवाक्यंअब्रवीत्) मोक्षकी इच्छाराखे भवबंधनते छूटने अर्थ आपकी शरण को प्राप्त भयाहौं इति विभीषण के वचन सुनि सुग्रीव वचन बोले ६ ॥

विश्वासाहोर्नतेराममायावीराक्षसाधमः ॥ सीताहर्तुर्विशेषेणरावणस्यानुजोबली ७ मंत्रिभिःसायुधैरस्मान्विवरेनिहनिष्यति ॥ तदाज्ञापयमेदेववनैरहंन्यतामयं ८ ममैवंभातितेरामबुद्धयार्किनिश्चितंवद ॥ श्रुत्वासुग्रीववचनंरामःसस्मितमब्रवीत् ९ यदीच्छामिकपिश्रेष्ठलोकान्सर्वान्सहेश्वरान् ॥ निमिषार्द्धेनसंहन्यांसृजामि निमिषार्द्धतः १० अतोमयाभयंदत्तंशीघ्रमानयराक्षसम् ११ सकृदेवप्रपन्नायत वास्मीतिचयाचते ॥ अभयंसर्वभूतेभ्योददाम्येतद्ब्रतंमम १२ ॥

(हेरामराक्षसाधमःमायावीसीताहर्तुः रावणस्यअनुजःबली विशेषेणतेविश्वासाहःन) सुग्रीव बोले हे रघुनाथजी एकतौ राक्षस अधम भाव सहज स्वभाव दुष्ट पुनः मायावी अर्थात् माया सो अनेक छलकरने वाला पुनः सीता हरनेवाले रावण तुम्हारे शत्रु को छोटा भाई बली अवश्यही होगा ताते विशेषि करिकै आप के विश्वास करिबे योग्य नहीं है ७ (सायुधैःमंत्रिभिःविवरेअस्मानहनिष्य तिततदेवमे आज्ञापयवानरैः अयंहन्यतां) सहित दधियार आया साथ में रहैगा तौ संधि पाये संते मंत्रिन करिकै हम लोगन को घात करावैगो इससे हे देव मोको आज्ञादीजिये तौ बानरोंसे इसको वध करावौं ८ (ममएवंभातिहेराम तेबुद्धयार्किनिश्चितंवद सुग्रीववचनंश्रुत्वा रामःसस्मितमब्रवीत्) मेरे विचार में तो ऐसही आवता है हे रघुनाथ जी आपकी बुद्धि करिकै क्यानिश्चय भया सोकहिये इति सुग्रीवको वचन साधुअसाधु विचार रहित कादरता बोधक सुनिकै रघुनन्दनसहित मुसुकानि वचन बोले मुसुकाने को भाव कि सुग्रीव मेरे ऐश्वर्यरूप को भूलि गये सो जनाय देउ ९ (कपि श्रेष्ठयदि इच्छामि सहईश्वरान्सर्वान्लोकान् निमिषार्द्धेनसंहन्यां निमिषार्द्धतःसृजामि) प्रभु बोले हेवानरों में श्रेष्ठ जो मैं इच्छाकरौं तौ सहित लोक पालन सब लोकन को आधे निमिषमें नाश करि देउँ पुनः आधे निमिष में रचि देउँ तौ मेरे संमुख कौन छल करि सक्ताहै अथवा छली मेरी शरण नहीं आय सक्ता है १० (अतःमयाअभयंदत्तंराक्षसं शीघ्रं आनय) इससे मैंने इसको अभय दान दिया ताते राक्षस विभीषण को शीघ्रही मेरे संमुख लावौ काहेते ११ (अस्मितवइतिसकृत्एव चयाचतेप्रपन्नाय सर्वभूतेभ्यः अभयंददामि एतत्तममव्रतं) मैंतुम्हाराहौं ऐसा वचन एकद्वार निश्चय

करि कहिकै पुनः अभय याचना करै तौ उस शरणागत के अर्थ सब भूतों तै अभय देउं भाव किसी को डर मानि जो कोऊ जन मेरे संमुख आय एकद्वार कहै कि मैं तुम्हारी शरण हौं मेरी रक्षा करो तिस शरणागत जनके हेत ऐसा अभय करि देउं जापर सुरासुर मुनि नर नाग पशु पक्षी इत्यादि कोऊ वाको दुःख न दैसकै इति शरण पाल मेरा व्रतहै तौ जो याकी रक्षा न करौ तौ मेरा व्रत भंग होय तौ अयश को पात्र होउ ताते विभीषण को शीघ्रही लावौ १२ ॥

रामस्यवचनं श्रुत्वा सुग्रीवो हृष्टमानसः ॥ विभीषणमथानाद्यदर्शयामास राघवम् १३ विभीषणस्तु साष्टांगं प्रणिपत्य रघूत्तमम् ॥ हर्षगद्गदया वाचा भक्त्या च परया न्वितः १४ रामं श्यामं विशालाक्षं प्रसन्नमुखपंकजं ॥ धनुर्वाणधरं शांतं लक्ष्मणेन समन्वितम् १५ कृतांजलिपुटो भूत्वास्तोतुं समुपचक्रमे १६ विभीषण उवाच ॥ नमस्ते राम राजेंद्र नमः सीतामनोरम ॥ नमस्ते चंडकोदंडनमस्ते भक्तवत्सल १७ ॥

(रामस्यवचनं श्रुत्वा हृष्टमानसः सुग्रीवः आनाद्य विभीषणअथराघवं दर्शयामास) रघुनन्दन को वचन सुनि आनंद भया मन जाको सो सुग्रीव आनिकै विभीषण को जब रघुनन्दन को देखावते भये संमुख खड़ा करि देते भये १३ (तुविभीषणः रघूत्तमं साष्टांगं प्रणिपत्य परया भक्त्या न्वितः हर्षगद्गदया वाचा) पुनः विभीषण रघुनाथ जी को साष्टांग प्रणाम करि अंतरमें पराभक्ति अचल अनुराग युक्त है पुनः सर्वांगमें हर्ष अर्थात् प्रभुको देखि जो प्रेमानंद उमंगा ताते अंगमें पुलकावलीनेत्र सजल कंठा रोध भया ताते गद्गदवचन करिकै १४ (रामं श्यामं विशालाक्षं) विभीषण पलकरोकि देखे कैसे है रघुनाथ जी सुंदर श्याम अंगवड़े लंबे सुंदर नेत्र (प्रसन्नमुखपंकजम्) आनंद दर्शित है चेष्टा जामें ऐसा मुख कमल तुल्य (धनुर्वाण धरं शांतं) वीरवैपरीक्षणस्वभावके चिह्न धनुष बाण धारण किहे ताहू पर स्वभाव शांत है (लक्ष्मणेन समन्वितं) लक्ष्मण सहित आसीन देखि के १५ (कृतांजलिपुटो भूत्वास्तोतुं समुपचक्रमे) हाथ जोरिकै विभीषण प्रभुकी स्तुति प्रारंभ किये १६ (रामराजेंद्र तेनमः सीता मनोरमनमः चंडकोदंडतेनमः भक्तवत्सलतेनमः) हे राम राजों में महाराज आपके अर्थ नमस्कार है प्रचंड है को दंड धनुष जिनको ऐसे आपके अर्थ नमस्कार है हे सीता के मनको रमण करावन हारे आप के अर्थ नमस्कार है भक्तजन प्रिय हैं जाको इति हे भक्तवत्सल आपके अर्थ नमस्कार है १७ ॥

नमोऽनंताय शांताय रामायामिततेजसे ॥ सुग्रीवमित्राय च ते रघूणां पतये नमः १८ जगदुत्पत्तिनाशानां कारणमहात्मने ॥ त्रैलोक्यगुरुवेऽनादिगृहस्थाय नमो नमः १९ त्वमादिर्जगतां रामत्वमेव स्थितिकारणम् ॥ त्वमंतेनिधनस्थानं स्वेच्छां चारस्त्वमेव हि २० चराचराणां भूतानां बहिरंतश्च राघव ॥ व्याप्य व्यापकरूपेण भवान् भाति जगन्मयः २१ त्वन्मायया हतज्ञानान्प्राप्तमानो विचेतसः ॥ गतागतं प्रपद्यंते पापपुण्यवशात्सदा २२ तावत्सत्यं जगद्भाति शुक्तिकारजतं यथा ॥ यावन्न जायते ज्ञानचेतसानान्यगामिना २३ ॥

(अनंताय शांताय अमिततेजसे रामाय नमः सुग्रीवमित्राय च ते रघूणां पतये नमः) जाकी महिमाको अन्त कोऊ नहीं पावत सदा शांत स्वभाव अमित तेज ऐसे रामके अर्थ नमस्कार है सुग्रीव के मित्र

पुनः आप जो रघुवंशिनके नाथहौ तिनके अर्थ नमस्कारहै १८ (जगत्उत्पत्तिनाशानांकारणायमहात्मने) जगत्को उत्पन्न पालन संहारके आदि कारण महात्मा जो आप तिनके अर्थ नमस्कार है (त्रैलोक्यगुरुवेअनादिगृहस्थायनमोनमः) त्रयलोकनके स्वामी पालनहारे प्रकृतिके संयोगते संसारपुत्रवत् उत्पन्नकरनेवाले अनादिगृहस्थ जो आप तिनकेअर्थ नमस्कारहै १९ (रामत्वंजगतांआदिःत्वंएवस्थितिकारणम् अन्तेनिधनस्थानंत्वंस्वेच्छाचारःत्वंएवहि) हे राम आपही जगत्के आदि उत्पन्नकरताहैं आपही पालनके कारणहौ अंतमें नाशके स्थान आपहीहौ परमस्वतंत्र आपही निश्चयकरिहौ २० (चराचराणांभूतानांबहिःचअंतः व्याप्यव्यापकरूपेणराघवभवान्जगन्मयःभाति) चर जंगम अचर स्थावर भूतमात्रके बाहेर पुनः भीतरव्याप्य जो बाहेर इंद्रादीकों में चैतन्यता प्रकाशहै व्यापक प्रकाशी जो अंतर्यामी भीतरहै इति रूपकरिकै हे राघव आपही जगन्मय प्रकाशित हौ २१ (त्वत्मायथाहृतज्ञानाःनष्टात्मनः विचेतसःपापपुण्यवशात्सदागतागतंप्रपद्यंते) संसार आपमय किसीकोदेखाता नहीं ताको कारण यह है हे रघुनाथजी विषयरूप आपकीमायाने ज्ञानहरि लिया देहाभिमानते नष्टात्माभये भाव आत्मरूप भूलिगया मोहबश चैतन्यतारहित पाप पुण्यकरतेहैं ताही कर्मनबशते सदा जन्म मरणमय संसारको प्राप्तहोतेहैं २२ (अनन्यगामिनाज्ञानचेतसायावत् नज्ञायते तावत्जगत्सत्यंभातियथाशुक्तिकारजतं) और सब वासनात्यागि केवल परमात्मरूपही में सदाजाताहै चित्त इति अनन्यगामी ज्ञान चित्तकरिकै जबतक नहीं जानाजाताहै भाव जाकेप्रकाशते लोक चैतन्य सो चराचर में व्यापक शुद्ध परमात्मरूप सो जबतकनहीं देखाताहै तवैतक संसार सत्य देखात कौन भाति जैसे सीपी में चांदीकी भ्रमहै सो विचारकीन्हे वामें चांदी नहीं है तैसेही परमात्मरूपको ज्ञानभये लोक मिथ्याहै २३ ॥

त्वदज्ञानात्सदायुक्ताःपुत्रदारगृहादिषु ॥ रमन्तेविषयान्सर्वानंतेदुःखप्रदानविभो
२४ त्वमिंद्रोऽग्निर्यमोरक्षोवरुणश्चतथानिलः ॥ कुवेरश्चतथारुद्रस्त्वमेवपुरुषोत्तम
२५ त्वमणोरप्यणीयांश्चस्थूलात्स्थूलतरःप्रभो ॥ त्वंपितासर्वलोकानां
माताधातात्वमेवहि २६ आदिमध्यांतरंहितःपरिपूर्णोच्युतोऽव्ययः ॥ त्वंपाणिपाद
रहितश्चक्षुःश्रोत्रविवर्जितः २७ श्रोत्राद्रष्टागृहीताचजवनस्त्वंखरांतकः ॥ को
शेभ्योव्यतिरिक्तस्त्वंनिर्गुणोनिरुपाश्रयः २८ ॥

(विभोत्वत्अज्ञानात्सदायुक्ताः अन्तदुःखप्रदान्पुत्रदारगृहादिषुसर्वानविषयान्रमन्ते) हे प्रभु आपको रूपनहींजानेते इति अज्ञानमें सदायुक्तरहनेवाले संसारैको सत्यमाने जो अन्तकालमें दुखदेन हार पुत्र स्त्री घरादिकविषे असक्त सब विषयनको भोगकरते हैं २४ (इन्द्रःअग्निःयमःरक्षःचवरुणः तथाअनिलःत्वंचकुवेरःतथारुद्रःपुरुषोत्तमएवत्वं) इंद्र अरु अग्नि अरु यमराज अरु राक्षस पुनः वरुण तैसे पवन इत्यादि सब आपहीहौ पुनः कुवेर तैसे रुद्र पुरुषोत्तमभी आपहीहौ भाव इनमें देवता बुद्धी न राखै सब में ईश्वरब्यापकमानै २५ (प्रभोत्वंअणोःअपिअणीयांश्चस्थूलात्स्थूलतरःसर्वलो कानापितात्वंमाताधातात्वंएवहि) भरोपा है मंदिर में घामआवत तामे जो कनै चमकत ताको अणुकही हे प्रभो आप अणुते भी अत्यन्त सूक्ष्महौ जो जीबके अंतरब्याप्तहौ पुनः स्थूलते अत्यन्त स्थूलहौ जाके रोमप्रति कोटिन ब्रह्मांडराजत पुनः सब लोकनके पिता आपहीहौ सबके माता पालनहार आपहीहौ २६ (आदिमध्यअन्तरहितः) आदि जन्म मध्यजीवन अंतमारणइत्यादि रहित

अनादिहो (परिपूर्णःअच्युतःअव्ययः) अखंडपरिपूर्णहो शक्ति आदि कलुच्युतनहीं भाव शक्ति तेज वल वीर्यादि परिपूर्ण नाशरहित (त्वंपाणिपादरहितः चक्षुःश्रोत्रविजितः) पुनः आप कैसेहो कि हाथ पद गुदा गिडन मुखादि कर्म इन्द्रिनकरिके रहित नेत्र कर्ण त्वचा जिह्वा नासिकादि ज्ञान इंद्रि विजित२७(स्वर्गनकःत्वंश्रोत्राद्रष्टागृहीताचजवनःकोशेभ्यःव्यतिरिक्तःत्वंनिर्गुणःनिरुपाश्रयः) माधुर्य में खरक नागरुनवाले आप कर्णगहिन सुनतेहोनेत्रहीनदंखतेहो करहीन ग्रहणकरतेहो पुनः पदहीन चलतेहो पुनः अन्नमय प्राणमय मनोमय आनन्दमय विज्ञानमय कोशनते भिन्न आप निर्गुणकाहूके आधाग नहींहो २८ ॥

निर्विकल्पोनिर्विकारोनिराकारोनिरीश्वरः ॥ पद्भावरहितोऽनादिःपुरुषःप्रकृतेः परः २६ माययागृह्यमाणस्त्वंमनुष्यइवभाव्यमे ॥ ज्ञात्वात्वांनिर्गुणमजंवेष्णवा मोक्षगामिनः ३० अहंत्वत्पादसद्भक्तिनिश्रेणींप्राप्यराघव ॥ इच्छामिज्ञानयोगा रूयंसोधमारोढुमीश्वर ३१ नमःसीतापतेराम नमःकारुणिकोत्तम ॥ रावणारेनम स्तुभ्यंत्राहिमांभवसागरात् ३२ ततःप्रसन्नःप्रोवाचश्रीरामोभक्तवत्सलः ॥ वरंवृ णीप्वभद्रंतेवांछितंवरदोस्म्यहं३३॥ विभीषणउवाच ॥ धन्योस्मि कृतकृत्योऽस्मि कृतकार्योऽस्मिराघव ॥ त्वत्पाददर्शनादेवविमुक्तोस्मिनसंशयः ३४ ॥

(निर्विकल्पःनिर्विकारः) आप में भेदनहीं है रजतमादि विकार रहित भावएकही शुद्ध परमात्महो (निराकारःनिरीश्वरः) आकार रहित आप के ऊपर और कोई ईश्वर नहीं है स्वतंत्रहो (पद्भाव रहितःप्रकृतेःपरःअनादिः) पद्भाववथा जायते १ उत्पन्न होनापुनःअस्ति २ समर्थहोना पुनःवर्धते३ अवस्थादिकों में देह चढनापुनः विपरिणमते ४ रूपको बदलितजाना पुनः अपक्षीयते ५ दुर्बल होना पुनः विनश्यति ६ नाशहोना इतिपद्भाव रहित प्रकृति ते परे अनादिहो २६ (त्वंमाययागृह्यमाणः मनुष्यइवभाव्यतेनिर्गुणंअजंत्वाज्ञात्वावेष्णावाःमोक्षगामिनः) आप दिव्यमाया करिके राजकुमार रूपग्रहण किठेउ ताते विषयी विमुखों को मनुष्य की नाई देखिपरते हो अरु इमी रूपकी भक्तिकरि गुणनते पर निर्गुण जन्मादिविकार रहित आपको जानिके भक्तजन मुक्त होते हैं ३० (राघवत्वत्पा दसत्भक्तिनिश्रेणींप्राप्यईश्वरज्ञानयोगारूयंसोधमारोढुअहंइच्छामि) हे राघव आप के पदकमलों की सेवनस्मरण अर्चन वंदनादि जो सत् उत्तमपावन भक्तिरूप सीढ़ी है ताको प्राप्तहै हे ईश्वर तब ज्ञानयोग भाव आत्मरूप ते परमात्मरूपकी प्राप्तीरूप जो महल है तापर चढ़िवेकी में इच्छाकरता हों३१ (कारुणिकोत्तमगमनमःसीतापतेनमःरावणारेतुभ्यंनमःभवसागरात्मांत्राहि) हे करुणाकर उत्तम हे राम हे सीतापते हे रावण के शत्रुआप के अर्थ नमस्कार है भवसागर ते मेरी रक्षाकरौ ३२ (ततःभक्तवत्सलःश्रीरामःप्रसन्नःप्रोवाचतेभद्रंवरंवृणीप्वचांछितंवरदःस्म्यहम्) तब भक्तपरप्रीति करनेवाले रघुनंदन प्रसन्न है वोले तेराकल्याण होय वरमांगु मनभावन वरदेनेपर उपस्थितमेंहों३३ (राघवत्वत्पाददर्शनात्एवधन्यःअस्मि कृतकृत्यःअस्मि कृतकार्यःअस्मि विमुक्तःअस्मि संशयःन) विभी षण वोले हे राघव आप के पदकमल देखे ते धन्यभयों कृतार्थभयों सम्पूर्ण कार्यकरि चुकेउ मुक्त भयों यामें संशय नहीं है ३४ ॥

नास्तिमत्सदृशोधन्योनास्तिमत्सदृशःशुचिः ॥ नास्तिमत्सदृशोलोकेरामत्वन्मूर्ति

दर्शनात् ३५ कर्मबन्धविनाशायत्वज्ञानंभक्तिलक्षणम् ॥ त्वद्ब्रह्मानं परमार्थं च देहि
मे रघुनन्दन ३६ नयाचेरामराजेंद्रसुखं विषयसंभवम् ॥ त्वत्पादकमले सक्ता भक्ति
रेव सदास्तु मे ३७ ओमित्युक्त्वा पुनः प्रीतो रामः प्रोवाच राक्षसम् ॥ शृणु वक्ष्यामि ते
भद्रं रहस्यं मम निश्चितम् ३८ ॥

(रामत्वमूर्तिदर्शनात् मत्सदृशः लोकेन अस्ति मत्सदृशः शुचिः न अस्ति मत्सदृशः धन्यः न अस्ति)
हे रघुनाथजी आप की इयाम सुंदर मनोहर मूर्तिके दर्शन पाये ते आजु मोसम भाग्यवन्त लोकमें
दूसरा नहीं है दर्शनमात्र जन्म जन्मांतर के पाप नाश भये ताते मेरी समान पवित्र दूसरा नहीं है
आपकी कृपादृष्टि अवलोकन ते सब सुकृति को आजनभयों ताते मेरी समान धन्य प्रशंसनीय दूसरा
नहीं है ३५ (रघुनन्दन कर्मबंधविनाशय भक्तिलक्षणं त्वत्ज्ञानं च परमार्थं त्वद्ब्रह्मानं मे दिहि) हे रघुनन्दन
शुभाशुभ कर्मन को फल दुःखसुख भोगरूप जो जीव को बंधन जन्म मरणादिकों के विनाश अर्थ
जामें श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन बंदनादि आपकी भक्तिही साधन है जामें ऐसा आपने रूप
को ज्ञान तथा परमार्थ अर्थात् स्वार्थ रहित केवल परलोक साधन युत अपने सुन्दरे स्वरूप को ध्यान
अर्थात् ऐश्वर्यरूप जाने माधुर्यरूप को ध्यान लोक व्यवहार त्यागि देह सर्वांगिते कै कर्यता करों इत्यादि
मोको दीजिये ३६ (रामराजेंद्रविषयसंभवम् सुखं नयाचे त्वत्पादकमले सक्ता भक्तिः एव मे सदा अस्तु)
हे रघुनन्दन राजेंद्र इन्द्री विषय शब्द स्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि ते उत्पन्न जो लौकिक सुख ताको
नहीं मांगता हों केवल आपके पदकमलों में चित्त असक्त रहना इति प्रेमाभक्ति निश्चय करि मेरे
उरमें सदा बनी रहै ३७ (ओं इति उक्तवा गमः पुनः प्रीतः राक्षसमुवाच ते भद्रं मम निश्चितं रहस्यं व
क्ष्यामि शृणु) वरदान पूर्णताको प्रभु उपदेश दिये हे विभीषण आदि अंत ओंकार संपुट करि मेरा मंत्र
सदा जपा करौ तौ ज्ञानयुत भक्ति सदा तुमको प्राप्त रहैगी यह हनुमदुक्तरामोपनिषद् के दूसरे खण्ड
में लिखा है यथा हनुमानुवाच सिंहासने समासीनं रामं पोलैस्त्यसूदनम् । प्रणम्य दण्डवद्भूमौ पोलस्त्यो
वाक्यमब्रवीत् ॥ रघुनाथ महाबाहो कैवल्यं कथितं मया । अज्ञानां सुलभं चैव कथनीयं च सौलभम् ॥ श्री
राम उवाच ॥ पंचाशत्लक्षमन्मंत्रमाद्यन्त प्रणवं मन्मंत्रात् द्विगुणः प्रणवो योजयते सस्वयमेवाहं भवेन्न कि
म्) ऐसा कहि रघुनाथजी पुनः प्रीतिपूर्वक राक्षस विभीषण प्रति बोले तेरा कल्याण होय अब अपना
निश्चय किया हुआ जो रहस्य एकांती सिद्धांत ताहि कहता हों सुनु ३८ ॥

मद्भक्तानां प्रशान्तानां योगिनां वीतरागिणाम् ॥ हृदये सीतया नित्यं वसाम्यत्र न संश
यः ३९ तस्मात्वं सर्वदा शांतः सर्वकल्मषवर्जितः ॥ मां ध्यात्वामोक्षसे नित्यं घोरसं
सारसागरात् ४० स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तु लिखेद्यः शृणुयादपि ॥ मत्प्रीतये ममाभीष्टं
सारूप्यं समवाप्नुयात् ४१ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्राह श्रीरामो भक्तभक्तिमान् ॥ पश्य
त्विदानीमेवैषममसंदर्शने फलम् ४२ लंकाराज्येभिषेक्ष्यामि जलमानयसागरात् ॥
यावच्चंद्रश्च सूर्यश्च यावत्तिष्ठति मेदिनी ४३ ॥

(वीतरागिणां योगिनां प्रशान्तानां मद्भक्तानां हृदये नित्यं सीतया वसामि अत्र संशयः न) छूटि गया है
राग विषय सुखकी चाह ऐसे योगी अर्थात् यमनियमासन प्रत्याहार प्राणायामधारणा ध्यान समाधि
करि मेरे रूपमें मन लगानेवाले पुनः राग द्वेषादि विषमता त्यागि शुद्धसंतोषुणी शांत चित्त हैं जिनके

ऐसे जे मेरे भक्तहैं तिनके हृदय में सदा सीता सहित बास करताहौं यामें संशय नहीं ३८ (तस्मात्सर्वकल्मषवर्जितःसर्वदाशांतःत्वंनित्यंमाध्यात्वाघोरसंसारसागरात्मोक्ष्यसे) ताते हेविभीषण सब प्रकार के पापकर्म त्यागि सबकालशांत चित्त है तुम नित्यही मेरा ध्यानकरौ घोर संसार सागर तेमोक्ष होउगे ४० (एतत्तुममाभीष्टस्तोत्रमत्प्रीतयेयःपठेत्तुलिखेत्तुःशृणुयात्अपिसारूप्यंसंभ्राणुयात्) यहमेरा प्रियस्तोत्र जोहै ताहिमेरी प्रीति के अर्थ जो जनपढ़ैगो पुनः लिखैगो अथवा जो सुनैगो सो मेरे समानरूपको प्राप्तहोइगो भाव सारूप्य मुक्ति पावैगो ४१ (इतिउक्ताभक्तभक्तिमान्श्रीरामः लक्ष्मणंप्राहममसंदर्शनेफलमूष्णइदानींएवपश्यतु) इत्यादि वचन विभीषण सो कहिकै पुनः अपने भक्तनके भक्तिमान् अर्थात् प्रीति करणेवाले श्रीरघुनन्दन लक्ष्मण प्रति बोलते भये हे लक्ष्मण मेरे दर्शनको फल जोहै ताहि यह विभीषण इसी समय निश्चयकरि देखै ४२ (सागरात्जलंभ्रानयलंकाराज्येअभिषेक्ष्यामियावत्चंद्रःचसूर्यःयावत्मेदिनीतिष्ठाति) हे लक्ष्मण समुद्रते जललावो क्यों कि लंकापुरी की राज्यमें इस विभीषणको इसीसमय राज्याभिषेक करताहौं कबतक को जबतक चन्द्रमा पुनः सूर्यरहै तथा जबतक पृथिवी बनी रहै ४३ ॥

यावन्ममकथालोकेतावद्राज्यंकरोत्वसौ ॥ इत्युक्त्वालक्ष्मणेनांबुह्यानाय्यकलशेनतं ४४ लंकाराज्याधिपत्यार्थमभिषेकरमापतिः ॥ कारयामाससचिवैर्लक्ष्मणेनविशेषतः ४५ साधुसाध्वितितेसर्वेवानरास्तुष्टुवृभृशम् ॥ सुग्रीवोऽपिपरिष्वज्यविभीषणमथाब्रवीत् ४६ विभीषणावयंसर्वेरामस्यपरमात्मनः ॥ किंकरास्तत्रमुख्यस्त्वं भक्त्यारामपरिग्रहात् ४७ रावणस्यविनाशेत्वंसाहाय्यंकर्तुमर्हसि ॥ विभीषणउवाच ॥ अहंकियान्सहायत्वेरामस्यपरमात्मनः ॥ किंतुदास्यंकरिष्येहं भक्त्याशक्यात्वमायया ४८

(यावत्लोकेममकथातावत्असौराज्यंकरोतुइतिउक्त्वालक्ष्मणेनकलशेनदिअंबुह्यानाय्यतम्) जबतक लोकमें मेरी कथा रामायणादिरहै तबतक यह विभीषण राज्यकरै ऐसाकहि लक्ष्मणसे कलश करिकै जल मँगाय ताहि हाथोंमें लेकर ४४ (लंकाराज्याधिपत्यार्थमापतिःसचिवैःविशेषतःलक्ष्मणेनअभिषेकंकारयामास) लंकाकी राज्यको अधिपति अर्थात् राजाहोने अर्थ लक्ष्मीनाथ श्रीराम सुग्रीवादिसत्रिन करिकै विशेष्य अर्थात् प्रथम लक्ष्मण करिकै राज्याभिषेक करावते भये ४५ (सर्वेवानराःभृशम्तुष्टुवृतेसाधुसाधुइतिसुग्रीवःअपिविभीषणंपरिष्वज्यअथअब्रवीत्) शरण पालताप्रभु की देखि सब वानर अत्यन्त प्रसन्नभये ते सब साधुसाधु ऐसा कहने लगे भाव बहुत अच्छा भया पुनः सुग्रीव भी विभीषण को उरमें लगायकै तब वचन बोले ४६ (विभीषणावयंसर्वेपरमात्मनःरामस्यकिंकराःतत्रभक्त्यारामपरिग्रहात्त्वमुख्यः) सुग्रीव कहत हे विभीषण हम लोग सब परमात्मा रघुनन्दनके सेवकहैं तिनमें भक्ति करिकै तथा रघुनाथजी के अंगीकार करने ते तुम सबमें मुख्यहौं भाव हम लोगन पर आज्ञाकरने योग्यहौ ४७ (रावणस्यविनाशेत्वंसाहाय्यंकर्तुमर्हसि) हे विभीषण युद्धमें रघुनन्दन सेना सहित रावणको विनाशकरेंगे तिस व्यापारमें शत्रुकोगुप्तभेद प्रसिद्ध करणादि तुम सहाय करने योग्यहौ (परमात्मनोरामस्यसहायत्वेअहंकियान्किंतुभक्त्याशक्यातुअमाययाअहं दास्यंकरिष्ये) विभीषण बोले कि हे सुग्रीव परमात्मा शक्तितेजवीर्य वल ऐश्वर्यवंत रघुनाथजीकी

सहायता हमलोग कौनकरेंगे हांयहकरेंगे कि भक्तिकरि कै जहांतक है सकी सो शक्ति करिके पुनः छल त्यागि करिके हम दास्यता करेंगे ४८ ॥

दशग्रीवोऽसदृष्टः शुको नाम महासुरः ॥ संस्थितो ह्यंबरे वाक्यं सुग्रीवमिदमब्रवीत् ४९
त्वामाह रावणो राजा भ्रातारं राक्षसाधिपः ॥ महाकुलप्रसूतस्त्वं राजा सिवनचारिणाम् ५०
मम भ्रातृसमानस्त्वं तव नास्त्यर्थविश्रवः ॥ अहं यदहरं भार्या राजपुत्रस्य किंतव ५१
किंकिधायाहि हरिभिर्लंकाशक्या न देवतैः ॥ प्राप्तुं किं मानवैरल्पसत्त्वैर्वानरयूथपैः ५२
तं प्रापयंतं वचनं तूर्णमुत्प्लुत्य वानराः ॥ प्रापद्यंत तदाक्षिप्रं निहतुं दृढमुष्टिभिः ५३
वानरैर्हन्यमानस्तु शुको राममथाब्रवीत् ॥ न दूतावन्ति राजेन्द्र वानरान्वारय प्रभो ५४

(रावणेन सदृष्टः महासुरः शुकः नाम अंबरे संस्थितः हि इदं वाक्यं सुग्रीवं अब्रवीत्) ताही समय रावण को पठावा हुआ दूत महासुर शुक है नाम जाको शुक रूपते आकाश में स्थित है इस प्रकार वचन सुग्रीव प्रति बोला ४९ (राक्षसाधिपः रावणः राजा भ्रातरं त्वां आह त्वं महाकुलप्रसूतः वनचारिणाराजासि) शुक बोला हे सुग्रीव राक्षसों को स्वामी रावण लंका को राजा अपना भाई जानि तुम प्रति यह वचन कहा है कि तुम उत्तम कुल में उत्पन्न भये पुनः वानरों के राजा हो ५० (त्वं मम भ्रातृसमानः तव अर्थ विश्रवः नास्ति राजपुत्रस्य भार्या यत् अहं अहरस्य तव किम्) हमसों वाली सों मित्रता रही ताके भाई सुग्रीव तुम मेरे भाई के समान हो पुनः तुम्हारा कछु धन नाश मैं नहीं किया पुनः दशरथ राजकुमार रामजीकी भार्या सीता को जो मैं हरि लाया हों तामें आपका क्या अपराध किया जो तुम चढ़ि आये ५१ (हरिभिः किंकिधायाहि लंकां प्राप्तुं देवतैः शक्या न अल्पसत्त्वैः मानवैः वानरयूथपैः किं) वानरन करिके सहित किंकिधाको लौटि जाउ क्योंकि लंकामें प्राप्त होनेको देवतोंको भी समर्थ नहीं है तब थोरा है पराक्रम जिनमें ऐसे मनुष्यों करिके वा वानरयूथपों करिके कैसे प्राप्त हो सकती है ५२ (वचनं प्रापयंतं तं वानराः तूर्णमुत्प्लुत्य तदाक्षिप्रं निहतुं दृढमुष्टिभिः निहतुं प्रापद्यंत) ऐसा वचन सुनाता हुआ जो शुक ताहि देखि वानर शीघ्रही कूदिके गहिलिये तब तुरतही पुष्ट मुष्टिन करिके वाको मारना प्रारंभ किये ५३ (तुवानरैर्हन्यमानः शुकः अथ राममब्रवीत् राजेन्द्र दूतान ध्वनि प्रभो वानरान्वारय) पुनः वानरों करिके मारा जाता हुआ शुक तब रघुनन्दन प्रति वचन बोला हे राजेन्द्र दूतों को राजा नहीं मारते हैं इस न्याय करि हे प्रभो भाव आप महाराज हैं वानरों को मना कीजिये ५४ ॥

रामः श्रुत्वा तदा वाक्यं शुकस्य परिदेवितम् ॥ मावधिष्ठेति रामस्तान्वारयामास वानरान् ५५
पुनरंबरमासाद्य शुकः सुग्रीवमब्रवीत् ॥ ब्रूहि राजन् दशग्रीवं किं वक्ष्यामि ब्रजाम्यहम् ५६ ॥ सुग्रीव उवाच ॥ यथा वाली मम भ्राता तथा त्वं राक्षसाधम ॥ हं तव्यस्त्वं मया यत्नात्स पुत्रबलवाहनः ५७
ब्रूहि मे राम चंद्रस्य भार्या हत्वा कयास्यसि ॥ ततो रामा जयाधृत्वा शुकं बध्वा न्वरक्षयत् ५८
शार्दूलोपिततः पूर्वदृष्ट्वा कपिबलमहत् ॥ यथावत्कथयामास रावणाय सराक्षसः ५९
दीर्घचिंतापरो भूत्वानिःश्वसन्नास मंदिरे ॥ ततः समुद्रभावेक्ष्य रामोरक्तांतलोचनः ६० ॥

(परिदेवितंशुकस्यवाक्यंश्रुत्वातदारामः मावधिष्ठ इतितान् वानरान् रामः वारयामास) विलाप पूर्वक शुकराक्षस को वचन सुनिकै तव राम बोले हेसुग्रीव दूत न मारा जाय ऐसा कहि मारने वाले तिन वानरन को रघुनन्दन मना करि दिये कि मति याको मारो ५५ (पुनःशुकःअंबरंभासाद्यसु-
ग्रीवंब्रवीति अहंब्रजामिराजन् ब्रूहिदशग्रीवंकिंवक्ष्यामि) फिरि शुकराक्षस आकाशमें प्राप्तहै सुग्रीव प्रति बोला कि मैं जाताहौं हे राजन् कहिये रावण प्रतिक्रिया कहोंगो ५६ (यथाममभ्राता बालीतथा
राक्षसायम त्वंसपुत्रवलवाहनः त्वंयत्नात्मयाहंतव्यः) सुग्रीव बोलतेभये हेशुक रावणते यह कहना कि जैसे मेरा भाई बाली शत्रु रहा मेरेही वैसे मारागया तैसेही हे राक्षस अधम तूभी शत्रुहै ताते सहित पुत्र सेना वाहन तूभी यत्न पूर्वक हम करिकै बध करिबेयोग्य हसि ५७ (ब्रूहिमेरामचन्द्रस्यभा-
यीदृत्वाकयास्यसि ततःरामाज्ञयाशुकंधृत्वावध्वाभन्वरक्षयत्) पुनः यह कहेउ कि मेरे स्वामी राम-
चंद्र की भार्या सीता का हरिकै अब कुशल कहा जाताहै तासमय में रघुनाथ जी विचारे कि जो यह जाय हाल कहै तौ रावण वानरन के मारने की उपाय बांधै तौसिंधु तरने में बाधा होई इति विचारि कहे याको बांधिराखौ तव रघुनन्दन की आज्ञा करिकै शुक को पकरि बाधि रक्षामें राखे ५८
(ततः पूर्वशार्दूलःअभिमतत् कपिवलं दृष्ट्वासुराक्षसः रावणाययथावत्कथयामास) ताके पूर्वशार्दूल नामे दूत बड़ी भारी वानरी सेना को देखिगया सो राक्षस जाय रावणके अर्थ जैसी सेना देखिगया तैसीही सुनाता भया ५९ (दीर्घचिंतापरोभूत्वा मंदिरेनिश्वासन्नासततःसमुद्रंभावेक्ष्यपरकांतलोचनः
रामः) बड़ी सेना सुनिकै रावण बड़ी चिंतामें मग्न अर्थात् भकेला एक वानर आय लंका परास्त करि कुशलचला गया अब असंख्यन वानरआवेंगे तौ क्या होगा इसी चिंतामें बेसुधि मंदिर में परम शोचकी बड़ी उसासैलेतेहुये परारहा इहां ताही समय में समुद्रको विमुखदेखि क्रोधकरिकै लाल है गये हैं नेत्रजिनके ऐसे रघुनन्दन बोले ६० ॥

पश्यलक्ष्मणदुष्टोऽसौवारिधिर्मांमुपागतम् ॥ नाभिनंदतिदुष्टात्मादर्शनार्थममान
घ ६१ जानातिमानुषोऽयंमेकिंकरिष्यतिवानरैः ॥ अद्यपश्यमहाबाहोशोषयिष्या
मिवारिधिम् ६२ पादेनैवगमिष्यंतिवानराविगतज्वराः ॥ इत्युक्त्वाक्रोधताम्राक्ष
आरोपितधनुर्धरः ६३ तूणीरादूबाणमादायकालाग्निसदृशप्रभम् ॥ संधायचाप
माकृष्यरामोवाक्यमथाब्रवीत् ६४ पश्यंतुसर्वभूतानिरामस्यशरविक्रमम् ॥ इदानीं
भस्मसात्कुर्व्यांसमुद्रंसारितांपतिम् ६५ ॥

(अनघलक्ष्मणपश्यअसौवारिधिःदुष्टःमांउपागतंममदर्शनार्थंदुष्टात्मानाभिनंदति) हे निःपाप लक्ष्मणदेखिये यह समुद्र दुष्ट मोको आपने समीप प्राप्त जानिकै भी मेरे दर्शनकरनेको दुष्टात्मा आनन्द नहीं करताहै भाव भवतक दर्शनहेत नहीं आया ६१ (जानातिअयंमानुषः वानरैःमेकिंकरि-
ष्यतिमहाबाहोपश्यअद्यवारिधिंशोषयिष्यामि) समुद्र यहीजानताहै कि ये राम मनुष्य शक्तिहनि वानरोंकरिकै मेरा क्या करेंगे हेमहाबाहो लक्ष्मण देखिये अभी बाणोंकरिकै समुद्रको शोषिलेताहौं ६२
(विगतज्वराःवानराःपादेनैवगमिष्यन्ति इतिउक्त्वाक्रोधताम्राक्षःधनुर्धरःआरोपितः) सन्तापरहित प्रसन्नमन सब वानर पापन करिकै समुद्रके पारचले जायंगे ऐसा कहि क्रोधकरि लाल है गये हैं नेत्र जिनके ऐसे धनुषधारी रघुनन्दन धनुष में रोदाचढ़ावतेभये ६३ (कालाग्निसदृशम्बाणमूणीरात्
आदायसंधायचापंआकृष्यअथरामःवाक्यंअब्रवीत्) प्रलयकालके अग्नितुल्य प्रभाहै जामें ऐस कराल

वाणको तरकसते निकारि रोदामें संधानकरि धनुषकोखेंवि तव रघुनन्दन वचनको बोले ६४ (राम स्वशरविक्रमसर्वभूतानिपश्यंतुसरितांपतिसमुद्रइदानीम्भस्मसात्कुर्व्या) रामके वाणको पराक्रम सब भूत अर्थात् सुरासुर नर नाग पशु पक्षी आदिदेखें सब नदिनको पति जो समुद्रहैं ताहि अभी इसी वाणकरिकै सम्पूर्ण जलभस्मकरताहों ६५ ॥

एवंब्रुवतिरामेतुसशैलवनकानना ॥ चचालवसुधाद्यौचदिशश्चतमसावृताः ६६
चुक्षुभेसागरोवेलांभयाद्योजनमत्यगात् ॥ तिमिनक्रभ्रषामीनाःप्रतप्ताःपरितत्रसुः
६७ एतस्मिन्नंतरेसाक्षात्सागरोदिव्यरूपधृक् ॥ दिव्याभरणसंपन्नःस्वभासाभा
सयनदिशः ६८ स्वांतस्थदिव्यरत्नानिकरःभ्यांपरिगृह्यसः ॥ पादयोःपुरतःक्षिप्त्वा
रामस्योपायनंबहु ६९ दंडवत्प्रणिपत्याहरामंरक्तांतलोचनम् ॥ ब्राह्मिब्राह्मिजग
न्नाथरामत्रयलोक्ष्यरक्षक ७० जडोऽहंरामतेसृष्टःसृजतानिखिलंजगत् ॥ स्वभा
वमन्यथाकर्तुंकःशक्तोदेवनिर्मितम् ७१ ॥

(एवंरामेब्रुवतितुसशैलवनकाननावसुधाचचालचद्यौःचदिशःतमसावृताः) इस प्रकारको वचन रघुनन्दनकेकहतसंते सहित पर्वत जल वन सब पृथ्वी हालिउठी पुनः आकाश अरु सब दिशमें अन्धकारछायगया कछु देखातानहीं ६६ (सागरःचुक्षुभेभयात्त्योजनंवेलांअत्यगात्प्रतप्ताःतिमिनक्रभ्रषामीनापरितत्रसुः) वाणके तेजाग्निकरिकै समुद्र क्षोभको प्राप्तभया भाव जलखौलिकै जलनेलगा डरते योजनभरि किनागत्यागि जलहाटिगया जलकी उष्णताते नाकादि अन्य जलचर तिमिभ्रषादि मत्स्य सब डरिउठे ६७ (एतस्मिन्नंतरेसागरःसाक्षात्दिव्यरूपधृक् दिव्याभरणसंपन्नःस्वभासा दिशःभासयन) ताही समयके बीचमें समुद्र प्रसिद्ध दिव्यरूपधरि दिव्यकिरीट कुण्डलमाला केयूरादि भूषण भूषित सर्वांग अपनी प्रभाकरिकै सब दिशा प्रकाशकरतसंते ६८ (स्वअन्तस्थदिव्यरत्नानिवहु उपायनंकराभ्यांपरिगृह्यसःरामस्यपादयोःपुरतःक्षिप्त्वा) अपने भीतर रहने वाले मूंगा सोती हीरादि दिव्य रत्न बहुत से भेट हेत हेम थार भरि दोल हाथोंकरिकै लिहेआय समुद्र रघुनन्दन के पायनके आगे धरिकै ६९ (दण्डवत्प्रणिपत्याहरामंरक्तांतलोचनंरामं आह त्रयलोक्ष्यरक्षकजगन्नाथ रामब्राह्मिब्राह्मि) दंड की नाई भूमि में गिरि प्रणाम करि पुनः क्रोधकरि लाल भये नेत्र जिनके ऐतें रघुनन्दनप्रति समुद्र बोला है तानिहुं लोकनके रक्षा करनहारं हे जगत् के नाथ राम बारंवार मेरी रक्षा करौ ७० (रामतेसृजतानिखिलंजगत् अहंजडसृष्टःदेवनिर्मितंस्वभावमन्यथाकर्तुंकःशक्तः) हेरघुनायजी आप जब रचा सब जगत् तबै हमको जडस्वभाव रचिदिया हेदेव आपको बनावाहुवा जडस्वभाव ताका अन्यथा औरप्रकार करि देने को दूसरा कौन समर्थ है ७१ ॥

स्थूलानिपंचभूतानिजडान्येवस्वभावतः ॥ सृष्टानिभवतैतानित्वदाज्ञांलंघयंति
न ७२ तामसादहमोरामभूतानिप्रभवन्तिहि ॥ कारणानुगमातेषांजडत्वंतामसंस्व
तः ७३ निर्गुणस्त्वंनिराकरोयदामायागुणान्प्रभो ॥ लीलायांगीकरोषित्वंतदावै
राजनामवान् ७४ गुणात्मनोविराजश्चसत्त्वाद्देवावभूविरे ॥ रजोगुणात्प्रजेशाद्या
मन्योर्भूतपतिस्तव ७५ त्वामहंमाययाच्छन्नंलीलयामानुषाकृतिं ॥ जडबुद्धिजडो

मूर्खं कथं जानामि निर्गुणम् ७६ दंड एव हि मूर्खाणां सन्मार्गप्रापकः प्रभो ॥ भूतानाम
मरश्रेष्ठ पशूनां लगुडो यथा ७७ ॥

(स्थूलानि पंचभूतानि स्वभावतः जडानि एव भवतामृष्टानि एतानि त्वत् भाज्ञानं लंघयन्ति) हे रघुनाथ-
जी आकाश वायु अग्नि जल भूमि ये स्थूल पांचोभूत सहज स्वभावहीते जड़ हैं पुनः आपही करिकै
ऐसे रचे गये ताते ये पंचभूत आपकी आज्ञा नहीं उल्लंघते हैं भाव सदा जड़ै स्वभाववने हैं ७९ (हे राम
तामसात् अहमः भूतानि प्रभवन्ति हितामसं स्वतः कारणानुगमात्तेषां जडत्वं) हे रघुनाथ जी आपको रचा
जो तामस अहंकार है ताही सो पांचोभूत उत्पन्न भये तहां तामस सहज स्वभावही जड़ है तिस कारणके
गुण हमलोग कार्योमें आये तांकी जड़ता हमलोग नमें है यथा पिताके गुण पुत्रोंमें तथा तामसकी जड़ता
हमलोगोंमें है ७३ (प्रभो त्वं निर्गुणः निराकारः यदालीलया माया गुणान् भंगी करोषि तदा त्ववैराजनामवान्)
हे प्रभो आप तमादिगुणोंते पर आकार रहित हौं परंतु जब लीला करिकै मायाके गुणोंको भंगी कर करते हौं
तब आप वैराजनाम वंत होते हौं ७४ (विराजः गुणात्मनः सत्त्वात् देवावभूतिरे चरजो गुणात् प्रजेशाद्या तव
मन्योः भूतपतिः) विराजगुणनमय सगुणरूप जो आप तिनके सत्तोगुणते सनकादि शांत स्वभाव वाले
देवता भये पुनः रजो गुणते प्रजापति मनु इन्द्रादि भये आपके क्रोधते रुद्र भये ७५ (लीलया मा
नपाकृतिं मायया छन्नं निर्गुणं त्वां अहं जडबुद्धः जडः मूर्खः कथं जानामि) माधुर्य लीला करिकै मनुष्य
कैसी आकार राजकुमार बने अरु माया करिकै ढाके द्रुये निर्गुणरूपको जिस रूपकी लीला देखि
ज्ञानी भूलि जाते हैं ऐसे आपको जानिये मैं मैं कैसा हौं कारणरूप तामसमय ताते जड़बुद्धी सूक्ष्म
रूपरसमय विषय सो भी जड़ स्थूलरूप जल मूर्ख अर्थात् ऊंचापद त्यागि नीचे को ढरता हौं सो
आपको कैसे जानौं ७६ (प्रभो मूर्खाणां सन्मार्गप्रापकः दंड एव हि भूतानां मरश्रेष्ठ यथा पशूनां लगुडः) हे
प्रभो मूर्खन को सन्मार्ग मे लगाने वाला दंड ही है हे भूतमात्र के श्रेष्ठ देव जैसे पशुनको लाठी ७७ ॥

शरणं ते ब्रजामीश शरण्यं भक्तवत्सल ॥ अभयदेहि मे राम लंकामार्गं ददामि ते ७८
राम उवाच ॥ अमोघोऽयं महाबाणः कस्मिन् देशे निपात्यताम् ॥ लक्ष्मं दर्शय मे शीघ्रं
बाणस्यामोघपातिनः ७९ रामस्य वचनं श्रुत्वा करे दृष्ट्वा महाराम ॥ महोदधिर्म
हाते जाराधवं वाक्यमब्रवीत् ८० रामोत्तरप्रदेशे तु द्रुमकुल्य इति श्रुतः ॥ प्रदेशस्त
त्र बहवः पापात्मानो दिवानिशम् ८१ बाधंते मारुघुश्रेष्ठ तत्र ते पात्यतां शरः ॥ रामे
ण सृष्टो बाणस्तु क्षणादाभीरमण्डलम् ८२ हत्वा पुनः समागत्य तूणीरे पूर्ववत् स्थितः ॥
ततो ब्रवीद्गुह्यश्रेष्ठ सागरो विनयान्वितः ८३ ॥

(ईश भक्तवत्सल शरण्यं तेशरणं ब्रजामिराममे अभयं देहि ते लंकामार्गं ददामि) हे ईश भक्तन पर
प्रीति करने वाले शरणागत पर रक्षा करने वाले आपकी शरण को प्राप्त होता हौं हे रघुनंदन मोको
अभय दीजे आपको लंका जाने हेत मार्ग मैं देता हौं ७८ (अयं महाबाणः अमोघः कस्मिन् देशे निपात्य
तां बाणस्य अमोघपातिनः लक्ष्मं दर्शय) रघुनंदन बोले हे समुद्र तुमको तो अभय दिया परंतु
मेरा यह महाबाण अमोघ है अर्थात् लूया नहीं जायगा ताको छाड़ि किस देशमें किसको नाश करे
ताते बाणकी अमोघता मिटाने हेत निशाजा, मोको शीघ्र ही देखावो ७९ (रामस्य वचनं श्रुत्वा मह
शरं करे दृष्ट्वा महातेजामहोदधिः राधवं वाक्यमब्रवीत्) रघुनंदन के वचन सुनि महातेजवन्त बाण

हाथों में देखि महातेज वंत समुद्र रघुनंदन प्रति वचन बोला ८० (रामउत्तरप्रदेशेतुद्रुमकुल्यइति श्रुतःतत्रप्रदेशःपापात्मानःबहवःदिवा निशं) सिंधु बोला हे रघुनाथ जी मेरे उत्तर तट भाग में पुनः द्रुम कुल्यनामकरिके प्रसिद्ध स्थान है तिस भाग में महापापी आभीर बहुत से वास किहे हैं ते दिनों राति जीवहिंसा आदि व्यापार द्वारा ८१ (मांवाधंतेरघुश्रेष्ठतत्रतेशरःपात्यताम् रामेणसृष्टःवाणःतु आभीरमंडलंक्षणात्) मोको बाधाकरते हैं हे रघुवंशनाथ तिन आभीरों पर अपना वाण छाड़िये इतिसिंधुको वचन सुनिके रघुनंदन ने छोड़ा जो वाण सो उहां जाय पुनः आभीर मंडलको क्षणे में ८२ (हत्वापुनःसमागत्यपूर्वतूणीरेवस्थितः ततःविनयान्वितःसागरःरघुश्रेष्ठंअब्रवीत्) आभीरन को नाश करि वाण पुनः लौटि के पूर्ववत् तरकश में स्थित भया तदनंतर नम्रता युक्त समुद्र रघुनंदन प्रति बोला ८३ ॥

नलःसेतुंकरोत्वस्मिन्जलेमेविश्वकर्मणः॥सुतोधीमान्समर्थोऽस्मिन्कार्येलव्यवरो
हरिः ८४ कीर्तिजानंतुतेलोकासर्वलोकमलापहाम् ॥ इत्युक्त्वा राघवंनत्वाययोसिं
धुरदृश्यताम् ८५ ततोरामस्तुसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितः॥नलमाज्ञापयच्छीघ्रं
वानरैःसेतुबंधने ८६ ततोतिहृष्टःश्रवणेंद्रयूथपैमहानगेन्द्रप्रतिमैर्युतो नलः ॥ ब्रवन्ध
सेतुंशतयोजनाय तंसुविस्तृतं पर्वतपादपैर्दृढम् ८७ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकाण्डे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

(विश्वकर्मणःसुतःधीमान्लव्यवरःअस्मिन्कार्येसमर्थःहरिर्नलःमेअस्मिन्जलेसेतुंकरोतु) समुद्रबोला हे रघुनाथजी विश्वकर्माको पुत्र बड़ा बुद्धिमान् वाल अवस्था में ब्रह्मा करिके वरदान पाया है कितरे करस्पर्श पाषाण जलमें न बूडेंगे ताते इसकार्य में समर्थ वानर जो नल है सो मेरे इस जल में सेतुरचना करे ८४ (सर्वलोकमलापहाम्ते कीर्तिलोकाःजानंतुइतिउक्त्वा राघवंनत्वाययोसिंधुःअदृश्यतांययौ) हे रघुनाथजी यथा आपके औरभी उत्तम चरितहैं तैसे मेरेसेतु बांधना भी एक चरित्र है तामें सब लोकन के पापहरन हारी आपकी कीर्ति होइगी ताको सबलोक जानें ऐसा कहि रघुनंदन को प्रणाम करिके विदामांगि समुद्र जो प्रसिद्ध रूप किहे रहा सो अदृश्य है जाता भया ८५ (ततःसुग्रीवलक्ष्मणाभ्यांसमन्वितःतुरामःशीघ्रंसेतुबंधने वानरैःनलमाज्ञापयत्) समुद्र के गये पीछे सुग्रीवलक्ष्मण करिके सहित पुनः रघुनंदन शीघ्रहीसेतु बांधने हेत अपर वानरन सहित नलको आज्ञा दिये भाव सब वानर पर्वत वृक्ष लावें नल सेतुबांधे ८६ (ततःमहानगेन्द्रप्रतिमैःश्रवणेंद्रयूथपैःयुतःनलःअतिहृष्टःपर्वतपादपैःशतयोजनायतंसुविस्तृतं दृढंसेतुबंधं) तदनंतर महापर्वत के समान शरीर हैं जिनके ऐसे बडेबडे बली यूथपती वानरों करिके सहित नल अत्यन्त प्रसन्न मन पर्वतन वृक्षों करिके सौयोजन लंबा सुन्दर दशयोजन चौड़ा पुष्ट सेतुबांधते भये ८७ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डे तृतीयः प्रकाशः ३ ॥

सेतुमारंभमाणस्तु तत्र रामेश्वरं शिवम् ॥ संस्थाप्य पूजयित्वा ह रामो लोकहिताय च १ प्रणमेत्सेतुबंधयोद्वारामेश्वरं शिवम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापेभ्यो मुच्यते मदनः

ग्रहात् २ सेतुबंधेनरःस्नात्वाहृद्वारामेश्वरंहरम् ॥ संकल्पनियतोभूत्वागत्वावारा
णसीनरः ३ आनीयगंगासलिलंरामेशमभिषिच्यच ॥ समुद्रेक्षिततद्गारोब्रह्मप्रा
प्तोत्यसंशयः ४ कृतानिप्रथमेनाह्नायोजनानिचतुर्दश ॥ द्वितीयेनतथाचाह्नायो
जनानितुविंशतिः ५ तृतीयेनतथाचाह्नायोजनान्येकविंशतिः॥ चतुर्थेनतथाचा
ह्नाद्वाविंशतिरितिश्रुतम् ६ ॥

तच्चैवा ॥ शिवपूजन सेतुबंधायचले कपित्सेन सलंरु समीपगये । उत्तरेप्रभुदूत छुडायतहीं गतरावण
पै शुक्रशीशनये ॥ प्रभु प्रेरितहालसुनायपुनः वरणेकपि यूथपयूथ चये । नवचौविधिगंभुसहायप्रभुवचि
हौ रघुनाथहिस्तीयदये (सेतुंभारंभमाणःतुरामेश्वरंशिवंतत्रसंस्थाप्यपूजयित्वाचलोकहितायरामःआह)
गिरिजी बोले हे गिरिजा सेतुरचना प्रारंभकरि पुनः रामेश्वरनामे शिवतहांपर विधिवत्स्थापि पूजन
करिकै पुनः लोक के कल्याण अर्थ रघुनाथजी बोलते भये १ (यःरामेश्वरंशिवंहृत्वा सेतुबंधंप्रणमे
त्तमत्भनुग्रहात्ब्रह्महत्यादिपापेभ्यःमुच्यते) जो जन रामेश्वर शिवको दर्शन करी पुनः मेराकिया
हुआ जो सेतुबंध ताको प्रणाम करी सो ब्रह्महत्यादि महापापों ते छूटि जायगो २ (सेतुबंधेस्नात्वा
नरःरामेश्वरंहरंहृत्वासंकल्पनियतःभूत्यानरःवाराणसीगत्वा) सेतुबंधमें स्नान करिके नररामेश्वर
महादेव का दर्शन करि जल चढ़ावने की संकल्पकरि नियम सहित नर काशी को जायके ३ (गंगा
सलिलंआनीयरामेशंअभिषिच्यचतुर्भारःसमुद्रेक्षितब्रह्मप्राप्नोतिमसंशयः) काशीते गंगाजल आनि
रामेश्वरको स्नानकरायमांसा कांवरि भादि जो भार सो समुद्र में डारि ब्रह्मको प्राप्त होई यामें
संशय नहीं है ४ (प्रथमेनाह्नाचतुर्दशयोजनानिठूतानियतथाद्वितीयेनअह्नाविंशतियोजनानितु)
पहिले दिन चौदह योजनसेतु बनापुनः तेने दूसरेदिन बीसयोजन पुनःबना ५ (चतथातृतीयेनअ
ह्नाएकविंशतिःयोजनानिचतथाचतुर्थेनअह्नाद्वाविंशतिःइतिश्रुतं) पुनःतेसे तीसरेदिन इक्कीसयोजन
बना पुनः तेसे चौथेदिन बाह्मयोजन बना ऐसा सुनिपरा है ६ ॥

पंचमेनत्रयोविंशत्योजनानिसमंततः ॥ बंधसागरेसेतुंनरोवानरसत्तमः ७ तेनेव
जग्मुःकपयोयोजनानांशतंद्रुतम् ॥ असंख्याताःसुवेलाद्रिरुरुधुःप्लवगोत्तमाः ८
आरुह्यमारुतिरामोलक्ष्मणोप्यंगदंतथा ॥ दिदृक्षुराघबोलंकामारुरोहाचलंमह
त् ९ दृष्ट्वालंकांसुविस्तीर्णानानाचित्रध्वजाकुलाम् ॥ चित्रप्रासादसंवाधांस्वर्ण
प्राकारतोरणाम् १० परिखाभिःशतघ्नीभिःसंकर्मैश्चविराजिताम् ॥ प्रासादोपरि
विस्तीर्णप्रदेशेदशकंधरः ११ मंत्रिभिःसहितोवीरैःकिरीटदशकोज्ज्वलः ॥ नीला
द्रिशिखराकारःकालमेघसमप्रभः १२ रत्नदंडैःसितच्छत्रैरनेकैःपरिशोभितः ॥
एतस्मिन्नंतरेवद्धौमुक्तोरामेणवैशुकः १३ ॥

(पंचमेनत्रयोविंशत्योजनानिवानरसत्तमःनलःसमंततःसागरेसेतुंबंध)पंचये दिन तेइसयोजन
बना इसीप्रकार वानरन में उचमनल सम्पूर्ण समुद्र सो योजन में सेतु बांधतेभये ७ (तेनएवकपयः
शतंयोजनानांद्रुतंजग्मुःअसंख्याताःप्लवगोत्तमाःसुवेलाद्रिरुरुधुः) तिसीसेतु मार्गकरिकै सबवानर सो
योजन समुद्र के पारशिग्रही जातेभये असंख्यन वानरोत्तम समुद्रपारतट पै जो सुवेलपर्वत ताको

रूथि स्नेतेभये ८ (मारुतिरामःभारुहयतथाभंगदंलक्ष्मणःअपिलंकादिदृभूराधवःमहत्अचलंमारुह)
 हनुमान् पर रघुनंदन सवार तैसेही भंगदपर लक्ष्मण सवार लंकाको देखने हेत दोऊ जने वड़ेभारी
 सुवेल पर्वतपर चढ़िजाते भये ९ (सुविस्तीर्णस्वर्णप्राकारतोरणामचित्रप्रासादसंवाभाम्नानाचित्रध्व
 जाकुलाम्लंकादृष्ट्वा) सुंदरवड़े विस्तार में सोनेमय कोट सोनेके फाटक सोने के मणिमय चित्र
 मन्दिर समूह अनेकरंग रेशमीजरतारी समूहध्वजा शोभित ऐसी लंकापुरी को देखतेभये १० (परि
 खाभिःचशतध्वनीभिःसंक्रमैःविराजिताम् प्रासादउपरिविस्तीर्णप्रदेशेदशकंधरः) खावां करिकै धुसबुज
 नपर चढ़ी तोपन करिकै भीतरजाने की मर्गि विपम शोभित हैं वड़ेभारी मन्दिरके ऊपर विस्तार
 सहित बनाहुआ धौरहर तामें रावण कैला बैठा है ११ (मंत्रिभिःवीरैःसहितः नीलाद्रिशिखराकारः
 काल मेघसमप्रभःकिरीटदशकोज्ज्वलः) मंत्री अरुवीरन करिकै सहित नीलपर्वतके शिखरके भा-
 कार शरीर काले मेघोंसम तनकी प्रभाशीशनपर दशौं किरीट उज्ज्वल चमकि रहे हैं १२ (रत्नदंडैः
 अनेकैसितच्छत्रैःपरिशोभितःएतस्मिन्अंतरेशुकःवैवद्धःरामेणमुक्तः) रत्नजटित दंड जिनमें ऐसे अने-
 कन इवते छत्रों करिकै शोभित रावण को देखि ताहींसमयमें बांधाहुआ शुक राक्षस ताको रघुनंदन
 ने, छुड़ाय दिया १३ ॥

वानरैस्ताडितःसम्यक्दशाननमुपागतः ॥ प्रहसनूरावणःप्राह पीडितःकिंपरैःशु
 क १४ रावणस्यवचःश्रुत्वाशुकोवचनमब्रवीत् ॥ सागरस्योत्तरेतीरेऽब्रुवंतेवचनं
 यथा ॥ ततोउत्प्लुत्यकपयोगृहीत्वामाक्षणात्ततः १५ मुष्टिभिर्नखदंतैश्चहंतुंलोसुप्र
 चक्रमुः ॥ ततोमारांमरक्षेतिक्रोशंतंरघुपुंगवः १६ विसृज्यतामितिप्राहविसृष्टोहं
 कपीश्वरैः॥ततोहमागतोभीत्वादृष्ट्वातद्वानरंबलम् १७ राक्षसानांबलौघस्यवानरेंद्र
 बलस्यच ॥ नैतयोर्विद्यतेसंधिर्देवदानवयोरिव १८ पुरप्राकारमायांतिक्षिप्रमेक
 तरंकुरु ॥ सीतांवास्मैप्रयच्छाशुयुद्धंवादीयतांप्रभो १९ ॥

(सम्यक्वानरैःताडितःदशाननंउपागतःरावणःप्रहसन्प्राहशुकपरैःपीडितःकिं) सब वानरोंकरिकै
 मारा गयाहुआ शुकछूटेपर रावणके समीप गया उदास देखि रावण हैंसतसंत बोला हेशुक तू शत्रुन
 करिमारा गया क्या १४ (रावणस्यवचःश्रुत्वाशुकःवचनंअब्रवीत् सागरस्यउत्तरेतीरेतेवचनंयथाऽब्रुव
 न्ततःकपयःक्षणात्उत्प्लुत्यमागृहीत्वाततः) रावण के कहे वचन सुनिकै शुकराक्षस रावण प्रतिवचन
 बोला हे राजन् समुद्र के उत्तरतीर में सुर्याव प्रति आपको वचन में जैसेही सुनावने लगा तैसेही
 बानर क्षणैभरमें कूदि मोको पकरि तदनन्तर १५ (मुष्टिभिःचनखदंतैःहंतुंलोसुप्रचक्रमुःततःराममार
 क्षइतिक्रोशंतंरघुपुंगवः) मुष्टिकनकरिकै पुनः नखांदांतों करिकै मोको मारडालने हेत भंग खंडन
 करनेलगे तदनन्तर मैं पुकार्यों हे राम मेरीरक्षाकरौ इसप्रकारमोको पुकारतेसुनिकै रघुवंशनाथदया
 करिबोले १६ (विसृज्यतांइतिप्राहअहंकपीश्वरैःविसृष्टःततःअहंतत्त्वानरंबलंदृष्ट्वाभीत्वाआगतः)
 रघुनंदन बोले कि इसको छाड़िदेवो ऐसा कहे तब मैं वानरों करि छूटा तदनंतर मैं तिन वानरों
 की सेना को देखताहुआ लडर आय आपके समीप, प्राप्तभया १७ (राक्षसानांबलौघस्यचवानरेंद्र
 बलस्यएतयोःसंधिःनविद्यतेदेवदानवयोःइव) हे राजन् राक्षसों की सेनासमूहक पुनःउत्तम वानरों
 की सेना समूहक इनदोऊ को मिलाप कभीनहीं है सकाहै कौनभांति देवता दैत्यों की नाई अचल
 विरोध है १८ (पुरप्राकारक्षिप्रंआयांतिप्रभोएकतरंकुरुवास्मैसीतांमाशुप्रयच्छाशुयुद्धंदीयतां) पुरकोट

के ऊपर को वानर शीघ्रही आयजाने चाहते हैं ताते हे प्रभो दोमें एकबात करौ कितौराम के अर्थ सीताको शीघ्रही देउ अथवा युद्धदेवो अन्यभांति संधिनहीं होनहार है १९ ॥

मामाहरामस्त्वंब्रूहि रावणंमद्वचःशुक ॥ यद्वलंचसमाश्रित्य सीतांमेहतवान
सि २० तद्दर्शययथाकामंससैन्यःसहबांधवः ॥ इवःकालेनगरीलंकांसप्राकारां
सतोरणाम् २१ राक्षसंचवलंपश्यशरैर्विध्वंसितेमया ॥ घोररोषमहंमोक्षेयवलंधार
यरावण २२ इत्युक्तोपररामाथरामःकमललोचनः ॥ एकस्थानगतायत्रचत्वारः
पुरुषर्षभाः २३ श्रीरामोलक्ष्मणश्चैवसुग्रीवश्चविभीषणः ॥ एतेएवसमर्थास्ते
लंकांनाशयितुंप्रभो २४ उत्पाद्यभस्मीकरणेसर्वेतिष्ठंतुवानराः॥तस्ययादृग्वलं
दृष्टरूपंप्रहरणानिच २५ बधिष्यंतिपुरंसर्वेएकस्तिष्ठंतुतेत्रयः ॥ पश्यवानरसेनां
तामसंख्यातांप्रपूरिताम् २६ ॥

(रामःमांआहशुकमद्वचःतंरावणंब्रूहियद्वलंचसमाश्रित्यमेसीतांहृतवानसि) पुनः राममोप्रति
बोले कि हे शुक मेरा वचन तुम रावणप्रति ऐसा कहेउ कि जौने बलकेभरोसेते मेरी सीताको हरि
लायो है २० (ससैन्यःसहबांधवःयथाकामंतद्दर्शयइवःकालेनप्राकारांसतोरणाम्नगरीलंकाम्) स-
हित सेनासहित भाइन जैसी इच्छाहोइ सो बलदेखावो कहिह प्रातःकालही में सहित मन्दिर सहित
द्वारनगरी लंकाको २१ (राक्षसंचवलंमयाशरैः विध्वंसितंपश्यरावणवलंधारयअहंघोररोषंमोक्षे)
वीरबली राक्षसोंको राक्षसी सेनाको मेरे बाणोंकरिकै नाशकोप्राप्तदेखैगो ताते हे रावण तू अपनाबल
संभारि धारणकरु में अपने घोररोषको छोड़ताहो २२ (इतिउक्त्वाअथकमललोचनः रामःउपरराम
चत्वारःपुरुषर्षभाःयत्रएकस्थानगताः) ऐसा कहिकै तत्र कमलनयनराम चुपहोजातेभये पुनः हेरावण
चारिहुपुरुषोत्तम जहां एकस्थानपरप्राप्तहोवै २३ (श्रीरामःचएवलक्ष्मणःसुग्रीवःचविभीषणःहे प्रभो
तेलकांनाशयितुंएतेएवसमर्थाः) श्रीराम पुनः लक्ष्मण सुग्रीव पुनः विभीषण हे प्रभो तुम्हारीलंकाको
नाशकरिवेको ये चारिहीजने समर्थ कैसे हैं २४ (उत्पाद्यभस्मीकरणेवानराःसर्वेतिष्ठंतुतस्ययादृग्व
लंरूपंचप्रहरणानिदृष्टं) लंकाकोउखारि भस्मकरिदेवेको चारिहीसमर्थ हैं वानर सब बैठेहीरहैं तिन
रामको जिस प्रकारको बल स्वरूप उनके हथियार जैसे मैंनेदेखा है २५ (एकःसर्वपुरंबधिष्यंतितेत्र
यःतिष्ठंतु वानरसेनांतांपश्यअसंख्यातांप्रपूरिताम्) ताते निश्चयहोता है कि एक रामही सब लंका
पुरको नाशकरनेकोसमर्थ हैं अरु लक्ष्मण सुग्रीव विभीषणते तीनिहूँ बैठेहीरहैं पुनः हे राजन् अब
वानरीसेना जो आई है ताहिदेखिये असंख्यनभाव जिनकी गिनतीनहीं है सर्वत्र भरिपूरिरहेहैं २६ ॥

गर्जंतिवानरास्तत्रपश्यपर्वतसन्निभाः ॥ नशक्यास्तेगणयितुं प्राधान्येनब्रवीमि
ते २७ एषयोभिमुखोलंकांनदन्तिष्ठतिवानरः ॥ यूथपानांसहस्राणांशतेनपरि
वारितः २८ सुग्रीवसेनाधिपतिर्नीलोनामाग्निनंदनः ॥ एषपर्वतशृंगाभःपद्मकिं
जल्कसन्निभः २९ स्फोटयत्यभिसंरब्धोलांगूलंचपुनःपुनः ॥ युवराजोंगदोनाम
वालिपुत्रोऽतिवीर्यवान् ३० येनदृष्टाजनकजारामस्यातीववस्त्रभा ॥ हनुमानेष

विख्यातोहतोयेनतवात्मजः ३१ श्वेतोरजतसंकाशोमहाबुद्धिपराक्रमः ॥ तूर्णसु
ग्रीवमागम्यपुनर्गच्छतिवानरः ३२ ॥

(पश्यपर्वतसन्निभाः वानराः तत्रगर्जतितेगणयितुंशक्याः प्राधान्येनतेब्रवीमि) देखिये पर्वतकेतुल्य वानर तहांपर गर्जिरहे हैं ते गननेको अशक्य हैं भाव नहीं गनिवेयोग्य हैं तिनमें मुख्यकरिकैं मैं तुम प्रतिकहताहैं २७ (एषवानरः यः लंकां अभिमुखः नदन्तिष्ठति शतेनसहस्राणांयूथपानांपरिवारितः) यह वानर जो लंकाके संमुखगर्जताहुआ बैठाहै अरु सौ हजार यूथपती वानरों करिकैं परिवेष्टित है २८ (नीलः नामअग्निनन्दनः सुग्रीवसेनाधिपतिः) नीलनामे अग्निकोपुत्र सुग्रीवको सेनापती है (एषपद्मकिंजल्कसन्निभः पर्वतशृंगभः) यह जो कमलकी केसर सम तनकीदीप्ति पर्वत शृंगतुल्य भारी शरीर है २९ (अभिसंरब्धः पुनः पुनः लांगूलं चस्फोटयति वालिपुत्रः अतिवीर्यवान् अंगदः नामयुवराजः) क्रोधकरिकैं जो बारंबार लांगूलको भूमेमें पटकिरहाहै यह वालिकोपुत्र अत्यन्त पराक्रम युक्त अंगद नामे युवराजहै ३० (येनजनकजादृष्टायेनतवआत्मजः हतः रामस्यअतीवबलभाएपहुनुमान् विख्यातः) जिसने समुद्रनाधि रामकीभार्या जनकपुत्री को देखा जिसने वन उजारि तुम्हारेपुत्र अशकुमारको मारा रामको अत्यन्तप्रिय सेवक है यह हनुमान् नामकरिकैं लोकमें प्रसिद्ध है ३१ (रजतसंकाशः वानरमहाबुद्धिपराक्रमः तूर्णसुग्रीवंआगम्यपुनः गच्छतिश्वेतः) जिसकी चांदीके तुल्य देहकीकांति है सो वानर महाबुद्धिवंत महापराक्रमी जो शीघ्रही सुग्रीवके समीप आवताहै पुनः लौटिजाता है याकोश्वेतनामहै ३२ ॥

यस्त्वेषसिंहसंकाशः पश्यत्यतुलविक्रमः ॥ रंभोनाममहासत्वो लंकां नाशयितुंक्षमः ३३ एषपश्यतिवैलंकांदिधक्षन्निववानरः ॥ शरभोनामराजेंद्रकोटियूथपनायकः ३४ पनसश्चमहावीर्योमैदश्चद्विविदस्तथा ॥ नलश्चसेतुकर्तासौविश्वकर्मसुतोबली ३५ वानराणां वर्णनेवासंख्यानेवाकईश्वरः ॥ शूराः सर्वेमहाकायाः सर्वेयुद्धाभिकांक्षिणः ३६ शक्ताः सर्वेचूर्णयितुंलंकांरक्षोगणैः सह ॥ एतेषांबलसंख्यानंप्रत्येकंचिमितेशृणु ३७ एषांकोटिसहस्राणिनवपंचचसप्तच ॥ तथाशंखसहस्राणि तथाबुदशतानिच ३८ सुग्रीवसचिवानांतेबलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ अन्येषांतुबलं नाहंवक्तुंशक्तोऽस्मिरावण ३९ ॥

(तुएषयः सिंहसंकाशः अतुल विक्रमः पश्यति महासत्वः रंभः नामलंकां नाशयितुंक्षमः) पुनः यहजो वानर सिंह तुल्य अतुल पराक्रमी देखिरहा है महावीर्यवंत याको रंभ नाम लंका नाश करनेको समर्थ है ३३ (राजेंद्रएषवानरः लंकांवैदिधक्षन्निवपश्यति कोटियूथपनायकः शरभः नाम) हेराजेंद्र यहवानर मानों लंका को निश्चय करिभस्म करि देने चाहताहै ऐसा देखि रहाहै कोटि यूथप तिनको मालिक याको शरभ नामहै ३४ (महावीर्यः पनसः चमैदः चतथाद्विविदः चमसौनलः विश्वकर्मसुतः बली सेतुकर्ता) महावीर्यवंत पनस पुनः मैदतैसे द्विविद पुनः ये नल हैं विश्वकर्मा के पुत्र बड़े बली सेतु इसीने किया है ३५ (वानराणां वर्णनेवासंख्यानेवाकईश्वरः सर्वेमहाकायाः शूराः सर्वेयुद्धाभिकांक्षिणः) वानरों को वर्णन करने को वा गनती करने को कौन समर्थ है सब बड़ेभारी शरीर वाले शूर तथा सर्व युद्ध की इच्छा किहे हैं ३६ (रक्षोगणैः सहलंकांचूर्णयितुं सर्वेशक्ताः एतेषांप्रत्येकं बल

संख्यान्तेवचिशृणु) राक्षसन सहित लंका को मर्दि चूर्ण करिवे को सब समर्थ हैं इन सबके एक एकके सेना की संख्या आप प्रति कहता हों सुनिये ३७ इनमेंनीलकेकरोरि अंगदके हजार करोरि हनुमान्के नवकरोरि श्वेतके पांचकरोरि रंभके सातकरोरि शरभके एकशंख पनसके हजारशंख तैसेमें द के हजारशंख द्विविदके एकअर्बनलके सौअर्ब ३८ (सुग्रीवसचिवानांते एतत्त्वलंप्रकीर्तितं रावणतु अन्येषां बलंवक्तुमहंनशक्तःअस्मि) सुग्रीव के दशौ मंत्रिनके यह सेना की गनती है हे रावण पुनः जामवंत केशरी सुपेण गज गवय गवाक्षादि औरन की सेना को कहनेमें मैं समर्थ नहींहों अर्थात् असंख्य है ३६ ॥

रामोनमानुषःसाक्षादादिनारायणःपरः ॥ सीतासाक्षाज्जगद्धेतुश्चिच्छक्तिजगदात्मिका ४० ताम्यामेवसमुत्पन्नजगत्स्थावरजंगमम् ॥ तस्माद्रामश्चसीताचजगतस्तस्थुषश्चतौ ४१ पितरौपृथिवीपालतयोर्वैरीकथंभवेत् ॥ अजानतात्वयानीताजगन्मातैवजानकी ४२ क्षणनाशिनिसंसारेशरीरेक्षणभंगुरे । पंचभूतात्मकेराजन्चतुर्विंशतितत्त्वके ४३ मलमांसास्थिदुर्गंधभूयिष्ठेऽहंकृतालये ॥ कैवास्थाव्यतिरिक्तस्यकायेतवजडात्मके ४३ यत्कृतेब्रह्महत्यादिपातकानिकृतानिते ॥ भोगभोक्तातुयादेहःसदेहोत्रपतिष्यति ४५ ॥

(रामःमानुषःनपरःसाक्षात्आदिनारायणःसीतासाक्षात्चिच्छक्तिःजगद्धेतुःजगदात्मिका) राममनुष्य नहीं हैं प्रकृति ते परे साक्षात् आदि नारायण हैं तथा सीता साक्षात् चैतन्य आदि शक्ति उत्पत्तिपालन प्रलयादि करनहारी जगत्की कारण जगकी आत्महिं ४० (स्थावरजंगमजगत्ताभ्यां एव समुत्पन्नं तस्मात् रामः चसीताचतौजगतः चतस्थुषः) स्थावर जे चलते नहीं जंगम जे चलते हैं इत्यादि मय जगत् इन दोऊ सीताराम करिके उत्पन्न भयाहै ताते राम पुनः सीता ये दोऊ जंगम पुनः स्थावर के ४१ (पितरौपृथिवीपाल तयोर्वैरीकथंभवेत् जगत्माताएवजानकी त्वयाअजानता नीता) चराचर के माता पिता पृथिवी के पालन हारे सीताराम तिनको वैरी कैसे कोऊ होय सो जगत् की माता निश्चय करि जानकी तिनको हेरावण तुमने अजानताते इहां को हरिलायो ४२ (राजन्क्षणनाशिनि संसारेचतुर्विंशतितत्त्वके पंचभूतात्मके क्षणभंगुरेशरीरे) हेराजन् क्षण में नाशमान ऐसे झूठेसंसार में दशेंद्री पंच तत्त्व पंच तनमात्रा चारि अंतःकरण इति चौबिस तत्त्वमय पांचौ भूत आकाश वायुः अग्नि जल भूमि इति पांचौ भूतोंको क्षणभंगी शरीर में ४३ (अहंकृतालयेमलमांस अस्थिदुर्गंधभूयिष्ठेव्यतिरिक्तस्यतव जडात्मकेकैवास्थे) अहंकारको मंदिर जामें मल मांस अस्थि इत्यादि दुर्गंध बहुत भारी त्यहिते विलग जीवात्मा तुम इस जडात्मक देहमें विश्वास करिवे योग्यहौ भाव झूठी देह को सत्य मानते हौ यह तुम्हारे योग्य नहींहै ४४ (यत्कृतेब्रह्महत्यादिपातकानिकृतानितु भोगभोक्तायादेहः सदेहः अत्रपतिष्यति) जिस देह के कीन्हेते तुम आत्मरूप भूलि देहाभिमानी है ब्रह्महत्यादि अनेकन पाप कीन्हेउ पुनः सुख भोग को भोगनेवाली जोदेह सोइहै छूटि जायगी ४५ ॥

पुण्यपापेसमायातोर्जीवेनसुखदुःखयोः ॥ कारणेदेहयोगादि नात्मनःकुरुतेऽनिशम् ४६ यावद्देहोस्मिकर्तास्मीत्यात्माहंकुरुतेवशः ॥ अध्यासात्तावदेवस्याज्जन्म

नाशादिसंभवः ४७ तस्मात्त्वंत्यजदेहादावभिमानंमहामते ॥ आत्मातिनिर्मलः शुद्धो विज्ञानात्माचलोव्ययः ४८ स्वाज्ञानवशतो बंधं प्रतिपद्य विमुह्यति ॥ तस्मात्त्वं शुद्धभावेन ज्ञात्वात्मानं सदा स्मर ४९ विरात भज सर्वत्र पुत्रदारगृहादिषु ॥ निरयेष्वपि भोगः स्याच्छ्वसूकरतनावपि ५० देहं लब्ध्वा विवेकाढ्यं द्विजत्वं वा विशेषतः ॥ तत्रापि भारते वर्षे कर्मभूमौ सुदुर्लभम् ५१ ॥

(सुखदुःखयोः कारणे पुण्यपापे जीवेन समायातः देहयोगादि आत्मनः अनिशं न कुरुतः) सुखदुःख को कारण पुण्य पापते तौ जीवके साथही जाते हैं तेई देहादि संयोग पाय सदा सुखदुःख उत्पन्न करा करते हैं अरु देहयोगादि को दुःखसुख आत्मामें निरंतर नहीं करते हैं भाव देहादि से भिन्न आत्मा को दुःखसुख नहीं होता है ४६ (देहः अस्मि कर्ता अस्मि इति अवशः यावत् आत्मा अहं कुरुते तावत् अध्यासात् जन्मनाशादि संभवः स्यात्) देह में हों करतामें हों अर्थात् मैं ब्राह्मण तपवल से लोकभस्म करिसक्ताहों इत्यादि प्रकृति वश जबतक आत्माकर्तृत्व को अभिमान करता है तबतक जड़चैतन्य की एकता बुद्धि इति अध्यास ते जन्म मरणादि को प्राप्त होता भाव अध्यासहीनज्ञानी भक्तों को देह संयोग में भी दुःखसुख नहीं होता है ४७ (तस्मात् महामते देहादौ अभिमानं त्वं त्यज आत्मा अतिनिर्मल शुद्धः विज्ञानात्मा अचलः अव्ययः) ताते हे महाबुद्धिवंत रावण देहादिकों विषे जो अभिमान है तादि तुम त्याग करौ देहादि ते भिन्न तुम्हारा आत्मा अत्यंत अमल शुद्ध विज्ञान रूप अचल अविनाशी है ४८ (स्वज्ञानवशतः बंधं प्रतिपद्य विमुह्यति तस्मात् शुद्धभावेन त्वं आत्मानं ज्ञात्वा सदा स्मर) अपने आत्मरूप बिसारि देह बुद्धी अज्ञान वशते पुरुष बंधन को प्राप्त है पुरुष मोहित होता है ताते राग द्वेष रहित शुद्ध भाव करिकै तुम आत्माको जानि सदा स्मरण करौ ४९ (पुत्रदारगृहादिषु सर्वत्र विरतिं भज भोगः निरयेषु अपि श्वसूकरतनौ अपि स्यात्) पुत्रस्त्री गृहादि विषे सर्वत्र विराग को करौ क्योंकि भोग तौ नरक विषे भी है तथा कूकर सूकर तन में भी भोग है ५० (विवेकाढ्यं देहं लब्ध्वा वा विशेषतः द्विजत्वं तत्रापि सुदुर्लभम् कर्मभूमौ भारते वर्षे) विवेक योग्य मानुष देह पाय तामें भी विशेषता ब्राह्मण तन को पाय ताहू पर उत्तम जीवन को दुर्लभ जो नहीं प्राप्त होने योग्य ऐसी कर्म सिद्धि होने योग्य भूमि भारत वर्ष में जन्म पाय कै भाव परलोक साधन में ऐसी उत्तमता प्राप्त हवै कै ५१ ॥

कोविद्वानात्मसात्कृत्वा देहं भोगानुगोभवेत् ॥ अतस्त्वं ब्राह्मणो भूत्वा पौलस्त्यतनयश्च सन् ५२ अज्ञानी विसदा भोगाननुधावसि किमुधा ॥ इतः परं वा त्यक्त्वा त्वंसर्वसंगं समाश्रय ५३ राममेव परात्मानं भक्तिभावेन सर्वदा ॥ सीतां समर्प्य रामाय तत्पादानुचरो भव ५४ विमुक्तः सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं प्रयास्यसि ॥ नो चेद्गमिष्यसे धोधः पुनरावृत्तिवर्जितः ॥ अंगीकुरुष्व मद्वाक्यं हितमेव वदामि ते ५५ सत्संगतिं कुरु भज स्वहरिं शरण्यं श्रीराघवं मरकतोपलकांतिकान्तम् ॥ सीतासमेतमनिशं धृतचापबाणं सुग्रीवलक्ष्मणविभीषणसेवितांघ्रिं ५६ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडे चतुर्थः सर्गः ४ ॥

(कःविद्वान् आत्मसात्कृत्वा देहं भोगानुगो भवेत् अतः त्वं ब्राह्मणः भूत्वा च पौलस्त्यतनयः सन्) ऐसा सांगो-पांग पायकै को ऐसा विद्वान् है जो देहके आर्धान आत्मा को करि देहके भोगों को दास की भांति सेवन करै ताते तुम ब्राह्मण हवैकै पुनः पुलस्त्य के पुत्रको पुत्रहवैकै ५२ (अज्ञानी इव सदा भोगान् अनुकिंमुधा धावति डतः परं त्व सर्वसंगं त्यक्त्वा वासमाश्रय) अज्ञानीकी नाई सदा देह सुख भोगन के पाछे क्या वृथा धावतेहौ इसकी उपरांत तुम सबको संगत्यागि आत्मरूप ग्रहण करौ वारामकी शरण होउ ५३ (सीतारामाय समर्प्य रामं एव परात्मानं सर्वदा भक्तिभावेन तत्पादं अनुचरः भव) सीताको राम के अर्थ समर्प्य रामको निश्चय परात्मा मानि सबकाल में भक्ति सेवक सेव्यभावकी प्रीति करिकै तिनके पांयन के सेवक होउ ५४ (सर्वपापेभ्यः विमुक्तः विष्णुलोकं प्रयास्यसि नो चेत् पुनरावृत्य वर्जित-अधोऽधः गमिष्यसे ते हितं एव वदामि मत्वा क्यं अंगीकुरुष्व) सब पापन ते छूटि विष्णुके लोकको जाय-गो अरु जो ऐसा न करौगे तो उक्त लोक त्यागि नीचे ते नीचे लोकन को प्राप्त होहुगे हे राजन् तुम्हारे हितको निश्चय करि कहताहौ ताते मेरा वचन अंगीकार करौ ५५ (सत्संगं तिकुरु मरकतोत्पलकांति कांतं धृतचापवाण सुग्रीवलक्ष्मण विभीषण सेविता धीं शरण्यं सीता समेतं हरिं राघवं अनिशं भजस्व) हेरावण सज्जनों को संग करौ पुनः मरकत मणिकी कांतिसम सुंदर श्याम तन धनुषवाण धारण किहे सुग्रीव लक्ष्मण विभीषणादि करिकै सेवितहैं चरण जिनके शरणागतके रक्षा करने में तत्पर सीता करिकै सहित हरि श्रीराम रघुवंश नाथ को निरंतर भजन करौ ५६ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डे चतुर्थः प्रकाशः ४ ॥

श्रुत्वा शुक्रमुखो दूगीतं वाक्यमज्ञाननाशनम् ॥ रावणः क्रोधताम्राक्षो दहन्निव तम ब्रवीत् १ अनुजीव्य सुदुर्बुद्धे गुरुवद्भाषसे कथम् ॥ शासिताहं त्रिजगतां त्वं मां शिक्ष यन्न लज्जसे २ इदानीमेव हन्मि त्वां किंतु पूर्वकृतं तव ॥ स्मरामिते न रक्षामि त्वां यद्यपि वधोचितम् ३ इतो गच्छ विमूढत्वमेवं श्रोतुं न मे क्षमम् ॥ महाप्रासाद इत्युक्त्वा वेपमा नो गृहं ययौ ४ शुकोपि ब्राह्मणः पूर्वब्रह्मिष्ठो ब्रह्मवित्तमः ॥ वानप्रस्थविधानेन वनेति ष्ठन्स्वकर्मकृत् ५ देवानामभिवृद्धयर्थं विनाशाय सुरद्विषाम् ॥ चकार यज्ञवितति मविच्छिन्नां महामतिः ६ ॥

सवैया ॥ शुक्रभाषत रावण क्रोधतहीं तजि राक्षस देहद्विजत्वलई । शुभ भाषत रावण मातपिता सुनि ताहि तपै नहि कान दई ॥ सदनोपरि रावण देखि प्रभू शरत्यागित छत्र किरीटहई । पुनिराघव रावण प्रेरित वानर राक्षस युद्धसमूह भई ॥ (अज्ञाननाशनं शुक्रमुखस्य उदगीतं वाक्यं श्रुत्वा रावणः क्रोधताम्राक्षः तं दहन् इव ब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा अज्ञान को नाश करनेवाला शुक्रमुखका कहा वचन सुनिकै रावण क्रोधकरि लालनेत्र करि मानो ताशुक को भस्म करि देइगो ऐसा कठोर वचन बोलता भया १ (सुदुर्बुद्धे अनुजीव्य गुरुवत् कथं भाषसे त्रिजगतां शासिताऽहं मां त्वं शिक्षयन्न लज्जसेन) हे अत्यंत दुर्बुद्धे तू मेरा सेवक है कै मोसों गुरुके समान कैसे वार्ताकरता है तीनिहुं लोकन को शिक्षा करनेवाला मैंहों मोको तू शिक्षाकरता हुआ लज्जा को नहीं प्राप्त होता है २ (त्वां इदानीं एव हन्मि किं तु तव पूर्वकृतं स्मरामिते न त्वारक्षामि यद्यपि वधोचितम्) हे शुकतोको अभीवध करता परन्तु तू प्रथम

बड़ेकार्य किया है सोई स्मरण करिकै तेरीरक्षा करताहौं यद्यपि मारनेयोग्य है ३ (विमूढत्वद्वन्द्वः गच्छएवंश्रोतुंमेनक्षमम्महाप्रासादइतिउक्तवावेपमानःगृह्ययौ) हे मूढतू इहां ते चलाजा ऐसे तेरे बचन में नहींसुनि सक्ताहौं तब हेराजन् बड़ीआपकी अनुग्रह भई ऐसा कहि शुककंपमान राक्षस तन त्यागि पूर्ववत् ब्राह्मण है आपने आश्रम को जाताभया ४ (शुकःअपिपूर्वं ब्रह्मिष्ठःब्रह्मवित्तमःब्राह्मणः वनेतिष्ठन् वानप्रस्थ विधानेनस्वकर्मकृत्) यह शुकभी पूर्व ब्रह्मवेत्तनमें श्रेष्ठब्रह्म विचार मेंरत ब्राह्मण है वन में वसत संते वानप्रस्थ विधान करिकै अपने कर्म करतारहा ५ (सुरद्विषाम्बिनाशाय देवानांअभिवृद्धयर्थमहामातिःअविच्छिन्नायज्ञवितर्तिचकार) राक्षसों के नाश अर्थ देवतों के वृद्धयर्थ महाबुद्धिमान् शुकछिद्ररहित निरंतरयज्ञ विधिवत् करतारहा ६ ॥

राक्षसानांविरोधोभूच्छुकोदेवहितोद्यतः ॥ वज्रदंष्ट्रइतिख्यातस्तत्रैकोराक्षसोमहान् ७ अंतरंप्रेप्सुरातिष्ठच्छुकायकरणोद्यतः ॥ कदाचिदागतोगस्त्यस्तस्याश्रमपदंमुनेः ८ तेनसंपूजितोगस्त्योभोजनार्थनिमंत्रितः ॥ गतेस्नातुंमुनौकुंभसंभवे प्राप्यचांतरम् ९ अगस्त्यरूपधृक्शुकोपिराक्षसःशुकमब्रवीत् ॥ यदिदास्यसिमेब्रह्मभोजनंदेहिसामिषं १० बहुकालंनभुक्तंमेमांसंछागांगसंभवम् ॥ तथेतिकारया मासमांसभोज्यंसविस्तरम् ११ उपविष्टेमुनौभोक्तुराक्षसोतीवसुंदरम् ॥ शुकभार्यावपुर्धृत्वातांचांतर्मोहयन्खलः १२ ॥

(शुकःदेवहितोद्यतःराक्षसानांविरोधःअभूत्तत्रैकः महान्राक्षसःवज्रदंष्ट्रइतिख्यातः) शुकतौ देवतोंके हितके उपाय यज्ञादि करतारहा ताते शुकपै राक्षसोंका विरोध भया तहांएक महान्राक्षस वज्रदंष्ट्र ऐसानाम प्रसिद्ध ७ (शुकस्यअपकरणोद्यतःअंतरंप्रेप्सुः आतिष्ठत्कदाचित्तस्यमुनेःआश्रमं पदंअगस्त्यःआगतः) शुकके अपकार अर्थात् हानि विघ्नकरने पर राक्षस उद्यत रहा ताते विघ्नकरिबे योग्य छिद्र देखतारहा किसीसमय में तिसशुक मुनि के आश्रम को अगस्त्य ऋषि आचते भये ८ (तेनअगस्त्यःसंपूजितःभोजनार्थनिमंत्रितःकुंभसंभवेमुनौस्नातुंगतेचअंतरंप्राप्य) तिसशुक ब्राह्मण ने अगस्त्यजीको विधिवत् पूजन करि भोजन हेत निमंत्रण किया कुंभते उत्पत्ति अर्थात् अगस्त्य मुनि को स्नानहेत जातसंते अर्थात् जब अगस्त्यजी स्नानकरने हेत गये तब संधिपाय कै ९ (सः अपिराक्षसःअगस्त्यरूपधृक्शुकमब्रवीत्ब्रह्मन्पदिमेभोजनंदास्यसिसामिषंदेहि) सो वज्रदंष्ट्राक्षस अगस्त्यको रूप धरिशुक ब्राह्मण प्रति बोला हे ब्रह्मन् जो हमको भोजन दियाचाहते हौं तौ आमिष सहित भोजन दीजिये १० (छागांगसंभवम्मांसंमेबहुकालंनभुक्तं तथाइतिसमांसविस्तरम्भोज्यंकारयामास) हे शुकछागके अंगसों उत्पन्नभया अर्थात् छागरे को मांस को बहुत दिनभये में नहीं खाया है ताते मांस भोजन चाहताहौं शुक बोला हे अगस्त्यजी जो आप कहते हौं सोई करौंगो ऐसा कहि मांस सहित बहुत प्रकारके भोजन तयारकरता भया ११ (मुनौभोक्तुंउपविष्टेराक्षसःअतीव सुंदरम् शुकभार्यावपुर्धृत्वाचखलःतांमोहयन्) जब अगस्त्य मुनि भोजनकरनेहेत बैठे तब राक्षस अत्यन्त सुंदर शुककी स्त्रीको स्वरूप धरि दुष्ट आपतौ रसोई के भीतर गया अरु शुककी स्त्रीको मोहित करि दिया वह भीतरै परी रही १२ ॥

नरमांसंददौतस्मैसुपक्वंबहुविस्तरं ॥ दत्त्वैवांतर्दधेरक्षस्ततोदृष्ट्वाचुकोपसः १३

अमेध्यमानुषं मांसमगस्त्यः शुकमब्रवीत् ॥ अभक्ष्यमानुषं मांसं दत्तवानसि दुर्मते १४ मह्यं त्वं राक्षसो भूत्वा तिष्ठ त्वं मानुषाशनः ॥ इति शप्तः पुरोभीत्या प्राहा गस्त्यं मुने त्वया १५ इदानीं भाषितं मेद्यमांसं देहीति विस्तरम् ॥ तथैव दत्तं मे देव किं मे शापं प्रदास्यसि १६ श्रुत्वा शुकस्य वचनं मुहूर्तं ध्यानमास्थितः ॥ ज्ञात्वा राक्षःकृतं सर्वतः तः प्राह शुकं सुधीः १७ तवापकारिणा सर्वे राक्षसेन कृतं त्विदम् ॥ अविचार्यैव मे दत्तः शापस्ते मुनिसत्तम १८ ॥

(बहुविस्तरम् सुपक्वनरमांसं तस्मै ददौ एवं दत्त्वा राक्षसः अन्तर्दधे तत् दृष्ट्वा सः चुकोप) बहुत प्रकारको भोजन सहित सुन्दर पका हुआ मानुषको मांस तिन अगस्त्य ऋषिके भोजनार्थ परसि देता भया इस प्रकार दैके राक्षस तौ अन्तर्दधे न भया तदनन्तर वह मांस देखि सो अगस्त्य ऋषिको पकरते भये १३ (मानुषं मांसं अमेध्यं अगस्त्यः शुकं अब्रवीत् दुर्मते मानुषं मांसं अभक्ष्यं त्वं मह्यं दत्तवानसि) मानुषमांस अपावन देखि अगस्त्य ऋषि शुक प्रति बोले कि हे दुर्बुद्धी यह मानुषको मांस जो अभक्ष्य है तू मोको भोजन हेत दीन्हे १४ (त्वं राक्षसो भूत्वा मानुषाशनः तिष्ठ इति शप्तः भीत्या पुरः अगस्त्यं प्राह) यथा मोको मानुषमांस दीन्हे तथा तू राक्षस दैके मानुषको मांस खाता हुआ स्थित रह इति शाप दीन्हे तब शुक डर करिके करजोरि आगे खड़ा है अगस्त्य प्रति बोलता भया १५ (मुने त्वया इदानीं इति भाषितं मे अद्य विस्तरं मांसं देहितथा एव मे दत्तं देव मे किं शापं प्रदास्यसि) शुक मुनि बोले हे मुने अर्थात् अगस्त्यजी आपने तौ इसी समय में मो प्रति ऐसा बचन कहे उहै कि या समय में मोको विस्तार सहित मांस भोजन देहु नहीं आपकी आज्ञा से मैं मांस भोजन दिया हे देव अब मोको क्यों शाप देते हो १६ (शुकस्य वचनं श्रुत्वा मुहूर्तं ध्यानमास्थितः राक्षःकृतं सर्वज्ञात्वा ततः सुधीः शुकं प्राह) शुक के कहे हुये वचन सुनिके संदेह भई ताते अगस्त्यजी कारण सत्य जानिबे हेत मुहूर्त भरि ध्यानमे स्थित रहे राक्षस को किया हुआ सब हाल जानि लिये तब सुबुद्धी अगस्त्य शुक प्रति बोलते भये १७ (तवापकारिणाराक्षसेन इदं सर्वकृतं तु मुनिसत्तम तेशापः अविचार्यैव मे दत्तः) अगस्त्य बोले हे शुक तेरा अनहित करने वाला राक्षसने यह सब विघ्न किया पुनः हे मुनिनमें उत्तम शुक तो को शाप बिना विचारही मैं दे दिया भाव तेरा अपराध नहीं है १८ ॥

तथापि मेव चोमो घमेव मे वभविष्यति ॥ राक्षसं वपुरास्थाय रावणस्य सहायकृत् १९

तिष्ठता वद्यदीरा मो दशाननवधाय हि ॥ आगमिष्यति लंकायाः समीपं वानरैः सह २०

प्रेषितो रावणेन त्वंचारो भूत्वा रघूत्तमम् ॥ दृष्ट्वा शापाद्विनिर्मुक्तो बोधयित्वा च

रावणं २१ तच्च ज्ञानं ततो मुक्तः परंपदमवाप्स्यसि ॥ इत्युक्तो गस्त्यमुनिना शुको

ब्राह्मणसत्तमः २२ बभूव राक्षसः सद्यो रावणं प्राप्य संस्थितः ॥ इदानीं चारूपेण दृष्ट्वा

रामं सहानुजम् २३ रावणं तत्त्वविज्ञानं बोधयित्वा पुनर्द्रुतम् ॥ पूर्ववद् ब्राह्मणो भू

त्वां स्थितो वैषानसैः सह २४ ॥

(तथापि अमेध्यं मेव चः एवं एव भविष्यति राक्षसं वपुरास्थाय रावणस्य सहायकृत्) हे शुक यदि पि तेरा अपराध नहीं है-ताहूँ पर ध्यानही जानेवाला मेरा वचन ऐसे ही निश्चय करि होयगी ताते अब तुम राक्षस तन धरिके लंकामें जाय रावण की सहाय करोगे १९ (तावत् तिष्ठत दशाननवधाय हि रामः वानरैः सह लंकायाः समीपं आगमिष्यति) तब तक राक्षस तनते लंकामें रहे उ जव रावण के बंध

करने अर्थात् रामचन्द्र वानरोंकी सेना सहित लंकाके समीप को आवहिंगे २० (रावणेनप्रेषितःत्वं चारःभूत्वारयूचमम्हृष्ट्वाचरावणमुत्तत्त्वज्ञानं बोधयित्वाशापात्विनिर्मुक्तः) हे शुक रावणकरिके पठावा हुवा तू चार अर्थात् हरकारा हूँकै रघुनाथजीको देखि पुनः लौटि आय लंकामें रावणको तत्त्व ज्ञान को उपदेश करिके तब मेरे शापते विमुक्त अर्थात् शापते छुटिके २१ (ततःमुक्तःपरंपदंभवाप्त्यति इति भगस्यमुनिनाउक्तःब्राह्मणसत्त्वमःशुकः) तदनन्तर मुक्त हूँकै परमपदको प्राप्तहोहुगे इसप्रकार भग-
स्यमुनि करिके कहागया सो वचन सुनिके ब्राह्मणों में उचम शुक २२ (तद्यःराक्षसःवभूवरावणंप्रा-
प्यसंस्थितःइदानींचाररूपेणसहानुजंरामंदृष्ट्वा) वह शुक शीघ्रही राक्षस तन होताभया लंकामें जा-
य रावण के पास प्राप्त हूँ स्थितभया या समय में चार अर्थान् हलकारा रूप करिके लक्ष्मण सहित
रघुनन्दनको देखि २३ (तत्त्वविज्ञानंरावणंबोधयित्वाद्भुतंपूर्ववत् ब्राह्मणो भूत्वावैभानतैःसहस्थितः)
पुनः आत्मतत्त्वमय विज्ञान रावणको उपदेश करि शुक शीघ्रही राक्षसतन त्यागि पूर्वकी नाई ब्राह्मण
तन हूँकै वानप्रस्थ के धर्मों करिके सहित आश्रममें वास पूर्वक तप करनेलगा २४ ॥

ततःसमागमद्वृद्धोमाल्यवान्राक्षसोमहान् ॥ बुद्धिमान्नीतिनिपुणोराज्ञोमातुःप्रियःपि
ता २५ प्राहतराक्षसंवीरंप्रशान्तेनांतरात्मना ॥ शृणुराजन्वचोमेधश्रुत्वाकुरुयथे
प्सितम् २६ यदाप्रविष्टानगरींजानकीरामवल्लभा ॥ तदादिपुर्व्यादिदृश्यंतेनिमिन्ना
निदशानन २७ घोराणिनाशहेतूनिनितानिमेवदतःशृणु ॥ खरस्तनितनिर्वोषामेधा
अतिभयंकराः २८ शोणितेनाभिवर्षतिलंकामुष्णेनसर्वदा ॥ रुदंतिदेवर्लिङ्गानि
स्विद्यंतिप्रचलंतिच २९ कालिकापांडुरेवंतैःप्रहसंत्यग्रतःस्थितः ॥ खरागोषुप्र
जायंतेमूषकातकुलैःसह ३० ॥

(ततःमहान्राक्षसःबुद्धःमाल्यवान्समागमत्राजःमातुःपिताप्रियःबुद्धिमान्नीतिनिपुणः) ताही
समय में महान् राक्षस बुद्धमाल्यवान् रावण के पास आवता भया पुनः राजा रावण की माता के-
कसी ताको पितामालीताको प्रियबंधुहै अर्थात् मालीसुमाली माल्यवान् तीनिहुं भाईरहे सो माल्य-
वान् बड़ाबुद्धिमान् नीतिमें प्रवीण है २५ (अंतरात्मनाप्रशान्तेनराक्षसंवीरंतंप्राहराजन्मध्यमेवचःशृणु
श्रुत्वायथेप्सितंकुरु) अंतरात्माशांतकरिके माल्यवान् अमंगल विचारि राक्षस औरजो रावण त्यहि
प्रति बोला है राजन् अबमेरे वचन सुनौ सुनि कै पुनः जैसी इच्छाहोइ तैसाकरौ २६ (दशाननराम
वल्लभा जानकीयदानगरींप्रविष्टातदादिपुर्व्यांघोराणिनिमिन्निदृश्यंते) हे रावण रामवल्लभाअर्थात्
परमप्रिय जानकी जबते तुम्हारी नगरीमें प्रवेश किया तबते पुरमें भयंकर निमिन्न उत्पातअसंगुन
देखि परते हैं २७ (नाशहेतूनिमेवदतःतानिशृणुखरस्तनितनिर्वोषा अतिभयंकराःमेधाः) राक्षसों के
नाशहोने के हेतु जो उत्पात देखि परते हैं सो मैं कहताहों तिनहिं सुनिये कठोरगर्जिवज्रपात सहित
अत्यंत भयंकर समूह मेधा आकाशमें छायेहुये २८ (उष्णेनशोणितेनलंकामभिवर्षतिसर्वदादेवर्लि
ङ्गानिरुदंतिस्विद्यंतिचप्रचलंति) आकाशते मेधागरम रुधिर करिके लंकामें वर्षाकरते हैं तबकाल में
देवन की प्रतिमा रोदनकरती हैं खेदको प्राप्त होती हैं भाव आंखिन ते अभुधारा तनते पत्तीनाचल-
ता है पुनःप्रतिष्ठित प्रतिमा स्थानत्यागि अन्यत्र चलीजाती हैं २९ (पांडुरेवंतैःप्रहसंतिकालिका
अग्रतःस्थितःगोषुखराःप्रजायंतेनकुलैःसहमूषकाः) उज्ज्वलदांतोंको काटि करिके हैंसर्तौहुई कालिका

राक्षसों के आगे स्थित होती है भाव तुमको भक्षण करौंगी पुनः गोवन में गदहा उत्पन्न होते हैं नकु-
लौंसहित मूसा ३० ।

मार्जारिणतुयुद्धयन्तिपन्नगागरुडेनतु ॥ करालो विकटो मुंडः पुरुषः कृष्णपिंगलः ३१
कालो गृहाणिसर्वेषां काले काले त्ववेक्षते ॥ एतान्यन्यानि दृश्यन्ते निमित्तान्युद्भवन्ति
च ३२ अतः कुलस्य स्वार्थं शान्तिं कुरु दशानन ॥ सीतां सत्कृत्य सधनं रामायामाशु प्र-
यच्छ भो ३३ रामं नारायणं विद्वि विद्वेषं त्यज राघवे ॥ यत्पादपोतमाश्रित्य ज्ञानिनो
भवसागरम् ३४ तरन्ति भक्तिपूतां तास्ततो रामो न मानुषः ॥ भजस्व भक्तिभावेन रा-
मं सर्वहृदालयम् ३५ यद्यपि त्वंदुराचारो भक्त्या पूतो भविष्यसि ॥ मद्वाक्यं कुरु रा-
जेंद्रकुलकौशलहेतवे ३६ ॥

(तुमार्जारिणतुयुद्धयन्तिपन्नगागरुडेन कृष्णपिंगलः विकटः करालः मुंडः पुरुषः) जो स्वाभाविक आहार
ते मूसा पुनः विलारियो से युद्ध करते हैं पुनः सर्प गरुड़ से युद्ध करते हैं भावमानुष बानर भी राक्षसों
को मारेंगे यह सूचित होता है पुनः अर्द्धकाला अर्द्धपीलावर्ण कठिन कराल मुंडित पुरुष ३१ (कालः
सर्वेषां गृहाणि काले काले तु अवक्षते एतानि च अन्यानि निमित्तानि उद्भवन्ति दृश्यन्ते) पूर्ववत् पुरुषरूप धरे
काल सब राक्षसों के घरन में प्रति दिन देखि परता है इत्यादि पुनः और हू उत्पात उत्पन्न होते देखि
परते हैं ३२ (अतः दशानन कुलस्य स्वार्थं शान्तिं कुरु भो सधनं सीतां सत्कृत्य रामायामाशु प्रयच्छ) ताते
हे दशानन अपने कुलकी रक्षा अर्थ शान्ति उपाय करौ क्या शान्ति उपाय है भो रावण सहित धनको
लैके सीताको आदर समेत लै जाय रामके अर्थ शीघ्र ही दे दीजिये ३३ (रामं नारायणं विद्वि राघवे विद्वे
पं त्यज यत्पादपोतं आश्रित्य भक्तिपूतां ताः ज्ञानिनः भवसागरं तरन्ति ततः रामः मानुषः न सर्वहृदालयम् रामं
भक्तिभावेन भजस्व) हे रावण रामको नारायण जानौ ताते रघुवंशनाथ में जो विरोध बुद्धी राखे हो
सो त्याग करौ काहेते जिन रामके पांयरूप नावके आश्रित है भक्ति करि पवित्र भया है अंतःकरण जिनका
ऐसे ज्ञानी भक्त भवसागर को तरिजाते हैं तौ जिनके पांयन की सेवाते जीव भवसागर तरत ताते राम
मानुष नहीं हैं अंतर्गामी रूपते सबके हृदय में मंदिर करि वास किहे हैं ऐसे रामको भक्ति भाव करि-
कै भजौ ३४ । ३५ (त्वं यद्यपि दुराचारः भक्त्या पूतः भविष्यसि राजेंद्रकुलकौशलहेतवे मत्वाक्यं कुरु)
तुम यद्यपि दुष्ट आचार में रत अपावन हौ परन्तु भक्ति करिकै पवित्र है जाहुगे ताते हे राजेंद्र रावण
राक्षस कुल के कुशल हेत मेरा वचन अंगीकार करौ ३६ ॥

तत्तुमाल्यवतो वाक्यं हितमुक्तं दशाननः ॥ नमर्षयति दुष्टात्मा कालस्य वशमागतः ३७
मानवं कृपणं रामं एकं शाखामृगाश्रयम् ॥ समर्थं मन्यसे केन हीनं पित्रामुनि-
प्रियम् ३८ रामेण प्रेषितो नूनं भाषसे त्वमनर्गलम् ॥ गच्छ वृद्धो सिबंधुस्त्वं सोढं सर्वं
व्योदितम् ३९ इतो मत्कर्णपदवीं दहत्येतद्वचस्तव ॥ इत्युक्त्वा सर्वसचिवैः सहि-
ता प्रस्थितस्तदा ४० प्रासादाग्रेसमासीनः पश्यन्वानरसैनिकान् ॥ युद्धाया योजय-
त्सर्वराक्षसान् समुपस्थितान् ४१ रामोऽपि धनुरादाय लक्ष्मणेन समाहृतम् ॥ दृष्ट्वा
रावणमासीनं कोपेन कलुषीकृतः ४२ ॥

(हितं उक्तं माल्यवतः वाक्यं तत्तु दुष्टात्मा दशाननः नमर्षयति कालस्य वशं भागतः) यद्यपि परम

हित कहा परंतु माल्यवान् को वचन सो सुनिकै पुनः दुष्टात्मा रावण नहीं सहि सका क्योंकि काल के वंश में आगया शीघ्रही मृत्यु को प्राप्त होइगो हित वचन कैसे सुनै ३७ (राम एकमानवकृपणं शाखामृगाश्रयमपित्राहीनमुनिप्रियम् केन समर्थमन्यसे) रावण बोला हे माल्यवान् राम अकेला मानुष पुनः घरखी छूटे दुःखित बानरों के आश्रय भयाहै जिसको पिताने बनबास दिया इति पिता हीन मुनिहैं प्रिय जाको तिसको कौन कारणते समर्थ माने हौ ३८ (नूनं रामेण प्रेषितः त्वं अनर्गलं भाषसे वृद्धोसि बंधुः त्वंगच्छ त्वया उदितं सर्वसोढं) निश्चय करि रामही करिकै पठाहुवा बसीठ बनिकै आयाहै ताते तू अनर्गल मेरी प्रतिकूल वचन कहताहै एकतौ बूढ़े पुनः नानाके बंधुहौ ताते तुम उठिजाउ तुमने कहा सो मैंने सहि लिया ३९ (इतः तव एतत्त्वचः मत्कर्णपदवीं दहति इति उक्त्वा तदा सर्वसचिवैः सहितः प्रस्थितः) इसी से उठिजा कि तेरा यह वचन मेरे कानों को भस्म करता है ऐसा कहिकै तब रावण सब मंत्रिन करिकै सहित उठिकै अन्यत्र को चलागया ४० (प्रासादाग्रेसं आसीनः बानरसैनिकान् पश्यन् समुपस्थितान् सर्वराक्षसान् युद्धाय अयोजयत्) रावण जाय मंदिर के ऊपर बैठिकै बानरों की सेना को देखि तुरतही समीप बैठे हुये जो सब राक्षस तिनहिं युद्ध करने अर्थ आज्ञा दिया भाव बाहेर युद्ध न होइगा तौ बानर पेलि आवेंगे ४१ (रावणं सं आसीनं दृष्ट्वा रामः अपि कोपेन कलुषीकृतः लक्ष्मणेन समाहृतं धनुः आदाय) रावण को निशंक संमुख बैठे देखि रघुनन्दन भी कोप करिकै मुख धूमिल करि धनुष मांगे तब लक्ष्मण करिकै दिया हुवा धनुष हाथमें लैकै बाण संधानि पुनः देखे ४२ ॥

किरीटिनं समासीनं मंत्रिभिः परिवेष्टितम् ॥ शशांकार्द्धनिभेनैव बाणेनैकेन राघवः ४३ श्वेतच्छत्रसहस्राणिकिरीटदशकं तथा ॥ चिच्छेदनिमिषार्द्धेन तदद्भुतमिवाभवत् ४४ लज्जितो रावणस्तूर्णविवेश भवनं स्वकम् ॥ आहूय राक्षसान् सर्वान् प्रहस्तप्रमुखान् खलः ४५ वानरैः सह युद्धाय नोदयामास सत्वरः ॥ ततो भेरीमृदंगाद्यैः पणवानकगोमुखैः ४६ महिषोष्ट्रैः खरैः सिंहैर्द्वीपिभिः कृतवाहनाः ॥ खड्गशूलधनुः पाशयष्टितोमरशक्तिभिः ४७ लक्षिताः सर्वतो लंकां प्रति द्वारमुपाययुः ॥ तत्पूर्वमेव रामेण नोदिता वानरर्षभाः ४८ ॥

(मंत्रिभिः परिवेष्टितम् किरीटिनं समासीनं शशांकार्द्धनिभेनैव बाणेनैकेन राघवः) कैसा बैठाहै मंत्रिन करिकै सहित किरीटन को धारण किहे बैठा रावण को देखि जिसमें अर्द्ध चंद्राकार गांती लगीहै ऐसा एकही बाण प्रहार करिकै रघुनन्दन ४३ (सहस्राणि श्वेतच्छत्राणि किरीटदशकं निमिषार्द्धेन चिच्छेद तत्तद्भुतं इव अभवत्) हजारन श्वेत छत्र तैसेही दशौ किरीट आधी पलक में काटि गिराय किन्हे सो आश्चर्यवत् कौतुक भया अर्थात् सभाजन कोऊ जानि न पाये कि किस कारण छत्र मुकुट गिरिगये ताते आश्चर्य माने ४४ (लज्जितः रावणः स्वकं भवनं तूर्णविवेश खलः प्रहस्तप्रमुखान् सर्वान् राक्षसान् आहूय) छत्र मुकुट गिरते लज्जित हैकै रावण आपने मंदिर को शीघ्रही प्रवेश करता भया तहांते खल रावण प्रहस्त है मुखिया जिनमें तिन सब राक्षसन को बुलायकै ४५ (वानरैः सह युद्धाय सत्वरः नोदयामास ततः भेरीमृदंगाद्यैः पणवानकगोमुखैः) राक्षसों को बुलाय रावण बानरोंसे युद्ध करने अर्थ आज्ञा देता भया सेना सजी तब भेरी मृदंग पणवनगारा गोमुखाकार तुरही इत्यादि बाजो बाजते हुये ४६ (महिषैः उष्ट्रैः खरैः सिंहैः द्वीपिभिः वाहनाः

रुतखड्गशूलधनुः पाशयष्टितोमरशक्तिभिः) भैंसा ऊँट गदहा सिंह बाघ इत्यादि बाहन करिकै
अर्थात् इनपर सवार है करिकै तरवारि त्रिशूल धनुष पाश अर्थात् फसरी लाठी तोमर सांग
इत्यादि हथियारों करिकै सजिकै ४७ (सर्वतःलंकांलक्षिताः प्रतिद्वारउपाययुः तत्पूर्वरामेणएवनो
दिताः वानरर्षभाः) ते सब राक्षस सब दिशों में लंकाके कोटपर चढ़ि गये पुनः जारिहु द्वारन के
बाहेर जाते भये ताके प्रथमही रघुनन्दनने भी पठाये ताते उत्तम बली बानर भी आय गये ४८ ॥

उद्यम्यगिरिशृंगाणिशिखराणिमहांतिच ॥ तरुंचोत्पाद्यविविधान्युद्वायहरियूथ
पाः ४६ प्रेक्ष्यमाणारावणस्यतान्यनीकानिभागशः॥राघवप्रियकामार्थलंकामारु
रुहुस्तदा ५० तेद्रुमैःपर्वताग्रैश्चमुष्टिभिश्चप्लवंगमाः ॥ ततःसहस्रयूथाश्चकोटि
यूथाश्चयूथपाः ५१ कोटिशतयुताश्चान्येरुरुधुर्नगरंभृशम् ॥ अष्टवंतःप्लवंत
श्चगर्जतश्चप्लवंगमाः ५२ रामोजयत्यतिबलोलक्ष्मणश्चमहाबलः ॥ राजाजय
तिसुग्रीवोराघवेणानुपालितः ५३ इत्येवंपोषयंतश्चसमंयुयुधिरेरिभिः ॥ हनूमा
नंगदश्चैवकुमुदोनीलएवच ५४ ॥

(गिरिशृंगाणिचमहांतिशिखराणिउद्यम्यचविविधान्तरुन्उत्पाद्ययुद्वायहरियूथपाः) पर्वतनके
शिखर बड़ेभारी पर्वत हाथों में लीन्हे पुनः अनेक भांतिके वृक्षउखारिलीन्हे युद्धके अर्थ वानर यूथप-
ती समूहखड़ेहैं ४९ (राघवप्रियकामार्थतदाभागशःलंकांमारुहुःरावणस्यअनीकानितानिप्रेक्ष्यमाणाः)
रघुनन्दनके प्रियकार्यकरने अर्थ तासमय में सेनाके चारिभागकरिकै लंकाकोघेरेहुये वानरखडे रावण
की जो सेनाहै ताहि आवने की राहहेरते हैं ५० (तेद्रुमैःपर्वताग्रैःचमुष्टिभिःततःसहस्र
यूथाःचकोटियूथाःचयूथपाः) ते सब वानर वृक्षोंकरिके पुनः बड़ेभारी शिलोंकरिकै पुनः मुष्टिकोंक-
रिकै राक्षसोंकोमारनेपर उद्यत किसी द्वारपर हजारयूथोंके यूथपति किसी द्वारपर करोरियूथ के
यूथपतिखड़े हैं ५१ (चअन्येशतकोटियुताःनगरंभृशमरुधुःप्लवंगमाः गर्जतःचप्लवंतःचअष्टवंतः) पुनः
औरे द्वारपर सौकरोरि वानरनयुत यूथपती लंकानगरको अत्यन्तकरिकैघेरे हैं जामें किसीकोबहिराय
जानेकी राहनहीं ते वानरगर्जतेहैं पुनःआकाशकोकूदिजातेहैं पुनःआकाशते भूमिको आवते हैं ५२ (अ
तिबलःरामःजयतिचमहाबलःलक्ष्मणःजयतिराघवेणअनुपालितःसुग्रीवःजयति) पुनः ऐसा कहतेहैं
कि अत्यन्त बली जो राम सो जयको प्राप्तहोय पुनः महाबली जो लक्ष्मण सो जयकोप्राप्तहोय रघु-
नन्दन करिकै जो रक्षाकियेगये सो राजा सुग्रीव जयकोप्राप्तहोय ५३ (इत्येवंपोषयंतःचसमंअरिभिः
युयुधिरेहनुमान्चअंगदःएवकुमुदः चनीलएव) ऐसा शब्दकरतेहुये अपनी बराबरिके शत्रुनकरिकै युद्ध
करतेभये तब हनुमान् पुनः अंगद तथा कुमुद पुनः नील ५४ ॥

नलश्चशरभश्चैव मैदोद्विविदएवच ॥ जाम्बवान्दधिवक्त्रश्चकेशरीतारएव
च ५५ अन्येचबलिनःसर्वेयूथपाश्चप्लवंगमाः ॥ द्वाराण्युत्प्लुत्यलंकायाःसर्वतोरु
रुधुर्भृशम् ॥ तदावृश्महाकायाःपर्वताग्रैश्चवानराः ५६ निजधनुस्तानिरक्षांसि
नखैर्दतैश्चवेगिताः ॥ राक्षसाश्चतदाभीमाद्वारेभ्यःसर्वतोरुषा ५७ निर्गत्यभि
दिपालैश्चखड्गैःशूलैःपरश्वधैः ॥ निजधनुर्वानरानीकंमहाकायामहाबलाः ५८
राक्षसांश्चतथाजघ्नुर्वानराजितकाशिनः ॥ तथाबभूवसमरोमांसशोणितकर्द

मः ५६ राक्षसां वानराणां च संबभूवाद्भुतोपमः ॥ ते ह्येव च गजैश्चैव रथैः कांचनसन्निभैः ६० रक्षो व्याघ्रयुधिरैर्नादयंतो दिशो दश ॥ राक्षसाश्च कर्पीन्द्राश्च परस्परजयैषिणाः ६१ ॥

नल शरभ मैद द्विविद जाम्बवान् दधिमुख केशरी तार ५५ (च अन्ये बलिनः यूथपाः सर्वे च पुत्रवंगमाः द्वाराणि उत्प्लुत्य सर्वतः लंकायाः भृशमुरुधुः) पुनः औरहूबली जे यूथपती हैं ते सब पुनः बानर ते सब द्वारों पर कूदिकरि कै सब दिशन ते लंका को अत्यन्त घेरिले ते भये (तदामहाकायाः बानराः वृक्षैः च पर्वतभिः) ता समय में भारीतनवाले बानर ते वृक्षों करि कै पुनः पर्वत केशिलों करि कै ५६ (नखैः च दंतैः रक्षांसितानिवेगितः निजघ्नुः च तदा भीमाराक्षसाः रूपा सर्वतः द्वारेभ्यः) नखों करि कै पुनः दांतों करि कै राक्षस जो हैं तिनहिं बड़े वेग ते मारते भये पुनः ताही समय में भयंकर राक्षस क्रोध करि सब द्वारों ते ५७ (निर्गत्य महाकायामहाबलाः मिदिपालैः खड्गैः शूलैः परद्वयैः बानराः अनीकं निजघ्नुः) द्वारों ते निसरे बड़े भारी शरीर बड़े बली राक्षस ते धनबासिन करि कै शिला खड्ग न करि कै त्रिशूल न करि कै फरसा करि कै बानरन की सेना को मारते भये ५८ (तथा जितकाशिनः बानराः च राक्षसां जघ्नुः मांसशोणितकर्दमः तथा समरः बभूव) तैसेही जय करि कै शोभित जो सब बानर ते पुनः राक्षसों को मारते भये ता समय में भूमि पे मांस रक्त को कीचर है गया तैसी युद्ध होती भई ५९ (बानराणां च राक्षसां भद्रुतोपमः संबभूव ते ह्यैः च गजैः च एव कांचनसन्निभैः रथैः) बानरों का पुनः राक्षसों का अद्भुत उपमा देने योग्य संग्राम होता भया ते राक्षस घोड़ों करि कै हाथिन करि कै कंचन तुल्य प्रभावंत रथों करि कै ६० (दशदिशः नादयंतः रक्ष व्याघ्रायुधिरैः राक्षसाः च कपीन्द्राः च परस्परजयैषिणाः) दशों दिशों में शब्द युत राक्षस वीर युद्ध करते भये राक्षस पुनः बानर अपनी २ जय की इच्छा किहे कैसे युद्ध करते हैं ६१ ॥

राक्षसान्वानराजघ्नुर्वानरांश्चैव राक्षसाः ॥ रामेण विष्णुना दृष्टा हरयो दिवि जांशजाः ६२ बभूवुर्बलिनो हृष्टास्तदा पीतामृता इव ॥ सीताभिर्मर्षपापेन रावणेनाभिपालितान् ६३ हतश्रीकान्हतबलान् राक्षसान् जघ्नुरो जसा ॥ चतुर्थीशा विशेषेण निहतं राक्षसं बलम् ६४ स्वसैन्यं निहतं दृष्ट्वा मेघनादो थदुष्टधीः ॥ ब्रह्मदत्तवरः श्रीमानंतर्द्धानंगतो सुरः ६५ सर्वास्त्रकुशलो व्योम्नि ब्रह्मास्त्रेण समंततः ॥ नानाविधानि शस्त्राणि वानरानीकमर्दयन् ६६ ववर्ष शरजालानि तद्द्रुतमिवाभवत् ॥ रामोऽपि मानयन् ब्राह्ममस्त्रमस्त्रविदां वरः ६७ ॥

(बानराः राक्षसान् जघ्नुः च एव राक्षसाः बानरान् दिवि जांशजाः हरयः विष्णुनारामेण दृष्टाः) बानर राक्षसों को मारते हैं पुनः राक्षस बानरों को मारते हैं देवताओं के अंश से उत्पन्न भये बानर ते विष्णु साक्षात् राम को देखि कै ६२ (अमृता पीता इव तदा दृष्टा बलिनः बभूवुः सीताभिर्मर्षपापेन रावणेन अभिपालितान्) जैसे अबल देवता अमृत पान करि बली हैं दैत्यों को जीते तैसेही देवांश बानर रघुनन्दन को देखि बली होते भये आनंद भये अरु सीता को हरत समय विरोध भाव अंग स्पर्श ते पापी रावण करि कै पालित दुष्टों की समाज कैसी भई ६३ (हतश्रीकान्हतबलान् राक्षसान् ओजसा जघ्नुः राक्षसं बलं निहतं चतुर्थीश विशेषेण) नाश है गई लक्ष्मी जिनकी नाश भया है बल जिन को ऐसे तेज बल हीन राक्षसों को बानर बड़े वेग करि कै ऐसा मारते हैं कि राक्षसी सेना को तीनि

होता नाशकरदिघे चतुर्थअंशवाकरिहे ६४ (दुष्टवीःमेघनादःस्वसेन्यनिहतं दृष्ट्वा ब्रह्मदत्तवरःश्रीमान् असुरःअथअंतर्द्वानंगतः) दुष्टबुद्धी मेघनाद अपनी सेनाको सहारदेखि ब्रह्माको दियाहुवा जो बरहै ताकेप्रभावते श्रीयुत असुर मेघनाद अब अंतर्द्वान आकाशको जाताभया किरीको देखिनहींपरताहै ६५(व्योम्निसर्वास्त्रकुशलःब्रह्मास्त्रेणनानाविधानिशस्त्राणिसमंततःवानरानीकमर्दयन्) आकाशमेंजाय सब बाणविद्यामें प्रवीण जो मेघनाद सो ब्रह्मास्त्रके प्रभावसे अनेक प्रकारके शस्त्रनकरिकै सम्पूर्ण बानरोंकीसेना को मर्दनकरताभया ६६ (शरजालानिववर्पतत् अद्भुतंइवअभवत्अस्त्रविदांबरःरामःअपिब्राह्मंअस्त्रंमानयन्) बाण समूह रघुनन्दनपर वर्षताभया सो आश्चर्यमय कौतुक सम हालहोता भयाक्योकि सब बाणविद्यावालों में श्रेष्ठ जो रघुनाथजी सो भी ब्रह्माके अस्त्रको मानराखे स्वोपरि ग्रहणकीन्दे ६७ ॥

क्षणंतूष्णीमुवासाथ ददर्शपतितंवलम् ॥ वानराणांरघुश्रेष्ठ श्चुकोपानलसन्निभः ६८ चापमानयसोमित्रेब्रह्मास्त्रेणासुरक्षणात् ॥ भस्मीकरोमिमेष्यबलमद्य रघूत्तम ६९ मेघनादोपितच्छ्रुत्वारामवाक्यमतंद्रितः ॥ तूर्णजगामनगरंमायया मायिकोऽसुरः ७० पतितंवानरानीकं दृष्ट्वाभतिदुःखितः ॥ उवाचमारुतिंशीघ्रं गत्वाक्षीरमहोदधिं ७१ तत्रद्रोणगिरिर्नामदिव्यौषधिसमुद्भवः ॥ तमानयद्भुतं गत्वासंजीवयमहामते ७२ वानरोद्यान्महासत्वान्कीर्तिस्तेसुस्थिराभवेत् ॥ आज्ञाप्रमाणमित्युक्त्वाजगामानिलनंदनः ७३ आनीयचगिरिं सर्वान्वानरान्वानरर्षभः ॥ जीवयित्वापुनस्तत्रस्थापयित्वाययौद्रुतम् ७४ ॥

(क्षणंतूष्णींउवाचअथवानराणांवलंपतितंददर्शरघुश्रेष्ठःअनलसन्निभःचुकोप) ब्रह्मास्त्रको मान राखि प्रभु क्षणमात्र चुपवैठे रहे अब वानरों की सेनाको परीदेखिकै रघुनाथजी अग्निकी समानकोप करतेभये ६८ (सौमित्रेचापमानयरघूत्तमअद्यमेबलंपश्यब्रह्मास्त्रेणक्षणात्असुरंभस्मीकरोमि) प्रभु बोले हे लक्ष्मण मेरा धनुष लावौ हे रघूत्तम अब मेरेबलको देखौ क्योंकि क्षणमात्र में असुरको भस्मकरता हों ६९(रामवाक्यं तत् श्रुत्वा मेघनादःअपि मायिकःअसुरःअतंद्रितःमाययातूर्णनगरंजगाम) रघुनन्दनको वचन सो सुनिकै मेघनादभी बड़ामायावी असुरसो सावधान है माया करिकै भाव अं-
लरिअ शीघ्रही नगरको जाताभया ७० (वानरानीकंपतितंदृष्ट्वाअतिदुःखितःरामःमारुतिंउवाच क्षीरमहोदधिंशीघ्रंगत्वा) वानरन की सेनाको मृतरुपरी देखिकै अत्यन्त दुखितहै रघुनन्दन हनुमान प्रति बोल्ते भये कि हे हनुमान् क्षीरसागरको तुमशीघ्रही जावो ७१ (महामतेगत्वातत्रदिव्यऔषधसमुद्भवःद्रोणनामगिरिःतंआनयद्भुतंसंजीवय) हे महामतेजाउ तहां दिव्य औषधीउत्पन्न करने वा ला एक द्रोणनामे पर्वत है ताको लाय शीघ्रही वानरों को सजीवकरौ ७२(महासत्वान्वानरोद्यान् ते कीर्तिःसुस्थिराभवेत्आज्ञाप्रमाणंइतिउक्त्वाअनिलनंदनःजगाम) महाबली वानरोंको जिआवौगे तौ तुम्हारी कीर्तिलोकमें सदास्थिर बनीरहैगी आपकी आज्ञामोको अवश्यकरनाहै ऐसाकहि पवननंदन जातेभये ७३ (गिरिंआनीयवानरर्षभः सर्वान्वानरान्जीवयित्वापुनःद्रुतंययौतत्रस्थापयित्वा) पर्वत को आनिकै वानरोत्तमहनुमान् सब वानरोंको औषधदेई जिआवतेभये पुनःशीघ्रही लैजाते भये तहें पहारको धरिआये ७४ ॥

पूर्ववद्भैरवंनादं वानराणां बलौघतः ॥ श्रुत्वा विस्मयमापन्नो रावणो वाक्यमब्रवीत् ७५
 राघवो मे महान् शत्रुः प्राप्तो देवविनिर्मितः ॥ हंतुं तं समरेशीघ्रं गच्छं तु मम यूथपाः ७६
 मंत्रिणो बांधवाः शूरा ये च मत्प्रियकांक्षिणः ॥ सर्वे गच्छं तु युद्धाय त्वरितं मम शासनात् ७७
 येन गच्छंति युद्धाय भरिवः प्राणविह्वलात् ॥ तान् हनिष्याम्यहं सर्वान् मच्छासनपराङ्मुखान् ७८
 तच्छ्रुत्वा भयसंत्रस्ता निर्जग्मुरणकोविदाः ॥ अतिकायः प्रहस्तश्च महानादमहोदरौ ७९
 देवशत्रुर्निकुंभश्च देवांतकनरांतकौ ॥ अपरे बालिनः सर्वे युयुद्वाय वानरैः ८०
 एते चान्ये च बहवः शूराः शतसहस्रसः ॥ प्रविश्य वानरं सैन्यं ममं धुर्वलदर्पिताः ८१ ॥

(पूर्ववत् वानराणां बलौघतः भैरवंनादं श्रुत्वा रावणः विस्मयं आपन्नः वाक्यमब्रवीत्) प्रथम की वानरों की सेना समूह को भयंकर शब्द सुनिके रावण आश्चर्यको प्राप्त है वचन बोला ७५ (देव निर्मितः राघवः मे महान् शत्रुः प्राप्तः तं समरे हंतुं मम यूथपाः शीघ्रं गच्छं तु) देवतों को बनावा हुआ २१ मेरा बड़ा भारी शत्रु आय प्राप्त भया है ताको संग्राम में मारिबे हेतु मेरे यूथपती सब सेनादि जाय ७६ (मंत्रिणः बांधवाः च मत्प्रियकांक्षिणः येशूराः सर्वे मम शासनात् युद्धाय त्वरितं गच्छन्तु) म लोग पुनः भाई लोग पुनः मेरी प्रीति की कांक्षा राखे जेशूर हैं ते सब मेरी आज्ञा ते युद्ध करने ही जाय ७७ (ये भरिवः प्राणविह्वलात् युद्धाय न गच्छंति मत्शासनपराङ्मुखान् तान्सर्वान् मच्छासनात्) अरु जे कादर प्राण घात भयते युद्धके अर्थ न जायगे ऐसे जे मेरी आज्ञा ते विमुख तिन सबको मैं करिहों ७८ (तत् श्रुत्वा भयसंत्रस्ताः रणकोविदाः निर्जग्मुः अतिकायः प्रहस्तः च महानादमहोदरौ) २ को वचन सो सुनिके रावण करवध कुमृत्यु की भयते प्राप्त मानि जे युद्धमें प्रवीण रहैं ते रण जाते भये सो यथा अतिकाय प्रहस्त पुनः महानाद महोदर ७९ (देवशत्रुः निकुंभः च देवांतकनरांतकौ अपरे बालिनः वानरैः युद्धाय सर्वे युयुः) देवारि निकुंभ देवांतक नरांतक तैसे और हू जे बली हैं ते युद्ध करने अर्थ सब जाते भये ८० (एते च अन्ये शतसहस्रशः बहवः शूराः बलदर्पिताः वानरैः ममं धुः) एते पुनः और हू सैकरन हजार बहुत शूर राक्षस ते बलदर्पित वानरों की सेनामें मयन करते भये भाव युद्धमें वानरोंको मानभंग करि दीन्हें ८१ ॥

भुशुंडैर्भिदिपालैश्च बाणैः खड्गैः परश्वधैः ॥ अन्यैश्च विविधैस्त्रैर्निजघ्नु हरि यूथपान् ८२
 ते पादपैः पर्वताग्रैर्नखदंष्ट्रैश्च मुष्टिभिः ॥ प्राणैर्विमोचयामासुः सर्वराक्षस यूथपान् ८३
 रामेण निहताः केचित्सुग्रीवेण तथा परे ॥ हनूमता चांगदेन लक्ष्मणेन महात्मना ८४
 यूथपैर्वानराणां ते निहता सर्वराक्षसाः ॥ रामतेजः समाविश्य वानरा बालिनो भवन् ॥
 रामशक्तिविहीनानां मेवं शक्तिः कुतो भवेत् ८५ सर्वेश्वरः सर्वमयो विधाता
 मायामनुष्यत्वविडम्बनेन ॥ सदाचिदानंदमयोऽपिरामो युद्धादिलीलां वितनोति मायाम् ८६ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्बादे युद्धकांडे पंचमः सर्गः ५ ॥

(भुशुंडैः भिदिपालैः च बाणैः खड्गैः परश्वधैः च अन्यैः विविधैः अस्त्रैः हरि यूथपान् निजघ्नुः) तुषक

पुनः वाणतरवारि फरसा पुनः औरहू अनेक हथियारों करिकै राक्षस वानर यूथपतिन को मार-
ते भये ८२ (तेपाठपैःपर्वताग्रैःनखदंष्ट्रैःचमुष्टिभिःसर्वराक्षसयूथपान्प्राणैःविमोचयामासुः) ते वानर
वृक्षों करिकै पर्वतके शिलों करिकै नखदांतों करिकै पुनःमुष्टिकों करिकै मारिकै सब राक्षस यूथपति-
न को प्राणन करिकै शरीर छुड़ाये देतेभये देहप्राण रहित करिदिये ८३ (केचित्त्रामेणनिहताःतथा
अपरेसुग्रीवेणहनूमता अंगदेनमहात्मनालक्ष्मणेन) कछुतौ राक्षस रघुनाथजीने मारा तैसेही औरन
को सुग्रीव ने मारा कछ हनूमान् ने मारा कछु अंगदेन मारा कछु महात्मा लक्ष्मण ने मारा इतिधा-
वत् मुख्यते सदमृत्यु भाव को प्राप्तभये ८४ (सर्वराक्षसाःतेवानराणांयूथपैःनिहताःरामतेजःसंभ्रावि-
श्यवानराःबलिनःअभवत्) बाकी सवराक्षसते वानरोंके यूथपोंने नाशकरि दिया काहेते रघुनाथजीके
तेज प्रताप को प्राप्त हैंकै वानर बलीहोते भये भरुराक्षस (रामशक्तिविहीनानां) रघुनंदनकी शक्ति
करिकै हीन तिनको (एवंशक्तिःकुतःभवेत्) इसप्रकार शक्तिकैसे होसकी है ८५ (सर्वेश्वरःसर्वम-
यःविधाता) सबके ईश्वर सर्व भूतमय सबको रचनेवाले (मायामनुष्यत्वविडंबनेन) मायाकरिकै
मनुष्य कसी नकल बनाये (सदाचिदानंदमयःरामःअपिपुद्गादिलीलांमायाम्वितनोति) सबकाल
४ चैतन्य आनन्दमय रामसोभी युद्धादिलीलारूप जो अपनी मायाहै ताको विस्तार करते हैं ८६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डेपंचमःप्रकाशः ५ ॥

श्रुत्वायुद्धेवलंनष्टमतिकायमुखंमहत् ॥ रावणोदुःखसंतप्तःक्रोधेनमहतावृतः १ नि-
धायेंद्रजितलंकारक्षणार्थमहाद्युतिः ॥ स्वयंजगामयुद्धायरामेणसहाराक्षसः २ दि-
व्यस्यंदनमारुह्यसर्वशस्त्रास्त्रसंयुतम् ॥ राममेवाभिदुद्रावराक्षसेंद्रोमहाबलः ३ वा-
नरानुबहुशोहत्वावाणैरासीविषोपमैः ॥ पातयामाससुग्रीवप्रमुखान्यूथनायकान्
४ गदापाणिमहासत्त्वंतत्रदृष्ट्वाविभीषणम् ॥ उत्ससर्जमहाशक्तिंमयदत्तांविभीष-
णे ५ तामापतंतीमालोक्यविभीषणविधातिनि ॥ दत्ताभयोयंरामेणवधाहोना-
यमासुरः ६ ॥

सवैया ॥ हतिरावणशक्ति विभीषणपै लखितानुजआपहिधावसही । प्रभुवाणनमुर्छिदशाननगो-
मगऔपधिकीहनुमानगही ॥ कहिकालसुने महिजायकरौ कपिमारगमें कछुविघ्नतही । वहरावणपै
शुभज्ञानसिखै शरणागतराघवजानकही ॥ (अतिकायमुखंयुद्धेवलंनष्टंश्रुत्वारारवणः महदुःखसंतप्तःम-
हताक्रोधेनावृतः) शिवजी बोले हे गिरिजा अतिकायआदिक मुखिया जिनमें ते युद्धमें सब सेनाको
नाशसुनिकै रावण बड़े दुःखमें संतप्त बड़े क्रोधयुक्तहै १ (लंकारक्षणार्थेंद्रजितंनिधायरामेणसहयु-
द्धायमहाद्युतिः राक्षसःस्वयंजगाम) लंकापुरकी रक्षाकरने के अर्थेंद्रजित् जो मेघनाद ताको स्था-
पितकरि पुनः रघुनन्दन के साथ युद्धकरने अर्थ महातेजवंत राक्षस रावण आपहीजाताभया २ (स-
र्वशस्त्रास्त्रसंयुतंदिव्यस्यंदनमारुह्यमहाबलः राज्ञसेंद्रःरामंएवअभिदुद्राव) सब प्रकारके अस्त्र शस्त्र
संयुत दिव्यरथपर सवार हैं कै महाबली राक्षसोंको राजा रावण रघुनन्दनके संमुखयावताभया ३
(आशीविषोपमैःवाणैःबहुशःवानरानुहत्वा सुग्रीवप्रमुखान्यूथनायकान्पातयामास) सर्पतालूके
विषैलेदांत के तुल्य वाणों करिकै बहुते वानरोंको मारिकै सुग्रीवआदि जे मुख्यसेनापती तिनहिं मू-

छितकरिगिरायदिया ४ (तत्रगदापाणिमहासत्त्वंविभीषणं दृष्ट्वामयदत्तामहाशक्तिंविभीषणोत्तसर्ज)
तहां गदा हाथमेंलिये महावली विभीषणकोदेखि रावण जो मयदानवकीदीन्ही महाभमोय शक्ति
सो विभीषणपरछांडताभया ५ (विभीषणविधातिनींतांआपतंतंआलोक्यअयंरामेणअभयंदत्ताअयं
असुरःवधार्हःन) विभीषणको घातकरनैवाली जो शक्ति ताहि आवतीदेखि लक्ष्मणजी विचारे कि
इसको रघुनन्दन ने अभयदियाहै ताते यह विभीषण असुरवधकेयोग्यनहीं है ६ ॥

इत्युक्तालक्ष्मणोभीमंचापमादायवीर्यवान् ॥ विभीषणस्यपुरतःस्थितोऽकंपइवाच
लः ७ साशक्तिर्लक्ष्मणतनुंविवेशामोघशक्तिः ॥ यावंत्यःशक्त्योलोकेमाययासं
भवंतिहि ८ तासामाधारभूतस्यलक्ष्मणस्यमहात्मनः ॥ मायाशक्त्याभकेत्किंवाशे
षांशस्यहरेस्तनोः ९ तथापिमानुषंभावमापन्नस्तदनुव्रतः ॥ मूर्च्छितःपतितोभू
मौतमादातुंदशाननः १० हस्तैस्तोलयितुंशक्तोनवभूवातिविस्मितः ॥ सर्वस्यजं
गतःसारंविराजंपरमेश्वरम् ११ कथंलोकाश्रयंविष्णुंतोलयल्लघुराक्षसः ॥ ग्रही
तुकामंसौमित्रिरावणंवीक्ष्यमारुतिः १२ ॥

(इतिउक्त्वावीर्यवान्लक्ष्मणःभीमंचापंआदायअकंपअचलःइव विभीषणस्यपुरतःस्थितः) वि-
भीषणको बचावाचाहिये ऐसाकहि बड़ेबलवान् लक्ष्मण भयंकर धनुषको हाथमेंलैकै थिरपर्वत सम
विभीषणके आगे स्थितभये ७ (अमोघशक्तिःसाशक्तिःलक्ष्मणतनुंविवेशलोकेयावंत्यःशक्तयःमाय-
यासंभवंतिहि) जो वृथा न जाय ऐसी शक्तिहै जामें सो रावणकी चलाईहुई जो सांगसो लक्ष्मण
जीकी छातीपरलागि तन में प्रवेशकरिगई यद्यपि अमोघशक्तिहै परन्तु लक्ष्मणके हेत कछुभी नहीं
बाधाकरिसक्ती है काहेते कि लोकमें जहांतकशक्ती हैं ते सब मायाते उत्पन्नहोती हैं ८ (तासांआ-
धारभूतस्यहरेःतनोःशेषांशस्यमहात्मनः लक्ष्मणस्यमायाशक्त्याकिंवाभवेत्) तिस मायाके आधार
भूत हरिको तन शेषको अंश ऐसे महात्मा लक्ष्मणको मायाशक्तिकारिकै क्या है सकै ९ (तथापि
मानुषंभावंआपन्नःतदनुव्रतःमूर्च्छितःभूमौपतितःतंआदातुंदशाननः) यद्यपि मायामयशक्ति इनको
बाधक नहींरहै ताहूपर मानुषभावमेंपरे सोईमानिकै मूर्च्छित है भूमिपर गिरिपरे तिनहिं उठाय लै
जाने हेत रावण १० (हस्तैःतोलयितुंशक्तःनवभूवअतिविस्मितःजगतःसर्वस्यसारंपरमेश्वरंविराजं)
रावण बीसोंहाथोंकरिकै बहुतेराउठायथका परन्तु उठानेको समर्थ न भया भाव उठाये न उठिसके
तब अत्यन्त आश्चर्य मानताभया पुनः जगत्यावत् स्थावर जंगम तिस सबके सारांश परमेश्वर वि-
राडरूप ११ (लोकाश्रयंविष्णुंलघुराक्षसः कथंतोलयत्सौमित्रिग्रहीतुकामंरावणंवीक्ष्यमारुतिः)
लोक है आधार जिनकी ऐसे विष्णुको छोटा राक्षस रावण कैसे उठायसकै ता समय में लक्ष्मणको
उठावताहुवा जो रावण ताकोदेखिकै हनुमान्धायकै १२ ॥

आजघानोरसिक्रुद्धोवज्रकल्पेनमुष्टिना ॥ तेनमुष्टिप्रहारेणजानुभ्यामपतद्भुवि १३
आस्यैश्चनेत्रश्रवणैरुद्धमनुरुधिरंबहु ॥ विधूर्णमाननयनोरथोपस्थउपाविशत् १४
अथलक्ष्मणमादायहनूमान्रावणादितम् ॥ आनयद्रामसामीप्यंबाहुभ्यांपरिगृ-
ह्यतम् १५ हनूमतःसुहृत्वेनभक्त्याचपरमेश्वरः ॥ लघुत्वमगमद्देवोगुरुणांगुरुर-
प्यजः १६ साशक्तिरपितंत्यक्त्वाज्ञात्वानारायणांशजम् ॥ रावणस्यरथंप्रागाद्रा

वणोपिशनैस्ततः १७ संज्ञामवाप्यजग्राहवाणासनमथोरुषा ॥ राममेवाभिदुद्राव
दृष्ट्वारामोपितक्रुधः १८ ॥

(क्रुद्धःवज्रकल्पेनमुष्टिनाउरसिभाजघान मुष्टिप्रहारेणतेन जानुभ्यांभुवि अपतत्) हनुमान् क्रोध करि वज्र के समान मुष्टिका करिकै रावण की छाती में मारते भये मुष्टिका लागेते जो चोट भाई त्याहि व्यथा करिकै मूर्च्छित है दिहुनिन को टेकि करिकै भूमिमें गिरि परा १३ (आस्यैःचनेत्रश्रवणैः बहुरुधिरंउद्धमन् नयनःविधूर्णमानः रथोस्थउपाविशत्) मुखों करिकै पुनः नेत्र श्रवणों करिकै बहुत रक्त वमन करता हुआ नेत्रों को घुमाता हुआ धीरे धीरे जाय रथ पर गिरि परा १४ (अथ रावणार्दितम् लक्ष्मणं हनूमान्भादाय बाहुभ्यांपरिगृह्यतं रामसामीप्यंभानयत्) अथ रावण करिकै घायल मूर्च्छित जो लक्ष्मण तिनहि हनूमान् उठाय बाहुन करिकै पकरेहुये तिनको रघुनाथजी के समीप को लावते भये १५ (गुरुणांगुरुः अपिभजःदेवः हनूमतःसुहृत्त्वेनचभक्त्यापरमेष्ठवरः लघु त्वंभगवत्) गुरु पदार्थन को गरुता देनहारे भजन्म स्वयं प्रकाश रूप सो हनूमान् को मित्र भाव करिकै पुनः भक्ति करिकै अर्थात् अपना सेवक जानिकै परमेस्वर हनुकेहवै जातेभये अर्थात् विरोध भाव वालेन को मुक्ति देते हैं उनके वश नहीं होतेहैं अरु प्रीति भाव वालेन के वश रहते हैं १६ (नारायणश्रंशजंज्ञात्वा तंत्यक्त्वासाशक्तिः अपिरावणस्यरथंप्रागात्) नारायण के शंशते उत्पन्न जानि तिन लक्ष्मण को त्यागि सो शक्ति रावण के रथको चलीगई १७ (ततःरावणःअपिशनैःसंज्ञां अवाप्य वाणासनंजग्राह अथरुपारासंएवअभिदुद्राव तदंष्ट्वारामःअपिक्रुधः) तदनंतर रावणभी धीरा धीरा वैतन्यता को प्राप्तहवै धनुष हाथ में लैकै तब क्रोध करि रघुनन्दन के संमुख धावता भया तिसको आवते देखिकै रघुनन्दन भी क्रोधकरि १८ ॥

आरुह्यजगतांनाथोहनूमंतंमहाबलम् ॥ रथस्थंरावणंदृष्ट्वाअभिदुद्रावराघवः १९
ज्याशब्दमकरोत्तीव्रंवज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् ॥ रामोगंभीरयावाचाराक्षसैंद्रमुवाच
ह २० राक्षसाधमतिष्ठाद्यक्रगमिष्यसिमेपुरः ॥ कृत्वापराधमेवंमेसर्वत्रसमदर्शि
नः २१ येनवाणेनानिहताराक्षसास्तेजनालये ॥ तेनैवत्वांहनिष्यामितिष्ठाद्यमम
गोचरे २२ श्रीरामस्यवचःश्रुत्वारावणोमारुतात्मजम् ॥ वहंतंराघवंसंरुयेशरैस्ती
क्ष्णैरताडयत् २३ हतस्यापिशरैस्तीक्ष्णैर्वायुसूनोःस्वतेजसा ॥ व्यवर्द्धतपुनस्तेजो
ननर्दचमहाकपिः २४ ॥

(जगतांनाथः महाबलंहनूमंतंआरुह्य रथस्थंरावणंदृष्ट्वाअभिदुद्राव) जगत् के नाथ क्रोध युत महाबली हनूमान् पर सवारहवै रथ पर चढाहुआ रावण को देखि रघुनन्दन भी संमुख धावते भये १९ (वज्रनिष्पेषनिष्ठुरम् तीव्रंज्याशब्दं अकरोत् राक्षसैंद्रंरामः गंभीरयावाचाउवाचह) जैसे बिजुली गिरे को महा कठिन शब्द होता है तैसेही तीव्र धनुष के रोदा को शब्द करते भये पुनः रावण प्रति रघुनन्दन गंभीर वचन बोलते भये २० (राक्षसअधमसर्वत्र समदर्शिनःमेएवंअपराधंरुत्वा तिष्ठमेपुरःअद्यक्रगमिष्यसि) प्रभु वाले हेराक्षस अधम सर्वत्र चराचरमें समदृष्टि राखने वाला जोमैंहों ताकी भार्या हरि लैगया इस प्रकार को अपराध किया ताते खटारहु मेरे भागेते भव कहा जाय सकाहै भाव स्वर्ग भूतल पातालादि जास्यान को जायगा तहाँ बिना मारे न

वचैगा २१ (जनालयेतेराक्षसायेन बाणेनानिहता तेनएव त्वाहनिष्यामि अयममगोचरेतिष्ट) प्रभु
बोले हे दुष्ट रावण जनस्थान पंचवटी में तेरे राक्षस चौदहहजार खरादिकों को जौने बाण करिके
सबको संहारकिया ताही बाण करिके तोको भी मारिहो आज मेरे संमुख संग्राम में खड़ाहु २२
(श्रीरामस्यवचःश्रुत्वा रावणःराघवंवहंतमारुतात्मजं संख्येतीक्ष्णैःशरैःभताडयत्) श्री रघुनाथजी के
वचन सुनिके रावण धनुषबाण संधानि रघुनन्दन को लै चलनेवाले जो हनुमान् तिनहि संग्राम
में बहुते पैंने बाणों करिके मारता भया २३ (तीक्ष्णैः शरैः हतस्वअपि वायुसूनोः तेजःस्वतेज-
सापुनः व्यवर्द्धतचमहाकपिःनन्द) रावण के तीक्ष्ण पैंने बाणों करिके ताडित भी हनुमान् को
तेज आपने रुद्र तेज करिके पुनः बढ़ि जाताभया भाव व्यथाको न प्राप्तअये प्रसन्नमन पुनःमहाबली
कपि हनुमान् गर्जतेभये २४ ॥

ततोदृष्टाहनूमंतंसत्रणंरघुसत्तमः ॥ क्रोधमाहारयामासकालरुद्रइवापरः २५ सा
श्चरथंध्वजंसूतंशस्त्रौघंधनुरंजसा ॥ छत्रंपताकांतरसाचिच्छेदशितसायकैः २६
ततोमहाशरेणाशुरावणंरघुसत्तमः ॥ विव्याधवज्रकल्पेनपाकारिरिवपर्वतम् २७
रामबाणहतोवीरश्चचालचमुमोहच ॥ हस्तान्निपतिश्चापस्तंसमीक्ष्यरघूत्त-
मः २८ अर्द्धचन्द्रेणचिच्छेदतत्किरीटंरविप्रभम् ॥ अनुजानामिगच्छत्वमिदानीं
बाणपीडितः २९ प्रविश्यलंकामाश्वस्यश्वःपश्यसिवलंमम ॥ रामबाणेनसंविद्धो
हतदर्पोऽथरावणः ३० ॥

(हनूमंतंसत्रणंरघुसत्तमःअपरःकालरुद्रःइवक्रोधमाहारयामास) हनुमान्को घावन स-
हित देखिके तत्र रघुवंशनाथ यथा दूसरे प्रलयकालके रुद्रहैं ऐसा भारी क्रोध उत्पन्न करतेभये २५
(तत्रश्चरथंध्वजंसूतंशस्त्रौघंधनुरंजसाचिच्छेद) सहित धौडन रावण
को रथ सारथी छत्र ध्वजा पताका धनुष बाणोंको समूह इत्यादि सबनको रघुनन्दन अपने पराक्रम
से पैंने बाणों करिके शीघ्रही काटिडारते भये २६ (ततःरघूत्तमःवज्रकल्पेनमहाशरेणाशुरावणंवि-
व्याधपाकारिःपर्वतंइव) तदनन्तर रघुनाथजी वज्रके समान महाप्रचंड एक बाण करिके शीघ्रही
रावणको ताडन करिकेसा मूर्च्छित भूमिपै गिराय दिये यथा पाकारि इंद्र वज्र प्रहारकरि पर्वत को
पक्ष चतुर्दीन करि भूमिपै गिराय दिया २७ (वीरःरामबाणहतःचचालचमुमोहचहस्तात्चापःनिप-
तितःतंसमीक्ष्यरघूत्तमः) यद्यपि रावण संग्राममें अविचल वीरहै परन्तु रघुनन्दनके बाण करिके वि-
दारण कियाहुआ रावण भी चलायमानभया पुनः मूर्च्छितभया पुनः हाथसे धनुष गिरिपरा इत्यादि
इशायुत जो रावण ताहि देखिके रघुनाथजी २८ (रविप्रभंतत्किरीटंअर्द्धचन्द्रेणचिच्छेदबाणपीडितः
अनुजानामित्वंहदानींगच्छ) मूर्च्छित देखि वीरता धर्मते प्राणघातक शर नहीं मारे सूर्यवत् प्रकाश-
मान ज्योति रावणको किरीटहै ताहि अर्द्धचंद्राकार बाण करिके काटिदीन्हे पुनःबोले कि बाणव्यथा
करिके पीडितहसि यह मैं जानताहो ताते तू अभी चलाजा २९ (लंकाम्प्रविश्यआश्वस्यश्वःममव-
लं पश्यसिरामबाणेनसंविद्धःअपदर्पहतःरावणः) लंकामें जाय सावधानहवै प्रभातकाल आय मेरा
ब्रह्म देखेगी रामबाण करिके घायल अब अहंकार हीन रावण ३० ॥

महत्प्रातःकालमाशुक्तो लंकां प्राविशदातुरः ॥ रामोऽपिलङ्कमणदृष्ट्वा मूर्च्छितपतितं

भुवि ३१ मानुषत्वमुपाश्रित्यलीलयानुशुशोचह ॥ ततःप्राहहनूमंतं वत्सजीवय
लक्ष्मणम् ३२ महौषधीःसमानीयपूर्ववद्भानरानपि ॥ तथेतिराघवेणोक्तोजगामा
शुमहाकपिः ३३ हनूमान्वायुवेगेनक्षणात्तीर्त्वामहोदधिम् ॥ एतस्मिन्नंतरेचारा
वणायन्यवेदयन् ३४ रामेणप्रेषितोदेवहनूमानक्षीरसागरम् ॥ गतोनेतुंलक्ष्मण
स्यजीवनार्थमहौषधीः ३५ श्रुत्वातच्चारवचनंराजाचिंतापरोभवत् ॥ जगामरात्रा
वेकाकीकालनेमिगृहंक्षणात् ३६ ॥

(महत्यालज्जयायुक्तःआतुरःलंकांप्राविशत्मूर्च्छितंभुविपतितंलक्ष्मणंदृष्ट्वारामःअपि) बड़ील-
ज्जायुक्त रावण शीघ्रही लकामें प्रवेश किया भरु इहां मूर्च्छावश भूमिपै परेहुये लक्ष्मणको देखि रघु-
नन्दन भी माधुर्यलीलामें ३१ (मानुषत्वंउपाश्रित्यलीलयाभनुशुशोचहततःहनूमंतंप्राहवत्सलक्ष्मणंजी
वय) मानुष भावको प्राप्तह्वै माधुर्यलीला करिकै शोच करतेभये तदनन्तर रघुनन्दन हनूमान् प्रति
बोले कि हेवत्स लक्ष्मणको सजीव करौ ३२ (महाऔषधीःसंभानीयपूर्ववत्भानरान्अपिराघवेणउक्त.
तथा इतिमहाकपिःआशुजगाम) द्रोणागिरि युत महा औषधी सजीवनमूरि लाय लक्ष्मणको जि-
आय पुनः प्रथमकी नाई वानरोंको भी जिआवो ऐसा रघुनन्दनने कहा तब जैसा आपकहतेहौ तैसा
ही करौंगो ऐसाकहि महाबली हनूमान् शीघ्रही जातेभये ३३ (वायुवेगेनहनूमान्क्षणात्महोदधिंती
र्त्वाएतस्मिन्नंतरेचाराःरावणायन्यवेदयन्) पवन तुल्य वेग करिकै चले हनूमान् यह प्रतिज्ञा किये
कि क्षणमात्रमें समुद्रपार उतरि शीघ्रही सगिरि औषधी लावोंगोजब चलनेपर भये ताही समय में
रावणके दूत यह हाल जाय रावणके अर्थ निवेदन किये ३४ (देवलक्ष्मणस्यजीवनार्थमहाऔषधीः
नेतुंहनूमान्रामेणप्रेषितःक्षीरसागरंगतः) दूत रावण प्रति बोले कि देदेव लक्ष्मणको जिआवने अर्थ
महाऔषधी सजीवनमूरि आनिबे हेत हनूमान् राम करिकै पठायेहुये क्षीरसागरको गये ३५ (चार
वचनंतत्श्रुत्वाराराजाचिंतापरःअभवत्त्रात्रैकाकीक्षणात्कालनेमिगृहंजगाम) दूतोंको कहाहुआ वचन
सो सुनिकै राजारावण बड़े चिंतायुक्त होकै रात्रिही विपे अकेले क्षणमात्रमें कालनेमिके मंदिर को
जाता भया ३६ ॥

गृहागतंसमालोक्यरावणंविस्मयान्वितः ॥ अर्ध्यादिकंततःकृत्वारारवणस्याग्रतः
स्थितः ३७ कालनेमिरुवाचेदंप्रांजलिर्भयविक्लवः ॥ किंतेकरोमिराजेंद्रकिमाग
मनकारणम् ३८ कालनेमिमुवाचेदंरावणोदुःखपीडितः ॥ ममापिकालवशतःक
ष्टमेतदुपस्थितम् ॥ मयाशक्त्याहतोर्वीरोलक्ष्मणःपतितोभुवि ३९ तंजीवयितुमा
नेतुमौषधीर्हनूमान्गतः ॥ यथातस्यभवेद्विघ्नंतथाकुरुमहामते ४० माययामुनि
वेषेणमोहयस्वमहाकपिम् ॥ कालात्ययोयथाभूयात्तथाकृत्वैहिमंदिरे ४१ रावण
स्यवचःश्रुत्वाकालनेमिरुवाचतम् ॥ रावणेशवचोमेघशृणुधारयतत्त्वतः ४२ ॥

(गृहागतरावणंसंभालोक्यविस्मयान्वितःततःअर्ध्यादिकंकृत्वारारवणस्यअग्रतःस्थितः) अकेला
राति को घरमें आयाहुआ जो रावण ताहि देखिकै मारीच बड़े आश्चर्य युक्त हैं तदनंतर अर्घ्यपा-
द्यादि षोडशोपचार पूजन करिरावण के आगे खड़ाभया ३७ (भयविक्लवःकालनोमिःप्रांजलिःइदंउ-
वाचराजेंद्रआगमनकारणंकिंतेकिंकरोमि) भयकरिकै विकल कालनोमि हाथ जोरिरावण प्रतिइस

प्रकारको बचन बोला हे राजेंद्रआपको मेरेपास आवनेको क्या कारण ह सो कहिये आपको क्या कार्य करौ ३८ (दुःखपीडितःरावणःकालनेमिदंउवाचकालवशतः ममअपि एतत्कष्टंउपस्थितंमया शक्त्याहतःलक्ष्मणःवीरःभुविपतितः) दुःख करिकै पीडित रावण कालनेमि प्रति ऐसावचनबोलता भया हेमित्रकाल प्रभाव वशते मोको भी यह कष्टप्राप्त भया कि मैंने शक्ति करिकै मारा तिसधाव से मूर्च्छित लक्ष्मण वीर भूमिपै परे हैं ३९ (तंजीवयितुंऔषधीःआनेतुंहनुमानगतः महामतेतस्य विघ्नंयथाभवेत्तथाकुरु) तिस लक्ष्मणको जिआवने हेतु औषधी आनवे हेतु क्षीरसागरको हनूमान गये हैं हे महामते ताको विघ्न जैसे होय तैसा कार्यकरौ ४० (मायामुनिवेषेणमहाकपिमोहयस्वय थाकालात्ययःभूयात्तथाकृत्वामन्दिरेएहि) माया से मुनिवेष करिकै महा कपि हनूमानको मोहित करि जिसप्रकार निशाकाल व्यतीतहोय सो कार्य करिकै पुनः अपने मंदिरको चलेआयो ४१ (रावण स्यवचःश्रुत्वाकालनेमिःतंउवाचरावणेशत्रयमेवचःशृणुतत्त्वतःधारय) रावण को वचनसुनि कालने मितिसप्रतिबोलता भया हे रावण स्वामी या समय में मेरावचन सुनौ ताहीको यथार्थ परमतत्त्व मानि धारण करौ ४२ ॥

प्रियंतेकरवाण्येवनप्राणान्धारयाम्यहम् ॥ मारीचस्ययथारण्येपुराभून्मृगरूपि
णः ४३ तथैवमेनसंदेहोभविष्यतिदशानन ॥ हतापुत्राश्चपौत्राश्चवांधवाराक्ष
साश्चते ४४ घातयित्वासुरकुलंजीवितेनापिकितव ॥ राज्येनवासीतयावाकिंदेहे
नजडात्मना ४५ सीतांप्रयच्छरामायराज्यंदेहिविभीषणे ॥ वनंजाहिमहाबाहोरम्यं
मुनिगणाश्रयम् ४६ स्नात्वाप्रातःशुभजलेकृत्वासंध्यादिकाःक्रियाः ॥ ततएकां
तमाश्रित्यसुखासनपरिग्रहः ४७ विसृज्यसर्वतःसंगमितरान्विषयान्ब्रह्मिः ॥ ब्रह्मिः
प्रवृत्ताक्षगणंशनैःप्रत्यक्प्रवाहय ४८ ॥

(तेप्रियंएवकरवाणिअहंप्राणान्धारयामियथापुराभून्मृगरूपिणः मारीचस्यअभूत्तथाएवमेभ
विष्यतिसंदेहः न) हे रावण तुम्हाराप्रिय कार्यतौ करिहौ परन्तु यहकार्य करिकै मैं अपनेप्राणन को
न धारण करिहौ काहेते जैसे पूर्वकालवनमें मृगरूप मारीचकी जो दशाभई भावमारा गया तैसेही
मेरीभी मृत्युहोइगी यामें संदेहनहीं ४३ (दशाननतेपुत्राःचपौत्राःचवांधवाःचराक्षसाःहताः) हे दशमुख
तुम्हें पुत्रपुनः पौत्रपुनः भाई पुनः अनेकन राक्षस ते सबमारे गये ४४ (असुरकुलंघातयित्वातव
जीवितेनअपिकिराज्येनवासीतयावाजडात्मनादेहेनकिं) राक्षस कुलको नाशकराय अकेले तुम्हारे
जीवतरहनेते तुमको क्या सुखहै पुनः राज्यकरिअथवा सीता करिकै अथवा पंचभौतिकजड रूपदेह
करिकै तुमको क्या फललाभहोइगो ४५ (राज्यंविभीषणेदेहिसीतारामायप्रयच्छमहाबाहोमुनिगणा
श्रयंरम्यंवनंजाहि) राज्यपदको तौ विभीषण को देहुंसीता को राम के अर्थदेउ हे महाबाहो जहां
समूह मुनि वासकरते हैं ऐसे सुंदरे वनको तुमजाहु ४६ (प्रातःशुभजलेस्नात्वासंध्यादिकाःक्रियाःकृ
त्वाएकांतंततआश्रित्यसुखासनपरिग्रहः) प्रातःकाल तीर्थादि कल्याणकारी जलमें स्नानकरि सं-
ध्यातर्पणादि नित्य क्रियाकरौ पुनः जहां एकांत स्थानहोय तहां पद्मासनादि जामें सखहोय तिसआ
सनते बैठो ४७ (बाहःविषयान्इतरान्सर्वतःसंगंविसृज्यअक्षगणंब्रह्मिःप्रवृत्तंशनैःप्रत्यक्प्रवाहय) बा-
हेरकी विषय यथा शब्द स्पर्श रूपरसगंधादि तथा औरहुजे स्त्री पुत्र धनधाम राज्यादि तिन सबका

संग त्यागकरि इंद्रिी समूह जो वासना द्वारा बाहेर विषयिनमें प्रवृत्तहैं तिनहिं खेंचिमनादि स्वाधीनकरि धीरा धीरा पूर्वरूपजो आत्मतत्त्वताको प्राप्त होहु ४८ ॥

प्रकृतेभिन्नमात्मानंविचारयसदानघ ॥ चराचरजगत्कृत्स्नं देहबुद्धीन्द्रियादिकम् ४९ आब्रह्मस्तंवपर्यंतदृश्यतेश्रूयतेचयत् ॥ सैषाप्रकृतिरित्युक्तासैवमायेतिकीर्तिता ५० सर्गस्थितिविनाशानांजगद्वृक्षस्यकारणम् ॥ लोहितश्वेतकृष्णादिप्रजासृजतिसर्वदा ५१ कामक्रोधादिपुत्राद्यान्हिंसातृष्णादिकन्यकाः ॥ मोहयत्यनिशंदेवमात्मानंस्वैर्गुणैर्विभुम् ५२ कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखान्स्वगुणान्मात्मनीश्वरे ॥ आरोप्यस्ववशंकृत्वातेनक्रोडतिसर्वदा ५३ शुद्धोप्यात्माययायुक्तोपश्यतीवसदावहिः ॥ विस्मृत्यचस्वमात्मानंमायागुणविमोहितः ५४ ॥

(अनघप्रकृतेःभिन्नंआत्मानंसदाविचारय इंद्रियादिकंदेहबुद्धी चराचरकृत्स्नंजगत्) हे निष्पाप रावण प्रकृत मायाते भिन्न जो आत्मा है ताहि सदा विचार करौ अरु इंद्रिी आदिक जो देह बुद्धी चराचरादि संपूर्ण जो जगत् है ४९ (आब्रह्मस्तंवपर्यंतदृश्यतेच श्रूयतेस एपाप्रकृतिः इतिउक्ता साएवमायाइतिकीर्तिता) ब्रह्मादिदे तृणपर्यंत जो कुछ देखि परताहै पुनः जो सुनि परता है सोई यह प्रकृतिहै ऐसा आचार्यों ने कहाहै जो प्रकृति रोई माया है ऐसा भी कहते हैं तिसते न्याराकरि आत्मतत्त्व विचार करौ ५० (जगद्वृक्षस्यसर्गस्थितिविनाशानां कारणंलोहितश्वेतकृष्णादिप्रजाः सर्वदासृजति) जगत् रूपी वृक्षकी उत्पत्ति पालन संहार इत्यादि को कारण प्रकृतिहै सो अरुण रंगके जो रजोगुणी है श्वेतरंग जो सतोगुणी कृष्णरंगके जो तमोगुणी इत्यादि प्रजा सर्वकालमें उत्पन्नकरती है ५१ (कामक्रोधादिपुत्राद्यान्हिंसातृष्णादिकन्यकाःस्वैर्गुणैर्विभुम्आत्मानंदेवंअनिशं मोहयति) पुनः प्रकृति काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्यादि पुत्रहिंसा तृष्णाआशाचिंता ममता लोलुपतादि कन्या उत्पन्न करती तिस परिवार सहित आपने गुण रजतमादिकों करिकै समर्थ जो आत्मदेव ताको दिनोराति मोहित करती है ५२ (कर्तृत्वभोक्तृत्वमुखान्स्वगुणान्मात्मनिईश्वरेआरोप्यस्ववशंकृत्वातेनसदाक्रोडति) भेंकरताहों में भोगकरने वालाहों इत्यादि मुख्यअपने गुणोंको आत्म ईश्वर विषे आरोपणकरि आपने वश करिकै तिस आत्मके साथ सदा प्रकृति जन्म मरणादिक्रीड़ाकरती है ५३ (आत्माशुद्धःअपिमायागुणविमोहितःस्वआत्मानंविस्मृत्यचययायुक्तःसदावहिःपश्यतिइव) आत्मा शुद्धभीहै परंतु मायाके गुणों करिकै विमोहित है अपना आत्मरूप बिसारि पुनः मायाकरिकै युक्त सदा बाहेर इंद्रियों को देखताहुवा जीवभासता है ५४ ॥

यदासद्गुरुणायुक्तोबोध्यतेबोधरूपिणा ॥ निवृत्तदृष्टिरात्मानंपश्यत्येवसदास्फुटम् ५५ जीवन्मुक्तःसदादेहीमुच्यतेप्राकृतैर्गुणैः ॥ त्वमप्येवंसदात्मानंविचार्य्यनियतेन्द्रियः ५६ प्रकृतेरन्यमात्मानंज्ञात्वामुक्तोभविष्यसि ॥ ध्यातुंयद्यसमर्थोसिसगुणदेवमाश्रय ५७ हृत्पद्मकर्णिकेरवर्णपंठेमणिगणान्विते ॥ सृष्टुश्लक्ष्णतरेतत्रजानक्यासहसंस्थितम् ५८ वीरासनंविशालाक्षंविद्युत्पुंजनिभांवरम् ॥ किरीटहारकेयूरकौस्तुभादिभिरन्वितम् ५९ ॥

(बोधरूपिणासद्गुरुणायुक्तःयदाबोध्यतेनिवृत्तदृष्टिःसदास्फुटंआत्मानंएवपश्यति) ज्ञानस्वरूप

सद्गुरुकरिके युक्त है जब जीव बोधको प्राप्त होता है तब निवृत्तदृष्टि अर्थात् इंद्रि विषयद्वारा जो बाहेरको दृष्टि है ताको खैचि विषयोंसों निवृत्त है जीव सदास्पष्ट अपनी आत्माको देखता है ५५ (देही सदा जीवनमुक्तः प्राकृतैः गुणैः मुच्यते एवं त्वं अपि नियतेन्द्रियः सदात्मानं विचार्य) आत्माको ध्यान करनेवाला जीव सदा जीव न मुक्त है मायागुणों करिके जो बंधन है तिनसों छूटि जाता है हे रावण इसप्रकार तुम भी शमदमादि बल इंद्रिजित् हैंकै सदा आत्मरूपको विचार करी ५६ (प्रकृतेः अन्यं आत्मानं ज्ञात्वा मुक्तः भविष्यति यदि ध्यातुं असमर्थः असि सगुणं देवं आश्रय) हे रावण प्रकृति जो देहबुद्धी तासों भिन्न आत्मगुण ग ब्रह्म ताको जानिके मुक्त है जाहुगे पुनः जो इस अगुणरूपके ध्यान करनेको नहीं समर्थ होतौ सगुणरूप जो देव है तिनकी शरण होउ कौन भांति ५७ (हृत्पद्मकर्णिकेमणिगणान्विते स्वर्णपीठे मृदुश्लक्ष्णतरेतत्र जानक्या सह वीरासनं संस्थितम्) हृदय में कमल ताकी कर्णिकामें अनेक रंगकी मणिन सहित सोनेके सिंहासनपर कोमल अत्यन्त सचिक्कण बिछावनेपर तहां जानकी करिके सहित रामचन्द्र वीरासनते बैठे हैं ५८ (विशाल अक्षं विद्युत्पुंजनिभां वरमूर्किरीटहारके यूर कौस्तुभादिभिः अन्वितम्) बड़े लंबायमान सुंदरनेत्र जिनके बिजुली समूहकी ऐसी प्रभाजामें ऐसा दिव्य पीतपट धारण किहे कोटि सूर्यवत् प्रकाशजामें ऐसा किरीटशीशपर शोभित जिनके स्वर्णमणिमय दिव्य कुंडल काननमें गजमुक्तादि अनेक मणिनकेहार ग्रीवाते उरपर शोभितके यूर अर्थात् रत्नजटित सोने को बजुल्ला भुज में कौस्तुभ मणि आदि और हू भूषणनयुक्त सर्वांगशोभित ५९ ॥

नूपुरैः कटकैर्भातंतथैव वनमालया ॥ लक्ष्मणेन धनुर्द्वंद्वकरणपरिसेवितम् ६० एवं ध्यात्वा सदात्मानं रामं सर्वहृदि स्थितम् ॥ भक्त्या परमया युक्तो मुच्यते नात्र संशयः ६१ शृणु वै चरितं तस्य भक्तैर्नित्यमनन्यधीः ॥ एवं चेत्कृतपूर्वाणि पापानि च महांत्यपि क्षणादेव विनश्यन्ति तथाऽग्नेस्तूलराशयः ६२ भजस्व रामं परिपूर्णमेकं विहाय वैरं निजभक्तियुक्तः ॥ हृदा सदा भावित भावरूपमनामरूपं पुरुषं पुराणम् ६३ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडेषष्ठः सर्गः ६ ॥

(नूपुरैः कटकैः तथा वनमालया एव भातंत धनुःद्वंद्वकरणलक्ष्मणेन परिसेवितम्) नूपुरों करिके पदकडों करिके हाथ तैसेही वनमाला अर्थात् तुलसी दल कुंद मंदार पारिजात कमल इत्यादि फूलों करिके गहा हुवा तिस वनमाला करिके भी उरपर शोभा है एक अपना एक रघुनन्दन को इति है धनुष हैं हाथ में जिनके ऐसे लक्ष्मण करिके सेवित हैं ६० (सर्वहृदि स्थितं आत्मानं रामं परमया भक्त्या युक्तः एवं सदा ध्यात्वा मुच्यते अत्र संशयः न) सब भूतमात्र के हृदय में स्थित परमात्मा जो राम हैं तिनहिं जो जन परमभक्ति करिके युक्त होकर इसप्रकार सदा ध्यान करता है सो मुक्त होता है यामें संशय नहीं ६१ (भक्तैः तस्य चरितं वै अनन्यधीः नित्यं शृणु एवं चेत्पूर्वाणि कृतपापानि च महांत्यपि यथा तूलराशयः अग्नेः क्षणात् एव विनश्यन्ति पूर्वभक्तों के रचेहुये तिन रघुनन्दन के चरित्र हैं तिनहिं निश्चय करिके सब को आशभरोसा त्यागिके बड़े ईश्वर आधार इति अनन्य बुद्धि है करि रामचरित्र श्रवण करौ जो ऐसेही करोगे तौ तुम्हारे पूर्वके कियहुये पाप पुनः महापाप ते सब जैसे रुईकोठेर अग्नि के छुड़जात भस्म होत तैसेही सब पापक्षणों भरेमें नाश है जायगे ६२ (वैरं विहाय निजभक्तियुक्तः रामं भजस्व कथं भूतं रामं) हे रावण वैराभाव त्यागिके आपभक्ति युक्त है रघुनाथजी को भजौ कैसे हैं रघुनाथजी (अनाम

रूपंपुरुषंपुराणंपरिपूर्णैकसंदाहदाभावितभावरूपं) नामरूपराहितपुराण पुरुष सबमें परिपूर्णव्यापक अद्वितीय सदाहृदय करिकै ध्यान प्रीति भावकरि जाको रूपप्राप्त होनेयोग्य अर्थात् जैसाभाव करौ तैसेहीरूप ते प्राप्त होते हैं ६३ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते
अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डेषष्ठः प्रकाशः ६ ॥

कालनेमिवचःश्रुत्वा रावणो मृतसन्निभम् ॥ जज्वालक्रोधताम्राक्षः सर्पिरद्भिरग्निम
तृ१ निहन्मि त्वां दुरात्मानं मच्छासनपराङ्मुखम् ॥ परैः किंचिद्गृहीत्वा त्वं भाषसे रा
मर्किकरः २ कालनेमिरुवाचे दंरावणं देव किं क्रुधा ॥ नरोचते मे वचनं यदि गत्वा करो
मितत् ३ इत्युक्त्वा प्रययौ शीघ्रं कालनेमि महासुरः ॥ नोदितो रावणेनैव हनूमद्विघ्न
कारणात् ४ सगत्वा हिमवत्पाश्र्वंतपोवनमकल्पयत् ॥ तत्र शिष्यैः परिवृतो मुनिवेष
धरः खलः ५ गच्छतो मार्गमासाद्य वायुसूनोर्महात्मनः ॥ ततो गत्वा ददर्शाथ हनूमा
नाश्रमं शुभम् ६ ॥

सवैया ॥ दशकंधरप्रेरित कालसुनेमि बनो मुनि मारुति देखि जही । मकरी कहि जानि संहारि
चले सहद्वेण चलौ पथ आनि तही ॥ करि औषध लक्ष्मण बेगि उठे खल गोकितर्यो धनुबाण गही ।
घटकर्ण सुबोधित ज्ञान कहै त्यहि रावण क्रोधि कुवाच कही (भूमृतसन्निभम् कालनेमिवचः श्रुत्वा अ-
ग्निमत्सर्पिः अद्भिः इव रावणः जज्वालक्रोधताम्राक्षः) शिवजी बोले हे गिरिजा यद्यपि भूमृतके तुल्य
है कालनेमि के वचन सुनिकै यथा वरत अग्निमें घृतमिला जलपेरसे ज्वलित होत तैसेही रावण ज्व-
लित होता भया क्रोध करिकै लाल है गये नेत्र १ (मत्शासनपराङ्मुखं दुरात्मानं त्वानिहन्मि परैः किं-
चिद्गृहीत्वामर्किकरः त्वं भाषसे) रावण बोला हे कालनेमि मेरी आज्ञा ते विमुख दुष्टात्मा तोको
अभी मारता हौं क्योंकि मेरे शत्रुन से कछु धना दिलैकै रामको सेवक बनातू वार्ता करता है २ (काल
नेमिरावणं इदं उवाच देव किं क्रुधामेवचनं यदि नरोचते गत्वा तत्करोमि) कालनेमिरावण प्रति ऐसा
बोलता भया हे देव क्या प्रयोजन है क्रोध करिकै मेरा वचन जो आपको नहीं रुचता है तो मैं जाता
हौं जो आप कहते हो सो करता हौं ३ (इति उक्त्वा कालनेमि महासुरः रावणेन एव नोदितः हनूमत् विघ्न
कारणात् शीघ्रं प्रययौ) ऐसा कहि कालनेमि महासुर रावण करिकै पठावाहुआ हनूमान् के विघ्न
करने कारण ते शीघ्र ही जाता भया ४ (सहिमवत्पाश्र्वंतपोवनं अकल्पयत् तत्र खलः मुनिवेषधरः
शिष्यैः परिवृतः) सो कालनेमि हिमांचल गिरि के समीप गया मायासो तपोवनको रचा तहां आ-
श्रम में खल कालनेमि मुनि वेषधरि शिष्यन करिकै सहित ५ (महात्मनः वायुसूनोः गच्छतः मार्गं
प्रासाद्य ततः हनूमान् गत्वा अशुभं आश्रमं ददर्श) महात्मा पवन पुत्र के जाने की जो मार्गता में प्राप्त
रहा तदनंतर तहां पर हनूमान् गये अवमंगलीक आश्रम देखते भये ६ ॥

चितयामास मनसा श्रीमान् पवननंदनः ॥ पुरानदृष्टमेतन्मे मुनिमंडलमुत्तमम् ७
मार्गो विभ्रंशितो वामे अमोवाचित संभवः ॥ यद्वाऽविद्याश्रमपदं दृष्ट्वा मुनिमशेष
तः स्पीत्वा जलंततो यामिद्रोणाचलमुत्तमम् ॥ इत्युक्त्वा प्रविवेशाथ सर्वतो योजनाय

तम् ६ आश्रमंकदलीशालखर्जूरपनसादिभिः ॥ समावृतं पंकफलैर्नम्रशाखैश्च
पादपैः १० वैरभावविनिर्मुक्तं शुद्धं निर्मललक्षणम् ॥ तस्मिन्महाश्रमे रम्ये कालने
मिस्तराक्षसः ११ इन्द्रयोगं समास्थाय चकार शिवपूजनम् ॥ हनुमानभिवाद्याहगौ
रवेण महासुरम् १२ ॥

(श्रीमान्पवननंदनः मनसा चिंतयामास एतत् उत्तमं मुनिमण्डलं मे पुरानदृष्टं) नवीन आश्रम देखि
श्रीमान्पवनपुत्र हनुमान् मनकरिकै चिंता करते भये कि यह उत्तम मुनि मण्डल मुनिनको आश्रम में
प्रथम आवने समय नहीं देखा अब कैसे देखि परा ७ (वामार्गः विभ्रंशितः वामे चित्तभ्रमः संभवः यद्वा
आश्रमपदं भाविश्य भ्रमशेषतः मुनिं दृष्ट्वा) यातौ पूर्वको रास्ता भूलि गया अथवा मोको चित्तभ्रम उत्पन्न
भया अथवा इस विचारते क्या प्रयोजन है अब आश्रम में प्रवेश करौं समग्र शिष्यों सहित मुनिका
दर्शन करौं ८ (जलं पीत्वा ततः अनुत्तममद्रोणाचलं यामि इति उक्त्वा अथ प्रविवेश सर्वतः योजनाय तम्)
इहां जलपान करिकै तब उत्तम द्रोणाचल को जाऊँ ऐसा विचार करि हनुमान् तब आश्रम में प्रवेश
करि देखे सब दिशि ते योजन भरेको विस्तार है ज्यहि आश्रम के बाह्य सींवाको ६ (पंकफलैः च नम्र
शाखैः कदलीशालखर्जूरपनसादिभिः पादपैः समावृतं आश्रमं) पाके फलों करिकै युक्त पुनः झुकी हुई
शाखों करिकै युक्त ऐसे केला साखू खर्जूर कटहर इत्यादि समूह वृक्षों करिकै आवृत है आश्रम अर्थात्
आश्रम के आसपास सघन वृक्ष लगे हैं १० (तस्मिन्महारम्ये आश्रमे वैरभावविनिर्मुक्तं शुद्धं निर्मललक्षणं
कालनेमि सराक्षसः) तित महारमणीक आश्रम बिषे वैरभाव जो ईश्वर विमुखता राक्षसोंको सहज
स्वभाव ताको त्यागे शुद्ध सतोगुणी वृत्तिको धारण किहे शम दम विराग त्याग शांति इत्यादि निर्मल
लक्षणको दर्शाये सहित राक्षसों कालनेमि बैठा ११ (इन्द्रयोगं समास्थाय शिवपूजनं चकार महासुरं
गौरवेण अभिवाद्य हनुमान्माह) मायामय कपट मुनि वेष सो शिवको पूजन करता हुआ जो महासुर
ताहि बड़ी गुरुता करिकै प्रणाम करि हनुमान् बोलते भये १२ ॥

भगवन्नरामदूतोऽहं हनुमान्नामनामतः ॥ रामकार्येण महताक्षी राब्धिगंतुमुद्य
तः १३ तृषामां बाधते ब्रह्मन् उदकं कुत्र विद्यते ॥ यथेच्छं पातुमिच्छामि कथ्यतां मे
मुनीश्वर १४ तच्छ्रुत्वा मारुते वाक्यं कालनेमिस्तमब्रवीत् ॥ कमंडलुगतं तोयं
मत्वं पातुमर्हसि १५ भुंक्ष्व चेमानि पक्वानि फलानि तदनंतरम् ॥ निवसस्व सुखेना
त्र निद्रामेहित्व रास्तुमा १६ भूतं भव्यं भविष्यं च जानामि तपसा स्वयम् ॥ उत्थितो
लक्ष्मणः सर्वे वानरारामवीक्षिताः १७ तच्छ्रुत्वा हनुमानाह कमंडलुजलेन मे ॥
नशाम्यत्यधिकां तृष्णां ततो दर्शय मे जलम् १८ ॥

(भगवन् अर्हं रामदूतः नामतः हनुमान्नाम महतारामकार्येण क्षीराब्धिगंतुं उद्यतः) हे भगवन् मैं
रघुनाथजीको दूत हों जाति गुण क्रियादि अनेक नामोंते विशेषि हनुमान्नाम है बड़े भारी रामकार्य करि
आतुर क्षीरसागरको जाने हेत उद्यत हों १३ (ब्रह्मन्मां तृषा बाधते उदकं कुत्र विद्यते मुनीश्वर कथ्यतां
यथेच्छं पातुमिच्छामि) हे ब्रह्मन् मोको तृषा बाधा किहे है अर्थात् बड़ी प्यास लगी है भरु जल कहाँ पर है हे
मुनीश्वर कहिये जैसी इच्छा है तैसी ही जलपानको मोको इच्छा है १४ (मारुते वाक्यं तत् श्रुत्वा का
लनेमिः तं अब्रवीत्) समस्त मण्डलुगत तोयं मत्वं पातुमर्हसि) मारुत पुत्रको कहा वचन सो मुनिकै कालनेमि

तिन हनुमान्प्रति बोलताभया हे हनुमान् तुमरामदूतहो ताते जो मेरे कमण्डलु में धराजल है ताहि पानकरिबे योग्यहै १५ (चइमानिपक्रानिफलानिभुंक्ष्वतदनंतरं भद्रसुखेन निवसस्व निद्रां एहित्व रास्तुमा) इस जलको पानकरो पुनः ये पकेहुये फलखाउ तदनंतर इहां सुखसे निवासकरो निद्राको प्राप्तहोउ शीघ्रतामत्तकरो १६ (स्वयंतपसाभूतं भव्यं च भविष्यं जानामि लक्ष्मणः सर्वे वानराः रामवीक्षिताः उत्थिताः) अपने तपबलकरिकै भूत जो पूर्व है गयाहै अरु भव्य जो वर्तमान है रहा पुनः भविष्यं जो आगे होनहारहै इत्यादि सब जानताहो लक्ष्मण तथा सबमेहुये वानर इत्यादि रामके कृपादृष्टि देखतही उठैगे औपधको क्या प्रयोजनहै १७ (तत् श्रुत्वा हनुमान् आहमे अधिक तृष्णा कमण्डलु जलेन न शाम्यति ततः मेजलं दर्शय) कालनेमिको को वचन सो सुनिकै हनुमान् बोलतेभये हे मुनि मेरे प्यास अधिक लगो है कमण्डलुको जलपीवतसंते प्यास शांत न होयगी ताते मोको तड़ागादि जलदेखावो १८ ॥

तथेत्याज्ञापयामास वटुमायाविकल्पितम् ॥ वटो दर्शय विस्तीर्णं वायुसूनोर्जलाशयम् १९ निमील्य चाक्षिणी तोयं पीत्वा गच्छ ममांतिकम् ॥ उपदेक्ष्यामि ते मंत्रं येन द्रक्ष्यसि चोषधीः २० तथेति दर्शितं शीघ्रं वटुना शलिलाशयम् ॥ प्रविश्य हनुमान् तोयमपि वन्मीलितेक्षणः २१ ततश्चागत्य मकरी महामाया महाकपिम् ॥ अग्रसत्तमं ह्रावेगान्मारुतिं घोररूपिणी २२ ततो ददर्श हनुमान् ग्रसन्तीं मकरीं रुषा ॥ दारया मासहस्ताभ्यां वदनं साममारह २३ ततो तिरिक्षेद दृशे दिव्यरूपधरांगना ॥ धान्यमालीति विख्याता हनूमंतमथाब्रवीत् २४ ॥

(तथाइति मायाविकल्पितं वटुं आज्ञापयामास वटो विस्तीर्णं जलाशयं वायुसूनोः दर्शय) बहुतभला ऐसा कहि कालनेमि पुनः माया करिकै रच्य हुआ जो ब्रह्मचारी ताहि आज्ञाकिया कि हे वटो बड़ा भारी जो तड़ाग है ताहि हनुमान् को देखाय देउ १९ (अक्षिणी निमील्य तोयं पीत्वा च ममांतिकम् आगच्छते मंत्रं उपदेक्ष्यामि तेन च औषधीः द्रक्ष्यसि) कालनेमि बोला हे हनुमान् नेत्र मूँदिकै जलपान किहेउ पुनः मेरे पास आयो तुम को ऐसा मंत्र उपदेश करिहो जाके प्रभाव करिकै तुम सर्व औषधी देखौगे भाव भ्रम न परी २० (तथाइति वटुना शीघ्रं शलिलाशयम् दर्शितं प्रविश्य हनुमान् मीलितेक्षणः तोयं अपि वत्) बहुत भली ऐसा कहि ब्रह्मचारीने शीघ्रही लय जाय हनुमान्को तड़ाग देखाय दिया तामें पैठिकै हनुमान् नेत्र मूँदि जलको पान करनेलगे २१ (ततः महामाया घोररूपिणी मकरीवेगात् आगत्य महाकायं मारुतिं अग्रसत्) पुनः तदनंतर महामायावती भयंकर है रूप जाको ऐसी मकरी महाभारी बेगते आय कै महाकपि जो मारुतनंदन हनुमान् तिनहि प्राप्त करने लगी अर्थात् खाय जाना चही २२ (ततः हनुमान् ग्रसन्तीं मकरीं ददर्श) रुषाहस्ताभ्यां वदनं दारया मासं साममारह) तदनंतर हनुमान् प्राप्त करने वाली मकरी को देखि क्रोध करि हनुमान्जी दोऊ हाथों करिकै वाको मुख फारि डारे तिस व्यथाते तुरतही मरिजाती भई पुनः दिव्यरूप अप्सरा है कै स्वर्ग को चली २३ (ततः दिव्यरूपधरांगना अन्तरिक्षे दृशे धान्यमालीति विख्याता अथ हनूमंतं अब्रवीत्) तदनंतर दिव्य रूप धारण किहे स्त्री अप्सरा आकाशमें देखि परी धान्यमाली ऐसा जाको नाम प्रसिद्ध सो अब हनुमान् प्रति बोलती भई २४ ॥

त्वत्प्रसादादहं शापाद्विमुक्तास्मि कपीश्वर ॥ शप्ताहं मुनिना पूर्वमप्सराकारणान्त

रे २५ आश्रमेयस्तुतेदृष्टः कालनेमिर्महासुरः ॥ रावणप्रहितो मार्गे विघ्नं कर्तुं तवा
नघ २६ मुनिवेषधरो नासौ मुनिर्विप्रविहिंसकः ॥ जहिदुष्टं गच्छशीघ्रं द्रोणाचल
मनुत्तमम् २७ गच्छाम्यहं ब्रह्मलोकं त्वत्स्पर्शद्वितकल्मषा ॥ इत्युक्त्वा साययौ स्वर्गं हनू
मानप्यथाश्रमं २८ आगतं तं समालोक्य कालनेमिरभाषत ॥ किं विलम्बेन महता त
व वानरसत्तम २९ गृहाण मत्तोमंत्रांस्त्वं देहि मे गुरुदक्षिणाम् ॥ इत्युक्तो हनुमान्
मुष्टिद्वंद्वं ध्वाहराक्षसम् ३० ॥

(कपीश्वरत्वप्रसादात् अहंशापात् विमुक्तास्मि पूर्वअप्तराकारणांतरे अहंमुनिनाशत्ता) हेकपी-
श्वर हनुमान् आप के प्रसादते मैं शापते छूटि गई हों पूर्वकी मैं अप्सराहों अरु यह जो मुनि बना
बैठा है सो गंधर्वहै हम दोऊ दुर्बासाको देखिहैं ते इस कारणते हमको मुनिने शापदिया हमप्रार्थना
किया तब आपके हाथों मृत्युद्वारा उद्धार कहा २५ (यस्तु आश्रमेतेदृष्टः महाअसुरः कालनेमिः अनघ
मार्गेतव विघ्नं कर्तुं रावणप्रहितः) जो आश्रम में बैठा तुम देखाहै वह महाअसुर कालनेमिहै हे नि-
पाप राह में तुम्हारे विघ्नकरने हेत रावणने पठावा है २६ (असौ मुनिः न विप्रविहंसकः मुनिवेषधरः
दुष्टं जहिशीघ्रं अनुत्तमं द्रोणाचलं गच्छ) यह मुनि नहींहै ब्राह्मणों को घात करने वाला राक्षसहै तुम
को बिल मावने हेत मुनि को बेवधारण किहे बैठाहै ताते दुष्टको मारि शीघ्रहीं उत्तम द्रोणाचल को
जाउ २७ (त्वत्स्पर्शद्वितकल्मषा अहं ब्रह्मलोकं गच्छामि इति उक्त्वा साययौ अथ हनुमान् अपि
आश्रमं आगतं) हे हनुमान्जी आपके अंगमेरे तन स्पर्श होने ते छूटि गये पाप शुद्ध हवैं मैं अब ब्रह्म
लोक को जातीहों ऐसा कहि स्वर्ग को जाती भई अब हनुमान् भी आश्रम को आये २८ (तं समा-
लोक्य कालनेमिः अभाषत वानरसत्तम महता विलम्बेन तव किं) आवतेहुये जो हनुमान् तिनहि देखि
कालनेमि बोला है वानरों में उत्तम हनुमान् बड़ी बिलंब करिकै तुम्हारा क्या प्रयोजन है ताते
शीघ्रहीं २९ (त्वं मत्तः मंत्रान् गृहाण मे गुरुदक्षिणां देहि इति उक्तः द्वंद्वं मुष्टिबन्ध्वा हनुमान् राक्षसम् आह)
तुम मोसों मंत्रों को ग्रहण करौ अरु मोको गुरुदक्षिणा देहु ऐसा कालनेमि कहा तब पुष्ट मुष्टिका
बांधि हनुमान् राक्षस कालनेमि प्रति बोलते भये ३० ॥

गृहाण दक्षिणामेतामित्युक्तानि जघानतम् ॥ विसृज्य मुनिवेषं सः कालनेमिर्महा
सुरः ३१ युयुधेवायुपुत्रेण नानामायाविधानतः ॥ महामायिकदूतो सौ हनुमान्
मायिनारिपुः ३२ जघान मुष्टिना शीर्ष्णिमग्नमूर्ध्ना ममारसः ॥ ततः क्षीरनिधिं
गत्वा दृष्ट्वा द्रोणं महागिरिम् ३३ अदृष्ट्वा चौषधीस्तत्र गिरिमुत्पात्य सत्वरः ॥ गृहीत्वा
वायुवेगेन गत्वारामस्य सन्निधिम् ३४ उवाच हनुमान् राममानीतोऽयं महागिरिः ॥ य-
द्युक्तं कुरु देवेश विलंबो नात्र युज्यते ३५ श्रुत्वा हनूमतो वाक्यं रामः संतुष्टमानसः ॥ गृही-
त्वा चौषधीः शीघ्रं सुषेणेन महामतिः ३६ ॥

(एतां दक्षिणां गृहाण इति उक्त्वा तस्मिन् जघान सः कालनेमिः महाअसुरः मुनिवेषं विसृज्य) हनुमान्
बोले हे मुनि यह दक्षिणाग्रहण करौ ऐसा कहि ताके मुष्टिका मारते भये तबसो कालनेमि महा
असुर मुनि वेषत्याग करि पूर्ववत् राक्षस रूप ह्वै ३१ (नानामायाविधानतः वायुपुत्रेण युयुधे असौ
हनूमान् महामायिकदूतः मायिनारिपुः) अनेकमाया छल उपाय करि कालनेमि हनुमान् से युद्ध

करता भया यह हनुमान् महामाया के पति रघुनन्दन के दूत हैं अरुमायावी राक्षसों के शत्रु हैं ३२ (मुष्टि नाशिर्षिजघानभग्नमूर्द्धासः समारततः क्षीरनिधिगत्वामहागिरिद्रोणं दृष्ट्वा) हनुमान् मुष्टिका करिके वाके शीशमें ऐसे वेगसे मारें जातों फाटि गया शीशसो राक्षस मरिगया तदनंतर हनुमान् क्षीरसागर को गये महापर्वतद्रोणाचल को देखे ३३ (चतत्रओपधीमृष्ट्वा सत्वरः गिरिं उत्पाद्य गृहीत्वा वायुवेगे नरामस्य सन्निधिं गत्वा) पुनः तहां औपधी न देखे शीघ्रही पर्वत उखारिके हाथों में लैके वायुवेग करिके रघुनन्दन के समीप को हनुमान् जीगये ३४ (हनुमान् रामं उवाच भयं महागिरिः आनीतः देवेश यद्युक्तं कुरु भद्रं विलम्बो न युज्यते) हनुमान् रघुनन्दन प्रति बोलते भये कि यह महाभारी पर्वत तों में लै आया हों हे देवेश जो कार्य करिवे योग्य होय सो कीजिये अव विलम्ब न कीजिये भाव विलम्ब को समय नहीं है ३५ (हनूमतः वाक्यं श्रुत्वा संतुष्टमानसः रामः शीघ्रं औप गीर्गृहीत्वा च महामातेः सुखेणेन) हनुमान् को कहहुवा वचन सुनिके बड़े प्रसन्न मन सो रघुनन्दन शीघ्रही औपधी लैके महाबुद्धिमान् जो वैद्य सुखेण है ताके हाथों करिके ३६ ॥

चिकित्सां कारयामास लक्ष्मणाय महात्मने ॥ ततः सुप्तोऽस्थित इव बुद्ध्वा प्रोवाच लक्ष्मणः ३७ तिष्ठतिष्ठ क्वगतासि हन्मीदानीं दशानन ॥ इति ब्रुवंतमालोक्य मूर्ध्न्यवघ्राय राघवः ३८ मारुति प्राह वत्साद्यत्स्वत्प्रसादात् मम हाकपे ॥ निरामयं प्रपश्यामि लक्ष्मणं भ्रातरं मम ३९ इत्युक्त्वा वानरैः सार्द्धं सुग्रीवेण समन्वितः ॥ विभीषणमतेनैव युद्धाय समवस्थितः ४० पापाणैः पादपेक्षैव पर्वताग्रैश्च वानरः ॥ युद्धाय अभिमुखाभूत्वा ययुः सर्वे युयुत्सवः ४१ रावणो विव्यधे रामवाणैर्विद्धो महासुरः ॥ मार्तण्डवर्षासिहेन गरुडेनैव पन्नगः ४२ ॥

(महात्मने लक्ष्मणाय चिकित्सां कारयामास ततः सुप्तः अस्थित इव बुद्ध्वा प्रोवाच) महात्मा लक्ष्मण के अर्थ रुजहारक उपाय करावते भये तदनंतर जैते कोऊ सोवत से जागि उठै तैसेही चेतन्य है उठि पुनः लक्ष्मण बोलते भये ३७ (दशानन तिष्ठतिष्ठ क्वगतासि हन्मीदानीं हन्मि इति ब्रुवंतं आलोक्य राघवः मूर्ध्न्यवघ्राय) हे दशमुख खड़ाहो खड़ाहो कहाँ जाता है अभी तोको मारता हों ऐसा कहते हुये लक्ष्मण को देखिके रघुनन्दन वात्सल्य प्रीतिवश उरमें लगाय शीश संधिलेते भये ३८ (मारुति प्राह महाकपे वत्सत्त्वत्प्रसादात् मम भ्रातरं लक्ष्मणं अथ निरामयं प्रपश्यामि) पुनः हनुमान् प्रति रघुनन्दन बोलते भये हे महाकपे हे वत्स तुम्हारे ही प्रसादते अपने भाई लक्ष्मण को अब मैं रोग रहित अर्थात् प्रसन्न मन देखता हों ३९ (इति उक्त्वा विभीषणमतेन सुग्रीवेण समन्वितः वानरैः सार्द्धं युद्धाय समवस्थितः) इस प्रकार हनुमान् सो कहि पुनः रघुनन्दन विभीषण के मत करिके भाव जैसी युक्ति विभीषण बताया ताही भांति सुग्रीव करिके युक्त वानरों सहित युद्ध के अर्थ उठि चले ४० (पापाणैः च एव पादपैः च पर्वताग्रैः युयुत्सवः सर्वे वानराः ययुः युद्धाय अभिमुखाभूत्वा) पापाणों करिके पुनः वृक्षों करिके पुनः पर्वत के शिलों करिके युद्ध करिवे की उरसाह राखे सब वानर लंका समीप जाते भये तहां युद्ध करने अर्थ राक्षसों के संमुख भये ४१ (रामवाणैः विद्धः महासुरः रावणः विव्यधे सिहेन मार्तण्डवर्षासिहेन इव पन्नगः) रघुनन्दन के वाणों करिके घायल महा असुर रावण बड़ी व्यथा पीड़ा को प्राप्त है यथा सिंह करिके प्रहार किया हुआ हाथी यथा गरुड़ करिके प्रहार किया हुआ सर्प पीड़ित ४२ ॥

अभिभूतोऽगमद्राजाराघवेणमहात्मना । सिंहासनेसमाविश्यराक्षसानिदमब्रवी
त४३ मानुषेणैवमेमृत्युमाहपूर्वपितामहः ॥ मानुषोऽहिनमाहंतुंशक्तोस्तिभुविकश्च
न४४ ततो नारायणः साक्षान्मानुषो भून्नसंशयः ॥ रामो दाशरथिर्भूत्वा माहंतुं समुप
स्थितः ४५ अनरण्येन यत्पूर्वं शप्तोऽहं राक्षसेश्वराः ॥ उत्पत्स्यते च मद्वंशे परमात्मा
सनातनः ४६ तेन त्वं पुत्रपौत्रैश्च बान्धवैश्च समन्वितः ॥ हनिष्यसे न संदेह इत्युक्त्वा
मां दिवंगतः ४७ स एव रामः संजातो मदर्थे मां हनिष्यति ॥ कुम्भकर्णस्तु मूढात्मा सदा
निद्रावशंगतः ४८ ॥

(महात्मनाराघवेण राजा अभिभूतः अगमत् सिंहासने समाविश्य राक्षसानिदं अब्रवीत्) तैसेही दश
महात्मारघुनंदन करिकै राजा रावण की होती भई अर्थात् सिंह के चोटकीन्हे हाथी भयातुर गरुड़
के चोटते सर्प भयातुर होते तैसेही रघुनंदन के बाणलागे ते रावण भी जानिलिया कि मोको मार
डालेंगे बचौंगो नहीं इति हारिमानि मंदिरमें आय सिंहासन पर बैठि राक्षसन प्रति ऐसा वचन बोल-
ता भया ४३ (मानुषेणैवमेमृत्युं पितामहः पूर्वपितामहमानुषः हिकश्चनभुविनस्ति माहंतुं शक्तः) मानुष-
हीके हाथ करिकै मेरे मृत्यु ब्रह्मा पूर्वही कहा है सो अवश्यही होइगी अरुमानुष ऐसा कोई भूतल में
नहीं है जो मोको मारने को समर्थ होय ४४ (ततः साक्षात् नारायणः मानुषः अभूत्संशयः न दाशरथिः
रामः भूत्वा माहंतुं समुपस्थितः) ताते साक्षात् नारायण आपही मानुष भये हैं यामें संशय नहीं सोई
दशरथ के पुत्र राम द्वैकै मेरे मारने हेत इहां आय प्राप्त भये ४५ (राक्षसेश्वराः यत्पूर्वं अनरण्येन अहं श-
प्तः परमात्मा सनातनः मत्वंशे उत्पत्स्यते च) रावण बोला हे राक्षस उच्चमौजो पूर्व अयोध्याके राजा अन-
रण्यने मोको शाप दिया है कि परमात्मा सनातन मेरे वंशमें उत्पन्न होंगे पुनः ४६ (तेन त्वं पुत्र-
पौत्रैश्च बान्धवैः समन्वितः हनिष्यसे संदेहः न इति मां उक्त्वा दिवंगतः) तिन परमात्माके हाथों करिकै तू पुनः
पुत्रपौत्रपुनः भाइन करिकै सहित नाश ह्वै है इस भांति मोको कहिकै स्वर्गको गये अर्थात् दिग्वि-
जय में युद्ध भई रावण के मारे प्राणत्याग समय अनरण्य शाप दिया ४७ (स एव मत्संजातः रामः
मां हनिष्यति तु मूढात्मा कुम्भकर्णः सदा निद्रावशंगतः) सोई परमात्मा मेरे मारने अर्थ उत्पन्न भये राम
सो मोको मारेंगे इति मेरी मृत्यु निश्चय भई पुनः मूढबुद्धी कुम्भकर्ण सदा नींद के वशभाव राति उ-
दिन सोवै करता है ४८ ॥

तं विबोध्य महासत्त्वमानयंतु ममांतिकम् ॥ इत्युक्तास्ते महाकायास्तूर्णगत्वा तु यत्नतः
४९ विबोध्य कुम्भश्रवणं निन्यूरावणसन्निधिम् ॥ नमस्कृत्य सराजानमासनोपरि संस्थि-
तः ५० तमाहरावणो राजा भ्रातरं दीनया गिरा ॥ कुम्भकर्णं विबोधत्वं महत्कष्टमुपस्थि-
तम् ५१ रामेण निहताः शूराः पुत्राः पौत्राश्च बान्धवाः ॥ किं कर्तव्यमिदानीमेमृत्युका-
ल उपस्थिते ५२ एष दाशरथी रामः सुग्रीवसहितो बली ॥ समुद्रं सबलस्तीर्त्वा मूलं
नः परिक्रंतति ५३ ये च राक्षसामुख्यतमास्ते हतावानरैर्युधि ॥ वानराणां क्षयं युद्धेन
पश्यामि कदाचन ५४ ॥

(महासत्त्वं तं विबोध्य तु ममांतिकं आनयन् इति उक्ताः ते महाकायाः तूर्णगत्वा तु यत्नतः) महाबलीजो
कुम्भकर्ण ताहि जगाय कै पुनः मेरे समीप को लवाय लावो ऐसा रावण ने कहा सो सुनिते राक्षस

बड़ी देहवाले तुरंत ही गये पुनः यत्नं ते ४९ (कुम्भश्रवणं विबोधय रावण सन्निधिं मुनिन्यूसराजानं नमस्कृत्य आसनोपरि संस्थितः) तेराक्षस अनेक यत्न करिके कुम्भकर्णको जगाय रावणके समीपको लवाय लाये सो कुम्भकर्ण आय राजा रावण को नमस्कार करि अपने आसन पर बैठ जाता भया ५० (राजा रावणः तं भ्रातरं दीनया गिरा आहमहत्कष्टं उपस्थितं कुम्भकर्णत्वं निबोध) राजा रावण तिस अपने भाई कुम्भकर्ण प्रति दीनता करिके वाणी बोलता भया कि यासमय मोको बड़ा भारी कष्ट प्राप्त भया है ताते हे कुम्भकर्ण सो बना विगरा तुम जानौ ५१ (पुत्राः पौत्राः चर्वांधवाः शूराः रामेण निहताः इदानीं मे मृत्युकाल उपस्थिते किं कर्तव्यं) पुत्रपौत्र पुनः बंधुवर्ग शूरयावत् संग्राम सन्मुख भये सब राम करिके मारे गये अब यासमय मे मेरा मृत्युकाल आय प्राप्त भया अब मैं क्या करि सका हौं भाव बचि नहीं सकता हौं ५२ (सुग्रीवसहितः एष दशरथरामः बलीसवलः समुद्रं तीर्त्वा नः मूलं परिक्रंतति) वानरों को राजा सुग्रीव सहित यह अवधेश दशरथ को पुत्रराम बड़ावली सहित वानरी सेना समुद्रको उतरि आय हमारी मूल जो सेना ताको काटि रहे हैं ५३ (च्येमुख्यतमाः राक्षसाः ते युधि वानरैः हताः वानराणां क्षयं युद्धे कदाचनने पश्यामि) पुनः जे बड़े मुखिया बरि राक्षस रहे ते सब युद्ध में वानरों करिके मारे गये अरु वानरोंकी नाश युद्धविषे कभी नहीं देखता हौं ५४ ॥

नाशयस्व महाबाहो यदर्थं परिबोधितः ॥ भ्रातुरर्थं महासत्त्वकुरु कर्मसुदुष्करम् ५५
श्रुत्वा तद्वावर्णेन्द्रस्य वचनं परिदेवितम् ॥ कुम्भकर्णो जहा सोऽर्ध्वं वचनं चेदमब्रवीत् ५६
पुरामंत्रविचारे ते गदितं न्यमानुप ॥ तदद्य त्वामुपगतं फलं पापस्य कर्मणः ५७
पूर्वमेव मया प्रोक्तो रामो नारायणः परः ॥ सीता च योगमायेति बोधितोऽपि न बुध्यसे ५८
एकदा वने सानौ विशालायां स्थितौ निशि ॥ दृष्टो मयामुनिः साक्षान्नारदो दिव्यदर्शनः ५९
तमब्रुवन् महाभाग कुतो गतासि मेवद ॥ इत्युक्तो नारदः प्राह देवानां मंत्रणे स्थितः ६० ॥

(महाबाहो नाशयस्व यदर्थं परिबोधितः महासत्त्व भ्रातुः अर्थं दुष्करं कर्म कुरु) हे महाबाहु मेरे शत्रु सेना को नाश करौ जिस अर्थ तुमको जगाया हौं हे महाबल अपने भाईके हित अर्थ जो किसीको किया न है सकै ऐसा रणमें दुष्कर कर्म करौ ५५ (परिदेवितं मूरावर्णेन्द्रस्य वचनं तत् श्रुत्वा कुम्भकर्णः उच्चैः जहा सच इदं वचनं अब्रवीत्) विलापपूर्वक जो रावण को वचन सो सुनिके कुम्भकर्ण ऊँचे स्वर करिके हँसता भया भाव याकी हियो कपारकी फूटी हैं इतिहँसिके पुनः ऐसा वचन बोलता भया ५६ (नृप पुरामंत्रविचार मया यत्ते गदितं तत् अद्य त्वां पापस्य कर्मणः फलं उपागतं) हे नृप रावण प्रथम ही मंत्र विचार समय में मैंने जो बात आपसों कहा है तब नहीं मानेउ सोई अब या समय में आपको पाप कर्मोंको पूर्ण फल आय प्राप्त भया ५७ (पूर्वमेव मया प्रोक्तः रामः परः नारायणः च सीता योगमाया इति बोधितः अपि न बुध्यसे) हे राजन् प्रथम भी मैंने कहा है कि मानुष न जानौ राम परात्पर नारायण हैं पुनः सीता नारायणकी योगमाया है इत्यादि वार्ता करि बहुत बोध कराया तब भी तुमको बोधन भया अर्थात् न रक्ष्यमाने सीताको राखे रहेउ सोई पापको फल है ५८ (एकदा वने सानौ विशालायां अहं निशि स्थितः दिव्यदर्शनः मुनिः साक्षात् नारदः मया दृष्टः) एक समय वनमें पर्वत के ऊपर विशाला नाम नगरा में मैं रात्री में स्थित रहौं तहां दिव्य है दर्शन जिनका ऐसे मुनि साक्षात् नारद आते हुये मैंने देखा ५९ (तं ब्रुवन् महाभाग कुतो गतासि मेवद इति उक्तः देवानां मंत्रणे स्थितः नारदः प्राह) तिन नारद

प्रतिमें बोलेंउ कि हे महाभाग आपकहांते आवते हौ मोसो कहिये ऐसामैने कहा सो सुनि देवतोंकी सलाह में बैठिकै आयेहुये नारदसो मो प्रतिबोलतेभये ६० ॥

तत्रोत्पन्नमुदंतंतेवक्ष्यामिशृणुतत्त्वतः॥ युवाभ्यांपीडितादेवाः सर्वेविष्णुमुपागताः
६१ ऊचूस्तेदेवदेवेशंस्तुत्वाभक्त्यासमाहिताः ॥ जहिरावणमश्रोभ्यंदेवत्रैलोक्य
कंटकम् ६२ मानुषेणमृतिस्तस्यकल्पिताब्रह्मणापुरा ॥ अतस्त्वंमानुषोभूत्वाजहि
रावणकंटकम् ६३ तथेत्याहमहाविष्णुःसत्यसंकल्पईश्वरः ॥ जातोरघुकुलेदेवोरा
मइत्यभिविश्रुतः६४सहनिष्यतिवःसर्वानित्युक्त्वाप्रययौमुनिः ॥ अतोजानीहिरा
मंत्वंपरंब्रह्मसनातनम् ६५ त्यजवैरंभजस्वाद्यमायामानुषविग्रहम् ॥ भजतोभक्ति
भावेनप्रसीदतिरघूत्तमः ६६ ॥

(तत्र उत्पन्नंउदंतंतत्त्वतःतेवक्ष्यामिशृणुयुवाभ्यांपीडिताःसर्वेदेवाःविष्णुंउपागताः) नारद मोसो बोले हे कुंभकर्ण तहां देवतों की समाज को उत्पन्न हुवा वृत्तांत सो यथार्थ में तुनसो कहता हौंमु-
नौ तुम अरु रावण दोउनकरिकै पीड़ित सब देवता विष्णुके पासको गये ६१ (तेभक्त्यासमाहिता
स्तुत्वादेवदेवेशंऊचःदेवत्रैलोक्यकंटकंअश्रोभ्यंरावणंजहि) देवता सयते भक्ति करिकै सहित स्तुति
करिकै देवनके देव जो ब्रह्मा शिवादि तिनके ईश्वर नारायण प्रति ब्रह्मादि देवता बोलते भये कि
हे देवतीनिहूलोकन को कंटक जो किसीको डरतानहीं है तिस रावण को मारौ ६२ (तस्यमानुषे
णमृतिःपुराब्रह्मणाकल्पिताअतःत्वंमानुषःभूत्वाकंटकरावणंजहि) तिस रावणकी मानुष करिकै मृत्यु
होय इति पूर्वही ब्रह्माने रचिराखाहै इससे आप मानुष हैंकै कंटक रावणको मारिये ६३ (महावि
ष्णुःतथाइतिआहईश्वरःसत्यसंकल्पदेवःरामइतिअभिविश्रुतःरघुकुलेजातः) देवतों की बिनतीसुनि
महा विष्णु बोले हे देवतौ जो कहने हौ सोई करौंगो ऐसाकहि ईश्वर सत्यसंकल्प देवजो कहैं सोई
करैं तातेराम ऐसानाम लोकमें प्रसिद्ध करि रघुकुलमें उत्पन्न भये हैं ६४ (सबःसर्वान्हनिष्यतिइ
तिउक्तामुनिःप्रययौअतःत्वंरामंपरंब्रह्मसनातनंजानीहि) सोई रघुवंशनाथ तुमसब राक्षसोंको मार
हिंगे ऐसा कहि नारद मुनि चले जातेभये ताते हे रावण तुम रामको परब्रह्म सनातनजानौ ६५
(वैरंत्यजमायामानुषविग्रहम्अद्यभजस्वभक्तिभावेनभजतःरघूत्तमःप्रसीदति) हे राजन् वैरभाव
त्यगि प्रीतिभाव करिकै जो दिव्यमाया करिकै मानुषतन धारण किहे हैं तिन रघुनन्दनको अब भजौ
भक्तिभाव करिकै भजे रघुवंशनाथ प्रसन्न होते हैं ६६ ॥

भक्तिर्जनित्रीज्ञानस्यभक्तिर्मोक्षप्रदायिनी ॥भक्तिहीनेनयत्किंचित्कृतंसर्वमसत्समं
६७ अवताराःसुब्रह्मोविष्णोर्लीलानुकारिणः ॥ तेषांसहस्रसदृशोरामोज्ञानम
यःशिवः ६८ रामंभजंतिनिपुणामनसावचसानिशम् ॥ अनायासेनसंसारंतीर्त्वा
यांतिहरेःपदम् ६९ येराममेवसततंभुविशुद्धसत्वाध्यायंतितस्यचरितानिपठं
तिसंतः॥मुक्तास्तुएवभवभोगमहाहिपाशैःसीतापतेःपदमनंतसुखंप्रयांति ७० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेसप्तमःसर्गः ७ ॥

(ज्ञानस्यजनित्रीभक्तिःमोक्षप्रदायिनीभक्तिः) देह व्यवहार असत्यमानि शुद्ध आत्मरूपको सत्य

जानना यह जो ज्ञानहै ताको जीवके अन्तर उत्पन्न करनेवाली भक्तिहै पुनः मोक्षको देनेवाली भक्तिहै (भक्तिहीनेनयत्किंचित्कृतंसर्वंअसत्समम्) पुनः भक्ति करिकै हीन मनुष्य यज्ञतीर्थ दान पूजा व्रतादि जो कछुक सत्कर्म करताहै ते सब असत्कर्मके समदुख हैजातेहैं ६७ (लीलानुकारिणः विष्णोःसुबहवःअवताराःतेषांसहस्रसदृशोज्ञानमयःशिवःरामः) मच्छ कच्छ बाराह नृसिंह वामन परशुराम इत्यादि लीलाकरने वाले विष्णुके सुन्दर बहुत अवतारहैं तिन हजारों अवतारके समान अकेले अखण्ड ज्ञानमय कल्याण रूपराम अवतारीहैंयथाश्रुतिः सःश्रीरामः सवितारीसर्वेपामीश्वरः यमेवेशःवृणुतेसःपुमानस्तुयमवैदस्माद्भुवःस्वःत्रिगुणमयोवभूव ६८(निपुणाभिनशंमनसावचसारा मंभजंतिअनायासेनसंसारंतीर्त्वाहरेःपदंयांति) जे बुद्धिते प्रवीनजनहैं ते दिनों रातिमन करिकै स्वरूपको ध्यानवचनकरि नामस्मरण इसभांति रामको भजतेहैं ते बिना परिश्रम संसार सिंधुको तरि कैहरिके पदको जातेहैं ६९ (शुद्धसत्वायेभुविसंत सततरामं एवध्यायंति तस्यचरितानि पठंतिभव भोगमहा अहिपाशैः मुक्तः एवतुअनंतसुखंसीतापतेःपदंप्रयांति) शुद्धहैअन्तःकरण जिनकोऐसे भूमि पैजेसंत सदारपुनाथैजीको ध्यानकरते हैं राम चरितनको पढ़तेहैं ते संसारको भोगरूप जो महासर्प ताकी पाशों करिकै छूटि पुनः अनन्तसुखहै जहां ऐसे सीता पतिके पदको जातेहैं ७० ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डेसप्तमःप्रकाशः ७ ॥

कुंभकर्णवचःश्रुत्वाभृकुटीकुटिलाननः ॥ दशग्रीवोजगादेदमासनादुत्पतन्निव १
त्वमानीतो न मे ज्ञानबोधनाय सुबुद्धिमान् ॥ मया कृतं समीकृत्य युद्धस्वयदिरोचते २
नो चेद्गच्छ सुपुण्यर्थं निद्रात्वां वा धते धुना ॥ रावणस्य वचः श्रुत्वा कुंभकर्णो महाबलः ३
रुषो यमिति विज्ञाय तूर्णं युद्धाय निर्ययौ ॥ सलंघयित्वा प्राकारं महापर्वतसन्निभाः ४
निर्ययौ नगरात् तूर्णं भीषयन् हरि सैनिकान् ॥ सननाद महानादं समुद्रमभिनादयन् ५
वानरान् कालयामास बाहुभ्यां भक्षयन् रुषा ॥ कुंभकर्णं तदा दृष्ट्वा स पक्षमिव पर्वतमूढ ॥

सवैया ॥ घटकर्ण जुरोरणकीशहने लखतै त्यहिराघव प्राणहरी । ऋषिदेवसनारद आयलखेसुख माप्रभुकी विनतीसुकरी ॥ घननादकरै स्वजयीमखको कहतेति विभीषण पासहरी । तियभोजननीद तजेइनहै इतिलक्ष्मण सों वहहुष्टमरी ॥ (कुंभकर्णवचःश्रुत्वादशग्रीवः भृकुटीकुटिलाननः आसनात् उत्पतन्निव इदं जगाद) शिवजीबोले हे गिरिजा कुम्भकर्णको वचन सुनि रावण क्रोधवशभोंहैं टेढ़ीहैं गई मुख लाल ह्वैगया आसनते उछरिकरि ऐसा वचनबोला १ (मेज्ञानबोधाय सुबुद्धिमान् त्वं न जानीतः मया कृतं समीकृत्य यदिरोचते युद्धस्व) हे कुम्भकर्ण मोकोज्ञान उपदेशकरनेको सुन्दर बुद्धिमान् जानिकै तुम नहीं बुलायेगयो है भावबली वीरजानिकै बुलाये गयो है ताते जो कछु मैंने किया सो व्यापार मेरी समान अंगीकार करिकै जो रुचैतौ युद्धकरो २ (नोचेत्सुपुण्यर्थं गच्छ अधुना त्वां निद्रावाधते रावणस्य वचः श्रुत्वा महाबलः कुम्भकर्णः) जो न युद्धकरो तौ सोवने अर्थजाउ अबहीं तुमकोनीद बाधा किहै है इतिरावणके वचनसुनिकै महाबली कुम्भकर्ण ३ (अयं रुषः इति विज्ञाय युद्धाय तूर्णं ययौ महापर्वतसन्निभः सप्राकारं लंघयित्वा) यह रावण क्रोधाधीनहै ऐसाजानि युद्धके अर्थ शीघ्रही जाता भया महाभारी पर्वतके तुल्यसो कुंभकर्णलंका कोटरौनीको नाधिकै ४ (हरिसैनिकान् भीषयन् नगरात्

तूर्णैर्निर्ययौसमुद्रं अभिनादयन्महानादंसननाद) वानरी सेनाको भय उपजावतसंते नगगते शीघ्रही कदासमुद्रको नादकरावतसंते भारी शब्दते गर्जताभया ५ (वानरान्कालयामास रुपाबाहुभ्यांभक्ष यन्तदासपक्षं पर्वतं इव कुंभकर्णदृष्ट्वा) वानरनको मारताहुआ क्रोधकरि दोऊ हाथों गहिकरिके वान- रोंको भक्षणकरताहुआ आवताहै ताही समयमें सहित पक्षनपर्वतकी समान भारीतन जो कुंभकर्ण ताहि आवते देखिकै ६ ॥

दुद्रुवुर्वानराः सर्वे कालांतकमिवाखिलाः ॥ अमंतं हरिवाहिन्यामुद्गरेण महाबल म् ७ कालयंतं हरीन्वेगाद्भयंतं समंततः ॥ चूर्णयंतं मुद्गरेण पाणिपादैरनेक धा ८ कुंभकर्णैतदादृष्ट्वा गदापाणिर्विभीषणः ॥ ननामचरणौ तस्य भ्रातुर्ज्येष्ठस्य बुद्धिमान् ९ विभीषणो हं भ्रातुर्मेदयां कुरु महामते ॥ रावणस्तु मया भ्रातुर्वहुधा परि बोधितः १० सीतां देहीति रामाय रामः साक्षाज्जनार्दनः ॥ नशृणोति च मांहंतुं खड्गमुद्यम्य चोक्तवान् ११ धिक्त्वांगच्छेति मांहत्वा पदापापिभिरावृतः ॥ चतुर्भिर्मंत्रिभिः सार्द्धं रामं शरणमागतः १२ ॥

(कालअंतकं इव महाबलं सुदगरेण हरिवाहिन्यां अमंतं अखिलावानराः सर्वे दुद्रुवुः) काल मृत्यु के समान महा बल कुंभकर्ण मुद्गर सहित वानरों की सेना में घूमिरहाहै ताहि देखि समग्र वानर भय मानि सब भागते भये ७ (पाणिपादैः मुद्गरेण अनेकधा चूर्णयंतं वेगात् समंततः भक्षयंतं हरीन्काल यंतं) हाथों करिकै पाओं करिकै मुद्गर करिकै इत्यादि अनेक प्रकार करि मारि चूर्ण करताहुआ वेगते धाय सब दिशों में भक्षण करता हुआ इस प्रकार मारिकै वानरन को भगाय रहाहै ८ (गदा पाणिः विभीषणः तदा कुंभकर्णदृष्ट्वा बुद्धिमान् ज्येष्ठस्य भ्रातुः तस्य चरणौ ननाम) गदाहै हाथमें जिस्के ऐसा विभीषण ताही समय में कुंभकर्ण को देखा बड़ा बुद्धिमान् है ताते आगे जाय ज्येष्ठ भाई जो कुंभकर्ण ताके चरणों को नमस्कार करताभया ९ (अहं विभीषणः महामते मे भ्रातुः दयां कुरु तुरावणः भ्रातुः मया बहुधा परिबोधितः) हे भाई कुंभकर्ण मैं तुम्हारा छोटा भाई विभीषण हौं हे महामते मैं जो भाई हौं ताके ऊपर दया करौ पुनः रावण जो भाई है ताको मैंने बहुत प्रकारके वचन कहिके बोध किया अर्थात् समुभाया १० (रामः साक्षात् जनार्दनः सीतां रामाय देहि नशृणोति च मांहंतुं खड्गमुद्यम्य चोक्तवान्) क्या मैंने समुभाया इनको मानुष न मानौ राम साक्षात् परमेश्वर हैं इति मानि बैर भाव त्यागि सीता को लै जाय रामके अर्थ अर्पण करि देउ इत्यादि सोतौ न सुना मेरे मारने हेत तरवारिखैंचि पुनः बोला ११ (त्वां धिक्त्वांगच्छेति पापिभिः आवृतः मां पदाहत्वा चतुर्भिः मंत्रिभिः सार्द्धं रामं शरणमागतः) तोको धिक्कार है इहांते चला जा इत्यादिकहि पुनः पापी राक्षसों करिकै सहित बैठा मोको लात सों मारा तब चारि मंत्रिन सहित मैं रामके शरण आया हौं १२ ॥

तच्छ्रुत्वा कुंभकर्णोऽपि ज्ञात्वा भ्रातरमागतम् ॥ समालिङ्ग्य च वत्सत्वं जीविरामं पदाश्रयः १३ कुलसंरक्षणार्थाय राक्षसानां हिताय च ॥ महाभागवतोऽसित्वं पुरामेनारदाच्छ्रुतम् १४ गच्छता तममेदानीं दृश्यते न च किंचनः ॥ मदीयो वापरो वापि मदमतविलोचनः १५ इत्युक्तोऽश्रुमुखो भ्रातुश्चरणौ भिवंद्य सः ॥ रामपाश्वर्षमुपागत्य चिंतापर उपस्थितः १६ कुंभकर्णोऽपि हस्ताभ्यां पादाभ्यां पेषयन् हरीन् ॥ चचारवान्

रंसेनांकालयन्गंधहस्तिवत् १७ दृष्टांतराघवःकुद्धोवायव्यंशस्त्रमादरात् ॥ चि
क्षेपकुंभकर्णायतेनचिच्छेदरक्षसः १८ ॥

(तत्श्रुत्वाकुंभकर्णः अपिभ्रातःआगतम् ज्ञात्वासमालिङ्ग्यच त्वंरामंपदाश्रयः वत्सजीव) विभी-
षण के कहे वचन सो सुनिके कुंभकर्ण भी अपने भाईको भावन जानि कै हृदय में लगाय मिलि
कैपुनः बोला कि तू रामके प्रद कमलोंका आश्रयणकरता है ताते हे बत्स तुम बहुत काल तक
जीवत रहौ १३ (राक्षसानांहितायच कुलसंरक्षणार्थायत्वंमहाभागवतःअसि मेपुरानारदात्श्रुतम्)
क्यों बहुत काल जीवतरहु हेविभीषण राक्षसो के कल्याण करने भाव तेरे रहेते राक्षस कुशल रहेंगे
पुनः राक्षस कुलकी रक्षा के अर्थ भाव तेरे भजन प्रभावते कुल में कुछ बाधा न होइगी क्योंकि
तू महा भागवत परम भक्त है यह मैं पूर्वहीं नारदते सुनाहै १४ (तातगच्छमदमत्तविलोचनःमदी
यःवापरः वाअपिममइदानीं किंचननचदृश्यते) हेतात विभीषण अबतुम जाउ मदकरिकै माते नेत्र
ताते आपन अथवापरार यह निश्चय करिकै मोको या समय में कुछ भी नहीं देखि परताहै १५
(इतिउक्तःसःअश्रुमुखः भ्रातुःचरणौअभिवंद्यवितापररामपादर्वेउपागत्यउपस्थितः) ऐसाकुंभकर्ण
कहातब सो विभीषण आशुबहत मुख सहित भाईके पायेंन को प्रणाम करि याके मरने की चिंता
युत रघुनन्दन के पास जाय बैठे १६ (कुंभकर्णःअपिहस्ताभ्यां पादाभ्यांहरीन्पेपयन्गंधहस्तिवत्त्वा
नरंसेनांकालयन्) अब कुंभकर्ण भी हाथोंसे पावोंसे बानरों को पीसता हुआ मत्त गजराज के
तुल्यबानरी सेनाको भगाताहुआ रणमें स्थितहै १७ (तंदृष्ट्वाराघवःकुद्धःआदरात्वायव्यंशस्त्रंकुंभकर्णा
यचिक्षेपतेनरक्षसः समुद्गरंदक्षहस्तंचिच्छेद) तिसको देखि रघुनन्दन क्रोध करि आदर ते वायव्य
शस्त्र को कुंभकर्ण के अर्थ छोड़ ते भये त्यहि करिकै राक्षस को मुद्गर सहित दक्षिण हाथ काटि
डारते भये १८ ॥

समुद्गरंदक्षहस्तंतेनघोरंननादसः॥सहस्तःपतितोभूमावनेकानर्दयन्कपीन् १९
पर्यंतमाश्रिताःसर्वे बानराभयवेपिताः ॥ रामराक्षसयोर्युद्धं पश्यंतःपर्यवस्थि
ताः २० कुंभकर्णःछिन्नहस्तःशालमुद्यम्यवेगतः ॥ समरेराघवंहंतुंदुद्रावतमथो
च्छिनत् २१ शालेनसहितंवामहस्तमैद्रेणराघवः ॥ छिन्नबाहुमथायातंनर्दन्तंवी
क्ष्यराघवः २२ द्वावर्द्धचंद्रौनिशितावादायास्यपदद्वयम् ॥ चिच्छेदपतितौपादौ
लंकाद्वारिमहास्वनौ २३ निकृन्तपाणिपादोपिकुंभकर्णोऽतिभीषणः ॥ वडवामुखव
द्वक्तंव्यादायरघुनन्दनम् २४ अभिदुद्रावनिनदनूराहुःचंद्रमसंयथा ॥

(तेनसःघोरंननादसहस्तःअनेकान्कपीन्अर्दयन्भूमौपतितः) मुद्गरसहित हाथकटिगया त्यहिक-
रिकै सो कुम्भकर्ण भयंकर शब्दकरताभया कटाहुआ सो हाथ अनेक बानरोंको मर्दनकरतसंते भूमि
परगिरिपरा १९ (पर्यन्तमाश्रितःसर्वेबानराःभयवेपिताःपर्यवस्थिताःरामराक्षसयोःयुद्धंपश्यंतः) रण
भूमिकी सीवामें खड़ेरहे प्रथम सब बानर ते कुम्भकर्णकी भुजा पुनः ऊपरगिरनेकी भयमानि सब
हटिकै सीवाकेबाहर खड़े हैं कै राम अरु राक्षसकेयुद्धको दूरहीते देखतेहैं २० (छिन्नहस्तःकुम्भकर्णः
शालंउद्यम्यसमरेराघवंहंतुंवेगतःदुद्राव) कटिगयाहै हाथ जिसको ऐसा कुम्भकर्ण वामहाथेकरि सांखू
को वृक्ष लैकरि संग्राम में रघुनन्दनको मारिबे हेत वडेवेगतेधावताभया २१ (शालेनसहितंवामहस्त

तराघवः ऐंद्रेणअथोच्छिनत्अथछिन्नबाहुंनर्दन्तंआयातंवीक्ष्यराघवः) शालको वृक्षकरिकै सहित जो कुम्भकर्ण को वामभुजाहै ताको रघुनन्दन ऐंद्रबाणकरिकै काटिडारे अब विनाबाहुनको कुम्भकर्ण गर्जताहुआ संमुख आवतेदेखिकै रघुनन्दन २२ (अर्द्धचन्द्रौद्वौनिशितौआदायअस्यपदद्वयम्चिच्छेद महास्वनौपादौलंकाद्वारिपतितौ) अर्द्धचन्द्राकार गांसीहैं जिनमें ऐसे दो पैनेवाणोंकोसन्धानिप्रहारकरि उस कुम्भकर्णके दोऊपायँकाटिडारे ते बाण बेगतेउड़े महाभारी शब्दसहित दोऊपायँ जायलंकाके द्वारपरगिरे २३ (निरुंतपाणिपादःअपिअतिभीषणः कुम्भकर्णःवडवाभुखवत्क्लंज्यादाय) कटिगये हाथ पायँभी अति भयंकर कुम्भकर्ण यथा समुद्र में बडवानलको मुख चारिसौ कोस विस्तार है तैसेही मुखपसारि (रघुनन्दनम् २४ अभिनिनदन्द्वाद्वयथाचंद्रमसंराहुः) रघुनन्दन के संमुखगर्जताहुआ मुखपसारे कुम्भकर्ण कैसा लोटतेचला यथा चन्द्रमाको आसकरने हेत राहु है ॥

अपूरयत्सिताग्रैश्चशायकैस्तद्रघूतमः २५ शरपूरितवक्रोसौचुक्रोशातिभयंक
रः ॥ अथसूर्यप्रतीकाशमैंद्रंशरमनुत्तमम् २६ वज्राशनिसमंरामश्चिक्षेपासुरमृत्य
वे ॥ सतत्पर्वतसंकाशंस्फुरत्कुंडलदंष्ट्रकम् २७ चकर्त्तरक्षाधिपतेःशिरोवृत्रमिवा
शनिः ॥ तच्छिरःपतितंलंकाद्वारिकायामहोदधौ २८ शिरोऽस्यरोधयत्द्वारंकायो
नक्राद्यचूर्णयत् ॥ ततोदेवासऋषयोगंधर्वाःपन्नगाःखगाः २९ सिद्धायक्षागुह्यका
श्चअप्सरोभिश्चराघवम् ॥ इंडिरेकुसुमासारैर्वर्षतश्चाभिनंदिताः ३० आजगा
मतदारामंद्रष्टुदेवमुनीश्वरः ॥ नारदोगगनात्तूर्णस्वभासाभासयन्दिशः ३१ ॥

(रघूतमःसिताग्रैःचशायकैःतत्अपूरयत्)मुखपसारेसंमुखआवतेदेखि रघुनन्दनपैनीगांसीहैं जिनमें ऐसे बाणोंकरिकै बाको मुखसो मारिभरिदीन्हे २५ (शरपूरितवक्रअसौअतिभयंकरःचुक्रोशअथसूर्य प्रतीकाशंअनुत्तमंऐंद्रंशरं) बाणोंकरिकैभरा मुखतोभी वह कुम्भकर्ण अत्यन्त भयंकरशब्दते चिह्नाता भया तब जामें सूर्यवत्प्रकाश है ऐसा उत्तम ऐंद्रबाणको संधानि २६ (असुरमृत्यवेअशनिवज्रसमं रामःचिक्षेपकुण्डलदंष्ट्रकंस्फुरत्सतत्पर्वतसंकाशं) असुरके मृत्यु अर्थ वज्रकेतुल्य बाण रघुनन्दन छांड़े अब कानों में कुण्डल मुख में दांत प्रकाशमान हैं जामें ऐसाजोपर्वताकार कुम्भकर्णको शीश २७ (वृ त्रंअशनिःइवरक्षाधिपतेःशिरःचकर्त्ततत्शिरःलंकाद्वारिपतितंकायःमहोदधौ) जैसे वृत्रासुरपर इन्द्रको वज्रचला तैसेही प्रभुकोबाण कुम्भकर्णको शिरकाटिडारा सो शिर लंकाकेद्वारपर जायगिरा शरीर समुद्र में गिरा २८ (अस्यशिरःद्वारंरोधयत्नक्राद्यकायः चूर्णयत्ततःसऋषयःदेवाःगन्धर्वाःपन्नगाः खगाः) कुम्भकर्णको शिरतौ लंकाकोद्वारहूंधिलिया अरु नक्रादि जलजीवोंको शरीर चूरकरिदिवा तब सहित ऋषिन देवता गंधर्व नाग पक्षी २९ (सिद्धाःयक्षाःचगुह्यकाःचअप्सरोभिःराघवंईंडिरेचअ भिनंदितःकुसुमासारैःवर्षतः) सिद्ध यक्ष गुह्यक अप्सरन सहित श्रीरघुनाथजीकी स्तुतिकरतेभयेबड़े आनन्दयुत फूलनकी बर्पाकरतेभये ३० (तदादेवमुनीश्वरःनारदःस्वभासादिशः भासयन्रामंद्रष्टु गगनात्तूर्णआजगाम) ताही समय में देव मुनिनके स्वामी नारद अपनी प्रभाकरिकै सब दिशोंको प्रकाशकरतेहुये रघुनन्दनके दर्शनकरिबेको आकाशते शीघ्रही उतरिआवतेभये ३१ ॥

राममिदीवरश्याममुदारांगंधनुद्धरम् ॥ ईषत्ताम्रविशालाक्ष मैद्रास्त्रांचितबाहुक
म् ३२ दयार्द्रदृष्ट्यापश्यंतवानरान्शरपीडितान् ॥ दृष्ट्वागदूगदयावाचाभक्त्यास्तो

तुंप्रचक्रमे ३३ नारदउवाच ॥ देवदेवजगन्नाथपरमात्मन्सनातन ॥ नारायणा
खिलाधारविश्वसाक्षिननमोस्तुते ३४ विशुद्धज्ञानरूपोपित्वंलोकानतिवंचयन् ॥
माययामनुजाकारःसुखदुःखादिमानिव ३५ त्वंमाययागुह्यमानःसर्वेषांहृदिसंस्थि
तः ॥ स्वयंज्योतिःस्वभावस्त्वंव्यक्तएवामललात्मनां३६उन्मीलयन्सृजस्येतन्नेत्रेरा
मजगत्त्रयम् ॥ उपसंह्रियतेसर्वत्वयाचक्षुर्निमीलनात् ३७ ॥

(इन्दीवरश्यामंउदारगंधनुर्द्धरं) नीलकमल सम श्याम सुंदर उत्तम अंगहै जिनको हाथमें धनुष
धारण है जिनके (ईपत्तामविशालाक्षं) थोरी ललामीयुत विशाल नेत्र हैं जिनके (ऐंद्रभस्त्रअंघ्रि
तवाहुकं) ऐंद्रभस्त्र करिके शोभित है दक्षिण हाथ जिनका ३२ (शरपीडितान्वानरानदयार्द्रदृष्ट्या
पश्यंतं) बाणन करिके पीडित जो वानर हैं तिनहिं दया रसभीजी दृष्टि करिके देखि रहेहैं (रामं
दृष्ट्वाभक्त्यागदगदयावाचास्तोतुंप्रचक्रमे) ऐसे रघुनंदन को देखि नारद प्रेमा भक्ति करिके कंठारो-
धभयो ताते गद्गदवानी करिके स्तुति करनेलगे ३३ नारदबोले हे देवदेव ब्रह्मादि देवन के पूज्य हे
जगन्नाथ जगत् के पालन करणहारे हे परमात्मन् सनातन सबके आदिकारण हे नारायण जीवके
अंतरवाक्षीर सागरमें वास करणहारे हे अखिलाधार सम्पूर्ण संसारके आधार भूत हे विश्वसाक्षिन्सब
के बाहरे भीतर की जानन हारे(ते नमोस्तु)आपके अर्थ नमस्कारहै ३४ (विशुद्धज्ञानरूपःअपि) यद्य-
पि आप कारणरहित विशेषि शुद्ध अखण्ड ज्ञानरूपभीहौ (त्वंलोकान्मतिवंचयन्) तौभी आप मा-
धुर्यलीला करिके लोकजननको अत्यन्त छलते हुये (माययामनुजाकारःसुखदुःखादिमान्इव)माया
करिके मानुष कैसा आकार बनाये सुखदुःखादियुक्तकी नाई देखिपरते हौ ३५ (सर्वेषांहृदिसंस्थि
तःस्वयंज्योतिः माययागुह्यमानःअम ज्ञात्मनांस्वभावःत्वंव्यक्तएव) यद्यपि अंतर्यामीरूपते सबके हृ-
दय में स्थित स्वयं प्रकाश मानहौ तौभी कारण माया करिके गुप्तहौ तौ प्राकृत मनुष्य न को कैसे
देखिपरो भरु अमल अन्तःकरणहै जिनका ऐसे जननको सौभाविकही आपप्रसिद्ध भीहौ ३६ (राम
नेत्रेउन्मीलयन् एतत्जगत्त्रयम्सृजसिचक्षुःनिमीलनात्त्वयासर्वउपसंह्रियते) हे रघुनाथजी आप
नेत्रोंको खोलतसंते इन तीनिहूंलोकनको उत्पन्न करतेहौ पुनः नेत्रमूदने ते आपसब लोकन को
संहार करतेहौ ३७ ॥

यस्मिन्सर्वमिदंभातियतश्चैतच्चराचरम् ॥यस्मान्नकिंचिल्लोकेस्मिंस्तस्मैतेब्रह्मणे
नमः ३८ प्रकृतिंपुरुषंकालंव्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणम् ॥ यंजानंतिमुनिश्रेष्ठास्तस्मै
रामायतेनमः ३९ विकाररहितंशुद्धंज्ञानरूपंश्रुतिर्जगौ ॥ त्वांसर्वजगदाकारमूर्ति
चाप्याहसाश्रुतिः ४० विरोधोदृश्यतेदेववैदिकोवेदवादिनाम् ॥ निश्चयंनाधिग
च्छंतित्वत्प्रसादंविनावुधाः ४१ माययाक्रीडितोदेवनविरोधोमनागपि ॥ रश्मिजा
लंरवेर्यद्दृश्यतेजलवद्भ्रमात् ४२ ॥

(इदंसर्वयस्मिन्भातिचएतत्चराचरयतःअस्मिन्लोकेयस्मात्किंचित्नतस्मैतेब्रह्मणेनमः) यहसं
पूर्ण संसार जिसके सत्ताविषे दीप्तिमान् है पुनः यह चराचर जासों उत्पन्न होत जासों पालन होत
जामें लयहोत पुनः यहिलोकविषेनिहिते परे कुछ कारण नहीं है ऐसे जो आप अद्वैत ब्रह्म तिनके
अर्थ नमस्कार है ३८ प्रकृति जो आदि कारण माया जासों महत्तत्त्व त्रिगुणात्म अहंकारजासोंसब

ब्रह्माण्डरचना है पुनः पुरुष महा विष्णु पुनः कालजो पलदण्ड दिन मास वर्ष युग कल्पादि पुनः व्यक्तजो भवतारादि भगवत् रूप प्रसिद्ध है पुनः अव्यक्त जो अगुण व्यापक ब्रह्म इत्यादि रूपों के रूपी साकेतविहारी जिनको उत्तम मुनि यथा पराशर भगस्त्य याज्ञवल्क्य वाल्मीकि इत्यादिजानते ऐसे साकेतनिवासी रामजो आप तिनके अर्थ नमस्कार है ३६ (विकाररहितत्वांशुद्धज्ञानरूपं श्रुतिः जगौ च सा श्रुतिः जगदाकारमूर्तिमपि ब्रह्म) हे रघुनन्दन रजतमादि विकाररहित आपको शुद्धज्ञान रूप वेद गानकरता है पुनः सोई वेद आपको जगत् आकार मूर्ति भी कहता है ४० (देववैदिकः वेदवादिनाम् विरोधः दृश्यते त्वत्प्रसादं विनावुधाः निश्चयनाधिगच्छन्ति) हे देव जो निर्विकार शुद्धज्ञान रूप अरु जगदाकार सविकार रूप दोऊ वेद कहत इसीसे वैदिकजे वेदपाठी वेदवादी जेवेदैकीबात को प्रमाण करते हैं तिनको परस्पर विरोध देखाता है भावमानवश विवाद करते हैं ताते आपके प्रसाद विना पंडित भी निश्चय तत्त्वको नहीं प्राप्त होते हैं अर्थात् जिनपर आपकी कृपा है ते विरोध रहित सर्वत्र आपको निर्विकार रूप देखते हैं ४१ (देवमायया क्रीडितः मनाक् अपि नाविरोधः रवेः रश्मिजा ख्यद्वत्तमात् जलवत् दृश्यते) हे देव आप निर्विकार शुद्ध ज्ञानरूप सो भी भक्तनको सुखदेने हेत दिव्यमायाकरिके क्रीडा करते हो तामें कछु भी नहीं विरोध है यथा सूर्य किरणनको समूह भूमिपर अथा मृगादिकों को भ्रमते जल ऐसा देखात तथा आपकी नरनाट्य है ४२ ॥

भ्रांतिज्ञानात्तथारामत्वयि सर्वप्रकल्प्यते ॥ मनसो विषयो देवरूपं ते निर्गुणं परं ४३
कथं दृश्यं भवेद्देवदृश्याभावे भजेत्कथम् ॥ अतस्तवावतारेषु रूपाणि निपुणा भुवि ४४
भजंति बुद्धि संपन्ना स्तरं त्येव भवार्णवम् ॥ कामक्रोधादयस्तत्र बहवः पारिपंथिनः ४५
भीषयंति सदा चेतो मार्जारामूषकं यथा ॥ त्वन्नामस्मरतां नित्यं त्वद्रूपमपि मानसे ४६
त्वत्पूजानिरतानां ते कथामृतपरात्मनां ॥ त्वद्भक्तसंगिनां रामसंसारोगो पदायते ४७
अतस्ते सगुणं रूपं ध्यात्वा हंसं सर्वदा हृदि ॥ मुक्तश्च रामिलोकेषु पूज्यो हं सर्वदैवतैः ४८ ॥

(तथा भ्रांतिज्ञानात् रामत्वयि सर्वप्रकल्प्यते) तैसेही भ्रांतिज्ञानते हे रघुनाथजी आपविषे सर्व कल्पना करते हैं अर्थात् जैसे रवि किरणन में जल है नहीं भ्रममात्र जलमाने हैं तैसेही जिनको शुद्ध ज्ञान नहीं है देहमें आत्मबुद्धी किहे हैं सोई ज्ञानमें भ्रम अर्थात् अज्ञानते नरनाट्यदेखि आपको दुःख सुख युक्त देखते हैं काहेते (देवते परं रूपं निर्गुणं मनसः विषयः कथं दृश्यं भवेत्) हे देव आपको पररूप जो निर्गुण है ताको मन नेत्रादि विषय सां कैसे देखि परै ४३ (देवदृश्यं भवेत्कथं भजेत् अतः भुवि निपुणाः बुद्धि संपन्नाः तव अवतारेषु रूपाणि भजंति) हे देव जो रूप देखि नहीं परता है ताको कैसे भजै इस कारणते भूतल में जे जन भक्ति में निपुण बुद्धि से परिपूर्ण हैं ते आपके अवतारादिकोंविषे जे रूप हैं तिनहिं भजते हैं ४४ (भवार्णवं एव तरंति तत्र परिपंथिनः कामक्रोधादयः बहवः) जे बुद्धिमान् सगुण रूपको भजते हैं ते भवसागर को भी तरिजाते हैं परंतु तिस मार्गमें शत्रु काम क्रोधादिक बहुत से घेरते हैं ४५ (यथामूषकं मार्जाराः चेतः सदा भीषयंति त्वत्नाम नित्यं स्मरतां मानसे त्वत् रूपं अपि) जैसे मूसको बिछी घेरत तैसेही भक्तके चित्त को सदा कामादि भय उपजाते हैं तिनसो बचाव हेत आपको नाम सदा स्मरण करते हैं तथा मनमें आपके रूप को भी ध्यान राखते हैं ४६ (रामत्वत्पूजानिरतानां) हे रघुनाथ जी आपके पूजन मानसी वा प्रतिमा पूजन में लगे रहते हैं (ते कथामृतपरात्म

नां) आपकी कथा रूप अमृत श्रवण पुट पान में तत्पर रहते हैं (त्वत्भक्तसंगिनांसंसारः गोपदाय ते) आपके भक्तन को संग करने वालन को संसार सिंधु गाय के खुर भरि है जाता है ४७ (अतः ते सगुणरूपं सर्वदा हृदि ध्यात्वा अहंलोकेषु मुक्तः चरामि अहं सर्वदेवतैः पूज्यः) इसीसे आपके सगुणरूप को सदा हृदय में ध्यान राखे मैं लोकनमें मुक्त रूपते विचरता हौं इति परमार्थ पुनः स्वारथमें मैं देवतों करिकै पूजित भयों ४८ ॥

रामत्वयामहत्कार्यकृतदेवहितेच्छया ॥ कुंभकर्णवधेनाद्यभूभारोयंगतः प्रभो ४९
इवोहनिष्यतिसौमित्रिरिंद्रजेतारमाहवे ॥ हनिष्यसेथरामत्वं परश्वोदशकंधर
म् ५० पश्यामि सर्वदेवेशसिद्धैः सह न भोगतः ॥ अनुग्रहणीष्वमादेव गमिष्यामि
सुरालयम् ५१ इत्युक्त्वाराममामं त्र्यनारदो भगवान् नृषिः ॥ ययौ देवैः पूज्यमानो ब्रह्म
लोकमकल्मषम् ५२ आतरं निहतं श्रुत्वा कुम्भकर्णमहाबलम् ॥ रावणः शोकसंतप्तो
रामेणाविलष्टकर्मणा ५३ मूर्च्छितः पतितो भूमावुत्थाय विललाप ह ॥ पितृव्यं नि
हतं श्रुत्वा पितरं चातिविद्वलम् ५४ इंद्रजित्प्राह शोकार्त्तं त्यज शोकं महामते ॥ मयि
जीवति राजेंद्र मेघनादे महाबले ५५ ॥

(रामदेवहितेच्छया त्वयामहत्कार्यकृतं प्रभो अद्य कुंभकर्णवधेन अयं भूभारः गतः) हे रघुनन्दन देव तोंकै, हितकी इच्छा करिकै आपने बड़ा भारी कार्य किया क्योंकि हे प्रभो कुंभकर्ण को वध करिकै यह भूमिको महाभार उतरि गया ४९ (इवः आहवे सौमित्रिः इंद्रजेतारं हनिष्यति अथ राम परश्वः त्वं दशकंधरं हनिष्यसे) काल्हि संग्राम में लक्ष्मण इंद्रजीत अर्थात् मेघनादको मारेंगे पुनः हे राम परसों आप रावण को मारेंगे ५० (देवेशसिद्धैः सह न भोगतः सर्वपश्यामि देवमां अनुग्रहणीष्वसुरालयं गमिष्यामि) हे देवन के ईश सिद्धन करिकै सहित आकाश में प्राप्त आपको संग्राम चरित सब देखता हौं हे देव अब मोपर अनुग्रह करौ भाव सदा दयावनी रहै अब मैं देवलोकको जाउंगो ५१ (इति उक्त्वा नारदः भगवान् ऋषिरामं त्र्यनारदः पूज्यमानः अकल्मषं ब्रह्मलोकं ययौ) ऐसा कहि नारद भगवान् ऋषि रघुनन्दनकी आज्ञालेकै देवन करिकै पूज्यमान हैकै पाप रहित जो शुद्ध ब्रह्मलोक तहांको जाते भये ५२ (अलिकष्टकर्मणारामेण महाबलं आतरं कुंभकर्णं निहतं श्रुत्वा रावणः शोकसंतप्तः) थोरेही श्रम से रघुनन्दन करिकै महाबली भाई कुम्भकर्ण को मराहुवा सुनिकै रावण शोकाग्नि करि संतप्त भया ५३ (मूर्च्छितः भूमौ पतितः उत्थाय विललाप ह पितृव्यं निहतं श्रुत्वा च पितरं अपि विद्वलं) शोकबश रावण मूर्च्छित है भूमिपर गिरिपरा पुनः उठिकै विलाप करता भया तब मेघनाद पितीको मरण सुनि पुनः पिता को भी अत्यन्त विकल देखि ५४ (शोकार्त्तं इंद्रजित्प्राह महामतेशोक्तं त्यज शोकं महामते मयि जीवति) शोकार्तरावण प्रति मेघनाद बोला हे महामते दुःखशोच त्याग करौ हे राजेंद्र महाबल युत जो मेघनाद में हौं ताके जीवतबने रहे संते ५५ ॥

दुःखस्यावसरः कुत्र देवांतक महामते ॥ व्येतु ते दुःखमखिलं स्वस्थो भवमही पते ५६
सर्वशमी करिष्यामि हनिष्यामि च वेरिपूना ॥ गत्वानि कुंभिलांसद्यस्तर्पयित्वा हुताशन
म् ५७ लब्ध्वा रथादिकं तस्मादजे यो हं भवाम्भरे ॥ इत्युक्त्वा त्वरितं गत्वानिर्दिष्टं ह
वनस्थलम् ५८ रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तगंधानुलेपनः ॥ निकुंभिलास्थले मौनीहव

नायोपचक्रमे ५६ विभीषणोऽथ तच्छ्रुत्वा मेघनादस्य चेष्टितम् ॥ प्राहरामायसकलं
होमारं भंदुरात्मनः ६० समाप्यते चेद्धोमोयं मेघनादस्य दुर्मतेः ॥ तदा जेयो भवेद्राम
मेघनादः सुरासुरैः ६१ श्रीराम उवाच ॥ अहमेव गमिष्यामि हंतुं मिद्रजितं रिपुं ॥
आग्नेयेन महास्त्रेण सर्वराक्षसघातिना ६२ ॥

(देवांतकमहामते दुःखस्य अवसरः कुत्र ते अखिलं दुःखं व्येतुं महीपते स्वस्थः भव) मेघनाद बोला हे
देवतोंको नाश करने वाले हेमहामते दुःखको समय कहाँ है भाव शूरनको मरणसमय उत्साह चाहिये
आपको सम्पूर्ण दुःख मिटि जायगा हे राजन् स्वस्थाचित होहु ५६ (सर्वशमीकरिष्यामि च वैरिपूतह-
निष्यामि सद्यः निकुंभिलांगत्वाहुताशनमूर्तर्पयित्वा) मैं तुम्हारे सब दुःखको भस्म करि देंउंगो पुनः
निश्चय करि तुम्हारे शत्रुनको नाश करै को अब मैं शत्रुही निकुंभिलास्थान को जायकै अग्नि को
तृप्त करौंगो ५७ (तस्मात्त्रयादिकं लब्ध्वा अहं अग्नेः अजेयः भवामि इति उक्त्वा निदिष्टं हवनस्थलं त्वरितं
गत्वा) अग्नि को तृप्त करितासे अंतरिक्षस्यादि वरपायकै मैं शत्रुतेरण में अजित होंउंगो ऐसा कहि मे-
घनाद रावणकी आज्ञापाय निकुंभिलानामे हवन स्थानको शीघ्रही जाता भया ५८ लाले फूलोंकी माला
लाग्लिवत्तन धारण करि लालचंदन अंगमें लेपन करि निकुंभिला स्थान में मौन है बैठि हवनप्रारं-
भकरता भया ५९ (मेघनादस्य चेष्टितं तत् श्रुत्वा अथ विभीषणः दुरात्मनः होमारं भंतकलं रामाय प्राह)
मेघनाद को हालतो सुनिकै अब विभीषण आय उसदुष्ट मेघनाद के होमप्रारंभ करनेको सबवृत्तांत
रघुनंदन के अर्थ सुनाते भये ६० (दुर्मते मेघनादस्य होमः अयं चेत् समाप्यते तदाराम मेघनादः सुरासुरैः
अजेयः भवेत्) दुर्बुद्धी मेघनाद को होमयह कदाचित् पूर्ण भया तौ हे राम मेघनाद देव दैत्योंकरिके
अजित है जायगो ६१ (सर्वराक्षसघातिना आग्नेयेन महास्त्रेण इंद्रजितं रिपुं हंतुं अहं एव गमिष्यामि) रघु
नंदन बोले कि सब राक्षसों को नाश करनेवाले आग्नेयमहा अस्त्र करिकै मेघनाद शत्रुको मारनेहेत
हमहीं जायगे ६२ ॥

विभीषणोऽपि तं प्राह नासावन्यैर्निहन्यते ॥ यस्तु द्वादशवर्षाणि निद्राहारविवर्जितः
तः ६३ तेनैव मृत्युर्निदिष्टो ब्रह्मणा स्य दुरात्मनः ॥ लक्ष्मणस्तु अयोध्याया निर्गम्या
या त्वया सह ६४ तदादि निद्राहारादीन्न जानाति रघूत्तम ॥ सेवार्थं तव राजेंद्र ज्ञातं स
र्वमिदं मया ६५ तदाज्ञापय देवेश लक्ष्मणं त्वरयामया ॥ हनिष्यति न संदेहः शेषः सा
क्षाच्चराधरः ६६ त्वमेव साक्षाज्जगतामधीशो नारायणो लक्ष्मण एव शेषः ॥ युवांश्च
राभारनिवारणार्थं जातौ जगन्नाटकसूत्रधारौ ६७ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकांडे अष्टमः सर्गः ८ ॥

(तं विभीषणः अपि प्राह असौ अन्यैः न निहन्यते यस्तु निद्राहारद्वादशवर्षाणि विवर्जितः) तिनप्रभु प्रति
विभीषण बोले कि यह मेघनाद और किसी करिके न मरैगो यो पुरुष निद्रा भोजन बारहवर्ष तक
त्यागेरहै ६३ (तेनैव अस्य दुरात्मनः मृत्युः ब्रह्मणानिदिष्टः तुलक्ष्मणः अयोध्यायाः निर्गम्य त्वया सह आ-
यात्) किसी करिके इसदुष्ट की मृत्युब्रह्मने कहा है पुनः लक्ष्मण जबते अयोध्याते निसरि आप
करिके सहित वनको आये हैं ६४ (रघूत्तमतत् आदि निद्राहारादीन्न जानाति राजेंद्र तव सेवार्थं इदं सर्वं)

मयाज्ञातं) हे रघुवंशनाथ जबते अयोध्यातेचले तवते आदि दै अवतकं लक्ष्मण निद्रा भोजनादि नहीं जानते हैं ताको कारण यह है हे राजेंद्र केवल आपकी सेवाके अर्थ सबभोगत्याग किहे रहे हैं यह सबहाल मैंने जाना है ताते मेघनादको बध करिबे योग्य लक्ष्मण एकही है ६५ (तत्तदेवेशमयात्वरयालक्ष्मणं आज्ञापयधराधरः साक्षात्शेषः हनिष्यतिसंदेहः न) तिस कारणसे हे देवेश मेरे साथ जाने हेत लक्ष्मणको शीघ्रही आज्ञा दीजिये पृथिवीको धारण करणहारे साक्षात् शेषरूप हैं ताते लक्ष्मणमेघनाद को मारै गेयामें संशय नहीं है ६६ (त्वं एव जगतां अधीशः साक्षात् नारायणः लक्ष्मणशेषः एव जगन्नाटकसूत्रधारो धराभार निवारणार्थयुवांजातौ) हे रघुनंदन आप जगत् के स्वामी साक्षात् नारायण हौ तथा लक्ष्मण शेष हैं जगत् व्यापार जो नाटक है ताकें सूत्रधार आदि कारणहौ सो भूमि को भार उतारने हेत दोऊ स्वरूप अवतीर्ण भयो है ६७ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतैवजनाधीवरीचते

अध्यात्मभूषणयुद्धकांडे अष्टमः प्रकाशः ८ ॥

विभीषणवचः श्रुत्वारामो वाक्यमथाब्रवीत् ॥ जानामितस्य रौद्रस्य मायांकृत्स्नां विभीषण १ सहिब्रह्मास्त्रविच्छूरो मायावीचमहाबलः ॥ जानामिलक्ष्मणस्यापि स्वरूपं मम सेवनम् २ ज्ञात्वा स महंतूष्णीं भविष्यत् कार्यगौरवात् ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं प्राहरामो ज्ञानवतांवरः ३ गच्छ लक्ष्मण सैन्येन महता जहिरावणिम् ॥ हनुमत्प्रमुखैः सर्वैर्यूथपैः सह लक्ष्मण ४ जांबवान् ऋक्षराजो यस्य सह सैन्येन संवृतः ॥ विभीषणश्च सचिवैः सह त्वामभियास्यति ५ ॥

सवैया ॥ कपिलै गत लक्ष्मण यज्ञथली खलसेन समूहसँघारकिये । घननाद जुरो रणधोरमचोत्पहिए कहि बाणसुप्राण लिये ॥ प्रभुपास गये सुतघातसुने बिलखातस रावण शोकहिये । गतखड्ग उदम्यसिया हनने शुभमंत्रि सुपारसरोकिदिये ॥ (विभीषणवचः श्रुत्वा अधरामः वाक्यं अब्रवीत् विभीषणतस्य रौद्रस्य मायांकृत्स्नां जानामि) शिवजीबोले हे गिरिजा विभीषणके प्रति अवरघुनन्दन बचनबोलते भये हे विभीषण तिसमेघनादको तामस अरु मायासंपूर्ण मैं जानता हौं १ (सहिब्रह्मास्त्रवित् महाबलः शूरः च मायावी लक्ष्मणस्य अपि स्वरूपं मम सेवनम् जानामि) सो मेघनाद निश्चय करि ब्रह्मास्त्र जानता है पुनः महाबली है अरु शूर है पुनः मायावी है इति जानता हौं तथा लक्ष्मणको भी स्वरूप अर्थात् जेसा बलवीरता शूरतासाहस स्वरूपमें है पुनः मेरे सेवनमें नौदिनारि भोज नादित्यागे रहे हैं सो भी सब जानता हौं २ (कार्यगौरवात् भविष्यत् ज्ञात्वा एव महंतूष्णीं आसन् इत्युक्त्वा ज्ञानवतांवरः रामः लक्ष्मणं प्राह) मेघनाद बधहेतु लक्ष्मणके गयेते कार्य बड़ा उच्चमहोयगो भाव मेघनादको मारिकुशल लौटि आवहिगें यही विचारिकै हमभी चुपरहे भाव तुम्हारी बात प्रमाणराखा ऐसा विभीषण प्रति कहिकै पुनः ज्ञानवंतनमे श्रेष्ठरघुनन्दन लक्ष्मण प्रतिबोलते भये ३ (लक्ष्मणमहता सैन्येन गच्छरावणिजहि लक्ष्मण हनुमत्प्रमुखैः सर्वैर्यूथपैः सह) हे लक्ष्मण बड़ी भारी सेना करिकै सहित जाउरणमें रावणके पुत्र मेघनादको मारौ हे लक्ष्मण हनुमान हैं मुखिया जिनमें ऐसे सब यूथपन करिकै सहित ४ (सहसैन्येन संवृतः अयं जांबवान् ऋक्षराजः च सचिवैः सह विभीषणः त्वामभियास्यति) अपनी सहित सेना साथलीन्हे ये जांबवान् ऋक्षोंके राजा पुनः मंत्रिन करिकै सहित विभीषण सो भी तुम्हारे साथ जायेंगे ५ ॥

अभिज्ञस्तस्यदेशस्यजानातिविवराणिसः ॥ रामस्यवचनंश्रुत्वालक्ष्मणःसविभीषणः ६ जग्राहकार्मुकंश्रेष्ठमन्यद्भीमपराक्रमः ॥ रामपादांबुजंस्पृश्यहृष्टःसौमित्रिरब्रवीत् ७ अद्यमत्कार्मुकान्मुक्ताःशराःनिर्भिद्यरावणिम् ॥ गमिष्यन्तिहिपातालंस्नातुंभोगावतीजले ८ एवमुक्त्वाससौमित्रिःपरिक्रम्यप्रणम्यतम् ॥ इंद्रजिन्निधनाकांक्षीययौत्वरितविक्रमः ९ वानरैर्बहुसाहसैर्हनूमान्पृष्ठतोन्वगात् ॥ विभीषणश्चसहितोमंत्रिभिस्त्वरितंययौ १० जांबवत्प्रमुखाऋक्षाःसौमित्रित्वरयान्वगुः ॥ गत्वानिकुंभिलादेशंलक्ष्मणोवानरैःसह ११ अपश्यद्वलसंघातंदूराद्राक्षससंकुलं ॥ धनुरायाम्यसौमित्रिर्यत्तोभूद्भूरिविक्रमः १२ ॥

(सःतस्यदेशस्यअभिज्ञःविवराणिजानाति रामस्यवचनंश्रुत्वाविभीषणःलक्ष्मणः) सो विभीषण तिसलंका देशके हालजाननेमें प्रवीणहैं अरु जहां यज्ञकरताहैं उनगुप्त विवरादिकोंको भी जानतेहैं ते साथजाँयगे इतिरघुनन्दन के बचनसुनिकै सहित विभीषण लक्ष्मणउठे ६ (भीमपराक्रमःअन्यत्श्रेष्ठंकार्मुकंजग्राहरामपादांबुजंस्पृश्यहृष्टःसौमित्रिःअब्रवीत्) भयंकर पराक्रमी और उत्तम धनुष को हाथ में लौकै रघुनन्दनके पदकमलोंको स्पर्श करिकै आनन्द पूर्वक लक्ष्मणबोलते भये ७ (अद्य मत्कार्मुकान्मुक्ताःशराःरावणिर्निर्भिद्यभोगावतीजलेस्नातुंहिपातालंगमिष्यति) लक्ष्मण बोले कि आजुमेरे धनुषते छूटेहुये बाण रावणके पुत्रको भेदिकै भोगावती गंगाके जलमें स्नानकरने हेत पाताललोकको जाँयगे ८ (एवंउक्त्वाससौमित्रिःतंपरिक्रम्यप्रणम्यइंद्रजित्निधनाकांक्षीत्वरितविक्रमःययौ) ऐसा कहि सो सुमित्रानन्दन तिन रघुनाथजीको परिक्रमा प्रणामकरि मेघनादके मारिवेकी इच्छा करिकै शीघ्रही वेगयुतजातेभये ९ (बहुसाहसैःवानरैःहनूमान् पृष्ठतःअन्वगात्चमंत्रिभिःसहितःविभीषणःत्वरितंययौ) बहुत हजारवानरन सहित हनुमान् लक्ष्मणके पीछे पीछे चले पुनःमंत्रिन करिकै सहित विभीषण तुरतही जातेभये १० (जांबवत्प्रमुखाऋक्षाःत्वरयासौमित्रिःअन्वगुः वानरैःसहलक्ष्मणःनिकुंभिलादेशंगत्वा) जाम्बवान् हैं मुखिया जिनमें ऐसे ऋक्षसमूह शीघ्रही लक्ष्मणके साथचलते भये इसभांति वानरों करिकै सहित लक्ष्मण निकुंभिला स्थानको गये ११ (राक्षससंकुलंवलसंघातंदूरात्अपश्यत्भूरिविक्रमःसौमित्रिःधनुःआयाम्ययत्तःअभूत्) मेघनाद बैठा ताके आस पास घेरे सघन राक्षसभरे हैं ऐसी राक्षसी सेना समूहको दूरिहीते देखतेभये तब बड़े पराक्रमी सुमित्रानन्दन लक्ष्मण धनुषको हाथमें लौकै यत्नपूर्वक है खड़े भये १२ ॥

अंगदेनचवीरेणजांबवानुराक्षसाधिपः ॥ तदाविभीषणःप्राहसौमित्रिंपश्यराक्षसान् १३ यदेतद्राक्षसानीकंमेघश्यामंविलोक्यते ॥ अस्यानीकस्यमहतोभेदमैयल्वान्भव १४ राक्षसेन्द्रसुतोप्यस्मिन्भिन्नेदृश्योभविष्यति ॥ अभिद्रवाशुयावद्वैनैतत्कर्मसमाप्यते १५ जहिवीरदुरात्मानंहिंसापरमधार्मिकम् ॥ विभीषणवचःश्रुत्वालक्ष्मणःशुभलक्षणः १६ ववर्षशरवर्षाणिराक्षसेन्द्रसुतंप्रति ॥ पाषाणैःपर्वताग्रैश्चवृक्षैश्चहरियूथपाः १७ निर्जघ्नुःसर्वतोदैत्यान्तेपिवानरयूथपान् ॥ परश्वधैःसितैर्बाणैरसिभिर्घृष्टोमरैः १८ ॥

(जांबवान् राक्षसाधिपः च अंगदेन वीरेण तदा विभीषणः सौमित्रिं प्राह राक्षसान् पश्य) जांबवान् अरु राक्षसों को राजा विभीषण पुनः अंगद वीर सहित सब यत्न पूर्वक खड़े ताहीं समय विभीषण लक्ष्मण प्रति बोलते भये हेलक्ष्मण राक्षसोंको देखिये १३ (मेघश्यामं यत् एतत् राक्षसानि किं विलो क्यते अर्यमहतः अनीकस्य भेदने यत्नवान् भव) विभीषण बोले कि हेलक्ष्मण मेघनकी तुल्य श्याम जो यह राक्षसी सेना देखि परती है इस बड़ी भारी राक्षसी सेना को नाश करने को यत्न करौ १४ (अस्मिन् भिन्ने राक्षसेन्द्रसुतः अपि दृश्यः भविष्यति यावत् त्वेन एतत् कर्म समाप्यते आशु अभिद्रव) इस राक्षसी सेना के भिन्न भये भागि गये वा नाश भये पर राक्षसों के राजा रावण को पुत्र मेघनाद भी देखि परेंगो ताते जब तक निश्चय करिके न यह कर्म समाप्त होने पावै तब तक शीघ्रही संमुख जाय युद्ध करौ १५ (वीरहिंसा परं अधर्मिकं दुरात्मानं जहि शुभलक्षणः लक्ष्मणः विभीषणवचः श्रुत्वा) विभीषण बोले हेलक्ष्मण वीर यह हिंसामें तत्पर अधर्मी दुष्टात्मा जो मेघनाद ताहि शीघ्रही मारिये अब शुभ लक्षण युत जो लक्ष्मण सो विभीषण को वचन सुनि धनुष बाण सजिके १६ (राक्षसेन्द्र सुतं प्रति शरवर्षाणि वर्षे हरि यूथपाः पाषाणैः च पर्वताग्रैः च वृक्षैः) राक्षसों को राजा रावण ताको पुत्र मेघनाद तापर लक्ष्मण बाणों को वर्षा वर्षते भये तथा बानर यूथपती पत्थरन करिके पुनः पहार शिलों करिके पुनः वृक्षों करिके १७ (सर्वतः दैत्यान् निर्जघ्नुः ते अपि परश्वधैः सितैः बाणैः असिभिः यष्टितोमरैः वानर यूथपान्) यथा बानर सब दैत्यन पर प्रहार कीन्हें तथा ते राक्षस भी परशों करि पेंने बाणों तरवारिन करि लाठिन करि तोमरन करिके बानर यूथपनको भी १८ ॥

निर्जघ्नुः वानरानीकं तदा शब्दो महान् मूत् ॥ ससंप्रहारस्तुमुलः संयज्ञे हरिरक्षसा म् १९ इंद्रजित्स्वबलं सर्वमर्थमानं विलोक्य सः ॥ निकुंभिलां च होमं च त्यक्त्वा शीघ्रं विनिर्गतः २० रथमारुह्य स धनुः क्रोधेन महता गमत् ॥ समाह्वयित्वा सौमित्रिं युद्धाय यरणमूर्धनि २१ सौमित्रे मेघनादो हं मया जीवन्न मोक्ष्यसे ॥ तत्र दृष्ट्वा पितृव्यं स प्राह निष्ठुरभाषणम् २२ इहैव जातः संवृद्धः साक्षाद् भ्राता पितुर्मम ॥ यस्त्वं स्वजनमुत्सृज्य परभृत्यत्वं मागतः २३ कथं द्रुह्यसि पुत्राय पापीयानसि दुर्मतिः ॥ इत्युक्त्वा लक्ष्मणं दृष्ट्वा हनुमत्पृष्ठतः स्थितम् २४ ॥

वानरानीक निर्जघ्नुः तदा महान् शब्दः बभूव ससंप्रहारः हरिरक्षसां तुमुलः संयज्ञे) बानरी सेनाको जब राक्षस मारते भये तब इधर हनुमान् अंगद जाम्बवानादि बड़े बली वीरते प्रचारि भिरे ताते बड़ा भारी प्रचार शब्द होता भया परस्पर प्रहार करत ताते बानर राक्षसों का जुटिके युद्ध भया १९ (स्वबलं सर्वमर्थमानं विलोक्य इंद्रजित्सः निकुंभिलां च होमं च त्यक्त्वा शीघ्रं विनिर्गतः) अपनी सब सेनाको घाव पोड़ित देखि मेघनाद उस निकुंभिलास्थान को पुनः होम को त्यागि शीघ्रही निसरता भया २० (सधनुः रथमारुह्य महता क्रोधेन आगमत् युद्धाय यरणमूर्धनि सौमित्रिं स आह्वयित्वा) सहित धनुष पर सवार है बड़े क्रोध करिके संमुख आय युद्धके अर्थ संग्राम भूमि पर को लक्ष्मण को बुलायके ऐसा बोलता भया २१ (सौमित्रे अहं मेघनादः मया जीवन्न मोक्ष्यसे तत्र पितृव्यं दृष्ट्वा निष्ठुरभाषणं स प्राह) हे सुमित्रानंदन मैं मेघनादहों मोसे जीवत नहीं छूटौंगे तहें अपने पिता विभीषण को देखातासों कठोर वचन सहित बोलता भया २२ (यः त्वं इहैव जातः संवृद्धः साक्षात् मम पितुः भ्राता स्वजनं उत्सृज्य परभृत्यत्वं आगतः) हे विभीषण जो तु इसी राक्षस वंशमें उत्पन्न भया उसी घर में वृद्धता को

प्राप्त भया साक्षात् मेरे पिता को माई हैकै अपने बंधुवर्ग को त्यागि शत्रु की सेवकाईको प्राप्त भया है २३ (पुत्रायकयंद्रुह्यासिपापीयानसि दुर्मतिः इतिउक्त्वाहनूमत्पृष्ठतः स्थितंलक्ष्मणंदृष्ट्वा) पुत्र जो मैं ताके अर्थ कैसे द्रोह करता है तूबड़ा पापी दुर्बुद्धी है ऐसा कहि पुनः हनूमान् की पीठीपर सवार बैठेहुये लक्ष्मण को देखा २४ ॥

उद्यदायुधनिस्त्रिशेरथेमहतिसंस्थितः॥महाप्रमाणमुद्यम्यघोरंविस्फारयन्धनुः२५
अद्यवोमामकावाणाःप्राणान्यास्यंतिवानराः ॥ ततःशरंदाशरथिःसंधायामित्रकर्षणः २६ ससर्जराक्षसैर्द्रायक्रुद्धःसर्पइवश्वसन् ॥ इंद्रजिद्रक्तनयनोलक्ष्मणंसमुदेक्षत २७ शक्राशनिसमस्पर्शैर्लक्ष्मणेनाहतःशरैः ॥ मुहूर्तमभवन्मूढःपुनःप्रत्याहर्तेंद्रियः २८ ददर्शावस्थितंवीरंवीरोदशरथात्मजम् ॥ सोभिचक्रामसौमित्रिक्रोधसंरक्तलोचनः २९ शरन्धनुषिसंधायलक्ष्मणंचेदमब्रवीत् ॥ यदितेप्रथमेयुद्धे नदृष्टोमेपराक्रमः ३० ॥

(उद्यतआयुधनिस्त्रिशेमहतिरथेसंस्थितःमहाप्रमाणंयनुःउद्यम्यघोरंविस्फारयन्) प्रकाशमान् हैं सब हथियार तरवारी जामें ऐसे महान्रथ में बैठाहुआ मेघनाद सो महाप्रमाण अर्थात् काने तक धनुष को खेंचिछोड़ि रोदाको भयंकर शब्दकरत संते बोलता भया २५ (वानराःअद्यवःप्राणान्मामकावाणाःयास्यंतिततःदाशरथिःअमित्रकर्षणःशरंसंधाय) मेघनाद बोला है वानरों आज तुम्हारे प्राणनको मेरेवाण पानकरेंगे ताही समय में लक्ष्मण शत्रुको नाश करनेवाले वाणको धनुष में संधानि २६ (क्रुद्धःसर्पइवश्वसन्राक्षसैर्द्रायससर्जरक्तनयनःइंद्रजित्लक्ष्मणंसमुदेक्षत) क्रोधवश लक्ष्मण सर्पसमगवास्त लेत संते खेंचिकै वह वाण मेघनाद पर छाड़तेभये तब क्रोधकरि लाल हैं गये हैं नेत्र जाके ऐसाइंद्रजित मेघनाद लक्ष्मण की दिशि देखता भया २७ (शक्राशनिसमस्पर्शैःशरैः लक्ष्मणे नहतःमुहूर्तमूढःअभवत्पुनःप्रत्याहर्तेंद्रियः) इंद्रके बज्रतम जाको स्पर्शहै ऐसे प्रचण्ड वाणोंसे लक्ष्मण करिकै ताड़न कियागया मेघनाद मुहूर्त अर्थात् दोदंडतक मूर्च्छित परारहा पुनः प्राप्तभया इंद्रो ज्ञानका अर्थात् चैतन्य होताभया २८ (वीरःदशरथात्मजंवीरंअवस्थितंददर्शक्रोधसंरक्तलोचनःससौमित्रिक्रामसौमित्रिक्राम) चैतन्य है मेघनाद वीर सन्मुख दशरथनन्दन लक्ष्मणवीरको खड़े हुये देखताभया तब क्रोध करिकै लालहवैगयेहैं नेत्रजाके सो मेघनाद लक्ष्मणके सन्मुख जाताभया २९ (धनुषिशरात्संधायलक्ष्मणंचेदमब्रवीत्प्रथमेयुद्धेयदितेमेपराक्रमःनदृष्टः) धनुष में वाणोंको संधान करि पुनः मेघनाद लक्ष्मण प्रति ऐसावचन बोलताभया है लक्ष्मण प्रथमयुद्ध विपे जो तुम मेरेपराक्रमको नहीं देखा है ३० ॥

अद्यत्वांदर्शयिष्यामितिष्ठेदानींव्यवस्थितः ॥ इत्युक्त्वासप्तभिर्वाणैरभिविव्याध लक्ष्मणम् ३१ दशभिश्चहनून्तंतीक्ष्णधारैःशरोत्तमैः ॥ ततःशरशतेनैवसंप्रयुक्तेनवीर्यवान् ३२ क्रोधात्तद्विगुणसंरब्धोनिर्विभेदविभीषणम् ॥ लक्ष्मणोपितथा शत्रुंशरवर्षैरवाकिरत् ३३ तस्यवाणैःसुसंविद्धंकवचंकांचनप्रभम् ॥ व्यशीर्यतस्थोपस्थेतिलशःपतितंभुवि ३४ ततःशरसहस्रेणसंकुद्धोरावणात्मजः ॥ विभेद

समरेवीरलक्ष्मणंभीमविक्रमम् ३५ व्यशीर्य्यातापतद्विव्यंकवचलक्ष्मणस्यच ॥

कृतप्रतिकृतान्योन्यंभवतुरभिद्रुतौ ३६ ॥

(अद्यत्वादर्शयिष्यामिइदानींव्यवस्थितः तिष्ठ इतिउक्त्वासप्तभिःवाणैःलक्ष्मणंअभिविव्याध) सो बल अब मैं तुमको देखाताहों यासमय संग्राममें सन्मुखबड़े रहों ऐसा कहि मेघनाद सातवाणों करिकै लक्ष्मणको ताड़न करताभया ३१ (चतीक्ष्णधारैः दशभिः शरोत्तमैः हनूमंतं ततःवीर्यवान् संप्रयुक्तेनशरशतेनएव) पुनः पैनी हैं धारै जिनकी ऐमे दशउत्तम वाणों करिकै हनूमान्को ताड़न करता भया तदनन्तर बडावली मेघनाद धनुषमें योजितकरि सौवाणन करिकै ३२ (द्विगुणक्रोधात् संरब्धः विभीषणानिर्विभेदतथालक्ष्मणः अपि शरवर्षैः शत्रुंअवाकिरत्) द्विगुणे क्रोधते वाणों को छाडि विभीषणको भेदनकरता भया तैमेही लक्ष्मणभी समूहवाणोंकी वर्षाकरिकै शत्रु जो मेघनाद ताको आच्छादित करते भये भाववाणोंकी वर्षामें देखि नहीं परताहै ३३ (तस्यवाणैःसुसंविद्धंकांचनप्रभं कवचंरथोपस्थेतिलशः व्यशीर्य्यतभुविपतितं) तिन लक्ष्मणके वाणोंकरिकै ऐसा बेधागया मेघनाद जासो कंचन मय प्रकाशमान पहिरेरहा वस्त्र सो रथके ऊपर तिलसम खंड खंडहैकटिकै सब टूक भूमिपै गिरि परे ३४ (ततःरावणात्मजः संक्रुद्धःसमरेशरसहस्रेण भीमविक्रमंवीरं लक्ष्मणं विभेद) तदनंतर रावण को पुत्र मेघनाद बड़ा क्रोध करि संग्राम में हजारों वाण प्रहारकरिकै बड़ा भयंकरहै पराक्रम जिनको ऐसे वीर लक्ष्मण को ऐसा विदारण करताभया जासो ३५ (लक्ष्मणस्य दिव्यंकवचंव्यशीर्य्यतअपतत्) लक्ष्मण को दिव्य वस्त्र सोभी कटिकै टूक टूक हैगिरिपरा (अन्योन्यकृतप्रतिकृतअभिद्रुतौबभूव) परस्पर प्रहार करने पर प्रहार दोऊ दिशिते वारंवार संमुख धाय धाय दोऊ सोमहायुद्ध होताभया ३६ ॥

अभीक्ष्णंनिश्वसंतौतौयुद्धेतांतुमुलंपुनः ॥ शरसंवृतसर्वांगौसर्वतोरुधिरोक्षितौ ३७ सुदीर्घकालंतौवीरावन्योन्यंनिशितैःशरैः ॥ अयुध्येतामहासत्वौजयाजयविवर्जितौ ३८ एतस्मिन्नंतरेवीरोलक्ष्मणःपञ्चभिःशरैः ॥ रावणेःसारथिंसाश्वं रथञ्चसमचूर्णयत् ३९ चिच्छेदकार्मुकंतस्यदर्शयन्हस्तलाघवम्॥सोन्यत्तुकार्मुकं भद्रंसज्यंचक्रेत्वरान्वितः ४० तच्चापमपिचिच्छेदलक्ष्मणस्त्रिभिराशुगैः ॥ तमेव च्छिन्नधन्वानंविव्याधानेकसायकैः ४१ पुनरन्यत्समादायकार्मुकंभीमविक्रमः ॥ इंद्रजित् लक्ष्मणंवाणैःशतैरादित्यसन्निभैः ४२ ॥

(तौतुमुलंपुद्धेतां पुनःअभीक्ष्णंनिश्वसंतौसर्वांगौशरसंवृतसर्वतःरुधिरोक्षितौ) दोऊजुटिकै युद्ध करते हैं पुनः क्रोध वा अमते बारम्बार बड़ी श्वास लेते हैं सर्व अंगों में बाणलगे हैं दोउन कोसंपूर्ण शरीर रुधिर से बूडिरहा है ३७ (तौवीरौमहासत्वौजयाजयविवर्जितौअन्योन्यंनिशितैःशरैःसुदीर्घकालंअयुद्धेतां) तौ दोऊ लक्ष्मण मेघनाद वीर दोऊ महापराक्रमी ताते वीरताकी उत्साह में जय अथवा पराजय की चाह रहित परस्पर पैने वाणों करिकै बहुत बारतक युद्धकरते रहे ३८ (एतस्मिन्नंतरेलक्ष्मणःवीरः पंचभिःशरैःरावणेःसअश्वंरथंचसारथिं समचूर्णयत्) ताही समय के बीच में लक्ष्मण वीर पांचवाणों करिकै रावणी जो मेघनाद ताको सहित घोडेन रथपुनःसारथी रथहाक ने वाला इत्यादि सबको चूर्ण करिडारे ३९ (हस्तलाघवंदर्शयन्तस्यकार्मुकंचिच्छेदतुसःअन्यत्भद्रं

कार्मुकं त्वरान्वितः सज्यं चक्रे ।) लक्ष्मण अपने हाथकी पटेवाजी देखावत संते तिसमेघनाद को धनुष काटि डारतेभये पुनः सो मेघनाद और मंगलीक धनुष को शीघ्रही सजिलेता भया ४० (त्रिभिः आशुगैः लक्ष्मणः तत्त्वापंअपिचिच्छेदचिच्छेदधन्वानंतं एव अनेकसायकैः विव्याध) तानि बाणौ करिके लक्ष्मण सोऊ धनुष को भी काटि डारतेभये कटि गयाहै धनुष जाको ऐसे मेघनाद कोभी लक्ष्मण अनेक बाणौ करिके वेधते भये ४१ (पुनः अन्यत् कार्मुकं समादाय भीमविक्रमः इंद्रजित् आदित्य सन्निभैः शतैः बाणैः लक्ष्मणं) पुनः और धनुष लैकै भयंकर है पराक्रम जाके ऐसा मेघनाद सूर्य के तुल्य है प्रभा जिनमें ऐसे सौबाणौ करिके लक्ष्मण को ४२ ॥

विभेदवानरान्सर्वान्बाणैरापूरयन्दिशः ॥ ततः ऐंद्रसमादाय लक्ष्मणो रावणिं प्रति ४३ संधाया कृष्य कर्णांतं कार्मुकं दृढनिष्ठुरम् ॥ उवाच लक्ष्मणो वीरः स्मरन् राम पदांबुजं ४४ धर्मात्मा सत्यसंधश्च रामो दाशरथिर्यदि ॥ त्रिलोक्यामप्रतिद्वंद्वस्त देनं जहिरावणिम् ४५ इत्युक्त्वा बाणमाकरणाद्विकृष्य तमजिह्वगम् ॥ लक्ष्मणः समरे वीरः ससर्जं इंद्रजितं प्रति ४६ सशरः सशिरस्त्राणं श्रीमज्ज्वलितकुण्डलम् ॥ प्रमथ्येंद्रजितः कायात्पातयामास भूतले ४७ ततः प्रमुदिता देवाः कीर्तयंतोरघूत्तमम् ॥ वर्षुः पुष्पवर्षाणि स्तुवन्तश्च मुहुर्मुहुः ४८ ॥

(बाणैः दिशः अपूरयन् सर्वान् वानरान् विभेदतः लक्ष्मणः ऐंद्रसमादाय रावणिं प्रति) मेघनाद बाणौ करिके सब दिशों को ऐसा पूर्ण करि दिया जासों सब वानरों को भेदन किया तब लक्ष्मण ऐंद्र अस्त्र मंत्रित करि हाथ में लैकै मेघनाद के बधहेत ४३ (दृढनिष्ठुरम् कार्मुकं संधाय कर्णांतं आकृष्य रामपदां बुजं स्मरन् लक्ष्मणः वीरः उवाच) पुष्टकठोर धनुष में बाण संधान करिता युतरोदा कर्ण पर्यंत खोंचि रघुनंदन के पदकमलन को स्मरण करत संते लक्ष्मण वीरबोलते भये ४४ (दाशरथिः रामः यदि धर्मात्मा च सत्यसंधः त्रिलोक्यामप्रतिद्वंद्वस्तत एनं रावणिं जहि) लक्ष्मण बोले कि दशरथ के पुत्र राम जो धर्मात्मा होइ पुनः सत्यप्रतिज्ञा होइ तथा तीनिहुँ लोकनमें जिनकी समताको दूसरा बरियोद्धान होयतौ हे बाण इसरावण के पुत्र मेघनाद को नाशकर ४५ (इति उक्त्वा लक्ष्मणः वीरः बाणं आकर्णात् विकृष्य तं अजिह्वगं समरे इंद्रजितं प्रति ससर्जं) ऐसा कहिल लक्ष्मण बरिबाणको कर्ण पर्यंत खोंचितिस बाण को संग्राम विषे मेघनाद प्रति छाड़ते भये ४६ (सशरं श्रीमज्ज्वलितकुण्डलं शिरः सशरः प्रमथ्येंद्रजितः कायात् भूतले पातयामास) सहित कुंडल प्रकाशमान कुंडल हैं जामें तिसशिरको सो बाण काटिके (इंद्रजितः कायात्) अर्थात् मेघनाद की देहते भिन्न करि भूतल में डारि देता भया ४७ (ततः देवाः प्रमुदिताः रघूत्तमम् कीर्तयंतः पुष्पवर्षाणि वर्षुः च मुहुः मुहुः स्तुवन्तः) तदनंतर अर्थात् मेघनाद के मरेपर इंद्रादि सब देवता परम आनंद हैंकै रघुनंदन के गुणनको कीर्तन करतेभये फूलोंकी वर्षावैषते भये पुनः बारम्बार स्तुति करते भये ४८ ॥

जहर्षशक्रो भगवान्सहदेवैर्महर्षिभिः ॥ आकाशेऽपि च देवानां शुश्रुवेदुंदुभिः स्वनः ४९ विमलंगगनंचासीत्स्थिराभूद्विश्वधारिणी ॥ निहतं रावणिं दृष्ट्वा जयजल्प समन्वितः ५० गतश्रमः ससौमित्रिः शंखमापूरयद्रणे ॥ सिंहनादं ततः कृत्वा ज्याशब्दमकरोद्विभुः ५१ तेन नादेन संहृष्टा वानराश्च गतश्रमाः ॥ वानरेन्द्रैश्च सहितः स्तु

वज्रिर्हृष्टमानसैः ५२ लक्ष्मणः परितुष्टात्मा ददर्शाभ्येत्यराधवम् ॥ हनूमद्राक्षसाभ्यांच सहितो विनयान्वितः ५३ ववन्दे भ्रातरं रामं ज्येष्ठं नारायणं विभुम् ॥ त्वत्प्रसादाद्गुश्रेष्ठहोरावणिराहवे ५४ ॥

(सहदेवैः महाऋषिभिः शक्रः भगवान्जहर्षच आकाशोपि देवानां दुन्दुभि स्वतः शुश्रुव) सहित सब देवतन महा ऋषिण करिकै सहित इंद्र भगवान् आनंदको प्राप्त होते भये पुनः आकाशमें भी देवतों के वजाये हुये नगरों का शब्द सुनि परता है ४९ (गगनं विमलं आसीत् च विदधारिणी स्थिराभूत् रावणिनिहतं दृष्ट्वा जयजल्पसमन्वितः) आकाश विमल होता भया पुनः विदधको धारण करन हारी पृथिवी सो स्थिर होती भई रावण के पुत्र को मरा देखि सब दिशि जयजय कार धुनि सहित ५० (गतश्रमः सौमित्रिः रणेशंखं अपूरयत् ततः सिंहनादं कृत्वा विभुः ज्याशब्दं अकरोत्) वांति गया है श्रम जिन को ऐसे लक्ष्मण रण भूमि विषे जय दर्शावन हारा शंख वजावते भये तदनंतर सिंहवत् नाद करि गर्जि समर्थ लक्ष्मण धनुष के रोदा को शब्द करते भये ५१ (तेन नादेन वानराः संहृष्टाः च गतश्रमाः स्तुवद्भिः च हृष्टमानसैः वानरैर्द्रैः सहिताः) जो लक्ष्मण धनुष टंकोर किया त्यहि शब्द करिकै सब वानर आनंद होते भये पुनः श्रम रहित भये ताते लक्ष्मण की स्तुति करते हुये पुनः आनंद है मन करिकै ऐसे उत्तम वानरन सहित ५२ (परितुष्टात्मा लक्ष्मणः च हनूमत्प्राक्षसाभ्यां सहित अभ्येत्यराधवदं दर्शयित्वा) शत्रुमारि कुशलपूर्वक लौटे इति परम आनन्दचित्त लक्ष्मण पुनः हनूमान् भरु राक्षस विभीषण इन दोउन करिकै सहित आय सन्मुख रघुनन्दनको देखते तब नम्रतायुक्त हँकरि लक्ष्मणजी ५३ (विभुं नारायणं ज्येष्ठं भ्रातरं रामं ववन्दे रघुश्रेष्ठ त्वत्प्रसादात् आहवे रावणिर्हतः) समर्थ साक्षात् नारायण ज्येष्ठे भाई जो राम तिनहि प्रणाम करते भये पुनः लक्ष्मण बोले हे रघुवंशनाथ आपके प्रसादते रण में रावण को पुत्र मेघनाद मारा गया ५४ ॥

श्रुत्वा तल्लक्ष्मणाद्भक्त्या तमालिङ्ग्य रघूत्तमः ॥ मूर्ध्न्यवधाय मुदितः स स्नेहमिदमब्रवीत् ५५ साधुलक्ष्मण तुष्टोऽस्मि कर्मते दुष्करं कृतम् ॥ मेघनादस्य निधने जितं सर्वमरिदम् ५६ अहो रात्रिस्त्रिभिर्वीरैः कथंचिद्विनिपातितः ॥ निःसपत्नः कृतोऽस्म्यद्य निर्यास्यति हिरावणः ५७ पुत्रशोकान्मया योद्धुं तं हनिष्यामि रावणम् ॥ मेघनादं हतं श्रुत्वा लक्ष्मणेन महाबलम् ५८ रावणः पतितो भूमौ मूर्च्छितः पुनरुत्थितः ॥ विललापाति दीनात्मा पुत्रशोकेन रावणः ५९ पुत्रस्य गुणकर्माणि संस्मरन् पर्यदेव यत् ॥ अद्य देवगणाः सर्वे लोकपाला महर्षयः ६० ॥

(तत् भक्त्या लक्ष्मणात् श्रुत्वा रघूत्तमः तं आलिङ्ग्य मुदितः मूर्ध्न्यवधाय सह स्नेहं दृढं अब्रवीत्) सो वचन भक्ति करिकै सहित लक्ष्मण के मुखते सुनिकै रघुनन्दन तिन लक्ष्मण को हृदय में लगाय आनंद सहित शिर सँधि सहित स्नेह ऐसा वचन बोलते भये ५५ (लक्ष्मण साधु तुष्टोऽस्मि ते दुष्करं कर्म कृतम् अरिदं मेघनादस्य निधने सर्वजितं) हे लक्ष्मण साधु मैं तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हों क्यों-कि दुष्कर अर्थात् जो किसीके करने योग्य न रहै सो कर्म तुमने किया हे शत्रुनके नाश करने वाले मेघनाद को बध करत संते सब राक्षसों को तुमने जीति लिया ५६ (त्रिभिः अहो रात्रिः कथंचित् वीरैः विनिपातितः अद्य निःसपत्नः कृतोऽस्मि हिरावणः निर्यास्यति) तीन दिन रात्रों करिकै कैसे भी मेघनाद

वीर मारपाया हे लक्ष्मण तुमने यासमय मोको शत्रु रहित करिदिया अब पुत्र शोकाकुल रावण शीघ्रहीं आवैगा ५७ (पुत्रशोकात्मयायोद्धुरावणंहनिष्यामि) पुत्र शोकते मेरेसाथ युद्ध करने को आवैगो तब रावण को शीघ्रहीं बध करौंगो (मेघनादमहाबलमूलक्ष्मणेनहतंश्रुत्वा) मेघनाद महाबली सो लक्ष्मण करिकै मारागया यह सुनिकै ५८ (रावणःमूर्च्छितःभूमौपतितः पुनःउत्थितः पुत्रशोकेनरावणःअतिदीनात्माविललाप) मेघनाद को मरण सुनतही रावण मूर्च्छितह्वै भूमिपै गिरि परा पुनः उठिकै पुत्र के शोक करिकै रावण अत्यंत दीनपुरुपरथ हीनह्वै विलाप अर्थात् रोदन करता भया ५९ (पर्यदेवयत्पुत्रस्यगुणकर्माणिसंस्मरन् अद्यसर्वलोकपालाः देवगणाःमहर्षयः) विलाप करतसंते रावण पुत्र के गुण बल वीरता सूरता पितु आज्ञा कारतादि तथा कर्म दिग्विजया दि स्मरण करि कहत की अब सब लोकपाल देवगण महा ऋषि ६० ॥

हतमिंद्रजितंज्ञात्वासुखंस्वप्स्यंतिनिर्भयाः ॥ इत्यादिवहुशःपुत्रलालसोविललाप
ह ६१ ततःपरमसंकुद्धोरावणोराक्षसाधिपः ॥ उवाचराक्षसान्सर्वान्विनाशयिषु
राहवेदंरसपुत्रबधसंतप्तःशूरःक्रोधवशङ्गतः ॥ संवीक्ष्यरावणोबुद्ध्याहंतुंसीतांप्रदु
द्रुवे ६२ खड्गपाणिमथायांतंकुद्वंद्वदृष्ट्वादशाननम् ॥ राक्षसीमध्यगासीताभयशोका
कुलाभवत् ६३ एतस्मिन्नंतरेतस्यसचिवोबुद्धिमान्शुचिः ॥ सुपाश्वोनाममेधावी
रावणंवाक्यमब्रवीत् ६४ ॥

(इन्द्रजितंहतंज्ञात्वानिर्भयाःसुखंस्वप्स्यंति इत्यादिपुत्रलालसःबहुशःविललापह) देवगण लोकपाल महाऋषि इत्यादि सब मेघनादको मरणजानिकै अब निर्भयहैकै सुखपूर्वक सोवहिंगे इत्यादि पुत्रकीलालसाकरिकै शोकयुत रावण बहुत प्रकारके वचनकहि विलापकरताभया ६१ (ततःराक्षसाधिपःरावणःपरमसंकुद्धःविनाशयिषुःआहवेसर्वान्राक्षसान्उवाच) तदनन्तर राक्षसोंको राजा रावण परमक्रोधयुक्तहै शत्रुनको नाशकरनेकी इच्छाकरिकै संग्रामकरनेको सब राक्षसनसो बोलताभया भाव सब राक्षसजाउ वानरोंते युद्धकरौ ६२ (पुत्रबधसंतप्तःशूरःक्रोधवशंगतःसरावणःबुद्ध्यासंवीक्ष्यसीतांहंतुंप्रदुद्रुवे) पुत्रबध दुःखाग्नि में संतप्तहै शूरभी क्रोधवशीभूतहै सो रावण बुद्धिसे विचारकरिकै भाव इसीके हेत मेरे बन्धु पुत्र सेना सुभटादि सब मारंगये इति विचारि सीताको मारिबेहेतधावताभया ६३ (अथखड्गपाणिंकुद्वंद्वदशाननम्आयांतंकुद्वंद्वाराक्षसीमध्यगासतिभयशोकाकुलाभवत्) अब प्रकाशमान नग्नतरवारि हाथमेंलिहे क्रोधयुत दशानन अर्थात् रावणको आवतेदेखि पुनः इधर कोई धर्मवंत नहीं जो रक्षाकरै हिंसा रत राक्षसिनके मध्यमें प्राप्त सीता भय शोककरिकै आकुलहोतीभिई भाव मोको अवशि बधकरी ६४ (एतस्मिन्नंतरेतस्यसचिवःसुपाश्वःनाममेधावीशुचिः बुद्धिमान्रावणंवाक्यमब्रवीत्) ताही समयविपे तिसरावणको मंत्री सुपाश्वनाम धीः धारणकरनहारी जो मेधा त्यहि युक्त पवित्र बुद्धिमान् सो सुपाश्व मंत्री अनीति कार्यपर उद्यतदेखि रावणप्रति वचनबोलताभया ६५ ॥

ननुनामदशग्रीवसाक्षाद्वैश्रवणानुजः ॥ वेदविद्याव्रतस्नातःस्वकर्मपरिनिष्ठितः ६६
अनेकगुणसम्पन्नःकथंस्त्रीबधमिच्छसि ॥ अस्माभिःसहितोयुद्धेहत्वारामंचलक्ष्म
णम् ॥ प्राप्स्यसेजानकींशीघ्रमित्युक्तःसन्धर्वतत ६७ ततोदुरात्मासुहृदानीवेदितं

वचःसुधर्म्यप्रतिगृह्यरावणः ॥ गृहंजगामाशुशुचाविमूढधीःपुनःसभांचप्रययौ
सुहृदृतः ६८ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादेयुद्धकाण्डेनवमःसर्गः ॥ ६ ॥

(दशाननसाक्षात्वेश्वरस्यअनुजःननुनाम) सुपादर्व बोला हे दशग्रीव तुम साक्षात् कुबेरके छोटे भाईहौ इत्यादि निश्चयकरिके तुम्हारा नाम लोक में प्रसिद्ध है भाव लोकविजयी बली शूरवीरहौ पुनः (वेदविद्याव्रतस्नातः स्वकर्मपरिनिष्ठितः) वेदविद्या में प्रवीण महाव्रत अर्थात् प्रतिज्ञाको निर्वाहनहारे पुनः मुक्ति हेतु गायत्रीद्वारा परब्रह्मकी उपासनादेह शुद्धी हेतु निर्वाणिक पंचदेवनकी पूजा इति स्नातयमे जो अपने ब्राह्मणोंकेकर्म हैं तिनमें निष्ठाराखे ६६ (अनेकगुणसम्पन्नःस्त्रीवधं कथमिच्छसि अस्माभिःसहितःयुद्धेरामचलक्ष्मणहत्वा) विद्या बुद्धि साहस वीरता धीरता अनेकउत्तम गुणोंकरिके परिपूर्णहैके तुम अवध्य स्त्री को बधकरनेकी कैसे इच्छाकरतेहौभाव यह काम तुम्हारे योग्य नहीं है ताते हमलोगोंकरिके सहितचलो संग्राम में रामको पुनः लक्ष्मणकोमारौ तव (शीघ्रं जानकीप्राप्त्यसेइतिउक्तःसन्त्यवर्तत) शीघ्रही जानकीको प्राप्तहोउगे ऐसा समुभाय जब सुपादव तव रावण सीता वधते निवृत्तभया ६७ (सुहृदानिवेदितंसुधर्म्यवचःप्रतिगृह्यततःपुरात्मारावणःआशुगृहंजगामाशुशुचाविमूढधीःसुहृदृत पुनःसभांचप्रययौ) मित्रके कहेहुये जो सुधर्मयुत वचन तिनको ग्रहणकरिके तदनन्तर दुष्ट रावण शीघ्रही घरकोजाताभया पुनः शोचकरिके विश्विमूढ है बुद्धिजाकी ऐसा रावण मंत्रिनकरिके वेष्टित पुनः सभाकोजाताभया ६८ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेनवमःप्रकाशः ९ ॥

सविचार्यसभामध्येराक्षसैःसहमंत्रिभिः ॥ निर्ययौयेवसिष्टास्तैराक्षसैःसहराघव
म् १ शलभःशलभैर्युक्तःप्रज्वलंतमिवानलम् ॥ ततोरामेणनिहताःसर्वेतेराक्षसा
युधि २ स्वयंरामेणनिहतस्तीक्ष्णबाणेनवक्षसि ॥ व्यथितस्त्वरितंलंकांप्रविवेश
दशाननः ३ दृष्ट्वारामस्यबहुशःपौरुषंचाप्यमानुषम् ॥ रावणोमारुतेऽचैवशीघ्रं
शुक्रांतिकंययौ ४ नमस्कृत्यदशग्रीवःशुक्रंप्रांजलिरब्रवीत् ॥ भगवन्राघवेणैवंलं
कांराक्षसयूथपैः ५ विनाशितामहादैत्यानिहताःपुत्रबांधवाः ॥ कथंमेदुःखसंदोह
स्त्वयितिष्ठतिसद्गुरौ ६ ॥

सवैया ॥ रणसंमुख राघवराक्षस मारिसघावन रावण लंकगयो । उशनामतसो खल यज्ञरचे सुनि
राघवकीशतही पठयो ॥ तियशांसति यज्ञ विध्वंसिचले उठि रावण नारिसुज्ञानदयो । प्रभुकी महि-
मा तियसो लुनिके कहि रावण मोकुल मुक्तभयो ॥ (राक्षसैःमंत्रिभिःसहसभामध्येसविचार्ययेवशि
ष्टास्तैराक्षसैःसहराघवंनिर्ययौ) शिवजी बोले हे गिरिजा अब सब राक्षस अरु मंत्रिन करिके सहित
सभाके मध्यमें बैठि सो रावण विचारकरि जे बाकीरहे तिन निशाचरन करिके सहित रावण रघुनं-
दनसो युद्धकरने को जाताभया १ (शलभैःयुक्तःशलभःज्वलंतंअनलंइवततःतेसर्वेराक्षसाःयुधिरामे

गनिहताः) सहित राक्षसन रावण कैसा प्रभुके संमुख गया जैसे पतंगियों सहित पतंगावरतीहुई अग्निके संमुख गये तदनन्तर ते सब राक्षस संग्रामे में रघुनन्दन करिके नाशभये २ रामेणतीक्ष्णवाणेनवक्षसिनिहतःस्वयंदशाननःव्यथितःत्वरितंलंकांप्रविवेश) जब रामने पैंनेबाण करिके छाती में मारे तब आप रावण भी बड़ी व्यथाको प्राप्त है तुरतही लंकामें प्रवेश किया ३ (अमानुषंअपिचरामस्यबहुशःपौरुषंचएवमारुतेःदृष्ट्वारावणःशीघ्रंशुक्रांतिकंययौ) नहींहै मानुषत्वभी पुनः रामका बहुत सा पौरुष पुनः हनुमानका पौरुष देखि हियेहारि रावण शीघ्रही शुक्राचार्य के पासजाताभया ४ (दशग्रीवःनमस्कृत्यप्रांजलिःशुक्रंअब्रवीत्भगवन्रामेणएवंराक्षसयूथपैःलंकाविनाशिता) रावण नमस्कार करि हाथ जोरि शुक्रप्रति बोला हे भगवन् यथा मैं घायल हों रामने इसी प्रकार राक्षस यूथपों करिके सहित लंका को नाश करिदिया ५ (पुत्रबांधवामहोदैत्यानिहतासद्गुरौत्वायितिष्ठंतिकथंमेदुःखसंदोहः) मेरे पुत्रभाई महाबली दैत्यनको नाशकरि दिया आप ऐसे उत्तम गुरुके बने रहत सैंते कैसे मोको दुःख समूह होवै भाव न होना चाहिये ६ ॥

इतिविज्ञापितोदैत्यगुरुःप्राहदशाननम् ॥ होमंकुरुप्रयत्नेनरहसित्वंदशानन ७
यदिविघ्नो न चेद्धोमेतर्हिहोमानलोत्थितः ८ महानरथश्चवाहाश्चचापतूणीरशायकाः ॥ संभविष्यंतितैर्युक्तस्त्वमजेयोभविष्यसि ९ गृहाणमंत्रान्महत्तान्गच्छ
होमंकुरुद्रुतम् ॥ इत्युक्तस्त्वरितंगत्वारारवणोराक्षसाधिपः १० गुहांपातालसदृशीं
मंदिरेस्वेचकारह ॥ लंकाद्वारकपाटादिवध्वासर्वत्रयत्नतः ११ होमद्रव्याणिसंपाद्य
यान्युक्तान्यभिचारिके ॥ गुहंप्रविश्यचैकांतमौनीहोमंप्रचक्रमे १२ उत्थितंधूम
मालोक्यमहांतरावणानुजः ॥ रामयदर्शयामासहोमधूमंभयाकुलः १३ ॥

(इतिविज्ञापितःदैत्यगुरुःदशाननंप्राहदशाननरहसिप्रयत्नेनत्वंहोमंकुरु) ऐसे अपनेदुःखकोहाल सुनाया तब दैत्यगुरु शुक्राचार्य रावणप्रति बोलते भये हे दशानन एकांतस्थानमें यत्न करिके भाव विदित न होवै गुप्त बैठितुम होमकरो ७ (यदिचेत्विघ्नःनतर्हिहोमानलात्तमहानरथःउत्थितः) जो कदाचित् विघ्ननलागैगे तौ होमअग्निते एकबड़ा उत्तम रथ निकलैगो ८ (चवाहाःचचापतूणीरशायकाःसंभविष्यति) रथपुनः घोड़ेपुनः धनुष तरकस बाण उत्पन्न होयेंगे) तैःयुक्तःत्वंअजेयःभविष्यसि (हे रावण तिन रथादि युक्त युद्धकरने में तुम अजय होउगे तुमसे कोऊन जीति सकैगो ९ मत्तद्वत्तान्मंत्रान्गृहाणद्रुतमगच्छहोमंकुरुइतिउक्तःराक्षसाधिपःरावणःत्वरितंगत्वा) मेरे दियेहुये मंत्रोंको ग्रहण करि शीघ्रही जाय होमकरौ ऐसा जब शुक्रने कहा तब राक्षसों को राजारावण तुरत ही गया १० (स्वेमंदिरेपातालसदृशींगुहांचकारहयत्नतःलंकाद्वारकपाटादिसर्वत्रवध्वा) अपनेमंदिर में रावण पाताल के समान गहिर गुहा बनवावताभया यत्नपूर्वक लंकाद्वारोंके केवारादि सब बंदकराय दिया ११ (अभिचारकेयानिउक्तानिहोमद्रव्याणिसंपाद्यगुहंप्रविश्यचैकांतमौनीहोमंप्रचक्रमे) तंत्रामें शत्रुनाशनप्रयोग में जो कही हैं होमकीद्रव्ययथा बहेरा भेलावां काष्ठमस्तान छार सेरसों मद्य मांस उलूक पक्षी इत्यादि बटोरि गुहामें पौंठि पुनः एकांतमें मौन बैठा होमकरता भया १२ (महोत्तमंउत्थितंआलोक्यरावणानुजःभयाकुलंहोमधूमंरामायदर्शयामास) बड़ाभारी धूम उठता देखि रावणानुज विभीषण भयाकुल है आय होमको धूम रघुनन्दन के अर्थ देखावते भये १३ ॥

पश्यरामदशग्रीवो होमंकर्तुंसमारभत् ॥ यदिहोमःसमाप्तःस्यात्तदाज्ञेयोभविष्य
ति १४ अतोविध्नायहोमस्यप्रेषयाशुहरीश्वरान् ॥ तथेतिरामःसुग्रीवसंमतेनां
गदंकपिम् १५ हनूमत्प्रमुखान्वीरान्आदिदेशमहाबलान् ॥ प्रकारंलंघयित्वाते
गत्वारवणमंदिरम् १६ दशकोट्यःप्लवंगानांगत्वामन्दिररक्षकान् ॥ चूर्णयामासु
रश्वांश्चगजांश्चन्यहनत्क्षणात् १७ ततश्चसरमानामप्रभातेहस्तसंज्ञया ॥ वि
भीषणास्यभार्यासांहोमस्थानमसूचयत् १८ गुहापिधानपाषाणमंगदःपादघट्टनैः ॥
चूर्णयित्त्वामहासत्वःप्रविवेशमहागुहाम् १९ ॥

(रामदशग्रीवःहोमंकर्तुंसमारभत्पश्ययादिहोमःसमाप्तःस्यात्तदाज्ञेयःभविष्यति) विभीषण
कहत हे राम रावण होमकरनेको प्रारंभकिया ताको धूम देखिये जो यह होम कदाचित् समाप्तभया
तो रावण भजीत ह्वै जायगा भाव फिरि न शीघ्रमरैगा १४ (अतःहोमस्यविध्नायहरीश्वरान्आशु
प्रेषयतथाइतिरामःसुग्रीवसंमतेनगदंकपिम्)इसकारणसे होमके विघ्नकरणेअर्थ वानरनको शीघ्रही
पठाइये बहुतभली ऐसाकहि रघुनंदन सुग्रीवके संमतकरिकै अर्थात् सल्लाहलैकरि अंगदकपिको १५
(हनूमत्प्रमुखान्वीरान्महाबलान्आदिदेशतेप्रकारंलंघयित्वावणमंदिरंगत्वा) हनूमानादि वीर
महाबली वानरनको आज्ञादिये भावरावणकोहोमभंगकरिआवौ सोसुनिते वानरलंकाके कोटकोफादि
रावण के मंदिरके द्वारपरको जातेभये १६ (दशकोट्यःप्लवंगानांगत्वा) दशकरोरिवानररातिहीं
कोगये (मंदिररक्षकान्चूर्णयामासुः) रावणके मंदिरके रक्षक रहैं तिनको मारिचूरकरिदिये (चम्प
द्रवांचगजांक्षणात्न्यहनत्) पुनः घोड़ोंको हाथिनको क्षणों भरे में नाशकरिदिये सर्वत्र मंदिर ढूँढे
होम थलनपाये १७ (ततःप्रभातेसरमानाम विभीषणस्यभार्यासाहस्तसंज्ञयाहोमस्थानमसूचयत्)
पुनः तदनंतर भोरभये समय सरमा नाम विभीषणकी स्त्री सोहाथेकी संज्ञाकरि गुप्तजो होमको-
स्थान ताहि सूचितसकरिदिया भाव इस भूमिकाकेनीचेहै १८ (अंगदःपादघट्टनैःगुहापिधानपाषाणं
चूर्णयित्त्वामहासत्वःमहागुहाम्प्रविवेश) अंगद पायनकी ठोकरोंकरिकै गुहाद्वारमें सूंदाहुआ शिलाको
चूरचूरकरिद्वारखोलिकै अंगदहनूमानादि महाबलीवीरवानर बड़ेभारी गुहाकेभीतरप्रवेशकरतेभये १९॥

दृष्ट्वादशाननंतत्रमीलिताक्षंदृढासनम् ॥ ततोऽंगदाज्ञयासर्वे वानराविविशुद्धं
म् २० तत्रकोलाहलंचक्रुस्ताडयंतश्चसेवकान् ॥ संभारांश्चक्षिपुस्तत्रहोमकुंडे
समंततः २१ श्रुत्वाचिच्छिद्यहस्ताच्चरावणस्यबलाद्रुषा ॥ तेनैवसंजघानाशुहनूमा
नप्लवगाग्रणीः २२ प्रतिदंतैश्चकाष्ठैश्चवानरास्तमितस्ततः ॥ नजहौरावणोध्या
नंहतोपिविजिगीषया २३ प्रविश्यंतःपुरेवेस्मन्यंगदोवेगवत्तरः ॥ समानयत्केश
बंधधृत्वामंदोदरीशुभाम् २४ रावणस्यैवपुरतोविलपंतीमनाथवत् ॥ विददारांग
दस्तस्याःकंचुकंरत्नभूषितम् २५ मुक्ताःविमुक्ताःपतिताः समंताद्ब्रह्मसंचयैः ॥ श्रो
णिसूत्रंनिपतितंत्रुटितंरत्नचित्रितम् २६ ॥

(तत्रमीलिताक्षंदृढासनंदशाननंददृष्टाततःअंगदाज्ञयादुतमसर्वेवानराःविवशुः) तहां नेत्रमूँदे
दृढ़ आसनपर बैठाहुवा रावणको देखि तदनंतर अंगदकी आज्ञाकरिकै शीघ्रहीं सब वानरहोमस्थलमें
प्रवेशकरिगये २० (तत्रकोलाहलंचक्रुःचसेवकान्ताडयंतःतत्रसमंततःसंभारान्होमकुंडेचिक्षिपुः)

तहांवानर कोलाहल भारी शब्दकरकै रावणके सेवकनको मारनेलगे तहां सबदिशोंते होमकी साम
ग्रीको लैकरि होमकुंड में फेंकिदेतेभये २१ (छवंगायणीःहनूमान्रुपावलात्तरावणस्यहस्तात्श्रुवंभा
च्छिद्यतेनएवआशुजघान) वानरोंमें अग्रणी मुख्य हनूमान् क्रोधकरि वरवश बलते रावण के हाथते
श्रुवाछीनिकै ताहीं करिकै शीघ्रही रावणके मारतेभये २२ (ततःइतःवानराःदंतैःचकाष्ठैःचतंधनन्ति
हतःअपिरावणःविजिगीषयाध्यानंनजहौ)तब इयरउधरते वानर दातोंकरिकै पुनः काष्ठोंकरिकै तिस
रावणको ताड़न करतेहैं इतिताड़न कियाभी रावण विजयकी इच्छा करिकै ध्यानको न त्यागा २३
(वेगवत्तरःभंगदःभंतःपुरेवेस्मनिप्रविश्यशुभांमंदोदरीकेशबंधेधृत्वासमानयत) वेगतायुक्त भंगद राज-
मंदिर रनवास में प्रवेशकरि मंगलरूप मंदोदरीके वारोंको जूरापकारे खेंचिलाये २४ (अनाथवत्
विलपंतीरावणस्यएवपुरतःतस्या कंचुकंरत्नभूषितंभंगदःविददार) अनाथकी नाई रोवतीहुई रावण
केभी आगे ताकी कंचुकी रत्नजड़ितताको भंगद फारिडारे २५ (पुनःरत्नसंचयैःसमंतात्विमुक्तः
मुक्तःपतितःरत्नचित्रितंश्रीमूत्रंनुटितंनिपतितं) मुक्तादिरत्न समूहकरिकै जटित जो कंचुकी सो
फाटेते सब ओरनते टूटिटूटिसुकागिरतेहैं पुनःरत्नजटित जोकटिसूत्ररहै सोभी टूटिकैगिरिपरी २६ ॥

कटिप्रदेशाद्विस्तरस्तानीवीतरस्यैवपश्यतः ॥ भूषणानिचसर्वाणिपतितानिसमंत
तः २७ देवगंधर्वकन्याश्चनीताहृष्टैःछवंगमैः ॥ मंदोदरीरुरोदाथरावणस्याग्रतो
भृशम् २८ क्रोशंतीकरुणंदीनांजगाददशकंधरम्॥निर्लज्जौसिपरैरेवंकेशपाशेवि-
कृष्यसे २९ भार्यातवैवपुरतःकिंजुहोषिनलज्जसे ॥ हन्यतेपश्यतोयस्यभार्यापा-
पैश्चशत्रुभिः ३० मर्तव्यंतेनतत्रैवजीवितान्मरणंवरम् ॥ हामेघनादतेमाताल्कि-
श्यतेवतवानरैः ३१ त्वयिजीवतिमेदुःखमीदृशंचकथंभवेत् ॥ भार्यालज्जाचसंत्य-
क्ताभर्त्रामेजीविताशया ३२ ॥

(तस्यएवपश्यतःकटिप्रदेशात्नीवीविस्तराचसर्वाणिभूषणानिसमंततःपतितानि) तिसरावण
के भीदेखतही मंदोदरी के कटिदेश में पटदृढ हेतवंधीरही जो नीबीअर्थात् कोछी गांठिसोभी खुलि
परी और भी सर्वांगके भूषणसब छूटि सर्वत्र भूमिपै गिरिपरे २७ (चदेवगंधर्वकन्याःछवंगमैःहृष्टैःनीता
अथरावणस्यअग्रतःमंदोदरीभृशमरुरोद) पुनः और भी रावणकी रानी जोदेवनकी गन्धर्वनकी कन्या
रहीं तिनको वानरोंने खुशीते पकरिलाये मंदोदरीकीसी दशाकिये अब रावणके आगे मंदोदरीअत्यं-
त रोदनकरती भई २८ (करुणंदीनाक्रोशंतीदशकंधरंजगाद निर्लज्जःअसिएवंपरैःकेशपाशेविकृष्य
से) जासो रावण के करुणाआवै इसभांति दीन है रोवती हुई मंदोदरी रावणप्रति बोलती भई
कि तुम बड़े निर्लज्जहौ क्योंकि इसप्रकार तुम्हारे आगे शत्रुनकरिकै केशबंधगहे खेंची जातीहों २९
(भार्यातवैवपुरतःलज्जसेनकिंजुहोषिपापैःचशत्रुभिःपश्यतःयस्यभार्याहन्यते) तेरी स्त्री मैं तेरेही
आगे इसदशा को प्राप्त तूलज्जा नहींकरता क्यों होमकरता है स्त्रीघातक पापी पुनः शत्रुन करिकै
पतिके देखत जिसकी स्त्री मारीजावै ३० (तेनतत्रैवमर्तव्यंजीवितान्मरणंवरंहामेघनादतेमाता-
वतवानरैःक्षिश्यते) जिसके देखत स्त्री शत्रुकरि ताड़नकी जाय त्यहि लाज करिकैतहैं पतिको भी
मरिजाना चाहिये ऐसे जीवनते मरना उत्तम है हामेघनादतेरी माताबड़े खेंडकी बात वानरों करि-
कै क्लेशको प्राप्तहोय ३१ (त्वयिजीवतिचमेईदृशंदुःखंकथंभवेत्मेभर्त्राजीविताशयाभार्याचलज्जा

संत्यक्ता) हे मेघनाद तू जीवित होतातौ मोको इस प्रकारको दुःख कैसे होता अरु मेरापति तौ जी-
वनकी आशा करिकै स्त्री पुनः लज्जा दोऊत्याग किया तब कौन सहायक है ३२ ॥

श्रुत्वातद्देवितं राजामंदोदर्यादशाननः ॥ उत्तस्थौ खड्गमादाय त्यज देवीमिति ब्रुव-
न् ३३ जघानांगदमव्यग्रः कटिदेशे दशाननः ॥ ततोत्सृज्य ययुः सर्वे विध्वंस्य हवनं
महत ३४ रामपार्श्वमुपागम्य तस्थुः सर्वे प्रहर्षिताः ॥ रावणस्तु ततो भार्यामुवाच प-
रिसां त्वयन् ३५ देवाधीनमिदं भद्रे जीवता किन्न दृश्यते ॥ त्यज शोकं विशालाक्षि ज्ञा-
नमालं व्यनिश्चितं ३६ अज्ञानप्रभवः शोकः शोको ज्ञानविनाशकृत् ॥ अज्ञानप्रभ-
वाहं धीः शरीरादिष्वनात्मसु ३७ तन्मूलं पुत्रदारादिसंबन्धः संसृतिस्ततः ॥ हर्षशो-
कभयक्रोधलोभमोहस्पृहादयः ३८ अज्ञानप्रभवाः ह्येते जन्ममृत्युजरादयः ॥ आ-
त्मा तु केवलः शुद्धो व्यतिरिक्तो ह्यल्लेपकः ३९ ॥

(मंदोदर्यातद्देवितं श्रुत्वा राजा दशाननः खड्गं आदाय उत्तस्थौ देवीं त्यज इति ब्रुवन्) मंदोदरीको बि-
स्लाप ताको सुनिकै राजारावण तरवारिलैकै उठा अंगद प्रति बोला कि देवी जो मंदोदरी ताको छोड़
में आता हौं ऐसा कहत संते ३३ (अव्यग्रः दशाननः कटिदेशे अंगदं जघान ततोत्सृज्य महत् हवनं विध्वं-
स्य सर्वे ययुः) सावधान हवै रावण कमरपै अंगदके तरवारि मारता भया तब स्त्रियोंको छांडि महाभा-
री हवनको विध्वंसि सब वानर जाते भये ३४ (रामपार्श्वमुपागम्य सर्वे प्रहर्षिता तस्थुः ततः रावणस्तु प-
रिसां त्वयन् भार्या उवाच) रघुनाथ जीके समीप जाय सब वानर आनंद सहित बैठे तदनन्तर रावण
पुनः वित्त सावधान करत संते अपनी स्त्री प्रति बोलता भया ३५ (भद्रे इदं देवाधीनं जीवता किन्न दृ-
श्यते विशालाक्षि निश्चितं ज्ञानं अलं व्यशोकं त्यज) मंदोदरी प्रति रावण बोला हे कल्याणरूपे यह
संसार दैवके आधीन है ताकी वश जीवते पुरुष करि क्या नहीं देखा जाता है भाव दुःख सुख अवश्य ही
देखना परता है ताते हे विशालाक्षि निश्चय ज्ञान की आधार शोक त्याग करौ ३६ (शोकः अज्ञान
प्रभवः शोकः ज्ञानविनाशकृत् शरीरादिपुत्रनात्मसु अज्ञानप्रहं धीप्रभवः) शोक अज्ञानसे उत्पन्न होता
है शोक ज्ञान को नाश करि देता है अरु शरीरादि जो अनात्म भूठे पदार्थ हैं तिन में अज्ञानही से
अहं बुद्धि उत्पन्न होती है यथा मैं ब्राह्मण हौं ३७ (तन्मूलं पुत्रदारादिसंबन्धः ततः संसृतिः) सो अहं
बुद्धिः मूल है जामें ऐसा पुत्र स्त्री आदिसंबन्ध सत्यमानना तदनन्तर संसार सम्बन्धन हेतुक पाप
पुण्य कर्म होते हैं पुनः हर्ष शोक भय क्रोध लोभ मोह (स्पृहादयः) इच्छा आदिक ३८ (जन्ममृ-
त्युजरादयः एते हि अज्ञानप्रभवाः तु आत्मा केवलः शुद्धः व्यतिरिक्तः हि अल्लेपकः) जन्म मरण वृद्धावस्था
दि एते निश्चय करिकै अज्ञानते उत्पन्न होते हैं पुनः आत्मा तौ केवल शुद्ध है सब विकारों ते बिलग
निश्चय करि अल्लेपक जिसमें कोई विकार छुड़ नहीं जाता है ३९ ॥

आनंदरूपो ज्ञानात्मा सर्वभावविवर्जितः ॥ न संयोगो वियोगो वा विद्यते केनचित्स-
तः ४० एवं ज्ञात्वा स्वमात्मानं त्यज शोकमनिन्दते ॥ इदानीमेव गच्छामि हत्वारामं
सलक्ष्मणम् ४१ आगमिष्यामि नो चेन्मां दारयिष्यति शायकैः ॥ श्रीरामो वज्रक-
ल्पैश्च ततो गच्छामि तत्पदम् ४२ तदा त्वयामेकर्तव्या क्रियामच्छासनात् प्रिये ॥ सी-
तां हत्वा मया सार्द्धं त्वं प्रवेक्ष्यसि पावकम् ४३ एवं श्रुत्वा वचस्तस्य रावणस्यातिदुःखि

ता ॥ उवाचनाथमेवाक्यं शृणु सत्यं तथा कुरु ४४ शक्यो न राघवो जेतुं त्वया चान्यैः
कदाचन ॥ रामो देववरः साक्षात् प्रधानपुरुषेश्वरः ४५ ॥

(सतः केनचित् वियोगः वा संयोगः न विद्यते सर्वभावविवर्जितः ज्ञानात्मा आनन्दरूपः) सत् रूप आत्मा को किसीसे वियोग अथवा संयोग नहीं है क्योंकि शत्रु मित्र हर्ष शोकादि सबभाव रहित केवल ज्ञानस्वरूप अखण्ड सदा आनन्दरूप है ४० (एवं स्वात्मानं ज्ञात्वा अनिन्दितेशो कं त्यज इदानीं एव गच्छामि रामं स लक्ष्मणं हत्वा) इस प्रकार आनन्दरूप अपने आत्मा को जानिके हे अनिन्दिते निन्दारहिते मन्दोदरी शोक को त्याग करौ अभी मैं रणभूमि को जाता हूँ राम को सहित लक्ष्मण के मारिके ४१ (आगमिष्यामिनो चेत् वज्रकल्पै शयकैः श्रीरामः मां दारयिष्यति ततः तत्पदं च गच्छामि) कितौ राम लक्ष्मण को मारिके लौटि आवहुँ गो नहीं तौ वज्रके तुल्य बाणों करिके श्रीराम मोको विदारण करहिंगे तदनन्तर तिन राम ही के परमपद को पुनः जाय प्राप्त होहुँ गो ४२ (तदा प्रिये मत्सासनात् मे क्रिया त्वया कर्तव्या सीतां हत्वा मया सार्द्धं त्वं पावकं प्रवेक्ष्यसि) जब राम मोको मारें तब हे प्रिये मेरी आज्ञाते मेरी पारलौकिक क्रिया तुम करिके करना योग्य है तब सीता को मारिके मेरे साथ तुम चिता अग्नि में प्रवेश किहेउ ४३ (एवं तस्य रावणस्य वचः श्रुत्वा अतिदुःखिता उवाचनाथमेवाक्यं सत्यं शृणु तथा कुरु) इस प्रकार तिस रावण के बचन सुनिके मन्दोदरी अत्यन्त दुःखित ह्वैके बोलती भई हेनाथ मेरे बचन सत्य हैं तिनहिं सुनौ भरु जैसे मैं कहौ तैसे ही करौ ४४ (त्वया च अन्यैः कदाचन राघवः जेतुं शक्यः न देववरः रामः साक्षात् प्रधान पुरुषेश्वरः) तुम करिके अथवा और न करिके कभी राघव जीतबेको शक्य नहीं हैं अर्थात् कोऊ कभी न जीतिसकी काहेते देवतों में श्रेष्ठ राम साक्षात् प्रकृति पुरुष के ईश्वर भाव सबके प्रेरक हैं ४५ ॥

मत्स्यो भूत्वा पुरा कल्पे मनुर्वैवस्वतं प्रभुः ॥ रक्षसकलापद्भ्यां राघवो भक्तवत्सलः ४६
रामः कूर्मो भवत्पूर्व लक्ष्यो जनविस्तृतः ॥ समुद्रमथने पृष्ठे दधारकनकाचलः ४७
हिरण्याक्षो तिदुर्वृत्तो हतोऽनेन महात्मना ॥ क्रोडरूपेण वपुषा क्षोणीमुद्धरता क्वचित् ४८
त्रिलोककण्ठकंदैत्यं हिरण्यकशिपुं पुरा ॥ हतवान् नारसिंहेन वपुषा रघुनन्दनः ४९
विक्रमैस्त्रिभिरेवासौ बलिं बध्वा जगत्त्रयम् ॥ आक्रम्यादात्सुरेन्द्राय भृत्या य रघुसत्तमः ५०
राक्षसाक्षत्रियाकारा जाता भूमेर्भरावहाः ॥ तान् हत्वा बहुशो रामो भुवंजित्वा ह्यदान्मुने ५१ ॥

(पुरा कल्पे भक्तवत्सलः राघवः प्रभुः मत्स्यः भूत्वा वैवस्वतं मनुं स कलापद्भ्यां रक्ष) पूर्व कल्प में भक्तनपर प्रीतिकरनेवाले राघव प्रभु मत्स्यरूप का धारण करि वैवस्वत मनु को प्रलयकालादि सब आपदों से रक्षा करते भये ४६ (रामः पूर्व लक्ष्यो जनविस्तृतः कूर्मः अभवत् समुद्रमथने कनकाचलं पृष्ठे दधार) इनहीं राम पूर्व अर्थात् सतयुग में लक्ष्यो जनविस्तार है जाको ऐसा कक्षपरूप द्वैके समुद्रमथन समय में कनकाचल अर्थात् मन्दराचल मथाना को अपनी पृष्ठि पर धारण करते भये ४७ (अनेन महात्मना क्वचित् क्रोडरूपेण वपुषा क्षोणीमुद्धरता दुर्वृतः हिरण्याक्षः हतः) इसी राम महात्माने किसी समय में बाराहरूप करिके शरीर धारण करि पृथिवी को उद्धरकरता भया तब दुर्वृत अर्थात् दुष्ट आचाररत हिरण्याक्ष दैत्य को मारा ४८ (पुरा रघुनन्दनः नारसिंहेन वपुषा त्रिलोककण्ठकंदैत्यं हिरण्यकशिपुं हतवान्) पूर्वकाल सतयुग में रघुनन्दन नारसिंह शरीर धारण करिके भक्तप्रह्लाद के रक्षा हेत जो

तीनिहूँ लोकनको कंटक दुखददैत्य जो हिरण्यकशिपु ताहिमारतेभये ४६ (असौरघुसत्तमःविक्रमैः
त्रिभिःएवबलिवध्वाजगत्त्रयंआक्रम्यभृत्यायसुरेन्द्रायअदात्) इनहीं रघुवंशनाथ बामनरूपधरिकै
तीनिपग भूमिमांगि बलिकोवाँधि तीनिहूँ लोकनकोआक्रम्य अर्थात् तीनिपदकरिकै नापिलिये सो
अपने सेवक इन्द्रके अर्थ देतेभये ५० (क्षत्रियाकाराराक्षसाःभूमेः भरावहाःजातातान्बहुंशःरामः
हत्वाजित्वाभुवंहिमुनेअदात्) सहस्रबाहु आदि क्षत्रियाकाराराक्षस भूमिकोभाररूप उत्पन्नभये तिन
बहुतनको परशुरामरूपहै राममारिकै जतिहुई भूमिको कश्यपमुनिके अर्थदेतेभये ५१ ॥

सएवसांप्रतंजातोरघुवंशेपरात्परः ॥ भवदर्थैरघुश्रेष्ठोमानुषत्वमुपागतः ५२
तस्यभार्याकिमर्थंवाहतासीतावनाद्वलात् ॥ ममपुत्रविनाशार्थंस्वस्यापिनिधना
यच ५३ इतःपरंवावैदेहींप्रेषयस्वरघूत्तमे ॥ विभीषणायराज्यंतुदत्त्वागच्छामहेवन
म् ५४ मंदोदरीवचःश्रुत्वारावणोवाक्यमब्रवीत् ॥ कथंभद्रेरणेपुत्रान्भ्रातृनृराक्ष
समंडलम् ॥ घातयित्वाराघवेणजीवामिवनगोचरः ५५ रामेणसहयोत्स्यामिरा
मबाणैःसुशीघ्रगैः ॥ विदार्यमाणोयास्यामितद्विष्णोःपरमंपदम् ५६ जानामिराघ
वंविष्णुंलक्ष्मींजानामिजानकीम्॥ज्ञात्वैवजानकीसीतामयानीतावनाद्वलात्५७

(सएवपरात्परःरघुश्रेष्ठःभवत्अर्थेसांप्रतंरघुवंशेजातःमानुषत्वंउपागतः)सोई निश्चय करि परात्पर
रघुनाथजी तुम्हारे वध अर्थ या समय में रघुवंशमें उत्पन्न हैं मानुष भावको प्राप्तभये हैं ५२ (त
स्यभार्यासीतावनाद्वलात्किमर्थंवाहताममपुत्रविनाशायचस्वस्यापिनिधनाय) तिन रघुनन्दनकी
भार्या सीतासो वनते बरबस तुम किस अर्थ हरिलायो परन्तु यह सूचित होताहै कि मेरे पुत्रन के
नाशहेत पुनः अपनी मृत्युके अर्थ सीता हरिलाये ५३ (इतःपरंवावैदेहींरघूनमेप्रेषयस्वरघूत्तमे
विभीषणायदत्त्वावनंगच्छामहे) इसके उपरान्त अब जानकी जीको तौ रघुनाथजीके समीप पठायदे-
वो पुनः राज्य विभीषण के अर्थ दैकें हरिभजन करनेहेत वनको हमतुम चलें ५४ (मंदोदरीवचः
श्रुत्वारावणः वाक्यमब्रवीत्भद्रेरणेपुत्रान्भ्रातृनृराक्षसमंडलंराघवेणघातयित्वाकथंवनगोचरः जीवा
मि) मंदोदरी के वचन सुनिकै रावण वचन बोलताभया हेकल्याणरूपे रणमें पुत्रन को भाइनको
समयराक्षसोंको राम करिकै नाशकराय अब कैसे वनमें जाय मै अपना जीवनकरौ ताते ५५ (रा
मेणसहयोत्स्यामिशिघ्रगैःरामबाणैःविदार्यमाणःतद्विष्णोःपरमंपदम्यास्यामि) रामके साथ युद्धही
करिहौं अरु शीघ्र चलने वाले रामके बाणों करिकै विदीर्ण हूँकै सोई जो विष्णुको परमपदहै ताको
प्राप्तहोउँगो ५६ (राघवंविष्णुंजानामिजानकींलक्ष्मीं जानामिज्ञात्वाएवजानकीसीतावनाद्वलात्
मयानीता) राघवको विष्णुजानताहौं जानकीको लक्ष्मी जानताहौं इत्यादि जानिकै भी जनरुप-
त्रीसीतासो वनते बरबस आनि यहां प्राप्तकरौ ५७ ॥

रामेणनिधनंप्राप्ययास्यामीतिपरंपदम् ॥ विमुच्यत्वांतुसंसाराद्दमिष्यामिसहप्रि
ये ५८ परानंदमयीशुद्धासेव्यतेयामुमुक्षुभिः ॥ तांगतितुगमिष्यामिहनोरामेण
संयुगे ५९ प्रक्षाल्यकल्मषाणीहमुक्तियास्यामिदुर्लभाम् ६० क्लेशादिपंचकतरंग

युगभ्रमाढ्यं दारात्मजासधनबंधुभूषाभियुक्तम् ॥ श्रीर्वानलाभनिजरोषमनंगजालं
संसारसागरमतीत्यहरिं ब्रजामि ६१ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकाण्डे दशमः सर्गः १० ॥

(रामेण निधनं प्राप्य इति परंपदं यास्यामि प्रिये त्वां विमुच्यतु संसारात् सहगमिष्यामि) राम करिकै मृत्युको प्राप्त हैं इस प्रकार परंपदको जाउँगो हे प्रिये तुमको त्यागि पुनः संसारबंधनते छूटि अपने परिवार सहित परमपदको जाउँगो ५८ (परानन्दमयी शुद्धायामुमुक्षुभिः सेव्यते तां गतिं तु गमिष्यामि रामेण संयुगे हतः) परमभानंदमयी अर्थात् जहां दुःख नहीं है शुद्धा जहां रजतमादि नहीं हैं जो मुमुक्षुन करिकै सेवित अर्थात् जिनको मुक्ति की कांक्षा है ते उपासना करिकै प्राप्त होते हैं तिस गति को पुनः प्राप्त होउँगो जो राम करिकै संग्राम में मारा जाउँगो ५९ (इह कल्मषाणि प्रक्षाल्य दुर्लभां मुक्तिं यास्यामि) इस राक्षसी तनको किये हुये जो समूह पाप हैं तिनहिं प्रक्षाल्य अर्थात् राम रूप देखत ही राम के हाथों मृत्यु राम नाम स्मरण इति अमल जल में उन पापों को धोय दुर्लभ जो मुक्ति ताको प्राप्त होउँगो ६० अब संसारसागरको रूप कहत यथा (क्लेशादिपंचकतरंग) पांच प्रकारके क्लेश यथा योगशास्त्रे ॥ अविद्यास्मितारागद्वेषाभिनिवेशाः पंचक्लेशाः ॥ अर्थात् आत्मरूप भूलना अविद्या है १ देहसत्य मानना अस्मिता है २ प्रीति राग है ३ विरोध द्वेष है ४ मरण की त्रास अभिनिवेश है ५ ये पंच क्लेश जामें तरंग हैं (युगभ्रमाढ्यं) चारि उयुग घूमि घूमि आवना सोई भ्रमरशोभित है जामें (दारात्मजा सधनबंधुभूषाभियुक्तम्) स्त्री पुत्र धन बंधु इत्यादि प्राप्त होना सोई भूषादिजलजंतु युक्त हैं (निजरोषं श्रीर्वानलाभ) अपना क्रोध सोई बाढ़ वगनल तुल्य है (मनंगजालम्) कामदेव जाल हैं जामें (संसारसागरं मतीत्य हरिं ब्रजामि) ऐसा संसाररूप सागरको उलंघ्य मैं हरि रामको प्राप्त होउँगो ६१ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणे युद्धकाण्डे दशमः प्रकाशः १० ॥

इत्युक्त्वा वचनं प्रेम्णाराज्ञीमंदोदरी तदा ॥ रावणः प्रययौ योद्धुं रामेण सह संयुगे १
दृढं स्यंदनमास्थाय ततो घोरैर्निशाचरैः ॥ चक्रैः षोडशभिर्युक्तं सवर्धुसंकूबरम् २
पिशाचवदनैर्घोरैः खरैर्युक्तं भयावहम् ॥ सर्वास्त्रशस्त्रसहितं सर्वोपस्करसंयुतम् ३
निश्चक्रामाथ सहसारावणो भीषणाकृतिः ॥ आयातं रावणं दृष्ट्वा भीषणं रणकर्कशम् ४
संत्रस्ता भूतदा सेनावानरी रामपालिता ॥ हनूमानथ चोत्प्लुत्य रावणं योद्धुमाययौ ५
आगत्य हनुमान् रक्षोवक्षस्य तुलविक्रमः ॥ मुष्टिबंधं दृढं बध्वा ताडयामास वेगतः ६

सवैया ॥ दशकं ठरथीरण राघवहेत सुरेंद्रतहीं रथ आपदयो । रणघोरमंचो शिररावणके प्रभुकाटतहीं
जमिजातनयो ॥ सुखिनाभि सुधाहिय बाणलगे मरिहै खलभाषि विभीषणयो । शरघोरतजे उरबेधि
गिरोवहजू भूतही प्रभुलीनभयो ॥ (राज्ञीमन्दोदरीं प्रेम्णावचनं इति उक्त्वा तदा रावणः संयुगे रामेण सह
योद्धुं प्रययौ) शिवजी बोले हे गिरिजाराजी मंदोदरी प्रति प्रेम से बचन इस पूर्वोक्त प्रकार कहिकै तब

रावण संग्राम में रघुनन्दनके साथ युद्धकरिवे हेतु जाता भया १ (सबरूपसंकुवरंपोडशभिःचक्रैःयुक्तं दृढंस्वयं दनं आस्थायघोरैःनिशाचरैःवृतः) लोह मय पंजर बाह्य देशमें सहित दोऊ बकौवैं सहित सौरह पहियोंकरिकै युक्त ऐसे पुष्टरथपर सवार भयंकर राक्षसोंकरिकै युक्त २ (घोरैःपिशाचवदनैःखरैःयुक्तं भयावहसर्वशस्त्रास्त्रसहितैःसर्वोपस्करसंयुतम्) भयंकर पिशाचों कैसो मुख जिनके ऐसे गर्धभोंकरि कै जुताहुआ महाभयंकर सर्व अस्त्र वाणादि शस्त्र तरवारि आदि सहित युद्धकी सब सामग्री सहित ३ (भीषणाकृतिःरावणःअथतहसानिदचक्रामरणकर्कशंभीषणंरावणंआयातंदृष्ट्वा) भयंकररूपजाको ऐसा रावण अब सहसानगरते निसरिचला अब युद्धमें कठोर देखत में भयंकर रावणको भावतेदे-
खिकै ४ (तदारामपालितावानरीसेनासंत्रस्ताभूत्अथहनूप्रान्उत्प्लुत्यचरावणंयोद्धुंआययौ) ता समय में राम करिकै रक्षित जो वानरों की सेना सो डराय उठती भई अब हनुमान् कूदिकै पुनः रावण प्रति युद्ध करने को जाने भये ५ (अतुलविक्रमःहनुमान्प्रागत्य मुष्टिवंधंदृढंघवारक्षोवक्षसि वेगतःताडयामास) अतुल है पराक्रम जिनमें ऐसे हनुमान् संमुख जाय अपनी मूठी को पुष्ट बांधि राक्षस रावण की छाती में बड़े वेगते मारते भये ६ ॥

तेनमुष्टिप्रहारेणजानुभ्यामपतद्रथे ७ मूर्च्छितोथमुहूर्तेनरावणःपुनरुत्थितः ॥ उ
वाचचहनूमंतंशूरोसिममसंमतःहनुमानाहतंधिङ्मांयस्त्वंजीवसिरावण॥ त्वंता
वन्मुष्टिनावभ्रोममताडयरावण ८ पश्चान्मयाहतःप्राणान्मोक्षसेनात्रसंशयः ॥ त
थेतिमुष्टिनावभ्रोरावणेनापिताडितः १० विघूर्णमाननयनःकिंचित्कश्मलमाय
यौ ॥ संज्ञामवाप्यकपिराट्प्रावणंहंतुमुद्यतः ११ ततोऽन्यत्रगतोभीत्यारावणोराक्ष
साधिपः ॥ हनुमानंगदश्चैवनीलस्तथैवच १२ चत्वारःसमवेताराक्षसपुंगवान् ॥ अग्निवर्णंतथासर्परोमाणखड्गरोमकम् १३ ॥

(तेनमुष्टि प्रहारेण जानुभ्यांरथे अपतत्) तिसहनुमान्की मुष्टिका प्रहारकरिकै मूर्च्छितहै रावण
टिहुनिन करिकै टेकि रथमें गिरिपरा ७ (मुहूर्तेनमूर्च्छितः अथ रावणःपुनःउत्थितः चहनूमंतंउवाच
ममसंमतः शूरोसि) दोदंडभरि मूर्च्छितपरारहा अबरावणपुनः उठिकै भरुहनुमान्प्रतिबोलताभया
किहेहनुमान्मेरे मतसे तुमशूरहौ ८ (तंहनुमान् आह रावणयः त्वंजीवसि मांयस्त्वं रावण तावत्त्वं
ममवक्षः मुष्टिनाताडय) ताप्रतिहनुमान्बोले हे रावण मेरे प्रहारते जो तू जीवत रहिगया तौमोको
धिकारहै हेरावण अबप्रथम तूमेरी छातीपर मुष्टिका करिकै ताड़नकरु ९ (पश्चात् मयाहतः प्राणान्
मोक्षसे अत्रसंशयः न तथा इति रावणः अपिमुष्टिना वक्षःताडितः) पीछेमेरे प्रहारकरिकैमराहुआप्राण
त्यागकरैगा यामें संशय नहीं बहुत भली ऐसा कहि रावणभी मुष्टिका करिकै हनुमान्की छातीमेंताड़-
न किया १० (नयनःविघूर्णमानकिंचित्कश्मलं आययौकपिराट्प्रावणंहंतुमुद्यतः)
रावण की मुष्टिका लागते हनुमान्के नेत्र धूमिगये कछु मूर्च्छाभी आगया पुनः हनुमान् चैतन्यता को
प्राप्त है रावणको मारने पर उद्यत भये ११ (ततःराक्षसाधिपःरावणःभीत्याअन्यत्रगतःहनुमान्चए
चभंगदःचनलःतथाएवनीलः) हनुमान् को मारि तदनंतर राक्षसोंको राजा रावण हनुमान्की भय
करिकै अनत चलागया तब हनुमान् पुनःभंगद भरुनल तैसेनील १२ (चत्वारःसमवेताराक्षसपुंगवान्
अग्नेदृष्ट्वा) हनुमानादि चारों युद्धकला बराबरि जाननेवाले ते चारि उत्तम राक्षसोंको आगे

देखते भये कौन कौन (अग्निवर्णतथासर्परोमाणंखड्गरोमकम्) अग्निवर्ण सर्प रोम खड्गरोम
तीनि ये पुनः १३ ॥

तथावृश्चिकरोमाणंनिर्जघ्नुःक्रमशोसुरान् ॥ चत्वारःचतुरोहत्वारक्षसान्भीमवि
क्रमान् १४ सिंहनादं पृथक्त्वारामपार्श्वमुपागताः ॥ ततःक्रुद्धोदशग्रीवःसंदश्यद
शनच्छदम् १५ निवृत्त्यनयनेक्रूरोराममेवान्वधावत् ॥ दशग्रीवोरथस्थस्तुरामंवज्रो
पमैःशरैः १६ आजघानमहाघोरैर्धाराभिरिवतोयदः ॥ रामस्यपुरतःसर्वान्वानरा
नपिविव्यथे १७ ततःपावकसंकाशैःशरैःकांचनभूषणैः ॥ अभ्यवर्षद्रणोरामोदश
ग्रीवंसमाहितः १८ रथस्थंरावणंहृष्टाभूमिस्थंरघुनन्दनम् ॥ आहूयमातलिंशक्रो
वचनंचेदमब्रवीत् १९ ॥

(तथावृश्चिकरोमाणंअसुरान्चत्वारः चतुरःक्रमशःनिर्जघ्नुःभीमविक्रमान्राक्षसान्हत्वा) तैसे
वृश्चिकरोम इनचारिहु असुरन को हनूमानादि चारिहु चतुर वरिक्रमसे एक एक को मारे यथा
हनूमान् अग्नि वर्ण को मारे अंगद सर्परोम को मारे नलखड्गरोम को मारे नील वृश्चिकरोम को
को मारे इतिभयंकर पराक्रमी राक्षसों को मारे १४ (पृथक्सिंहनादंरुत्वारामपार्श्वमुपागतः ततः
दशग्रीवःक्रुद्धःशनच्छदम्संदश्य) हनूमानादि चारौवानरविलगविलग सिंहवत् नादकरिकै रघुनंदन
के पासको जातेभये तदनंतर रावण क्रोधकरि दांतोंसे भोष्टोंको काटता हुआ १५ (नयनेनिवृत्त्यक्रूरः
रामंएवअन्वधावत्स्थःदशग्रीवःवज्रोपमैःशरैः) नेत्रों को खोली दृष्टि फैलाय सर्वत्र निहारि क्रूर
रावण रघुनंदन को देखि संमुखे धावताभया रथपर आरुढ़ दशग्रीव वज्रके तुल्य बाणों करिकै
(तुरामं १६ आजघानमहाघोरैःधाराभिः तोयदःइवरामस्यपुरतःवानरान्सर्वान्अपिविव्यथे) पुनः
रघुनंदन पै कैसे बाणों को प्रहार करने लगायथा महाभयंकर जल धारों करिकै मेघकी समान अरु
रघुनंदन के आगे खड़े जे वानर रहे तिन सबनको भीताडन करि व्यथित करिदेता भया १७ (ततः
पावकसंकाशैःकांचनभूषणैःशरैःरामःरणेदशग्रीवंसमततःअभ्यवर्षत्) तदनंतर अग्नि तुल्य ज्वलित
प्रकाशहै जिनकासोने करिकै भूषित ऐसे बाणों करिकै रघुनंदन रणमें रावण पर सर्वथा वर्षते भये
१८ (रथस्थंरावणंभूमिस्थंरघुनंदनं हृष्ट्वाशक्रःमातलिंआहूयचइदं वचनंमब्रवीत्) रथपर स्थित
रावण को अरु भूमिपर स्थित रघुनंदन को देखि इंद्रअपने सारथी मातलिको बुलाय पुनः इसप्रकार
को वचनबोलते भये हे मातलि १९ ॥

रथेनममभूमिष्टंशीघ्रंजाहिरघत्तुमम् ॥ त्वरितंभूतलंगत्वाकुरुकार्यममानघ २०
एवमुक्तोत्तनत्वासातलिर्देवसारथिः॥ततोहयैश्चसंयोज्यहरितैःस्यंदनोत्तमम् २१
स्वर्गाज्जयार्थंरामस्यह्युपचक्राममातलिः ॥ अत्रवीञ्चततोराममप्रतर्क्यरथेस्थि
तः ॥ प्रांजलिर्देवराजेनप्रेषितोस्मिरघूत्तम २२ रथोयंदेवराजस्यविजयायतवप्र
भो ॥ प्रेषितश्चमहाराजधनुरैर्द्रुचभूषितम् २३ अभेद्यंकवचंखड्गंदिव्यतूणीयु
गंतथा ॥ आरुह्यचरथंरामरावणंजहिराक्षसम् २४ मयासारथिनादेववृत्रंदेवप
तिर्यथा ॥ इत्युक्तस्तंपरिक्रम्यनमस्कृत्यरथोत्तमम् २५ ॥

(अनघममरथेनभूमिष्टंरघूत्तममृशीघ्रंयाहि भूतलंगत्वस्तिंगत्वासमकार्यंकुरु) हे निःपाप मेरे रथ

करिकै सहित भूमिपर स्थितजो रघुनाथ जी तिनके समीप को शीघ्रही जाउ-भूतलको तुरतही जाय
कै रथस्थ रामकरि रावण वध इतिमेरा कार्यकरौ २० (एवंउक्तःअथदेवसारथिःमातलितिनं तन्त्वाततः
हरितैःहयैःचस्यंदनोत्तमंसंयोज्य) इसप्रकार इन्द्र ने कहा तब इन्द्रको सारथी मातलितिन इन्द्रको
प्रणामकरि सब्जे घोड़ों करिकै रथउत्तम नहिकै चलताभया २१ (रामस्यहिजयार्थमातलितिःस्वर्गात्
उपचक्रामअप्रतर्क्यरथोस्थितःचततःप्रांजलिःरामंअब्रवीत्तुरधूतम देवराजेनप्रेषितोस्मि) रामकेनिश्चय
विजयकेअर्थमातलि स्वर्गते उतरि रघुनंदनके समीपप्राप्तभया जो किसीके देखनेको प्राप्त नहीं ऐसे
दिव्यरथपर स्थितपुनः तबमातलि प्रभुके सम्मुख हाथजोरि रघुनंदन प्रति बोला हे राघवेन्द्र इन्द्रने
मोको पठावाहै २२ (प्रभोतवविजयायप्रेषितःअयंदेवराजस्यरथःचमहाराजभूषितंऐंद्रचधनुः) हेप्रभो
आपके विजयके अर्थ पठावा हुआ यह इन्द्रको रथहै पुनः हे महाराज भूषित सजाहुआ यह इन्द्रको
धनुष है २३ (अभेद्यंकवचंदिव्यखड्गंतथातूणीयुगंरामरथंभारुह्यचराक्षसंरावणंजहि) जो किसी अस्त्र
करिकै न कटिसकै ऐसी बख्तर दिव्यतरवारि तैसेहीअक्षय दोतरकसहैं हेरघुनंदन इसरथपर सवार
हैंकै पुनः राक्षस रावणको मारिये २४ (देवमयासारथिनायथादेवपतिः वृत्रंइतिउक्तःतंरथोत्तमंपरि
क्रम्यनमस्कृत्य) हेदेव में जोसारथीहोताकी सहाय करिकै जैसे इन्द्रवृत्रासुरकोमारे तैसेहीतुम रावण
को मारोऐसा मातलिने कहा तब प्रभुतिस उत्तम रथको परिक्रमाकीन्है पुनः नमस्कारकरिकै २५॥

आरुरोहरथंरामोलोकान्लक्ष्म्यानियोजयत् ॥ ततोभवन्महायुद्धंभैरवंरोमहर्षण
म् २६ महात्मनोराघवस्यरावणस्यचधीमतः ॥ आग्नेयेनचआग्नेयंदैवंदैवेनरा
घवः २७ अस्त्रंराक्षसराजस्यजघानपरमास्त्रवित् ॥ ततस्तुससृजेघोरंराक्षसंचास्त्रं
मस्त्रवित् २८ क्रोधेनमहताविष्टोरामस्योपरिरावणः ॥ रावणस्यधनुर्मुक्ताःसर्पाभू
त्त्वामहाविषाः ॥ शराःकांचनपुंषाभाराघवंपरितोपतन् २९ तैःशरैःसर्पवदनैर्वम
द्भिरनलंमुखैः ॥ दिशश्चविदिशश्चैवव्याप्तास्तत्रतदाभवन् ३० रामसर्पास्ततो
दृष्ट्वासमंतात्परिपूरितान् ॥ सौपर्णमस्त्रतत्घोरंपुरःप्रावर्तयद्रणे ३१ ॥

(लोकान्लक्ष्म्यानियोजयत् रामः रथंआरुरोहततः रोमहर्षणंभैरवंमहायुद्धंअभवत्) रावण पीड़ि
त लक्ष्मीहीन लोकनको लक्ष्मी करिकै युक्तकरनाहै भावशीघ्रही रावण को मारा चाहतेहैं तातेरघुनं
दनरथपरचढ़तेभये तदनंतरजाको देखिरोमखड़ेहोयें ऐसाभयंकर महायुद्ध रामरावण सोंहोताभया २६
(महात्मनः रामस्य धीमतः रावणस्य) महात्मा सत्यसंध राम को बुद्धिमान् रावणको युद्धहोतमें
(परमास्त्रवित् राघवः राक्षसराजस्य अस्त्रं आग्नेयं आग्नेयेनदैवं दैवेन जघान) बाणविद्यामें परम
प्रवीण रघुनंदन रावण के आग्नेयअस्त्र को आग्नेय अस्त्रकरिकै काटे अन्यदेवोंके अस्त्र जे रावणछाँड़े
तिनको उसीदेवास्त्रोंकरिकैकाटे २७ (ततः तुअस्त्रवित्चघोरं राक्षसं अस्त्रंससृजे) तवनंतरबाणविद्या
में प्रवीणरावण पुनः भयंकर राक्षस अस्त्रको छोड़ताभया २८ (महताक्रोधेन आविष्टा रावणःराक्षस्य
उपरि) बड़ेक्रोधकरिकै युक्तरावणरघुनंदन के ऊपर जो छाँड़ा (रावणस्यधनुः मुक्तः कांचनपुंषा
भाशराः महाविषाः सर्पाः भूत्वा राघवं परितः पतन्) रावणके धनुषते छूटेहुये सोनेकीप्रौकप्रकाश
मानबाण ते महा विषधरसर्पहैंकरि रघुनंदनके आसपास गिरनेलगे २९ (तैः शरैः सर्पवदनैः मुखै
अनलं वमद्भिः तदा तत्र दिशः च विदिशः चैव व्याप्ताः अभवन्) तेरावणके बाण सर्पाकार बदन जिनके
मुखकरिकै अग्निको उगलतेहुये तासमय में तबः सब दिशा पुनः आग्नेयादिविदिशा इत्यादि

सर्वत्र व्याप्तहोते भये भरिपूरिगये ३० (ततः समंतात्परिपूरितान् सर्पान्दृष्ट्वारामः सौपर्णी अस्त्रंघोरं तत्पुरः रणेप्रावर्तयत्) तदनंतर सर्वत्र परिपूरित सर्पोंको देखिरघुनंदन गरुड़ अस्त्रजो घोर सो रावण के आगे रणमें छोड़तेभये ३१ ॥

रामेणमुक्तास्तेबाणाभूत्वागरुडरूपिणः ॥ चिच्छिदुःसर्पबाणांस्तान्समंतात्सर्प
शत्रवः ३२ अस्त्रेप्रतिहतेयुद्धेरामेणदशकंधरः ॥ अभ्यवर्षत्ततो रामंघोराभिःशर
वृष्टिभिः ३३ ततःपुनःशरानाकैःराममक्लिष्टकारिणम् ॥ अर्हयित्वातुघोरेणमात
लिप्रत्यविध्यत् ३४ पातयित्वा रथोपस्थेरथकेतुंचकांचनम् ॥ ऐंद्रानश्वानभ्यह
नद्रावणःक्रोधमूर्च्छितः ३५ विषेदुर्देवगंधर्वाश्चारणाःपितरस्तथा ॥ आर्ताकारंह
रिंदृष्ट्वाव्यथितश्चमहर्षयः ३६ व्यथितावानरेंद्राश्चवभूवुःसविभीषणाः॥ दशास्यो
विंशतिभुजःप्रगृहीतशरासनः ३७ ॥

(रामेणमुक्तास्तेबाणाः सर्पशत्रवःगरुडरूपिणःभूत्वासर्पबाणांस्तान्समंतात्चिच्छिदुः) गरुड़मंत्र करिकै मंत्रित रघुनंदन करिकै छोड़ेगये ते सब बाण सर्पोंके शत्रुगरुड़ रूपीहैंकै सर्पबाण जो रहैं तिन सबनको सर्वत्रकाटिहारतेभये ३२ (युद्धे रामेण अस्त्रेप्रतिहते ततः दशकंधरः घोराभिः शरवृष्टिभिः रामंअभ्यवर्षत्) युद्धमें जवरघुनंदनने रावण के सर्व अस्त्रकाटिहारे तदनंतर रावण भयंकर बाणों करिकै महावृष्टिरघुनंदनपै वर्षताभया ३३ (ततः पुनः शरानाकैः अक्लिष्टकारिणं रामं अर्हयित्वातुघोरेण मातलिं प्रत्यविध्यत्) तदनंतर पुनः रावण समूहबाणों करिकै केशहरण हारे रघुनंदन कोपीड़ित करिकै पुनः भयंकर बाण करिकै प्रभुके सारथी मातलिकोबेधता भया ३४ (कांचनं रथकेतुं रथो पस्थेपातयित्वाचक्रोधमूर्च्छितः रावणः ऐंद्रान्अश्वान् अभ्यहनत्) कांचन मय रचित जो रथमें केतु रहै ताहि बाणते काटिकै रथकेभीतर गिराय देताभया पुनः क्रोधकरिकै मूर्च्छित रावण रथमें नहेहुये इंद्रके घोड़ों को बाणों करिकै ताड़ना करता भया ३५ (आर्ताकारं हरिंदृष्ट्वा महा ऋषयः व्यथिताः चदेवगंधर्वाः चारणाः तथा पितरः विषेदुः) रावणके बाणों करिकै पीड़ितकीनाई भाव अव्यथितभी व्यथितइवरघुनंदन को देखि महा ऋषिलोग शोचते व्यथितभये पुनः देवता गंधर्व चारण तैसेही पितरइत्यादि सबबड़ेविषादको प्राप्तभये भावमनते दुखितभये ३६ (सविभीषणःचवानरेंद्राः व्यथितावभूवुः दशास्यः विंशति भुजःशरासनःप्रगृहीत्) सहित विभीषणपुनः बानरोंके यूथपती भोबड़ेदुःख को प्राप्तहोते भये अबदशहैं मुखजाके बसिहैं भुजाबामदशौ हाथनमें धनुष धारणकीन्है ३७ ॥

दृष्टशेरावणस्तत्रमैनाकइवपर्वतः ॥ रामस्तुभृकुटिंबध्वाक्रोधसंरक्तलोचनः ३८
कोपंचकारसदृशनिर्दहन्निवराक्षसम् ॥ धनुरादायदेवेंद्रधनुराकारमद्भुतम् ३९
गृहीत्वापाणिनाबाणं कालानलसमप्रभम् ॥ निर्दहन्निवचक्षुर्भ्यांदृष्टशेरिपुमंति
के ४० पराक्रमंदर्शयितुंतेजसाप्रज्वलन्निव ॥ प्रचक्रमेकालरूपांसर्वलोकस्यपश्य
तः ४१ विकृष्यचापंरामस्तुरावणंप्रतिविध्यत् ॥ हर्षयन्वानरानीककालांतकइ
वाबभौ ४२ कुडंरामस्यवदनं दृष्ट्वाशत्रुंप्रधावतः ॥ तत्रसुःसर्वभूतानिचचालच
वसुंधरा ४३ ॥

(मैनाकपर्वतःइवतत्ररावणःददृशेतुरामःक्रोधसंरक्तलोचनःभृकुटिवध्वा) मैनाक पर्वत की समान भारी तन तहां पर रावण देखि परता भया पुनः रघुनंदन भी क्रोध बश अरुण हैं गये हैं नेत्रजिनके भौंहें चढायकै ३८ (राक्षसंनिर्दहन्निवसदृशंकोपंचकारदेवैर्द्रधनुःआकारंअद्भुतंधनुःआदाय) राक्षस रावण को मानौ भस्म करि देवेंगे तिस तुल्य क्रोध करते भये तब जैसा वर्षा काल में उदय होता है तिस इंद्र धनुष के आकार बनाहुवा ऐसा अद्भुत धनुष हाथमें लैकरि ३९ (कालानलसमप्रभंवाणं पाणिनागृहीत्वाचक्षुर्भ्यानिर्दहन्निवसंतिकेरिपुंददृशे) प्रलय काल की अग्नि समान प्रकाशहैं जामें ऐसे वाणको हाथ से लैकै नेत्रों करिकै भस्म करते हुयेकी समान समीपहीं शत्रु रावण को देखते भये ४० (पराक्रमंदर्शयितुंसर्वलोकस्यपश्यतःतेजसाप्रज्वलनिवकालरूपंप्रचक्रमे) रघुनंदन आपना पराक्रम देखावे हेतु सब लोकनके देखते देखते प्रभु तेज करिकै अग्नि की समान प्रकाश मानहैं काल कैसा प्रचंड स्वरूप करि युद्ध प्रारंभ करते भये ४१ (तुरामःचापंविष्णुरावणंप्रतिविध्यचवानरा नीकंहर्षयन्कालांतकइवावभौ) पुनः रघुनंदन वाण योजित धनुष को रोदाश्रवण पर्यंत खेंचिकै वाण करिकै रावण को ताड़न करिकै पुनः वानरन की सेनाको आनंद करत संते प्रभु काल मृत्युकै तुल्य करालरूप प्रकाशमान भये ४२ (शत्रुंप्रधावतोरामस्यवदनंकुद्वंद्वद्वारासर्वभूतानितत्रसुःखसुन्धराचचाल) शत्रु रावण पर धावत समय तेजवंत रघुनंदन को मुखको क्रोधयुत देखिकै सब भूत प्राणीमात्र त्रासको प्राप्त भये पुनः पृथिवी चलायमान अर्थात् हालि उठती भई ४३ ॥

रामं दृष्ट्वा महारौद्रमुत्पातांश्च सुदारुणान् ॥ त्रस्तानि सर्वभूतानि रावणं चाविशद्भयम् ४४ विमानस्थाहसुरगणाः सिद्धगंधर्वकिन्नराः ॥ ददृशुस्ते महायुद्धं लोकसंवत्कापम् ४५ ऐंद्रमस्त्रं समादाय रावणस्य शिरोच्छिनत् ॥ मूर्ध्ना नो रावणस्याथ बह्वोरुधिरोक्षिताः ॥ गगनात्प्रपतंतस्मतालादिव फलानि हि ४६ न दिवं न च वैरात्रिर्न संध्यानदिशोऽपि वा ॥ प्रकाशं तेन तद्रूपं दृश्यते तत्र संगरे ४७ ततो रामो बभूवाथ विस्मया विष्टमानसः ॥ शतमेकोत्तरं छिन्नं शिरसां चैकवर्चसाम् ४८ न चैव रावणः शान्तो दृश्यते जीवितक्षयान् ॥ ततः सर्वास्त्रविद्धीरः कौशल्यानंदवर्द्धनः ४९ ॥

(महारौद्रंरामं दृष्ट्वा सुदारुणान् उत्पातां सर्वभूतानि त्रस्तानि च रावणं भयं आविशत्) महाभयंकर तेजमान रूप रघुनंदन को देखि पुनः भूकंप उल्कापातादि बड़े भयंकर उत्पातोंको देखि सर्वभूतजीव मात्र भयभीत भये पुनः रावण के भी उरमें भय समाय गई ४४ (सिद्धगंधर्वकिन्नराःसुरगणाःविमानस्थाःतेलोकसंवर्तकोपमंमहायुद्धं ददृशुः) सिद्ध गंधर्व किन्नरादि देवता समूह अपने विमाननपर स्थित ते सब लोक प्रलयकै तुल्य महा युद्धको देखि रहे हैं ४५ (ऐंद्रमस्त्रं समादाय रावणस्य शिरः अ-च्छिनत् अथ रुधिरोक्षिताः रावणस्य मूर्ध्ना निःबहवः तालादिव फलानि ह गगनात्प्रपतंतस्म) रघुनंदन ऐंद्र मस्त्र को ग्रहण करि रावणके शिरनको काटते हैं अब रुधिर से डूबे हुये रावणके शिरकटे हुये बहुत से ताल फलकी समान आकाशते भूमि पै गिरते हैं ४६ (न दिवं न च वैरात्रिः न संध्यानदिशः अपि वा तत्र संगरे तेन प्रकाशं तद्रूपं दृश्यते) तासमय न दिन पुनः न निश्चय करिकै रात्री न संध्या न कोई दिशा इत्यादि कुछ नहीं जाना जाता है भाव अनेक दिन तक सबकाल एकैरस युद्ध होत रहा तहां संग्राममें रावणके शिर कटिकै तुरतही जमि आवते हैं त्यहि करिकै वाके तनमें प्रकाश भी एकरस देखात धूम्र नहीं होत ४७ (ततः अथ रामः विस्मया विष्टमानसः बभूव एकोत्तरं शतं शिरसां छिन्नं चैकवर्चसां) तदनं-

तर अब रघुनाथजी बड़े आश्चर्य युक्त मनमें विचारते भये कि एक अधिक सौ शिरोंको काटा तबहूँ रावणको एकैरस तेजबनाहै ४८ (रावणःएवक्षयात्जीवितचशतःनदृश्यतेततःकौशल्यानंदवर्द्धनःसर्वास्त्रविद्विरः) रावणभी मरणेते जी आवताहै भाव शीश कटिकै जमि आवते हैं पुनः इसकी धीरता वीरता भी नहीं शांत देखातीहै इति विचारि कौशल्या के आनंद बढावने वाले रघुनन्दन सर्व बाण विद्या में प्रवाण वीर ४९ ॥

अस्त्रैश्चबहुभिर्युक्तश्चित्तयामासराघवः ॥ यैर्यैर्बाणैर्हतादैत्यामहासत्वपराक्रमाः ५० तएतेनिष्फलंजातारावणस्यनिपातने ॥ इतिचिंताकुलेरामेसमीपस्थोविभीषणः ५१ उवाचराघवंवाक्यंब्रह्मदत्तवरोह्यसौ ॥ विच्छिन्नाबाहवोप्यस्यविच्छिन्नानिशिरांसिच ५२ उत्पत्स्यंतिपुनःशीघ्रमित्याहभगवानजः ॥ नाभिदेशेमृतंतस्यकुंडलाकारसंस्थितम् ५३ तच्छोषयानलास्त्रेणतस्यमृत्युस्ततोभवेत् ॥ विभीषणवचश्श्रुत्वारामःशीघ्रपराक्रमः ५४ पावकास्त्रेणसंयोज्यनाभिविव्याधरक्षसः ॥ अनंतरंचविच्छेदशिरांसिचमहाबलः ५५ ॥

(राघवःचित्तयामासबहुभिःअस्त्रैःचयुक्तयैःबाणैःमहासत्वपराक्रमाःदैत्याःहताः) रघुनाथजी मनमें चिंतापूर्वक विचारकरतेभये कि बहुते अस्त्रनकरिकै अर्थात् अस्त्र मंत्रयोजितकरिकै जिन जिन बाणों करिकै महावीर्य पराक्रमी दैत्यनको बधकिया ५० (तएतेरावणस्यनिपातनेनिष्फलंजाताइतिचिंताकुलेरामेसमीपस्थःविभीषणः) ते ए सब बाण रावणके बधकरनेमें निष्फलजातेहैं ऐसी चिंताकरिकै आकुलहोतेहुये रघुनन्दन ता समय में समीपस्थितजो विभीषण ५१ (राघवंवाक्यंउवाच असौहिब्रह्मदत्तवरःअस्यबाहवःविच्छिन्नाःअपिचशिरांसिविच्छिन्नानि) रघुनन्दनप्रति विभीषण वचनबोलते भये कि इस रावणको ब्रह्माकोदियावर है ताते इसकी बाहुइकटेभी पुनः शिरकटे ५२ (पुनःशीघ्रंउत्पत्स्यंतिइतिभगवान्भजःआह तस्यनाभिदेशेकुण्डलाकारंअमृतंसंस्थितम्) जो बाहु शिर कटेंगे तौ पुनः शीघ्रही जामिआवहिंगे ऐसा भगवान् ब्रह्माकहा है पुनः तिस रावणके नाभीबिषे जलकुंडके आकार अमृतस्थित है ५३ (अनलअस्त्रेणतत्शोषय तस्यमृत्युःभवेत् विभीषणवचःश्रुत्वाशीघ्रपराक्रमःरामः) विभीषण बोले कि हे रघुनन्दन प्रथम अग्निबाणकरिकै नाभीमें जो अमृतहै सो शोपिलीजिये तदनन्तर तिस रावणकी मृत्युहोइगी इति विभीषणके वचनसुनिकै शीघ्रही सर्व कार्यकरिवे योग्य पराक्रम है जिनके ऐसे रघुनन्दन ५४ (पावकास्त्रेणसंयोज्यरक्षसःनाभिविव्याधचअनंतरंचमहाबलःशिरांसिचविच्छेद) प्रथम अग्निअस्त्र मंत्रितकरि तिस बाणकरिकै राक्षस रावणकी नाभीको बेधनकरि अमृतशोपिलीन्है पुनःतदनन्तर महाबल रघुनन्दन रावणके शिरनकोकाटतेभये ५५ ॥

बाहूनपिचसंरब्धोरावणस्यरघूत्तमः ॥ ततोघोरांमहाशक्तिमादायदशकंधरः ५६ विभीषणवधार्थायचिक्षेपक्रोधविक्कलः ॥ चिच्छेदराघवोबाणैस्तांशितैर्हमभषितैः ५७ दशग्रीवशिरःछेदात्तदातेजोविनिर्गतम् ॥ स्नानरूपोबभूवाथद्विजैःशीर्षभयंकरैः ५८ एकेनमुख्यशिरसाबाहुभ्यांरावणोबभौ ॥ रावणस्तुपुनःक्रुद्धोनानाशस्त्रास्त्रवृष्टिभिः ५९ वर्षरामंतरामस्तथाबाणैर्वर्षच ॥ ततोयुद्धमभूत्घोरंतुमुलं

लोमहर्षणम् ६० अथसंस्मारयामासमातलीराघवंतदा ॥ विसृज्यास्त्रं वधायास्य
ब्राह्मंशीघ्रंरघूत्तमः ६१॥

(चरावणस्यबाहुनूपिरघूत्तमःसंरब्धः ततःदशकन्धरःमहाघोरांशक्तिंआदाय) पुनः रावणको
बाहुनको भी रघुनन्दन काटिडारे तदनन्तर रावण महाभयंकरशक्ति अर्थात् सांग लेताभया ५६
(क्रोधविह्वलःविभीषणवधार्थायचिच्छेपतांराघवःहेमभूपितैःशितैःवाणैःचिच्छेद) क्रोधवश विह्वलतन
सुधिविसारि रावण विभीषण के बंधकरिवे अर्थ वही करालशक्ति चलावताभया आवते देखि तिस
शक्तिको रघुनन्दन कांचनभूषित पैंनेबाणोंकरिकै काटिडारतेभये ५७ (शिरःछेदात्तदादशग्रीवःतेजः
विनिर्गतमथभयंकरोः शीर्षेदिछन्नेःम्लानरूपःबभूव) शिरकटेते ता समय रावणको तेज नाश होगया
अब भयंकर शिरोंके कटिजानेकरिकै म्लान अर्थात् कांतिहीन रूपधूमिल चेष्टाहोताभया ५८ (मु-
ख्यएकेनशिरसाबाहुभ्यांरावणः बभौतुरावणःपुनःक्रुद्धःनानाशस्त्रग्रस्त्रवृष्टिभिः) मुख्य एकही शीश
करिकै दो बाहुनकरिकै शेषरावणहोतभया तब रावण पुनः क्रोधकरि अनेक प्रकारके त्रिशूल तरवारि
आदि शस्त्र बाणशक्ति आदि अस्त्रोंकीबर्षाकरिकै ५९ (रामंववर्षचतथारामःतंवाणैःववर्षततःतुमुलं
लोमहर्षणंवेरंयुद्धंअभूत्) जैसे रावण रघुनन्दनपर बाणादि वृष्टिकरताभया पुनः तैसेही रघुनन्दन
तिस रावणपर बाणनकरिकै वर्षाकरतेभये तदनन्तर जुटिकै लोम हर्षण भयंकर युद्धहोताभया ६०
(अथतदामातलीराघवंसंस्मारयामास रघूत्तमस्यवधायाब्राह्मंअस्त्रंशीघ्रंविसृज्य) अब ता समय में
मातली रावणके मृत्युको समय रघुनन्दनको सुधिकराताभया कि हे रघुनन्दन इसरावणके बध अर्थ
ब्रह्मास्त्रको शीघ्रछाड़िये ६१ ॥

विनाशकालःप्रथितोयःसुरैःसोद्यवर्तते ॥ उत्तमांगंनचैतस्यछेत्तव्यंराघवत्वया६२
नैवशीर्ष्णिप्रभोवध्योवध्यएवहिमर्मणि ॥ ततःसंस्मारितोरामस्तेनवाक्येनमात-
लेः ६३ जग्राहंसशरंदीप्तंनिश्वसंतमिवोरगं ॥ यस्यपाश्वेर्षेतुपवनःफलेभास्कर
पावकौ ६४ शरीरमाकाशमयंगौरवेमेरुमंदरौ ॥ पर्वस्वीपिचविन्यस्तालोकपाला
महौजसा ६५ जज्वालमानंवपुषाभांतंभास्करवर्चसा ॥ तमुग्रमखलोकानांभय
नाशनमद्भुतम् ६६ अभिमन्त्र्यततोरामस्तंमहेषुमहाभुजः ॥ वेदप्रोक्तेनविधिना
संदधेकार्मुकेबली ६७ ॥

(यःविनाशकालःसुरैःप्रथितःसःअद्यवर्ततेराघवत्वयाएतस्यउत्तमांगंनछेत्तव्यं) जो रावण कोविना
श काल देवतों ने कहाहै सो या समयमें वर्तमानहै ताते हेरघुनंदन अब इसरावणको शिर न काटि
ये ६२ (प्रभोशीर्ष्णिणएववध्यःमर्मणिएवहिबध्यःमातलेःतेनवाक्येनसंस्मारितःततःरामः) हे प्रभो
शीश कटे याकी मृत्युनहीं है मर्मस्थान अर्थात् हृदय में वाणमारने ते याकी मृत्युहोइगी इतिमात-
लिके वचनों करिकै सुधिकराये हुये तदनंतर रघुनंदन ६३ (उरगंड्वनिःश्वसंतंसशरंदीप्तंजग्राह्यस्य
पाश्वेर्षेपवनःतुफलेभास्करपावकौ) सर्प की समान फुफकारता हुआसो बाण प्रज्वालित हाथ में लेते
भये जिसके चारिहु दिशिमें अर्थात् परगौरी में पवन है पुनःगांसी के दोऊ धारणमें सूर्य पुनःअग्नि
है ६४ (आकाशमयंशरीरंगौरवेमेरुमंदरौचपर्वसुअपिमहाभोजसालोकपालाःविन्यस्ताः) आकाशमय
प्रमाण रहित हिरण्यगर्भरूप जाको शरीर है पुनः जाकी गरोई में सुमेरु अरु मंदराचल हैं पुनःजा
के पोठन में महातेजवंत इंद्रादि सबलोकपाल वास किहैहैं ६५ (सूर्यवर्चसाजज्वालमानंवपुषाभांतं

लोकानां भयनाशनं तं अद्भुतं उग्रं अस्त्रं) सूर्यवत् तेज करिकै ज्वलित आपने शरीर करिकै प्रकाशमान सबलोकन की भयनाश करणहारा तिस अद्भुत उग्रतीक्ष्ण अस्त्रको ६६ (वेदप्रोक्तेन विधिना अभिमं त्र्यततः महाभुजः बलीरामः तं महाइषुं कार्मुकैः संदधे) जैसा वेदने कहा है ताही विधि करिकै मंत्रसो अभिमंत्रित करि तदनंतर महाभुजबली रघुनंदन तिस महाबाणको धनुष में संधान करते भये ६७ ॥

तस्मिन् संधीयमाने तुराघवेण शरोत्तमे ॥ सर्वभूतानि वित्रे सुश्च चालचवसुंधरा ६८
सरावणाय संक्रुद्धो भृशमानस्य कार्मुकम् ॥ चिक्षेप परमायत्तस्तमस्त्रं मर्मघातिन
म् ६९ सवज्रइव दुर्द्धर्षो वज्रपाणि विसर्जितः ॥ कृतांत इव घोरास्यो न्यपतद्रावणो र
सि ७० सनिमग्नो महाघोरः शरीरांतकरः परः ॥ विभेदहृदयं तूष्णीं रावणस्य महात्म
नः ७१ रावणस्य प्राणान् अहरत् प्राणान् विवेश धरणीतले ॥ सशरो रावणं हत्व रामतूष्णीं रमा वि
शत् ७२ तस्य हस्तात् पपाता शुसशरं कार्मुकं महत् ॥ गता सुभ्रमिवेगेण राक्षसेन्द्रोऽ
पतद्भुवि ७३ ॥

(राघवेण शरोत्तमे संधीयमाने तु तस्मिन् सर्वभूतानि वित्रे सुश्च चवसुंधरा च चाल) रघुनंदन करिकै उक्त मबाण संधान करत संते पुनः तासमय में सब प्रणीमात्र विशेषि त्रासको प्राप्त भये अर्थात् धनुष में संधानाहुआ ज्वलित बाणको देखि सब डरिउठे पुनः पृथिवी हालिउठी ६८ (सभृशं संक्रुद्धः कार्मु कं आनस्य मर्मघातिनम् परमायततः तं अस्त्रं रावणाय चिक्षेप) रघुनंदन अत्यंत क्रोध करि धनुष को खेंचि मर्मस्थान घात करनेवाला परमलंबायमान भारी तिसबाण को रावणकी मृत्यु के अर्थ छोड़ते भ- ये ६९ (वज्रपाणि विसर्जितः वज्रइव दुर्द्धर्षः कृतांत इव घोरास्यः सरावणो रसिन्यपतत्) इंद्रको छोड़ा वज्र सम अमोघ कालसम भयंकर है मुखजाको सो बाण रघुनंदनको छोड़ाहुआ जायकै रावण की छाती में प्रवेश होता भया ७० (सनिमग्नः शरीरांतकरः परः महाघोरः महात्मनः रावणस्य हृदयं तूष्णीं विभेद) सो रावण की छाती में प्रवेश शरीरको नाश करने वाला महाभयंकर बाण महात्मा रावण के हृदय को शीघ्रही विभेदन करता भया ७१ (रावणस्य प्राणान् अहरत् प्राणान् विवेश धरणीतले विवेश रावणं हत्व राम तूष्णीं रमा विशत्) ऐसे वेगते चला जो छाती विदारण करि रावण के प्राणन को हरिकै भूमि में प्रवे श करिगया इसप्रकार रावण को मारि पुनः सोई बाण भूमि आय रघुनाथ जीके तरकश में प्रवेश भया ७२ (तस्य हस्तात् सशरं महत् कार्मुकं आशुपपात भ्रमिवेगेण गता सुः राक्षसेन्द्रः भुवि अपतत्) तिस रावण के हाथते सहित बाण बड़ा भारी धनुष छूटिकै शीघ्रही गिरि परता भया मराहुआ शरीर बाणवेग ते भ्रमण को प्राप्त है रावण भूमि पै गिरि परता भया ७३ ॥

तं दृष्ट्वा पतितं भूमौ हतशेषाश्च राक्षसाः ॥ हतनाथा भयत्रस्ता दुद्रुवुः सर्वतो दिश
म् ७४ दशग्रीवस्य निधनं विजयं राघवस्य च ॥ ततो विनेदुः संहृष्टा वानरा जितकाशि
नः ७५ वदंतो रामविजयं रावणस्य च तद्वधम् ॥ अथांतरिक्षे व्यनदत्सौ म्यस्त्रिदश
दुंदुभिः ७६ पपात पुष्पवृष्टिश्च स पंता द्राघवोपरि ॥ तुष्टुवुर्मुनयः सिद्धाश्चारणा
श्च दिवौ कसः ७७ अथांतरिक्षे न नृतुः सर्वतोप्सरसो मुदा ॥ रावणस्य च देहोत्थं
ज्योतिरादित्यवत् स्फुरत् ७८ प्रविवेश रघुश्रेष्ठं देवानां पश्यतां सताम् ॥ देवा ऊचुर
हो भाग्यं रावणस्य महात्मनः ७९ ॥

(तंभूमौपतितं दृष्ट्वा हतनाथाः च हतशेषाः राक्षसाः भयत्रस्ताः सर्वतः दिशं दुर्दुःखः) तिस रावणको भूमिपै गिरादेखिकै पुनः जूझिगया है राजा जिनको ऐसे जे मारने ते बाकीरहे हैं राक्षस ते भयभीत हैं सव दिशोंको भागते भये ७४ (दशग्रीवस्य निधनं च राघवस्य विजयं ततः जितकाशिनः वानराः संहृष्टा विनेदुः) संग्राम में दशग्रीव रावणको मरण पुनः रघुनन्दनकी विजय इति देखिकै तदनन्तर जय करिकै प्रकाशमान सब वानर ते आनन्दहैकै गर्जते भये ७५ (रामविजयं च राघवस्य बधं तत्त्वदंतः अयमंतरिक्षे भौम्यः त्रिदशदुर्गभिः व्यनदत्) रघुनन्दनकी विजय पुनः रावणकी मृत्युसोकहतेहुये वानर गर्जते हैं अब ताही समयम आकाशविपे मंगलानंददर्शवनहारे देवतोंके नगारावाजते भये ७६ (च समं तात् राघवो परिपुण्यवृष्टिः पपात मुनयः सिद्धाः चारणाः च दिवौकसः तुष्टुवुः) पुनः सब दिशोंते रघुनन्दनके ऊपर फूलोंकी वृष्टि गिरती है अरु मुनि सिद्धचारण पुनः देवता प्रभुकी सब स्तुतिकरते भये ७७ (अयमंतरिक्षे सर्वतः अप्सरसः मुदाननृतः च राघवस्य देहोत्थं आदित्यवत्स्फुरत् ज्योतिः) आकाश विपे सर्वत्र अप्सरा आनंदसहित नाचि रहीं हैं पुनः रावण की देहते निसरी सूर्यवत् प्रकाशमान ज्योति ७८ (सताम्रदेवानां पश्यतामूरधुश्रेष्ठं प्रविशे देवा ऊचुः महात्मन राघवस्य महोभाग्यं) साधु देवतन के देखत देखत रावण की ज्योति रघुनन्दन में प्रवेश है गई सो देखि बड़ा आश्चर्य मानि देवता बोलते भये कि महात्मा रावण की अहोभाग्य अर्थात् आश्चर्य मय प्रशंसा करने योग्य भाग्य उदय भई है ७९ ॥

वयंतुसात्विका देवा विष्णोः कारुण्यभाजनाः ॥ भयदुःखादिभिर्व्याप्ता संसारे परिवर्तिनः ॥ ८० ॥ अयं तु राक्षसः क्रूरो ब्रह्महाता पसर्हि सकः ॥ ८१ ॥ पश्यत्सु सर्वभूतेषु राममेव प्रविष्टवान् ॥ एवं ब्रुवत्सु देवेषु नारदः प्राह सुस्मितः ॥ ८२ ॥ शृणुतात्र सुरायूयं धर्मतत्त्वविचक्षणाः ॥ रावणो राघवद्वेषादनिशं हृदि भावयन् ॥ ८३ ॥ भृत्यैः सह सदारामचरित्रं द्वेषसंयुतः ॥ श्रुत्वा रामात्स्वनिधनं भयात्सर्वत्र राघवम् ॥ ८४ ॥ पश्यन्ननुदिनं स्वप्ने राममेवानुपश्यति ॥ क्रोधोपिरावणस्याशुगुरुबोधाधिको भवत् ॥ ८५ ॥

(तुवयं देवः सात्विका विष्णोः कारुण्यभाजनाः भयदुःखादिभिः व्याप्ता संसारे परिवर्तिनः) पुनः हमलोग देवता सतौ गुण करिकै उत्पन्न भये विष्णु की दयाके पात्र भाव हमारा दुःख सदा निवारण करते हैं सो हम लोग देह सुखमें भूले शत्रुन की भयहानि वियोगादि दुःखादिकों करिकै युक्त संसार में भ्रमते हैं ८० (तु अयं राक्षसः अतीवतामसः क्रूरो ब्रह्महाता पसर्हि सकः विष्णुद्वेषी परदाररतः) पुनः यह रावण राक्षस अत्यंत तामसी क्रूर अर्थात् कठोर निर्दयी स्वभाव ब्राह्मणों को घातक तपस्विन को घातक विष्णुको विरोधी परस्त्रीरत ८१ (सर्वभूतेषु पश्यत्सुरामेव प्रविष्टवान् एवं देवेषु ब्रुवत्सु नारदः सुस्मितः प्राह) सब प्राणिमात्रके देखत संते रावण को तेज रघुनन्दन में प्रवेश भया इस प्रकार देवतों के कहत संते नारद सुसकायकै बोले ८२ (देवायूयं धर्मतत्त्वविचक्षणाः अत्र शृणुतात्र राघवद्वेषात् रावणः अनिशं हृदि भावयन्) हे देवतौ तुमलोग धर्मतत्त्वकी सूक्ष्मगति जानबेमें प्रवीण हो ताते इस विषयमें मैं कहौं सो सुनौं रघुनन्दन सो विरोध ते रावण दिनोराति हृदय में रामको ध्यान करता रहा ८३ (द्वेषसंयुतः भृत्यैः सह सदा रामचरित्रं श्रुत्वा स्वनिधनं रामात् भयात् सर्वत्र राघवं पश्यन्) विरोध बुद्धिसंयुत रावण सेवकन सहित दूतन के मुखते सदा रामचरित्रों को सुनि कै पुनः अपनी मृत्यु

रामते जानि डरते सर्वत्र रघुनन्दनै को देखता रहै ८४ (स्वप्नेअनुदिनरामंएवअनुपश्यति रावणस्य आशुगुरुबोधअधिकःक्रोधःअपिअभवत्) स्वप्ने में भी प्रतिदिन रामही को देखतारहा रावण को शीघ्रही जो गुरुके उपदेश तेजान होताहै त्यहिते अधिक ज्ञानदेनहारा क्रोधही होता भया भावक्रोध वश देह व्यवहार त्यागि मन बचन कर्म राम संमुख भया ८५ ॥

रामेणनिहतश्चांतेनिर्द्वृताशेषकल्मषः॥ रामसायुज्यमेवापरावणोमुक्तबन्धनः८६
पापिष्ठोवादुरात्मापरधनपरदारेषुसक्तोयदिस्यान्नित्यंस्नेहाद्भयाद्धारघुकुलतिल
कंभावयन्संपरेतः ॥ भूत्वाशुद्धांतरंगोभवशतजनितानेकदोषैर्विमुक्तः सद्योरा
मस्यविष्णोःसुखरविनुतंयातिवैकुण्ठमांघ्रम् ८७ इत्वायुद्धेदशास्यंत्रिभुवनविषमं
वामहस्तेनचापं भूमौविष्टभ्यतिष्ठन्नितरकरधृतंभ्रामयन्बाणमेकम् ॥ आरक्तो
पांतनेत्रःशरदलितवपुः सूर्यकोटिप्रकाशोबीरश्रीवंधुरांगस्त्रिदशपतिनुतःपातुमां
वीररामः ८८ ॥

इत्यध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेयुद्धकाण्डेएकदशःसर्गः ११ ॥

(चअंतरेरामेणनिहतःनिर्द्वृताशेषकल्मषःमुक्तबन्धनःरावणःरामसायुज्यंएवआप) पुनः अंतकाल में रघुनन्दन करिकै बधभया ताते छूटिगये हैं सबपाप जिसके तथा छूटिगये हैं सर्वस्नेह कर्म बंधन जिसके ऐसा जो शुद्धरावण रघुनन्दन में मिलिकै परधाम को प्राप्त भया ८६ (पापिष्ठःवादुरात्मा) महापापिष्ठ होइ अथवा दुष्टचित्तहोय (परधनपरदारेषुसक्तःयदिस्यात्) परधन हरनेवाला परस्त्री भैरतऐसहू पुरुष कदाचित् (स्नेहात्वाभयात्नित्यंरघुकुलतिलकंभावयन्संपरेतः) प्रीति ते अथवा भयते जो नित्यहीं रघुनाथ जीके ध्यान में तत्पर होयसो अंतकाल में (शुद्धांतरंगःभूत्वाभवशतज नितअनेकदोषैःविमुक्तः) शुद्धअंतः करण होकै लोकके सैकरीं जन्मों के उत्पन्न हुये अनेक दोषों से छूटि कै पुनः (सुखरविनुतंविष्णोःरामस्यआद्यंवैकुण्ठसद्यःयाति) उत्तम देवतों करिकै स्तुति किया जो विष्णुराम को आद्य वैकुण्ठलोक तहां को शीघ्रही जाता है ८७ (त्रिभुवनविषमंदशास्यंयुद्धेहत्वा वामहस्तेनचापंभूमौविष्टभ्यतिष्ठन्नितरकरएकंबाणधृतंभ्रामयन्आरक्तोपांतनेत्रःशरदलितवपुः कोटि सूर्यप्रकाशःवीरःश्रीवंधुरांगःत्रिदशपतिनुतःवीररामःमांपातु) अब वासमय को ध्यान शिवजकिह ते हैं कि तीनिहू लोकनको कठिन दुखदायक जो रावण ताको युद्धमें मारिकै वामहाथसे धनुषभूमि में टोकि खड़े हैं अरुदूसरे हाथ से एकबाण लिहे घुमाय रहे हैं अरुथोरा अरुणनेत्रों को समीप भाग जिनका रावण के बाणोंकरिकै विदार्ण है तनजामें करोरि सूर्य कैसो प्रकाश ह्वैरहो है वीरतनमेंयथा योग्य उन्नतनत है अंग जिनका इंद्रादि देवन करिकै स्तुति किये गये ऐसेजो वीरनमें शिरोमणि राम सो मेरी रक्षाकरौ ८८ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेयुद्धकाण्डेएकादशःप्रकाशः ११ ॥

रामोपिविभीषणंहृष्ट्वाहनूमंतंतथांगदम्॥ लक्ष्मणंकापिराजंचजाम्बवंतंतथापरा

नू १ परितुष्टेनमनसासर्वानेवाब्रवीद्वचः ॥ भवतांबाहुवीर्येणनिहतोरावणोमया २
कीर्तिःस्थास्यतिवःपुण्यायावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ कीर्तयिष्यन्तिभवतांकथात्रैलोक्य
पावनीम् ३ ययोपेतांकलिहरायास्यन्तिपरमांगतिम् ॥ एतस्मिन्नंतरेदृष्ट्वारावणंप
तितंभुवि ४ मंदोदरीमुखाःसर्वाःस्त्रियोरावणपालिताः ॥ पतितारावणस्याग्रेशोचं
त्यःपर्यदेवयन् ५ विभीषणःशुशोचातर्तोशोकेनमहतावृतः ॥ पतितोरावणस्याग्रे
बहुधापर्यदेवयत् ६ ॥

सर्वैया ॥ रनवास विभीषणशोक लखे प्रभुशासन लक्ष्मण ज्ञानदिये । सविभीषणमृत्यु क्रियाकरि
कै गत लक्ष्मणता अभिपेक किये ॥ हनुमान कहे कुशलात चली मिथिलेश सुता भतिमोद हिये ।
पति आयसु पैठि हुताशन में सियसानंद सोसति सत्व लिये ॥ (विभीषणहनुमंतंतथाअंगदंलक्ष्मणं
कपिराजंचजाम्बवंतंतथाअपरान् दृष्ट्वारामः) शिवजी बोले हे गिरिजा अब विभीषण हनुमान तैसेही
अंगद लक्ष्मण सुग्रीव पुनः जाम्बवान् तैसेही और जे यूथपती वानर हैं तिन सबन को देखिकै रघु-
नंदन १ (परितुष्टेनमनसासर्वान्एववचःअब्रवीत्भवतांबाहुवीर्येणमयारावणःनिहतः) परम प्रसन्न
मनसे प्रभु सबन प्रति वचन बोलते भये कि तुम लोगन के बाहुबल करिकै मैंने रावण को मारा २
(यावत्तच्चन्द्रदिवाकरौवःपुण्याकीर्तिःस्थास्यतित्रयलोक्यपावनीम्भवतांकथांकीर्तयिष्यन्ति) जबतकचंद्र
मासूर्य हैं तबतक तुम्हारी पावन कीर्तिवनी रहैगी अरुतीनिहूँ लोकनको पावन करणहारी तुम्हारी
कथा कविजन गानकरहिंगे ३ (ययाउपेतांकलिहरांपरमांगतिंयास्यन्तिएतस्मिन्अंतरेभुविपतितंरावण
दृष्ट्वा) जिसकीर्तिसहित कलिमलहरणहारी कथा गानकरि लोग परम गतिको जायेंगे ताही समय
में भूमि में पराहुआरावणको मृतकदेखिकै ४ (मंदोदरीमुखाःरावणपालिताःसर्वाःस्त्रियःरावणस्यअ
ग्रेपतिताशोचन्त्यःपर्यदेवयन्) मंदोदरीहैमुख्य जिन में ऐसी रावणकी सबस्त्री रावणकेआगे भूमि में
परी शोच विलाप वचनपूर्वक रोदनकरती हैं ५ (विभीषणःमहताशोकेनवृतः शुशोचातर्तःरावणस्यअ
ग्रेपतितःबहुधापर्यदेवयन्) विभीषण बडेशोकयुक्त शोचकरिकैदुखित रावण के आगेपरे बहुतप्रकारके
विलापवचनकहि रोदनकरते हैं ६ ॥

रामस्तुलक्ष्मणंप्राहबोधयस्वविभीषणम् ॥ करोतुभ्रातृसंस्कारंकिंचिलंबेनमान
द ७ स्त्रियोमंदोदरीमुख्याःपतिताविलपतिच ॥ निवारयतुताःसर्वाराक्षसीरावण
प्रियाः ८ एवमुक्तोथरामेणलक्ष्मणोऽगाद्विभीषणम् ॥ उवाचमृतकोपांतेपतितंमृ
तकोपमम् ९ शोकेनमहताविष्टंसौमित्रिरिदमब्रवीत् ॥ यंशोचसित्वंदुःखेनकोयंत
वविभीषण १० त्वंवास्यकतमःसृष्टेपुरेदानीमतःपरम् ॥ यद्वत्तोयौघपतिताःसिक
तायांतितद्वशाः ११ संयुज्यंतेवियुज्यंतेतथाकालेनदेहिनः ॥ यथाधानासुवैधाना
भवन्तिनभवन्तिच १२ ॥

(तुरामःलक्ष्मणंप्राहमानदविभीषणंबोधयस्वभ्रातृसंस्कारंकरोतुविलंबेनकिं) पुनः रघुनन्दन
लक्ष्मणप्रति बोलतेभये हे मानद लक्ष्मण शोकार्त विभीषणको बोधकरावो भाव समुभायकै ज्ञान
उत्पन्नकरावो जामें अपने भाई रावणकी पारलौकिक संस्कारक्रियाकरैं अब विलंबकरनेते क्या प्र-
योजन है ७ (मंदोदरीमुख्याःस्त्रियःपतिताचविलपतिरावणप्रियाःराक्षसीताःसर्वानिवारयत्) मंदो

दरीहै मुख्यजिनमें ऐसी स्त्री भूमिमेंपरी पुनः विलापकरती जे रावणकीप्रिया राक्षसीतिन सबका विभीषण शोकनिवारणकरै ८ (एवंरामेणउक्तः अथलक्ष्मणः अगात्सृतकउपांतेमृतकउपमंपातितं विभीषणंउवाच) इस प्रकार रघुनंदननेकहा तब लक्ष्मण वहांकोगये जहांमराहुवा रावणपराहै ताके समीप मरेकेतुल्यपरे जो विभीषण तिनप्रति लक्ष्मणजी बोलतेभये ९ (शोकेनमहताविष्टसौमित्रिः इदंअब्रवीत् विभीषणदुःखेनयत्वंशोचसिअयंतवकः) बड़ेदुःखयुत जो विभीषण तिनप्रति लक्ष्मण ऐसा बोलतेभये हे विभीषण दुःखकरिकै जाको तुम शोचकरतेहौ यह तुम्हाराकौन है १० (वाञ्छ स्यत्वंकतमःपुरासृष्टेइदानीम्अतःपरंचद्वत्तयओषपतिताःतत्त्वशाः सिकतायांति) अथवा इसके तुम कौनहौ तहां पूर्वजन्ममें याके तुम कौनहौ अब कौनहौ और जन्ममें कौनहोउगे भाव न पूर्व सम्बन्धरहा न आगेहोयगो अरु या जन्ममें सम्बन्ध कैसा है जैसे जलसमूहगिरताहै ताके वेग में रेणुका भागे पाछे बहाचलाजाता है ११ (संयुज्यंतेवियुज्यंतेतथादेहिनः कालेनयथायानासुवैधाना भवंतिचनभवंति) उस रेणुकोंको संयोग वियोगहुवाकरता है तैसेही जीवनको संयोग वियोग काल के वेगकरिकै हुवाकरता है जैसे धाना अर्थात् भूजेहुये यव सुन्दर तिनको वैधानाहोता है अर्थात् जवोंको ढेरलगावे तब एकपर एक थभिजाता है पुनः चिकनाईते नहीं थभते हैं सरकिपरते हैं १२ ॥

एवंभूतेषुभूतानिप्रेरितानीशमायया॥त्वंचेमेवयमन्येचतुल्याःकालवशोद्भवाः १३
जन्ममृत्युयदायस्मात्तदातस्माद्भविष्यतः ॥ ईश्वरःसर्वभूतानिभूतैःसृजतिहंत्य
जः १४ आत्मसृष्टैरस्वतंत्रैरनपेक्षोऽपिबालवत् ॥ देहेनदेहिनोजीवादेहादेहोभि
जायते १५ बीजादेवयथाबीजंदेह्यन्यइवशाश्वतः ॥ देहीदेहविभागोयमविवेक-
कृतःपुरा १६ ॥

(एवंईशमाययाप्रेरितानिभूतेषुभूतानित्वंचइमेवयंचअन्येकालवशाःतुल्याःउद्भवाः) इसीप्रकार ईश्वरकीमायाकरिकै प्रेरित प्राणिन में प्राणिनको संयोग वियोगहुवाकरताहै ताते हेविभीषण तुम पुनःयह रावण अरु हम पुनः और जो लोग हैं इत्यादि सब कालकेवशते बराबर उत्पन्नहोते हैं १३ (जन्म मृत्युयस्मात्तदायस्मात्तदाभविष्यतः ईश्वरःभूतैःसर्वभूतानिसृजतिभजःहंति) जन्म अरु मरण जिसते जासमय में जिसको परमेश्वररचिराखा है ताहीते ताको तिसकाल में होताहै यथा बालकोंको खेल अनेक रचनारचि पुनः बिगारिदेते हैं तैसेही ईश्वर अपनेरचेहुये भूतोंकरिकै अर्थात् स्त्री पुरुषोंकरिकै कन्या पुत्रादि सब भूतोंकोरचता है अरु पालनकरता है पुनः ईश्वरै किसी द्वारानाश कराय देता है १४ (बालवत्अनपेक्षःअपिआत्मसृष्टैःअस्वतंत्रैःदेहिनःदेहेनजीवःदेहात्देहःअभिजाय ते) बालकोंकीनाई हर्ष विषादरहित जो ईश्वरकीरचना है तामें माता पितादिकों करिकै पुत्रादि उत्पन्नकरना अस्वतंत्रताकरिकै है भाव विना ईश्वरकी आज्ञा कोऊ स्वइच्छित पुत्रादि नहीं उत्पन्न करिसक्ता है तामें आत्माउत्पन्न नहींहोताहै देहधारीहैं देहसम्बन्धकरिकै जीवकहावताहै अरु माता पिताकी देहते पुत्रकीदेह मात्रही उत्पन्नहोताहै १५ (यथाबीजात्एवबीजंदेहीअन्यइवशाश्वतः देही देहविभागःअयंपुराअविवेकतःकृतः) जैसे बीजबोये जाभिकै वृक्षभया सफल हैं पुनः बीजहोता है इसी भांति देहते देहहोत अरु अरु देही अर्थात् जीव सो तौ देहते अन्य नित्यहै अरु देह अनित्य है सो देही देहको विभाग अर्थात् जीव नित्य देह अनित्य दोऊकी एकता दृष्टि यह पूर्वहसे अज्ञान ते कल्पना है अर्थात् कारण बश आत्म दृष्टि भुलाय जीव बुद्धि करि कार्य माया बश इंद्री विषयों

आसक्त है मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इत्यादि देहों को सत्य मानि-ताके संबंधिन से अपनपौ मानि संयोग में सुखी विधोग में दुखी इत्यादि भ्रमानते कल्पनाहे १६ ॥

नानात्वंजन्मनाशश्चक्षयोवृद्धिःक्रियाफलम् ॥ द्रष्टुराभात्यतद्धर्मोयथाग्नेर्दारुविक्रिया क्रिया १७ तद्देहसंयोगादात्मनाभान्तिसद्ग्रहात् ॥ प्रथायथातथाचान्यद्व्या यतोऽसत्सदाग्रहात् १८ प्रसुप्तस्यानहंभावात्तदाभातिनसंस्मृतिः ॥ जीवतोऽपित थातद्विमुक्तस्यानहकृतेः १९ तस्मान्मायामनोधर्मजह्यहंममताभ्रमं ॥ रामभद्रे भगवतिमनोदेह्यात्मनीश्वरे २० ॥

(नानात्वंजन्मनाशः चक्षयःवृद्धिःक्रियाफलम्अतत धर्माभाभातिद्रष्टुःयथाअग्नेःदारुविक्रियाः) अनेक भेद मानना जन्म होना मरिजाना पुनः घटिजाना वृद्धिजाना शुभाशुभ कर्म करना तिन को फल सुख दुःखादि ये नहीं है तिस आत्मा के धर्म अर्थात् अनात्मा के धर्म हैं ते आत्मा बिषे प्रकाश मान देखि परते हैं कौनभाति यथा अग्निके संयोग काठ को विकार अर्थात् अबिली बबूरके काठमें अग्नि प्रचण्ड गूलरि पाकरि ओवमें मंद देखात ये काठहीके धर्म हैं अग्निके नहीं हैं १७ (तद्देहसंयोगात्असत्ग्रहात् आत्मनिआभातिअसत् सत्त्वअन्यत्अग्रहात्तथाध्यायतः तथाप्रथा) ये जो पूर्वकहे हैं यथा नानात्वजन्म मरण हानि वृद्धि क्रिया फल इत्यादि जो अंतः करणके धर्म हैं ते देहसंयोग रूप असत्य अर्थ ग्रहणकरनेसे देहान्तःकरणके आत्मा बिषे दर्शित होते हैं तहां असत् यावत् पाप मूल हैं सत् यावत् पुण्य मूल पुनः अन्य गृह कार्यादि अंगीकार करिकै जैसा ध्यान करता है तैसाही प्रथा भवतिअर्थात्प्रसिद्ध होताहै १८ (प्रसुप्तस्यअनहंभावात्संस्मृतिः नभाति तथाविमुक्तस्य अनहकृतेः जीवतःअपितद्वत्) जैसे सोवते हुये पुरुषको अहंकार को अभाव हो नेते हानिवियोगादि संसारी दुःख नहीं व्याप्ता हे तैसेही तत्त्वज्ञानके प्रभावते जीवन् मुक्तपुरुषन को अहंकार को अभावहोने ते जीवत भी सोवतेके तुल्य संसारदुःखनहीं व्याप्ता है १९ (तस्मात् मायामनोधर्म अहंममताभ्रमंजहि आत्मनिईश्वरेभगवति रामभद्रेमनःदेहि) ताते हे विभीषण माया को अंश जो मन ताके धर्म जो देहाभिमान तिस देह संबंधिन में जो ममता झूठे पदार्थ में सांचे कीभ्रम है ताहिमनते त्यागकरौ अरु आत्म ईश्वर बिषे परमात्माकल्याण रूप रघुनाथजी में मन देहु भाव देह व्यवहार को सत्य मानि जो मन लगायेहौ सो वृथा मानि तहां ते खैचि आत्मरूपके सत्यमानि तामें तदाकार-है तव परमात्मा राम रूपमें अनुरागयुतमनलगावौ २० ॥

सर्वभूतात्मनिपरेमायामानुषरूपिणि ॥ बाह्येन्द्रियार्थसम्बन्धात्त्याजयित्वामनःश नैः २१ तत्रदोषान्दर्शयित्वारामानंदेतियोजय ॥ देहबुद्ध्याभवेद्भ्रातापितामा तासुहृत्प्रियः २२ विलक्षणंयदादेहान्जानत्यात्मानमात्मना ॥ तदाकःकस्यवावं धुभ्रातामातापितासुहृत् २३ मिथ्याज्ञानवशाज्जातादारागारादयःसदा ॥ शब्दा दयश्चविषयःविविधाश्चेवसंपदा २४ ॥

दोश्लोकएक मेंअन्वय (बाह्येन्द्रियार्थतत्रदोषान्दर्शयित्वासंबन्धात्त्याजयित्वामायामानुषरूपिणि सर्वभूतात्मनि परेरामानंदेतिशनैः मनः योजयदेहबुद्ध्याभ्रातापितामाता सुहृत्प्रियःभवेत्) देह में बाहेर की जो श्रवण त्वचा नेत्र जिह्वा नासिका लिंगादि इंद्रिहैं तिनकोअर्थशब्द स्पर्श रूप रसगंध

मैथुन इत्यादि जो विषय हैं तिन में दोष दोखि कै तिन इंद्रिय के संबंध ते मन को जुदा करिकै पुनः दिव्य माया करिकै मानुष रूप है जिन को सर्व भूतके आत्मा प्रकृति ते परे परम आनंद रूप रघुनाथ जी में धीरा धीरा मन को लगावो अरु देह बुद्धि करिकै अर्थात् मैं ब्राह्मण मैं क्षत्री इत्यादि सत्य मानेते भाई पितामातामित्र प्रिय इत्यादि संबंधी होते हैं भाव देह सत्य मानेते देह संबंधी भी सत्यदेखाते हैं २१।२२ (देहात् विलक्षणं यदा आत्मना आत्मानं जानाति तदा बंधुः वा भ्राता माता पिता सुहृत् कस्यचः) देहते जो विलक्षण अर्थात् जामें कछु कारण नहीं अपूर्वता की प्राप्ति हेतु जब कर्म ज्ञान भक्ति इत्यादि यत्न करिकै प्राणी आत्मा को जानत है तब बंधु वा भाई माता पिता मित्र इत्यादि किस को कौन है भाव कथा देह भूँठी तथा देह संबंध भी मिथ्या देखाते हैं २३ (अज्ञान वशात् दारा अगार आदयो मिथ्या सदा जाताच शब्दादयः विषयः च एव विविधाः संपदा) कारण माया वश आत्मा रूप भूलि जीव बुद्धी भई कार्य माया वश इंद्रि विषयन में आसक्त देहें को सत्य मानि लिया इति अज्ञान वश ते स्त्री मंदिर इत्यादि भूँठी सदा उत्पन्न होते हैं पुनः शब्द स्पर्श रूप रस गंधादि विषयी पुनः सोनासोना अन्न धन भूषण बाहन इत्यादि अनेक प्रकारकी संपदा २४ ॥

बलकोशो भृत्यवर्गो राज्यभूमिः सुतादयः ॥ अज्ञानजत्वात् सर्वे ते क्षणसंगमभंगुराः २५ अथोत्तिष्ठद्दारा मंभावयन् भक्तिभा वितम् ॥ अनुवर्तस्व राज्यादिभुंजन् प्रारब्धमन्वहम् २६ भूतं भविष्यदभजन् वर्तमानमथाचरन् ॥ विहरस्व यथान्यायं भवदोषैर्न लिप्यसे २७ आज्ञापयति रामस्त्वां यद् भ्रातुः सांपरायिकम् ॥ तत्कुरुष्व यथाशास्त्रं रुदंतीश्चापि योषितः २८ निवारय महाबुद्धे लंकां गच्छंतु माचिरम् ॥ श्रुत्वा यथावद्वचनं लक्ष्मण रयविभीषणः २९ ॥

(राज्यभूमिः कोशः बलं भृत्यवर्गः सुतादयः एते सर्वे अज्ञानजत्वात् क्षणसंगमभंगुराः) राज्य भूमि खजाना सेना सेवक वर्ग पुत्रादिक ऐ सब अज्ञानसे उत्पन्न हैं ताते इन सबको क्षणमात्रको मिलन पुनः नाश हवै जाते हैं २५ (भक्तिभावितमूरामं हृदा भावयन् अथ उत्तिष्ठ प्रारब्धं अनुब्रूह मराज्यादि भुंजन् अनुवर्तस्व) भक्ति करिकै स्मरण करणे योग्य जो श्रीराम तिनहिं हृदय में ध्यान करते हुंथे हे विभीषण अब यहाँते उठौ अरु प्रारब्ध के पीछे हमहैं भाव प्रारब्ध कर्म बिना भोगे छुट्टी नहीं मिलती है ताको भोगना चाहिये ऐसा विचारि राज्यादि प्रारब्ध भोगत संते राजकाज करौ प्रजापालौ २६ (भूतं भविष्यत् अभजन् अथ वर्तमानं अचरन् यथान्यायं विहरस्व भवदोषैर्न लिप्यसे) पूर्व जो कुछ हानि लाभ हवै गई तथा आगे जो कुछ होनहार है इति भूत भविष्य अभजन् अर्थात् जो हानि हवै चुकी अथवा होनहार तामें, विषाद न करौ तथा हवै चुकी लाभ अथवा होनहार ताकी हर्ष न करौ अब वर्तमान में जो कछु दुःख सुख जो प्राप्त होय ताको भोगते संते नीति धर्म विवेक युक्त वेद आज्ञा अनुकूल लोकमें विहार करौ तौ संसार के दोषों करिकै न लिप्त होउगे भाव कर्म बंधन तुमको न होइंगे २७ (रामः त्वां आज्ञापयति भ्रातुः यत् सांपरायिकमर्थं यथाशास्त्रं तत्कुरुष्व योषितः अपिरुदंतीः) हे विभीषण रघुनाथजी तुमको आज्ञा देते हैं कि तुम्हारे भाई रावणकी जो पारलौकिक क्रिया है ताहि धर्म शास्त्रकी रीति विधिवत् सब कार्य करौ पुनः स्त्रीभी रोदन करती हैं तिनहिं २८ (महाबुद्धे निवारय माचिरं लंकां गच्छंतु लक्ष्मणस्य यथावद्वचनं श्रुत्वा विभीषणः) हे महाबुद्धि युक्त स्त्रीनको शोक निवारण करौ जामें शीघ्रही लंकाको जाय इति लक्ष्मण के समय उचित वचन सुनिकै विभीषण २९ ॥

त्यक्ताशोकंचमोहंचरामपाद्वर्षमुपागमत् ॥ विमृश्यबुद्ध्याधर्मज्ञोधर्मार्थसहितो वचः ३० रामस्यैवानुवृत्त्यर्थमुत्तरं पर्यभाषत ॥ नृशंसंभृतं कूरं त्यक्तधर्मव्रतं प्रभो ३१ नाहोस्मि देवसंस्कर्तुं परदाराभिर्मर्शिनम् ॥ श्रुत्वा तद्वचनं प्रीतो रामो वचनं मब्रवीत् ३२ मरणांता निवैराणि निवृत्तनः प्रयोजनम् ॥ क्रियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ३३ रामाज्ञां शिरसा धृत्वा शीघ्रमेव विभीषण ॥ सांत्वयामास धर्मात्मा धर्मबुद्धिर्विभीषणः ॥ त्वरयामास धर्मज्ञः संस्कारार्थं स्वबांधवान् ३४ ॥

(शोकं च मोहं त्यक्त्वा च रामपादवर्षमुपागमत् धर्मज्ञः बुद्ध्या विमृश्य धर्मार्थसहितो वचः) शोक सामयिकः स्वपुनः मोह अज्ञानता इत्यादि त्यागकरि सावधानह्वै पुनः रघुनाथजीके पास जाय धर्मको जानने वाले विभीषण बुद्धिकरि कै विचारि भाव रामविरोधी रावणकी क्रिया करना मेरे योग्य नहीं है इति विचारि धर्मकी रीति अर्थ सहित वचन ३० (रामस्य अनुवृत्त्यर्थ एव उत्तरं पर्यभाषत प्रभो त्यक्तधर्मव्रतं नृशंसंभृतं कूरं) रघुनाथजीकी संमति अनुकूल उत्तर विभीषण बोलते भये हे प्रभो त्याग किया है धर्म व्रतजिसने हिसारत अनीति बोलनेवाला कठिन निर्दयी स्वभाव ३१ (देव परदाराभिर्मर्शिनं संस्कर्तुं न अर्हः आस्मि तत्त्वचनं श्रुत्वा रामः प्रीतः वचनं मब्रवीत्) हे देव परस्त्रिनको सेवन करनेवाला ऐसा पापी जो रावण ताको मृतक संस्कार करनेके योग्य नहीं मैहों सो वचन सुनिके रघुनंदन प्रीतिपूर्वक वचन बोलते भये ३२ (मरणांता निवैराणि नः प्रयोजनं निवृत्तं मम अपि एष यथा तव अस्य संस्कारः क्रियतां) हे विभीषण मरणपर्यंत देहते बैर होता है सोतौ लोकहित रावणके मरतेही मेरा प्रयोजन पूर्ण भया अब तौ भोकोभी यह रावण वैसेही प्रिय है जैसे तुम भावपूर्वको पार्षद पुनः आपने पदको प्राप्त भया ताते याको मृतक संस्कार कीजिये ३३ (रामाज्ञां शिरसा धृत्वा तदा विभीषणः शीघ्रं एव सांत्वयामास) महाबुद्धि राजा मंदोदरी सांत्वयामास) रघुनंदनकी आज्ञा शीघ्रधरि तत्समय विभीषण शीघ्र ही जाय शांत वचनों करिके बड़ी बुद्धिवंत रानी मंदोदरीको सावधान कराये ३४ (धर्मात्मा धर्मबुद्धिः धर्मज्ञः विभीषणः स्वबांधवान् संस्कारार्थं त्वरयामास) धर्मात्मा धर्ममें है बुद्धिजाकी धर्म जाननेवाला विभीषण अपने भाइयनको दाह क्रियादि संस्कार करनेको उद्यत भया ३५ ॥

चित्यानिवेश्य विधिवत्पितृमेधाविधानतः ॥ आहिताग्नेर्यथा कार्यं रावणस्य विभीषणः ३६ तथैव सर्वमकरोद्वंधुभिः सह मंत्रिभिः ॥ ददौ च पावकं तस्य विधियुक्तं विभीषणः ३७ स्नात्वा चैवार्दवस्त्रेण तिलान् दर्भविमिश्रितान् ॥ उदकेन च संमिश्रान् प्रदाय विधिपूर्वकम् ३८ प्रदाय चोदकं तस्मै मूदूध्ना चैनं प्रणम्य च ॥ ताः स्त्रियोऽनुनया माससांत्वमुक्त्वा पुनः पुनः ३९ गम्यतामिति ताः सर्वा विविशुर्नगरं तदा ॥ प्रविष्टा सुचसर्वासुराक्षसीषु विभीषणः ४० रामपाद्वर्षमुपागत्य तदा तिष्ठद्विनीतवत् ४१ रामोऽपि सहसैन्येन सुग्रीवः सह लक्ष्मणः ॥ हर्षलेभेरिपून्हत्वा यथा वृत्रं शतक्रतुः ४२

(पितृमेधाविधानतः विधिवत् चित्यानिवेश्य रावणस्य यथा आहिताग्नेः कार्यं तथा एव विभीषणः संविशं करोत्) पितृमेध में जैसा विधान लिखा है ताही विधान ते विधिपूर्वक चितापर स्थापित करि रावणको जैसे अग्निहोत्र करनेवालेनको मृतक केमे होता है तैसेही विभीषण सब करते भये ३६

(मंत्रिभिःबंधुभिःसह विभीषणःविधियुक्तंचतस्यपावकंददौ) मंत्रिन सहित बंधुवर्ग सहित विभीषण विधिसंयुक्तपुनःतिस रावणको अग्नि दाहदेतेभये ३७ (स्नात्वाचएवआर्द्रवस्त्रेणतिलान्दर्भाविमीश्रितान्चउदकेनसंमिश्रान् विधिपूर्वकंप्रदाय) दाह करिस्नानकीन्हें पुनः भीजेवस्त्रन सहित तिलकुश मिले पुनःजल मिलेसहित विधिपूर्वकं मंत्रपठि पठिरावणके अर्थ जलांजलीसाजि ३८ (चतस्मैउदकं प्रदायचएनंमूहर्नाप्रणम्यचपुनः पुनःसांत्विंउक्तास्त्रियःताःअनुनयामास)पुनःतिसरावणकेअर्थतिलांजलिदेकैताको शीशनवाय प्रणामकरि पुनः बारम्बार शांतिकेवचनकहिकै मन्त्रीरीआदि जोस्त्री तिनको समुक्तावतेभये ३९ (गम्यतांइतिताःसर्वानगरंविबिभुः सर्वासुराक्षसीषुप्रविष्टासुतदाविभीषणः) घर कोजावो ऐसा वचन विभीषण स्त्रियोंसेकहे इति विभीषणकीआज्ञाते वै सब नगरमें प्रवेश करतीभई सब राक्षसिनके नगरमें पहुँचिजातसंते तब विभीषणजौटे- ४० (रामपादवैउपागत्यतदाविनीतवत् अतिष्ठत्) रघुनाथजीके पासजायकै- विभीषण तासमय नम्रतापूर्वक अर्थात् बारम्बार प्रभुको प्रणामकरि समीप बैठतेभये ४१ (वृत्तशतक्रतुःयथारामःअपिरिपून्हत्वासहसैन्येनसुग्रीवःसहलक्ष्मणः हर्षलेभे) बड़ेबली वृत्रासुरकोमारि इन्द्र जैसे आनंदपाये तैसेही रघुनंदनभी रावणादि शत्रुनको मारिकै सहितबानरी सेना सुग्रीव सहित लक्ष्मण प्रभु परमआनंदकोप्राप्तहोतेभये ४२ ॥

मातलिश्चतदारामपरिक्रम्याभिवद्य च ॥ अनुज्ञातश्चरामेणययौस्वर्गविहाय सा ४३ ततोहृष्टमनारामोलक्ष्मणंचेदमब्रवीत् ॥ विभीषणायमेलंकाराज्यंदत्संपु रैवहि ४४ इदानीमपिगत्वात्वंलंकामध्येविभीषणम् ॥ अभिषेचयविप्रैश्चमंत्रव द्विधिपूर्वकं ४५ इत्युक्तोलक्ष्मणस्तूर्णजगामसहवानरैः ॥ लंकांसुवर्णकलशैःसमु द्रजलसंयुतैः ४६ अभिषेकंशुभंचक्रराक्षसेंद्रस्यधीमतः ॥ ततःपौरजनैःसार्द्धं नानोपायनपाणिभिः ४७ विभीषणःससौमित्रिरुपायनपुरस्कृतः ॥ दंडप्रणाम मकरोद्रामस्याक्लिष्टकर्मणः ४८ ॥

(चतदामातलिः रामंपरिक्रम्य च अभिवंद्य च रामेणअनुज्ञातः विहायसा स्वर्गं ययौ) पुनः तार्ही समय में इंद्र को सारथी मातालि रघुनंदन को परिक्रमा करि पुनः प्रणाम करि पुनः रघुनंदन से आज्ञा लैकै आकाशमार्ग करिकै स्वर्ग को जाता भया ४३ (ततःरामःहृष्टमाना लक्ष्मणंइदमब्रवीत् लंकाराज्याविभीषणाय मेपुरा एवहिदत्तं) तदनंतर रघुनंदन आनंदमन सहित लक्ष्मणप्रति ऐसा बोलतेभये कि हे लक्ष्मण लंकाकीराज्य विभीषणके अर्थमें पूर्वही निश्चयकरिदेबुकाहौं परंतु राजसिंहासन पर अभिषेक होना चाहिये तिस हेत ४४ (त्वंइदानीमपिगत्वा विप्रैःचमंत्रवत् विधिपूर्वकंलंकामध्ये विभीषणंअभिषेचय) हे लक्ष्मण तुम इसी समय निश्चय करिकै जावो वेदविद ब्राह्मणों करिकै पुनः मंत्र उच्चारण विधि पूर्वक लंकाके मध्यमें भद्रासन पर विभीषण को राज्याभिषेक करौ ४५ (इतिउक्तःसहवानरैःलक्ष्मणःतूर्णलंकांजगामसमुद्रजलसंयुतैःसुवर्णकलशैः) ऐसारघुनंदनकहे तब सहित बानरन लक्ष्मण शीघ्रही लंकाको जाते भये वहां समुद्रनको जल सहित सोने के कलशों करिकै- ४६ (धीमतःराक्षसेंद्रस्यशुभंचक्रे ततःनानाउपायनपाणिभिःपौरजनैःसार्द्धं) बुद्धिमान राक्षसों के राजा विभीषणको मंगलकै राज्याभिषेक करते भये तदनंतर अनेकभांति के भेट सामग्री हाथनमेंहैं जिनके ऐसे पुरजन करिकै सहित ४७ (उपायनपुरस्कृतःससौमित्रिः विभीषण अक्लिष्टकर्मणःरामस्यदंडप्रणामंअकरोत्) अपने भेटकी सामग्री आगेकरि सहित लक्ष्मण विभीषण

आयकै पुनः नहीं है क्लेशकर्मन में जिनके ऐसे रघुनाथजीको विभीषण दंडप्रणामकरते भये ४८ ॥
 रामोविभीषणं दृष्ट्वा प्राप्तं राज्यमुदान्वितः ॥ कृतकृत्यमिवात्मानममन्यत सहानु
 जः ४९ सुग्रीवं च समालिङ्ग्य रामो वाक्यमथाब्रवीत् ॥ सहायेन त्वया वीरजितो मेरा
 वणो महान् ॥ विभीषणो पिलंकायामभिषिक्तो मया नघ ५० ततः प्राह हनूमंतं पाश्वर्यं
 स्थं विनयान्वितम् ॥ विभीषणरयानुमते गच्छ त्वं रावणालयम् ५१ जानक्ये सर्वमा
 ख्याहिरावणस्य वधादिकम् ॥ जानक्या प्रतिवाक्यं मेशीघ्रमेव निवेदय ५२ एवमा
 ज्ञापितो धीमान् रामेण पवनात्मजः ॥ प्रविवेश पुरीं लंकां पूज्यमानो निशाचरैः ५३ प्रवि
 श्य रावणगृहं शिशुपामूलमाश्रितम् ॥ ददर्श जानकीं तत्र कृशादीनामनिदिताम् ५४ ॥

(प्राप्तं राज्यं विभीषणं दृष्ट्वा सहानुजः रामः मुदान्वितः कृतकृत्यं इव आत्मानं अमन्यत्) प्राप्त भयाहैराज्य
 पद जिगको ऐसे विभीषण को देखिकै सहित लक्ष्मण रघुनंदन आनंदयुत भाव प्रतिज्ञा पूर्ण भये
 ते कृतकृत्यसम अपना को मानते भये ४९ (च सुग्रीवं समालिङ्ग्य अथ रामः वाक्यं अब्रवीत् वीरत्नया
 सहायेन मे महान् रावण-जितः अनघ लंकायामया विभीषणः अपि अभिषिक्तः) पुनः सुग्रीवको हृदय में
 लगाय कै तिनप्रति अब रघुनंदन वचन बोलते भये हे वीर सुग्रीव तुम्हारी सहायता करिकै हम
 महान्बली वीर रावण को जीता पुन- हे अनघ लंका की राज्य त्रिपे मेंने विभीषण कोभी अभिषेक
 किया ५० (ततः विनयान्वितम् पाश्वर्यं हनूमंतं प्राह विभीषणस्य अनुमते त्वं रावणालयम् गच्छ) तद-
 नंतर नम्रतापूर्वक समीप बैठेहुये जो हनूमान् तिनप्रति रघुनंदन कहे कि हे हनूमान् विभीषणकी
 सलाहलैके तुम रावण के मंदिर को जावो ५१ (रावणस्य वधादिकम् सर्वं जानक्यै आख्याहि जानक्याः
 प्रतिवाक्यं शीघ्रं एव मे निवेदय) उहां जायकै रावण को मरणादि सबहाल जानकी के अर्थ कहिसुना
 वो सो सुनि जानकी जो कहें तिनके सबवचन शीघ्रही आयहम सो कहौ ५२ (एवं रामेण आज्ञापि
 तः धीमान् पवनात्मजः निशाचरैः पूज्यमानः पुरीं लंकां प्रविवेश) इसप्रकार रघुनंदन करिकै आज्ञा किये
 गये बुद्धिमान् पवनपुत्र हनूमान् सो राक्षसों करि पूज्यमान द्वै लंकापुरी में प्रवेश करते भये ५३
 (रावणगृहं प्रविश्य तत्र शिशुपामूलं आश्रितम् कृशादीनामनिदितां जानकीं वदर्श) लंकामें जायहनूमान्
 रावण के मंदिरमें प्रवेश करितहां शिशुमल्लकी मूल के समीप बेठी हुई दुर्बल है रहा है शरीरजिन
 को मनसो दुखित दोपरहित ऐसी जानकी को देखते भये ५४ ॥

राक्षसीभिः परिवृतां ध्यायन्तीं राममेव हि ॥ विनयावनतो भूत्वा प्रणम्य पवनात्म
 जः ५५ कृतांजलिपुटो भूत्वा प्रह्वो भक्त्याग्रतः स्थितः ॥ तं दृष्ट्वा जानकी तृष्णीं स्थि
 त्वा पूर्वस्मृतियुगो ५६ ज्ञात्वा तं रामदूतं साहर्षात् सौम्यमुखी भवत् ॥ सतां सौम्यमु
 खीं दृष्ट्वा तस्या पवननंदनः ॥ रामस्य भाषितं सर्वमाख्यातुमुपचक्रमे ५७ देविरामः
 स सुग्रीवो विभीषणसहायवान् ॥ कुशलीवानराणां च सैन्यैश्च सह लक्ष्मणः ५८ रा
 वणं ससुतं हत्वा सबलं सह मंत्रिभिः ॥ त्वामाह कुशलं रामो राज्ये कृत्वा विभीषण
 म् ५९ श्रुत्वा भर्तुः प्रियं वाक्यं हर्षगद्गदया गिरा ॥ किं ते प्रियं करोम्यद्य न पश्यामि ज
 गत्त्रये ६० ॥

(राक्षसीभिः परिवृतां रामं एव हि ध्यायन्तीं विनयावनतः भूत्वा पवनात्मजः प्रणम्य) राक्षसिन करिकै

परिवेष्टित केवल रघुनंदन को ध्यान करती हैं तिनसीता को देखिके नम्रहैकै हनूमान् प्रणामकीन्हें ५५ (प्रहोभक्तघाकृतांजलिपुटोभूत्वाअग्रतःस्थितःतूष्णींस्थित्वाजानकीतंदृष्ट्वापूर्वरमृतिंययौ) नमि-
तभक्ति करिकै हाथ जोरे हनूमान् आगेखड़े रहे अरुमौन बैठी हुई जानकी सो हनूमान् खड़े हुये
तिनहिं देखिकै पूर्वकी सुधि आवती भई भावइसको मैं कभी देखा है ५६ (तंरामदूतंज्ञात्वासाह-
र्पात्सौम्यमुखीभवत्तां सौम्यमुखीदृष्ट्वासपवननंदनःरामस्यभाषितंसर्वतस्याःआख्यातुंउपचक्रमे)
कछु बीच विचार करि तिन हनुमान् को रामदूत जानिकै सो सीता अंतर आनंद होने ते प्रसन्न
मुख होती भई तिनको प्रसन्नमुख देखिकैसो पवननंदन यावत् रघुनाथजीके कहे वचन सबजानकी
जीसे कहने लगे ५७ (देविससुग्रीवःसहायवान्विभीषणःचवानराणांसैन्यैःचसहलक्ष्मणःरामःकुश-
ली) हे देविसहित सुग्रीव सहायक विभीषण पुनःवानरनकी सेनाकरिकै सहितपुनः सहित लक्ष्मण
रघुनंदन कुशल पूर्व आनंदहै ५८ (सवलंसहमंत्रिभिःससुंतरावणंहत्वाविभीषणम्राज्येकत्वारामःत्वां
कुशलंआह) सहित राक्षसी सेना सहित मंत्रिनसहित पुत्रन रावण को मारिकै विभीषण कोलंका
की राज्य विषे स्थापित करि रघुनाथजी मोको पठै अबतुमसो कुशल पूछतेहैं ५९ (भर्तुःप्रियंवाक्यं
श्रुत्वाहर्षात्गद्गदयागिराअद्यतेकिंप्रियंकरोमि) हनूमान् द्वारापतिकेकहेहुये प्रियवचन तिनहिसुनिकै
हर्षतेअर्थात् प्रेमानंद उगैगातनमें रोमांच नेत्रनमें आँशुकंटारोध भयाताते अपुष्टाक्षरगद्गदवानी
करिकै बोली जानकीजी हे हनूमान् या समयमें तेरा क्या प्रियकरीं भावतोको क्यादेउक्योंकि ६०॥

समंतेप्रियवाक्यस्यरत्नान्याभरणानिच ॥ एवमुक्तस्तुवैदेह्याप्रत्युवाचप्लवंगमः ६१
रत्नौघाद्विविधाद्वापिदेवराज्याद्विशिष्यते ॥ हतशत्रुंविजयिनंरामंपश्यामिसुस्थि-
रम् ६२ तस्यतद्वचनंश्रुत्वामैथिलीप्राहमारुतिम् ॥ सर्वेसौम्यागुणाःसौम्यत्व-
य्येवपरिनिष्ठिताः ६३ रामंद्रक्ष्यामिशीघ्रंमामाज्ञापयतुराघवः ॥ तथेतितानम-
स्कृत्यययौद्रष्टुंरघूत्तमम् ६४ जानक्याभाषितंसर्वरामस्याग्रेन्यवेदयत् ॥ यन्निमि-
तोयमारंभःकर्मणांचफलोदयः ६५ ॥

(तेप्रियवाक्यस्यसमंरत्नानिचआभरणानिजगत्त्रयेनपश्यामिएववैदेह्याउक्तःतुल्यवंगमःप्रत्युवाच)
हे हनूमान् तुम्हारेप्रिय वचन के तुल्य आनंद दान देने योग्य वस्तु यथा किसी भांति के रत्न पुनः
भूषण इत्यादि तीनिहू लोकन में कछु नहीं देखतीहैं तौ क्या देंउ ताते तुमसो उरिण नहींहैं इस
प्रकार जानकी जीने कहा तबपुनः हनूमान् बोले ६१ (हतशत्रुंविजयिनंसुस्थिरम् रामंपश्यामिवि-
विधात्तरत्नौघात्वा अपिदेवराज्याद्विशिष्यते) हेमातः संग्राम में सबल शत्रुको मारि विजयवंत
सुस्थिरसदा एकरस सावधान ऐसे रघुनंदन को मैं देखताहैं सो आपकी कृपाते ईश्वर प्राप्ति रूप
अपूर्वफल लाभ है सो अनेक भांति के समूह रत्नों ते विशेषि अथवा निश्चय करिदेवतों की राज्य
ते विशेषिहै भाव यही कृपा बनी रहै और कछु न चाहिये ६२ (तस्यतद्वचनंश्रुत्वामैथिली मारुतिं
प्राह हैसौम्य सर्वेसौम्या गुणाःत्वय्येवपरिनिष्ठिताः) तिनहनूमान्केकहे सो वचनसुनिकै जनकनंदिनी
हनूमान् प्रति बोलतीभई हेसुंदरशुद्धबुद्धिमंतज्ञान विराग त्यागसमताशांति संतोषविवेक इत्यादि सब
शुद्धअमल उत्तम गुण तुम्हारेही विषे निश्चय करि देखि परते हैं ६३ (रामंद्रक्ष्यामिमाराघवःशीघ्रं
आज्ञापयतुतथाइतितानमस्कृत्यरघूत्तमंद्रष्टुंययौ) हे हनूमान् अब रघुनंदन के देखने को आतुरहैं
ताते ऐसी उपाय करौ जामें मोको समीप आवने को रघुनंदन शीघ्रही आज्ञादेवैं सो सुनि बहुत

भली ऐसा कहि हनूमान् जानकीजी को नमस्कार करि रघुनंदन को देखने हेत जाते भये ६४ (जानक्याःभाषितंरामस्यअग्रेसर्वन्यवेदयत्यन्निमित्तंअयंकर्मणांआरंभःचफलोदयः) जानकीके कहे हुये वचन रघुनाथ जीके आगे सबकहि सुनाये पुनः हनूमान् कहेकि हे प्रभु जिनके निमित्त यह युद्ध कर्म प्रारम्भ भया ते सब कर्म पूर्ण भये तिनको फलभी उदयभया है ताते ६५ ॥

तांदेवीशोकसंतप्तां द्रष्टुमर्हसिमैथिलीम् ॥ एवमुक्तोहनुमतारामो ज्ञानवतांवरः ६६ मायासीतांपरित्यक्तुंजानकीमनलोस्थिताम् ॥ आदातुंमनसाध्यात्वारा मःप्राहविभीषणम् ६७ गच्छराजनजनकजामानयाशुममांतिकम् ॥ स्नातांविरजवस्त्राढ्यांसर्वाभरणभूषिताम् ६८ विभीषणोऽपितच्छ्रुत्वाजगामसहमारुतिः ॥ राक्षसीभिःसुवृद्धाभिःस्नापयित्वातुमैथिलीम् ६९ सर्वाभरणसंपन्नामारोप्यशिविकोत्तमे ॥ याष्टिकैर्वहुभिर्गुप्तांकंचुकोष्णीषिभिःशुभाम् ७० तांद्रष्टुमागताःसर्वेवानराजनकात्मजाम् ॥ तान्वारयंतोवहवःसर्वतोवेत्रपाणयः ७१ ॥

(शोकसंतप्तांदेवीमैथिलीम्तांद्रष्टुमर्हसिएवंहनुमताउक्तःज्ञानवतांवरःरामः) शोकाग्नि में संतप्त जो देवी जनकनंदिनी हैं तिनहिं अब आप देखवे योग्य हौ अर्थात् अपने समीप को बुलावौ इस प्रकार जब हनूमान् ने कहा तबज्ञानवंतनमें श्रेष्ठजो रघुनंदन ६६ (मायासीतांपरित्यक्तुंअनले स्थितांजानकीआदातुंमनसाध्यात्वारा मःविभीषणंप्राह) माया सीता जो लंकामें हैं तिनहिं परित्याग करि पुनःअग्नि में स्थित जो सत्यसीता हैं तिन्हें ग्रहण करिवे को मनमें ध्यान राखिकै रघुनंदन विभीषण प्रतिबोलते भये ६७ (राजन्गच्छस्नातांविरजवस्त्राढ्यांसर्वाभरणभूषितांजनकजाममांतिकंआशुआनय) हेराजन् विभीषणतुमलंका को जाउ मज्जन कराय अमल नवीन वसन पहिराय सर्वाङ्ग भूषण भूषितकरि जनकनंदिनी को मेरे समीप शीघ्रही लवायलावौ (तत्श्रुत्वा विभीषणःअपिसहमारुतिःजगामतुराक्षसीभिःसुवृद्धाभिःमैथिलीम्स्नापयित्वा) सो रघुनाथ जीको वचन सुनिकै विभीषण भी सहित हनूमान् लंकाको जाते भये तहां राक्षसी जो वृद्धरहीं तिन्हें विभीषण आज्ञा दिये तिन्होंने उबटन लगाय जानकी जीको स्नान करावतीभई पुनः६८।६९(सर्वाभरणसंपन्नांशिवकोत्तमेआरोप्यकंचुकउष्णीषिभिःशुभाम्याष्टिकैःवहुभिःगुप्तां) अमल नवीन दिव्य वसनपहिराय सर्वाङ्गमें भूषण भूषित करिउत्तम शिवका में सवार कराय पुनः जिनके तनमें सुंदर जामा शीशमें पाग ऐसेमंगलीकचोपदारादिबहुतों करिकै रक्षित ७० (जनकात्मजाम्तांद्रष्टुंसर्वे वानराःआगताः वेत्रपाणयः सर्वतः वहवः तान्वारयंतः) आवती हुई जनकनंदिनी तिनहिं देखने अर्थात् दर्शन करिवे हेत सब वानर आगे जाते भये अरुइहां चोपदार शिवका के सब ओर बहुत हैं ते वानरन को रोकते भये ७१ ॥

कोलाहलंप्रकुर्वन्तो रामपार्श्वमुपाययुः ॥ दृष्ट्वातांशिविकारूढांदूरादथरघूत्तमः ७२ विभीषणकिमर्थंतेवानरान्वारयंतिहि ॥ पश्यंतुवानराःसर्वेमैथिलीमातरंयथा ७३ पादचारेणसायातुजानकीममसन्निधिम् ॥ श्रुत्वातद्रामवचनंशिविकादवरूढ्य सा ७४ पादचारेणशनकैरागतारामसन्निधिम् ॥ रामोपिदृष्ट्वातांमायासीतांकार्यार्थं निर्मिताम् ७५ अत्राच्यवादान्बहुशःप्राहतांरघुनंदनः ॥ अमृष्यमाणासासीता

वचनं राघवोदितम् ७६ लक्ष्मणं प्राहमेशीघ्रं प्रज्वालय हुताशनम् ॥ विश्वासार्थं
हिरामस्य लोकानां प्रत्ययाय च ७७ राघवस्य मतं ज्ञात्वा लक्ष्मणोऽपि तदैव हि ॥ महा
काष्ठचयं कृत्वा ज्वालयित्वा हुताशनम् ७८ ॥

(कोलाहलं प्रकुर्वतः रामपार्श्वे उपाययुः शिविकारूढांतां दूरात् दृष्ट्वा अथ रघूत्तमः) वानरोंको अरु
चोपदारोंको वादाबिवादते बड़ा गुलगपाड़ा करते हुये बहुत बानर रघुनाथजीके समीप जाते भये तब
शिविका पर चढ़ी हुई जानकी ताहि दूरिते देखिके अब रघुनन्दन बोले ७२ (विभीषण ते किं अर्थ वानरा
नृवारयंति हि यथा मातरं मैथिलीमुसर्वे वानराः पश्यन्तु) हे विभीषण तुम्हारे चोपदारते किस हेत वान-
रनको मना करते हैं भाव न रोकें जैसे कोऊ अपनी माताको देखता है तैसे जनकनंदिनीको सब
वानर देखें ७३ (सा जानकी पादचारेण मम संनिधिं आयातु तत् रामवचनं श्रुत्वा सा शिविकात् अवरोह्य)
अरु सो जानकी पायन पायन चलिके मेरे समीपको आवें सो रघुनन्दनको वचन सुनिके सो जानकी
जी शिविकाते उतरिके ७४ (पादचारेण शनकैः रामसन्निधिं आगता कार्यार्थं निर्मिताम् मायासीतांतां
दृष्ट्वा रामः अपि) पायन पायन धीरा धीरा चलिकरिके जानकी रघुनन्दनके समीप आवती भई अब
प्रयोजन अर्थात् देवकार्यार्थ वनाई हुई मायाकी सीता तिनहि देखि रघुनन्दन ७५ (तारघुनन्दनः अ-
वाच्यवादान् बहुशः प्राहराघवोदितं वचनं असृज्यमाणा सा सीता) तिन मायासीताको रघुनन्दन जो क-
हवे योग्य नहीं ऐसे अपवाद वचन बहुत कहे रघुनन्दनके कहे वचन सहितकी सो सीता ७६ (लक्ष्म-
णं प्राह हिरामस्य विश्वासार्थं च लोकानां प्रत्ययाय मेशीघ्रं हुताशनं प्रज्वालय) लक्ष्मण प्रति जानकी बो-
लती भई हे लक्ष्मण निश्चय करि रघुनन्दनके विश्वास हेत पुनः सब लोकोंके प्रतीति के अर्थ तुम मेरे
हेत अग्निको प्रज्वलित करौ ७७ (राघवस्य मतं ज्ञात्वा तदा एव हि लक्ष्मणः अपि महाकाष्ठचयं कृत्वा हुता-
शनम् प्रज्वालयित्वा) रघुनन्दनको भी यही सम्मत है ऐसा जानिके लक्ष्मण भी बड़ा भारी काष्ठको
ढेर करि अग्नि जराय दिये ७८ ॥

रामपार्श्वमुपागम्य तस्थौ तूष्णीं मरिंदमः ॥ ततः सीतापरिक्रम्य राघवं भक्तिसंयु-
ता ७९ पश्यतां सर्वलोकानां देवराक्षसयोषिताम् ॥ प्रणम्य देवताभ्यश्च ब्राह्मणेभ्य-
श्च मैथिली ८० बद्धांजलिपुटा चेदमुवाचाग्नि समीपगा ॥ यथामेह दयं नित्यं नाप-
सर्पति राघवात् ८१ तथा लोकस्य साक्षी मां सर्वतः पातु पावकः ॥ एवमुक्त्वा तदा सी-
तापरिक्रम्य हुताशनम् ८२ विवेश ज्वलनं दीप्तं निभयेन हृदा सती ॥ ८३ दृष्ट्वा ततो
भूतगणाः ससिद्धाः सीतां महाबहिन गतां भृशार्ताः ॥ परस्परं प्राहुरहो सीतां रामः श्रि-
यं स्वांकथमत्यजञ्जः ८४ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उभयमहेश्वरसंवादे युद्धकांडे द्वादशः सर्गः १२ ॥

(अरिंदमः रामपार्श्वे उपागम्य तूष्णीं तस्थौ ततः सीताभक्तिसंयुता राघवं परिक्रम्य) शत्रुको नाशक-
रनेवाले लक्ष्मण रघुनाथजीके पास जायमौ नहै बैठे तदनंतर सीताभक्तिसहित रघुनन्दनको परिक्रमा
करिके ७९ (देवराक्षसयोषितां सर्वलोकानां पश्यतां देवताभ्यः च ब्राह्मणेभ्यः प्रणम्य च मैथिली) देवतोंकी
राक्षसोंकी स्त्री तथा सब लोकनके देखते हुये देवतोंके अर्थ पुनः ब्राह्मणोंके अर्थ प्रणाम करि पुनः जनक-

नंदिनी ८० (अग्निसमीपगाचबद्धांजलिपुटाचइदंउवाचतथामेहृदयंनित्यंराघवात्नापसर्पति) अग्नि के समीपजाय पुनः सीता हाथजोरि पुनः ऐसा वचनबोलतीभई जो मेरा मन नित्यही रघुनंदनते भिन्न और किसी में न जाताहोय ८१ (तथालोकस्थसाक्षीपावकःमांसर्वतःपातुएवंउच्छातदासीता हुताशनंपरिक्रम्य) तौ लोककीसाक्षी सत्यासत्यजाननेवाले यह अग्नि मोको सब भांतिते रक्षाकरें ऐसा कहि तब सीता अग्निको परिक्रमाकरिकै ८२ (निर्भयेनहृदासतीदीप्तंज्वलनंविवेश) निर्भय हृदयसे सतीसीता बरतीअग्निमें प्रवेशकरतीभई ८३ (महावह्निगतांसीतांहृष्टाततःभृशार्ताःभूतगणाः ससिद्धाःपरस्परंप्राहुःअहोहः रामःस्वांश्रियंससीतांकथंचत्यजत्) महाप्रचण्डवरती हुई अग्नि मेंप्राप्त सीताको देखिकै ता समय अत्यन्त दुःख पीड़ित हैं सब प्राणीमात्र सहित सिद्धलोग आपुस में वार्ताकरते हैं कि बड़े आश्चर्यकी बात है कि सर्वज्ञ हैं कै राम अपनी नित्य लक्ष्मी सो सीताको कैसे त्यागकरते हैं ८४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवह्मभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणयुद्धकाण्डेद्वादशः प्रकाशः १२ ॥

ततःशक्रःसहस्राक्षोयमश्चवरुणस्तथा ॥ कुबेरश्चमहातेजाःपिनाकीवृषवाहनः १
ब्रह्माब्रह्मविदांश्रेष्ठोमुनिभिःसिद्धचारणैः ॥ पितरोऽष्टषयःसाध्यागंधर्वाप्सरसोर
गाः २ एतेचान्येविमानाग्र्येराजगम्यत्रराघवः ॥ अब्रुवन्परमात्मानंरामंप्रांजलय
श्चते ३ कर्तात्वंसर्वलोकानांसाक्षीविज्ञानविग्रहः ॥ वसूनामष्टमोसित्वंरुद्राणांशं
करोभवान् ४ आदिकर्तासिलोकानांब्रह्मात्वंचतुराननः ॥ अश्विनौघ्राणभूतौतेच
क्षुषीचंद्रभास्करो ५ लोकानामादिरंतोसिनित्यएकःसदोदितः ॥ सदाशुद्धःसदा
बुद्धःसदामुक्तगुणोद्वयः ६ ॥

सवैया ॥ सबदेवविरंचिसुरेशमहेशविनैसियकानलप्राचुरको । पितुबंदिसबंधुअशीपलहेगतलोकन मोदसबैसुरको ॥ समुभायविभीषणवानरपूज्यगयेप्रभुरूपदियेउरको । सहसेवकदिव्यविमानचढेसिय सानुजराभचलेपुरको ॥ (ततःसहस्राक्षःशक्रः चयमःतथावरुणः च कुबेरःवृषवाहनः महातेजाःपिना की)गिवजी बोले हेगिरिजा तदनंतर हजार हैं नेत्र जिनके ऐसेइंद्र पुनः यमराज तैसेही वरुण पुनः कुबेर वृषभहै वाहन जिनके ऐसे महातेजस्वी महेश १ (ब्रह्मविदांश्रेष्ठः मुनिभिः सिद्धचारणैः ब्रह्मा पितरःऋषयः साध्यागंधर्वाःअप्सरारःउरगाः) ब्रह्म वेत्तन में श्रेष्ठ मुनि सिद्ध चारण इत्यादि सहित ब्रह्मा पितृ ऋषि साध्य गन्धर्व अप्सरानाग २ (एतेचअन्येविमानाग्र्यैःआजगमुः यत्रराघवःतेप्रांजलयःच परमात्मानंरामंअब्रुवन्) एते सब पुनः और भी देवगण विमानों पर सवार आवते भये जहां रघुनाथजीहैं ते सब देवता हाथजोरि पुनः परमात्मा जो श्रीरघुनाथ जी तिन प्राति बोलते भये ३ (सर्व लोकानांकर्तात्वं साक्षीविज्ञानविग्रहः वसूनांअष्टमःत्वंअसिरुद्राणांशंकरःभवान्) सब लोगनके कर्ता आप अंतर्हामी रूपते सब के साक्षी बाहेर भीतर की जानन हारे विज्ञानरूपहौ वसुन में आठवां विभावसु आपहीहौ गेरहरुद्रन में शंकर आपही हौ ४ (लोकानांआदिकर्ता चतुर्मुख ब्रह्मा आपही हौ अश्विनौकुमार आपकी नासिकाहैं चंद्रमा सूर्य दोऊ आपके नेत्र हैं ५ (लोकानांआदिःअंतःअसि

अद्वयः नित्यएकः सदा उदितः सदा शुद्धः सदा बुद्धः सदा मुक्तगुणः) लोकन के आदि उत्पत्ति कर्ता भंत संहार कर्ता मध्य पालन कर्ता आपही हौ अद्वैत नित्य एक सदा स्वयं प्रकाश मान रज तमादि विकार रहित सदा शुद्ध सदा बुद्ध अखंडज्ञानरूप सदा लोक बंधन ते मुक्त गुण युक्त है ६ ॥

त्वन्मायासंवृतानां त्वं भासिमानुषविग्रहः ॥ त्वन्नामस्मरतां रामसदा भासिचिदात्मकः ७ रावणेन हतस्थानमस्माकं तेजसा सह ॥ त्वयाद्यनिहतो दुष्ट पुनः प्राप्तं पदं स्वकं ८ एवं स्तुवत्सु देवेषु ब्रह्मा साक्षात्पितामहः ॥ अब्रवीत्प्रणतो भूत्वारामं सत्यपथे स्थितम् ९ ब्रह्मोवाच ॥ वंदे देवं विष्णुमशेषस्थितिहेतुं त्वामध्यात्मज्ञानिभिरंतर्हृदि भाव्यम् ॥ हेया हेयद्वंद्वविहीनं परमेकं सत्तामात्रं सर्वहृदि स्थंदृशिरूपम् १० प्राणापानौ निश्चयबुद्ध्या हृदि रुध्वा छित्त्वा सर्वसंशयबंधं विषयौ धान् ॥ पश्यंतीं शयंगतमोहाय तयस्तं वंदे रामं रत्नकिरीटं विभासम् ११ ॥

(रामत्वन्मायासंवृतानां त्वं मानुषविग्रहः भासित्वन्नामस्मरतां सदाचिदात्मकः भासि) हे रघुनाथ जी आप की माया करि आच्छादित जे पुरुष हैं तिन को आप मानुष विग्रह देखि परते हौ अरु जे आप को नाम स्मरण करते हैं तिन भक्तन को सदा अखंड ज्ञानरूप देखि परते हौ ७ (ते जसा सह अस्माकं स्थानं रावणेन हतं अद्य दुष्टः त्वया निहतः पुनः स्वकं पदं प्राप्तं) हे श्री रघुनाथ जी तेज अर्थात् बल प्रताप वीरतादि सहित हमारा बास स्थान रावणने हरिलिया महाबिपत्ति में परे रहे अब दुष्ट रावण आप करिकै मारा गया हम लोग पुनः अपने पद को प्राप्त भये ८ (एवं देवेषु स्तुवत्सु पितामहः साक्षात् ब्रह्मा प्रणतो भूत्वा सत्यपथे स्थितम् रामं अब्रवीत्) इस प्रकार देवतों के स्तुति करत संते जगत् के पितामह हम साक्षात् ब्रह्मा नम्र होकै सन्मार्ग में स्थित जो रघुनाथ जी तिन प्रति बोलते भये ९ (अशेषस्थितिहेतुं विष्णुं देवं त्वां वंदे) ब्रह्मा बोले हे रघुवंशनाथ संपूर्ण लोकन के पालन में कारण भूत विष्णु देव जो आप तिनहि में प्रणाम करता हौ कैसे हौ आप (आत्मज्ञानिभिः अंतर्हृदि भाव्यम्) आत्म तत्त्व को ज्ञान है जिनके ऐसे पुरुषों करिकै अंतर हृदय में ध्यान करिकै जाने गयो है पुनः कैसे हौ (हेयं अहेयद्वंद्वविहीनं) हेय त्याग करिबे योग्य यथा असत्कर्म दुःख शत्रु आदि अहेय जो नहीं त्यागिबे योग्य यथा सत्कर्म सुख मित्रादि इति अहित हित जो द्वंद्व भाव त्यागि करिकै विशेषि हीन हौ भाव शत्रु मित्र रहित हौ पुनः कैसे हौ (परं एकं सत्तामात्रं सर्वहृदि स्थंदृशिरूपम्) सबसे पर अद्वितीय सत्ता आत्मधारणामात्र सबके हृदय में स्थित ज्ञान रूप हौ १० (निश्चय बुद्ध्या प्राण अपानौ हृदि रुध्वा विषयाः ओधान् संशयबंधं सर्वं छित्त्वा गतमोहाय तयः यं ईंशं पश्यंतीं रत्नकिरीटं रविभासं रामं वंदे) हठयोग करिकै हम परमात्मा रूप को जानि लेंगे इति निश्चय बुद्धि करिकै प्राण जो नासिका द्वारा निसरनेवाला पवन है अरु अपान जो गुदाद्वारा निसरनेवाला है पवन है तिनहि हृदय में रोकिकै अर्थात् यमनियम प्रत्याहारादि साधन युक्त पदमासन करि एकसोंसा मूँदि दूसरे द्वारा जहां तक पवन खैचा जाय सो प्रणव उच्चारण पूर्वक खैचि जहां तक थाभा थभै तहां तक दोऊ श्वासा मूँदि थांभिराखै पुनः दूसरे श्वासा धीरा धीरा छाड़ै पुनः पूर्ववत्करणा इस भांति उरभंतरमें पवन रोकने ते इन्द्री मनादि स्वाधीन थिरहै जाते हैं सो इंद्रिन को स्वाधीन करि शब्दस्पर्श रूपरस गंध मैथुनादि जो विषयी समूह हैं तिनहि छित्त्वा छेदन करि पुनः मनादि स्वाधीन करि संसार सांचा है वा भूँठा इति संशय ईश्वररूप कैसा है इति संशय इत्यादि सब संशय छेदन करि भाव देह व्यवहार

मिथ्या त्यागि आत्मरूपते परमात्माकी प्राप्ति निश्चयकरि इति मोह जो अज्ञान सो जातरहा है जिन में ऐसे यतयः संन्यासी लोग धारणा ध्यान समाधिकरि जिसअंतर्गामी ईश्वरको देखते हैं तिनहीं ईश्वर मूर्तिमान् श्याम सुंदर रत्न कीटादि भूषणयुक्त ऐसे जोराम रघुवंशनाथ हैं तिनहिं हम बंदना करते हैं ११ ॥

मायातीतमाधवमाद्यंजगदादिमानातीतमोहविनाशमुनिवन्द्यम्॥योगिध्येययोग
विधानं परिपूर्णं वंदे रामं रंजितलोकं रमणीयम् १२ ॥

(मायातीति) मायातेपरे अर्थात् सूर्यवत् प्रकाशमान कारण मायाके गुणजीव बुद्धी अरु कार्य माया के गुणदेहाभिमान इत्यादि जामें स्पर्श नहीं करते हैं शुद्धपरमात्मरूप पुनः (माधवं आद्यंजगत् आदि) मालक्ष्मी ताके धवपति सबसों आदिजो पररूप जगत्के आदि कारण पुनः (मानातीति) मानरहित अर्थात् सब देश सब काल में एक आपही परिपूर्णदूसरा है नहीं तबमान किस पदार्थकोहोय पुनः (मोहविनाशमुनिवन्द्यम्) अपने दासुनको मोहांकार नाशकरने वाले मुनिनकरिके बंदना करने योग्यपुनः (योगिध्येययोगविधानं परिपूर्ण) योगिन करिके ध्यानकरिके योग्य योग शास्त्रके प्रवर्तक सर्वत्र परिपूर्ण व्यापक पुनः (रंजितलोकं रमणीयं रामवंदे) कृपादया क्षील सौलभ्य उदारता करुणा सौहार्दादि आपने दिव्यगुणों करिके आनंद देनहारे लोकके अत्यंत रमणीय अर्थात् श्यामसुंदर मनोहर मूर्ति जो श्रीरघुवंशनाथ तिनहिं हम बंदना बारबार प्रणाम करते हैं १२ ॥

भावाभवप्रत्ययहीनं भवमुखैर्भोगाशक्तैरर्चितपादांबुजयुग्मम् ॥ नित्यं शुद्धं बुद्धम
नंतं प्रणवारुख्यं वंदे रामं वीरमशेषासुरदावम् १३ त्वं मे नाथो नाथितकार्याखिलकारी
मानातीतो माधवरूपो खिलधारी ॥ भक्त्या गम्यो भावितरूपो भवभयहारी योगाभ्या
सैर्भावितचेतः सहचरी १४ त्वामाद्यंतलोकपतिनां परमीशं लोकानां नोलौकिक
मानैर्धगम्यम् ॥ भक्तिश्रद्धाभावसमेतैर्भजनीयं वंदे रामं सुंदरमिंदीवरनीलम् १५

(भावअभावप्रत्ययहीनं) प्रीति विरोधकी आधनिता रहित समदर्शी (भवमुखैः भोगाशक्तैः अर्चित पादांबुजयुग्मम्) शिवहैं मुखिया जिनमें ऐसेविषे भोगोंको त्यागिदियाहै जिन्होंने ऐसे विरागमान योगियों करिके पूजितहैं पदकमल दोऊजिनके (नित्यं शुद्धं बुद्धमनंतं प्रणवारुख्यं) नित्यसदा एकरस शुद्ध विज्ञान धाम जिनको अंतकोऊ नहीं जानत अंकारनामहै जिनको (अशेषासुरदावम्वरिरं वंदे) संपूर्ण असुर रूपवनके भस्म करता दावानल ऐसे वीररामको हमबंदना करते हैं १३ (त्वं मे नाथः नाथितकार्याखिलकारी) हे रघुनंदन आप मेरे स्वामीहौ रावणा दिव्यहेत जोभैं पूर्व आपसों प्रार्थनाकीन्हें उसे संपूर्ण कार्य आपने पूराकिया (मानातीतः माधवरूपः अखिलधारी) कौन देश मेहों कौन में नहीं किसकालमेंहौ किसमेंनहीं कौनरूपमेंहौ कौन में नहीं इत्यादि परिच्छेद रहित लक्ष्मीके पतिविष्णुरूप सबको धारण करणहारेहौ (भक्त्या गम्यः भावितरूपः भवभयहारी) नवधाप्रेमा परादि केवल भक्तिकरिके प्राप्तहोतेहौ जोकोई ध्यानकरि तुम्हारा रूप हृदयमें राखतहैं ताके भव बंधनहरि मुक्तकरतेहौ (योगाभ्यासैर्भावितचेतः सहचरी) यमनियमआसन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यादि योगाभ्यासोंकरके शुद्धकियागया है चित्त जिसमें तिनके संगविचरने वालेहौ १४ (त्वामाद्यंतलोकपतिनां परमीशं) आप जो आदिसृष्टिकर्ता अंतःसंहारकर्ता लोकन के

पति परमईशहौ (लोकान्तर्लौकिकमानैःअधिगम्यमनः) लोकनके पालनहारे भरुलौकिकप्रमाणों करिकै प्राप्तनहींहोतेहौ अर्थात् वेदशास्त्रों करिकै जानेजातेहौ (भक्तिश्रद्धाभावसमेतैः भजनीयं) भक्ति श्रद्धा भावयुक्तपुरुषों के सेवन करिवे योग्य (इंदीवरनीलसुंदररामबंधे) नील कमल तुल्यश्याम सुंदरतन ऐसे जो राम तिनहिं हमबंधना करते हैं १५ ॥

कोवाज्ञातुंत्वामतिमानंगतमानंमानासक्तोमाधवसक्तोमुनिमान्यम् ॥ वृंदारण्येवं दितवृंदारकवृंदंवंदेरामंभवमुखवंद्यंसुखकंदम् १६ नानाशास्त्रैर्वेदकदंबैःप्रतिपाद्यं नित्यानंदंनिर्विषयज्ञानमनादिम् ॥ मत्सेवार्थमानुषभावंप्रतिपन्नंवंदेरामंमर्कतवर्णं मथुरेशं १७ श्रद्धायुक्तोयःपठतीमंस्तवमाद्यंब्राह्मंब्रह्मज्ञानविधानंभुविमर्त्यः ॥ रा मंश्यामंक्रामितकामप्रदमीशंध्यात्वाध्यातापातकजालैर्विगतःस्यात् १८ श्रुत्वा स्तुतिंलोकगुरोर्विभावसुःस्वांकेसमादायविदेहपुत्रिकाम् ॥ विभ्राजमानांविमलारुणद्युतिरंक्तांवरांदिव्यविभूषणान्विताम् १९ ॥

(अतिमानंगतमानंमाधवत्वांमानासक्तःकोवाज्ञातुंसक्तःमुनिमान्यम्वृंदारण्येवंद्वंदारकवृंदंवदितभव मुखवंद्यंसुखकंदरामबंधे) सबमें व्यापक जाकी गति कोई जानि नहीं सकत हे लक्ष्मीनाथ ऐसेआपको विषयासक्त पुरुषको जानवेको समर्थ है मुनिन करिकै बंदित वृंदावन में कृष्णअवतार में देवता समूह बंदना करेहैं भाव विनाजाने वालक बछवा हरिजाने पीछेमें बंदना कीन्हेउ तथा ब्रज-पर अति वृष्टिकरि पीछे इन्द्रवन्दना कीन्हे नंदको ग्रहण करि पीछे वरुण इत्यादि शिवादिकनकेबंदना करिवे योग्य सुखरूपी जल वर्षिवेको मेघजो राम तिनहिं हम बंदना करते हैं १६ (नानाशास्त्रैर्वेदकदंबैःप्रतिपाद्यम्) मीमांसा वैशेषिक न्याय सांख्य योग वेदांतादि अनेक शास्त्रों करिकै तथाऋ-क्षयजुःतामअथर्वणादि वेद समूहों करिकै वर्णन करिवे योग्य (नित्यानंदंनिर्विषयज्ञानंअनादिं) नि-त्यआनंद मूर्ति विषय रहित अखंड ज्ञान जिनकी आदि कोऊ नहीं जानत (मत्सेवार्थमानुषभावंप्र-तिपन्नं) मेरी प्रार्थना ते इतिमेरी सेवाके अर्थ मानुष भावको प्राप्तभये (मर्कतवर्णमथुरेशरामबंधे) मर्कत मणिसम श्यामवर्ण मथुराके ईश जो राम तिनहिं प्रणाम करताहौ १७ (कामितकामप्रदंईशं श्यामंरामंध्यात्वाभुवियःध्यातामर्त्यः श्रद्धायुक्तःइमंब्रह्मज्ञानविधानं आद्यंब्राह्मंस्तवंपठतिपातकजालैः विगतःस्यात्) सकामी पुरुषनको मनोकामना देनेवाले ईश्वर श्यामस्वरूप रामको ध्यान करिकै पृथिवी विषे योध्यानकरणे वाला मनुष्यश्रद्धा सहित इस ब्रह्मज्ञानके करनेवाले आद्यब्रह्माको किया हुवास्तोत्रको पढ़ताहै सो पातक जालोंसे छूटि जाताहै १८ (लोकगुरोःस्तुतिंश्रुत्वाविभावसुःविमल अरुणद्युतिविभ्राजमानांरंक्तांवरांदिव्यविभूषणान्विताम्विदेहपुत्रिकांस्वांकेसमादाय) ब्रह्माकी स्तुति सुनिकै ताही समय अग्नि प्रसिद्धभये अमल अरुण तन की कांति विराजमान अरुण वस्त्र दिव्यभू-षण युत विदेह पुत्रिको अपने अकोरामें लैकै १९ ॥

प्रोवाचसाक्षीजगतांरघूत्तमंप्रपन्नसर्वातिहरंहताशनः॥गृहाणदेवीरघुनाथजानकीं पुरात्वयामप्यवरोपितांविने २० विधायमायाजनकात्मजांहरेदशाननप्राणविनाश-नायच ॥ हतोदशास्यःसहपुत्रवांधवैर्निराकृतोनेनभरोभुवःप्रभो २१ तिरोहिता साप्रतिविम्बरूपिणीकृतायदर्थंकृतकृत्यतांगता ॥ ततोपिहृष्टांपरिगृह्यजानकीं

रामः प्रहृष्टः प्रतिपूज्य पावकम् २२ स्वांके समावेश्य सदानपायिनीं श्रियं त्रिलोकीजन
नीं श्रियः पतिः ॥ दृष्ट्वा धरामं जनकात्मजायुतं श्रियस्फुरंतं सुरनायको मुदा २३
भक्त्या गिरागद्गदया समेत्य कृतांजलिः रतो तु मथोपचक्रमे ॥

(प्रपन्नसर्वातिहरं रघुनाथं जगतां साक्षीं हुताशनः प्रोवाच रघुनाथ त्वया पुरावने मयि अवरोपितां जानकीं
देवीं गृहाण) शरणागत जनकों के सब प्रकार के दुःखों के हरण हारे जो रघुनन्दन तिन प्रतिजगत्साक्षी
अग्नि धोलते भये हे रघुनाथ आपने पूर्वहीं वनमें मेरे विषे जिनको अवरोपित किया रहै तिन जा-
नकी देवीको ग्रहण कीजिये २० (हरेदशानन प्राणविनाशनाथ मायाजनकात्मजां विद्याय च सह पुत्रवां य
वैः दशास्यः हतः प्रभो मनेन भुवः भरः निराकृतः) हे हरे रावण के प्राणनाश करने अर्थ आपने मा-
याकी जानकी को रचिकै पुनः सहित पुत्रवां यवनरावणको मारि हे प्रभो इस रावण के वध करिके
भूमिको भार दूर कर दिया २१ (यत्प्रर्थं प्रतिविं वरूपिणी साकृताकृतकृत्यतां गतातिरोहिताततः
प्रहृष्टः रामः पावकं प्रतिपूज्य भतिहृष्टां जानकीं परिगृह्य) जिस कार्यार्थ प्रतिविं वरूपिणी सीता को
रचीरहै तिस कार्य को पूरा करि कृतार्थता को प्राप्त है भंतर्द्वान् होगई इति सुनितदन्तरानन्द सहित
रघुनन्दन अग्नि को पूजन करिके तब अत्यंत आनंद युत जो जानकी तिनहिं ग्रहण करि २२
(त्रिलोकी जननी सदान पायिनी श्रियं श्रियः पतिः स्वयंके समावेश्य जनकात्मजायुतं श्रियास्फुरंतं रामं
दृष्ट्वा भयसुरनायकः मुदा) तीनिहु लोकन की उत्पत्ति पालन करणहारी माता सदा समीप रहने
वाली सीता रूप लक्ष्मीको लक्ष्मीनाथ रघुनाथजी वाम अकोरामें बैठारे सो जानकी सहित शोभा
करिकै प्रकाशमान रघुनन्दन को देखि अब इंद्र आनंद सहित २३ (कृतांजलिः भक्त्या समेत्य ग
द्गदया गिरागद्गदयास्तोतुं उपचक्रमे) हाथ जोरि भक्ति समेत गद्गदवाणी अर्थात् प्रेम उमंगि कंठारोष
है गया ताते अपुष्टाक्षरवचनो करिकै अब स्तुतिकरने लगे ॥

इंद्र उवाच ॥ भजे हंसदारा ममिंदीवराभं भवारण्यदावानलाभाभिधानम् ॥ भवा
नीहदाभा वितानंदरूपं भवाभावहेतुं भवादिप्रपन्नम् २४ सुरानी कदुःखौघनाशक
हेतुं नराकारदेहं निराकारमीड्यं ॥ परेशं परानंदरूपं वरेण्यं हरिराममीशं भजे भारना
शम् २५ प्रपन्नाखिलानंददोहं प्रपन्नं प्रपन्नार्तिनिःशेषनाशाभिधानम् ॥ तपोयोग
योगीशभावाभिभाव्यं कपीशादिमित्रं भजे राममित्रम् २६ सदाभोगभाजां सुदूरे वि
भातंसदायोगभाजामदूरे विभातम् ॥ चिदानंदकंदसदाराधवेशं विदेहात्मजा
नंदरूपं प्रपद्ये २७ ॥

(भवभरण्यदावाभनलभाभभिधानम्) इंद्र बोले कि संसार रूपी वन के जराय देने हेतु दावा-
नल सम है नाम जिनको (भवानीहदाभा वितानंदरूपं) पार्वती के हृदय करिकै ध्यान सो आनंद
उत्पन्न किया है रूप जिनको (भवअभावहेतुं भवादिप्रपन्नम्) भवदुःख के नाशके हेतु शिवादि-
कों करिकै सेवित (इंदीवराभं रामं भजे हंसदामजे) नील कमल समतन की कांति है जिनकी ऐसे
रघुनाथजी को हम सदा भजन करते हैं २४ (सुरानी कदुःखौघनाशकहेतुं) देवता की सेना को
दुःख जो समूह ताके नाश करिवे के एकहेतु हैं जो (निराकारं ईड्यं निराकारदेहं) वास्तव में आकार
रहित सबके वदना करिवे योग्य सीई रूप करि लोकोद्धार हेतु नराकार देह है जिनकी (परेशं परा

नंदरूपंवरेण्यभारनाशहरिरामईशंभजे) सवरूपों ते परईश परम आनंद रूपश्रेष्ठ भूभारनाशकहरि राम ईश्वर को भजन करता हों २५ (प्रपन्नअखिलआनंदोहं) शरणागत पुरुषनको संपूर्ण आनंद के देने वाले (प्रपन्नप्रपन्नआर्तिनिः शेषनाशाभिधानं) भक्त शरणागतनके दुःख संपूर्ण नाश करत हारा जिन को नाम है (तपःयोगयोगीशभावाभिभाव्यं कपीशादिमित्रराममित्रंभजे) जलशयन पंचाग्नि आदि तपयमनिय मासन प्रत्याहार प्राणायाम धारणा ध्यान समाधि इत्यष्टांग योगादि करने वाले योगेश्वर प्रीति भाव से अंतर में ध्यानकरि प्राप्त होने योग्य सोईप्रभु कृपाकरि लोको द्वार हेत माधुर्य रूपते बानर राज के मित्र भये ऐसे राम सूर्यवत् प्रतापवंत को हम भजते हैं २६ (भोगभाजांसदासुदूरेविभांतयोगभाजांसदाअदूरेविभांत चिदानंदकंदंविदेहात्मजानंदरूपंराघवेशंसदा प्रपद्ये) स्त्री भोजनादि बिपय भोगन को जे सेवन करते हैं तिनकोसदा अत्यंत दूर देखाते हैं अरु योग के सेवने वाले जेहैं तिनहिं सदा निकट देखाते हैं चैतन्यता आनंदके मूल जानकी जीके सदा आनंद रूप आनंद देनेहारे रघुवंश नाथ की शरण को हम सदा प्राप्तहैं २७ ॥

महायोगमायाविशेषानुयुक्तोविभासीशलीलानराकारवृत्तिः ॥ त्वदानंदलीलाक
थापूर्णकर्णाःसदानंदरूपाभवन्तीहलोके २८ अहंमानपानोभिमत्तप्रमत्तो नवेदा
खिलेशाभिमानाभिमानः ॥ इदानींभवत्पादपद्मप्रसादात्तिलोकाधिपत्याभिमानो
विनष्टः २९ स्फुरद्रत्नकेयूरहाराभिरामंधराभारभूतासुरानीकदावम् ॥ शरच्चंद्र
वक्त्रंलसत्पद्मनेत्रंदुरापारपारंभजेराघवेशम् ३० सुराधीशनीलाभ्रनीलांगकां
तिविराधादिरक्षोवधात्लोकशांतिं ॥ किरीटादिशोभंपुरारातिलाभंभजेरामचंद्रंरघू
णापधीशम् ३१ ॥

(ईशमहायोगमायाविशेषानुयुक्तः लीलानराकारवृत्तिः विभासित्वत् आनंदलीलाकथापूर्णकर्णाः इहलोकेसदानंदरूपाभवन्ति) हेईश आपकी जो महा योग मायाहै ताके सत्त्वादि गुणों करिके युक्त आप जैसे अरुण फूलों के समीप स्फटिक मणि अरुण देखातीहै तैसेही लीला करिके माया युक्त आपमें मानुष कैसा स्वरूप तैसेही व्यापार देखाता है सोई रूपते आपकी जो आनंद मय लीला ताकी कथा श्रवण करिके परिपूर्ण हैं कान जिनके ते पुरुष इसी मृत्युलोक में सदा आनंद रूप होते हैं २८ (अखिलेशाभिमानाभिनिः मानपानाभिमतप्रमत्तः अहंनवेद) जैसे मंडलेश्वर राजोंके अभिमान होता है ताही तुल्य अभिमान त्रिलोकराज को अहंकार रूप मद पान करि मतवारा ताते महामत्त हैं मैं आपको नहीं जान्यो (इदानीं भवत्पादपद्मप्रसादात्) अबआपके पद कमलों के दर्शन प्रसादते (त्रिलोकाधिपत्याभिमानविनष्टः) तीनिहूं लोकन के राज पदको जो मेरे अभिमानरहै सोनाशभया २९ (शरच्चंद्रवक्त्रं लसत्पद्मनेत्रं स्फुरत्त्रत्नकेयूरहाराभिरामं धरा भारभूतःअसुरअनीकदावमदुःअपारपारंराघवेशंभजे) शरदृष्टतुके अमल पूर्ण चंद्रवत् मुख शोभित कमल सम नेत्र प्रकाश मान रत्नजटित बहूटा मणिनके हार तिन करिके शोभायमान भूमिके भार होते भये समूह राक्षसबनवत् भस्म करिबेको दावानलदुःखों करि अपार है पार जिन को ऐसे रघुवंश नाथ को भजताहों ३० (नीलअभ्रनीलअंगकांतिं किरीटादिशोभंविराधादिरक्षोवधात् लोक शांतिपुरआराति लाभंरघूणांअधीशं सुराधीशं रामचंद्रंभजे) सजल नीलमेखवत् श्याम अंगकी कांति जिनके सर्वांग में किरीटादि भूषणों करिके शोभाहै विराधादि राक्षसोंको मारनेतेलोक उपद्रव शांति

करने वाले त्रिपुरासुर के शत्रु जोशिव तिनको महारत्नवत् लाभरूप ऐतेरघुवंशनाथ देवनमें महाराज रामचन्द्र को हम भजतेहैं ३१ ॥

लसच्चंद्रकोटिप्रकाशादिपीठेसमासीनमंकेसमाधायसीताम् ॥ स्फुरद्धेमवर्णीतडि
त्पुंजभासांभजेरामचंद्रनिवृत्तार्तिंतद्रम ३२ ततःप्रोवाचभगवान्भवान्यासहितो
भवः ॥ रामंकमलपत्राक्षंविमानस्थोनभस्थले ३३ आगमिष्याम्ययोध्यायांद्रष्टुं
त्वांराज्यसत्कृतम् ॥ इदानींपश्यपितरमस्यदेहस्यराघव ३४ततोपश्यद्विमानस्थं
रामोदशरथंपुरः ॥ ननामशिरसापादौमुदाभक्त्यासहानुजः ३५ आलिंग्यमूर्ध्न्य
वघ्रायरामंदशरथोब्रवीत् ॥ तारितोस्मित्वयावत्संसारदुःखसागरात् ३६ इत्यु
क्त्वापुनरालिंग्यययौरामेणपूजितः॥रामोपिदेवराजंतंदृष्ट्वाप्राहकृतांजलिम् ३७॥

(हेमवर्णस्फुरत्तटित्पुंजभासांसीतां अंकेसमाधायलसत्चंद्रकोटिप्रकाशादिपीठेसमासीनं आ
र्तिंतद्रानिवृत्तरामचंद्रंभजे) सोने सम अंगवर्ण देदीप्यमानतामें विजुली समूहकीसी प्रकाश है रही
ऐसी सीताको घाम अकोरामें लीन्दे अरु शोभित है रत्न समूह तिनते चंद्रमा कोटिन सम प्रकाश
है जामें ऐसे सिंहासन पर बैठेहुये दुःख आलस्य रहित प्रसन्न सदा स्वयंप्रकाशमान जो रामचन्द्र
तिनहिं हम भजते हैं ३२ (ततःनभस्थलेविमानस्थःभवान्यासहितःभगवन्भवःकमलपत्राक्षरामं
प्रोवाच) ताही समय आकाश विषे विमानपर स्थित पार्वती सहित भगवान् शिव संमुख है कम-
लदलवत् नेत्र जो रघुनाथजी तिनप्रति बोलते भये ३३ (राघवअयोध्यायांराज्यसत्कृतमूत्वांद्रष्टुंआ
मिष्यामिइदानींअस्यदेहस्यपितरमपश्य) शिवबोले हे राघव अयोध्याजी में राज्याभिषेक समय
आपके देखने हेत मैं आवौंगो अब या समय यह जो आपकी देहको पिता है दशरथ ताहिदेखिये
३४ (ततःपुरःविमानस्थंदशरथंअपश्यत्सहानुजःरामःमुदाभक्त्याशिरसापादौननाम) तदनन्तर
आगे विमानपर स्थितदशरथको देखिकै सहित लक्ष्मणरघुनन्दन प्रानंदसहित भक्तिसेशीशनायकरिकै
पितृपांयनको प्रणाम कीन्दे ३५ (रामंआलिंग्यमूर्ध्निअवघ्रायदशरथःअब्रवीत्त्वत्सदुःखसागरात्संसार-
तूत्त्वयातारितोस्मि) रघुनन्दन को हृदय में लगाय शिरसूँधि दशरथ बोलतेभये हेवत्स दुःखको समु-
द्रसंसारते तुमने मोको पार उतारा ३६ (इतिउत्कारामेणपूजितःपुनःआलिंग्यययौरामःअपिदेवरा-
जंदृष्ट्वातंकृतांजलिंप्राह) ऐसा कहि रघुनन्दन करिकै पूजित दशरथ पुनः रघुनन्दन को उरमें लगा-
यजातेभये तव रघुनन्दन भी इंद्रकोदेखि तिनप्रति हाथ जोरि प्रभु बोलतेभये ३७ ॥

मत्कृतेनिहतान्संख्येवानरान्पतितान्भुवि ॥ जीवयाशुसुधावृष्ट्यासहस्राक्षम
माज्ञया ३८ तथेत्यमृतवृष्ट्याताञ्जीवयामासवानरान् ॥ येयेमृतामृधेपूर्वतेतेसु
सोत्थिताइव ॥ पूर्ववत्त्रलिनोहृष्टारामपाश्वर्मुपाययुः ३९ नोत्थिताराक्षसास्तत्र
पीयूषस्पर्शनादपि॥ विभीषणस्तुसाष्टांगंप्रणिपत्याब्रवीद्वचः४०देवमामनुगृह्णी
ष्वमयिभक्तिर्यदातव ॥ मंगलस्नानमद्यत्वंकुरुसीतासमन्वितः४१ अलंकृत्य
सहभ्रात्राश्वोगमिष्यामहेवयम् ॥ विभीषणवचःश्रुत्वाप्रत्युवाचरघूत्तमः ४२ ॥

(सहस्राक्षमत्कृतेसंख्येनिहतान्भुविपतितान्वानरान्ममाज्ञयासुधावृष्ट्याआशुजीवय) हे इन्द्र
मेरेहेत संग्राम में राक्षसोंकरिकै मारेगये भूमिमें परेजो वानर तिनहिं मेरी आज्ञा करिकै अनुगृह्ये

करिके शीघ्रही जियावो ३८ (तथाइतिअमृतवृष्ट्यावानरान्तान्जीवयामास) बहुत भली ऐसा कहि इंद्र अमृतकी वर्षा करिके मरेहुये जे वानर तिनहिं जिआवते भये (पूर्वमृधेयेमृतातेते सुप्तइ वडात्थितापूर्ववत्त्वलिनःदृष्टारामपार्श्वउपाययुः) पूर्वसंग्राम बिषेयेये वानर मरेपरे रहैं तेते सब सो-
वतेके तुल्य जागि उठि उठि पूर्वकी नाई बली आनंद सहित रघुनन्दन के पालको आवते भये ३९ (तत्रपियूषस्पर्शनात्अपिराक्षसाःनउत्थिता) तहां अमृत के स्पर्शभये तेभी मरे राक्षस नहीं जीउठे अर्थात् प्रभुके हाथमरे मुक्तहैं जिस धामको गये तहांते लौटारि लानेको अमृतको शक्तिही नहीं है तौ उनजीवनको कैसे लाय जिलायसकै अथवा प्रभुकी प्रतिज्ञा राक्षसों के मारने की हैअरु वान-
रोंके जिलावनेकी है सो कैसे अमृत प्रतिकूल करिसकै ताते प्रभुकीमाझा अनुकूल वानरों को अमृ-
तने जिलाया राक्षसों को नहीं जिलाया (तुविभीषणःसाष्टांगप्रणिपत्यवचःअब्रवीत्) पुनःविभीष-
णसाष्टांगप्रणाम करि प्रभु प्रति वचन बोलते भये ४० (देवयदामयितवभाकिमांअनुग्रहणीष्वसी तासमन्वितःत्वंअद्यमंगलस्नानंकुरु) विभीषण बोले हे देव रघुनन्दन जो मेरे ऊपर आपकी प्रीति है तौ मेरे ऊपर अनुग्रह कीजिये अपनाबनाइये इससे सीता सहित आप या समय में मंगल उब-
टनलगायस्नान कीजिये ४१ (सहभ्रात्राभलंकृत्यश्वःवयंगमिष्यामहेविभीषणवचः श्रुत्वारघूत्तमःप्र-
त्युवाच) सहित लक्ष्मण नवीन बसन भूषणधारण करि आज इहांरहौ कालिहम आप अयोध्या जीको चलैंगे इति विभीषणके वचन सुनिके रघुनाथजी बोलतेभये ४२ ॥

सुकुमारोतिभक्तोमे भरतोमामवक्षेते ॥ जटावलकलधारीसशब्दब्रह्मसमाहि-
तः ४३ कथंतेनविनास्नानंअलंकारादिकंमम ॥ अतःसुग्रीवमुख्यांस्त्वंपूजयाशु-
विशेषतः ४४ पूजितेषुकर्पीद्रेषुपूजितोऽहंनसंशयः ॥ इत्युक्तोराघवेणाशुस्वर्णर-
त्नावराणिच ४५ वर्षराक्षसश्रेष्ठेयथाकामंयथारुचि ॥ ततस्तान्पूजितान्दृष्ट्वा-
रामोरत्नैश्चयूथपान् ४६ अभिनंदयथान्यायंविसर्जहरीश्वरान् ॥ विभीषण-
समानीतंपुष्पकंसूर्यवर्चसम् ४७ आरुरोहततोरामस्तद्विमानमनुत्तमम् ॥ अंके-
निधायवैदेहींलज्जमानायशस्विनीम् ४८ ॥

(मेभक्तःअतिसुकुमारःभरतःमांअवेक्षतेसजटावलकलधारीशब्दब्रह्मसमाहितः) हे विभीषणमेरा भक्त अत्यन्त सुकुमार भरतमेरेहीसमान सोऊ जटा बलकल बसनधारण किहे शब्द ब्रह्म जो अंकार ताके ध्यानमें तत्परहै ४३ (तेनविनाकथंममस्नानंअलंकारादिकंअतः सुग्रीवमुख्यांविशेषतःत्वं आशु पूजय) तिन भरत बिना कैसे मेरा स्नान भूषण धारणादि है सका है भावमेरी राहदेखताहै जोअव-
धिपर न जाउँ तौ प्राणत्यागकरै इससे सुग्रीवादिबानरोंको विशेषि करिके तुमशीघ्रही पूजनकरौ ४४ (कर्पीद्रेषुपूजितेषु अहंपूजितः संशयः नइतिराघवेणउक्तः आशुस्वर्णरत्नंचअंबराणिराक्षसश्रेष्ठः वर्ष) बानरोंके पूजतसंते हमहीं पूजेगये यामें संशय नहीं है ऐसा रघुनन्दन ने कहा तब शीघ्रही सोना रत्न पुनः बसनादि विभीषण वर्षतेभये ४५ (यथाकामंयथारुचिः ततःरामः रत्नैःचपूजितान् यूथपान् तान्दृष्ट्वा) जैसी जाकी कामनारही जैसी जाकी रुचिरही तैसा सो लीन्हे तदनन्तर रघुनन्दन रत्नों करिके पूजित जो यूथपती बानर तिनहिं देखिके ४६ (यथान्यायंअभिनंदयहरीश्वरान् विसर्ज सूर्यवर्चसम्पुष्पकंविभीषणसमानीतं) जिसको जैसी उचितरहै तैसा तांको प्रशंसा करिके रघुनन्दन वानरेश्वरोंको बिदा कीन्हे ताही समय सूर्यवत् प्रकाशमान पुष्पक विमानको विभीषण लावते भये

(ततःलज्जमानायशस्विनीम् वैदेहींश्रंकेनिधायरामःतत्प्रनुत्तमंविमानंआरुरोह) तदनन्तरल-
ज्जावंतहै स्वभावजिसको उत्तम आचरणकरि यशउपजावने वाली जो विदेह पुत्री तिनहिं अकोरा
में लैकै रघुनन्दन उसी उत्तमपुष्पक विमान पर सवार होतेभये ४८ ॥

लक्ष्मणेनसहभ्रात्राविक्रातेनधनुष्मता ॥ अब्रवीच्चविमानस्थःश्रीरामःसर्ववान-
रान्४९सुग्रीवंहरिराजंचअंगदंचविभीषणम् ॥ मित्रकार्यकृतंसर्वंभवद्भिःसहवान-
रैः५० अनुज्ञातामयासर्वेयथेष्टंगंतुमर्हथ॥सुग्रीवप्रतियाह्याशुकिर्णिकिधांसर्वेसैन-
कैः५१ स्वराज्येवसलंकायांममभक्तोविभीषणः ॥नत्वांधर्षयितुंशक्ताःसैन्द्राअपिदि-
वौकसः५२ अयोध्यांगंतुमिच्छामिराजधानींपितुर्मम ॥एवमुक्तास्तुराभेणवानरा-
स्तेमहाबलाः५३ ऊचुःप्रांजलयःसर्वेराक्षसश्चविभीषणः ॥ अयोध्यांगंतुमिच्छा-
मस्त्वयासहरघूत्तम ५४ ॥

(विक्रातेनधनुष्मताभ्रात्रालक्ष्मणेनसहविमानस्थः श्रीरामः चसर्ववानरान्अब्रवीत्) बीर धनुष
धारी भ्राता लक्ष्मणकरिकै सहित विमान पर सवार रघुनन्दन पुनः वानरन प्रतिबोलते भये ४९
(हरिराजंसुग्रीवंचअंगदंचविभीषणम्सहवानरैःभवद्भिःमित्रकार्यसर्वकृतं) वानरोंके राजा सुग्रीव प्रति
पुनः अंगदप्रतिपुनः विभीषण प्रति रघुनाथजी बोले कि वानरोंकी सेना सहित तुम लोगोंने मित्र
कार्य अर्थात् मित्र जो हम ताको कार्य यावत्तरहा सो सब पूर्ण किया ५० (मयाअनुज्ञाताःसर्वे यथा
इष्टंगंतुमर्हथसुग्रीवसर्वसैन्यकैःकिर्णिकिधांप्रतिआशुयाहि) मेरी आज्ञा करिकै सब जने जैसी इच्छाहोइ
तैसी खुशी सहित घरनको जाने योग्यहौ तुम सुग्रीव सब सेनापतिन सहित किर्णिकिधाको शीघ्रही
जावौ ५१ (विभीषणममभक्तःस्वराज्येलंकायांससइन्द्राःअपिदिवौकसाःत्वांधर्षयितुंशक्ताः) हे वि-
भीषण तुम मेरी भक्ति युक्तहोकै अपनी राज्यको भोगकरतेहुये लंकाविषे वासकरौ अब सहितइन्द्रा
दि दिग्पालभी देवता तुमको तिरस्कार करनेको नहीं समर्थहोसक्ते हैं भाव अभयराज्यकरौ ५२
(ममपितुःराजधानींअयोध्यायांगंतुमिच्छामि एवंगमेणउक्ताः तुतेमहाबलाःवानराः) पुनः मैं अपने
पिताकी राजधानी अयोध्याजीको जानेकी इच्छा करताहौं इस प्रकार रघुनन्दन करिकै कहे गये
पुनः ते महाबली वानर सुग्रीव अंगदादि सब ५३ (सर्वेचराक्षसः विभीषणः प्रांजलयःऊचुःरघूत्तम
त्वयासहअयोध्यांगंतुमिच्छामः) सब वानर पुनःराक्षस विभीषण इत्यादि सबहाथ जोरिकै बोलतेभये
हे रघुवंशनाथ आप करिकै सहित हम लोग अयोध्याजी को चलनेकी इच्छा कि हे हन ५४ ॥

दृष्ट्वात्वामभिपिक्तंतुकौशल्यामभिवाच्यच ॥ पश्चाद्वृणीमहेराज्यमनुज्ञांदिहिनःप्रभो
५५ रामस्तथेतिसुग्रीववानरैःसविभीषणः ॥ पुष्पकंसहनूमांश्चशीघ्रमारोहसां
प्रतम् ५६ ततरतुपुष्पकंदिव्यंसुग्रीवःसहसेनया ॥ विभीषणश्चसामात्यःसर्वेचा-
रुरुहुर्दुतम् ५७ तेष्वारूढेषुसर्वेषुकौवेरपरमासनम् ॥ राघवेणाभ्यनुज्ञातमुत्प-
पातविहायसा ५८ बभौतेनविमानेनहंसयुक्तेनभास्वतां ॥ ग्रहष्टश्चतदारामश्च
तुर्मुखइवापरः ५९ ततोबभौभास्करविम्बतुल्यंकुवेरयानंतपसानुलब्धम् ॥ रामे-
णशोभानितरांप्रपेदेसीतासमेतेनसहानुजेन ६० ॥

इत्यध्यात्मरामायण्युद्धकांडेत्रयोदशःसर्गः १३ ॥

(अभिषिक्तत्वाद्दृष्ट्वा तु कौशल्यां अभिवाद्य च पश्चात् राज्यावृणीमहे प्रभोनः अनुज्ञां देहि) राजसिंहासनासीनिराज्याभिषेकयुक्त आपको देखि पुनः माता कौशल्याको प्रणाम करि ताके पाछे राज्य करि बेकी इच्छा करते हैं ताते हे प्रभो हम लोगनको अयोध्याजीको चलनेकी आज्ञा दीजिये ५५ (तथा इति रामः सविभीषणः वानरैः सुग्रीवसह नूमांश्च शीघ्रं सांप्रतम् पुष्पकं ममारोह) जैसा कहते हैं तैसा ही करौ भाव मेरे साथ चलौ ऐसा रघुनाथजी कहें कि सहित विभीषण अंगदादि मुख्य वानरों सहित सुग्रीव सहित हनूमान् शीघ्र ही सब और पुष्पक पर चढ़ौ ५६ (ततस्तु सहसेनया सुग्रीवः च स अमात्यः विभीषणः च सर्वे दिव्यं पुष्पकं द्रुतं आरूढुः) तदनन्तर सहित सेना सुग्रीव पुनः सहित मंत्रिन विभीषण पुनः जाम्बवंतादि और सब सेनापतीते सब दिव्य पुष्पक विमानके ऊपर शीघ्र ही सवार होते भये ५७ (तेषु सर्वेषु भारूढेषु कौवैरं परमासनम्राधवेण अभि अनुज्ञातं विहाय सा उत्पपात) तिन सबके सवार होत संते कुबेरको परमासन जो पुष्पक विमान सो रघुनंदनकी आज्ञा करिके आकाशमार्ग करिके बड़े बेगते चलता भया ५८ (हंसयुक्तेन भास्वता विमानेन तेन प्रहृष्टः च तदारामः अपरः चतुर्मुख इव बभौ) हंसों करिके युक्त जो प्रकाशमान पुष्पक विमान तिस करिके अयोध्याजी में शीघ्र पहुँचना विचारि परम आनंद पुनः ता समय में रघुनंदन हंसयुक्त विमान पर मानौ अपरब्रह्मा हैं ऐसे शोभित होते भये ५९ (तपसानुलब्धं कुबेरानं नितरां शोभां प्रपदे सहानुजेन सीता समे तेन रामेण भास्कर बिम्बतुल्यं बभौ) तपस्या करिके प्राप्त भया जो कुबेरको पुष्पक विमान सो नित्यहीं शोभाको प्राप्त अरु अब सहित लक्ष्मण सीता समेत रघुनंदन करिके युक्त सो सूर्यके बिम्बतुल्य प्रकाशमान होता भया ६० ॥

इति श्री रसिकलताश्रित कल्पद्रुमसिंघवल्लभपदशरणागतं वैजनाथाविरचिते

अध्यात्मभूषणे युद्धकांडे त्रयोदशः प्रकाशः १३ ॥

पातयित्वा ततश्चक्षुः सर्वतो रघुनंदनः ॥ अब्रवीन्मैथिलीं सीतारामः शशिनिभाननाम् १ त्रिकूटशिखराग्रस्थां पश्य लंकां महाप्रभाम् ॥ एतारंणभुवंपश्य मांसकदर्दमपंकिलाम् २ असुराणां प्लवंगानां मन्त्रवैशसनं महत् ॥ अत्र मे निहतः शैतेरावणो राक्षसेश्वरः ३ कुम्भकर्णेन्द्रजिन्मुख्याः सर्वे चान्निपातिताः ॥ एष सेतुर्मया बद्धः सागरे सलिलाशये ४ एतच्च दृश्यते तीर्थसागरस्य महात्मनः ॥ सेतुबन्धमिति ख्यातं त्रैलोक्येन च पूजितम् ५ एतत्पवित्रं परमं दर्शनात् पातकापहम् ॥ अत्र रामेश्वरो देवो मया शंभुः प्रतिष्ठितः ६ ॥

सवैया ॥ थलसीय दिखावत आय प्रयाग मिले मुनिबन्दन को करतै । हनुमान गये कुशलात कहै भरतावर लाय मिले गरतै ॥ सिंघसानुज रावव आगम जानि मुदा पुरलोग चले घरतै । तिन देखत पुष्पक तेउतरे प्रभुसानुज आय मिले भरतै ॥ (ततः सर्वतः चक्षुः पातयित्वा रघुनंदनः शशिनिभाननाम् मैथिलीम् सीताम्रामः अब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा तदनंतर विमान परते सब दिशि नेत्र फेरि रघुनंदन देखिके पुनः चन्द्रवत् प्रकाशमान है मुखजिनको ऐसी मिथिलेशनंदिनी सीता प्रति रघुनंदन बोलते भये १ (त्रिकूटशिखराग्रस्थां महाप्रभाम् लंकां पश्य मांसकदर्दमपंकिलाम् एतारंणभुवंपश्य) हे सीते त्रिकूटाचल पर्वतके शिखर पर बसी हुई महाप्रकाशमान लंका पुरी को देखौ पुनः रक्त मांसके कीचड़से कीचड़वंत यहिरणभूमिको देखौ २ (अत्र असुराणां प्लवंगानां महत् वैशसनं मे निहतः राक्षसेश्वरः रावणः

अत्रशेते) इहां राक्षसोंको वानरोंको महामारभया है हमकरिके मारागया राक्षसों को राजा रावण इहां मृतक शयनकरताभया है ३ (चकुम्भकर्णइंद्रजितमुख्याःअत्रसर्वेनिपातिताः सलिलाशयेसागरे एषेतुमयावद्धः) पुनः कुम्भकर्ण मेघनादादि मुख्ययावत् राक्षसरहे ते इहैं सवमारे गये जलाशय समुद्र में यह सेतु मैंने बांधा है ४ (चएतद्दृश्यतेसागरस्यमहात्मनःतीर्थसेतुबंधं इतिख्यातंचत्रैलो क्येनपूजितम्) पुनः यह दर्शनकरिबे योग्य समुद्रके तीर महान् तीर्थ है सेतुबंध ऐसा नाम प्रसिद्ध पुनः तीनिहुलोकनकरिके पूजित है ५ (अत्रमायारामेश्वरःदेवःशम्भुःप्रतिष्ठितः एतत्परमंपवित्रंदर्श नात्पातकापहम्) हे सीते इसी भूमिका में मैंने रामेश्वरनामे देव शिवजीकी प्रतिष्ठाकिया है ताते यह परम पवित्र तीर्थ है याके दर्शनमात्रते जननके पापनाश है जाते हैं ६ ॥

अत्रमांशरणंप्राप्तोमंत्रिभिश्चविभीषणः ॥ एषासुग्रीवनगरीकिष्किंधाचित्रकानना
७ तत्ररामाज्ञयाताराप्रमुखाहरियोषितः॥आनयामाससुग्रीवःसीतायाःप्रियकाम्य
या ८ ताभिःसहोत्थितंशीघ्रंविमानंप्रेक्ष्यराघवः ॥ प्राहचाद्रिंऋष्यमूकंपश्यन्नाल्य
त्रमेहतः ९ एषापंचवटीनामराक्षसायत्रमेहताः ॥ अगस्त्यस्यसुतीक्ष्णास्यपश्या
श्रमपदंशुभे १० एतेतेतापसाःसर्वेदृश्यन्तेवरवर्णिनि ॥ असौशैलवरोदेविचित्र
कूटःप्रकाशते ११ अत्रमांकैकयीपुत्रःप्रसादयितुमागतः ॥ भरद्वाजाश्रमंपश्य
दृश्यतेयमुनातटे १२ ॥

(अत्रमंत्रिभिःचविभीषणःमांशरणंप्राप्तःचित्रकानना सुग्रीवनगरीएषाकिष्किंधा) इहां मंत्रिनसहित पुनः विभीषण मेरी शरणको प्राप्तभयाहैं विचित्र वनहैं जामें ऐसी सुग्रीवकी नगरी यह किष्किंधाहै ७ (तत्ररामाज्ञयासुग्रीवःसीतायाःप्रियकाम्ययाताराप्रमुखाहरियोषितःआनयामास) अब शिवजी कहत हे गिरिजा जब किष्किंधामें पहुंचे तब रघुनंदनकी आज्ञाकरिके सुग्रीव जानकीजीकी प्रीतिकीकांक्षा करिके तारा आदि वानरनकी स्त्रीनको बुलावतेभये ८ (ताभिःसहशीघ्रंविमानंउत्थितंप्रेक्ष्यचराघवःप्राहऋष्यमू कंअद्रिंपश्यन्अत्रमेवालीहितः) तिनस्त्रियोंकरिके सहित शीघ्रही विमान उठिके चलतदेखि पुनःरघुनंदन बोले कि हेसीते ऋष्यमूक नामे यह पर्वत देखिये इहांमैंने बालीको माराहै ९ (एषापंचवटीनामयत्र मेराक्षसाहताःअगस्त्यस्यसुतीक्ष्णास्यआश्रमपदंशुभेपश्य) गोदावरीतट यह पंचवटी नामे स्थानहै जहां मैंने खरादि चौदहहजार राक्षसोंको माराहै पुनः अगस्त्यको असुतीक्ष्णके आश्रम मंगलीमें देखौ भाव फल दल फूलों युक्त वृक्षोंकी परमशोभाहै १० (हेवरवर्णिनिएतेतापसाःतेसर्वेदृश्यन्तेहेदेविअसौशैलवरः चित्रकूटःप्रकाशते) हे उत्तम आनंद रूपे येदंडक वनके तपसालोग ते सब देखिपरतैंहैं हे देविसीते यह पर्वत उत्तम अर्थात् परम पावन चित्रकूट प्रकाशमान है रहाहै देखिये ११ (अत्रमांप्रसादयितुकैकयी पुत्रःआगतःयमुनातटेदृश्यतेभरद्वाजाश्रमंपश्य) इसी चित्रकूटमें मांको प्रसन्नकरनेको कैकेयीको पुत्र भरत आयाहै अब प्रयागक्षेत्रभंतर्गतयो यमुनातटमें देखताहै इस भरद्वाजमुनिके आश्रमकोदेखिये १२॥

एषाभागीरथीगंगादृश्यतेलोकपावनी ॥ एषासादृश्यतेसीतेसरयूर्यूपमालिनी १३
एषासादृश्यतेऽयोध्याप्रणामंकुरुभामिनि ॥ एवंक्रमेणसंप्राप्तोभरद्वाजाश्रमंहरिः
१४ पूर्णेचतुर्दशेवर्षेपंचम्यारघुनंदनः ॥ भरद्वाजमुनिंदृष्ट्वाववंदेसानुजःप्रभुः १५
प्रपच्छमुनिमासीनंविनयेनरघूत्तमः ॥ शृणोषिकच्चिद्भरतःकुशल्यस्तेसहानुजः १६

सुभिक्षावर्ततेऽयोध्याजीवन्तिचहिमातरः ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंभरद्वाजःप्रहृष्ट
धीः १७ प्राहसर्वकुशलिनोभरतस्तुमहामनाः ॥ फलमूलकृताहारोजटावल्कल
धारकः १८ ॥

(एपालोकपावनीभागीरथीगंगादृश्यतेसीतेष्वासरयूसादृश्यतेयूपमालिनी) यहलोक पावनकरन
हारी भागीरथी गंगा देखातीहै पुनः हेसीते यहसरयू सोदेखातीहै ताकेसमीप सूर्यवंशी राजोंके यज्ञोंके
खंभोंको माला धारन करन हारी जो पुरी१३(एपात्रयोध्यासादृश्यतेभामिनिप्रणामंकुरुएवंक्रमेणहरि
भरद्वाजाश्रमंस्तंप्राप्तः) यह अयोध्या सो देखातीहै हे भामिनि अयोध्यापुरीको प्रणामकरइसी क्रम
करिकै हरिश्चंद्रधुनाथजी भरद्वाज मुनिके आश्रममेंआय प्राप्तभये१४(चतुर्दशेवर्षेपूर्णेपंचम्यारधुनंदनः
भरद्वाजमुनिदृष्ट्वासानुजःप्रभुःववंदे) चैत्रशुक्लनौमीको अयोध्याजीतेचलेरहे तबते चौदहवर्षनौमीको
पूर्णहोगये तिसी चैत्रशुक्लपंचिमीको रघुनंदन प्रयागमेंआय भरद्वाजमुनिकोदेखेतब लक्ष्मणसहित
रघुनंदन प्रभुभरद्वाज मुनिको प्रणाम करते भये १५(आसीनंमुनिंरघूत्तमःविनयेनप्रपच्छसहानुजः
भरतःकुशल्यास्तेकञ्चित्शृणोपि) आश्रममें बैठेहुयेजोभरद्वाज मुनि प्रति रघुनंदन नम्रहोकरि पूछते
भये हे भगवन् शत्रुघ्न सहित भरत कुशल पूर्वकहै यह हाल आपने कछु सुनाहै १६ (अयोध्यासुभि
क्षावर्ततेचहिमातरःजीवन्तिरामस्यवचनंश्रुत्वाप्रहृष्टधीःभरद्वाजः) अयोध्या सुभिक्षयुक्तवर्तमान अर्थात्
सब प्रजा अन्नधनते परिपूर्णहैं पुनः निश्चयकरि सब माताजीवतीहैं इतिरघुनंदनकेवचनसुनिप्रसन्नमन
भरद्वाज १७ (प्राहसर्वकुशलिनःतुमहामनाःभरतःजटावल्कलधारकःफलमूलकृताहारः)भरद्वाजबोले
हे रघुनंदन प्रजा परिवार सब कुशल पूर्वकहैं पुनः महात्मा सत्पुरुषभरत शीशमें जटावल्कलवसन
धारण किहे महिषायी फलमूलादि भोजन करतेहैं १८ ॥

पादुकेसकलंन्यस्यराज्यंत्वांसुप्रतीक्षते ॥ यद्यत्कृतंत्वयाकर्मदंडकेरघुनंदन १९
राक्षसानांविनाशंचसीताहरणपूर्वकम् ॥ सर्वज्ञातंमयारामतपसातेप्रसादतः २०
त्वंब्रह्मपरमंसाक्षादादिमध्यांतवर्जितः ॥ त्वमग्रेसलिलंसृष्ट्वातत्रसुप्तोसिभूत
कृत् २१ नारायणोसिविश्वात्मनूनराणामंतरात्मकः ॥ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मा
लोकपितामहः २२ अतस्त्वंजगतामीशःसर्वलोकनमस्कृतः ॥ त्वंविष्णुर्जानकी
लक्ष्मीःशेषोऽयंलक्ष्मणाभिधः २३ आत्मनासृजसीदंत्वमात्मन्येवात्ममायया ॥
नसज्जसेनभोवत्त्वंचिच्छक्त्यासर्वसाक्षिकः २४ ॥

(राज्यंसकलंपादुकेन्यस्यत्वांसुप्रतीक्षते रघुनन्दनत्वयादंडकेयत् यत्कर्मकृतं) राज्य सब आपके
खड़ाओं को समर्पण करि भाव सिंहासनपर स्थापित किहे उनकी आज्ञा लैकै सेवकवत् राज काज
करते हैं अरु आपके दर्शन की अत्यंत प्रतीक्षा करते हैं हे रघुनन्दन आपने दंडक वनमें जोजो कर्म
कियाहै १९ (सीताहरणपूर्वकंचराक्षसानांविनाशंरामतेप्रसादतः तपसासर्वज्ञातंमया) सीता हरण
पूर्वक पुनः रावणादि राक्षसोंके नाश पर्यंत यावत् आपने लीला किया हे रघुनन्दन आपके प्रसादते
तपस्याके प्रभाव करिकै सब में जानताहैं २० (आदिमध्यअंतवर्जितः त्वंसाक्षात्परमब्रह्मभूतकृत्
त्वंअग्रेसलिलंसृष्ट्वातत्रसुप्तोसि) आदि उत्पत्ति मध्य जीवन अन्त मरण इत्यादि रहित आप साक्षात्
परब्रह्म सदा एक रसहैं हे भूतमात्रके रचने वाले आप पूर्वहीं जल उत्पन्न किया ताही में शयन

करते भये २१ (हेविद्वात्मान्नराणांभंतरात्मकः नारायणःअसिलोकपितामहःब्रह्मात्वन्नाभिकमलोत्पन्नः) हे संसारके आत्मन राघवनाराजोजलतामें अयनवासस्थानअथवानार जीवतामें वासस्थान अथवानरनके अंतरात्माहोताते आपनारायणहो लोकनके पितामह जो ब्रह्मा हैं सो आपकी नाभी कमलते उत्पन्नभये २२ (अतःत्वंजगताईशःसर्वलोकनमस्कृतःविष्णुःत्वंलक्ष्मी जानकी अयंलक्ष्मणाभिधःशेषः) आपते ब्रह्माभये इससे सब जगत्के स्वामी आपही हौ सब लोकन करिकै नमस्कार किये गये सोई विष्णु आपहो लक्ष्मीजानकी हैं ये लक्ष्मण नामशेषहैं २३ (त्वंआत्ममाययाआत्मनि एवइदंआत्मनासृजसिचित्शक्त्यासर्वसाक्षिकःत्वंनभोवत्नसज्जसे) आप अपनी मायाकरिकै अपने आत्माहीमें यहसंसारमय अपनारूप रचतेहौ अरुचित्शक्ति करिकै सबके साक्षी सबवात जाननेवाले आप आकाशवत् काहूमें लिसनहीं होतेहौ २४ ॥

बहिरंतश्चभूतानांत्वमेवरघुनंदन ॥ पूर्णोपिमूढदृष्टीनांविच्छिन्नइवलक्ष्यसे २५
जगत्त्वजगदाधाररत्वमेवपरिपालकः ॥ त्वमेवसर्वभूतानांभोक्ताभोज्यंजगत्पते २६
दृश्यतेश्रूयतेयद्यत्स्मरतेवारघूत्तम ॥ त्वमेवसर्वमखिलंत्वद्विनान्यन्नकिंचन २७
मायासृजतिलोकांश्चस्वगुणैरहमादिभिः ॥ त्वच्छक्तिप्रेरितारामतस्मात्त्वय्युपचर्यते २८
यथाचुंबकसानिध्याच्चलंत्येवायआदयः ॥ जडातथात्वयादृष्टा मायासृजतिवैजगत् २९
देहद्वयमदेहस्पतवविश्वंरिरक्षिषोः ॥ विराट्स्थूलंशरीरंतेसूत्रंसूक्ष्ममुदाहृतम् ३० ॥

(रघुनंदनभूतानांविहिःच अंतःत्वंएव पूर्णःअपिमूढदृष्टीनांविच्छिन्न इवलक्ष्यसे) हे रघुनन्दन भूत चराचर के बाहर पुनः भीतर आप निश्चय करि परिपूर्ण भीहो परंतु मूढ दृष्टी वाले पुरुषों को विशेषि खंडित ऐसे देखिपरतेहौ भाव अनेकभेद माने लघु दीर्घ देखतेहैं २५ (जगत्पते जगत्त्वजगदाधारः त्वंएवसर्वभूतानांपरिपालकःभोक्ताभोज्यंत्वंएव) हे जगत्पते आत्मरूप व्यापक जग सब आपही हौ जीवबुद्धीमायामय जो जगत्है ताके आधार आपहीहौ भाव आपके सत्तातेजग चैतन्यहै पुनःदेह धारीभूत मात्रके परिपालन हारे भोग करता भोजनरूप सब आपहीहैं २६ (रघूत्तमयत्दृश्यतेश्रूयते वायत्स्मरतेसर्वमखिलंत्वंएवत्वद्विनाअन्यत्किंचनन) हे रघूत्तम जो कछु देखिपरता है सुनि परता है अथवा जो कछु स्मरण कियाजाताहै सो सबसंपूर्ण आपहीहौ आपबिना और कछुनहीं है २७ (रामप्रेरितात्वत्शक्तिमायास्वगुणैरहमादिभिःलोकांश्चसृजतितस्मात्त्वय्युपचर्यते) हेरघुनंदन आपकी प्रेरणाते आपकी शक्तिमाया आपने गुणअहंकारदिकों करिकैलोकनको रचती है सोई आपमें प्रतीतहै यथा सेवककेकर्म स्वामीमें प्रतीतहोतेहैं २८ (यथाचुंबकसानिध्यात्अयआदयःएवचलंतितथात्वयादृष्टा जडामायावैजगत्सृजति) जैसे चुंबकपत्थरके समीपतातेलोहादिकभी चलतेहैं तैसेहीआपकरिकै देखी हुई जडमायाभी जगत्को रचतीहै २९ (तवअदेहस्यविश्वंरिरक्षिषोःदेहद्वयंविराटतेस्थूलंशरीरंसूत्रं सूक्ष्ममुदाहृतम्) हेरघुनंदन आपजो देह रहितहौ तिनके संसार रचाकरिबेको द्वैदेहहैं तहांब्रह्मांड रचना जो विराटहै सो आपकी स्थूल देहहै पुनः भूतमात्रको चैतन्यकरता जो सूत्रात्माहै सो आपकी सूक्ष्म देहकहीजातीहै ३० ॥

विराजःसंभवत्येतिअवताराःसहस्रशः ॥ कार्यातिप्रविशंत्येवविराजंरघुनंदन ३१ अ

वतारकथांलोकेयेगायंतिगृणंतिच ॥ अनन्यमनसोमुक्तिस्तेषामेवरघूत्तम ३२ त्वं
ब्रह्मणापुराभूमेभारहारायराघव ॥ प्रार्थितस्तपसातुष्टस्त्वंजातोसिरघोःकुले ३३
देवकार्यमशेषेणकृतंतेरामदुष्करम् ॥ बहुवर्षसहस्राणिमानुषंदेहमाश्रितः ३४
कुर्वन्दुष्करकर्माणिलोकद्वयहितायच ॥ पापहारीणिभुवनंयशसापूरयिष्यसि ३५
प्रार्थयामिजगन्नाथपवित्रंकुरुमेगृहम् ॥ स्थित्वाद्यभुक्त्वासबलःश्वोगमिष्यसि
पत्तनम् ३६ ॥

(सहस्रशः अवताराः एते विराजः संभवन्ति कार्यान्तेरघुनन्दन विराजं प्रविशन्ति एव) हजारन अवतार
ये सब ते विराट् रूप उत्पन्न होते हैं जिस हेतु सो कार्य करि अंतमें हे रघुनन्दन उसी विराट् रूप
में लय होते हैं ३१ (रघूत्तम अवतारकथां लोकेयेगायंतिगृणंतिच अनन्यमनसः तेषां मुक्ति एव) हे
रघुवंशनाथ आपके अवतारों की जो लीला मय कथा है ताको लोक में जे जन गान करते हैं पुनः
सार्धं वर्णन करते हैं एकै राम सनेह पुष्ट मन में राखि तिनको मुक्ति अवश्यही होती है ३२ (राघव
पुरात्वं तपसा तुष्टः ब्रह्मणा प्रार्थितः भूमेः भारहारायत्वं रघोः कुले जातोसि) हे राघव पूर्व आप ब्रह्माकी
तपस्याते प्रसन्न रहे ताते ब्रह्मा करिके प्रार्थना किये गयो भूमि को भार हरने अर्थ आप रघुके कुल
में अवतीर्ण भयो ३३ (हे राम दुष्करम् देवकार्यमशेषेण कृतं मानुषंदेहमाश्रितः बहुवर्षसहस्राणि) हे
रघुनन्दन जो किसीके करने योग्य न रहै ऐसा दुष्कर रावण ब्यादि देवतोंको कार्यसो संपूर्ण आपने
पूर्ण किया पुनः अब मानुष की देहके आश्रित अर्थात् मानुष देह धारण किये हुये बहुत हजार वर्ष
तक लोक में बने रहि करि ३४ (चलोकद्वयहिताय दुष्करकर्माणिकुर्वन् पापहारीणि यशसा भुवनं पू
रयिष्यसि) पुनः दोऊ लोकनके हितके अर्थ अर्थात् जाके श्रवण कीर्तन कीन्हें यह लोकमें अरुज
सुख पूर्वक जीवन अन्न धन पुत्र पौत्रादि ते परिपूर्णता अन्त परलोक में शुभ गति इति जननके
हितार्थ दुष्कर कर्म करत संते पाप हरण हारे यश करिके भुवनको भरि परिपूर्ण करौगे भाव सब
यश गान करैगे ताके प्रभावते पाप रहित होइगे ३५ (प्रार्थयामि जगन्नाथ मेगृहं पवित्रंकुरु अद्य स्थित्वा
सबलः भुक्त्वा श्वः पत्तनंगमिष्यसि) यह मेरी प्रार्थना है हे जगन्नाथ अब मेरा धाम पवित्र कीजिये
आज इहाँ रहिये सहित सेना भोजन कीजिये कल्हि प्रात भये अयोध्या नगर को जाइये ३६ ॥

तथेतिराघवोऽतिष्ठत्तस्मिन्नाश्रमउत्तमे ॥ ससैन्यः पूजितस्तेन सीतया लक्ष्मणेन
च ३७ ततो रामश्चितयित्वा मुहूर्तं प्राहमारुतिम् ॥ इतो गच्छ हनूमंस्त्वमयोध्यां
प्रतिसत्वरः ३८ जानीहि कुशलीकश्चिज्जनो नृपतिमं दिरे ॥ शृंगिबेरपुरंगत्वा ब्रू
हि मित्रंगुहं मम ३९ जानकी लक्ष्मणोपेतमागतं मानि वेदय ॥ नंदिग्रामं ततो गत्वा
आतरं भरतं मम ४० दृष्ट्वा ब्रूहि सभार्यस्य सभ्रातुः कुशलं मम ॥ सीतापहरणादीनि
रावणस्य बधादिकम् ४१ ब्रूहि क्रमेण मे भ्रातुः सर्वतत्र विचेष्टितम् ॥ हत्वा शत्रुगणां
न्सर्वान्सभार्यः सह लक्ष्मणः ४२ ॥

(तथा इति राघवः तस्मिन् आश्रम उत्तमे अतिष्ठत् लक्ष्मणेन च सीतया ससैन्यः तेन पूजितः) बहुत
भली ऐसा कहि रघुनन्दन तिस आश्रम उत्तम बिषे उतरते भये अरु लक्ष्मण पुनः सीता सहित
सेना रघुनन्दन तिन भरद्वाज मुनिकरिके सत्कार किये गये ३७ (ततः मुहूर्तं चितयित्वा रामः मारुतिं

प्राहन्नुमस्त्वंइतःसत्वरः अयोध्याप्रतिगच्छ) तदनंतर मुहूर्तभरि अर्थात् दोदंड मनमें चिंतवनकरि भाव बिना खबरि पाये सब लोग शोक संदेह युक्त रहेंगे इस कारण खबरि पठाय देवें इति विचारि रघुनंदन हनुमान् प्रति बोले हेहनुमान् तुमइहांते शीघ्रहीं अयोध्याजी को जावो ३८ (नृपति मंदिरेजनः कञ्चित्कुशलीजानीहिशृंगिवेरपुरंगत्त्वामममित्रंगुहंब्रूहि) महाराज दशरथके मंदिर में सब जन कुशल पूर्वक हैं इति जानि आवौ तहां प्रथम शृंगिवेर पुरको जायो तहांमेरा मित्र निपाद राज जो गुहाहैं त्यहि प्रति कहेउ ३९ (जानकीलक्ष्मणःअपि एतंमांआगतंनिवेदयततःनंदिग्रामंगत्वा ममभ्रातरंभरतं) जानकी लक्ष्मण भी यह इहां भरद्वाज के आश्रम को मेरा आगमन निषाद राज प्रति कहिकै तदनंतर नंदी ग्रामको जायो तहां मेरे भ्राता जो भरतहैं तिनहिं ४० (दृष्ट्वासभार्यस्य सभ्रातुःममकुशलंब्रूहि सीताअपहरणआदीनि रावणस्यवधादिकम्) भरतकोदेखि तिन प्रति सहित जानकी की कुशल सहित लक्ष्मणकी कुशल मेरी कुशल कहि पुनः जानकी को हरण आदिक तथा रावण को सफल बध आदिक ४१ (तत्रसर्वविचेष्टितं मेभ्रातुःक्रमेणब्रूहि शत्रुगणान्सर्वान्हत्वा सभार्यःसलक्ष्मणः) उहां लंका को सब हाल मेरे भाई भरतते क्रम करिकै सब कहेउ किरावणादि शत्रु समूह सबन को मारिकै भार्या सीता सहित लक्ष्मण सहित ४२ ॥

उपयातिसमृद्धार्थःसहस्रक्षहरीश्वरैः॥इत्युक्त्वातत्रवृत्तांतंभरतस्यविचेष्टितम्४३ सर्वज्ञात्वापुनःशीघ्रमागच्छममसन्निधिम् ॥ तथेतिहनुमांस्तत्रमानुषंवपुरास्थितः ४४ नंदिग्रामंययौतूर्णवायुवेगेनमारुतिः ॥ गरुत्मानिववेगेनजिघृक्षन्भुजगोत्तमम्४५ शृंगिवेरपुरंप्राप्यगुहमासाद्यमारुतिः ॥ उवाचमधुरंवाक्यंप्रहृष्टेनांतरात्मना ४६ रामोदाशरथिःश्रीमानसखातेसहसीतया ॥ सलक्ष्मणस्त्वांधर्मात्माक्षेमीकुशलमब्रवीत् ४७ अनुज्ञातोद्यमुनिनाभरद्वाजेनराघवः ॥ आगमिष्यतितंदेवंद्रक्ष्यसित्वंरघूत्तमम् ४८ ॥

(सहस्रक्षहरीश्वरैःसमृद्धार्थःउपयातिइतिउक्त्वाभरतस्यविचेष्टितंत्रवृत्तांतं) सहित ऋक्ष बा नरन सहित पूर्णमनोरथ रामआवते हैं ऐसा कहिकै अरु भरतको चरित्र अरु तहांको वृत्तान्त अर्थात् अयोध्याको सब हाल ४३ (सर्वज्ञात्वापुनःममसन्निधिंशीघ्रंमागच्छतथाइतितत्रहनुमानमानुषंवपुरास्थितः) उहांको सब हाल जानिकै पुनः मेरेपासको शीघ्रहीं लौटिआयो बहुतभली ऐसा कहि तहां हनुमान् मानुषतनमें स्थितहोतेभये ४४ (भुजगोत्तमंजिघृक्षन्गरुत्मान्इववेगेनमारुतिःवायुवेगेनतूर्णंनंदिग्रामंययौ) जैसे उत्तम सर्पको ग्रहणकरनेको गरुडवेगकरिकैचलै तैसेही भरतादि अवधवासिन को रामवियोग दुःख ग्रसकरने वाला है ताको ग्रसकरनेहेतु हनुमान् पवनसम वेगकरिकै शीघ्रहीं नंदीग्रामको चलतेभये ४५ (शृंगिवेरपुरंप्राप्यप्रहृष्टेनअंतरात्मनामारुतिः गुहंआसाद्यमधुरंवाक्यंउवाच) प्रथम शृंगिवेरपुरमें पहुंचि भानदमनसे हनुमान् गुहाको मिलिमधुर वचन बोलते भये४६(धर्मात्माश्रीमान्दाशरथिःरामःतेसखासहसीतयासलक्ष्मणःक्षेमीत्वांकुशलंब्रवीत्) धर्मात्मा धर्मकी धुरी धारनकरणहारे बड़े शोभायुक्त दशरथ के पुत्ररामचंद्र तुम्हारे सखा सहित सीता सहित लक्ष्मण कुशल सहित हैं अरु हे निपादराज तुम्हारी कुशल पूछते हैं अर्थात् सीता सानुज प्रभु कुशलपूर्वक वनते आते हैं तुम्हारी कुशल पूछने हेत मोको इहां को पठाये ४७ (भरद्वाजेनमुनिनाअनुज्ञातःराघवःआगमिष्यतितंदेवंद्रक्ष्यसि) भरद्वाज मुनि की आज्ञा पालन

करिकै भाव आजु पहुनाई में हैं काल्हि बिदा है रघुनंदन आवहिंगे तिनरघुवंशोत्तम देवको काल्हि तुम देखौगे भाव तुम्हारे इहांको आवहिंगे ४८ ॥

एवमुक्तामहातेजाःसंप्रहृष्टतनूरुहम् ॥ उत्पपातमहावेगोवायुवेगेनमारुतिः ४९
सोपश्यद्रामतीर्थचसरयूञ्चमहानदीम् ॥ तामतिक्रम्यहनुमान्नंदिग्रामंययौमुदा५०
क्रोशमात्रेत्वयोध्यायाश्चौरकृष्णाजिनाम्बरम् ॥ ददर्शभरतंदीनंकृशमाश्रमवा
सिनम् ५१ मलपङ्कविदग्धगंगजटिलंवल्कलांबरम् ॥ फलमूलकृताहारंरामचिंता
परायणम् ५२ पादुकेतेपुरस्कृत्यशासयंतवसुंधराम् ॥ मंत्रिभिःपौरमुखैश्चकाषा
यांवरधारिभिः ५३ वृतदेहंमूर्तिमंतंसाक्षाद्धर्ममिवस्थितम् ॥ उवाचप्रांजलिर्वाक्यं
हनुमान्मारुतात्मजः ५४ ॥

(एवंउक्तासंप्रहृष्टतनूरुहंमहातेजाःमहावेगःमारुतिःवायुवेगेनउत्पपात) तुम रघुनंदनको देखौगे ऐसा हनुमान्जी कहे सो सुनि गुहा के आनंद उमगा तन में रोमांच उठि आये पुनः महातेजवंत महावेगवंत पवनपुत्र वायुवेग करिकै अयोध्या को जाते भये ४९ (सःरामतीर्थचमहानदीसरयूञ्चपश्यन्तात्रतिक्रम्यहनुमान् मुदानंदिग्रामंययौ) सो हनुमान् जाते समय आकाशते रामतीर्थ जो अयोध्यापुनः महाउत्तम नदी जो सरयू ताहि देखतेभये ताको उल्लंघनकरि अर्थात् प्रथम अयोध्याजी को नहींगये हनुमान् आनंद सहित नंदीग्राम को जातेभये ५० (तुअयोध्यायाः क्रोशमात्रे आश्रमवासिनंचौरकृष्णाजिनाम्बरंकृशंदीनंभरतंददर्श) अयोध्या की सीवांत बाह्यक्रोशभरे पर आश्रम के वासीश्याम भृगचर्म वसन धारणकिहे शरीरदुर्बल मनते दीन जो भरततिनहिं देखतेभये ५१ (मलपंकविदग्धगंगं) बहुतकाल के उपटननहीं लगाये ताते मलरूप कीचड़करिकै मूँदाहै अंग जिनको (जटिलंवल्कलंअंबरं) शीशमें जटा तनमें वल्कल वसन धारण किहे (फलमूलकृताहारं) फलमूलादि भोजन करतेहैं (रामचिंतापरायणम्) रघुनंदन आवहिंगे वा न आवहिंगे इति चिंताकरिरहे हैं ५२ (पादुकेतेपुरस्कृत्यवसुंधरामशासयंतंपौरमुखैःचमंत्रिभिःकाषायांवरधारिभिःवृतदेहं) रघुनंदन के पादुकों को आगेकरि पृथिवी को पालन करतेहैं पुरवासी मंत्री गेरुहा वसन धारण किहे तिनकरिकै सेवित है देहजिनकी भाव सबयती कैसो वेपकिहे हैं ५३ (मूर्तिमंतंसाक्षाद्धर्ममिवस्थितम्मारुतात्मजःहनुमान्प्रांजलिःवाक्यंउवाच) मानों मूर्ति धारणकिहे साक्षात् धर्महैं इसी भांति बैठेहुये भरत तिनिहिं देखि पवनपुत्र हनुमान् प्रणाम करि हाथ जोरि बचन बोलतेभये ५४ ॥

यत्वंचितयसेरामंतापसंदण्डकेस्थितम् ॥ अनुशोचसिकाकुत्स्थःसत्वांकुशलमब्रवीत् ५५ प्रियमाख्यामितेदेवशोकंत्यजसुदारुणम् ॥ अस्मिन्मुहूर्तेआत्रात्वंरामेणसहसंगतः ५६ समरेशवणंहत्वारामःसीतामवाप्यच ॥ उपयातिसमृद्धार्थःससीतःसहलक्ष्मणः ५७ एवमुक्तोमहातेजोभरतोहर्षमूर्च्छितः ॥ पपातसुविचास्वस्थःकैकेयीप्रियनन्दनः ५८ आलिंग्यभरतःशीघ्रंमारुतिंप्रियवादिनम् ॥ आनन्दजैरश्रुजलैःसिषेचभरतःकपिम् ५९ देवोवामानुषोवात्वमनुक्रोशादिहागतः ॥ प्रियाख्यानस्यतेसौम्यददामिब्रुवतःप्रियम् ६० ॥

(तापसदंडकेस्थितंयंरामंत्वंचितयसे अनुशोचसिसकाकुस्थःत्वांकुशलंअब्रवीत्) तपस्वी दण्डक वन में स्थित जिन रामको आप चिंतनकरते हुये न भावनेको शोचकरतेहो सोई ककुस्थवंशोत्तम राम हे भरतजी तुमसों कुशल पूछतेहैं भाव मार्गते तुम्हारी कुशल जानिबे हेतु मोको पठाये हैं ५५ (देवतेप्रियंआख्यामिसुदारुणंशोकंत्यजअस्मिन्मुहूर्तेत्वंभ्रात्रारामेणसहसंगतः) हेदेव तुमको प्रिय वचन सुनावताहों ताते अत्यन्त कठिन जो शोककिहे हों ताहि त्यागकरो काहेते इसी मुहूर्त में तुम अप-
न भाई रामसे मिलौगे भाव रघुनन्दन आतेहैं ५६ (समरेरामःरावणंहत्वाचसीताअवाप्यससतिःस हलक्ष्मणःसमृद्धार्थःउपयाति) सग्राममें रघुनंदन रावण को मारिकै पुनः सीताको प्राप्तहो करि स-
हित जानकी सहित लक्ष्मण मनोरथ पूर्णता सहित रघुनाथजी इहाको आवते हैं ५७ (एवंउक्तःम-
हातेजाभरतःकैकेयीप्रियनंदनःहर्षमूर्च्छितःभुविपपातचास्वस्थः) रघुनंदन आवते हैं ऐसा हनुमान्
कहे सो सुनि भरत नाम कैकेयी के जे प्रियपुत्रहैं ते प्रेमानंदमें बेसुधिहैंकै भूमिपर गिरिपरे पुनःकछु
चारमें देहकी सुधिकरि स्वस्थ चितहैंकै ५८ (प्रियवादिनमारुतिभरतःशीघ्रंआलिङ्ग्यभरतःआनन्दजैः
अश्रुजलैःरुपिसिपेच) प्रियवचन बोलनेवाले जो मारुतनंदनहैं तिनहिं भरत शीघ्रही उठि हृदयमें
लगाय भिले पुनः भरतके अंतरते जो प्रेमानन्दउमगा त्यहि करिकै उत्पन्न जो आशुजल त्यहिकरि
कै हनुमान्को भिजैदेतेभये पुनः बोले ५९ (त्वदेवःवा मानुषःवा अनुक्रोशात्इहागतः सौम्य तेब्रवतः
प्रिय आख्यानस्यप्रियमददामि) आपदेवताहो अथवा मानुषहो जो मोपर दयाकरणे हेतु इहां को
आयेहो हे सौम्य शुद्ध शीतल सुखद तुम्हारा कहाहुआ जो प्रिय वचनहै ताकी सम बोधक प्रिय
पदार्थ तुम्हें देताहों ६० ॥

गवांशतसहस्रंचग्रामाणांचशतंव्रम ॥ सर्वाभरणसंपन्नामुग्धाकन्यास्तुषोड
श ६१ एवमुक्त्वापुनःप्राहभरतोमारुतात्मजम् ॥ बहूनीमानिवर्षाणिगतस्यसु
महद्वनम् ६२ शृणोम्यहंप्रीतिकरंममनाथस्यकीर्तनम् ॥ कल्याणीवतगाथेयंलौ
किकीप्रतिभातिमे ६३ एतिजीवंतमानंदोनरंवर्षशतादपि ॥ राघवस्यहरीणांच
कथमासीत्समागमः ६४ तत्त्वमारूयाहिभद्रंतेविश्वसेयंवचस्तव ॥ एवमुक्तोथ
हनुमान्भरतेनमहात्मना ६५ आचक्षेथरामस्यचरितंकृत्स्नशःक्रमात् ॥ श्रु
त्वातुपरमानंदंभरतोमारुतात्मजात् ६६ ॥

(शतसहस्रंगवांशतंव्रग्रामाणांचसर्वाभरणसंपन्नामुग्धाकन्याःतुषोडश) सउहजार गौवें पुनः
सउ उत्तम ग्राम पुनः सव भूपणों करिकै भूपित मुग्धा अर्थात् अंकुरितयौवना कन्या पुनः सोरह
इत्यादितोको देंउगो ६१ (एवंउक्त्वापुनःभरतःमारुतात्मजंप्राहसुमहत्वनंगतस्यइमानिवहूनिवर्षा
णि) ऐसा कहि पुनः भरत हनुमान् प्रति बोलते भये हे प्रियवचनबोलनेवाले अत्यन्त बड़ाभारीजो
दंडकवन है तहांको मेरे स्वामीको गये यहिलोकके बहुत वर्ष बीतिगये स्वामीको मंगलीक हालनहीं
सुना ६२ (ममनाथस्यकीर्तनंप्रीतिकरंशृणोमिअहंकल्याणीवतइयंगाथालौकिकीप्रतिभातिमे) मेरे
नाथको कीर्तन प्रीति करणेवाला आनन्ददायक वचन आजसुनेउ मैं कल्याण करणहारी यह कथा
लोककी प्रतीत होतीहै मोको भाव रावण बधभूभारहरण तामें त्रिलोककोस्वस्ति इति गाथालोक
कल्याण करणहारी देखातीहै ६३ (जीवंतनरंवर्षशतात्आपिआनंदःएतिराघवस्यचहरीणांसमागमःक
थंआसीत्) दुःखयुक्त भी जो जीवतारहै तौ मानुषको सउवर्ष तक कभी निश्चयकरि कभी आनन्द

प्राप्तहोतीहै यथा मोको आज्ञा आनन्द प्राप्तभई अब कहिये रघुनन्दनको पुनः वानरोंको समागम कैसे भया ६४ (तेभद्रंतत्वंआख्याहितवचःविश्वसेयंएवंमहात्मनाभरतेनउक्तःअथहनुमान्) तुम्हारा कल्याण होय यथार्थ हालकहो तब तुम्हारे वचनोंमें मोको विश्वास आवे ऐसामहात्मा भरतने कहा तबहनुमान् ६५ (अथरामस्यचरितंक्रमात्कृत्स्नशःआचक्षेमाहतात्मजात्परमानंदंश्रुत्वातुभरतः) अब राम चरित झाड़ि क्रमते अंततक संपूर्ण वर्णन करतेभये तोपवननंदनके मुखतेपरम आनंदमय वचन सुनिके पुनः भरत ६६ ॥

आज्ञापयच्छत्रुहणंमुदायुक्तंमुदान्वितः ॥ देवतानिचयावंतिनगरेरघुनंदन ६७
नातोपहारवलिभिःपूजयंतुमहाधियः॥सूतावैतालिकाश्चैववंदिनस्तुतिपाठकाः६८
वारमुख्याश्चशतशोनिर्यात्वैवसंघशः ॥ राजदारास्तथामात्यासेनाहस्त्यश्च
पत्नयः ६९ ब्राह्मणाश्चतथार्पौराजानोयेसमागताः ॥ निर्यातुराधवस्याद्यद्रष्टुं
शशिनिभाननम्७० भरतस्यवचःश्रुत्वाशत्रुघ्नपरिचोदिताः ॥ अलंचक्रुश्चनग
रामुक्तारत्नमयोज्ज्वलैः ७१ तोरणैश्चपताकामिर्विचित्राभिरनेकया ॥ अलंकुर्वति
वेश्मानिनानावलिबिचक्षणाः ७२ ॥

(मुदायुक्तंमुदान्वितःशत्रुहणंआज्ञापयत्तरघुनंदनदेवतानिचयावंतिनगरे) श्रीरामचरितरामआगम-
न मुनि आनंदयुक्त जो भरत तोअपनी आनंद सहित शत्रुघ्नको आज्ञादिये किहे रघुनंदन देवतोंकी
प्रतिमा जहांतक अयोध्यानगर मेंहैं तिनहिं ६७ (नानाउपहारवलिभिःमहाधियःपूजयंतुमूताः
वैतालिकाःचएववंदिनःस्तुतिपाठकाः) फूल फल दलगंधाक्षत धूपदीपादि अनेक सामग्री तथा
वलिआदिकों करिके बड़े बुद्धिमान् पुरुष प्रतिमोंको पूजनकरें पुनः सूत जो पौराणिक वैतालिक
जेप्रशंसागानकरि राजोंको जगावतेहैं वंशीजन स्तुतिपाठ करनेवाले ६८ (चवारमुख्यःशतशःसंघशः
अद्यएवनिर्यातुराजदाराःतथाअमात्याःहस्तीअश्वपत्नयःसेना) पुनः वेश्या सजिके सैकरो भुंडवांधि
इसी समयपुरतैकहि भागेचलै महाराजकी तबराजी तुमंत्रादि सब मंत्री हाथी घोड़ा पैदरादि सब
सेना सजिआगेचलै ६९ (ब्राह्मणाःचतथार्पौराःसमागतायेराजानःशशिनिभाननंरायवस्यद्रष्टुंअद्यनि
र्यातु) ब्राह्मण लोग पुनः तैसेही पुरवासी सब अरु अन्यदेशोंतेआयेहुये येराजालोगहैं इत्यादि सब
तयारहै शरदपूर्णचंद्रतम प्रकाशमान मुखहैं जिनको ऐसे रघुनंदनको देखने हेतु इसीसमय सब
आगेचलै ७० (भरतस्यवचःश्रुत्वाशत्रुघ्नेनपरिचोदिताःमुक्तारत्नमयोज्ज्वलैःपताकाभिःतोरणैःचन
गराअलंचक्रुः) भरतके वचनसुनि शत्रुघ्नेन चतुरजनोंको आज्ञादिया तेसबमोतीआदि रत्नमयउज्ज्व
लेपताकोंकरिके वाह्यद्वारोंमें आरोपित करिके पुनः सबनगरको भूषितकरतेभये७१ (विचक्षणाःनाना
वलिमनेकयाविचित्राभिःवेश्मानिअलंकुर्वति)चतुरजन अनेकप्रकार भेंटकी सामग्री सजिअरु चित्र-
सारी आदि विचित्र वस्तुन करिके मंदिरनको अलंकृतकीन्हे अर्थात् मंगलसाज साजतेभये ७२ ॥

निर्यातिदृशःसर्वेरामदर्शनलालसाः॥ हयानांशतसाहस्रंगजानामयुतंतथा७३
रथानांदशसाहस्रंस्वर्णसूत्रविभूषितम् ॥ पारमेष्ठिन्युपादायद्रव्याण्युच्चावचानि
च ७४ ततस्तुशिविकारूढानिर्ययूराजरोषितः ॥ भरतःपादुकेन्यस्यशिरस्येवकृ
तांजलिः ७५ शत्रुघ्नसहितोरामंपादचारेणनिर्ययौ ॥ तदैवदृश्यतेदूराद्विमानं चं

द्रसन्निभम् ७६ पुष्पकंसूर्यसंकाशं मनसा ब्रह्मनिर्मितम् ॥ एतस्मिन् भ्रातरौ वीरौ
वैदेह्यारामलक्ष्मणौ ७७ सुग्रीवश्चकपिश्रेष्ठो मंत्रिभिश्च विभीषणः ॥ दृश्यते पश्य
तजना इत्याह पवनात्मजः ७८ ॥

(रामदर्शनलालसाः वृंदशः सर्वैर्निर्याति हयानां शतसाहस्रं तथा गजानां अयुतं) रघुनंदन के दर्शन के लालसा करिके पुरवासी लोग वर्ण वर्ण भुङ्क के भुङ्क सब चलते भये तिनमें घोड़ा सउहजार सजे सवारयुत हाथी सजे दशहजार सवारनयुत चलते भये ७३ (स्वर्णसूत्रविभूषितं स्थानां दशसाहस्रं पार मेष्ठीनि उपादाय उच्चावचानि च द्रव्याणि) कलावतूआदि सोने के सूत्रों करिके भूषितरथ दशहजार चले तिनपर राजालोग ईश्वर के भेट देने योग्य ऊंच नीच द्रव्य लें कै चले ७४ (ततः तुराजयोषितः शिविका रूढानिर्ययू पादुकेशिरसि एव न्यस्य कृतांजलिः भरतः) तदनंतर पुनः महाराज की रानी कौशल्या आदि पालकिनमें सवार हवै चलती भई प्रभु के पादुकों को शीशपर धारन करि हाथ जोरि भरत ७५ (शत्रुघ्न सहितः पादचारेण रामं निर्ययौ तदा एव चंद्रसन्निभं विमानं दूरात् दृश्यते) शत्रुघ्न सहित भरत पैदर चाल करिके रघुनाथजी के समीप को चलते भये ताही समयमें चंद्रमा सम प्रकाशमान विमान आकाशमें आवताहुआ देखाई परा ७६ (मनसा ब्रह्मनिर्मितं मसूर्यसंकाशं पुष्पकं एतस्मिन् वैदेह्या भ्रातरौ वीरौ रामलक्ष्मणौ) मन करिके ब्रह्माने निर्माण किया यह जो सूर्यवत् प्रकाशमान है इसीमें जानकीजी सहित दोनों भाई बीर श्रीरघुनाथजी लक्ष्मणजी विराजमान हैं ७७ (चकपिश्रेष्ठः सुग्रीवः च मंत्रिभिः विभीषणः दृश्यते जनापश्यत इति पवनात्मजः प्राह) पुनः श्रेष्ठवानरों सहित वानरों के राजा सुग्रीव इसीमें बैठे हैं पुनः मंत्रि सहित राक्षसों के राजा विभीषण इसीमें बैठे हैं सो विमान आकाशमें देखाई देता है हे लोगों दृष्टि फैलाय देखो ऐसा हनुमान कहते भये ७८ ॥

ततो हर्षसमुद्भूतो निस्स्वनो दिवमस्पृशत् ॥ स्त्रीबालयुववृद्धानां रामो यमिति कीर्तनात् ७९
रथकुंजरवाजिस्था अवतीर्य महीगतः ॥ ददृशुस्ते विमानस्थं जनाः सोममि
वां वरे ८० प्रांजलिर्भरतो भूत्वा प्रहृष्टो राघवो न्मुखः ॥ ततो विमानाग्रगतं भरतो रा
घवं मुदा ८१ वंदे प्रणतो रामं मेरुस्थमिव भास्करम् ॥ ततो रामाभ्यनुज्ञातं विमान
मपतद्भुवि ८२ आरोपितो विमानतद्भरतः सानुजस्तदा ॥ राममासाद्य मुदितः पुन
रेवाभ्यवादयत् ८३ समुत्थाप्य चिरादृष्टं भरतं रघुनन्दनः ॥ आतरं स्वां क्रमारोप्य
मुदातं परिष्वजे ८४

(ततः स्त्रीबालयुववृद्धानां रामः अयं हति कीर्तनात् हर्षसमुद्भूतः निस्स्वनः दिवं अस्पृशत्) विमान देखि तब स्त्री बालक युवा वृद्ध उच्चस्वर ते बोलि उठे कि रघुनन्दन इसी विमान में हैं ऐसा कहने ते आनंदसे उपजा हुवा भारी शब्द सो आकाश लोकों में पहुँचि जाता भया ७९ (सोमं इव भ्रंजरे विमानस्थं ददृशुः ते जनाः रथकुंजरवाजिस्था अवतीर्य महीगतः) चंद्रमा सम प्रकाशमान आकाश में पुष्पक विमान तामें बैठे हुये रघुनन्दन को देखते भये ते सब जन ये रथन पर हाथिनपर घोड़नपर सवार रहे तिनते उतारि भूमिपर खड़े भये ८० (राघवो न्मुखः भरतः प्रहृष्टः प्रांजलिः भूत्वा ततः विमानाग्रगतं राघवं भरतः मुदा) रघुनन्दन के सन्मुख भरत आनंद पूर्वक हाथ जोरि खड़े होते भये तब तक विमान समीप आयगया तब विमान पर बैठे हुये जो रघुनन्दन तिनहि देखिके भरत बड़े आनंद युक्त है ८१

(मेरुस्थंभास्करंइवरासंप्रणतःववंदेतनःरामान्यनुज्ञातंविमानंमुविशयन्) यथा सुमेरु पर स्थित सूर्य तथा विमान पर स्थित जो रघुनन्दन तिनहिं नम्रतापूर्वक भरत दंड प्रणाम कीन्हे तब रघुनन्दन की आज्ञाकरिके विमान भूमिपर उतरना भया ८२ (ततःतानुजःभरतःतत्त्विमानंआरोपितः रामंआत्माद्यनुज्ञितःपुनःएवअभ्यवाइयन्) तदनन्तर सहित शत्रुघ्न भरत तिनहिं उत्ती विमान पर रघुनन्दन चढ़ाय लिये तब रघुनन्दन को प्राप्त है आनंद मन है भरत जी पुनः भी रघुनन्दन को दंड प्रणाम करतेभये ८३ (रघुनन्दनःचिरादष्टप्रातरंभरतंतनुत्थाप्यस्वअंकंआरोप्यनुज्ञातंपरित्यजे) रघुनन्दन बहुते दिनोंपर देखे ताते छोटे भाई भरत को उठाव अपने अक्रोश में बैठाय बड़े आनंद करिके तिन भरत को हृदय में लगाय रघुनन्दन मिलते भये ८४ ॥

ततो लक्ष्मणमासाद्य वै देहो नाम कीर्तयन् ॥ अभ्यवाइयत् प्रीतो भरतः प्रेन विह्वलः ८५ सुग्रीवं जाम्बवंतं च युवराजं तथा गदम् ॥ मैदद्विविडनीलांश्चन्द्रमं चैव सस्वजे ८६ सुषेणं च नलं चैव गवाक्षं गंधमादनम् ॥ शरभं वनतं चैव भरतः परिवस्वजे ८७ सर्वे ते मानुषं रूपं कृत्वा भरतमादृताः ॥ पप्रच्छुः कुशलं सौम्याः प्रहृष्टाश्च ह्यंगमाः ८८ ततः सुग्रीवमालिङ्ग्य भरतः प्राह भक्तिः ॥ त्वत्सहायेन रावणजयो भूद्रावणो हतः ८९ त्वमस्माकं चतुर्णां तु भ्रातानुग्रीह पंचनः ॥ शत्रुघ्नश्च तदाराम न भिवाद्य तलक्ष्मणम् ९० ॥

(ततः प्रीतिः प्रेन विह्वलः भरतः लक्ष्मणं वै देहो आसाद्य नाम कीर्तयन् अभ्यवाइयत्) तदनन्तर प्रीति-वंत प्रेनकरि विह्वल भरत तब लक्ष्मण पुनः जानकी जी के तन्मुख हवै लक्ष्मण जनकनंदिनी रघुनन्दन की जयहोय इति नाम कीर्तन बारम्बार करत संते प्रणाम कीन्हे यद्यपि भरत को बड़े जा-नि लक्ष्मण प्रथमही प्रणाम कीन्हे तो बड़े कार्यके आगे देहकी बड़ाई-तुच्छ माने भाव देह सुख संबंध त्यागि वनमें स्वामी की उत्तम सेवकाई कीन्हे ताते स्वामी के तुल्य नानि तीनिहू नाम कीर्तन युत प्रणाम कीन्हे ८५ (सुग्रीवं जाम्बवंतं च तथ युवराजं गदं मैदद्विविडनीलांश्चन्द्रमं चैव सस्वजे इन सबन को भरत उरमें लगाय मिले ८६ (सुषेणं च नलं चैव गवाक्षं गंधमादनम् । शरभं वनतं चैव भरतः परिवस्वजे ॥ इनको भरत उरमें लगाय सबको मिलते भये ८७ (ते सर्वे ह्यंगमाः मानुषं रूपं कृत्वा प्रहृष्टाः च सौम्याः भरतमादृताः कुशलं पप्रच्छुः) सुग्रीवादि ते सब जानर मानुष कैतौल्य धारन किहे परम आनंद पूर्वक पुनः सौम्य अर्थ तू वानरों की स्वभाव चंचल होता है सो त्यागि शुद्ध ततो गुणी शीलवंत स्वभाव पूर्वक भरत प्रति आदर सहित सब कुशल पूछते भये ८८ (ततः भरतः सुग्रीवं आलिङ्ग्य भक्तिः प्राह त्वत्सहायेन रावणजयः अभूत्) तब भरत जी सुग्रीवको हृदय में लगाय प्रीति सहित बोलते भये हे सुग्रीव तुम्हारी सहायता करिके संग्राम में सइल रावण मारा गया ताते रघुनन्दन की जय होती भई ८९ (अस्माकं चतुर्णां तु तुयवित्त्वं पंचनः भ्राता वत दश शत्रुघ्नः रानंतलक्ष्मणं अभिवाद्य) हमलोग जो चारि भाई हैं तिनको नानिबे जो पुनः हे सुग्रीव तुम पंचवें भाई हो पुनः ताही समय में शत्रुघ्न रघुनन्दन को सहित लक्ष्मणको प्रणाम करतेभये ९० ॥

सीतायाश्चरणौ पञ्चाद्वंद्वे विनयान्वितः ॥ रामो मातरमासाद्य विवर्णी शोकविह्वलाम् ९१ जग्राह प्रणतः पादौ मनोमातुः प्रसादयन् ॥ कैकेयी च मुनिना च न नामे

तरमातरः ६२ भरतःपादुकेतेतुराघवस्यसुपूजिते ॥ योजयामासरामस्यपादयो
भक्तिसंयुतः ६३ राज्यमेतन्न्यासभूतंमयानिर्जातितंतव ॥ अद्यमेसफलंजन्म
फलितोमेमनोरथः ६४ यत्पश्यामिसमायातमयोध्यांत्वामहंप्रभो ॥ कोष्ठागारंवलं
कोशंकृतंदशगुणंमया ६५ त्वत्तेजसाजगन्नाथपालयस्वपुरंस्वकम् ॥ इतिब्रुवा
णंभरतंदृष्ट्वासर्वैकपीश्वराः ६६ ॥

(पश्चात्विनयान्वितःसीतायाः चरणौवन्देशोकविह्वलाविवर्णांमातरंआसाद्यरामः) पीछेनमू
ता सहित शत्रुधन जानकी जीके चरणों को प्रणाम कीन्हें अवशोक करिके विह्वलचित्त देहकी पूर्व
चेष्टामलीन परिगई है जिनकी ऐसी कौशल्यादि माताओं को प्राप्त ह्वै रघुनंदन ६१ (मातुःमनःप्रसाद
यन्प्रणतःपादौजग्राहकैकेयीचसुमित्रांचइतरमातरःननाम) माता कौशल्या को मन प्रसन्न करत
संते नमूता पूर्वक रघुनंदन पांय गहतेभये अर्थात् प्रणाम कीन्हें पुनः कैकेयीको सुमित्रा को पुनःअप-
र जो मातारहीं तिनसवन को प्रणाम कीन्हें ९२ (राघवस्यपादुकसुपूजितेतुभरतःभक्तिसंयुतःराम
स्यपादयोःयोजयामास) रघुनंदन के खड़ाऊँ जिनहिं भलीभांति पूजतेरहे ते पुनःभरत प्रीतिसंयुक्त
लयके दोऊ पादुकों को रघुनाथजी के पांयन में योजित किये अर्थात् पहिराय देतेभये ६३ (तवनि
र्जातितंराज्यंमयाएतन्न्यासभूतंभद्यमेजन्मसफलंमेमनोरथःफलितः) आपकी दीन्ही धरोहरि सी
मेरे पास रही अबआप आये ताते तिसीराज्य को मैं यह आपको सौंपताहों सो राज्यग्रहण कीजिये
आपके दर्शन पाये ते अबमेरा जन्मसफल भया अरुमेरा मनोर्थ पूर्णभया कुशल पूर्वक आपपुर को
आये ६४ (यत्पश्यामिसमायातंत्वांअहंपश्यामिप्रभोकोष्ठागारंवलंकोशंमयादशगुणंकृतं) जोअयो
ध्यामें आय प्राप्त आपको मैं देखताहों ताते मेरा मनोर्थ पूर्णभया हे प्रभोभूषण वसनादि के कोठा
सजेमंदिर गजवाजि पैदरादि सेना खजाना इत्यादि सब मैंने दशगुना किया है ९५ (जगन्नाथत्व
त्तेजसास्वकंपुरंपालयस्वइतिब्रुवाणंभरतंसर्वैकपीश्वराःदृष्ट्वा) हे जगन्नाथ आपके प्रतापते सब कार्य
में किया अब अपने पुर अयोध्या को पालन कीजे ऐसा कहते हुये भरतको सब वानर देखिके ६६ ॥

मुमुचुर्नेत्रजंतोयंप्रशंसंसुर्मुदान्विताः ॥ ततोऽरामःप्रहृष्टात्माभरतस्वांकंगमुदा ६७ य
यौतेनविमानेनभरतस्याश्रमंतदा ॥ अवरुह्यतदारामोविमानाग्रयान्महीतलम् ६८
अब्रवीत्पुष्पकंदेवोगच्छवैश्रवणंवह ॥ अनुगच्छानुजानामिकुवेरंधनपालकम् ६९
शमोवशिष्टस्यगुरोःपदांबुजंनत्वायथादेवगुरोःशतक्रतुः ॥ दत्त्वामहार्हासनमुत्तमं
गुरोरूपाविवेशाथगुरोःसमीपतः १०० ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्बादेयुद्धकाण्डेचतुर्दशःसर्गः १४ ॥

(नेत्रजंतोयंमुमुचुःमुदान्विताःप्रशंसंसुःततःप्रहृष्टात्मारामोभरतस्वांकंगमुदा) वानरोंके नेत्रोंते
आश्रुजल बहिरहाहै आनन्द सहित भरतकी प्रशंसा करते भये तदनन्तर प्रसन्न मन रघुनन्दन भरत
को अपने अकोरामें कीन्हें आनंद सहित ९७ (तेनविमानेन तदाभरतस्यआश्रमंययौ तदारामःवि
मानाग्रयात्अवरुह्यमहीतलम्) तिसी विमान करिके तासमयमें भरत जीके आश्रम को जाते भये
तब रघुनाथ जी समाज सहित विमान के ऊपर ते उतरि भूमिपर खड़े भये ६८ (देवःपुष्पकंअब्र

वीत् धनपालकंकुबेरं अनुगच्छानुजानामि गच्छवैश्रवणं वह) रघुनंदन उतरिके पुष्पक विमान प्रणि
बोलते भये कि धनपालक जो कुबेर है तिनके अनुगामी आज्ञा पालनेवाले भाव तुम कुबेर के
विमान हौ बरवश रावण छीनि लै गया रहै यह सब हाल मैं जानताहौ ताते मैं आज्ञा देताहौ
जाउ कुबेर के भार बाहक होहु ९९ (यथादेवगुरोः शतक्रतुःगुरोः वशिष्ठस्यपादांबुजंरामःनत्वामहा
हं आसनं उत्तमंगुरोः दत्त्वा अथगुरोः तर्मापतःउपाविवेश) जैसे देवतोंके गुरुजो बृहस्पतिहैं तिनको
इंद्रप्रणामकरतेहैं तैसेही गुरु वशिष्ठके पदकमलों कोरघुनंदन प्रणाम करि महामाणिमयआसनउत्तम
गुरुको इन्हे बैठारे तब गुरुके तर्माप रघुनंदनबैठे १०० ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमासिचवल्गुभयदशरणागतवैजनायविरचितेअध्यात्म
भूयणे युद्धकारणचतुर्दशःप्रकाशः ११॥

ततस्तुकैकेयीपुत्रोभरतोभक्तिसंयुतः ॥ शिरस्यंजलिमाधायज्येष्ठंभ्रातरमब्रवी
त् १ मातामेसत्कृतारामदत्तराज्यंत्वयामम ॥ ददामितत्तेचपुनर्यथात्वमददन्म
म २ इत्युक्त्वापादयोर्भक्त्यासाष्टांगंप्रणिपत्यच ॥ बहुधाप्रार्थयामासकैकेय्यागुरु
णासह ३ तथेतिप्रतिजग्राहभरताद्राज्यमईश्वरः ॥ मायामाश्रित्यंसकलानंरचेष्टा
मुपागतः ४ स्वाराज्यानुभवोयस्यसुखज्ञानैकरूपिणः ॥ निरस्तातिशयानंदरूपि
णःपरमात्मनः ५ मानुषेणतुराज्येनकिंतस्यजगदीशितु ॥ यस्यभूभंगमात्रेणत्रि
लोकीनश्यतिक्षणात् ६ ॥

तवैया ॥ मञ्जनके पद भूयणताजि तिहासन राजतलोक पुनीता । चामरछत्र तखागहि सोहत
दिव्य प्रभातव लोकन रीता ॥ श्यामलगौर तवाम विराजत सारतिकाम करोरिन जीता । बंदतदेव
समाज वही तवतौहिय सानुज रायव सीता ॥ (ततःतुकैकेयीपुत्रःभरतःशिरसिअंजलिमाधायभक्ति
संयुतःज्येष्ठंभ्रातरंअब्रवीत्) शिवजी बोले है गिरिजा तदनंतर पुनः कैकेयीके पुत्र भरत शीशनाय
हाय जोरि प्रीति सहित जेठे भाई जो रघुनाथजी तिनप्रति बोलतेभये ? (राममेमातातच्छतात्त्व
सत्ताराज्यंममदत्तंयथात्वंममअददान्चतत्पुनः तेददामि) भरत बोले है रावेंद्र पूर्वमेरी माता को
राज्यकार किया भाव रामको बनवास भरतको राज्य इति मेरमाता को वचन अंगीकार करिआपने
उक्ताभ मोकोदैं वनको गये तब जैसे आप मोको दिया तैसे सो राज्य मैं पुनः आपको देताहौं २(इति
सहित भक्त्यापादयोस्ताष्टांगंप्रणिपत्यचकैकेय्यागुरुणासहबहुधाप्रार्थयामास) ऐसा कहिके भरत प्रीति
बहुतप्रकाररघुनंदन के पांयन को साष्टांग दंडप्रणाम करि पुनः कैकेयी करिके अरु वशिष्ठ करिके सहित
चेष्टाउपांगार प्रार्थना करते भये ३ (तथाइतिईश्वरःभरतातुराज्यंप्रतिजग्राहमायांआश्रित्यंसकलानंर
कोद्धार हेपातः) बहुत भली ऐसाकहि ईश्वर रघुनंदन भरत ते राज्यको ग्रहण करतेभये काहेते लो-
ग्रहण कियेन मायाका आश्रयण होकरि संवमानुष की चेष्टा को प्राप्त हैं ताही अनुकूल राज्य भी
जिनको पुनीतातरु ४ (स्वाराज्यअनुभवःयस्यसुखज्ञानैकरूपिणः) अपने परमात्म रूपको अनुभव है
त्याग है मायाः सुखज्ञानै एकरूप है जिनको (अतिशयनिरस्तः आनंदरूपिणःपरमात्मनः) अत्यंत
पेणतुराज्येनतत्स्वकारण रूपजिनमें ऐतो अखंड आनंदरूप है जिनको ऐसे परमात्मा रामको ५ (मानु
किंजगदीशितुर्यस्यभूभंगमात्रेणक्षणात्त्रिलोकीनश्यति) मानुष करिके पुनः राज्य

करिकै ताकी कौन जगदीशता है जाकी भृकुटीभंगमात्र ते क्षण में तीनिहूँ लोकनाश होते हैं ६ ॥
 यस्यानुग्रहमात्रेण भवन्त्याखंडलश्रियः ॥ लीलासृष्टमहासृष्टेः कियदेतद्रमापतेः ७
 तथापि भजतानित्यं कामपूरविधित्सया ॥ लीलामानुषदेहेन सर्वमप्यनुवर्तते ८
 ततः शत्रुघ्नवचनान्निपुणः श्मश्रुकृतकः ॥ संभाराश्चाभिषेकार्थमानीताराधवस्य
 हि ९ पूर्वतु भरते स्नाते लक्ष्मणे च महात्मनि ॥ सुग्रीववानरैर्द्रेचराक्षसेन्द्रे विभीष
 णे १० विशोधितजटः स्नाताश्चित्रमाल्यानुलेपनः ॥ महार्हवसनोपेतस्तस्थौ तत्र
 श्रियाज्वलन् ११ प्रतिकर्मचरामस्य लक्ष्मणस्य महामतिः ॥ कारयामास भरतः
 सीतायाराजयोषितः १२ ॥

(यस्य अनुग्रहमात्रेण आखंडलश्रियः भवन्ति महासृष्टेः लीलासृष्टरमापतेः एतत्कियत्) जिनकी अनुग्रह मात्र करिकै सम्पूर्ण लोकों की ऐश्वर्य होती है अरु महा सृष्टि जो अनेक ब्रह्मांड ताको लीला मात्र रचनेवाले रमापति तिनको यह अणोध्याकी राज्य क्या है ७ (तथापि नित्यं भजतं कामपूरविधित्सया लीलामानुषदेहेन सर्वमपि अनुवर्तते) तौ भी जे नित्यभजन करनेवाले भक्त हैं तिनकी मन कामना को पूर्ण करनेकी इच्छा करिकै लीला मात्रमानुष देह धारण करिकै ताही की अनुकूलसव आचरण उत्तम करिकै लोकको सिखावन देते हैं ८ (ततः शत्रुघ्नवचनात् श्मश्रुकृतकः निपुणः चराधवस्य हि अभिषेकार्थं संभाराः आनीता) तदनंतर शत्रुघ्नके वचन ते वारधनाने वाला चतुरनापित अरु रघुनंदन के राज्याभिषेकार्थ यावत् सामग्री है सो सवमंत्री लोग लावते भये ९ (तु पूर्वभरते स्नाते च महात्मनि लक्ष्मणे वानरैर्द्रे सुग्रीवे चराक्षसेन्द्रे विभीषणे) प्रथम भरतजी मज्जन कीन्हे पुनः महात्मा लक्ष्मण मज्जन कीन्हे तब वानरोंके राजा सुग्रीव मज्जन कीन्हे पुनः राक्षसों के राजा विभीषण मज्जन कीन्हे इसक्रम इनचारिहु के स्नान कीन्हे संते तब १० (विशोधितजटः स्नातः) रघुनंदन अपने जटन को विवराय अधिक कटाय मसालासों मलाय धोय फुलेल लगाय ऐंछि तनमें उबटन लगवाय स्नान करि पीतांबर पहिरि (चित्रमाल्यानुलेपनः) विचित्रमालादि भूषण धारण करि अंगराग लेपन करि (महार्हवसनोपेतः श्रियाज्वलन् तत्र तस्थौ) बड़ेमोल के वसन पहिरि शोभा करिकै प्रकाशमान तहां बैठते भये ११ (रामस्य प्रतिकर्म महामतिः लक्ष्मणः च भरतः कारयामास सीतायाः राजयोषितः) रघुनंदन को उबटनादि सब कार्य बड़े बुद्धिमान् लक्ष्मण पुनः भरत करते भये सीता को कौशल्यादि रानी करती भई १२ ॥

महार्हवस्त्राभरणैरलंचक्रुः सुमध्यमाम् १३ ततो वानरपत्नीनां सर्वासामिव शोभना ॥
 अकारयत कौशल्या प्रहृष्टा पुत्रवत्सला १४ ततः स्यंदनमादाय शत्रुघ्नवचनात्सु
 धीः ॥ सुमंत्रः सूर्यसंकाशं योजयित्वा ग्रतः स्थितः ॥ आरुरोहरथं रामः सत्यधर्मपरा
 यणः १५ सुग्रीवो युवराजश्च हनुमांश्च विभीषणः ॥ स्नात्वा दिव्यां वरधरादिव्या
 भरणभूषिताः १६ राममन्वीयुरग्रे चरथाश्च गजवाहनाः ॥ सुग्रीवपत्न्यः सीता च य
 युर्यानैः पुरं महत् १७ वज्रपाणिर्यथा देवैर्हरिताश्चरथे स्थितः ॥ प्रययौ रथमास्थाय
 तथारामो महत् पुरम् १८ ॥

(महार्ह वस्त्राभरणैः सुमध्यमां अलंचक्रुः) बड़ेमोलके वसन आभूषणों करिकै सुंदर मध्यगं है जिन

कोऐसी सीताको अलंकृत करती भई १३ (ततःपुत्रवत्सला प्रहृष्टा कौशल्या वानरपत्नीनां सर्वासां एव शोभनाप्रकारयत) तिसकेपाछे पुत्रपर प्रीतिकरने वालीपरमानंदभरीकौशल्यासोसुग्रीवादि वानरोंकी जो पत्नी रहींतिन सबकोभी उबटनमज्जन बसन भूषणादि सबसंस्कार करिशोभा युक्त करतीभई १४ (ततःशत्रुघ्नबचनात्सुधीःसुमंत्रःसूर्यसंकाशयोजयित्वास्यंदनं आदाय अग्रतः स्थितः) तदनंतर शत्रुघ्न की आज्ञाते सुबुद्धी सुमंत्रसूर्यवत्प्रकाशमान रथ वाजिजोरिले आयरघुनंदनकेआगेस्थितकीन्है (सत्य धर्मपरायणःरामःरथंआरुरोह) सत्यधर्ममेंतत्पर रघुनंदन रथपर सवारहोतेभये १५ (सुग्रीवःचयुवराजः हनुमांश्चबिभीषणःस्नात्वादिब्यअंबरधराःदिव्यआभरणभूषिताः) सुग्रीवपुनःयुवराजजोअंगदतथाहनुमानपुनः बिभीषण इत्यादिसब उबटनलगायस्नानकरि दिव्यबसनधारण करि दिव्यभूषण किरीट कुंडलमाल केयूरादि भूषितहैंकरिसब १६ (रथअश्वगज वाहनाःरामं अन्वीयुःचअग्रेसीताचसुग्रीव पत्न्यःयानैःमहत्पुरं ययुः) सुग्रीवादि सबरथघोड़े हाथी इत्यादि वाहनोपरसवारहैं कोऊ रघुनाथजी के पाछे पुनः कोऊचले आगे अरु जानकीजी पुनःसुग्रीवादिकोंकीस्त्री वाहनोपरसवारहैंकैमहाउत्तम पुरजो अयोध्या तहाँ को जाती भई १७ (हरिताश्वरथेस्थितःयथावज्रपाणिःदेवैः प्रययौ तथारामः रथंअस्थायमहत्पुरम्) सबजा घोड़ेनहेहुये रथमें सवारहैं जैसे इंद्रदेवतों सहित चलतेभये तैसेही बंधुसखान सहित रघुनंदन रथपरसवारहैंअयोध्यापुरको चलते भये १८ ॥

सारथ्यंभरतश्चक्रैरत्नदंडंमहाद्युतिः ॥ श्वेतातपत्रंशत्रुघ्नोलक्ष्मणोव्यजनंदधे १९
चामरंचसमीपस्थोन्यबीजयदरिंदमः ॥ शशिप्रकाशंत्वपरंजग्राहासुरनायकः २०
दिविजैःसिद्धसंघैश्चऋषिभिर्दिव्यदर्शनैः ॥ स्तूयमानस्यरामस्यशुश्रुवेमधुर
ध्वनिः २१ मानुषरूपमास्थायवानरागजवाहनाः ॥ भेरीशंखनिनादैश्चमृदंगप
णवानकैः २२ प्रययौराघवश्रेष्ठस्तांपुरींसमलंकृताम् ॥ ददृशुस्तेसमायांतराघवं
पुरवासिनः २३ दूर्वादलश्यामतनुंमहार्हकिरीटरत्नाभरणांचितांगं ॥ आरक्तकं
जायतलोचनांतदृष्ट्वाययुर्मोदमतीवपुण्याः २४ ॥

(भरतः सारथ्यंचक्रै रत्नदंडं महाद्युतिःश्वेतातपत्रं शत्रुघ्नःलक्ष्मणःव्यजनंदधे) भरत रघुनंदन कोरथहांकते भये जामेंरत्नजाटितऐसासोने को दंडमहा प्रकाशमानउज्ज्वल छत्र शत्रुघ्नलिहे तैसेही लक्ष्मण दिव्यपंखालिहे १९ (चसमीपस्थःअरिंदमः चामरंन्यबीजयत् तुअपरंशशिप्रकाशं असुरनायकःजग्राह) पुनः समीप बैठेहुये शत्रुनाशकरनेवाले जो सुग्रीव सोचमरढोरतेहैं पुनः और दूसरा चमरचंद्रवत् प्रकाशवंत ताहि राक्षसोंके राजा बिभीषण लिहे ढोरिरहेहैं २० (दिविजैः सिद्धसंघैः चदिव्यदर्शनैःऋषिभिः रामस्य स्तूयमानस्य मधुरध्वनिः शुश्रुवे) देवतोंकरिकै सिद्धगणोंकरिकै पुनः दिव्यहैं दर्शन जिनका ऐसे ऋषिदेवोंकरिकै जो रघुनाथजी की स्तुति कीजातीहै ताकी मधुरध्वनि सुनाई देतीहै २१ (वानरामानुषरूपं आस्थायगजवाहनाः मृदंग पणवआनकैःचभेरी शंखनिनादैः) वानरमानुषरूप धरे हाथि नपरसवार मृदंग पणव आनक भेरी शंख इत्यादि बाजों करिकै नाद करते हैं अर्थात् ए सब बाजा बजाय रहे हैं २२ (राघवःश्रेष्ठःसमलंकृतां तांपुरींप्रययौ आयांतराघवं पुरवासिनःतेददृशुः) सबबाजों सहित रघुवंशनाथ मंगल साजों करिकै भूषित करी गई तिस अयोध्यापुरी को जाते भये अरु आवतेहुये जो रघुनंदन तिनहिं पुरवासी लोग देखते भये २३ (दूर्वादलश्यामतनुं) दूबके दल सम श्याम सुंदर तनुहै जिनको (महार्हकिरीटरत्नाभरणंचित अंगं

अमोल मणि जटित किरीट शीशपर कुंडल माल केयूरादि रत्न भूषणों-करिके व्याप्त है अंग जिनको (कंजायतलोचनांतंभारक्तपुण्यादृष्टाभतीवमोदययुः) कमल समलंबायमान नेत्रों के अंत भाग में किंचित् अरुणता है जिनके ऐसे जो रघुनन्दन तिनहि बड़े पुण्यवंत अयोध्या वासी देखिके अत्यंत आनंदको प्राप्तभये २४ ॥

विचित्ररत्नांचितसूत्रनद्धपीतांबरपीनभुजांतरालम् ॥ आनर्ध्यमुक्ताफलदिव्यहा रेर्विरोचमानंरघुनन्दनंप्रजाः २५ सुग्रीवमुख्यैर्हरिभिःप्रशंतैर्निषेव्यमाणंरवितुल्य भासम् ॥ कस्तूरिकाचंदनलिसगात्रंनिवीतकल्पद्रुमपुष्पमालं २६ श्रुत्वास्त्रियोराम मुपागतंमुदाप्रहर्षवेगोत्कलिताननश्रियः ॥ अपास्यसर्वगृहकार्यमाहितंहर्म्याणि चैवारुरुहुःस्वलंकृताः २७ दृष्ट्वाहरिसर्वदृगुत्सवाकृतिपुष्पैर्किरंत्यःस्मितशोभि ताननाः ॥ दृग्भिःपुनर्नेत्रमनोरसायनंस्वानंदमूर्तिमनसाभिरेभिरे २८ रामःस्मित स्निग्धदृशाप्रजास्तथापश्यन्प्रजानाथइवापरःप्रभुः ॥

(विचित्ररत्नांचितसूत्रंतेननद्धःपीतांबरयस्य) विचित्र रत्नयुत हेममय कटिमूत्र तेहिकरिके बंधाहै पीतांबर जिनको (पीनभुजांतरालम्) पुष्ट है भुजन को अंतर बक्षःस्थल जिनको (अनर्ध्यमुक्ताफलदिव्यहारैरघुनन्दनंप्रजाःविरोचमानं) बड़े मोलके मोतिनके दिव्य हारों करिके प्रकाशमान रघु-नन्दन को प्रजालोग देखि रहेहैं २५ (सुग्रीव मुख्यैः प्रशंतैःहरिभिःनिषेव्यमाणंरवितुल्यभासं) सुग्रीव आदि शांतचित्त वानरों करिके सेव्यमान सूर्य तुल्य प्रभा है जिनकी (कस्तूरिकाचंदनलिस गात्रं) केशरि कर्पूर कस्तूरी मिलाहुआ चंदन लिस है गात्र में जिनके (निवीतकल्पद्रुमपुष्पमालं) कंठते लटाकि रहाहै कल्पवृक्ष के फूलों की माला २६ (उपागतंरामंश्रुत्वामुदास्त्रियःप्रहर्षवेगेनआ-ननश्रियःउत्कलितआहितंगृहकार्यंसर्वअपास्यचएवस्वलंकृताःहर्म्याणिआरुरुहुः) भावते हुये रघुन-न्दनको सुनिके आनन्दयुत जो पुरकी स्त्री तिनमें बड़े आनन्द उमंगके बेगकरिके मुखकी शोभा तृद्धिको प्राप्तभई दर्शन लालसाते अवश्यकरनेयोग्य जो गृहकार्य सो सब त्यागि पुनः तनमें बसन भूषण अलंकृतकरिके मन्दिरनपरचढ़तीभई २७ (सर्वदृक्उत्सवआकृतिहरिदृष्ट्वास्मितशोभिताननाःपुष्पैःकिरं-त्यः पुनः नेत्रमनोरसायनंस्वानंदमूर्तिदृग्भिःमनसाभिरेभिरे) सबके नेत्रोंकी दृष्टिके उत्सवकी मूर्ति रघुनाथजीकोदेखिके मुसुकानिकरिके शोभित हैं मुखजिनके सो स्त्रीजन फूलोंकरिके वर्षाकरतीभई पुनः नेत्र मनको रसायन सम अपने आनन्दकीमूर्ति रघुनन्दनको नेत्रद्वारा उरमेंआनि मनकरिके अलिंगनकरतीभई २८ (तथा अपरः प्रजानाथइवप्रभुःरामःस्मितस्निग्धदृशाप्रजाःपश्यन्) यथा प्रजा प्रभुकोदेखते हैं तैसेही अपरब्रह्मा के तुल्य प्रभु रघुनन्दन मुसुकानियुत प्रसन्नमुख स्नेहयुक्त दृष्टिकरिके प्रजनको देखतेहुये ॥

शनैर्जगामाथपितुःस्वलंकृतंगृहंमहेंद्रालयसन्निभेहरिः २९ प्रविश्यवेदमांतरसंस्थितोमुदाराभोववंदेचरणौस्वमातुः ॥ क्रमेणसर्वाःपितृयोषितःप्रभुर्ननामभक्त्या रघुवंशकेतुः ३० ततोभरतमाहेदंरामःसत्यपराक्रमः ॥ सर्वसंपत्समायुक्तंमममंदि रमुत्तमम् ३१ मित्रायवानरैर्द्रायसुग्रीवायप्रदीयताम् ॥ सर्वेभ्यःसुखवासार्थंमं दिराणिप्रकल्पय ३२ रामेणैवसमादिष्टोभरतश्चतथाकरोत् ॥ उवाचचमहातेजाः

सुग्रीवंराघवानुजः ३३ राघवस्याभिषेकार्थंचतुःसिंधुजलंशुभम् ॥ आनेतुंप्रेषय
स्वाशुद्रूतांस्त्वरितविक्रमान् ३४ ॥

(अथ महेंद्रालयसन्निभेलंकृतंस्वपितुःगृहंशनैःहरिःजगाम) अब इंद्रके मन्दिरके तुल्य प्रकाशमान भूषित जो आपने पिताको गृह तहांको धीरा धीरा प्रभुजातेभये २६ (प्रविश्यवेदमांतरसंस्थितःमुदा रामःस्वमातुःचरणौवदंरेषुवंशकेतुःप्रभुःभक्त्यापितृयोषितःक्रमेणसर्वाःननाम) मंदिर में प्रवेगकरि मध्य डेउढ़ी में बैठि आनन्दयुत रघुनंदन प्रथम अपनी माताके चरणोंको प्रणामकीन्ह पुनःरघुवंश में पताका प्रभुभक्ति सहित पिताकी यावत् स्त्री रहीं तिनहिं क्रम क्रम सबको पूणामकरतेभये ३० (त तःसत्यपराक्रमःरामःभरतंइदंआह सर्वतपस्तमायुक्तंउत्तमंमममंदिरम्) तदनंतर सत्य है पराक्रम जिनको सो रघुनंदन भरतपूति ऐसा बोलतेभये हे भरत सब प्रकार संपत्तियुक्त उत्तम जो मेरा मन्दिर है ३१ (वानरेंद्रायमित्रायसुग्रीवायप्रदीयतां सुखवासाथैर्वैभ्यःमंदिराणिप्रकल्पय) वानरोंके राजा मेरे मित्र जो सुग्रीवहैं तिनको वासकरने अर्थ मेरा मंदिरदेहु तथा सुख सहित वासकरने अर्थ विभीषणादिक सबके अर्थ उत्तम मंदिरदेहु ३२ (रामेणएवसंआदिष्टःचभरतःतथाकरोत्चमहातेजाः राघवानुजःसुग्रीवंउवाच) इस प्रकार रघुनंदनकरिकै आज्ञाको प्राप्तहै पुनः भरत तैसेहोकरतेभये सबको वासदै पुनः महातेजस्वी भरत सुग्रीवप्रतिबोलतेभये ३३ (राघवस्यअभिषेकार्थंचतुःसिंधु जलंशुभम् आनेतुंस्त्वरितविक्रमान्दतान्आशुप्रेषयस्व) हे सुग्रीव रघुनंदनके राज्याभिषेककरने अर्थ चारिहु समुद्रनको जल मंगलीक आनवेहेत शीघ्रचलनेवाले पराक्रमी दूतनको शीघ्रहीपठायेइजाय जललैआवहिं ३४ ॥

प्रेषयामाससुग्रीवो जांबवंतं मरुत्सुतम् ॥ अंगदं च सुषेणं च ते गत्वा वायुवेगतः ३५
जलपूर्णं शिखरातकुम्भकलशांश्च समानयत् ॥ आनीतं तीर्थसलिलं शत्रुघ्नो मंत्रिभिः सह
३६ राघवस्याभिषेकार्थं वशिष्ठाय न्यवेदयत् ॥ ततस्तु प्रयतो वृद्धो वशिष्ठो ब्राह्मणैः सह
३७ रामं रत्नमये पीठे ससीतं संन्यवेशयेत् ॥ वशिष्ठो वामदेवश्च जावालिगौतमस्तथा
३८ वाल्मीकिश्च तथा चक्रुः सर्वे रामाभिषेचनम् ॥ कुशाग्रतुलसीयुक्तं पुण्यं
गंधजलैर्मुदा ३९ अभ्यर्षिचनूरघुश्रेष्ठं वासवं वसवो यथा ॥ ऋत्विग्भिर्ब्राह्मणैः श्रेष्ठैः
कन्याभिः सह मंत्रिभिः ४० ॥

(सुग्रीवः जाम्बवंतं मरुत्सुतं च अंगदं च सुषेणं प्रेषयामास ते वायुवेगतः गत्वा) भरतके वचन सुनि सुग्रीव जामवंत को अरु हनुमान् को पुनः अंगदको अरु सुषेणको दक्षिणादि क्रमते चारिहु दिशनको पठावते भये ते सब पवनसम वेगतेगये ३५ (जलपूर्णं शिखरातकुम्भकलशान्समानयन्मंत्रिभिः सह शत्रुघ्नः तीर्थसलिलं आनीतं) सिंधुके जल करिकै पूर्ण पुनः सोनेके कलशन को लातेभये अरु मंत्रिन सहित शत्रुघ्न पूर्वको आताहुवा सबतीर्थों को जल सो लातेभये ३६ (राघवस्यअभिषेकार्थं) रघुनंदन के राज्याभिषेक करने अर्थ (वशिष्ठाय न्यवेदयत्) सबतीर्थों को सब समुद्रोंको जल लाय वशिष्ठके अर्थ निवेदन किये अर्थात्सौंपिदिये (ततःप्रयतःवृद्धःवशिष्ठःतुब्राह्मणैःसह) तब इंद्रजीजित् वृद्ध वशिष्ठ पुनः वामदेवादि अपर ब्राह्मणों सहित ३७ (ससीतरामं रत्नमये पीठे संन्यवेशयत् वशिष्ठः वामदेवः च जावालिः तथा गौतमः) सहित सीता रघुनंदनको रत्नमय सिंहासन पर बैठाय कै वशिष्ठ

अरु वामदेव पुनः जा वालितैसे गौतम ३८ (चतथावाल्मीकिःकुशाग्रतुलसीगंधयुक्तं पुण्यजलैःमुद सर्वैरामाभिषेचनचक्रुः) पुनः तैसेही वाल्मीकि इत्यादि मुनिजन कुशों को अग्रभाग लेंकै तुलसदिल केशरि कर्पूर कस्तूरी कुंकुम अगर चंदन इत्यादि गंध द्रव्य युक्त पुण्य तीर्थों के जल करिकै आनंद सहित सब मुनिलोग रघुनाथजीको अभिषेक करतेभये ३९ (ऋत्विग्भिः ब्राह्मणैः श्रेष्ठैः कन्याभिः सह मंत्रिभिः रघुश्रेष्ठं अभ्यर्षिचन्यथावसवः वासवं) प्रोहितब्राह्मणोंमें श्रेष्ठब्राह्मणोंकी कन्यों करिकै सहित मंत्रिन करिकै रघुवंशनाथ अभिषेक किये गये कौन भांति जैसे वसुनामे देवतों करिकै इंद्र अभिषेक किये गये हैं ४० ॥

सर्वोषधार्सैश्चैव देवतैर्नभसंस्थितैः ॥ चतुर्भिलोकपालैश्चस्तुवद्भिः सगणैस्तथा ४१ छत्रंचतस्य जग्राह शत्रुघ्नः पांडुरं शुभम् ॥ सुग्रीवराक्षसेन्द्रौ तौ दधतुः श्वेत चामरे ४२ मालांचकांचनीं वायुर्ददौ वासवचोदितः ॥ सर्वरत्नममायुक्तं मणिकांचनभूषितम् ४३ ददौ हारं नरेन्द्राय स्वयं शक्रस्तुभक्तितः ॥ प्रजगुर्देवगंधर्वाननृतुश्चाप्सरोगणाः ४४ देवदुंदुभयोने दुःखात्पुष्पवृष्टिः पपात्खात् ॥ नवदूर्वादलश्यामं पद्मपत्राय तेषां ४५ रविकोटिप्रभायुक्तकिरीटेन विराजितम् ॥ कोटिकंदर्पलावण्यं पीताम्बरसमावृतम् ४६ ॥

(चण्वसर्वोषधार्सैः नभसि स्थितैः देवतैः तथा सगणैः च चतुर्भिलोकपालैः स्तुवद्भिः) पुनः सब औपधीके रसों करिकै आकाशमें स्थित जो देवता तैसे सहित आपने पार्षदन पुनः इंद्रवरुण कुवेरधर्म राजादि चारिहु लोकपाल जेस्तुति करते हैं इन सबन करिकै अभिषेक किये गये रघुनन्दन ४१ (चपांडुरं शुभं छत्रं तस्य शत्रुघ्नः जग्राह सुग्रीवराक्षसेन्द्रौ तौ दधतुः श्वेत चामरे दधतुः) पुनः श्वेतवर्ण मंगलीक जो रघुनाथजीको छत्र है ताको शत्रुघ्नलिहे हैं सुग्रीव विभीषण दोऊ दिशिते श्वेत वर्ण चामर प्रभुपर ढोरते हैं ४२ (वासवचोदितः वायुः कांचनीं मालांचकांचनीं वासवचोदितः) पुनः इंद्रके पठाये हुये पवन कंचन मय बनाहुवा दिव्य माला रघुनाथजीको भेटदेतेभये पुनः सबरत्न सहित मणि कंचन भूषित ऐसा जो दिव्य उत्तम हारहै तिसको आनि ४३ (तुभक्तितः स्वयं शक्रः नरेन्द्राय ददौ देवगंधर्वाः प्रजगुः च अप्सरगणाः ननृतुः) सोई हार पुनः प्रीति पूर्वक आपही इंद्रराजाधिराज जो रघुनाथ जी तिनहिंदेतेभये ता समय देव गंधर्व गान करते भये तथा अप्सरा समूह नृत्य करती भई ४४ (देवदुंदुभयोने दुःखात्पुष्पवृष्टिः पपात् नवदूर्वादलश्यामं पद्मपत्राय तेषां) देवतोंकी दुंदुभी बाजि रहीहैं आकाशते फूलोंकी वर्षागिरि रहीहैं तासमयमें प्रभुकी कैसी शोभाहै कि नर्वान दूर्वादलसम श्यामतनहै जिनको कमल दल सम विशालनेत्र हैं जिनके ४५ (कोटिरविप्रभायुक्तकिरीटेन विराजितम् पीताम्बरसमावृतं कोटिकंदर्पलावण्यं) करोरिन सूर्य कैसी प्रकाश युक्त दिव्य किरीट करिकै शोभित है शीशु जिनको तनमें पीताम्बर धारण किहे करोरिन काम की शोभाहै जिनमें ४६ ॥

दिव्याभरणसंपन्नं दिव्यचन्दनलेपनं ॥ अयुतादित्यसंकाशां हि भुज रघुनन्दनम् ४७ वामभागे समासीनां सीतां कांचनसन्निभाम् ॥ सर्वाभरणसंपन्नां वामां केसमुपरिथिताम् ४८ रक्तोत्पलकरां भोजां वामेनालिङ्ग्य संस्थिताम् ॥ सर्वातिशयशोभाढ्यं दृष्ट्वा भक्तिसमन्वितः ४९ उमयासाहितो देवः शंकरो रघुनन्दनम् ॥ सर्वदेवग

ऐर्युक्तःस्तोतुंसमुपचक्रमे ५० श्रीमहादेवउवाच ॥ नमोस्तुरामायसशक्तिकायनी
लोत्पलश्यामलकोमलाय ॥ किरीटहारांगदभूषणाय सिंहासनस्थायमहाप्रभा
य ५१ त्वमादिमध्यांतविहीनएकःसृजस्यवस्यत्सिचलोकजातं ॥ स्वमाययातेन
नलिप्यसेत्वंयत्स्वेसुखेजस्ररतो नवद्यः ५२ ॥

(दिव्याभरणसंपन्नं) कुंडल माल केयूरपहुँची मुद्रिका कांची आदि दिव्य भूषणोंकरि सर्वांग भू-
षित (दिव्यचंदनलेपनं) केशरि कस्तूरी कर्पूरादि मिला दिव्य चंदनलेप किहे (अयुतआदित्यसं
काशंद्भिभुजंरघुनंदनं) दशहजार सूर्यतुल्य प्रकाशमान हैद्वै हैं भुजा जिनके ऐसे जो रघुनंदन ४७
(कांचनसन्निभाम्सर्वाभरणसंपन्नांसीतां वामभागेसमासीनां वामभ्रंकेसंडपस्थितां) सुवर्णसम तनकी
कांतिहै जिनकी सर्वांग भूषणों करिकै भूषित ऐसी जो सीता सो बामभागमें आसीन है कौन भांति
बामभ्रकोरामें उपस्थितहै ४८ (रक्तोत्पलकरांभोजां) अरुण वरण कमल हाथमें है जिनके (वामे
नार्लिङ्ग्यसंस्थितं) ऐसी सीताको बाम हाथ करिकै आलिंगन किहे बैठेहुये (सर्वातिशयशोभाढ्येष्ट
एवाभक्तिसमन्वितः) सब रूपनते अतिशय अधिक शोभा युक्त रघुनंदनको देखिकै बड़ी प्रीति सहित
४९ (सर्वदेवगणैःयुक्तःउमयासहितःशंकरःदेवःरघुनन्दनंस्तोतुंसमुपचक्रमे) सब देवगण युक्त पार्वती
सहित शंकर देव प्रीतिपूर्वक रघुनंदनकी स्तुति करनेलगे ५० (नीलउत्पलश्यामलकोमलायकिरी
टहारांगदभूषणायसशक्तिकायसिंहासनस्थायमहाप्रभायरामायनमोस्तु) नीलकमलसम श्यामल
कोमलभ्रंगहै जिनको शीशमें दिव्य किरीटगलेमें मणिकांचनमयहार भुजमें भ्रंगद श्रवणमें कुंडलकर
मूलपहुँची अँगुलीमें मुद्रिका कटिमें कांची इत्यादि सर्वांग भूषणयुक्त जिनके अपनी आदि शक्तिका
अवतार सीता सहित दिव्य रत्नसिंहासन पर आसीन महाप्रभावंत ऐसे रामरघुवंशनाथ तिनके अर्थ
मेरी नमस्कार है ५१ (आदिमध्यअंतविहीनत्वंएकः स्वमाययालोकसृजसि अवस्यत्सिचल्लोकजातंतेनत्वं
लिप्यसेनयत्स्वेसुखेजस्ररतःनवद्यः) आदि कबतेहौ मध्यकैसेहौ अंतकबतक रहौगे इत्यादि बिहीन
आप सदा एकही अद्वैतहौ अरु अपनी माया करिकै जो लोकको उत्पन्नपालन संहार करतेहौ परंतु
उसकमें करिकै आप लिप्यनहीं होतेहौसदा निर्दोषरहतेहौ क्योंकिजोअपने आनंदरूपमें सदास्थित
रहतेहौ ताते निर्दोषहौ ५२ ॥

लीलांविधत्सेगुणसंवृतस्त्वंप्रपन्नभक्तानुविधानहेतोः ॥ नानावतारैःसुरमानुषा
द्यैःप्रतीयसेज्ञानिभिरेवनित्यं ५३ स्वांशेनलोकंसकलंविधायतंविभर्षिचत्वंतदधः
फणीश्वरः ॥ उपर्यथोभान्वनिलोडुपौषधीप्रवर्षरूपोऽवसिनैकधाजगत् ५४ त्वमि
हदेहभृतांशिखिरूपःपचासिभुक्तमशेषमजस्रं ॥ पवनपंचकरूपसहायोजगदखंड
मनेनविभर्षि ५५ ॥

प्रपन्नभक्तानुविधानहेतोःगुणसंवृतःत्वंसुरमानुषाद्यैःनानावतारैःलीलांविधत्सेज्ञानिभिःएवनित्यंप्र
तीयसे) शरणागत भक्तोंके मोक्ष हेत मायागुणावृत आपसुरवाचनादि मानुष राम कृष्ण इत्यादि
अनेक अवतारों करिकै लीलाधारण करतेहौ सो परमेश्वरके अवतारहैं ऐसा ज्ञानी पुरुषों करिकै
नित्यहीं जाने जातेहौ अरु अज्ञानिन करिकै मानुष जानेजातेहौ भक्तजन लीलाश्रवण कीर्तिनकरि
भवब्रंथनते छूटते हैं ५३ (स्वांशेनसकलंलोकंविधायचतत्त्रयःत्वंफणीश्वरःतंविभर्षिअथोउपरिभानुः

अनिलः उडुपः औषधीःप्रवर्षःनैकधारूपः जगत्प्रवाति) हे रघुनन्दन अपने अंश करिके अर्थात् अंश-
वतार ब्रह्मारूप है करि सब लोकोंको रचिके पुनः ताके नीचे आपशेषरूप हैंकै तिस ब्रह्माण्ड को
शीशपर धारण करतेहौं अरु ऊपरसे सूर्यपवन चंद्रमा अन्नादि सब औषधीमेघ इत्यादि अनेकन प्रकार
केरूप है करि संसारको पालन करतेहौं ५४(पंचकरूपपवनसहायःत्वंशिखिरूपःइहदेहभृतांभुक्तंअंशे
पंचजसंपचसिम्भनेनजगत्प्रखंडंविभर्षि) पांचरूपपवन यथा जिज्ञासापंचके ॥ हृदिप्राणोगुदेऽपानःस-
मानोनाभिसंस्थितः । उदानः कंठदेशेस्यात्व्यानः सर्वशरीरगः॥इतिप्राण अपान उदान व्यान येशरीर
व्यासपांचरूपते पवन सहायक जिसका ऐसे आप जठराग्निरूप उदरमें बसेहुये इन देहधारिनको
भोजन किया हुआ संपूर्ण पदार्थको नित्यही पचावतेहौं यथा गीतायां ॥ अहं वैश्वानरोभूत्वाप्राणिनां
देहमाश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥ इसप्रकारकरिके जगत्संपूर्णपालतेहौं ५५ ॥

चंद्रसूर्यशिखिमध्यगतंयत्तेजईशचिदशेषतनूनाम् ॥ प्राभवत्तनुभृतामिहधैर्यैशौर्यं
मायुरखिलंतवसत्त्वम् ५६ त्वं विरंचिशिवविष्णुविभेदात्कालकर्मशशिसूर्यविभा
गात् ॥ वादिनां पृथग्विशेषविभासिब्रह्मनिश्चितमनन्यदिहैकम् ५७ मत्स्यादिरूपेण
यथात्वमेकःश्रुतौपुराणेषुचलोकसिद्धः ॥ तथैवसर्वसदसद्भिभागस्त्वमेवनान्य
द्भवतोविभाति ५८ यद्यत्समुत्पन्नमनंतसृष्टौउत्पत्स्यतेयच्चभवच्चयच्च ॥ नदृश्यते
स्थावरजंगमादौत्वयाविनातःपरतःपरस्त्वम् ५९ ॥

(हेईशचंद्रसूर्य शिखिमध्यगतंयत्तेज अशेषतनूनांचित्इहतनुभृतांधैर्यै शौर्यैमायुः अखिलंतवसत्त्वं
प्राभवत्) हेईश रघुनाथ जी चंद्रमा सूर्य अग्नि इत्यादि यावत् ज्योतिर्वंतहैं तिनके मध्य व्यास जो
तेज है अरु संपूर्ण देह धारिनकी जो चैतन्यता शक्तिहै तथा इन देह धारिनमें धीरता शूरता आयु-
वर्ष इत्यादि संपूर्ण रूपोंते आपको सत्त्व प्रकट होता है ५६ (हेईशविभेदात् विरंचिशिवविष्णुका
लकर्मशशिसूर्य विभागात्वादिनां पृथक्इवत्वंविभासिब्रह्मनिश्चितंमनन्यत्इहैकम्) हेईश रघुनंदन
लोकन के कार्य साधनहेतु जोआप भेदते विरंचि शिव विष्णु काल कर्म चंद्रमा सूर्य इत्यादि विभाग
ते अर्थात् ब्रह्मा लोक उत्पन्न करत विष्णु पालन करत शिव संहार करत काल सत्रकी अवधि बता-
वत कर्म जीवन को व्यापार करावत चंद्रमा अमृत मय शीतल किरणन ते अन्नादि औषधनको
पुष्ट करत सूर्य प्रकाश करत भूमि शोधत इत्यादि अलग अलग सबको प्रभाव देखनेते जे मत-
वादी हैं तिन को पृथक् सम तुम देखाते हौं भाव जोजिस रूपकी उपासना किया ताही को ईश्वर
मानता है अरु वास्तवमें ब्रह्म निश्चितहौं अद्वितीय एकहीहौं ५७ (यथामत्स्यादिरूपेणत्वंएकःश्रुतौ
चपुराणेषु लोकसिद्धःतथाएवसत्असत्विभागःसर्वत्वंएवभवतःअन्यत्तनविभाति) जैसे मत्स्यादिदश
रूपों करि आप एकहीवेद पुनः पुराणोंमें लिखे लोक प्रसिद्धहौं तैसेही सत् देवादि असत् राक्षसादि
विभाग रूपते सब आपहीहौं निश्चय करिके आपसों भिन्न कछु भी नहीं देखाता है भाव सब में
व्यापकसारांश आपअन्यत् लयाहै ५८ (अनंतसृष्टौयत्उत्पत्स्यतेयत्भवत्चयत्पत्समुत्पन्नंस्थाव-
रजंगमादौ त्वयाविनानदृश्यते अतःपरतःपरःत्वम्) अनंत सृष्टि में ये उत्पन्न होयेंगे पुनः येहैं पुनः
येये उत्पन्न द्यैये तिन स्थावर वृक्षादि जंगम मानुषादि इत्यादि में आप बिना कछुभी नहीं देखि
परताहैं ताते परतेपर सर्वो परि एक आपहीहौं दूसरा कछु नहीं ५९ ॥

तत्त्वं न जानंति परात्मनस्ते जनाः समस्तास्तव माययातः ॥ त्वद्भक्तसेवा मलमानसानां विभाति तत्त्वं परमेकमैशम् ६० ब्रह्मादयस्तेन विदुः स्वरूपं चिदात्मतत्त्वं वहिरर्थभावाः ॥ ततो बुधस्त्वामिदमेवरूपं भक्त्या भजन् मुक्तिमुपैत्य दुःखः ६१ अहं भवन्नाम गृणन्कृतार्थो वसामिकाश्यामनिशं भवान्या ॥ मुमूर्षमाणस्य विमुक्तये हं दिशामि मंत्रं तव रामनाम ६२ इमं स्तवं नित्यमनन्य भक्त्या शृण्वन्ति गायन्ति लिखन्ति ये वै ॥ ते सर्वसौख्यं परमं चलब्ध्वा भवत्पदं यांतु भवत्प्रसादात् ६३ ॥

(तव माययातः ते समस्ताः जनाः परात्मनः तत्त्वं न जानंति त्वत्भक्तसेवा मलमानसानां एकं परमैशं तत्त्वं विभाति) हे रघुनंदन आपकी माया करिके आच्छादित ते सब विषयीजन परमात्म तत्त्वको नहीं जानते हैं भाव देह व्यवहार सत्य मानि लोक में भेद बुद्धी राखे हैं अरु आपके भक्तोंकी सेवा करिके कामादि विकार त्यागि भमल हैं मन जिनके तिनको सब में परिपूर्ण एकही परमेश्वर तत्त्व देखि परता है ६० (वहिः अर्थ भावः ब्रह्मादयः ते चिदात्म तत्त्वं स्वरूपं न विदुः ततः बुधः इदं एव त्वारूपं भक्त्या भजन् अदुःखः मुक्तिं उपैति) हे रघुनंदन देह के बाह्य इंद्री विषयन में सत्य बुद्धि है जिनकी ऐसे मानुषोंकी कौन कहै ब्रह्मादिक देवताते भी चैतन्य आत्मतत्त्व स्वरूपको नहीं जानि सके हैं ताते बुद्धिमान् यही जो श्यामसुंदर आपको स्वरूप है तिसी को श्रवण कीर्तन स्मरण सेवन अर्चन बंदनादि भक्ति करिके भजत संते सब दुःखहीन मुक्ति को प्राप्त होते हैं ६१ (अहं भवान्या भवत्नाम गृणन्कृतार्थः अनिशं काश्यां वसामि मुमूर्षमाणस्य विमुक्तये अहं तव रामनाम मंत्रं दिशामि) हे रघुनंदन मैं पार्वती करिके सहित आपको नाम उच्चारण करत संते कृतार्थ होकर दिनों राति काशी में वास करता हों तहाँ जीवमात्र को मरण समय उनकी मुक्ति के अर्थ मैं आपको राम नाम महामंत्र उपदेश करि देता हों ६२ (ये वै अनन्य भक्त्या इमं स्तवं नित्यं शृण्वन्ति गायन्ति लिखन्ति ते सर्व परमं सौख्यं लब्ध्वा च भवत्प्रसादात् भवत्पदं यांतु) हे रघुनंदन यह मेरी प्रार्थना है ये जन निश्चय अनन्य भक्ति करिके इस मेरे स्तुति किये हुये आप के स्तोत्र को नित्यहीं श्रवण करें वा गान करें वा लिखें ते जीवन पर्यंत स्त्री पुत्र धन धाम भोजन भूषण बाहनादि सब प्रकारके परम सुखको पावें पुनः अंतकाल आप के प्रसादते आपके पद को जावें ६३ ॥

इन्द्र उवाच ॥ रक्षोधिपेनाखिल देवसौख्यं हतं च मे ब्रह्मवरेण देव ॥ पुनश्च सर्वं भवतः प्रसादात् प्राप्तं ह तो राक्षसदुष्टशत्रुः ६४ देवा ऊचुः ॥ हतायज्ञभागाधरा देवदत्तामुरा रेखलेनादिदैत्येन विष्णो ॥ हतोद्यत्वयानो वितानेषु भागाः पुरा वद्भविष्यं तियुष्मत्प्रसादात् ६५ पितर ऊचुः ॥ हतोद्यत्वया दुष्टदैत्यो महात्मन गयादौ नरैर्दत्तपिंडादिका न्नः ॥ बलादत्तिहत्वा गृहीत्वा समस्तानि दानीं पुनर्लब्ध सत्वा भवामः ६६ यज्ञा ऊचुः ॥ सदा विष्टि कर्मण्यनेनाभियुक्ता वहामो दशास्यं बलाद्दुःखयुक्ताः ॥ दुरात्मा ह तो रावणो राघवेश त्वया ते वयं दुःखजाता द्विमुक्ताः ६७ ॥

(हे देव ब्रह्मवरेण रक्षोधिपेन मे च अखिल देवसौख्यं हतं दुष्टशत्रुः राक्षस हतः च भवतः प्रसादात् पुनः सर्वं प्राप्तं) अब इंद्र बोले हे रघुनंदन देव ब्रह्मा के बरदान करि गर्वित राक्षसोंको राजा रावणने मेरा पुनः सम्पूर्ण देवतों को सुखसाज हरिलिया सो दुष्टशत्रु राक्षस मारा गया पुनः आपके प्रसादते पुनः सब

सुख प्राप्त भया ६४ (हेमुरारेविष्णोधरादेवदत्तायज्ञभागाखलेनभादिदैत्येनहृताभद्यत्वयाहतःयुष्मत्प्रसादात्तनःवितानेषुभागाःपुरावत्भविष्यन्ति) देवता बोले हे मुरके शत्रुविष्णो भूदेवब्राह्मणों कोदिया हुआ यज्ञनको जो हमाराभाग ताको खल रावणनेहरलियारहै अब आपकरिके दुष्टमारागया तो आपके प्रसादतेनः अर्थात् हमलोगोंको वितानेषु अर्थात् यज्ञनविषे भाग पूर्वकीनाई पुनः प्राप्तहोइगो ६५ (गयादौनरैःनःदत्तपिंडादिकान्भतिबलात्हत्वात्मस्तान्गृहीत्वाभद्यत्वयामहात्मन् दुष्टदैत्यः हतःइदानीं पुनः लब्धसत्त्वाभवामः) पितरबोले हे रघुनंदन गयादिकों में हमारे वंशके मानुषोंकरिके हमकोदियेजाते श्राद्ध में पिण्डादिक तिनहिं अत्यंतजबरइन हरि सबको रावण ग्रहणकरि लेतारहै सोई अब आपकरिके महाबली दुष्ट दैत्यमारागया अब पुनः पिंडादिपाय हमलोग बलीहोवेंगे ६६ (बलात्सदाविष्टिकर्मणिअनेनाभियुक्तादुःखयुक्ताःदशास्यंवहामः हेराघवेश त्वयादुरात्मारवणःहतः तेवयंदुःखजातात्विमुक्ताः) यक्ष बोले कि जबरइन पकरेहुये सदा वेगारिकर्म जो है इसीकरिकैयुक्त दुःख सहित पालकीआदिकों में रावणको भारवहतेरहे हे रघुवंशनाथ अब आपकरिके दुष्टरावणमारागया ताते हम लोग दुःखसमूहतेछूटिगये ६७ ॥

गंधर्वाञ्जुः ॥ वयंसंगीतनिपुणागायंतस्तेकथामृतम्॥आनंदामृतसंदोहयुक्ताःपूर्णस्थिताःपुरा ६८ पश्चाद्दुरात्मनारामरावणेनाभिविद्रुताः॥ तमेवगायमानाश्च तदाराधनतत्पराः६९स्थितास्त्वयापरित्राताहतोयंदुष्टराक्षसः ॥ एवमहोरगाःसिद्धाःकिन्नरामरुतस्तथा ७० वसवोमुनयोगावोगुह्यकाश्चपतत्रिणः ॥ सप्रजापतयश्चैतेतथाचाप्सरसांगणः ७१ सर्वैरामंसमासाद्यदृष्ट्वानेत्रमहोत्सवम्॥स्तुत्वा पृथक्पृथक्सर्वैराघवेणाभिनंदिताः ७२ ययुःस्वस्वंपदंसर्वेब्रह्मरुद्रादयस्तथा ॥ प्रशंसंतोमुदारामंगायांतस्तस्यचेष्टितम् ७३ ॥

(वयंसंगीतनिपुणाःतेकथामृतंगायांतः आनंदामृतसंदोहपूर्णयुक्ताःपुरास्थिताः) गंधर्वबोले हे रघुवंशनाथ हमलोग गानविद्यामें निपुण आपकी कथामृतगानकरतेहुये आनंदरूप अमृतसमूह परिपूर्णयुक्त पूर्वरहतेरहे ६८ (हेरामपदचात्दुरात्मनारावणेनभिविद्रुताःतमेवगायमानाःचतत्पराः) हे रघुनंदन पीछे दुष्टरावणने वरचसस्वाधिनकरिराखा तब ताकोभी गुणगानकरते हुये पुनः तिसीके आराधनमें लगेरहे भावभयकरि उसीको प्रसन्नकरतेरहे ६९ (अयंदुष्टराक्षसःहतः त्वया परित्रातास्थिताः एवमहोरगाःसिद्धाः तथाकिन्नराःमरुतः) अब यह दुष्ट राक्षस रावण मारागया आप करिके रक्षाको प्राप्तभये इसी प्रकार महानाग सिद्ध तैसेही किन्नर मरुत ७० (वसवःमुनयगावःगुह्यकाःचपतत्रिणःसप्रजापतयः एतेचतथाचाप्सरसांगणः) द्रोणादि आठौंसु कश्यपादि मुनि कामधेनु आदि गौवै गुह्यक पक्षीगण दक्षादि प्रजापति इत्यादि सब पुनः तैसेही अप्सरा समूह ७१ (सर्वैरामंसमासाद्यनेत्रमहाउत्सवंदृष्ट्वापृथक्पृथक्स्तुत्वासर्वैराघवेणभिनंदिताः) इत्यादि सवरघुनाथजीके समीप आयकै नेत्रोंको महाआनंद दायक राज्याभिषेक समयरघुनंदनके दर्शनकरि न्यारी न्यारी स्तुति करि सब रघुनंदन करिके प्रशंसित भये ७२ (ब्रह्मरुद्रादयःतथासर्वेमुदारामंप्रशंसंतः तस्यचेष्टितंगायांतःस्वस्वंपदंययुः) ब्रह्मरुद्रादि तथा और सब आनंद सहित रघुनंदन की प्रशंसा करते हुये क्षमाशील सुलभ उदारतादि गुणनमय प्रभु के चरित्रगान करते हुये सब अपने अपने लोकोंकोजाते भये ७३ ॥

ध्यायंतस्त्वभिषेकार्द्रसीतालक्ष्मणसंयुतम् ॥ सिंहासनस्थं राजेंद्रं ययुः सर्वे हृदि स्थितम् ७४ खेवाद्येषु ध्वनत्सु प्रमुदितहृदयैर्देववृन्दैः स्तुवद्भिर्वर्षद्भिः पुष्पवृष्टिदिवि मुनिनिकरैरीड्यमानं समंतात् ॥ रामः श्यामः प्रसन्नस्मितरुचिरमुखः सूर्यकोटिप्रकाशः सीतासौमित्रिवातात्मजमुनिहरिभिः सेव्यमानो विभाति ७५ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे युद्धकाण्डे पंचदशः सर्गः १५ ॥

(सीतालक्ष्मणसंयुतं सिंहासनस्थं राजेंद्रं हृदि स्थितं तु अभिषेकार्द्रध्यायंतः सर्वे ययुः) श्रीजनकनंदिनी अरु लक्ष्मण सहित रत्न सिंहासन पर बैठे हुये राजाधिराज तिनहिं हृदय में स्थित किये पुनः राज्याभिषेक समय को जो प्रेमानंद है तामें भीजे हुये सोई समय को ध्यान करते हुये ब्रह्मा शिव इंद्रादि सब देवता अपने अपने लोकों को जाते भये ७४ (खेवाद्येषु ध्वनत्सु पुष्पवृष्टिर्वर्षद्भिः सुप्रमुदितहृदयैः देववृन्दैः स्तुवद्भिः दिविसमंतात् मुनिनिकरैः ईड्यमानं सीतासौमित्रिवातात्मजमुनिहरिभिः सेव्यमानो विभाति रामः श्यामः प्रसन्नस्मितरुचिरमुखः सूर्यकोटिप्रकाशः) अब राज्याभिषेक समय राजसमाज सहित रत्न सिंहासन पर आसीन प्रभु को ध्यान कविवर्णन करत यथा आकाशमें विमानों पर अनेक बाजोंमें ध्वनि करते हुये समूह फूलोंकी वर्षा करिकै अत्यन्त आनन्दहृदय करिकै देवतोंके वृंदस्तुति करते हुये आकाश ते सब दिशो ते मुनिगणों करिकै स्तुति किये गये पुनः जनकनंदिनी लक्ष्मण हनुमान् मुनिजन वशिष्ठादि सुग्रीवादि वानर इत्यादि भ्रूकरिकै सेवित भाव चमरछत्र व्यजन पानदान पीकदान अंतरदान इत्यादि सेवासाज लिहे सब दिशिशोभित मध्य रत्न सिंहासनासीन रघुवंशनाथ सुन्दरश्यामतन प्रसन्न मंद मुसुकानि युत सुन्दर मुख कोटि सूर्यवत् प्रकाश मानहै ७५ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्म भूषणे युद्धकाण्डे श्रीरामराज्याभिषेकवर्णनो नाम पंचदशः प्रकाशः १५ ॥

महादेव उवाच ॥ रामेभिषिक्ते राजेंद्रे सर्वलोकसुखावहे ॥ वसुधासस्य संपन्ना फलवंतो महीरुहाः १ गंधहीनानि पुष्पाणि गंधवंति च काशिरे ॥ सहस्रशतमश्वानां धेनूनां च गवां तथा २ ददौ शतवृषां पूर्वाद्भिजेभ्योरघुनन्दनः ॥ त्रिंशत्कोटि सुवर्णस्य ब्राह्मणेभ्यो ददौ पुनः ३ वस्त्राभरणरत्नानि ब्राह्मणेभ्यो मुदा तथा ॥ सूर्यकांतिसमप्रख्यां सर्वरत्नमयीं स्रजम् ४ सुग्रीवाय ददौ प्रीत्याराधवो भक्तवत्सलः ॥ अंगदाय ददौ दिव्ये ह्यंगदे रघुनन्दनः ५ चंद्रकोटिप्रतीकाशं मणिरत्नविभूषितम् ॥ सीतायै प्रददौ हारं प्रीत्यारघुकुलोत्तमः ६ ॥

सवैया ॥ दान द्विजै हनुमान स्वभक्ति सखान बिदाधन भूषण दीन्हे । नीति सधर्म प्रजापति पालन यज्ञ अनेक यशादिक लीन्हे ॥ अल्पन मृत्यु दुकालन व्याधिरहै सब वर्ण स्वधर्महि चीन्हे । आरुज आनंद लोगरहै प्रभुराज्य सबै सुखपूर्ण सुकीन्हे ॥ (राजेंद्रे रामे अभिषिक्ते सर्वलोकसुखावहे वसुधासस्य संपन्ना महीरुहाः फलवंतः) शिवजी बोले हे गिरिजा राजाधिराज श्री रामचन्द्र जबराज्या

भिषेककोप्राप्तभये राज्यकरनेलगे तब संपूर्णलोक अन्न धन पुत्र परिवारादि सबभांतिते सुखीभया अरु पृथिवी अन्न करिके परिपूर्ण रहतीहै अरु वृक्ष सदा फले रहतेहैं १ (पुष्पाणिगंधहीनानिगंधवन्तिच काशिरै । शतसहस्रअश्वानांतथाधेनूनांचगवां) फूल जो सुगन्ध हीनहैं तेभी गंधवन्तहैं प्रकाश करतेभये अरु सउहजार उत्तम घोड़े तैसेही सउहजार कामयेनु समगौवै २ (शतवृषान्पूर्वरघुनन्दनःद्विजेभ्यः ददौ पुनःत्रिंशत्कोटिसुवर्णस्यब्राह्मणेभ्यःददौ) सउ वैलों समेत गौवैं रघुनन्दन ब्राह्मणोंके अर्थ देते भये पुनः तीसकरोरि अशरफी ब्राह्मणोंके अर्थ देतेभये ३ (तथावस्त्राभरणरत्नानिमुदाब्राह्मणेभ्यः सूर्यकातिसमप्रख्यांसर्वरत्नमयीसूजं) तैसेही वसन भूषण रत्न हीरा मुक्तादि आनन्द सहित ब्राह्मणोंके अर्थ देतेभये सूर्य कातिसम प्रकाश जामे ऐसी रत्नमयमाला ४ (भक्तवत्सलःराघवःप्रीत्यासु- ग्रीवायददौहिदिव्यअंगदेरघुनन्दनःअंगदायददौ) भक्तनपर प्रीति करणे वाले रघुनन्दन प्रीति सहित वह माला सुग्रीव के अर्थ देते भये निश्चय दिव्य बहूटा रघुनन्दन अंगद के अर्थ देतेभये ५ (कोटि- चंद्रप्रतीका शंमणिरत्नविभूषितं । हारंरघुकुलोत्तमःप्रीत्यासीतायैप्रददौ) कोटिचंद्रसमप्रकाशमान मणि रत्नों करि भूषित हार को रघुनन्दन प्रीति सहित जानकी जीके अर्थ देतेभये ६ ॥

अवमुच्यात्मनःकंठात्हारंजनकनंदिनी ॥ अवैक्षतहरीन्सर्वान्भर्तारिंचमुहुर्मुहुः ७
रामस्तामाहवैदेहीमिगितज्ञोविलोकयन् ॥ वैदेहियस्यतुष्टासिदेहितस्मैवरान
ने ८ हनूमतेददौहारंपश्यतोराघवस्यच ॥ तेनहारेणशुशुभेमामरुतिर्गौरवेणच ९
रामोपिमामरुतिंदृष्ट्वाकृतांजलिमुपस्थितम् ॥ भक्त्यापरमयातुष्टद्वंद्वचनमब्रवी
त् १० हनूमांस्तेप्रसन्नोस्मि वरंवरयकांक्षितम् ॥ दास्यामिदेवैरपियत्तदुर्लभंभुव
नत्रये ११ हनूमानपितंप्राहनत्वारामंप्रहृष्टधीः ॥ त्वन्नामस्मरतो रामनतृप्यतिम
नोमम १२ ॥

(आत्मनःकंठात्हारंअवमुच्यजनकनंदिनी सर्वान्हरानिचमुहुःमुहुःभर्तारिंचमुहुः) अपने कण्ठते हारकोउतारि जनकनंदिनी सब वानरोंकोदेखि पुनः आज्ञालेने हेतु वारम्बार पतिकी ओर देखतीहैं भाव यह हार किसकोदेवें ७ (इंगितज्ञःरामःवैदेहीविलोकयन्तांआह वैदेहिवराननेयस्यतुष्टासित स्मैदेहि) चेष्टाका जाननेवाले रघुनन्दन विदेहपुत्रीको देखतसंते तिनप्रति बोलतेभये हे विदेहनंदिनी उत्तम वदने जिसकेऊपर तुम प्रसन्नहोउ तिसके अर्थ यह मालादेहु ८ (राघवस्यपश्यतःचहारंहनू- मतेददौतेनहारेणचगौरवेणमामरुतिःशुशुभे) रघुनन्दनके देखतेही पुनः जानकीजी उसहारको हनूमा- न्के अर्थ देतीभिई तिस हारको पायकरिके पुनः समाजकेबीचमें जानकीजीके अधिक आदरकरिके हनूमान् बड़ी शोभापाये ९ (कृतांजलिंउपस्थितंमामरुतिंदृष्ट्वापरमयाभक्त्यातुष्टःरामःअपिद्वंद्वचनं अब्रवीत्) हाथजोरेहुये समीप बैठेहुये जो पवनपुत्र तिनहिदेखि पुनः हनूमान्की परमभक्तिकरिके प्रसन्नहैं रघुनन्दन भी ऐसा वचन बोलतेभये १० (हे हनूमान्तेप्रसन्नःअस्मिकांक्षितंवरंवरययत् भु- वनत्रयेदेवैःअपिदुर्लभंदास्यामि) रघुनन्दन बोले हे हनूमान् तुम्हारे ऊपरमें बहुत प्रसन्नहों ताते जो कांक्षा मनोकामनाहोइ सो वरमांगों जो तीनिहूंलोकों में देवतोंकरिके प्राप्ती दुर्लभहोय सो वर तोहि मैं देहुगो ११ (प्रहृष्टधीःरामनत्वाहनूमान्अपितंप्राह हे रामत्वत्नामस्मरतःमममनःतृप्यति- न) प्रसन्नमन रघुनन्दन को प्रणामकरि तिनप्रति हनूमान् भी बोलतेभये हे श्रीरघुनाथजी आपको नाम स्मरणकरतमें मेरामन कभी तृप्तनहींहोता है १२ ॥

अतस्त्वन्नामसततस्मरन्स्थान्स्थानामिभूतले ॥ यावत्स्थानस्यतितेनामलोकेतावत्क
लेवरम् १३ ममतिष्ठतुराजेंद्रवरोऽयंमैभिकाक्षितः ॥ रामस्तथेतितं प्राहमुक्तस्तिष्ठ
यथासुखम् ॥ १४ कल्पांतेममसायुज्यंप्राप्स्यसेनात्रसंशयः १५ तमाहजानकी
प्रीतायत्रकुत्रापिमारुते ॥ स्थितंत्वामनुयास्यंतिभोगाः सर्वेममाज्ञया १६ इत्युक्तो
मारुतिस्ताभ्यांईश्वराभ्यांप्रहृष्टधीः ॥ आनंदाश्रुपरीताक्षोभूयोभूयः प्रणम्यतौ ॥ कृ
च्छ्राद्यगौतपस्तप्तुंहिमवंतंमहामतिः १७ तनोगुहंसमासाद्यरामः प्रांजलिमब्रवी
त् ॥ सखेगच्छपुरंरम्यंशृंगिवेरमनुत्तमम् १८ ॥

(अतःसततंत्वत्तनामस्मरन्भूतले स्थान्स्थानामिवावत्तेनामलोकेस्थानस्यतितेनामलोकेतावत्तममकलेवरंतिष्ठ
तु) इससे हे रघुनाथजी निरंतर आपको नाम स्मरण करताहुआ भूतल में स्थितरहौं अरु जब
तक आपको नाम लोक में प्रसिद्धरहै तबतक मेरा शरीर ऐसेही बनारहै १३ (राजेंद्रअयंवरःमैभ
मिकाक्षितः तथाइतिरामःतंप्राह मुक्तः यथासुखंतिष्ठ) हे राजाधिराज यही वर में चाहताहौं सो
दीजिये सो सुनि प्रभुबोले हे हनुमान् जो तुमनेमांगा सोई में दिया ऐसा कहि रघुनंदन पुनः तिन
प्रति बोले हे हनुमान् तुम जीवन्मुक्तहै स्वइच्छित सुखपूर्वक पृथिवीपर स्थितरहौ १४ (कल्पांतेम
मसायुज्यंप्राप्स्यसेअत्रसंशयःन) अरु कल्पांत में महाप्रलय काल में मेरी सायुज्यमुक्तिको प्राप्तहोहुगे
यामें संशय नहीं है १५ (जानकीप्रीतांतआहमारुतेयत्रकुत्रापिस्थितं ममाज्ञयासर्वेभोगाःत्वांअनुया
स्यंति) पुनः जानकीजी प्रीतिपूर्वक तिनहनुमान्प्रति बोलतीभई हेपवनपुत्र तुमजहांकहौरहौगे तहां
मेरी आज्ञाकरिकै सब सुखभोग तुम्हारेपास प्राप्तवनेरहेंगे १६ (इतिताभ्यांईश्वराभ्यांउक्तःमारुतिः
प्रहृष्टधीःआनंदाश्रुपरीताक्षःतौभूयःभूयः प्रणम्यमहामतिःकृच्छ्रात्तपःतप्तुंहिमवंतंययौ) इस प्रकार
तिन दोऊ ईश्वर सीतारामकरिकै कहैगये पवनपुत्र हनुमान् सो प्रेमानंदकरिकै उमगे आंशुभरे हैं
नेत्र जाके ऐसे जो हनुमान् सो सीतारामको बारम्बार प्रणामकरिकै बड़े बुद्धिवंत परमकष्टसे तप
करनेको हिमालयकोजातेभये १७ (ततःप्रांजलिगुहंसमासाद्यरामःअब्रवीत् सखेअनुत्तमंशृंगिवेरं
पुरंरम्यंगच्छ) तदनन्तर हाथजोरे खड़ाहुआ जो निषादराजगुह ताको प्राप्त है अर्थात् देखिकै रघुनं-
दन बोलतेभये कि हे सखे तुम अब उत्तम शृंगिवेरपुर जो सुंदर है तहांकोजाहु १८ ॥

मामेवचितयन्नित्यंभुंक्ष्वभोगान्निजार्जितान् ॥ अंतममैवसारूप्यंप्राप्स्यसेत्वंनसंश
यः १९ इत्युक्ताप्रददौतस्मैदिव्यान्याभरणानिच ॥ राज्यंचविपुलंदत्वाविज्ञा
नंचददौविभुः २० रामेणालिंगितोहृष्टोययोस्वभवनंगुहः ॥ येचान्येवानराःश्रेष्ठा
अयोध्यांसमुपागताः २१ अमूल्याभरणैर्वस्त्रैःपूजयामासराघवः ॥ सुग्रीवप्रमुखाः
सर्वेवानराःसविभीषणाः २२ यथाहंपूजितास्तेनरामेणपरमात्मना ॥ प्रहृष्टमनसः
सर्वेजग्मुरेवयथागतम् २३ सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेकिष्किंघांप्रययुर्मुदा ॥ विभीषण
स्तुसंप्राप्यराज्यानिहतकंठकम् २४ ॥

(नित्यंमांएवचितयन्नित्यंभुंक्ष्वभोगान्भुंक्ष्वअंतममसारूप्यंत्वंएवप्राप्स्यसेसंशयःन) सदांमेरा
चितवन स्मरण करत संते अपने उपराजे अर्थात् प्रारब्धी सुख भोगोंको जीवत भोगकरो अंतकाल
में मेरिसारूप्य मुक्ति को तुमभी प्राप्त होहुगे यामें संशय नहीं है १९ (इतिउक्ताचदिव्यान्याभरणाभर-

णानितस्मैप्रददौचविपुलंराज्यंदत्वाचविभुःविज्ञानंददौ) ऐसाकहि रघुनंदन पुनः दिव्यभूषण तिस्रि निषादराज के अर्थ दंते भये पुनः बहुतराज्य देकै पुनः प्रभु विज्ञान देतेभये २० (रामेणआर्त्तिगितः हृष्टःगुहःस्वभवन्नययौचयेअन्येऽप्रेष्ठावानराःअयोध्यासमुपागताः) रघुनंदन करिकै हृदय में लगाय मिला हुआ गुह निषादराज आनंद सहित अपने घरको गया पुनः जे और उत्तम बानर अयोध्या जीको आये रहै २१ (अमूल्यआभरणैःवस्त्रैःराघवःपूजयामाससविभीषणाःसुग्रीवप्रमुखाःसर्वेवानराः) बड़ेमोलके भूषणयथा किरोट कुंडलहार अंगद पहुंची मुद्रिका क्षुद्रघंटिकादि तथा जामा पाग उरमाल दुशाला पटुका धोतीइत्यादि बसन भूषणों करिकै रघुनंदन सबको पूजाकरते भये सहित विभीषण अरु सुग्रीव आदि दै सब बानर २२ (परमात्मनारामेणतेनयथार्हपूजिताःयथाआगतमूढप्रहृष्टमनसःसर्वेजग्मुःएव) परमात्मा जो रघुनंदन तिन करिकै सबयथायोग्य पूजेगये तब जैसे पूर्व आये रहै तैसेही प्रसन्नमन सब जाते भो गये अर्थात् राज्याभिषेक देखनेआये सो देखे प्रभुकी आज्ञापाय प्रसन्न मन चले २३ (सुग्रीवप्रमुखाःसर्वेमुदाकिर्ष्किंधाप्रययुःतुविभीषणःनिहतकंठकमराज्यंसंप्राप्य)सुग्रीवादि सबवानर आनंद सहित किर्ष्किंधा को जाते भये पुनः विभीषण भी अकंटक राज्यको प्राप्तहैकै २४॥

रामेणपूजितःप्रीत्याययौलंकामनिंदितः ॥ राघवोराज्यमखिलंशशासाखिलवत्सलः २५ अनिच्छन्नपिरामेणयौवराज्येभिषेचितः ॥ लक्ष्मणःपरयाभक्त्यारामसेवापरोभवत् २६ रामस्तुपरमात्मापिकर्माध्यक्षोऽपिनिर्मलः ॥ कर्तृत्वादिविहीनोपिनिर्विकारोपिसर्वदा २७ स्वानंदेनापितुष्टःसन्लोकानामुपदेशकृत् ॥ अश्वमेधादियज्ञैश्चसर्वैर्विपुलदक्षिणैः २८ अयजत्परमानंदोमानुषंवपुराश्रितः ॥ नपर्यदेवन्विधवानचव्यालकृतंभयम् २९ नव्याधिजंभयंचासीद्रामेराज्यंप्रशासति॥ लोकेदस्युभयंनासीदनर्थोनास्तिकश्चन ३० ॥

(प्रीतिारामेणपूजितःअनिंदितःलंकाययौअखिलवत्सलःराघवःअखिलंराज्यंशशास) प्रीतिसहित रघुनंदन करिकै पूजेगये ताते निंदारहित विभीषण लंकाको जाते भये भाव कुलनाशक भी प्रभु कृपाते निंदाको न प्राप्तभये सबपर प्रीति करनेवाले रघुनंदन सम्पूर्ण भूमंडल की राज्यको रक्षाकरते भये २५ (परयाभक्त्यारामसेवापरोभवत्अनिच्छन्नपिरामेणयौवराज्येअभिषेचितः) परा भाक्ति अर्थात् सदाएकरस प्रेमसहित लक्ष्मणजी रघुनाथजी की सेवामें तत्पर होतेभये जिनको मान बढ़ाई लौकिक सुखादि किसी बातकी इच्छानहींहै परंतु रघुनाथजीने उनको युवराज पदमें अभिषेक किया २६ (तुरामःपरमात्माअपिकर्माध्यक्षःअपिकर्तृत्वादिविहीनःअपि निर्विकारःअपिसर्वदानिर्मलः) पुनःरघुनंदन परमात्मा हैं जीवनको शुभाशुभ कर्मोंको यथार्थफल दाता कर्तृत्वादि दोषरहित रजतमादि विकार रहित सबकाल में अमल हैं २७ (स्वमानंदेनअपितुष्टःसन्लोकानामुपदेशकृत् अश्वमेधादिसर्वैःयज्ञैः च विपुलदक्षिणैः) अपने आनंद मेंभी सदापरिपूर्ण रहतसंते तौभी लोकजनों को उपदेश करत संते जो उत्तम राजाको धर्म है सो अश्वमेधादि सबयज्ञों करिकै पुनः बहुतदक्षिणा करिकै २८ (परमानंदःमानुषंवपुःआश्रितःअयजत्विधवान्पर्यदेवन्चनव्यालकृतंभयम्) परम आनंदरूप रघुनंदन तौभी मानुषतनुके आश्रित सहित दक्षिणायज्ञादि करतेहैं जिनकी राज्यमें विधवा नहीं रोवत देखातनसर्पकृत भय किसी को होवै २९ (रामेराज्यंप्रशासतिलोकेनव्याधिजंभयंचासीदस्युभयंनासीदकश्चनअनर्थःनास्ति) रघुनंदन के राज्यकरत संते लोकमें न किसीको रोगकी

भयहोवै न किसीको चोरेकीभयहोवै न किसीको कभी कलुअनर्थहोवै सबलोग सदासुखी रहतेहैं ३०॥

वृद्धेषुसत्सुबालानांनसिन्मृत्युभयंतथा॥रामपूजापराःसर्वे सर्वैराघवचित्तकाः ३१
ववर्षुर्जलदास्तोयंयथाकालंयथारुचि ॥ प्रजाःस्वधर्मनिरतावर्णाश्रमगुणान्वि-
ताः ३२ औरसानिवरामोऽपिजुगोपपितृवत्प्रजाः ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तःसर्वधर्मप-
रायणः ३३ दशवर्षसहस्राणिरामोराज्यमुपारतसः ३४ इंदरहस्यंधनधान्यत्र-
द्धिमत्दर्घ्यायुरारोग्यकरसुपुण्यदम् ॥ पवित्रमाध्यात्मिकसंज्ञितपुरारामायणंभा-
षितमादिशंभुना ३५ शृणोतिभक्त्यामनुजःसमाहितोभक्त्यापठेद्वापरितुष्टमान-
सः ॥ सर्वाःसमाप्नोतिमनोगताशिषोविमुच्यतेपातककोटिभिःक्षणात् ३६ ॥

(वृद्धेषुसत्सुबालानांनमृत्युभयंनआसीत् तथासर्वैरामपूजापराः सर्वैराघवचित्तकाः) वृद्ध पितादि-
के बने रहे संते बालकन को मृत्यु भय नहीं होतीहै तैसे सब मनुष्य देह करिकै रघुनन्दनके पूजन
में तत्पर रहते हैं तथा मन करिकै रघुनन्दन को सब चितवन करते हैं ३१ (यथाकालंयथारुचिज-
लदाःतोयंवर्षुःवर्णाश्रमगुणान्विताः प्रजाःस्वधर्मनिरताः) जैसा काल आवत ताही अनुकूल जैसी
प्रजन की रुचि होती है तैसेही मेघ जल को वर्षते भये सब वर्ण आश्रम उत्तम गुणन युक्त प्रजा
आपने आपने धर्म आचरण में रत भये ३२ (सर्वलक्षणसंयुक्तःसर्वधर्मपरायणःरामः अपिपितृवत्
औरसानुवत्प्रजाःजुगोप) क्षमा दया शील सुलभ उदारतादि सब लक्षण युत सत्य शौच तप दान
यज्ञ स्वाध्याय संयम नियम इत्यादि सर्व धर्म में तत्पर रघुनन्दन भी पिता तुल्य अपने पुत्रन के
समान प्रजा पालतेहैं ३३ (सहस्ररामःदशसहस्राणिवर्षराज्यंउपास्त) सोरघुनन्दन दशहजारवर्ष राज्य
कीन्हें ३४ (आदिशंभुनाभाषितंपवित्रमाध्यात्मिकसंज्ञितपुरारामायणंइंदरहस्यंधनधान्यत्रद्धिमत्मा-
रोग्यदर्घ्यायुःकरसुपुण्यदं) प्रथम पार्वती प्रति शिवजीने बर्णन किया अध्यात्म नामे पवित्र पूर्व
रामायण यह जो रहस्य सो धन धान्य बढ़ने वाला आरोग्यतायुत बड़ी आयुर्बल करणे वाला पुण्य
बढ़ावने वाला है ३५ (समाहितःमनुजःभक्त्याशृणोति वापरितुष्टमानसःभक्त्यापठेत्तमनोगताशिषः
सर्वाःसमाप्नोति पातककोटिभिःक्षणात्विमुच्यते) एकाग्रचित्त है जोमनुष्य भक्ति करिकै इस रामा-
यण को श्रवण करताहै अथवा प्रसन्न है भक्ति करिकै पढ़ताहै सो मनुष्य मनके उठे हुये मनोरथन
को सब को पावताहै अरु पातक करोरिन करिकै बंधा हुआ क्षण में छूटि जाता है ३६ ॥

रामाभिषेकंप्रयतःशृणोतियोधनाभिलाषीलभतेमहद्भनम् ॥ पुत्राभिलाषीसुतमा-
र्यसंमतंप्राप्नोतिरामायणमादितःपठन् ३७ शृणोतियोध्यात्मिकरामसंहितांप्राप्नो-
तिराजाभुवमृद्धसंपदम् ॥ शत्रून्विजित्यारिभिरप्रधर्षितोव्यपेतदुःखोविजयीभवे-
न्नृपः ३८ स्त्रियोपिशृण्वंत्यधिरामसंहितांभवन्तिताजीवसुताश्चपूजिताः॥बंध्या-
पिपुत्रंलभतेसुरूपिणंकथामिमांभक्तियुतांशृणोतिया ३९ श्रद्धान्वितोयःशृणुया-
त्पठेन्नरोविजित्यकोपंचतथाविमत्सरः ॥ दुर्गाणिसर्वाणिविजित्यनिभयोभवेत्सु-
खीराघवभक्तिसंयुतः ४० ॥

(यःधनाभिलाषीप्रयतःरामाभिषेकंशृणोतिमहत्भनंलभते पुत्राभिलाषीआदितःरामायणंपठन्
आर्यसंमतंसुतंप्राप्नोति) जो मनुष्य धनकी अभिलाषा करि इसप्रयतः अर्थात् पवित्रश्रीराम राज्या-

भिषेक चरित्र को सावधान हवै सुनता है सो बहुते धन को पावता है तथा पुत्र की भी जो मनुष्य आदि ते अंत तक रामायण को पढ़ता है सो श्रेष्ठों के आदरणीय उत्तम पुत्र को पावता है ३७ (आध्यात्मिकरामसहितांयः राजाशृणोतिऋद्धिसंपदंभुवं प्राप्नोतिभरिभिः अप्रधर्षितः शत्रून्विजित्यदुःखः व्यपेतनृपः विजयीभवेत्) अध्यात्म नामे राम संहिता को जो राजा श्रवण करता है सो ऋद्धि सम्पदा सहित भूमिको प्राप्त होता है अरु शत्रुन करिके अजित हवै शत्रुन को जीति सब प्रकार दुःखों से रहित हवैकै वह राजा लोक विजयी सब को जीतनेवाला होता है ३८ (अधिरामसंहितांस्त्रियः अपिशृण्वंतिताजीवसुताः चपूजिताः भवंतियाबन्ध्यापिभक्तियुतांश्चमांकांशृणोतिसूरूपिणंपुत्रंलभते) अध्यात्मरामायण को मृतवत्सास्त्री भी सुनें सो जीवत सुता होवें अर्थात् जिनके पुत्र मरि जाते होयें तिनके पुत्र जीवत रहें पुनः लोक पूजित होवें पुनः जो बंध्या भी भक्ति युक्त हवै इस कथा को सुनती है सो स्त्री सुंदर स्वरूपवन्त पुत्र पावती है ३९ (यःनरःश्रद्धान्वितःशृणुयात् चतथाविजित्यकोपंविमत्सरःपठेत् सर्वाणिदुर्गाणिविजित्यनिर्भयः राघवभक्तिसंयुतःसुखीभवेत्) जो मनुष्य श्रद्धा सहित इस कथा को श्रवण करे पुनः तैसेही क्रोध को जीति मत्सरता पर सम्पत्ति न देखि सकना इत्यादि रहित शुद्ध शांत हवै पाठ करै सो सब क्लेशों को जीति निर्भय हवै रघुनन्दन की भक्ति सहित सदा सुखी रहै ४० ॥

सुराःसमस्ताअपियांतितुष्टतांविघ्नाःसमस्ताअपयांतिशृण्वताम् ॥ अध्यात्म रामायणमादितोऽनृणांभवतिसर्वाअपिसंपदःपराः ४१ रजस्वलावायदिरामतत्पराशृणोतिरामायणमेतदादितः ॥ पुत्रंप्रसूतेऋषभंचिरायुषंपतिव्रतालोकसुपूजिताभवेत् ४२ पूजयित्वातुयेभक्त्यानमस्कुर्वतिनित्यशः ॥ सर्वैःपापैर्विनिर्मुक्ताविष्णोर्यातिपरंपदम् ४३ अध्यात्मरामचरितंकृत्स्नंशृण्वंतिभक्तितः ॥ पठंतिवास्वयंवक्तात्तेषांरामःप्रसीदति ४४ रामएवपरब्रह्मतस्मिंस्तुष्टेखिलात्मनि ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणायद्यदिच्छतितद्भवेत् ४५ ॥

(अध्यात्मरामायणमादितःशृण्वतांनृणांसमस्ताःसुराःअपितुष्टतांयांतिसमस्ताःविघ्नाःअपयांति सर्वासंपदःपराःअपिभवन्ति) अध्यात्मरामायणको आदिते अंततक सुननेवाले मनुष्योंपर सबदेवता भी प्रसन्नहोतेहैं अरु सबविघ्न नाशको प्राप्त होतेहैं अरु अन्नधनधामधराभूषण बाहन इत्यादि सब संपदा युक्त सुखी होताहै ४१ (वायदिरजस्वलारामतत्पराएतत्त्रामायणमादितःशृणोतिऋषभंचिरायुषंपुत्रंप्रसूतेपतिव्रतालोकसुपूजिताभवेत्) अथवा जो रजस्वलास्त्री श्रुतस्नानकरिके श्रीरघुनन्दन के रूपको ध्यानराखि नामोच्चारण पूर्वक इस रामायणको आदिते अंतसमाप्तीतक सुनेतौ बड़ा उत्तम दीर्घायु अर्थात् बड़ी उम्रवाला पुत्रको उत्पन्न करै तथा पतिव्रता अरु लोकजनोंकरिके पूजन करिबे योग्य होवै ४२ (येभक्त्यानित्यशःपूजयित्वातुनमस्कुर्वतिसर्वैःपापैः विनिर्मुक्ताःविष्णोःपरंपदंयांति) येजन भक्ति करिके नित्यही अध्यात्मरामायण की पुस्तकको पूजन करतेहैं पुनः नमस्कार करतेहैं तेजन सब पापोंसे छूटिके विष्णुके परमपदको प्राप्त होतेहैं ४३ (अध्यात्मरामचरितं कृत्स्नंभक्तितःशृण्वंति वास्वयंवक्तात्पठंतितेषांरामःप्रसीदति) अध्यात्मनामेरामचरित अर्थात् अध्यात्मरामायण संपूर्ण को भक्तिते श्रवण करते हैं अथवा अपने मुखते पाठ करते हैं तिनपर श्रीरघुनाथजी प्रसन्न होते हैं ४४ (अखिलात्मनिपरब्रह्मरामएवतस्मिंस्तुष्टेकामार्थधर्ममोक्षाणायत्यतश्छतितत्तत्तत्भवेत्) सब

चराचरके आत्मा परब्रह्मरघुनाथजी के प्रसन्नहोतसंते काम अर्थ धर्म मोक्ष इत्यादि जो जो इच्छा करताहै सो सो प्राप्तहोताहै ४५ ॥

श्रोतव्यंनियमेनैतद्रामायणमखण्डितम् ॥ आयुष्यमारोग्यकरंकल्पकोट्यघनाश
नम् ४६ देवाश्चसर्वेतुष्यंतिग्रहाःसर्वेमहर्षयः ॥ रामायणस्यश्रवणेनतुष्यंतिपित
रस्तथा ४७ अध्यात्मरामायणमेतद्भुतवैराग्यविज्ञानयुतंपुरातनम् ॥ पठंति
शृण्वंतिलिखंतियेनरास्तेषांभवेऽस्मिन्नपुनर्भवोभवेत् ४८ आलोड्याखिलवेद
राशिमसकृद्यत्तारकंब्रह्मतद्रामोविष्णुरहस्यमूर्तिरितियोविज्ञायभूतेश्वरः ॥ उद्धू
त्याखिलसारसंग्रहमिदंसंक्षेपतःप्रस्फुटंश्रीरामस्यनिगूढतत्त्वमखिलंप्राहप्रियायै
भवः ४९ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेयुद्धकाण्डेषोडशःसर्गः १६ समाप्तः ॥

(आयुष्यंआरोग्यकरंकोटिकल्पअघनाशनंएतत्त्रामायणंअखंडितंनियमेनश्रोतव्यं) दीर्घायु आ-
रोग्यताको करणहारी अरु करोरिन कल्पनके जीव के संचित कियेहुये पापोंको नाशकरणहारी यह
जो रामायण है ताहि संपूर्ण को नियम करिकै श्रवण करना चाहिये ४६ (रामायणस्यश्रवणेनसर्वे
देवाःचग्रहाःतुष्यंतिसर्वेमहर्षयःतथापितरःतुष्यंति) रामायणके श्रवणकरत संते ब्रह्मा शिव इंद्रादि
सब देवता पुनः सूर्यादि सब ग्रह प्रसन्नहोते हैं पुनः नारदादि महाऋषीश्वर तैसेही सब पितृ प्रसन्न
होते हैं ४७ (वैराग्य विज्ञानयुतंपुरातनं एतद्भुतंअध्यात्मरामायणंयेनराः पठंतिशृण्वंतिलिखंति
तेषांअस्मिन्भवेपुनर्भवःनभवेत्) वैराग्य विज्ञान युत पुरातन यहजो अद्भुत अध्यात्मरामायण है
ताहि जे मनुष्यपढ़ते हैं वा श्रवण करतेहैं वा पुस्तक अपनेहाथ ते लिखते हैं तिन मनुष्योंको इस
संसारमें पुनः जन्म नहीं होताहै भाव परंपदपावते हैं ४८ (अखिलवेदराशिंअसकृत् भूतेश्वरः
आलोड्ययत्तारकंब्रह्मतत् विष्णुरहस्यमूर्तिःरामः इतिविज्ञाय यः अखिलसारसंग्रहं उद्धृत्यसंक्षेपतः
इदंरामस्यनिगूढतत्त्वंप्रस्फुटंभवः अखिलंप्रियायैप्राह) सूतजी की वाक्यहै अखिल संपूर्ण जो वेद
की राशिमहा विस्तारहै ताहि असकृत अर्थात् अनेक बारभूतेश्वर महादेव आलोड्यविचार क-
रिकै जो तारक ब्रह्म सोई विष्णु रहस्य अर्थात् परमात्माकी गुप्तमूर्ति रघुनाथजी हैं ऐसा जानिकै
ताही परात्मरूपके बोधक जो अखिलसंपूर्ण वेदोंकोसार जोअनेक उपनिषद् हैं तिनकी संग्रह अर्थात्
सब बटोरि तिनते उद्धृत्यसार भाग निकारि संक्षेपते यह जो अध्यात्मरामायण रघुनाथजी को
गूढतत्त्वहै ताहि प्रकट करनेको शिवजी अपनी प्रिया जोपार्वतीतिनके अर्थ सुनावते भये ४९ ॥

कवित्त ॥ बैठेभद्रआसनै समाज राजशशिताज आजगंगअंग मणिभूषणभलकहै । मुनिनसमाज
सहमुनिराजकंज करकलित ललित कृतहियमें ललकहै ॥ वैजनाथ सीतानाथ माथपैविराजै स्वच्छ
अक्षत निशक्षतसमक्ष अपलक है । सुयशभलककी सुकीर्तिलकाललक की प्रतापकी फलककीधौ
राजसीतिलकहै १ सूरभूविलासकृत चकृतशतकृतलौ प्रतिबद्धकृत केतु सकृतभुगापभो । दुष्कृतदि
वांधप्रतिधास्मरकुमुद हतजीव मन्युदुक्रमाय मोषकसतापभो॥मंडल अखंडप्रयुद्यौतखंड वैजनाथसुहृ
दमनाब्जहृष्टध्वंत परदापभो॥ अनृततम्पूष पुरपूर्व आसरामभद्र आसनोदयाद्रि भानुउदितप्रतापभो१

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतवैजनाथ

विरचितेअध्यात्मभूषणेयुद्धकांडेषोडशःप्रकाशः १६ ॥



अथ अध्यात्मरामायण उत्तरकाण्ड सटीक ॥

जयतिरघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनन्दनोरामः ॥ दशवदननिधनकारीदाशरथिः
पुंडरीकाक्षः १ पार्वत्युवाच ॥ अथरामः किमकरोत्कौशल्यानन्दवर्द्धनः ॥ हत्वामृधे
रावणादीन् राक्षसान् भीमविक्रमः २ अभिषिक्तस्त्वयोध्यायां सीतया सह राघवः ॥
मायामानुषतां प्राप्य कतिवर्षाणि भूतले ३ स्थितवान् लीलया देवः परमात्मा सनात
नः ॥ अत्यजन्मानुषलोकं कथमन्तेरघूद्वहः ४ एतदाख्याहि भगवन् श्रद्धधत्यामम
प्रभो ॥ कथापीयूषमास्वाद्यतृष्णामेतीव वर्द्धते रामचंद्रस्य भगवन् ब्रूहि विस्तरशः
कथाम् ५ ॥

सवैया ॥ ऋषिद्वंद्व भगस्त्याहि आवतर्ही उठिकै रघुनंदन पाँयधरे । दिय आसन पूजन बैठिबिनै
करते धननाद प्रशंसपरे ॥ मुनिव्यों धननाद प्रशंसतहौ बलबीर सुदुष्टरहे सगरे । तव उत्पत्ति रावण
आदिन की प्रभुपास भगस्त्य बखानकरे ॥ (कौशल्याहृदयनंदनः दाशरथिः दशवदननिधनकारीरघुवंश
तिलकः पुंडरीकाक्षः रामः जयति) कौशल्या के हृदयको आनंद दायक दशरथ के पुत्र रावण को नाश
करणहारे रघुवंश शिरोमणि कमलनयन रामकी जयहोय १ (भीमविक्रमः रावणादीन् राक्षसान् मृधे
हत्वा कौशल्यानन्दवर्द्धनः रामः अथ किं भकरोत्) पुनः पार्वतीजी पूछती भई कि हे भगवन् भयंकर
पराक्रमी रावणादि राक्षसों को संघाम में मारि कौशल्या के आनंद बढ़ावने वाले रामचंद्र राज्या-
भिषेकको प्राप्तभये पीछे पुनः क्या करते भये २ (अयोध्यायां अभिषिक्तः तु सीतया सह राघवः मायामानुषतां
प्राप्तभूतलैकतिवर्षाणि) अयोध्या बिषे राज्याभिषेक को प्राप्तभये पुनः सीता सहित रघुनंदन माया
करिकै मानुषभावको प्राप्त भूतल बिषे कितने वर्षे तक ३ (सनातनः परमात्मा देवः लीलया स्थित
वान् अन्तेरघूद्वह मानुषलोकं कथं अत्यजन्) सनातन सदा एक रस परमात्मा देव रघुनाथजी लीलाकरिकै
मानुष रूपते कितने वर्षे अयोध्यामें स्थित रहे पुनः अंतकालमें रघुवंशनाथ मानुषलोकको कौन भांति
त्याग करते भये ४ (हे भगवन् एतत् आख्याहि प्रभो मम श्रद्धधत्या कथापीयूषमास्वाद्य मे अतीव तृष्णा
वर्द्धते भगवन् रामचंद्रस्य कथां विस्तरशः ब्रूहि) हे भगवन् जो मैंने प्रश्न किया है यह कृपा करि कहिये हे
प्रभो मैं श्रद्धावन्त हौं क्योंकि कथा रूप जो अमृत है ताहि पान करनेकी मेरे अत्यंत प्यास बढ़ती जाती है
ताते हे भगवन् श्रीरघुनाथजीकी कथाको विस्तरपूर्वक वर्णन कीजिये ५ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ राक्षसानांवधंकृत्वाराज्यंरामउपस्थिते ॥ आययुर्मुनयःसर्वे
 श्रीराममभिवांदितुं ६ विश्वामित्रोऽसितःकण्वोदुर्वासाभृगुरंगिराः॥कश्यपोवामदे
 वोऽत्रिस्तथासप्तर्षयोमलाः ७ अगस्त्यःसंहशिष्यैश्चमुनिभिःसहितोभ्यगात् ॥
 द्वारमासाद्यरामस्यद्वारपालमथाब्रवीत् ८ ब्रूहिरामायमुनयःसमागत्यब्रहिःस्थि
 ताः ॥ अगस्त्यप्रमुखाःसर्वेआशीभिरभिनंदितुं ९ प्रतिहारस्ततोराममगस्त्यवच
 नाद्रुतं ॥ नमस्कृत्वाब्रवीद्वाक्यंविनयावनतःप्रभुम् १० कृतांजलिरुवाचेदमग
 स्त्योमुनिभिःसह ॥ देवत्वदर्शनार्थायप्राप्तोबहिरुपस्थितः ११ ॥

(राक्षसानांवधंकृत्वाराज्यंउपस्थितेश्रीरामंअभिवांदितुंसर्वेमुनयःआययुः) शिवजी बोले हेगि-
 रिजा रावणादि राक्षसों को बध करि अयोध्याजीमें आयरघुनन्दन के राज्यपदपर उपस्थित होत
 संते श्रीरघुनाथजीको प्रणाम करिबेको सब मुनिलोग अयोध्याजीको आवतेभये ६ विश्वामित्र अरु
 असित अरु कण्व अरु दुर्वासा अरु भृगु अरु अंगिरा अरु कश्यप अरु वामदेव अरु अत्रि (तथाअ
 मलःसप्तर्षयः) तैसेही अमल हृदयवाले जे सप्तर्षपिनमें बाकीरहे यथा वशिष्ठ भरद्वाज गौतम
 पुलह नारद जमदग्निपुलस्ति ७ (मुनिभिःसहितःचसंहशिष्यैः अगस्त्यः अभ्यगात्त्रामस्यद्वारंमासाद्य
 अथद्वारपालंअब्रवीत्) विश्वामित्रादि मुनिन सहित पुनःअपनेशिष्य सुतीक्ष्णादि सहित अगस्त्यजी
 आय रघुनन्दनकेद्वारपर प्राप्तहैंकैद्वारपालप्रति बोलतेभये ८ (रामायब्रूहिअगस्त्यप्रमुखाःसर्वेमुनयःआशी-
 र्भिःअभिनंदितुंसमागत्यब्रहिःस्थितः) हेद्वारपाल जाय रघुनन्दन से कहौ कि अगस्त्यआदि सबमु-
 नि लोग आशीर्वादों करि आनन्ददने को आये मंदिरके बाहेर द्वारपरस्थितहैं ९ (ततःअगस्त्यवचना
 त्प्रतिहारः द्रुतरामंप्रभुंनमस्कृत्वा विनयावनतःवाक्यंअब्रवीत्) तब अगस्त्य के बचन ते द्वारपाल
 उठिके शीघ्रही भीतर जायरघुनन्दन प्रभुको प्रणामकरि हाथ जोरिनम्रतापूर्वक रघुनन्दन प्रति प्रिय
 वचन बोलता भया १० (कृतांजलिःइदंउवाचेदेव मुनिभिःसहअगस्त्यः त्वत्दर्शनार्थायप्राप्तःबहिः
 उपस्थितः) हाथजोरि द्वारपालरघुनन्दन प्रतिऐसा वचन बोलता भया हेराजाधिराज अवधेश महा-
 राजबहुत मुनिनसहित अगस्त्य मुनिआपके दर्शनार्थ आयप्राप्तभये मंदिरकेबाहेर द्वारपरखड़ेहैं ११ ॥

तमुवाचद्वारपालंप्रवेशययथासुखम् ॥ पूजिताविविशुर्वैश्वमनानारत्नविभूषित
 म् १२ दृष्ट्वारामोमुनीन्शीघ्रंप्रत्युत्थायकृतांजलिः ॥ पाद्यार्घ्यादिभिरापूज्यगानि
 वेद्ययथाविधि १३ नत्वातेभ्योददौदिव्यान्यासनानियथार्हतः ॥ उपविष्टाःप्रहृष्टा
 इचमुनयोरामपूजिताः १४ संपृष्टकुशलाःसर्वैरामंकुशलमब्रुवन् ॥ कुशलंतेमहावा
 होसर्वत्ररघुनन्दन १५ दिष्ट्येदानींप्रपश्यामोहतशत्रुमरिंदम ॥ नहिभारःसतेरामरा
 वणोराक्षसेश्वरः १६ सधनुस्त्वंहिलोकांस्त्रीन्विजेतुंशक्तएवहि ॥ दिष्टयात्वपाहताः
 सर्वैराक्षसारावणादयः १७ ॥

(तद्वारपालंउवाचयथासुखं प्रवेशयनानारत्नविभूषितंवेश्म पूजिताविविशुः) तिस द्वारपालप्र-
 तिरघुनन्दनबोलतेभये कि सुखपूर्वक मुनि लोगों को मन्दिरके भीतर प्रवेश करावो तबअनेकरत्नों
 करि सजेहुये मन्दिरमें सत्कारकियेगये मुनि लोग प्रवेशकरतेभये १२ (मुनीन्दृष्ट्वारामःशीघ्रंप्रत्यु-
 त्थायकृतांजलिःयथाविधि पाद्यार्घ्यादिभिःआपूज्यगानिवेद्य) मुनिनको देखि रघुनन्दन शीघ्रही उठि

के हाथ जोरें पुनः जैसी शस्त्रों को आज्ञा तैसी विधियों पाद्य अर्घ्य आदि पोटुगोपचारों करिके पूज-
न करि सब को गौर्वेदेन भये १३ (नररातेभ्यः यथादत्त दिव्यानिग्रामनानिददौ रामपूजिताः मुनयः प्र-
हृष्टाः च उषधिपटः) सब को प्रणाम करि तिनके अर्थ यथा योग्य दिव्य आसन देते भये रघुनन्दन
करिके पूजित मुनिलोग आनन्द भयं पुनः पासनों पर बैठते भये १४ (कृणु नाः संपृष्ट सर्वे रामकुशलं
अत्रुवनमहाबाहो रघुनन्दन ते सर्वत्र कुशलं) रघुनन्दन करिके कुशल पूछेहुये सब मुनिलोग रघुनन्दन
प्रति कुशल पूछतेहुये बोले हे महाबाहो रघुनन्दन तुम्हारे सर्वांग राजश्री में सर्वत्र कुशल है १५ (हे
परिदमराम गजसेनवरः रावणः गच्छत इदानीं दिष्टया पश्यामः तभारः तेन हि) पुनः ऋषिलोग बोले
कि हे शत्रुन के नाश करनेवाले रघुनन्दन राजश्री को स्वामी रावण शत्रु को जो आपने मारि राज-
सिंहासन पर आसीन दृष्टि करिके हम लोगों देखने हैं सो सशस्त्रों का श्रमरूप भार आप को नहीं है
भाव लोका मात्र ही दुष्टों को मारे १६ (स गतुः त्वं हि त्रीन् लोकान विजितुं शक्यसि रावणादयः सर्वे
राजसात्वयादताः दिष्टया) क्यों समस्त भार आप को नहीं है कि सहित धनुष आप ही भरेले तानि-
हुतों का नाश करिये को नमर्थ हो तांभी रावणादि सब राजश्री को मारने मारा सो देखि हम आनन्द
भये १७ ॥

सत्यमेनन्महाबाहो रावणस्य निवर्हणम् ॥ अमह्यमेतत्संप्राप्त रावणो यन्निपूतनम् १८
अंतकप्रतिमाः सर्वे कुम्भकर्णादयो मृधे ॥ अंतकप्रतिमैर्वाणिहतास्ते रघुसत्तम १९
दत्ताचेयं त्वयाऽस्माकं पुगा ह्यभयदक्षिणा ॥ हत्वारोगणां संख्येकृतकृत्योद्यजीव-
सि २० श्रुत्वा तु भाषितं तेषां मुनीनां भावितात्मनाम् ॥ विस्मयं परमं गत्वारामः प्रां-
जलिं ब्रवीत् २१ रावणादीन् निष्क्रम्य कुम्भकर्णादिराक्षसान् ॥ त्रिलोकजयिनो
हित्वा किंप्रशंसय रावणिम् २२ न तस्तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महात्मनः ॥ कुम्भयो-
निर्महाने जारामं प्रीत्या वचां ब्रवीत् २३ ॥

(महाबाहो रावणस्य निवर्हणं तत् सत्यं रावणं यन्निपूतनं संप्राप्त एतत् सत्यम्) हे महा बाहो रघुनं-
दन इस रावण को मरण यह तो सुगम रहे परंतु रावण को पुत्र जो मेघनाद मरण को प्राप्त भया-
यह अगम रहे सो भी मारा गया १८ (रघुसत्तम कुम्भकर्णादयः मृधे अंतकप्रतिमाः सर्वे अंतकप्रतिमैः वाणैः
ते हताः) हे रघुशेननाथ कुम्भकर्ण आदि महाबली धीर राक्षस संग्राम में कालमृत्युसमस्त अजित रहे ते-
संहो कालमृत्युतुल्य कराल वाणों करिके आप सब को बध किया १९ (पुरात्वयाऽस्माकं हि मभयदक्षिणा च
उपेक्षता संख्ये रोगणान् हत्वा हतहत्यः शयजीवसि) आप लोको देखे कि हे रघुशेननाथ पूर्व ही दण्डक
वन में आप ने हम लोगों को अभय दक्षिणा देने की प्रतिज्ञा किया रहे सो यही अब अभय दान दिया
जो संग्राम में राक्षस गणों को मारे ताते आप ही कृतकृत्य प्रशंसनीय हवै के अब जीवन को प्राप्त वत्त-
मान हो २० (भावितात्मनां मुनीनां तेषां भाषितं श्रुत्वा तुरामः परमं विस्मयं गत्व प्रांजलिः श्रुत्वा ब्रवीत्)
आत्मदर्शी मुनि अगस्त्यादि तिनको कहा वचन सुनिके पुनः रघुनन्दन परम विस्मय को प्राप्त भये
अर्थात् आश्चर्य मानि हाथ जोरि रघुनन्दन बोले भये २१ (त्रिलोकजयिनः कुम्भकर्णादिराक्षसान्
हित्वा रावणादीन् अतिक्रम्य रावणिं किंप्रशंसय) तानिहू लोकन को जीतने वाले बलीवीर कुम्भकर्णादि
राक्षसों को त्यागि लोकविजयी रावणादिकों को बराय एक रावण को पुत्र मेघनाद ही की क्यों प्रशंसा
करते हो ताकी क्या आशय है सो कहिये २२ (महात्मनः राघवस्य वचनं तत् श्रुत्वा ततः महातेजाः

कुंभयोनिःप्रीत्यावचःरामंभवत्) महात्मा रघुनन्दनके कहे हुये जो बचन सो सुनिके तदनन्तर महा तेजवंत जो कुम्भ योनि अगस्त्य जी हैं सो प्रीति पूर्वक वचन रघुनन्दन प्रति बोलते भये २३ ॥

शृणुरामयथावृत्तरावणस्यच ॥ जन्मकर्मवरादानंसंक्षेपाद्भद्रतोमम २४ पुरा कृतयुगेरामपुलस्त्योब्रह्मणःसुतः ॥ तपस्तप्तुंगतोविद्वान्मेरोःपार्श्वेमहामतिः २५ तृणविंदोराश्रमेसौन्यवसन्मुनिपुंगवः ॥ तपस्तेपेमहातेजाःस्वाध्यायनिरतःसदा २६ तत्राश्रमेमहारम्येदेवगंधर्वकन्यकाः ॥ गायंत्योननृतुस्तत्रहंसंत्योवादयंतिच २७ पुलस्त्यस्यतपोविघ्नंचक्रुःसर्वाअनिदिताः ॥ ततःक्रुद्धोमहातेजाव्याजहारवचोमहत् २८ यामेदृष्टिपथंगच्छेत्सागर्भधारयिष्यति ॥ ताःसर्वाशापसंविग्नानतंदेशं प्रचक्रमुः २९ ॥

(हेरामरावणेचरावणस्यजन्मकर्मवरादानं संक्षेपात्तममगदतःयथावृत्तशृणु) हे रघुवंशनाथ रावण के पुत्र मेघनाद को पुनः रावणको जा भांति जन्म भया जो जो कर्म कीन्हे जिसभांति वरदानपाये सो संक्षेप ते मेरा कहाहुआ जैसा वर्णन है ताको सुनिये २४ (हेरामपुराकृतयुगेब्रह्मणःसुतःपुलस्त्यः विद्वान्महामतिःतपःतप्तुमेरोःपार्श्वगतः) हे रघुनाथजी पूर्वहीं सतयुग में ब्रह्माको पुत्र पुलस्त्य नामे बड़े विद्वान् महाबुद्धिवन्त सो तपस्या करिवेको सुमेरुपर्वत के समीपगये कैसे तपकरने लगे २५ (महातेजाःअसौमुनिपुंगवःतृणविंदोः आश्रमेन्यवसन्स्वाध्यायनिरतःसदातपःतेपे) महातेजवंत सोई मुनिनमें श्रेष्ठ पुलस्त्यजी तृणविंदु ऋषि के आश्रम में वासकरत सन्ते वेदपाठ में परायण हवैकै सदा तपस्या करनेलगे भाव हिमि वात वर्षाआतप सहतेहुये वेदपाठ करते रहे २६ (तत्र महारम्येआश्रमेदेवगंधर्वकन्यकाःगायंत्यःननृतुःतत्रहंसंत्यःवादयंति) तहां महारमणीक आश्रम में देव गंधर्वोंकी कन्या शृंगारकरि आवैं तालस्वर सहित रागों को गानकरैं हाव भाव दर्शयिन्तुय करें पुनःतहां हासकरैं बीणादि बाजा बजावतीरहैं २७ (अनिदिताःसर्वापुलस्त्यस्यतपः विघ्नंचक्रुः ततः महातेजाःक्रुद्धःमहत्त्वचःव्याजहार) निंदा रहित गुणज्ञसुन्दरी सब पुलस्त्य जीकी तपस्या में विघ्न करती भई तब महातेजस्वी पुलस्त्य क्रोधकरि महाकठोर वचन बोलते भये २८ (मेदृष्टिपथंगया गच्छेत्सागर्भधारयिष्यतिशाप संविग्नताःसर्वातंदेशंनप्रचक्रमुः) पुलस्त्य बोले कि आजते मेरीदृष्टि के आगेजो कन्या आवैंगी सो तुरतही गर्भको धारण करैंगी भाव मेरीदृष्टि परंतही गर्भवतीहैं जायैंगी इतिशापकी भयते वेसब कन्या तिसदेश को न जाती भई २९ ॥

तृणविंदोस्तुराजर्षेःकन्यातन्नाशृणोद्वचः॥विचचारमुनेरग्रेनिर्भयातंप्रपश्यती ३० वभूवपांडुरतनुर्व्यंजितांतः शरीरजा ॥ दृष्ट्वासादेहवैवर्त्यभीतापितरमन्व गत् ३१ तृणविंदुश्चतांदृष्ट्वा राजर्षिरमितद्युतिः ॥ ध्यात्वामुनिकृतंसर्वमवैद्विज्ञा नचक्षुषा ३२ तांकन्यामुनिवर्षायपुलस्त्यायददौपिता ॥ तांप्रगृह्यात्रयीत्कन्यांवा दमित्येवसद्विजः ३३ शुश्रूषणपरांदृष्ट्वा मुनिःप्रीतोब्रवीद्वचः ॥ दास्यामिपुत्रमे कंतेउभयोवंशवर्द्धनम् ३४ ततःप्रासूतसापुत्रंपुलस्त्याल्लोकाविश्रुतम् ॥ विश्रवा इतिविख्यातःपौलस्त्योब्रह्माविन्मुनिः ३५ ॥

(तृणविंदोःराजर्षेः कन्यातत्त्वचः नाशृणोत्तमुनेःअग्रेतंपश्यतीनिर्भया विचचार) पुनः जिनको वह आश्रम हे तिन तृणविन्दुराजऋषिकी जो कन्यारही तिसने उस पुलस्त्यकेवचन को नहीं सुने रही ताते पुलस्त्य मुनिके आगे मुनिको देखती हुई निर्भय विचरती भई ३० (अन्तःशरीरजाव्यंजितःपांडुरतनुःवभूव देहवैवर्ण्यदृष्टवासाभीता पितरन्नवगात्) उर अन्तर गर्भ के चिह्नवाह्य अंगों में दर्शितभये पीतवर्ण तनु होजाताभया सो देह विवर्ण देखिकै सो कन्या भयमानि करिकै अपने पिता के पासको जातीभई ३१ (अमितद्युतिःराजर्षिः तृणविंदुःतादृष्ट्वाच विज्ञानचक्षुपाध्यात्वा मुनिकृतं सर्वभवेत्) अमित तेजवंत राजऋषि तृणविंदु तिस कन्याको गर्भवती दशा देखिकै पुनः विज्ञान दृष्टि करिकै ध्यानकरि देखे तव पुलस्त्य मुनिको कियाहुआ जो कछु हालरहा सो सब जानिगये ३२ (तांकन्यापितामुनिवर्याय पुलस्त्यायददौतांकन्यां प्रगृह्यवाढंडति एवसद्विजः अववीत्) तिस कन्या को पिताने आय मुनिन में श्रेष्ठ जो पुलस्त्य तिनके अर्थ देतेभये तिस कन्याको पाणिग्रहण करि पुनः दृढकरि हम अगीकार किया ऐसा निश्चय वचन द्विजपुलस्त्य बोलते भये ३३ (शुश्रूषणपरां दृष्ट्वा मुनिः प्रीतः वचः अववीत् उभयो वंशवर्द्धनं एकपुत्रं तं दास्यामि) अपनी सेवामें परायण पत्नीको देखि पुलस्त्य मुनि प्रीति पूर्वक वचन बोलते भये हे कल्याणरूपे माता पिता दोऊ वंश बढ़ावनहारा एक पुत्र तोको देउंगो ३४ (ततः पुलस्त्यात्मा पुत्रं प्रासूतलोकविश्रुतं विश्रवा पौलस्त्या इति विख्यातः ब्रह्मविन्मुनिः) तदनन्तर पुलस्त्यके संयोगते सोई स्त्री पुत्र उत्पन्न करतीभई लोकमें प्रसिद्ध विश्रवा ऐसा नाम पुनः पुलस्त्यके पुत्र ताते पौलस्त्य ऐसा नाम प्रसिद्ध ब्रह्मज्ञाता मुनिभये ३५ ॥

तस्य शीलादिकं दृष्ट्वा भरद्वाजो महामुनिः ॥ भार्यार्थस्वां दुहितरं ददौ विश्रवसे मुदा ३६ तस्यांतु पुत्रः संजज्ञे पौलस्त्याल्लोकसंमतः ॥ पितृ तुल्ये वैश्रवणो ब्रह्मणा चानुमोदितः ३७ ददौ तत्तपसा तुष्टो ब्रह्मा तस्मै वरं शुभम् ॥ मनोभिलषितं तस्य धनेश त्वमखंडितम् ३८ ततो लब्धवरः सोऽपि पितरं दृष्टुमागतः ॥ पुष्पकेन धनाध्यक्षो ब्रह्मा दत्तेन भास्वता ३९ नमस्कृत्वाथ पितरं निवेद्य तपसःफलम् ॥ प्राह मे भगवन् ब्रह्मा दत्त्वा वरमनिदितम् ४० निवासाय न मे स्थानं दत्तवान् परमेश्वरः ॥ ब्रूहि मे नियतं स्था नहिं सायन्न कस्यचित् ४१ ॥

(तस्य शीलादिकं दृष्ट्वा महामुनिः भरद्वाजः मुदा स्वां दुहितरं भार्यार्थं विश्रवसे ददौ) तिनको शीलादिक उत्तमगुणों युत देखिकै महामुनि भरद्वाज आनन्दपूर्वक अपनी कन्याको वामांगी होनेहेतु विश्रवाके अर्थ देतेभये अर्थात् विवाह करदेते भये ३६ (तस्यांतु पौलस्त्यात् पुत्रः संजज्ञे लोकसंमतः वैश्रवणः पितृ तुल्यः च ब्रह्मणानुमोदितः) तिस स्त्रीमें पुनः विश्रवा मुनिते कुवेरनामे पुत्र उत्पन्नभये लोक संमत विश्रवाको पुत्र गुणों करिकै पिताके तुल्यभया पुनः कुवेरपर ब्रह्माभी प्रसन्न भये हैं ३७ (तत्तपसा तुष्टः ब्रह्मा तस्य मनोभिलषितं अखंडितधनेशत्वशुभं वरं तस्मै ददौ) ताकी तपस्या करिकै प्रसन्न भये ब्रह्मा ताके मनकी अभिलाष योग्य अखंड जो कभी कमती न परै धनेशत्व अर्थात् समूह धनके अधिकारी इति मंगलीक वरको तिस कुवेरके अर्थ ब्रह्मा देतेभये ३८ (वरः लब्धः ततः सः अपि धनाध्यक्षः दत्तेन पुष्पकेन भास्वता पितरं दृष्टुमागतः) ब्रह्माते वर पायकै तदनन्तर एक समय सोई धनाध्यक्ष कुवेर ब्रह्माके दियेहुये पुष्पक विमानपर सवार जो सूर्यवत् प्रकाशमान अपने पिताके देखनेको आवते भये ३९ (पितरं नमस्कृत्वा अथ तपसःफलं निवेद्य प्राह भगवन् अनिदितं वरं ब्रह्मा मे

दत्त्वा) पिताको नमस्कार करि तब कुवेर अपनी तपस्याको फल कहि बोले हे भगवन् निन्दा रहित प्रशंसनीय धनेश्वर वर तौ ब्रह्माजीने मोको दिया परन्तु वास कहाँकरों क्योंकि ४० (मेनिवासाय स्थानं परमेश्वरः न दत्तवान् नियतस्थानं मेब्रूहि यत्र कस्यचित् हिंसन) मेरे वास करने अर्थ कोई स्थान परमेश्वर ब्रह्माने नहीं दिया ताते जहाँ किसीकी बाधा नहोवै ऐसा दृढस्थान आप मोको बताइये जहाँ किसीकी हिंसा नहोवै कोई दुख न पावै ४१ ॥

विश्रवाअपितं प्राह लंकानामपुरी शुभा ॥ राक्षसानां निवासाय निर्मिता विश्वकर्मणा
४२ त्यक्त्वा विष्णुभया दैत्या विविशुस्ते रसातलम् ॥ सापुरीदुःप्रधर्षान्यैर्मध्ये सा
गरमास्थिता ४३ तत्र वासाय गच्छत्वं नान्यैः साधिष्ठितापुरा ॥ पित्रादिपृस्त्वसो
गत्वा तां पुरीं धनदो विशत् ४४ स तत्र सुचिरं कालमुवास पितृसंमतः ॥ कस्यचित्त्व
थ कालस्य सुमालीनामराक्षसः ४५ रसातलान्मर्त्यलोकं च चारपिशिताशनः ॥ गृ
हीत्वा तनयां कन्यां साक्षाद्देवीमिव श्रियम् ४६ अपश्यद्धनदं देवं चरंतं पुष्पकेणसः ॥
हिताय चिंतयामास राक्षसानां महामनाः ४७ ॥

(विश्रवाअपितं प्राहराक्षसानां निवासाय विश्वकर्मणानिर्मितालंकानामशुभापुरी) विश्रवाभीति नकुवेर प्रति बोलते भये हे पुत्र राक्षसों के वास करने अर्थ पूर्वकाल में विश्वकर्मा ने निर्माण करि राखा है लंकानाम मंगलीकपुरी है ४२ (विष्णुभयात् दैत्या त्यक्त्वा ते रसातलं विविशुः सापुरीमध्ये सागरमास्थिता अन्यैः दुःप्रधर्षा) विष्णुकी भयते दैत्य उस पुरी को त्यागि भागे ते तत्र रसातल में प्रवेश भये सो पुरी खाली है अरु बीच समुद्र में बसी है ताते औरैन करिकै दुराधर्ष है बाकी प्राप्ति दुर्घट है ४३ (पुरा अन्यैः न साधिष्ठिता तत्र वासाय त्वंगच्छ पित्रादिष्टः तु अतौ वनदः गत्वा तां पुरीं विशत्) जबते दैत्य त्यागे तबते खाली पुरी है अबते पूर्व औरै किसी करिकै नहीं सो पुरी वास करीगई तहाँ वास करिवे अर्थ तुम जाउ इस प्रकार पिताको आज्ञासे पुनः कुवेर उहाँको गये तिस पुरी में प्रवेश कीन्हे ४४ (पितृसंमतः स तत्र सुचिरं कालं उवास अथ कस्यचित् कालस्य तु सुमालीनामराक्षसः) पिता के संमतते सो कुवेर तहाँ लंकापुरी में बहुतकाल तक वास कीन्हे अवरावण के उत्पन्न को कारण सुनिये किसी समय में पुनः सुमालीनामे जो प्राचीन राक्षसरहा ४५ (साक्षात् देवीमिव श्रियं देवतनयां कन्यां गृहीत्वा पिशिताशनः रसातलान्मर्त्यलोकं च चार) साक्षात् देवी लक्ष्मी तुल्यस्वरूप ते जबन्त अपनी पुत्री कुमारी को साथ लैकै सोई राक्षस सुमाली रसातल लोक ते आयमनुष्य लोक में विचरता भया सब देशों में घूमता फिरै ४६ (पुष्पकेणसः चरंतं वनदं देवं अपश्यत् राक्षसानां हिताय चिंतयामास महामनाः) कन्याके विवाह योग्य बरदूँढता रहै ता समय में पुष्पकपर सवार विचरते हुये कुवेर देवको देखता भया तब राक्षसनके हितके अर्थ चिन्तवन करि महानन्दमन भया भाव जाके पुत्र ऐसे उसीको विवाहों ४७ ॥

उवाच तनयां तत्रैकसीनामनामतः ॥ वत्से विवाहकालस्ते यौवनं चातिवर्त्तते ४८
प्रत्याख्यानाञ्च भीते स्त्वं न वरैर्गृह्यसे शुभे ॥ सा त्वं वरय भद्रं ते मुनिं ब्रह्मकुलोद्भवम् ४९
स्वयमेव ततः पुत्राभविष्यति महाबलाः ॥ ईदृशा सर्वशोभाढ्याः धनदेन समाशु
भे ५० तथेति सा श्रमंगत्वा मुनेरग्रे व्यवस्थिता ॥ लिखंती भुवमग्रेण पादेनाधोमुखी

स्थिता ५१ तामपृच्छन्मुनिःकात्वंकन्यासिवरवर्णिनि ॥ सात्रवीत्प्रांजलिर्ब्रह्म
नूध्यानेनज्ञातुमर्हसि ५२ ततोध्यात्वामुनिःसर्वज्ञात्वातांप्रत्यभाषत् ॥ ज्ञातंतत्त्वा
भिलषितंमत्तःपुत्रानभीप्स्यसि ५३ ॥

(कैकसीनामनामतःतनयांतत्रउवाच वत्सेतेविवाहकालः चयौवनंअतिवर्तते) कैकसीनामे अप-
नी पुत्री प्रति तहां सुमाली बोलताभया हे वत्से तेरे विवाहको कालआया पुनः तेरा यौवन अत्यंत
वर्तमान है ४८ (चशुभेप्रत्याख्यानात्भीतिःवरैः त्वंनृशैतेभद्रंसात्वब्रह्मकुलोद्भवंमुनिस्वयंप्रवर
य) हे मंगलरूपे तेरा रूप तेज अधिक देखि अपनाको लवमानि तेरे इनकार करनेकी भय करिके
वरोंने तोको नहीं पाणिग्रहण करिसके तेरा कल्याण होय तासों अब तू ब्रह्माके कुलमें उत्पन्न जो
विश्रवा मुनिहैं तिनहिं स्वइच्छित विवाहकरु ४९ (ततःशुभेईदृशाःसर्वशोभाढ्याःधनदेनसमाःमहा
वलाःपुत्राःभविष्यन्ति) जो विश्रवा सग तेरा विवाह हाई तदनन्तर हेमंगलरूपे इसीप्रकार सब
शोभायुक्त कुवेरकी समान महावली पुत्रतेरे भी होवेंगे भाव तिन करिके राक्षस कुलकी वृद्धि होवै
गी ५० (तथाइतिसाआश्रमगत्वामुनेः अग्रेव्यवस्थितापादेनअग्रेणभुवंलिखन्ती अधोमुखीस्थिता) हे
पिता जैसा कहते हों तैसाही करेंगी ऐसा कहि सो कन्या आश्रममें जाय विश्रवा मुनिके आगे बैठि
पायेंके नख करिके भूमिको लिखती हुई नीचे मुखकीन्हे वैठीरही ५१ (मुनिःतांपृच्छन्हेवरवर्णि
नित्वंकाकन्यामिसाप्रांजलिःअत्रवीत्ब्रह्मनूध्यानेनज्ञातुमर्हसि) आगे देखि विश्रवामुनि तिसकन्या
प्रति पूछते भये हे उत्तमवर्णी तुम कोहौ किसकी कन्याहौ तुम्हारा क्या प्रयोजनहै तब सो कन्या
हाथजोरि बोलतां भई हेब्रह्मन् ध्यान करिके जानिवे योग्यहौ ५२ (ततःमुनिःध्यात्वासर्वज्ञात्वातांप्रत्य
भाषत्तत्त्वाभिलषितंज्ञातंमत्तःपुत्रान्अभीप्स्यसि) तब मुनि ध्यान करिके सब जानिके तिस कन्या
प्रति बोले कि तेरे मनकी अभिलाष मैं जानिलिया मोसों पुत्रोंकी इच्छा करती है ५३ ॥

दारुणायांतुवेलायामागतासिसुमध्यमे ॥ अतस्तेदारुणोपुत्रोराक्षसौसंभविष्य
तः ५४ सात्रवीन्मुनिशार्दूलत्वत्तोप्येवंविधोसुतो ॥ तामाहपश्चिमोयस्तेभवि
ष्यतिमहामतिः ५५ महाभागवतःश्रीमान् रामभक्त्यैकतत्परः ॥ इत्युक्त्वासात
थाकालेमुषुवेदशकंधरम् ५६ रावणंविंशतिभुजंदशशीर्षसुदारुणम् ॥ तद्रक्षोजा
तमात्रेणचचालचवसुंधरा ५७ वभूवर्माशहेतूनिनिमित्तान्यखिलान्यपि ॥ कुंभक
र्णस्ततोजातोमहापर्वतसन्निभः ५८ ततःसूर्पणखानामजातारावणसोदरी ॥
ततोविभीषणोजातःशांतात्मासौम्यदर्शनः ५९ ॥

(तसुमध्यमेदारुणायांवेलायामागतासिअतस्तेपुत्रोदारुणोराक्षसौसंभविष्यतः) पुनः हेसुन्दरमध्य-
मगे यह सायंकाल दारुण वेलामें आईहौ इसकारण से तुम्हारे दो पुत्रदारुण कुटिल स्वभाववाले
राक्षस होईंगे ५४ (साअत्रवीत्हेमुनिशार्दूलत्वत्तःअपि एवंविधो सुतोतांआहतेयःपश्चिमःमहामतिःभ
विष्यति) सो कन्या बोलती भई हे मुनिनमें श्रेष्ठ तुमते उत्पन्न तौभी इस विधि के अधमपुत्रहोवेंगे
यह सदेह है तब तिसकन्या प्रति मुनिबोलते भये कि तेरे जो पिछला तीसरा पुत्रहोई सो महाबुद्धि
वन्त होइगो ५५ (श्रीमान्महाभागवतःरामभक्त्यैकतत्परः इति उक्त्वातथाकालेमादशकंधरमुसुपु
वे) श्रीमान् महाभागवत श्रीगर्भ भक्तिही में सदा तत्पररहैगो ऐसा मुनि कहि पुनः वाको अंगिकार

कीन्हे जैसा मुनि कह रहे हैं तैसेही कालपाय सो कन्या दशकंधर पुत्र उत्पन्न कीन्ही ५६ (दशशीर्षादि शक्तिभुजंसुदारुणरावणतत्परः जातमात्रेण च वसुंधरा च चाल) दशहैं शशिजाके बोंस हैं भुजा जाके अत्यन्त कुटिल स्वभाववाला रावण तिसराक्षस के उत्पन्न होतमात्रही पुनः सवष्टथिवी चलायमान भई हालि उठा ५७ (निमित्तानि अखिलानि अपि नाशहेतूनि बभूवुः ततः महापर्वतसन्निभः कुम्भकर्णः जातः) अनेक भांति के उत्पात सम्पूर्ण संसारके नाश करिबे योग्य होतेभये तदनंतर महाभारी पर्वत के तुल्य शरीर है जाको ऐसा कुम्भकर्ण उत्पन्न होता भया ५८ (ततः रावणसौदरी सूर्पगखानामजाता ततः शांतात्मा सौम्यदर्शनः विभीषणः जातः) तदनंतर रावण की भगिनी सूर्पगखा नामे उत्पन्न भई तदनंतर शांत है स्वभाव जाको मंगलीकितुखद दर्शन हैं जाके ऐसा उत्तम विभीषण उत्पन्न भया ५९॥

स्वाध्यायीनियताहारो नित्यकर्मपरायणः ॥ कुम्भकर्णस्तु दुष्टात्मा द्विजान्संतुष्टचेतसः ६० भक्षयन् ऋषिसंघांश्च विचचारातिदारुणः ॥ रावणोऽपि महासत्त्वलोका नांभयदायकः ॥ वृधेलोकनाशाय ह्यामयो देहिनामिव ६१ रामत्वं सकलांतरस्थ मभितोजानासि विज्ञानदृक् साक्षी सर्वहृदि स्थितो हि परमो नित्यो दितो निर्मलः ॥ त्वं लीलामनुजाकृतिः स्वमहिमामायागुणैर्नाज्यसे लीलार्थं प्रतिबोदितोऽद्य भवतो वक्ष्यामि रक्षोद्भवम् ६२ ॥

(नियताहारः स्वाध्यायीनित्यकर्मपरायणः तु दुष्टात्मा कुम्भकर्णः द्विजान्संतुष्टचेतसः) विभीषण तौ पावन पदार्थ स्वल्प भोजन करता वेदपाठ करता संध्योपासनादि नित्यकर्मों में परायण रहै पुनः दुष्ट है स्वभाव जाको ऐसा कुम्भकर्ण उत्तम ब्राह्मणों को भोजन करने में चित्तराखै ६० (अतिदारुणः ऋषिसंघांश्च भक्षयन् विचचार महासत्त्वः रावणः अपि लोकानां भयदायकः) कुम्भकर्ण अत्यंत दारुण स्वभाव ऋषि समूहोंको भक्षण करता हुआ विचाराकरे महापराक्रमी रावण भी लोकन को भयदेन-हारा (देहिनां आमयः इव हिलोकनाशाय वृधे) जैसे जीवन की देहमें रोगबद्धता तैसेही निश्चयकरि लोकनके नाश अर्थ रावण बद्धता भया ६१ (रामत्वं सकलांतरस्थं नित्यो दितः निर्मलः परमः साक्षी सर्वहृदि स्थितो हि विज्ञानदृक् अभितोजानासि मनुजाकृतिः लीलात्वं स्वमहिमामायागुणैर्नाज्यसे लीलार्थं भवतः प्रतिबोदितः अदरक्षः उद्भवम् वक्ष्यामि) अगस्त्यजी बोले कि हे श्रीरघुनाथजी आपतौ सकल भूतमात्र के अंतर में वासकिहेहौ कौन भांति नित्य उदित निर्मल अर्थात् सदा एकरस स्वयं प्रकाश मान् जामें किसी भांति को मल नहीं शुद्ध परमात्मरूप परमसाक्षी अर्थात् सबकाल की सबके बाहेर भीतर की जाननेवाले सबके हृदय में स्थित निश्चयकरि विज्ञानदृष्टि करिके सबके अंतरकी बात जानतेहौ पुनः मनुजाकृतिः लीला अर्थात् राजकुमार वनेलोकोद्धारहेतु जो नरनाथ्य करतेहौ सो सब को देखनेमात्र है क्योंकि त्वं स्वमहिमा माया गुणैर्नाज्यसे अर्थात् आप अपनी महिमा के प्रभाव करिके माया के गुण जो रजतमादि तिनकरिके नहीं लिप्त होतेहौ अरु लीला वृद्धिअर्थ जो आप पूछा सो आपही की प्रेरणाते या समय में राक्षसोंकी उत्पन्नहोने को हाल में वर्णन करता हूं ६२ ॥

जानामिकेवलमनंतमर्चित्यशक्तिं चिन्मात्रमक्षरमजं विदितात्मतत्त्वं ॥ त्वं रामगूढ निजरूपमनुप्रवृत्तोऽमूढोऽप्यहं भवदनुग्रहतश्चरामि ६३ एवं वदंतमिनवंशपवित्र

कीर्तिःकुम्भोद्भवंरघुपतिःप्रहसन्वभाषे॥मायाश्रितंसकलमेतदनन्यकत्वान्मत्कीर्तनंजगतिपापहरंनिबोध ६४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेउत्तरकाण्डेप्रथमःसर्गः १ ॥

(हेरामग्रहंमूढअभिभवत्अनुग्रहतःत्वांकेवलंअनंतंअचित्यशक्तिं चिन्मात्रंअक्षरंअजंविदितात्मतत्त्वं जानामिगूढनिजरूपंअनुव्रतःचरामि) हे रघुनाथजी यद्यपि मैं मूढअल्पज्ञजीव हों तोभी आपको अनुग्रह सदादया राखनेते आपको केवल अर्थात् समता योग्य दूसरानहीं एकही अनंत जाकीमहिमा को अत कोऊनहीं पावत अचित्य जोकिती की चिंतवन में नहीं आवत ऐसी अघटवट्टना शक्तिहे जिनमें चैतन्यमात्र अर्थात् अखंड सदा एकरस ज्ञान अक्षर कारण मायारहित अज जिनकी उत्पत्ति किसीते नहीं विदित आत्मतत्त्व करि जानताहों सोईगुप्त किहेहों आपना ऐश्वर्यरूप जिसने माधुर्य में द्विभुज धनुधारी श्यामसुंदर राजकुमार रूपते विचरतेहों ताही रूपको उगासक है आपकी एवृत्ति अर्थात् नामरूप लीलाधामादि प्रभुप्राप्तीकी मार्गआप प्रतिद्व किया है तामें विचरताहों भाव नाम स्मरण लीला श्रवण कीर्तन रूप सेवन अर्चन इत्यादि में लगा रहताहों ६३ (एवंवदंतंकुभोद्भवंइनवशपवित्रकीर्तिरघुपतिःप्रहसन्वभाषेएतत्सकलमायाश्रित अनन्यकत्वात्मत्कीर्तनंजगतिपापहरंनिबोध) इसप्रकार कहते हुये जो अगस्त्य तिनप्रति सूर्य वंशमें पवित्र कीर्ति है जिनकी ऐसे रघुपति हैंसत संते बोले कि हे मुने यह यावत् लोक सम्बन्धी व्यापार है सो सब मायाके आश्रित है केवल अनन्यताते मेरा कीर्तन करना सोई भूतलमें पाप हरने हेत है ऐसा विचारराखी ६४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्गुभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्मभूषणे उत्तरकाण्डेप्रथमःप्रकाशः १ ॥

श्रीरामवचनंश्रुत्वापरमानंदनिर्भरः ॥ मुनिःप्रोवाचसदसिर्षेष्ठांतत्रशृण्वताम् १ अथवित्तेश्वरोदेवस्तत्रकालेनकेनचित् ॥ आययौपुष्पकारूढःपितरंद्रष्टुमंजसा २ दृष्ट्वातंकैकसीतत्रभ्राजमानंमहौजसम् ॥ राश्रसामुत्रसामीप्यगत्वाश्रयणमत्र वीत् ३ पुत्रपश्यधनाध्यक्षंज्वलंतंस्वेनतेजसा ॥ त्वमप्येवंयथाभूयास्तथायत्नंकु रुप्रभोऽतच्छ्रुत्वाश्रयणोरोषात्प्रतिज्ञामकरोद्द्रुतम् ॥ धनदेनसमीचापिह्यधिको वाचिरेणतु ५ भविष्याम्यं वमां पश्यसंतापं त्यज सुव्रते ॥ इत्युक्त्वा दुष्करं कर्तुं तपः सदशकन्धरः ६ ॥

सवैया ॥ तपकै बरपाय सहानुज रावण व्याहसलकहि वासलिये । लियपुष्पक छीनि कुवेरहि सों दिगपालन को बहुत्रास दिये ॥ सुख भोगिसवै पुनिमुक्त भये प्रभुहायमरोवरि बैरहिये । कहियों पुनिराघवकी महिमा जगमें घटजात बखान किये ॥ (श्रीरामवचनंश्रुत्वामुनिः परमानंदनिर्भरःतत्र सदसिर्षेष्ठांतत्रशृण्वताम्प्रोवाच) शिवजी बोले हे गिरिजा श्रीरघुनाथ जीके वचन सुनि अगस्त्य मुनि परमानंद परिपूर्ण तिससभा के मध्यसबके सुनत संते मुनि रघुनंदन प्रति बोलते भये १. (अथकेन चित्कालेवित्तेश्वरः देवः पुष्पकारूढःपितरंद्रष्टुं अंजसातत्रआययौ) अब किसी समय में वितेश्वर कुवेरदेव पुष्पक विमानपर सवारपिता विश्रवाको देखनेहेत वेगता सहित तहां को आवते भये २ (तत्रकैकसीराश्रसीभ्राजमानं महौजसमंतदृष्ट्वापुत्ररावणंसामीप्यगत्वाश्रयणमत्रवीत्) तहां विश्रवाके समीप

कैकसी राक्षसी रहै ताने पुष्पकपर विराजमान तेज पराक्रमवंत तिन कुवेरको देखि अपनेपुत्र रावण के समीप जाय बोलती भई ३ (पुत्रस्वेनतेजसा ज्वलंतधनाध्यक्षं पश्यप्रभोत्वंअपिपथाएवभूयाः यत्नंकुरु) हे पुत्र अपने तपो तेजकरिकै प्रकाशमान हवैरहे हैं इन कुवेरको देखु हे प्रभो भावतू राक्षसों को राजा होइगो ताते तूभी जाभाति इसीप्रकार तेजस्वी होवै सो यत्नकरु ४ (तत्श्रुत्वा रावणः रोषा तद्गतं प्रतिज्ञां करोत्वा धनदेनसमः वाञ्छाधिकः अपितु अचिरेण) सो सुनि रावण क्रोधते तुरतही प्रतिज्ञा करताभया कि यातौ कुवेरकी बराबरि को अथवा कुवेरते अधिक पुनः थोरेही दिनोंमें ५ (भविष्या मित्रं वमां पश्य सुव्रते संतापं त्यज इति उक्त्वा स दशकन्धरः दुष्करं तपः कर्तुं) मैंभी तेजवंत होउँगो हे माता मोको देखौ क्या करताहौं हे सुव्रते सन्ताप त्यागकरो ऐसा कहि रावण दुष्करतप करने हेतु ६ ॥

आगमत्फलसिद्ध्यर्थं गोकर्णेतुसहानुजः ॥ स्वस्वं नियममास्थाय भ्रातरस्ते तपो मह
त ७ आस्थिता दुष्करं घोरं सर्वलोकैकतापनम् ॥ दशवर्षसहस्राणिकुम्भकर्णो करोत्त
पः ८ विभीषणोऽपि धर्मात्मा सत्यधर्मपरायणः ॥ पंचवर्षसहस्राणि पादेनैकेन तस्थि
वान् ९ दिव्यवर्षसहस्रं तु निराहारो दशाननः ॥ पूर्णवर्षसहस्रे तु शीर्षमग्नीजुहा
वसः ॥ एवं वर्षसहस्राणि नवतस्यातिचक्रमुः १० अथ वर्षसहस्रं तु दशमे दशमं
शिरः ॥ छेत्तुकामस्य धर्मात्मा प्राप्तश्चाथ प्रजापतिः ॥ वत्सवत्सदशग्रीवप्रीतो रमी
त्यभ्यभाषत् ११ ॥

(फलसिद्ध्यर्थं तु सहानुजः गोकर्णं आगमत्ते भ्रातरः स्वस्वं नियमं आस्थाय) फल सिद्धी अर्थ पुनः सहित भाइन गोकर्ण तीर्थको आवते भये ते सब भाई अपने अपने नियमोंमें स्थित हवैकै ७ (सर्व लोकैकतापनं दुष्करं घोरं महत्तपः आस्थिता कुम्भकर्णः दशवर्षसहस्राणितपः करोत्) सब लोकनको ताप करनेवाला दुष्कर घोर महातपमें स्थित भये तामें कुम्भकर्ण दशहजार वर्षतक तप करताभया ८ (सत्यधर्मपरायणः धर्मात्मा विभीषणः अपि एकेन पादेन पञ्चवर्षसहस्राणितस्थिवान्) सत्य धर्म में परायण धर्मात्मा विभीषण एक पायें करिकै पांचहजार वर्षतक खड़ा रहा ९ (तु दशाननः दिव्यवर्ष सहस्रं निराहारः वर्षसहस्रे वर्षे पूर्णेतु सः शीर्षमग्नीजुहाव) पुनः रावण देवतोंके हजार वर्षतक निराहार खड़ा रहा हजार वर्ष पूर्ण भयेपर पुनः सो रावण अपने शीशोंको काटि काटि अग्निमें हवन करने लगा (एवं नवसहस्रवर्षाणि तस्यातिचक्रमुः) इसी प्रकार नव हजार वर्षतक नवशीश काटिकाटि चढ़ावा किया १० (अथ दशमे वर्षसहस्रे तु दशमं शिरः छेत्तुकामस्य च अथ धर्मात्मा प्रजापतिः प्राप्तः हे दशग्रीव वत्स वत्स प्रीतोऽस्मि इति अभ्यभाषत्) नवहजार वर्षतक तौ नवशीश काटिकाटि हवन करत रहा अब दशवां हजारवर्ष लागतही पुनः दशवां शिरकाटौ ऐसी कामना के करतही पुनः अब धर्मात्मा प्रजापति अर्थात् ब्रह्मा आय प्राप्त भये बोले हे दशग्रीव वत्स वत्सभाव अब शीश न काटु क्योंकि तेरे तप करिकै मैं प्रसन्नहौं ऐसा वचन बोलतें भये ११ ॥

वरं वरयदास्यामि यत्ते मनसि कांक्षितम् ॥ दशग्रीवोऽतितच्छ्रुत्वा प्रहृष्टेनांतरात्मना

१२ अमरत्वं वृणोमीश वरदो यद्विमेभवान् । सुपर्णेनागयक्षाणां देवतानां तथा सुरैः ॥

अवध्यत्वं तु मे देहितुं भूता हिमानुषः १३ तथा स्त्विति प्रजाध्यक्षः पुनराह दशाननम् ॥

अग्नौ हुता निशीर्षाणि यानि तेऽसुरपुंगवा ॥ भविष्यंति यथा पूर्वमक्षयाणि च सत्तम १४

एवमुक्ताततोरामदशग्रीवंप्रजापतिः ॥ विभीषणमुवाचेदंप्रणतंभक्तवत्सलः १५

विभीषणत्वयावत्सकृतं धर्मार्थमुत्तमम् ॥ तपस्ततोवरंवत्पृणीष्वभिमतंहितम् १६ ॥

(वरंवरयतेमनसिकांक्षितं दास्यामितश्रुत्वादशग्रीवः अंतरात्मनाअतिप्रहृष्टेन) ब्रह्माबोले हे गवण मनभावतवर मांगु जो तेरी मनोकामना होइगी सोइ देउंगो सो सुनि रावण मनसे अत्यंत आनंद है करि बोलता भया १२ (हेईशयदिभवान्नेवरद अमरत्वंवृणोमिसुगर्णनागयभागांतयादे वतानांअसुरैःअवध्यत्वमेदेहितुमानुपःतृणभूताहि) हे ईश जो आपमो हो वरदेत हो तो अमरपदवी मांगता हों कि गरुड़नाग यत्न तैसेही देवता दैत्योंकरि अवध्यत्व अर्थात् इन किसीको मारान मरिस को यह वरदान दीजिये अरु मनुष्य तो मेरे संमुख तृणसम है १३ (तथाअस्तुइतिप्रजाध्यःपुनः दशाननआहहेअसुरपुंगवतेयानिशर्षिणिअग्नौहुतानि) जैसा मांगता है तैसाही होवै ऐसा कहि ब्रह्मापुनः रावण प्रति बोलतेभये हे असुरोंमें श्रेष्ठ तूनेजोशीशोंको काटि अग्निमें हवन करिदिथाहे (हेसत्तमयथापूर्वचअक्षयाभिभविष्यंति) हे उत्तम यथा प्रथम रहें पुनः तैसेही नाश रहितहोवेंगे भावकाटे पर पुनः जामि आवहिगे १४ (हेरामएवंदशग्रीवंप्रजापतिःभक्तवत्सलःप्रणतंविभीषणंइदंउवाच) अगस्त्य बोले हे रघुनाथजी इस प्रकार रावण प्रति कहिकै तदनंतर ब्रह्माभक्तनपर प्रीतिकरने वाले हाथजोरे प्रणामकरते देखि विभीषण प्रति ऐसा वचन बोलतेभये १५ (वत्सविभीषणत्वयाधर्मार्थउत्तमतपःकृतंततः वत्सअभिमतंहितंवत्पृणीष्व) ब्रह्माबोले हे वत्स विभीषण तुमने धर्मके अर्थ उत्तम तत्कियाहै ताते हे वत्स जो अतःकर्मने अपने हितकीकांजाहोयसो बरमांगहु १६ ॥

विभीषणोपितंतत्वाप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् । देवमेसर्वदाबुद्धिर्धर्मेतिष्ठतुशाश्वती ॥

मारोचयत्वग्धर्मेबुद्धिःसर्वत्रसर्वदा १७ ततःप्रजापतिःप्रीतोविभीषणमथाब्रवीत् ॥

वत्सत्वंधर्मशीलोसितथैवचभविष्यसि १८ अयाचितोपितेदास्येह्यमरत्वंविभीष

ण ॥ कुम्भकर्णमथोवाचवरंवरयसुव्रत १९ वाण्याव्याप्तोयतंप्राहकुम्भकर्णःपिता

महम् ॥ स्वप्स्यामिदेवषण्मासान्दिनमेकंतुभोजनम् २० एवमस्त्वितितंप्राहब्र

ह्मादृष्टादिवौकसः ॥ सरस्वतीचतद्वक्त्राभिर्गताप्रययौदिवम् २१ कुम्भकर्णस्तुदु

ष्टात्माचितयामासदुःखितः ॥ अनभिप्रेतमेवास्यात्किंनिर्गतमहोविधेः २२ ॥

(तंतत्वाविभीषणःअपिप्रांजलिःवाक्यंअब्रवीत्देवमेशाश्वतीबुद्धिःसर्वदाधर्मेतिष्ठतुमेबुद्धिःसर्वत्र सर्वदाअधर्मे मारोचय) तिन ब्रह्माको प्रणामकरिकै विभीषण भी हाथजोरिकै वचन बोलते भये हे देव मेरी नित्य एकरस बुद्धि सर्वकाल में धर्मविषे टिकी रहै कवहुं किसीकाल अधर्ममें बुद्धि न आवै १७ (ततःप्रीतःप्रजापतिःअथविभीषणं अब्रवीत् वत्सत्वंधर्मशीलोसितथा एवभविष्यसि) तदनंतर प्रीति पूर्वक ब्रह्मा अबविभीषण प्रति बोलते भये हे वत्सतुम धर्मशील पूर्वहीते हों पुनःतैसेही धर्म वंत निश्चय करिकै होहुगे भाव सदाधर्मही में बुद्धि रहैगी १८ (विभीषणअयाचितःअपितेहिअमरत्वं दास्येअथ कुम्भकर्णउवाच हे सुव्रतवरंवरय) हे विभीषण तेरे विनामांगेभी तो को निश्चयकरि अमर पदवी देताहों कल्पभरि जीवत रहैगी अबकुम्भकर्ण प्रति ब्रह्माबोलतेभये हे सुन्दरव्रतधारविरमांगु १९ (वाण्याव्याप्तःकुम्भकर्णः अथतंपितामहंप्राहदेवषण्मासान्स्वप्स्यामितुएकंदिनभोजनम्) देवतों की प्रेरणा ते सरस्वती जिह्वा में व्याप्त बुद्धिब्रह्माले दिया ताते कुम्भकर्ण अबतिन ब्रह्माप्रति बोलता

भया हे देव छा महीना में सोवत रहौ पुनः एकदिनजागि भोजनकरो २० (दिवौकतः दृष्ट्वा ब्रह्मा इतितंप्राहएवंअस्तुचसरस्वती ननुवक्तातुर्निर्गतादिवंप्रययो-) देवतों को करुणा दृष्टि देखि ब्रह्मा ऐसा बचन तिस कुंभकर्ण प्रति बोले हे कुंभकर्ण जैसा तू मांगता है, तैसाही होव पुनः सरस्वती ताके मुखते नितरिस्वर्ग को जाती भई २१ (तदुष्टात्माकुम्भकर्णःदुःखितःचित्तयामास अहोविधिः अनभिप्रेतंएवास्यात् किंनिर्गतं) तब दुष्टात्मा कुम्भकर्ण दुखिन है चितवन करने लगा कि बड़े आश्चर्य की बात है हे विधाता विना मनोरथ कीन्हे ऐसा बचन कते मेरे मुखते नितरि गया यह प्रारब्ध है २२ ॥

सुमालीवरलब्धांस्नानूज्ञात्वापोत्रान्निशाचरान् ॥ पातालाग्निर्भयःप्रायात्प्रहस्ता
दिभिरन्वितः २३ दशग्रीवंपरिष्वज्यवचनंचेदमब्रवीत् ॥ दिष्ट्यातेपुत्रसंवृतो
वाञ्छितोमेमनोरथः २४ यद्गयाञ्चवयंलंकांत्यक्त्वायातारसातलम् ॥ तद्गतंनो
महाबाहोमहद्विष्णुकृतंभयम् २५ अस्माभिःपूर्वमुषितालंकेयंधनदेनतोभ्रात्राक्रां
तामिदानींत्वंप्रत्यानेतुमिहार्हसि २६ सास्नावाथवलेनापिराज्ञांभ्युःकुतःसुहृत् ॥
इत्युक्त्वा रावणःप्राहनाहस्येवंप्रभाषितुम् २७ वित्तेशोगुरुरस्माकमेवंश्रुत्वातमब्र
वीत् ॥ प्रहस्तःप्रसितंवाक्यंरावणंदशकंधरम् २८ ॥

(पोत्रान्निशाचगन्तान्वरलब्धानूज्ञात्वासुमालीप्रहस्तादिभिः अन्वितःनिर्भयःपातालात्प्रायात्) अपनी कन्या के पुत्ररावणादि निशाचरों को ब्रह्मासे अमरत्ववर प्राप्त भया ऐंताजानि सुमाली राजसुत प्रहस्तादि मित्रिनसहित निर्भय पाताल से नितरा २३ (दशग्रीवंपरिष्वज्यचइदंवचनं अब्रवीत्पुत्रमेवाञ्छितः मनोरथःतेदिष्ट्यासंवृतः) इहाँआय सुमाली रावण का हृदयमें लगाय पुनः ऐसा बचन बोलताभया हे पुत्र मेरा वाञ्छित मनोरथ जो कलुरहा सो तुमने आनन्द पूर्ण किया २४ (यत्भयात्चवयंलंकांत्यक्त्वायातारसातलंमहाबाहोविष्णुकृतंभयम्) जाकी भयते पुनः हमलोग लंका त्याग किया रसातल को गये हे महाबाहो वह विष्णु की करी हुई हमलोगों को महा भयरहै भाव विष्णुमारि डारहिगे इति भयरहै सो अवमिति गई २५ (पूर्वइयंलंकाअस्माभिःउषिताइदानींतेभ्रात्राधनदेन आक्रांतांइहप्रत्यानेतुंत्वंअर्हसि) पूर्वकाल में यह लंकाहमलोगों करिकैवताई गई है अबतुम्हारे भाई कुबेरने बलिलिया है अब इस लंकापुरी को पुनः लेलेने के तुम योग्यहौ २६ (सास्नावाअथवलेनअपिराज्ञांकुतःभ्युःकुतःसुहृत्इतिउक्तःरावणः प्राहएवंप्रभाषितुंअर्हसि) चहौ भाईते सनेह पूर्वक पावो अथवा बलकरि भी लैलेउ क्योंकि राजों के कहूँभाई मित्रहोते हैं ऐसा जब सुमाली ने कहा तब रावण बोला कि ऐसा अनुचित कहवेके नहीं योग्यहौ २७ (वित्तेशःअस्माकंगुरुःएवंश्रुत्वा प्रहस्तःप्रसितंवाक्यंदशकंधरंरावणंतमब्रवीत्) कुबेर हमसब भाइयों से बड़ापिता के समान है ऐसा सुनि के प्रहस्त तात्पर्य युक्त बचनको दशकंधर जो रावण है त्यहि प्रति बोलना भया २८ ॥

शृणुरावणयत्नेननैवत्वंवक्तुमर्हसि ॥ नार्धाताराजधर्मास्तेनीतिशास्त्रंतथैवच २९
शूराणान्हिसौभ्रात्रंशृणुमेवदत्तःप्रभो ॥ कश्यपस्यसुतादेवाराक्षसाश्चमहाबलाः
३० परस्परमयुध्यंतत्यक्त्वासौहृदमायुधैः ॥ नैवेदानींतनंराजनृवरंदेवैरनुष्टि

तम३१ प्रहस्तस्यवचः श्रुत्वा दशग्रीवोदुरात्मनः ॥ तथेतिक्रोधताम्राक्षस्त्रिकूटाचल
मन्वगात् ३२ दूतं प्रहस्तं संप्रेष्य निष्काश्य धनदेवरम् ॥ लंकामाक्रम्य सचिवैः राक्ष
सैः सुखमास्थितः ३३ धनदः पितृवाक्येन त्यक्त्वा लंकां महायशाः ॥ गत्वा कैलास
शिखरं तपसा तोषयच्छिवम् ३४ ॥

(रावणयत्नेन शृणुवक्तुं एवमग्रहीतुराजधर्माः च तथा एव नीतिशास्त्रं तेन अधीता) हेरावण सावधान
ता सहित मेरेवचन सुनि लीजिये तब उत्तर दीजिये अभी उत्तर देने योग्य नहीं है क्योंकि राजधर्म
पुनः तैसेही नीतिशास्त्र इत्यादि अभी आपने नहीं पढ़ा है २९ (प्रभो मेव दत्तः शृणु शूराणां सो भ्रात्रं
न हि कश्यपस्य सुता देवा चराक्षसामहावलाः) हे प्रभो मेरा कहा सुनिये शूरोंमें भाइन के साथ प्रीति
नहीं होती है देखिये कश्यपके पुत्र देवता पुनः राक्षस महावली भये ३० (सोऽहं त्वं कृत्वा आयुषैः
परस्परं अयुष्यंतरा जन्मद्वानीतं न देवैः अनुपति त्वैरेन एव) ते कश्यपके पुत्र देवता राक्षस मित्रता त्या-
गि हथियारों करिके आपसमें युद्ध करते भये ताते हेराजन् इसीतनको देवनसे नवीन वैर नहीं है
भाव देवतोंको अरु राक्षसोंको वैर पूर्वहीते चला आवता है सोई दृढराखी ३१ (प्रहस्तस्यवचः श्रुत्वा
दुष्टात्मा दशग्रीवः तथा इतिक्रोधताम्राक्षः त्रिकूटाचलं मन्वगात्) प्रहस्त के वचन सुनिके दुष्टात्मा रा-
वण बोला जो कहतेहो सोई करोंगो ऐसा कहि क्रोधवश लाल होंगये हैं नेत्र जाके सो रावण त्रिकूटा
चल लंका समीप जाता भया ३२ (प्रहस्तं दूतं संप्रेष्य धनदेवरं निष्काश्य लंकां आक्रम्य राक्षसैः सचि-
वैः सुखं प्रास्थितः) प्रहस्त को दूत बनाय पठे कुबेरको निकासि दिया आप रावण लङ्कामें जाय सब
राक्षसों मंत्रियों सहित सुख पूर्वक वास करता भया ३३ (महायशाः धनदः पितृवाक्येन लङ्कां त्यक्त्वा
कैलासशिखरं गत्वा तपसा गिवंतोपयत्) महा यशवन्त कुबेर पिताके वचन करिके लङ्काको त्यागकिया
कैलासके शिखरपर जाय तपस्या करिके शिवजीको प्रसन्न करते भये ३४ ॥

तेन सख्यमनुप्राप्य तेनैव परिपालितः ॥ अलकां नगरीं तत्र निर्ममे विश्वकर्मणा ३५
दिक्पालत्वं चकारा त्रिशिवेन परिपालितः ॥ रावणो राक्षसैः सार्द्धमाभिषिक्तः सहानुजैः
३६ राज्यं चकारा सुराणां त्रिलोकीं वाधयन् खलः ॥ भगिनीं कालखं जायददौ विक-
टरूपिणीं ३७ विद्युज्जिह्वायनाम्नामो महामार्यानिशाचरः ॥ ततो मयो विश्वक-
र्मराक्षसानां दितेः सुतः ३८ मुतां मदोदरीनाम्ना ददौ लोकैकमुंदरीम् ॥ रावणा-
य पुनः शक्तिममो घां प्रीतिमानसः ३९ वैराचनस्य दौहित्रीं वृत्रज्वालेति विश्रुतां ॥
स्वयंदत्ताः मुहहत्कुम्भकर्णाय रावणः ४० ॥

(तेन सख्यं अनुप्राप्य तेनैव परिपालितः एव तत्र अलकां नगरीं विश्वकर्मणा निर्ममे) तिन शिव करिके
सख्यताको प्राप्त भये अरु तिनहीं करिके रक्षाको भी प्राप्त भये ताते कुबेर तिसी कैलासपर अलका
नामे नगरी विश्वकर्मा करिके निर्माण कराते भये ३५ (त्रिशिवेन परिपालितः अत्र दिक्पालत्वं चकार
राक्षसैः सार्द्धं सहानुजैः रावणः अभिषिक्तः) शिवजीसे रक्षाको प्राप्त ह्वे कुबेर तो अलकापुरी में वास
करि उत्तर दिशाको रक्षा करनेवाले भये अरु लङ्कामें राक्षसों सहित तथा छोटे भाइन सहित रावण
राज्याभिषेक को प्राप्त भया ३६ (त्रिलोकीं वाधयन् खलः असुराणां राज्यं चकार विकटरूपिणीं भगिनीं
कालखं जायददौ) तनिहूं लोकनको वाधा करत सन्ते खल रावण असुरोंकी राज्य करता भया

भयंकर है रूप जिसको ऐसी अपनी वहिनको कालखंजके वंशमें विवाहि देताभया ३७ (महामाया निशाचरः असौनाम्नः विद्युज्जिह्वायततः दितेः सुतः मयः राक्षसानां विश्वकर्मा) महा मायावी निशाचर इसको नाम विद्युज्जिह्वा ताके अर्थ सर्पणखाको विवाहि देताभया तदनन्तर दितिका पुत्र मय नामे जो राक्षसोंको विश्वकर्मा है कारीगर ३८ (लोकैकसुन्दरीमंदोदरी नाम्नासुतारावणायददौ पुनः प्रीतिमानसः अमोघांशक्ति) जो लोकमें एकही सुन्दरि मंदोदरीनामें अपनी कन्याको मयने रावणके अर्थ विवाहि देताभया पुनः प्रीतियुत मनसों एक अमोघ जो खालीनजाय ऐसी शक्तिदिया ३९ (वृत्रज्वालाइतिविश्रुतां वैरोचनस्यदौहित्रीस्वयंदत्तः रावणः कुम्भकर्णायमुद्वहत्) वृत्रज्वाला ऐसा नाम प्रसिद्ध वैरोचनकी दौहित्री ताको पिता आपहीने दिया तिसको रावण कुम्भकर्णके अर्थ विवाह करता भया ४० ॥

गन्धर्वराजस्यसुतांशैलूषस्यमहात्मनः ॥ विभीषणस्यभार्याथैधर्मज्ञांसमुदावहत् ४१ सरमानामसुभगांसर्वलक्षणसंयुताम् ॥ ततोमंदोदरीपुत्रंमेघनादमजीजनत् ४२ जातमात्रस्तुयोनादंमेघवत्प्रमुमोचह ॥ ततःसर्वेवृत्रन्मेघनादोयमितिचास कृत् ४३ कुम्भकर्णस्ततःप्राहनिद्रामांवाधतेप्रभो ॥ ततश्चकारयामासगुहांदीर्घा सुविस्तराम् ४४ तत्रसुष्वापमूढात्माकुम्भकर्णोविधूर्णितः ॥ निद्रितेकुम्भकर्णेतरा वणोलोकरावणः ४५ ब्राह्मणान्ऋषिमुख्याश्चदेवदानवकिन्नरान् ॥ देवश्रियोम नुष्याश्चनिजघ्नेसमहोरगान् ४६ धनदोपिततःश्रुत्वा रावणस्याक्रमंप्रभुः ॥ अधर्ममाकुरुष्वेतिदूतवाक्यैर्निवारयेत् ४७ ॥

(महात्मनः गन्धर्वराजस्य शैलूषस्यसुतां धर्मज्ञां विभीषणस्यभार्याथैधर्मज्ञांसमुदावहत्) महात्मा गन्धर्वोंके राजा शैलूषकी जो कन्या जो स्वधर्मको जाननेवाली ताहि विभीषणकी भार्याहोने अर्थ सहित आनन्द विवाह करते भये ४१ (सुभगांसर्वलक्षणसंयुतां सरमानामततः मंदोदरीमेघनादपुत्रमजीजनत्) सौभागवतीके सब चिह्न सयुक्त सरमा नाम जाको सो विभीषण पत्नी है तदनन्तर मंदोदरी मेघनाद नामे पुत्र उत्पन्न करतीभई ४२ (यः जातमात्रः तुमेघवत्नादं प्रमुमोचहततः अयंमेघनादः इतिचासकृतसर्वेअवत्) जो उत्पन्न होतही पुनः मेघोंके तुल्य शब्दको करता भया ताते यह मेघनादहै ऐसा नाम किसीने कहा पुनः बारम्बार सबै राक्षस मेघनादहै कहाकिये ४३ (ततः कुम्भकर्णः प्राहप्रभोमांनिद्रावाधतेततः दीर्घासुविस्तराम्गुहांचकारयामास) तदनन्तर कुम्भकर्ण बोले हे प्रभो मोको निद्रा बहुत बाधा करती है तब रावण बड़ा लंबा चौड़ा एक गुहा निर्माण करावता भया ४४ (तत्र मूढात्माकुम्भकर्णोविधूर्णितः सुष्वापकुम्भकर्णेनिद्रितेतुलोकरावणः रावणः) तहां गुहा में मूढात्मा कुम्भकर्ण निद्रावश सोवता भया कुम्भकर्ण के सोवतसंते पुनः लोक को रोवावने वाला रावण क्या किया ४५ (ब्राह्मणान्ऋषिमुख्याश्चदेवदानवकिन्नरान्समहोरगान्मनुष्याश्चदेवश्रियः निजघ्ने) ब्राह्मण ऋषिमुख्य पुनः देवता दानव किन्नर सहित महानाग मनुष्य देव इत्यादि सबको संग्राम में जीति त्रिलोक बासिन की ऐश्वर्य नाशकर दिया ४६ (रावणस्यअक्रमंप्रभुः धनदः अपिश्रुत्वाततः अधर्ममाकुरुष्वेतिदूतवाक्यैर्निवारयेत्) रावण के अधर्म कर्मों को प्रभु कुबेर भी सुना तब संदेश दिये कि अधर्मन करौ ऐसे दूतद्वारा बचनों करिके मनेकिये ४७ ॥

ततःक्रुद्धोदशग्रीवोजगामधनदालयम् ॥ विनिर्जित्यधनाध्यक्षंजहारोत्तमपुष्पकम्
४८ ततोयमंचवरुणंनिर्जित्यसमरेऽसुरः ॥ स्वर्गलोकमगात्तूर्णदेवराजजिघांस
या ४९ ततोऽभवन्महद्युद्धंमेद्रेणसहदैवतैः ॥ ततोरावणमभ्येत्यवबंधात्रिदशेश्वरः
५० तच्छ्रुत्वासहसागत्यमेघनादःप्रतापवान् ॥ कृत्वाघोरंमहद्युद्धंजित्वात्रिदश
पुंगवान् ५१ इंद्रंगृहीत्वावध्वासौमेघनादोमहाबलः ॥ मोचयित्वातुपितरंगृहीत्वे
न्द्रययौपुरम् ५२ ब्रह्मातुमोचयामासदेवेन्द्रमेघनादतः ॥ दत्त्वावरान्बहून्स्तस्मैब्र
ह्मास्वभवनंययौ ५३ रावणोविजयीलोकान्सर्वान्जित्वाक्रमेणतु ॥ कैलासंतोल
यामासबाहुभिःपरिघोपमैः ५४ ॥

(ततःदशग्रीवःक्रुद्धःधनदालयमजगामधनाध्यक्षंविनिर्जित्यउत्तमपुष्पकंजहार)कुवेरको संदेश सुनि
तब रावण क्रोध करि कुवेर के मंदिर को जाताभया संग्राममें कुवेर को जीति कै उत्तम जो पुष्पक
विमान रहै ताको हरिलेता भया ४८ (ततःअसुरःयमंचवरुणंसमरेनिर्जित्य देवराजजिघांसयातूर्ण
स्वर्गलोकंमगात्) तदनंतर असुर रावण यमराज को वरुणको संग्राम में जीति इंद्रको जीतने की
इच्छा करिकै शीघ्रही स्वर्गलोक को जाता भया ४९ (ततःसहदैवतैःइन्द्रेणमहद्युद्धंभवत्ततःत्रि
दशेश्वरःअभ्येत्यरावणंवंध) तदनंतर सहित देवतों इंद्र करिकै रावण के साथ महायुद्ध होतभा
तदनंतर इंद्र संग्राम में रावण को बांधि लिये ५० (तत्श्रुत्वामेघनादःप्रतापवान्सहसागत्यमहत्
घोरंयुद्धं कृत्वात्रिदशपुंगवान्जित्वा) रावणको बंधनसो सुनिकै मेघनाद बड़ा प्रतापी सहसाजाय महा
भयंकर युद्धकरि सब उत्तम देवनको जीति लिया ५१ (महाबलःमेघनादःपितरंमोचयित्वाइन्द्रंगृहीत्वा
असौवध्वातुइंद्रंगृहीत्वापुरंययौ) महाबली मेघनाद अपनेपिताको छुडाय लिया इंद्रको पकरिउनको
बांधिलिया पुनः इंद्रको बांधे लिहे लंकाको जाताभया ५२ (ब्रह्मामेघनादतःदेवेन्द्रं मोचयामासतुबहू
न्स्तस्मैवरान्दत्त्वाब्रह्मास्वभवनंययौ) ब्रह्माजाय मेघनाद ते इंद्रको छुडाते भये पुनः बहुतसे ताके
अर्थ वांछित वरदान दैकै ब्रह्मा अपने मंदिरको जातेभये ५३ (रावणःक्रमेणसर्वान्जित्वालोकान्विज
यितुपरिघोपमैःबाहुभिःकैलासंतोलयामास) रावणक्रम क्रम करिकै सबको जीति सबलोकन में
विजय को पाय पुनः मुद्गर के समान भुजों करिकै कैलास को उठाय लेता भया ५४ ॥

तत्रनंदीश्वरेणैवशशोयंरावणेश्वरः ॥ वानरैर्मानुषैश्चैवनाशंगच्छेतिकोपिना ५५
शशोप्यगणयन्वाक्यंययौहैहयपत्तनम् ॥ तेनवद्धोदशग्रीवःपुलस्त्येनविमोचितः
५६ ततोपिबलमासाद्यजिघांसुर्हरिपुंगवम् ॥ धृतस्तेनैवकक्षेणबालिनादशकंधरः
५७ भ्रामयित्वातुचतुरःसमुद्रानूरावणंहरिः ॥ वेसर्जयामासततस्तेनसख्यंचकार
सः ५८ रावणःपरमप्रीतएवंलोकान्महाबलः ॥ चकारस्ववशेरामबुभुजेस्वयमेव
तान् ५९ एवंप्रभावोराजेंद्रदशग्रीवःसहेंद्रजित् ॥ त्वयाविनिहतःसंरूपेरावणो
लोकरावणः ६० ॥

(तत्रअयंरावणेश्वरःनंदीश्वरेणएवशसः वानरैःचएवमानुषैःनाशंगच्छेतिकोपिना) तहां यह
रावणनंदीश्वर करिकै शापदिआ गया अर्थात् शिव पार्वती विहारमें रहे तहां को रावण जाने लगा तब

नंदीश्वर रोंका तापर रावण कहा कि तू बानर कैसे मुख लिहे क्या रोकता है तब शापदिये कि वानरों करिके पुनः निश्चयकरि मनुष्यों करिके नाशको प्राप्तहो ऐसावचन कोपकरिके कहे ५५ (शप्तःअपिवाक्यंअगणयन् हैहयपत्तनस्ययौतेनदशग्रीवःवद्धःपुलस्त्येनाविमोचितः) शापदीन्हे पर भी नंदीश्वर के वचन को कहु न गना पुनः सहस्र बाहुके नगर को गया तिसने रावण को बांधि लिया तब पुलस्त्य मुनि ने जाय छुड़ाया ५६ (ततःअपिबलंआताद्यहरिपुंगवंजिघांसुःदशकंधरःते नवालिनाएवकलेणधृतः) तदनंतर भी बलके गर्वको प्राप्त वानरों के राजा को जीतने को किष्कि-धामें आया रावणको तहां तिसवालीने कंधरोंमें दाबिराखा ५७ (तुहरिःरावणंचतुरःसमुद्रान् आम यित्वाततःविसर्जयामासतःतेनसख्यंचकार) पुनःवाली रावणको बगलमें दाबेचारिहु समुद्रों तक फिराय तब छोड़ि देताभया पुनःतो रावण बलीजानि वालीसे मित्रता करता भया ५८ (एवंपरम प्रीतिमहाबलः रावणः लोकान्स्ववशेचकारहेरामतान्एवस्वयंबुभुजे) इसीप्रकार परम प्रसन्न महाव-ली रावण सबलोकन को अपनेवश में करता भया पुनः हे रघुनंदन तिनलोकन को सुख आपही भोगता भया ५९ (सहइंद्रजित्दशग्रीवःएवंप्रभावःराजेंद्रलोकरावणःरावणःत्वयासंख्येविनिहतः) सहित मेघनाद रावण ऐसा प्रभाववन्त भया हे राजाधिराज लोकों को रोवानेवाला रावण आप करिके रणमेंमारा गया ६० ॥

मेघनादश्चनिहतोलक्ष्मणेनमहात्मनः ॥ कुम्भकर्णश्चनिहतस्त्वयापर्वतसन्निभः
६१ भवान्नारायणःसाक्षाज्जगतामादिकृद्विभुः ॥ त्वत्स्वरूपमिदंसर्वजगत्स्थायर
जगमम् ६२ त्वन्नाभिकमलोत्पन्नोब्रह्मालोकपितामहः ॥ अग्निस्तेमुखतोजातो
वाचासहरधूतम ६३ बाहुभ्यांलोकपालौघाश्चक्षुर्भ्यांचंद्रभास्करो ॥ दिशश्चवि
दिशश्चैवकर्णाभ्यांतेसमुत्थिताः ६४ घ्राणात्प्राणःसमुत्पन्नश्चाश्विनौदेवसत्तमौ ॥
जंघाजानूरुजघनाद्भुवर्लोकादयोभवन् ६५ कुक्षिदेशात्समुत्पन्नाश्चत्वारःसागरा
हरे ॥ स्तनाभ्यामिंद्रवरुणौवालखिल्याश्चरेतसः ६६ ॥

(चमहात्मनःलक्ष्मणेनमेघनादःनिहतःचपर्वतसन्निभःकुम्भकर्णःत्वयानिहतः) पुनःमहात्मा लक्ष्म-
ण करिके मेघनाद मारागया पुनः पर्वत तुल्य कुम्भकर्ण आप करिके मारागया ६१ (जगतां आदि कृत्विभुःभवान्साक्षात्नारायणःस्थावरजंगमइदंसर्वजगत्त्वत्स्वरूपं) जगत् के आदि कर्त्ता आप साक्षात् नारायणहौ चराचर यह सब जगत् आपही को विराट् स्वरूप है ६२ (लोकपितामहःब्रह्मा त्वत्नाभिकमलोत्पन्नःरघूत्तमवाचासहअग्निःतेमुखतःजातः) सबलोकों के पितामह ब्रह्माआप की नाभी कमल ते उत्पन्न भये हे रघुवंशनाथ वाणीसहित अग्नि आप के मुखते उत्पन्न भये ६३(लोक पालौघःबाहुभ्यांचंद्रभास्करोचक्षुर्भ्यांदिशः चएवविदिशःचतेकर्णाभ्यांतेसमुत्थिताः) हे श्री रघुनाथ जी लोकपाल जो समूह हैं ते सब आपकी बाहुनसे उत्पन्न भये हैं अरुचंद्रमा तथा सूर्यते दोऊ आप के नेत्रोंसे उत्पन्न भये हैं पूर्वदक्षिण पश्चिम उत्तरादि दिशा पुनः आग्नेय नैऋत्य वायव्य ईशानादिवि-दिशा आप के श्रवणसे उत्पन्न होते भये ६४ (प्राणःचसत्तमौ देवअश्विनौघ्राणात्समुत्पन्नःजंघाजानु ऊरुजघनाद्भुवर्लोकादयःअभवन्) लोकनके प्राणपुनः उत्तम देव अश्विनकुमार आपकी नासिका से उत्पन्न भये आपकी जंघाजानुनी ऊरुजघनादिते भुवःआदि लोकभये ६५ (हरेकुक्षिदेशात्चत्वारः

सागराःसमुत्पन्नाःइंद्रवरुणौस्तनाभ्यांचरेतसःबालाखिल्याः) हेहरे आपकी कोपिसे चारिहु समुद्र उत्पन्न भये इन्द्र वरुणदोऊ स्तनसे उत्पन्नभये आपके वीर्यसे बालाखिल्या ऋषिसाठिहजार उत्पन्नभये ६६ ॥

मेढ्राद्यमोगुदान्मृत्युर्मन्यो. रुद्रखिलोचनः॥अस्थिभ्यःपर्वताजाताःकेशेभ्योमेघसंहतिः६७ओषध्यस्तवरोमेभ्योनखेभ्यश्चखरादयः॥त्वंविश्वरूपःपुरुषोमायाशक्तिसमन्वितः६८नानारूपइवाभासिगुणव्यतिकरेसति ॥ त्वामाश्रित्यैवविबुधाःपिवत्यमृतमध्वरे६९ त्वयासृष्टमिदंसर्वंविश्वंस्थावरजंगमम् ॥ त्वमाश्रित्यैवजीवंतिसर्वे
• स्थावरजंगमाः ७० त्वद्युक्तमखिलंवस्तुव्यवहोरपिराघव ॥क्षीरमध्यगतंसर्पिर्यथा व्याप्याखिलंपयः ७१ त्वद्भासाभासतेर्कादिनत्वंतेनावभाससे ॥ सर्वगनित्यमेकं त्वांज्ञानचक्षुर्विलोकयेत् ७२ ॥

(यमःमेढ्रात्सृत्युःगुदात्मन्योत्रिलोचनः रुद्रःअस्थिभ्यःपर्वताः जाताःकेशेभ्यःमेघसंहतिः) यम राज आपके लिंगसे भये मृत्यु गुदाते भये क्रोधसे त्रिलोचन रुद्रभये आपके हाडों से सब पर्वत भये वारोंसे मेघ समूह उत्पन्न भये ६७ (तवरोमेभ्यःओषध्यः चनखेभ्यः खरादयः मायाशक्तिसमन्वितः त्वंविश्वरूपःपुरुषः) आपके रोमोंसे अन्नादि सब ओषधी उत्पन्न भई पुनः नखोंसे लोहादि कठोर वस्तु उत्पन्न भये माया शक्ति सयुक्त आप विश्वरूप पुरुषहौ भाव सब संसार आपहीको रूप है ६८ (गुणव्यतिकरेसतिनानारूप इवआभासित्वांआश्रित्यैवविबुधाः अध्वरेअमृतंपिवति) मायाके सत्व रज तमादि गुणोंकी न्यूनाधिक परस्पर मिलान भये सन्ते अनेक रूपवत् प्रकाशित होतेहौ पुनः अग्निरूप आपके आश्रित देवताभी यज्ञमें हव्यरूप अमृतको पान करते हैं ६९ (स्थावरजंगमंइदंसर्वं विश्वंत्वयासृष्टंत्वंआश्रित्य सर्वंस्थावरजंगमाःजीवन्ति एव) हे रघुनन्दन अचल चलायमान यह सब संसार आपहीने रचाहै पुनः आपहीके आश्रित सब प्राणी जीवतेभी हैं ७० (राघवव्यवहारेपित्वत् युक्तमखिलंवस्तुयथा अखिलपयःव्याप्यक्षीरमध्यगतंसर्पिः) हे राघव जीवन मरण हानि लाभ सुख दुःख इत्यादि लोक व्यवहारमेंभी आप युक्त सब वस्तुहैं जैसे समय दुग्धके सब भंगोंको प्राप्त करिके दुग्ध मध्यमें व्याप्त घृत रहताहै तैसे आपके सत्ताते सब चैतन्य है ७१ (त्वत्भासाअर्कादिभासतेत्वं नतेनावभाससेनित्यंएकं सर्वगंत्वांज्ञानचक्षुःविलोकयेत्) आपके प्रकाश करिके सूर्य चन्द्र अग्नि आदि प्रकाशमान हैं अरु आपनहीं तिन करिके प्रकाशितहौ नित्य एक सबमें व्यापक आपको ज्ञान दृष्टिवाले देखते हैं ७२ ॥

नाज्ञानचक्षुस्त्वांपश्येदंधदृक्भास्करंयथा ॥ योगिनस्त्वांविचिन्वंतिस्वदेहेपरमेश्वरः ७३ अतन्निरशनमुखैर्वेदशीर्षैरर्हनिशम्॥त्वत्पादभक्तिलेशेनगृहीतायदियोगिनः ७४ विचिन्वंतोहिपश्यंतिचिन्मात्रंत्वांचान्यथा ॥ मयाप्रलपितंकिंचित्सर्वज्ञस्यतवाग्रतः॥क्षंतुमहंसिदेवेशतवानुग्रहभागहं ७५ दिग्देशकालपरिहीनमनन्यमेकंचिन्मात्रमक्षरमजंचलनादिहीनं ॥ सर्वज्ञमीश्वरमनंतगुणंव्युदस्तमायं भजेरघुपतिंभजतामभिन्नम् ७६ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसम्वादेउत्तरकाण्डेद्वितीयस्सर्गः २ ॥

(अज्ञानचक्षुःस्त्वनपश्येत्तथाअन्यदृक्भास्करंयोगिनः स्वदेहेपरमेश्वरंस्त्वाविचिन्वन्ति) अज्ञान दृष्टिवाले आपको नहीं देखते हैं जैसे अन्य पुरुष सूर्यको नहीं देखता है पुनः योगीजन आपनी देहही में परमेश्वर जो आपही तिनहिं ढूँढते हैं ७३ (अतत्तनिरशनमुखैःअहर्निशंवेदशोपैःयदियोगिनःत्वत् पादभक्तिलेशेनगृहीता) अमूर्ति निराकृति निर्गुणादि करिके जो उपनिषदों करिके दिनों राति वर्णन यद्यपि किया जात भाव जाको नेति नेति करत तौभी योगीजन आपके पद कमलोंकी भक्तिकी लेश करिके आपको गहि लेते हैं भाव प्रेमके वशहो ७४ (चिन्मात्रंहित्वाविचिन्वन्तः पश्यतिचअन्यथान सर्वज्ञस्यतवाग्रतःमयाकिञ्चित्प्रलपितं देवेशतवानुग्रहभागहंक्षंतुंअर्हसि) चिन्मात्रभी आपको भक्ति करि ढूँढतेहुये देखिलेते हैं पुनः अन्य उपायते नहीं देखि परतेहो सर्वज्ञ आप तिनके आगे मैंने कछु वर्णन किया सो प्रौढताहै परन्तु हे देवेश आपहीकी अनुग्रहको भागी मैंभीहो ताते क्षमा करिवेयोग्य हो क्षमाकरो ७५ (दिग्देशकालपरिहीनं अनन्यैकंचिन्मात्रंअक्षरंअजंचलनादिहीनं सर्वज्ञंईश्वरंअ नन्तगुणंव्युदस्तमायं भजतांअभिन्नंरघुपतिंभजे) दिशा देशकाल करिके हीन जाको दूसरा नहीं एकही चिन्मात्र आत्मतत्त्व जन्म रहित चलनादि विषय हीन सब बात जाननेवाला ईश्वर अनंत हैं गुण जामें दूरि कियाहै मायाके दोष जिसने भजन करनेवाले ते भिन्न नहीं ऐसे रघुपतिको हम भजते हैं ७६ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म भूषणेउत्तरकाण्डेद्वितीयःप्रकाशः २ ॥

श्रीरामउवाच ॥ बालिसुग्रीवयोजन्मश्रोनुमिच्छामितत्त्वतः ॥ रवीन्द्रोवानराकारौ जज्ञातेइतिनःश्रुतं १ ॥ अगरत्यउवाच ॥ मेरोःस्वर्णमयस्याद्रेर्मध्यशृंगेमणिप्रभे ॥ तस्मिन्सभास्तेविस्तीर्णाब्रह्मणःशतयोजना २ तस्यांचतुर्मुखःसाक्षात्कदाचिद्यो गमास्थितः ॥ नेत्राभ्यांपतितंदिव्यमानंदसलिलंबहु ३ तद्रूढीत्वाकरेब्रह्माध्या त्वाकिंचित्तदत्यजत् ॥ भूमौपतितमात्रेणतस्माज्जातोमहाकपिः ४ तमाहद्रुहि णोवत्सकिञ्चित्कालंवसान्रमे ॥ समीपेसर्वशोभाढ्येततःश्रेयोभविष्यति ५ ॥

सवैया ॥ विधिआंशुकपी जलनारिपवासव वीर्यपरे वरबालिभयो । रविवीर्य सुकण्ठसबालिपठै पुरपम्पतटे विधिराजदयो ॥ हरिराम जवैमहिभारहरैकपितेनसतासुसहायभयो । इतिभाषिअगस्त्य महामहिमा रघुनन्दनकीसुव्रतानकयो ॥ (बालिसुग्रीवयोःजन्मतत्त्वतःश्रोतुंइच्छाभिनःइतिश्रुतंरवि इन्द्रोवानराकारौजज्ञाते) रघुनन्दन बोले हे अगस्त्यजी बालि अरु सुग्रीवके जन्मको हाल यथार्थ सुनिवेकी हमको इच्छा है क्योंकि हम ऐसा सुना है कि सूर्य अरु इंद्र वानराकार देहते उत्पन्न भये हैं सो यथार्थ कहिये १ (स्वर्णमयस्यमेरोःअद्रेःमध्यमणिप्रभेशृंगेतस्मिन्शतयोजनाविस्तीर्णा ब्रह्मणःसभाआस्ते) अगस्त्यजी बोले हे रघुनन्दन कञ्चनमय सुमेरु पर्वतके मध्य में मणिनकी प्रभा जामें एक शृंग है तामें सौ योजन विस्तारकी एक ब्रह्माजी की सभा है २ (तस्यांकदाचित्साक्षात् चतुर्मुखःयोगमास्थितःनेत्राभ्यांआनन्दसलिलंबदिव्यंबहुपतितं) तिली सभा में किसी समय में सा- आत् ब्रह्मा योगाभ्यास अर्थात् समाधि में बैठे रहे सो प्रेमानन्द उमंगा सो नेत्रनसे आनन्द जल दिव्य बहुत गिरताभया ३ (तत्ब्रह्माकरेगृहीत्वाध्यात्वातत्किंचित्प्रत्यजत्भूमौपतितमात्रेणतस्मात्

महाकपिःजातः) सो भानन्द जल ब्रह्माहाथ में लैकै परमेश्वर को ध्यानकरि सो जल कछु डारि दिये सो भूमिपै गिरतही ताही जलते एक महाभारी वानरहोताभया ४ (तंद्रुहिणःआहवत्ससर्व शोभादयेमेसमीपेअत्रकिंचित्कालंवसततःश्रेयःभविष्यति) त्यहि वानरप्रति ब्रह्मा बोले हेवत्स सर्व शोभायुक्त मेरे समीप यहां कुछ काल वासकरौ तव तुम्हारा कल्याणहोयगो ५ ॥

इत्युक्तोन्यवसन्तत्रब्रह्मणावानरोत्तमः ॥ एवंबहुतिथेकालेगतेऋक्षाधिपःसुधीः६
कदाचित्पर्यटन्नद्रौफलमूलार्थमुद्यतः ॥ अपश्यदिव्यसलिलांवापीमणिशिलान्वि
तां ७ पानीयम्पातुमागच्छतत्रञ्जयामयंकपिं ॥ दृष्ट्वाप्रतिकर्पिमत्वानिपपातज
लांतरे ८ तत्रादृष्ट्वाहरिंशीघ्रंपुनरुत्प्लुत्यवानरः ॥ अपश्यत्सुन्दरीरामामात्मानं
विस्मयंगतः ९ ततःसुरेशोदेवेशंपूजयित्वाचतुर्मुखम् ॥ गच्छन्मध्याह्नसमयेदृ
ष्ट्वानारीमनोरमाम् १० कंदर्पशरविद्धांगस्त्यक्तवान्वीर्यमुत्तमम् ॥ तामप्राप्यै
वतद्बीजंवालदेशेपतद्भुवि ११ ॥

(इतिब्रह्मणाउक्तःवानरोत्तमःतत्रन्यवसत्एवंबहुतिथेकालेगतेसुधीःऋक्षाधिपः) ऐसा ब्रह्मानेकहा तब वहवानरों में श्रेष्ठतहांपर वासकरताभया इसीप्रकारबहुत दिनवीतिगये तबवह उत्तम बुद्धिवाला ऋक्षराज वानर ६ (कदाचित्फलमूलार्थमुद्यतः अद्रौपर्यटन्मणिशिलान्वितांदिव्यसलिलांवापीं अपश्यत्) किसी समय में फल मूल ढूँढने अर्थ उद्यत पहारपर घूमतेहुये किसी ठौर मणि शिलों करि निर्माणयुक्त दिव्य जलभरा ऐसी एक बावली देखतेभये ऋक्षराज ७ (पानीयंपातुंतत्रआगच्छञ्जयामयंकर्पिंदृष्ट्वाप्रतिकर्पिमत्वाजलांतरेनिपपात्) पानीपीवने हेत तहां समीपगये जल में आपनी छायाभय वानराकारदेखि उस प्रतिबिंबको दूसरा वानरमानि ताको गहिवे हेत जल के भीतर कूदिपरतेभये तब ८ (तत्रहरिंअदृष्ट्वावानरःपुनःशीघ्रंपुनरुत्प्लुत्यआत्मानंसुन्दरीरामांअपश्यत् विस्मयंगतः) तहां जल में वानरकोतौ देखानहीं ऋक्षराज वानर पुनः शीघ्रही जलते उछरि बाहेरआय अपनी देहको सुन्दरी स्त्री रूपदेखिकै बड़े आश्चर्यको प्राप्तभये ९ (ततःसुरेशःदेवेशंचतुर्मुखंपूजयित्वामध्याह्नसमयेगच्छन्मनोरमाम्नारींदृष्ट्वा) ताही समय में इंद्र देवनके स्वामी ब्रह्माजी को पूजने हेत आयेरहे पूजनकरि जब दुपहर समय चलतसंते मनको रमावनहारी एक सुन्दरी युवतीदेखे १० (कंदर्पशरविद्धांगःउत्तमंवीर्यंत्यक्तवान्तत्त्वाजंतांवालदेशे अप्राप्यैवभुविअपतत्) कामके वाणकरिकै बेधिगया भंगजिनका ऐसे कामासक्त इंद्र अपना वीर्य त्यागकिये सो वीर्य तिस स्त्री के वालों में प्राप्त है पुनः भूमिपै आय गिरिपरताभया ११ ॥

वालीसमभवत्तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः॥तस्यदत्त्वासुरेशानःस्वर्णमालांदिवंगतः१२
भानुरप्यागतस्तत्रतदानीमेवभामिनीम्॥दृष्ट्वाकामवशोभूत्वाग्रीवादेशेसृजन्म
हत् १३ बीजंतस्यास्ततःसद्योमहाकायोऽभवच्चरिः ॥ तस्यदत्त्वाहनूमंतंसहायार्थं
गतोरविः १४ पुत्रद्वयंसमादायगत्वासानिद्रिताक्वचित् ॥ प्रभातेऽपश्यदात्मानं
पूर्ववद्धानराकृतिम् १५ फलमूलादिभिःसार्द्धंपुत्राभ्यांसहितःकपिः ॥ नत्वाचतुर्मु
खस्याग्रेऋक्षराजःस्थितासुधीः १६ ततोब्रवीत्समास्वास्यबहुशःकपिकुञ्जरम्॥
तत्रैकंदेवतादूतमाहूयामरसन्निभम् १७ ॥

(तत्रशक्रतुल्यपराक्रमः बालीसिंभभवत्तस्यसुरईशानः स्वर्णमालादत्त्वादिवंगतः) वहवीर्य भूमि में परतही इन्द्र के तुल्य पराक्रमी बाली नामे बानर भया ताको इन्द्र सोनेको माला देजाके प्रभाव ते सम्मुख बीर को आधा बल आय जाय इति आशीर्वाद दै स्वर्गको गये १२ (तत्रतदानींएवमानुः अपिआगतःभामिनीदृष्ट्वा कामवशंभूत्वातस्याःग्रीवादेशेमहत् वीजंअसृजन् ततःसद्यःमहाकायः हरिः अभवत् तस्यसहायार्थंहनुमंतंदत्त्वारविःगतः) तहां ताही समय में सूर्य भी आये उस स्त्रीको देखि काम बश है तिस स्त्री के ग्रीवा देश पै महा उत्तम वीर्य डारते भये तब तुरतही उस वीर्य ते बड़े भारी तनको सुग्रीव नामे बानर होता भया ता सुग्रीव की सहायता अर्थ हनुमान् को दैकै सूर्य गये अर्थात् बिद्या पढाये सो गुरु दक्षिणा हनुमान् ते मागे १३ । १४ (पुत्रद्वयंसंभवाद्यसागत्वाक्कचित् निद्रिताप्रभातेपूर्ववत् वानराकृतिंभात्मानंअपश्यत्) दोऊ पुत्रनको साथलै वह स्त्री जाय कहूं सोय रही प्रभात में जागे पर पूर्वकी नाई बानराकार अपना शरीर देखते भये प्रथमकी नाई बानर पुनः ऋक्षराज भये १५ (पुत्राभ्यांसहितःकपिः फलमूलादिभिः सार्द्धंचतुर्मुखस्यअग्रेनत्वासुधीः ऋक्षराजः स्थिता) पुत्रन करिकै सहित वह बानर फल मूलादि सहित जाय ब्रह्माजी के आगे प्रणाम करि बुद्धिवंत ऋक्षराज बैठते भये भाव अपना सब हालकहे १६ (ततःकपिकुंजरं बहुशः समास्वास्यतत्र एकंअमरसन्निभंदेवतादूतंआहूयअब्रवीत्) तब ब्रह्माजी ऋक्षराज को बहुत समुझाय स्त्री होने की ग्लानि दूरि करि पुनः एक देवतों के तुल्य तेजस्वी देवन को दूत बुलाय ताप्रति बोलते भये १७ ॥

गच्छदूतमयादिष्टोऽगृहीत्वावानरोत्तमं ॥ किष्किंधादिव्यनगरींनिर्मितंविश्वकर्म

णा १८ सर्वसौभाग्यबलितांदेवैरपिदुरासदाम् ॥ तस्यांसिंहासनेवीरंराजानम

भिषेचय १९ सप्तद्वीपगतायेयेवानराःसंतिदुर्जयाः ॥ सर्वेतेऽऋक्षराजस्यभविष्यं

तिवशेऽनुगाः २० यदानारायणःसाक्षाद्रामोभूत्वासनातनः ॥ भूभारासुरनाशाय

संभविष्यतिभूतले २१ तदासर्वेसहायार्थेतस्यगच्छंतुवानराः ॥ इत्युक्तोब्रह्मणा

दूतोदेवानांसमहामतिः २२ यथाज्ञप्तस्तथाचक्रेब्रह्मणातंहरीश्वरम् ॥ देवदूत

स्ततोऽगत्वाब्रह्मणेतन्निवेदयत् २३ तदादिवानराणांसाकिष्किंधाऽभून्नृपाश्रयः ॥

सर्वेश्वरस्त्वमेवासीरिदानींब्रह्मणार्थितः २४ ॥

(दूतमयादिष्टःवानरोत्तमंगृहीत्वागच्छविश्वकर्मणानिर्मितंदिव्य नगरींकिष्किंधां) हेदूत मेरी आज्ञा करिकै इन उत्तम बानर को साथ लैकरि मृत्यु लोक को जाउ जहां विश्वकर्मा करिकै बनाई दिव्य नगरी किष्किंधा है १८ (देवैःअपिदुरासदाम् सर्वसौभाग्य बलितांतस्यां सिंहासनेराजानंवीरंअभिषेचय) जो देवतों करिकै भी प्राप्ती दुर्लभ ऐसे सब भोग पदार्थों करिकै युक्त तामें सिंहासन पर इस ऋक्षराज बानर बीर को राज्याभिषेक करौ १९ (येयेवानराःदुर्जयाः सप्तद्वीपगताःसंति तेसर्वेऽऋक्षराजस्यवशेअनुगाःभविष्यन्ति) भरु जेजे बानर दुर्जय किसी के जीतबे योग्य नहीं ऐसे बली बीर यावत् सातों द्वीपन में प्राप्तहैं ते सर्व ऋक्षराज के बशीभूत आज्ञाकार होयें २० (साक्षात् नारायणः यदा भूभारासुरनाशायसनातनः रामःभूत्वाभूतलेसंभविष्यति) साक्षात् नारायण जब भूमि को भार रूप रावणादि असुरों के नाश अर्थ सनातन राम रूप है भूतल में प्रकट होयेंगे २१ (तदातस्यसहायार्थेसर्वेवानराःगच्छंतु इतिब्रह्मणाउक्तःमहामतिः देवानांदूतः) तब तिन रामकी सहाय के अर्थ सब बानर जायेंगे ऐसा ब्रह्माने कहा तब सो महा बुद्धिवंत देवतों को दूत २२ (ब्रह्मणायथाआज्ञप्तःतं

हरीश्वरंचक्रे ततः देवदूतः गत्वा तत् ब्रह्मणे निवेदयत्) ब्रह्माने जैसी आज्ञादियारहै तैसेही तिस ऋक्ष राज को सब वानरों को राजा करता भया तदनंतर सो देवदूत जाय सो सब हाल ब्रह्मा के अर्थ निवेदन किया सुनाय दिया २३ (तदादिशकिर्षिकिधावानराणां नृपाश्रयः अभूत् त्वंसर्वेश्वरः एवासीः इदानीं ब्रह्मणार्थितः) तबते आदिदै सोकिर्षिकिधा वानरों की राजधानी होती भई हेरघुनाथजी आप तो सबके ईश्वरहौ सो इस समय में ब्रह्मा करिके प्रार्थना किये गयेहौ २४ ॥

भूमेभारोहतः कृत्स्नत्वया लीलानृदेहिना ॥ सर्वभूतांतरस्थस्य नित्यमुक्तचिदात्मनः
२५ अखंडानंदरूपस्य कियानेष पराक्रमः २६ तथापि वर्यते सद्भिर्लीलामानुष
रूपिणः ॥ यशस्ते सर्वलोकानां पापहृत्यै सुखाय च २७ यद्दं कीर्तयेन्मत्पुत्रो बालि
सुग्रीवयोर्महत् ॥ जन्मत्वदाश्रयत्वात्समुच्यते सर्वपातकैः २८ अथान्यां संप्रव
क्ष्यामि कथं रामत्वदाश्रयाम् ॥ सीताहताय दर्शय सारावणेन दुरात्मना २९ पुराकृत
युगे रामप्रजापति सुतं विभुम् ॥ सनत्कुमारमेकांति समासीनं दशाननः ॥ विनयावन
तो भूत्वा ह्यभिवाद्येदमब्रवीत् ३० ॥

(नृदेहिना लीलात्वया कृत्स्नभूमेः भारोहतः नित्यमुक्तचिदात्मनः सर्वभूतांतरस्थस्य) तिस कारण मनुष्य देहसे लीला करिके आपने सम्पूर्ण भूमिको भार हरिलिया सो नित्यमुक्त चैतन्य आत्मरूप ते सब भूतके अन्तर स्थित तिनको २५ (अखंडआनन्दरूपस्य एष पराक्रमः कियान्) पुनः सदा एक रस अखंड आनन्दरूप तिनको यह रावणादि बधरूप पराक्रम क्याहै २६ (तथापि लीलामानुषरूपि णः ते यशः सर्वलोकानां पापहृत्यै च सुखाय सद्भिः वर्यते) तौ भी लीला करि मानुषरूपधारी आप को यश सब लोकोंको पाप दूर करनेके अर्थ पुनः परमसुख प्राप्तीके अर्थ महात्मों करिके वर्णन किया जाताहै २७ (त्वत्प्राश्रयत्वात् महत् बालि सुग्रीवयोः जन्म इदं यः मर्त्यः कीर्तयेत् स सर्वपातकैः मुच्यते) हे रघुनन्दन आपके आश्रय अर्थात् आपके उपकार अर्थ उत्तम बालि सुग्रीवको जन्म यह कथा जो मनुष्यकीर्तन करताहै सो सब पापों करिके छूटिजाताहै २८ (अथ रामत्वदाश्रयाम् अन्यां कथां संप्रवक्ष्यामि यदर्शय दुरात्मनारावणेन सीताहताया) अब हेरघुनाथजी आपको यश बढ़ानेवाली और कछु कथा में वर्णन करताहौ जिस अर्थ दुष्टात्मा रावणने सीता हरा सो कथा २९ (हे रामपुराकृतयुगे एकांति समासीनं प्रजापति सुतं विभुं सनत्कुमारं अभिवाद्य दशाननः हि विनयावनतः भूत्वा इदं ब्रवीत्) हेरघुनन्दन पूर्वका सतयुग विषे एक समय एकांतमें बैठेहुये ब्रह्माके पुत्र समर्थ सनत्कुमार तिनहि प्रणामकरि रावण बहुत प्रकार स्तुति विनतीकरि प्रसन्नजानि तब अत्यन्त नम्रतापूर्वक अर्थात् हाथ जोरि इस प्रकार बचन बोलता भया ३० ॥

कोन्वस्मिन् प्रवरो लोके देवानां बलवत्तरः ॥ देवाश्च यं समाश्रित्य युद्धेशत्रुं जयंति हि
३१ कंयजंति द्विजानित्यं कंध्यायंति च योगिनः ॥ एतन्मेशं स भगवन् प्रश्नं प्रश्नविदां
वर ३२ ज्ञात्वा तस्य हृदि स्थं यत्तदशेषेण योगदृक् ॥ दशाननमुवाचे दंष्ट्रं वक्ष्यामि
पुत्रक ३३ भर्ताय गतानित्यं यस्य जन्मादिकं न हि ॥ सुरासुरैर्नुतो नित्यं हरिर्नारा
यणोऽव्ययः ३४ यन्नाभिपंकजाज्जातो ब्रह्मा लोकसृजापतिः ॥ सृष्टये नैव सकलं

जगत्स्थावरजंगमं ३५ तंसमाश्रित्यविवुधाजयंतिसमरेरिपून् ॥ योगिनोऽध्यान
योगेनतमवानुजपंतिहि ३६ ॥

(देवानांबलवत्तरःप्रवरःकोन्वस्मिन्लोकेचवंसमाश्रित्यदेवाःयुद्धेशत्रुंजयंतिहि) रावण बोला हे भगवन् देवतनमें अधिक बलवान् श्रेष्ठ कौन यहिलोकमें है पुनः जाके बलके आश्रय सहायता पाय देवता युद्धमें शत्रुको जीततेहैं ३१ (द्विजाःनित्यंकंयजंतिचयोगिनःकंध्यायंतिप्रश्नविदांवरहेभगवन् एतत्प्रश्नमेशंस) तथा ब्राह्मण लोग नित्यही किसको पूजतेहैं पुनः योगीजन किसको ध्यावते हैं प्रश्नोत्तर देनेवालोंमें श्रेष्ठ हेभगवन् इस प्रश्नको उत्तर मोसों कहिये ३२ (तस्यहृदिस्थंयत्तत्तुभशे षेणयोगहृक्ज्ञात्वादशाननंइदंउवाचपुत्रकःशृणुवक्ष्यामि) तिस रावणके हृदयमें स्थित जो अभिप्राय रहै सो सम्पूर्ण योग दृष्टि ध्यानकरिकै जानिलिये कि अपनी मुक्तिहेत पूछताहै इति जानि सनत्कुमार रावण प्रति बोलते भये हे पुत्र सुनु मैं कहता हौं ३३(यस्यजन्मादिकंनहि जगतांनित्यंभक्त्या सुरासुरैःनित्यंनुतःअव्ययःनारायणः) जिसको कभी जन्मादि नहीं होता सब जगत् को जोभरण पोषण करता है देवता दैत्यों करिकै नित्यही बंदनीय जो अविनाशी नारायणहै ३४ (यत्नाभिपंक जात् लोकसृजांपतिःब्रह्माजातः येनएवस्थावरजंगमंसकलंजगत्सृष्टं) जिनकी नाभी कमलते सब प्रजापतिन के पति ब्रह्मा उत्पन्न भये जिसने अचर चरादि सकल जगत् को उत्पन्न कियाहै ३५ (तंसमाश्रित्यविवुधासमरेरिपून्जयंति ध्यानयोगेन योगिनः तंएवानुजपंतिहि) ताही नारायण की सहायता पाय देवता संग्राम में शत्रुन को जीतते हैं पुनः ध्यान योग करिकै योगी जनभी तिसी नारायण को नाम जपतेहैं ३६ ॥

महर्षेर्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचदशाननः॥ दैत्यदानवरक्षांसिविष्णुनानिहतानिच ३७
कांवागतिंप्रपद्यंतेप्रेत्यतेमुनिपुंगव ॥ तामुवाचमुनिःश्रेष्ठोरावणंराक्षसाधिपम्३८
देवतैर्निहतानित्यंगत्वास्वर्गमनुत्तमम् ॥ भोगक्षयेपुनस्तस्माद्भूषाभूमौभवंतिते
३९ पूर्वार्जितैःपुण्यपापैर्म्रियंतेचोद्भवंतिते ॥ विष्णुनायेहतास्तेतुप्राप्नुवंतिहरेर्ग
तिम् ४० श्रुत्वामुनिमुखात्सर्वैरावणोदृष्टमानसः ॥ योत्स्येहंहरिणासार्द्धमितिचि
तापरोभवत् ४१ मनस्थितंपरिज्ञात्वावणस्यमहामुनिः ॥ उवाचवत्सतेऽभीष्टं
भविष्यतिनसंशयः ४२ ॥

(महाऋषेःवचनंश्रुत्वादशाननःप्रत्युवाचविष्णुनानिहतानिदैत्यदानवरक्षांसि)महाऋषिसनत्कुमार के वचन सुनिरावण पुनः मुनि प्रति बोलता भया कि विष्णु करिकै मारेजाते हैं जे दैत्य दानव पुनः राक्षस इत्यादि३७(मुनिपुंगवः प्रेत्यतेकांवागतिंप्रपद्यंतेतंराक्षसाधिपंरावणंमुनिः श्रेष्ठःउवाच) हे मुनि वरतेदैत्यादि मृतकपीछि कौनी गतिकोप्राप्तहोतेहैं सोकहिये इतिमुनि तिसराक्षस राजरावण प्रतिमुनिवर सनत्कुमार बोलतेभये ३८(देवतैःनिहतानित्यंअनुत्तमंस्वर्गंत्वाभोगक्षये तेपुनःतस्मात्भूषाभूमौभवन्ति) हेरावण दैत्यादि जे देवतांकरिकै मारेजातेहैं ते नित्यही उत्तम गति स्वर्गलोक को जातेहैं तहां सुखभोग पूर्णभये सुकृत नाशभये परते पुनः स्वर्गते भ्रष्ट हैं भूमिपर आयमनुष्या दि योनिनमें उत्पन्न होतेहैं ३९ (पूर्वार्जितैःपुण्यपापैःउद्भवंतितेचम्रियंतेच विष्णुनायेहताःतेतुहरेर्गतिंप्राप्नुवंति) पूर्व कियेहुयेपुण्य पापों करिकैजन्मतेहैं दुख सुख भोगि पुनः मरते हैं पुनः विष्णुकरिकै जे मारेजातेहैं ते पुनःहरिकी गतिको अर्थात्तुवैकुण्ठको प्राप्तहोतेहैं ४० (मुनिमुखात्सर्वैश्चुत्वादृष्टमानसः

रावणःहरिणासार्द्धग्रहंयोत्स्येइतिचिंतापरःअभवत्) मुनिसनत्कुमारकेमुखतेसर्वहालमुनिकैपरमान-
न्दमन रावणमनोरथ किया कि विष्णुसे मे युद्धकरिप्राणत्यागकरि हरिकी गतिकोलेउंगो ऐसा चितवन
करता भया ४१ (रावणस्यमनःस्थितं परिज्ञात्वा महामुनिःउवाचवत्सतेअभीष्टं भविष्यतिसंशयःन)
रावणके मनमें स्थित जो मनोरथ ताहि जानिकै महा मुनि सनत्कुमार पुनः रावण प्रति बोलतेभये
हे वत्स तेरा मनोरथ सिद्ध होइगो यामें सन्देह नहीं है ४२ ॥

कंचित्कालंप्रतक्षिस्वसुखीभवदशानन ॥ एवमुक्त्वामहाबाहोमुनिःपुनरुवाचत
म् ४३ तस्यस्वरूपंवक्ष्यामिह्यरूपस्यापिमायिनः ॥ स्थावरेषुचसर्वेषुनदेषुचनदी
षुच ४४ ओंकारश्चैवसत्यंचसावित्रीपृथिवीचसः ॥ समस्तजगदाधारःशेषरूपध
रोहिसः ४५ सर्वदेवाःसमुद्राश्चकालःसूर्यश्चचंद्रमाः ॥ सूर्योदयोदिवारात्रीयम
श्चैवतथानिलः ४६ अग्निरिंद्रस्तथाऋत्युःपर्जन्योवसवस्तथा ॥ ब्रह्मारुद्रादय
श्चैवयेचान्येदेवदानवाः ४७ विद्योततिज्वलत्येषपातिचातीतिविश्वकृत् ॥ क्रीडां
करोत्यव्ययात्मासोयंविष्णुसनातनः ४८ ॥

(हेदशाननकंचित्कालंप्रतक्षिस्वसुखीभव हेमहाबाहो एवमुक्त्वामुनिःपुनः तंउवाच) हे रावण
कछु काल यही मनोरथ राखे रहु तव हरि हाथ मृतक है सुखी हो परमपद को जा अगस्त्य बोले
हे महाबाहो रघुनन्दन इस प्रकार कहिकै सनत्कुमार मुनि पुनः तिस रावण प्रति बोलते भये ४३
(हिअरूपस्यअपिमायिनः तस्यस्वरूपंवक्ष्यामि नदेषुचनदीपुच स्थावरेषुचसर्वेषु) निश्चय करिकै
अरूपहै तौभी मायाके आश्रय है तिस नारायण के स्वरूप कोभी कहता हों नदों विषे पुनः नदियों
विषे तथा वृक्षादि स्थावरों विषे पुनः सर्व भूतों विषे ४४ (ओंकारःचैवसत्यंचसावित्री चपृथिवीस-
शेषरूपधरोहिसमस्तजगदाधारःसः) शब्दोंमें ओंकार रूपते स्थित वचनोंमें सत्य रूपते स्थित मंत्रों
में गायत्री रूप पुनः भूतों में पृथिवी रूप सोई है शेष रूपधारी सब जगत् को आधार सोई है ४५
(सर्वदेवाःचसमुद्राः चसूर्यःचचंद्रमायमःचैवतथाअनिलः सूर्योदयःदिवारात्रीकालः) सब देवता
सब समुद्र सूर्य चंद्रमा यमराज पवन सूर्य उदय दिन राति इत्यादि जो काल है ४६ (अग्निःइंद्रः
तथाऋत्युःपर्जन्यःतथावसवः ब्रह्मारुद्रादयः चैवयेअन्येदेवदानवाः) अग्नि इंद्र ऋत्यु मेघ आठौ
वसु ब्रह्मा रुद्रादि पुनः और यावदेवता दानव हैं ४७ (विद्योततिज्वलतिएषविश्वपातिचआतीति
कृत्अव्ययआत्माक्रीडांकरोतिसःअयंविष्णुःसनातनः) सूर्यादि में प्रकाश करत अग्नि आदि में दाह
करत संसार को उपजावत पालत संहार करत अविनाशी आत्म रूप से ऐसा क्रीड़ा करता सोई
यह विष्णु सनातन है ४८ ॥

तेनसर्वमिदंव्याप्तत्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ नीलोत्पलदलश्यामोविद्युद्वर्णाम्बराष्ट
तः ४९ शुद्धजांबूनदप्रख्यांश्रियंवामांकसंस्थितां ॥ सदाऽनपायिनीदेवीपश्यन्ना
लिंग्यतिष्ठति ५० द्रष्टुंनशक्यतेकैश्चिदेवदानवपन्नगैः ॥ यस्यप्रसादंकुरुतेसचै
नंद्रष्टुमर्हति ५१ नचयज्ञतपोभिर्वानदानाध्ययनादिभिः ॥ शक्यतेभगवान्द्रष्टु
मुपायैरितरैरपि ५२ तद्रक्तैस्तद्रतप्राणैस्तच्चितैर्धूतकल्मषैः ॥ शक्यतेभगवान्

विष्णुर्वेदांतामलदृष्टिभिः ५३ अथवाद्रष्टुमिच्छातेशृणुत्वंपरमेश्वरम् ॥ त्रेतायुगे
सदेवेशोभवितानृपविग्रहः ५४ ॥

(सचराचरं द्रष्टुं सर्वत्र लोके तेन व्याप्तं नीलोत्पलदलश्यामः विद्युत् वर्णं च वरावृतं) सहित चर
अचर यह सब तीनिहुं लोक तिसी करिके व्याप्त हैं सोई नील कमल दल सम श्याम वर्ण सुंदर
तनमें बिजुली सम वर्ण पीत बसन धारण किहे हैं ४९ (शुद्धजांबूनदप्रख्यां वामांकं संस्थितां सदा
अनपायिनीं देवीं श्रियं पश्यन्नालिङ्ग्यतिष्ठति) शुद्ध कञ्चनवर्ण दीप्ति जाकी वाम भाग में स्थित सदा
अविचल देवी लक्ष्मी को देखतेहुये अंक में लगाये हुये मणिमय सिंहासन पर बैठे हैं ५० (देवदा-
नवपन्नगैः कैश्चित् द्रष्टुं न शक्यते यस्य प्रसादं कुरुते स च एनं द्रष्टुं अर्हति) देवता दानव नागादि किसी
करिके देखने को शक्य नहीं जाके ऊपर उसी परमात्माकी प्रसन्नता होवै सोई हरि कृपा पात्र उस
परमेश्वरको देखि सकता है ५१ (दानाध्ययनादिभिः वायज्ञतपोभिः न च इतरैः अपि उपायैः भगवान्
द्रष्टुं न शक्यते) दान वेदाध्ययनादि करिके अथवा यज्ञ तपस्या करिके नहीं पुनः तीर्थ व्रतादि और
भी उपायों करिके भगवान् देखने को सुलभ नहीं है ५२ (धूतकल्मषैः तत्तुभक्तैः तत्तुगतप्राणैः तत्
चित्तैः वेदांतामलदृष्टिभिः विष्णुः भगवान् शक्यते) दूरि भया है पाप जिन्हों को ऐसे जे उसी के भक्त
हैं जिनके प्राण उसी में बसे जिनको चित्त उसी में बसा ऐसे रामानुरागिन करिके वेदांत रूप अ-
मल दृष्टिकरिके विष्णु भगवान् देखने को सुलभ हैं ५३ (अथवा परमेश्वरं द्रष्टुं इच्छातेशृणुत्वं सदेवेशः
त्रेतायुगे नृपविग्रहः भविता) अथवा हे रावण उस परमेश्वरको देखने की इच्छा होय तोको तौ तू
मेरा बचन सुन सोई सर्व देवतों को ईश्वर त्रेता युगमें राजाधिराज रूपते आविर्भाव होयगो ५४ ॥

हितार्थं देवमर्त्यानां हि तार्थं हरिः ॥ इक्ष्वाकूणां कुले हरिः ॥ रामो दाशरथिर्भूत्वा महासत्त्वपराक्रमः
५५ पितुर्नियोगात् स भ्रात्रा भार्यया दण्डके वने ॥ विचरिष्यति धर्मात्मा जगन्मात्रास्व
मायया ५६ एवन्ते सर्वमाख्यातं मया रावणविस्तरात् ॥ भजस्व भक्तिभावेन तद्वारा
मंश्रियायुतम् ५७ एवं श्रुत्वाऽसुराध्यक्षो ध्यात्वा किञ्चिद्विचार्य च ॥ त्वया सह विरो
धेऽप्सु र्मुदे रावणो महान् ५८ युद्धार्थी सर्वतो लोकान् पर्यटन समवस्थितः ॥ एतदर्थं
महाराज रावणोऽतीव बुद्धिमान् ॥ हतवाञ्छानकीं देवीं त्वयात्मवधकां क्षया ५९
इमां कथां शृणुयात्पठेद्वासंश्रावयद्वा श्रवणार्थिनां सदा ॥ आयुष्यमारोग्यमनंत
सौख्यं प्राप्नोति लाभं धनमक्षयं च ६० ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे उत्तरकाण्डे तृतीयः सर्गः ३ ॥

(देवमर्त्यानां हितार्थं हरिः इक्ष्वाकूणां कुले महासत्त्वपराक्रमः दाशरथिः रामः भूत्वा) देवता मानुषों
के हित के अर्थ सोई हरि इक्ष्वाकु बंशमें महा साहस पराक्रमी दशरथ के पुत्र राम नामे अवतीर्ण
होयेंगे ५५ (जगन्मात्रास्वमायया भार्यया स भ्रात्रा धर्मात्मा पितुः नियोगात् दण्डके वने विचरिष्यति)
जगत् को उत्पन्न पालन करनहारी अपनी माया भार्या सहित छोटे भाई सहित धर्मात्मा रामपिता
की आज्ञा ते दण्डकवन में विचरेंगे ५६ (एवमयाते विस्तरात् सर्व आख्यातं रावणतदा श्रियायुतं रामं
भक्तिभावेन भजस्व) इसप्रकार प्रसिद्ध परमेश्वर को सब वृत्तांत मैंने तू प्रति विस्तार ते सब वर्णन

किया हे रावण ता समयमें सीता युक्त राम को भक्तिभाव करिके भजौ ५७ (एवंश्रुत्वाअसुराध्यक्षः महान् रावणः ध्यात्वा किंचित् विचार्य च त्वया सह विरोधेऽसुः मुमुदे) अगस्त्य बोले हे रघुनन्दन इस प्रकार सनत्कुमार ते सब हाल सुनिके असुरों को राजा महान् रावण ध्यानपूर्वक कछु विचार करि पुनः आप से विरोध की इच्छा करिके आनन्द होता भया ५८ (युद्धार्थी लोकान् पर्यटन् सर्वतः सम-वस्थितः हे महाराज अतीव बुद्धिमान् रावण. त्वया आत्मबन्धकांक्षया एतत् अर्थजानकी देवी दृष्टवान्) युद्ध के अर्थ लोकों में विचरत संते सर्वत्र स्थित रहै हे महाराज रघुनाथजी अत्यन्त बुद्धिमान् रावण आप के हाथ मरने की कांक्षा करिके इसी अर्थ जानकी देवी को हरता भया ५९ (इमां कथां यः शृणु-यात् वापठेद्वा श्रवणार्थिना सदा संश्रावयेत् आयुष्यं आरोग्यं अनन्तसौख्यं च अक्षयं धनलाभं प्राप्नोति) इस कथा को जो सुनै वा पढ़ै वा सुननेवालों को सदा सुनावता है सो दीर्घायु आरोग्यता अनन्त सुख पुनः नाश रहित धन की लाभ को प्राप्त होत ६० ॥

इति श्रीरसिकलताश्रित कल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजायविरचिते अध्यात्म
भूषणे उत्तरकाण्डे तृतीयप्रकाशः ३ ॥

एकदा ब्रह्मणो लोकादायांतं नारदं मुनिम् ॥ पर्यटन् रावणो लोकान् दृष्ट्वा न त्वाब्रवीद्ब्र-
ह्मचः १ भगवन् ब्रूहि मे योऽहं कुत्र संति महाबलाः ॥ योऽहं मिच्छामि बलिभिस्त्वं ज्ञा-
तासि जगत्त्रयम् २ मुनिर्ध्यात्वाऽहं सुचिरं श्वेतद्वीपनिवासिनः ॥ महाबलाम-
हाकायास्तत्र याहि महामते ३ विष्णुपूजारताः ये वै विष्णुनानिहताश्च ये ॥ त एव
तत्र संजाता अजेयाश्च सुरासुरैः ४ श्रुत्वा तद्वावणो वेगान् मंत्रिभिः पुष्पकेण तान् ॥
योऽहं कामः समागत्य श्वेतद्वीपसमीपतः ५ तत्प्रभाहतते जस्कं पुष्पकेनाचलत्ततः ॥
त्यक्त्वा विमानं प्रययौ मंत्रिणश्च दशाननः ६ ॥

सवैया । गतनारदप्रेरितश्वेतसुदीपतियाकर रावणमानठहे । मुनिमौगिबिदागतधामसवैप्रभुनीति
प्रजाप्रतिपालरहे ॥ जयमंत्रिहिपूछतहालप्रजामुखवैनकछूअपवादकहे । मुनिआश्रमसीयपठायतवैर-
घुनन्दऋषीव्रतआपगहे ॥ (लोकान् पर्यटन् रावणः एकदा ब्रह्मणः लोकात् आयतं नारदं मुनिं दृष्ट्वा न त्वावचः
अब्रवीत्) सब लोकन में घूमता हुआ रावण एक समय में ब्रह्मलोकते आवते हुये नारद मुनिको
देखि रावण प्रणाम करि बचन बोलताभया १ (भगवन् मे योऽहं महाबलाः कुत्र संति ब्रूहि बलिभिः योऽहं
इच्छामि त्वं जगत्त्रयमज्ञातासि) हे भगवन् मोसोंयुद्ध करिवे योग्य वीरबली कहाहैं तिनहिं बतलाइये
क्योंकि बली वीरों से युद्ध करिवेको मोको इच्छा है अरु आप तीनिहु लोकनको हाल जानते हौं २
(मुनिः सुचिरं ध्यात्वा आह महामते श्वेतद्वीपनिवासिनः महाकायाः महाबलाः तत्र याहि) मुनि बहुत
वार तक ध्यान करि बोलते भये हे महामते रावण श्वेत द्वीप के बासी महा भारी शरीरवाले महा-
बलीहैं तहांको जाउ ३ (ये वै विष्णुपूजारताः च ये विष्णुनानिहतः त एव तत्र संजाताः च सुरासुरैः अजेयाः)
जेजन निश्चय करि विष्णु के पूजा में परायण हैं पुनः जे संग्राम में विष्णु करिके मारेगये वे सब
निश्चय करि उहैं उत्पन्न होते हैं पुनः देवता दैत्यों करि अजित होते हैं ४ (तत् श्रुत्वा रावणः तान्
योऽहं कामः मंत्रिभिः पुष्पकेन वेगात् समागत्य श्वेतद्वीपसमीपतः) सो मुनि रावणतिनहिं जीतने की
कामनाते मंत्रिनसहित पुष्पक परसवार वेगतेचला जब श्वेतद्वीपके समीपगया ५ (तत्प्रभाहतते जस्कं

पुष्पकं नाचलत्ततः विमानं च मंत्रिणः त्यक्त्वा दशाननः प्रययौ) तिस्रः द्वीपकी प्रभाकरिकै तेज गति नाशभया ताते पुष्पक न चलित्वा तव विमानको अरु मंत्रियों को त्यागि के रावण अकेला पैदर जाता भया ६ ॥

प्रविशन्नेव तद्द्वीपं धृतं हस्तेन योषिता ॥ पृष्ठश्च त्वंकुतः कोऽसि प्रेषितः केन वा वद ७ इत्युक्तो लीलायास्त्रीभिर्हसंतीभिः पुनः पुनः ॥ कृच्छ्राद्धस्ताद्विनिर्मुक्तस्तासां स्त्रीणां दशाननः ८ आश्चर्यमनुलंलब्ध्वा चिंतयामास दुर्मतिः ॥ विष्णुनानिहतो यामिवैकुण्ठमिति निश्चितः ९ मयि विष्णुर्यथा कुप्येत्तथा कार्यं करोम्यहम् ॥ इति निश्चित्य वैदेहीं जहार विपिनेऽसुरः १० जानन्नेव परात्मानं स जहारावनीसुताम् ॥ मातृवत्पालयामास त्वत्तः कांक्षन् वधस्वकम् ११

(तत्तद्द्वीपं प्रविशन्नेव योषिता हस्तेन धृतः च पृष्ठः त्वंकः असिकुतः वा केन प्रेषितः वद) तिस्रः द्वीप में प्रवेश करत ही रावणको एक स्त्रीने हाथसे गहिलिया पुनः पूछा कि तू कौन है कहाँ ते आया है अथवा किसने तोको पठावा है सो कहू ७ (इति उक्तः लीलायास्त्रीभिः पुनः पुनः हसंतीभिः तासां स्त्रीणां हस्तात् दशाननः कृच्छ्रात् विनिर्मुक्तः) ऐसा कहा लीलामात्र ही रावण को पकड़े रही अन्य स्त्रियों करिके बार-बार हास किया गया तिन स्त्रियोंके हाथते बड़े क्रेशते रावण छूटा भगा ८ (अनुलं आश्चर्यं लब्ध्वा दुर्मतिः चिंतयामास विष्णुनानिहतो यामिवैकुण्ठमिति निश्चितः) छूटे पर रावण बड़ा आश्चर्य माना पुनः दुर्बुद्धी रावण चिंतन करता भया कि जो विष्णु करिके मृत्युको प्राप्त होऊँ तो मैं भी इसी भाँति वैकुण्ठमें बास करौँ ऐसा मनमें निश्चय करता भया ९ (यथामयि विष्णुः कुप्येत् तथा कार्यं भव करोमि इति निश्चित्य असुरः विपिने वैदेहीं जहार) जैसे मेरे ऊपर विष्णु कोप करै तैसे ही कार्य मैं करौँ ऐसी निश्चय करि असुर रावण बनमें विदेह पुत्रीको हरता भया १० (परात्मानं जानन्नेव त्वत्तः स्वकं वधकां क्षन् अवनीसुतां जहार मातृवत्पालयामास) आपको परमात्मा करि जानता हुवा निश्चय करि आपके हाथों अपनी मृत्यु की कांक्षाराखि रावण भूमिसुता को हरता भया अरु माताके तुल्य पालन करता रहा ११ ॥

रामत्वं परमेश्वरोसि सकलं जानासि विज्ञानदृक् भूतं भव्यमिदं त्रिकालकलना साक्षी विकल्पोऽभिमतः ॥ भक्तानामनुवर्तनाय सकलां कुर्वन् क्रियासंहतिम् चाश्रयन् मनोजाकृतिर्मुनिवचोभासी शलोकार्चितः १२ स्तुत्वैव राघवं तेन पूजितः कुंभसम्भवः ॥ स्वाश्रमं मुनिभिः सार्द्धं प्रययौ हृष्टमानसः १३ रामस्तु सीतया सार्द्धं भ्रातृभिः सह मंत्रिभिः ॥ संसारीवरमानाथोरममाणो वसद्गृहे १४ अनाशक्तोऽपि विषयान् बुभुजे प्रियया सह ॥ हनूमत्प्रमुखैर्सद्भिर्वा नरैः परिवेष्टितः १५ पुष्पकं चागमद्राममेकदा पूर्ववत्प्रभुम् ॥ प्राह देवकुबेरेण प्रेषितं त्वामहं ततः १६ ॥

(रामत्वं परमेश्वरोसि भूतं भव्यं इदं त्रिकालकलना सकलं विज्ञानदृक् जानासि) हे रघुनाथजी आप परमेश्वर हौ ताते भूतजो पूर्व होगया भव्य जो होनहार है इदं भव जो हो रहा है इत्यादि तीनिहु कालों की कलना समय समय की यावत् वस्तु है सो सब विज्ञान दृष्टि करिके जानते हौ (विकल्पोऽभिमतः साक्षी) संशय रहित सब के अंतरमें साक्षी हौ (भासी शलोकार्चितः) अंतर्यामी रूपते सबके अंतमें भास अर्थात् प्रकाश किहे हौ पुनः ईश लोकोंके जो इंद्रादि हैं तिन करिके

ऐ पूजित हौ इति ऐश्वर्य रूप सोई माधुर्य में (भक्तानांमनुवर्तनायसंहतिक्रियासकलान्कुर्वन्चमनु जाकृतिःमुनिवचःप्रशृण्वन्) भक्तनके अनुग्रह के अर्थ संपूर्ण क्रिया दान यज्ञादि सब करते हौ पुनः मनुष्य की नाई बने मुनिन के बचन सुनते हौ १२ (एवंराघवंस्तुत्वा तेनपूजितःकुंभसंभवःहृष्टमान- सःमुनिभिःसार्द्धं स्वाश्रमंप्रययौ) इसप्रकार रघुनंदनकी स्तुतिकरिकै रघुनंदन करिकै पूजित भगस्त्य मुनि आनंदमन मुनिन सहित विदाहैं अपने आश्रमको जाते भये १३ (तु रमानाथःरामःसंसारोव भ्रातृभिःसहमंत्रिभिः सीतियासार्द्धं रममाणःगृहेभवसत्) पुनः लक्ष्मीनाथ श्री रामचंद्र मनुष्यवत् भाइन सहित मंत्रियों करिकै राजकाज सँभारते हैं अरुसीता करिकै सहित रमण सुख विहार करते हुये मंदिरमें बास करतेहैं १४ (विषयान्प्रनासकःअपि प्रिययासहबुभुजे हनुमत्प्रमुखैःवानरैःसन्निः परिवेष्टितः) शब्द स्पर्श रूपरस गंध मैथुनादि विषयनमें यद्यपि आसक्त नहीं हैं तौ भी माधुर्यमें राज- कुमार रूप ते अपनी प्रियासीता सहित सुख विहार करते हैं पुनः हनुमानादि जो वानरश्रेष्ठ तिन करिकै सेवित रहतेहैं १५ (ततःएकदापुष्पकं आगमत् च प्रभुरामं प्राह हेदेव कुबेरेण प्रेषितंमहंपूर्ववत् त्वां) तदनंतर एकसमय में पुष्पक विमान आया पुनः स्वामी रघुनंदन प्रति बोलताभया कि हे देव कुबेर करिकै पठावा हुआ मैं पूर्व की नाई पुनः आपही को वाहन हों १६ ॥

जितंत्वंरावणेनादौपश्चाद्रामेणनिर्जितम् ॥ अतस्त्वंराघवंनित्यंवहयावद्वसेद्ब्रु वि १७ यदागच्छेद्रघुश्रेष्ठेवैकुण्ठ्याहिमांतदा ॥ तच्छ्रुत्वारघवःप्राहपुष्पकंसू र्यसन्निभम् १८ यदास्मरामिभद्रंतेतदागच्छममांतिकम् ॥ तिष्ठांतर्क्षार्यसर्वत्र गच्छेदानीममाज्ञया १९ इत्युक्त्वारामचंद्रोपिपौरकार्याणिसर्वशः ॥ भ्रातृभि र्मंत्रिभिःसार्द्धंयथान्यायंचकारसः २० राघवेशासतिभुव्लोकनाथेरमापतौ ॥ वसुधासस्यसम्पन्नाफलवंतश्चभूरुहाः २१ जनाधर्मपराःसर्वेपतिभक्तिपराःस्त्रि यः ॥ नापश्यत्पुत्रमरणंकश्चिद्राजनिराघवे २२ ॥

(आदौत्वंरावणेनजितं पश्चात्त्रामेणनिर्जितंअतःयावत् भुविवसेत्त्वंनित्यंराघवंवह)पुष्पक बोला हे रघुनाथ जी कुबेर ने मोसों कहा कि हे पुष्पक प्रथमतौ तोको रावणने मोसों जीति लिया पाछे रामने रावण ते जीतिलिया इस कारण जब तक राघवभूमि पर वासकरें तबतक तू नित्यही रघुनंद- न की सवारी में रह १७ (यदारघुश्रेष्ठःवैकुण्ठगच्छेत् तदामांयाहि तत्श्रुत्वासूर्यसन्निभम्पुष्पकंराघवः प्राह) जब रघुवंशनाथ वैकुण्ठ को जायें तब पुनःमेरे पास आयो इति पुष्पक बचन सो सुनिकै सूर्य- वत् प्रकाशमान पुष्पक विमान प्रति रघुनन्दन बोलते भये १८ (तेभद्रंयदास्मरामितदाममांतिकम् आगच्छ ममाज्ञयाइदानींगच्छ अंतर्क्षार्यसर्वत्रतिष्ठ) हे पुष्पक तुम्हारा कल्याण होय जब मैं तुम्हारी स्मरण करौं तब मेरे पास को आवो अरु मेरी आज्ञा करिकै या समय में जाउ अंतर्धान रूप है स- र्वत्र बास करौ १९ (इतिउक्त्वा सःरामचन्द्रः अपिभ्रातृभिः मन्त्रिभिःसार्द्धंसर्वशः पौरकार्याणियथा न्यायंचकार) अपनी ऐश्वर्य गुप्त राखने हेतु ऐसा पुष्पक प्रति कहि सो रामचन्द्र भी भाई मन्त्रिन सहित रक्षा दण्डादि सब प्रकार को पुरको कार्य जैसे नीतिशास्त्र ते चाहिये तैसेही करते भये २० (रमापतौराघवेशासतिभुव्लोकनाथे सतिवसुधासस्यसम्पन्ना च भूरुहाःफलवन्तः) लक्ष्मपति रघुवंश- नाथके भूमिमें लोकनाथ होत सन्ते पृथ्वी अन्न करिकै परिपूर्ण भई पुनः वृक्ष फलवंतभये २१ (जनाः

सर्वधर्मपराःस्त्रियःपतिभक्तिपराः राघवेराजनिकद्विचतुपुत्रमरणनप्रदंयत्) जन सर्व शौच तप दा-
नादि धर्माचरण में परायण भये स्त्री तब पतिकी भक्ति में परायण भई पुनः रघुनन्दन के राजा होत
सन्ते कोऊपुत्र को मरण नहीं देखता है २२ ॥

समारुह्यविमानाग्न्यंराघवःसीतयासह ॥ वानरैर्भ्रातृभिःसार्द्धसंचचारावर्निप्रभुः
२३ अमानुषानिकार्याणिचकारबहुशोभुवि ॥ ब्राह्मणस्यसुतंदृष्ट्वाबालंमृतमका-
लतः २४ शोचंतंब्राह्मणंचापिज्ञात्वारामोमहामतिः ॥ तपस्यंतंवनेशूद्रंहत्वाब्रा-
ह्मणबालकम् २५ जीवयामासशूद्रस्यददौस्वर्गमनुत्तमम् ॥ लोकानामुपदेशा-
र्थंपरमात्मारघूत्तमः २६ कोटिशःस्थापयामासशिवलिंगानिसर्वशः ॥ सीतांच-
रमयामाससर्वभोगैरमानुषैः २७ शशासरामोधर्मेणराज्यंपरमधर्मवित् ॥ कथां
संस्थापयामाससर्वलोकमलापहम् २८ ॥

(वानरैःभ्रातृभिःसार्द्धसीतयासहराघवः प्रभुः विमानाग्न्यंसमारुह्यअवनीसंचचार) हनुमानादि
वानर भरतादि भाइन सहित सीता सहित रघुनन्दन प्रभु पुष्पक विमान पर सवारहै सब देशों को
हाल जानिवे हेतु भूमिपर विचरतेभये २३ (भुविःबहुशःअमानुषाणिकार्याणि चकार ब्राह्मणस्यसु-
तंअकालतःमृतंबालंदृष्ट्वा) भूतल में श्रीरघुनाथजी बहुत से अमानुष जिसको मनुष्य न करि सकें
ऐसे कार्यन को करते भये यथा एक ब्राह्मण को पुत्र अकाल में मराहुआ बालक को देखिके २४
(चब्राह्मणंअपिशोचंतंज्ञात्वा महामतिः रामः वनेतपस्यंतंशूद्रंहत्वा ब्राह्मणबालकंजीवयामास) पुनः
ब्राह्मण भी शोचताहुआ जानिके बड़े बुद्धिमान् रघुनन्दन विचार करि कारण जानि लिये कि शूद्र
तपस्या करताहै सो धर्म प्रतिकूलहै ताते विप्रको पुत्र मरा सो जानि वनमें तपस्या करताहुआ शूद्र
को मारिके ब्राह्मणके बालक को जियायदेते भये २५ (शूद्रस्यअनुत्तमंस्वर्गददौ परमात्मारघूत्तमःलो-
कानांउपदेशार्थम्) उस शूद्र को उत्तम स्वर्ग लोक में वासदीन्हे पुनः परमात्मा रघुवंशनाथ लोकन
को उपदेश करने अर्थ उत्तम धर्मशील राजोंकी भांति २६ (कोटिशःशिवलिंगानिसर्वशःस्थापया-
मास च अमानुषैःसर्वभोगैःसीतांरमयामास) करोरिन शिवके लिंग पृथिवी भरे में सर्वत्र स्थापित
करते भये पुनः अमानुष भोजन वस्त्र भूषण वाहन नृत्य गान पान गंध मंदिर शय्या इत्यादि सब
भोगों करिके सीता को रमावते भये २७ (परमधर्मवित् रामःधर्मेणराज्यंशशास सर्वलोकमलापहम्
कथांसंस्थापयामास) परमोत्तम धर्म के परिपूर्ण जाननेवाले श्रीरघुनाथजी धर्म नीति करिके राज्य
को पालते भये अरु सब लोकके पाप हरनेवालो पावन कथाको लोक में स्थापित करते भये २८ ॥

दशवर्षसहस्राणिमायामानुषविग्रहः ॥ चकारराज्यांविधिवल्लोकवंधपदांबुजः
२९ एकपत्नीव्रतोरासोराजर्षिःसर्वदाशुचिः ॥ गृहमेधीयमखिलमाचरन्शिश्रय-
न्जनान् ३० सीताप्रेम्णानुवृत्त्याचप्रश्रयेणदमेनच ॥ भर्तुर्मनोहरासाध्वीभा-
वाज्ञासाह्वियाभिया ३१ एकदाक्रीडविपिनेसर्वभोगसमन्विते ॥ एकांतैदिव्य-
भवनेसुखासीनंरघूत्तमम् ३२ नीलमाणिक्यसंकाशंदिव्याभरणभूषितम् ॥ प्रस-
न्नवदनंशांतंविद्युत्पुंजनिभांवरम् ३३ सीताकमलपत्राक्षीसर्वाभरणभूषिता ॥ राम-
माहकराभ्यांसालालयंतीपदांबुजे ३४ ॥

(लोकवन्द्यपदोबुजः मायामानुषविग्रहः दशसहस्रवर्षाणि विधिवत् राज्यंचकार) सब लोकों के वंदनीय पद कमल लिनके सोई माया करि मानुष शरीर से दश हजार वर्ष तक विधिपूर्वक राज्य करते भये २६ (एकपत्नीव्रतः सर्वदा शुचिः राजर्षिः रामः जनान् शिष्यन् गृहमेधीयं अखिलं आचरन्) सेवाय आपनी स्त्री के और स्त्री में भूलिहूकै न मन देना इति एक पत्नी व्रत सब काल में तन मन सों पवित्र ऐसे राजर्षि रघुनाथजी सब जननको शिक्षा सिखावन देत संते गृहस्थों के सब उत्तम आचरण करते भये ३० (प्रेम्णा अनुवृत्त्या च प्रश्रयेण च दमेन सा ह्रियाभियाभावज्ञासाध्वी सीताभर्तुः मनोहरा) प्रेम करिकै अनुकूल आचरण करिकै पुनः नम्रता करिकै पुनः मन इन्द्रिय स्वाधीन करिकै सहित लज्जा भय करिकै पतिकी मनोगति जानि कार्य करने वाली पतिव्रता सीता पति को मन हरती हैं स्वाधीन किहे हैं ३१ (एकदा क्रीडविपिने सर्वभोगसमन्विते दिव्यभवने एकांते सुखासीनं रघूत्तमम्) एक समय प्रमोद वन में सब भोग सामग्री युक्त दिव्य मन्दिरमें एकांत में सुखद आसन पर बैठे रघुनन्दन ३२ (नीलमणिक्मयसंकाशं विद्युत्पुंजनिभां वरमुदिव्याभरणभूषितं प्रसन्नवदनं शांतम्) नीलमणिवत् सुन्दर श्याम तन विजुली सम प्रकाशमान पीताम्बर धारण किरीट कुण्डलादि दिव्यआभूषण भूषित प्रसन्नमुख शांत स्वभाव ३३ (सर्वाभरणभूषिता कमलपत्राक्षी सीताकराभ्यां पदां जुजेलालयंती सारामं आह) सर्वांग भूषण भूषित कमलदलनयनी सीता दोऊ हाथों करिकै पद कमल सेवती हुई सो सीता प्रेमसहित नम्र वचन रघुनन्दन प्रति बोलती भई ३४॥

देवदेव जगन्नाथ परमात्मन् सनातन ॥ चिदानंदादिमध्यांतरहिताशेषकारण ३५
देवदेवाः समासाद्य मामेकांते ब्रुवन् वचः ॥ बहुशोऽर्थयमानास्ते वैकुण्ठगमनं प्रति ३६
त्वया समेतश्चिच्छक्त्यारामस्तिष्ठति भूतले ॥ विसृज्यास्मान्स्वकंधाम वैकुण्ठं च सनातनम् ३७
आस्ते त्वया जगद्धात्रिरामः कमललोचनः ॥ अग्रतो याहि वैकुण्ठं त्वं तथा चेद्रघूत्तमः ३८
आगमिष्यति वैकुण्ठं सनाथान्नः करिष्यति ॥ इति विज्ञापिता हंतैर्मया विज्ञापितो भवान् ३९
यद्युक्तं तत्कुरुष्व आद्यनाहमाज्ञापयेत्प्रभो ॥ सीता यास्तद्वचः श्रुत्वा रामो ध्यात्वाऽब्रवीत्क्षणम् ४० ॥

(देवदेव आदिमध्यांतरहितसनातनपरमात्मन् चिदानन्दशेषकारणजगन्नाथ) हे देवोंके देव आदि जन्म मध्य जीवन अन्तनाश इत्यादि रहित हे सनातन परमात्म अखंड ज्ञानानंद सबके आदि कारण हे जगत्के पालनहारे नाथ ३५ (देवमो एकांते समासाद्य देवाः ते वैकुण्ठगमनं प्रति बहुशः अर्थयमानाः वचः अब्रुवन्) हे देव मोको एकान्तमें प्राप्तदेखि इंद्रादि देवता आपको वैकुण्ठ जाने हेतु बहुत प्रकार प्रार्थनापूर्वक वचन कहते हैं ३६ (अस्मान् च सनातनं स्वकंधाम वैकुण्ठं विसृज्य चित्शक्त्या त्वया समेतः रामः भूतले तिष्ठति) क्या देवता कहते हैं कि हम सब देवतोंको पुनः सनातन अपना धाम वैकुण्ठको त्यागि अब हे सीते तुम जो चैतन्य सब कार्य करनेवाली आदि शक्तिहो तिन करिकै सहित नर राज रूपते रघुनाथजी भूतलमें वास करते हैं ३७ (जगत्धात्रि अग्रतः त्वं वैकुण्ठं याहित्वया आस्ते तथा चेत् रघूत्तमः कमललोचनः रामः) हे जगन्मातः सीते जो अगे तुम वैकुण्ठको जाउ तुम्हारे जात संते तैसेही कदाचित् रघुवंशोत्तम कमलनयन रामचन्द्रभी ३८ (वैकुण्ठं आगमिष्यति नः सनाथान् करिष्यति इति तैः विज्ञापिता अहं मया भवान् विज्ञापितः) तब रामों वैकुण्ठको आवहिंगे हम लोगोंको सनाथ करहिंगे ऐसा उन देवतोंने निवेदन किया मोसों तब मैंने आपसों कहा है ३९ (यदि उ-

कतंतद्वयकुरुष्वप्रभो महंभाज्ञापयेत्नतत्सीतायाः वचःश्रुत्वाक्षणं ध्यात्वारामःअब्रवीत्) जो उचित होय सो अब कीजिये हे प्रभो मैं आपसों भाज्ञा नहीं करतीहों जो देवतोंने कहा सोई आपको सुनाय दिया सो सीताको वचन सुनिकै क्षणभरि ध्यानपूर्वक विचारकरि रघुनंदन बोलतेभये ४० ॥

देविजानामिसकलंतत्रोपायंवदामिते ॥ कल्पयित्वामिषंदेवलोकवादं त्वदाश्रयम् ४१ त्यजामित्वां वनेलोके वा दाद्रीत इवापरः ॥ भविष्यतः कुमारौ द्वौ वाल्मीके राश्रमांतिके ४२ इदानीं दृश्यते गर्भः पुनरागत्य मेतिकम् ॥ लोकानां प्रत्ययार्थं त्वंकृत्वा शपथमादरात् ४३ भूमेर्विवरमात्रेण वैकुण्ठयास्यसिद्रुतम् ॥ पश्चादहं गमिष्यामि एष एव सुनिश्चयः ४४ इत्युक्त्वा तां विसृज्य अथ रामो ज्ञानैकलक्षणः ॥ मंत्रिभिर्मंत्रतत्त्वज्ञैर्बलमुख्यैश्च संवृतः ४५ तत्रोपविष्टं श्रीरामं सुहृदः पर्युपासतः ॥ हास्यप्रौढकथासुज्ञाहासयंतः स्थिता हरिम् ४६ ॥

(देविसकलं जानामितत्र उपायं ते वदामि देवित्वदाश्रयं लोकवादं मिषं कल्पयित्वा) हे देवि सब मैं जानताहों ताको उपाय तोसों कहताहों हेदेवि सीते तुही है कारण जिसमें ऐसा एक लोकापवाद रूप बहाना रचौंगो ४१ (लोकवादात् भीतः अपरः इवत्वां वने त्यजामि वाल्मीकेः आश्रमांतिके द्वौ कुमारौ भविष्यतः) लोकापवादते भयभीत अन्यपुरुषोंके समान मैंतोको वनमें त्यागकरौंगो अरु या समय में तेरे गर्भ है सोई वाल्मीकिके आश्रममें तेरे दोपुत्र होयेंगे ४२ (इदानीं गर्भः दृश्यते पुनः मे अंतिकं आगत्य लोकानां प्रत्ययार्थं त्वं आदरात् शपथं कृत्वा) या समय में भी गर्भतेरे शरीर में दर्शित होताहै ताके निवृत्त भये पर तू पुनः मेरेपास आयकै लोकजनोंके विश्वासके अर्थ तू आदर प्रसन्न मनते शपथ करिकै ४३ (भूमेः विवरमात्रेण द्रुतं वैकुण्ठयास्यसि पश्चात् अहं गमिष्यामि एष एव सुनिश्चयः) शपथकरि पुनः भूमिके विवरमात्र करिकै तू शीघ्रही बैकुण्ठ को जायगी ताके पाछे मैं भी बैकुण्ठ को आवों-गो यही मेरीबात निश्चयकरि सत्यजानु ४४ (इति उक्त्वा तां विसृज्य अथ ज्ञानैकलक्षणः रामः मंत्रतत्त्व ज्ञैः मंत्रिभिः च बलमुख्यैः संवृतः) ऐसा कहि तिन जानकीजी को अंतःपुर में राखि अब अखंड ज्ञानरूप श्रीरघुनाथजी राजसभा को आये जहां उत्तममंत्र जाननेवाले मंत्री पुनः सेनापति इत्यादि करिकै सेवित हैं ४५ (तत्र उपविष्टं हरिं श्रीरामं हास्यप्रौढकथासुज्ञासुहृदः स्थिता हासयंतः पर्युपासतः) तहां सिंहासन पर बैठे हुये हरि जो श्री रघुनाथ जी तिनहिं हास्य कथा के तत्त्व के जानने वाले सखा मित्र लोग बैठे हास्य बार्ता करि हँसावते हुये सेवन करते हैं ४६ ॥

कथाप्रसंगात्पप्रच्छ रामो विजयनामकम् ॥ पौराजानपदामे किंवदंती ह शुभाशुभम् ४७ सीतां वामातरं वामे भ्रातृन्वाकैक्यमथ ॥ नभेत व्यं त्वया ब्रूहि शापितोऽसि ममोपरि ४८ इत्युक्तः प्राह विजयो देव सर्वे वदंतिते ॥ कृतं सुदुष्करं सर्वरामेण विदितं तात्मना ४९ किंतु हत्वा दशग्रीवं सीतामाहृत्य राघवः ॥ अमर्षं पृष्ठतः कृत्वा स्ववे श्मप्रत्यपादयत् ५० कीदृशं हृदये तस्य सीतासंभोगजं सुखम् ॥ याहता विजनेर गयेरावणेन दुरात्मना ५१ अस्माकमपि दुष्कर्मयोषितां मर्षणं भवेत् ॥ यादृक् भवति वैराजा तादृशो नियतं प्रजाः ५२ ॥

(कथाप्रसंगात्त्रामःविजयनामकंप्रच्छ पौराजानपदाइहमेशुभाशुभंकिंवदंति) कथा प्रसंगेत्स्थु-
नाथ जी विजयनाम मंत्री प्रतिपूछते भये कि पुरवासी तथा राज्य के लोग इस जन्ममें मोकोभला
अथवा बुरा क्या कहते हैं ४७ (कैकेयी अथवा मातरं वासीतां वा मेभ्रातृभेतव्यं नत्वयाब्रूहिममो
परिशापितःअसि) कैकेयी अथवा कौशल्याको वासीताको वा मेरे भाइन को जो कुछ कोउ कहता
होय ताके कहतमे भय न मानेउ अडरहवै तुमकरिकै कहाजाय मेरी शपथहै तुमको सत्यही वार्ता
कहना ४८ (इति उक्तविजयः प्राहदेवतेसर्वेवदंतिविदितात्मनारामंणसर्वदुष्करं) ऐसा रघुनंदन
कहे तब विजय मंत्री बोलते भये कि हे देव आपको सब कहतेहैं कि विदित आत्मा रामने सब कार्य
दुष्कर अर्थात् जो सुरसुरानरनागादि किसी से नहीं होनेवाला रहे सो उत्तम कार्य किया ४९ (किं-
तुदशग्रीवंहत्वापृष्टतः अमर्षकृत्वासीतामाहृत्पराधवःस्ववेदमप्रत्यपादयत्) परंतु रावण को मारि
पीछे निदित कर्म किये जो सीता को लाय रघुनंदन अपने मंदिर में प्राप्त किये ५० (सीतानंभोगं
सुखंतस्यहृदयेकीदृशयादुरात्मनारावणेनविजनेअरण्येहता) सीता के संभोग सों उत्पन्न सुख तिन
रघुनंदन के हृदय में कैसा होता होयगा जिन सीताको दुष्टात्मा रावण विजयन बनसोंहारलैगया
५१ (योपितांदुष्कर्मसर्पणंअस्माकंअपिभवेत् यादृक्वैराजाभवतितादृशयोनियतंप्रजाः) जो ऐसेही
रीतिचलीतौस्त्रियों को किया कुत्सितकर्म को दुखभारहम लोगों को भी होयगो भावनष्टकर्म करि
प्रौढता सहित घरमें बैठी रहेंगी क्योंकिजैसा निश्चय करिराजा होताहै ताही समरीति रहत्य करने
वाले प्रजा अर्थात् राज्य वासी सब लोग होते हैं ५२ ॥

श्रुत्वातद्वचनंरामःस्वजनान्पर्यपृच्छत ॥ तेष्वपिनत्वाऽब्रुवन्नराममेवमेतन्नसंशयः
५३ ततोविसृज्यसचिवान्विजयंसुहृदस्तथा ॥ आहूयलक्ष्मणंरामोवचनंचेदमब्र-
वीत् ५४ लोकापवादस्तुमहान्सीतामाश्रित्यमेऽभवत् ॥ सीतांप्राप्तःसमानीयवा-
ल्मीकेराश्रमांतिकेऽप्यक्त्वाशीघ्रंरथेनत्वंपुनरायाहिलक्ष्मणः॥वक्ष्यसेयदिवाकिं
चित्तदामांहतवानसि ५६ इत्युक्तोलक्ष्मणोभीत्याप्रातरुत्थायजानकीम्॥सुमंत्रेण
रथेकृत्वाजगामसहसावनम् ५७ ॥

(तत्तवचनंश्रुत्वारामःस्वजनान्पर्यपृच्छततेअपिरामंनत्वा अब्रुवन्एतत्तंवसंशयःन) सो विजय
को वचन सुनिकै रघुनन्दन अपने मित्र लोगों प्रति पूछते भये कि यह कैसी बात है ते मित्र भी
रघुनन्दन को प्रणाम करि बोलते भये हे महाराज यह बात ऐसेहीहै यामें संशय नहीं है ५३ (ततः
सचिवान्तथासुहृदःविजयंविसृज्यरामःलक्ष्मणंआहूयचद्वचनंअब्रवीत्) तब सब मंत्रिनको तैसेही
मित्र विजय को विदा करि रघुनन्दन लक्ष्मण को बुलाय पुनः ऐसा वचन बोलते भये ५४ (सीतां
आश्रित्यमेलोकापवादस्तुमहान्अभवत् प्रातःसीतांसमानीयवाल्मीकेःआश्रमांतिके) रघुनन्दन कहे
कि हे लक्ष्मण सीताको अंगीकार कीन्हें मोको लोकापवाद बड़ा भारी होताभया ताते काल्हि प्रातः-
काल सीता को लैकै बाल्मीकि मुनिके आश्रम के समीप जाय ५५ (लक्ष्मणरथेनशीघ्रंरथेनत्वंपुनः
आयाहिवायदिकिंचित्त्वक्ष्यसेतदामांहतवानसि) हे लक्ष्मण रथपर लैजाय तहां जानकी को त्यागि
शीघ्रही तुम मेरे पासको लौटि आयो अथवा जो इस आज्ञामें प्रत्युत्तर कहोगे तौमेरे बध पापके भागी
होहुगे ५६ (इतिउक्तःभीत्यालक्ष्मणः प्रातःउत्थायजानकींरथेकृत्वा सुमंत्रेणसहसावनंजगाम) ऐसा
कठोर वचन जब रघुनन्दन कहे तब भय करिकै लक्ष्मण प्रातही उठि जानकीजीको रथ में बैठारि

सुमंत्र सहित लक्ष्मण शीघ्रहीं बनको जातेभये ५७ (वाल्मीकिःआश्रमस्य अंत्येच्छासःसीतांउवाच
लोकापवादभीत्याराधवःत्वावनेत्यक्तवान्) बिठूर घाट गंगा तट जाय वाल्मीकि मुनि के आश्रमके
समीप बैठारि सो लक्ष्मण सीता प्रति बोलते भये हे देवि लोक में अपवाद भया त्यहि भयसे रघु-
नन्दन तुमको बन में त्याग किया ५८ ॥

दोषोनकश्चिन्मेमातर्गच्छाश्रमपदंमुनेः॥इत्युक्त्वालक्ष्मणःशीघ्रंगतवानूरामसन्नि-
धिम्५९ सीताऽपिदुःखसंतप्ताविललापातिमुग्धवत् । शिष्यैःश्रुत्वाचवाल्मीकिः
सीतांज्ञात्वासादिव्यदृक् ॥ अर्घ्यादिभिःपूजयित्वासमाश्वास्यचजानकीम् ६०
ज्ञात्वाभविष्यसकलमर्पयन्मुनियोषिताम् । तास्नांसंपूजयन्तिस्मसीतांभक्त्या
दिनेदिने ६१ ज्ञात्वापरमात्मनोलक्ष्मींमुनिवाक्येनयोषितः ॥ सेवांचक्रुःसदात-
स्याविनयादिभिरादरात् ६२ रामोपिसीतारहितःपरात्माविज्ञानदृक्केवलआदिदे-
वः ॥ संत्यज्यभोगानखिलान्विरक्तोमुनिव्रतोभून्मुनिसेवितांग्निः ६३ ॥

इतिश्रीअध्यात्मरामायणेउत्तरकांडेचतुर्थःसर्गः ॥ ४ ॥

(मातःमेदोषःकश्चित् न मुनेःआश्रमपदंगच्छ इतिउक्त्वालक्ष्मणःशीघ्रंगतवानूरामसन्निधिगतवान्) हे
मातः मेरा दोष कछु नहींहै अब तुम वाल्मीकिमुनि के आश्रमको जाउ ऐता कहि लक्ष्मणजी शी-
घ्रहीं रघुनन्दन के पास को जाते भये ५९ (सीताअपिदुःखसंतप्त.मुग्धवत् अतिविललापवाल्मीकिः
शिष्यैःश्रुत्वाचसदिव्यदृक् सीतांज्ञात्वाजानकींसमाश्वास्यचअर्घ्यादिभिःपूजयित्वा) लक्ष्मणके गयेपर
सीता भी दुःख करिकै संतप्त अज्ञकी नाई अत्यन्त विलाप करती मई तब वाल्मीकिजी शिष्योंकरि
कै सुने भाव एक स्त्री रोदन करतीहै इति सुनि पुनः सो मुनि दिव्य दृष्टि से सीताकोजानि समीप
आय जानकी को बहुत प्रकारसमुक्ताय सावधान करि आश्रममें लाय आसनद्वै अर्घ्य पाद्यादि षोडशो-
पचारों करिकै पूजन कीन्हें ६० (भविष्यसकलंज्ञात्वामुनियोषितांअर्पयन्ताः भक्त्यादिनेदिनेतांसी-
तांसंपूजयन्तिस्म) जो आगे होनहारहै सो सब वृत्तान्त जानिकै वाल्मीकि मुनिनकी स्त्रियोंको सौंपि
दीन्हें सो सब स्त्री भक्ति करिकै प्रतिदिन तिन सीताको पूजन करती हैं ६१ (मुनिवाक्येनयोषितः
परमात्मनःलक्ष्मींज्ञात्वाविनयादिभिः आदरात्तस्याःसदासेवांचक्रुः) वाल्मीकि मुनिके बचनों करि
कै मुनिकी स्त्री परमात्मा की लक्ष्मी जानिकै विनती आदिकों करिकै आदरते तिन सीता की सदा
सेवा करतीहैं ६२ (सीतारहितःआदिदेवःकेवलविज्ञानदृक् परात्मामुनिसेवितांग्निःरामःअपिअखि-
लान्भोगान्संत्यज्यविरक्तःमुनिव्रतोभूत्) सीता करिकै रहित आदिदेव शुद्ध विज्ञान दृष्टि परमात्मा
मुनिनकरिकैसेवित चरणजिनके ऐसेरघुनन्दन भी सबभोगत्यागि विरक्तहै मुनिव्रत धारणकीन्हें ६३

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेउत्तरकांडेचतुर्थःप्रकाशः ४ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ ततो जगन्मंगलमंगलात्मनाविधायरामायणकीर्तिमुत्तमा
श्मप्रत्यपादक्षारपूर्वाचरितोरघूत्तमोराजर्षिवर्यैरभिसेवितंयथा १ सौमित्रिणाष्टष्टउदा-
एयेरावणेनदुरातःकथाःप्राहपुरातनीःशुभाः ॥ राजाप्रमत्तस्यनृगरूपशापतोद्विजस्य
वतिवैराजातादृश्योऽधवः २ ॥

सवैया । कवहुँ जगमंगलरामस्वधामयकांतसुखासनबैठिरहे । परमानंदज्ञानस्वरूपकहौं इति पूछत लक्ष्मणपौंयगहे ॥ सकलाश्रमवर्णस्वधर्मभवासक्रियाकरतै भयपुंजदहे । मिलिआतमरूपसनातन सोपरमातमतत्त्वस्वज्ञानकहे ॥ (ततः जगन्मंगलमंगलात्मना उत्तमरामायणकीर्तिविधायराजपिं वयैः अभिसेवितं पूर्वाचारेतं यथातथारघूत्तमः चचार) भवलोक शिक्षा हेतु लक्ष्मण प्रति रघुनाथजी के वचन द्वारा परमज्ञान तत्त्व प्रसिद्ध पूर्वक शिवजी बोले हेगिरिजा सीताको वात्मीकिके आश्रमको पठाय तदनन्तर जगत्को जो मंगल यथा जीवन पर्यन्त अर्थ धर्म काम अन्तकाल मोक्ष इति जगत्को मंगल ताके मंगलकी मूर्ति अर्थात् जवते अवतीर्ण भये तवते अर्थ धर्म काम मोक्ष सर्वथा लोक में देतही रहे इति लोकमंगल के मंगलकी मूर्ति राजकुमार रूप करिके उत्तम रामायण रूप आपनी कीर्ति को लोकन में स्थापित कीन्हे तहां जो बाहु बल करिके धर्म स्थापन करिके जो प्रशंसा ताको सुयश कही अरु स्तुति दान करिके जो प्रशंसाताको कीर्ति कही इहां रावणादि धधते यश एकसमय तामें भी उनको मुक्ति दान दिये त्रिलोकको अभय सुख दान अरु दान तो सर्वसमयमें दैतैरहे तथा गुरुजन को सदा सन्मान तथा शील स्वभाव सुलभ उदारताते सबको सन्मानकीन्हे सो सर्वत्र प्रशंसा हरेही इति कीर्ति स्थापित करिके पुनः मनु अम्बरीष रघु इत्यादि राजऋषिन करिके सेवित जो पूर्व के धर्माचरण जाभांति के रहे ताहीं भांति रघुवंशनाथ भी उत्तम धर्माचार करते भये १ (उदारबुद्धिनासौ मित्रिणाष्टपुरातनीः शुभाः कथारामः प्राह अथ द्विजस्य शापतः प्रमत्तस्य राजानुगस्य तिर्यक्त्वा घवः आह) उत्तम बुद्धिवंत लक्ष्मणजीने प्रदत्त किया उत्तम राजों को धर्माचार पूछे तब जे पृथु अम्बरीषादि धर्माचरण करि उत्तम यश सहित शुभ गति पाये तिन लोगों की प्राचीन मंगलकारी कथा रघुनन्दन कहे अरु जे धर्म प्रतिकूल नीति विचार रहित राजमद में माते हैं तिनकी गति दर्शावने हेतु जो ब्राह्मण की शापते राजमदमें प्रमत्त राजानुगको तिर्यक्त्वप्राप्त भया किला किलास होना परा अर्थात् प्रमत्तयाते कहे किराजोंको चाहिये कि कोश सेना वाहन पशु आदि सबवस्तुकी रोज गनती लैलेना चाहिये सो नहीं कीन्हे कि काल्हि कितरी गोंवैरहैं आज कितरीहैं पूर्व दिनकी सरूपी गाय आयइनकी गौवनमें मिलीरही दुसरे दिन पुनः और विप्रको संकल्प दिये दौऊके विवादमें पूर्व विप्रने शाप दिया गिर गिट होना परा इति रघुनन्दन कहे भावजे नाते धर्म विचारते सब कार्य नहीं करते हैं तिनकी ऐसी गति होती है जैसी राजानुगकी गति भई २ ॥

कदाचिदेकांत उपास्थितं प्रभुरामं रमालालितपादपंकजम् ॥ सौमित्रिरासादित शुद्धभावनः प्रणम्य भक्त्या विनयान्वितो ब्रवीत् ३ त्वं शुद्धबोधोऽसि हि सर्वदेहिना मात्मास्य धीशोऽसि निराकृतिः स्वयम् ॥ प्रतीयसे ज्ञानदृशां महामते पादाब्जभृगाहि तमंगसंगिनाम् ४ अहंप्रपन्नोऽस्मि पदांबुजं प्रभो भवापवर्गतवयोगि भावितम् ॥ यथांजसा ज्ञानमपारवारिधिसुखं तरिष्यमि तथानुशाधि माम् ५ ॥

(कदाचित् एकांत उपास्थितं रमालालितपादपंकजं प्रभुरामं शुद्धभावनः आसादितसौमित्रिः भक्त्या प्रणम्य विनयान्वितः अब्रवीत्) किसी समय एकांत स्थानमें बैठे हुये लक्ष्मी करिके सेवित हैं पद कमल जिनके ऐसे प्रभु रामको देखि शुद्ध अन्तःकरण प्राप्त लक्ष्मण भक्ति करिके प्रणाम करि नम्रता पूर्वक बोलते भये ३ (हे महामते त्वं शुद्धबोधः असि हि सर्वदेहिनां आत्मा भसि) सर्व विषयको जानन हारे हे महामते रघुनाथजी आप शुद्धबोधहौ अर्थात् अखण्ड ज्ञानरूपहौ पुनः

सब भूतमात्रके आत्माहौ भाव अन्तर्यामी रूपते सबके अन्तरमें प्रकाश किहेहौ (निराकृतिःस्वयंअधीशःअसि) मायावश कर्माधीन मनुष्योंकी नाई स्थूल सूक्ष्म कारणादि शरीर रहित सदा स्वतंत्र लोकोद्धार हितस्वइच्छित अवतीर्ण होतेहौ क्योंकि अधीश सबके पालनहारहौ (पादाब्जभृंगआहितसंगसंगिनांज्ञानदृशांप्रतीयसे) ऐतारूप कौनको देखिपरता है आपके पदकमलोंके अनुराग रस पानमें भृंगवत् मनकरि सदासंग रहते हैं जे ऐसे भक्तोंके संगिनको देखिपरतेहौ ४ (हेप्रभोयोगिभावितंभवापवर्गेतवपदांबुजं अहंप्रपन्नोस्मियथाअंजसाअज्ञानं अपारवारिधिंमुखंतारिष्यामितथामांअनुशाधि) हेस्वामिन् जे योगिन करिकै ध्यान कियेजाते हैं अरु भवबंधनसे छुडावनेवाले ऐसे आपके पदकमलोंके मैं शरणमें प्राप्तहौ ताते जाभांति अनायास अज्ञानरूप अपार समुद्र सुखपूर्वक तरि जाई पूर्णज्ञान उदयहोय तैसी मोको शिक्षा दीजिये ५ ॥

श्रुत्वाऽथसौमित्रिवचोऽखिलंतदाप्राहप्रपन्नार्तिहरःप्रसन्नधीः ॥ विज्ञानमज्ञानतमोपशांतयेश्रुतिप्रपन्नंक्षितिपालभूषणः ६ आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिता क्रियाःकृत्वासमासादिततशुद्धमानसः ॥ समाप्यतत्पूर्वमुपात्तसाधनःसमाश्रयेत्सद्गुरुमात्मलब्धये ७ क्रियाशरीरोद्भवहेतुराहताप्रियाप्रियौतौभवतःसुरागिणः ॥ धर्मेतरौतत्रपुनःशरीरकंपुनःक्रियाचक्रवदीर्यतेभवः ८ ॥

(अथसौमित्रिवचःअखिलंश्रुत्वातदाप्रपन्नार्तिहरः क्षितिपालभूषणः प्रसन्नधीःअज्ञानतमोपशांतये श्रुतिप्रपन्नंविज्ञानंप्राह) शिवजी कहत हे गिरिजा अब लक्ष्मणके वचन सब सुनिकै ता समय में शरणागतोंके दुःख हरणहारे परमात्मा माधुर्यमें सब राजोंमें शिरोमणि ऐसे रघुनाथजी प्रसन्न मनहैं अज्ञानरूप हृदयको अन्धकार नाशहोने अर्थ वेदोक्त यथा तत्त्वमसि इत्यादि महावाक्यनको भाव दर्शाय विज्ञान कहतेभये ६(आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिताःक्रियाःकृत्वा) प्रथम अपने वर्ण तथा आश्रमको धर्म कर्मादि जो वेदमें वर्णित है यथा संध्या तर्पण वैश्वदेव यज्ञ दान व्रतादि क्रिया निर्वासिक करै (समासादितशुद्धमानसः) तिन क्रियोंकरि जब प्राप्तहोय शुद्ध अन्तःकरण तब(पूर्वतत्समाप्यउपात्तसाधनः) पूर्व क्रिया समाप्त करि पुनः ग्रहणकरै साधन यथा विवेक वैराग्य शमदमादिकरै (आत्मलब्धयेसद्गुरुसंसाश्रयेत्) अरु आत्मरूपकी प्राप्ती अर्थतत्त्व ज्ञाता उत्तम सद्गुरुको सेवन करै ७ (आहताक्रियाशरीरोद्भवहेतुः सुरागिणःधर्मइतरौप्रियअप्रियौतौभवतः तत्रपुनःक्रियापुनःशरीरकंभवः चक्रवत्इर्यते) हे लक्ष्मण पूर्व जन्मोंमें जीव प्रीतिपूर्वक शुभाशुभ कर्म कियाहै सोई शरीर उत्पन्न होनेको कारणहै कौनभांति जब जीव देह सुख साधन इंद्री विषयोंमें अत्यन्त प्रीतिकिया तब धर्म अरु धर्मते इतरअधर्म तथा प्रियमित्र वासुख अरुअप्रिय शत्रु अथवा दुःखयेदो ऊहेते भये जब धर्म अधर्म दोऊ भये तथा प्रिय अप्रिय येदोनों भये तब पुनःशुभाशुभादि अनेक प्रकार के कर्म करता है ताही वशपुनः शरीर पावता है इसी भांति संसार में चक्रकी नाई नित्यही जीव भ्रमता है ८ ॥

अज्ञानमेवास्यहिमूलकारणंतद्ज्ञानमेवात्रविधौ विधीयते ॥ विधैवतन्नाशविधौपटीयसीनकर्मतज्जंसविरोधमीरितम् ९ नाज्ञानहानिर्नचरागसंक्षयोभवेत्ततःकर्मसदोषमुद्भवेत् ॥ ततःपुनःसंसृतिरप्यवारितातस्माद्बुधोज्ञानविचारवान्भवेत् १० ननुक्रियावेदमुखेनचोदितातथैवविद्यापुरुषार्थसाधनम् ॥ कर्तव्यताप्राणभृतःप्रचोदिताविद्यासहायत्वमुपैतिसापुनः ११ ॥

(अस्यहिमूलकारणंअज्ञानंएवअत्रविधौ तत्तहानंएवविधीयतेतत्नाशविधौ विद्याएवपटीयसीतत् जंसकर्मनविरोधइरितं) इस संसारको निश्चय करिके मूल कारण अज्ञानहै तथा निश्चयकरि इहां संसारकी निवृत्त विधि में तिस अज्ञान को नाशही विधान करना चाहिये अरु ताके नाश विधिमें ब्रह्मविद्या निश्चयकरि समर्थ है ताको ग्रहण करै क्योंकि ब्रह्मज्ञान अज्ञानको विरोधीहै अरु अज्ञान से उत्पन्न अज्ञाने को भंश जो सवासिक कर्म सो नहीं अज्ञानको विरोधी कहागयाहै ताते सवासिक कर्म त्याग करना चाहिये ६ (नअज्ञान हानिःचनरागसंभयःभवेत् ततःकर्म सदोपउद्रवेत्ततःपुनःसं सृतिःअपिअवारितातस्मात्बुधःज्ञानविचारवान्भवेत्) जो न अज्ञान को नाश भया पुनः न विषयन में प्रीति नागभई तत्र सवासिक कर्म करनेते सहित दोष कर्मही उत्पन्न होतेहैं तब पुनः जीव संसारहीमें जन्मता मरता दुःख भोगताहै तब मोक्ष की आशा कहां है ताते बुद्धिमान् को चाहिये कि अज्ञानता विषयमें प्रीति सवासिककर्म त्यागि ज्ञानको विचारवान् होवै १० (ननुक्रियावेदमुखेनचा दिता तथापुरुषार्थसाधनविद्याएवप्राणभृतकर्तव्यताप्रचोदितासापुनःविद्यासहायत्वउपेति) निश्चय करि यज्ञादि कर्मोंको करना वेदमुख करिके कहागयाहै यथा यावज्जीवमग्निहोत्रंजुहोति अर्थात् यावत् जीव बुद्धि तावत् अग्निहोत्र अवश्यकरै तैसेही पुरुषार्थ साधन विद्या ज्ञानभी है यथा ब्रह्म विद्या प्रोति परम् अर्थात् ब्रह्मको जानने वाला ब्रह्महीको प्राप्तहोता है ताते प्राणवारी अर्थात् जीवों की जो कर्तव्यताभाव निर्वासिक अग्निहोत्रादि कर्म है तिनकी प्रेरणा अर्थात् इंद्री अतःकरण की शुद्धता सोई पुनःविद्या अर्थात् ज्ञानमें सहायत्वको प्राप्तहोताहै ताते कर्म ज्ञान दोऊ जीवके सहायक हैं ११ ॥

कर्माकृतोदोषमपिश्रुतिर्जगौतस्मात्पदाकार्यमिदंमुमुक्षुणा ॥ ननुस्वतंत्राध्रुवकार्य कारिणीविद्यानर्किचिन्मनसाप्यपेक्षते १२ नसत्यकार्योऽपिहियद्वध्वरःप्रकाक्षते न्यानपिकारकादिकान् ॥ तथैवविद्याविधितःप्रकाशितेर्विशिष्यतेकर्मभिरेवमुक्तये १३ केचिद्वदंतीतिवितर्कवादिनस्तदप्यसदृष्टविरोधकारणात् ॥ देहाभिमानाद् भिवर्द्धतेक्रियाविद्यागताहंकृतितःप्रसिद्ध्यति १४ ॥

कर्मअकृतःदोषःअपिश्रुतिःजगौतस्मात् मुमुक्षुणाइदंसदाकार्यध्रुवकार्यकारिणीविद्याननुस्वतंत्राम नसाअपिकिंचित्प्रअपेक्षते) हे लक्ष्मण वेद वेदांत में यह वादहै कि जो जीवकर्म नहीं करताहै ताको दोष होताहै अवश्यही ऐसा वेद कहाहै यथा वीरहावाएपदेवानांयोग्निमुद्गासयेत् अर्थात् वह पुरुष देवतों के वीर को नाश करनेवाला होताहै जो अग्निहोत्र कुण्डके अग्निको बुझायदेताहै ताते मुक्ति की इच्छा करने वालों करिके अग्निहोत्रादि यह कर्म सदा कियाजाय अरु वेदांत कहत कि ध्रुवकार्य को करनेवाला जो विद्याहै सो निश्चय करिके स्वतंत्रहै कर्मादि सहायताकी मन करिके भी किंचित नहीं अपेक्षा करती है १२ (नसत्यकार्यःअपिअध्वरःयद्वत्अन्यान्अपिकारकादिकान्हिप्रकाक्षतेतथा एवविधितःप्रकाशितैःकर्मभिःविद्यामुक्तयेविशिष्यते) पुनः किसी को मतहै कि जामें नहींहै स्वर्गादि सुख की इच्छा निश्चय करि ऐसी यज्ञ तथा और भी जे ज्ञानकारक साधनहैं तिनकी अपेक्षा करने वाले जे कर्म तैसेही संध्या तर्पणादि जे वेद विधियों प्रकाशित हैं तिन कर्मन करिके सहित विद्या मुक्तिके अर्थ समर्थहैं स्वयं नहीं १३ (केचित्त्वितर्कवादिनःइतिवदंतिगतअहंकृतितःविद्याप्रसिद्ध्यति देहाभिमानात्अभिक्रियावर्द्धतेतत्अपिअसत्सदृष्टविरोधकारणात्) हे लक्ष्मण कोऊ वितर्कवादी ऐसा कहत कि देहाभिमान नाशभयेते विद्या प्रसिद्धहोतीहै अरु देहाभिमानते क्रिया वर्द्धताहै जो अभिमा-

न असत् तासौ उत्पन्न सो क्रिया भी असत् है अरु विद्या सत् है इति सत् असत् परस्पर विरोध सब संसारको देखि परता है इति विरोध कारणते अर्थात् असत् मिले सत् भी असत् है जात तथा क्रियो मिले विद्या भी असत् है जायगी ताते सर्वथा क्रिया त्यागि विद्या ग्रहण करना चाहिये १४ ॥

विशुद्धविज्ञानविरोचनांचिताविद्याऽत्मवृत्तिश्चरमेतिभण्यते ॥ उदेतिकर्माखिलं कारकादिभिर्निहन्तिविद्याखिलकारकादिकम् १५ तस्मात्त्यजेत्कार्यमशेषतःसुधी विद्याविरोधान्नसमुच्चयोभवेत् ॥ आत्मानुसंधानपरायणःसदानिवृत्तसर्वेन्द्रियवृत्ति गोचरः १६ यावच्छरीरादिषुमाययात्मधीस्तावद्विधेयोविधिवादकर्मणाम् ॥ नेतीति वाक्यैरखिलंनिषिद्ध्यततज्ञात्वापरात्मानमथत्यजेत्क्रियाः १७ यदापरात्मात्मविभेदभेदकंविज्ञानमात्मन्यवभातिभास्वरम् ॥ तदैवमायाप्रविलीयतेजसासकारका कारणमात्मसंसृतेः १८ ॥

(विशुद्धविज्ञानविरोचनांचिताआत्मवृत्तिःचरमाइतिविद्याभण्यतेकर्मअखिलकारकादिभिः उदेति विद्याअखिलकारकादिकंनिहन्ति) काहेते क्रिया त्यागना चाहिये कि इन्द्री विषय अन्तःकर्णकेकामादि जीवको रजतमादिमल रहित शुद्ध विज्ञान अनुभव प्रकाशयुतआत्मावृत्तिसर्वोपरिव्रह्म प्राप्तिरूपाइसको विद्याकहेतेहैं अरु कर्म तो सम्पूर्ण विषय व्यापारों करिके उदय होताहै अरुविद्या सब व्यापारोंकोनाश करतीहै १५ (तस्मात्सुधीःअशेषतःकार्येत्यजेत्विद्याविरोधात्समुच्चयःनभवेत्सर्वेन्द्रियवृत्तिगोचरःनिवृत्तसदाआत्मानुसंधानपरायणः) ताते ज्ञानी पुरुष सम्पूर्ण कार्योको त्याग करे क्योंकि कर्मोते विद्याते विरोधहै ताते समुच्चय अर्थात् कर्मज्ञान एक साथ नहीं हैसक्ता है तातेइन्द्रिनकीवृत्ति विषयनते खेचि-परमात्म रूपके ध्यान में परायण रहै १६ (यावत्माययाशरीरादिषुआत्मधीःतावत्विधिवादकर्मणं विधेयः अथ परमात्मानंज्ञात्वानेतिइतिवाक्यैःअखिलंनिषिद्ध्यततक्रियात्यजेत्) अब पूर्ववाद निषेध करि उचित कहत हे लक्ष्मण जबतक मायाकरिके आवृत जीव देह गेहादिकों विषे आत्मबुद्धी अर्थात् में ब्राह्मण में क्षत्री इत्यादि देहोंको सत्यमाने तबतक अंतःकरण शुद्धाके अर्थ वेद भाज्ञाते अग्निहोत्र संध्यादि कर्म करै अरु जीवत्व हीन जब आत्मबुद्धी आवै परमात्मरूप को जानि नेति ऐसावादी जो वेद ताके बचनों करिके सम्पूर्ण देह व्यवहार को मिथ्या मानि तब कर्म भी त्यागकरे १७ (यदापरा त्मआत्मविभेदभेदकंविज्ञानंभास्वरंआत्मनिएवभातितदाआत्मसंसृतेः कारणंसकारकामायाएवअंजसा प्रविलीयते) जासमय में परमात्म आत्मको जो विशेषि भेद है कारण वश जीव बुद्धी ताको भेदक नाश करने वाला जो विज्ञान स्वयं प्रकाश रूप ताको प्रभाव जब आत्मामें प्रकाश करती है अर्थात् आत्मबुद्धी अंतःकरणकी वृत्ति जब अखण्ड ब्रह्माकारहोती है तब जीवात्माके भवसागरको कारण जो है सो सहित अपने व्यापार माया भी नाशहोतीहै १८ ॥

श्रुतिप्रमाणाभिविनाशिताचसाकथंभविष्यत्यपिकार्यकारिणी ॥ विज्ञानमात्रादम लाहितीयतस्तस्मादविद्यानपुनर्भविष्यति १९ यदिस्मनष्टानपुनःप्रसूयतेकर्ताऽहम स्यातिमतिःकथंभवेत् ॥ तस्मात्स्वतंत्रानकिमप्यपेक्षतेविद्याविमोक्षायाविभाति केवला २० ॥

(श्रुतिप्रमाणाभिविनाशिताअपिकार्यकारिणीसाकथंचभविष्यतिअमलःअहितीयतःविज्ञानमात्रात्

तस्मात्तत्रविद्यापुनःनभविष्यति) श्रुति यथा तत्त्वमसि इतिमहावाक्यार्थ प्रमाण करिके विशेषि नाश हैगई जो कार्यकारिणी माया सो कैसे पुनः होइगी अर्थात् कारिणी माया वाको कही जो आत्मरूपमें आवरणकरि अखंड आनन्द खैचि जीवबुद्धी करिदिया अरु कार्यमाया वाको कही जो जीव की चैतन्यता खैचि देहबुद्धी करिदिया सोई जीव जब वेदवाक्यार्थ विचारा यथा तत्त्वमसि तत् कहे सो सच्चिदानन्द त्वंकहे तू असि कहे है अर्थात् सामवेद कहत हे जीव सोई सच्चिदानन्दतूहै इस वाक्य को प्रमाण किया देह जीवत्व त्यागि आत्म रूपको सत्यमाना तब कार्य कारिणी माया नाशहै पुनः नहीं है सती है काहेते जब अमल अद्वितीय विज्ञान मात्रते नाशभई तातेअविद्या पुनः नहीं उत्पन्न होतीहै १६ (यदिस्मनष्टापुनःनप्रसूयतेअहंकर्ताइतिमतिःअस्यकथंभवेत्तस्मात्स्वतंत्राविद्याकेवलाविभातिमोक्षायकिमपिनअपेक्षते) हेलक्ष्मण जाके अंतरमें विज्ञान प्रकाश करिके अविद्या नाशभई पुनः कार्य कारिणी माया नहीं उत्पन्नहोती है तब न देहबुद्धीहोवै न जीवबुद्धीहोवै तब में कर्मको करने वाला कर्ताहोई ऐसी बुद्धि वाके कैसे हैसती है यथा अंधेरे में रसरी देखिसर्पकी भ्रमभई जब उजियारे में देखि रसरी जानि गया तब कैसे पुनः भ्रम होसती है तेसे जब विज्ञान प्रकाशभया तब अहंबुद्धी नहीं हैसती ताते स्वतंत्रा विद्या केवला विभाति अर्थात् स्वयं प्रकाश रूपा है ताते मोक्ष के अर्थ क्रिया योगादि किसी पदार्थ की अपेक्षा नहीं करती भाव सहायता नहीं चाहती हे २० ॥

सातैत्तिरीयश्रुतिराहसादरंन्यासंप्रशस्ताखिलकर्मणांस्फुटम् ॥ एतावदित्याहच
वाजिनांश्रुतिज्ञानंविमोक्षायनकर्मसाधनम् २१ विद्यासमत्वेनतुदर्शितस्त्वयाक्र
तुर्नदृष्टांतउदाहृतःसमः ॥ फलैःपृथक्त्वाद्बहुकारकैःक्रतुःसंसाध्यतेज्ञानमतोवि
पर्ययम् २२ सप्रत्यवायोह्यहमित्यनात्मधीरज्ञप्रसिद्धानतुतत्त्वदर्शिनः॥ तस्माद्बुधे
स्त्याज्यमपिक्रियात्मभिर्विधानतःकर्मविधिप्रकाशितम् २३ ॥

(सातैत्तिरीयश्रुतिःसादरंस्फुटंआहप्रशस्ताअखिलकर्मणांन्यासंचवाजिनांश्रुतिःएतावत्इतिआहवि
मोक्षायज्ञानंकर्मसाधनं) हे लक्ष्मण सोई बात प्रसिद्ध तैत्तिरीयभारण्यकी श्रुति आदरपूर्वक स्पष्ट
कहतीहै कि मुक्ति हेत ज्ञान चाहिये अरु उत्तम भी सम्पूर्ण कर्म त्यागिदेना चाहिये यथा न कर्मणां
न प्रजयाधनेनत्यागेनैकेनामृत्वमानशुःपुनः वाजसनेयि शाखावाले कीश्रुति इसबातको ऐसेहीकहत
कि विशेषि मोक्षके अर्थ ज्ञानही साधनहै कर्म साधन नहींहै यथा एतावदरेखत्वमृतत्वं २१ (विद्यां
क्रतुः समत्वेत्वयानदर्शितःतुफलैःपृथक्त्वात्समःदृष्टांतनउदाहृतःक्रतुःबहुकारकैःसंसाध्यतेअतःज्ञानं
विपर्ययम्) हेलक्ष्मण जो समुच्चयवादीको मतहै कि मुक्तिके अर्थ विद्या अरु यज्ञादि क्रिया दोऊ
बराबरहै सो विद्या अरु क्रिया दोऊ बराबर तुम करिके न देखीजाय पुनः विद्याको फलमोक्ष अरु
क्रियाको फल स्वर्गादिहै ताते दोउनके फल करिके भेदहै ताते समता दृष्टांत नहींकहबे योग्यहै पुन
सब व्यवहार त्यागि शुद्ध आत्मरूपते ज्ञान साध्यहै अरु कर्म बृहुते व्यापारों करिके यथा अहंमम
अभिमान अन्तरमें अरु देश कालादि नियमवाह्य इत्यादि बहुते व्यवहारों करिके साध्यहै ताते कर्म
ज्ञानके आवरण भी प्रतिकूलहै २२ (क्रियाआत्मभिःविधानतःकर्मविधिप्रकाशितंअहंइतिअनात्मधी
अज्ञप्रत्यवायोहिप्रसिद्धातुतत्त्वदर्शिनःसप्रत्यवायोनतस्मात्बुधैःत्याज्यं) जे कर्म करिके ताके फलकी
बासनामें आसतहै अन्तःकर्ण करिके तिनको विधि विधान सहित कर्म करिकेकी वेदने प्रसिद्धकिया
होनेहै यह अहंकारहै यथा हम ब्राह्मण विद्वान् ऐसी अनात्म अर्थात् देहबुद्धी तिन अज्ञानोंकोप्रत्य-

वायोहि अर्थात् न कर्म करनेको प्रायश्चित्त निश्चय करिहोताहै यह वेदमें प्रसिद्धहै पुनः देहाभिमान जीवबुद्धी रहित आत्मतत्त्वदर्शिनको न कर्म करनेको सो प्रायश्चित्त नहीं होताहै ताते ज्ञानी पुरुषनकरिके कर्मत्यागहै २३ ॥

श्रद्धान्वितस्तत्त्वमसीतिवाक्यतोगुरोःप्रसादादपिशुद्धमानसः ॥ विज्ञायचैकात्म्यमथात्मजीवयोःसुखीभवेन्मेरुरिवाप्रकंपनः २४ आदौपदार्थावगतिर्हिकारणंवाक्यार्थविज्ञानविधौविधानतः ॥ तत्त्वंपदार्थोपरमात्मजीवकावसीतिचैकात्म्यमथानयोर्भवेत् २५ प्रत्यक्परोक्षादिविरोधमात्मनोर्विहायसंगृह्यतयोश्चिदात्मताम् ॥ संशोधितांलक्षणयाचलक्षितांज्ञात्वास्वमात्मानमथाद्वयोर्भवेत् २६ ॥

(श्रद्धान्वितःशुद्धमानसः अपिगुरोःप्रसादात् तत्त्वमसिइतिवाक्यतःअथआत्मजीवयोःएकआत्म्यं विज्ञायचमेरुः इवअप्रकंपनः सुखीभवेत्) गुरुवाक्य शास्त्र आज्ञामें विश्वास इति श्रद्धायुक्त विषय कामना रहित शुद्ध मानस भी तत्त्वज्ञ उत्तम गुरुके प्रसादते तत् त्वंअसि इति वाक्यार्थते आत्मजीवकी एकता जानि अखंड आत्माकार तृप्तिहै पुनः सुमंरुसम अचल विषय वासना रहित साक्षात् परमात्मरूपके आनन्दको प्राप्तहवै सुखी होताहै २४ (आदौपदार्थोअवगतिःविधौविधानतःवाक्यार्थविज्ञानकारणंतत्त्वंपदार्थोपरमात्मजीवकोअनयोःचैकात्म्यंअथअसिइतिभवेत्) प्रथम तो जो वाक्य पदोंके अर्थोंकी आगति जो जीव ब्रह्ममें द्वैतबुद्धी सोई विधि विधानते वाक्यार्थ विचार सोई निश्चय करि विज्ञानको आदि कारणहै सो तत् और त्वंपदोंको अर्थ परमात्म जीवहै इन दोऊको एकात्म्यहो ना सोई अथ असिपदको अर्थ भया यथा हे जीव सोई परमात्म तूहै २५ (प्रत्यक्परोक्षादिविरोधं आत्मनःतयोर्विहाय चिदात्मतां संगृह्यच लक्षणयासंशोधितां लक्षितांस्वमात्मानंज्ञात्वा अथअद्वयोर्भवेत्) दुखसुखादि प्रत्यक्ष अहंममादि देहबुद्धी जीवसो प्रत्यक्है अरुस्वयं प्रकाश अखंड आनन्दरूप जाकीगति वेदहू नहींजानत सो परमात्म परोक्षहै इत्यादि जो विरोध जीवात्माको है तिनको त्यागि चिदात्म रूप ग्रहण करि पुनः लक्षणा करिके शोधि शुद्धरूप पहिचानि अपने आत्मरूपको जानि भाव देहाभिमान जीवबुद्धी त्यागि शुद्धआत्मरूप अपना को जानि तत्र द्वैतबुद्धी रहित अद्वैत होताहै लक्षणा को अर्थ आगे कहा जायगा २६ ॥

एकात्मकत्वाज्जहतीनसंभवेत्तथाऽजहत्लक्षणताविरोधतः ॥ सोऽयंपदार्थाविवभागलक्षणायुज्येतत्त्वंपदयोरदोषतः २७ ॥

(एकात्मकत्वाज्जहतीनसंभवेत्) इहालक्ष्यार्थ याते कहेकी वाक्यार्थ सो जीव ब्रह्मकी एकतानहीं बनिंसकत काहेते तत्पदको वाक्यार्थ मायोपाधिक सर्व ज्ञत्वादि विशिष्ट चैतन्य अरुत्वंपदको वाक्यार्थ माया कार्य्य आवद्यो पाधिक अल्पज्ञत्वादि विशिष्ट चैतन्य इति सवेज्ञ अल्पज्ञ विरुद्ध अर्थ होनेते वाक्यार्थते दोऊकी एकता सिद्ध नहीं है अरु लक्ष्यार्थते उपाधि रहित शुद्ध चैतन्य दोऊहैं तामें दोऊकी एकताबनि सक्तीहै यथा हनूमानाह रावण प्रति ॥ त्वं ब्राह्मणो ह्युत्तम वंश संभवा पौलस्त्यपुत्रोऽसि कुवेरबांधवः ॥ देहात्म बुद्ध्या पिचपश्य राक्षसो नास्त्यात्म बुद्ध्याकिमुराक्षसो नहि ॥ पुनः रघुनन्दन प्रति कहे ॥ देह बुद्धि त्वदासोऽहं जीव बुद्धित्वदंशक ॥ आत्म बुद्धित्वमेवोऽहमितिमे निश्चला मतिः सो लक्षणा यथा तर्क संग्रहेन्या यवोधिन्या अथकेयं लक्षणाशक्यं सम्बन्धो लक्षणा साचन्निधा यथा जहदज हज्जह

दजहद्रेदात्त्वर्तते) अर्थात् इस लक्षणामें तीनि भेद हैं प्रथम् जहत् दूसरी अजहत् तीसरी जहदजहत् तहां तत्त्वंअसि इन पदोंको अर्थ जो परमात्म आत्मकी एकताहै सो जहत् लक्षणा करिकै नहीं संभवित है काहेते जहां वाचक अपना अर्थअन्यको दैदेवै ताको जहत् लक्षणाकही (यथा गंगायांघोषः) इस वाचक को अर्थ यह भया कि गंगाजी में अहीर बसते हैं तहां गंगाजल प्रवाह में मनुष्योंको वास नहीं हैसक्ताहै ताते गंगाको जल प्रवाह अपना अर्थ सो समीप को दैदिया तब यह अर्थ सिद्धभया कि गंगाके समीप अहीर बसते हैं इसी लक्षणाकरि जो तत्त्वंअसि पदोंको अर्थ लक्ष कियाजाय तौ तत्पदको अर्थ है सो परमात्म यह अर्थ परमात्मके समीपमें हवैजाय यथा हे जीव सोई परमात्मको समीपीतू है तब एकता कहांभई पुनः (अजहत्लक्षणताविरोधतः) फिर जो अजहत् लक्षणाकरिकै अर्थ लक्षित कियाजाय ताहू सों विरोध आवता है काहेते जहां वाचक को अर्थ बनारहै ताही के अंतरवक्ताकी आशय विचारि कछु अधिक अर्थ ग्रहणहोय ताको अजहत् लक्षणा कही (यथाकाकेभ्योदधिरक्षताम्) अर्थात् कौवोंते दहीकी रक्षा कीन्हेउ इस वाक्यार्थ में वक्ताकी यह आशयहै कि काक विल्ली कुत्तादि यावत् दही के घातकहैं तिन सबोंते रक्षा किहेउ इस लक्षणाकरिकै अर्थ लक्षित किया गया तौ तत्पद को अर्थ परमात्म है सो बनारहा अरु वक्ताके मनकी आशयते सच्चिदानन्द सदा एकरस सर्वज्ञ इत्यादि अधिक ग्रहण कियागया पुनः त्वंपदको अर्थ जीव सों बनारहा अरु वक्ताकी आशय ते मायावश परिच्छिन्नजड अल्पज्ञादि अधिक ग्रहणभया तौ दोऊ के अर्थमें परस्पर विरोधहै यथा हे जीव सर्वज्ञ परमात्म सोई अंशतू अल्पज्ञहै ताते एकता नहीं हवैसक्ती है (तत्त्वंपदयोः भागलक्षणा युज्येतसःअयंपदार्थोऽवबोधोपतः) ताते हे लक्ष्मण तत्त्वं ये दोऊ पदनमें भाग अर्थात् जहदजहत्लक्षणा योजित कीजिये यथा सोई यह पदार्थ है इसभांति अदोषित अर्थ होता है अर्थात् जहदजहत् लक्षणाको लक्षण (यथासोऽयंदेवदत्तः) अर्थात् सोई यह देवदत्तहै यामें दोऊ लक्षणनको भावहै यथा यह देवदत्त पूर्व भूषणयुक्त पुष्टांगरहै अब भूषण रहित कृशांग है तामें जहत् करिकै अभूषणता कृशता अपना अर्थ देवदत्त के नाम को दिया अरु अजहत् करिकै देवदत्त को नाम पूर्व के प्रभाव को अधिक ग्रहण किया तथा तत्पदको अर्थ परमात्म है अरु त्वंपदको अर्थ जीव अल्पज्ञ है सो जहत् करिकै जीवत्व अल्पज्ञता अपना अर्थ आत्मरूप को दिया अरु अजहत्करि आत्मरूप अनो अर्थ निर्विकार शुद्ध अमल ताको भी राखा अरु वक्ताकी आशय विचारि सदा एकरस सत्चित् आनन्दादि अधिक ग्रहण किया अर्थात् वाक्यार्थ विचारि देहाभिमान जीव बुद्धी त्यागि शुद्ध आत्मरूपकी प्रत्यय प्रवाह वृत्ति तैल धारवत् सदा एकरस परमात्म रूप में लय वनी रहना इति दोष रहित आत्म परमात्म रूप की एकता होती है १७ ॥

रसादिपंचीकृतभूतसंभवंभोगालयंदुःखसुखादिकर्मणाम् ॥ शरीरमाद्यंतवदादि कर्मजंमायामयंस्थूलमुपाधिमात्मनः २८ ॥

(रसादिपंचीकृतभूतसंभवंदुःखसुखादिकर्मणां भोगालयंआदिअंतवत्कर्मजंमायामयंस्थूलंशरीरंआत्मनःउपाधिं) रस आदि जो पांचों तन्मात्रायथाशब्दस्पर्शरूपरसगंध इत्यादि पांचों के कियेहुये जे पञ्चभूत यथा आकाश वायु अग्नि जल भूमि इनभूतोंसे उत्पन्न जो दुःख सुखादिकर्म यथा परहानि पर स्त्री गमनचोरी हिंसादि दुःखद कर्महैं परोपकार तीर्थ दानादि सुखद कर्म हैं इत्यादि कर्मन के भोगने को मंदिर अरु उत्पन्न विनाश धर्म युक्त पूर्व कर्मोंसे उत्पन्न जो मायामय स्थूल शरीर सो आत्मा को उपाधि कहते हैं २८ ॥

सूक्ष्ममनोबुद्धिदर्शेन्द्रियैर्युतंप्राणैरपंचीकृतभूतसंभवम् ॥ भोक्तुःसुखादेरनुसाधनं
भवेच्छरीरमन्यद्विदुरात्मनोबुधाः २६ अनाद्यनिर्वाच्यमपीहकारणमायाप्रधानं
तुपरंशरीरकम् ॥ उपाधिभेदात्तुयतःपृथक्स्थितंस्वात्मानमात्मन्यवधारयेत्क
मात् ३० ॥

(मनःबुद्धिप्राणैःदर्शेन्द्रियैःयुतंअपंचीकृतभूत संभवंसूक्ष्मंशरीरंसुखादेःभोक्तुःअनुसाधनंभवेत्आत्म
नःअन्यत्बुधाःविदुः) संकल्पविकल्पात्मक जोमन निश्चयात्मक जोबुद्धि पुनः प्राणहृदयकीवायुअपान
गुदा की वायु समान नाभि की वायु उदान कंठ की वायु व्यान सर्वांग वायु इति पंच प्राण तथा
श्रवण त्वचा नेत्र रस नाघ्राण इति पंच कर्मेन्द्री तथा हाथ पद मुख गुदा लिंग इति पंच कर्मेन्द्री
इत्यादि सत्रह तत्त्व करिके युत शब्दादि सूक्ष्म भूतों से उत्पन्न सूक्ष्म शरीर जो सुखादि भोग को
करनेवाला जीव ताको साधन होता है भाव बिना सूक्ष्म शरीर रहे स्थूल शरीर मृतक है जाता है
तिस सूक्ष्म शरीर को भी आत्मासे बिलग करि ज्ञानीलोग जानते हैं २६(अनादिअनिर्वाच्यमपीह
मायाप्रधानंतुपरंकारणंशरीरकंडपाधिभेदात्तुयतःपृथक्स्थितंस्वआत्मानंक्रमात् आत्मनिअवधारयेत्)
अनादि जाकी आदि उत्पत्ति कोऊ जानता नहीं पुनः अनिर्वाच्य अर्थात् सत् है वा असत् है ऐसा
कहवे को अशक्य इति निश्चय जगत् को उपजावने वाली माया प्रधान अर्थात् जो लोक रचना
हेतु सत्त्व रज तमादि गुणों को धारण किहे है त्यहि मयी पुनः स्थूल सूक्ष्म जो जीवोपाधि शरीर
हैं तिनते पर ईश्वरोपाधि जो कारण शरीरहै ताकी महाउपाधि भेदते पुनः जो चैतन्य आत्मरूप
भूलि जीव बुद्धि है परमात्म ते बिलग स्थित भया अर्थात् सूक्ष्म स्थूलादि देहाभिमानी भयासो सब
सों रहित है शुद्ध अमल जो अपनो आत्माहै ताहि श्रवण मनन निदिध्यासनादि क्रम क्रम करिके
आत्मही में परमात्म को निश्चय करै ३० ॥

कोशेषुपंचस्त्रपितत्तदाकृतिर्विभातिसंगात्फटिकोपलोयथा ॥ असंगरूपोयमजो
यतोऽद्वयोविज्ञायतेस्मिन्परितोविचारिते ३१ बुद्धेस्त्रिधावृत्तिरपीहदृश्यतेस्वप्नादि
भेदेनगुणत्रयात्मनः ॥ अन्योऽन्यतोऽस्मिन्व्यभिचारतोमृषानित्येपरंब्रह्माणिकेव
लेशिवे ३२ देहेन्द्रियप्राणमनश्चिदात्मनांसंघादजसंपरिवर्ततेधियः ॥ वृत्तिस्त
मोमूलतयाज्ञलक्षणायावद्भवेत्तावदसौभवोद्भवः ३३ ॥

(पंचसुकोशेषुअपितत्तत्आकृतिःविभाति यथासंगात्फटिकोपलःअस्मिन्परितःविचारितेअयंअ-
संगरूपः अजःयतःअद्वयःविज्ञायते) अन्नमय प्राण मय मनोमय विज्ञानमय आनंद मयइत्यादि पांच
कोशों में परि आत्मा भी तैसी तैसी आकृति दर्शित होत कौन भांति जैसे नाले पीत अरुण हरि-
तादि रंगों के संगते अमल श्वेत फटिक मणि भी रंगदार देखात अरु बिलग करनेते श्वेतही देखात
तैसेही तत्त्वमसि इस महा वाक्यार्थ में अच्छी प्रकार विचार करत संते यह आत्मा भी असंग रूप
अजन्मा देखाती है ताते आत्म परमात्म में अद्वैत जाना जाता है ३१ (स्वप्नादिभेदेनइहबुद्धेः
गुणत्रयात्मनःत्रिधावृत्तिःअपिदृश्यते अस्मिन्अन्योअन्यतःव्यभिचारतः केवलेशिवेनित्येपरंब्रह्मणि
मृषा)जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादि अवस्थाओं केभेदकरिके इस जीव बुद्धीकी त्रिगुणात्ममय अर्थात् सतोगुणी
रजोगुणी तमोगुणी इति तीनि प्रकार की वृत्ती देखि परती हैं सो इन अवस्थाओं में परस्पर व्यभि-
चारहै यथा जाग्रत्स्वप्न को नाश करि सुषुप्ति होती जाग्रत् सुषुप्तिको नाशकरि स्वप्नहोत स्वप्नसुषुप्ति

नाश करि जायत् होत इति व्यभिचार ते त्रिधा बुद्धि तृती तृथाहैं ताते केवल आनंद रूप त्रिगुण अवस्थों ते अतीत नित्य एक रस परब्रह्म विषे बुद्धि की तृती आरोपण करना तृथाहैं ३२ (देहइंद्रि यप्राणमनःसंघात् चिदात्मनांअजस्रपरिवर्तते तमोमूलभ्रजलक्षणातयाधियःवृत्तिःयावत्तुभवेत् तावत्तु सौभवउद्भवः) हम विप्र हमक्षत्री इति देहाभिमान शब्दस्पर्श रूप रस गंध मैथुनादि विषयनमें इंद्री आसक्त प्राणोंमें अपनपौ संकल्प विकल्पादि मनको वेग इत्यादि बहुतोंते चैतन्य आत्माको नित्यही सृंग रहना तथा मोह की मूल अज्ञानता त्यहि करिकै युक्त बुद्धि की वृत्ति अर्थात् भ्रजवत् बुद्धि को व्यापार जब तक होता है तब तक यह संसार बंधन अर्थात् जन्म मरण दुःख सुख होतही रहता है ३३ ॥

नेतिप्रमाणेननिराकृतोखिलाहदासमास्वादिताचिदूधनामृतः ॥ त्यजेदशेषजगदा
त्तसद्रसंपीत्वायथाऽभःप्रजहातितत्फलम् ३४ कदाचिदात्मानमृतोनजायतेन
क्षीयतेनापिविवर्द्धतेऽनवः ॥ निरस्तसर्वातिशयःसुखात्मकःस्वयंप्रभः सर्वगतोऽम
द्वयम् ३५ एवंविधेज्ञानमयेसुखात्मकेकथंभवोदुःखमयःप्रतीयते ॥ अज्ञानतोऽ
ध्यासवशात्प्रकाशतेज्ञानेविलीयेतविरोधतःक्षणात् ३६ ॥

(नेतिप्रमाणेनअखिलःनिराकृतः चितूधनामृतःहृदासमास्वादितअशेषं जगदात्तत्यजेत्तथासतर संभ्रंसःपीत्वातत्फलंप्रजहाति) नेति नेति कहनेवाला जो वेद ताकी महावाक्य तत्त्वमसि इत्यादि प्रमाण करि सत्यमानि सम्पूर्ण देह व्यवहारको मिथ्याकरि सारांश आत्मचैतन्य समूह अमृत हृदय में आस्वादित पानकरि तब असारजानि सम्पूर्ण संसारको त्यागकरै कौनभांति यथा भाव नारंगी मीठा निंबू नारियर आदि जिनमें उत्तम मधुर रस जल तिसको पानकरि वीज छिकला मात्र फल त्याग करिदेते हैं लोकजन तद्वत् ३४ (आत्मानकदाचित्जायतेनमृतः नक्षीयतेनापिविवर्द्धतेअनवः स र्वातिशयःनिरस्तसुखात्मकःस्वयंप्रभः सर्वगतःअयंअद्वयः) अब देहाभिमानी जीवते विलक्षण आत्म- रूप देखाव अर्थात् देह उत्पन्न होत नामहीन होत नवीनहोत वृद्धहोत क्षीणहोत मृतकहोत इतिपट्ट विकार देहके धर्म हैं अरु आत्मान कभी उत्पन्नहोइ नमरै न कभी दुर्बलहोइ न कभी बढता है अरु न कभी नवीन होवै अवस्था भेद रहित सदा एकरस देह अन्तःकरणादि सबको अत्यन्त त्यागि अखंड आनन्दरूप स्वयं प्रकाशमान जीवांतःकरणादि सबमें व्यापक ताते यह आत्माद्वैत रहितहै ३५ (एवं विधेज्ञानमयेसुखात्मकेदुःखमयःभवः कथंप्रतीयसेअज्ञानतः अध्यासवशात्प्रकाशतेविरोधतःज्ञानेक्षणा त्विलीयेत्) इसप्रकार ज्ञानमय होनेते अखण्ड आनन्दरूप आत्मामें दुःखमय संसार कैसे प्रकाश है सक्ताहै अरु पूर्व जो भया ताको कारण यहहै कि अज्ञान अर्थात् देह बुद्धीते अध्यासवशते अर्थात् मैं मेरा तेरा इति भ्रम बुद्धि भयेंते संसार प्रकाश भयारहै सो यथातमके विरोधी सूर्य उदय होतही तमनाशहोत तथा अज्ञानको विरोधी ज्ञान उदयहोत सन्ते क्षणमें अज्ञान नाशहोत कारणके नाश भये कार्य संसार आपही नाश हवैजाता है ३६ ॥

यदन्यदन्यत्रविभाव्यतेभ्रमादध्यासमित्याहुरमुंविपश्चितः॥ असर्पभूतेहिविभाव
नयथारज्ज्वादिकेतद्वदपीश्वरेजगत् ३७ विकल्पमायारहितेचिदात्मकेऽहंकारए
षःप्रथमःप्रकल्पितः ॥ अध्यासएवात्मनिसर्वकारणेनिरामयेब्रह्मणिकेवलेपरे३८

इच्छादिरागादिसुखादिधार्मिकाः सदाधियः संसृतिहेतवः परे । यस्मात्प्रसुप्तो तदभावतः परः सुखस्वरूपेण विभाव्यते हि नः ३६ ॥

(भ्रमात्त्यत् अन्यत् अन्यत्र विभाव्यते अमुं अध्यासं इति विपरिचयः आहुः यथारज्ज्वादिके असर्पभूते अविभाव्यते तद्वत् अपि ईश्वरे जगत्) बुद्धि भ्रम ते जहां और वस्तुमें और वस्तुकी कल्पना की जाती है यही अध्यास है ऐसा ज्ञानी जन कहते हैं जैसे अधियारेमें रसरी परी है यद्यपि वह सर्प नहीं है परन्तु तमकी सहायताते सर्पही भासता है ताही भांति ईश्वरमें भी जगत् भासता है भाव झूठा लोह व्यवहार सोभी मोहवश सांचा देखाता है यही अज्ञान जगत्को कारण है ३७ (विकल्पमायारहिते चिदात्मके सर्वकारणे निरामये केवले परे ब्रह्मणि आत्मनि प्रथमः अहंकारकल्पितः एषः एव अध्यासः) विकल्प द्वैतबुद्धी कारण माया रहित चैतन्यरूप सबको आदि कारण शोक रहित आनन्दधन अद्वितीय ऐसे परब्रह्म आत्माविषे पूर्वही जो अहंकार कल्पित भया यथा मैं ब्राह्मण विद्वान् महात्मा मैं क्षत्री राजा तेजस्वी इत्यादि अभिमान भया सोई अध्यास संसारको कारण है ३८ (रागादिसुखादि इच्छादिधार्मिकाः सदाधियः परे संसृतिहेतवः यस्मात्प्रसुप्तो तत्प्रभावतः पुरः सुखस्वरूपेण विभाव्यते हि नः) मित्रमें राग शत्रुमें द्वेष सुखकी इच्छा दुःखकी अनिच्छा इत्यादि द्वंद्वही धर्म जिन्होंके ऐसी जो बुद्धि है सोई परे आत्मरूपमें संसार होनेको कारण है काहेते जिस कारणसे सोयगये परतिस बुद्धिको अभाव होनेते अर्थात् सोवतमें द्वैतबुद्धिकी वृत्ति नहीं रहि जाती है तब पररूप आत्मा सबको आनन्द स्वरूप करिके देखाता है अर्थात् सोवनेवालेको जागेपर यही भास होता है कि मैं सुखपूर्वक सोवतारहों कछुभी नहीं जाना ताते यही निश्चय होता है कि बुद्धिही में संसार रहता है आत्मरूपमें निश्चय करिके संसार नहीं है ३६ ॥

अनाद्यविद्योद्भवबुद्धिविम्बितो जीवः प्रकाशोऽयमितीर्यते चितः ॥ आत्मधियः साक्षितया पृथक्स्थितो बुद्ध्या परिच्छिन्नपरः स एव हि ४० चिद्विंबसाक्षात्माधियां प्रसंगतस्त्वेकत्रवासादनलात्कलोहवत् ॥ अन्योऽन्यमध्यासवशात् प्रतीयते जडाजडत्वं च चिदात्मचेतसोः ४१ गुरोः सकाशादपिवेदवाक्यतः संजातविद्यानुभवो निरीक्ष्यतम् ॥ स्वात्मानमात्मस्थमुपाधिवर्जितं त्यजेदशेषं जडमात्मगोचरम् ४२ ॥

(अनाद्यविद्या उद्भवः बुद्धौ चितः प्रकाशः विवितः अयं जीवः इति ईर्यते विषः साक्षि आत्मा तया पृथक्स्थितः बुद्ध्या अपरिच्छिन्नपरः एव हि) अनादि जो अविद्याताके संयोग कारणसे बुद्धि भई तिस बुद्धिमें चैतन्य आत्मकी प्रकाश परी सोई प्रतिविंब भई यही जीव है ऐसा कहते हैं अरु बुद्धिको साक्षी आत्मा सोतौ तिस बुद्धिकरिके विलग स्थित रहता है ताकी प्रतिविंबमात्र जीव है सोई जब ज्ञानके प्रभावते बुद्धि करिके अपरिच्छिन्न भया बुद्धिधर्मको त्याग किया तब सोई जीव परमात्मरूपही होता है ४० (चिदात्मचेतसः अन्योऽन्यमध्यासवशात् जडाजडत्वं च प्रतीयते चित् विंवसन्न आत्मधियां प्रसंगतः तु एकत्रवासात् अनलात्कलोहवत्) चिदात्म चैतन्य आत्माचेतसः जो बुद्धि इन दोनों को परस्पर संयोगवशते दोऊमें जड़ता अजड़ता प्रतीत होती है अर्थात् बुद्धिकी जड़ता आत्मामे दर्शित होती है आत्माकी चैतन्यता बुद्धिमें दर्शित होती है ताको कारण कि चैतन्यकी बिंबजो जीव सहित इंद्रिय आत्मा बुद्धि इनको मिलान पुनः एकत्रवासते परस्पर गुणनको मिलान होगया कौन भांति यथा अग्नि में तपाई हुई लोहमें अग्नि की प्रकाश द्रावकता दर्शत अग्निमें लोहकी आकार दर्शत तैसही आत्मबुद्धि-

की गतिहैं ४१ (गुरोःसकाशात्वेदवाक्यतःअपिविद्यानुभवःसंजातआत्मस्थंस्वात्मानंउपाधिवर्जितं तंनिरीक्ष्यजडात्मगोचरंअशेषंत्यजेत्) गुरुके उपदेशते वेदकी महावाक्यार्थते निश्चय करि ज्ञान अनुभव उत्पन्न भया जाके सो अन्तरमें स्थित जो अपनी आत्मा उपाधि रहित ताहि अवलोकन करै अरु जडात्मक अन्तःकरणोंकी वृत्ति इंद्रिनकी विषय इत्यादि यावत् संसारके कारणहैं तिन सबको त्यागि देवै ४२ ॥

प्रकाशरूपोऽहमजोऽहमद्वयोसकृद्विभातोऽहमतीवनिर्मलः ॥ विशुद्धविज्ञानधनो निरामयःसम्पूर्णआनन्दमयोहमक्रियः ४३ सदैवमुक्तोऽहमचित्यशक्तिमानतीन्द्रियज्ञानमविक्रियात्मकः ॥ अनंतपारोऽहमहर्निशंबुधैर्विभावितोऽहं हृदि वेदवादिभिः ४४ एवं सदात्मानमखंडितात्मनाविचारमाणस्यविशुद्धभावना ॥ हन्यादविद्यामचिरेणकारकैः रसायनं यद्वदुपासितं रुजः ४५ ॥

(अहंअजअहंअद्वयःअहंअतीवनिर्मलःअसकृद्विभातःप्रकाशरूपःअहंअक्रियानिरामयःविशुद्धविज्ञानधनःसम्पूर्णआनन्दमयः) सब विकार त्यागि अपने आत्मरूप इसभांति माने कि मैं जन्म रहित सनातन एक रसहों मेरी समताको दूसरा नहीं अद्वितीयहों रजतमादिमल रहित मैं अत्यन्त निर्मल बड़ी प्रभायुक्त परमप्रकाशरूपहों मैं कर्म रहित शोकादि रहित विशेष शुद्ध विज्ञान समूह युक्त सम्पूर्ण आनन्दमयहों इत्यादि आचरणको दृढानुसंधान राखे रहे ४३ (अहंसदैवमुक्तःअविक्रियात्मकःअतीन्द्रियज्ञानंअचित्यशक्तिमान्अहंअनन्तपारःवेदवादिभिःबुधैःअहर्निशंहृदिभावितोहं) मैं सदा मुक्त कभी बद्ध नहीं सब विकार रहित इन्द्रियोंते परज्ञानरूप अचित्यमाया मेरी शक्तिहै देश काल करिकै मेरा अन्तपार नहींहैं वेदवादी ज्ञानिन करिके दिनौराति हृदयमें चिंतव न किया जाता है सोई ब्रह्म मैंहों ४४ (एवंअखंडितात्मनासदाआत्मानंविचारमाणस्यविशुद्धभावनाकारकैःअविद्याअचिरेणहन्यात्यद्वदुपासितंरुजः) इसी प्रकार देहेंद्री अन्तःकरणादि एकाग्र करिके सदा आत्माको विचार करता हुआ पुरुष ताके विशुद्धभावना ब्रह्माकार वृत्ति उत्पन्न होतीहै त्यहिकरिकै पूर्व कर्मन सहित अविद्याको थोरेही कालमें नाश करिदेवै कोन भांति जैसे रसायन औषध सेवन करि रोग नाश करिदेत ४५ ॥

विविक्तआसीनउपारतेंद्रियोविनिर्जितात्माविमलांतराशयः॥विभावयेदेकमनन्यसाधनोविज्ञानदृक्केवलआत्मसंस्थितः ४६ विश्वंयदेतत्परमात्मदर्शनं विलापयेदात्मनिसर्वकारणे ॥ पूर्णश्चिदानंदमयोवतिष्ठतेनवेदवाह्यत्रचकिंचिदंतरम् ४७ पूर्वसमाधेरखिलंविचितयेदोकारमात्रंसचराचरंजगत् ॥ तदेववाच्यंप्रणवोहिवाचकोविभाव्यतेऽज्ञानवशान्नबोधतः ४८ अकारसंज्ञःपुरुषोहिविश्वकोह्युकारकस्तैजसईर्यतेक्रमात् ॥ प्राज्ञोमकारःपरिपठ्यतेखिलैः समाधिपूर्वैर्ननुतत्त्वतोभवेत् ४९ ॥

(विविक्तआसीनउपारतेंद्रियः) अब साधन उपाय कहत है लक्ष्मण एकांत स्थानमें योगाभ्यासकी रीतियमनियमादि युक्त कमलासनकरि बैठि, शब्द स्पर्शरूप रस गंधादि विषयनको त्यागि इंद्रिनको स्वाधीन करिकै (विनिर्जितात्मा विमलांतराशयः) कर अंगुष्ठ से दक्षिण-श्वासा मूंदि

प्रणव उच्चारण पूर्वक वाम श्वासाते धीरा धीरा पवनखेचि बंद करि राखै जब न धैभिसकै तब दक्षिण श्वासाते धीरा धीरा छाँड़ै इसीप्रकार बारम्बार प्राणायाम करि अन्तःकरण जीति लेवै तब मन चित बुद्धि अहंकारादि अंतःकरण अत्यंत अमल शुद्धहै जावै तब (विज्ञानदृक् एक अनन्य साधनः केवल आत्मसंस्थितः विभावयेत्) निर्विकल्प समाधि रूप विज्ञान दृष्टि करिके और किसी बातकी सुधि न होनेपावै एक अनन्यतत्त्व ज्ञान साधनसों संगरहित केवल आत्मा जो अंतरमें स्थित है ताहीको ध्यान करै ४६ (परमात्मदर्शनं यत् एतत् विश्वं तत् सर्वकारणे आत्मनि विलापयेत् पूर्णः चिदानंदमयो वतिष्ठते न बाह्यं च न किंचित् अंतरवेद) परमात्म है प्रकाशक जिसका ऐसा जो चराचर विश्वताको माया समीप ताते सब को उपादान कारण जो परमात्मा तिसीमें लय करि देय अर्थात् कारण जो परमात्म ताही में कार्यरूप संसार को देखै तब पूर्णकाम जाके ऐसा चिदानन्दमय रूप स्थितहै तब सिवाय ब्रह्मके न बाहेर पुनः न भीतर कछु और देखै ४७ (पूर्वसमायेः सचराचरं अखिलं जगत् ओंकारमात्रं विचिंतयेत् तत् एव वाच्यं प्रणवः हि वाचकः अज्ञानवशात् विभाव्यते बोधतः नः) समाधि के पूर्व सहित चर अचर संपूर्ण जगत् ओंकारमात्र चिंतवन करै तहां सो संसार निश्चय करि वाच्यहै अरु प्रणव निश्चय करि वाचक है यह अज्ञान वशते भावना की जाती है ज्ञानबोध भये नहीं ४८ (अकारसंज्ञकः हि विश्वकः उकारकः तैजस ईर्यते मकारः प्राज्ञः समाधिपूर्वपुरुषः क्रमात् अखिलैः परिपठ्यते तु तत्त्वतः न भवेत्) ओंकार वाचक को वाच्य भावार्थ देखावते हैं तहां अकार उकार मकार येती वर्ण ओंकारमें हैं तथा जीवमें तीनि अवस्था होती है जाग्रत् अवस्था को विश्व अभिमानी सो अकार संज्ञक विश्व जो विराटरूप त्यहिमय अपना स्थूल शरीर को अकार को अर्थ जानै तथा स्वप्न अवस्था को अभिमानी तैजस सो उकार संज्ञक तैजस जो हिरण्यगर्भरूप त्यहिमय अपना सूक्ष्म शरीर उकार को अर्थ जानै तथा सुषुप्ति अवस्था को अभिमानी प्राज्ञ है सो मकार संज्ञक प्राज्ञ जो मायोपाधिक ईश्वर त्यहिमय अपना कारण शरीर सोमकार को अर्थ जानै इस प्रकार समाधि के पूर्व तीनि अवस्थान तक पुरुष इसी क्रमते सब जगन्मय करिके तीनिहू वर्ण पढ़ै पुनः तत्त्वज्ञान भयेपर ऐसा नहीं होताहै अर्थात् तुरीय अवस्था प्राप्त भयेपर केवल ब्रह्ममय प्रणव विचारै ४९ ॥

विश्वं त्वंकारं पुरुषं विलापयेदुकारमध्ये बहुधा व्यवस्थितं ॥ ततो मकारे प्रविलाप्य तैजसं द्वितीयवर्णं प्रणवस्य चांतिमे ५० मकारं मप्यात्मनि चिद्वर्धने परे विलापयेत् प्राज्ञमपीह कारणम् ॥ सोहं परं ब्रह्म सदा विमुक्तिमद्विज्ञानदृङ्मुक्तोपाधितोऽमलः ५१ एवं सदा जात परात्मभावनः स्वानंदतुष्टः परिविस्मृताखिलः ॥ आस्ते स नित्यात्मसुखप्रकाशकः साक्षाद्विमुक्तोऽचलवारिसिंधुवत् ५२ ॥

(बहुधा व्यवस्थितं विश्वं पुरुषं तु अकारं उकारमध्ये विलापयेत् ततः तैजसं द्वितीयवर्णं प्रणवस्य च अंतिमे मकारे प्रविलाप्य) स्थूल शरीरादि बहुत प्रकार की रचना व्यवस्थित है जामें ऐसा विश्व ताको अभिमानी पुरुष विश्व को वाचक जो अकारताको प्रणव के दूसरे वर्ण उकार हिरण्यगर्भ तामें लयकरे तब जाग्रत् अवस्था लयभई तदनंतर स्वप्न अवस्था को अभिमानी जो प्राज्ञ हिरण्यगर्भ अपना सूक्ष्म रूप ताको वाचक जो दूसरा वर्ण उकार ताहि प्रणव के अंत को तीसरा वर्ण जो मकार तामें लय करे तब स्वप्नावस्था लय भई ५० (प्राज्ञमपि इह कारणं मकारं अपि चिद्वर्धने परे

आत्मनिविलापयेत् उपाधितः मुक्तममलः विज्ञानदृक्सदाविमुक्तमत्परंब्रह्मसः अहं) पुनः सुषुप्ति अवस्था को अभिमानी जो प्राज्ञमायोपाधिक ईश्वर जो यह कारण शरीर ताको बाचक जो प्रणवको तीसरा वर्ण मकारताहि भी चैतन्य धनपरे आत्मा विपे लय करि देय तब सुषुप्ति अवस्थाभी लय भई केवल तुरीय अवस्था में ऐसा विचार करै कि सब उपाधि रहित अमल विज्ञान दृष्टि सदा विमुक्त-चंतपरब्रह्म सोई मैं हों ५१ (एवंजातपरात्मभावन अखिलः परिविस्मृतः सदास्वानंदतुष्टः) इसी प्रकार उत्पन्न भई है परमात्म रूप की भावना अरु देहेंद्रीसुख संबंधादिकोंको बासनादि सब भूलि गई है जिनको अरु सदा एकरस अपने शुद्ध स्वरूप ब्रह्मानंद में तुष्ट रहते हैं (सनित्यात्मसुख प्रकाशक साक्षात् विमुक्तः अचलवारिसिंधुवत् आस्ते) सो नित्य एकरस आत्म सुखमें परिपूर्ण स्वयं प्रकाशरूप साक्षात् ज्विनमुक्त अचलजल समुद्रकी तुल्य रहता है ५२ ॥

एवं सदाऽभ्यस्तसमाधियोगिनो निवृत्तसर्वेन्द्रियगोचरस्य हि । विनिर्जिता शेषरिपो
रहं सदा दृश्यो भवेयं जितषड्गुणात्मनः ५३ ध्यात्वैव मात्मानमहर्निशं मुनिस्तिष्ठे
त्सदा मुक्तसमस्तबंधनः ॥ प्रारब्धमश्रन्नभिमानवर्जितो मप्येव साक्षात् प्रविलीयते
ततः ५४ आदौ च मध्ये च तथा एव भवति ततो भवं विदित्वा भयशोककारणम् ॥ हि
त्वासमस्तं विधिवादचोदितं भजेत्स्वमात्मानमथाखिलात्मनाम् ५५ ॥

(एवं समाधेः सदाभ्यस्तः सर्वेन्द्रियगोचरस्य हि निवृत्तः अशेषरिपोः विनिर्जिताः षड्गुणात्मन जितः योगिनः अहं सदा दृश्यो भवेयं) इस प्रकार की समाधि को सदा अभ्यास किहे सब इन्द्रिय की विषय शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध मैथुनादि सब विषयों को निश्चय करि त्यागि दिया है जिन्हों ने काम क्रोधादि सब शत्रुनको जीति लिया है जिसने तथा सर्वज्ञत्व नित्यतृप्तत्व बोध-रूपत्व स्वतंत्रत्व नित्य अलुप्तत्व अनन्तरूपत्व इति षड्गुणमय आत्मको स्वाधीन किया है जिसने ऐसे योगीजनोंको मैं सदा देखि परता हों ५३ (एवं अहर्निश आत्मानं ध्यात्वा मुक्तसमस्तबंधनः अभिमानवर्जितः प्रारब्धमशनन्मुनिः सदा तिष्ठेत्ततः साक्षात्मायि एव प्रविलीयते) इसी प्रकार दिनौ राति आत्माको ध्यान करनेते छूटि गये हैं सब भवबंधन जिसके देहाभिमान रहित प्रारब्ध भोगता हुआ मुनि मननशालि सदा रहता है प्रारब्ध भोगिभये तदनन्तर साक्षात् मेरेही रूपमें लय होता है भाव मेरा रूप होता है ५४ (आदौ च मध्ये च तथा एव भवति ततो भवं विदित्वा विधिवादचोदितं समस्तं हित्वा अथ अखिलात्मनां स्वं आत्मानं भजेत्) आदि जब जीवत्व नहीं भया शुद्ध आत्मरूप रहा तबौ संसारकी वासना करि कारण मायाको ग्रहण करि जीव भया पुनः मध्यमें जब जीव भया तब लोकें सुख हेत कार्य माया ग्रहण करि इन्द्री विषय वश देहाभिमानि ह्वै अनेक शुभाशुभ कर्मकरि दुःखसुख भोगतारहा पुनः ताही भांति अन्तमें जीवन्मुक्त भये परभी पुनः भय शोकको कारण संसार प्रसिद्ध बना है जहां वासना उठी फिरि भवबंधनमें परा ऐसा विचारि वेदाज्ञा करि सवासिक यज्ञादि यावत् कर्म हैं तिन सबको त्यागि अरु सब भूतोंकी जो आत्मा सो अपनी आत्माको भजन करै ५५ ॥

आत्मन्यभेदेन विभावयन्निदं भवत्यभेदेन मयात्मना तदा ॥ यथा जलं वारिनिधौ
यथा पयः क्षीरे विप्रद्वयौ न्यनिले यथानिलः ५६ इत्थं यदीक्षेत हिलोकसंस्थितो जग
न्मृषैवेति विभावयन्मुनिः ॥ निराकृतत्वाच्छ्रुतियुक्तिमानतो यथेन्दुभेदो दिशि दि

अभ्रमादयः ५७ यावन्नपश्येदखिलंमदात्मकंतावन्मदाराधनतत्परोभवेत् ॥ श्रद्धा
लुरत्युर्जितभक्तिलक्षणोयस्तस्यदृश्योहमहर्निशहृदि ५८ ॥

(इदंआत्मनिअभेदेनभावयन् तदाआत्मनामयाअभेदेन भवतिययावारिनिघौजलंवयाक्षीरेपयः
व्योम्निवियदयथाअनिलेअनिलः) हे लक्ष्मण यह जो विश्वव्यापक मेरारूपहै तिसको आत्मा विये
अभेद करिके भावना करत सन्ते तब उस जीवसे मेरेरूपसे अभेद हूँजाताहै कौनभांति यथा समुद्र
में गये नदी आदिकोंको जल यथा दूधमें दूध यथा महदाकाशमें घटाकाश यथा खलायटादिकों को
पवनपनमें मिलिजाताहै ५६ (हिलोकसंस्थितःमुनिः यदिइत्येईक्षेतजगन्मृपाएवइतिविभावयन्श्रु-
तियुक्तिमानतःनिराकृतत्वात्तथाइन्दुभेदः दिशिदिग्भ्रमादयः) निश्चय करि लोकहीमें रहतेहुये
मननशील मुनि जो जीव ब्रह्मकी एकता इसप्रकारकी इच्छाकरै तो यह जगत् मिथ्याहै निश्चय
करिके ऐसी सत्यता दृढ करनेके कारण उपाय चिंतवन करै कौनप्रकार श्रुति वाक्य तत्त्वमसि आदि
विचारते तेया शुक्तिरजवत् रवि किरण जलवत् लोकभी झूठाभ्रमहै इत्यादि युक्ति अनुमानते संसार
को त्यागकरै शुद्ध आत्मरूप ग्रहणकरै कौनभांति जेते कितोंकारणते द्वैचन्द्रमा देखात पूर्वमें पश्चिम
की भ्रम घूमतेको समीपके वृक्षादि घूमते देखात इत्यादि विचारते भ्रमजात तेसे ज्ञानते संसारके
सत्यताकी भ्रमजात ५७ (यावत्अखिलंमत्आत्मकंनपश्येत् तावत्तमत्आराधनतत्परःभवेत्अद्वा-
लुःअतिजर्जितभक्तिलक्षणःयःतस्यहृदिअहं अहर्निशदृश्यः) अब जाके आश्रित ज्ञान दृढ रहितकाहै
सो भक्ति अवलंब रघुनाथजी कहत कि हे लक्ष्मण ज्वतक सम्पूर्ण चराचरमें व्यापक मेरारूप आ-
त्माको नहीं देखताहै जीव बुद्धी बनाहै तबतक सेवक सेव्य भावकरि मेरे आराधनमें तत्पर बनारहै
कौनभांति श्रद्धावन्त अत्यन्त दृढ प्रेम अनुरागादि उत्तम भक्तिके लक्षण युक्तहै जो ताके हृदय में मैं
दिनौराति देखि परताहौं भाव विनाभक्ति मेरी प्राप्ती दुर्घटहै अर्थात् पूर्व रुक्ष ज्ञानकहि आयेहैं सो
उनको कहना यथार्थही है काहेते सर्वज्ञ रघुनाथजीको सदा एकरस अखंड ज्ञानहै अरु बलपज्ञ जीव
को सदा एकरस ज्ञान नहीं रहितकाहै यथा ज्ञानिनमें शिरमौर सनकादि तिनकेभी वैकुण्ठ द्वारपा-
लोंपर क्रोधहूँवैगया इसी हेत सदा हरियश श्रवणमें तत्पर रहतेहैं ताते परमात्म भक्तिके आधार ज्ञान
दृढ रहताहै यही सिद्धांत सबको है यथा भागवते ब्रह्मोवाच श्रेयाश्रितिर्भक्तिमुदश्यते विभोक्लिश्यंति
ये केवलबोधलब्धये । तेषामसौंक्लेशलएवशिष्यते नान्यद्यथा स्थूलतुषावघातिनां॥ महारामायणेशिव-
उवाच येरामभक्तिममलांसुविहायरम्यांज्ञानेरताःप्रतिदिनंपरिक्षिण्टमार्गे॥आरान्महेंद्रसुरभीपरित्यक्तमू-
र्खाःअर्कभजंतितुभगेसुखदुग्धहेतुं॥ येब्रह्मास्मीति नित्यं वदंति हृदि विना रामचन्द्रांप्रियज्ञम्॥ तेषुदृश्या
स्त्यक्तपोतादृष्टणपरिनिचये सिंधुमुयंतरंति ५८ ॥

रहस्यमेतच्छ्रुतिसारसंग्रहंमयाविनिश्चित्यतवोदितंप्रिय ॥ यस्त्वेतदालोचयती
हबुद्धिमान्समुच्यतेपातकराशिभिःक्षणात् ५९ आतर्यदीदंपरिदृश्यतेजगन्मायैव
सर्वंपरिहृत्यचेतसा॥मद्भावनाभावितशुद्धमानसःसुखीभवानंदमयोनिरामयः ६० ॥

(हेप्रियश्रुतिसारसंग्रहंएतत्तरहस्यं मयाविनिश्चित्यतवउदितंतूइहयः बुद्धिमान्एतत्आलोचयति
तपातकराशिभिःक्षणात्मुच्यते) हेप्रिय लक्ष्मण वेदोंको सारांश निकारि संग्रहकरि यह जो रहस्य
गुप्तज्ञान तत्त्वहै ताहि मैंने निश्चय करि तुमसे कहा है पुनः इससंसार में जो बुद्धिमान् इसगीताको
विचार पूर्वक अवलोकन करता है सो समूह पापों करिके छूटिजाता है अंतःकरण शुद्धहै शरणागत

को अधिकारी होता है ५९ (हे ध्यातः यत इदं जगत्परिदृश्यते सर्वमाया एव चेत्सा परिदृश्यमत्भावना भावितशुद्धमानसः निरामयः आनन्दमयः सुखी भव) उपदेशांत रघुनाथ जी अशीर्वाद देते हैं हे भाई लक्ष्मण जो यह तन धन धाम स्त्री पुत्रादि जगत् देखि परता है सो सब माया है निश्चय करिकै ताहि चित्त से परित्याग करि केवल मेरे रूपको ध्यान करि शुद्ध मनसों शोक उपाधि आदि रहित भंतर आनन्दमय वाह्य सुखी होहु भावलोक व्यवहार त्यागि शुद्ध मन मेरा ध्यान करते हुये तन मन सों आनंद रहौ ६० ॥

यः सेवते मासगुणं गुणात्परं हृदा कदावाथ दिवा गुणात्मकम् ॥ सोऽहं स्वपादांचितरे णुभिः स्पृशन् पुनाति लोकत्रितयं यथारविः ६१ विज्ञानमेतदखिलं श्रुतिसारमेकं वेदांतवेद्यचरणेन मयैव गीतम् ॥ यः श्रद्धया परिपठेद्गुरुभक्तियुक्तो मद्रूपमेतियदि मद्रचते पुभक्तिः ६२ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे उत्तरकाण्डे श्रीरामगीता नाम पञ्चमः सर्गः ५ ॥

(यः कदावाहृदा गुणात्परं गुणं यद्दिवा गुणात्मकं मां सेवते सः अहं स्वपादांचितरे णुभिः स्पृशन् लोकत्रितयं पुनाति यथारविः) जो पुरुष कभी अपने शुद्ध हृदय में मायागुणों से परजो मेरा अगुणरूप है अंतर्यामी सच्चिदानंद ताको ध्यान करता है अथवा कृपा दया करुणा सौहार्द शील सुलभ उदार भक्त वात्सल्यतादि अनंत परमकल्याण गुणनयुत श्यामसुंदर द्विभुज धनुधारी रूप है ताहि सेवन करता है सो सज्जन मेरही रूप है सो पुरुष अपने पायनकी लगी हुई धूरि करिकै स्पर्श करत संते तीनि हूं लोकन को पावन करता है अर्थात् वाके पायकी धूरि जो आपने तनमें लगाय लेता है ताको हृदय शुद्ध हो जाता है तब सुकृत व्यापार सिद्ध होती है जैसे सूर्यनकी किराणि परे भूमि शुद्ध होती है ६१ तामें कृपी उपजती है (वेदांतवेद्यचरणेन मया एव गीतं अखिलं श्रुतिसारं एकं एतत् विज्ञानं यदित्येव वचने पुभक्तिगुरुभक्तियुक्तः यः श्रद्धया परिपठेत् मद्रूपं एति) वेदांत करिकै वेद्यचरण हैं जाके ऐसा जो मैं ताही करिकै गान किया गया संपूर्ण वेदोंको सारांश एक अद्वितीय यह जो विज्ञान रूपगीता है ताहि जो मेरे वचनविषे भक्ति करि अरु गुरुभक्ति युक्त जो पुरुष श्रद्धा करिकै पढ़ता है सो मेरे स्वरूपको प्राप्त होता है ६२ ॥ दो० ॥ देहबुद्धि हरि सेवनित जीवबुद्धि करुप्रेम । आत्मबुद्धि अनुरागदृढ भक्तिज्ञानयुत नेम ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते अध्यात्मभूषणे उत्तरकाण्डे श्रीरामगीतावर्णनो नाम पंचमः प्रकाशः ५ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ एकदा मुनयः सर्वे यमुनातीरवासिनः ॥ आजगमूराघवंद्रुं भयात् क्षणरक्षसः १ कृत्वा ग्रेतुमुनिश्रेष्ठं भार्गवं च्यवनं द्विजाः ॥ असंख्याताः समायाता रामादभयकांक्षिणः २ तान् पूजयित्वा परयाभक्त्यारघुकुलोत्तमः ॥ उवाच मधुरं वाक्यं हर्षयन् मुनिमंडलम् ३ करवाणि मुनिश्रेष्ठाः किमागमनकारणम् ॥ धन्योस्मि यदि यूयं मां प्रीत्या द्रष्टुमिहागताः ४ दुष्करं चापि यत्कार्यं भवतां तत्करोम्यहम् ॥ आज्ञाप्रयंतु मां भृत्यं ब्राह्मणं दैवतं हि मे ५ ॥

सवैया ॥ प्रभु प्रेरितजाय तुरंतवधे रिपुसूदनजी लवणासुरको । मुनि आश्रम जन्म कुशीलवको
प्रगटानंद जो सियके उरको ॥ प्रभु यज्ञरचे बहुदानमयी मुनिलोग चले विमलापुरको । कुशपूछत
लोक सनेह वृथा मुनिआतमरूप कहेफुरको ॥ (यमुनातीरवासिनःसर्वमुनयःलवणरक्षसःभयात्
राघवंद्रष्टुंएकदाभाजग्मुः) शिवजी बोले हे गिरिजा यमुनातीर वासी मुनिलोग सब लवणासुर
राक्षसकी भयते रघुनाथजीके दर्शन हेत एकसमय अयोध्याजीको आवतेभये १ (भार्गवमुनिश्रेष्ठं
वनंअग्रेकृत्वातुअसंख्याताःद्विजाःरामात्अभयकांक्षिणःसमायाताः) भृगुवंश में उत्तम मुनिज्यवन
मुनिको आगेकरि अनर्गतिन ब्राह्मण रघुनाथजीते अभयलेनेकी कांक्षासे सब आवतेभये २ (रघुकु
लोत्तमःपरयाभक्त्यातान्पूजयित्वामुनिमंडलंहर्षयन्मधुरंवाक्यंउवाच) मुनिनको देखि रघुवंशनाथ
परमभक्ति सहित तिनहि पूजनकरि मुनि समाजको प्रसन्न करत संते मधुर वचन बोलतेभये ३
(हेमुनिश्रेष्ठाःभागमनकारणंकिंकरवाणियदिप्रीत्यामांद्रष्टुंयुंइहागताःधन्योस्मि) रघुनंदन बोलेकि
हे मुनिश्वरौ आपको इहाँ आवनेको कारण क्याहै कहिये सो करौ भरुजो प्रीति करिकै मोहि देखने
को आपलोग इहाँ आये तौ मैं धन्य भया ४ (ब्राह्मणाःहिमेदैवतंभूत्यंमांआज्ञापयंतुचभवतांयतदु
ष्करंकार्यंअपितत्अहंकरोमि) ब्राह्मण निश्चय करि मेरे इष्टदेवहैं ऐसाजानि सेवक जो मैं ताहि
आज्ञादीजिये पुनः आपको जो दुर्घटकार्यभी होयगो सोऊ मैं करोंगो ५ ॥

तच्छ्रुत्वासहसाहृष्टज्यवनोवाक्यमब्रवीत् ॥ मधुनामामहादैत्यःपुराकृतयुगेप्र
भो ६ आसीदतीवधर्मात्मादेवब्राह्मणपूजकः ॥ तस्यतुष्टोमहादेवोददौशूलमनु
त्तमम् ७ प्राहचानेनयंहंसिसतुभस्मीभविष्यति ॥ रावणस्यानुजाभार्यातस्यकुं
भीनसीश्रुता ८ तस्यांतुलवणोनामराक्षसोभीमविक्रमः ॥ आसीदुरात्मादुर्ध्वो
देवब्राह्मणहिंसकः ९ पीडितास्तेनराजेंद्रवयंत्वांशरणंगताः ॥ तच्छ्रुत्वाराराघवो
प्याहमाभीर्वोमुनिपुंगवाः १० लवणंनाशयिष्यामिगच्छंतुविगतज्वराः ॥ इत्यु
क्त्वाप्राहरामोपिभ्रातृन्कोवाहनिष्यति ॥ लवणंराक्षसंदद्याद्ब्राह्मणेभ्योभयंमहत ११

(तत्श्रुत्वा सहसा हृष्टःज्यवनःवाक्यंअब्रवीत्प्रभोपुराकृतयुगंमधुनामामहादैत्यः) रघुनंदनके
वचन सो सुनिकै अत्यन्त आनंदहै ज्यवनमुनि वचन बोलतेभये हे प्रभो रघुनाथजी पूर्वकाल सतयुग
विषे मधुनामें महादैत्य होता भया ६ (देवब्राह्मणपूजकःअतीवधर्मात्माआसीत्तत्तस्यमहादेवःतुष्टः
अनुत्तमंशूलंददौ) देवता ब्राह्मणोंको पूजनेवाला अत्यन्त धर्मात्मा होताभया ताके तप पूजादिते
महादेव प्रसन्न हैंकै उत्तम त्रिशूलदेतेभये ७ (वप्राहचनेनयंहंसिसतुभस्मीभविष्यतिरावणस्यअनुजा
कुंभीनसीश्रुतातस्यभार्या) शिवजी त्रिशूलदै पुनः बोले कि हे मधु इस त्रिशूल करिकै जिसकोमारि
है सो पुनःभस्म है जायगो भरु रावणकी छोटी भगिनी कुंभीनसी नामें सोई उस मधुकी भार्या
रही ८ (तत्तस्यांभीमविक्रमःलवणोनामराक्षसःआसीत्तदुराधर्षःदुरात्मादेवब्राह्मणहिंसकः) पुनःतिसी
कुंभीनसीमें भयंकर पराक्रमी लवण नामें राक्षस होता भया जो किसीके जीतने योग्य नहीं दुष्टा-
त्मा देव ब्राह्मणोंको घात करताहै ९ (हेराजेंद्रतेनपीडिताःवयंत्वांशरणंगताःतत्श्रुत्वाराराघवःअपिआ
हमुनिपुंगवाःआभीः) हे राजाधिराज तिसी राक्षस करिकै पीडित हमलोग आपकीशरणको आये हैं
सो सुनि रघुनंदनभी बोलते भये हे मुनि वरौ मति डरौ १० (लवणंनाशयिष्यामिगच्छंतुविगतज्वराःगच्छंतु
इतिउक्त्वारामःभ्रातृन्प्राहब्राह्मणेभ्योमहदभयंदद्यात्त्राक्षसंलवणंकोवाहनिष्यति) लवणासुरको हम

नाश करेंगे अबतुम लोग संताप रहित आश्रमनको जाँउ ऐसा कहि रघुनंदन भरतादि भाइनप्रति बोलते भये कि इन ब्राह्मणोंके अर्थ बड़ी भारी अभयको देनेवाला लवणासुर राक्षसहि को बधकरैगो भावराक्षसको मारिजो ब्राह्मणोंको अभय करदेवैसो बोलै ११ ॥

तच्छ्रुत्वाप्रांजलिःप्राहभरतोराघवायवै ॥ अहमेवहनिष्यामिदेवाज्ञापयमां प्रभो
१२ ततो रामं नमस्कृत्य शत्रुघ्नो वाक्यमब्रवीत् १३ लक्ष्मणेन महत्कार्यं कृतं राघ
वसंयुगे ॥ नन्दिग्रामे महाबुद्धिर्भरतो दुःखमन्वभूत् १४ अहमेव गमिष्यामि लव
णस्य वधाय च ॥ त्वत्प्रसादाद्गुह्यं श्रेष्ठहन्त्यान्तराक्षसं युधि १५ तच्छ्रुत्वा स्वां कमा
रोप्य शत्रुघ्नं शत्रुसूदनः ॥ प्राह दैवाभिषेक्ष्यामि मथुरा राज्यकारणात् १६ आ
नाय्य च सुसंभाराल्लक्ष्मणेनाभिषेचने ॥ अनिच्छंतमपि स्नेहादभिषेकमकारय
त् १७ दत्त्वा तस्मै शरं दिव्यं रामः शत्रुघ्नमब्रवीत् ॥ अनेन जहि बाणेन लवणं
लोककंटकम् १८ ॥

(तत् श्रुत्वा भरतः प्रांजलिः राघवाय वै प्राह देवग्रहं एव हनिष्यामि प्रभो मां प्राज्ञापय) रघुनंदन के वचन
सो सुनिकै भरत हाथ जोरि रघुनंदन के अर्थ निदवय करि बोलते भये हे देव महीं लवणासुर को
बध करिहों ताते हे प्रभो मोको आज्ञा दीजिये १२ (ततः शत्रुघ्नः रामं नमस्कृत्य वाक्यं अब्रवीत्) तद
नंतर शत्रुघ्न रघुनंदन को नमस्कार करि वचन बोलते भये १३ (राघवलक्ष्मणेन संयुगे महत्कार्यं
कृतं महाबुद्धिः भरतः नन्दिग्रामे दुःखमन्वभूत्) शत्रुघ्न बोले कि हे रघुवंशनाथ लक्ष्मणजीने तो आप
के साथ संग्राम में घननादवधादि बड़ा भारी कार्य करि चुके तथा महाबुद्धिमान् भरतजी नन्दिग्राम
में नियम व्रतदि बड़ा दुःख भोगे १४ (लवणस्य वधाय ग्रहं एव गमिष्यामि च रघुश्रेष्ठ त्वत्प्रसादात् युधितं
राक्षसं हन्यां) पुनः शत्रुघ्न बोले कि लवणासुर के वध के अर्थ महीं जाँउगो पुनः हे रघुवंश नाथ
आपकी अनुग्रह ते संग्राममें तिसराक्षसको मारौंगो ताते रुपादृष्टि आज्ञा दीजिये १५ (तत् श्रुत्वा शत्रु
सूदनः शत्रुघ्नस्वयं करोप्य प्राह मथुरा राज्यकारणात् अद्यैव अभिषेक्ष्यामि) सो बचन सुनिकै शत्रुघ्नको
नाश करने वाले रघुनाथ जी शत्रुघ्नको अपने अकोरामें बैठाव बोलते भये हे शत्रुघ्न मथुराकी राज्य
करने कारणतं तुमको अभी राज्याभिषेक करताहों १६ (अभिषेचने सुसंभाराल्लक्ष्मणेनाभिषेचनेनाय्य अनि
च्छंतमपि स्नेहात् अभिषेकं अकारयत्) अभिषेककी सब सामग्री लक्ष्मण जीसे मँगाय अनिच्छित
भी शत्रुघ्न को स्नेह ते रघुनाथ जी राज्याभिषेक करते भये १७ (तस्मै दिव्यं शरं दत्त्वा रामः शत्रु
घ्नं अब्रवीत् अनेन बाणेन लोककंटकं लवणं जहि) तिनके अर्थ दिव्य बाण दैके रघुनंदन शत्रुघ्न प्रति
बोलते भये कि हे शत्रुघ्न जो मैंने दियाहै इसी बाण करिके लोकको कंटक अर्थात् सबको दुःखदल
वणासुरको मारौ १८

सतुसंपूज्यतच्छूलं गेहे गच्छति काननम् ॥ भक्षणार्थं तु जंतूनां नाना प्राणिबधाय
च १९ सतु नायाति सदनं यावद्वनचरो भवेत् ॥ तावदेव पुरद्वारि तिष्ठत्वं धृतकार्मु
कः २० योत्स्यते सत्वया क्रुद्धस्तदा बध्यो भविष्यति ॥ तं हत्वा लवणं क्रूरं तद्वनं म
धुसंज्ञितम् २१ निवेश्य नगरं तत्र तिष्ठत्वं मेऽनुशासनात् ॥ अश्वानां पंचसाहस्रं
रथानां चतुर्दशकम् २२ गजानां षट्शतानीह पत्नीनामयुतत्रयम् ॥ आगमिष्य

तिपश्चात्त्वमग्रेसाधयराक्षसम् २३ इत्युक्तामूर्धन्यवधायप्रेषयामासराघवः ॥ श
त्रुघ्नमुनिभिःसार्द्धमाशीभिरभिनन्द्यच २४ शत्रुघ्नोपितथाचक्रेयथारामेणचोदि
तः ॥ हत्वामधुसुतंयुद्धेमथुरामकरोत्पुरीम् २५ ॥

(सतुगेहेतत्तूलंसंपूज्यतुभक्षणार्थंजंतूनां च मानाप्राणिबधायकाननंगच्छति) पुनः रघुनाथजी बोले
कि सो लवणासुर प्रभात काल अपने घरमें शिवको दिया हुआ सो त्रिशूल को पूजन करि यामदिन
गत आपने भोजन के अर्थ वनचर जंतुनको पुनः और अनेक प्राणियों के वधके अर्थ वनको जाता
है १९ (सतु सदनंनायातियावत् वनचरः भवेत्तावत् एवधृतकार्मुकः त्वं पुरद्वारितिष्ठ) सो लवणासुर
घरको न आवने पावै वनहीं में फिरत होय तबै तक धनुषबाण धारण किहे तुम पुरके द्वारपर खड़े
रहो २० (सक्रुद्धः त्वया योत्स्येत तदा बध्येः भविष्यति तं क्रूरं लवणं हत्वा तद्वनं मधुसंज्ञितम्) तबैसोराक्षस
सहित क्रोध तुम्हारे साथ युद्धकरी तब तुम वाको मारिसकौगे तिस क्रूर लवणासुर को मारिकैतब
सो जो वनहै मधुनामैं तामैं २१ (मे अनुशासनात् नगरं निवेश्य तत्र त्वं तिष्ठ पंचसाहस्रं अश्वानां च
तदर्थं कस्मरथानां) मेरी आज्ञा ते राजधानी हेत मधुवन में नगर को बसाय तहां तुम राज्य करत
संते बास करौ अरु पांचहजार घोड़े पुनः ताके आधे अट्ठाई हजार रथ २२ (पटशतानि गजानां अयु
तत्रयं पत्तानां इह पश्चात् आगमिष्यति अग्रे त्वं राक्षसं साधय) छःसैं हाथी दशहजार के तिगुने अर्थात्
तीस हजार पैदर यह सेना पीछे आवीहगी अरु आगे जाय तुम राक्षस को मारहु २३ (इति उक्त्वा
राघवः भूद्धिर्निवधाय च आशीभिः अभिनन्द्य मुनिभिः सार्द्धं शत्रुघ्नं प्रेषयामास) ऐसा कहि रघुनंदन शीश
सूधि पुनः आशीर्वादों करिकै आनंद करि मुनिन सहित शत्रुघ्नको पठावते भये २४ (यथारामेण चो
दितः शत्रुघ्नः अपितथाचक्रे युद्धे मधुसुतं हत्वामथुरापुरीं अकरोत्) अब जिसप्रकार रघुनाथजीने आज्ञा
दिया रहै शत्रुघ्न भी तैसाही करते भये प्रथम युद्धमें मधुके पुत्रलवणासुरको मारि पुनः मधुरानामैं
पुरी बसावते भये २५ ॥

स्फीताञ्जनपदांचक्रेमथुरांदानमानतः ॥ सीतापिसुषुवेपुत्रौ द्वौ वाल्मीकेरथाश्र
मे २६ मुनिस्तयोर्नामचक्रे कुशो ज्येष्ठो नुजो लवः ॥ क्रमेण विद्यासम्पन्नौ सीतापुत्रौ च
भूवतुः २७ उपनीतौ च मुनिना वेदाध्ययनतत्परौ ॥ कृत्स्नं रामायणं प्राह काव्यं वा
लक्यो मुनिः २८ शङ्करेण पुरा प्रोक्तं पार्वत्यै पुरहारिणा ॥ वेदोपबृंहणार्थाय ताव
द्वाहयत प्रभुः २९ कुमारौ स्वरसम्पन्नौ सुंदरावश्विनाविव ॥ तंत्रीतालसमायुक्तौ
गायंतौ चैरतुर्वने ३० तत्र तत्र मुनीनां तौ समाजे सुररूपिणौ ॥ गायंतावभितो ह
ृद्वा विस्मिता मुनयो ब्रुवन् ३१ ॥

(दानमानतः मथुरां स्फीतां जनपदांचक्रे अथ वाल्मीकेः आश्रमे सीता अपि द्वौ पुत्रौ सुषुवे
ऋषिनको दान तन्मान करि शत्रुघ्न मथुराजीमें संपूर्ण ऋद्धियुत राजधानी करते भये अबताही
समय वाल्मीकि मुनिके आश्रममें सीताभी दोपुत्र उत्पन्न करती भई २६ (मुनिः तयोः नामचक्रे ज्येष्ठः
कुशः अनुजः लवः क्रमेण सीतापुत्रौ विद्यासंपन्नौ च भूवतुः) वाल्मीकिमुनि तिनके नामकरण करते भये ज्येष्ठ
को कुश छोटेको लव नामधरे पुनः व्याकरणादि चौदह विद्या मीमांसादि पटशास्त्र ऋगादि चारिहु
वेद इत्यादि क्रमकरिकै पढ़तसंते सीताके दोऊपुत्र विद्यामें परिपूर्ण होते भये ३७ (मुनिना उपनीता

चवेदाध्ययनतत्परौकाव्यंरामायणंकृत्स्नंमुनिःबालकयोःप्राह) मुनिःबालमीकने दोउनको यज्ञोपवीत किया पुनः नित्य वेदपाठमें तत्पररहै पुनः आदिकाव्य रामायण संपूर्ण बालमीकमुनि बालकनको पढाय देतेभये २८ (पुरहारिणाशंकरेणपुरापार्वत्यैप्रोक्तंवेदोपबृंहणार्थायिप्रभुःतावत्प्राहयत्) त्रिपुरा सुरको नाशकरनहारे शंकरने पूर्वहींजो रामचरित पार्वतीके अर्थ सुनाये हैं सोई रामचरित जोवेदन में गुप्तहै सोई वेदोंको अर्थ वृद्धकरनेकेअर्थ प्रभु बालमीकजी रामायणको प्रथम लव कुशको ग्रहण करावते भये २९ (अश्विनौइवसुंदरौकुमारौ स्वरसंपन्नौतंत्रीतालसमायुक्तौ गायंतौवनेचेरतुः) अश्विनी कुमार के तुल्य सुन्दर दोऊ राज कुमार कुश लव षड्ज ऋषभ गांधार मध्यम पंचम धैवत निषध इत्यादि स्वरोंमें प्रवीणताल सहित बीणा बजावत रामायण गानकरतेहुये बनमें बिचरते हैं ३० (मुनीनांसमाजेतत्र २ तौ सुररूपिणौगायंतौ अभितः दृष्ट्वा मुनयः गिस्मिताब्रुवन्) मुनिनकी समाज जहां जहां तहां तहां समाजनमें दोऊ देवतों सम स्वरूपवान् राज कुमार गावते हैं तिनहिं सब दिशितेदेखे मुनि लोग आश्चर्य मानि वार्त्ता करते भये ३१ ॥

गंधर्वेष्विहकिन्नरेषुभुविवादेवेषुदेवालये । पातालेष्वथवाचतुर्मुखगृहेलोकेषुसर्वे
षुच ॥ अस्माभिश्चिरजीविभिश्चिरतरंदृष्टादिशःसर्वतो । नाज्ञायीदृशगीतवा
द्यगरिमानादर्शिनाश्राविच ३२ एवंस्तुवद्भिरखिलैर्मुनिभिःप्रतिवासरं ॥ आसा
तेसुखमेकांतेबाल्मीकेराश्रमेचिरं३३ अथरामोऽवमेधादंश्चकौरवहुदक्षिणान् ॥
यज्ञान्स्वर्णमयींसीतांविधायविपुलद्युतिः ३४ तस्मिन्वितानेऋषयःसर्वेराजर्ष
यस्तथा ॥ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःसमाजग्मुर्दिदृक्षवः ३५ बाल्मीकिरपिसंगृह्य
गायंतौतौकुशीलवौ ॥ जगामऋषिवाटस्यसमीपंमुनिपुंगवः ३६ ॥

(अस्माभिः चिरजीविभिः सर्वतःविशः चिरंतरंदृष्टा इहभुविवा देवालयेदेवेषुकिन्नरेषुगंधर्वेषुपाता
लेषुअथवाचतुर्मुखगृहेच सर्वेषुलोकेषुईदृशः गीतवाद्यगरिमानाज्ञायिनादर्शिचनाश्रावि) सब मुनि कह
तेहैं कि हम लोग बहुत कालके जीनेवाले भरु सब दिशोंमें बहुत भांतिके गाने बजानेवाले देखा
सो इस भूमिलोकमें यावत् गायकभये तिनमें वा देवलोकमें देवतोंमें किन्नरोंमें गंधर्वोंमें यावत् गा-
यकहैं तथा पातालमें अथवा ब्रह्मलोकमें पुनः सर्वलोकोंमें यावत् गायकहैं तिनमें इन कुमारों के
तुल्य गान बजामें प्रवीण दूसरा नहीं देखा जैसा ये कुमारगाते बजाते हैं ऐसा न कानोंते सुना पुनः
इनकी तुल्यको दूसरा गायक किसी ओरहू श्रावकके मुखते प्रशंसा नहीं सुना इति विस्मय ३२
(एवंअखिलैःमुनिभिःप्रतिवासरंस्तुवद्भिः एकांतेबाल्मीकेःआश्रमेसुखंचिरंआसाते) इसी भांति स-
म्पूर्ण मुनि लोगों करिके प्रति दिन प्रशंसा कियेजाते हैं दोऊ कुमार पुनः एकान्त स्थान बाल्मीकके
आश्रममें सुखपूर्वक बहुतकालतक रहतेभये ३३(अथरामःविपुलद्युतिः स्वर्णमयीं सीतां विधाय बहु-
दक्षिणान् अश्वमेधान् यज्ञान् चकार) भवरघुनाथजी ऋषिनके संमतसे बड़ीतेजवंत सोनेकी सीता
निर्माण कराय ताकीगांठि जोरिबहुतहैं दक्षिणा जिनमें ऐसी अश्वमेधादि यज्ञीकरतेभये ३४ तस्मिन्
वितानेसर्वे ऋषयःतथाराजऋषयः ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः दिदृक्षवः समाजग्मुः) तिसयज्ञमाडव
में सबऋषि तैसे राजऋषि भरु ब्राह्मण क्षत्री वैश्य इत्यादि देखने को सब आवतेभये ३५ गायंतौ
तौकुशीलवौ संग्राह्य मुनिपुंगवः बाल्मीकिः अपि ऋषिवाटस्य समीपं जगाम) रामायणके गावने

वाले दोऊ कुमार कुशलव को साथमें लिहे मुनिनमें श्रेष्ठ वाल्मीकि भी जहां ऋषिनको वृंदरहें ताके समीप जातेभये ३६ ॥

तत्रैकान्तेस्थितंशान्तंसमाधिविरमेमुनिम् ॥ कुशःप्रच्छवालमीकिंज्ञानशास्त्रं क
थान्तरे ३७ भगवन्श्रोतुमिच्छामिसंक्षेपाद्भवतोखिलम् ॥ देहिनःसंसृतिर्वंधः
कथमुत्पद्यतेदृढः ३८ कथंविमुच्यतेदेहीदृढवन्धाद्भवाभिधात् ॥ वक्तुमर्हसिसर्वं
ज्ञमह्यंशिष्यायतेमुने ३९ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ शृणुवक्ष्यामितेसर्वसंक्षेपाद्बन्धमो
क्षयोः ॥ स्वरूपंसाधनंचापिमत्तःश्रुत्वायथोदितम् ४० तथैवाचरभद्रन्तेजीव
न्मुक्तोभविष्यसि ॥ देहएवमहागेहमदेहस्यचिदात्मनः ४१ तस्याहंकारएवास्मि
न्मंत्रीतेनैवकल्पितः ॥ देहगेहाभिमानंस्वंसमारोप्यचिदात्मनि ४२ तेनतादा
त्म्यमापन्नःस्वचेष्टितमशेषतः ॥ विदधातिचिदानन्देतद्भासितवपुःस्वयं ४३ ॥

(तत्रैकान्तेस्थितंशान्तंसमाधिविरमेशान्तं मुनिंवाल्मीकिंकथांतरेकुशःज्ञानशास्त्रंप्रच्छ) तहां एकांत
स्थानमें बैठेहुये समाधिके अंत शान्त स्वभाव मुनिजो वाल्मीकि तिनंप्रति कछु कथाकी प्रसंग चलाय
कुशजी ज्ञानशास्त्र पूछते भये ३७ (भगवन्भवतःसंक्षेपात् अखिलंश्रोतुमिच्छामिदेहिनः संसृतिः
दृढःबंधःकथं उत्पद्यते) कुशबोले हे भगवन् आपके मुखसे संक्षेप ते यह हाल संपूर्ण सुनबेकी
इच्छाहै कि जीवन की संसार में दृढबंधन काहेते उत्पन्न होताहै ३८ (भवाभिधात्दृढबंधात्देही
कथंविमुच्यतेसर्वज्ञमुनेमह्यंशिष्यायतेवक्तुमर्हसि) पुनः भवरूप दृढबंधन ते जीवकैसे छूटता है हे
सर्वज्ञ मुने मैं जो आपको शिष्यहूँ ताके अर्थ आपकहबे योग्यहूँ ३९ (बंधमोक्षयोःस्वरूपंचसाधनं
अपिसंक्षेपात् सर्वैतेवक्ष्यामिशृणुमत्तःयथाउदितंश्रुत्वा) वाल्मीकि मुनिबोले कि हे कुश संसार में बंध
अरुसंसार ते मोक्ष दोऊको स्वरूप अरुसाधन भी संक्षेपते सबहाल तुमंप्रति कहताहूँ सुनिये मेरा
यथा कहाहै ताहि सुनिकै ४० (तेभद्रंतथाएवमाचरन्जीवनमुक्तःभविष्यसिभदेहस्यचिदात्मनः
देहएवमहागेहं) तेरा कल्याण होय जैसा मैं कहूँ तैसाही आचरण करु तब जीवन्मुक्त होयगो हेकुश
देहरहित चैतन्य आत्मा को यह देह महाघरहै ४१ (तस्यअहंकारएव तेनएवअस्मिन्मंत्रीकल्पितः
स्वदेहगेहाभिमानंचिदात्मनिसमारोप्य) तिसी देहको जो अहंकार भया तिसको तिस आत्माने इस
देह रूपघर में मंत्री बनाया ताने मंत्रद्वै मेरी देहहै मेरा घर है ऐसा अभिमान आत्माने आरोपित
करि ४२ (तत्भासितवपुःस्वयंतेनतादात्म्यंआपन्नःअशेषतःस्वचेष्टितं चिदानंदेविदधाति) सोई
आत्मा प्रकाश किये शरीर अपना माने ताते देहाभिमानसे आत्माअभेदको प्राप्त भया तब
अभिमान सब अपने व्यापार चिदानंदमें विधानकरताहै कर्तृत्व बनाता है ४३ ॥

तेनसंकल्पितोदेहीसंकल्पानिगडावृतः॥पुत्रदारगृहादीनिसंकल्पयतिचानिशं ४४
संकल्पयन्स्वयंदेहीपरिशोचतिसर्वदा ॥ त्रयस्तस्याहमोदेहाअधमोत्तममध्यमाः
४५ तमःसत्वरजःसंज्ञाजगतःकारणस्थितेः॥तमोरूपाद्विसंकल्पान्नित्यंतामसचे
ष्ट्या ४६ अत्यन्ततामसोभूत्वाकृमिकीटत्वमाप्नुयात् ॥ सत्वरूपोहिसंकल्पो
धर्मज्ञानपरायणः ४७ अदूरमोक्षसाध्याज्यःसुखरूपोहितिष्ठति ॥ रजोरूपोहि
संकल्पोलोकेसव्यवहारवान् ४८ ॥

तेनसंकल्पितःसंकल्पनिगडावृतःदेहीचअनिशंदारपुत्रगृहादीनिसंकल्पयति) आत्माकी एकताते देहाभिमान ने इंद्रीविषयवशते देहसुख की कामना किया सोई कामनारूपबेरी में वंया आत्मदृष्टि भुलाय देहाभिमानी जीव पुनः दिनौरातिस्त्री पुत्र धन धामादि की कामना करता है ४४ (देहीस्वयं संकल्पयन्सर्वदा परिशोचतितस्यग्रहमः अधमः उत्तमः मध्यमः त्रयः देहाः) जीव अपनी कामना करत संते जब कामना पूर्णन भई वालाभहै नष्टहैगई इतिकारण सब कालमें शोचै करता है अरुतिस अहंकारके एकअधम एकउत्तम एकमध्यम ये तीनिदेहैहैं ४५ (तमःसत्वरजःसंज्ञा) जो अधमदेह है ताकी तमोगुण संज्ञाहै जो उत्तम देह है ताकी सतोगुणसंज्ञा है जो मध्यमदेहहै ताकी रजोगुण संज्ञा है (जगतःकारणस्थिते) इनहींतीनोंदेहैजगतको उपजावने के कारण हैं (तमोरूपात्संकल्पा न्नित्यंहितामसचेष्टया) तामस रूप प्रधान ते अर्थात् जिसजीव में तमोगुण अधिक होता है ताते कामना करतसंते नित्यही निदचय करिकै तामसकी चेष्टा अर्थात् सब तमोगुणी व्यापार यथा द्यूत दुराचार हिंसा शत्रुता पाखंड परस्त्री परधन हरण इत्यादि करिके ४६ (अत्यंततामसःभूत्वाकृमिकी दृढंभाषुयात्) तामसी व्यापार कीन्है से अत्यंत तामस वृद्धहोताहै तब अज्ञानवश पशुवत् बुद्धि-होती है तबकृमि कीट यथा बीछि सर्पादिदेहों को प्राप्त होता है (सत्वरूपोहि संकल्पःधर्म ज्ञानप रायणः) पुनः जिस जीवमें सत्वरूप प्रधान अर्थात् सतोगुण अधिक होताहै तामों कामना करतसंते धर्मज्ञानव्यापार यथा तीर्थ दान व्रत संध्या तर्पण निवृत्त सद्ग्रंथावलोकन विराग विवेक आत्मशोधनादि में तत्पर रहताहै ४७ (अदूरमोक्षसाम्राज्यः सुखरूपोहितिष्ठति) समीपही है मोक्षरूप चक्रवर्त्ति राज्यवत्पदअखंड आनन्दरूप रहताहै नित्य सतोगुणी जीव (रजोरूपोहिसंकल्पःसलोकेव्यवहारवान्) जिस जीवमें रजोगुण अधिकते कामना करताहै सो लोक व्यवहार यथा नृत्यगान भोजन वसन भूषण वाहन यान गंध कामिनी सभाचातुरी इत्यादि में प्रवीन होताहै ४८ ॥

परितिष्ठतिसंसारेपुत्रदारानुरंजितः ॥ त्रिविधंतुपरित्यज्यरूपमेतन्महामते ४९
संकल्पःपरमाप्नोतिपदमात्मपरिक्षये ॥ दृष्टीःसर्वाःपरित्यज्यनियम्यमनसामनः
५० सवाह्याभ्यन्तरार्थस्यसंकल्पस्यक्षयंकुरु ॥ यदिवर्षसहस्राणितपश्चरसिदा
रुणम् ५१ पातालस्थस्यभूस्थस्यस्वर्गस्थस्यापितेनघ ॥ नान्यःकश्चिदुपा
योस्तिसंकल्पोपशमादते ५२ अनावाधेविकारेस्वेसुखेपरमपावने । संकल्पोप
शमेयत्तम्पौरुषेणपरंकुरु ५३ ॥

(पुत्रदारानुरंजितः संसारेपरितिष्ठतितुमहामते एतंत्रिविधंरूपंपरित्यज्य) सो रजोगुणी जीव पुत्र स्त्री धनादिकों के प्रीति रंग में रंगाहुआ जन्मता मरता संसारही में रहता है पुनः हे महामते कुश वह संकल्प करनेवाला जीव इन तम सत्वरजादि तीनि विधि के अहंकार रूपोंको परित्याग करिकै ४९ (संकल्पःआत्मपरिक्षयेपरंपदंआप्नोतिसर्वाः दृष्टिःपरित्यज्यमनसानियम्यमनः) कामना करनेवाला देहाभिमानरूप नाश भये पर जीव परं पद को प्राप्त होता है ताते हे कुश इंद्री विषयों की सब दृष्टि त्यागि मनसे विषय बासना त्यागि शुद्ध मन है ५० (सवाह्यअभिअन्तरस्थस्यसंकल्पस्यक्षयंकुरु) सहित वाह्य इन्द्रिनकी तथा अंतःकर्ण की वसनेवाली जो संकल्प अर्थात् लोक सुख की कामना तिसको नाशकरो यहीएक भवबंधनते छूटनेकी मुख्य उपाय है नाहीं तौ (यदिवर्षसहस्राणि दारुणंतपः चरसि) जो हजारन वर्षतक महाकठिन तपकरो ५१ (भूस्थस्यपातालस्थस्यस्व

गर्ह्यस्यापिहे अनघते संकल्पोपशमाहते अन्यः कश्चित् उपायः न अस्ति) पूर्ववत् तपस्यां करतसेते चहै भूतलमें वासकरौ चहै पाताल लोकमें वासकरौ चहै स्वर्गमें भो वासकरौ हे निःपाप कुशतुम्हारी संकल्प अर्थात् कामना विनानाशभये मोक्षहेतु और कछुभी उपाय नहीं है ५२ अनवाये अविकारे परमपावनेस्वे सुखेसंकल्पोपशमे परंपौरुषेण यत्नंकुरु) जिसमें न कछुबाधाहै न कछु विकारहै ऐसे परम पावन अपने आत्मसुख प्राप्ति अर्थ संकल्प कामनाके नाश करिवेअर्थ परम पौरुष साहसकरिके यत्नकरौ ५३ ॥

संकल्पतंतौ निखिलाभावाः प्रोक्ताः किलानघ ॥ छिन्नेतंतौ न जानीमः कयान्ति विभवाः पराः ५४ निःसंकल्पो यथा प्राप्तव्यवहारपरो भव ॥ क्षये संकल्पजालस्य जीवो ब्रह्मत्वमाप्नुयात् ५५ अधिगतपरमार्थतामुपेत्य प्रसभमपास्य विकल्पजालमुच्चैः ॥ अधिगमय पदं तद्वितीयं विततसुखाय सुषुप्तचित्तवृत्तिः ५६ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसम्वादे उत्तरकाण्डे कुशलवो
त्पत्तिर्नाम षष्ठः सर्गः ६ ॥

(हे अनय संकल्पतंतौ निखिलाभावाः किल प्रोक्ताः तंतौ छिन्ने विभवाः पराः न जानीमः कयान्ति) होनिःपाप यह जो संकल्प अर्थात् कामना है सोई धागाहै ताहीमें संपूर्ण संसारके पदार्थ निश्चय करिकै गूहेहैं तिसी कामनाको ग्रहण करनेते जीवसंसार में बँधाहै तिससंकल्प रूप धागाके टूटिगये पर विभव जो संसार सो परानाम नाशभये परहम नहीं जानते हैं कि वह जीव कहाँ जाता है भाव अवश्य मोक्षहोताहै ५४ (संकल्पजालस्य क्षये जीवः ब्रह्मत्वमाप्नुयात् निःसंकल्पः यथा प्राप्तव्यवहारपरो भव) संकल्प अर्थात् संसार सुखकी कामना समूह के नाशभये परवह जीव ब्रह्मपदको प्राप्त होताहै ऐसाविचारि हे कुशनिःसंकल्प अर्थात् निःकामहूँकै तबदेवयोग्य प्रारब्धवश जो पदार्थप्राप्त होय तिस व्यवहार वर्तने में सदा स्थितरहौ ५५ (प्रतभं उच्चैः विकल्पजालं अपास्य अधिगतपरमार्थतां उपेत्य तत् तद्वितीयं पदं अधिगमय विततसुखाय सुषुप्तचित्तवृत्तिः) हठ करिकै बड़े विकल्प जालको त्यागि भाव वरवश कामना रोकि प्राप्तहोय ब्रह्मतत्त्व ज्यहि करिकै त्यहि भावको प्राप्तहै सोई जो अद्विपदहै ताहि प्राप्तहै ऐसा जो अखंडसुख है ताके परिपूर्ण राखने अर्थ यथा सुषुप्त अवस्था अर्थात् सोवत में आनन्द मयवृत्ति रहती है तैसेही चित्तकी वृत्ति शुद्धब्रह्माकारवनी रहै ५६ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखबल्लभपदशरणागतवैजनाथ
विरचिते अध्यात्मभूषणे उत्तरकाण्डे षष्ठः प्रकाशः ६ ॥

वाल्मीकिना बोधितो सौकुशः सद्योगतश्चमः ॥ अंतर्मुक्तो बहिः सर्वमनुकुर्वन् चचार
सः १ वाल्मीकिरपितो प्राह सीता पुत्रौ महाधियौ ॥ तत्र तत्र च गायंतौ पुरे वीथिषु स
र्वतः २ रामस्याग्रे गायंतां शुश्रूषुर्यदिराघवः ॥ न ग्राह्यं वै युवाभ्यां तद्यदि किंचित्प्रदा
स्यति ३ इति तौ चोदितौ तत्र गायमानौ विचेरतुः ॥ यथोक्तं ऋषिणा पूर्वतत्र तत्रा
भ्यगायताम् ४ तां स शुश्राव काकुत्स्थः पूर्वचर्यां ततस्ततः ॥ अपूर्वपाठजार्तिचमे

येनसमभिष्टुताम् ५ बालयोःराघवःश्रुत्वाकौतूहलमुपेयिवान् ॥ अथकर्मांतरेरा
जासमाहूयमहामुनीम् ६ ॥

सवैया ॥ प्रभुयज्ञकुशील वगावतमें धनदेतरहें उननाहिलये । करिसौह सियामहिलोपभई सुर
सानंदकै भरिफूलचये ॥ करियज्ञ क्रिया दयदान विदामुनि सानंदसों निजयामगये । जननी सब
पूछत राघवजी निजपावन भक्तिसज्जानदये ॥ (वाल्मीकिनाबोधितो सौकुशःसद्यःगतभ्रमः) शिवजी
बोले हे गिरिजा वाल्मीकि करिकै बोधित जो कुशशीघ्र गतभ्रम (अन्तःमुक्त बहिःतः सर्वअनुकुर्वन्
चचार) अन्तरमें मुक्त दशा अरु बाहेर देहते लोक व्यवहारभी करते हैं अर्थात् गुरुउपदेशसे ज्ञान
प्राप्तभया द्वैत भ्रम तुरतही नाशभई देहाभिमान रहित शुद्ध धर्मःकरण में आत्मरूपको ध्यान किहे
अरु बाहेरते सबको देखनेमात्र देह व्यवहारभी करते हैं १ (पुरेवीथिषुतत्रतत्रचसर्वतः गायंतोसीता
पुत्रोमहाधियौतौ वाल्मीकिःअपिप्राह) पुरमें जहां जहां मार्गहैं तहां तहां सर्वत्र रामायण गान कर-
ते फिरते जो सीताके दोऊपुत्र बड़े बुद्धिवन्त तिन प्रति वाल्मीकि बोलतेभये २ (यदिराघवःशुश्रूषुः
रामस्याग्रेगायेतायदि किंचित्प्रदास्यति तत्पुत्राभ्यांवैनमाह) वाल्मीकि बोले कि जो रघुनाथजी को
सुनवेकी इच्छाहोइ तौ रघुनाथजी के आगे गान किहेउ अरु जो कछु देनेलगै सो तुम निश्चय करिन
ग्रहण करना ३ (इतिचोदितोतोगायमानोतत्रविचेरतुःपूर्वः ऋषिणाथयाउक्तंतत्रतत्र अभ्यगायताम्)
इसप्रकार मुनि करिकै प्रेरित दोऊकुमार गावतेहुये तहां विचरते हैं अरुरामायण में पूर्वही ऋषीश्वर
ने जैसे जहां सिखाय राखे हैं तहां तहां तैसी रीतिसे गान करते हैं ४ (अपूर्वपाठजातिचगेयेन समभि-
ष्टुतांततःततःपूर्वचर्यातांकाकुत्स्थःसगुश्राव) अपूर्व पाठकी रीति पुनः गान करिकै प्रशंसा नगरमे
व्याप्तहैं ठौर ठौर पुरवासिनमें वार्ता होतीहै ताहि रघुनन्दन सुनतेभये ५ (बालयोःश्रुत्वा राघवःकौ-
तूहलंउपेयिवान् अथकर्मांतरेराजामहामुनीम्समाहूय) बालकनको हाल सुनिकै रघुनन्दन आश्चर्य
युक्त भये अब जासमय यज्ञ कर्मको विश्राम होवै तब रघुनाथजी महामुनिनको बुलाय ६ ॥

राज्ञश्चैवनरव्याघ्रःपंडितांश्चैवनेगमान् ॥ पौराणिकांश्चब्रह्मविदोयेचवृद्धद्विजा
तयः ७ एतान्सर्वान्समाहूयगायकौसंप्रवेशयत् । तेसर्वेहृष्टमनसोराजानोब्राह्म
णादयः ८ रामंतौदारकौदृष्ट्वाविस्मिताह्यनिमेषणाः ॥ अत्रोचन्सर्वएवैतेपरस्पर
मथागताः ९ इमौरामस्यसदृशौधिविद्विबमिवोदितौ ॥ जटिलौयदिनस्यातांनच
वलकलधारिणौ १० विशेषंनाधिगच्छामोराघवस्यानयोस्तदा ॥ एवंसंवदतांते
षांविस्मितानांपरस्परम् ११ उपचक्रमतुर्गातुंतावुभौमुनिदारकौ ॥ ततःप्रवृत्तंम
धुरंगांधर्वमतिमानुषम् १२ श्रुत्वातन्मधुरंगातमपराह्णैरघूतमः ॥ उवाचभरतं
चाभ्यांदीयतामयुतंवसु १३ ॥

(नरव्याघ्रःराज्ञान्चैवनेगमान्च पौराणिकान्चशब्दविदुः पंडितान्चएवयेवृद्धद्विजातयः) नरन
में श्रेष्ठ राजांको पुनः वेदपाठी तथा पौराणिक पुनः वैयाकरणौ पण्डितोंको पुनः जेवृद्ध ब्राह्मण क्षत्री
वैद्यादिकोंको ७ (एतान्सर्वान्समाहूयगायकौ संप्रवेशयत्तेराजानः ब्राह्मणादयःसर्वेहृष्टमनसः)
इत्यादि सबनको बुलाय तथा गानेवाले कुशलव सहित प्रभु सभामें बैठे ते राजा लोग ब्राह्मणादिक
सब आनन्द मन ८ (अथागताःतौदारकौरामंदृष्ट्वा अनिमेषणाःहिविस्मिताःएतेसर्व एवपरस्परंअ-
त्रोचन्) अब यावत् लोग सभामें आये दोऊ बालकोंको अरु रघुनाथजीको देखि पलक चलन रहित

यकटकअवलोकितमें निश्चयकरि आश्चर्य वश येसबलोग आपसमें बोलतेभये ९ (रामस्यसदृशौ इमौ विवात्विद्वं इव उदितौ यदि जटिलौ न स्यातां च न वल्कल धरिणौ) रामहीके तुल्य स्वरूप येदोऊ कुमार हैं यथा दर्पणादि में सूर्य बिंब की प्रति बिंब उदय है जो बालकों के शिशु में जटा न होते अरु तन में वल्कल बसन न होते १० (तदाराधवस्य अनयोः विशेषनाधिगच्छामः ॥ विस्मितानां परस्परं तेषां संवदतां) तब रघुनन्दन की अरु दोनों बालकोंकी विशेषता न जानि सके इसप्रकार विस्मयवन्त-लोगनको आपसमें तिनकी बातों है रही है ११ (तौ उभौ मुनिदारकौ गातुं उपक्रमतुः ततः प्रतिमां नुषं मधुरं गांधर्वप्रवृत्तं) ताही समयमें दोऊ मुनि बालक गान प्रारंभ करते भये तब जैसा किसी मानुषने कभी सुना नहीं ऐसा मधुर गान होता भया १२ (अपराह्णैरघूतमः तत्तमधुरंगीतं श्रुत्वा च भरत उवाच आभ्यां मयुतं वसुदीयतां) तीसरे पहर रघुनाथजी उस मधुर गानको सुनिकै पुनः रघुनन्दन भरत प्रतिबोलते भये कि हे भरत इन गायकोंको दशहजार अशरफी दीजिये १३ ॥

दीयमानं पुवर्णं तु न तज्जग्रहतुस्तदा ॥ किमनेन सुवर्णेन राजन्नौ वन्यभोजनौ १४ इति संत्यज्य संदत्तं जग्मतुर्मुनिसन्निधिम् ॥ एवं श्रुत्वा तु चरितं रामः स्वस्यैव विस्मितः १५ ज्ञात्वा सीताकुमारौ तौ शत्रुघ्नं चेदमं ब्रवीत् ॥ हनूमंतं सुषेणं च विभीषणमथांग दम् १६ भगवंतं महात्मानं वाल्मीकिं मुनिसत्तमम् ॥ आनयध्वं मुनिवरं ससीतं देव संमितम् १७ अस्यास्तु पर्षदो मध्ये प्रत्ययं जनकात्मजा ॥ करोतु शपथं सर्वे जानंतु गतकल्मषाम् १८ सीतां तद्वचनं श्रुत्वा गताः सर्वेति विस्मिताः ॥ ऊचुर्यथोक्तं रामेण वाल्मीकिं रामपार्षदाः १९ रामस्य हृद्गतं सर्वं ज्ञात्वा वाल्मीकिरब्रवीत् ॥ इवः करिष्यति वै सीता शपथं जनसंसदि २० ॥

(सुवर्णं दीयमानं तु तदा तत्तज्जग्रहतुः राजन्नौ वन्यभोजनौ अनेन सुवर्णेन किं) प्रभु आज्ञासे भरत ने आनिकै दिया जो सुवर्ण अशरफी तब सोधन बालकोंने नहीं ग्रहण किया पुनः बोले कि हे राजन् हम बन के मूल फलादि भोजन करने वाले तिन को इन अशरफिन करिकै क्या प्रयोजन है १४ (इति संदत्तं संत्यज्य मुनिसन्निधिं जग्मतुः एवं स्वस्यैव चरितं श्रुत्वा तुरामः विस्मितः) 'ऐसा कहिकै वह दिया हुआ धन त्यागकरि वाल्मीकि मुनिके समीप को कुशल वजाते भये इस प्रकार अपना भी चरित सुनि पुनः रघुनन्दन आश्चर्य युक्त भये १५ (तौ सीताकुमारौ ज्ञात्वा शत्रुघ्नं च हनूमंतं सुषेणम् च विभीषणं अथ अंगदं इदं ब्रवीत्) तिन कुमारों को सीता के पुत्र जानिकै शत्रुघ्न प्रति पुनः हनूमान् प्रति सुषेण प्रति पुनः विभीषण प्रति अरु अंगद प्रति ऐसा बचन बोले रघुनन्दन १६ (ससीतं देवसंमितं मुनिवरं भगवंतं महात्मानं वाल्मीकिं मुनिसत्तमं आनयध्वं) सहित सीताको अरु देव सम मुनिन में श्रेष्ठ भगवान् महात्मा जो वाल्मीकि मुनि उत्तम हैं तिनहि बुलाय लावो १७ (गतकल्मषां सीतां सर्वे जानंतु अस्यास्तु पर्षदो मध्ये प्रत्ययं जनकात्मजा शपथं करोतु) पाप रहित शुद्ध सीता को जामें सब लोग जानि लें ई इस हंत यहि सभा के बैठने वाले लोगों के बीच में अपना सत्त्व निश्चय कराय देने हेत जनक नंदिनी शपथ करें १८ (तत्त्वचनं श्रुत्वा सर्वे प्रति विस्मिताः गताः रामेण यथा उक्तं रामपार्षदाः वाल्मीकिं ऊचुः) सो बचन सुनि सब विस्मयवन्त शत्रुहनादि उहां गये रघुनन्दनने जैसे कहा रहै सोई रामसेवक लोग वाल्मीकि प्रति कहते भये १९ (रामस्य हृद्गतं सर्वं ज्ञात्वा वाल्मीकिः ब्रवीत् इवः जनसंसदि सीता वै शपथं करिष्यति) रघुनन्दनके हृदय का सब अभिप्राय जानिकै शत्रुघ्न आदिको

प्रतिवाल्मीकि बोलतेभये कि कल्ह प्रभात सभाजनोंके बीचमें सीता निश्चयकरि शपथ करैगी २०॥
 योषितांपरमंदैवंपतिरेवनसंशयः ॥ तच्छ्रुत्वासहसागत्वामुनेःवचःराघवस्यअपिप्रोचुः २१
 राघवस्यापिरामोपिश्रुत्वामुनिवचस्तथा ॥ राजानोमुनयःसर्वेशृणुध्वमितिचाब्र-
 वीत् २२ सीतार्याःशपथंलोकाविजानंतुशुभाशुभम् ॥ इत्युक्तराघवेणाथलोकाः
 सर्वेदिदृक्षवः २३ ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चैवमहर्षयः ॥ वानराश्चसमाज-
 ग्मुःकौतूहलसमन्विताः २४ ततोमुनिवरस्तूर्णससीतःसमुपागमत् ॥ अग्रतस्त-
 मृषिकृत्वायांतीकिंचिदवांमुखी २५ कृतांजलिर्वाष्पकंठासीतायज्ञंविवेशतम् ॥ दृ-
 ष्ट्वालक्ष्मीमिवायांतींब्रह्माणमनयायिनीम् २६ वाल्मीकेःपृष्ठतःसीतांसाधुवादो
 महानभूत् ॥ तदामध्येजनौघस्यप्रविश्यमुनिपुंगवः २७ ॥

(योषितांपतिःएकपरमंदैवंपतिरेवनसंशयःन तच्छ्रुत्वासहसागत्वामुनेःवचःराघवस्यअपिप्रोचुः) क्योंकि स्त्री को अपना पतिही धर्म देव है यामें संशय नहीं है यह जो बचन सो सुनिकै शत्रुघ्नादि सब शीघ्रही जाय मुनिको बचन रघुनन्दन सों कहतेभये २१ (मुनिवचःश्रुत्वातथारामःअपिचइतिअब्र-
 वीत् राजानःमुनयःसर्वेशृणुध्वं) मुनि को बचन सुनिकै तैसेही रघुनन्दन भी पुनः ऐसा बोलते भये हे राजा लोगो हे मुनिजनो मेरा बचन सुनो २२ (सीतायाःशपथशुभाशुभंलोकाविजानंतु इतिरा-
 घवेणउक्ताअथलोकाःसर्वेदिदृक्षवः) सीता की शपथ शुभ होइ अथवा अशुभ होइ ताको लोक जनो तुम जानो भाव सूंचे ते शपथ लेना शपथ लेने वाले को अशुभ होता है सो लोकजनों पर मार है जे अपवाद किये ऐसा रघुनन्दन ने कहा अब लोकजन सब देखने की इच्छा करि २३ (ब्राह्मणाः
 क्षत्रियावैश्याःशूद्राःतथाएवमहाऋषयः चवानराकौतूहलसमन्वितःसमाजग्मुः) ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्रादि सब प्रजा तैसेही सब महा ऋषि पुनः सब वानर इत्यादिसब आश्चर्ययुक्त देखिबेहेत आवते भये २४ (ततःससीतःमुनिवरःतूर्णसमुपागमत् तंऋषिंअग्रतःकृत्वाकिंचित्प्रवादमुखीयांतीं) तद-
 नन्तर सहित सीता मुनिवर वाल्मीकि शीघ्रही चलते भये तिन ऋषि को आगे करि पीछे नीचे को मुख किहे चुप चली आतीहै २५ (ब्रह्माणंअनयायिनींलक्ष्मींइवआयांतींवाष्पकंठाकृतांजलिः सीता यज्ञविवेशतंदृष्ट्वा) यथा ब्रह्मा के पाछे आवती हुई लक्ष्मी के तुल्य वाल्मीकि के पाछे आवती हुई नेत्रनमें आंशु भर कंठारोध हाथ जोरे सीता यज्ञशालामें प्रवेश कीन्ही तिनहि देखिकै २६ (वाल्मी-
 केःपृष्ठतःसीतामहान्साधुवादःअभूत् तदाजनौघस्यमध्येमुनिपुंगवःप्रविश्य) वाल्मीकि के पाछे सीता को देखि बड़ाभारी धन्यवाद होता भया ताही समय जन समूहों के मध्य में मुनिवर वाल्मीकि प्रवेश करते भये २७ ॥

सीतासहायेवाल्मीकिरितिप्राहचराघवम् ॥ इयंदाशरथेसीतासुव्रताधर्मचारिणी
 २८ अपपातेपुरात्यक्ताममाश्रमसमीपतः ॥ लोकापवादभीतेनत्वयाराममहावने
 २९ प्रत्ययंदास्यतेसीतातदनुज्ञातुमहंसि ॥ इमौतुसीतातनयौइमौयमलजात
 कौ३०सुतौतुतवदुर्धर्षौतथ्यमेतद्ब्रवीमि ॥ प्रचेतसोहंदशमःपुत्रोरघुकुलोद्बह
 ३१ अनृतंनस्मराम्युक्तंयथेमौतवपुत्रकौ ॥ बहून्वर्षगणान्सम्यक्तपश्चर्गाम
 याकृता ३२ नोपाश्रीयांफलंतस्यादुष्टेयंयदिमैथिली ॥ वाल्मीकिनैवमुक्तस्तुराघ

वःप्रत्यभाषत ३३ एवमेतन्महाप्राज्ञयथावदसिसुव्रत ॥ प्रत्ययोजनितोमह्यंतव
वाक्यैरकिल्किविषैः ३४ ॥

(सीतासहायःवाल्मीकिःचराधवं इतिप्राहदाशरथे इयंसीतासुव्रता धर्मचारिणी) सीताके सहाय करता वाल्मीकि पुनः रघुनन्दन प्रति ऐसे वचन बोलते भये कि हे दशरथनन्दन यह सीता शोभन पातिव्रत धर्मके करने वाली निःपापहै २८ (अपापातेरामलोकापवादभीतेनमहावने ममाश्रमसमीपतःत्वयापुरात्यक्ता) यह निःपाप रहै तहतुम हे रघुनन्दन लोकमें अपवाद भया ताकी भय करिके महावनमें मेरेआश्रमके समीप आपने सीताको पूर्व त्यागकिया २९ (सीताप्रत्ययंदास्यते तत्तु अनुज्ञातुं अर्हसि इमौसीतातनयो तुइमौवसलयातकौ) सीताआपके विश्वास कराने हेन शपथ करती है सा आज्ञा देनेयोग्य हौ अरु येदोऊ सीतामें उत्पन्न भये पुनःयेभी दोऊ उत्तम हैं ३० (तवसुतौतुर्धर्मौ एतत्तथ्यंतेब्रवीन्नि रघुकुलोद्बहप्रचेतसः दशमःपुत्रःअहं) दोऊ ये आपहीके पुत्रहैं पुनः अजितहैं यह सत्यही आपसे कहताहौ हे रघुवंशनाथ प्रचेता ऋषिको दशवां पुत्र मेंहौ पुनः ३१ (अनृतंतुक्तंन स्मरामि यथाइमौतवपुत्रकौबहून्वर्षगणान् तन्पक् मयातपश्चर्याकृता) मैं पूर्व भूठ कभी बोलाहौ यह नहीं मोको सधि आती है भावकभी भूठ नहीं बोला हौ ताते यथा सबै सत्य बोलतहौ तैसेही यह सत्य कहताहौ कि ये दोऊ आपहीके पुत्रहैं पुनः बहुत वर्ष गनेमेंहैं तावत् सम्पूर्ण मैंने तपकिया है ३२ (तस्याःफलंनोपादनीयांयदि इयंमैथिलीदुष्टाएवंवाल्मीकिनाउक्तः तुराधवःप्रत्यभाषत्) तिस तपस्याको फल मोको न प्राप्तहोय जो यह जनकनन्दिनी दोष युक्तहोय जब ऐसा पुष्ट वचन वाल्मीकिने कहा पुनः रघुनन्दनभी वाल्मीकि प्रति बोलते भये ३३ (महाप्राज्ञसुव्रतयथावदसिएतत् एवं तववाक्यैःअकिल्किविषैःमह्यंप्रत्ययोजनितः) हेमहाप्राज्ञ विद्वानोंमें श्रेष्ठ शोभन व्रतधारी यथा आप कहतेहौ यह बात ऐसेही है अरु आपके वचनन करिके सीता पापों से रहित है ऐसा मोको निश्चय भया ३४ ॥

लङ्कायामपिदत्तोमेवैदेह्याप्रत्ययोमहान् ॥ देवानांपुरतस्तेनमंदिरेसंप्रवेशिता ३५
सेयंलोकभयाद्ब्रह्मन्अपापापिसतीपुरा ॥ सीतामयापरित्यक्ताभवान्तत्क्षंतुमर्ह
सि ३६ समैवजातौजानामिपुत्रावेतौकुशीलवौ ॥ शुद्धायांजगतीमध्येसीतायांप्रीति
रस्तुमे ३७ देवाःसर्वेपरिज्ञायरासाभिप्रायमुत्मुकाः ॥ ब्रह्माणमग्रतःकृत्वासमाज
ग्मुःसहस्रशः ३८ प्रजाःसमागमन्द्ष्टाःसीताकौशेयवासिनी ॥ उदङ्मुखीह्यधोद
ष्टिःप्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ३९ रामादन्यथाहंवैमनसापिनचितयेत् ॥ तथामेधर
णीदेवीविवरंदातुमर्हति ४० तथाशपंत्यासीतायाःप्रादुरासीन्महाद्भुतम् ॥ भूत
लाद्विव्यमर्थसिंहासनमनुत्तमम् ४१ ॥

(लंकायांअपिदेवानांपुरतःवैदेह्यामहान्प्रत्ययः दत्तःतेनमन्दिरेसंप्रवेशिता) लंकामेंभी इन्द्रादि देवतांके आगे विदेह पुत्रीने अपनी शुद्धताकी बड़ीभारी विश्वास दिया भाव प्रचण्ड अग्निमें प्रवेश करि निसरिआई तब मैंने गृहमें प्रवेश कराया ३५ (ब्रह्मन्तइयंसीतासतीअपापाअपिलोकभयात् मयापुरापरित्यक्तातत्भवान्तत्क्षंतुमर्हसि) हे ब्रह्मन् वाल्मीकिजी सोई यह सीतासती निःपापहैं तो भी लोक अपवादके भयते मैंने पूर्व परित्याग किया सो आप क्षमा करिवे योग्यहौ ३६ (एतौकुशी

लवौजातौएवममपुत्रौजानामि जगतीमध्येशुद्धायांसीतायामेप्रीतिःभस्तु) येदोऊ कुशलव जो सीता में उरपन्नभये ते निश्चय करि मेरेही पुत्रहैं यह में जानताहों ताते लोकमें शुद्ध सीताविषे मेरी प्रीति पुनःहोय इसहेत में शपथ कराताहों ३७ (सर्वदेवाः रामाभिप्रायंपरिज्ञाय उत्सुकाब्रह्माणंअग्रतःकृत्वा सहस्रशःसमाजग्मुः) ताहीसमय इन्द्रादि सब देवता रघुनन्दनका अभिप्राय जानिकै देखनेकी आ-
तुरता सहित ब्रह्माको आगे करि हजारन देवता अयोध्याको आवते भये ३८ (प्रजाहृष्टाः संभ्रागमन् कौशेयवासिनीउदमुखीहिमधोदृष्टि प्रांजलिःसीतावाक्यंअब्रवीत्) प्रजालोग सब आनन्द सहित देखनेको आवते भये तासमय नवीन रेशमी वस्त्र धारण किहे उत्तरको मुख जिनको निश्चय करि नीचे दृष्टिकिहे हाथ जोरि सीता वचन बोलतीभई ३९ (यथाअहंवैरामात्अन्यमनसा अपिनर्चित-
येत्तथाधरणीदेवीमेविवरंदातुंअर्हति) जो में निश्चय करि रघुनन्दनते भिन्न और किसीको मनकरिकै भी न चितवन करतीहोउं तौ हे पृथिवी देवी मोको विवरदेवे योग्यहौ ४० (सीतायाः शपंत्यातथा महाअद्भुतंदिव्यंअर्थअनुत्तमं सिंहासनंभूतलात्प्रादुरासीत्) सीताके शपथ करतै तैसेही महा अद्भुत दिव्य कंचनमणी जटित परम उत्तम सिंहासन भूतलते निसरि आवताभया ४१ ॥

नागेन्द्रैर्ध्रीयमाणंचदिव्यदेहैरविप्रभम् ॥ भूदेवीजानकीदोभ्यांगृहीत्वान्नेहसंयुता
४२ स्वागतंतामुवाचेनामासनेसंन्यवेशयत् ॥ सिंहासनस्थांवैदेहींप्रविशंतीरसा
तलम् ४३ निरंतरापुष्पवृष्टिर्दिव्यासीतामवाकिरत् ॥ साधुवादश्चसुमहान्देवा
नांपरमाद्भुतः ४४ ऊचुश्चबहुधावाचोअंतरिक्षगताःसुराः ॥ अंतरिक्षेचभूमौचस
र्वेस्थावरजंगमाः ४५ वानराश्चमहाकायाःसीताशपथकारणात् ॥ केचिच्चिताप
रास्तस्याःकेचिद्ध्यानपरायणाः ४६ केचिद्रामंनिरीक्षंतःकेचित्सीतामचेतसः॥मु
हूर्तमात्रंतत्सर्वेतूष्णींभूतमचेतनम् ४७ सीताप्रवेशनंदृष्ट्वासर्वसंमोहितंजगत् ॥
रामस्तुसर्वज्ञात्वेवभविष्यत्कार्यगौरवम् ४८ ॥

(नागेन्द्रैर्ध्रीयमाणंचरविप्रभंदिव्यदेहैःभूदेवीस्नेहसंयुतादोभ्यांजानकींगृहीत्वा) वह विमान नागों करिकै धारण जिनमें सूर्यवत् प्रभा दिव्यदेहै तथा प्रसिद्ध पृथिवी देवी प्रीतिसहित दोऊ हाथोंकरिकै जानकीको ग्रहणकरि ४२ (तांस्वागतंउवाचएनांआसनेसंन्यवेशयत्सिंहासनस्थांवैदेहींसातलंप्रवि-
शंतीं) तिनसीता प्रति प्रसन्नता पूछि तिनको आसनपर बैठायलिये इसप्रकार सिंहासनपर बैठीहुई विदेहनंदिनी रसातलमें प्रवेशकरती भई ४३ (सीतांनिरंतरादिव्यापुष्पवृष्टिःअवाकिरत्चदेवानांपर माद्भुतःसुमहान्साधुवादः) सिंहासनपर बैठतही सीतापर निरंतरवंधीधारदिव्य फूलोंकीदृष्टिकारिपुनः देवताको परमअद्भुत बड़ाभारी साधुवाद होताभया ४४ (चअंतरिक्षगताःसुराःबहुधावाचःऊचुःअंत-
रिक्षेचभूमौस्थावरजंगमाःसर्वेच) पुनः आकाशमेंस्थित देवता बोले हेराधव लंकामें सत्य शपथकराय सीताको ग्रहणकरि पुनःत्यागिपुनः शपथलेना चाहिये न इत्यादि बहुतवचनकहतेभये पुनःआकाशमें देवता अरुभूमिमें चराचर सबभूतमात्र ४५ (चमहाकायाःवानराःसीताशपथकारणात् केचित्तस्याः
चित्तापराःकेचित्ध्यानपरायणाः) पुनःमहाभारी तनवाले वानर इत्यादिमेंकोई तौ सीताके चित्तमें परायण भये कोई सीताके ध्यान में परायण भये ४६ (केचित्सीतांअचेतसःकेचित्त्रामंनिरीक्षंतः
सत्सर्वमुहूर्तमात्रंअचेतनमूष्णींभूत्) कोई सीता को बियोग भया तिस दुःख में अचेत् भये कोई रघुनन्दन को देखि रहाहै इसी भांति यावत्सभा है सो सब लोग मुहूर्त मात्र अर्थात् दो दण्ड भरि

अचेत चुप बैठे रहे काहूको देह की सुधिनहीं रहती भई ४७ (सीताप्रवेशनं दृष्ट्वा सर्वजगत्संमोहितं तुरामः भविष्यति कार्यगौरवं सर्वज्ञात्वा एव) सीताको भूमिमें प्रवेश होना देखिकै सब संसार तौ मोहितै भया पुनः रघुनन्दन होनहार जो कह्यु भया जो कह्यु भागे होयगो सो सब निश्चय करि नीकी प्रकार ते जानते भीहैं तबहूं माधुर्य में ४८ ॥

अजानन्निवदुःखेन शुशोच जनकात्मजाम् ॥ ब्रह्मणा ऋषिभिः सार्द्धं बोधितो रघुनन्दनः ४९ प्रतिबुद्ध इव स्वप्नाच्चकारानंतराः क्रियाः ॥ विससर्ज ऋषीन् सर्वान् ऋत्विज्ये समागताः ५० तान्सर्वान् धनरत्नौघैस्तोषयामास भूरिशः ॥ उपादाय कुमारौ तौ अयोध्यामगमत् प्रभुः ५१ तदादिनिस्पृहोरामः सर्वभोगेषु सर्वदा ॥ आत्मर्चितापरो नित्यं एकांतं समुपस्थितः ५२ एकांतं ध्याननिरते एकदाराघवे सति ॥ ज्ञात्वा नारायणं साक्षात् कौशल्याप्रियवादिनी ५३ भक्त्यागत्य प्रसन्नं तं प्रणता प्राह हृष्टधीः ॥ रामत्वं जगतामादिशदिसध्यांत वर्जितः ५४ परमात्मा परानंदः पूर्णः पुरुष ईश्वरः ॥ जातोसि मे गर्भगृहे मम पुण्यातिरेकतः ५५ ॥

(अजानन्निवदुःखेन जनकात्मजां शुशोच ऋषिभिः सार्द्धं ब्रह्मणा बोधितः रघुनन्दनः) अज्ञ पुरुष की नाई बियोग दुःख करिकै जनकनंदिनी को शोच करते हैं तब ऋषिन करिकै सहित ब्रह्मा करिकै बोध किये गये जो रघुनन्दन ४९ (स्वप्नात् प्रतिबुद्ध इव अनंतराः क्रियाचकार) यथा कोऊ सोवत से जागै तैसेही सावधान है रघुनन्दन यज्ञांत कर्मोंको पूर्ण करते भये (ऋत्विज्ये समागता सर्वान् ऋषीन् विससर्ज) यज्ञ करानेवाले जे आये सब ऋषि तिनहिं बिदा कीन्हें कौन भांति सो भागे कहत ५० (भूरिशः धनरत्नौघैः तान्सर्वान् तोषयामास तौ कुमारौ उपादाय प्रभुः अयोध्यामगमत्) बहुतसे सोनादि धन रत्न समूह दै करिकै तिन सब ऋषिनको परितुष्ट करते भये प्रणाम करि बिदा कीन्हें दोऊ कुमारोंको संगलै प्रभु अयोध्यामें आये ५१ (तदादि सर्वदा सर्वभोगेषु निस्पृहः रामः नित्यं एकांतं समुपस्थितः आत्मर्चितापरः) तबसे आदि दैकै सब काल में सब सुख भोगों में अनिच्छित है रघुनन्दन नित्यहीं एकांत स्थान में बैठे अपने स्वरूपही के ध्यान में परायण रहते हैं ५२ (एकदा एकांतं ध्याननिरते राघवे सति साक्षात् नारायणं ज्ञात्वा प्रियवादिनी कौशल्या) एक समय एकांतमें ध्यान में परायण रघुनन्दन बैठे रहे तिनहिं साक्षात् नारायण जानिकै प्रिय बचन बोलने वाली कौशल्या समीप जायकै ५३ (आगत्य प्रसन्नं तं भक्त्या प्रणता प्राह हृष्टधीः प्राहरामत्वं आदिसध्यांत वर्जितः जगतां आदिः) समीप आयकै प्रसन्न जो रघुनन्दन तिनहिं भक्ति सहित प्रणाम करिकै आनंद मन कौशल्या बोलती भई हे रघुनन्दन तुम जन्म जीवन मरणादि रहित सदा एक रस जगत् के आदि कारण हौ ५४ (परानंदः पूर्णः परमात्मा पुरुष ईश्वरः मम पुण्यातिः एकतः मे गर्भगृहे जातः भसि) परमानंद सदा एक रस परिपूर्ण परमात्मा पुरुष प्रकृति पार ईश्वर सब के पालनहार हौ अरु मेरे अनेक जन्मों की अत्यंत पुण्य एकत्र भई तब मेरे गर्भ रूप मंदिर में आय अवतीर्ण भयो ५५ ॥

अवसाने ममाप्यद्य समयो भूद्रघूत्तम ॥ नाद्याप्य यो ह्यजः कृत्स्नो भवबंधो निवर्तते ५६
इदानीमपि मे ज्ञानं भवबंधो निवर्तकम् ॥ यथा संक्षेपतो भूयात् तथा बोधय मां विभो ५७
निर्वेदवादिनी मेवं मातरं मातृवत्सलः ॥ दयालुः प्राह धर्मात्मा जराजर्जरितां शुभा

म् ५८ मार्गास्त्रयोमयाप्रोक्ताःपुरामोक्षाप्तिसाधकाः ॥ कर्मयोगोज्ञानयोगोभक्तियो
गश्चसाश्वतः ५९ भक्तिर्विभिद्यतेमातस्त्रिविधागुणभेदतः॥स्वभावोयस्ययस्तेन
तस्यभक्तिर्विभिद्यते ६० ॥

(अवोधजःकृत्स्नःभवबंधःअद्यापिननिवर्ततेरघूत्तम अवसानेममापिअद्यसमयःअभूत्) अज्ञानसों
उत्पन्न जो देह संबंध की कामना ताते संपूर्ण भव बंधन अब तक भी नहीं छूटा हेरघुनन्दन अंत
अवस्था में मोको भी अब प्रश्न करने को समय भया ५९ (हेविभोइदानींअपिभवबंधनिवर्तिकंज्ञा-
नयथामेभूयात् तथासंक्षेपतःमांबोधय) हे प्रभो इस समय मेंभी भव बंधन छूटने वाला ज्ञान जिस
प्रकार मोको होवै तैसे संक्षेपते मोको बोध कीजिये ५७ (एवंनिर्वेदवादिर्नोजराजर्जरितांशुभांमातरं
मातृवत्सलःदयालुःधर्मात्माप्राह) इस प्रकार विषय से वैराग्य बचन कहने वाली जरावस्था बश
जर्जर पावन शरीर जिनको तिन माता कौशल्या से मातापर प्रीति करने वाले दया धाम धर्मात्मा
रघुनन्दन बोलते भये ५८ (मोक्षाप्तिसाधकाःत्रयःमार्गाःपुण्यमयाप्रोक्ताः कर्मयोगःज्ञानयोगःचसाश्व-
तःभक्तियोगः) रघुनन्दन बोले किहेमातः मोक्ष प्राप्तीके साधन तीनि मार्गें पूर्वहीं मैंने कहाहै आदि
कर्म योग अंत ज्ञानयोग पुनः आदि अंत निरंतर एकरस भक्तियोग अर्थात् यावत् देहाभिमानी जीव
इंद्री विषयासक्त देह सुख में हर्ष शुभाशुभ कर्म करिरहाहै सो जो मुक्तिकी इच्छाकरै तौ हृदय तौ
शुद्धहैनहींतौ एकीएका न ज्ञानहैसकै न भक्तिहैसकै तिनकेहेत प्रथमकर्म चाहिये यथार्थपंचके॥तत्रकर्म
परिज्ञेयं वर्णाश्रमानुरूपितः॥नित्यंनैमित्तिकंकास्म्यंत्रेधाकर्मफलार्थिना ॥यज्ञोदानंतपोहोमंत्रतस्वाध्यायसं
यमः॥संन्योपास्तिर्जपःस्नानंपुण्यदेशाटनालयं।चंद्रायणाद्युपवासश्चातुर्मास्यादिकानिच।फलमूलाशन
श्चैवसमराधनतर्पणं॥एवंकर्माद्यनुष्ठानैःकायशोधनपूर्वकं।पापंविनाश्यचैन्द्रिय द्वाराज्ञानप्रसारकःइत्यादि
कर्म करि जब हृदय शुद्धहोय तब ज्ञानके चारि साधनकरै विषय सुखते विराग जगत् असार आत्म-
सार इति विवेक शमदम उपराम तितीक्षा श्रद्धा समाधानादि पट् सम्पात्ति पुनः मेरी मुक्ति निश्चय
होय इति मुमुक्षुता इत्यादि करि शुद्ध आत्मरूपको ध्यानराखै इति ज्ञान पुनः ईश्वरके शरणहै यश
श्रवण कीर्त्तन स्मरण सेवन अर्चन वंदन दास्य सख्य आत्म निवेदन देहाभिमानीन को जीवबुद्धीते
प्रेमाआत्म बुद्धितेपरा५९(मातात्रिविधागुणभेदतःभक्तिःविभिद्यतेयस्यसःस्वभावःतस्यतेनभक्तिःविभि
द्यते) हेमातः तम सत्व रजादि तीनि विधि गुण भेदते भक्तिमें भेद तीनि विधिको है यथा जिस को
जौने गुणमय जैसा स्वभावहोताहै ताके तिसी प्रकारकी भेदते भक्ति होती है अर्थात् तमोगुणी स्व-
भावते तामसीभक्ति सतोगुणी स्वभावते सात्विकीभक्ति रजोगुणी स्वभावते राजसी भक्तिहै इत्यादि
भक्तिमें भेदहै सो आगे प्रसिद्ध कहते हैं ६० ॥

यस्तुर्हिंसांसमुद्दिश्यदंभमात्सर्यमेववा ॥ भेददृष्टिश्चसंरंभीभक्तोमेतामसःस्मृतः
६१ फलाभिसंधिर्भौगार्थीधनकामोयशस्तथा ॥ अर्चादौभेदबुद्ध्यामांपूजयेत्सतु
राजसः ६२ परस्मिन्नर्पितंयस्तुकर्मनिर्हरणायवा ॥ कर्त्तव्यमित्तिवाकुर्याद्भेदबु
द्ध्याससात्विकः ६३ मद्रुणश्रवणादेवमय्यनंतगुणालये ॥अविच्छिन्नामनोवृत्तियं
थागंगांबुनोबुधौ॥तदेवभक्तियोगस्यलक्षणंनिर्गुणस्यहि ६४ अहेतुक्यव्यवहितां
याभक्तिर्मयिजायतेसामेसालोक्यसामीप्यसाष्टिसायुज्यमेववादात्यपिनगृह्णाति
भक्तामत्सेवनंविना ६५ ॥

(यस्तु हिंसां समुद्दिश्य वादंभमात्सर्यैव च भेददृष्टः संरंभी मे भक्तः तामसी स्मृतः) जो प्राणी किसी के प्राण घात को विचार करि अथवा पुजाने हेतु देखाव मात्र वा किसी की उन्नता न सहि सके ताके बिगारिबे हेतु पुनः शत्रु मित्रादि भेद दृष्टि राखे मेरा पूजा मंत्र अपादि करतहैं सो मेरा भक्त तामसी कहाता है सो भक्ति तामसी है ६१ (फलाभिसंधिः भोगार्थी धनतथायशः कामः भेदबुद्ध्या अर्चादौ मां पूजयेत्स तुराजसः) स्वर्ग राज्य पुत्रादि फलकी कामना राखि वा भोजन वाहन बसन भूषणादि देह सुख भोग के अर्थ तथा धन वा यशकी कामना राखि शत्रु मित्रादि भेद बुद्धि करिके श्रीविग्रहादि अर्चा स्वरूपों में मोको पूजताहैं सो पुनः राजसी भक्त है ६२ (परस्मिन् अप्रतिष्ठा निह्णाय वा कर्तव्यं इति भेदबुद्ध्या यस्तु कर्म कुर्यात्स सात्विकः) कर्मफल परमात्म में अर्पित करना अथवा पापों के हरने अर्थ अथवा वेद ब्राह्मा से अवश्य कर्म करना चाहिये इत्यादि भेद बुद्धि करिके जो कर्म ममार्चनादि करताहैं सो सात्विकी भक्त सतोगुणी भक्ति है ६३ (मत्गुणश्रवणात् एव अनंत गुणालये मयि अविच्छिन्ना मनःवृत्तिर्यथा गंगायः अंबुनः अंबुधौ तत् एव निर्गणस्य हि भक्तियोगस्य लक्षणम्) कृपा दया करुणा शील सुलभ उदारतादि मेरे गुण सुनतेही अनंत कल्याण गुणधाम मेरे स्वरूपमें कभी छूटने न पावै सदा एकरस मनकी वृत्ति लगीरहै जैसे गंगाको जल समुद्रमें मिलारहत तैसे मेरे स्वरूपमें मन लगेरहना सोई गुण रहित शुद्धाभक्ति योग को लक्षण है जिसमें अभेद बुद्धी गुण स्वभाव त्यागि शुद्ध मन मेरे सगुण रूप में लगायेसो शुद्ध मेरा भक्त है ६४ (अहैतुक्यव्यवहिताया भक्तिः मयि जायते) जिसमें वासनादि कोई कारण नहीं विशेषि शुद्ध सनेह जो भक्ति मेरे विपेहोती है (तामे सा लोकोप्य सामीप्यसार्ष्टिवासायुज्यं एव ददाति अपि मत्सेवनं विना भक्ताः न गृह्णाति) सो भक्ति मेरी सालोक्य मुक्ति सामीप्य मुक्ति सार्ष्टि मुक्ति अथवा सायुज्य भी मुक्ति देती है तौ भी मेरी सेवा विना भक्तजन उन मुक्तिनको नहीं ग्रहण करते हैं ६५ ॥

स एवात्यंतिको योगो भक्तिमार्गस्य भामिनि ६६ मद्भावं प्राप्नुयात्तेन अतिक्रम्य गुणत्रयं ॥ महता कामहीनेन स्वधर्माचरणेन च ६७ कर्मयोगेन शस्तेन वर्जितेन विहिंसनम् ॥ महर्शनस्तुतिमहापूजाभिः स्मृतिवन्दनैः ६८ भूतेषु मद्भावनया संगेनासत्यवर्जनैः ॥ बहुमानेन महता दुःखिना मनुकंपया ६९ स्वसमानेषु मैत्र्या च यमादीनां निषेवया ॥ वेदांतवाक्यश्रवणान्ममना मानुकीर्तनात् ७० सत्संगेनार्जवेणैव ह्यहमपरिवर्जनात् ॥ कांक्षयाममधर्मस्य परिशुद्ध्यांतरोजनः ७१ मद्रूपश्रवणादेव याति मामंजसा जनः ॥ यथा वायुवशाद्गन्धः स्वाश्रयाद्घ्राणमाविशेत् ७२ योगाभ्यासरतचित्तमेव मात्मानमाविशेत् ॥ सर्वेषु प्राणिजातेषु दाहमात्मा व्यवस्थितः ७३ ॥

(भामिनिस एव भक्तिमार्गस्य अत्यंतिकः योगः) हे मातः जो मुक्तिकी भी नहीं चाह करताहैं ऐसा निष्काम मेरी सेवामें निरन्तर लगा रहना सोई भक्तिमार्गका अत्यन्त सर्वोपरि उत्तम भक्तियोग है ६६ (स्वधर्माचरणेन च महता कामहीनेन मत्भावं प्राप्नुयात्तेन गुणत्रयं अतिक्रम्य) अपने वर्णाश्रमधर्म अनुकूल आचरण करिके तथा महा कामना त्याग करिके प्राणी मेरे सेवक भावको प्राप्त होता है तयहि बल करिके तीनिहु गुणोंको उल्लंघन करिके ६७ (विहिंसनं वर्जितेन कर्मयोगेन शस्तेन महर्शनस्तुतिमहापूजाभिः स्मृतिवन्दनैः) हिंसा रहित रहनेसे सन्ध्या तर्पणादि कर्म योग करनेसे मेरा दर्शन स्तुति यंत्र राजादि महापूजा स्मरण वंदना इत्यादि करिके ६८ (असत्य असंगेन वर्जनैः भूतेषु मत्भा

वनयामहतांबहुमानेन दुःखिनां अनुकम्पया) भूठ बोलना दुष्टोंको संग त्यागनेसे भूतमात्रमें व्यापक मेरे अन्तर्यामी रूपकी भावना करिके महात्मोंको बहुत सन्मान करिके दुःखित जनोंपर दयाकरिके ६९ (स्वसमानेषु मैत्र्याचयमादीनां निषेवया) अपनी समान सबसों मित्रता करिके यम नियमादि सेवन करिके (वेदांतवाक्यश्रवणात् ममनामानुकीर्तनात्) वेदांतकी वाक्य श्रवण करनेसे मेरा नाम कीर्तन करनेसे ७० (सत्संगेन आर्जवेण एव हि अहमः परिवर्जनात् मम धर्मस्य परिकांक्षया शुद्ध्यांतरः जनः) सज्जनोंके संग रहनेसे श्रेष्ठ कोमल स्वभावसे निश्चय देहाभिमान त्याग करनेसे मेरी भक्ति शुद्ध धर्मकी इच्छा करिके इत्यादि साधन करि शुद्धभया अंतःकरण जोजन ७१ (मत्तु गुणश्रवणात् एव जनः अंजसामां यातियथा वायुवशात् गन्धः स्वाश्रयात् घ्राणं भाविशेत्) मेरे गुण कृपादयादि श्रवण करने से निश्चय करि वह जित मेरे स्वरूपाकार वृत्तिको प्राप्त होता है कौन प्रकार जैसे पवनके वंशते फूला दि कोंकी सुगंध आपहीते आप नासिकामें प्रवेश होती है ७२ (एवं योगाभ्यासरतं चित्तं आत्मानं आविशेत् सर्वेषु प्राणिजातेषु हि महं आत्मा व्यवस्थितः) इसीप्रकार योगाभ्यासमें रत पुरुषको शुद्धचित्त आत्मा में प्रवेश होता है पुनः सब प्राणधारी मात्रमें निश्चय करि मैं आत्मरूपते वास किहे चराचर को चैतन्य किहे हों ७३ ॥

तम ज्ञात्वा विमूढात्मा कुरुते केवलं वहिः ॥ क्रियोत्पन्नैर्नैकभेदैर्द्रव्यैर्मेनांघतोषणम् ७४
भूतावमानिनाचार्यामर्चितो हं न पूजितः ७५ तावन्ममार्चयेद्देवं प्रतिमादौ स्वकर्मभिः
यावत्सर्वेषु भूतेषु स्थितं चात्मनि न स्मरेत् ७६ यस्तु भेदं प्रकुरुते स्वात्मनश्चाप
रस्य च ७७ भिन्नदृष्टेर्भयं मृत्युस्तस्य कुर्यान्न संशयः ॥ मामतः सर्वभूतेषु परिच्छिन्ने
षु संस्थितम् ॥ एकं ज्ञानेन मानेन मैत्र्या चाचैदभिन्नधीः ७८ चेतसे वानिशं सर्वभूता
निप्रणमेत् सुधीः ॥ ज्ञात्वामां चेतनं शुद्धं जीवरूपेण संस्थितम् ७९ ॥

(हे भवतं अज्ञात्वा विमूढात्मा उत्पन्नैः नैकभेदैः द्रव्यैः केवलं वहिः क्रिया कुरुते मे तोषणं) हे मातः तिस आत्मतत्त्वको नहीं जानते हैं विशेषि मूढात्मा देहाभिमानी क्या करते हैं कि लोकमें उत्पन्न जो अनेक भेदोंकी द्रव्य हैं यथा जल चंदन दल फूल धूप दीप फल पक्वान्नादि वस्तुन करिके केवल बाहेरकी क्रिया प्रतिमा पूजनादि करते हैं तिनमें मैं प्रसन्न नहीं होता हों ७४ (भूतावमानिनाचार्या अर्चितः महं पूजितः न) जे देहाभिमानी भूत मात्रको अपमान करि अपनाको श्रेष्ठ माने तिनके पूजन ते में पूजित नहीं होता हों यासे प्रतिमा पूजाको निषेधन विचारिये पूजापद्धतिनमें भी यही विधि लिखी है कि प्रथम भूत संहार करि देहाभिमान जीवमें लय करै जीवत्व आत्मा में लय करै सोई आत्मतत्त्व अपने अंतःकर्णते खेंचि प्रतिमामें स्थापित करि पूजन करै सो इसी ग्रंथ विषे किष्किधाकांड में लिखा है विस्तारते इहों थोरा लिखे देता हों यथा अगस्त्य संहितायां प्राणान्निरुध्यात्मदेहं शोधयत्तत्पुनर्देहेतत्तदेहं पुनराप्लाव्य पुनर्जीवमिहानयत् ॥ जीवेन पुनरात्मानं चिंतयेत् पुरुषाप्तये ॥ जीवस्य तत्त्वसिद्धयैश्च तस्याप्यात्मत्वसिद्धये ॥ नयनानयनार्थं च हंसो हमितीरयेत् ॥ भूतशुद्धिरियं नाम कर्तव्या नाम सार्थकम् ॥ भूतशुद्धिं विना यस्य जपहोमादिकाः क्रियाः ॥ भवन्ति निःफलाः सर्वाः प्रकारेणाप्यनुष्ठिताः ॥ ताते आत्मबुद्धी करि पूजा करना चाहिये ७५ (यावत्सर्वेषु भूतेषु स्थितं चात्मनि न स्मरेत् तत्र तावत् स्वकर्मभिः एव प्रतिमादौ मम भर्चयेत्) जबतक चराचर सब भूत मात्रमें स्थित जो मेरा आत्मरूप तामें दृढ़ स्मरण न होय पुनः तबतक अपने वर्णाश्रमके कर्मों सहित इसीप्रकार प्रतिमादिकों में मोको पूजन

करै ७६ (यःतुभिन्नदृष्टेःस्वभात्मनःचपरस्यच भेदंप्रकुरुतेतस्यमृत्युःभयंकुर्यात्संशयःन) यो पुनः जीवनमें न्यारी न्यारी दृष्टिते अपनी आत्माते पुनः औरनकी आत्मा भेद करता है तिसीको मृत्यु भयकरती है इसमें संशय नहीं है ७७ (अतःसर्वभूतेषुपरिच्छिन्नेषुसंस्थितम् एकंज्ञानेनचमैत्र्यामाने नअभिन्नधीःमांभवेत्) इसकारण हे मातः सब भूत चराचर न्यारे न्यारे आकारोंमें मैं आत्मरूप से स्थितहोँ सोइ एकात्म ज्ञान करिकै पुनः सबसों मित्रता से सन्मान करिकै अभेद बुद्धिसे मेरा पूज-नकरै ७८ (जीवरूपेणसंस्थितंशुद्धंचेतनंमांज्ञात्वासुधीः चेतसाएवअनिशंसर्वभूतानिप्रणमेत्) जीव रूप करिकै सब चराचरमें स्थित शुद्ध चैतन्य मोको जानिकै ज्ञानी पुरुष चेतसा अर्थात् मन करिकै सब भूतमात्र को मेरही रूपमानि दिनौराति चराचरको प्रणामकरै क्रोध किसीपै न करै ७९ ॥

तस्मात्कदाचिन्नेक्षेतभेदमीश्वरजीवयोः॥भक्तियोगोज्ञानयोगोमयामातरुदीरितः
८० आलंब्यैकतरंवापिपुरुषःशममृच्छति ॥ ततोमांभक्तियोगेनमातःसर्वहृदि
स्थितम् ८१ पुत्ररूपेणवानित्यंस्मृत्वाशांतिमवाप्स्यसि ॥ श्रुत्वारामस्यवचनंको
शल्यानंदसंयुता ८२ रामंसदाहृदिध्यात्वास्त्रित्वासंसारबंधनम् ॥ अतिक्रम्यगती
स्तिस्त्रोप्यवापपरमांगतिम् ८३ कैकेयीचापियोगंरघुपतिगदितंपूर्वमेवाधिग
म्य । श्रद्धाभक्तिप्रशंताहृदिरघुतिलकंभावयंतीगतासुः ॥ गत्वास्वर्गस्फुरंतीद
शरथसहितामोदमानावतस्थे । माताश्रीलक्ष्मणस्याप्यतिविमलमतिःप्रापभर्तुः
समीपम् ८४ ॥

इतिश्रीमदध्यात्मरामायणेउमामहेश्वरसंवादेउत्तरकाण्डेमातृणांस्वर्गप्रस्थानं
नामसप्तमःसर्गः ७ ॥

(तस्मात्ईश्वरजीवयोःभेदंकदाचिन्नईक्षेत् हेमातःभक्तियोगःज्ञानयोगःमयाउदीरितः) सब भूत मात्रमें मैंहीहोँ ऐसा जानिकै तातेईश्वर जीवमें भेदको कभी न देखै सर्वत्रसम दृष्टिराखै हेमातः इस प्रकारसे भक्तियोग अरु ज्ञानयोग मोक्षकीमार्ग मैंने तुम प्रति वर्णन किया ८० (वापिएकतरंआलं ब्यपुरुषःशमंमृच्छतिततः मातःभक्तियोगेनसर्वहृदिस्थितंमां) चहैज्ञानंगहै चहै भक्तिगहै अथवा दोऊ को एकत्र करि ताकी आधार पुरुषशमता भावको प्राप्तहोताहै इससे हेमातः भक्ति योगकरिकै सबके अंतरमें स्थितमो को ८१ (वापुत्ररूपेणानित्यंस्मृत्वाशांतिमवाप्स्यसिरामस्य वचनंश्रुत्वाआनंदसंयु ताकौशल्या) अथवा पुत्र रूपकरिकै मोको नित्यही स्मरणकरौ तौ सब बंधन रहित शांतिको प्राप्तहो हुगी इति रघुनंदनके बचन सुनिकै आनंद सहित कौशल्या ८२ (हृदिसदारामंध्यात्वासंसारबंधनंछि त्वा तिस्रोऽपिगतिःअतिक्रम्यपरमांगतिंअवाप) हृदयमें सदा रघुनंदनको ध्यानकरिकै संसार बंधन को काटि तम, सत्व रजादि तीनों गुणोंकी गती उलंघन करिकै परमपदको प्राप्तभई ८३ (चकैकैयी अपिपूर्वरघुपतिगदितंयोगंएवाधिगम्य श्रद्धाभक्तिप्रशंताहृदिरघुतिलकंभावयंतीगतासुः) पुनः कैकेयीभी पूर्व चित्रकूटमें रघुनंदनको कहा भक्तियोगको पाय श्रद्धा भक्ति सहित शांत हृदयमें रघुनंदनको ध्यान करती हुई प्राणत्यागकरि (स्फुरंतीस्वर्गगत्वादशरथसहितामोदमानावतस्थे) प्रकाशमान दिव्य स्वरूपते स्वर्गमें जाय दशरथ सहित आनंद युतबास करती भई (श्रीलक्ष्मणस्यामातामपि अतिवि-

मलमतिःभुर्तुःसमीपंप्राप) श्रीलक्ष्मणकी माता सुमित्राभी अत्यंत विमलमतिहै जिनकी सोभी तब
त्यागि पतिके समीप प्राप्तभई ८४ ॥

इतिश्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसियबल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचितेअध्यात्म
भूषणेउत्तरकांडेसप्तमःसर्गः ७ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ अथकालेगतेकस्मिन्भरतोभीमविक्रमः ॥ युधाजितामातु
लेनह्याहूतोगात्ससैनिकः १ रामाज्ञयागतस्तत्रहत्वागंधर्वनायकान् ॥ तिस्रःको
टीःपुरेद्वेतुनिवेश्यरघुनंदनः २ पुष्करंपुष्करावत्यांतक्षंतक्षशिलाह्वये ॥ अभिषि
च्यसुतौतत्रधनधान्यसुहृद्वृतौ ३ पुनरागत्यभरतोरामसेवापरोभवत् ॥ ततःप्रीतो
रघुश्रेष्ठोलक्ष्मणंप्राहसादरम् ४ उभौकुमारौसौमित्रेगृहीत्वापदिचमांदिशम् ॥
तत्रभिल्लान्विनिर्जित्यदुष्टान्सर्वापकारिणः ५ अंगदश्चित्रकेतुश्चमहासत्वपरा
क्रमौ ॥ द्वयोर्द्वैनगरैकृत्वागजाश्वधनरत्नकैः ६ अभिषिच्यसुतौतत्रशीघ्रमागच्छ
मांपुनः ॥ रामस्याज्ञांपुरस्कृत्यगजाश्ववलवाहनः ७ ॥

सवैया ॥ भरतानुज शत्रुनमारितहां निजपुत्रन राज्य अकंटकये । निजहाथव्यों इतभावकऊकृ-
पिकाल प्रभूवतरातभये ॥ दुरवासहिआगम लक्ष्मणगे वधयोग्य तिनहै प्रभुत्यागिदये । सरितांतट प्रा-
णनिरोध तजे निजरूपभये परधामगये ॥ (अथकस्मिन्कालेगतेयुधाजितामातुलेनहि आहूतःभीम
विक्रमःभरतःससैनिकःगात्) शिवजीबोले हेगिरिजा अबकैहुकाल व्यतीत भये युधाजितनामें अ-
पने मामाकरिकै बुलायेगये वड़ेपराक्रमी जो भरतसो सहित सेना केकयदेशको जातेभये १ (रा-
माज्ञयागतःतत्रतिस्रःकोटीःगंधर्वनायकान् हत्वातुरघुनंदनःद्वेपुरेनिवेश्य) रघुनाथजीकी आज्ञाकरिकै
गये तहाँ युधाजितके विरोधी तीनिकरोरि गंधर्व नायकोंको संग्राममें मारिकै पुनः भरतजी उस
दृशमें दोनगर बसावतेभये २ (तत्रधनधान्यसुहृद्वृतौसुतौअभिषिच्य पुष्करावत्यांपुष्करंतक्षशिलाह्वये
तक्षं) तिननगरों में धनधान्य मंत्रीआदि युत अपने दोऊपुत्रोंको भरतजी राज्याभिषेक करतेभये तिनमें
जो पुष्करावती नगरीहै तामें पुष्करको भरु जो तक्षशिलहै तामें तक्षको अभिषेक किये ३ (भरतःपुनः
आगत्यरामसेवापरः अभवत्ततःप्रीतःरघुश्रेष्ठःसादरंलक्ष्मणप्राह) उहांते भरतजी पुनः अयोध्याजी में
आयरघुनाथजी की सेवामें तत्परभये तदनंतर प्रसन्नहै रघुनंदन आदर पूर्वक लक्ष्मण प्रतिबोलते भ-
ये ४ (सौमित्रेउभौकुमारौगृहीत्वापदिचमांदिशंतत्रसर्वापकारिणःदुष्टान्भिल्लान्विनिर्जित्य) हेसुमि-
त्रानंदन अपने दोऊ पुत्रनको साथलैकै तुम पदिचमदिशाको जाउ तहाँ सबको दुःखदायक दुष्टभी-
लरहते हैं तिनहि जीतिसंग्राममें बधकरि ५ (गजाश्वधनरत्नकैःद्वैनगरंकृत्वातत्रअंगदःचित्रकेतुः
महासत्वपराक्रमौसुतौद्वयोः अभिषिच्यपुनःशीघ्रमांआगच्छ) हाथी घोड़े धनरत्नादिकों करिकै भरिपूर
दोनगर बसाय तहाँ अंगद पुनः चित्रकेतुमहासाहसी पराक्रमी जो तुम्हारे पुत्रहैं तिन दोऊको अ-
भिषेक करि तुम पुनः शीघ्रही मेरे पासको लौटिआवो (रामस्यअज्ञांपुरस्कृत्यगज अश्ववलवाहनः)
रघुनाथजी की आज्ञामानि हाथी घोड़े पैदरादि सेना रथादि वाहनों को साथलैकै ६ । ७ ॥

गत्वाहत्वारिपून्सर्वान्स्थापयित्वाकुमारको ॥ - सौमित्रिःपुनरागत्यरामसेवापरोभ

वत् ८ ततस्तुकालेमहतिप्रयातेरामंसदाधर्मपथेस्थितंहरिम् ॥ द्रष्टुंसमागाढ
षिवेषधारीकालस्ततोलक्ष्मणमित्युवाच ६ निवेदयस्वातिवलस्यदूतंमांद्रष्टुका
मंपुरुषोत्तमाय ॥ रामायविज्ञापनमस्तितस्यमहर्षिमुख्यस्यचिरायधीमन् १० त
स्यतद्वचनंश्रुत्वासौत्रिस्त्वरयान्वितः ॥ आचचक्षेथरामायससंप्राप्तंतपोधनम् ११
एवंब्रुवंतंप्रोवाचलक्ष्मणंराघवोवचः ॥ शीघ्रंप्रवेश्यतांतातमुनिःसत्कारपूर्वकम् १२
लक्ष्मणस्तुतथेत्युक्त्वाप्रावेशयततापसम् ॥ स्वतेजसाज्वलंतंतंघृतसिक्तंयथा
नलम् १३ सोभिगम्यरघुश्रेष्ठदीप्यमानःस्वतेजसा ॥ मुनिर्मधुरवाक्येनवर्ध
स्वेत्याहराघवम् १४ ॥

(गत्वासर्वान्रिपून्हत्वाकुमारकौस्थापयित्वापुनःआगत्यसौमित्रिःरामसेवापरःअभवत्) उहाँ गये
सब शत्रु भीलनको मारि दोनगर बसायतिनमें अपने पुत्रोंको राज्याभिषेक करिके पुनःअयोध्याजी
में आय लक्ष्मण रघुनंदनकी सेवामे तत्परभये ८ (ततःतुमंहतिकालेप्रयातेसदाधर्मपथेस्थितरामंहरिं
द्रष्टुं ऋषिवेषधारीकालःसमागात्ततःलक्ष्मणंइतिउवाच) तदनंतर पुनः बहुतकाल व्यतीतभयेपर
सदा धर्ममार्गमें स्थित जो रामहरिहैं तिनहिं देखनेको ऋषिवेष धारणाकिहे काल अयोध्याजीमें प्रभुके
द्वारपर आयलक्ष्मण प्रतिइसप्रकार बोलताभया ९ (हेधीमन्महर्षिमुख्यस्य अतिवलस्यदूतंमांद्रष्टुका
मंतस्य विज्ञापनंचिरायअस्ति पुरुषोत्तमायरामायनिवेदयस्व) हे बुधिवंत महा ऋषिनमें मुख्यजो
अति बलहैतिनको पठावा दूतमैंहों भरुमोको रघुनाथजीके देखनेकीकामनाहै भरुतिनअतिबलको
संदेशादेर तकमोको कहनाहै इतिमेराहाल पुरुषों में उत्तम रघुनाथजीके अर्धनिवेदन करौ १०
(तस्यतत्त्वचनंश्रुत्वासौमित्रिः त्वरयान्वितःअथसंप्राप्तंतपोधनंसरामायभाचक्षे) तिस तापसके
सो बचन सुनिके लक्ष्मण शीघ्रता सहित जाय अब आया जो तपोधनी ताको हाल सो लक्ष्मण
रघुनंदन से कहते भये ११ (एवंब्रुवंतंलक्ष्मणंराघवः वचःप्रोवाचतातसत्कारपूर्वकंमुनिः शीघ्रंप्रवे
श्यतां) द्वार पर एक तापस आयाहै ऐसा कहते जो लक्ष्मण तिन प्रति रघुनंदन बचन बोलते
भये कि हे तात सन्मान सहित मुनिको शीघ्रही मेरेपास को लावो १२ (तथाइतिउत्कालक्ष्मणः
यथाघृतसिक्तंअनलंस्वतेजसाज्वलंतंतंतापसंप्रवे शयत) बहुत भली ऐसा कहि लक्ष्मण द्वारपर
आये पुनः जैसे घृत परे अग्नि प्रज्वलित होत तैसेही अपने तेजकरि के प्रज्वलित तिस तापस को
मंदिर के भीतर लवाय लाये १३ (सोभिगम्यस्वतेजसादीप्यमानः रघुश्रेष्ठमुनिःमधुरवाक्येनवर्धस्व
इतिराघवं आह) सो सन्मुख जाय अपूर्व अपने तेज करिके प्रकाश मान रघुवंश नाथ को
देखि मुनि मधुर बचन करि के वर्धस्व अर्थात् सत्तांग राज्ञ श्री वृद्ध होय ऐसा बचन रघुनंदन
प्रति बोलता भया १४ ॥

तस्मैसमुनयेरामःपूजांकृत्वायथाविधि ॥ पृष्ठानामायमव्यग्रोरामःपृष्ठोत्थतेनसः
१५ दिव्यासनेसमासीनोरामःप्रोवाचतापसम् ॥ यदर्थमागतोसित्वमिहतत्प्राप
यस्वमे १६ वाक्येनचोदितस्तेनरामेणाहमुनिर्वचः ॥ द्वंद्वमेवप्रयोक्तव्यमनाल
क्ष्यंतुतद्वचः १७ नान्येनचैतच्छ्रोतव्यंनख्यातव्यंचकस्यचित् ॥ शृणुयाद्वा
रीक्ष्येद्वायःसर्वध्यस्त्वयाप्रभो १८ तथेतिचप्रतिज्ञायरामोलक्ष्मणमब्रवीत् ॥

तिष्ठत्वं द्वारिंसौ मित्रेनायात्वत्रजनोरहः १९ यद्यागच्छतिको वापि सवध्यो मे न संशयः
ततः प्राह मुनिं रामो येन वा त्वं विसर्जितः २० यत्ते मनीषितं वाक्यं तद्वदस्व ममाग्रतः ॥
ततः प्राह मुनिर्वाक्यं शृणु राम यथा तथम् २१ ब्रह्मणा प्रेषितोऽस्मींशकार्यार्थे ते न्तिकं
प्रभो ॥ अहं हि पूर्वजो देवतवपुत्रः परंतप २२ ॥

(तस्मै मुनये सरामः यथाविधि पूजां कृत्वा अव्यग्रः रामः अनामयं पृष्टाग्रथेन सः पृष्टः) तिसमुनिके अर्थ
सो रघुनंदन जैसे वेदमें विधि है तैसे ही विधि पूर्वक पूजा करि सावधान है रघुनंदन मुनि सों प्रसन्नता पूछे
तब तिसमुनि करिकै रघुनंदन कुशल पूछे गये १५ (दिव्यासने समासीनः रामः तापसं प्रोवाच यत् अ-
र्थत्वं इह आगतोऽसि तस्मै प्रापयस्व) दिव्यसिंहासन पर बैठे हुये रघुनंदन तापस प्रतिबोलते भये कि हे मुने
जिस हेतु तुम इहाँ आये हैं सो कार्य मो प्रतिकहिye १६ (रामेण वाक्येन तेन चोदितः मुनिः वचः द्वंद्व एव प्रयो-
क्तव्यं तु तत्त्वचः अनालक्ष्यं) रघुनंदन के वचनों करिकै आज्ञा दिया गया सो मुनि बोला कि हे महाराज
आप अरु मैं द्वैद्वीरहे वार्ता करौंगा तीसरा कोई न रहे काहे ते वे वार्ता आपके सिंवाय और के सुन बेयोग्य न ही
हैं १७ (हे प्रभो एतत्तन च अन्येन श्रोतव्यं च कस्याचित् नारख्यातव्यं यः शृणुयात् त्वानिरीक्ष्येत् वा स त्वया बध्यः)
हे प्रभो जो वार्ता मैं आपसे करौंगा सो वार्ता न कोऊ और मुने पुनः और किसी से न आप कहैं अरु कदाचित्
कोऊ और सुनिले वै अथवा इहाँ आप देखिले वैं सो आप करिकै मारा जाय १८ (तथा इति प्रतिज्ञाय च रामः
लक्ष्मणं ब्रवीत् सौमित्रत्वं द्वारिंतिष्ठन्नरहः जनः नायात्) बहुत भली इहाँ कोई न जाने पावै गो ऐसी
प्रतिज्ञा करिकै पुनः रघुनंदन लक्ष्मण प्रतिबोले कि हे सुमित्रानंदन तुम द्वार पर बैठो इहाँ एकांत में
मैं वार्ता करौंगा ताते इहाँ कोऊ और जन न जाने पावै १९ (यदि को वापि भागच्छति स मे बध्यः संशयः न
ततः रामः मुनिं प्राह येन वा त्वं विसर्जितः) जो साइति इहाँ कोऊ आवैगा सो मेरे हाथ बध होगा
इसमें संशय नहीं है तदनंतर रघुनंदन मुनि प्रति बोले कि हे मुने जिसने तुमको पठावा है तिसको
जो कुछ कार्य होय अथवा २० (यत्ते मनीषितं तत्वाक्यं ममाग्रतः वदस्व ततः मुनिः वाक्यं प्राह हे
राम यथा तथम् शृणु) जो तुम्हारा मनारथ होय सो वचन मेरे आगे कहौ तदनंतर मुनि वचन बोले कि
हे राम सत्य वचन कहता हौ सुनिये २१ (हे ईश ब्रह्मणा प्रेषितः अस्मि कार्यार्थे ते न्तिकं प्रभो परंतप देव
हं पूर्वजः तव पुत्रः) हे ईश लोक पालन हारे ब्रह्मा करिकै पठावा हुआ मैं उन्हीं के कार्य अर्थ आपके
पास आया हौ हे स्वामिन् स्वयं प्रकाश वेद तत्व में सबसे ज्येष्ठ आप को पुत्र हौ २२ ॥

मायासंगमजो वीरकालः सर्वहरः स्मृतः ॥ ब्रह्मास्वामाह भगवान्सर्वदेवार्थि पूजितः
२३ रक्षितुं स्वर्गलोकस्य समयस्ते महामते ॥ पुरात्वमेक एवासी लोकां नू संहृत्य मा-
यया २४ भार्यया सहितस्त्वं मामादौ पुत्रमजीजनः ॥ तथा भोगवतं नागमनन्तमु-
दकेशयम् २५ मायया जनयित्वा त्वं द्वौ ससत्त्वौ महाबलौ ॥ मधुकैटभकौ दैत्यौ हत्वा
मेदोस्थि संचयम् २६ इमां पर्वतसं वद्धां मेदिनीं पुरुषर्षभ ॥ पद्मे दिव्यार्कसं काशे
नाभ्यामुत्पाद्य मामपि २७ मां विधाय प्रजाध्यक्षं मयि सर्वं न्यवेदयत् ॥ सोऽहं संयुक्त
• संभारस्त्वामवोचं जगत्पते २८ रक्षाविधत्स्व भूतेभ्यो ये मे वीर्यापहारिणः ॥ तत
स्त्वं कश्यपाज्जातो विष्णुर्वामिनरूपधृक् २९ ॥

(वीरमायासंगमजः सर्वहरः कालः स्मृतः भगवान्सर्वदेवार्थि पूजितः ब्रह्मात्वां आह) हे रघुवीर जब माया

से आपको संयोगभयात्तत्र मैं उत्पन्नभया सबको नाशकरनेहारा काल मेरानाम है हे भगवन् सब देवऋषिन करिकै पूजितब्रह्मा आपसों यहकहा है २३ (महामतेस्वर्गलोकस्यरक्षितुंतेसमयः) हे महामते अवस्वर्गलोककी रक्षाकरिवेको आपकोसमय है भावनरलोकरहनेको समयव्यतीत होगया पुरामाययालोकान्संहृत्यत्वंएकएवासीः) प्रलयादिकालमें अपनी मायाकरिकै सबलोकोंको संहार करि आपहीएकरहेहैं २४ (भार्गव्यासहितःत्वंआदौमांपुत्रमजीजनःतथाउदकेशयमभोगवतंनगंअनंतं) अपनीभार्या मांयाकरिकै सहितआपसृष्टिकी आदिमेंमैंजोहों ब्रह्मातिसको पुत्रकरि उत्पन्नकीन्हें-उतैसेहीजलमें शयनकरनेवालाबहुतहैं फन जिसके ऐसे नागअनंतकोउत्पन्नकीन्हेंउ २५(त्वंमायया जनयित्वाद्वातसत्त्वौमहाबलौदैत्यौमधुकैटभकौहत्वामेदःअस्थिसंचयम्) आपआपनीमायाकरिकैउत्पन्नकियादोऊ सहित साहस महापराक्रम दैत्य जो मधुकैटभ तिनकोमारि उनकीचरबी हाड़ बटोरिकै २६ (पुरुषर्षभइमांमेदिनीपर्वतसंवद्धानाभ्यांदिव्यार्कसंकाशेपद्मेमांअपिउत्पाद्य) हे पुरुषोंमेंअध उसी चरबीकरिकै यहपृथिवी अरु हाड़ोंकरिकैपर्वतरचतेभयो पुनः हेप्रभोअपनीनाभी में दिव्यस्वरूप सूर्य-वत्प्रकाश मानकमल में मैं जो ब्रह्मा तिसको भी उत्पन्न किहेउ २७ (प्रजाध्यक्षमांविधायमयिसर्वं न्यवेदयत् हे जगत्पते संभारः संयुक्तः सः अहंत्वांअवोचं) प्रजापति मोको बनाय मेरेमें लोक व्यापार सब निवेदन कीन्हेंउ हे जगत्पते संपूर्ण लोकोंको भार संयुक्त सोई मैं आपप्रतिबोलेउ२८ (भूतेभ्यः येमेवीर्यापहारिणः रक्षाविधत्स्वततः त्वंविष्णुः वामनरूपधृक्कश्यपात्जातः) क्याप्रार्थनाकीन्हेंउ हे प्रभो भूत जो सब संसार को तथा मेरे पराक्रमको नाशकरनेवाले जे दुष्ट हैं तिनसों मेरीरक्षाको विधानकीजे तदनंतर आपजो विष्णुसो वामनरूपधरि कश्यपते उत्पन्नभयो २९ ॥

हृतवानसिभूभारंवधाद्रोगणस्यच ॥ सर्वासूत्सार्यमाणसुप्रजासुधरणीधर ३०
रावणस्यवधाकांक्षीमर्त्यलोकमुपागतः ॥ दशवर्षसहस्राणिदशवर्षशतानिच
३१ कृत्वावासस्यसमयंत्रिदशेष्वात्मनःपुरा ॥ सतेमनोरथःपूर्णःपूर्णंचायुषिते
नृषु ३२ कालेस्तापसरूपेणत्वत्समीपमुपागमत् ॥ ततोभूयाश्चत्तेबुद्धिर्यदि
राज्यमुपासितुम् ३३ तत्तथाभवमद्रंतेएवमाहपितामहः ॥ यदितेगमनेबुद्धि
दैवलोकंजितेन्द्रियम् ३४ सनाथाविष्णुनादेवाभवन्तुविगतज्वराः ॥ चतुर्मुख
स्यतद्वाक्यंश्रुत्वाकालेनभाषितम् ३५ हसनरामस्तदावाक्यंकृत्स्नास्यान्तकमप्र
वीत् ॥ श्रुतंतववचोमेघममापीष्टतरंतुतम् ३६ संतोषःपरमोज्ञेयस्त्वदागमनका
रणात् ॥ त्रयाणामपिलोकानांकार्यार्थममसम्भवः ३७ ॥

(रक्षोगणस्यवधात्चभूभारंहृतवानसिधरणीधरसर्वासुप्रजासुउत्सार्यमाणसु) तवराक्षसगणोंको मारिपुनः भूमिकोभारहरेहुपुनःहेधरणीधर फिरिजबदशमुखादिकोंकेसतानेलेसबप्रजादुखपीड़ितभये तवोमेरीप्रार्थनासेआप ३० (रावणस्यवधाकांक्षीमर्त्यलोकंउपागतःदशसहस्राणिवर्षाणिचदशशतानिवर्षाणि) हेरघुवंशनाथरावणकेबधकीइच्छाराखिआपमर्त्यलोकमेंअवतीर्णभयेसोसबकार्यैकिथेतहांदशहजारवर्षपुनः दशसैवर्षतक ३१ (आत्मनःवासस्यपुरा त्रिदशेषुसमयंकृत्वासतेमनोरथः पूर्णःचतैनृषु आयुषिपूर्ण) नरतनुसेमर्त्यलोकमेंवासकरणेकोदेवतां में प्रतिज्ञाकीन्हेंउभावगेरहहजार वर्षवासकरेगे सोआपकोमनोरथपूर्णभयापुनःआपकेमनुष्यतनुकीआयुःभीपूर्णभई ३२ (तापसरूपेणकालःत्वत्समी-

पंडपागमत्ततःयदितेबुद्धिःचराज्यंउपासितुंभूयात्) सोपूरासमयपायकैतापसरूपकरिकैकालआपके समीप आवतहै ताकीमर्यादाराखि इच्छाहोयतौ निजलोकको भाइये तदनंतर जोआपकीबुद्धिपुनः राज्य करने को अधिकहो ३३ (तेभद्रंतत्तथाभवएवं पितामहःआहजितेंद्रिय यदिदेवलोकं गमनेते बुद्धिः)जो अभी उहां रहनेकी इच्छाहोयतौ आपको कल्याणहोय तैसाहीकीजे ऐसा संदेश ब्रह्माआप से कहाहै पुनः हे जितेंद्रिय जो देवलोक जाने की आपकी बुद्धिहोय ३४ (विष्णुनादेवाः विगतज्वराः सनाथाः भवंतुकालेन भाषितंतत्तत्तुमुखस्यवाक्यं श्रुत्वा) हेराधवेन्द्र जो आप देवलोक को चलौ तौ विष्णुकरिकै देवता सब संताप रहित सनाथहोयंगे इति कालकरिकै भापेसोब्रह्मा के वचन सुनि कै ३५ (तदारामः हसन् कृत्स्नस्य अंतकंवाक्यं अब्रवीत् तववचःमे अद्यश्रुतं तुतंममापि इष्टतरं) तवरघुनंदन हसतसंते संपूर्ण जगत् को नाशकरनेवाला जोकाल त्यहिप्रतिवचन बोलतेभये हेकाल तुम्हारे वचन मैं आजसुना भरु पूर्वही से यहीमेराभी अभीष्टरहा ३६ (त्वदागमनकारणात् परमः संतोषः ज्ञेयः प्रधाणां अपिलोकानाकार्थार्थममसंभवः) तुम्हारे इहांआगमभये कारणते मोको(परम संतोषभयाक्योंकि तीनिहुं लोकनकेकार्य करने अर्थमेरा अवतार भयारहे ३७ ॥

भद्रंतेस्तुगमिष्यामियतएवाहमागतः ॥ मनोरथस्तुसंप्राप्तोनमेवास्तिविचारणा ३८ मत्सेवकानांदेवानांसर्वकार्येषुवेमया ॥ स्थातव्यंमाययापुत्रयथाचाहप्रजापतिः ३९ एवंतयोःकथयतोदुर्वासामुनिरभ्यगात् ॥ राजद्वारंराघवस्यदर्शनापेक्षयादृतम् ४० मुनिर्लक्ष्मणमासाद्यदुर्वासावाक्यमब्रवीत् ॥ शीघ्रंदर्शयराममेकार्थं मेत्यंतमाहितम् ४१ तच्छ्रुत्वाप्राहसौमित्रिर्मुनिंज्वलनतेजसम् ॥ रामेणकार्यंकिं तेद्यकितेभीष्टंकरोम्यहम् ४२ राजाकार्यान्तरेव्यग्रोमुहूर्तंसंप्रतीक्ष्यताम् ॥ तच्छ्रुत्वाक्रोधसंतप्तोमुनिःसौमित्रिमब्रवीत् ४३ अस्मिन्क्षणेतुसौमित्रेनदर्शयसिचे द्विभुम् ॥ रामंसविषयंवंशंभस्मीकुर्यान्नसंशयः ४४ श्रुत्वातद्वचनंघोरमृषेर्दुर्वाससोभृशम् ॥ स्वरूपंतस्यवाक्यस्यार्चितयित्वासलक्ष्मणः ४५ ॥

(तेभद्रंअस्तुयतआगतःएवअहंगमिष्यामितुमनोरथःसंप्राप्तःअत्रमेविचारणानअस्ति) हेकालतेरा कल्याणहोयजहेंतेआयाहौं तिसीलोककोनिश्चयकरिअबमैंजाऊंगोपुनःजोमेरामनोरथहै सोपूर्णप्राप्त भयातौइहांरहनेको मोकोविचारकरणाकलुनहींहै ३८ (मत्सेवकानांदेवानांकार्येषुयथाचाहप्रजापतिःहे पुत्रमाययामयावैस्थातव्यं) मेरेसेवरुजोदेवताहेंतिनकेकार्योमेंजहेंजैसाब्रह्माकहैं तहाँ तैसाही हे पुत्र अपनीमायाकरिकै मोको निश्चय करिस्थित होनाचाहिये ३९ (एवंतयोः कथयतः आदृतं राघवस्यदर्शनापेक्षयाराजद्वारंदुर्वासामुनिःअभ्यगात्) इसीप्रकार काल रघुनंदन दोऊ वार्ताकरतेरहे ताही समय मैं आदरपूर्वक रघुनंदन के दर्शनकी अपेक्षा करिकै राजद्वार पर दुर्वासा मुनि आवते भये ४० (लक्ष्मण आसाद्य दुर्वासा मुनिःवाक्यं अब्रवीत् मे अत्यंतं आहितं कार्यं मे रामशीघ्रं दर्शय) लक्ष्मणप्रतिप्राप्तहै दुर्वासा मुनि वचन बोलते भये हे लक्ष्मण मेरा अत्यंत जरूरी कार्यहै ताते मोकोरघुनंदन की शीघ्रही देखावौ ४१ तत्श्रुत्वाज्वलनतेजसंमुनिसौमित्रिः प्राहरामेणतेकिंकार्यमद्यतेकिंमभीष्टमहं करोमि) सोसुनि अग्निसमतेजवंत मुनि जो दुर्वासा तिनप्रति लक्ष्मण बोले कि रामकरिकै आपको क्याकार्य यासमयआप को क्या अभीष्टहै सो कहिये मैं करौं ४२ (कार्यान्तरे राजान्व्यग्रःमुहूर्तंसंप्रती-

ह्यताम् तत्श्रुत्वामुनिः क्रोधतंतप्तः सौमित्रिं अब्रवीत्) किसीअवश्यक कार्यमें लगे राजा तावधान नहीं हैं ताते मुहूर्तभरि बैठिजाइये सो सुनि मुनि क्रोधसे प्रज्वलित लक्ष्मण प्रतिबोलतेभये ४३ (सौमित्रेअस्मिन्नणेतु चेत्विभुस्नदर्शयति त्विषयं वंशरामंभस्मोर्कुर्यान् संशयःन) हे लक्ष्मण इसीक्षणमें जो कदाचिरामको नहीं देखावते हौ तो सहितराज्यवंश रामको भस्मकरताहौ चामें संशयनहीं है ४४ ऋषेर्दुर्वासितः भृशंयोगं वचनंतत्श्रुत्वानस्यवाक्यस्यस्वरूपं चिंतयित्वासलक्ष्मणः) ऋषि दुर्वासाके कहे अत्यंतभयंकर वचन सो सुनिकै तिस वचन को स्वरूपभावार्थ चिंतवनकरि सबवात विचारि सो लक्ष्मण ४५ ॥

सर्वनाशाद्वरमेघनाशोह्येकस्यकारणात् ॥ निश्चित्यैवंततो गत्वारामायप्राहलक्ष्मणः ४६ सौमित्रेर्वचनंश्रुत्वारामःकालंव्यसर्जयत् ॥ शीघ्रंनिर्गम्यरामोपिददर्श त्रेःसुतंमुनिम् ४७ रामोभिवाचसंप्रीतोमुनिंप्रच्छसादरम् ॥ किंकार्यंतेकरोमीति मुनिमाहरधूतमः ४८ तच्छ्रुत्वारामवचनंदुर्वासाराममब्रवीत् ॥ अद्यवर्षसहस्राणां मुपवाससमापनम् ४९ अतोभोजनमिच्छामिसिद्धयत्तेरधूतम् ॥ रामोमुनिवचः श्रुत्वासंतोषेणसमन्वितः ५० ससिद्धमन्नंमुनयेयथावत्समुपाहरत् ॥ मुनिर्भुक्त्वा न ममृतंसंतुष्टःपुनरभ्यगात् ५१ स्वमाश्रमंगतेतस्मिन्नरामःसस्मारभाषितम् ॥ कालेनशोकदुःखार्तोविमनश्चातिविह्वलः ५२ अवाह्मुखोदीनमनानशशाकामि भाषितुम् ॥ मनसालक्ष्मणंज्ञात्वाहतप्रायंरघूद्वहः ५३ ॥

(कारणात्सर्वनाशात्अद्यमेकस्यनाशःदिवरंएवंनिश्चित्यततः गत्वालक्ष्मणःरामायप्राह) दुर्वासा क्रोधकारण ते सबको नाश होनेसे अब मेरेएकको नाश होना निश्चय करि उत्तमहै इत्तप्रकारनिश्चित्यतदनंतर भीतरजाय लक्ष्मण रघुनंदनसे बोलतेभये ४६ (सौमित्रेःवचनंश्रुत्वारामःकालंव्यसर्जयत् शीघ्रंनिर्गम्यरामः अपि अत्रेः सुतं मुनिंददर्श) लक्ष्मण के वचन सुनिकै रघुनंदन कालको विदा कीन्है शीघ्रही द्वारपर आय रघुनंदन भी आत्रिके पुत्र दुर्वासा मुनिको देखते भये ४७ (संप्रीतःरामः अभिवाच सादरम् मुनिं पप्रच्छ ते किंकार्यं करोमि इतिरधूतमःमुनिर्वाह) प्रसन्नतासहित रघुनंदन प्रणाम करि आदर सहित मुनि प्रति पूछते भये हेमुने आपको क्या कार्य मैकरौ ऐसा वचन रघुनंदन मुनि प्रति बोले ४८ (तत्त्रामवचनंश्रुत्वा दुर्वासा रामं अब्रवीत् वर्षसहस्राणां उपवासमद्यसमापनम्) सो रघुनंदनको वचन सुनिकैदुर्वासा रघुनंदन प्रति बोलते भये कि हजार वर्षको मेरा व्रत आज समाप्त भया है ४९ (अतःभोजनंइच्छामिरधूतमयत्तेतिसिद्धंमुनिवचःश्रुत्वारामःसंतोषेणसमन्वितः । इसहेतु में भोजनकी इच्छाकरताहौ हेरघुवर जोभोजन तुम्हारे तयारहोइ सोईजे इतिउपाधिरहितसुलभ मुनिको वचनसुनिकै रघुनंदन संतोषसहितगये ५० (यथावत्सतिद्धं अन्नंमुनये समुपाहरत्) अमृतंअन्नंभुक्त्वांतुष्टःमुनिःपुनः अभ्यगात्) जैसाचाहिये तैसेही तिद्धकिया अन्नंमुनिके अर्थ लाय प्राप्तकियेअमृतवत्स्वादुजामेंऐसाअन्नभोजन करिसंतुष्टहवैमुनिपुनःजातेभये ५१ (तस्मिन्स्वमाश्रमंगते रामः कालेनभाषितंसस्मार शोकदुःखार्तः विमनः च अतिविह्वलः) तिसमुनिको आपनेआश्रमकोगये संतेरघुनंदनकालकरिकै कहाहुवा वचन सुधि करिकै शोकदुःख युक्तआरत उदासमनपुनःविह्वलहवै गये ५२ लक्ष्मणंहतप्रायंमनसाज्ञात्वा रघूद्वहःदीनमनाअवाह्मुखः अभिभाषितु नशशाक) लक्ष्मणको

वययोग्य मनसे जानि रघुनंदन दीनमन बचनरहित मुखकिहे लक्ष्मण प्रति वार्ताकरनेको न समर्थभये भाव लक्ष्मणप्रति कछु न बोले ५३ ॥

अवाङ्मुखोवभूवाथतूष्णीमेवाखिलेश्वरः॥ ततो रामं विलोक्याहसौमित्रिर्दुःखसंलु-
तं ५४ तूष्णींभूतंचितयतंगर्हितस्नेहबंधनम् ॥ मत्कृतेत्यजसंतापंजहिमंरघु-
नन्दन ५५ गतिःकालस्यकलितापूर्वमेवेदृशीप्रभो ॥ त्वयिहीनप्रतिज्ञेतुनरकोमे-
ध्रुवंभवेत् ५६ मयिप्रीतिर्यदिभवेद्यनुग्राह्यतवत्यक्त्वाशंकांजहिप्राज्ञामांमाधर्म-
त्यजप्रभो ५७ सौमित्रिणोक्तंतच्छ्रुत्वारामश्चलितमानसः ॥ आहूयमंत्रिणःसर्वा-
नूवशिष्टंवेदमब्रवीत् ५८ मुनेरागमनंयत्तुकालस्यापिहिभाषितम् ॥ प्रतिज्ञामात्म-
नश्चैवसर्वमावेदयत्प्रभुः ५९ श्रुत्वारामस्यवचनंमंत्रिणःसपुरोहिताः ॥ ऊचुःप्रां-
जलयःसर्वे राममक्लिष्टकारिणम् ६० पूर्वमेवहिनिर्दिष्टं तवभूभारहारिणः ॥ लक्ष्म-
णेनवियोगस्तेज्ञातोविज्ञानचक्षुषा ६१ ॥

(अथअवाङ्मुखःतूष्णींएवअखिलेश्वरःततः रामं विलोक्यदुःखसंलुप्तसौमित्रिःआह) अब बचन हीन नीचे मुख किहे मौन बैठे अखिलेश्वर तदनंतर उदासीन रघुनंदन को देखि दुःखसागर में बूढ़े लक्ष्मण बोलते भये ५४ (गर्हितस्नेहबंधनं चितयतंतूष्णींभूतं रघुनंदनमत्कृते संतापंत्यजमां जहि) निंदित जो स्नेह बंधन ताको चितवन करते मौन बैठे तिन प्रति लक्ष्मण बोले कि हे रघुनंदन मेरे हेत संताप को त्यागि मोको बधकरौ ५५ (प्रभोकालस्यगतिःईदृशीपूर्वं एव कलितातु त्वयिहीन प्रतिज्ञेध्रुवंमेनरकःभवेत्) हे प्रभो काल की गति इसीप्रकार अर्थात् जा काल में जो होनहार है सो अवश्यही होताहै इत्यादि पूर्वहीं आपने रचिराखाहै सो मिटनेको नहीं पुनः आप प्रतिज्ञा हीन होत संते निश्चय मोको नरक होयगो ५६ (हे प्राज्ञयदि मयिप्रीतिःभवेत् यादितवअनुग्राह्यता प्रभोशंकां त्यक्त्वामांजहि धर्ममात्यज) हे परम विद्वान् जो मेरे में प्रीति है जो आप अपना करि मानेहौ तौ हे स्वामिन् शंका त्यागि मोको मारौ अरु प्रतिज्ञा रूप धर्म न त्याग कीजिये ५७ (सौमित्रिणाउक्तंतत्श्रुत्वाचलितमानसःरामःसर्वान्मंत्रिणःआहूयचवशिष्टंइदंअब्रवीत्) लक्ष्मण ने कहा सो सुनिधर्म स्नेहमें चलायमान मनजिनको ऐसे रघुनंदन सबमंत्रिनको बोलाय पुनःवशिष्टप्रति ऐसा बचन बोलतेभये ५८ (यत्मुनेःआगमनंतुकालस्यअपिहिभाषितंचएवआत्मनःप्रतिज्ञांसर्वप्रभुः आवेदयत्) जैसे दुर्वासामुनिको आगमभया पुनःकालको भी निश्चय बचन कहना पुनः अपनी प्रतिज्ञाइत्यादि सबहाल प्रभुवशिष्टसे कहिदिये ५९ (रामस्यवचनंश्रुत्वांमंत्रिणःसपुरोहिताःसर्वेप्रांजलयःअक्लिष्टकारिणरामंऊचुः) रघुनंदनकेवचनसुनिकैसहितपुरोहितसबमंत्रीहाथजोरिअक्लेशकारीरघुनंदन प्रति बोलतेभये ६० (भूभारहारिणःतवलक्ष्मणेनतेवियोगः पूर्वमेवहिनिर्दिष्टंविज्ञानचक्षुषाज्ञातः) वशिष्ठबोले हे रघुनंदन भूमिको भारहरणेहेतजब आपको भवतार भयासो लक्ष्मणकरिकै आपको वियोग पूर्वहींसे निश्चय करिकै होनहाररहाहै सोविज्ञानदृष्टि करिकै हमजानते हैं ६१ ॥

त्यजाशुलक्ष्मणंराममाप्रतिज्ञांत्यजप्रभो॥ प्रतिज्ञातेपरित्यक्तेधर्मोभवतिनिष्फलः
६२ धर्मनष्टेऽखिलेरामत्रैलोक्यंनश्यतिध्रुवम् ॥ त्वंतुसर्वस्यलोकस्यपालकोसिर-
घूतम ६३ त्यक्त्वालक्ष्मणमेवैकंत्रैलोक्यंत्रातुमर्हसि ॥ रामोधर्मार्थसहितंवाक्यं

तेषामनिन्दितम् ६४ सभामध्येसमाश्रुत्यप्राहसौमित्रिमंजसा ॥ यथेष्टंगच्छसौमि-
त्रेमाभूद्धर्मस्यसंक्षयः ६५ परित्यागोबधोवापिसतामेवोभयंसमम् ॥ एवमुक्तेरधु-
श्रेष्ठेदुःखव्याकुलितेक्षणः ६६ रामंप्रणम्यसौमित्रिःशीघ्रंगृहमगात्स्वकम् ॥ ततो
गात्सरयूतीरमाचम्यसकृतांजलिः ६७ नवद्वाराणिसंयम्यमूर्ध्निप्राणमधारयत् ॥
यदक्षरंपरंब्रह्मवासुदेवाख्यमव्ययम् ६८ ॥

(राम लक्ष्मणं आश्रुत्यजप्रतिज्ञामात्यजप्रभोतेप्रतिज्ञा परित्यक्तेधर्मः निष्फलः भवते) वशिष्ठबोले
कि हे रघुनंदन लक्ष्मण को शीघ्रही त्याग कीजिये अरु प्रतिज्ञा को न त्याग कीजिये क्योंकि हे प्रभो
आप के प्रतिज्ञा परित्याग करत संते धर्मही निष्फल होता है ६२ (रघूत्तमत्वंतु सर्वस्य लोकस्यपालकः
असिरामअखिले धर्मेनष्टे त्रैलोक्यं ध्रुवं नश्यति) हे रघुकुलोत्तम परिपूर्ण धर्म धारण करि आपसब
लोकन के पालनहार हो अरु धर्म ते संसार बना है जो आप धर्म त्यागौ तौ संपूर्ण धर्म नाशभया
संपूर्ण धर्मेनाशहोत संते तीनिहु लोक निश्चयकरि नाशहो जायेंगे ६३ (एकलक्ष्मण एवत्यक्त्वा त्रैलो-
क्यं त्रातुं अर्हसि धर्मार्थं सहितं अनिन्दितं वाक्यं तेषां रामः) ताते एकलक्ष्मणही को त्याग करि तीनिहु लोकन के
रक्षा करिबे योग्य हो इति प्रभुको धर्म सबलोकनको अर्थ दोऊ साहित पुनः जामें निदान ही ऐसे उत्तम
बचन तिनको सुनिकै रघुनंदन ६४ (सभामध्येसमाश्रुत्यंजसासौमित्रिप्राहसौमित्रेयथादृष्टंगच्छधर्म-
स्यसंक्षयःमाभूत्) सभाजनोमें सबको सुनाय शीघ्रही लक्ष्मण प्रति रघुनंदन बोले हे लक्ष्मण जहाँ
तुम्हारी इच्छा होय तहाँ जाव जामें धर्मनाश न होय ६५ (वधः वापि परित्यागः उभयं सतां समं एव एवंग्रधुश्रेष्ठे
उक्तेदुःखव्याकुलितेक्षणः) वध करना अथवा निश्चय करि परित्याग करना ये दोऊ तत्पुरुषोंको बराब-
रि ही हैं इस प्रकार बचन रघुनंदन के कहत संते दुःखव्याकुलनेत्र ६६ (सौमित्रिः रामंप्रणम्य शीघ्रं स्वकंगृहं
अगात् ततः सरयूतीरं अगात् आचम्य सकृतांजलिः) लक्ष्मण रघुनंदनको प्रणाम करि शीघ्रही अपने मंदिर
को गये राजसी भूपणत्यागि तदनंतर सरयूतीर जाय आचमन करि हाथ जोरि ६७ (नवद्वाराणिसंयम्य प्राणं
मूर्ध्नि आधारयत्युत्तमं ब्रह्मवाक्यं परब्रह्म) श्रवण नेत्रनासिका मुखादिनवौ इन्द्रद्वारोंको बंद
करि सर्वांग ते खैचि प्राण शीघ्रमें धारण करि जो कारण परनाश रहित वासुदेव नाम जाको ऐसा जो परब्रह्म ६८ ॥

पदंतत्परमंधामचेतसासोभ्यचिन्तयत् ॥ वायुरोधेन संयुक्तं सर्वदेवाः सहर्षयः ६९
साग्नयो लक्ष्मणं पुष्पैस्तुष्टुबुधैः समाकिरन् ॥ अदृश्यं विबुधैः कैश्चित्सशरीरं सत्त्वा-
सवः ७० गृहीत्वा लक्ष्मणं शक्रः स्वर्गलोकमथागमत् ॥ ततो विष्णोश्चतुर्भागतं
देवं सुरसत्तमाः ॥ सर्वदेवर्षयो दृष्ट्वा लक्ष्मणं समपूजयन् ७१ लक्ष्मणे हि दिवमाग-
ते हरौ सिद्धलोकगतयोगिनस्तदा ॥ ब्रह्मणा सह समागमन्मुदा द्रष्टुमाहितमहा-
हिरूपकम् ७२ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे उत्तरकाण्डेऽष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

(तत्परमं पदं धामचेतसाः अभिचिन्तयत् वायुरोधेन युक्तं सह ऋषयः सर्वदेवाः) सोई परमपद परधाम
चित्त करिकै लक्ष्मण अंतरमें चिंतवन करतेहुये पवन रोध करिकै युक्त अर्थात् आसन लगाय प्राणा-
याम विधिसे वाम श्वासा बंद करि दहिने श्वासासे पवन खैचि दोऊ बंद करि प्राणोंको शीघ्रमें आखि

परमात्मरूपमें तदाकार वृत्तिमें बैठेहुये जो लक्ष्मण तिनहिं देखि सहित महाऋषि सब देवता ६९ (साग्नयःसवासवःलक्ष्मणंपुष्यैः समाकिरन्चतुष्टुःसशरिरिकैश्चित्त्रिविधैःभद्रशयं) सहित अग्नि सहित इंद्र सब देवता लक्ष्मण पर फूलोंकी वर्षा करि पुनः स्तुति करते भये सहित शरीर लक्ष्मण किसी देवता करिकै नहीं देखेगये भाव सदेह किसीने नहीं देखि पावा कहाँगये ७० (शक्रःलक्ष्मणं गृहीत्वाभयस्वर्गलोकंभगवन् ततःविष्णोःचतुर्भागंतदेवलक्ष्मणंसर्वदेवर्षयःसुरसतमाःदृष्ट्वासमपूजयन्) इंद्रने लक्ष्मणको ग्रहणकरि अर्थात् आदर सहित अपने विमानपर बैठारि स्वर्गलोकको जाते भये तदनंतर विष्णुको चौथा भाग जो व्यासराहा तिन देव लक्ष्मणको सब देवऋषि उत्तम देवता देखिकै पूजन करते भये ७१ (हरौलक्ष्मणेहिदिवंभागतेतदाभाहितमहाअहिरूपकंहृष्टं ब्रह्मणासहसि-द्वलोकगतयोगिनःमुदासमागमन्) विष्णुरूप लक्ष्मण निश्चयकरि आकाशको जातसंते पुनः लक्ष्मणको प्राप्तभया जो महासर्प रूप अर्थात् शेष रूप ताहि देखनेको ब्रह्मा सहित सिद्धलोक वासी योगीजन ते सब आनंद सहित अयोध्याजीको आतेभये ७२ ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखवल्लभपदशरणागतवैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणेउत्तरकाण्डेऽष्टमःप्रकाशः ॥ ८ ॥

श्रीमहादेवउवाच ॥ लक्ष्मणंतुपरित्यज्यरामोदुःखसमन्वितः ॥ मंत्रिणोनैगमांश्चैववशिष्टंचेदमब्रवीत् १ अभिषेक्ष्यामिभरतमधिराज्येमहामतिम् ॥ अद्यचाहं गमिष्यामिलक्ष्मणस्यपदानुगः २ एवमुक्तेरघुश्रेष्ठेपौरजानपदास्तदा ॥ द्रुमाइव छिन्नमूलादुःखार्तापतिताभुवि ३ मूर्च्छितोभरतोवापिश्रुत्वारामाभिभाषितम् ॥ गर्हयामासराज्यंसप्राहेदंरामसन्निधौ ४ सत्येनचशपेनाहत्वांविनादिविवाभुवि ॥ कांक्षेराज्यंरघुश्रेष्ठशपेत्वत्पादयोःप्रभो ५ इमौकुशलवौराजन्अभिषिंचस्वराघवा ॥ कोशलेषुकुशवीरमुत्तरेषुलवंतथा ६ गच्छंतुदूतास्त्वरितंशत्रुघ्नानयनायहि ॥ अस्माकमेतदगमनंस्वर्वासायशृणोतुसः ७ ॥

सवैया ॥ गतलक्ष्मण शोक निमग्नप्रभू भरतादि समाज सद्दुःखछये । मुनिबोधतहीं बलवाहन कोश विभागमही सुतराजदये ॥ निजरूप सँभारिसहानुज श्रीसरितातटलोक विरक्तभये । परिवार प्रजा पुरलोक कपीसह सानंद राम स्वधामगये ॥ (लक्ष्मणंपरित्यज्यतुदुःखसमन्वितः रामःमंत्रिणः चएवनैगमांचवशिष्टंचेदमब्रवीत्) शिवजी बोले हे गिरिजा लक्ष्मणको परित्याग करि पुनः दुःख सहित रघुनन्दन मंत्रिन पुनः वनिकजनन युत वशिष्ठप्रति प्रभु बोलतेभये १ (महामतिभरतंअधिराज्येअभिषेक्ष्यामिच अहंअद्यलक्ष्मणस्यपदानुगःगमिष्यामि) अरु महामतिमान् जो भरतहैं तिनहिं राज्यपदमें अभिषेक करिहों पुनः मैं अभी लक्ष्मणके पाछे जैहों भाव जहां लक्ष्मण गये तहां मैंभी जाउँगो २ (एवंप्रभुश्रेष्ठेउक्तेतदापौरजानपदाः छिन्नमूलाः द्रुमाःइवदुःखार्ताःभुविपतिताः) इसप्रकारके वचन रघुनन्दनके कहत सन्ते ता समयमें पुरवासी राजाके जनमंत्री आदि कटेमूल वृक्षोंके समान दुःख करिकै भारत भूमिपर गिरिपरे ३ (रामाभिभाषितंश्रुत्वावाभरतः अपिमूर्च्छितःराज्यं गर्हयामासरामसन्निधौसद्वदप्राह) रघुनन्दनके कहे वचन सुनिकै पुनः भरतभी मूर्च्छितहैं गये अरु राज्यको अनादर करतेहुये भरत रघुनन्दनके समीप ऐसा वचन कहते भये ४ (रघुश्रेष्ठप्रभोत्वत्पादु

योः शपेचसत्येन शपेत्वां विना भहं भुवि वादिविराज्यं न कांक्षे) हे रघुवंशनाथ प्रभो आपके पांयनकी शपथ है पुनः सत्य करिके शपथ है आपके रहे विना मैं भूमिकी अथवा स्वर्गके राज्यकी नहीं इच्छा करता हों ५ (हेराववराजनङ्गमौकुशलवौ अभिषिचस्ववीरं कुशं कोशलेषु तथा लवं उत्तरेषु) भरत बोले कि हे रघुनन्दन महाराज इन कुश लवको अभिषेक करिये तिन वीरकुशको कोशला विषे तैसेही लवको उत्तर में अभिषेक करिये ६ (शत्रुघ्नानयनाय हित्वरितं दूताः गच्छन्तु स्वर्वासाय अस्माकं एतत्तु अगमनं सः शृणोतु) अरु शत्रुघ्नको लेवायलाने हेत शीघ्रही दूत मथुराको जाहि क्योंकि स्वर्ग वासाय हम लोगनको यह गमन शत्रुघ्नभी सुनि देखिलेवें-७ ॥

भरतेनोदितं श्रुत्वा पतितास्ताः समीक्ष्य तम् ॥ प्रजाश्च भयसंविग्नारामविश्लेष
कातराः ८ वशिष्ठो भगवान् राममुवाच सदयं वचः ॥ पश्यतातादरात् सर्वाः पतिता
भूतले प्रजाः ९ तासां भावानुगं रामप्रसादं कर्तुमर्हसि ॥ श्रुत्वा वशिष्ठवचनं ताः स
मुत्थाप्य पूज्य च १० सस्नेहो रघुनाथस्ताः किं करोमीति चाब्रवीत् ॥ ततः प्रांजल
यः प्रोचुः प्रजाभक्त्यारघूद्बहम् ११ गन्तुमिच्छसि यत्र त्वमनुगच्छामहे वयम् ॥
अस्माकमेषां परमाप्रीतिर्धर्माय मक्षयः १२ तवानुगमने रामो हृद्गतानो हृद्गाम
तिः ॥ पुत्रदारादिभिः सार्द्धं मनूयामोद्य सर्वथा १३ तपोवनं वा स्वर्गं वा पुरं वा रघुनं
दन ॥ ज्ञात्वा तेषां मनो दाढ्यं कालस्य वचनं यथा १४ ॥

(रामविश्लेषकातराः प्रजाः च भरतेन उदितं श्रुत्वा तं समीक्ष्य भयसंविग्नः पतितास्ताः) रघुनन्दन को वियोग जानि प्रजा दुखितैरहैं पुनः भरत करिके कहा वचन सुनिके भरतकी दशादेखि भय करिके विकल सब मूर्च्छित हैं भूमिपर गिरिपरते भये ८ (भगवान् वशिष्ठः सदयं वचः रामं उवाच तात आदरात् पश्य सर्वाः प्रजाः भूतले पतिताः) भगवान् वशिष्ठ सहित दयापर दुःख निवारक वचन रघुनन्दन प्रति बोलते भये हे तात रघुनन्दन दया दृष्टि देखिये आपके स्नेहवश सब प्रजाभूमिमें परे हैं ९ (रामतासां भावानुगं प्रसादं कर्तुमर्हसि वशिष्ठ वचनं श्रुत्वा ताः समुत्थाप्य पूज्य) हे रघुनन्दन तिन प्रजनके प्रेमभाव अनुकूल प्रसाद करिये योग्यहो भाव इनके मनोरथ अनुकूल कृपाकरो इति वशिष्ठके वचन सुनिके रघुनन्दन तिन प्रजनको उठाय सत्कारकीन्हें १० (च सस्नेहः रघुनाथः ताः इति अब्रवीत् किं करोमि ततः प्रजाः भक्त्या प्रांजलयः रघूद्बहं प्रोचुः) पुनः सहित स्नेह रघुनन्दन तिन प्रति ऐसा बोलते भये कि हे प्रजालोगो तुम्हारा क्या मनोरथ है कहो सो कार्य मैं करौं इति सुनि तदनन्तर सब प्रजालोग भक्ति करिके अर्थात् प्रेम सहित हाथजोरि रघुनन्दन प्रति बोलते भये ११ (त्वं यत्र गंतुं इच्छसि वयं अनुगच्छामहे एषा अस्माकं परमाप्रीतिः अयं धर्म अक्षयः) हे रघुनन्दन जहां को आपजाने की इच्छा करतेहो तहेंको हमलोग आपके पाछे पाछे चलेंगे यही हमलोगों की परम प्रीति है अरु यही स्वामी सेवकको धर्म अचल है १२ (रामतवानुगमनेनो हृद्गता हृद्गामतिः पुत्रदारादिभिः सार्द्धं सर्वथा अद्य अनुयामः) हे रघुनन्दन आपके पाछे चलनेमें हमारे हृदयमें पुष्टमति है कौन भांति कि पुत्र स्त्री सहित सर्वथा हम आपके संगही चलेंगे १३ (रघुनन्दन पुरं वा तपोवनं वा स्वर्गं वा तेषां मनः दाढ्यं ज्ञात्वा कालस्य वचनं यथा) हे रघुनन्दन किसी और पुरको चलौ वा चहौ तपोवनको चलौ वा चहौ स्वर्गको चलौ हम आपके साथे चलेंगे इति सुनि रघुनन्दन तिन प्रजन को मन

दृढ जानि पुनः काल को वचन जैसा रहै सो विचारे भाव अबस्वर्ग जानेको समर्थ है ॥ १४ ॥

भक्तपौरजनचैववाढमित्याहराघवः ॥ कृत्यैवनिश्चयंरामतस्मिन्नेवाहनिप्रभुः १५
प्रस्थापयामासचतौरामभद्रःकुशीलवौ ॥ अष्टौरथसहस्राणिसहस्रंचैववाजिना
म् १६ षट्पिचाश्वसहस्राणामेकैकस्मैददौबलं ॥ बहुरत्नौबहुधनौहृष्टपुष्टजनावृ
त्तौ १७ अभिवाद्यगतौरामंकृच्छ्रेणतुकुशीलवौ ॥ शत्रुघ्नानयनेदूतान्प्रेषयामास
राघवः १८ तेदूतास्त्वरितंगत्वाशत्रुघ्नायनिवेदयन् ॥ कालस्यागमनंपश्चादत्रि
पुत्रस्यचेष्टितम् ॥ लक्ष्मणस्यचनिर्याणंप्रतिज्ञाराघवस्यच १९ पुत्राभिषेचनंचैवस
र्वैरामचिकीर्षितम् ॥ श्रुत्वातद्वचनंशत्रुघ्नःकुलनाशनम् २० व्यथितोपिधृतिंल
ब्ध्वापुत्रावाहूयसत्वरः ॥ अभिषिच्यसुबाहुंवैमथुरायामहाबलः २१ ॥

(चएवभक्तपौरजनचैववाढं इतिएवनिश्चयंकृत्यराघवः आहतस्मिन्एवअहनिरामप्रभुः) पुनःनि-
श्चय करि भक्त जो पुरवासी जन तिन प्रति दृढकरि साथै चली ऐसा निश्चयकरि रघुनन्दनबोल-
तेभये पुनः ताही दिन रघुनन्दन प्रभु १५ (चरामभद्रः कुशीलवौतौप्रस्थापयामासचतौरामभद्रौसहस्राणि
चएवदंतिनासहस्र) पुनः कल्याणरूप रघुनन्दन कुशलव दोऊ पुत्रोंको राज्याभिषेक करि बिदाकीन्हे
तिनके हेत रथ आठ हजार पुनः हाथी एक हजार १६ (चअश्वषट्पिचाश्वसहस्राणांबलौएकैकस्मैददौ
बहुरत्नौबहुधनौहृष्टपुष्टजनावृत्तौ) पुनः घोड़े साठि हजार इत्यादि सेना एक एक पुत्रके अर्थ देते
भये पुनः बहुतरत सौनादि बहुत धन प्रसन्न सबल वीरजनों करिके बेष्टित कुशलव १७ (रामअ-
भिवाद्यकुशीलवौतुकृच्छ्रेणगतौशत्रुघ्नानयनेराघवदूतान्प्रेषयामास) रघुनन्दनको प्रणामकरि कुश-
लव पुनः रघुनन्दनके वियोगते बड़े दुःख करिके बिदाभये पुनःशत्रुघ्नको बुलानेहेत रघुनन्दन दूतोंको
पठावते भये १८ (तेदूताःस्वरितंगत्वाकालस्यआगमनपश्चात् अत्रिपुत्रस्यचेष्टितं लक्ष्मणस्यनिर्या-
णंरामस्यप्रतिज्ञांशत्रुघ्नायन्यवेदयत्) ते दूतस्वरतही जाय अयोध्यामें कालको आगमन पीछे
दुर्वासाकृत सब हाल लक्ष्मणको तनत्याग पुनः प्रजायुत स्वर्गजानेहेत रघुनन्दनकी प्रतिज्ञा इत्यादि
सब हाल शत्रुघ्नसे कहते भये १९ (पुत्राभिषेचनंचएवरामचिकीर्षितंतर्ककुलनाशनंतत्तद्वचनश-
त्रुघ्नःश्रुत्वा) प्रभु पुत्रनको राज्याभिषेक इत्यादि रघुनाथजीके करनेको सब अभीष्ट अरु कुलको
नाशहोना सो दूतके वचनको शत्रुघ्नसुनिके २० (व्यथितःअपिधृतिंलब्ध्वासत्वरः पुत्रौआहूयमथुरा-
यामहाबलसुबाहुंअभिषिच्य) बड़े व्यापको प्राप्तभी वीर्य पायशीप्रही पुत्रोंको बुलायके मथुरा विपे
महाबली सुबाहुको अभिषेक कीन्हे २१ ॥

यूपकेतुंचविदिशानगरेशत्रुसूदनः ॥ अयोध्यांस्वरितंप्रागात्स्वयंरामेदिदृक्षयः
२२ ददर्शचमहात्मानंतेजसाज्वलनप्रभम् ॥ दुकूलयुगसंवातंऋषिभिश्चाक्षये
दंतम् २३ अभिवाद्यरमानाथंशत्रुघ्नोरघुपुंगवम् ॥ प्रांजलिर्धर्मसहितंवाक्यंप्रा
हमहामतिः २४ अभिषिच्यश्रुतौतत्रराज्येराजीवलोचन ॥ तवानुगमनेराजन्
विद्धिमांकृतनिश्चयम् २५ त्यक्तुंनार्हसिमांवीरभक्तंतवाविशेषतः ॥ शत्रुघ्नस्यदृ
ष्ट्वांविद्धिविज्ञायरघुनन्दनः २६ सज्जीभवतुमध्याह्नेभवानित्यब्रवीद्वचः ॥ अथक्ष

र्णात्समुत्पेतुर्वानराः कामरूपिणः २७ ऋक्षाश्चराक्षसाश्चैव गोपुच्छाश्च सहस्र
शः ॥ ऋषीणां देवतानां च पुत्रारामस्य निर्गमं २८ ॥

(यूपकेतुं विदिशानगरे च शत्रुसूदनः रामदिदृक्षया स्वयं त्वरितं भयोध्यां प्रागात्) यूपकेतु नामे पुत्र
को विदिशा नगरमें अभिषेक करि पुनः शत्रुघ्न रघुनन्दनके देखनेकी इच्छा करिकै आप शीघ्रही अयो-
ध्याको आवते भये २२ (अक्षयैः ऋषिभिः वृतं युगदुकूलसंवीतं तेजसा ज्वलन् प्रभं महात्मानं दर्शय च)
तहां चिरजीवी ऋषिन करिकै आवृत भाव वशिष्ठादिके बीचमें बैठे दो वस्त्र धारणा किहे भाव राजसी
वसन भूषण रहित अपने तेज करिकै अग्निवत् प्रकाशमान ऐसे महात्मा रघुनन्दनको देखते भये
पुनः २३ (महामतिः शत्रुघ्नः रमानाथं रघुपुंगवं अभिवाद्य प्राञ्जलिः धर्मसहितं वाक्यं प्राह) महा बुद्धि-
मान शत्रुघ्न लक्ष्मीपति रघुनन्दनको प्रणाम करि हाथ जोरि धर्म सहित वचन बोलते भये २४ (रा-
जीवलोचन तत्र राज्ये सुतौ अभिषिच्य राजन् तवानुगमने निश्चयं कृतमा विद्धि) हे कमलनयन रघुन-
न्दन जहां में रहौ तहांकी राज्यमें पुत्रोंको अभिषेक करिकै हे राजन् आपके पाछे गमन करनेकी
निश्चय किये हुये मोको जानिये २५ (वरिविशेषतः तव भक्तं मां त्यक्तुं न अर्हसि शत्रुघ्नस्य दृढा बुद्धिर्युनं
दनः विज्ञाय) हे रघुवीर विशेष करिकै आपको भक्त जोमैंहौं ताको त्याग करि बेयोग्य नहींहौं भाव-
मोकोभी संगे लै चलो इति संगजानेमें शत्रुघ्नकी दृढ बुद्धिको रघुनन्दन जानिकै २६ (भवान्मध्या-
ह्ने सज्जीभवतु इति वचः अब्रवीत् अयक्षणात् कामरूपिणः वानराः समुत्पेतुः) हे रिपुहन् मेरे संग गमन
हेतु तुम दुपहर समयमें तैयार रहेउ ऐसा वचन रघुनन्दन कहते भये अब क्षणै भरेमें कामरूपी वानर
आय प्राप्त होते भये २७ (ऋक्षाः चराक्षसाः च एव सहस्रशः गोपुच्छाः च ऋषीणां च देवतानां च पुत्राः राम-
स्य निर्गमं) ऋक्ष राक्षस पुनः हजारन गोपुच्छवाले वानर पुनः ऋषिनके अरु देवनके पुत्र जे वार
भये ते सब रघुनन्दनको स्वर्ग गमन ताको २८ ॥

श्रुत्वा प्रोचुरघुश्रेष्ठं सर्वे वानरराक्षसाः ॥ तवानुगमने विद्धि निश्चितार्थाह्निः प्रभो
२९ एतस्मिन्नन्तरे रामं सुग्रीवोपिमहाबलः ॥ यथावदभिवाद्या हराघवं भक्तवत्स-
लम् ३० अभिषिच्य अंगदं राज्ये आगतोऽस्मि महाबलम् ॥ तवानुगमने रामविद्धि
मांकृतनिश्चयम् ३१ श्रुत्वा तेषां दृढं वाक्यं ऋक्षवानररक्षसाम् ॥ विभीषणमुवा-
चे दंवचनं मृदुसादरम् ३२ धरिष्यति धरायावत् प्रजास्तावत् प्रशाधिमे ॥ वचना-
द्राक्ष सं राज्यं शापितोऽसि ममोपरि ३३ न किंचिदुत्तरं वाच्यं त्वयामत्कृतकारणात् ॥
एवं विभीषणं तूक्त्वा हनूमन्तं तथा ब्रवीत् ३४ मारुते त्वं चिरं जीव ममाज्ञां मामृषाकृ-
थाः ॥ जाम्बवन्तं मथ प्राह तिष्ठ त्वं ह्यपरांतरे ३५ मया सार्द्धं भवेद्युद्धं यत्किञ्चित्कार-
णांतरे ॥ ततः तान् राघवः प्राह ऋक्षराक्षसवानरान् ॥

(श्रुत्वा वानरराक्षसाः सर्वे रघुश्रेष्ठं प्रोचुः प्रभो तवानुगमने निश्चितार्थाह्निः विद्धि) रघुनन्दनको
स्वर्गगमन सुनिकै वानर राक्षस सब रघुनन्दन प्रति बोलते भये हे प्रभो आपके पाछे जानेको नि-
श्चयार्थ उसी दिनमें हम लोगोंको जानिये २९ (एतस्मिन्नन्तरे भक्तवत्सलं राघवं रामं महाबलः
सुग्रीवः अपि यथावत् अभिवाद्य प्राह) ताही समयमें भक्तनपर प्रीति करने वाले रघुवंशनाथ रामप्रति
महाबली सुग्रीव भी यथायोग्य प्रणाम करि बोलते भये ३० (महाबलं अंगदं राज्ये अभिषिच्य आगतः

अस्मिरामतवानुगमनेकृतनिश्चयमांविद्धि) महाबलवन्त अंगदको राज्यमें अभिषेक करिके आयाहौं हे रघुनन्दन आपके पीछे गमन करनेको निश्चयकिया है जिसने ऐसा मोको जानिये ३१ (ऋक्ष वानरराक्षसांतेषां दृढवाक्यं श्रुत्वा सादरं विभीषणं मृदुवचनं इदं उवाच) ऋक्ष वानर राक्षस तिनको संगगमन इति दृढवचन सुनिके रघुनन्दन आदरसहित विभीषणप्रति कोमल वचन इसप्रकार बोलतेभये ३२ (यावत् धराधरिष्यति तावत्मेव चनात् राक्षसराज्यं प्रजाः प्रशाधि ममोपरि शापितोसि) हे विभीषण जबतक पृथिवी बनीरहै तबतक मेरी आज्ञासे राक्षस राज्य प्रजापालन करौ तोको मेरी शपथ है ३३ (मत्कृतकारणात्त्वयार्किंचित् उत्तरं न वाच्यं एवं विभीषणं उक्त्वा तु अथ हनूमन्तं अब्रवीत्) मेरी ऐसीही इच्छा है इसकारण से तुमकरिके कछुभी उत्तर न कहाजाय इसप्रकार विभीषणप्रति कहिके पुनः रघुनन्दन अब हनूमान्प्रति बोलतेभये ३४ (मारुते त्वंचिरं जीव मम आज्ञां मृषामाकृथाः अथ जांबवंतं प्राह त्वं द्वापरान्तरेतिष्ठ) हे पवनपुत्र तुम मेरी इच्छासे बहुत कालतक जीवतरहौ ताते मेरी आज्ञाको वृथामतिकरौ अब जाम्बवन्तप्रति रघुनन्दन बोले कि हे जाम्बवान् तुम द्वापर के अन्ततक जीवतरहौ ३५ (यत्किंचित् कारणान्तरे मया सार्द्धं युद्धं भवेत् ततः ऋक्षराक्षसवानरान्तान् राघवः प्राह) तब जो कछु कारणते, मेरे साथ तुम्हारा युद्ध होइगो तब मेरे लोकको प्राप्त होइगे तदनन्तर ऋक्ष राक्षस वानर जोहैं तिनप्रति रघुनन्दन बोलतेभये ॥

सर्वान्नेव मया सार्द्धं प्रयातेति दयान्वितः ३६ ततः प्रभाते रघुवंशनाथो विशालवक्षसितकंजनेत्रः ॥ पुरोधसं प्राह वशिष्ठमर्थं यां त्वग्निहोत्राणि पुरोगुरो मे ३७ ततो वशिष्ठोऽपि चकार सर्वप्रस्थानिकं कर्म महद्विधानात् ॥ क्षौमांबरो दर्भपवित्रपाणिर्महाप्रयाणाय गृहीतबुद्धिः ३८ निष्क्रम्य समोनगरात्सिता आच्छादय विद्यातः शशि कोटिकांतिः ॥ रामस्य सव्ये सितपद्महस्तापद्मागतापद्मविशालनेत्रा ३९ पाद्वेधं दक्षेरुणकञ्जहस्ताश्यामाययौ भूरपि दीप्यमाना ॥ शास्त्राणि शास्त्राणि धनुश्च बाणा जग्मुः पुरस्ताद्धृतविग्रहास्ते ४० वेदाश्च सर्वे धृतविग्रहाश्च ययुश्च सर्वे मुनयश्च दिव्याः ॥ माताश्रुतीनां प्रणवेन साध्वीययौ हरिर्व्याहृतिभिः समेता ४१ ॥

(मया सार्द्धं सर्वान् एव प्रयात् इति दयान्वितः) मेरे साथ सबलोगचलैं ऐसा वचन दयायुक्तरघुनन्दन कहे ३६ (ततः विशालवक्षः सितकंजनेत्रः रघुवंशनाथः प्रभाते पुरोधसं सार्यं वशिष्ठं प्राह गुरो मे पुरः अग्निहोत्राणि यान्तु) तदनन्तर विशालहै वक्षस्स्थल जिनका नीलकमलसम नेत्र जिनके ऐसे रघुवंशनाथ प्रातसमय में उपरोहित श्रेष्ठ जो वशिष्ठ तिनप्रति बोलतेभये हे गुरो मेरे आगे अग्निहोत्रके अग्नि स सामग्रीचलै ३७ (ततः वशिष्ठः अपि प्रस्थानिकं कर्म महद्विधानात् सर्वचकार क्षौमांबरः दर्भपवित्रपाणिः महाप्रयाणाय गृहीतबुद्धिः) तदनन्तर वशिष्ठ भी यात्रासमयके जो कर्म सो बड़े विधि विधानसे सबकरतेभये रेशमीबसन धारणकिहे कुशकी पवित्री हाथमें महायात्राके अर्थ ग्रहणकरी बुद्धि जिन्होंने ३८ (सिताभ्रात् शशिः इव यातः कोटि शशिकान्तिः रामः नगरात् निष्क्रम्य सतपद्महस्तापद्मविशालनेत्रापद्मरामस्य सव्ये गता) समूह दवेत मेघोंमेंसे चन्द्रमा यथाजाता है तैसेही धवलधामों के बीचमें कोटिन चन्द्रसम कांतिवन्त रघुनन्दन जातेहुये नगरते बाहर निकले पुनः दवेत कमल हाथ में कमलसम विशालनेत्र जिनके ऐसी लक्ष्मी रघुनन्दन के वामभाग में शोभित हैं ३९ (अथ दक्षे पाद्वेधेरुणकञ्जहस्ताश्यामाभूः अपि दीप्यमानाययौ शास्त्राणि शास्त्राणि वधनुः बाणाः धृतविग्रहाः ते

पुरस्तात्तजग्मुः) अरु प्रभुके दक्षिणदिशि अरुणकमल हाथमें तेरहवर्ष की अवस्था स्वरूप धारण किहे
पृथिवीभी दिव्यप्रकाशमान चलीजाती है तथा अस्त्र शस्त्र धनुषबाण धारण किहे स्वरूप आगेआगे
चलेजाते हैं ४० (धृतविग्रहाःसर्वेवेदाःचदिव्याःसर्वमुनयःययुःचप्रणवेनव्याहृतिभिः समेताःश्रुतीनां
मातासाध्वीहरिययौ) धारणकिहे स्वरूप सबवेद पुनः दिव्यस्वरूप सबमुनि जाते हैं पुनः प्रणव अरु
व्याहृती करिके सहित वेदन की माता गायत्री मूर्तिमान् रघुनन्दन के साथै चली जाती है ४१ ॥

गच्छंतमेवानुगताजनास्ते सपुत्रदाराःसहबन्धुवर्गैः ॥ अनावृतद्वारमिवापवर्गै
रामं व्रजंतं ययुराप्तकामाः ४२ सांतःपुरःसानुचरःसभार्यः शत्रुघ्नयुक्तोभरतोनुया
यात् ॥ गच्छंतमालोक्यरमासमेतं श्रीराघवं पौरजनाःसमस्ताः ४३ सवालवृद्धा
श्चययुर्द्विजाग्न्या सामात्यवर्गाश्चसमंत्रिणोययुः ॥ सर्वेगताःक्षत्रमुखाःप्रहृष्टा वै
श्याश्चशूद्राश्चतथापरेच ४४ सुग्रीवमुख्याहरिपुंगवाश्च स्नाताविशुद्धाशुभश
ब्दयुक्ताः ॥ नकश्चिदासीद्भवदुःखयुक्तो दीनोथवावाह्यसुखेषुसक्तः ४५ आनन्द
रूपानुगताविरक्ता ययुश्चरामंपशुभृत्यवर्गैः ॥ भूतान्यदृश्यानिचयानितत्र येप्रा
णिनःस्थावरजंगमाश्च ४६ साक्षात्परात्मानमनंतशक्तिं जग्मुर्विरक्ताःपरमेकमी
शम् ॥ नासीदयोध्यानगरेतुजंतुः कश्चित्तदाराममनानयातः ४७ ॥

(सहबंधुवर्गैःसपुत्रदाराःजनाः आप्तकामाःतेव्रजंतंरामंअनुगता गच्छंतंएवअनावृतद्वारंअपवर्गैइव
ययुः) सहित भाई लोगन सहित पुत्र स्त्री सब जन पूर्ण प्राप्त मनोकामते अवधवासी अब जातेहुये
जो राम तिनके पाछे कैसे चलेजाते हैं यथा खुलेहुये द्वार में मुक्ति धाम में मनो जाते हैं ४२ (स-
अंतःपुरःसअनुचरःसभार्यःशत्रुघ्नयुक्तःभरतःअनुयायात् रमासमेतंश्रीराघवंगच्छंतंआलोक्यपौरजनाः
समस्ताः) सहित अंतःपुर के लोग सहित सेवकन शत्रुघ्नयुक्त भरत पाछे जाते हैं जिनके सो ल
क्ष्मी समेत श्रीरघुनाथजी को जाते देखिके पुरवासी जन सब ४३ (सबालचवृद्धाद्विजाग्न्याःययुःस
आमात्यवर्गाःचमंत्रिणःययुःक्षत्रमुखाः च वैश्याःचशूद्राःचतथाअपरेप्रहृष्टाःसर्वेगताः) सहित बाल
वृद्ध ब्राह्मण श्रेष्ठ चलते भये क्षत्री आदि पुनः वैश्य पुनः शूद्र पुनः तैसेही अपर जाति इत्यादि
आनन्द युत सब जाते भये ४४ (सुग्रीवमुख्याःचहरिपुंगवाःशुभशब्दयुक्ताःसूताःविशुद्धाः भवदुःख
युक्तःदीनः अथवा वाह्यसुखेषुसक्तःकश्चित्तनआसीत्) सुग्रीव आदि उत्तम बानर श्रीसीतानाथ की
जय होय इत्यादि मंगलीक शब्द उच्चारण युक्त स्नान करते विशेषि शुद्ध अंतःकरण जिनके श्रीराम
प्रीतिरंग में रंगे आनन्द पुनः भवबन्धन दुःखयुक्त दीन अथवा वाह्य इन्द्री विषय सुखमें असक्त-ऐसा
कोई नहीं होता भया ४५ (पशुभृत्यवर्गैःचयानिअदृश्यानिभूतानिचस्थावरजंगमातत्रयेप्राणिनःविर-
क्ताःचआनन्दरूपाःरामंअनुगताययुः) हाथी घोड़ा गौ वृषभादि सब पशु दासी दासादि सेवकमात्र सबों
करिके सहित पुनः जो देखने में नहीं आते हैं ऐसे गुप्तजीव पुनः वृक्षादि जे अचरहैं पक्षी कीट पतंगादि
जो चलि सकते हैं इत्यादि तहांये प्राणधारीमात्र सबलोकसै विरक्त आनन्दरूप रघुनन्दनके पाछे जाते
भये ४६ (साक्षात्परात्मानंअनन्तशक्तिंपरंएकंईशंविरक्तःजग्मुःतुतदा राममनानयातःकश्चित्तजंतुः
अयोध्यानगरेनआसीत्) साक्षात् परमात्मा अनन्तशक्ति मायापर एक ईश्वर रघुनन्दनके पाछेविरक्त
सबगयेपुनः तासमय में जो रघुनन्दनके संगन जाताहोइ ऐसाकोई जीवअयोध्या नगरमें नहीं है ४७ ॥

शून्यं बभूवा खिलमेव तत्र पुरंगते राजनिरामचन्द्रे ॥ ततोतिदूरं नगरात्सगत्वा हृष्ट्वान् दीप्तां हरिनेत्रजाताम् ४८ ननंदरामः स्मृतपावनो तोददर्श चाशेषमिदं हृदि स्थम् ॥ अथागतस्तत्र पितामहो महान् देवाश्च सर्वे ऋषयश्च सिद्धाः ४९ विमानकोटिरभिपारपारं समावृतं खं सुरसेविताभिः ॥ रविप्रकाशाभिरभिस्फुरत्स्वज्योतिर्मयं तत्र नभो बभूव ५० स्वयं प्रकाशैर्महतां महद्भिः समावृतं पुण्यकृतां वरिष्ठैः ॥ ववुश्च पातश्च सुगंधवंतो ववर्ष वृष्टिः कुसुमावलीनाम् ५१ उपस्थिते देवमृदंगनादे गायत्सु विद्याधरकिन्नरेषु ॥ रामस्तु पद्भ्यां सरयूजलं सकृत् स्पृष्ट्वा परिक्रामदन्तशक्तिः ५२ ब्रह्मा तदा प्राह कृतांजलिस्तं रामपरात्मन् परमेश्वरस्त्वं ॥ विष्णुः सदानन्दमयो सिद्धिपूर्णो जानासितत्त्वं निजमैशमेकम् ५३ ॥

(राजनिरामचन्द्रे गते तत्र अखिलं पुरं एव शून्यं बभूव ततः नगरात् भूतिदूरं सगत्वा हरिनेत्रजातां दीप्तां दृष्ट्वा) महाराज रामचन्द्र के जात सन्ते तहां सम्पूर्ण अवधपुर भी शून्य भया तदनन्तर नगर ते अति दूर रघुनन्दन जायकै तहां हरि नेत्र सों उत्पन्न नदी जो सरयू है तिनहि देखते भये ४८ (पावनो तो स्मृतननंदरामः च इदं अशेषं हृदि स्थं ददर्श अथ महान् देवाः च सर्वे ऋषयः च सिद्धाः पितामहः तत्र अगतः) तहां पावन जो अपना विराट् रूप ताको स्मरण करि आनन्द ह्वै रघुनन्दन पुनः यह जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने हृदय में स्थित देखते भये अब ताही समय महान् सब देवता पुनः सब ऋषि पुनः सब सिद्ध अरु ब्रह्मा इत्यादि तहां आवते भये ४९ (सुरसेविताभिः विमानकोटिभिः अपारपारं समावृतं रविप्रकाशाभिः स्वअभिस्फुरत् तत्र ज्योतिर्मयं नभः बभूव) देवतों के विमान करीरिन जिनको ओर छोर नहीं देखाता है ऐसे आकाश में परिपूर्ण हैं जे सूर्यवत् अपनी प्रकाश करिकै ऐसे प्रकाशमान कि तहां प्रकाशमय आकाश होता भया ५० (पुण्यकृतां वरिष्ठैः स्वयं प्रकाशैः महतां महद्भिः समावृतं सुगन्धवंतः वातः ववुः च कुसुमावलीनां वृष्टिः ववर्ष) जे अन्यलोकों में पुण्य करि स्वर्गमें श्रेष्ठ भये तिन करिकै पुनः जे स्वयं प्रकाशमानै उत्पन्न भये तिन करिकै जे महात्मा हैं तिन करिकै आकाश परिपूर्ण अरु सुगन्धित वायु वहत पुनः समूह फूलों की वर्षा ह्वै रही है ५१ (देवमृदंगनादे उपस्थिते विद्याधरकिन्नरेषु गायत्सु अनन्तशक्तिः रामः सरयूजलं पद्भ्यां सकृत् स्पृष्ट्वा त्परिक्रामत्) देवतों के मृदंग वाजत सन्ते विद्याधर किन्नरन के गावत सन्ते अनन्त शक्ति रघुनन्दन सरयू जल को पोयन करिकै एक बार स्पर्श करि पुनः भमिवत् जलपर चलते भये ५२ (तदा तं रामं ब्रह्मा कृतांजलिः प्राह परात्मन् त्वं परमेश्वरः विष्णुः सदा आनन्दमयोऽसि निजं ऐशं तत्त्वं एकं जानासि) ताही समय में तिन रघुनन्दन प्रति ब्रह्मा हाथ जोरिकै बोलते भये हे परमात्मन् आप परमेश्वर विष्णु सदा आनन्दमय हो अरु अपना ईश्वर तत्त्व एक आपही जानते हो ५३ ॥

तथापि दासस्य ममाखिलेश कृतं वचो भक्तपरोसि विद्वन् ॥ त्वं भ्रातृभिर्वैष्णवमेकमाद्यं प्रविश्य देहं परिपाहि देवान् ५४ यद्वा परोवाय दिरोचते तं प्रविश्य देहं परिपाहि नस्त्वम् ॥ त्वमेव देवाधिपतिश्च विष्णुर्जानंति न त्वां पुरुषा विनामां ५५ सहस्रकृत्वस्तु न मोनमस्ते प्रसीद देवेश पुनर्नमस्ते ॥ पितामह प्रार्थनया सरामः पश्यत्सु देवेषु महाप्रकाशः ५६ मुष्णं च चक्षुषि दिवौ कसांतदा बभूव चक्रादियुतश्चतुर्भुजः ॥

शेषोऽवभूवैश्वरतल्पभूतः सौमित्रिरत्यद्भुतभोगधारी ५७ बभूवतुश्चक्रदरोचदि
व्यौकैकेयिसूनुर्लवणांतकश्च ॥ सीताचलक्ष्मीरभवत्पुरेव रामोऽहिविष्णुः पुरुषः पु-
राणः ५८ सहानुजः पूर्वशरीरकेन वभूवतेजोमयदिव्यमूर्तिः ॥ विष्णुं समासाद्य सु-
रेंद्रमुख्या देवाश्च सिद्धामुनयश्च यक्षाः ५९ ॥

(तथापि अखिलेश भक्तपरः असिदासस्थममवचःकृतं विद्वन्प्रातृभिः त्वेकं आद्यं वैष्णवं देहं प्रविश्य दे-
वान्परियाहि) आपकी ऐश्वर्य कोऊ नहीं जानता है तौभी हे अखिलेश सबके पालनहार भक्तन
पर प्रीति राखतेहों ताते आपको दास जो मैहों ताको कहा बचन करतेहों इसहेत कहताहों हे वि-
द्वन् भाइनसहित आप अब एकसबको आदि कारण वैष्णवदेह में प्रवेशहवै देवनको पालनकीजै ५४
(यद्वापरः वायदिरोचतंतदेहं त्वं प्रविश्य नः परिपाहित्वं देवाधिपतिः एव च विष्णुः सांविना पुरुषाः त्वान्जा-
नन्ति) अथवा पर रूप में अर्थात् साकेत बिहारी रूप में प्रवेश होउ अथवा जो रुचि होय तिस देह
में प्रवेश है हम लोगों को पालन करौ आप सब देवों के स्वामी हों भाव परात्पर रूप पुनः विष्णु
हौ यह बात मेरे बिना और पुरुष आप को नहीं जानते हैं ५५ (देवेश प्रसीदते सहस्रकृत्वस्तु न मोन-
मः पुनः तेनमः पितामहप्रार्थनया सर्वदेवेषु पश्यत्सु सरामः महाप्रकाशः) हे देवेश प्रसन्न होहु आपके
अर्थ मेरा हजारन बार नमस्कार है पुनः बारम्बार नमस्कार है इति ब्रह्मा की प्रार्थना से सब देवन
के देखत सन्ते राघव महा प्रकाशरूप है ५६ (तदा दिवौकसां च क्षुंषिमुष्णान् च चक्रादियुतः चतुर्भुजः
वभूव सौमित्रिः अद्भुतभोगधारी शेषः वभूव ईश्वरतल्पभूतः) अपने तेज करिके देवतों के नेत्र दृष्टि हरि
लिये पुनः चक्रादि अस्त्रन सहित चतुर्भुज होते भये पुनः लक्ष्मण अद्भुत फणधारी शेष होते भये तो
ईश्वर की शय्या भये ५७ (लवणांतकः चकैकेयीतूनुः दिव्यौ चक्रदरोचत्रभूवतुः सीताचपुरैवलक्ष्मीः
अभवत् रामः हि पुरुषः पुराणः विष्णुः) लवणासुर के नाशक शत्रुघ्न दिव्य चक्र भये कैकेयीपुत्र भरत
शङ्ख भये सीता पुनः पूर्ववत् लक्ष्मी होती भई रघुनन्दन पुरुष पुराण विष्णु भये ५८ (सहानुजः
पूर्वशरीरकेन तेजोमयदिव्यमूर्तिः वभूव सुरेंद्रमुख्या देवाः च सिद्धाः मुनयः च यक्षाः) सहित छोटे भाइन
रघुनन्दन पूर्व शरीर करिके तेजमय दिव्यमूर्ति होतेभये अब इन्द्रादि देवता पुनः सिद्ध मुनियक्ष ५९ ॥

पितामहाद्याः परितः परेशंस्तवैर्गुणैः परिपूजयन्तः ॥ आनन्दसंज्ञावितपूर्णचित्ता
वभूविरप्राप्तमनोरथास्ते ६० तदा हविष्णुर्द्रुहिणं महात्मा एते हि भक्तामयि चानुर-
क्ताः ॥ यातं दिवं मामनुयाति सर्वे तिर्यक्शरीरा अपि पुण्ययुक्ताः ६१ वैकुण्ठसाम्यं
परमं प्रयांतु समाविशस्वाशुममाज्ञया त्वं ॥ श्रुत्वा हरेर्वाक्यमथात्र वीत्कः सांतानि
कान्यांतु विचित्रभोगान् ६२ लोकान्मदीयोपरि दीप्यमानांस्त्वद्भावयुक्ताः कृत्पुण्य
पुंजाः ॥ ये चापिते रामपवित्रनाम गृह्णन्ति मर्त्यालयकाल एव ६३ अज्ञानतो वापि
भजन्ति लोकांस्तानेव योगैरपि चाधिगम्यान् ॥ ततो तिष्ठन् प्राप्स्यति साक्षात्पृष्ठ्वा
जलन्त्यक्तकलेवरास्ते ६४ प्रपदिरे प्राक्तनमेवरूपं यदंशजात्र हरीश्वरास्ते ॥
प्रभाकरं प्राप हरिप्रवीरः सुग्रीव आदित्यजवीर्यवत्वात् ६५ ॥

(पितामहाद्याः परितः परेशं विष्णुं समासाद्य स्तवैः गुणैः परिपूजयन्तः प्राप्तमनोरथाः ते आनन्दसं-
ज्ञावितपूर्णचित्तावभूविर) ब्रह्मादि सब देवता भाय सब से परे ईश जो विष्णु तिनहि प्राप्त है षोड-

शोषचारं पूजनं करि स्तोत्रों करि स्तुति करि प्राप्त भया मनोरथ जिनका ते सब देवता आनन्द में मग्न पूर्ण चित्त होते भये ६० (तवामहात्माविष्णुः हृदि निभ्राह एतेहिमयिभक्ताः च अनुरक्ताः तिर्यक्शरीराः अपि पुण्ययुक्ताः मां दिवं यातं सर्वे अनुयाति) ताही समय में महात्मा विष्णु ब्रह्मा प्रति बोलते भये कि ये सब अयोध्यावासी मेरे भक्त पुनः अनुरागी भाव मेरी प्रीति रंगमें तनमनते रंगे हैं तिनमें जे पशु आदि तिर्यक्योनि ते भी पुण्य युक्त हैं अरु मेरे स्वर्ग जात समय सब मेरे साथै जाते हैं ६१ (मम प्राज्ञायास्त्वं प्रयातु वैकुण्ठसाम्यं परमं आशुसमाविशस्य भयहरेः वाक्यं श्रुत्वा कः प्रवर्षति विचित्रभोगान्सांतानिकान्यांतु) ताते मेरी आज्ञा करिके तुम इनको लै जाय जे वैकुण्ठ के समान परमोत्तम लोक हैं तिनमें शीघ्रही प्राप्त करौ अब हरिके वचन सुनिके ब्रह्मा बोलते भये कि जहां विचित्र भोग है त्यहि सान्त्तानिक लोक को जाहि ६२ (त्वत्भावयुक्तः कृतपुण्यपुंजाः मदीय उपरि दीप्यमानां लोकान् चरामये अपि मर्त्यालयकाल एव ते पवित्रनाम गृह्णन्ति) आप के प्रेम भावयुक्त किया है पुण्य समूह जिन्होंने ते मेरे लोकके ऊपर प्रकाशमान लोकों में वास पावेंगे पुनः हे रघुनन्दन जे प्राणी निश्चय करि मरण काल में भी आपको पवित्र नाम उच्चारण करते हैं ६३ (वाग्मज्ञानतः अपि भजंतु तान् लोकान् एव च अधिगम्यान् योगैः अपि) पुनः जे अज्ञान ते भी आपको भजते हैं ते भी तिन उत्तम लोकोंको जाने योग्य हैं (ततः हरिराक्षसाद्या प्रतिदृष्टा जलं स्पृष्ट्वा त्यक्तकलेवराः ते) तदनन्तर बानर राक्षसादि अत्यन्त आनन्द सहित सरयू जल स्पर्श करि तन त्याग करि ते ६४ (यत्तु शंखाच्छहरीश्वराः ते प्राक्तन एव रूपं प्रपेदिरे भादित्यजवीर्यवत्त्वात् सुधीव हरिप्रवीरः प्रभाकरं प्राप) जिस देवभंश ते उत्पन्न जो ऋक्ष बानरादि भया तिनहीं पूर्व रूपन को प्राप्त भये यथा सूर्यन के वीर्य से उत्पन्न भये सुधीव बानरन में श्रेष्ठ वीर ते सूर्य के रूप को प्राप्त भये ६५ ॥

ततो विमग्ना सरयूजलेषु नराः परित्यज्य मनुष्यदेहम् ॥ आरुह्य दिव्याभरणा विमानं प्रापुश्च ते सांतनिकारूयलोकान् ६६ तिर्यक्प्रजाता अपिरामदृष्टा जलं प्रविष्टा दिवमेव जाताः ॥ दिदृक्षवो जानपदाश्च लोका रामसमालोक्य विमुक्तसंगाः ६७ स्मृत्वा हरिं लोकगुरुं परेशं स्पृष्ट्वा जलं स्वर्गमवापुरंजः ॥ एतावदेवोत्तरमाह शंभुः श्रीरामचंद्रस्य कथावशेषम् ६८ यः पादमप्यत्र पठेत्स पापाद्भिमुच्यते जन्मसहस्रजातात् दिने दिने पापचयं प्रकुर्वन् पठेन्नरः श्लोकमपीह भक्त्या ॥ विमुक्तसर्वाघचयः प्रयाति रामस्य सालोक्यमनन्यलभ्यम् ६९ आरूयानमेतद्रघुनाथकस्य कृतपुरा राघवचोदितेन ॥ महेश्वरेणाप्तमविष्यदर्थं श्रुत्वा तुरामः परितोषमेति ७० रामायणं काव्यमनंतपुण्यं श्रीशंकरेणाभिहितं भवान्यै ॥ भक्त्या पठेद्यः शृणुयात्स पापैर्विमुच्यते जन्मशतोद्भवैश्च ७१ ॥

(ततः सरयूजलैः पुविमग्ना मनुष्यदेहं परित्यज्य नराः दिव्याभरणाः विमानं भारुह्य च सांतनिकारूयलोकान् प्रापुः) तदनन्तर सरयू जलमें स्नान करतेही मनुष्य देहत्यागि नर दिव्यतन किरीट कुंडलादि दिव्य विभूषण धारण किहे विमानों पर सवार पुनः सांतनिक नामे लोकको प्राप्त होते हैं ६६ (तिर्यक्प्रजाता अपिरामदृष्टा जलं प्रविष्टा दिवमेव जाताः) च जानपदाः लोका दिदृक्षवः रामसमालोक्य विमुक्तसंगाः) गो गजादिव श्वानादि जे तिर्यक् योनिन में भी उत्पन्न भये जिनको रघुनन्दन दया दृष्टि

देखते भी सरयू जलमें स्नान करि दिव्य देहहै स्वर्गको जातेहैं पुनः राज्यवासी लोग जे देखने हेत आयेरहैं तेभी रघुनन्दन को देखि देहसनेह त्यागकरि ६७ (लोकगुरुंपरेशंहरिस्मृत्वाजलंस्पृष्ट्वाभंजः स्वर्गंअवापुः एतावत्श्रीरामचन्द्रस्यकथाअवशेषंशंभुःउत्तरंएवमाह) तेभी जनलोक गुरुपरेश हरि रघुनन्दन को स्मरण करि जलमें स्नान करि दिव्य देह हवै शीघ्रही स्वर्गको प्राप्तभये एती श्रीरघुनाथजी की कथा जो बाकीरही ताहि शिवजी उत्तरकाण्ड में वर्णन कीन्है ६८ (यःपादंअपिअत्रपठेत्सजन्मसहस्रजातात्पापात्विमुच्यते नरःभक्त्याअपीहश्लोकंदिनेदिनेपठेत् पापचयंप्रकुर्वन्सर्वापचयःविमुक्त) जो मनुष्य श्लोकको एक चरण भी इस रामायणमें पढ़ता है सो हजारों जन्मके उत्पन्न पापोंते छूटि जाता है पुनः जो मनुष्य भक्ति सहित निश्चय करि याको एक श्लोक प्रतिदिन पढ़ता है सो प्रतिदिन किये सर्व पापोंसे छूटिकै (अनन्यलभ्यंरामस्यसंलोक्यंप्रयाति) जो किसी को लब्धनहीं तिस रघुनाथजी की सालोक्य सुक्तिको जाताहै ६९ (पुराराधवचोदितेनभविष्यत् अर्थआप्तमहेश्वरेणकृतंएतत्त्रयुनाथकस्यआख्यानंश्रुत्वातुरामःपरितोषंएति) पूर्वही रघुनन्दन की प्रेरणा करिकै होनहार अर्थ पायकै शिवजीने करा यह जो रघुनन्दनको चरित अध्यात्मरामायण ताको श्रवण कीन्हैते रघुनाथजी प्रसन्न होते हैं यह विचारि नित्य पाठकरै ७० (भवान्यैश्रीशंकरेणअभिहितंअनंतपुराणंकाव्यंरामायणंयःभक्त्यापठेत्शृणुयात्सजन्मशतोद्भवैःचपापैःविमुच्यते) भवानीके अर्थ श्रीशंकरजी ने वर्णन किया अनंत पुराणदायक काव्य यह जो अध्यात्मरामायण है ताहि जो प्राणी भक्तिसे पढ़ता सुनता है सो सैकड़ों जन्मके उत्पन्न हुये पापों करिकै छूटि जाताहै ७१ ॥

अध्यात्मरामं पठतश्च नित्यं श्रोतुश्च भक्त्या लिखितुश्च रामः ॥ अतिप्रसन्नश्च सदासमीपे सीतासमेतः श्रियमातनोति ७२ रामायणं जनमनोहरमादिकाव्यं ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि संस्तुतं च ॥ श्रद्धान्वितः पठति यः शृणुयात्तु नित्यं विष्णोः प्रयातिसदनं स विशुद्धदेहः ७३ ॥

इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वरसंवादे उत्तरकाण्डेनवमः सर्गः ६ ॥ समाप्तम् ॥

(अध्यात्मरामं नित्यं पठतः च श्रोतुः च भक्त्या लिखितुः च सीतासमेतः रामः अतिप्रसन्नः सदासमीपे च श्रियं मातनोति) अध्यात्मनामे रामचरितको जे नित्यहीं पढ़ते वा श्रवण करते हैं अथवा जीविका रहित भक्तिसे लिखते हैं ताके सीता समेत रघुनन्दन सदा समीपही रहते हैं पुनः लक्ष्मी उत्पन्न करते हैं अर्थात् अन्न धनादि सुख संपदा वृद्धि करते हैं ७२ (ब्रह्मादिभिः सुरवरैः अपि संस्तुतं च जनमनोहरं आदिकाव्यं रामायणं यः श्रद्धान्वितः नित्यं पठति शृणुयात्स विशुद्धदेहः विष्णोः सदनं प्रयाति) ब्रह्मादि उत्तम देवतों करिकै स्तुति करिवे योग्य हरि जननको मन हरनहारी आदि काव्य रामायण को जो प्राणी सहित श्रद्धा नित्यही पढ़ता पुनः श्रवण करता है सो पापकामादिमल रहित शुद्ध देहते विष्णुके धामको जाता है ७३ खंबाण खंडचंशशौशुभविक्रमाव्दे माघे त्रयोदशि सिते रविवार पुष्ये ॥ सीतासमेतरघुनाथ पवित्र कीर्ति अध्यात्मभूषणमिदं कृत वैद्यनाथः ॥

दोहा डेहवासहित सुमानपुर नंबरदारी ग्राम । वारहबंकी जिले महँ बैजनाथ ममनाम ॥

इति श्रीरसिकलताश्रितकल्पद्रुमसिखबलभपदशरणागतबैजनाथविरचिते

अध्यात्मभूषणे उत्तरकाण्डेनवमः प्रकाशः ९ ॥

श्रीमद्वाल्मीकाय रामायण ॥

पूरे सातोकाण्ड अयोध्या पाठशाला के तृतीयाध्यापक पण्डित महेशचन्द्र भापा—यह वही पण्डितजी महाराज हैं जिन्होंने पहिले देवीभागवत और विष्णुपुराण का उल्थाकिया है दोभागों में वधातय्य सुगमरीति से परिपूर्ण श्लोकके अनुसार हुआहै कोई शब्दभी छूटने नहींपाया और श्लोक के जानने के लिये अंकभी लगादिये कि भ्रम न पड़े अक्षर टैपके बहुत पुष्ट डबलपैका अत्र के दूमरीवार बड़ी होशियारी से छापी गई है ॥

रामायणतुलसीकृत टीका वैजनाथकृत ॥

इस उत्तमोत्तम व नवीन विस्तृत टीकाको श्रीनवावगंज प्रदेशान्तर्गत देहवामानपुरके नम्बरदार वैजनाथजीने सकल आगम निगम पुराण स्मृत वेदान्तादिका सम्मतलेकर निर्मितकियाहै प्रथमतो इस टीका में विशेष उत्तम वार्त्ता यह कियहै कि सनातनभाषा अर्थात् देहातके बोल चालवाले शब्दोंमें अति मरलता युक्तहै दूसरे रामायणके किसी गूढ़ व सरल स्थलका भाशय नहींरहनेपाया कहातकप्रशंसा करें आजतक तो ऐसा टीका देखनेमें नहींआया कि जिसके अवलोकनमात्रसे रामायणका अर्थ अच्छे प्रकार भासित होजायगा—इसके सिवाय इन्हीं महाशय ने—रामायण कवितावली—वरद्वै—छप्पै—कुण्डलि-या—दोहावली—विनयपत्रिका—रामायण सत्तयी और यावत् श्रीगोसाईंजीकी काव्यहै उत सबका निलक सुन्दर आर्य भाषामें कियहै—और वे सब इस छापेखाने में छापीगई हैं आशा है कि जो विद्वान् दृष्टिगोचर करेंगे परमानन्द होंगे ॥

रामनिवास रामायण ॥

जानकीप्रसादजी कृत—जिसमें तुलसीकृत रामायणकी रीतिसे सातोकाण्ड श्रीरामचन्द्र जन्मो-म्भव वाललीला विद्वामित्र यज्ञरक्षण, धनुषयज्ञ, जानकी स्वयम्बर, धनुभंग, परशुराम सम्बाद, वनागमन, जानकीहरण, रावणवध, भरतमिलाप, राज्याभिषेक ज्ञानमार्ग, रामगीता, प्रेमाविकार, जानकीविजय, अश्वमेधयज्ञ, विनयनयनीति विचारादिकी ललित कथा अनेक छन्दोंमें वर्णितहैं ॥

रामायणअध्यात्मविचार भाषा ॥

पण्डित यमुनाशंकरजी रचित जिसमें श्रीरामचन्द्रादि चारों भाई और सर्व रामायणकी प्रीकथा वेदान्तशास्त्र की रीति श्रुति समन्वय पूर्वक वर्णन कीगई है ॥

अद्भुतरामायण ॥

लालालालमणिजी रचित—इसमें श्रीसीतामंहारानीकी कराल शक्तियोंका उत्पन्न होकर महि-रावण के नाश होनेकी लीला पद्य में कथितहै बहुतही मनोहर कथाहै ॥

रामाश्वमेधभाषा ॥

श्रीपरमहंसदूधदासकृत—जिसमें दोहा चौपाई और सोरठादि अनेक छन्दों में रामचन्द्रके अश्व-मेधकी सम्पूर्ण कथा वर्णितहै ॥

गीतरामायण ॥

महावीरदासकृत—जिसमें गीतोंमें रामायणकी कथा संक्षेपसे वर्णित है कागज सफेद है ॥

श्यामरामायणपत्रानुमा ॥

श्यामलालजीकृत—जिसमें दोहा चौपाई आदि छन्दों में रामायणकी कथा संक्षेपसे वर्णित है कागज सफेद है ॥

रामायण छंदावली तुलसीकृत मूल ॥

जिसमें छन्दोंमें सातोंकांड रामायणकी कथा संक्षेप से वर्णित है ॥

अध्यात्म रामायण भाषा टीकासहित ॥

फर्रुखाबाद नियासी पंडित उमादत्तकृत टीकासहित जिसमें सातकाण्डों में रामचन्द्रजीका सम्पूर्ण चरित्र वर्णित है यह गुप्त रामायण श्रीशिवजी महाराजने पहले पार्वती से वर्णनकी वही ज्ञानामृत ब्रह्माजी ने नारदजीसे उपदेशकिया और नारदजीसे वाल्मीकिव्यास आदि ऋषियोंने प्राप्तकिया व्यास जी से सूतने अध्यात्मज्ञानपाकर नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषियों को ब्रह्मांडपुराण में सुनाया जिससे इस दिव्यरूप ज्ञान रूप रामायण का प्रचार लोक में प्रसिद्ध हुआ ॥

तुलसीकृत रामायणकी मानसप्रचारिका ॥

इस नवीन टीकाको बैकुण्ठबासी महन्त हरिउद्धवदासजी के शिष्य श्रीजानकीदासजीने जोकि अयोध्यानिवासी थे रचनाकिया है इसमें तुलसीकृत रामायणमें बन्दनासे पैतालीस अष्टपदी दोहे चौपाईकी टीका रची गई है इस सुगमटीकाके पढ़नेसे बहुतसी रामायण और शास्त्रकी गूढ़वातें मालूम होती हैं ॥

अवध विलास रामायण ॥

ठाकुर महावीरसिंहकृत जिस में भजनोंमें पूरारामायणकी कथा वर्णित है ॥

कुण्डलिया रामायण सटीक ॥

जिसमें सात काण्डोंमें श्रीरामायण तुलसीकृत की भांति कुण्डलिया छन्दों में श्रीरामचन्द्रजीका सम्पूर्ण चरित्र वर्णित है जिसकी कुण्डलिया छन्दोंको श्रीतुलसीदासजी और भाषाटीकाको ज्ञानान्वावगंज मौजे देहवा मानपुरके नम्बरदार बैजनाथकुर्मीने रचना किया है ॥

उभयप्रबोधक रामायण भाषा ॥

इसको बाबाबन्नादासजीने अनेक प्रकारके ललित छन्दों में रचना किया है इसमें भी रामायणकी कथा बिस्तार समेत वर्णित है ॥

